6412.

Price Rs. 20-0-0 (4 Vols)

6412

294.5

G 56 M.

Gokalnath

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स्वस्ति श्रीयुतमहाराजाधिराजकाशीराज

श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञया

श्रीगोकुलनाथकविना

संगृहीतभाषामहाभारतदर्पणस्य

आदिपर्व सभापर्व च

कलिकातामहानगरेशास्त्रप्रकाशमुद्रायन्त्रे

श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितेन

शोधितं मुद्रितञ्च

शकाब्दाः १७५१ सम्वत् १८८६

Bahsha S...
No

EC No.
423
SRINAGAR

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ महाभारतदर्पणे ॥

॥ *** ॥ आदिपर्वदर्पणः ॥ *** ॥

॥ *** ॥ दोहा ॥ *** ॥

चिन्तामणि गणनायके चिन्तामणिसें पाय । दरसत बरषत मोदघन बिघनबृन्द मिटि जाय ॥
श्रीगुरुचरण सरोजसें ओज भरे अभिराम । दाता चारो फलनके कलकमलाके धाम ॥
श्रीनन्दनन्दनके चरण बारिज बरण अगन्द । कामद जनमन मधुप के भरे मोद मकरन्द ॥
अर्थलोभ भारतसमुद मै करिहलों बिचार । भवसागर तारण बिरद प्रभु करि देहें पार ॥
सर्वबीज अरु सर्वमय सबमे व्यापक ईश । न्यामक प्रभु यह कार्य्य सिधि करि हैं बिश्वेबीश ॥
सुनि द्विप की प्रहलाद की द्रुपदसुता की गौर । जाने प्रभु करुणाउदधि हैं व्यापक सबठौर ॥
कौरबके पक्षी प्रबल जादर नार्णवसार । तहं पांडबपैं करि क्रिपा हरि धीबर किय पार ॥
मंगल मूरति रामप्रिय पैान कुमारहि ध्याय । भारतार्थ दर्पण कियो चाहौं जगसुखदाय ॥
नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचौं भारत भाषा सौमि ॥
सियाराम अभिराम रतिकामजैन गुणधाम । कामद काम सकामके स्वय अकामके काम ॥
अल्प सरित समजेतरे जलनिधि अगम अपार । ते यहि भारत शब्दनिधि के मोहि करि हैं पार ॥

॥ *** ॥ सोरठा ॥ *** ॥

मोरमुकुट बनमाल । धरे पीतपट श्यामघन ॥ श्रीजशुमतिको लाल । कृपासिन्धु आनन्द घन ॥

॥ *** ॥ दोहा ॥ *** ॥

सौनिक पौराणिक गए परम नैमिषारन्य । सत्र जज्ञ जहं करतहें सौनक सह ऋषिधन्य ॥

॥ *** ॥ चौपाई ॥ *** ॥

सुखासीन ऋषिबृन्द निहारे । अति तीक्ष्ण तपतेज सभारे ॥ सबिनय तिन्हे दंडवत करिकै । कुसल प्रश्न बूझे मुद भरिकै ॥ मुनिन ऋतको पूजन कीन्हों । प्रेम मए शुचि आसन दीन्हों ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बिनय नम्र मुनिचरण निहारी । आसन पैं बैठे मुदधारी ॥ गतश्रम सूत पुत्रकंहं देखे । तब प्रस्ताव मुनिन अवरेखे ॥ कथा शुननकी इच्छा राखे । मधुर बचन शौनक ऋषि भाखे ॥ सूत कहौ तुम कितसों आए । करत बिहार रहे कंह भाए ॥ यह बिरतांत विहित बिधि भाषो । चाहत बचन सुधारस चाषो ॥ शुनि यह सौनकऋषि की बानी । बोले सूत पूत बरज्ञानी ॥ सर्प सत्र जनमेजय कीन्हों । पिता बैर सर्पनसों लीन्हों ॥ तहं बैसंपायन मुनिज्ञानी । कथा व्यासकी विबिधि बखानी ॥ लहें व्यासकी आज्ञा नीकी । कहत रहे सुखदाइनि जीकी ॥ सो शुनि हौं लहि आनद भारी । कुरु क्षेत्र हेंगे सुखकारी ॥ कुरुक्षेत्रसों इत चलि आए । तुम्है देखि अति आनद पाए ॥ अनुकंपा करि देऊ देशा । सो हम कहैं करैं शुभभेशा ॥ यह शुनि शौनक मुनिबर बोले । परमानन्द बिदित जो सोले ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैसंपायन कहत हें जनमेजयसों जौंन । पावनकर इतिहास मोहि सु मुनि शुनावऊ तौंन ॥
जो बेदार्थमयो बिदित अरु पुराणमय चारु । भारताख्य भवभयहरण मंगलकरण उदारु ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

शौनक ऋषिके बैन । शुनि सौतिक अति मोद लहि ॥ मुद मंगलको अैन । कहनलगे इतिहास बर ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

मंगलदायक मंगल रूप । बिलुबरेन्य सु अनघ अनूप ॥
हृषीकेश जगत गुरु ताहि । नमस्कार करि हिए सराहि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रह्म असत सत पर कहत बिबिधि सकल मतिमान । असत अगोचर कहत हैं गोचर सत गुणमान ॥
पर निर्गुणसों कहत हैं जो भवलयको स्थान । ब्रह्मादिक कारण असत कहियतु करि अनुमान ॥
जगत दृश्य सो सत कहैं भयो जु ब्रह्म अनूप । ताके दोय बिधानहैं असत और सतरूप ॥
ज्ञान दृष्टितें असत जग जाने ब्रह्मसरूप । हैं व्यवहार बिचारतें सांचो जगत अनूप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

शुनहु व्यासको मत अनुरागि । जो हम शुने मोदसों पागि ॥ परम पूत भवसागर पार । शुने शुनाएँ [illegible] उदार ॥ यह इतिहास व्यासकृत चारु । त्रिभुवन पावन करण उदारु ॥ शब्द अलंकृत छन्द [illegible] यह इतिहास बिदुषप्रिय एक ॥ जग उतपत्ति प्रथम शुनिलेऊ । फिरि शुनियो इतिहास [illegible] ॥ [illegible] अन्ध तमसमय लोक । रह्यो भरो जिमि अञ्जन ओक ॥ तहं ईश्वर ईहा [illegible] एक अह उदार ॥ सो युगादि कारण रमनीय । अव्यय जोतिमयो कमनीय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो वह अंड अनूप अति जगत बीज अभिराम। जोतिमयो तामै भयो ब्रह्म सनातन आम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्र मनु जातें। भे परमेष्टि प्रचेतस तातें॥ दक्ष दक्षसुत मुनि मिति गाए। भए प्रजापति एकादस आए॥ सृष्टिकार हैं एते गुनिए। यह बिभूति ब्रह्माकी गुनिए॥ नाना तनुधर विष्णु सुहाए। वेद बिदुष मुनि ऋषि गण गाए॥ अरु आदित्य सुविश्वेदेवा। भए अश्वनी कुवर सुभेवा॥ हैं जगपालन करता एते। हैं ए विष्णु बिभूति सचेते॥ यक्ष साध्य अरु पितर पिशाचे। गुह्यक भूरि गुह्य गुणराचे॥ एते नामकार हैं जानो। शंकरकी बिभूति अनुमानो॥ बाइस भए ब्रह्म ऋषि ताते। भए राजऋषि बज्रगुण राते॥ आप नभ भू अग्नि मारुत आसा। संवतसर अरु षट् ऋतु मासा॥ निशि दिन पक्ष अगित गित दोऊ। भए अंडतें अकथित सोऊ॥ तैंतिसदेव प्रथमही जाए। तातें तैंतिस शत छविछाए॥ तैंतिस सहस प्रगट भे तातें। जोति रूप बर भरे प्रभातें॥ दिव पुत्र अरु बृहद्भानु बर। रवि अरु चक्षु रिचीक उग्रकर॥ भानु बिभावसु अर्क सुकविता॥ अरु आसावह सुन्दर सविता॥ आत्माअरु मह्यक लघु ए हैं। द्वादश रवि अतितेज मएहैं॥ सेष्ट सवनमै मह्य कहाए। देवभ्राट सुत ताके जाए॥ भे सुभ्राट तनय फिरि ताके। रहे प्रवीण तीन सुत जाके॥ दशज्योतिस शतजोति सोहाए। सहस जोति अतिभासै भाए॥ ***

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दशज्योतिसके दश सहस सतज्योतिसके लक्ष। सहसजोतिके लाख दश भए पुत्र अति दक्ष॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तिनहीसों कुरुवंश भयोहै। अरु यदुबंश प्रसंश मयोहै॥ इक्षाकुजजाति बंशभानीके। तिन्हतें भरत बंश जुतसीके॥ राज ऋषिनको अन्वय जैसो। क्षीरसिन्धुते *निशिपति* जैसो॥ दिव्यदृष्टिसों याकों जानो। यातें श्रीमुनि व्यास बखानो॥ नित्यवेदकी व्याख्या करिकै। मुनि तप ब्रह्मचर्य व्रत धरिकै॥ यह इतिहास पुण्यमय कीन्हे। सत्यवती सुत आनद लीन्हे॥ चिन्ता भई व्यासके जैसें। बिनालिखें पठिहैं कोउ कैसें॥ व्यासचित्तकी चिन्ता जानी। तहं आए बिधि मंगल दानी॥ व्यास निरखि ब्रह्मा इत आए। लहि बिसमय आनदसों धाए॥ साजलि दंड प्रणामहि कीन्हे। मुनिन सहितचलि आसन दीन्हे॥ ब्रह्माकी आज्ञा मुनि लहिकै। मुनिन सहित बैठे सुद गहिकै॥ बिधिके आसन ढिग मुनि बैसे। बोले बिहंसि बचन बर जैसे॥ ब्रह्मन् यह मैं काव्य करोहै। श्रुति रहस्य उपनिषद भरोहै॥ स्मृति इतिहास भरो सब यामे। तीनि कालकी है बिधि जामे॥ भारताख्य रांब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अघतमहारी । राकाशशि श्रुतिज्योत्स्नाधारी ॥ नरमन कुमुद समुदकर भासक । भारत दीपजाड्य तम नाशक ॥ हैं अतिप्रियबिदुषनको जानो । बिस्तर बिधि संक्षेपित मानो ॥ *◆*◆**◆

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जरा व्याधि भय मृत्यु लय बिबिध कर्म व्यवहार । चारि बर्ण बिधि धर्म अरु ब्रह्मचर्य्य तप सार ॥
चन्द सूर्य्य भूमानको सह संक्षेप पसार । बरणो या इतिहासमे दृश्य अदृश्य अपार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ग्रह नक्षत्र तारा युग केरो । वर प्रमाण जेहि कस्यो निबेरो ॥ बेद पुराण शास्त्र सब जेहैं ॥ यामे ग्रथित कथित सब तेहैं ॥ तीरथ बन गिरि सागर सरिता । बरणि कहे सहदेश सचरिता ॥ धनु बेदोक्त शस्त्रबिधि नीकी । यामे सुखदा भट सुमतीकी ॥ प्रभु याके लिखिबेके जोगू । लेखकसों नहि होत संजोगू ॥ सो यह मो हिय चिन्ताभारी । करैं कहासो कहऊ बिचारी ॥ व्यास बचन सुनिकै बिधि सानद । कहो गुणज्ञ गुणीके मानद ॥ तुमकंह तप बरिष्ट मुनिगण मै । व्यास श्रेष्टहम जाने मनमै ॥ बेदवादिनी बाणी थाकी । जग सुखदायिनि भामिनि म्हाकी ॥ काव्य कहत तुमतातें ज्ञानी । व्हैहै ख्याति काव्य सुखदानी ॥ अब यह काव्य लिखनके कारज । सुमिरऊ शुभद गणपति हि आरज ॥ यह कहि गे बेधा निजधामा । शुभदहि सुमिरे सुमुनि सकामा ॥ सुमिरतही गणपति तंह आए । पेखतही मुनि आनद पाए ॥ सबिधि पूजि दै सुरुचि सु आसन । बोले व्यास पाइ अनुसाशन ॥ हों भारत कलपित करिराख्यो । तेहि लिखिबे हित चाहत भाख्यो ॥ करि अनुकंपा सहित सनेहू । जग उपकार हेत लिखि देहू ॥ तुमतें और देव यहि लायक । हैन कहा मानुषचितचायक ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो सुनि कहो गणाधिपति सुनिए आनद भौन । तौ लिखिहौं मम लेखणी थिरता पावै जौन ॥
उत्तर दीन्हे व्यास मुनि अर्थ समुझि सुखदानि । लिखियो आपु प्रबंधके लिखिबे मै दृढजानि ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

इमि निबन्ध अमन्दमति करि अमल आनदकन्द । तेहि लिखावन लगे लिखन सुसरुचि सों शुभछन्द ॥ धन्य बकता धन्य लेखक धन्य जे जन और । सुनत हैं अरु लिखतहैं वह बैठिकै जेहि ठौर ॥ ठौर ठौरसगौर भाषे कूट बुधिबर व्यास । तिन्है सुनि गणनाथ [illegible]लौं करें अर्थ बिलास ॥ कहं तौलों कबित कितने नऐ व्यास सुजान । प्रेम नेम सुछेम [illegible] लिखि लिखाइ सुजान ॥ भारत पारावारके भे पार अपर अपार । बिबुध मानव [illegible] बिबिध बिहार ॥ मन मरजि अहि ज्ञान संपुटमै प्रबेसि सजन्त । स्वगुण [illegible] नहि [illegible] तामै लहैं जन मुदरन्त ॥ सहस अष्ट अपुर्ब अरु शत अष्ट बिशद बिषेश ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कूट बिरचे भौंर सम तहं व्याससुमुनि सुभेष॥ तासु अर्थ अभाव जानैं व्यास कै शुकदेव। आं पं
जाहि जानत हैंनहैं धौंसज्ञयो शुभभेव ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भारताख्य सो वृक्षवर तापनेवारण हार। पावन उपकारक बिसद अति रमणीय उदार॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बीज प्रथम अध्याय बखानो। पौलोमास्तिक मूल सुमानो ॥ संभवपर्व स्कंद सुढारो। सभा अरण्य सुकोटर भारो॥ अरणी पूर्व रूपहैं जानो। अरु विराट उद्योग महानो॥ मोंज्जा तासु व्यासमुनि भाखा। भीषमपर्व महा है शाखा ॥ पत्र सुद्रोणपर्व है ताको। शल्यपर्वसे गंध प्रभाको॥ स्त्रीपर्व तासह है छाया। शांतिपर्व फल तासु सुहाया॥ अश्वमेधसों रस नीकेको। आश्रमवास थान नीचेको॥ मूसलपर्व महाप्रस्थानो। स्वर्गारोहणपर्व सुठानो॥ एतीनो है तासु महानी। शाखा श्री मुनिव्यास बखानी॥ परम अछेद्य स्वादसों पूरो। धर्म भरो रसमय अतिरूरो॥ सांतन नृपके सुवन सोहाए। गंगाके गर्भज गुणगाए॥ भीषम अरुहैं दूजो तियके। दोय सुवन अति सूधे हियके॥ चित्रवीर्य अति सुषमा गेहू। अरु चित्रांगद मुनि सुनिलेहू॥ तिन तियलहि नहि सुत उपजाए। क्रमतें तन तजि सुरपुर पाए॥ तब माताकी आज्ञा लहिकै। भीषम मत संतति हित गहिकै॥ तिनबंधु नकी तियहीं तिनमै। किए व्यासमुनि सुवन सुदिनमै॥ ते धृतराष्ट्र पांडु गुण गाए। औरं विदुर ए क्रमसों जाए॥ एसब करि जब भूमिबिलासा। कीन्हे जाइ स्वर्गमै बासा॥ कियो भार्त तब प्रगट सुहायो। शुकाचार्जकहं प्रथम पढायो॥ फिरि वैसंपायनहि पढायो। तिन जनमेजय नृपहि सुनायो॥ साठिलाख सुश्लोक सोहाए। रचि भारत मुनि आनद छाए॥ पंद्रहलाख पितर गण लीन्हे। तीसलाख देवन कह दीन्हे॥ चौदहलाख गंधर्वन पाए। एकलाख लहि मानव भाए॥ है चौबीससहस यह भारत। बिन इतिहास सुनोमे भारत॥ नारदसों मुनि सुर सुख पावैं। सित देवल पितरनहि सुनावैं॥ शुक गन्धर्व यक्ष रक्षन कों। वैसंपायन नरवरुनको॥ क्रोधमयो दूर्योधन शाषी। शाखा प्रथम कर्णमति साषी॥ शकुनि अल्प शाखासम हेहैं। दुस्सासन फल फूल कहे हैं॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मूल नृपति धृतराष्टहैं जाके मतसों नास। नृपगण पक्षी और सब धारें बीर बिलास॥
युधिष्टिर तरु स्कन्ध नर शाखा भीम सुधर्म। माद्रीसुत फलफूलहैं कृष्ण सुमूल सुधर्म॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

पंडु देशबऊ बुधिबल जीते। बसे बिपिनि मृगयारस प्रीते॥ मृगा मृगीन्हे मुनि सुखरासी। रमतरहे जहं बिपिनि बिलासी॥ बिनुजाने नृप तिनकंह मारे। मरण समै मुनि सापउचारे॥ जब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तुम करिहौ सुरति विहारा । होइहि तबहीं मरण तुह्मारा ॥ सो सुनि नृपति पांडु भय पागा । चिन्ति विहार तरुणीको त्यागे ॥ वंशोत्पत्ति हित ताकी नारी । पतिकोआज्ञा पाय सुढारी ॥ मंत्र जाप सो बिधिवत कीन्हों । बालापनमे जो मुनि दीन्हों ॥ धर्म वायु सुरपति तंह आए । अरु नासत्य परम सुदछाए ॥ तीनि दाय सुत दोऊ रानी ॥ तिनसों लही सरस सुखदानी ॥ मोहित व्है नृप पांडु सुखारे । तिय विहारकरि स्वर्ग सिधारे ॥ मुनि सान्तनसों रक्षित व्है कै । बरधित भे ते सुत गुण ब्वैकै ॥ तिन्हकंहं लै आनदसों छाए । ऋषि धृतराष्ट्र भूप पंह आए ॥ एसुत पांडुभूपके पांचौ । इन्हैं देखि अतिसुखहों रांचौ ॥ वचन हमारि अशंसय जानो । निज पुत्रनसम इनकह मानो ॥ इमि कहिकै मुनि बिपिनि सिधारे । नृपसदस्य जे हें हित भारे ॥ मुनिके कहे पांडु सुत जानी । पुत्रके साधु पोर बुधज्ञानी ॥ दुष्टकहैं ए पांडव है ना । जिनके भरे द्रोहसों नैना ॥ अतिबै शब्द गगणमे पूरो । शंख दुंदुभी धुनिमय रूरो ॥ पञ्चत तिन्है पुष्पझर लागी । अतिसुगन्ध जय जय धुनि पागी ॥ अद्भुत देखि सजन सुद पागे । बेद शास्त्र तिनपढे सुभागे ॥ निर्भय बसे पांडुसुत तेही ॥ भीष्म पिता सह कौरव जेही ॥ धर्मराजको शुचिता देखे । भीमसेनको धीरज पेखे ॥ पारथ विक्रम अतुल निहारे । माद्रेयनकी विनय बिचारे ॥ पंडु सुतनके ए गुण हेरे । लहि संतोष प्रजा सुदघेरे ॥ नृप समुदाय स्वयंवर जेहां । अर्जुन लहीं द्रौपदी तेहां ॥ पार्थजीति चहुदिशिको राजा । ल्याये सुधन धर्मसखकाजा ॥ भीम कृष्णसों नयबल पाए । जरासंध हति नृपधन ल्याए ॥ तासों राजसूयविधि साधी । दीन जननकी बिपदा बाधी ॥ बिदाहोन दुर्योधन आए । करे भूप आदर अतिभाए ॥ हेम रत्न हय गज मदभारे । पूजनकरि दिय धर्म सवारे ॥ धर्मराजकी लखि अगाढी । दुर्योधन हियईर्षा बाढी ॥ प्रतिमविमान सभागृह भाको । लखन गयोदुर्योधन वाको ॥ जंह जल तहां अजलछिति देखी । गिरे भूप अतिसै भ्रमभेखी ॥ *~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हंसे भीम लखिके हिए बाढो कोप महान । दुर्योधन घरकों गए धरें महत अपमान ॥
कह्यो जाइ धृतराष्ट्रसों भयो जो तहं अपमान । करो बृकोदर हास्य जो सोंहें कृष्णमहान् ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

द्यूत जाय फिरि कलमय कीन्हों ॥ सरबस जीति धर्मसों लीन्हों ॥ यह सुनि कृष्ण कोप अति धारे । बनकों गए धर्म सब हारे ॥ द्यूतमंत्रमे भीष्महि नाखो । बिदुर द्रोण कृपसों नहि भाखो ॥ कुची भूप युद्धमे मारे । पांडव जीते कौरव हारे ॥ नृपसह कर्ण मंत्र जो कीन्हों । सकुनि समेत जानि सो लीन्हों ॥ बडोबेर धृतराष्ट्र बिचारे । सञ्जयसों बोले दुखभारे ॥ सञ्जय अजस देऊ मति मोकों । सत्यबचन भाषतहों तोकों ॥ बिग्रह कुल क्षय मोहिन भाई । पुत्र पांडवन सों न जुदाई ॥ करै असूया

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पुत्र हमारे । वृद्ध अंध गुणि रिसिसो भारे ॥ राज सूयमें पांडव जीसो । सभासदनमें भीम हंसो सो ॥ देखि हिएमें अति रिस भारा । मारण मरण कुमंत्र विचारा ॥ सकुनि द्यूतछल मंत्र जु दीन्हो । सो हम संजय जानि सु लीन्हो ॥ तब तुम ज्ञान चक्षु मोहि जानो । मेरी कही सुनो सति मानो ॥ लक्षबेध जब अर्जुन कीन्हो । भूपनजीति द्रौपदिहि लीन्हो ॥ हरी सुभद्रा द्वार बतावे । अर्जुन यादव कोउन जीते ॥ वरिसि इंद्रसह देव न हारे । अर्जुन खांडव वन बर जारे ॥ लाक्षा गृहमें जरे न कोऊ । कुन्ती सहित निकसिगे सोऊ ॥ द्रुपद भए सह पुत्र सहाई । पांडव संग समर सुखदाई ॥ जरासंध भुज बलतें भारो । भीमसेन अति बल तेहि मारो ॥ भूमिपाल अर्जुन सबजीते। राजसूयमख कियो बिनीते ॥ सुनो सुनी ए बातें जबहीं। निजसुत हारि गुणी हम तबहीं॥ जब द्रौपदी सभामंह आनी । दुस्सासन गहि दुष्ट अज्ञानी ॥ खैंचत चीर अन्त नाह पायो । नाश होनको बीज जमायो ॥ सहित सहस्सन ऋषि बनचारी। धर्मराज बन बसे बिहारी॥ शंभु किरात रूपधरि आए । अर्जुनसंग समरसुख पाए ॥ पशुपति अस्त्र दियो हित हेते । अपनो अपनो दिगपति जेते ॥ दिवसधि दिव्य अस्त्र सब सीखे । पार्थ अमोघ इंद्र जे लीखे ॥ अर्जुन कालकेय सब मारे । देवनसों जे कबऊ न हारे ॥ अर्जुन असुर जीति फिरि आए । सुरपुरतें अति आनंद छाए ॥ भीमसेन गंधर्वन जीते । मिले कुबेर आइ अति प्रीते ॥ दुर्योधन बन बिहरन हेंगे। तिन्हे बांधि गंधर्व सु लेंगे ॥ कर्ण सलाह कुपथ मनरोचे । अर्जुन कृपा सहित तब मोचे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यक्ष रूप धरि धर्म जब पूछे प्रश्न सुचारि । धर्मराज बिधि बत दए उत्तर परम सुधारि ॥
ए बातें जबही सुमन तबही लीन्ही जानि । हारि आपने सुतनकी संजय दृढ अनुमानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कन्यारत्न मत्सपति दीन्ही । पुत्र हेत अर्जुन सो लीन्ही ॥ *निर्जित निधनी* बिपिनि सिधारे।पांडु पुत्र बिपदाके मारे ॥ सप्ताक्षोहिनि दल तिन जोरे । गज रथ पत्ति पवन गति घोरे ॥ माधव सकल जगतके स्वामी । सो सहाय पाण्डव अनुगामी ॥ कृष्णार्जुन नररूप बिहारी । नारायण नरभे असुरारी ॥ नारद मुनि हमसों जब भाखी । जयकी आशा तब हम नाखी ॥ जब श्रीकृष्ण लोक हित आए । करि सलाह चहि कलह मिटाए ॥ तब दुर्योधन कर्ण बिचारो । इन्हे पकरि कारागृह डारो ॥ तब हरि रूप अनन्त देखायो । जय इच्छा हम तबहि नशायो ॥ जब श्रीकृष्ण चले रथ आगे। दृग जल भरे महा दुख पागे ॥ देखि प्रथाको क्षमा करायो । तब हम अजय अजाचित पायो ॥ सुनो कृष्ण जब मंत्री कीन्हे । भीष्म द्रोण कृप आशिष दीन्हे ॥ अनुचित कर्ण भीष्मसों बोलो। युद्ध करत रहिहौ तुम जौलों ॥ हों नहि तबलों धनुष गहेंगो । निकट चमूके खरो रहेंगो ॥ अर्जुन धनु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आं पं गांडीव मुरारी। तीनि एकत्र परम जयकारी॥ जब अर्जुन यह मनमे चीत। गुरगण गोत्र बधें का जीते॥ रथके ढिग पारथ भे ठाढे। भरें हिए करुणा रस गाढे॥ हरि विराटरूप तिन्है दिखायो। मिटी भ्रांति अर्जुन नर आयो॥ दश हजार रथ नित्य संघारे। पुरुष प्रधान भीष्म नहि मारे॥ तब हीं जयकी आशा गई। और सुनऊ संजय बिधि नई॥ मृत्यु मांगि भीषम तन त्यागे। पांडु पुत्र देखत मुद पागे॥ अर्जुन करि शिखण्डिहि आगे। लरे भीस्म तब धनु शर त्यागे॥ अर्जुन सरन मारि छिति डारे। कौन भांति जय लहहिं हमारे॥ अर्जुन हनि सरसज्या डारे। भीषम सोमक सकल संघारे॥ भीषम समर गिरे जबभागे। मो सुत देन सलिल तब लागे॥ नूतन पियो चहत हो पानि। ठगि सब रहे सुनत यहबानि॥ धरनी बेध धनंजय कीन्हों। कढी धार भीषम मुख लीन्हों॥ यह सुनि जयको आशा भागी। संजय सुनऊ और मुदपागी॥ पांडव सैन प्रिष्टितें धावै। बायु हमारे सन्मुख आवै॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दुर्योधनकी सैन मे शृङ्ग शिवाको नित्य॥ होय तहां संजय सुनो जयको कौन निमित्य॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

द्रोण बिबिधिबिधि अस्त्रन डारे। पुरुषप्रधान एक न हि मारे॥ सप्तक साठिहजार निपाते। अर्जुन चहत ताहिते घाते॥ द्रोण व्यूह रचना करि लीन्ही। रक्षक तंह कर्णादिक कीन्ही॥ शिशु अभिमन्यु भेदि गो सोई। रोकन जोग भयो नहि कोई॥ सबहिन घेरि एकसो मारो। तब जाना दुर्योधन हारो॥ अभिमन्यु बिरथ एकाकी वारो। चारो महारथिन मिलि मारो॥ महाक्रोध अर्जुन गहि लीन्हो। सैंधबके बधको पन कीन्हो॥ सो करि सत्य जयद्रथ मारो। कहो ताहि को जीतन हारो॥ तेहि दिनके रणमे सब मारे। रथ हय चारो भए बिषारे॥ रथतें उतरि पार्थ रणबाढो। सरसों बेधि भूमिजल काढा॥ प्याय तुरंगजल रथपर चढे। तिनसों जय चाहत अनपढे॥ सात्यकि द्रोण चमूकों भेदे। कृष्णार्जुन पैं गए अखेदे॥ करण सरनसों भीमहि मारो। करिकै बिरथ भूमिमै डारो॥ बध नहि कियो कटुक बऊ भाषे। यह सुनि सूत जयेछा नाषे॥ द्रोण करण कृप अरु कृतबर्मा। द्रोणतनै रणबिदरण कर्मा॥ ईनकों जीति जयद्रथ मारे। अर्जुन पास कृष्ण रखवारे॥ देवराज जो शक्ति दईही। अति अमोघ सो कर्ण लईही॥ बासुदेव सो व्यर्थ कराई। कर्णहिडंब हनो भयपाई॥ अर्जुन समर अबध्यविचारो। संजय जय ईछा तब डारो॥ धृष्टद्युम्न द्रोण कंह मारे। करि अधर्म बिन शस्त्र निहारे॥ अति रथ अस्वत्थामा तासों। नकुल सरत बलभरे महासों॥ नारायण अस्त्रउग्र तब डारो। ताहूं पांडव एक न मारो॥ दुस्शासन कों भीम पछारो। पियो रकत तहं काऊन वारो॥ महा सूर जब कर्णहि मारो। अर्जुन तबहि जयेच्छा डारो॥ द्रोण पुत्रदुस्शासन साथी। कृतबर्म्मा रचि समर प्रमाथी॥ लरिकै धर्मराजसों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हारो।जय इच्छा हम तबहीं डारो।।धर्म्मराज जब शल्यहि मारो। जय बिचार हम तबहीं डारो।। आ०
बियह द्यूत मूल शकुनी को। सहदेव बधि किय सुचित सुहोको।। एकाकी दुर्योधन गोए। ह्रदमें जलस्तंभन करि सोए।। कृप सहित पांडव गे तेहां। दुर्योधन हो जलमे जेहां।। कर्षण धर्षण बचन सुनायो। क्रोध भरो कढि बाहेर आयो ।।

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गदायुद्ध भो भीमकों संग्या दई बताय । छल हनो तब जांघमे गिरे भूमि पै हाय ॥
संजय तब सिगरी गई जयकी आशा छूटि।अन्ध दीन मेरे लए मृत सुत बिधिनै लूटि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कृप अश्वत्थामा कृतवर्मा । ए तीनो अति कुत्सितकर्मा ॥ तनै द्रोपदीके सुकुमारे। सोवत रहे पांच इनमारे ॥ अनुचित बंशनाश इन कीन्हों। महा अजश जगतीमे लीन्हों ॥ ब्रह्मास्त्र गर्भ पातनको कारो। गर्भमाहं डारो अबिचारो ॥ निज प्रभावसों अस्त्र नशाए। हरि हित कार उत राहि बजाए ॥ भीम क्रोध अतिसैसों पागो । पीछे द्रोण तनैंके लागो ॥ फिरि ब्रह्मास्त्र पार्थपर डारो। अस्त्र अस्त्रसों पार्थ संघारो ॥ गहि पांचाली पैं तेहि ल्याए । शिरमडि दैकै बिपिनि सिधाए ॥ यह वृतान्त सूत हम जाने। हैं अजेय पांडव अनुमाने ॥ शोचन जोग भई गांधारो। पुत्र मरण सुनि दुखित बिचारी ॥ दुस्तर कर्म पांडवन कीन्हां।कण्टक रहित राज्य करि लीन्हां॥ पाण्डव कृष्ण सात्यकी बांचे। हमरे तीनि तीनि दिशि नाचे ॥अष्टादश अक्षोहिणि सेना। महाबीर सब कटे रहेना ॥ होत मोह अब अतिसय मोकों। संजय कहा सुनावऊं तोकों ॥ यह कहि करि बिलाप अतिरोए ।मूर्छित गिरे शोकसों भोए ॥ संजय मरण होत तौ नीको। अब जियबेको फल है फीको ॥ सूतउवाच ॥ यों धृतराष्ट्र कही जब जागे। उत्तर देन सूत इमि लागे ॥ सुनऊ भूप ए बचन हमारे। जेहें भए भूप बलभारे ॥ नारद व्यास बदनतें सुनिकै । तिनको कथा कहत हम गुणिकै ॥ भए जे राज बंशमे नीके । महा धनुर्द्धर सुन्दर सीके ॥ पृथ्वी जीति यज्ञ बऊकीन्हे। दान द्विजनकंह ईछित दीन्हें ॥ ते सब भए कालबस जानो । तिनकी कथा कहत सति मानो ॥ संजय शैव्य सुहोत्र कहेजे । रतिदेव बाल्हीक रहे जे ॥ काक्षीवन्त दमन दुति भारे । जीति अजित नल बर बल धारे ॥ बिश्वामित्र समर भूभर्त्ता । अम्बरीष मरुतोमखकर्त्ता ॥ मनु इक्ष्वाकु भरत जे गाए।रामचन्द्र दशरथके जाए ॥ अरु शशबिन्दु भगीरथ भाए। कार्तवीर्य सु जनमेजय गाए ॥ नृप जजाति ए चौबिस नामी । नारद कहो भए दिवगामी ॥ सैव्य नृपति सुतशोक सताए । भए काल बस यम पुर धाए॥ इनतें अन्य हजारन राजा। महारथी सह बिपुल समाजा ॥ अर्ब खर्बलों कितक गनावैं। आदि सृष्टिते अन्त न पावैं ॥ भए कालबस जे जग जाए । नानाबिधिके करि छतभाए ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अ०प०

* ॥ दोहा ॥ * ॥

परम दुरात्मा क्रोधमय लुब्ध महा दुरवृत्त । शोचन जोग्य न पुत्र तव शान्त करहु नृप चित्त ॥
तुम श्रुति मान महान हौ शास्त्राधीत कृतज्ञ । तुम्है मोह यह जोग्य नहिं करत मोह ते अज्ञ ॥
अकृपा कृपा दुहुन पै तबहीं सो जानत मतिमान । कैसें बांचै सुवन तव होनी होति न आन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

॥ चरणाकुलक ॥ बिधि बिरचित पथ कौन नशावै । काल मूल सुख दुख मे भावै ॥ भूतोत्पत्ति प्रलयको कर्ता । जगत चराचर भरता हर्ता ॥ काल शुभाशुभभाव करतहैं । काल प्रजा रचि पालि हरतहैं ॥ जागत काल करमको शाखी । सोवत जगत मोह रस चाखी ॥ भावी भूत अरु वर्तमान जो । कालज जानि न ज्ञान त जौ जो ॥ सौतिकउवाच ॥ धृतराष्ट्रहि संजय समुझाए । तब सोसुनि ते धीरज पाए ॥ यह उपनिषद भार्तमे भाष्यो । द्वैपायन तिन श्रुतिरस चाष्यो ॥ पुण्याध्ययन भार्तको करिहैं । ते श्रद्धालु पापनिधि तरिहैं ॥ देव देवऋषि कीर्तन लहि अै । यामे यक्ष नाग शुचि कहिअै ॥ पुण्यद हरिकीर्तन सों भारो । सत्य अमृत यह व्यास संवारो ॥ ब्रह्म सनातन जे ध्रुव गाए । जाकी कीर्ति कहैं मुनि भाए ॥ बिश्व असत सत जातें जायो । उत्पति प्रलय प्रवृत्ति चलायो ॥ निर्गुण सो अरु सबगुण जामे । ता हरिको है कीर्तन यामे ॥ जती ध्यानमे पागि बिशेषैं । हरि प्रतिबिंब आपुमे देषैं ॥ श्रद्धा सहित भक्त जे ध्यावैं । यह अध्याय परमगति पावैं ॥ यह अध्याय नित्य जो कहिहैं । भारत पाठ पुण्य सो लहि हैं ॥ माखन सार दहीको जै सो । चारि चरणमे ब्राह्मण तैसो ॥ आरण्यक सार बेदको जानो । औषधि सार अमृत अनुमानो ॥ ह्रदमे श्रेष्ठ पयोधि कहो है । पशुन मध्य ज्यों गऊ अहोहै ॥ इतिहासन मह भारत तैसें । कहो व्यास मुनि पुण्यद अैसें ॥ श्राद्ध माहि यह द्विजन सुनावैं । अक्षै तृप्ति पितरगण पावैं ॥ भारत बेद पढत जो कोऊ । छुटत भ्रूणहत्यासों सोऊ ॥ यह अध्याय जो [illegible] । लहिहि पुण्य जो भाते सरवमे ॥ भारत श्रद्धा सहित सुनै जो ॥ कीर्ति स्वर्गगति परम लहैं सो । चारोवेद एक दिशि धारो ॥ सुरन्ह एक दिशि भारत डारो । दोनो तुला डारिकै तोले ॥ महाभार्त गरुवो लखि बोले । पुण्य महत्व गुरुत्व बिचारो ॥ महाभार्त तब सुरन पुकारो । स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारयणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबंदीजन काशीवासिरघुनाथकवी स्वराज्यजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां भारतान्तर्गतआदिपर्वणि अनुक्रमणिकाध्यायः ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पीत [illegible] [illegible]ाम भजु कमल नयन अभिराम । बृन्दाबन बाशी श्रीराधा बसहिं जासु हियधाम ॥
द्वैपायन [illegible] चरण सरोज निकेत । मो मन मधुकर सो बसो पाय पराग सुचेत ॥ ऋषि [illegible] समन्तपंचक तीर्थ जो प्रथम कह्यौ निरधारि ॥ ताकों विस्तरसों कहो एहो सूत बिचारि ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ सौतिरुवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥ * ॥

सुनऊ बिप्र सब कथा सोहाई । कहत महत अर्थनसों छाई ॥ चेता द्वापर संधि समेमे । परशुराम अरिक्रोध हृदयमे ॥ इकइस बार क्षत्र क्षिति मारे । करे असूल तूल सम जारे ॥ पांच भरे शर रुधिरन्ह ताके । मध्य नहाने अति रिस छाके ॥ तंहं पितरनकों तर्पण कीन्हो । पितर क्षत्रीक मोदसों लीन्हो ॥ पितर प्रतक्ष रामसों भाषे । मगिऊ तुम वर जो अभिलाषे ॥ राम कहा पितरनसों ऐसें । भूप हने बस क्रोध अनैसें ॥ पातक यह हमकों नहि होई । पितर हमै वर दीजै सोई ॥ ए हृद हौंहिं तीर्थ अति नीके । हरहिं पाप परसत जग जीके ॥ पितर तथास्तु कहे फिरि बोले । रहो तमासों चित अब तोले ॥ क्षत्रिनके रुधिरनसों भारे । ते समन्तपञ्चक निरधारे ॥ तिनके निकट देश हैं जेते । शुचि समन्तपंचक हैं तेते ॥ कलि द्वापरको अन्तर पाए । तहां लरे कुरुपाण्डव जाए ॥ महा पुण्यमय देश बिचारे। मरण मुक्ति मनसे निरधारे ॥ अट्ठारह अक्षोहिणि सेना । निर्भय लरे बचे कोऊ हेना ॥ देश पुण्यमय कलुष नशावन । समन्तपञ्चक अतिहीं पावन ॥ ऋषिरुवाच । अक्षोहिणि की संख्या भाषो । मोमन सुनिबेकों अभिलाषो ॥ सौतिरुवाच ॥ गज रथ एक एक त्रय बाजी । पांच पियादे पत्ति विराजी ॥ सेना मुखत्रय पतिकों जानो । तातें त्रिगुण गुल्म अनुमानो ॥ तीनि गुल्मको गण कहवावै । गणतें त्रिगुण वाहिनी भाव ॥ पृतना तीनि वाहिनी कीहैं । चमू होति त्रय पृतना कीहैं ॥ तीनि चमू की अनीकिनी है । अनीकिनी दश गुणित गिनीहै ॥ नाहि सुमति अक्षोहिणि कहहीं । संख्याते सु गणितसों लहहीं ॥ एकइस सहस सुरथ वरहाथी । बसु शत सत्तरि परम प्रमाथी ॥ एक लाख नवसहस गनाए। नर शत तीनि पंचास सहाए ॥ पैंसठि सहस होत वर बाजी। षटशत अधिक कहैं दश राजी ॥ अक्षोहिणि संख्या हैं जेती। मुनि वर कही सुनी हौं तेती ॥ सात अक्षोहिणि पाण्डव साजा । ग्यारह दुर्योधन वर राजा ॥ दश दिन भीष्म पितामह कीन्हा। युद्ध पांच दिन द्रोण प्रवीना ॥ दिवस दोय किय कर्ण लराई। दोय पहर भइ शल्य भिराई ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गदा युद्ध करि द्वै पहर दुर्योधन रण धीर । मुरछि गिरे रण भूमिपै हनो बृकोदर बीर ॥
कृप कृतवर्मा द्रोणसुत तेहिदिन करि कृत खर्ब । सूतत निशिमे धर्मकी मारी सेना सर्ब ॥
शौनक यह भारत कथा कही जु तुमसों अत्र । व्यास शिष्य सोइ कही जनमेजयके सत्र ॥
पर्वमध्य जे कथा रूप हैं पर्व कहत हों तौन। शौनक सुनऊ एकाग्र व्है हैं सुख दायक श्रौन ॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

प्रथम पौष्यपौलोम कहत हैं । अरु आस्तीक सुवंश महतहैं ॥ संभवकथा पर्वसो कहहैं । फेर लाहको आलय दहिहैं ॥ फिर हिडंबबधपर्व कहोहै । बकबध कहि आनंद लहोहै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

फेरि चैत्ररथ पर्व प्रभाको । फेरि स्वयंबर द्रुपद सुताको ॥ फेरि बिबाहिक पर्व सुढारो । तासे
आ०प० व्याह द्रोपदी वारो ॥ विदुरागमनपर्व नय भारो । अर्जुन को बनबास बिहारो ॥ शुभदा हरण
सुभद्रा केरो । हरण हारिक सुहैं फिरि टेरो ॥ खांडबदाहपर्व भुज जोरे । जहांमिलो मयदैत्य
निहोरे॥ सभापर्व सुखसिन्धु भरोहै। मंत्रपर्व में मंत्र खरोहै ॥ जरासन्धु बधपर्व बखीना । विजय
पर्व भुजबल बस कीना ॥ राजसूयहै पर्व करमको । फिरि अर्घाभिसुपर्व धरमको ॥ औगुण
बचन कथन सुनि लीन्हों । फिर शिशुपालमरण करिदीन्हों ॥ यूतपर्व फिरि राज्य बिनाशी ।
अनुद्यूत फिरिकल्मषराशी ॥ फिरि बनपर्व भए बनबासी । किर्मिबध ता पाछे खासी ॥ अजुन
गमनपर्व तपमयो । हरसों युद्ध पर्व तहँ भयो ॥ अर्जुन गमनपर्व सुरपुरको । नलइतिहास सु
करुणा करको ॥ तीरथयात्रापर्व कहो है । पर्व जटासुरबधन अहो है ॥ युद्धयक्षसों पर्व शुभारी ।
पर्व निबात कबचसोरारी ॥ अजगरपर्व नऊष परसंगी । मार्कंडेयकथा तंह अंगो ॥ द्रुपदसुता
सत्यभामा राणी । पर्व तासु संवाद सुबाणी॥घोष सु यात्रापर्व कहोहै।पर्व दयो मृगस्वप्न लहोहै ॥
इंद्रद्युम्न उपखान करोहै । ब्रिहीद्रोण फिरि पर्व धरोहै ॥ पर्वद्रोपदीहरण अनैको । जयद्रथ
मोचन पर्व अभैको ॥ महत महातिम पतिव्रताको । सावित्री को कथन प्रभाको ॥ रामाख्यानपर्व
अति नीको । कुण्डलहरण कर्णकी सीको ॥ पर्व कहे आरण्य पर्वके ।कहत बिराट सुपर्व सर्वके ॥
नगर बिराटहि पांडव गए । साधे समय प्रगट नहि भए ॥ कीचकबध गोग्रहण कहैंगे । अभिमन्यु
तरा ब्याह लहैंगे ॥ उद्योग पर्वमे नीति सुनाए । संजय कुरुपुरकों चलिआए ॥ चिन्तासह धृत
राष्ट्र जगैंगे । सनतसुजात वचन उघटैंगे ॥ यानपर्व हरि कुरुपुर जैहें । धृतराष्ट्रहि बज्रबिधि
समुझै हैं ॥ उपाख्यान मातलिको नीको । गालब चरित पर्व शुचि सीको ॥ बामदेव अरु सावित्री
को ॥ अरु सुबैन्यकोपर्व सुनीको ॥ परशुराम की कथासुनीकी।सभा प्रवेश छत्र जश सीकी ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उद्योग पर्वके पर्वकहि कहियत चमू पयान । चलन चमूको पर्व एक अरु सेनोपाख्यान ॥
बिबाद पर्व जहँ कर्ण सों हरिसो भयो बिबाद । महारथी अतिरथिनकी गणना पर्व संबाद ॥
॥ चरणाकुलक ॥ दूत उलूका गमन पर्वहै । अंबाख्यान सुपर्वसर्वहै ॥ फिरि अभिषेक भीष्मको
नीको । जंबूखंडपर्व अतिसीको ॥ भूमिपर्वहै अतिसम सीको । फिरि बिस्तार द्वीप सबही को ॥
भगवतगीता कहि मुद लहि है।भीषमपर्व भीष्मबध कहिहै ॥ द्रोण भयो सेनापति तज्ञा।संसप्तक
बध फिरि सप्रतिज्ञा ॥ फेरि मरण अभिमन्युकुँवरको । तौन दुखद अर्जुनक उरको ॥ जयद्रथ
बध फिरि अतिबल भारे । घटोत्कचसु जेहि कर्णसंघारे ॥ फेरिद्रोण बधपर्व कहोहै । नारायणास्त्र
मोचन फिरि होहै॥कर्णपर्वता आगे जानो।फेरि शल्यको पर्व बखानो।। ह्रदप्रवेश दुर्योधन कीन्हा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

गदा युद्ध करि धरणति लीन्हा ॥फिरि सारस्वत पर्व बखानेा। कीर्तन बंश तीर्थमय मानेा ॥ सौतिक आ
पर्व बिभत्स भरोहै अरु ऐषीक सुपर्व खरोहे ॥जलप्रदानको पर्व महाहै।स्त्रीबिलापको पर्व कहाहै॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आद्यपर्व कहि कै कहों बध चार्बाक अनूप । राक्षस कुलमै बिप्रको धरे रहो जोरूप ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

अभिषेक धर्मराजको भयो । प्रजा बिप्रगण आनदमयो ॥ शांतिपर्व ता आगे कहिअै । राजधर्म आपद फिरि लहिअै ॥ मोक्षदानकोपर्व कहोहै। शुक प्रश्नांतरगमन अहैाहै॥ब्रह्म प्रश्न अनुशासन पीछें । दुर्बासा आगम ऋषि ईछें ॥ फिरि अनुशासनपर्व अहोहै । फिरि भीषम दिव गमन लहोहै ॥ अश्वमेध शुचि पर्व पापहा । अनुगीता फिरि पर्व तापहा ॥ फिरि अध्यात्म ज्ञान प्रद हीको । आश्रमवासपर्व अति नीको ॥ दर्शन पुत्रपर्व ता आगे । नारदागमन फिरि मति पागे ॥ मौशलपर्व घोर क्षय कर्त्ता । प्रस्थानिक सुचलत जग भर्त्ता ॥ स्वर्गारोहणपर्व सिधारो । फिरि हरिबंश बंश अवतारो ॥ बिष्णुपर्व शिशुपूजन जामे। पर्व कंसबध भो मथुरामे ॥ भबिष्यपर्व ता आगे कहे । ए शतपर्व ब्यास मुख लहे ॥ कथा रूप शतखंड रहे जे । सूतपुत्र मुनि पास लहे ते ॥ यह अनुक्रमण सकल भारतको॥परम पयोधि पुण्य सारथको॥भारत पुण्यपयोनिधि केहैं।पर्व तरंग समान कहेहैं॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आठसहस अरु आठशत चौरासी हैं पद्य । मुनि बिय बिय अध्याय हैं आदिपर्व अनवद्य ॥
सभापर्वमे मुनि कही अठसत्तरि अध्याय । पद्य सहस द्वै पांचशत अरु ग्यारह सुखदाय ॥
अध्याय कही बनपर्वमे उनसत्तरि शत दोय । सहस एकादश पद्य कहि षटशत चौसठि जोय ॥
हैं बिराट बर पर्वमे मुनि रस मिति अध्याय । दोय सहस अरु अर्धशत पद्य परम सुखदाय ॥
कही पर्व उद्योगमे रस बसु शशि अध्याय । छाछटि शत अट्ठानबे पद्य कहे सुखदाय ॥
भीष्मपर्वमे एकशत है सत्रह अध्याय । पांचसहस बसुशत चौरासी पद्य परम सुखदाय ॥
नभ मुनि शशि अध्यायहैं द्रोणपर्वमे पर्म। आठ सहस नवशत अधिक नव हैं पद्य सधर्म ॥
उनसत्तरि अध्याय हैं कर्णपर्वमे पर्म । चारिसहस नवशत अधिक चौसठि भरे सुधर्म ॥
शल्यपर्वमे मुनि कही यह रस मित अध्याय । शत बत्तिस नव मिति कहे पद्य परम सुखदाय ॥
बसु शशि सौतिक पर्वमे ब्यास कही अध्याय । नभ मुनि बसु मिति पद्य हैं धरम धरे सुखदाय ॥
अध्याय स्त्रीपर्वमे कही सु सत्ताईश । पद्य सु पैानेआठसै सकरुण कहे मुनीश ॥
नव गुण गुण अध्याय हैं शांतिपर्वमे पर्म । चौदहसहस सातसै बत्तिश पद्य चारि नृप धर्म ॥
रसफल शशि अध्याय सह फल अनुशासन पर्व ॥ पद्यसु आठ हजारहं धरे धर्म अति सर्व ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ० प० तीनिअधिक शत कहत हैं अश्वमेधमे अध्याय। तैतिसशत नख मिति अधिक पद्य कहैं सुखदाय॥
आश्रम बास पर्वमे जानो दोय चारि अध्याय । पंद्रहशत षट अधिकहैं पद्य परम सुखदाय॥
आठ कहत अध्याहैं मुशलपर्वमे तीन । गुणशत नख मित पद्यहैं अनरथ करता जौन॥
मुनि प्रस्थानकपर्वमे कही तीनि अध्याय। गुण शत नख मिति पद्यहैं भाषे श्रीमुनिराय॥
स्वगारोहणपर्वमे हैं शरमिति अध्याय । ग्रह युग मिति वर पद्यहैं जिन्हें सुने अघजाय॥
हैं सुपर्व हरिवंशमे रविसहस्र मित पद्य । तिनहि सुने अघ मनुजके जात नष्टहैं सद्य॥
व्यास अठारह पर्वमे कहे जितिक उपपर्व। पर्व पर्वमे कहतहैं कथारूप ले सर्व॥
आदिपर्वमे जनविस सभापर्वमे अंक। सोरह है बनपर्वमे चारि विराट निशंक॥
ग्यारह हैं उद्योगमे भीष्मपर्वमे पांच । द्रोणपर्वमे आठहैं मुनिबर बरणे सांच॥
कर्णपर्वमे एक है शल्य पर्वमे चारि । सुषोप्तिपर्वमे तीनि है कथारूप निरधारि॥
पांच सु इस्त्री पर्वमे शांति पर्वमे चारि। दान पर्वमे एक है द्वै अश्वमेध बिचारि॥
तीनि सु आश्रमवासमे मुशलपर्वमे एक । और पर्वकें पर्वहै कहे व्यास सविवेक॥
पर्व अटारह भार्तके बरणे परम प्रमान । अब आगें हों कहतहें सेना संगम मान॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

अक्षोहिणी अठारह पूरी । कुरुक्षेत्रपर आईरुरि॥ दिवस अठारह दारुण कुद्धे। भिरे वीरवर बीर विरुद्धे॥ चारो वेद पढे जो कोई।भार्त पढे बिनु चतुर न होई॥ अर्थ धर्म अरु काम शास्त्र जो। व्यास कहे भारतमे हैं सो॥ सब पुराण भारतमे अैसें । नभमे सकलचराचर जैसें॥ क्रिया सकल गुण भारतमे हैं । मन अधीन इंद्री सब जेहैं॥ भारतमे जो कथा न पावैं। ताहि अमूल बिदुषगण गावैं॥दिन मे पाप करै नर कोई।भार्तपढे संध्या शुचि होई॥रजनी मे जो पातक करिहै। भोर पढत भारत सो हरिहै॥ गोशत सविधि विप्र कँहँ दीन्हें। सो फल भार्त श्रवणके कीन्हें॥ * ॥ स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीस्वरात्मजेन गोकुलगाथकविना कृतभाषायां भारतान्तर्गतेआदिपर्वदर्पणेद्वितीयोऽध्यायः

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

करतरहे जनमेजय राजा । कुरुक्षेत्रमै यज्ञ सुसाजा॥ उग्रसेन श्रुत सेन सुज्ञाता । भीमसेन सरु तीना भ्राता॥ श्वान एक तेहां चलि आयो। भाइन ताहि मारि दुरिआयो॥ सो वह श्वान सु रोवत भागो। अपनी माताके ढिग लागो॥ श्वानी रोवत देखो बारो । क्यों रोवत बुझो किन मारो॥ कहो श्वनीसों श्वान कुमारो। जनमेजयके भ्राता मारो॥ सो सुनि श्वनी पूत्रसों भाषी । का अपराध कियो कहि माषी॥ जातें भूप भ्रात्रि तोहि मारो। कहो सांच मति झूठ उचारो॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

नहि अपराध कस्यो तेहि भाषो । छुयो न हव्य न मुखतें चांषो ॥ सो सुनि ऋनी यज्ञ मह आई। अ
पुत्र हनने बज्रत रिसाई ॥ बोली ऋनी भूपसों ऐसें । मो सुत हनो दोष बिनु कैसें ॥ खायो कछून
हव्य तिहारो। बिनापराध पुत्र कत मारो ॥ यह सुनि भूप कछू नहि बोल्यो । तब ओंहि ऋनी क्रोध
अति सों ले ॥ बिनादोष तुम याहि हतोहै । अकस्माद भय तुम कहँ होहै ॥ अति बिस्माद भूप
सुनि पाए।सबसभाति भए पुर आए ॥ पुरी हस्ति नामे भय पागे। पूरोहित शुचि ढूढन लागे ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऋनीशाप मेरो हरै परन तपस्या धाम । ऐसो सु पुरोहित मिलै सिध्यहोय तौ काम ॥

॥ * ॥ उपजयकरीइंक ॥ * ॥

एकदिवस मृगया कों गए । जनमेजय नृप चिंतामए ॥ आश्रम श्रुतिस्वा मुनिबरको।
देखो जनमेजय अघहरको ॥ ताको पुत्र लखो तपभरो । पिता सुश्रुषनमे ततपरो ॥ नाम
लोस्वा ताको जशी । भयो मनहु क्षीरधितें शशी ॥ ताके निकट भूप चलिगए । चहत
पुरोहित करि मुदमए ॥ नमस्कार करि मुनिसों कही । कथा आपनी जो चित रही ॥
होय पुरहित पुत्र आपको । एमेटैगें दाप शापको ॥ मुनि नृपसों मुनिबर यह कही । भूप
कहत हो सोसब सही ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सौंपिनिसों यह पुत्र हमारो । जनमो तेजपुञ्जसों भारो ॥ भरो तेज तपबीर्ज हमारो । गिरो बेगबस
हम न सँभारो । सौंपनि बिधिबस पान करो सो । तप प्रभाव तेहि गभ धरो सो ॥ पुत्रभयो हम
ताते पायो । महातेजमय तपबर छायो ॥ है यह एक गूढ़बत धरे । कहत भूपसो सुनऊ बिचारे ॥
ब्राह्मण यासों जो कछु मागै । देततादि सो बिलंब न लागै ॥ जौ याको यह बत निरबाहो । लेऊ
करो उपरोहित चाहो ॥ है इतेक तपतेज सभारो । देवशापसो राखनहारो ॥ एवमस्तु कहि भूपति
ल्याए । उपाध्यायकरि आनद छाए ॥ ऋषिसुत जाहि दिखावै जोई । बिना बिचार दीजियै सोई ॥
इह आज्ञा भ्रातनका दीन्हों । नृप शासन तिन शिर धरि लीन्हों ॥ राजकाज भ्रातनको दैकै । धीर
बीर सेनासंग लै कै ॥ तट शिलापर भूप सिधारे । जनमेजय अति बलसों भारे ॥ जीतिदेश सो
निजबस कीन्हो । बसे आपु तहँ आनद लीन्हो ॥ धौम्यनाम मुनि तहँके बासी । तीनि शिष्य ताके
तपरासी ॥ बेदारुणि उपमन्यु सुनामा । गुरु सुश्रूषन मे अभिरामा ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धौम्य खेतकी मेड बांधिबे अरुणिहि दयो पठाइ । दृष्टिभई जल बहनन पावै आज्ञा दई सुनाइ ॥
अरुणि मेंड बाधन लगे करि करि बहुत उपाय । एकराह जल नहि थमैं आपु परो तहँ जाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० रोकि रहो जल कछुक दिन तब मुनि कियो विचार। अरुणि गयो कितकों कहो हे उपमन्यु उदार॥
मेंड बांधिबे खेतकी जबसों दयो पठाय। आरुणि वाहीदिनगयो करत कहा उत जाय॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

मुनि करिसोच तहां चलि आए। आरुणि आरुणि टेर सुनाए॥ मुनि सुनि वचन अरुणि उठि आयो। कर्दम भरो सजल मुदछायो॥ करिप्रणाम भो मुनि ढिग ठाढो। कहि विरतांत बाढो॥ सुनि मुनि तासु कर्म गुनि गाढो। आज्ञाँ पालनते मुद बाढो॥ मोदसों आशिर्बाद दयो मुनि ताकों। श्रीश्रुति शास्त्र सहित प्रतिभाको॥ धरे होहु अब गृहके बासी। आरुणि जाहु भरे छवि खासी॥ मुनिपद बंदि अरुणि मुदछाए। गए देश पंजाब सोहाए॥ बटु उपमन्युहि मुनि मुद लीन्हें। गो चारण को शासन दीन्हें॥ सुनि उपमन्यु हरषसो पागे। गोगोवत्स चरावन लागे॥ बूझे एक दिवस मुनि तासों। जीवनवृत्ति करो तुम कासों॥ हौ सुस्थूल गात तुम जातें। सुनि उपमन्यु कहे इमि तातें॥ मागि नगरतें भिक्षा ल्यावैं। सो भोजनकरि क्षुधा मिटावैं॥ मुनि बोल जे भिक्षा ल्यावो। खाऊ जबै मम आज्ञा पावो॥ सुनि उपमन्यु मागि जो ल्यावैं। सो मुनिके ढिग धरि मुख पावैं॥ सोभिक्षा सिगरो मुनि लेहीं। नहि भोजनको आज्ञा देहो॥ ते मुनि ढिग धरि भिक्षा जाहीं। फेरि मागि लै पुरतें खाहीं॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तै सोई लखि पीन तेहि मुनि बोले इमिबैन। भिक्षा हम सब लेत हैं तुमकों शेष रहैन॥
कहो कहा अब खातहौ जातें मोटो गात। सुनि उपमन्यु मुनीशसों बोले साची बात॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

हम प्रथम भिक्षा ल्याय। तव निकट धरि फिरि जाय॥ निति मांगि पुरमे खाय। वन जाय सेवत गाय॥ सुनि कहे इमि मुनि राय। तुम करत हौ अन्याय॥ तुमकों न लज्जा हाय। दै बार मांगत धाय॥ अब वृत्ति यह तजि देऊ। यह शुभद शिष सिखि लेऊ॥ मुनिको निदेश सु पेऊ। उपमन्यु मानि सनेऊ॥ फिरि विपिनिमे चऊ कोद। चलि चारि सुरभि समोद॥ सह सुरभि संध्या पाय। भो खरो मुनिढिग आय॥ मुनि देखि ताकहँ पीन। इमि कहे परम प्रबीन॥ अब कहा तुम उत खात। जेहि रहत पीवर गात॥ सुनि कह्यो शिष्य सुजान। हम करत गोपय पान॥ यह करतहौ अन्याय। मम बिना आज्ञा पाय॥ सुनि मानि बटु बन जाय। फिर लगो चारण गाय॥ उपमन्यु निशि सुखदेखि। गुरु गेह गाइन घेरि॥ गो परम आनद छाय। वर बंदि मुनिके पाय॥ *~*

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धौम्य सुमुनिके निकट सो ठाढो भयो बिनीति। फिरि मुनि बूझो शिष्यसों लए परिक्षा रीति ॥
बृत्ति रोध हम सब कियो कहो कहा अबखात । सत्य कहो उपमन्यु सो जाते पीवर गात ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

उपमन्यु सुनि गुरुबैंन ।इमि कहो पूरित चैंन॥बछरा करैं पयपान।मुख कढत फेण सुजान॥ हम पानसो करिलेत । प्रभु क्षुधा मेटन हेत ॥ मुनि कह्यौ तासों फेरि । तोबच्छ करुणा घेरि ॥ पय देत सिगरो डारि ।कृश होहिँगे निर्धारि ॥ यह तुम्है जोग्य न पान । उपमन्यु सुनऊ सुजान ॥ कहि सो तथास्तु सुगाय । लहि गयो आज्ञा पाय ॥ लहि क्षुधाको उत पात । सो अर्कपत्रन खात ॥ लहि अर्कदलको धर्म । भे अंधलोचन पर्म ॥ बन फिरत चारत गाय । सो गिरे कूवां जाय ॥ नहि भए आयो साँझ । मुनि शोच किय मन माझँ॥ सबवृत्ति कीन्हो रोध । एहि हेत धरि हिय क्रोध ॥ सो गयोरहि वनमाहि।उपमन्यु आयो नाहि ॥ यह बोलि मुनिबर नाथ । बनचले शिष्यन्ह साथ ॥ तहँ लगे टेरन जाय । उपमन्यु नाम सुनाय ॥ उपमन्यु सुनि मुनि वैन । मधि कूपतें लहि चैन ॥ इमि कहे वैन सुनाय । हम कूपमे मुनिराय ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गिरे चक्षुतें अंध व्है अर्कपत्रकों खाय । अब आगे सुख होयगो कृपारावरी पाय ॥
यह सुनि मुनि करुणा सहित बोले बचन ललाम। स्तोत्र पढऊ तुम दस्रको होंहि नैन अभिराम॥
उपाध्याय श्रुतिकी रिचा दीन्ही जौन वताय । जपन लगे उपमन्यु सो गुरुकी आज्ञा पाय ॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

तिहि स्तोत्र जप बिधितब करे । तासों दस्र मोद हिय भरे ॥ आएहि कृपाकरि तेहां । हो उपमन्यु बिप्रबर जेहां॥लागे देन पूप ते ताको। कहि इमि बिप्र सुभक्षऊ याको ॥उपमन्यु रुवाच । सुनऊ दस्र हम पूप न लेहैं। खैहें जब गुरु आज्ञा देहैं ॥ यह सुनि दस्र मोदसों पागे । दृढ गुरु भक्ति देखि अनुरागे ॥ बर बर दयो कृपासों भारे।दिव्य होंहि गे द्विज चष थारे ॥है इहि ज्ञान शतो गुणभारो। शास्त्र श्रुति स्मृति सो निरधारो ॥ यह कहि दस्र स्वधाम सिधाए । गुरुके ढिग उपमन्यु सुआए॥ कहि बृत्तांत गुरूपद बंदे । सुनत धौम्य मनमाह अनंदे ॥ मुनि श्रीबर बर ता कहँ दीन्हों।बिदा ताहि निज घरकहँ कीन्हों॥ तब मुनि बेद शिष्यसों भाखे । सेवाकरण हेत ढिग राखे॥ बेद करण गुरुसेबा लागे । बऊत दिबसलों आनद पागे ॥ अति निष्कपट करत लखि सेवा । भए

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० प्रसन्न महामुनि देवा ॥ तुम सरबज्ञ होंऊँ बरदीन्हों । विदा आपने घरकँह कीन्हों ॥ व्है सरबज्ञ बेद घर आए । करि गृहस्थ आश्रम सुख छाए ॥ गुणमिति शिष्यबेद तह कीन्हो । स्मृतिशास्त्र श्रुति शिक्षा दीन्हों ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बेद्न शिष्यनसों कछू कारज करिबो कहत। गुरुकुलको अनुभूत करि सहो कष्ट जो महत ॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

जनमेजय अरु शतानीपौष । कछू यज्ञ करिवेके तोष ॥ उपाध्याय कीन्हों द्विजबेद । चले भूपसँग परम अखेद ॥ शिष्यउत्तंकहि ज्ञानि सुजान। सब गृहकार्य सौंपि मतिमान ॥उचितकार्य्य कीजो उत्तंक। सौंपि तुह्यें हम होत अशंका।यह कहि वेद गए नृपसंग। सोंगृह कारज कियो अभंग ॥ गुरुकुल तियन सुमत ठहराय । इमि उत्तंकसों कहो बुझाय ॥ उपाध्यायनींकों ऋतुस्नान । सुनऊ विप्र यह वचन प्रमान ॥ ऋतुफल जातें व्यर्थ न होय । हेउत्तंक करऊ तुम सोय ॥ द्विज उत्तंक सुनत यह बैंन । कहो विचारि उचित यह है न ॥ उचित कार्य्यकीजो तुमसर्ब । अनुचित करत होत जे खर्ब ॥ उपाध्याय यह वचन सुनाय । गए सौंपि गृहकृत सुखदाय ॥ यह सुनि ते तिय रहो चुपाय । ककुदिन बीतें यज्ञ कराय ॥ उपाध्याय आए फिरि धाम । सुनेशिष्यके काम ललाम ॥ यह वृत्तांत श्रवण करि बेद । जानि शिष्य शुचि सुमति अखेद ॥ हे उत्तंक जानि तो धर्म ।हम प्रसन्न तुमपँह हैं पर्म ॥सफल होंहि तव सब मनकाम।अब उत्तंक जाऊ निजधाम॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गुरुपद बन्दि कृतार्थ व्है चले स्वगृह उत्तंक । गुरुके चरण सरोज भजि को न होत निःशंक ॥ चलत समे गुरुसों कहा यों उत्तंक विनीत । देहि सोहम गुरदक्षिणा आज्ञा करऊ सप्रीति॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

यह सुनि विहसि कहो द्विज बेद। कछु दिन रहऊ उत्तंक अखेद॥फिरि कछु दिन रहिकै उत्तंक । कही दक्षिणा हेत निशंक॥ फिरि सुनि कहो सुमुनि यह बैंन । जाऊ सु मो पतिनीके अैंन ॥ कहै सो देऊ जाय उत्तंक।यह सुनि तहाँ गए निःशंक ॥ उपाध्यायनीके ढिग जाय । कहे विनीत बचन सुखदाय ॥ गुरुसौं कह्यो दक्षिणा हेत । चलत समै गुणि उचित सचेत ॥ गुरु आज्ञा दिए सहित सनेऊ । गुरु पत्नी मांगै सो देऊ ॥ अंब आपु जो कहिअै मोहि । गुरु प्रसादतें दैहौं तोहि ॥ सुनि गुरुपत्नी बोली बैंन । पौष्य भूप पहँ आऊ सचैंन ॥ पौष्य स्त्रीके कुण्डल जैंन । ल्यावऊ मागि दीजिअै तैंन ॥ है कछु कारज चौथे चौस । वारिन ल्याय दीजिये औस ॥ तासों भूषित होय प्रसन्न । द्विज निर्भरि पर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सींगी अन्न ॥ चौथे दिवसआनि जो देऊ । सकल सिद्धि सह संपति लेऊ ॥ नतरु सुनऊ
यह बचन अशंक । तव विपत्ति ह्वै है उत्तंक ॥ सुनत पौष्य ढिगकी गहि गैल । चले मिलो
पथमें एक बैल ॥ पुरुष एक तापैं असवार । ज्यों पहार पर लसत पहार ॥ *🐟*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वृषारूढ जो तेहि कहो सुनऊ बचन उत्तंक । याको गोमय खायकै जाऊ चले निःशंक ॥
जबहून नहि मानो कही तव तेहि कह्यो रिसाय।लही सिद्धि तो गुरु प्रथम याको गोमय खाय॥
ताको गोमय खायकै द्विज बर चलो उताल । ठाढे करि आचंमन गो जहाँ पौष्य क्षितिपाल ॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

पौष्य भूप बैठे हेंजे हाँ । द्विज उत्तङ्क खडे गे तेहाँ ॥ करि प्रमाण नृप नाम सुनायो । द्विज
आसिष दै आनद पायो ॥ कहो भूप केहि कारण आए । देखत तुह्मैं व्यथता छाए ॥
मागैं भूप हमै सो दीजै । धर्म रहै तो जग जश लीजै ॥ महिषी रानी जौन तिहाँरी ।
ताके कुण्डल देऊ उतारी ॥ पौष्य कही ताके ढिग जैअै । भौन हमारे विलंबु न
लैअै ॥ बिप्र गयो तँह ताहि न देखो । आयो निकसि भूप परतेखो ॥ कहिवो अनृत न
लायक तोकों । भूपति उचित न हँसिबो मोकों ॥ कहो बिचारि भूप यह जानो । हो
उच्छिष्ट भरे द्विज मानो ॥ पुरुष अशुद्ध न देखत वाकों । पतिव्रत तेजश्पूर प्रभाकों॥सुनि
उत्तंक स्मरण तब कीन्हो।खडे होय हम आचमन लीन्हो ॥ होय उदङ्मुख आचमन धारो।
कर पद धोय शुद्धता भारो ॥ स्मरण सप्तव्याहृतिको करिकै । अंतह पुर पैठे मुद भरिकै ॥
तब सुपौष्यकी रानिहि देखो । पतिव्रत तेज पुंज अव रेखो ॥ अभिवन्दन करि आनद
छाए । बूझो बिप्र कहासैं आए ॥ कोन हेतसों कहो निशंकू । यह सुनिकै बोले उत्तंकू ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हौं गुरुसों गुरुदक्षिणा मागन कहो बिनीति । उपाध्याय मोसों कही भरें हृदयमे प्रीति ॥
मम पत्नी पँह जाऊतुम वे मागैं सो देऊ । गुरु आज्ञा तासों कहो सविनय सहित सनेह ॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

गुरुपत्नी बोली सुनि बैन । जाऊ पौष्यभूपतिके अैन ॥ उनको पत्नीकुण्डल जौन । पहिरें
मागि देऊ तुम तौन ॥ ते तुम मोहि कृपा करि देऊ । पुण्यसहित यश आनद लेऊ ॥
यह सुनि रानी पात्र बिचारि । सहरष कुण्डल दए उतारि ॥ कुण्डल दे फिरि मुनिसों
बैन । रानी कहो पूरि हिय चैन ॥ हे उत्तंक जो तक्षक नाग । करि कुण्डल पर अति
अनुराग ॥ माँगेंा बऊत ताहि नहि दीन्ह । करि उपाय सो चाहत लीन्ह ॥ रानी सों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० बोले उत्तंक । हे देवी तुम रहो अशंक ॥ तक्षक मोहि न धर्षण जोग । हौं गुरुभक्त विप्र मुनिलोग ॥ बिदा भए तामों तपरास । गए पौष्य भूपतिके पास ॥ कह्यौ प्रसन्न भयो हों भूप । आशु बिदा कीजै सुख रूप ॥ भूप कहो मुनिसों सुखपाय । पात्र मिलत भाग्यनसों आय ॥ आजु अन्न भोजन करिलेऊ । तृप्तहोय फिरि जायऊ गेऊ ॥ पाक होय जो नृप उपपन्न । बिलंब न करऊ देऊ सो अन्न ॥ सिद्ध रहो सो अन्न मगाय । पौष्य धोय बैठाए पाय ॥ शीतल अन्न बारसह देखि । मुनिबर कीन्हों क्रोध बिशेखि ॥ *◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शीतल अशुचि सकेश जो अन्न दयो तुम मोहि । याही फलतें होऊगे अंध कहत हौं तोहि ॥

॥ पौष्योवाच ॥

कहि अशौच शुचि अन्नकों मोहि दयो तुम शाप । तुमहूँ होऊ अपुत्र द्विज याको पाऐं पाप ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

यह सुनो द्विजबर बैंन । इमि कहो तपबर अैंन ॥ तव अन्न अशुचि सबार । यह प्रथम करि निरधार ॥ प्रति शाप तब तुम देऊ । लखि आइ नीरे लेऊ ॥ तब पौष्यगे आसन्न । सह केश देखो अन्न ॥ सो अशुचि मनमे मानि । इमि कहो जोरें पानि ॥ सहकेश बस अज्ञान । यह अन्न कीन्हों दान ॥ करि क्षमा यह अपराध । कुरु शाप फलको बाध ॥ जेहि अंध होंहि न नैन । यह कऊ अनुग्रह बैन ॥ मुनिरुवाच ॥ मो बैंन होत न बन्ध । कछुद्योस रहिहो अन्ध ॥ मुनि कह्यौ अपनो शाप । नृप करऊ मिथ्या दाप ॥ सुनि पौष्य बोले बैन । यह बश्य हमरे है न ॥ नृप कहऊ याको हेत । जो शाप नहिँ हरिलेत ॥ द्विज सुनऊ बंशज रीत । द्विज हृदय ज्यों नवनीत ॥ मुख तीक्ष्ण छुरिक समान । कहि तजत क्रोध महान ॥ हृदयास्म क्षत्री गोत । नवनीतसो मुख होत ॥ मुख कहत कोमल बैन । हियमध्य ऋजुता है न ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहि अशौच शुचि अन्नकों दोष देतहौ बिप्र । यह कहिकै प्रतिशाप तुम हमकों दीन्हो क्षिप्र ॥ देखि अशुचि फिरि अन्नकों भूपति भए बिनीत । याते शाप न रावरो करिहै हमकों भीत ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

यह कहिकै उत्तंक सिधाए । कछू दूरि पथमे जब आए ॥ क्षपणक एक नग्न तहँ देखो । अनु आवत मनमे छल भेखो ॥ क्षण लखि परै क्षणकमे नाहीं । जैसें चल बादरकी छाहीं ॥ मुनि कुण्डल क्षिति ऊपर धारे । कछुक दूरि जल लेन सिधारे ॥ तब क्षपणक सो आतुर आयो । बेग सहित कुण्डल लेइ धायो ॥ जल कारज करि करपद धोए । व्है पवित्र क्षपणक सो जोए ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कुण्डल लए जात दुखछाए। बेग सहित ता पीछे धाए ॥ गए निकट तब क्षपणक सोई। बिलिमे पैठि गयो अहि होई ॥ कुण्डल लए मोदसों छायो। तक्षक नागलोक कहँ आयो॥ मुनि रानीको बचन बिचारे। यह तक्षक मनमे निरधारे ॥ लकुट खेद बिल खोदन लागे। द्विजवर महा दुःखसों पागे ॥ लखि द्विजदुखी दंड भरि दाया। तासु सहायक बज्र पठाया ॥ बज्र लकुटमे पैठि सोहायो। भेदि भूमि पाताल देखायो ॥ नागलोक तेहि पथ मुनि गए। अति बिचित्र पुर देखत भए ॥ नागस्तुति तहँ करिबे लागे। द्विज उत्तंक खेदसों पागे ॥ नागनकी सुस्तुति बहु कीन्हो। तक्षक कुण्डल ताहि न दीन्हों ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इस्त्री देखि दोय तहँ बिनति सुपट अभिराम। सूत पसारें दोय विधि अति आयत सितश्याम ॥
फिरि देख्यो तहँ चक्र एक जामे बारह आर। ताहि फिरावत हैं खरे बालक षट सुकुमार ॥
एक अश्व देखो तहाँ सुन्दर परम उदार। दिव्यरूप तापैं लखो पुरुष एक असवार ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सुस्तुति तासु करण मुनि लागे। बेद रीतिसों आनद पागे ॥ सुस्तुति सुनि सो बोले बानी। देख्यो दृष्टि कृपासों सानी ॥ हेतु आपनो द्विजबर भाषो। सो करि देउँ गोपि मति राषो ॥ तब मुनि कहेउ क्रोध मन घेरे। ए सब होहिं नाग बस मेरे ॥ सो सुनि कहा तुरँग असबारे। तुरँग गुदा फूँकऊ बलभारे ॥ अश्व गुदा फूँको मुनि जैसें। अग्नि सधूम कढी तन तैसें ॥ अति संताप नाग पुर छाए। व्याकुल व्हैं तँह तच्छक आए ॥ व्है बिनीत कुंडल तब दीन्हों। ते उत्तंक मोद भरि लीन्हों ॥ गुरुपत्नी कँह आजु न दीन्हों। कुंडल व्यर्थ परिश्रम कीन्हों ॥ चौथे बास दूरि हम लेखो। यहि चिंतावस मुनिकँह देखो ॥ दिव्य पुरुष करुणाकर बानी। इमि कहि सकल शोच ता भानी ॥ यहि तुरंग चढि तुरित पधारो। शोच करऊ मति साहस धारो ॥ क्षणमे गुरुकुलके ढिग जैहो। चढो बेगि अति आनद पैहो ॥ मुनि उत्तंक तापँह चाढ आए। केश सुखावत गुरुतिय पाए ॥ कुण्डल देइ बंदना कीन्हों। गुरुपत्नी मुद आशिष दीन्हों ॥ बिदा होय मुनिवरपंह आए। करिप्रणाम आनदसों छाए ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

क्रमसों कहि वृत्तांत सब बिनय सहित उत्तंक। फिरि बूझन मुनिसों लगे रही जो मनमे शंक॥
कौन ऊती तिय दोय वै बिनति रहीं पट जौंन। कहा चक्र बालक कहा तुरँग पुरुष हो तौंन ॥
बृषारूढ को बृषभ हो कहा पुरीष अभक्ष्य। सो निरणै करिकै कहो हे मुनिबर मतिलक्ष्य ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प०

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धाता नाम ज्ञानको आम। मायाको सुविधाता नाम ॥ धाता और बिधाता तीय। निशि दिन श्याम श्वेत गुण कीय ॥ हायनचक्र मासहें आर। बालक ऋतु षट रहे उदार ॥ हयशिखि गुर ईश्वर सु सवार। जिन्ह तुम्हार कीन्हों उपकार ॥ बृष ऐरावत इंद्रारूढ। तासु पुरीष सुधा गुण गूढ ॥ सुनत तज्यो संशय उत्तंक।गुरुपद बन्दि भए निःशंक ॥ अब उत्तंक गेहकों जाऊ। सुख आसिद्धि होइ तुवलाऊ ॥ मुनिसों विदा भए उत्तंक। हास्तिन पुरकों गए निशंक ॥ करें महा तक्षकपर क्रोध। कारण मानि बैरको बोध ॥गए जहां जनमेजय भूप। बैठे सभामध्य सुख रूप ॥ तक्ष शिला जयकरि नृप आय। मंत्रिन मध्य लसत सुखदाय॥गए नृपतिढिग मुनिउत्तंक। ज्यों सुरपतिपहँ गुरु गुणबंत ॥ जय आसिष दीन्हो मुनिराज। नृप प्रणामकिय सहित समाज॥ बोले समय पाय उत्तंक। परम सुनीत बचन निःशंक ॥

॥ उत्तंकउवाच ॥ है करिबे कहँ कारज जौंन। तुम भूपाल करत नहि तौंन ॥

॥ सूतउवाच ॥ यह सुनि बचन बिप्रको भूप। पूजन कियो यथा अनुरूप ॥

॥ जनमेजय उवाच ॥ करिप्रतिपाल प्रजा निःशंक। क्षात्रधर्म पालत उत्तंक ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कीवे कौन जोग्य कारज है कहो मोहि उत्तंक। जौन हेत आए इहा हे द्विज परम निशंक ॥

सूतउवाच॥सुनिकै ए नृपके बचन बोले बिप्र सुनीति।कारज कीजै आपनो न्याय धर्मकी रीति॥

उत्तंकउवाच॥तक्षक मारो तव पिता करिकै अति अन्याय।पिताबैर लोबो उचित लहिकै समय॥

सहायकाल कार्जको बिधिरचित है यह सुनो नरेश।होऊ पितातें अरुण तुम सुनिए यह उपदेश॥

॥ जयकरीछन्द ॥

डँस्यो दुष्ट तेहि बिनापराध। मरे भूप यशसिंधु अगाध ॥ काश्यप बिषहर आवत देखि। ताहि निवारेसि कल अवरेखि ॥ सर्प्पसत्र कीजै नृपराय। ज्वलित अग्निमे ताहि जराय ॥ पिताबैर तासों नृप लेऊ। मेरो हित कीजै करि नेऊ ॥ भयो क्रुद्ध तक्षक परभूप। ज्यों घृत सिञ्चित पावक रूप॥ मंत्रिनसों पूछो नृपबीर। पितामरण दुख धरे गभीर॥सबहिन पिता मरण वृत्तान्त। कहो भए नृप क्रोधाक्रांत ॥ पहिले कहो यथा उत्तंक। मंत्रिन कहो तथा निःशंक ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथकविनाकृतमहाभारतदर्पणेपौष्योपाख्यानेसमाप्तःसप्तमोध्यायः॥

* ॥ दोहा ॥ * ॥

शौनक ऋषिके सत्रमे बैठे ऋषि समुदाय। तिनके मध्य सूत पौराणिक सोहत आसनपाय ॥

6482.
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सूत कह्यो तुम बज्रत श्रम पढत पुराण सुजान। सुनिन कहो तब सूत फिरि बोले करि सनमान॥
कहा सुननकी रावरी है इच्छा मुनि तज्ञ। ऋषिरुवाच॥ हौ तुम सूत पुराणके कहिबेमे सरबज्ञ॥
कथा सुरासुर मनुजकी गन्धर्बनकी जौन । बेत्ता शौनक मुनि बिना बैठै श्रोता कौंन ॥
अग्निहोत्र करि आइ जब बैठे मुनि सरबज्ञ । कहैं सो कहिये आपु तब कथा पुराणिक तज्ञ ॥

॥ सूतउवाच ॥

शौनक मुनि जब आइकै बैठहिंगे तप धाम। आज्ञा करिहैं जौन सोकहि हैं कथा ललाम॥
करि तर्पण सुर पितरको जब बैठे मुनि आय। कथा कही सोकहन तब लगे सुनन सुखदाय॥
यज्ञ सदनमे ब्रह्मऋषि जहँ बैठे सरबज्ञ । लहि आज्ञा लागे कहन कथा सूत सुत तज्ञ ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृते महाभारतदर्पणे आदिपर्वणि आश्रमप्रवेशो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

शौनकउवाच ॥ पिता तुह्मारे सकल पुराण। प्रथम कहे हे सूत सुजान ॥ ते तुम सकल पढे हौ तात। नृप बर बंश कथा बिद ख्यात ॥ कही पिता तव सुनी सु जौंन। तुमहूँ कहो सुनैं हम तौंन ॥ तातें कहहु प्रथम भृगुबंश। सुनै सो हम अति परम प्रसंश ॥

सूतउवाच ॥ पढे जो बैसंपायन पास । सो हम कहत सहित इतिहास ॥ देव मनुज पूरित भृगुबंश । सो कहियत हम सुनहु प्रशंस ॥ स्वयंभुवब्रह्मातें भृगु पूत । वरुणयज्ञपावकसंभूत ॥ भृगुके पुत्र च्यवन तप धाम । ताके प्रमति भए अभिराम ॥ भए प्रमतिके सुत रुरु तज्ञ घृताचीतें सुनि सरबज्ञ ॥ रुरुके भए शुनक तप धाम । महत पितामह तो मुनि नाम ॥
शौनकउवाच ॥ भृगुके सुतको च्यवन सुनाम। भयो कौनविधि सूत ललाम ॥ सूतउवाच ॥
भई पुलोमा भृगुकी दार । तासु बीर्यको गर्भ अदार ॥ धरो ताहि तजि सपरण दूरि। भृगु मुनि गए अभय मति पूरि ॥ राक्षस तहाँ पुलोमा नाम । सूनो जानि गयो मुनि धाम ॥ भृगुपत्नी कहँ देखो जाय। व्याकुल भयो काममद छाय ॥ मुनि पत्नी तेहि अतिथ बिचारि । दीन्हो कंद मूल फल बारि ॥ दुष्ट सो काम मथमतवारि । व्है हरिवेको कियो बिचारि॥ भयो कार्य यह मनमें जानि । पहिले मै माग्यो यह मानि ॥ याके पिता दई नहि मोहि । भृगुकों दई मोहि लघु जोहि ॥ यह दुख दहत हृदय निति मोर। यातें हरण करौं बर जोर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अग्निहोत्र गृहमे बरत अग्नि देखिकै दुष्ट । पूछन लागे अग्निसौ हरण बिचारे पुष्ट॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ० प० अग्निसुनौ यह कौनकी भार्या झूठ कहौ न। भार्या हेत प्रथम हम मागों अनु सो न्याय रहौं न॥
भृगुकों दइ व्याहि फिरि याके पिता अनृत करि कर्म। यह भार्या काकों उचित कहो ऊतासन धर्म॥

॥ * ॥ सूतउवाच। जयकरीछन्द ॥ * ॥

भृगुपत्नीमे करि संदेह। कहत अग्निसों फिरि फिरि एह॥ बसत चराचरके तुम बीच। कहो अग्नि यह सत्यनि भीच॥ हम मांगी ही भार्या हेत। सो ब्याही भृगु करी अनेत॥ सोई हैं यह पावक तोहि। बूझत सत्य सुनावऊ मोहि॥ तुमसों सुने सत्य सो मानि। भृगुभार्या हरिहौं हों जानि॥ जातबेद साँचो तुम कहऊ। नातरु श्राप देत हम लहऊ॥ यह सुनि वचन ऊतासन तास। भृगुपत्नी यह कही सत्रास॥ *

अग्निरुवाच॥ प्रथम वरी तुम भार्या हेत। दानव तनय सुनऊ यह नेत॥ बिधिवत तुम नहि पाई व्याहि। पितुदीन्ही मृतुकों बिधि चाहि॥ वेद विहित करि साखी मोहि। भृगुकों दई न दीन्ही तोहि॥ अनृत कहत नहि हम अभिराम। सत्य पुलोमा भृगुकी बाम॥ * ॥ इतिपुलोमापर्व॥ *

अग्नि बचन यह सुनिकै दुष्ट। हरी पुलोमाकों अतिरुष्ट॥ धरि बराहको रूप सवेग। हरिलै चलो न राखि दरेग॥ मातृहरण सो गर्भ बिचारि। गिरो कोपकरि तेजस धारि॥ भयो रोषव सच्युत सो गर्भ। च्यवन कहत यातें सुनिसर्ब॥ भरो तेजसों सूर्य समान। भस्मभयो लखिदैत महान॥ *

॥ * ॥ दोहा॥ * ॥

तिहि तिय लयो उठाय सो अर्भक अति अभिराम। भरी महादुखसों चली रोवति अपने धाम॥
भृगुभार्या रोवति लखें बिधि आए ता पास। शांत बचन कहिकै हरे दुःख दुसह सबतास॥
ताके लोचन वारितें प्रगटी नदी ललाम। चली सु अनु मुनि बधूके बधूसरा तेहि नाम॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

भृगु सुनि जन्म बिधान सोहाए। राखो नाम च्यवन सुखछाए॥ भृगुस्नान करि आश्रम आए। सुनि वृतांत क्रोपसों छाए॥ भृगुरुवाच॥ हरण हार राक्षस कंह तोकों। दयो बताय कहो किन मोकों॥ जानत तुम्हैन राक्षस हो सो। भृगुमुनिकी है भार्या को सो॥ सत्य बताय देहू तुम ताकों। अबही देंउ शापमै वाकों॥ पुलोमाउवाच॥ अग्नि बताय ताहि प्रभु दीन्हों। तब मोहिं दुष्ट हरण मो कीन्हों॥ तो सुत तेजस मोहि छुडायो। वाहि भस्म करि क्षिति पर नायो॥
सूतउवाच। सुने पुलोमासों भृगु ऐसें। भरे क्रोधकेदारुण रैसें॥ अग्नि कर्म फलसों तुम जूहौ। सर्व भक्ष तुम अबते हूहौ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणेपुलोमोपाख्यानेनवमो ध्यायः॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आप दियो भृगु अग्निकों ऐसो करि अति क्रोध। अग्नि कहो साहस करत ऐसो अज्ञ अबोध॥ आ
धर्म मान सांचो सुबुध जानत सकल समान । पूछत तासों अनृत नहि भाषत सुनहु सुजान ॥
बूझें साक्षी जानिकै सत्य कहत नहि जैंन । सहित सप्तपर पूर्वके परत नरकमे तैंन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जानत साक्षी पूछे जैंन। सत्य असत्य कहत नहि तैंन ॥ सोई पाप ताहिको होत। यातें कहत न कीन्हों ओत ॥ ब्राह्मण वर्ण मान्यहै मोहि । नातरु आप देत हौं तोहि ॥ जानतहौ तुम मोहि सुजान । बसत चराचर मध्य समान ॥ मख सत्रादिकमे करि हेत। वेद विहित जे आऊति देत ॥ देव पितरसम सहित बिबेक । पर्व पर्वमे व्है कै एक ॥ देव पितर भुञ्जत सु अखेद । मुख सुर पितर कहत मोहि वेद ॥ अमा पितर पूनोमे देव । मो मुख कव्य हव्यको सेव ॥ देव पित्र मुख व्है सरबज्ञ । सर्व भक्ष्य छूहैं किमि प्रज्ञ ॥

सूतउबाच ॥ अग्नि भए कहि अंतर ध्यान । बन्द भये सब यज्ञ बिधान ॥ दुखित भए सुर मनुज महान। अग्नि कार्य करताको आन ॥ ऋषिन कहो देवनके पास । बिना अग्नि सो यज्ञ बिनास ॥ स्वाहा स्वधा बषट भए बन्द । अग्नि बिना त्रिभुवनमे दन्द ॥ गए देवता ऋषि बिधि पास। कहो अग्नि बिनु त्रिभुवन नाश ॥ दयो अग्निको भृगु जो आप । सो बिधि आगे कियो प्रलाप ॥ अग्नि देवमुख है सुनु तैंन। होय सो सर्व भक्ष्य बिधि कैंन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देवऋषिनसों सबिधि सुनि बिधि करि हिए बिचार। आबाहन करि अग्निको बोले बचन उदार॥
लोकनके कर्ता तुम हर्ता सुनहु अग्नि मो बैन । क्रिया प्रवर्त्तक यज्ञकी तुमही पालत चैन ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

जाते क्रिया लोप नहि होई। सुनऊ ऊताशन कीजै सोई ॥ तुमहौ पूत ऊताशन पूजे। सर्व भक्ष्य मति मुखतें हूजे ॥ गुद द्वारमे ज्वाला हैते। भक्षण सर्व सुनऊ करि हैंते ॥ होत अशुचि शुचि रविकर परसें। त्यों सब तो ज्वालामे ऊरसें ॥ अपने तेजसतें करु साँचो। मुनिको आप होइ नहि काँचो ॥ भाग आपनो देवनको मो । मुखमे लेऊ न तुम अप सोसो ॥ सूतउबाच ॥ बिधिकी आज्ञा लहि मुद भारे। एवमस्तु कहि अग्नि सिधारे ॥ ऋषि सुरगण जहँके तहँ गए। यज्ञ करण बिधि मुनिगण ठए ॥ सुर नरलोक मोदसों छाए। छुटो शाप पावक मुद पाए ॥ भृगुसों शाप अग्नि इमि लहो। यह इतिहास पूर्वमुनि कहो ॥ इतिपुलोमापर्व ॥

च्यवन सुकन्यामे जनमायो । प्रमति नाम सुत तेजस छायो ॥ भए प्रमतिके सुत रुरु नामा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० पाय घृताची उत्तम बामा ॥ रुरु सुत भए शुनक तेजस्वी । प्रमद्वरामे परम जशस्वी ॥ रुरुके चरित सकल मुनि सुनिए । सह बिस्तार कहत सो गुनिए ॥ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥

बिश्वावसु गंधर्वको गर्भ मेनका धारि । स्थूलकेश मुनिके निकट आश्रमकों निरधारि ॥
कन्या भई सो धरिदई निलजनदीके तीर । निर्दय सो अस्नान करि निर्भय गई अधीर ॥

॥ ❋ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❋ ॥

कन्या स्थूलकेशसो देखि । एकाकी निरजनमे लेखि ॥ ल्याये आश्रममे सुखदाय । मुनि करुणाकर मृदुल स्वभाय ॥ क्रमसों कीन्हों जातक कर्म । स्थूलकेश मुनिपरम सुधर्म ॥ प्रमद्वनमे लखि बर अभिराम । प्रमद्वरा यह राखो नाम ॥ स्थूलकेशके आश्रम पास । रुरुदेखो ताकों छबिरास ॥ सखियनसो दीन्हो कहवाय । प्रमति पितापहँ रुरु सुखदाय ॥ प्रमद्वराकों भार्या अर्थ । चाहत मुनि तो पुत्र समर्थ ॥ यह सुनि स्थूलकेशपहँ आय । पुत्रहेत मांगो सुखदाय ॥ प्रमति सुमुनिके सुनि के बैन । स्थूलकेश मान्यो लहि चैन ॥ व्याह दिवस आगे ठहराय । कछुदिन गए कह्यो सुखदाय ॥ प्रमद्वरा सो सखियन संग । क्रीडा करति रहति शुभ अंग ॥ एक दिवस तहँ पथमे आय । सोवत हुतो सर्प अतिकाय ॥ प्रमद्वरा तहँ आचक जाय । तापहँ धस्यो कालबश पाय ॥ अतिविषधर तेहिँ काटो क्षिप्र । काटत मात्र गिरो सो बिप्र ॥ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥

व्है बिवर्ण क्षितिपैं गिरी प्रमद्वरा गतप्राण । मुनि दौरे मुनिबर भयो हाहाकार महान ॥
आत्रेय कुशिक उद्दाल अरु शंख सुमेखल बिप्र । महाजानु कटश्वेत मुनि भरद्वाज अति क्षिप्र ॥
गौतम आर्ष्टिषेण कुत्स अरु कौण प्रमति रुरु संग । और बिप्र आए सकल जानि महा सुदभंग ॥

॥ ❋ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ❋ ॥

छपाभरे सब रोवन लागे । प्रमद्वराकों लखि दुखपागे ॥ गए तहांतें रुरु बन गाढे । रोवनलगे महा दुख बाढे ॥ करि बिलाप रुरु अतिसै रोए । प्रमद्वराके शोक समोए ॥ दान दयो जो तप हम कीन्हो । गुरुपद सेइ पुण्य जो लीन्हो ॥ जन्म प्रभृति जो ब्रतबर धारो । और सकल जो पुण्य हमारो ॥ सो हम प्रमद्वरा कहँ दीन्हो । प्राण सहित बिधि चाहत कीन्हो ॥ जब अैसे कहि रुरु अति रोए । बोले देवदूत नभ गोए ॥ देवदूतउबाच ॥ रुरु रोवत कत शोक मयेतं । जियत गतायु न पुण्य दएतं ॥ एक उपाय विहित विधि है हो । करि ज्यावऊ तुम प्रमद्वरै हो ॥ रुरुरुवाच ॥ कहु उपाय जो बिधिबर कीन्हो । देवदूत चाहऊ जश लीन्हो ॥ देवदूतउबाच ॥ अर्धायुष अपनो रुरु दीजै । प्रमद्वरा जीवै सुख लीजै ॥ रुरुरुवाच ॥ आधो आयुष अपनो दीन्हो । हे खेचर हम आनद

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लीन्हो ॥ सूतउवाच ॥ बिश्वा बसु गंधर्ब सु गए । दूतन सहित सो आनद भए॥ कहन धम राजासों आ०
लागे । अर्धायुष रुरु आनद पागे ॥ प्रमद्वराकों हे प्रभु दीन्हो । सहित प्राण चाहत है कीन्हो ॥
धर्मराजोवाच ॥ रुरु आयुष्य अमृतसह पीवै । प्रमद्वरा आनदसों जीवै ॥ सूतउवाच ॥ ****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मराज अैसे कहो बिश्वाबसुके पास । प्रमद्वरा सोवतसी तबहीं उठि बैठो छबिरास ॥
आयुर्बल रुरुकी महा प्रमद्वराके हेत । दए अर्ध घटिजायगी लिखी रही यह नेत ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

स्थूलकेश मुनि भरि उतसाह । प्रमद्वराको कियो बिबाह॥ प्रमति सुपुत्रबधू लहि पर्म । भरे मोद लहि आश्रम धर्म ॥ रुरु अति पनधरि दंड उदारि । लखत सर्प सो डारत मारि ॥ सर्पनको अन्याय बिचारि । नाश करनकों दृढब्रत धारि ॥ बनमह गए एकदिन दूरि । रुरु देखे तहं अज गर भूरि ॥ मारण चले ताहि धरि क्रोध । सो बोले इमि बचन सुबोध ॥ हम अपराध करो नहि बिप्र । बिना बिचार हनत क्यौं क्षिप्र ॥ इतनो क्रोध जोग्य नहि तोहि । करि अन्याय हनतहौ मोहि ॥ रुरुरुबाच ॥ भार्या प्राण समान हमारि । काटो प्रमद्वरा सुकुमारि ॥ तब हम यह पण धरो प्रशंस । नाश करहि सर्पनको बंश ॥ तातें तुम्है मारि हौं सर्प । हम अहिकुलके दाहक दर्प ॥ हम डुण्डुभ न करत अपराध।सर्प अन्य जे करता बाध॥करै दोष जौं एक अयान।जाति दण्ड नहि करत सुजान॥मो बध जोग्य न तुम्है प्रबीन।हों डुंडुभ निष्पृह बिषहीन॥सूतउबाच ॥ ए सुनि डुंडुभ क रुरु बैन । मारो नही कृपाके अैन ॥ रुरु पूछो अहिसों यह बात । सांचकहो हमसों तुम तात ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूर्ब जन्ममे केरहे कियो कर्म तुम कौंन । जाते अहितन तुम लहो कहिअैं बिधिबत तौंन ॥

॥ * ॥ डुंडुभउबाच ॥ * ॥

पूर्ब जन्ममे मुनि रहे सहस्रपाद बिख्यात । बिप्र शापसों अहि भए लहे कर्म उतपात ॥

॥ * ॥ रुरुरुबाच ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तुम उतपात कहहु का कीन्हों । बिप्रश्राप जाते यह दीन्हों ॥ कबलों यह तन रही तुम्हारो । यह कहि शंसय हरो हमारो ॥ इत्यादि पर्बणिपुलोमोपाख्याने दशमोध्यायः ॥ डुंडुभउबाच ॥ पूर्ब सखासो रहो हमारो । अगम बिप्रबर तपबल भारो ॥ हम तासों परिहास बिचारो । रचि तृण सर्प तासु ढिग डारो ॥ अग्निहोत्रमे शक्त रहो सो । देखि डरो अति मोह गहो सो ॥ सज्ञा पाय मोहि लखि भाषो । तृणमय सर्प देखिकै माषो ॥ रचि अबीर्य अहि मोहि भय भारो । डुंडुभरूप जाय तुम धारो ॥ तप प्रभाव जानतहें वाके । चरण शरण सबिनय भय ताके ॥ द्विज

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० अपराध क्षमाकरु मेरो।शापोद्धार होत छत तेरो ॥ यह सुनि दुखित देखि मोहि बोलो। अंत शापको शकरण तोलो ॥ प्रमति पुत्र रुरु ऊ है आगे। बनमह मिलिहै कारज पागे ॥ देखत ताकंह शाप तिहारो। छूटिजाइ गो तन तजि थारो ॥ यह कहि शर्प देह तँहँ डारो । तेजभ भरो बिप्र तन धारो ॥ रुरुसों कहो बिप्र मुद भारे । यह सुनि ए मुनि बचन हमारे ॥ हिंसा करन दँड यह त्यागो। परम अहिंसा सों अनुरागो ॥ प्राणिमात्र कबऊ मति मारो । है द्विज धर्म अहिंसा भारो॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अहिंसा सत्य अरु क्षमा शांति बिप्रके धर्म । अध्ययनाध्यापन उचित हिंसाकरण कुकर्म ॥
धारण दंड प्रजापालन सो है क्षत्रीको काम । यह तुम सों हम कहतहैं हे रुरु बचन ललाम ॥

॥ * जयकरीछन्द ॥ * ॥

यज्ञ कियो जनमेजय भूप । भस्मकरे तँहँ सर्प अनूप ॥ वसित सप जे रहे बिचारि । तक्षकादिको लिए उबारि ॥ मुनि आस्तीक कृपा उरधारि । बिप्र वर्णको धर्म पसारि ॥ इत्यादिपर्वणि पुलोमो पाख्याने एकादशोध्यायः ॥ *

रुरुरुवाच ॥ जनमेजय कैसें सहदप । कौंन हेत जारेहें सर्प ॥ लिय आस्तीक हवन बिधि राषि । द्विज बरदेऊ सकल सो भाषि ॥ ऋषिरुवाच ॥ मिलिहि तुमहिं एक द्विजबर मित्र । सो कहि है आस्तीक चरित्र ॥भयो सो यह कहि अन्तरध्यान।रुरु ढूँढन तेहि लगे सूजान॥सो न मिलो तब रुरु अमछाय । गिरे भूमिपर मूर्छा पाय ॥ बेर बेर ऋषि वचनु बिचारि । व्है बिसंज्ञ सति मतिमे धारि ॥ रुरु आए घरकों पितुपास । प्रमति कहा सब सों इतिहास ॥ इत्यादि पर्वणि सर्पसत्रप्रस्तावनायां पौलोमं समाप्तं ॥ *

॥ सैनकउवाच ॥ नृपवर जनमेजय केहि हेत । जारे सर्प क्रोध भरि चेत ॥ सो सब कहऊ सूत समुझाय । कत लीन्हों आस्तीक बचाय ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जनमेजय क्षितिपालकत सर्पसत्र दृढि किन्ह । कस्य सुवन आस्तीक हें अहि बचाय जिन लीन्ह ॥
सूतउवाच॥महत कहत आस्तीकको सुनिए मुनि आख्यान।जैनभांतिसों मखभयोतक्षक बचोमहान॥

॥ * ॥ शौनकउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कथा मनोहर है अति जैन । सुनबेकों चाहत मन तैन ॥
॥ सूतउवाच ॥ आस्तीकको यह सकल चरित्र । सुनऊ बिप्र है परम पबित्र ॥ बिप्रछन्दमे व्यास कबीश । नैमिषारमे कहो मुनीश ॥ सो सुनि सकल पिताके पास । कहत तौन सुनिबे इतिहास॥ आस्तीक पितु तपतेज सपूरि । उदित मनऊ धरणी परहरि ॥ उग्रसु ब्रह्मचर्य तपधाम । जरत्कारू

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हो नाम ललाम ॥ नित्य चलत नहिँ लहत प्रयास । सांझ होति तँह ताको वास ॥ तीर्थ लहत तँह आ०
करत स्नान । भोजन तासु पवनको पान ॥ तन सूखत करि अनिमिष नैन । फिरतै रहत करत नहि सैन ॥ फिरत फिरत कछुँ देखो जाय । पिता पितामहकों यहि भाय ॥ लंबमान ह्वै गर्त मझार । ऊर्धपाद अधबदन उदार ॥ जरत्कार तिनसों इमि बैन । बूझन लगे बहुत करि नैंन ॥ लटकि अधोमुख रहे जु कौन । तुम हो कहो गहो मति मौंन ॥ रहे सु करि तृणको अवलंब । मूषक भक्षक जाको लंब ॥ जायाबर है नाम हमार । रहे पूर्व संसित व्रत धार ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

अल्प अल्प ग्रामनमे निति निति बास जौंन एकराति । जाया वृत्तिकहतहैं ताकों जिनकोबुद्धिविभाति ॥
जो द्विज जाया वृत्तिसो श्रेष्ठ होय अभिराम । ताकों जायाबर कहत महा मनीषा धाम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

संतानक्षय ते गिरण चहत अधोमुख होय । क्षितिपर संतति एकहैं जरत्कार नहि दोय ॥
मंदभाग्य हयकों करत अल्प भाग्य तप निष्ट । भार्या बरत न होय हे जातें संतति इष्ट ॥
तातें लटकत गर्तमैं वंशक्षयकों देखि । जरत्कारु कुलनाथ लहि भए अनाथ विशेखि ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तुम को बंधु सदृश जो शोचत । जानो चहत विप्र मोहि रोचत ॥ काहे हेत शोच तुम कीन्हों । देखि हमै करि चित्त मलीनों ॥ जरत्कारु उवाच ॥ तुम हो पिता पितामह मेरे । जरत्कारु हम कहत निबेरे ॥ जो तुम कहऊ करैं हम सोई । पितर वाक्यसों भिन्न न कोई ॥ ॥ पितरऊचुः ॥ संतति होय जतन सो कीजै । मो तो अर्थ होय सो लीजै ॥ धर्महेत भार्या यह करिए । संतति होइ सोई व्रत धरिए ॥ दान धर्म नहिँ तपतें होई । पुत्रवान गति पावत सोई ॥ पुत्रपरम मो आज्ञा लीजै । हित हमार यह सत्य सो कीजै ॥ जरत्कारुरुवाच ॥ दारा धन संग्रह नहि करिए । तव हित लागि इहौ अनुसरिए ॥ सदृश नाम बालाजो कोऊ । बंधु तासु बिनु मागे सोऊ ॥ भिक्षा सदृश मोद भरि देहैं । सविधि व्याह करि ताकों लेहैं ॥ हम दरिद्रको हमकों कन्या । सगुण सरूप देइगो धन्या ॥ लेहैं अवसि जो देइहि कोऊ । तव हित हेत करैंगे सोऊ ॥ तामे जंतु होयगो जो सो । तारण हेतु होयगो तो सो ॥ तुम सुस्थान निरन्तर लहिकै । करिहो बास मोदकों गहिकै ॥ पितर प्रसन्न भए यह सुनिकै । स्वर्गबास निज हियमै गुणिकै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि द्वादशोध्यायः ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ सूतउवाच ॥ दाराहेत फिरण सो लागे । जरत्कारु क्षितिमर मुदपागे ॥ तिन्है न काहूँ कन्या दए । पितृबचन सुधि करि बन गए ॥ तीनि बेर मधुर ध्वनि बोले । कन्या बरन हेतु चित मो ले ॥ सुनि बासुकि भगिनी लेइ आयो । अनुजा रूपवती मुदछायो ॥ लेऊ विप्र यह भगिनो मेरी । देत तुम्है भार्यार्थी हेरी ॥ चहत समान नामकी लीन्हो । जरत्कार यह चिन्ता कीन्हो ॥ कहा नामहै भगिनी थारी । कहऊ सर्पबर सत्य विचारी ॥ बासुकि नाग समुझि यह कही । चित्त वृत्ति जो मुनिकी रही ॥ *👄*👄*👄*👄

॥ बासुकिरुवाच ॥ जरत्कार नामा यह कन्या । ग्रहण करऊ भार्यार्थक धन्या ॥ यह कहि सो मुनिवर कँह दीन्हे । सविधि स्वस्ति कहिकै मुनि लीन्हो ॥ आदिपर्वणिचयोदशोध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूर्वकालमे माता दीन्हो इमि सपनकों शाप । जनमेजयके जज्ञमे हूहौ भस्म सपाप ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

शापशान्ति करिबेकों दीन्हे । भगिनी सर्पराज मुदलीन्हे ॥ जरत्कारु मुनि सविधि बिवाहो । बंश बृद्धि करिबेकों चाहो ॥ मुनि आस्तीक तासु सुत भए । पिता भक्त तपतेजस भए ॥ श्रुति सर्वज्ञ सुपरम जशस्वी । सर्ब लोक हित उग्र तपस्वी ॥ बऊत काल जनमेजय बीते । यज्ञ रचो अहिनाशन चीते ॥ होन लगो जब यज्ञ सोहायो । तब अहिकुल आस्तीक बचायो ॥ यज्ञकियो ब्रत बेद पढायो । देवपित्र ऋषि ऋण सु मिटायो ॥ महापितर ऋणसों सुत मोचे । जरत्कारु दिवगए अशोचे ॥ इत्यादिपर्वणि चतुर्दशोध्यायः ॥ *👄

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

शौनकउवाच ॥ सूत कथा सह विस्तर कहिए । फिरि सुनिजो अति आनन्द लहिए ॥ जो आस्तिक कथाहै ताकों । चाहत सूत सुनो कऊवाकों ॥ सूतउवाच ॥ कृतजुग पूर्व प्रजापति कन्या । दोय रहीं सतगुणमय धन्या ॥ दोऊ परस्पर प्रीति भईही । पितु ते कश्यप सविधि दईही ॥ कद्रू विनता अति मुदछाई । ब्रह्मा सदृश परम पति पाई ॥ कश्यप बर दोबेकों भए । देखि स्वभाव रूप मुदमए ॥ बर प्रदानके बचन सुने ते । मुदित भई पति प्रीति गुने ते ॥ दश हजार सुत कद्रू मांगे । भरे तुल्यबल तेजस पागे ॥ बिनतैं कहे दोय सुत दीजै । प्रथम बिनय सुनिबर सुनि लीजै ॥ कद्रूके पूतनतें भारी । बली सुशील धर्म

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अधिकारी॥एवमस्तु कहि मुनिवर दीन्हों । दुऊन गर्भको धारण कीन्हो ॥ गर्भ जतन
कीजो इमि भाषी । आपु गए वन तप अभिलाषी॥ सूतउवाच ॥समय पाय कै कद्रू दीन्हो
दश हजार अण्डा सुत लीन्हे॥सघृत भाँडमे अण्डा राखी।दासी यतन करहिँ अभिलाखी॥
शरशत बर्ष बीति गे जबहीं।कद्रू तनय कढे सब तबहीं॥अण्डा दोय दए विनताहे।शोचति
भई न जनमे काहे ॥ सुत दरशनकी कांक्षा भारी । तब विनता यह मति अनुसारी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बर्ष पाच शत बीति गे सो सुतमे न सुजान । कद्रू लहत भई सुवन कालसमान अमान ॥
यह बिचारि सहसा कियो देख्यो अण्ड बिदारि । एक महाव्याकुल भई सुत अधांग निहारी॥
तब तेहिँ सुत अैसें कहो बिनतासों रिसि छाय । दासीहिहै पाँचशत बर्ष सौतिकी जाय ॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

मोहि अधतन कीन्हो माय । दयो शाप यातें रिसि पाय ॥ शरशत बर्ष सुसेवऊ याहि ।
जतन सहित दुखनद अवगाहि॥यामे होइहि सुत अति उग्रा।तो दासीपद मेटिहि क्षुद्र ॥
यह कहि गयो सो गगन उडाय । भोर अरुण सो परत लखाय ॥ अरुण प्रताप भरो अति
चाहि । करो सारथी दिनमणि ताहि ॥ इत्यादि पर्वणि पञ्चदशो ऽध्यायः ॥ *
सूतउबाच ॥ ताही समै दुओ एक संग ।कद्रू बिनता भरी उमंग ॥ देखो उच्चैश्रवा तुरंग ।
पूजत ताहि सकल सुर संग ॥मथें क्षीरनिधि प्रगटे जौंन । अश्व रत्न बल अतुलित तौंन ॥
शौनकउबाच ॥ कैसे मथो क्षीर निधि कुबिधि बत कहऊ सूतके पुत्र॥ कैसें प्रगट भयो
यह अश्व । उच्चैश्रवा सुमहत जशस्व ॥ तेजस भरो मेरुगिरि तौंन । रोकत भानुप्रभा कहे
जौंन ॥ शृंग रत्नमय ताके जाय । बैठे देव सकल सुखदाय॥करण लगे तह मंत्र बिचारि।
लीबे अमृत हिये निरधारि ॥ बिधिसों कहो भरे आनंद । नारायण प्रभु हरता दंद ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दश दनुज मिलिकै मथऊ क्षीरसिंधुकों जाय । प्रगट होयगो अमृत तँह मथे सिंधु सुखदाय ॥
सकल औषधी होंहिँगी सकल रत्न समुदाय । प्रगट होइगो अमृत अनु सुनऊ देव सुख दाय॥
॥ * ॥ इत्यादिपर्वणि षोडशोध्यायः ॥ * ॥

चरणाकुलकछन्द ॥ मन्दरगिरि जुत रत्नप्रभात।सुरन जाइ देखे अवदात ॥ लता बृक्ष
कुसुमितसों सोहै । खग कूजितसों मुखरित होहै ॥ मृग गज व्याघ्र बराहन पूरो । अपसर
किन्नर सेवित रूरो॥जोजन सहस एकादश बडो।है एतनो धरणीमें गडो॥यह न उखारन
जोग हमारे। देवन्ह हरि बिधि पास पुकारे॥हे प्रभु उतपाटनको याके ।यतन करऊ तुम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अैन कृपाके ॥ सूतउवाच ॥ सुनि हरिबिधि फणिपतिसों कहो । मन्दरगिरिहि उखारऊ अहो ॥ गिरि उद्धारण हरि जब भाखे । शेष उखारि सिंधु तट राखे ॥ समुद्रउवाच ॥ सुनऊ सुरासुर बचन हमारो । मथि पय चाहत अमृत निकारो ॥ गिरि उप मर्द श्रमण हम सहिहैं । चाहत अंश कर्इ सो लहिहैं । मंदर गिरिहि पीठि पर राखो । तुम्हे जोग्य गुनिक हम भाखो ॥ कूर्म राजसों कहो बिचारो । तदनु सुरासुर बाणी भारी ॥ कहो तथास्तु कूर्मपति जबहीं । धरो सो इन्द्र पीठिपर तबहीं ॥ गिरि मंथान मन्दरहि कीन्हों । करि गुण बासुकि नाग प्रबीनो ॥ मथि वे सिंधु सुरासुर लागे । अमृत हेत अति आनद पागे ॥ एक ओर सब सुरगण लागे । मुखको ओर असुर बल पागे ॥ शेष रहे नारायण जेहाँ । ठाढे भये जायकै तेहाँ ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

घर्षन त सुर असुरके बासुकि पाय प्रयास । सहित धूम ज्वाला सहित असकृत लेत उसास ॥
तौंन धूमतें घन भए बिद्युत सहित महान । बरषत श्रम संताप हर सुरगण के सुख दान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

गिरि सह कूट वृक्ष जे फिरत । तिन तें सुमन समूह न गिरत । सुरा सुरण पर ते उडिपरत । कण स्वम संतापरि हरत ॥ मंथन नाद होत अति उग्र । गर्जत घन बस पवन अरुद्र ॥ गिरि घर्षण लहि नादमहान । भए सकल सम पिसे पिसान ॥ अचल भ्रमत तरु भ्रमि धसि जात । ताते उठी अगिनि बसबात ॥ चऊँ ओर गिरि फिरत अमान । बिद्युत बलि त मनहु जल दान ॥ जरन लगे गिरि जीवअनेक । सुरपति शासनतें भरि धेक ॥ अगिनि बताय दई घनतौन । जारतहीं गिरि जीवन जौंन ॥ बहुत भांति के तरु बर तास । दिव्य औषधि निक्रेरस रास ॥ कढतो भयो अनूप अमंद । ताहि लखें सुर भे सानंद ॥ कंचन बहो अखिल व्है जौंन । अमर भए सुर पीवत तौन ॥ सिंधु अखिल भो क्षीर सुजान । मिलत तौन रस अति सुख दान ॥ सो रस मिलें क्षीर जल जौंन । तातें घृत भो पावन तौंन ॥ सुरन कँहो ब्रह्माके पास । भयो हमै प्रभु महत प्रयास ॥ अमृत भयो अबलों नहि व्यक्त । हम सब श्रमलहि भए अशक्त ॥ नारायणसों विधि वर बैन । कहो कृपाकर आनद अैन ॥ देव भए श्रमलहि बल हीन । प्रबल करऊ इनके तुम दीन ॥ विष्णुरुवाच ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देत महा बल सुरनकों हे ब्रह्मन सुख दाय । क्षोभित करैं समुद्रकों द्रुत मंदरहि फिराय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

भए प्रबल खेंचन सुर लागे । मन्दर मथन सिंधु सुख पागे ॥ सूतउवाच ॥ आकुल बहुत सिंधुजल कीन्हे । बिष्णुदत्त बल सुरगण लीन्हे ॥ प्रथम सुधाधर प्रगटे तातें । फेरि कढी श्री भरी प्रभातें ॥ फेरि सुरादेवी तँह निकसी । पाण्डुर बरण मोदसो विकसी ॥ उच्चैःश्रवा तुरँग कढि आयो । पांडुर बर्ण बेगसों छायो ॥ अनु कौस्तुभमणि पांडुर निकसो । लगि नारायणके उर बिकसो ॥ श्री शशि सुरा तुरँग सुहाए । सुर पुर गए मोदसों छाए ॥ सुरन्ह धन्वन्तरि लए निहारो । स्वेत कमण्डल अमृत सुभारो ॥ अमृत सु देखत दनुज पुकारे । यह हम लेहैं बर बल भारे ॥ चतुर्द्दन्त अैरावत भारी । निकसत लयो सुरेश निहारी ॥ कालकूट ता पीछे निकसो । कालानलसम ज्वालन बिकसो ॥ तासु सुगंध धूमसंग धायो । मैर महा त्रिभुवनमै छायो ॥ तीनोलोक जरत जब देखे । त्रिभुवन नाथ कृपा अव रेखे ॥ करि हर पान गरेमे राखो । नीलकण्ठ तब बेदन भाखो ॥ यह अद्भुत दनुजन जब देखे । आशारहित भूरि भय भेखे ॥ लक्ष्मी अरु सुअमृतके लीन्हे । दितिके सुतन्ह बैर अति कीन्हे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धरो मोहनी रूप हरि करि माया सुबिलास । मोहन करिबेकों चले गे असुरनके पास ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीस्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना कृतेमहाभारतदपर्बणेआदिपर्बणि अमृतमथने सप्तदशोध्यायः ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सूतउबाच । बर्म पर्म धरि शक्ती उदार । भए युद्धको दनुज तयार ॥ नर सह बिष्णु अमृत लेइ पास । दानबेन्द्रिसों सहित बिलास ॥ देवनकों सो अमृत पियाइ । असुरन दए सुरा भ्रम छाइ ॥ धरि सुर रूप राहु तँह जाय । अमृत सुपियन लगो सुख पाय ॥ गयो कण्ठलों अमृत सुतास । रबि शसि कहे बिष्णुके पास ॥ बिष्णु चक्र कहँ आज्ञा दीन्ह । सिरधर तुरित द्विधातिन कीन्ह ॥ गयो शीस सो गगन उडाय । अमृत प्रभाव पाय तह जाय ॥ घोर शब्द सो लागोकरन । नचो कबंध भूमि भय भरन ॥ सो धरि बैर शीस अरु काय । ग्रसत अबहुँ शशि सूरहि आय ॥ तजि हरि रूप मोहनी तौन । धारि शस्त्र अति उन्नत जौन ॥ कम्पित करो दनुज कुल क्रुद्ध । होन लगो अति दारुण युद्ध ॥ लवण सिंधु के निकट महान । भिरे असुर सुर अति बलवान ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुर अरु असुरअरे अतिक्रुद्ध । नाना भांति अस्त्र धरि उद्ध ॥ कटे चक्रसों असुर अमान ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ० अ०

रक्त बमत छिति परे महान ॥ भरे रुधिरसों असुर अमान । भूगत मनु गैरिक जुत सान ॥
माचो उद्द तहां हुङ्कार । हनत परस्पर शस्त्र उदार ॥ छिंधि भिंधि सुर असुर पुकारि ।
लरत अस्त्र अति दारुण धारि ॥ ऐसे तुमुल देखि अति युद्ध । नरनारायण व्है अति क्रुद्ध ॥
आए समरसिंह दोउ बीर । धरे उदार धनुष नरधीर ॥ मारन लगे दनुज रण बक्र ।
हन्यो कुलिशसों तिनको शक्र ॥ चक्र सुदर्शन कर हरि लीन्हो छोडि असुर सेनासंह दीन्ह ॥
चक्र चपल चारो दिशि धाय । काटे असुरसेन गहि चाय ॥ खण्ड खण्ड करि छिति पर डारि ।
दनुजन देत दोष बिसतारि ॥ दनुज लेत गिरिबरन उखारि । देत देवदल ऊपर डारि ॥
सुरवरमारि सरनसों काटि । गिरि तरु देत भूमिपर पाटि ॥ चक्र सुदर्शन चढो अकाश ।
काटि कियो असुरनको नाश ॥ हारि गए कोउ समुद समाय । कोऊ भूमिमे पैठे जाय ॥
हारे असुर सुरनसें सर्व । इत उत भाजि गए जे खर्व ॥ सुर जय लहि मन्दरहि उठाय ।
जहँको तहँ धरि दीन्हो जाय ॥ सुर करि नाद गए निज धाम । जल थल भए सकल
अभिराम ॥ अमृत पात्र कजँ धरि शुभ देश । नरकजँ रक्षक कियो सुरेश ॥ ❀👁❀👁❀❀❀

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगमिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविनाकृतमहाभारतदर्पणेऽादिपर्वणि अष्टमोऽध्यायः ॥ ❀

॥ सूतउवाच ॥ अमृत मथन बिधि भाषी सर्ब । उच्चै श्रवा भयो तँह अर्ब ॥

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

सूतउवाच ॥ जेहि लखि कद्रू बिनते बैन । कहे सपति भावके अैन ॥ उच्चैःश्रवावर्ण है कौन ।
है बिनता निज भाषऊ तौंन ॥ बिनतैं कहो श्वेत रुब अंग । है हो उच्चैःश्रवा तुरंग ॥ कद्रू तुम
देखो सो कहऊ । अश्व राज रँग चुप मति रहऊ ॥ कद्रूउवाच ॥ बिनता सत्य कहऊ तुम
जौंन । श्याम पूछहै बाजी तौंन ॥ नतरु चलऊ सो लीजै जोय । जो हारै सो दासी होय ॥
॥ सूतउवाच ॥ अैसो पण करि दुऊन कठोर । कहो देखि जो चलिए भोर ॥ कद्रू पुत्र बोलाय
हजार । श्याम करण कहि दीन्हे वार ॥ हयकी पुछ करऊ तुम श्याम । न तरु होत दासी
मो नाम ॥ तिन सुनि यह मान्यो न प्रलाप । कद्रू दियो तिन्हे यह शाप ॥ जन्मेजयके सर्प
सत्र महँ । पावक भक्षन करिहि तुह्मे तहं ॥ कद्रू दयो शाप अति क्रूर । जगतहेतु हित आनद
पूर ॥ देवन सहित पिता मह आय । कह्यो तथास्तु शाप सुख पाय ॥ जिनके भरे तीव्र विषदन्त ।
परसि करत जीवनकोअन्त ॥ कद्रू कह्यो उचित यह बात । नतरु करत ए जगत निपात ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

नित्य करतजे जगतके जीवनको अपराध । दंड देत प्राणांत बिधि यासे कछु न बाध ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ विलुपद ॥ याविधि कहि विधिना कद्रूको समाधान करि दीन्हो। ऐसे कहे बचन कश्यपसों आ॰ बिधि बोलाय ठिग लीन्हो ॥ दंद करण ए पुत्र तिहारे महा भरे बिष जाए। तिन कद्रूसों कारण बस कछु घोरशापकों पाए ॥ तातें क्रोध तुम्हे नहि करिबे यासे सुनिए सांची। इनको नाश जग्यमे भावी रही पुरातन खांची॥ ऐसे कहि ब्रह्मा कश्यपको समाधान करि लीन्हे। विषहर ही बिधासो गोकुल ताकों तारण दीन्हे ॥ ***\

आ०प० चकित लखि मनमहत्रसे॥शरण अग्नि केशव सुर आए।शङ्कभरे अति बिनय सुनाए॥कबहूँ अग्नि हमैनहि जारो।अब जारनकों कहा बिचारो॥तेजपुञ्ज तो धावत आयो। लोकान्तक सम चहत जरायो॥अग्निरुवाच॥सुर समुझे तुम सो मतिमानो।गरुडहिदेखि तेजमो जानो॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिनतामे प्रगटित भयो काश्यपेय बलपूर। मम समान तेजस भरो गरुड नाम अति सूर॥ भ्रमभरि डरऊ न सुर सुनऊ चलऊ हमारे साथ। सर्पदमन दितिकुल समन भयो खलऊ खगनाथ॥ यह सुनि हित गुनि मोदलहि अग्नि संग समदेव। सुस्तुति लागे करण तहँ भरे बेदबिधि भेव॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

देवउवाच॥ तुम महा भाग खगेश। तुम उग्रऋषिबर भेश॥ तुम प्रजापति हो भानु। तुम इन्द्र तुमहि कृषानु॥ तुम बिष्णु हयमुख सत्य। तुम पवन हें अभिगत्य॥ तुम चतुर्मुख बिज्ञान। तुम अमृत सम जशमान॥ तुम प्रभाहौ सुर त्रान। तुम सिन्धु सुवल महान॥ तुम करत अति बिषनास। तो हरण पोषण पास॥ तुम ध्रुवाध्रुवके समन। तुम मनोजब वर गमन॥ तुम तडितप्रभ बलधाम। तुम अक्षय बिक्रम आम॥ तुम तप्त काञ्चन बर्ण। तुम होत असरण सर्ण॥ तुम परम करुणा कन्द।खगनाथ कश्यप नन्द॥ तुम महामति स्वनमान। तजि क्रोध देऊ महान॥ तजि अग्नि सदृश स्वरूप। कुरु कृपाहे खगभूप॥ इमि सुरन सुस्तव कीन। सह ऋषिन सुनि खगईन॥ तजि दयो तेज समान। धरि लयो रूप समान॥ इत्यादिपर्ब्बणि सौपण स्तुतिः॥ *◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुस्तुति सुन्यो खगेश तब अपनो देह निहारि। दूरि करी बर बृहत्ता कृपा हृदयमै धारि॥ गरुडउवाच॥बृहत भयानक रूपमो लहत जीव भय भोर।तातें कीन्हो सौम्य शुचि अपनो चारुशरीर॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सूतउवाच॥ तब खगेश कामग भरिचाय। पिता धामते अरुण उठाय॥ धरे पीठिपर माता पास।सिन्धुपार राखो सुखरास॥अति द्युति अरुणहि कारण पाय। उदया चल पर राखो जाय॥उग्रते जतें रबि करि कोप। लोकदमन मत करो अरोप॥ रुरुरुवाच॥ कौन हेत करि कोप महान। लोक दहन कह चाहोभान॥ कौन करो देवन अपराध। जाते चहो दिवसपति बाध॥प्रमतिउवाच॥ रबि शशि कहो देवहित बैन। दनुज पियत अमृत सुर हैन॥रबि शशि बैर धरे बहु पास।करत समय लहि दारुण ग्रास॥सुरगण हित कहँ कीन्हो कर्म्म।सो यह हम कहँ लगो अधर्म्म॥देवन कोऊ करत सहाय।याते

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भानु कोप अतिछाय॥लोकदहनको कियो बिचार।करिकै तेज सको बिस्तार॥यह बिचारि अस्ताचल सूर।गए क्रोध धरि मनमे पूर॥ करिवे का जैतो बिनाश। करि तेज सको भूरि प्रकाश॥गए महा ऋषि देवन पास।ऐसे लागे कहन सत्रास॥अद्य निशीथ समै सन्ताप।प्रगट होयगो उग्र अमाप ॥ गए देव ऋषि बिधिके पास। ऐसे कहन लगे भरित्रास ॥ बिधि निशीथमे महत चरित्र। व्हैहै दाह बिनाहि सबित्र॥ कहाहोयगो उएँ दिनेश। क्षय भय बारण कहउ अशेश॥ पितामहोबाच। लोक बिनाश करण कहँ सूर। व्हैहैं उदित आजु अति क्रूर ॥ लोक भष्मसम करिहैं जारि । याते प्रथम जतन निरधारि ॥ धरो अरुण कश्यपको पूत। महा काय सो व्है रबिसूत ॥ आगें बैठि करिहि सारथ्य। हरिहि सूरको तेजस तथ्य॥ ऋषिन सहित सह सुरन बचाव।व्हैहै जगको सुनहु सचाव॥प्रमतिरुवाच॥ अरुण पितामह शासन पाय। भए सारथी रबिके जाय ॥ उए दिवाकर तेजस तास। रोको अरुण मिटी जगत्रास॥भानु कोपको सकल बिधान।जिमि भे अरुण सारथी जान॥ सो सब कहो सुनो तुम तौन। पूर्व प्रस्नसो कहियत जौन॥ इत्यादिपर्बणि सौपर्णे ॥ * ॥

॥ सूतउवाच ॥ कामग गरुड पयोनिधि पार। गए सो माता पासउदार॥बिनता कद्रूसों पन हारि । दासी भई महादुख धारि ॥ बिनतहि प्रणत पुत्र ढिग देखि । कद्रू कहो बोलाय बिशेखि ॥सिंधु मध्य नागनको धाम। अति रमणीय रहस्य ललाम ॥ तहां हमै बिनता लेइ चरऊ।जान समान बेर मति करऊ॥ताहि कंधधरि बिनता बिप्र।चढेगरुडपर पन्नग क्षिप्र॥चले खगेशदिनेश निकट गहि।मूर्छित भए प्रताप तपे अहि॥कद्रू देखि सुतन्ह कर मरन। शक्रस्तुति लागी तब करन॥ जय जय सर्व देब गण ईश। नमः जयति बलभित जगदीश॥सोनः नमुचिसूदन सहसाक्ष।नमः शचीपति भर्दनरक्ष॥अग्नि वायु अरु मेघ महान। नमोः बज्रधर बर मघवान ॥ नमः ज्योतिमय रबि शिखि रूप।नमः शक्र त्रिभुवनको भूप॥ नमोः बिष्णु देवनके देव । नमः चराचरहित चित भेव ॥ नमः सोम सब कास बिभेद। नमः धराधर परकर छेद ॥ नमः धरणि गिरि गहन स्वरूप। नमः महोदधि रूप अनूप ॥ नमः महाजश बिगत बिषाद । नमो नमः दायक अहलाद ॥ फलहित बिप्रकरहि तव यज्ञ। तुम मख भाग भोगकर तज्ञ ॥ तो हित सुबिधि परायण बिप्र । पढत बेद बेदांग सु क्षिप्र ॥ इत्यादिपर्बणि सौपर्णे ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुस्तुति कद्रूकृत सुने हरषभरे मघवान । बर्षा कारवेकों कहो बोलि महत जलदान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

गरजिमेघ चऊँदिशितें आए । बरषन लगेमोदसों छाए॥बिद्युन्नाय छाय छितिदीन्ही । सरवर सदृश भूमि भरि कीन्ही ॥ ऐसी भांति सघन नव बरषे। मिटीताप कद्रूसुत हरषे॥ मोदसहित कद्रू तहँ आई । नागन्हलए गरुड सुखदाई॥ मकराबास द्वीप तँह आए । लवणा सुरहि लख्यो वन छाए ॥ सहित सुपर्ण दीप सो देखो । परम बिचित्र चित्रसम रेखो ॥ तरुबर सघन सुमन फलभारे ।पद्माकर सहपद्म निहारे ॥ नानाभांति बिहंग कल बोलैं । मधुप मदांध गुञ्जत डोलैं ॥ चऊँदिशि बिबिधि सदा गति धावैं । भरत मत्तमद आनद छावैं॥ नाग नवल तेहि बिपिनि बिहारे ।और दीपकहँ चलन बिचारे॥खगपतिसों इमि कहे बिग्रेषे । खेचर वऊत द्वीप तुम देखे ॥ औरो द्वीप जहाँ कवि बासो। हमै सहित लै तँहकहँ चालो ॥ सुनि सुचिंत्य खगपति बिनतासों । बोले देखि भरे दिनतासों॥कारण कहा भाँतिसो कहिए । दास सदृश जो शासन बहिए ॥बिनताउबाच॥छलकरि इन पन जीतो मोसों । दासी भइ कहति हम तोसों ॥ यह सुनि गरुड अहिनपँह आए । रोषभरे ए बचन सुनाए ॥ कहा देहिं का पौरुष जटै । जासों दास पनेसों छुटै ॥ सूतउवाच ॥ बचन गरुडके अहिगण सुनिकै । कहनलगे मातासों गुनिकै ॥ बलतें अमृत ल्याय जब देहो।मोच दासपनतेतब लेहो॥तदनु कहत ऐसे मातासों।भयो खगेश भरो बलभासों॥ अमृत हरण हम जैयत अहो । भक्षण विदित होय सो कहो ॥ विनतेवाच ॥ बसत निषाद सिंधुमे आगे । सहसनते भक्षेऊ मुदपागे ॥ हे सुत द्विजहि सरिस मति करियो। बिप्र अबध्य वर्णसों डरियो॥ अग्नि सदृश सब भूतन मे हैं। बिप्र अभक्ष्य भक्षकरि दहैं॥ अग्नि अर्कसम द्विजवर जानो। बाडव सदृश भक्षकर मानो ॥ क्रोध भए बिप्रनसों डरिहो । तब तुम सिद्धि वृद्धिसों भरिहो ॥ ब्राह्मणद्रोह भूलि जे करहीं । ते जन बिपति भूरिसों भरहीं ॥ अग्रज ब्राह्मणवर्ण विचारो । गुरू पितासम हियमह धारो ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ रूप शील ब्राह्मणको कहिए । जाकों मानि सभय ह्वै रहिए ॥ ॥ बिनतोवाच ॥ मचैन उदर गए जेहि जानो । सो है बिप्र बीर्य अनुमानो ॥ बिनतै फेरि प्रीति करि कहो । पुत्र सुपथमह आनद लहो ॥ मारुत रचहि पच तिहारे । अग्नि शीश बसु जनु मुदभारे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शान्ति खसिके वर्ग से निरत भए दिन राति । जाऊ कुशलसों पथज जे तेसब विघन निपाति ॥
सुनिकै माताके बचन पक्षनकों झहराय । चले गगनगत पवनसम महाबेग खगराय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

गए निषादालय निकट महावेग खगपाल। देखतहीं हरषितभए मनो बुभुक्षित काल॥ आ०

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

नीषादनकहँ चाहत खाय। धूर उडाई पक्ष हिलाय॥ महा वायुसों तरुन कपाय। महा प्रमाण वदनकों बाय॥ अन्धकार रज रञ्जित काय। राह रोकि बैठे सो जाय॥ चले निषाद धामकों सर्व। इस्त्री पुरुष बडे अरु खर्व॥ लखे नहीं मुख गगन समान। धूरि धुन्धसे विकल महान॥ सब निषाद मुख भीतर डारि। खगपति लियो वदन संघारि॥ रहो एक द्विज सो गुणमान। गयो कण्ठमहँ अग्नि समान॥ खगपति कहो न भक्षत विप्र। तातें निकसि जाऊ तुम क्षिप्र॥ भार्या छोडि न कढत खगेश। ताहि सहित करिदेऊ निदेश॥ तासों कहो गरुड यह बैन। भार्यासहित कढऊ लहि चैन॥ भार्यासहित निकसि सो आय। दे आशिष गो आनद पाय॥ तब खगेश पक्षन फहराय। चले वेगसों गगन उडाय॥ आगे चलि कश्यपकहँ देखि। कस्यो प्रणाम विनीत विशेषि॥ सहित कृपा मुनिके सुनि बैन। उत्तर दियो कुशल लहि चैन॥ कश्यपउवाच॥ प्रथम कहऊ भाजनकी बात। क्षितिपर अन्न बऊलहै तात॥ गरुडउवाच॥ माता भ्राता कुशल महान। भोजन कुशल न क्षुधा समान॥ सर्पन अमृत हरणके काज। पठयो मोहि सुनऊ मुनिराज॥ माता दास्य मोचिवे हेत। हरने मोहि अमृतको नेत॥ माता शासन लहि निर्वाद। खाए सहसन सकुल निषाद॥ गई न क्षुधा तृप्तिकों पाय। ताते दीजे भक्ष्य बताय॥ होय शक्य जो भोजन खाय। अमृत हरण कहँ जाब सचाय॥ कश्यपउवाच॥ पुण्यसरोवर यह सहभाग। जामे लरत कुञ्ज अरु नाग॥ जन्मान्तरको बैर सु तास। तत्व विचारऊ सुनि मो पास॥ क्रोधी विप्र बिभावसु जान। सुप्रतीक हो अनुज सुठान॥ सञ्चित धन बाढन कहँ झगरत। बडो न बाढत छोटो रगरत॥ करें विभाग परस्पर बैर। बाढत करत दुष्टजन घैर॥ कहो बिभावसु ऐसें जौन। सुप्रतीक मानो नहि तौन॥ भ्राता दोउ भरे अति मोह। अर्थ परायण छोडें छोह॥ दुऊन कोपबस दीनो शाप। गज कछप व्है लसे सदाप॥ कहो बिभावसु इमि धरि द्रोह। सुप्रतीक तुम हाथी होह॥ सुप्रतीक दिय शाप रिसाय। कछप होऊ बिभावसु जाय॥ दोऊ ऋषि लहि शाप अयान। गज कछप ते भए महान॥ एक योस सो गज सर पास। गरजो आय महाबल रास॥ षट जोजन ऊंचो अतिकाय। दश जोजन आयाम लखाय॥ सो दंहित सुनि कूर्म्म रिसाय। सरतल ते जल ऊपर आय॥ जोजन तीनि उच्चसम सार। दश जोजन जाको बिस्तार॥ देखत सो गज अति रिसि छाय। हलो सरोवरसे अतिकाय॥ दोऊ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लरत महा करि क्रोध। पूर्वजन्मको धरें बिरोध॥ तिनकों पकरि तृप्ति हित खाऊं। अमृत हरण कारयकों जाऊं॥ सूतउवाच॥ यह कहि मङ्गल सगुन समेत। आशिरबाद दयो सुख सेत॥ अमृत हरत लरिहै सुरराज। तुम जीतहु सुरसहित समाज॥ गरुड पिताको पाय निदेश। गज कछप ढिग गए खगेश॥ सर मे लरत दुऊनकों पाय।चंगुलसों गहि लये उठाय॥ महाबेग उडि लगे अकास। गए देव वृक्षनके पास॥ पक्ष अनिलसों कंपत सर्व। लागे दृढ अतिवृक्ष अखर्व॥ काम तरुनको कानन देखि। फूले फले बऊत बिधि पेखि॥ सिंधु शलिलतें सिञ्चित सर्व। कनक भूमि भव लसत अखर्व॥ गए महा रोहिण तरुपास। अति बिशाल मनु कुवत अकास॥ रोहिण वृक्ष गरुडसों कहो। मो शाखापर बैठऊ अहा॥ कछप गज भक्षण करि लेऊ। तब जाएऊ करि कारज नेऊ॥ शत योजनको आयत डार।तहँ बैठनको कियो बिचार॥ तहां जाय बैठे खगराय॥ डार गिरी सो परसत पाय॥ सूतउवाच॥ तामे लटकतसाठिहजार। वाल खिल्य जे ब्रह्म कुमार॥ गिरें डार मरिहैं तपधाम। देहैं शाप पाप अतिमाम॥ यह बिचारिकै चञ्चु दबाय। शाखा लए चले खगराय॥धरे नखनसों कछप नाग। भए गगन गत गरुड सभाग। अति दुस्तर यह कर्म बिचारि। भए ब्रह्मसुत सहित बिहारि॥भरे कृपा खगपतिको नाम॥ कहो गरुड यह बलको धाम॥ मन्द मन्द सोफिरत खगेश। देखे नानां बिधिके देश॥ शाखा धरण जोग्य नहि लहत। बिधि सुत मरण भीति भरि महत॥ फिरत गंधमादनके पास। गए लखो कश्यप तपरास॥ कश्यप दिव्य रूप सुत देखि। तेजपुञ्ज अति बलमय लेखि॥ब्रह्मदण्डसम गिरिवर सान। रौद्ररूप अति अग्नि समान॥ लोक लोप कर सदृश कृतान्त। मनुज दीनपहँ सानद दान्त॥ संकल्प तास आगमन बिचारि। कश्यप मुनि बोले मुदधारि॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

॥ कश्यपउवाच॥ ऐसो साहस फेरि मति कीज्यो सुत मतिमान।जारि देहि नहिं तोहि कऊं करिकै क्रोध महान॥ सरीचोनको पानकरि मारतण्डकी चण्ड।लहत तृप्ति ए ब्रह्मसुत तेजस भरे अखण्ड॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ सूतउवाच॥ सुतहित कारण कश्यप ऐसें। कहे बचन भरि नीति बिनैसें॥ खगपति कृत्ति प्रजाहित कारी। कृपा करऊ तुम परम बिचारी॥ सूतउवाच॥ कश्यपके सुनि बचन सोहाए। बालखिल्य तजि शाख सिधाए॥ तपहित ते हिमगिरि कहँ आए। बाल खिल्य अति आनद छाए॥ तब खगेश कश्यपसो बोले। शाखा तजन बचन अस खोले॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

गदा मुषल पट्टिस अरु पास । भल्ल कुन्तल मुद्गर कर त्रास ॥ शक्ति शतघ्नी चर्म विशाल । धरे सज्ज सुरगण सुर पाल ॥ वर्म पहिरि वरवीर विरुद्ध । खडे अमृत घेरे सुर क्रुद्ध ॥ देखत उद्ध युद्धको काल । खग आगमन अमोघ विशाल ॥ *

॥ * ॥ इत्यादिपर्वणि सौपर्णे ॥ * ॥

शौनकउवाच ॥ कहापराध करो शहसाक्ष । बालखिल्य तपते अति सक्ष ॥ कैसे जन्म लियो खगराज । कश्यप सुत पक्षी केहि काज ॥ आपु अजेय जगत जेतार । सुनो चहत सो कहऊ उदार ॥ सूतउवाच ॥ यह पुराणको विषय मुनींद्र । सुनहु कह्यो जो व्यास कवींद्र ॥ यज्ञ करत कश्यप मुनिराज । पुत्रहेतु तहँ जुरो समाज ॥ रिषि सुरपति गंधर्व समेत । गए सहाय करणके हेत ॥ समिध लेन सुरसहित सुरेश । कश्यपको लाइ चले निदेश ॥ शक्य प्रमाण समिध धरि माथ । सुरन संग आए सुरनाथ ॥ समिध लए यष्टि सम एक । बालखिल्य लगि सहस अनेक ॥ आवत महत भरे श्रम सब । तप तनु क्षश अँगुठा सम खर्व ॥ गोपद जलमह तरत निहारि । हँसे इंद्र बलमद मति धारि ॥ तिन्हे नाघिकै चले सुरेश । बालखिल्य भे क्रोधावेश ॥ सक्र भयङ्कर कर्म विचारि । तपको तेजस महपत सारि ॥ बिधिवत होम लगे ते करण । महा रिचनसों आऊति भरण ॥ काम वीर्य्य कामग बल धाम । सुरपति मदमर्दन अभिराम ॥ अन्य इंद्र सभवके हेत । बालखिल्य सब सुतप निकेत ॥ जानि इंद्र यह मत भय भरण । गए सभय कश्यपके शरण बालखिल्यको कपट बिचारि । कश्यपसों बोले निरधारि ॥ सुनि कश्यप जानो तप रास । नए बालखिल्यनके पास ॥ कर्मसिद्धि पूछो मुनि जाय । उनहु कहो सर्व सति भाय ॥ सान्तिपूरवक कश्यप बैन । तिनसो कहो सुनऊ तप ऐन ॥ त्रिभुवन शासन हेत बिचारि । इंद्र करो यह बिधि निरधारि ॥ अन्य इंद्र करि है का कर्म । यह तुम करत उचित नहि पर्म ॥ ब्रह्मावचन झूठ मति करऊ । ब्रह्म तनय यह मनमे धरऊ ॥ यह संकल्प राखरो तौन । मिथ्या करऊ न हे तपभौन ॥ यह खगेंद्र करिजै सुत धारि । कृपा देवपतिपै बिसतारि ॥ ए सुनिकै कश्यपके बैन । बोले बालखिल्य तपऐन ॥ इंद्र हेतह मरो आरम्भ । तुम पुत्रार्थ करत आलम्भ ॥ यह मम सकल कर्म्म फल जौन । कश्यप दि यो लेऊ तुम तौन ॥ दच्छ सुता बिनता तेहि काल । रितु स्नान करि समुद रसाल ॥ तप व्रत पुण्य भरी अभिराम । गई प्रजापतिपँह सुत काम ॥ कश्यप कहे सुबचन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

उदार। होय मनोरथ सुफल तुह्मार ॥ व्है हैं दोय पुत्र बलधाम। तुह्मरे महाबीर अभिराम ॥ बालखिल्य तपतें सु अनल्प। परम पाय मेरो संकल्प ॥ पुनि मुनि कहो गर्भ यह रत्न। अप्रमाद व्है कीजो यत्न ॥ ए खगेंद्र व्है है बरबीर। काम रूप रणजेता धीर ॥ कह्यो इंद्रसों मुनि सुखपाय। ए करिहैं तो परम सहाय ॥ ए करिहैं न अनिष्ट तुह्मार। इंद्र रहऊ हिय आनंद धार ॥ बिनता भई मुदित लहि अर्थ। जनी अरुण सुत गरुड समर्थ ॥ अरुण भए भास्करके सूत। गरुड पक्षिगणके पुरहूत ॥ ❀ ❀ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ❀ ॥

सूतउवाच॥ गरुड तहां गज कछप खाय। तृप्त होय सुरपुर कहँ आय ॥ अति बल देखि देव भय पागे। सब मिलि शस्त्र चलावन लागे॥ भो मन सुर अमृत रखवारे। क्षण भरि लरे गरुड तेहि मारे ॥ पक्षबातसों धूरि उडायो। अन्धकार सुरपुर महँ छायो॥ धूरि धूंधमह सुरगण अंधा। भए मिढो लरिवेको धंधा॥ तब खगेश अमृत रखवारे। पक्ष तुण्डसों मारि बिदारे॥ तुरित सुरेश बायु बोलवाए। धूरि हरण कँह हुकुम सुनाए॥ बायु उडाय धूरि सब दीन्हो। भयो प्रकाश सुरन्ह खग चीन्हो ॥ सुरन्ह शस्त्रसों गरुड प्रहारे। गरजो खगपति घनसम भारे॥ तब उडि गरुड गगनकों गए। सब देवन्हके ऊपर भए॥ खगपति युद्ध तुमुल अतिधारे। नखन्ह फारि सुर क्षितिपर डारे॥नभते गरुड बेग बर धारे। उर नख पक्ष मरदि सुर डारे॥बमत रुधिर सुरगण सब भागे।चञ्चँ दिगंत गे भयसों पागे॥ साध्य सहित गंधर्ब सुभागे। पूरब दिशा गए भय पागे ॥ रुद्र सहित सुर भय सों भारे। दक्षिण दिशा गए रणहारे॥ पश्चिम दिशि आदित्य सु गए। रुद्र गए उत्तर भयमए॥ फिरि फिरि देखत लरत परानें। सकल परस्पर भयसों सानें॥अश्वक्रंद घोर रव रोषे। रेणुक कथन तपन अति चोषे॥ श्वसन उलूक निमेष रिसाने।प्रभंजु पुलिन अरु शूर सुठाने॥ए एकादश पर तेजस्वी। लरेसु तिनसों गरुढ जशस्वी॥ अरु सुर लरे महाबल भारे। अस्त्र शस्त्र नानाबिधि डारे॥ गरुड तुण्ड नख पक्षन मारे। करि मूर्छित क्षिति ऊपरडारे॥युग अंतहि हर कोपित जैसें।खगपति हने सुरन कँह तैसे॥मरण प्राय सुरगण कार धाए।खगपति निकट अमृतके आए॥तहँ अग्नि चारो दिशि देखे। लहि विस्मय मनमे अवरेखे॥महाज्वाल अम्बरलों धावै। ईनसों कवन उपाय बनावै॥ करि अनेक मुख खगपति धाए।घनलों नदी बारि भरि ल्याए॥डारि वारिसो अग्नि बिताये। खगपति अग्नि निकट तब आयो॥ तहा भ्रमत एक चक्र बिलोके। तीक्ष्ण अमृतको पथ रोके॥अति तनु भानु किरिणि सम क्रिरिकै।आररंध्र मग व्है मुद भरिकै॥ गए सप

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रक्षक द्वै देखे। महाकाल सम अति बिषभेखे॥तिनके चख जा ऊपर परई।बचत न ताहि भष्म सो करई॥रज उठाय तिनके चख भारे। नखसों मरदि गरदकरि मारे॥ अमृत लेइ तब खगपति धाए।चक्र तोरिकै बाहेर आए॥महावेगसों गरुड सिधारे। लखि जब तास बिष्णु मुदभारे॥ आय कहो बरमांगऊ जोई। है प्रसन्न हम देहैं सोई॥ गरुड कहे प्रभु जौं इमि भाखौ। तौ मोहि निति निज ऊपर राखौ॥ हे प्रभु और ऊपर बर दीजै। अमृत पिए बिनु अमर करीजै। कहि तथास्तु हरि आनद पागे।खगपतिसों आपुऊ बर मांगे॥ खगपति तुम साधक शुभ कारज।होऊ शुभद मम वाहन आरज॥ एवमस्तु तव खगपति भाखे। बिष्णु ताहि ध्वज ऊपर राखे॥खगपति चले महाजव धारे। सुरपति आई बज्रसों मारे॥ खगपति बिहसि इंद्रसों बोले। बज्रप्रहार कुसुम सम तोले॥ बज्र तुम्हार मान हम राखै। इंद्र एक पर यातें नाखै॥ बज्र घात हत सजन हमारे। यह कहि एक पक्ष खग डारे॥ देखि इंद्र अतिबिस्मय भारे। खगपतिकों अति प्रबल बिचारे॥ शक्रउबाच॥ खगपति तो बल चाहत जानो। तुमसों सख्य करो तुम मानो॥ ❀👄❀👄❀👄❀👄

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

॥ गरुडउवाच॥ तुम सों सख्य कियो हम कहत।बल असह्य सम जानउ महत॥बलगुण आपन कहत न सन्त। कियो सख्य तुम यातें भन्त॥ गिरि बन उर्वी सहित समुद्र। गहि लेइ चलत लगत मोहि चुद्र॥ लोक चराचर तुम सह जितिक।करि सपिण्ड बहत मोहि कितक॥ शक्रउवाच॥ यह सुनि सुरपति खगपति पास। बोले बचन जगत हितरास॥ यह सब सत्य बचन तब जौंन। खगपति कहत सुनऊ सो तौंन॥ हम तुम सख्य कियो खगराज। देहि अमृत जौं तुमहित काज॥ जाहि अमृत तुम देहऊ जाय। बाधा करिहि मलै सो आय॥ गरुडउवाच॥ लिए जात कछु कारण पाय। काज न देहै अमृत पियाय॥ जहां अमृत हम धरिहैं जाय। तुम हरि लीजो आतुर आय॥ इन्द्रउवाच॥ भए प्रसन्न सुने यह बैन। बर मांगऊ खगपति मुद ऐन॥ सूतउवाच॥ सुनि सुरपतिके बचन खगेश। समुझि अहिनको कपट अशेश॥ सुरपतिसों यह कहो समुझ। नाग होहि सब मेरे भक्ष॥ एवमस्तु कहिकै सुरनाथ। चलेसु अनु खगपतिके साथ॥ अमृत जहा धरिहऊ तुम जाय। हम हरिहैं तहतें खगराय॥माता निकट बेगसों आय।नागन सों यह कहो सुनाय॥ ल्याए अमृत जीति सुरेश। कुशपर धरत जानि शुचिदेश॥ स्नान करऊ मंगल युत आवऊ। अमृत लेऊ परम सुख पावऊ॥ तुम मागो सो लीजै अब। भई उदासी बिनता सब॥ एवमस्तु नागन कहि बोल। गए स्नान करिबें कँह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

०प० लोल ॥ हरि अमृत लै गए सुरेश। खगपतिको लहि पूर्ब निदेश ॥ न्हाय नित्यकरि आए तत्र। धरो रहो अमृतघट यत्र ॥ अमृत बिना सो देखो देश । सुरन्ह हरो यह जानि बिशेश ॥ छल प्रति छल यह भयो बिचारि। नाग लगे कुशचाटन हारि ॥ जीभि भइ तिनकी द्वै फाँक। कहें झूंठ यह कर्म निसाँक॥ अमृत स्पर्श पाय कुशपूत। भए द्विजिह्व नाग सब धूत ॥ तब भरि आनद माता साथ। बिपिनि बिहार कियो खगनाथ ॥ भक्षण करत भुजंग महान। बिनता नन्दन जग सुखदान ॥ यह खगपति यश कीर्तन पर्म । कथा रूप अति भरो सुधर्म ॥द्विजबर सभामध्य जन जौंन ।सुनिहै कै पढिहै शुचि तौंन ॥ स्वर्गबास सो करिहै जाय। व्यास बचन यह सत्य सुभाय ॥ *⬭*⬭*⬭*⬭**

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेनकृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्बणिबिंशत्यध्याये सौपर्ण संमाप्तं ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

अब सुनऊ सूत कुमार। जे अहिनके सरदार ॥ हैं नाम तिनके जौंन। तुम कहऊ क्रमसों तौंन ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ सूतउवाच ॥ प्रथम शेष फिरि बासुकि जाए । अरावत फिरि तक्षक भाए ॥ अरु कर्कोटक नाग बखानो । बिषधर प्रबल धनञ्जय जानो ॥ काली अरु मणिनाग सोहाए। पूरक अरु पिञ्जरक सोपाए ॥ एलापत्र सु बामन नीलौ । कल्माष सबलके प्रथम अनीलौ ॥ आर्य्यक उग्रक फिरि भे दोऊ। कलसपोतक सुनामुख सोऊ॥दधिमुख बिमल पिण्डको जाए । आप्त करोटक शंख सोहाए ॥ बालशिखा निष्टानक कहिए। हेमगुहा नऊषौ फिरि लहिए ॥ पिंगल बाह्यकर्ण फिरि भाए। हस्तिपद मुहरपिण्डको जाए॥ कंबल अश्वतरौ फिरिजानो । फिरि कालीयक भयो समानो ॥ वृत्त और संबर्तक दोऊ। हैं द्वै पद्मनामके सोऊ ॥ कुष्माण्डक शंखमुखौ फिरि कहौ । क्षेमक पिण्डारक हैलहौ ॥ करबीर पुष्पदन्तक बिषभारो। बिल्वक बिल्वपांडुरौ कारो ॥ मूख काद सुशंखसुर नामा । पूर्णभद्र हरिद्रक बिषधामा ॥ अपराजित ज्योतिक अहि कहिए। अरु सुग्रीवह बिषमय लहिए ॥ धृतराष्ट्र शंखपिण्ड अहिभारी । बीरज सुबाहु महत अबिचारी ॥ सालिपिण्ड गजपिण्डक कहिए । पिढरक सुमुख प्रभाकर लहिए ॥ कर्कर और अकर्कर जानो। कुमुद और कुमुदाक्ष बखानो ॥ *⬭*⬭⬭

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

महोदर सुकुण्डोदरा एतिक नाग प्रधान। तिनके नाम कहे सु हमहे मुनिबर सुखदान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

नाग अनकन नामके कहँलों कहैं अनन्त । तिनके वंश पसारको कौंन लहतहै अन्त ॥ आ०प०

इत्यादिपर्वणि आस्तीके ॥ *

॥ शौनकउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भुजङ्ग रहे बिख्यातजे कहे सु तिनके नाम । शापअन्त तिनको कहो कद्रूसों अभिराम ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सेष छोडि कद्रूके संग । गए करन तप उग्र अभंग ॥ पवन पान करि ध्यान लगाय । रहे गंध मादनमे जाय ॥ फेरि बद्रिकाश्रम कों जाय । करन लगे तप आनद पाय ॥ फेरि गए गोकर्ण अनन्य । तहँते गए पुष्करा रन्य ॥ रहे हिमालयमे फिरि जाय । करत उग्रतप ध्यान लगाय ॥ मास रुधिर नस गई झुराय । करो उग्रतप यों फणि राय ॥ देखि घोरतप आय बिरञ्चि । कहन लगे इमि आनद सञ्चि ॥ शेष लहें तो तपस प्रताप । प्रजा विकल सब भई सताप ॥ तातें प्रजा हेत हित गहऊ । मन बांछित सो हमसों कहऊ ॥ शेषउवाच ॥ सोदर भ्राता मेरे दुष्ट । तिनको सङ्गन चाहत पुष्ट ॥ करत असूया शत्रुसमान । सदा परस्पर महत अयान ॥ याते हों तप करत सचैन । मै नहि चाहत लख्यो तिन्हैन ॥ सहित सुतन्ह बिनतासों रोष । राखत मम भ्राता सह दोष ॥ खगपति भ्राता सत्य समान । ताहूपैं अतिसै बलवान ॥ चाहत तप करि छोडन अङ्ग । मरेऊं न बांछित इनको सङ्ग ॥ सुने शेषके अैसे बैन । कहो पितामह लहिकै चैन ॥ ब्रह्मोवाच ॥ तव भ्रातन की सकल कुरीति । हम जानतहैं शेष सुनीति ॥ अरु कद्रूको शाप महान । भयो जो नागनकों दुख दान ॥ ताकोहों परिहार बिचारि । राखो पूरुवहीं निरधारि ॥ ताको शोच न कीजै चित्त । मागहु बर जो वांछित हित्त ॥ हैं तुमपर हम बहुत प्रसन्न । मागहुबर शतधर्मासन्न ॥ शेषउवाच ॥ रहौ धर्ममे बुद्धि हमारि । यहै देऊ बर बिधि निरधारि ॥ करऊ प्रजाहित आज्ञा जौन । करहिं प्रजापति हम सब तौंन ॥ ब्रह्मोवाच ॥ हम प्रसन्नतो देखि सुकर्म्म । तप दम सम तव नीति सुधर्म्म ॥ यह भूसागर सहित पहार । बन पत्तन सह महत अपार ॥ अचल याहि करिकै तुम धरऊ । शेष प्रजाहित कहत सो करऊ ॥ शेषउवाच ॥ यथा कहत तुम हे जगदीश । तथा करव हम बिश्वेबीस ॥ मोसि रपैं धरणी धरि देऊ । औसि धारिहैं सहित सनेऊ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ भू अधजाऊ भुजङ्ग महान । देहैं बिवर धरा सुखदान ॥ धरा धरें अति प्रिय मो होत । तातें धरऊ अवश्य कपोत ॥ सूतउवाच ॥ ए सुनिकै ब्रह्माके बैन । कहत भए इमि शेष सचैन ॥ यह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बसुधरा सहित समाज । धरिहों जगके सहित समाज ॥ ब्रह्मोबाच ॥ धर्मदेव नागोत्तम शेष । धराधार तुम भए अशेष ॥ तुम अरु हम अरु शक्र समान । जग वल्लभहैं शेषमहान ॥ सूतउवाच ॥ अधो भुवन महं बसत अनंत । धरे शीस पर धरा समंत ॥ बिधि सहाय करि दियो खगेश । तब अनंतकी सहित निदेश ॥ माता दयो जो शाप महान । सुनि बासुकि भे चिंतामान ॥ मिटे शाप यह कौनप्रकार । मनमे लागे करन बिचार ॥ करन लगे भ्रातनसह मंत्र । करि ऐरावत दिए कुतंत्र ॥ सूतउबाच ॥ माता दयो जो शाप अखर्ब । तुम सब मिलिकै सुनो सोसर्ब ॥ तौन शापको मोक्ष बिचारऊ । तुम सब शांति मंत्र निर धारऊ ॥ अन्य शापको मोक्ष अनेक । माटशापको हरन न एक ॥ दियो शाप ब्रह्माके अग्र । सोसुनि कँपत हृदय मम व्यग्र ॥ सर्प शापके करता बेधासुनि न पितामह कियो निषेध ॥ तुम सब मंत्र कुशलको करऊ । जाते तुम न अग्निमे जरऊ ॥ पहिले यत्न बिचारऊ तज्ञ । फेरि करै जनमेजय यज्ञ ॥ यह सुनि सकल सर्प सरदार । कहन लगे सब मति अनुसार ॥ एकन कहो धरऊ द्विजरूप । चलऊ जहां जनमेजय भूप ॥ भिक्षा यहै मागिअै तज्ञ । सर्प समन नृप करऊ न यज्ञ ॥ औरन कहो धरऊ नररूप । चलऊ जहां जनमेजयभूप ॥ वै हित मंत्री ताके रहऊ । यज्ञ मंत्र करबो नहि कहऊ ॥ नाना बिधिके दोष सुनाय । यज्ञकरन मत देहि नसाय ॥ उपाध्याय जो क्रतुको होय । सर्प सत्र बिधि कर्ता जोय ॥ ताहिकोऊ अहि काटो जाय । ताके मरेसो यज्ञ नसाय ॥ सर्प सत्रमे आवै जिन्हहि । ऋत्विज भए काटिए तिन्हहि ॥ तिनके काटे यज्ञ न होय । यह बिचार कीजै सब कोय ॥ रहे सुधर्म कहे तिन बैन । द्विज हिंसातें होत न चैन ॥ भय नाशक करिए क्रत तौंन । बढै धर्म करताहै जौन ॥ एकन कहो होहिं जलदान । बरषहि बिद्युत बलित महान ॥ यज्ञ अग्निको करहि बिनास । जेहितें मिटै अनर्थ प्रयास ॥ एकन कहो यज्ञमे जाय । स्रुवा चमस सब लेहि चोराय ॥ एकन कहो हजारन सर्प । चलऊ यज्ञमे धारें दर्प ॥ यज्ञ जननको दंसन करऊ । मिटै यज्ञ सहजेहिं मुद भरऊ ॥ अथवा हव्य बस्तुमे जाय । मूत्र पुरीष देऊ बिषनाय ॥ एक कहहि ऋत्विजबनि चलऊ । यज्ञ कर्म उलटो करि छलऊ ॥ जनमेजय जब आबै न्हान । सब मिलि चलिए सुनो सुजान ॥ ताहि पकरि ल्यावऊ एहि लोक । मिटै यज्ञको कारण शोक ॥ जनमेजय कँहँ काटऊ जाय । कारण दुखको सकल नशाय ॥ यह हमार निश्चयमति सुनऊ । हे बासुकि तुम अनमहँ गुणऊ ॥ यह न रुचै तौ सुनु नागेश । जो हित होय सो देऊ निदेश ॥ यह सुनि बासुकि हिएँ बिचारि । तिनसों कहो महामति धारि ॥ यह तुम्हारि मति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रुचति नमोहि। यामे परत न हित तव जोहि॥ कश्यप पास विनय चलि करऊ। जो वै आ०५
कहैं सो हियमह धरऊ॥ सुनऊ नाग तोमति निरधारि। करिबो चहति न बुद्धि हमारि॥
सोई हमै कारण कहँ उचित। हितथिति लहऊ होऊ तुम सुचित॥ रहत हमै यह महत
विचार। मोश्रिर भले बुरेको भार॥ सूतउवाच॥ सर्पनके नानाविधि बैन। सुनि
बासुकिके बचन अचैन॥ एलापत्र नाग अति तज्ञ। कह्यो अवश्य होयगो यज्ञ॥ नही
विघन करिबे अनरूप। पांडवेय जनमेजय भूप॥ सदा देव ताकँह अनकूल। है भवितव्य
हमहि प्रतिकूल॥ तातें दैवाश्रयकँह करऊ। जातें दुःखदुसहतें बरऊ॥ शाप समय
सुरबचन अशंक। सुनो रहो कद्रूके अंक॥ देवन्ह कहा पितामह पास। बचन विनीत
भरे अतिन्रास॥ देवाउचुः॥ हे प्रभु कद्रू महा कठोर। शाप दियो पुत्रनकहँ घोर। कद्रू
बिना करै असकौन। तो समीप अनुचितकोभौन॥ तुमऊ पितामह कह्यो तथास्तु।
कारण कहा नबोले मास्तु॥ सो कारण सुनबे कहँ चहत। कहऊ कृपा करि हे प्रभु
महत॥ पितामहउवाच॥ पन्नग बऊत सुभाव कठोर। भरे महा विष हिंसक घोर॥
सुनहु प्रजाहित काम विचारि। कद्रू शाप न दीन्हो बारि॥ सर्पक्षुद्र पापी विषरास।
तिनको भावो विहित विनास॥ अहि जे पुण्या चरण सधर्म। ते सब कशल रहहि गे पर्म॥
सर्प बचनको कारण जौंन। सुऊन देवसब भाषत तौंन॥ ह्वहै जाया बरके बंश।
जरत्कारु सुत परम प्रसंश॥ जरत्कारुको सुत अभिराम। है भविता आस्तीक ललाम॥
सो लेहै वह तिन्है उबारि। रहे जे धर्म कर्म निरधारि॥ देवाउचुः॥ जरत्कारुको
भार्या कौन। जनमो मुनि आस्तीकहि जौंन॥ ब्रह्मोवाच॥ भगिनी बासुकिको
अभिराम। जरत्कारु है ताको नाम॥ तासु पुत्र आस्तीक मुनीश। क्षीरसिंधुतें ज्यों
रजनीश॥ होनहार आगे है जौंन। करिहै शाप शमन सब तौंन॥ एलापत्रोवाच॥
एवमस्तु सुर कहि बिधिसंग। गए स्वर्ग कँह भरे उमंग॥ बासुकि तव भगिनी अभिराम।
जरत्कारु है याको नाम॥ सो भिक्षा सम मुनिकहँ देह। शाप शांतिको कारण एह॥
सुनो पूर्व सो कहो समस्त। कहो फणीसहोय जो सस्त॥ अनुजा जरत्कार करि यत्न।
राखत नागराज जिमि रत्न॥ कछुदिन गए सुरासुर संग। मथो सिंधु तब भरे उमंग॥
रज्जुभए बासुकि बलधाम। काढे रत्न सकल अभिराम॥ तापीछे सुरगणके साथ।
बासुकि गए जहाँ विधिनाथ॥ कहे सुरन इमि सविनय बैन। सुनऊ पितामह करुणाऐन॥
भरो शापके ताप महान। तपत रहत बासुकि बलवान॥ याको मानस स्वल्प अनर्थ।
तुमही काढन जोग समर्थ॥ जननी शाप ज्ञातिहित हेत। रहत खेदसों पूरण

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

चेत ॥ प्रियकर बासुकि सदां हमार । कीजै देव शाप संहार ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शापोद्धार प्रथम ठहराय । सुनऊ अमर यह नियत उपाय॥ एलापत्र कहे जे बैन । काल पायकै करै सचैन॥ पापी नाग रजरहिंगे खर्ब। बचिहैं पुण्यमान ते सर्ब ॥ उपजो जरत्कार तपधाम । भगिनी जरत्कारु अभिराम ॥ वासुकि काल पाय तेहि देऊ । शाप शान्तिके कारण येऊ ॥ एसुनि बासुकि बिधिके बैन । भगिनी दीवेकों धरिचैन ॥ बोलि अनेकन सर्प सुजान । शासन दियो परम सुखदान ॥ जरत्कार ऋषि जेहां होंय । ताके निकट रहऊ तनुगोय ॥ ऋषि चाहै जब भार्य्या बरण । तब तुम झटित कहेऊ हृदिहरण ॥ शौनकउवाच ॥ जैसे भयो सुमुनि आस्तीक । कहऊ सूत बरणन करि नीक॥ सूतउवाच ॥ बासुकि नागनसों इमि भाखि । रहे सुचित धीरज हिय राखि ॥ उद्दित स्वसादान पन धारि। जरत्कारु प्रति रहे बिचारि॥ दीरघ काल गयो तव बीति । मुनिबर भरो महातप प्रीति ॥ ऊरधरेता फिरतै रहत । चारोआर न थिरता गहत ॥ भार्या बरणन चितमहँ चहत। धरे प्रीति तवसों अति महत ॥ अपर कालमह पाण्डव बंश । भयो परीक्षित नृप अवतंश ॥ पण्डु यथा प्रपितामह बीर । मृगयाशक्त भए नरधीर ॥ तथा परीक्षित मृगया शक्त । भयो सदा मृगबध अनुरक्त ॥ हन्यो एकदिन मृगकँह बान । सो घायल वनओर परान ॥ मृग पीछे राजा बनओर । ढूंढत चले बिपिनिमह घोर ॥ धारें धनुष महत बनमाह । मृग अनु चले गए नरनाह ॥ श्रम लहिकै भो मूर्छित भूप । स्वर्गगमनको पूरुब रूप ॥ बहुत दूरि मृग पीछे जाय । तृषा आर्त भो कुरुकुल राय ॥ तहां जाय देखो मुनि एक । रहत गोष्टढिग भरो बिबेक ॥ बछ पियत गोपयकह जौंन । कढत फेन मुख चाटत तौंन ॥ ता मुनिके ढिग भूपति जाय । पूछन लागे धनुष उठाय ॥ मुनि हम भूप परीक्षित नाम । हैं अभिमन्यु पुत्र अभिराम ॥ मो हत शरघायल मृग जौंन । इत आयो तुम देखो तौन॥ मुनि बोलो नहि धरें समाधि। भूप रिसाने पहुंची आधि ॥ मृतक सर्प धरि मुनिके कंध । चले क्रोधबस भूपति अंध ॥ भूपति कीन्हों नगर प्रबेश । बैठे रहे सुमुनि तेहि भेश ॥ भूप करो इतनो उतदाप । क्षमाशील मुनि दयो न शाप ॥ मुनि सुत शृङ्गी तरुण सुकाय । सुने पिताकहँ अैसे भाय ॥ ब्रह्मलोकसों आयो तूर्ण । भो तपधाम क्रोधसों पूर्ण ॥ शृङ्गी सखा नाम कृष रहो । हँसत हँसत तेंहि अैसें कहो ॥ कृशउवाच ॥ पिता तुम्हारो सब अहि बहत । कहा तिहारो तप बल महत ॥ शृंगी कहो कहऊ कृशमित्र । लहैं मृतक अहि कैसें पित्र ॥ कृशउवाच ॥ हनो परीक्षित मृगकहँ बान । बिद्ध भयो मृग हो बलवान ॥ मृग अनु ढूढत नृप इत आय । सो मृत सर्प कण्ठ लपटाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

शृंगीउवाच ॥ पिता दोषका कीन्हो तास। कहऊ मित्र सोसव मोपास ॥ ऋशउवाच ॥ खोजत मृग एकाकी भूप। बनमे लखो न मृगको रूप ॥ लखि तव जनकनिकट सो आय। ढूंढत मृग लागो सो राय ॥ बेर बेर पूछो तिहि पांहि। उत्तर दियो मौनव्रत नांहि ॥ क्षुधा पिपासातुर रिसि छाय। धनुष कोटिसों सर्प उठाय ॥ धरि मुनिकंध परीक्षित क्षिप्र। गयो हस्तिनापुर सुनु विप्र ॥ लए सर्प सो पिता तुह्मार। हैं देखऊ तुम तासु कुमार ॥ सूतउवाच ॥ सुनि अैसें करि राते नैन। भो शृंगी क्रोधानल अैन ॥ करि आचमन बारिसों विप्र। शाप दियो भूपतिकों क्षिप्र ॥ शृंगीउवाच ॥ जो ममपिता कंधपर सर्प। डारि गयो पापी करि दर्प ॥ ताकहँ सात निशाके बीच। तक्षक डसै मरै सोनीच ॥ अैसो शाप देइकै उड्ड। शृंगी गयो पिताढिग क्रुद्ध ॥ धरें मृतक अहिगो ब्रज मांह। बैठो देखि पिता मुनिनाह ॥ लहि दुख बहत नयनतें नीर। कहे पितासों बचन गभीर ॥ सुनि तो धर्षन नृप कृत पाप। दयो परीक्षितकों हम शाप ॥ अैसो कर्म्म करैगो कौंन। यातें शाप जोग्य नृप तौंन ॥ सतएँदिन जो तक्षक सर्प। ताकहँ डंसिहि नियत करिदर्प ॥ नृपति परीक्षित यमके अैन। निश्चय जाय नियत मो बैन ॥ सूतउवाच ॥ कहो वृद्ध मुनि सुतसों बैन। धर्म्म तपस्विनको यह है न ॥ जाके बसी देश महं तात। नृप सो करै कबू उतपात ॥ क्षमा धर्म्म साधुनको तात। हनत धर्म जो सोहनि जात ॥ राजातें रक्षित नहि जौंन। पीडा लहत देश सब तौंन ॥ बसत तपस्वी जाके देश। लहत सो तपको अंश नरेश ॥ क्षमा योग्य हो भूप महान। तात परीक्षित पंडुसमान ॥ क्षुधित श्रांत जानो अपमान। भयो न सो मौनव्रत ज्ञान ॥ बिना भूपजन दोष अनेक। करत डरत नहि हरत बिवेक ॥ भूपदंडभय शान्ति समस्त। नातरु होत धर्मसब अस्त ॥ नृपतें मख मखतें परजन्य। तातें अन्न सुरस अनगन्य ॥ होत अन्नतें मनुज स्वरूप। यातें कारण सबको भूप ॥ दश औचीसम राजा पूत। यह मनुबचन कहो शुचियूत ॥ दियो बाल्यवस नृपकहँ शाप। सो न योग्य हो ईतने पाप ॥ शृंगीउवाच ॥ कैसेऊ दियो शाप हम जौन। मिथ्या होय तात नहि तौन ॥ हौं तो मृषा न कबहूँ कहत। मिथ्या होय शाप क्यो सहत ॥ समिक उबाच ॥ जानत उग्रसुभाव तुम्हार। बिदित सत्य है बचन उदार ॥ पुत्र कितीको होय सयान। शिक्षा पिता करै सुखदान ॥ हो बालक यातें हम कहत। क्रोध सहत किन्हें तप दहत ॥ तातें तुम समताकँहँ धरऊ। वन्य वस्तु सो भोजन करऊ ॥ करत क्रोध तप धर्म्म बिनास। परगति मिटति धर्मको ह्रास ॥ क्षमापतिनकँह कारण सिद्धि। करति दुष्ट

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लोकनकी बृद्धि ॥ जितेंद्री क्षमायुक्त जे रहत । विधि ढिगके लोकन कँहँ लहत ॥ तब समीक मुनि सौम्य सुभाय । कहो गौरमुख शिष्य बोलाय ॥ यह सन्देश लए तुम बिप्र। जनमेजय नृपपँह अति क्षिप्र ॥ पुत्र हमारे दीन्हो शाप । बाल भावतें लखि तो पाप ॥ मृतक सर्प राखो मम कंध ॥ देखो तिहि तो धर्षण धंध ॥ सूतउबाच ॥ कहे शिष्यसों ऐसें बैन। मुनि समीक हिय भरे अचैन ॥ कुशल प्रश्न कहिकै अति शान्त। फेरि कहेऊ सिगरो बृत्तान्त ॥ ले सन्देश चलो सो बिप्र । भूप भवन महँ पऊँचो क्षिप्र ॥ द्वारपालसों कहो पठाय । सुनतहि भूपति लयो बोलाय ॥ पूजि बिप्रकँक तपसनिकेत । पूछनलग आगमन हेत ॥ कहे गौरमुख मुनिके बैंन । महाघोर अति भरे अचैंन ॥ गौरमुखउबाच ॥ मुनि समीक भूपति तपधाम । बसत राबरेदेश ललाम ॥ शान्त दान्त शुचि कृपानिधान । तासस्कन्ध सर्प गतप्राण ॥ धरि आए नृप अपने ऐन । मौनब्रत मुनि कहे न बैन ॥ ताके पुत्र लखो सो आय । दीन्हों शाप तुम्हे रिसिछाय ॥ सातदिबस महतक्षक सर्प। तुम्हैं काटिहै पूरण दर्प ॥ नियत मरण तब होई भूप । तातें करहु यत्न हितरूप ॥ पुनः पुनः इमिसो मुनि सुबेश । कहो शाप यह तथ्य नरेश ॥ तातें पठयो तुम्हरे पास । यत्न करहु नृप सहित प्रयास ॥ सूतउबाच ॥ सुनि तब नृप पूरे अतिताप । समुझि कियो जो मुनि प्रति पाप ॥ सुनत मौनब्रत मुनि बर भूप । भए तप्त मानस कृशरूप ॥ मुनिबर कृपा बिचारि बिचारि । दोष आपनो चित निरधारि ॥ भए बिकल छत कल्मष मानि । तथा न मृत्युभीति हिय आनि ॥ कियो गौरमुख बिदा नरेश । कहेउ करौंहँ मुनि कृपा बिशेष ॥ तब राजा मंत्रिनसों मंत्र । बूझन लगे होइ एकतंत्र ॥ एक खभर कियो प्रसाद । नहँ बैठे नृप सहित बिसाद ॥ रक्षक राखे सुहित सुजान । भेषज भिषज जानि सुखदान ॥ गरुडसु तंत्र मंत्रबिद जौंन । राखे चऊ दिशि रक्षक तौन ॥ करे अनेकन ब्राह्मण बर्ण । करत प्रयोग सर्प बिषहर्ण ॥ मंत्री रक्षत चहुदिशि यत्र । बातो जाय सकत नहि तत्र ॥ तहां परीक्षित रक्षित जाय । बैठे सावधानता छाय ॥ ❀ ❀ ❀

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्यज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना कृत महाभारतदर्पणे आदिपर्वणि आस्तीको पाख्याने एकविंशोऽध्यायः ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

॥ सूतउबाच ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

काश्यपजवर मंत्रबिद परम तपस्यारास । चल्यो परीक्षित भूपपँह करणसर्पबिष नास ॥
सुनो परीक्षित भूपकों आजुड सिहि करि दर्प । कुरकुल कमल महीपकों अति बिष तक्षक सर्प ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

अर्थ धर्मको लाभ बिचारे । आवत तक्षक ताहि निहारे ॥ बृद्धबिप्रवनि ता ढिग आयो । बूझो जात कहां द्विज धायो ॥ जानि बिप्र तेहि कारण भाखे । सुनि तक्षक अति मनमह भाखे ॥ तक्षकोबाच ॥ हम तक्षक हैं बिप्र बिचारो । मोदंसितकँह चहत उबारो ॥ बिप्र फिरऊ घरओरहि धारो । व्यर्थ परिश्रम सकल तिहारो ॥ काश्यपउवाच ॥ हम तक्षक भूपतिपँह जैहैं । तो दंशित बिज्वर करि दैहैं ॥ है बिद्यावल बुद्धि हमारे । होत कहा अहि डसे तिहारे ॥ तक्षकउबाच ॥ मो दंशित तुम चहत उबारो । सुनऊ बिप्र यह बचन हमारो ॥ हम न्यग्रोध दशत तुम ज्याओ । मंत्रपराक्रम मोहि देखाओ ॥ काश्यपउबाच ॥ हे नागेन्द्र बृक्ष यह काटो । जौं अभिमान हृदय महं पाटो ॥ सुने बचन काश्यपके ऐसें । काटो तक्षक बट अतिरैसे ॥ काटत माच महाबिष जागो । जागी ज्वाल जरन तरु लागो ॥ करि तरु भस्म नाग इमि बोलो । ज्यावऊ बृक्ष बिप्र गुण खोलो ॥ तरुकोभस्म एकटैं करिकै । काश्यप कहो रोष हियधरिकै ॥ बिद्यावल मो पन्नग देखो । ज्यावत बृक्ष यथास्थित पेखो ॥ तब काश्यप बिद्यावल धारो । भस्मराशितें बृक्ष निकारो ॥ अंकुर प्रथम पत्र द्वैतातें । कढो डार बढि भरो प्रभातें ॥ जीवित सुतरु यथास्थित देखो । तक्षक कहो समय छलभेखो ॥ हे द्विजेन्द्र मो बिष वर जारो । इच्छित काम होय जो थारो ॥ चाहत जो भूपतिसों पायो । सोहम देत तुम्है मनभायो ॥ मुनिबर शाप गतायुष राजा । जौ गुण तब लगिहै न दराजा ॥ जश प्रदीप त्रिभुवन महंथारो । बरि इब अस्त होयगो भारो ॥ काश्यपउबाच ॥ धनके अर्थ जात हम जानो । तुमहीं देऊ जाहि फिरि मानो ॥ तक्षकउबाच । धन चाहत भूपतिसों जेतो ॥ तातें अधिक देत हम हेतो । लेऊ यथेच्छित धन फिरि जैऐ । भूप गतायु शापहत हैऐ ॥ सूतउबाच ॥ काश्यप तक्षक बैन सुरेखे । ध्यान धारि भूपति प्रति देखे ॥ भूपति भयो गतायुष जानो । फिरो बित्त लै अहि बच मानो ॥ काश्यप फिरो समयकँह पायो । तब तक्षक हास्तिनपुर आयो ॥ रक्षमाण भूपति सुनि पायो । औषधि मंत्रबिदनसो छायो ॥ सूतउबाच ॥ तब माया चिन्तित चित दीन्हों । चहत भूपकँह बञ्चित कीन्हों ॥ नागन बोलि कह्यो छल कीजै । भेष तपस्विनको धरि लीजै ॥ फल कुशपाणि भूपढिग जैऐ । द्विज सम बोलि बचन छलकैऐ ॥ सूतउबाच । तब नागन्ह द्विज बेश बनाए । कशफलपाणि भूपपँह आए ॥ आशिष सहित भूपकँह दीन्हों । करि प्रणाम भूपति फल लीन्हों ॥ बिदा करो भूपति धन देकै । फल कुश फूल धरो ढिग लैकै ॥ तब राजैं मंत्रिनसों भाखे । परमपक्व फल ते ढिग राखे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० सरस पुनीत बिप्रबर ल्याए। भरे स्वादसों चहियत खाए॥ यामे खात एकफल हमहूं। भोजन करऊ सकल ले तुमहूँ॥ एक परम फल भूप उठायो। मुनिबर शाप समय सो आयो। जामे करि प्रवेश अहि आयो॥ सो फल लै नृप चाहत खायो॥ फल तोरत तामे कृम देखो। अरुण श्याम चख तनु तनु भेखो॥ गहि नृप सो सचिवन्हसों भाखो॥ अस होत रवि बिष भय नाखो॥ सत्य बचन मुनिबरको कीजै। या कृमकों काटन हम दीजै॥ तक्षक नाम सो याको धरिऐ। यह प्रतिहार शापको करिऐ॥ यह तथास्तु मंत्रिनऊ कहेा॥ बिधिको लिखो होति सोअहेा॥ सो लै कृम ग्रीवापर नाखेा॥ शाप सत्य मुनिबरको भाषेा॥ घोररूप तक्षक तब धारेा॥ लपटि ग्रीव सैं अति फुफ कारेा॥ काठत भूप मृतक व्है गयेा॥ हाहाकार चहाँ दिशि भयेा॥ सूतउवाच॥ व्है बिवर्न मंत्री सब भागे॥ भरे महाभय रोवन लागे॥ तक्षक काटि गगन पथ लागेा॥ अरुणरूप अति तेजस पागेा॥ बिषज अग्नि सैं मंदिर जारेा। चऊदिशि भरेा तापअति भारेा॥ नृप परलोक कृपा सब करिकै॥ राज पुरोहित जन शुचि धरिकै॥ मंत्रिन परम मूहूरत चीन्हेा। जनमेजय कँह राजा कीन्हेा॥ बालक बैस आर्य मति धारें। राज काज सब करत बिचारें॥ मंत्री सुजन पुरोहित लीन्हें। रक्षन प्रजा जथास्थित कीन्हें॥ भयेा किशेार भूप बरदेखेा। मंत्रिन व्याह करण अवरेखेा॥ काशीपति नृप सुबरन बरमा। ताकी सुता बपुष्टमा परमा॥ भार्या हेत माँगि सेा लीन्हें। धर्म परीक्षा करि तेहि दीन्हें॥ जनमेजय करि भार्या ताकों। भरे मोद लहि पूर प्रभाकों॥ कुसुमाकर बनमे मुद पागे। नृपति तहाँ बर बिहरन लागे॥ बपुष्टमा सेा पति व्रत धारे। बिहरति पतिचित हित अनुसारे॥ रति रतिपति सम सुन्दर दोऊ। काहि समान कहैं नहि कोऊ॥

अस्तिश्रीकाशेराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि आस्तीकीये द्वाबिंशेाध्यायः॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आयाबर मुनि जरत्कारुकी कथा कहो ही जान। सोई लहो कही नही यातें पीसेा पीसत कौंन॥ बासुकि भगनी जरत्कारु कँहँ लीन्हें सहित सनेह। ल्याए कहेा कृपा करिकै यह हे मुनिबर तुमलेहा॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ सूतउवाच॥ जरत्कारु मुनि करि स्वीकार। बासुकिसों इमि कहेा उदार॥ तेा भगिनी कोपेाषन भरन। बासुकि परिहै तुमकों करन॥ बासुकि कही स्वसा मम बरऊ। भरण

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हेत चिंता मति करऊ ॥ रक्षण भरण करब हम सर्व । यह चिंता कीजै मतिखर्व ॥ आ॰
॥ ऋषिरुवाच ॥ करिहि अवज्ञा स्वसा तुम्हारि । तब हम त्याग करब निरधारि ॥ सूतउवाच ॥
सुनि तथास्तु वासुकिके बैन । चले गए मुनि ताके अैन ॥ दृढ़ वेदविद मुनिवर आय । पाणि
ग्रहण सुदिथो कराय ॥ बास अथ गृह अति रमणीय । भरो सकल संपति कमनीय ॥ वासुकि
आज्ञा लहि सहदार । बासकियो मुनि तहां उदार ॥ जामहं सज्या रचित बिचित्र । जाहि लखें
मन लहत चरित्र ॥ जरत्कारु तँह भार्यासंग । रहे जाय कारक रसभंग ॥ तहां प्रतिज्ञा कीन्हों
जाय । भार्यासों मुनि उग्रस्वभाय ॥ मो अप्रिय करिहौ बसभाग । तब हम करब तिहारो त्याग ॥
यह मो बचन हृदयमह धरऊ । मो अप्रिय कबहू मति करऊ ॥ एवमस्तु कहिकैं सुकुमारि ।
सभय रही मुनिसंग बिहारि ॥ रितुस्नान मुनिसंगमपाय । रहो गर्भ ताके सुखदाय ॥ अग्नि
समान गर्भ सुखदान । यथा अभ्रगत ग्रीषम भान ॥ शुक्लपक्षके शशीसों बढत । नितप्रति परम
प्रभासों मढत ॥ एकदिवस सोए मुनिईश । तास जघनपर धरिकै शीश ॥ अस्तमान सविताकँह
जानि । संध्यासमय हिये अनुमानि ॥ वासुकि भगिनी सभय महानि । संध्याछुटे धर्मकी हानि ॥
हैं भर्ता अतिक्रोध स्वभाय । यातें शकति न तिन्हैं जगाय ॥ भर्ताकोप धर्म्मको लोप । दुऊ मधि कहा
करों आरोप ॥ धर्म्महानि होनो अतिदोष । करौ न करौ प्राणपति रोष ॥ यह बिचारि बोली
मृदुबैंन । मधुर भाषिणी सभय अचैंन ॥ उठऊ नाथ तजि निद्रानेऊ । अस्त होत रविअञ्जलि देऊ ॥
यह सुनि उठे भरे मुनि कोप । करण लगे तब दोषारोप ॥ सर्पस्वसा मेरो अपमान । तुम कीन्हों तजि
परम प्रमान ॥ कह्यो सु तेहिं सुनिए मुनिराय । तो अपमान न कियो जगाय ॥ धर्म्मलोप तो हिए
बिचारि । तुम्हैं जगायो साहस धारि ॥ जरत्कारुरुवाच ॥ मो अञ्जलि लीन्हे बिनु भानु । कैसे होत
अस्त यह जानु ॥ जहँ अपमान लहत जन महत । मम समान तेहां नहि रहत ॥ अमृतबचन नहि
सुनऊ हमार । प्रिय करत हम त्याग तुम्हार ॥ तुम चलि भ्राटभवनमह रहऊ । हम अब जात शोच
नहि गहऊ ॥ यहकहि गमन कियो मुनिराय । जरत्कारु तब कहो अवाय ॥ गद्गद गिरा बदन गो
सूखि । बहत नयनजल आनद दूखि ॥ धर्म्म धरें बोली यह बैंन । हमैं छोडिबे उचित तुम्है न ॥
निरापराध धर्म्मरत मोहि । करिबो त्याग न लायक तोहि ॥ मोहि तुम्है दीन्हो जेहि हेत । सो न
भयो हे तपसनिकेत ॥ वासुकि मोहि कहिहि का बैन । भ्राटशापसों महत अचैन ॥ तुमतें पुत्र
प्राप्तिके काम । सो नहि देखि परो अभिराम ॥ तुमतें पुत्रप्राप्त जौं होत । सुखसों रहत हमारो
गोत ॥ तुमतें मम संगम अभिराम । सो न अमोघ भयो तपधाम ॥ ज्ञातिवर्गकों अतिसुखदाय ।
गर्भ भो न प्रापत मुनिराय ॥ होय महात्मा छोडत मोहि । निरापराध योग्य नहि तोहि ॥ सुनिए
नागस्वसाके बैन । बोले जरत्कारु तपऐन ॥ बालें पुत्र भविष्य सलाम । तोतें परमतपस्या धाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० व्है है सत्य मानु मम बैंन । भानुसमान तेजको अैन ॥ यह कहि उग्रतपस्या हेत । जरत्कारु तजि गए निकेत ॥ जरत्कारु वासुकिपँह जाय । सबवृत्तांत कहो दुखछाय ॥ सुने भुजगपति अप्रिय बैंन । भगिनीसों इमि कहो अचैंन ॥ वासुकिरुवाच ॥ मुनिकंह दियो तोहि जहि हेत । सो जानति तूँ धर्म्मनिकेत ॥ तातें होत पुत्र तव जौंन । रक्षत सर्पसत्रते तोंन ॥ कहो पितामह सुरनसमेत । नियत बचन सो सत्यनिकेत ॥ कियो गर्भधारण मुनिपास । कहो स्वसासों आनद रास ॥ यह नहि तोसों बूझन योग्य । जरत्कारु कहैं बचन अयोग्य ॥ मुनिबर चलतसमय जो बैंन । कहे कहहुं ते आनद अैन ॥ है दुख स्वल्पहृदयमह जौंन । कीजै दूरि बचनकहि तौन ॥ जरत्कारु सुनि भ्राता बैन । समाधान करि कहो सचैन ॥ जरत्कारुरुवाच ॥ पुत्रहेत हम बूझो ताहि । गए अस्ति कहि सकरुण चाहि ॥ सहजेऊ कहत अलीक न बैंन । बूझें कहै सो क्यों तपअैंन ॥ तजि संताप देऊ नागेश । सफल मनारथ जानि अशेष ॥ सूतउवाच ॥ यह सुनि बचन परम अहिराज । भरे मोदसों सहित समाज ॥ धन मणिगण लै भुजगन साथ । कियो स्वसा पूजन अहिनाथ ॥ भरो गर्भ तपतेज अमंद । बढत यथा द्वितियातें चंद ॥ लयो जन्म अलीक कुमार । समयपाय बरलग्न उदार ॥ मुनिआस्तीकढे अभिराम । नागराजके धाम ललाम ॥ पढे अङ्गसह सिगरे बेद । च्यमनक ऋषिसों परम अखेद ॥ बालबैस धारे ब्रत सर्ब । मातुलगृहमह भए अखर्ब ॥ नागराज करि महत प्रयत्न । ताको करत रहत नित यत्न ॥ शूलपाणि सम सो तपधाम । बर्धमान भोसो गुरग्राम ॥ अस्ति गर्भ कहि गो मुनि नीक । यातें नाम धरो आस्तीक ॥ ताहिदेखि पन्नग मुद भरत । सर्पसत्र चिन्ता नहि करत ॥ **

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेगोकुलनाथकविनाकृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वण्यास्तीके त्रयोविंशोध्यायः ।

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ शौनकउवाच ॥ जनमेजय मंत्रिनसों जौन । पूछो सूत कहहु तुम तौंन ॥ सूतउवाच ॥ मंत्रिनसों जनमेजय भूप । पूछो तौंन कहत अनुरूप ॥ यथा परीक्षितनृपको मर्न । मंत्रिन कहो खेदमय वर्न ॥ जनमेजयउवाच ॥ जानत हौ तुम सब वृतान्त । पिता मरे मम ज्यों क्षिति कान्त ॥ सुनो चहत हों तुह्मरे पास । पितामरणको सब इतिहास ॥ सुनिकै प्रतीकार मै तास । करौं लेय विज्ञनकों पास ॥ सूतउवाच ॥ कहे नृपपति जब अैसे बैन । मंत्री चतुर पायकै चैंन ॥ मंत्र्यउवाच सुनहु भूप पूछत सो जौन । चरित पिताको सुनिए तौन ॥ पालत प्रजा पिता तो पर्भ । चारि वर्णको राखि स्वधर्म ॥ भूरक्षण सो करत अनूप । महा पराक्रमशाली भूप ॥ ताके शत्रु न रहे विशेष । सो अरिभाव न धारत शेष ॥ रहे प्रजापतिसम जुत चाव । सबसों राखत समता भाव ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

द्विज चारो बिप्र शूद्र सकर्म। करत तास शासन क्षितिपर्म ॥ रहत विदुषजन आदर पाय। विकल आ
अनाथ न कोउ सुखदाय ॥ देखत मोद लहत जन तोम। यथा चकोर चढो लखि सोम ॥ धनुर्वेदके
शिष्य अनूप। भए सु कृपाचार्यको भूप ॥ प्रिय गोविन्दको पिता तुम्हार। षडवर्गनको जीतन
हार ॥ जितेंद्री लोकप्रिय मतिमान। साठिवर्ष करि राज्य सुजान ॥ गे परलोक स्वर्गकहँ भूप।
तुम राजा अब भए अनूप। वर्षसहस सौं कीजै राज। पालऊ सेवक प्रजासमाज ॥ जनमेजयउवाच ॥
भे न कदाचित यहि कुल भूप। होंहि प्रजाकहँ अहित स्वरूप ॥ पितामहादिकको सतराह। देखि
सुधर्म भए क्षितिनाह ॥ कैसें मरे पिता मम प्रभू। सो तुम कहहु सचिवसह धर्म ॥ सूतउवाच ॥ पूछो
तिनसों जब इमि भूप। सचिव कहन तब लगे अनूप ॥ भूप परीक्षित वीर बिशाल। मृगयासक्त भयो
क्षितिपाल ॥ यथा धनुर्धर पाण्डु उदार। राज काजको हम शिरभार ॥ राखि गए नृप वन गंभीर।
सरसों हतो तहां मृग धीर ॥ भजो सोमृग करि ताको उह। धरें भूमिपति शस्त्र समूह ॥ चले तासु
अनु वनमह भूप। हेरत श्रम पायो अतिरूप ॥ मिलो न मृग तँह लखि कपि एक। गो व्रजमें तप
भरो बिवेक ॥ वृद्ध आन्तवस्त्र तपित नरेश। चलि ऋषिढिग यह कियो निदेश ॥ सरघायल मृग
आयो बिप्र। इत कित गयो कहो लखि क्षिप्र ॥ बोलो मुनि न मौनव्रतधारि। तब नृपवर अपमान
बिचारि ॥ भरेक्रोध मृतसर्प उठाय। धनुष कोटिसों नीरे जाय ॥ तासकन्ध धरि दीन्हों
तौंन। जानो भूप न मुनिव्रत मौन ॥ साधु असाधु न बोले बैन। अचल समान रहो तपऐंन ॥
तब आए हास्तिन पुर भूप। क्षुधा तृषार्त भए कृषरूप ॥ मंत्रिन कहो सकल वृत्तान्त। दयो जो
मुनिसुत शाप नितान्त ॥ मुनिसन्देस भूपकृत यत्न। व्यर्थ भए जे सकल प्रयत्न ॥ काश्यप द्विज
तक्षक सम्वाद। भूप मरण विधि सहित विषाद ॥ मंत्रिन कहो सहित विस्तार। मुनि बोले फिरि
भूप उदार ॥ जनमेजयउवाच ॥ काश्यप तक्षकके सुनि बैन। कौने कहो आय मति अैन ॥ जरे जो
तरु तक्षकविष पाय। सो मुनि तेहि ज्यायो मुनिराय ॥ कहै हास मिटे विषदाप। तक्षक यह
विचारिकै आप ॥ मम दंशित नृप ज्याइहि विप्र। यातें धनदै फेरो क्षिप्र ॥ करि उपाय ताको
अतिदण्ड। देहैं सचिव सुनऊ हम चण्ड ॥ सुनो चहत हम यह सम्वाद। भो निर्जनमें मुनि अहि
बाद ॥ लखि सुनि तौन कहो कोंहिं आय। मंत्री सो कहिए समुझाय ॥ मंत्रीउवाच ॥ कहो आय
जेहिं सो सुनि भूप। काश्यप तक्षक बाद सरूप ॥ मनुज एक इंधनके हेत। तेहि तरु चढो रहो सो
खेत ॥ मुनि तक्षक नहि लखो नरेश। तरु संग भयो सो भस्माशेष ॥ मुनि प्रभावतें तरुके संग।
सोऊ जियो सहित सब अंग ॥ तेहि नर आइ कहो हम पाश। मुनि तक्षकके बाद प्रकाश ॥ एहि
बिधि सुनो लखो जो भूप। सो हम कहो सकल अनुरूप ॥ अब जो करो चहऊ सो करऊ। हे
क्षितिपाल तथा अनुसरऊ ॥ सूतउवाच ॥ मुनि मंत्रिनको वचन नरेश। भए तप्त धरि शोक विशेष ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० मीजि पाणिकंह लेत उसास । अश्रु वहत नैननतें तास ॥ जनमेजयउवाच ॥ पितामरण हम सहित बिधान । तुमतें सुनो सुनऊ मतिमान ॥ मोमति नियत देनकों दण्ड । भई दुष्ट तक्षककों चण्ड ॥ पिता हमार हतो जेहि सर्प । ताहिं दण्ड देहों अतिदर्प ॥ हेतुमात्र करि शृंगीशाप । दंशो भूपकंह छल करि पाप ॥ फेरि दयो काश्यपकहँ दुष्ट । नतरु जियावत नृपकंह तुष्ट ॥ तक्षकको तब कहा न सात । जब ज्यावत काश्यप मम तात ॥ बलात्कार कीन्हे अति दुष्ट । मुनिकंह जो फेरो करितुष्ट ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आतप्रिय उत्तङ्ककों तुमसबकों प्रिय जैंन । धर्षण तक्षकको करे पितृअरिनकरि तैंन ॥

सूतऊबाच ॥ मंत्रिनके सुनिकै बचन करि दृढमत अनूरूप । सर्पसत्रको करणको करे प्रतिज्ञा भूप ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

नृप जनमेजय ईर्षा छायो । पुरोहित ऋत्विज सहित बोलायो ॥ प्रतीकार तेहि अहिको जैसें । होय कहो हे द्विजबर तैसें ॥ जेहि अहि मारो पिता हमारो । तासों बैरलेन मत धारो ॥ ताको तुमसब कर्म विचारो । चाहत ताहि अग्निमंह जारो ॥ भूप बिषाग्निमे अहि जैसें । जारोंअस करऊ तेहि तैसें ॥ ऋत्विजउवाच ॥ सर्पसत्रबिधि निर्मित है हो । सुनिए भूप पुराण कहै हो ॥ सपसत्रके नायक कर्ता । हौ तुमहों सुनिए क्षितिभर्ता ॥ सूतउवाच ॥ इमि ऋत्विजसों सुनि मुद सांनो । तक्षक भस्म भयो नृप जानो ॥ मंत्रबिदनसों नृप यह कहो । करब सत्र हम निश्चय अहो ॥ सामग्री हमसों सब लीजै । तुर श्रुतिबिदन कहो मख कीजै ॥ ते ऋत्विज आए सब तहां । सत्र योग्य क्षिति जानत जहां ॥ मखशाला बिधिवत तंह कीन्हो । पट धन धान्य बिपुलधरि दीन्हो ॥ ऋत्विज सकल तहां चलि आए । जे द्विज परम मंत्रबिद गाए ॥ भूप यज्ञहित दीक्षा लीन्हें । बरण सु मखकर्तनको कीन्हें ॥ यह पूरब तँह सकुन लखानो । मख सालाके कर्तन्ह जानो ॥ यज्ञ समाप्ति होन नहि पाई । करी बिघ्न कोउ द्विजबर आई ॥ यज्ञ आयतनमे इमि कहो । स्थपति दृढ जो कारक रहो ॥ सिल्पसास्त्रकहं बिधिवत जानै । ताके बचन नियतसब मानै ॥ दिक्षा पूर्व भूप यह सुनिकै । कहो द्वार पालक सों गुनिकै ॥ आज्ञा प्रथम हमारी लीजो । तब काहूकों आवन दीजो ॥ सूतउवाच ॥ मख बिधि बिहित करण द्विज लागे । अपने अपने पदपर रागे ॥ भए अरुणचख अंबर कारे । लागे यज्ञ धूम संचारे ॥ देन अग्निमुख आऊति लागे । ऋत्विज महा मत्रसों पागे ॥ कंम्पित उरग भए भयभरिकै । होता ऊनत मंत्रबल धरिकै ॥ परन अग्निमुख पन्नग लागे । बिगत पराक्रम भए अभागे ॥ बोलत सर्प परस्पर आए । तिन्है मंत्रबिद अग्निमुख नाए ॥ कोउ लपटे कोउ स्वासा भारे । पुछओर कोउ मुखदिशि हारे ॥ कोऊ स्वेत कोउ पिङ्गल कारे । कोऊ तरुण कोउ बूढे बारे ॥ योजनमान कोसके कोऊ । महा अमानतुरग सम सोऊ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कोऊ सुंड सम गज सम भारी। कोऊ महत नादके कारी ॥ असे अर्बन आहुगण आए। डारि आ०
अग्निमुख भूप जराए ॥ कहें कहोलों अतिबिष भारे। सर्प असंख्य अग्निमुख डारे ॥ माता शाप
पापसों भारे। अहि गण गहन दहनसम जारे ॥ सौनकउवाच ॥ सर्पसत्र महं ऋत्विज जेते। मूत
नाम सह कहिए तेते ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

रहे सदस्य कहो मुनि कौन। क्रमसों कहऊ सूत तुम तौन ॥ सूतउवाच ॥ क्रमसों कहत सुनऊ
मुनिराय। जे सदस्य ऋत्विज सुखदाय ॥ चंड भारगव होता तौन। च्यवन वंशभव तपवर जौन ॥
ऊद्गाता जैमुनि तपधाम। ब्रह्मासुहे संगरव आम ॥ पिङ्गल मुनि अध्वर्यु सुजान। रहे सदस्य
व्यास मतिमान ॥ पुत्र शिष्यसह मतिके ऐन। जनमेजयके दायक चैन ॥ ऊद्दालक प्रमतक
मुनि पर्म। श्वेतकेतु पिङ्गल मुनिपर्म ॥ देवल असित सनारद जौन। कूंड कालघट जठर सुतौन ॥
बात्स्य श्रुतश्रवा अतिवृद्ध। रहे देवशर्मा तपऋद्ध ॥ कोहल सम सौभर मौद्गल्य। इतने मुनिवर हें
तपबल्य ॥ अन्य बेदबिद विप्र अनेक। कँहलों कहिए नाम बिवेक ॥ वसामेदकी नदी समान।
बही कुण्डतें धार महान ॥ तुमुल गन्ध फैलो चँऊओर। जरत अग्निमें अहिगण घोर ॥ नभगत
परत जरत जे सर्प हाहाकार करत तजि दर्प ॥ तत्तक गयो इंद्रके पास। सर्प सत्र सुनि पूरित त्रास ॥
सुरपतिसों सब कहि बृतान्त। सरण मोहि दीजै सुरकान्त ॥ नृप अपराध करो हम महत।
याते नृप जनमेजय दहत ॥ इंद्र कहो अहिसों करि प्रीति। इहाँ न सर्पसत्रकी भीति ॥ तुम्हरे
अर्थ पितामह पास। कहि प्रसन्न कीन्हो सुखरास ॥ इहां न करिहि तुम्हे भय शाप। ताते तजऊ
मानसिक ताप ॥ सूतउवाच ॥ असे सुनि सुरपतिके बैन। तहां बसो तत्तक लहि चैन ॥ नित्य
परत शिखिमुख अहि लेखि। रहे शेष पंन्नगकुल देखि ॥ भए तप्त वासुकि अहिनाह। बढो खेद
कम्पत मन माह ॥ घुर्म्मित व्है भगनीसो बैन। कहन लगे इमि पाय अचैन ॥ दहत अङ्ग हत दिशा
बिबेक। घूमत मन भरि मोह अनेक ॥ घूमत चख हिय फटत समान। विबस परत पावकमह
जान ॥ जनमेजयसत्र भयो अहि घात। जानि परत हम यमपुर जात ॥ प्राप्त भयो सो काल अनर्थ।
तोहि दयो मुनिकों जेहि अर्थ ॥ सहित बंधु रक्षा मम करऊ। हे भगिनी सो कृत अनुसरऊ ॥
तब आस्तीक सुरक्षण करिहि। सत्र प्रवृति भूप जब धरिहि ॥ कहो पितामह असे बैन। छोडि
भीति हम पायो चैन ॥ कऊ स्वपुत्रसों भगिनी तौन। बचैं हमार अग्निमुख जौन ॥ सूतउवाच ॥
जरत्कारु तब सुतहि बोलाय। कह्यो भ्रात प्रिय यों समुझाय ॥ तव पितुकों कछु कारण चाय।
मोहि दयो बासुकि सुख पाय ॥ समय रहो कारणको जौन। प्राप्त भयो सुनिए सुत तौन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ आस्तीकउवाच ॥ कौन निमित्त पित्ता कँह तोहि । मातुल दई कहो तुम मोहि ॥ कारज तौन करै हम अम्ब । बेगि कहऊ मति करऊ बिलम्ब ॥ सूतउवाच ॥ जरत्कारु तब सुतसों बैन । कहन लगो कारणको ऐन ॥ जरत्कारूरुवाच॥कद्रू बिनताको पण बाद । मात शापते सर्प बिषाद॥कहि तातनु कद्रूसों शाप । बिधिबर करो अचल अहि पाप ॥ बासुकि गमन पितामह पास । सुधा हेत करि महत प्रयास ॥ सुरन सङ्ग बर बिधिके बैन । शापहरण कारणके ऐन ॥ सुतको जन्म आपनो दान । जरत्कारु मुनि कहँ तपभान ॥ पूर्व जक्त यह कथा उदार । सुतसों कहो सहित बिस्तार ॥ सो वह समय भयो सुत प्राप्त । रक्षा करऊ मातृकुल आप्त ॥ करऊ सत्य वह हेतु महान । तेा पितुको जेहि लगि मो दान॥ सूतउवाच ॥ ऐसे सुनि माताके बैन।कियो पुत्र अंगीकृत चैन ॥ जरत्कारु सुतके सुनि बोल । बासुकि आनद लहो अतोल ॥ आस्तीकउवाच ॥ मातुल तुम्हे शापसों बारि । लेहैं हम यह सुनि निरधारि ॥ स्वस्थ होयकै अहिपति रहऊ । सत्यबचन मेरे चित गहऊ ॥ हम नृप जनमेजयके पास । जात अद्य करि महत प्रयास ॥ कहि कहि परम सुमङ्गल बैन । करब ताहि हर्षित भरि चैन ॥ होइहि जैसें यज्ञ निबृत । सुनऊ तहांसो करब प्रबृत॥ यह तुम जानऊ निश्चय नाग । हम मिथ्यानहि कहत सभाग॥ बासुकिउवाच ॥हे आस्तिक हम रहत सघूर्ण । शाप दापसों मानस पूर्ण ॥ आस्तीकउवाच ॥ अहिपति चितचिंता मति करेऊ । अग्निपातको भय तजि देहु ॥ अग्नि सरिसमा ताको शाप । सुनहु करब हम तास निपात ॥ ॥सूतउवाच ॥ तब बासुकिको दुःख उतारि । आत्म अङ्गपर लीन्हो धारि ॥ त्वरित चले जनमेजय पास । यज्ञ करत जहँ अहिकरनास ॥ अहिकुल करिबे रक्षण तत्र । यज्ञ करतहो भूपति यत्र ॥ लखी यज्ञशाला अभिराम । जहँ सदस्य ऋत्विज तपधाम॥ द्वारपाल तँह करत प्रवेश । रोकि कहो यहभूप निदेश ॥ भूपतिको आज्ञा लहि विप्र । तुमै जान देहैं तब क्षिप्र ॥ यज्ञसब आस्तीक सुनाय । द्वारपाल सुनि आनदपाय ॥ मुनि आगम नृपपास सुनाय । जान दियो प्रभुशासन पाय ॥ तब आस्तीक सभा महँ जाय । आशीर्बाद दियो सुखदाय ॥ राजा ऋत्विज अग्नि सदस्य । करण लगे तिनको सब पथ्य ॥ आस्तीकउवाच ॥ सोम बरुणको यज्ञ अनूप । तथा प्रजापतिको अति रूप ॥ भूप यज्ञ तव तिन्हे समान । होयसु मम प्रियको कल्यान ॥ मय शशबिंदु भूपको यज्ञ । यज्ञ धरमज्ञ॥भूप यज्ञ तव तिन्हे समान। होय सु मम प्रियको कल्यान ॥ नृप अजमीढ जैसे रामचन्द्र सरवज्ञ॥ भूप यज्ञ तव तिन्हे समान । होय सेा मम प्रियको कल्या उत्तवर तज्ञ । करेा युधिष्ठिर कुरकुल यज्ञ ॥ भूप यज्ञ तव तिन्हे समान । होय ए सब ऋत्विज भानु समान । तव मख कारक धर्म्म सुजान ॥ इहै जानि भूप विशेष॥ व्यास समान लोकमे और । हैनहि सुनऊ भूप सिर मौर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जाके शिष्य सु दिक्षापाय। ऋत्विज होत जगतमे जाय॥ अग्नि प्रदक्षिण शिखा समेत। तो हुतहव्य सुरन कहँ देत ॥ तो समान भूपति नहि और। पालक प्रजा भूपशिर मौर ॥ हम प्रसन्न लखि चरण तुम्हार। बरुण धर्म्म सम भूप उदार॥ लोकपाल ज्यों शक्र महान। प्रजापाल तुम त्यौं सुख दान॥ तुम पुरुषेंद्र लोकमे बीर। तुम समान को नरबर धीर॥ तुम खट्वांग दिलीप समान। तुम भीषमसम तेज समान॥ तुम बशिष्ठ सम नियमित क्रोध। सम बाल्मीक बीर्य कर रोध॥ हौ तुम प्रभु इह इन्द्र समान। नारायण सम सद्विति महांन॥ यम सम धारक धर्म्म बिबेक। कृष्ण सदृश धृत सुगुण अनेक॥ श्रीनिबास तुम बसुसम बीर। क्रतु निधान तुम नरबर धीर॥ बढें क्रोध बल बीर समान। राम सदृश धृतशस्त्रबिधान॥ और्ब्ब त्रितयसम पूरित तेज। दुर्दर्श भगीरथ सदृश सुतेज॥ सूतउवाच॥ सुस्तुति सुनि नृप भए प्रसन्न। ऋत्विज सदस्य मोदापन्न॥ तिनकी भावज ईंगित चाहि। नृप जनमेजय कहो सराहि॥ जनमेजयउवाच॥ यह बालक बोलत ज्यौं वृद्ध। नहि बालक जो सुमति समृद्ध॥ हम इनकों बरदीवे चहत। करि बिचार तुम कहु सब महत॥ सदस्याऊचुः॥ बालौ बिप्र भूपकँह मान्य। मानत अधिक सबिद्य वदन्य॥ हौ तुम नृप सबभांति सुजांन। यातें कहाकहैं हम आंन॥ आयो चहत तक्षकहु सद्य। तिहि कीन्हों है महत अवद्य॥ बरदेवे कहँ भूप बिचार। कियो कहो नहि बचन उदार॥ तबलों होता बोलो बैंन। व्यग्र भयो मन किए अचैंन॥ भूप न आवत तक्षक सर्प। कियो मंत्रको केतिक दर्प॥ जनमेजयउवाच॥ होय समाप्ति जौनबिधि सत्र। जैसें आवै तक्षक अत्र॥ तथा करहु तुम द्विजबर यत्न। तक्षक होय अग्नि महपत्न॥ ऋत्विजउवाच॥ पढतमंत्र हम बहुत प्रकार। करि वर पावकको सतकार॥ इन्द्रभवन महँ तक्षक जाय। भयसों पीडित बसो पराय॥ लोहिताक्ष शिप्लक मतिऐन। कुण्ड रचत जो बोलो बैन॥ कहो जो बिप्रन तुमसों जौंन। होनहार दीसतहैं तौंन॥ पूर्ब बृत्त हम कहत नरेंद्र। तक्षककों बरदीन्हों इन्द्र॥ बसहु पास तुम मेरे सर्प। इहां न चलिहि मंत्रको दर्प॥ तप्तभए नृप सुनि यह बैंन। होतासों इमि कहो अचैंन॥ होता करहु यत्न तुम जौंन। इन्द्र सहित आवैं अहि तौंन॥ चढे बिमान चले सुरराज। लए संग सब सुमन समाज॥ उत्तरीय सम धारे नाग। भोव्याकुल सो समुझि अभाग॥ राजा मंत्रबिदनसों फेरि। कहो क्रोधभरि लोचन हेरि॥ जनमेजयउवाच॥ तक्षक गयो इंद्रके धाम। बिप्र करहु अस कर्म्मललाम॥ मन बसकरि आवाहन लेहु। इंद्रसहित पावक मुख देहु॥ सूतउवाच॥ होता सुनि भूपतिके बैंन। आवाहन कीन्हों तप ऐन॥ चलेपुरंदर तक्षक संग। महामंत्रसों कीलित अंग॥ हूयमान तक्षक सुरनाह। क्षणभरि रहे व्यथित नभमाह॥ देखि यज्ञ दारुण भय पागि। इंद्र गए तक्षककों त्यागि॥ गए इंद्र तब तक्षक सर्प। भयो मंत्र बस भूलो दर्प॥ व्याकुल भयो समुझि सिखिपात। शिथिल भयो व्याकुल सबगात॥ ऋत्विजउवाच॥ भयो कर्म्म

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० तव सिद्धि नरेश । करऊ बिप्र कहँ सुवरनिदेश ॥ जनमेजय उवाच ॥ देहौं बिप्र तुम्हे अनुरूप । वरमागऊ इमि बोले भूप ॥ ऋत्विजउवाच ॥ यह आयो तक्षक नृप तौंन । करत नाद भैरव अति जौंन ॥ छोडि गए तक्षक मघवान । गिरत स्वर्गते बिकल महान ॥ घूर्णित मुर्छित तजत अकास । आवत तक्षक लेत उसास ॥ स्तउवाच ॥ निकट पतन तक्षकको देखि । अन्तर यह आस्तीक निरेखि ॥ कहनलगे भूपतिसों बैंन । वरके हेतु महातप अैंन ॥ आस्तीकउवाच ॥ देन कहो जो वर तुम भूप । सेा मागत हम देऊ अनूप ॥ भूप समाप्त होउ तत्रसत्र । फेरि परहि नहि पंन्नग अत्र ॥ यह सुनिके सुनिके नृप बैंन । कहो भूप अति भरे अचैंन ॥ सुवरण रजत गायगण जौन । मागऊ अपर वहऊ तुम तौंन ॥ बिप्र करऊ मति सत्र नि बृत्त । और लेन वर होऊ प्रबृत्त ॥ आस्तीकउवाच ॥ सुरवण रजत न मागत गाय । करऊ निबृत्ति सत्र नृपराय ॥ स्तउवाच ॥ सुनि आस्तीक बचन यह भूप । पुनः पुनः सोइ कहत अनूप ॥ और मांगु वर द्विजवर क्षिप्र । सेावर मागत अन्य न विप्र ॥ सहित वेदविद ऋत्विज सदस्य । कहे भूपसों बचन प्रसस्य ॥ देऊ भूप वर शोचन करऊ । सत्र निबृत भयो चित धरऊ ॥ सत्र निबृत करो तब भूप । गुणि सदस्यको बचन स्वरूप ॥ ❀⊰❀⊰❀⊰❀

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगाभिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वण्यास्तीकवरप्रदानं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ ❀⊰❀⊰❀⊰❀⊰❀⊰❀⊰❀⊰❀⊰❀⊰❀⊰❀⊰❀⊰❀

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ शौनकउवाच ॥ सर्प सत्रमे सर्प जे परे अग्निमुख आय । स्तत नाम तिनके कहऊ भली भांतिसमुझाय ॥ स्तउवाच ॥ अर्ब खर्ब हैं सर्पते तिनके कहलों नाम । कहिहैं सुनऊ प्रधानजे तास नाम तपधाम ॥ वासुकिकुलके सर्प जे परे अग्निमुख जाय । तिनके नाम कहैं सुनो जेहे मुख सुकाय ॥ तीक्षरक्ष सित सर्पवर भरे घोरविष जौंन । परे आय मुख अग्निके साटशाप हत तौंन ॥

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

कौणप पिच्छल शल अरु चक्र । पाल हलीमक रहो जो बक्र ॥ कालबेग प्रकालय सुशरण । [illegible]वाऊ कालक भयभरण ॥ और कालदंतक विषभरे । वासुकि कुलज अग्निमुख परे ॥ तक्षक [illegible] सर्प अतिकाय । इतने परे अग्निमुख आय ॥ पुष्पांडक मंडलक महान । उक्षिक क्षरभ भंग [illegible] ॥ पिली सल्लकरो मूक सुकुमार । प्रवेपन मुद्गर महत उदार ॥ सिसुरोम महाहनु [illegible] परे अग्निमहं सिगरे मन्द ॥ ऐरावतकुल संभलनाग । कौरव्यज कुल जे खलभाग ॥ [illegible] सर्प । कोटिन महा भरे विषदर्प ॥ परे अग्निके मुखमह सर्व । कहलों कहैं [illegible] तिनके सकल प्रसवविस्तार । को कहि सकै असंख्य उदार ॥ त्रीणिसप्त दशशिरके

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सप । कालानलसम बिषको दर्प ॥ कोटिन परे अग्निमुख आय । शैलशृंगसम जिनके काय ॥ आ०प
दुइयोजनके लंबे जौंन। योजन एक चाकरे तौंन॥ जनमेजयनृप अैसे नाग । डारि अग्निमुख कीन्हें याग ॥ मातृशापसों पीडित तौंन । कियो ऊताशनके मुख गौन ॥ और सुनऊ अद्भुत अभिराम । जो आस्तीक कियो तपधाम ॥ वरप्रदानमह बिलँबबिचारि । इन्द्र गए तजि तक्षक हारि ॥ खगते सप आयो नहि क्षिप्र । नृप बिचारि भो चिंतित विप्र ॥ हूयमान कौं तक्षकसर्प। परत न झिझि मुखमे तजि दर्प ॥ शौनकउवाच ॥ तिनबिप्रनकँह मंत्र विधान । भूलि गयो का सूत महान ॥ परो ऊताशनमे नहि आय । तक्षक कहऊ सूत समुझाय ॥ सूतउवच ॥ इंद्रहाथतें छुटि फणिराय। परण चहत पावकमंह आय ॥ तिष्ठ तिष्ठ बोले आस्तीक। जाके होत न बचन अलीक ॥ कम्पत हृदय गगण क्षितिबीच। रहो त्रिशंकु समानन भीच ॥ होय बचन आस्तीक अवश्य। भूप कहो तब सहित सदस्य ॥ होय हमार यज्ञ अब पूर्ण । होहि अभय सब सर्प अघूर्ण ॥ होय प्रसन्न सुनुनि आस्तीक । होय न यह बरदान अलीक ॥ भयो हलहलाशब्द महान । भूपति जब दीन्हो बर दान ॥ ऋत्विजसह सदस्य द्विजवृन्द । करि तिनको सनमान नरिन्द्र ॥ तिन्हे दान दीन्हो अति भूप।कनक रजत गो बसन अनूप॥ लोहिताक्ष हो सूत जो बृद्ध।तिन्हे भूप किय महत समृद्ध॥ स्वपति कहो जेहि सगुण निमित्त। लोहिताक्ष सो नृप हितचित्त ॥ जनमेजयनृप अति सुखदान।फेरिकियो अवभृथ सुस्नान॥ बिदाकरो आस्तीकहि भूप । करि पूजा बिधिवत अनुरूप॥ फेरि आगमन कीजो बिप्र । अश्वमेध करिवे हम क्षिप्र ॥ तुम्हें सदस्य होन तहं परिहि । जाते यज्ञ सिद्धि मम धरिहि ॥ कहि तथास्तु मुनि गए प्रसन्न । भूप भए आनन्द सम्पन्न ॥ माता मातुलके ढिग जाय। आस्तीक दई सब कथा सुनाय ॥ सूतउवाच ॥ सुनि सो मोदमये सबनाग । दुख तजि सुखसों भरे सभाग ॥ पुनः पुनः सबनाग सचैन। प्रति आस्तीक कहे ए बैन॥ बर मांगऊ तुम इच्छित जौंन। हे आस्तीक देहि हम तौंन ॥ * ॥ आस्तीकउवाच ॥ सायं प्रात बिप्र नर अन्य । यह आख्यान पढै जे धन्य ॥ तिन्हे सर्प कृत भीति न होइ । तुम बर देऊ यहैं सबकोइ ॥ सर्पनाथसह सिगरे नाग । कहो तथास्तु साहत अनुराग ॥ भागिनेय तो खेहै नाम । सर्प जाय नहि ताकेधाम ॥ सुनऊ मंत्र यह तुमसों कहत । सर्पनिवारणकारक महत ॥ * ॥ मंत्रः ॥*॥ असितञ्चार्तिमन्तञ्च सुनीथञ्चापि यः स्मरेत । दिवावा यदिवा रात्रौ नास्य सर्पभयं भवेत् ॥ योजरत्कारुणा जातो जरत्कारौ महायशा । आस्तीकः सर्प सत्रेव पन्नगान्योभ्यरक्षत ॥ तं स्मरन्तं महाभाग नमां हिंसितु महति । सर्पाय सर्प भद्रन्ते दूरं गच्छ महाविष ॥ जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर ॥ * ॥ आस्तीकस्य वचः श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते । शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्षफलं यथा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ शौनकउवाच ॥ * ॥ सबसर्पन मिलि व्या वर दीन्हों । कहि तथास्तु सो मुनिबर लीन्हों ॥ परम प्रीति हिय मुनिबर धारो । गमन करणका फेरि बिचारो ॥ सर्प सत्रतैं सर्प उबारो । समय पायकै बिप्र सिधारो ॥ पुत्रपौत्रमान फिरि व्हैकै । गए स्वर्गकहँ आनद म्वैकै ॥ यह आख्यान बिप्र जो पढिहै । सर्प भीति नहि ताको मढिहैं ॥ * ॥ सूतउबाच ॥ * ॥ प्रमति जो रुरुसुत पास कह्यो हो । तौन कहो सुनि जौन लहो हो ॥ जो आस्तीक चरित्र सुनैगो । पुण्यवृद्धि लहि पाप घुनैगो ॥ दुण्डुभ बचन श्रवण अनुजोहो । तुम बूझो सो सकल कहो हो ॥ ❀❀❀

रूप ॥ मुनि बूझा नृप कुशल सप्रीत । कहो कुशल व्है भूप बिनीत ॥ सबिधि सदस्यन पूजे आय । आ०
मुनि पूजो तिनको शुभ पाय ॥ फेरि सदस्यन सहित सचैन । यह जनमेजय बूझे बैन ॥ * ॥
जनमेजयउवाच ॥ * ॥ कुरु पाण्डवके देखनहार । हौ प्रपितामह तुमहि उदार ॥ तिनको
चरित सुनो हम चहत । कहऊ कृपा करिकै मुनि महत ॥ कैसें भयो बिरोध महान । धर्म्मशील
तेहे मतिमान ॥ कहऊ युद्ध कारण इतिहास । जहां भयो भूपनको नास ॥ पितामहादिक सर्व
महान । भए दैव प्रेरित बलवान ॥ कहऊ सविस्तर यह वृत्तान्त । हे प्रपितामह मुनिबरकान्त ॥
॥ * ॥ सूतउवाच ॥ * ॥ सुनि यह मुनि भूपके बैन । वैसम्पायनसों तपऐंन ॥ कहत भए जैसें
मुनिराय । सहितप्रेम अति निकट बुलाय ॥ व्यासउवाच ॥ वैसम्पायन सुमति अखर्ब । यथा सुनो
हमसों तब सर्व ॥ पाण्डव कुरुकुल जनित बिरोध । कहऊ करऊ भूपतिको बोध ॥ वैशम्पायन सुनि
मतिधाम । गुरुमुनिशासन बचन ललाम ॥ कहन लगे इतिहास पुरान । जनमेजयनृपसों
मतिमान ॥ कुरुपाण्डवको बैर बिनास । कहने लगे पूरब इतिहास ॥ गुरुपद बन्दि परम अभि
राम । ध्यान धारणा करि हिय धाम ॥ द्विजबर बन्दि महत मति अैन । वैशम्पायन बोले बैन ॥
॥ वैसम्पायनउवाच ॥ कहत व्यासमुनिको मत जौंन । सुनऊ भूप जनमेजय तौंन ॥ तुम सुनवेके
पात्र नरेश । कथा भारतो परम बिशेस ॥ गुरु मुखकी आज्ञा लहि भूप । मन उत्साह धरत अति
रूप ॥ सुनऊ भूप भो जैसें बैर । कुरुपाण्डवसों पूरण मैर ॥ राज्यअर्थ छलयूत प्रकाश । पाण्डु
सुतन लीनो बनबास ॥ जैसें भयो परस्पर युद्ध । क्षत्रवंश क्षयकारक उद्ध ॥ तौन कहत हम
तुमसों भूप । सुनऊ व्यासभाषित अनुरूप ॥ पाण्डु मरे तब पाण्डव बीर । गए हस्तिनापूर
रणधीर ॥ बेदसकल वरधनुषबिधान । अचिर कालमे पढे सुजान ॥ बलवीर्य ओजय
सम्पन्न । तिन्हे देखि भे पौर प्रसन्न ॥ देखि तिन्हे श्रीसहित उदार । सहि न सके धृतराष्ट्रकुमार ॥
दुर्योधनसह शकुनि सकर्ण । लगे बिचारण तिनको मर्ण ॥ दुर्योधन करि मंत्र बिरुद्ध । दियो
भीमकंह बिष अतिउद्ध ॥ भीम अन्नसह गरल पचाय । सोय गए अति निद्राकाय ॥ प्रमाण
कोटि थल गङ्गातीर । तहां रहो सोवत वरबीर ॥ बांधि भीमके सिगरे अङ्ग । डारि दियो
गहिरें मधिगङ्ग ॥ आपु गए घर सहित समाज । दुर्योधन करि जैसोकाज ॥ शीतल होय जगो
बरबीर । बन्धन तोरि गए कढि तीर ॥ भीमसेनकहँ सोवत पाय । दुर्योधन पन्नग समुदाय ॥ छोडिदए
आशीविष घोर । डंसे अङ्ग तिन चारोओर ॥ तबऊ न मरे वृकोदर बीर । दुर्योधन लखि भए
अधीर ॥ दुर्योधनके बैर बिधान । बिदुर रहे तासें सावधान ॥ सर्वज्ञ यथा जनहित परजन्य ।
बिदुर तथा पाण्डव हितमन्य ॥ दुष्ट कर्म्मको करि प्रतिकार । बिदुर करत रक्षण हितकार ॥
प्रगट करि थके उपाय । लहि स्वपिताकी आज्ञा जाय ॥ चल्ल सु पाण्डवनको समुझाय । सकल ते
तब बिस्मय पाय ॥ दुर्योधन नृप मंत्र बिचारि । दृष दुःशासनसों निरधारि ॥ दुर्योधन यह कियो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० उपाय । अन्ध भूपसों आज्ञा पाय ॥ पाण्डव पठए लाक्षाभान । माता सहित करोति न गान ॥ बिदुर गए प्रस्थान स्थान । कहि आए सब मर्म सुजान ॥ रहे बर्षभरि तामे जाय । माता सहित लाक्षागृह पाय ॥ अवक पुरोचन ताहि जराय । गए सुरंग राहकौं पाय ॥ निशि निशीथमह गङ्गा पार । गए तरणिचढि बीर उदार ॥ निशिमह जात चले बनओर । लखो हिडम्ब राक्षसहि घोर ॥ ताहि हनो बरभीम प्रचार । भए हिडम्बाके भर्तार ॥ जई घटोत्कच तनय सु तौंनातब तहतें किय पाण्डव गौंन ॥ बसे एकचक्रामें जाय । ब्राह्मणके घरमे सुखदाय ॥ धर ब्रह्मचारीको रूप । बेदाध्ययन करत शुचिरूप ॥ बकनामा राक्षस तह घोर । मारो भीमसेन भुजजोर ॥ करत स्वयम्बर द्रुपद नरेश कृष्णाको पाञ्चाल मुदेश ॥ सुनत तहांकौं गए उताल लखो जाय पाञ्चालो बाल ॥ बर्षएक तँह बसे समृद्ध । हस्तिनपुर व्है गए प्रसिद्ध ॥ तब भीषम धृतराष्ट्र नरेश । दियो भंत्र करि परम निदेश ॥ भ्रातृ बिरोधसु जाय नशाय । पाण्डवप्रस्थ बसऊ तुम जाय ॥ जनपद सहित प्रस्थ सो पाय । मत्सर छोडि बसऊ तँह जाय ॥ ते तिनके सुनि बचन महान । सुहृद सहित तंह गए सुजान ॥ लए सकल धनरत्न अनूप । जाय बसे तहँ पाण्डवभूप ॥ शस्त्रप्रताप पसारि महान । जीते और भूप बलवान ॥ ऐसे धर्म्म परायन तौंन । करे बऊत हित सर्जन जौंन ॥ प्राचीदिशि जीतो बरभीम । उत्तरदिग अर्जुन बलसीम ॥ पश्चिमदिशा नकुल बलबान । दक्षिणदिश सहदेव सुजान ॥ जीति करी बस पृथ्वी सर्ब । पञ्च सूर्य्यसम लसे अखर्ब ॥ सूर्य्यसहित षट सूरज मान । शोभित भई धरा सुखदान ॥ कछु कारण लहि धर्म्म नरेश । अर्जुनकौं बनबास निदेश ॥ दियो प्राणतें प्रियतर जौंन । बरह बर्षबसे बन तौंन ॥ तदनंतर अर्जुन बलरास । गए द्वारिका हरिके पास ॥ पद्म लोचना हविमय तब । कृष्णसखा सो लही कलब ॥ फिरि खांडव सुबि पितिहँ लाय । कियो अनलकहँ तृप्त कराय ॥ बासुदेवकंह पाय सहाय । जीति इन्द्र बन दियो जराय ॥ अमि धनुष गांण्डीव महान । दिए तुनीर अक्षय भरि बान ॥ दयो कपिध्वज रथ अभिराम । सेत चारिहय सहित ललाम ॥ लियो तहां मयदैत्य उबारि । पारथ शिल्पकार निहारि ॥ सभा सदन तेहि रचो अनूप । मणिगण जडित घटित बऊरूप ॥ तब दुर्योधन लोभ बिलोकि । द्यूत रचो कल बल निरधारि ॥ जीते सौ बल बञ्चक बेश । बिपिनि बास किय धर्म्म नरेश ॥ प्रगट रहि भूप । एक बर्ष अप्रगट सरूप ॥ बर्ष चौदह हैं धर्म्म नरेश । मागो आय सधन दुर्योधन नहि दयो सदंभ । यातें भयो युद्ध प्रारंभ ॥ तब तिन चची सकल संघारि । [illegible] ॥ पाय राज्य सब शून्य सरूप । राजा भए युधिष्ठिर भूप ॥ ❀

[illegible] श्रीउदितनारायण आज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि [illegible] गोकुलनाथेनकर्त्रा कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्व्वणि षड्विंशोध्यायः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ कहो तुम संक्षेपसों अब कहऊ करि बिस्तार। महाभारत कथा पावनि चरित परम उदार॥ सुनो चाहत तौन सिगरो कहो जो मुनि व्यास। करो कौरव पांण्डवन मिलि यथा कुरुकुल नास ॥ सुनऊ कारण अल्पहै नहि जाहि चित महं चाहि। हने सकल अवध्य तापैं जगत संशत ताहि ॥ व्है समर्थ न क्रोध कीन्हौं सह्यौं क्लेश महान। कौंन कारण पाय तुमसब करऊ तौंन सुजान ॥ अयुत गजसम बाऊबल तिन सह्यो भीम कलेश। महा क्रोध समान पावक रह्यो रोधि असेश॥ द्रोपदी अति सती साध्वी क्लेश ऐसो पाय। कियो तिनकौं भस्म नहि क्या क्रोध अनल जराय ॥ द्यूत हारे भूप तिनके संग चारौ भ्रात। गए ते नरव्याघ्र तिनको करो कौंन न निपात॥ धर्म्म भृत बर धर्म्मके सुत धर्म्मराज सुजान। क्लेश सहिबे योग्य नहि किमि सह्यो क्लेश महान॥ कथं सेना बऊल ताकौं एक अर्जुन बीर। मारि तिनकौं दियो यमपुर रहे जे रणधीर ॥ कहऊ सिगरो सहित निर्णय भयो जो तब तौंन। महारथिन चरित्र कीन्हौं अमित रण रचि जान ॥ ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ करौ मन एकाग्र भूपति विपुल यह आख्यान। लोक पूजित व्यासमुनि जो कहो सहित बिधान ॥ कहत हौं मत तौंन सिगरो एक लक्ष प्रमाण। सुनै यह यो यो सुनावत परम पुण्य पुराण ॥ ब्रह्मलोक सो पाय नरबर होत देव समान। लहत चारिपदार्थ सोऊ परम पुण्य महान॥ दानशील अक्षुद्र आस्तिक सत्यवक्ता जौंन। तिन्है बेद सुनाय यह द्विज अर्थ लेहैं तौंन ॥ भ्रूणहत्या आदि पातक जाइ गो मिटि सर्ब। सुनत छुटिह पापतें जे पुरुष दारुण खर्ब ॥ पढतहैं जय नाम यह इतिहास जे जयकाम। शत्रु जीतत सकल ते बर लहत भू अभिराम॥ पुत्रकारक परम है यह कुशल कारक भूरि। सहित महिषी सुनत हैं जो भक्ति श्रद्धा पूरि॥ बीर ताके होत पुत्र सु होति कन्या जौंन। होति है सौभाग्यशाली भूप भार्या तौंन॥ धर्मशास्त्र सु अर्थशास्त्र सु मोक्षशास्त्र स्वरूप। कहो हम इतिहास पावन व्यासमुनिबर भूप ॥ करत काया बचन तें नर महापातक जौंन। सुनत यह इतिहास पावन क्षिप्र बिनशत तौंन ॥ सुनत हैं इति हास जे यह भरत बंश समस्त। मिटति शङ्का व्याधिकी परलोक शङ्का अस्त॥ पुण्य आयुष सुयश धनको परम कारक भूरि। करोहै इतिहास यह बर व्यासमुनि सुदपूरि॥ कीर्त्तिकारक पाण्डवनके और क्षत्रिय तास। सर्बविद्या देतहै यह व्यासकृत इतिहास ॥ द्विजनकौं यह कथा पावनि देत जान सुनाय। लहतहैं सो परम गतिकौं पुण्य निश्चल पाय॥ पढत हैं कुरुवंशकौं सो लहत बंश महान। पढत चातुर्मास मे तेहि तजत पाप समान ॥ पढत भारत बेदपारग होत तौंन अखर्ब॥ देव ब्राह्मण ऋषिनको सह बिष्णुकीर्त्तन सर्ब ॥ देव देवी और गुहको सहत कीर्त्तन गुह गो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ए० ब्राह्मण को महातम कहो मुनिवर उद्ध ॥ जो सुनावत द्विजनकौं यह आदुमे इतिहास । लहत तिनके पितर अक्षयतृप्ति आनद रास ॥ करत ज्ञानाज्ञान बस जे इन्द्रियनसौं पाप । जातहै मिटि छोडि जन तनु करत भारत जाप ॥ भरतबंश महानको है जन्म जामे ख्यात । नाम तातैं महाभारत कहतहैं अवदात ॥ नाम अर्थ सहेतु जानत छोडि ताकौं पाप । जात जैसैं शीत भागत लगैं भानु प्रताप ॥ नित्य उठि शुचि लग्न है धरि नियम तप बर रुद्धि । वर्ष त्रयमे कियो है इतिहास यह मुनि सिद्धि ॥ विप्र यातैं नियम धरिकै कहैं यह इतिहास । सुनै सो धरि नियम जातैं लहैं आनद रास॥ सुनै श्रद्धा सहित जो नर अरु सुनावत जौंन । अश्वमेधहि आदि मखको लहतहैं फल तौंन ॥ मेरु आकर रत्नको हैं यथा सिंधु महान । तथा भारत पुण्य गुणको परम सम्भव थान ॥ वेद सदृश पवित्र श्रुति कहँ सुनत अति सुख देत । देत भारत की जो पुस्तक बांचिकै करि हेत॥लहत सिगरी भूमिके वर दानको फल तौंन । भूप हैं यह कथा पुण्या विजय कारण जौंन ॥ करी भारत कथा यह सुनि व्यास अद्भुत रूप । देति चारो फलनकौं यह परम पावन भूप॥ जो कहो यहि कथा मे है अन्य हूँ मे तौंन । अन्य मे नहि पाइ हो नहि कहो यामे जौंन ॥परम पावन कथाके यह श्रवणको फल भूप । कहो हम जो सुनो मुनिवर व्याससौं अनुरूप ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेनकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि भारतप्रशंसा कथनं नामद्वाविंशोध्यायः ॥ ❀

॥ ❀ ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

नृपति चर बसु सो रहो सत्यव्रत अभिराम । नित्य सो मृगया गमनको धारो व्रत बलधाम ॥
छोडि यज्ञ सो बन बसो करन लगो तप भूप । महा उग्र तप देखिकै इंद्र सुशंकित रूप ॥

॥ ❀ ॥ चरणाकूलकछन्द ॥ ❀ ॥

सुरन सहित तापहँ चलि आए । कहन लगे इमि बचन सोहाए ॥ ❀ ॥ देवाउचुः ॥ जौं यह धर्म भूप तुम धारो । धरा धर्म सङ्कर अनु सारो ॥ ❀ ॥ इंद्रउवाच ॥ ❀ ॥ लोक धर्मकंह भूपति पालो । राज नीति तें चरण नचालो ॥ मिलिहि लोक सो धर्महि धारो । परम पुण्यमय कहत बिचारो ॥ हम तुम स्वर्ग भूमिके बासी।भयेउ सखा मम आनद रासी ॥ रम्य देश क्षितिपर है तेहां । वशऊ भूप लऊ पशु ह जेहां ॥ पुण्यमयी बसुपूरण धरणी । प्रजा सुनीति पुण्यमय बरणी॥ भोग्यवस्तु युक्ता गुण सारी। सघन बसत जेहां नर नारी॥चेदि देशकहँ भूपति जैऐ।तहां वासकरि आनद पैऐ॥ जनपद परम सुशील सोहाए ॥ सह सन्तोष साधुजन भाए । मिथ्या बचन न बोलत कोऊ ॥ सहजऊँ काम करे का सोऊ । तहँ गरुभक्त सुमति जन भाए ॥ बर्ण सकल स्वधरम सँ छाए । चेदि नगरके जन गुण

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मानो ॥ है सब विदित तुम्हौ नृप ज्ञानी । दिव्य बिमान लेउ मम आयो ॥ देत तुम्हौ सुर सदृश आ० बनायो । तुम बिमान पर चढिकै सोहो ॥ सुर समान जन मनकौं मोहो । देत जयन्ती माल प्रभा के । ज्ञानहोत नहि पङ्कज जाके ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैजयन्तका माल यह उरमे धरिकै बीर । जब जैहो संग्राम मे छूहै क्षत न सरीर ॥
माला व्है है चिन्ह तो परम चेदिपति भूप । इन्द्र माल लखि जगत जन कहिहै धन्य अनूप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बंश यष्टि दीन्ही सुरनाथ । प्रीति चिन्ह सभ आनद साथ ॥ फेरि कहो यह सुरपति बैन । यह यष्टी साधरण है न ॥ सम्वत्सर बी तै तब भूप । यष्टी पूजन करो अनूप ॥ यष्टी खडी भूमि महँ गाडि । इन्द्राबाहन तामे माडि ॥ विधि षोडश पूजन निर धारि । सह मणि भूषण बसन बिचारि ॥ दूजे दिन उत्सब अति मान । करो चेदिपति नृपति सुजान ॥ ध्याय इन्द्रको तामे रूप । पूजन कियो यथा विधि भूप ॥ यष्टीपूजन लखि लहि चैन । बोले इन्द्र प्रीतिमय बैन ॥ ऐसैं पूजन करिहैं जौन । चेदिभूपको विधि लहि तान ॥ अीसह विजय भूमिपति पाय । सहित देश रहिहैं सुखछाय ॥ लहि बसुभूप इन्द्र सत्कार । भरे चेदिपति मोद उदार ॥ इन्द्र कहो उत्सव इमि जौन । करि पूजित छूहैं नृप तौन ॥ चेदि बिषयसों पालत भूप । पांचपुत्र जाए अनुरूप ॥ तिन्हे भूप जारो दिग्विभाहँ । करि अभिषेक कियो नरनाह ॥ करो बृहद्रथ मगधाधीश । अरु मावेल्ल कुशांब छितीश ॥ पटु राजन्य महा बलधाम । पाँचपुत्र ये बसुके आम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अपने अपने राज्यमे अपने अपने नाम । रचि पत्तन तेहा बसे सह समृद्धि बलधाम ॥
पृथक पृथक तिनके भए बंश बिरद बिख्यात । बैठे रहत बिमान पर बसु रवि सदृश बिभात ॥
बसु राजासों उपरि चर भयो सुरनसम सर्ब । तापहँ आवत नित्य प्रति अप्सर सह गंधर्ब ॥
नदी चेदि पुरके निकट मुक्तिमती हौं जानि । गिरि कोलाहल कामबस व्है कै रोकी तौंनि ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

हनो गिरिकौं कोप करि तब उपरिचर बसु भूप । बिबर व्है गो अद्रिमे तेहि राह सरित अनूप ॥
वही लहि गिरि पुरुष संगम धरो गर्भ उदार । भए तात दोय बालक सुता सुत सुकुमार ॥ लहि बिमोचण प्रीति सरितैं दिए नृप कहँ तौन । करी गिरिका नाम पत्नी रही कन्या जौंन ॥ वसुप्रद धरि नाम सुत सो कियो सेना नाथ । भई गिरिका कछुक दिनमे ऋतुमती सुखसाथ ॥ दियो नृपकौं सुलज गिरिका ऋतुज्ञान सुनाय । सुरति समय बिचारि भूपति रहे आनद छाय ॥ कहो पितरण आय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० ता दिन भूपसा इमि बैन । मारि मृग पल आध कीजै अहो पुत्र सचैन ॥ पित्र आज्ञा मानि बनको गए धनुधरि भूप । फिरत बनमे भए कामी समुझि गिरिका रूप ॥ तहाँ नाना भाँतिके तरु रह कुसुमन छाय । भरे मनु अनुराग नूतन परम पल्लव पाय ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

बज्र झरत मधु मकरन्द । मिलि बहत मारुत मन्द ॥ उडि सघन सुरंग पराग । बन भरत मनु अनुराग ॥ कल करत कोकिल राव । मधुमत्त मधुप सचाव ॥ करिरहे हैं गुञ्जार । मनु मदन मंत्र उदार ॥ ऋतु सरस हैं ऋतुराज । लहि संग काम समाज ॥ बन देखि सो अभिराम बस भयो भूपति काम ॥ नहि लखत गिरिका बाल । हिय वासिनी क्षितिपाल ॥ तेहि फिरत बन अमछाय। गो तहां चेदिप राय ॥ जहं बकुल आंब अशोक । बनिरहे सुमनस ओक ॥ तिन्हतरैं बैठे जाय । वसु उपरि चर सुखपाय ॥ भो कामबस नृप चेत । तब गिरन लागो रेत ॥ धरि पत्रसंपुट माहं । वह रेत लिय नरनाह ॥ मम रेत परम अमोघ यह होय गो गिरि ओघ ॥ यह चित्त माहं बिचारि। लिय रेत भूपति धारि ॥ दिन आजु चौथो हाल । ऋतुवती गिरिका बाल ॥ जिमि होय नहि ऋतु व्यर्थ । यह समुझिकै नृप अर्थ ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पुत्रोत्पत्ति हेतु जो खत्त । ऐसे बर सु मंत्रसों दत्त ॥ अभि मंत्रित करि भूपति रेत । गिरिका पह पठवनके हेत ॥ गए सेनढिग भूप सुजान । बोले भूप सहित सनमान ॥ मम हित हेतु शुक यह लेऊ । बेगि जाय गिरिकाकौं देऊ ॥ सुनत सेन पक्षी ले रेंत । चले बेगसों जानि सचेत ॥ सेन दूसर घेरो आनि । आमिष लएँ जात यह जानि ॥ दोऊ लरन लगे बलवान । गिरो रेतसम्पुट सुख दान ॥ गिरो तौंन जमुनामे आय । मत्सी करो पान सो पाय ॥ अप्सराद्रिका लहि विधि शाप । मीन भई हौं करि कछु पाप ॥ भए अद्रिकाके अवतार । दुहिए शापतैं देखि सुसार ॥ एक नदी जा गिरि का नाम । दुतिय अद्रिका मत्सी आम ॥ यातैं नृप संकल्प न व्यर्थ । भयो सुनो भूपाल समर्थ ॥ लयो धीवरन ताहि बझाय । प्रसव मास जब पहुचो आय ॥ फारत पेट कढे द्वै बार । कन्या एक सु एक कुमार ॥ लहि आचर्य भूप पंहं जाय । दयो धीवरन तुरित सुनाय ॥ मत्स्य उदरतैं निकसे भूप । कन्या एक पुत्र शुभरूप ॥ लयो भूप बसु पुत्र सु जौंन । भयो मत्स्य नामक नृप तौंन ॥ सो अप्सरा शापतैं मुक्त । गई स्वर्गकौं आनद युक्त ॥ दई धीवरहि कन्या तौंन । नृप बसु मत्स्यगन्धिनी जौंन ॥ धीवर राखी सुता समान । भरी सकल गुण रूप महान ॥ सत्यावती धरि ताको नाम । माता पिता कहैं अभिराम ॥ मत्स्यगन्धिनी सो वह बाल । भई सयानी लहि कछु काल ॥ पिता खुसी कँह बाहै नाव । कालिन्दीमे पूरित चाव ॥ तीरथ यात्रा करि अभिराम । तहां पराशरमुनि तप

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

धाम ॥ आय लखी सो बाल अनूप । चारु हासिनी दिव्य सरूप ॥ चढे नाव जब गए मझार । मुनि मन बाढो काम विकार ॥ हे रभोरु करऊ मम सङ्ग । लखत तोहि हौं व्यथित अनङ्ग ॥ तब तहि कहो लखत मुनिराज । खरे दुरहं दिशि सुऋषि समाज ॥ इनके लखत समागम तौंन । हम तुम कर हि कहऊ बिधि कौन ॥ यह सुनिकै मुनि कियो बिचार । प्रगट करो नीहार उदार ॥ अन्धकार गो चऊदिशि छाय । गयो भानुसह दिशा छपाय ॥ सत्यवती सचकित इमि बैंन । बोली जानि महा तप अैन ॥ * ॥ सत्यवत्युवाच ॥ * ॥ हौं अबहीं कन्या मुनि भूप । चलति पिता शासन अनुरूप ॥ तो सङ्गमते कन्याभाव । कौंन भांति रहिहैं सहचाव ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कन्याभाव बिनष्ट करि क्यौं सकिहौं घरजाय । कैसें जीवित धारिहैं सुनऊ महा मुनिराय ॥

॥ * ॥ मुनिमुखछन्द ॥ * ॥

मुनिकै यह बैन महामुनिराय । करि प्रीति कहो अति आनद छाय ॥ न डरो जु करो प्रिय काम हमार । नहि जायहि कन्यका भाव तुम्हार ॥ बरमागु प्रिये चित चाहत जौंन । मम होत प्रसाद सुव्यर्थ कहौंन ॥ तन होय सुगन्ध महा बर देऊ । यह मांगत भो तन सौरभ गेऊ ॥ सहि सौरभ सुन्दरि पूरित चैन । चलि द्वीप मे दोऊ गए सुख अैन ॥ करि सङ्गम पाय महा मुनि शर्म्म । तबहीं तेहिको भयो गर्भ सुपर्म्म ॥ तब जात भए बनकौं मुनि राय । करिवैंतप उय अचिंत्य प्रभाय ॥ सहि योजन गन्धवती तेहि नाम । तबहीं भयो पूरण गर्भ ललाम ॥ तब व्यास मुनीश लियो अवतार । मधि कालिन्दीके बर दीप उदार ॥ तबहीं परे देखि कुमार सरूप । जननीसौं चले कहिकै मुनिभूप ॥ जब अम्ब करोगी हमै सुस्मर्न । तबहीं हम आइहैं कारज कर्न ॥ मुनि द्वीपमे जन्म लियो अभिराम । द्वैपायन यातैं धरो बिधि नाम ॥ युगआदितैं अन्तलौं धर्म्मके पाय । क्रमत एक एकसों जात नशाय ॥ इहि भांतिसो मानुष आयुष जौंन । लखि जात घटो मुनि आनद भौंन ॥ करि कैसु अनुग्रह बिप्रन पास । करि बेद बिभाग भए मुनि व्यास ॥ सब बेद पढाय दिये शुचि हेत । शुकजैमिनिपैं लसु मंत्र समेत ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

भारत पञ्चम बेद द्वैपायन मुनि करि छपा । दियो पठाय अखेद बैंसम्पायन सूतकौं ॥
गङ्गातनय उदार सान्तनुसुत भीषम भए । बसु बीरयसौं वार बेदारथवेत्ता परम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बेदवेत्ता बिप्रका करि बिना चोरीं चोर । भूप भृत्यन पकरि राखो शूलप अति घोर ॥ बिख्यात

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पा० मुनि माण्डव्य इमि भो ब्रह्मऋषि तपधाम । धर्म्मको आव्हान कीन्हो क्रोध करि तेहि साम ॥ कियो एक सकुन्तिकाका इषिकासौं भेद। बालपनमे कियोहों हम इतो कारण खेद ॥ तेहि अन्त कीन्हो अमित भांति न उग्र तप अभिराम । भयो कासौं नही तातैं तनकपातक क्षाम ॥ अन्यबधतैं विप्रबध हैं घोर रूप बिशेश । धर्म्म हो तुम किल्बिषी कुरु शूद्रयोनि प्रबेश ॥ शापत तेहि धर्म्म राजसु शूद्रयोनिहि पाय । होत भासो बिदुर बिद्वन धर्म्म विद सुखदाय॥ भए सु मुनि समान संजय गवल्गणतें सूत । कर्ण कुन्ती कन्यकातैं भयो रबितैं पूत ॥ लोक कारण बिष्णु प्रगटे देवकीतैं पर्म्म । इक्षिकुलमे कृपासागर बढावनकौं धर्म्म ॥ अव्यक्त अव्यय प्रबर आत्मा प्रकृति प्रभव अमन्द । बिश्वकारण नित्य अक्षय सत्य आनदकन्द ॥ अचलअनादि अनन्त धाता सगुण निर्गुण रूप। अजर आनदप्रभव प्रभु कैबल्य त्रिभुबन भूप॥ इक्षिवंश सनाथ कीन्हौं परम पावन पूर । भए सत्यकतनय सात्यकि कृष्ण अनुगम सूर ॥ भए कृतबर्म्मा महारथ हृदिकके बरबीर । गिरत रेतस भरद्वाज सु द्रोणिकां धरि धार ॥ भयो तातैं पुत्र ताको द्रोण राखो नाम । भए गौतम बीर्यते सुत कन्यका अभिराम ॥ द्रोणपत्नी कन्यका सो पुत्र कृप बरबीर । अश्वत्थमा द्रोणको सुत भयो अति रणधीर ॥ धृष्टद्युम्न मखाग्नितैं भे द्रोणमारण हेत। द्रौपदी तेहि कुण्डत भइ महा रूप निकेत ॥ सुबलके सुत शकुनि जाए भई कन्या जौन । नाम देवप्रकोपना धृतराष्ट्र भार्य्या तौन ॥ व्यासतैं धृतराष्ट्र पाण्डु सु भए परम कुमार।बिचित्र बीर्यके क्षेत्रसे लहि परम धर्म्म उदार॥ पाण्डुके सुत पाँच जनमे धर्म्मधुर बलवान । भे युधिष्ठिर धर्म्मतैं गुण भरे धर्म्म समान ॥ बायुतैं भए भीम अर्जुन इन्द्रतैं अभिराम । नकुल अरु सहदेव जाए दस्रतैं अभिराम ॥ भए सुत धृतराष्ट्रके शत एक परम सुजान । महाबीर बिषादकारण युद्ध कारण जान ॥ ज्येष्ट दुर्य्योधन सु सबतैं भए कलिके रूप । रहे तिनमे महारथतेकहत ग्यारह भूप ॥ करण दुःसासनो दुःसह चित्रसेन बिकर्ण। बिबसति दुर्म्मर्षणो अरु सत्यब्रत अरिदर्ण ॥ पुरु मित्रबैश्यापुत्र हो सु युयुत्सु जो बलवान। कहे ग्यारह महारथ हे सुने जे मतिमान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

अर्जुनतनय सुभद्रानन्द । भे अभिमन्यु पण्डुकुलचन्द ॥ पाण्डवपुत्र पांच बलवान । भए द्रौपदीते सुखदान । प्रतिविध्य युधिष्टिरको सुत भयो। सुत सोम बृकोदरतैं गुणमयो ॥ अर्जुन सुत श्रुतिकीर्त्ति ललाम। नकुल सुता नीतू अभिराम ॥ सहदेव श्रुतसेन सुजान। भीम हिडम्बीतैं बलवान॥ भयो घटोत्कच पुत्र उदार। कर्ण शक्तिसौं जौन समार ॥ रहो शिखण्डी द्रुपदकुमारि । लहि पुरुषत्व भयो धनुधारि ॥ तेहि पुरुषत्व आपनो दीन्ह । स्थूणयक्ष नारी तनु लीन्ह ॥ आए तेहि रण भूप अनेक। कहिवँ सक्य न नाम बिबेक॥ कहे मुख्य जेहे बरबीर। जिन रण कियो प्रवृत्त

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

गंभीर ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ एते कहे मुख्य जे गन्य । कहे न रहे भूप जे अन्य ॥ सुनो आ
चहत तिनकौं अनुरूप । भए जे महत महारथ भूप ॥ देव सदृश जनमे क्षिति आय । तिनको तुम सु
कहौ समुझाय ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ देव रहस्य परम यह भूप । कहत वन्दि विधि
चरण अनूप ॥ परशुराम क्षिति एकविस वार । विना क्षत्रको करी उदार ॥ तब महेन्द्र पर्वतमे जाय ॥
करण लगे तप समता पाय ॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

लोक सिगरो विना क्षत्रीको भयो जब भूप । क्षत्रपत्नी ऋषिनपैं तब गई दीन स्वरूप ॥ कहन
लागी विप्रबर अब कृपा कीजै तौन । होय क्षत्रीवंश फिरिकै नाश पावत जौन ॥ ऋतुस्नाता जानि
तिनसो ऋषिन करि करि सङ्ग । दियो रेतस लहो तिन सब गर्भ तपको अङ्ग ॥ भए तातैं पुत्र कन्या
शतसहस्रन तौन । महाबीर पराक्रमी अति वंशकर्ता जौन ॥ भए ते सब महाभूपति धर्मशील
उदार । क्षत्रमय सब भई क्षोणी फेरि सागर वार ॥ आधि व्याधि विमुक्त सिगरे सुजन सुन्दर सूर ।
ब्राह्मणादिक वर्ण सिगरे करे आनदपूर ॥ दण्य ये तिनको दण्ड देत विचारिके श्रुतिधर्म । प्रणत
जन ये तिन्है पालत नीति रीति सुपर्म ॥ धर्ममय लखि देश वर्षत इन्द्र समय समेत । मरत हो नहि
बाल कोऊ पुण्य पावन हेत ॥ विना जोबनप्राप्त नर नहि करत स्त्री संग । जियत यातैं व्रजत
दिन नहि होत आयुष भंग ॥ करहि क्षत्री यज्ञ बहुविधि दक्षिणा बहु देहि । विप्र वेद सदंग
पढिकै पार तिनको लेहि ॥ वेदविक्रय करत द्विज नहि पठत शूद्रन पास । करत हैं षटकर्म्म
विधिसौं सहित वेदाभ्यास ॥ गहत अपने हाथ हल नहि करत खेती वैश्य । धरत गोपर बोझ नहि
लखि करत पालन कैश्य ॥ चरत जबलौं वत्स तृण नहि दुहत तबलौं गाय । तोलि बेचत वणिकसो
नहि घाटि बाट चढाय ॥ लखत धर्महि करतहे नर कर्म्म पर्म्म ललाम । निरत अपने धर्म्ममे
सब वर्ण हे मतिधाम ॥ धर्म्म ह्रास न होत कबहूँ सुनहु भूपति भूरि । रही बसुधा अन्न धनमय
परम प्राणिन्ह पूरि ॥ मनुज लोकहि देखि अैसैं उदै कृतयुग पाय । असुर जनमे क्षत्र कुलमे
देवहत ते आय ॥ स्वर्गतयै स्वर्गतैं व्है भ्रष्ट क्षिति पर आय । जन्म लहि दैवल चाहत मनुजतनको
पाय ॥ असुर जनमे योनि जेहि जेहि सुनहु अतिबल वान । महिष हय गज गज खर अरु ऊष्ट्रमे
अतिमान ॥ भए जे महिपाल तेसब महा मदके धाम । सकी सहि नहि भार तिनको भई धरणी
स्याम ॥ देत चारिहु वर्णकौं तेमहा पीडा घोर । क्षत्र कुलमे जन्मलै जे भए दनुज कठोर ॥ करत ह
वनवास ऋषि जे करत धर्षन तास । पीड्यमाना महीराजन गई ब्रह्मा पास ॥ नहि धारा धरि
नसके सब कूर्मादि धारक जौन ॥ भई भारा क्रान्त दैत्य सु दनुज बलभर तौन । गई पीडित सङ्ग
ह्व ना भूमि विधिके पास । लखो देव महर्षि सेवित पितामह सुखरास ॥ सोद लहि शरणार्थि
नीपद वन्दि भर वृतान्त । कहो सकल दिगीश सेवित पाय त्रिभुवन कान्त ॥ जानि लिन्हौं प्रथम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

५० बिधि सब भूमिको दुख जौंन। जगतकता रहत तासों छपो कारण कौन ॥ कहो क्षितिसा पितामह तब कृपासागर बैंन। भूतपति उतपत्तिकारण प्रजापालक चैंन ॥ ब्रह्मोवाच॥ हे धरा मम पास आई चाहि कारज जौंन। दियो आज्ञा अमरगणकहँ काज कीबे तौंन ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ महीको कहि बिदा कीन्हौं बचन यह देवेश। पितामह तब सुरनसों इमि कियो परम निदेश ॥ मनुज व्है धरि अंश अपनो लेऊ तुम अवतार। युद्ध करि सह सुरब्रह सुरपति हरऊ भूको भार ॥ तथा सब गन्धर्ब अप्सर सहित धरिकै अंश। जाय जनमऊ भूमिपैं बिधि कहे बचन प्रसंश ॥ ❀⬭❀⬭❀⬭

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

ब्रह्मोवाच। अपने अपने अंशते पृथक पृथक तुम जाय। लेऊ धरापर जन्म सब सुरन सहित सुरराय॥
बचन पितामहके सुने कहि तथास्तु सबबृन्द। करि बिचार अवतरनको क्षितिपर अंश सहेन्द्र ॥
बिष्णुपास बैकुण्ठकौं तब चलि गए सुरेश। नारायण जगदीशको लीवे अंश निदेश ॥
भूभरहर अवतार प्रभु लीजै कहो सुरेश। नारायण अवतरनकौं कियो तथास्तु निदेश ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिमानिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनायकबोखरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि अंशावतरणे चतुर्विंशोध्यायः ॥ २३ ॥ ❀⬭❀⬭❀⬭❀⬭❀⬭❀⬭❀⬭❀⬭❀⬭❀⬭❀⬭❀⬭❀

॥ ❀ ॥ सोरठा ॥ ❀ ॥

हरिबेको भूभार करि सम्मत श्रीनाथसों। इन्द्र अंश अवतार लीवेकौं सह सुरचले ॥
दै सब सुरब्रह निदेश जन्म लेनकौं भूमिए। तजि बैकुण्ठ सुरेश फिरि आए सुरलोकको ॥

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

तब सुर असुर बिनाश बिचार। करिकै लगे लेन अवतार ॥ ब्रह्मर्षि राजऋषिनके बंश। जनमे सकल सुरनके अंश ॥ दानव दैत्य सराक्षस दुष्ट। मारे सकल सुरन बल पुष्ट ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ जनमेजयउवाच॥ ❀ ॥ सुर दानव राक्षस गन्धर्ब। सह अप्सरन मनुज जे सर्ब ॥ तिनको जन्म सहित बिस्तार। सुनो चहत सो कहो उदार ॥ ❀ ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ ❀ ॥ बन्दि स्वयम्भुव चरण उदार। कहत भूपसो सहबिस्तार ॥ देवादिकको सम्भव नाश। कहत सुनऊ सो सब इतिहास ॥ ब्रह्मापुत्र मानस षट जौंन। प्रथम भए जे कहियत तौंन ॥ मरीचो अत्रि अङ्गिरस नाम। पुलस्त पुलह क्रतु तेजस धाम ॥ मरीचि पुत्र कश्यप मतिमान। जातैं भई सृष्टि सुखदान ॥ भई दक्ष कन्या दश तीन। तिनके सुनिए नाम प्रवीन ॥ अदिति सदिति दनु काला फेरि। दनायु सिंहिका क्रोधा हेरि ॥ प्राधा बिश्वा बिनता जौंन। कपिला मुनि कद्रू है तौंन ॥ ए कश्यपकी पत्नी दिष्टि। करत भांति ए जाई सृष्टि ॥ अदिति पुत्र द्वादश आदित्य। भए सुवन पति भासक नित्य ॥ धाता

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मित्र अर्य्यमा शक्र । वरुण अंश भग होत न वक्र ॥ विवस्वान पूषा सविता वर । त्वष्टा विष्णु कहत आ०प
जेहि कविनर ॥ अवरज बिसु महत गुणधाम । त्रिभुवन पालक परम ललाम ॥ दितिके एक
पुत्र बलवान । नाम हिरण्यकशिपु अतिमान ॥ ताके भए सु पांच कुमार । प्रल्हाद प्रथम संल्हाद
उदार ॥ सिवि अनुल्हाद सुवाष्कल जाँन । त्रय प्रल्हाद तनय भे तीँन ॥ बिरोचन कुम्भ निकुम्भ
सुधीर । भए बिरोचन सुत बलि बीर ॥ बलिसुतबान भयो शिव भक्त । महाकाल जो सुनियत
व्यक्त ॥ * ॥ इतिदितिबंश ॥ * ॥ दनुके चालिस भए कुमार । तिनके बंश अनन्त उदार ॥ * ॥
तेषांनाम ॥ * ॥ बिप्रचित्ति सम्बर बलवान । नमुचि पुलोमा असिलोमान ॥ केशी दुर्जय शङ्कु
अमान । अयःशिर और अश्वशिर जान ॥ गगन मूर्द्धा अरु स्वर्भानु । अश्व अश्वपति अर्जक मानु ॥
अश्वग्रीव वृषपर्व्वा जान । सूक्ष्म तुङ्गण्ड महोदर जाँन ॥ एकपाद एकचक्र अमान । निचन्द्र विरू
पाक्षौ बलवान ॥ निकुम्भ कुपट कपट अरु सरभ । सूर्य्य चन्द्र नामक अरु सलभ ॥ एते दनुसुत भे
विख्यात । औरन कहे जे हैं अज्ञात ॥ दनुसुत भे दश करता वंश । तिनके कहियतु नाम प्रसंश ॥
एकाक्ष शतप प्रलम्ब सुबीर । वाताषी अरु नरक गम्भीर ॥ शम्बुतपन शठ और अविष्ठ । वनायु
दीर्घजिव्हा सु अनिष्ठ ॥ तिनके पुत्र सुपौत्र अनन्त । भे दनुकुलमे सकल असन्त ॥ चारि सिंहिका
जये कुमार । राज सुचन्द्र चन्द्रहरतार ॥ चन्द्र प्रमर्दन चौथो बीर । सूर्य्यचन्द्र अरि राज गंभीर
क्रोधातँ भो वंश अनन्त ॥ कहँत क्रोध बस तिनकौं सन्त । भे दनायु सुत चारि सुधीर ॥ बित्तर वृत्र
सु अरु बलबीर ॥ भे कालाके पुत्र महान । काल समान महाबलवान ॥ * ॥ नाम ॥ * ॥
विनाशन क्रोध क्रोधहंतार । क्रोधशत्रु ए चारि उदार ॥ असुर पुरोहित शुक्र सुजान । उशना
पुत्र पांच मतिमान ॥ त्वष्टा अधर अचि हयग्रन्य । ब्रह्मलोक गत भए सुधन्य ॥ कहो सुरासुर
वंशोत्पत्य । सुनो जो हम मुनिवरसौं सत्य ॥ इनके पुत्र सुपौत्र अनन्त । भूप कवन कहि पावत
अन्त ॥ तार्क्ष अरिष्टनेमि सुखदान । अरुण सु आरुणि गरुढ महान ॥ अरुणि भए षट विनता
नन्द । सुनऊ भूपमणि कुरुकुलचन्द ॥ शेष अनन्त सु वासुकि नाग तक्षक कूर्म कुलिक बडभाग ॥
कद्रू तनय असंख्य अनन्त । कहे ख्यात जे हैं क्षितिकान्त ॥ * ॥ मुनेः पुत्रः ॥ * ॥ भीमसेन सूपर्ण
ललाम । उग्रसेन वरुणो अभिराम ॥ गोपति अरु धृतराष्ट्र सुजान । सूर्यवर्चसे सप्तम जान ॥ अर्क
पर्ण अरु प्रयुत सुचारु । सत्यवाक चित्तमे निरधारु ॥ भीम चित्ररथ अरु परजन्य । शालिशिरा
कलि नारद धन्य ॥ सोरह भए देव गन्धर्व । ए मुनि जाए सुन्दर सर्व ॥ * ॥ प्रधापुत्री ॥ * ॥
अनवद्या मनुवंशा चारु । असुरा मार्गणप्रिया उदारु ॥ अनूपा शुभगा भाषी सात । प्रधा सुता जाई
विख्यात ॥ * ॥ प्रधापुत्रा ॥ * ॥ सिद्ध पूर्ण बर्ही पूर्णायु । ब्रह्मचार रतिगुण सुखदायु ॥ सुपर्ण

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

०५० सु विश्वावसु अभिराम। भानु सुचन्द्र दशम गुणधाम ॥ एज कहे देव गन्धर्व। प्रधा पुत्र कश्यप सुत सर्व ॥ अब अप्सर सबंश अभिराम। कहत प्रधातैं भयो ललाम ॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

अलंबुषा अरु मिस्रकेशि विद्युपराणा आम। तिलोत्तमा अरु कह अरुणा रक्षिता अभिराम ॥ मनोरमा सुरजा सुरभा केशिनी छविधाम। असुरजा सु हुबाऊ कहिए सुप्रिया वरबाम॥ कही ए अप्सरा तेरह प्रधा जाई सर्व। अतिबाऊ हाहा हूहू तुंबुरु एज सुर गन्धर्व ॥ अमृत ब्राह्मण गौ अरु गन्धर्व अप्सर सरस। भए कपिलातैं सु सिगरे तनय कश्यप दरस ॥ भुजग रुद्र सुपर्ण ब्राह्मण मरुत हैं गो जैान। कह्यो तिनको बंश कीर्तन करत श्रुतिसुख तैान ॥ पुण्य धन आयुष्यकरता बंशकीर्त्तन धर्म। पापहा संतापहा यह महत दायक धर्म॥ सहित श्रद्धा सुनतहै जो अरु सुनावत ताहि।चारि फलकौं बंश कीर्तन देत तिनका चाहि ॥ * ॥ बैसंपायनउवाच ॥ *॥ कहे ब्रह्माके सुमानस पुत्र षट अभिराम। भए शिवकेपुत्र ग्यारह महातेजस धाम ॥ मृगव्याध सुसर्प निऋति अजैकपाद अमन्द। अहिर्बुध्न्य सु अरु पिनाकी दहन आनंदकन्द ॥ स्थानु अम्बक अरु कपाली कहत भग अभिराम। रुद्रहैं एई एकादश तरुण तेजसधाम ॥ तीनिसुत अंगिरस ऋषिके महत तिनके रूप। जीव अरु उत्तथ्य अरु संवर्त्त सुनिए भूप ॥ बृहत सुतभे अत्रिके बर बेदविद्या मान। पुलस्तके सुत यक्ष राक्षस कीश किन्नर वान ॥ पुलहके किंपुरुष सलभा भए सिंह महान। बाघ अरु बृक भए सिगरे सुनऊं भूप सुजान ॥ भए क्रतुके पुत्र क्रतुसम रहत रवि सह खच्च। अंगुष्ठ दक्षिणतैं सु विधिके भे प्रजापति दच्च ॥ दच्चभार्या बाम अगुआतैं भई अभिराम। पञ्चास ताके भई कन्या भरी रूप ललाम ॥ दच्च लालन करत कन्या पाय पुत्रीभाव। दई दश ते धर्म्मराजहि परम पूरे चाव ॥ बीससात सो दई शशिकौं कश्यपहि दश तीन। व्याहि विधितब कहत तिनके नाम सुनऊ प्रवीन॥ कीर्त्ति लक्ष्मी धृति सुमेधा पुष्टि श्रद्धा चाहि। क्रिया लज्जा बुद्धि मति अरु दई धर्म्महि व्याहि॥ दई शशिकौं सप्तविंशति विदित तिनके नाम। काल क्रमतैं फिरहि निति नक्षत्रमे अभिराम॥ भए वसुमे धर्मतैं सुत आठ वसु बररूप। नाम। कहै धर ध्रुव सोम अह पुनि अनिल अनल अनूप ॥ प्रत्यूष और प्रभास कहिए आठ वसु अभिराम। दच्च वसु कन्यका ए भए तातैं आम ॥ नाम इनको भयो वसु यह कथा अन्त ललाम। भयो धूम्रामे सुधर सुत धर्मतैं अतिकाम॥ वसुहिके है नाम ए धूम्रादि जे है सर्व। कल्पबारे भेदतैं बर कहत प्रज्ञ अखर्व॥ सुमनखिनीमे सोम होतो भयो ज्योतिस्वरूप। स्वसामे भो खसन सुत भो रतामे अहभूप॥ भांडिलीमे भो ऊताग्रन पुत्र तेजस रास। भे प्रभाता पुत्रद्वै प्रत्यूष और प्रभास ॥ भए धरसुत द्रविण अरु ऊतहव्यवह अभिराम। भयो ध्रुव सुत काल प्रभु जनहरण जाको काम ॥ भयो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

वर्चस सोमको सुत परम जोति स्वरूप । शिशिर प्राण मनोहरामे तिमि हिरमण अनूप ॥ भए आ०प
अहसुत ज्योति सम अरुशांत मुनि सुखदान । स्वामिकार्त्तिक अग्निके सुत भए तेजस मान ॥ मख
और विशाख ताके भए अवरजधीर । अनिलके सुत मनोजव अज्ञातगति वरवीर ॥ शिवा
भार्यामे भए ए भूप परम सुजान । प्रत्यूषके सुत भए देवल परम मुनि यजमान ॥ भए देवलके
सु द्वै सुत महातपके धाम । औ सुता एक वृहस्पतिकी प्रभाभार्या आम ॥ चारु पुत्र प्रभास वसुके
विश्वकर्म्मा देव । भए जे सुर शिल्पकारक करत नोकी भेव ॥ रचे जे सु बिमान सिगरे परम दिव्य
स्वरूप।विश्वकर्म्मा देव बढई भए सुनिए भूप॥भए विधिके स्तन दक्षिण तें महत नरूप। धर्म्मराज
सुधर्म्मपालक परम पावन भूप ॥ भए ताके तीनि सुत बर काम सम अरुहर्ष। भई रति वरकाम
भार्या रूपमय चितकर्ष ॥ प्राप्ति समकी बाम नन्दा लही हर्ष समान । मरीचिके सुत भए कश्यप
सुनऊ भूप सुजान ॥ भए कश्यपतें सुरासुर सृष्टिकारण तौन । भइ संज्ञा भानुभार्या भई बडबा
जौन ॥ भए ताके दस नन्दन द्विधा धारें रूप । अदितिके सुत भए बारह विभु अचरज भूप ॥
कहे तैंतिस देवता ए भए पहिले जौंन । देवगण हम कहत अब हैं सुनऊ तु चित्ति रौंन ॥ करें
कीर्त्तन सुने तिनको जात अघ करि गौंन।रुद्र साध्य सु मरुत वसुगण और मार्गव जौन ॥ *👁*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

विश्वेदेवा जे सुखदान । बै नतेय जे कहे महान ॥ वृहस्पति आश्विन गुह्यक जौंन । औषधि
दिव्य कहे पशु तौंन ॥ ए सब कहे देवगण भूप । सुनत होत नर दिव्य स्वरूप ॥ भृगु ब्रह्माके हृदय
सरोज । तातें प्रगट भए तप ओज ॥ भृगुको सुत कवि ऋषि भो तौन । शुक्र तास सुत ग्रह ह
जान ॥ जो त्रिभुवनके रक्षण हेत।वर्षि अवर्षि अभय भय देत॥ योगसिद्ध द्वै तन धरि जौंन।सुर असु
रनको भो गुरु तौंन ॥ लिख्यो बेदमे यह वृत्तान्त । श्रीजनमेजय वरक्षिति कान्त ॥ भृगुसुत और
एक अभिराम । च्यवन कहो जो प्रथम ललाम ॥ आरुषी सुमनु कन्या जौंन । भई च्यवनकी
पत्नी तौंन ॥ और्व भए ताके सुत आम । उरू भे द्विजनमे तपधाम ॥ भए और्व सुत सुमतिऋचीक
भे जमदग्नि तास सुत नीक ॥ चारि भए जमदग्नि कुमार । अवरज भए जे राम उदार ॥ अस्त्र
शस्त्रवेत्ता रणधीर । क्षत्रिणके अन्तक बरबीर ॥ रहे और्वके शत सुत अन्य । तिनके भए अपत्य
अगन्य ॥ विधि हिय सम्भव द्वै सुत जौंन । मनुके संग रहत हैं तौन ॥ धाता और विधाता नाम ।
तिन दोउनके बर मतिधाम ॥ खसा तास लक्ष्मी अभिराम । अमल कमलमे जाको धाम ॥ ताके
मानस पुत्र अनन्त । ते नभचारी रहत समन्त ॥ वरुणभार्य्या जेष्ठा जौंन । सुत अरु कन्या जाई
तौन ॥ बल सुत कन्या सुरा अमन्द । जाहि लखत सुर लहत अनन्द ॥ भई क्षुधार्त प्रजा तब
जान । प्रबल अबलकहँ भक्षत तौंन ॥ भो अधर्म्म ताते उत्पन्न । प्रजा नाशकारण सम्पन्न ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० निऋति भार्य्या लही अधर्म्म। तिहि राक्षस त्रय जने अपर्म्म॥ मृत्यु महाभय भय बलवान। करत जीवजन नाश अमान॥ काकी श्वेनी भाषी नाम। धृतराष्ट्री अरु शुकी ललाम॥ दक्षसुता ताम्रातें पांच। कन्या भई सुनऊ नृप सांच॥ जई उलूकन्ह काकी जौँन। श्वेन जई श्वैनीही तौन॥ भासी भास गृद्धगण सर्व। धृतराष्ट्री जनमी हँस अखर्व॥ चक्रबाक ताहीके चारु। भए शुकी सुत शुक परिवारु॥ दक्षसुता क्रोधतेँ भई। कन्या नव नव गुणसौँ भई॥ मृगी और मृगमन्दा बाम। हरी सु भद्रमना अभिराम॥ मातंगी सार्दूली अन्य। श्वैता और सुरभि अति धन्य॥ भरी सकल गुण सुरसा तौँन। क्रोधाकी नव कन्या जौँन॥ मृगीपुत्र मृग ऋक्ष उदार। मृग दन्दाके सृमर कुमार॥ भद्रमनाको पुत्र गजेन्द्र। ऐरावत जेहि चढत सुरेन्द्र॥ हरीपुत्र हय बानर जौँन। गोलाङ्गल श्याम मुख तौन॥ सिंह व्याघ्र द्वीपी बलवान। सार्दूलीके पुत्र महान॥ मातंगी के भे मातंग। श्वेताके दिग्गज बर अंग॥ सुरभी जाई कन्या चारी। रोहिणी अरु गन्धर्वा नारी॥ बिमला अनला कहै सुजान। तिनके सुनऊ बंश सुखदान॥ भए रोहिणीके वृष पूत। गन्धर्वीके बाजि अकूत॥ बिमला पुत्र पिण्ड फलसात। भए वृक्ष सुनिए अवदात॥ खर्जूर सुपारी नरियर ताल। खर्जूरिका ताली हिन्ताल॥ अनला सुता शुकी अभिराम। सुरसाके भे कङ्क ललाम॥ अरुण भार्या श्वेनी जौन॥ सम्पाति जटायुष जनमी तौँन॥ सुरसाके फिरि जनमे नाग। पन्नग कद्रू पुत्र समाग॥ गरुड अरुण बिनता सुत जौँन। पहिले कहे सुने नृप तौँन॥ यहि बिधि सकल भूत उत्पत्य। कहे भूप हम सो सब सत्य॥ सुनत होत जाके नर मुक्त। परम पुण्य द्वैपायन सुक्त॥ *

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकबीस्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना कृत भारतदर्पणे आदिपर्व्वणि अिशावरणे ऊणत्रिंशोऽध्यायः॥ २९॥ *

॥ * ॥ छपाकरछन्द ॥ * ॥

॥ जनमेजयउवाच॥ यह बंश कहो सुर सम्भव जो। मुनिराय सुनो क्रमसौँ सब सो॥ सुर औ असुरादिनके जनमै। कहिए जिमि भे सु मनुष्यन मै॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ नरनाथ भए दिति नन्दन जे। पहिलेँ कहिए सुनिए सब ते॥ विप्रचित्ति महासुर तौँन सुनो। मगधेश भयो [illegible] गुनो॥ दितिराज हिरण्यकशीपु जयो। शिशुपाल महान महीप भयो॥ सुनिए सु संल्हाद [illegible] महाप वह शल्य भयो पतिमद्र कहा॥ अनुल्हाद सु दैत्य महान सुनो। धृष्टकेतु भयो [illegible] गुनो॥ [illegible] नाम सु दैत्य रहो जो कहो। द्रुम नाम महीप भयो सु अहो॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

[illegible] दैत्य सो भगदत्त भो बलवान। अयःशिरा अरु अश्वशिरा अरु अयःशङ्कु अमान

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

गगनमूर्द्धा बेगवानौ पांच असुर अनूप । भए कैकयदेशमे ए महा योधा भूप ॥ केतुमान महान आ०प
योधा ऊतो दानव जान। अति प्रतापी महाबलको भाँन निभय तान ॥ भयो अमितौजा मही
पति दैत्य अरु स्वभानु। उग्रसेन नरेश भो अरु अश्व दानव मानु॥ अशोक भूप अनूप भो अरु
अश्वपति अमरारि। अति पराक्रमवान भो हार्दिक्य प्रतिपत्तारि ॥ दीर्घप्रज्ञ नरेश भो वृषपर्व
दानव जौंन। अजक असुर महान जनमो शाल्व भूपति तौंन ॥ अश्वग्रीवा दैत्य भो हे रोचमान
नरेश। सूर्य्य दानव वृहद्रथ भो भूमिपाल अशेष ॥ भयो सेनाबिन्दु भूप तुऊण्ड दिति सुत तान।
नग्नजित भूपाल भो हो दुषुप दानव जान ॥ एकचक्र सु दैत्य भो प्रतिविध्य नामक भूप। विरूपाक्ष
सु दैत्य भो नृप चित्रधर्मा रूप ॥ हर असुर तौंन सुबाऊराजा भयो अतिवलवान। सुहर असुर
महान भो बाल्हीक भूप सुजान ॥ निचन्द्र नामक दैत्य भो नृप मुञ्जकेश प्रसिद्ध । निकुम्भ नामक
दैत्य भो देवाधिपो नृप वृद्ध ॥ भयो पौरव नाम राजा सरभ दितिसुत जौंन । कुपथ दैत्य सुपार्श्व
राजा भयो सुनि अै तौंन ॥ पवतेय महीप भो जो क्रथक दैत्य महान। सलभ दितिसुत भूप भो
प्रल्हाद नृपति सुजान ॥ चन्द्र नामक दैत्य भो नृप चन्द्रवर्मा वीर ॥ अर्क नामक दैत्य भो राजर्षि
वृषिक सुधीर ॥ पश्चिमानूपक महीपति भयो मृतप मुरारि । गरिष्टनामक असुरसो द्रुमसेन
भूपति जान ॥ विश्वनामक भूप भो सु मयूर असुर अमान । भो सुपर्ण दैत्यराजा कालकीर्त्ति
महान ॥ चन्द्रहन्ता असुर जो सो सुनक भूप प्रवीन। चन्द्र नामक दैत्य भो नृप जानकी क्षितिर्दून॥
भयो काशीराज दानव दीर्घ जिव्हा जौंन। राऊ ग्रह जो सिंहकासुत भयो कथ नृप तौंन ॥ भयो
सो वसुमित्र भूपति दनुज विप्तर वीर। दैत्य विप्तर स्रात जो सो पांड्य नृप भो धीर॥ वलीनर जो
दैत्यहो सो पौंड्र मत्स्यक भूप। वृत्र असुर अमान भो मणिमान नृपति अनूप ॥ क्रोधहन्ता असुर
भो नृप दण्डनाम महान । क्रोधवर्द्धन असुर भो नृप दण्डधार अमान॥ कालेयके जे पुत्रहे वसु
महावल्ल असमान। मगधमे ते आय जनमे सुने तास विधान ॥ बडे सबसौं जयत्सेनसौं भए भूप
महान ॥ दूसरे बलवान भो अपराजितो सुख दान ॥ महातेजसु तीसरो सो भो निषाद नरेश।
रहो जान चतुर्थ सो भो श्रेणिमान जनेश ॥ रहो पञ्चम जौंन तिनमे भो महौजा बीर। भयो षष्टम
राज वृषिसु अभीरु नामक धीर ॥ समुद्रसेन महीपतिनमे भयो सप्तम जौंन। वृहत नामक भूप
हो कालेय अष्टम तौंन॥ पार्वतीय महीप भो सो कुक्षि दैत्य अमान। क्रथन नामक दैत्य भो सूर्य्याक्ष
भूप महान ॥ सूर्य्य नामक दैत्य भो नृप दरदपति वाल्हीक। भए क्रोधाके तनय वज्र नाम तिनको
ठीक ॥ क्रोधवस गण कहोहो जो सुनो नृप मतिधाम। भए हे ते भूप क्षितिपर कहत तिनके नाम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरिकन्द ॥ * ॥

मद्रक कण्बेष्ट सिद्धार्थ । कोटक अरु सुर बीर महार्थ ॥ महाबीर बाल्हीक सुबाऊ । क्रथ बिचित्र अरु सुरथ हि चाऊ ॥ बील चीरवासा कौरव्य । दन्तबक्र दुजय अतिभव्य ॥ रुक्मी जनमे जय आषाढ । बायुवेग एकलव्य सचाढ ॥ सुमित्र सुबाटधान सुखदान । गोमुख अरुकारुष जान ॥ श्रुतायु क्षेमधूर्त्ति अभिराम । उद्वह दृढक्षेन बलधाम ॥ क्षेमोग्रतीर्थ अरु कुहर नरेश । अरु कलिङ्ग पति वली बिशेष ॥ ईश्वर भूपनके अब तंश भए क्रोध बस गणके बंश ॥ असुर सुकालनेमि हो जान । उग्रसेनिसुत कंश सु तौंन ॥ देवक नाम भूप अभिराम । भो गन्धर्बराज छबिधाम ॥ सुर गुरु लिये अंश अवतार । द्रोण अयोनिज बीर उदार ॥ महादेव अन्तक अरु काम । क्रोध अंश मिलि चारि ललाम ॥ अस्वत्थामा तातें बीर । पैदा भयो महारण धीर ॥ बसु बसु गङ्गातनय उदार । सान्तन नृपतें भए कुमार ॥ तिनमे अवरज भीषम धीर । जीतो परशुराम जिन बीर ॥ रुद्रगणांशज रूप अवतार । द्वापर युग भो शकुनि उदार ॥ मरुतअंश भव सात्यकि जौंन । मरुत अंशतें द्रुपदो तौंन ॥ मरुत अंशतें भो कृतवर्म । विराट मरुतगण अंशज पर्म ॥ अरिष्ट पुत्र हंस हो जान । वर गन्धर्बराज बल भौंन ॥ धृतराष्ट्रसु भो तौंन उदार । हंस अनुज भो पाण्डु उदार ॥ धर्म अंशत बिदुर सुजान । दुर्योधन कलिअंश अमान ॥ रावनवंशज रहे उदार । ते सब भे धृतराष्ट्र कुमार ॥ वैश्या पुत्र युयुत्सु उदार । एक अधिक शत भए कुमार ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ जेष्ट कनिष्ट नाम सह जौंन । वैशम्पायन कहि ए तौंन ॥

॥ * ॥ रेलाछन्द ॥ * ॥

दुर्योधन युयुत्सु दुःशासनः दुःसहबीर । दुःशलसु दुर्मुखओ बिबिंशति हो बिकर्ण रणधीर ॥ जलसन्ध सुलोचनबिन्दु अरु अनुबिन्दु औदुर्धर्ष । सुबाऊ दुःप्रधर्षनो दुर्मर्षनो युतहर्ष ॥ दुर्मुख सु अरु दुष्कर्ण कर्ण । चित्र अरु उपचित्र । चित्राक्ष चित्रांगद सुदुर्मद दुःप्रहर्ष पबित्र ॥ बिबित्स बिकट सम ऊर्णनाभ सुपद्मनाभ सुठांन । नन्द उपनन्दक चमुपति अरु सुषेन सुजान ॥ कुण्डोदरो सुमहोदरो अरु चित्रबाऊ महान । चित्रवर्मा अरु सुबर्मा दुर्विरोचन जान ॥ अयोबाऊ सु महाबाऊ सुचित्रचाप कुमार । अरु सु कुण्डल भीमबेग सु भीमबल रणकार ॥ अरु बलाकी सुनेभूपति भीमबिक्रम धीर । उग्रायुधसु अरु भीमशर कनकायु दृढायुध बीर ॥ दृढबर्म अरु दृढ क्षत्र जानो सोमकीर्ति महान । अनूदय अरु जरासन्धो अरु दृढसन्ध अमान ॥ सत्यसन्ध सहस्र बाक सुउग्रश्रव उग्रसेन । क्षेममूर्ति सुकहो अरु अपराजितो जयसेन ॥ पंडितक बिशालाक्ष दुराधन कहतह दृढहस्त । सुहस्त जानऊ वातबे सुवर्चसो रणमस्त ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयद्रथवध ॥ * ॥

आदित्यकेतु बह्वाषी जैान । नागदत्त अनुपाइन तान ॥ कवची और णिषंगी बीर । दंडीदंड धरो रणधीर ॥ धनुग्रह उग्र भीमरथ तैान । वीरसु वीरबाऊ हो जैान ॥ अलोलुप अभय रौद्र कर्मान । दृढरथ अनाधृष्ट बलबान ॥ बिराबी दीर्घलोचना बीर । दीर्घबाऊ अतिबाऊ गम्भीर ॥ ब्यूढोरु सु कनकांगद जैान । कुण्डज चित्रक कहिए तैान ॥ ए शत पुत्र क्रमहितें भूप। जेष्ट कनिष्ट कहे अनुरूप ॥ दुःसाला कन्या अभिराम। सोतें अधिक कही गुणधाम॥ बैश्यापुत्रयुयुत्सु अमन्द । सौत अधिक सुनऊ कुरुचन्द ॥ सब अतिरथी सकल रणधीर । वेद सुवेत्ता सिगरे बीर ॥ सबको ब्याह भये अनुरूप । दुःसाला जो सुता अनूप ॥ नृप धृतराष्ट सुताकौं चाहि । सिन्धुराजकौं दई बिबाहि ॥ सोई जयद्रथ सुनऊ सुजान । हनो जाहि पारथ बलवान ॥ धर्मराजको अंश सुधर्म । भयो युधिष्ठिर भूप सधर्म ॥ भीम बायुअंशज बलवान । इंद्र अंश अर्जुन सुखदान ॥ दस्रांशज सु नकुल सहदेव । महावीर जानत सब भेव ॥ बर्चस नाम सोमसुत जैान । नृप अभिमन्यु बीर भो तैान ॥ जासु अवतरणमैं इमि चन्द । कहे सुरणसा बचन अमन्द ॥ प्राणसमान पुत्र प्रिय जान । सोहै दियो अंश मम तैान ॥ सुर कारजके हेतु अवस्य । तात बिदाकरत हम तस्य ॥ असुरणको बध करि बलवान। शीघ्र आइहै सो स्वस्थान ॥ इंद्र अंश नर हूबैं जैान । अर्जुन नाम प्रथासुत तैान॥ ताको पुत्र होयगो जाय। षोडस बर्ष धारि नर काय॥ बर्ष सोरहे हूँहै युद्ध। तहां महारथ करि रण उद्ध ॥ बिना कृष्ण सारथि सुतअक । महाव्यूह भेदन करि चक्र ॥ बिमुख करै गो सत्र समूह। जीति महारथ सब मथि व्यूह ॥ चतूथांश सेना हनि तैान । देहै पठै प्रेतपुर जैान ॥ महारथी तब सब मिलि आय । करिहैं युद्ध महाकुलकाय ॥ संध्या समय सुबर्चस पाय । तब सो निकट रहै गो आय ॥ एक बंश करबीर कुमार । करि पत्नीमँह गर्भा धार ॥ नष्टहोत कुरुबंश प्रसंग । धरि है तैान भूप अवतंस ॥ यह सुनि सोम बचन सुरराय । सबहिन पूजो तारा नाथ ॥ भयो पितामह तब इमि भूप । भयो अग्निको अंश अनूप ॥ धृष्ट द्युम्न महारथ तैान । राक्षस भयो सिखंडी जैान ॥ भए द्रौपदीसुत जे पांच । बिश्वे देव अंश तेसाँच ॥ प्रतिबिंध्य सोम श्रुतकीर्त्ति सुग्राम । शतानीक श्रुतसेन लखाम ॥ युधिष्ठिरादिकके ए नन्द । भए पाच मनु पूरण चन्द ॥ बसुदेव पिता यदुकुल बर सूर । पृथासुता ताको कबिपूर ॥ पितास्वसासुतको सुत जैान । कुन्तिभोज बर बलको भोन दनकहोहो प्रथम अपत्य । ताहि सुरसो करिबैं सत्य ॥ चारु सुता पहिले भी जैान । कुन्तिभोजका दीन्ही तैान॥ सो बिन पुत्र सुता सो पाय । पुत्रभ वराखी सुखदाय ॥ ब्राह्मण अतिथि सु पूजनधर्म। सैंपो तैान सुताकँह पर्म ॥ दुर्बासा ऋषि उग्र महान । आए ज्यौं ग्रीषमको भान ॥ सेबा तास सु बिधि संपन्न । करिमुनि बरकौं कियो प्रसन्न ॥ तब ऋषि दयो मंत्र अति योग्य । कहि दरु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० परम प्रयोग मनोज्ञ ॥ पढि यह मंत्र बोलिहो जौन । तो ढिग देव आइहै तौन ॥ तास तास तुम पाय प्रशाद । लहिहो पुत्र बीर अविशाद ॥ यह सुनि मंत्र सो लयो उदार । कौतुक धरि चित कियो बिचार ॥ पढि सो मंत्र बोलायो सूर । आए द्युमणि प्रभाके पूर ॥ धरो गर्भ तातैं सुखदान। जनमो कर्णबीर बलवान ॥ कुण्डल कवच सहित सुखदाय । भ्राता पिता बन्धु भयछाय ॥ मञ्जूषा मे धरि सुत जौन । दियो बहाय नदीमे तौन ॥ राधा भर्त्ता सूत उदार । तेहि पायो सो परम कुमार ॥ राधाकौं सौंप्यो सो ल्याय । नाम धस्यो वसुषेण सचाय ॥ भयो शस्त्रवेत्ता बलवान। पढि वेदांग सो भयो सुजान ॥ पूजा समै जो मांगत जौन । देव सुषेन ताहि सो तौन ॥ तब सुरेंद्र ब्राह्मण बनि धाय। कुण्डल कवच सु मांगो जाय॥ कुण्डल कवच काटिके पर्म । दियो देहतैं जानि स्वधर्म ॥ अद्भुत वर्म देखि सुरत्रान । दियो शक्ति जो मृत्युसमान ॥ देवासुर मानुष गन्धर्व । राक्षस किन्नर सर्प अखर्व ॥ जापैं शक्ति छोडिहौ बीर । सो न एक बचिहैं रणधीर ॥ दो वसुषेण नाम अरिदर्ण।फेरि भयो वैकर्तन कर्ण॥कुण्डल कवच दियो इमि बीर। लहो नाम वैकर्त्तन धीर॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बीर सुत कुलमे बढो भो दुर्योधन मित्र । शचीव सुर संग्राममे कर्त्ता युद्ध बिचित्र ॥
शुद्ध सनातन ब्रह्म जो देवदेव गुणधाम । तास अंश वसुदेवसुत भयोपरम अभिराम ॥
भयो शेषके अंशते यदुवंशी बलवीर । सनतकुमारसु अंशतैं भे प्रद्युम्न गम्भीर ॥
भे ऐसे मनुजेंद्र बऊ लहि देवांश उदार । परम वंश वसुदेवके महत वंश कर्त्तार ॥
कहो जो गण अप्सरन को सुरपति शासन पाय । अपने अपने अंशते जनमी क्षिति पर आय॥
प्रिय भई सोरह सहस श्रीयदुपति पति पाय । भरी रूप गुण गण सकल पुण्य पुञ्ज सुखदाय ॥
श्रीकोभाग सो रुक्मिनी भीष्मक कुलमे आय । जन्म लियो श्रीकृष्णको सो महिषी सुखदाय ॥
भई द्रुपदके यज्ञके अग्निकुण्डतैं जान । इन्द्राणीके अंशते परम द्रौपदी तौंन ।
बडी नासि छोटी लसति कमल गन्धिनी बाम । श्यामा सरसिज लोचना रूप रमाकी धाम ॥
सुश्रोणी मेचक चिकुर जाके लसत उदार । करति प्रसंशित पण्डु कुल सकल लक्षणा गार ॥
सिद्धि और धृति अंशसैं कुन्ती माद्री जान। मतितैं गान्धारी भई सुबल सुता ही तौंन ॥
देवासुर गन्धर्वको सह अप्सरन्ह ललाम । कहो अंश अवतरण यह सह राक्षस अभिराम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

धन यश पुत्र सुजान बिजय अंश अवतरण यह । सुनत जो श्रद्धावान सो पावत भूपालमणि ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणेआदिपर्वणि त्रिंशोऽध्यायः अंशावतरणं समाप्तं ॥ ३०॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ आ०

यह सु अंशअवतार हे ब्राह्मण तुमसों सुनो । जे सुर असुर उदार जौन भांति जेहां भए ॥
सह विस्तर कुरुवंश तुमसो अब चाहत सुनो । कहिए सादि प्रसंश मुनिगण मण्डल मध्यमे ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ वैसंपायनउवाच ॥ भयो कौरववंशमे दुष्यन्त भूप महान । करी सागर अन्तला वश्य भूमि सब सुखदनि ॥ वंश सङ्कर होत नहि करत कोऊ पाप । सबिधि पालत प्रजा सिगरी भरो परम प्रताप ॥ धमरत धर्मार्थ पावत प्रजा जेहिके राज । चौर भयको क्षुधा भयको मिटो हेतु दराज ॥ वर्ण रमत स्वधर्ममे सब बिना भय संचार । समय लहि परजन्य वर्षत सरस सस्य उदार ॥ भई रत्न समृद्ध भू अति मुदित जनगण सर्व । भए विप्र स्वधर्मरत नहि अनृत बोलत खर्व ॥ भूप वज्र समान तनको युवा अति मतिमान । दोर्दण्ड पर धरि गिरि सकानन फिरत जो बलवान ॥ चतुर्विधिको गदा युद्ध समेत शस्त्र अनेक । भयो ताको परमवेत्ता वीर भूपति एक ॥ दूरस्थ अरिपै गदाकेरो छोडिबो प्रक्षेप । अरु समीपस्थहि कोटि करिकै हनन सो विक्षेप ॥ वज्र अरिनमाहि घुमाय कै चऊ दिशि गहाहि सक्रोध । जो हनन ताकौं परिक्षेप सु कहत परम सबोध ॥ अरु हनन जौन गदाग्रसौं है हांकि झल्ल चलाय । विधि अभिक्षेप सु कहत ताकौं बुधनके समुदाय ॥ गज हयरोहनमे चतुर अति विष्णुसम बलवान । भयो भूप दुष्यन्त तेजस भरो भानुसमान । अक्षोभ्य सिन्धुसमान भौंसु सहिष्णु धरणीरूप ॥ जनमेजयउवाच ॥ सु शकुन्तला अरु भरतसंभव कहऊ सुमुनि अनूप ॥ सु सकुन्तलाको लही जिमि दुष्यन्त भूप महान । सुनो चाहत तौन तुमसौं कहऊ सुमुनि सुजान ॥

॥ * ॥ वैसंपायनउवाच ॥ * ॥ साजिकै चतुरङ्ग सेना भूप सो बरबीर । चलो मृगया हेतु बनको एकदिन रणधीर ॥ नागदंहित स्यन्दन सुधुनि अश्वक्षेपित घोर । सुभट नादनसौं भरो नभ भूमि चारो ओर ॥ चढि प्रसादन लखैं पुरतिय भूप शक्रसमान । सुमन वर्षहि भूप ऊपर भरि मोद महान ॥ करहि नाना भांतिसौं ते परम मंगल गान । चले कढि सह वर्ण चारो कहत जयति सुजान ॥ जायकै कछु हरि पौरनकौं कह्यो इमि भूप । जाऊ निज निज धामकौं तुम धारि मोद अनूप ॥ सुपर्णमे चढि भूप स्यन्दन भयो परिसर पार । बजी दुन्दुभि पटह भेरी भरो शब्द उदार ॥ लखो नन्दन सदृश बनघन गए ताके पास । घेरि लागे करण मृगया भूप आनदरास ॥ सिंह व्याघ्र बराह मारे मृगनके समुदाय । करो मन्थन विपिनिको सह बीर सुभट सहाय ॥ बचे ते नहि बान गोचर भए जे बनजीव । निकसि भागे सिंह बाघ बराह तजि बन सोव ॥ हनत मृग दूरस्थ बाननह निकट जे चलि जात । तिन्है डारत मारि क्षितिपर करो सुखड्ग निपात ॥ हने

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० नाना शस्त्रसा लहि बन्यजीव अनन्त । रचो मृगया रङ्गसौं दुष्वन्त पृथिबी कन्त ॥ भाजिकै बन जीव प्यासे गए सरिता पास । लहत जल नहि गिरत मूछित होय पाय प्रयास ॥ किते भक्षत मांस मृगको सुभट भूखे जौंन । भजे सुण्ड लपेटिकै गज भए घायल तौंन ॥ मूत्र और पुरीष डारत भजे मदगज जात । मरदि धक्कन मारि तिन बज्र करे मनुज निपात ॥ दुष्टजीबन मारिकै क्षितिपाल अति बलवान । करो शोभन तौन कानन मुनिनको सुखदान ॥ *◆*◆*◆**

॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच । रोलाछन्द ॥ * ॥

मारिकै मृगबृन्द तेहां खेलि मृगया भूप । गए अन्य अरन्यकौं अति सघन जौंन अनूप ॥ क्षुत्पि पासाकुलित सिगरे सङ्गके बरबीर । छोडि सोऊ गहन जो नृप और कानन धीर ॥ परम रम्य सु हरित तृणमय लसति भूमि सुठार । भरे सुमन समूह साखी सहित लतन उदार ॥ कूजि कल रव रहे जिनपैं गूँजि मधुकर घेरि । होति झरि मकरन्दको जेहि दन्द भागत हेरि ॥ बहुत सौरभ भारसौं भरि भयो शीतल पौंन । लसति सघन पराग धुन्धुरि परम आनद भौंन ॥ करत हैं झनकार झिल्ली कीर रव कलमान । भरो अति आनन्द भूपति देखि बन सुखदान ॥ कुञ्ज सोहत सुमन पुञ्ज सु करत अलि गुञ्जार । धाम काम बसन्तको मनु लसत सुषमा गार ॥ सुखद छाया सघन साखी भरे सुमन समूह । लसत नाना रंगके द्विज किए जिन पर जूह ॥ बिना कण्टक फले फूले बिटप सघन उदार । मदन ध्वजसे भरे नाना रंग सुमनस भार ॥ भूपसम रितु राज जानत देखि सुषमा धाम । पवन प्रेरित मनऊ बरषत सुमन बिटप ललाम ॥ लखत ऐसो बिपिनि भूपति गयो सरिता तीर । तहाँ आश्रम लखो मुनिको तपस तेज गँभीर ॥ लसत नाना वृक्ष जेहां ज्वलित पावक यज्ञ । गयो सो चलि निकट आश्रम परम भूपति तज्ञ ॥ वालखिल्य सु यती मुनिवर लसत जह तपधाम । लसत अग्नि अगार नाना परम रम्य ललाम ॥ मालिनी जहँ नदी पुण्या लसति जाके पास । बन्यजीव सु साम्य जेहां करे है सहबास ॥ देवलोक समान आश्रम पास भूपति जाय । पुण्य आश्रम देखिबेकौं कियो मन सुखदाय ॥ नदी बेष्टित परम आश्रम लसत सो अभिराम । बदरिकाश्रम सहित गंगा यथा पावन धाम ॥ कन्व काश्यप महा ऋषिके परम आश्रम पास । राखि सेना भट सबाहन भूप आनद रास ॥ संग सचिव पुरोहितहि लै उतरि रथतैं भूप । चलौ देखन कन्व ऋषिकौं ज्वलित पावक रूप ॥ देखि आश्रमकी सुशोभा भयो हर्षित भूप । ब्रह्मलोक समान शोहत भरो तेजस रूप ॥ पढतहैं द्विज बेद चारो बरक्रमे पदयुक्त । यज्ञ नानाभाति ब्राह्मण करतहैं अति मुक्त ॥ सकल शास्त्र विचार बेत्ता करत मत सिद्धान्त । लसत मुनि गण तहाँ बैठे ठौर ठौरहि दान्त ॥ देखिकै मुनि बृन्दकौं दुष्वन्त भूप अनूप । ब्रह्मलोक सुप्राप्त जानो परम अपनो रूप ॥ कन्व काश्यपके सु आश्रममे गयो क्षितिपाल । जास चहुँदिश लसत मुनिगण मुकुतकी मनु माल ॥ फेरि सचिव पुरोहितहि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तजि गयो एक नरेश। तहां देखो कन्वमुनि नहि शून्य आश्रमदेश॥ कहो भूपति इहां कोऊ वचन आ०प०
ऊच गम्भीर।सुनत आई निकसि कन्या श्री समान शरीर॥ क्षीर निधिसो परम आश्रम रूख अमल
अमन्द। निकसि आई तहांते सुशकून्तला जिमि चन्द्र॥ तापसीको बेश धारें कियो नृप सनमान।
पूछि कुशल सु प्रश्न पूजा कियो अति सुखदान ॥ कहो सह मुसकानि आए कौनकारण भूप।
कहऊ सो हम करहि भूपति काज सो अनुरूप॥ महा मुनिको चाहि दरशन आगमन यहि हेत।
कहो तासों देखि ताकों भरे आनद चेत ॥ गएह कहँ महा मुनिबर कहऊ सुन्दरि तौंन ।
शकुन्तलोबाच ॥ * ॥ गए हैं फलहेतु बनकों पिता मम सुनि जौंन ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ *
रहो द्वैघटि आय जैंहै सु मुनि अत्र अनूप। तपस तेजस भरी यौबन कहो अैसें भूप ॥ कौन हो तुम
कौनकी हो रूप अैसो धारि।करति आश्रम वास मुनिगण मध्यहे सुकुमारि ॥ देखतहि तोहि अहे
शुभगे भयो चित्त मम चिन्त। तुमहि जानो चहतहौं सो कहऊ सकल निमित्त॥ भूपके सु शकुन्तला
तब सुनत अैसे बैन। कहन लागीं पूर्व सब वृत्तान्त विहसि सचैंन ॥ कन्वकी हम सुता हैं दुष्यन्त
जानऊ भूप। परमज्ञानी धर्म्मवेत्ता महातपके रूप ॥ * ॥ दुष्यन्तोबाच ॥ * ॥ ऊर्ध्वरेता महा
मुनिकौं कहत जगत प्रसिद्धि।भई तुम केहिभांति ताके कहऊ कन्या वृद्धि। * ॥ शकुन्तलाबाच॥
यथा मेरो भयो सम्भव तथा सुनिए भूप॥ भई जैसें महा मुनिकी धर्म्म कन्यारूप। कन्व ऋषिसा
आय अैसेहि एक मुनि मतिसान। कहो ऋषि जो कहो सो हम सुनो सकल विधान ॥ *👄*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कन्वउवाच ॥ * ॥ कौशिक मुनिको तप अतिमान।देखि डरे मनमे सुरत्राण॥ महातेज तपको
बलपाय। मोहिन पदतें देई गिराय॥ कहो मेनकासों इमि बैंन। सुरपति भयसों भरे अचैंन ॥
तुम अप्सरन मध्य छबिधाम। करऊ मेनका मम यह काम ॥ होय हमारे अति उपकार।
कौशिकको तप भङ्ग उदार ॥ जैसें होय करऊ तुम जाय। अहो मेनका मम सुखदाय॥सुरपतिके
सुनि बचन उदार। कहो मेनका सहित विचार॥ भरे महातप क्रोध अमान। तेजस पुञ्जसदृश
शिखिमान॥ जास समुझि तप क्रोधविधान। तुमऊ डरत रहत सुरत्राण ॥ हम जैहैं कैसें ता
पास। औसि करैगो मेरो नाश॥ मुनि वशिष्टके पुत्र अनेक। जेहि मारे नहि छोडे एक ॥ जन्मि
क्षत्रकुल भो द्विजवर्ण। सृष्टि दूसरी लाग्यो कर्ण॥ तपबलतें जेहिं नदी अमान। करी कौशिकी
पुण्य महान ॥ कौशिक गे तप करण विशाल। परो कछूदिनमे अति काल॥ ऋषि मतङ्ग ताको
परिवार। पालन करो जीवगण सार॥ भए व्याससम ऋषि मातङ्ग। कौशिक आय कुशल लखि
सङ्ग॥ तुम सह तासों यज्ञ कराय। आपु सोम तँह पियो डराय॥ गो त्रिशङ्कु, करि गुरु अपराध।
दयो शरण ताकौं निरबाध॥अैसे जाके कर्म्म महान। सो न दहै कहि कौंन सुरत्राण॥ सृष्टिनाश

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० कारण समरथ्य। बिश्वामित्र प्रताप अकथ्य ॥ हमसो नारि जितेंद्री ताहि। कौन भांतिसा परसत चाहि ॥जासौं डरत रहत सुर सर्ब्ब ।ताहि जीतिहैं का हम खर्ब्ब ॥तुव शासन शिर राखि सुरेश। औसि जाइ हैं हम तेहि देश ॥ रक्षा मो चिन्तऊ सुरनाथ। फिरि हौं मै तित ताके साथ ॥ क्रीडा करत तत्र छलछाय । वायु उडाय देय पठआय ॥ महा कार्यमे मदन सहाय । करै छपा करिकै सुखदाय ॥ सुरपति शासन लहिकै पैांन। वहन त्रिविधि लागेा तहँ तैांन ॥ सहित बसन्त मदन तँह आय। खडेा भयेा शर धनुष चढाय ॥ गई मेनका तँह छविधाम । करि कौशिककौं प्रथम प्रणाम ॥ भीरुभई क्रीडा बिस्तार। करिलागी तँह करण बिहार ॥ पवन दियेा पट तास उडाय। बिहँसि समेटन लगी लजाय ॥ तोरति फूल भुजा न उठाय । उरज उतग निविड दरशाय ॥ करि कटाच्छ मुनिकी दिशि चाहि। नीबी सिथिल रहत गहि ताहि॥ करि चख चपल बिलोकनि तत्र। बैठे लखत महामुनि यत्र ॥ अकथित भरी रूप गुण बास। औसेा रचेा चरित अभिराम ॥ देखि भरेा मुनिके हिय भाव । मारेा मदन बान लखि दाव ॥ लई बोलाइ ताहि मुनि पास ॥ गई मेनका करि मृदुहास ॥ करण लगे दोउ सुरति बिहार। बऊत काल गेा बीति उदार ॥ एक दिवससम जानेा तैांन। रमे मेनकाके सँग जान ॥ सुमुनि मेनकामे अभिराम । जनमाई कन्या गुणधाम ॥ हिमगिरि निकट परम शुचिदेश । नदी मालिनी तीर सुबेश॥ छोडि मेनका सुता लखाम। गई कार्य्य करि सुरपतिधाम ॥ लखि निर्जनमे कन्या आय। बैठे घेरि शकुन सुखदाय ॥ क्रव्यादनसौं ताहि बचाय ॥ लियेा शकुन्त कुन्तसौं छाय ॥ हम सन्ध्या करिवेके हेत। गए नदी तट बिधिबस चेत ॥ तब शकुन्तन मधि हम चाहि। ल्याय दियेा कन्यापद याहि ॥ ❋ ❋ ❋

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥

जन्मसु दाता प्राणत्राता देइ अन्नकौं जौंन।धर्म्मशास्त्र यह कहतहैं पिता तीनि ह तैांन ॥

॥ ❋ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ❋ ॥

भे शकुन्त बनमे रखवारे। तौ शकुन्तला नाम बिचारे ॥ मुनिबर कही कथा हम जैसें। भई शकुन्तला कन्या तैसें ॥ कन्यहि भूप जनक हम मानैं। हम स्वपिताकौं हैं नहि जान ॥ ॥ ❋ ॥ शकुन्तलोवाच ॥ ❋ ॥ सुनेा जन्म अपनेा हम जैसें । तुमसौं कहेा भूप सब तैसें ॥ हमै कन्वकी कन्या जानेा। हे नरपति कछु और न मानेा ॥ ❋ ॥ दुष्यन्तउवाच ॥ ❋ ॥ प्रगट राज पुत्री तुम बामा। भार्य्या मम छजै गुणधामा ॥ नानारत्न बसन बरनीके । भूषण दिव्य हार सुठी श्रीके ॥ तुमकौं देत और जो भाखेा। राज्य सकल अपनेा करि राखेा ॥ व्याह श्रेष्ठ गान्धर्व सेा जानेा। सेा तब सग करत हम मानेा ॥ ❋ ॥ शकुन्तलोवाच॥ ❋ ॥ फल आनन गेा पिता हम तेरेा। घरी एकमँह आवन हारेा ॥ तुहै मोहि देहै सेा जानेा। तबसौं करऊ क्षमा यह मानेा ॥ ❋ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ दुष्यन्तउवाच ॥ * ॥ तुम्हे भजो हों चाहत प्यारी । है त्वदर्थ थिति इहा हमारी ॥ बन्धु आपनो आ
आत्मा जानो । आपनि गति आत्मा अनुमानो ॥ आत्मदान आत्मानँ नीकौं । तातँ करऊ धर्म श्रुति श्रीकौं ॥ अष्ट विवाह धर्मविद कहे । ब्राह्म्य देव आर्ष अरु अहे ॥ प्राजापत्य असुर गान्धर्वो । राक्षस अरु पैशाच अखर्वो ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चारि आदिके विप्रकौं षट क्षत्रिय हि ललाम । आसुर वैश्यशूद्रकँह जानो फलद अभिराम ॥
राक्षस अरु गान्धर्व है क्षत्रिनकौं सुखदान । आसुर अरु पैशाच ए करिवे जोग्य न जान ॥ सालङ्कार दान कन्याको ब्राह्म्य कहत हैं जौंन । यज्ञ दक्षिणामे कन्याको दान देव है तौंन ॥ तुम दोऊ मिलिकै सब धर्म हि को ज्यो इमि कहि आम । दीबो जो कन्याको सो है प्राजापत्य ललाम ॥
लै है गाय देत जो कन्या तौन आर्ष अभिराम । एचारों विवाह विहित है विप्रणकों गुणधाम ॥
बऊत लेइ धन देइ फिरि कन्या आसुर साँच सुन प्रमत्तनकी कन्याका हरिवो सो पैशाच ॥ मारि बन्धु रोवत कन्या हरि करै सो राक्षस ऊढ क्षत्रिनको यह योग्य है और करै सो मूढ ॥ है सुकाम बस कन्यका लहि एकान्त सह धर्म पाणि गहै गान्धर्व सो ईश्वर साक्षी पर्म ॥ हम सकाम तुमपै भए हमपैं तुमऊ सकाम । करि गान्धर्व विवाह मो भार्य्या हो अभिराम ॥ * ॥ शकुन्तलोवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

धर्मको पथ कहो यह मम आतमा प्रभू जौंन । दानमे जो सुनो भूपति कहति हैं मै तान ॥ होय गो मम पुत्र जो जुबराज सोई होय । देऊ जौं यह बचन साचो भूप धर्म समोय ॥ करऊ संगम सुनऊ मम पति भए तुम गुणऐन । वैसंपायनउवाच ॥ एवमस्तु सु कह्यो तासों पायकै नृप चैन ॥ गहो पाणि शकुन्तलाको करो संगम भूप । कहो दै विश्वास ऐसैं बचन आनद रूप ॥ होत हामै बिदा तुमसों सुनऊ प्यारी बैन ॥ आनिवेकौं भेजि हौं मै तुम्हैं सिबिका सैन ॥ आइयो तुम भरी आनद धामकौं अभिराम । चले कहि यह भूप मुनि को धरें श्रद्धा नाम ॥ होय घटिका गएँ आए कन्व आश्रम भौन । लाजबस सु शकुन्तला नहि कियो आगे गौंन ॥ दिव्यदृगसों जानि बोले कन्व सब वृतान्त । अनादृत्य जो मोहि कीन्हो पुरुषसंग नितान्त ॥ धर्म्मघातक नहीं नृपकौं ऊढ जो गान्धर्व । करैं होय सकाम दोऊ रहसमाहि अखर्व ॥ धर्माधर दुष्यन्त भूपति परम उत्तम बंश । शकुन्तला तूं बरी ताकौं लह्यो सुपति प्रसंश ॥ होय गो अति महाबल तो पुत्र परम प्रशंस्य । भूमि सागर मेघ लासो करै गो सब वश्य ॥ शकुन्तला तब आय मुनिके धोय बिधिवत पाय । लियो मुनिको भार फलको धरो शुचि सुखदाय ॥ * ॥ शकुन्तलोवाच ॥ * ॥ तात हा दुष्यन्तनृपकौं बरो जानि सुधर्म ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० करऊ सहित अमात्य ताप छपा मुनिबर पर्म्म ॥ * ॥ कन्वउवाच ॥ * ॥ भयो हौ सुप्रश्न ताप जानि तो भत्तार । लेऊ वर अब मांगि इच्छित होय जौंन उदार ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ हौं हि पौरववंशमे धर्मिष्ट अच्युतभूप । लयो यह वर मांगि वरदुष्वन्त हित अनुरूप ॥ तीनि हायन पूर्ण धास्यो गर्भ परम उदार । भयो पुत्र शकुन्तलाके भरो तेजसभार ॥ जन्म कर्म्म सु कियो सिगरो कन्वमुनि अभिराम । वर्धमान विचारि बालक महा बलको धाम ॥ दन्त शुक्ल सकान्ति जाके सिंह सम वरकाय । शंख चक्र गदाङ्क कर वर मस्य रेखा पाय ॥ मद्दतमूर्द्धा देवसुतसम बढो तहँ बलवान । भयो सो षटवर्षको मुनि कन्वके सुस्थान ॥ सिंहव्याघ्र वराह महिषा गजनकौं गहि लेत । बांधि आश्रम वृक्षसौं सो तिन्है बलबश देत ॥ करत तिनकौं दमन चढिकै तौन बालक बीर । धरो ताको नाम मुनिगण सर्वदमन गंभीर ॥ देखि कै पुरुषार्थ ताको महा ओजस तौन । जानि कै बर कुवरको जुवराज समय सु जौंन ॥ कह्यो शिष्यन बोलि कै इमि कन्वमुनिबर धीर । सु शकुन्तलाकौं जाऊ लै पतिधाम सहसुत बीर ॥ बऊत रहिबो बन्धुजनमे योग्य नारिनकौंन । सुनत सहित शकुन्तला तिन कियो तितकौं गौंन ॥ गए हास्तिन नगरकौं दुष्वन्त नृपके द्वार । द्वारपालन कही नृपसौं तास आगम बार ॥ बोलि भूपति पूजि तिनकौं सुनो आगम सुच । बिदा व्है ते गए छोडि शकुन्तलै सह पुत्र ॥ * ॥ शकुन्तलोवाच ॥ * ॥ पुत्र भूपति राबरो युवराज कीजै याहि । भयो तुम तैं मोहिमे सुरसदृश लीजै चाहि ॥ दियो हो वर जौंन भूपति औसि कीजै तौंन । यदा संगम भयो मोसो कियो हो पन जौंन ॥ समुझि ए जे कन्व ऋषिके कहे आश्रम माह । बैन सो प्रति पालिए अब सुनऊ हो नरनाह ॥ सुनो भूपति समुझि मनमे क्षणक रहि कै मौन । कहो आई कहा त है दुष्टतापसि कौंन ॥ पूर्व मम तव भयो संगम कह तिहो तुम जौंन । जाऊ भावै रहऊ बैठि हो न समुझत तान ॥ सुनत अैसैं बचन नृपके भई निश्चल रूप । कोपतैं भे चपल रदछद अक्षि अरुण अनूप ॥ दहन चाहति मनऊ तिरछैं लखति भूपति ओर । परम सौम्य शकुन्तला सो क्रोध प्रेरित घोर ॥ करें तपको तेज धारण कहे नृपसो बैंन । जानि कै इमि कहत हौ यह उचित तुमकौं है न ॥ सत्य और असत्य जानत सकल आत्मा जौंन । करत जौंन असत्य ताकौं महापातक तौंन ॥ एक हमहीं रहे जानत नही जो हृदयस्थ । कर्म्म साक्षी जीवजनको सकल पथ्य अपथ्य ॥ सुनऊ भूपति कर्म साक्षी रहत ईश्वर पाश । सूर्य्य शशि अरु अनिलअनलौ भूमि रूप अकाश ॥ अखिल अह निशि धर्म साक्षी गुणे अरु यमराज । करत नर जो कर्म तैसो देत फल महराज ॥ स्वयं आई इहामै पतिधर्म धारे धीर । योग्य आदरको निरादर करण योग्य न बीर ॥ ग्राम्य जनलौं सभासदमे करत सो अपमान । करति हौं कारुण्य रोदन सुनऊ भूप सुजान ॥ जौंन मांग्यो बचन तुमसौं करऊ गे नहि सोय । जाय गो फटि शीस तुम्हरो फूटि शतधा होय ॥ पति करि प्रवेश सुभार्यामे लेत निज फिरिजौंन ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुनऊ जाया कहत यात बेदबेत्ता तान ॥ होत है पतिआतमासो पुत्र अति अभिराम । करत आ
संतति तौन तारत पितर सिगरे आम॥पुन्नामनरक महानतें जो पितर तारत सर्व॥पुत्र याते कहत ह
वेदज्ञ सुमति अखर्व ॥ सो भार्या गृहकार्यदक्षा पुत्रवती है तौन। सो भार्या पति प्राण जाको पति
व्रतरत जौन ॥ अर्द्धतन पतिको सुपत्नी सखा अति अभिराम । त्रिवर्गको है मूल भार्या मोददायक
नाम॥बिना भार्या यज्ञ कर्म्म न होतहै न गृहस्थ। होत भार्यावंत श्रीयुत जानु भूपति तस्थ ॥ सखा
होति एकांतमे पतिकी प्रियंवद बाम।धर्म कृतिमे पिताको सम मातदुःखमे आम॥होति है बिश्राम
दाता दुर्गपथमे तौंन । बिना भार्या पुरुषको बिश्वास मानत कौंन ॥ प्रेतपथमे होति साथिनि एक
पति जब जात।लेति गति पति पाय पत्नी प्रथम जास निपात॥करत पाणि गृहण यातें पुरुष जे मति
मान । भार्या पति पाय साधत दोऊदिशि सुखदान॥पुरुष आत्मा आपु जनमत पुत्रको धरि रूप
पुत्रमाता सदृश माता होति यातें भूप ॥ पुत्रभार्या जनित देखत करत यों आनन्द । मुकुरमे प्रति
बिंब अपनो देखि सदृश अमन्द॥आधिसों अरु व्याधिसों पीडितहि यों सुखदान।होति भार्या धर्म
तापितकों यथा जलपान ॥ क्रोधगृहमे करत नर नहि भार्या अपमान । धर्मरति अरुप्रीति तामे
देखिकै अतिमान ॥ धूरिधूसर देखि सुतकों पिता हियसों लाय । लहत है आनन्द इतनो तौन
बरनि न जाय ॥ भरो सुत अभिलास आयो आपुसों तब पास । करत हौ अपमान हेरि कटाक्षसा
तन तास।धरति अंडन करति भेद पिपीलिका अतिअज्ञ।भरऊगे का नही आत्मज भूप तुम सर्वज्ञ॥
अस्वर्ग बामा बसन जलको तथा सुखद न होत।पिता पावत लाय हियसों यथा आत्मज पोत ॥
जातकृतिमे पुत्रमस्तक घ्राण जानत तौंन । बेदमे यह मत्र लिपिहै कहत बेत्ता जौंन ॥ * ॥
॥ मंत्र ॥ अंगादंगात्सम्भवसि हृदयादभिजायसे । आत्मावै पुत्रनामासि स जीव शरदां शतं ॥
॥ * ॥ जीवितन्त्वदधीन मे सन्तानमपिचात्तयं । तस्मात्त्वं जीव मे पुत्र सुसुखी सरदां शतं ॥ * ॥
पुरुषत यह पुरुष भो तव अंगतें नृप अन्य । यथा निर्मल सलिलमे प्रतिबिम्ब सदृश अनन्य ॥ आह
वनीयमे जिमि अग्नि गार्हपत्यतें धरि देत । तथा तुमतें भयो सुत यह द्विधारूप समेत ॥ मृग
मारण हेत धाए गए तुम नरनाह । तहां पाई मोहि कन्या पिता आश्रम माह ॥ सब अप्सरनमे
मेनका जो ब्रह्मयोनि अनूप । आय क्षितिपर पाय कौशिक मोहि जाई भूप ॥ गर्द तजि हिम
वानके ढिग यथा असती नारि । पूर्व जन्मज कर्म्मपातक परत नहि निरधारि ॥ बाल्यपनमे पिता
माता तजी तुम अब भूप । जाउंगी मै आश्रमहि नहि तजऊ पुत्र अनूप ॥ * ॥ दुष्यन्तउवाच ॥ * ॥
सकुन्तला कब भयो तुमकौं पुत्र जानत हौं न । कहैं नारी बैन मिथ्या तिन्हैं मानत कौंन ॥ बन्धकी
है मेनका तेहि कर्म ऐसो कीन । जनमि तोकौं छोडि गिरिढिग गई दयाहीन ॥ महानिर्दय
पिता तुम्हरो चव योनि सकुट । तौन बिश्वामित्र चाहत होन ब्राह्मण लुट ॥ श्रेष्ठ तुम्हरे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० पितर दोऊ रूप गुण तपश्चैन । भई तिनतें कहति हौ तुम पुंश्चलीलौं वैन ॥ सुनत योग्य न बचन तुम्हरे रहित लज्जा जौंन । कहति मो ढिग दुष्ट तापसि कुरु जथेच्छित गौंन ॥ कहां कौशिक मुनि मुकुट कन्हं मेनका गुणधाम । कहा तुम अति कृपिणि धारैं बेष तपस्विनि बाम ॥ पुत्र है अति काय तुम्हरो महाबलमय गात । भयो थोरे योसमे किमि कहति ऊूठी बात ॥ भई योनि निकृष्टतें तुम पुंश्चली इब बैन । कहति जाई मेनका सु जदृछया बस मैन ॥ कहति तू जो है परोक्ष न विदित हमको तौंन । हौंन जानत तुम्हें कीजै यथा इछा गौंन ॥ * ॥ शकन्तलोवाच ॥ * ॥ सर्षप मात्र दोष औरनको लखत तुम भूप । चाहि चाहत नही अपनो दोष बिल्व सरूप ॥ मेनका है देवगणमे विदग्ध अनु हैं जास । उच्च तुम्हरे जन्म ते हैं जन्म मो तो पास ॥ अटत हौ तुम भूमिमे हौं गगणगामी भूप । बीच हमसौं और तुमसौं मेरु सर्षप रूप ॥ सत्य है यह बात मेरो कहो तुमसो जौंन । तुमहि जनाइवेकौं क्षमा कीजो तौंन ॥ बदन जबलौं आदरसमे लखत है न कुरूप । कहत तबलौं आपकौं वह रूपवान अनूप ॥ मुकुरमे जब लखत है मुख चित्त दै अनुमानि । परत अपनो औरको तब रूप अन्तरजानि ॥ रूप मानन करत कबहू औरको अपमान । बकत हैं दुर्वचन तेई नीच सुनहू सुजान ॥ सुनत मूरख नीकि नागा जल्पकनकी शीख । गहत ह ते दोषको इमि ज्यौं बराह पुरीष ॥ सुनत हैं बर प्राज्ञ वक्तनके शुभा शुभ वैन । गहत गुणवत बाक हंस सुछीर पीवत पैन ॥ कहि कठोर सु अन्य सौं कछु साधु अनुपहितात । कहि असाधु कठोर तैसैं होत पुलकित गात ॥ साधु पावत मोदज्यौं कहि बडे न प्रति मृदु वैन । साधुसौं दुर्वचन कहि त्यौं लेत दुर्जन चैन ॥ दोष जानत नही ते जन लहत मोद महान । दोष दर्शी मूर्ख ते जग कहत आपु समान ॥ कहा है अतिहास्य यातैं सुनहू जगमे और । कहत दुर्जन मनुज दुर्जन सुजनकौं चिति मौंर ॥ धर्म चुततैं डरत नास्तिक कहा आस्तिक बात । यथा देखि सक्रोध पन्नग कहहू कौन डरात ॥ आपु करि उतपन्न पुत्र सदृश छोडत जौंन । हनत देवत तास श्री परलोक लहत न तौंन ॥ पुत्रहै कुल वंश थापक कहत पितर सुजान । धर्ममे सब पुत्र उत्तम सोन त्याग समान ॥ पत्नी प्रभव लब्ध वर क्रय क्षतपालक चौथो तौंन । पञ्चम अन्य क्षेत्र भव जानो पुत्र कहे मनु जौंन ॥ कीर्ति धर्म वह होत ए है पुत्र सुखद सुजान । पिट बूडत नर्कनिधिमे होत ध्रुव सुख दान ॥ पुत्र त्याग न करऊ भूपति सत्यधर्म बिचारि । दीजि ऐ नरसिंह मनते कपट कुछित डारि ॥ शौं कूपते बरबावलो शतबावलीतें यज्ञ । शतयज्ञ तें बर पुत्र शततें सत्य है बरतज्ञ ॥ अश्वमेध सहस्र सत्य सु तुला पर धरि देऊ । सत्य गरु ओ होय गो यह जानि भूपति लेऊ ॥ सर्व वेदाध्ययन अरु सब तीर्थनको स्नान । होय गो नहि सुनऊ भूपति सत्य वचन समान ॥ सत्य सम नहि धर्म है कछु कहत सकल सुजान । झूठ तें नहि पाप कोऊ अधिक वेदति प्रमान ॥ भूप सत्य सु रूप ब्रह्म सु सत्य पनको त्याग ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

करऊ मति मम संग तुमसौं सत्य है वरभाग ॥ अनृत सौं है प्रीति तव नहि रुचत जा मो बैन। आपुही आ
तौ मै न करि हौ संग तव बलअैन ॥ भूप तुम्हारे अन्त मेरो पुत्र यह बलवान। सिन्धुलौं चहूँ ओर
पृथिवी पालि है सुखदान॥ *॥बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ शकुन्तला कहि भूपसों यों चली जब दुख
छाय। गगन वाणी भई तब दुष्यन्त प्रति सुखदाय॥ ऋत्विक पुरोहित सहित मंत्री सुनी भूपति तान।
गर्भकी है पात्र माता पिता है सुत जैान ॥ पुत्र पालु शकुन्तलाको करऊ आदर भूप। रेतभव सुत
यमपुरीतैं देत गति शुचि रूप॥ सत्य कहति शकुन्तला नृप गर्भ तो अभिराम। अंग दुसरो पिताको
सुत जनति जाया आम ॥ धारु तातैं पुत्रकों सु शकुन्तलाभव भूप। छोडि जीवत सुतहि जियवो सौ
अभाग्य अनूप ॥ शकुन्तला दुष्यन्त सम्भव पुत्र यह बलवान। भरऊ भूपति मानि तात दिव्य वचन
प्रमान॥ भरत तातैं नाम राखऊ पुत्रको अभिराम। भरण तुम सौं कहो यातैं अहो भूप ललाम॥
गगनबाणी सुनत यह नृप भरो मोद ललाम। बोलि मंत्रीसौं सु अैसैं कह्यो अति अभिराम॥ * ॥

॥ * ॥ जयकारछन्द ॥ * ॥

देव दूतके सुने सु बैन। कहे गगन गत आनद अैन ॥ आत्मज सत्य लियो हम जानि। कियो
न ग्रहन लोकभय मानि ॥ अब यह सुद्ध बिचारहि सर्व। नतरु करत शङ्का जन खर्व॥ * ॥
बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ गगन गिराते सुद्ध बिचारि। नृप लिए पुत्र अङ्कभँह धारि ॥ जन्म कर्म
ताको सब भूप। कियो मोद भरि कै अनुरूप॥ भूप कियो सुत मूर्द्धा घ्रान। बन्दिन पढे सुजश
सुखदान॥ पुत्र स्पर्श मोद नृप पाय। शकुन्तला आदर सुखछाय॥ कियो भूप कहि मीठे बैन। भो
परोक्ष तव संगम चैन॥ यातैं तव सुध्यार्थ बिचारि। लोक भीति हियमे निरधारि॥ कहे जे अनू
चित वचन अकाम। तौन क्षमा कीजे गुणधाम॥ महिषी प्रिया जानिकै भूप। भूषन बसन दिए
अनुरूप ॥ भूप भरत सुतकौं जुबराज। तब कीन्हो सह सचिव समाज ॥ भरत राज्य शासनकौं
करत। सकल प्रजा आनदसौं भरत ॥ जीति करे सिगरे वस भूप। चारो धर्म नीति अनुरूप॥
मण्डलेश भो भूप महान। किए यज्ञ वज्र सम मघवान ॥ करवायो मख कन्वमुनीश। विपुल
दक्षिणा दियो क्षितीश॥ भरत वंशमे भए नरेश। देव सदृश जे बिपुल बिसेश॥ ब्रह्म सदृश भे वज्र
तपधाम। तिनके कहैं कहालौं नाम॥ तिनमे भए मुख्य जे भूप। तिनको कहत नाम गुणरूप॥
कारक बंश भए अभिराम। तिनको बर्नण करत ललाम ॥ *

स्वस्तिश्रीकाश्मीराजमहाजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघु
नाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि शकुन्तलोपाख्यान
समाप्तमेकत्रिंशोऽध्यायः ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरिकन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ वैसंपायनउवाच ॥ * ॥ भए प्रजापति दच्छ ललाम । बैवस्वतमनु तेजसधाम ॥ कुरु पुरु भरत भए यदुभूप। अरु अजमीढ धर्मको रूप ॥इनको बंश पुन्यको धाम। सो हम कहत भूप अभिराम ॥ दश प्राचेतस पुत्र अथर्ब। मुखअग्नि बन जारे खब ॥ भे प्राचेतस दशत दच्छ। जेहितें भई प्रजा अति स्वच्छ ॥दच्छ बीरणी भार्या मांह। करे अनेक पुत्र नरनाह ॥ तिनकौं योग पढायो नार्दा। ते नहि भए सु सृष्टि बिशार ॥ तब पञ्चाशत कन्या दच्छ। जनमाई अतिगुणमय स्वच्छ॥ दई धमका दशतिय तौंन। कश्यप सही त्रयोदश जौंन॥ सत्ताइश दिय शशिकौं दच्छ। जे नक्षत्र रूप हैं स्वच्छ॥ अदिति त्रयोदश मे जो ज्येष्ट। तातें तेजसमय अतिश्रेष्ट ॥ इन्द्रादि बिबस्वत भए उदार। बिबस्वत सुत मनु यम सुकुमार ॥ मनुतें मानव भए सपूत। ब्राह्मण क्षत्री वर्ण प्रसिद्ध ॥ ब्राह्मण क्षत्री भे एकसंग। ब्राह्मण पढे बेद बेदांग ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बेणु धृष्णु नरिष्यंत अरु इक्षाकु भूप नाभाग। कारूषो सर्याति अरु जो पृषध्र जुतराग ॥
औ अरिष्ट ए नव भए मनुके क्षत्री भूप। इला सुता दशमी भइ करता बंश अनूप ॥
प्रञ्चाशत मनुके भए और सुनो सुत जौंन। भए बैर अन्योन्य तैं नष्ट सबै सुनु तौंन ॥
भो पुरुरबा इलासुत सकल भूमिको भूप। नामन ताके जनकको सुनो न देखो रूप ॥
पुरुरबा उनमत्त व्है करि बिप्रन सौं बैर। हरि लीन्हो धन रहे पुकारत ते सब करिकै घैर ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सनतकुमार महामुनि आए। देखि अनीति कोपसौं छाए ॥ करो न आदर भूपति ताको। दयो शाप ऋषि अनल प्रभाको ॥ नष्ट प्राय शाप लहि भयो। पुरुरवा नृप बल मदमयो ॥ गन्धर्व लोकतैं गिरि ले आये। त्रिधा बिहित बर यज्ञ रचाये ॥ पाय उर्बसीका सो राजो। तामे लहि षटपुत्र सुभ्राजो ॥ आयुधीमान अमावसु भयो। दृढायु बनायु सतायु सुभयो ॥ नऊष वृद्ध सर्मा रजि भए। रयसु अनेनस आयुसुत भए ॥ स्वर्भानु बीतैं ए सुत भए। पांच परम गुणगनसौं भए ॥ आयुष पुत्र नऊष अवनीको।पालन कियो राज्य शुचि श्रीको॥चारोबर्ण नऊष नृप पाले।शत्रु समूह समरमे घाले ॥ नऊष ऋषिनसौं करबर लीन्हों। तिनकी पृष्ट भार धरि दीन्हों ॥ इन्द्रत्व सुकरि मख बऊ लीन्हो। देवन काढि स्वर्गतैं दीन्हों ॥ अति तेजसमय षट सुत लहे। यति ययाति संयाति सु कहे ॥ आयाति अयति ध्रुव बलसौं भारे । ए षट पुत्र नऊष अवतारे ॥ यति करि योग ब्रह्म मुनि भए। भए ययाति भूप गुणमए॥ धर्मनीतिसौं प्रिथिबी पाले। करि मख देव अर्चि खलघाले॥ ताके पुत्रधर्मधर भए। दुहूँ भार्यनमे गुणमए ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ आ०

देवजानीके भए यदु और तुर्वसु आम। द्रुह्यु अनु पुरु सर्मिष्ठको भे तमय अभिराम ॥ बऊत समत राज कीन्हो जब महीप ययाति। जरा आई घोररूपा हरणि यौबन कान्ति॥ जरा कम्पित भूप पुचन सा कहै इमि बैन। युवा है युवतीनके सङ्ग बिहरि चाहत चैन॥ करऊ पुत्र सहाय अपनो देऊ यौबन मोहि। जरासह यह राज सिगरो देत हौं हम तोहि॥ देवजानी पुत्र जेठे कहो यदु लखि रूप। कहा योवनसौं हमारे काज करिहो भूप॥ कहो भूप ययाति हे सुत जरा मेरी लेऊ। बिषयकौं हौं भोग करिबे चहत यौवन देऊ॥ करो मै मख काल बऊ तब दियो उशनस शाप। काम आतुर होऊ यातें दहत मदन सताप॥ जरा मेरी लेइ कोउ करै तुम मे राज। युवा ह्वै कै रमै हम लहि युवा युवतीसमाज॥ यदुहि आदि न कियो काहूँ जराको स्वीकार। भूपसौं तब कहो पुरु इमि जो कनिष्ट कुमार॥ भूप चरिए तरुणि गणमे लेऊ यौबन देत। जरा सह तव राजको बर भार हौं धरिलेत॥ सुनत अैसैं राज ऋषि नृप तेज तपको धारि। दई पुरुकौं देहत तब जरा आपु निकारि॥ पुचयौबन लेइ भूपति भयो तरुण समान। दई ह्वै पुरु करन लागे राज्य अति मतिमान॥ बर्ष एक हजार भूपति रमे भार्यन सङ्ग। बिषय तृप्ति न लही तबहूँ भरे काम तरंग॥ लैं संग बिस्वाची अप्सरा चैत्ररथमे जाय। लह्यो नहि सन्तोष तब हूँ काम कौतुकछाय॥ तब ययाति बिचार कीन्हौं सुनल्ह अैसैं भूप। तृप्ति होति न बिषैकी करि काम भोग अनूप॥ होत है सुहबिष्य प्राएँ यथा पावक बृद्ध। तथा घटति न बिषय इच्छा पाय भोग समृद्ध॥ लही समता चित्तमे यह करि बिचार बिवेक। करैं कबहू पाय नहि जब जीव जनमे नेक॥ कर्म्म मनसा बचनतैं तब शुद्ध होय अनूप। लहत हैं परब्रह्म पदकौं परम पावन रूप॥ आपु काहूत डर नहि डरै आपुहि कोय। राग द्वेष बिसारिकै तब ब्रह्म प्राप्ति सु होय॥ भोग्य बस्तु समस्त अैसैं तुच्छ मनमे हेरि। लई भूप ययाति पुरुसौं जरा आपनि फेरि॥ भूप यौवन देइ पुरुकौं राज्यको अभिषेक। दई कै फिरि कहो अैसैं बचन सहित बिवेक॥ पुत्रबत हम भए तुमतैं बंशकर तुम होय। बंश पौरव कहैं गे तो प्रजाकौं सबकोय॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ राज्यमे अभिषेक करि पुरुपुत्रको अभिराम। भृगु तुग थलमे जाय कै तप करण लागे माम॥ करिसु अनशन महाव्रत कछुघोस बीतैं भूप। गए सुरपुर सहित पतिन पाय आनद रूप॥ जनमेजयउचाच। * ॥ प्रजापतितैं जौन दशम ययाति भूपति आम। भए जाके बंशकर पुरुपुत्र परम ललाम॥ लही कैसैं शुक्रकन्या जौंन परम अलभ्य। सुनो चाहत सहित बिस्तर कहऊ सो मुनि सभ्य॥ ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ ययातिकौं जेहि भाति दीन्हो शुक्र कन्या पर्म्म। कहत हौ सो सुनऊ भूपति सकल बृत्त सधर्म्म॥ सुरासुरसौं बैर बाढो हेतु त्रिभुवन राज। गुरु शुक्रको जय हेत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० कीन्हो बरण दुऊन समाज॥भे पुरोहित दोऊ दुऊँ दिशि महा स्पर्धामान। देव भारत दैत्य तिनका करत शुक्र सप्रान॥ असुर ते फिरि लरत रनमे सुरनसों अतिकाय। असुर मारत सुरनका गुरु सकतते न जियाय॥ शुक्रके सञ्जीबनी हो परमबिद्या पास। सो न है गुरु पास यातें लहो सुरगण त्रास॥ गए सुर तब सभय कच पैं जेष्ट गुरसुत जान। भजत हैं हम तुम्हे यातें करऊ हम हित गौन॥ जाऊ उशनस पास तापैं जौन बिद्या पर्म। तौन जैसें मिलै तैसें रचऊ तेहा कर्म॥ दैत्य है बिषपर्ब ताके रहत उशनस पास। जायबेके योग्य तुमहो करऊ मति कछु त्रास॥ बाल वय तुम सकऊगे करि तास सेवा सर्व। देवजानि सुता पर मुनि करत प्रीति अखर्ब॥ तास सेवन बनी तुमसो पाय बैश समान। देवजानी कृपातें गुण मिलैं गो सुखदान॥ तथास्तु कहि कच गए तेहां परम मतिके धाम। पुरीमे बिषपर्बकी जहँ शुक्रमुनि अभिराम॥ देखि मुनिकौं दण्डवत करि कहो अपनो नाम। अंगिरसके पौत्र हैं हम जीवके सुत आम॥ शिष्य मोकौं करऊ हे मुनि कृपा सिन्धु महान। परमगुरु तव निकट करिहौं ब्रह्मचर्य्य बिधान॥ अब्द एक सहस्र भजि तव चरण चारु सरोज। लहौं गो तब कृपातें तब पुण्य फलको ओज॥ * ॥ शुक्रउबाच॥ * ॥भयो कच तो शुभद आगम गहो हम तब बैन॥पूज्य हो तुम करत पूजन रहऊ इत सह चैन॥बैशम्पायनउबाच॥ कहि तथास्तु सुप्रात उठि कच गहो बरब्रत सुद्ध। पाय आज्ञा शुक्रमुनिकी ब्रह्मचर्य अरुद्ध॥ करत सेवा देवयानी शुक्रकी अभिराम। भयो यौवन दृश्य तिनको परमरूप ललाम॥ गाय नृत्य सुबाद्य करि किय देवयानिहि तुष्ट। पुष्प फलदेकियो ताकौं कृपा पूरण पुष्ट॥ देवयानी संग क्रीडति रहसमैं कच संग। वर्ष बीते पांचसो कच करत ब्रत सुअभंग॥ जानि सुरगुरु पुत्रकचकौं दानवन अनुमानि। हरण बिद्या हेतु आयो महा द्वेषी जानि॥ पाय गोधन संग कचकौं एक बनमे मारि। अंग सिगरे खंड करि दइ उदरमे दिय डारि॥ गाय आई सकल घरकों बिना कच अभिराम। देवयानी कहो मुनिसों देखि संध्या आम॥ अग्नि जत नहि भई अबही भानु अथवन जात। गाय आई बिपिनितें कच बिना सुनिए तात॥ मरो कचकै हनो काहूँ परत अैसो सूझि। बिनाकच मो मरण निहचै तात लीजै बूझि॥ * ॥ शुक्रउबाच॥ * ॥ आहूत ह्वै है प्रगट कच लहि परम बिद्या जोर। कहो मुनि हे देवयानी करऊ खेद न घोर॥संजीवनी पढि परम बिद्या कियो मुनि आव्हान। फारि कै वृकपेट गो मुनिपास कच सुखदान॥कहो सबबृतान्त कच तँह कियो दनुजन जौंन। सह सुता मुनिकी परम सेबा करण लागो तौंन॥ फूल लीवे फेरि पठयोदे बयानो ताहि। कछुक दिनमे ताहि चीन्हो दनुज दुर्मति ताहि॥ मारि पीसि समुद्रमे तिन दियो घोरि बहाय। देव जानी बार लखि फिरि कहो मुनिसौं आय॥ फेरि मुनि आव्हान कीन्हो पढि सुबिद्या कांत। निकसि जलतें आइ कच सो कहो सब बृत्तान्त॥ बार तिसरी मारि कचकौं जारि कै करि चूर्ण।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुरासंग पिवाय दीन्हो शुक्रकौं अतिपूर्ण ॥ देवजानी आय मुनिसों कहो फिरि भय भेखि । फूल आनन गयो कच चिर भयो परत न देखि ॥ हतो असुरन्हकै मरो कच परत ऐसो जानि । विना कच है मरण मेरो तात नियमिति मानि ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ देवजानो सुनो यमपुर गयो सो कच विप्र । मंत्र बल सो ज्याइ ऐ तौ मरण मेरो क्षिप्र ॥ करऊ शोच न रुदन तनु धरि मरत है नहि कौन । मंत्र बलसा ज्याइ ऐ तौ मोहि मारत तौन ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ अंगिरसहैं पितामह अरु जीव जाको तात । शोच रोदन करौं कौं नहिं होत ऋषि कुलघात ॥ ब्रह्म चारी तपोधन शुचि कर्म दक्ष उदार । जाउँगो तेहि लोक हो जेहि लोक कच सुकुमार ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ देवजानी कियो पीडित जानिके मुनि बार । कियो कच आव्हान मनमे सुमुनि शुक्र उदार ॥ असुर मेरो द्वेष करि सो शिष्य मारत जौन । बिना ब्राह्मण जगत की वे कर्म नाधो नाव ॥ अन्त इनको होय गो यहि कर्मते अति मान । कियो कचको मृत्यु मुख ते बोलि यह आव्हान ॥ गुरु मृत्यु भय ते मंत्र फूल सु कहे कच इमि बैन । तव उदरमे हौं महा मुनि कढनको पथ है न ॥ स्मृति हमारी है यथा स्थिति तव कृपाके जोर । जानि कै गुरु घात अतिहीं सहत हौं दुख घोर ॥ कहो सब वृतान्त पूरब असुर कीन्हो जौन । असुर माया भङ्ग कारण कृपा तो मुनि तौन ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ कौनसो प्रिय करौं तुम्हरो देवजानी अद्य । मरण मेरो सु कच जीवन होय गो सह सद्य ॥ कुक्षि भेदन ते हमारो मरण ह्वै है जौन । है हमारे उदरमे कच कढै गो किमि तौन ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ दोऊ विधि शोकाग्नि हमकौं दहनकौं अतिमान । नाश कचको मरण तुम्हरो सुनऊ तात सुजान ॥ भए प्राप्त स्वरूप कच मम सुता के प्रिय प्राण । लेऊ विद्या जीवनी जौं इन्द्र ह न सुजान ॥ कढत है कों फेरि जीवत उदरमे सो आय । बिना ब्राह्मण लेऊ विद्या परम कच सुख दाय ॥ पुत्र भाव विचारि अपनो मोहि जनक समान । कढत मेरो देह तँ लहि महत विद्या दान ॥ हम जियावत पुत्र तुमको तुम जिवाएऊ मोहि । दगा पीकैं को जियो मति पाप ह्वै है तोहि ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच पाय विद्या गुरूसौं कच उदर ताको फारि । कढे बाहेर शर दशशि मनु जलद पटल विदारि ॥ देखि कच मुनि परे क्षितिपर ब्रह्म राशि समान । पाय विद्या ज्याय मुनि सो कहे वचन प्रमान ॥ देइ सञ्जिवनी विद्या हमै सुमुनि समान ॥ सोइ माता पिता मम हम तास अनुचर जान । वेद दाता गुरूको नाहँ करत आदर जौन । पाय विद्या शिष्यसो हैं नर्कगामी तौन ॥ वैसम्पायनउवाच सुरा मोहित भए वञ्चित ज्ञान मय मुनि भूप । देखि कचकौं सुरा पर इमि क्रोध करि अति रूप ॥ शाप दीन्हो विप्र करि हैं सुराको जो पान । धर्मच्युत सो पाप लहि हैं ब्रह्म घात समान ॥ जगत निन्दित होय लहि ह नर्कको सो वास । वचन मेरे सत्य ए मर्याद मम अविनास ॥ दानवनको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

० बोल्लि ऐसे कहे मुनिवर बैन । सुनौ हौ तुम सकल बालक सुमति तुमका है न ॥ सञ्जिवनी लहि परमबिद्या बसत कच मम पास। मत्सदृश परम प्रभाव जाके भरो ब्रह्म प्रकास ॥ एहि भांति तिन सौं बचन कहिकै कियो मुनि बिश्राम । भरे बिस्मय दनुज सिगरे गए अपने धाम ॥ बर्ष दश शत पास मुनिके बास करि अभिराम। पाय आज्ञा शुक्रकी कच चलन चाहो धाम ॥वैसम्पायनउवाच चलत कचसौं देवजानी कहे ऐसे बैन। अंगिरसके पौत्र सुनि तप तेज बिद्या ऐन ॥ ***

॥ * ॥ गीतीछन्द ॥ * ॥

ऋषि मान्य जैसे अंगिरा मम पिताकौं अभिराम।त्यों मान्य हमकौं बृहस्पति हैं सुनऊ तपके धाम॥ यह जानि मानऊ कहति हैंमै सुनऊ सो चक बैन। ब्रत मे तुम्हे लखि कियो सेवन यथा हम दै चैन॥ तुम पाइ बिद्या परम मोकौं भजऊ हे अभिराम।मम करऊ पाणिग्रहण बिधिवत मंत्र पुर्बक आम॥ ॥ *॥ कचउबाच ॥ * ॥ मम पूज्य जैसे पिता तव तुम पूज्य तैसैं मोहि। देवजानी बचन यह नहि योग्य कहिबे तोहि ॥* ॥ देवजानी उबाच॥ * ॥तुम बृहस्पति के पुत्र हौ नहिं काव्यके सुतआम। हौ पूज्य यात मान्य हमका सुनऊ कच अभिराम ॥ हने असुरन्ह तुम्हे सुनि हम कियो करतब जान। सौहार्दत अनुरागतैं कच समुझिऐ तो तौंन॥ नहि त्याग मेरो करऊ तुम धर्मज्ञ हौ बिनु पाप। ॥ * ॥ कचउबाच ॥ * ॥नहिकाज करिबे योग्यहै सो करन कहिबत आप ॥ तुम भई जातैं सुनऊ ताके उदरमे करि बास । हम भए याते देवजानी सखा हौ छबिरास ॥ तुम धर्म तत्व बिचारिकै मति कहौ ऐसे बैन। हम रहे सुखसौं निकट तव लहि कृपा आनद ऐन॥ अब जात तुमसौं पूंछिकै पथ कुशलकौं कहि देऊ । सो स्वर्ण करियो धर्मपथसौं समय सहित सनेऊ ॥ देवजानी उबाच ॥ हमधर्म अरु कामार्थ जाचति तुम न मानत तौन। नहि फलै बिद्या तुम्हे कच सो लई मुनिसा जौंन॥ ॥ * कचउबाच ॥ * ॥ गुरु पुत्रिकाहम जानि नाही करत देइ न दोष । नहि गुरू आज्ञा करी दीन्हो शाप तुम करि रोष ॥ बिनु धर्म जाने शाप दीन्हो सुनऊ उत्तर तौंन। ऋषि तनै तुमका मिलैगो नहि पाणिग्राहक जान ॥ नहि फलैगी यह तुम्हे बिद्या शाप तौन तथास्तु। हम जाहि देहैं ताहि फलिहै सुनऊ बिद्याबास्तु ॥* ॥ वैसम्पायन उबाच॥ *॥ कहि देवजानी सा चले कच गए अपने धाम। कच आगमन सुनि सहित सुरगण इन्द्र लहि मुद माम ॥ भजि बृहस्पतिकौं गए कचपैं प्रीतिपावन काय ॥ * । देवाउचुः ॥ * ॥ तुम कियो मम हित कर्म सो अतिचित्र बरणि न जाय ॥ ॥ * ॥ वैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ कच परम बिद्या लही यातैं भए सुर सुख रूप। पढि तौन सिगरे अमर गण भे मरण निर्भय भूप ॥ सब जायकै सुरनाथसा इमि कहन लागे बैन। अब भो समय तो पराक्रम को हनऊ असुर सचैन ॥ सुनि सुरनसौं सह चले सुरपति बिपिनिमे अभिराम। सरमाह क्रीडति लखी युवती भरी रूप ललाम ॥ तब बायु व्है कै बसन सबके दिये उडाय मिलाय।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ले निकसि जलत लगी पहिरण तीर सहसा आय।पट देवजानीको सर्मिष्ठा पहिरि लीन्हो जान। अ
नहि जानि लोन्हे मिले सिगरे भरेरंगन तौंन॥ तब भो परस्पर कलह तिनसों भरी अति मदमाज।
गुरुसुता यह वह दैत्यपतिकी कन्यका बलवान॥ * ॥ देवजानी उवाच॥ * ॥ शिष्यकन्या
आसुरी आचारहीन अपूत। पट पहिरि लीन्हो आइ मेरी नहीं हेरो धूत॥ * ॥ शर्मिष्ठोवाच *॥
तव पिता मेरे पिता की निति करत सुस्तुति आय। लहि भीख ज्यावत तुम्हे सो मो
पितासों बसुपाय॥ हे भिक्षुकी हौं सुता ताकी प्रतियही तो तात। तुम रोय लोटऊ
शीश कूटऊ करऊ किन अपघात॥ मो सदृश है नहि भिक्षुकी तूं कहा तेरी बात। हम सहो
अबला कहो तुम जो मानि गुरुको नात॥ पट गहैं हीं लखि देवजानी चोन्हि रुठसा छाय। गहि
ताहि दिय बिषपर्व कन्यै कूपमे डरवाय॥ मृत जानि सर्मिष्ठा सुघरकौं गई यह करि पाप। तहँ
गए आय ययाति भूपति तृषाको लहि दाप॥मृग मारिवेके लोभ लागे आन्त व्है अतिभूप।तृणलता
छादित बिना जलको जाय देखो कूप॥ तहँ देखि भूपति परम कन्या दीप द्योति समान। तब भूप
पूछो कौन हौ तुम रूपमय सुखदान॥ हे कूपमे तुम गिरी कैसे कहऊ कारण जौंन। सुनि भूप
बचन सुदेवजानी कहन लागी तौंन॥ * ॥ देवजानी उवाच॥* ॥ देव मारत दैत्य तिनका करत
जो सह प्रान। हम तौन उसना सुसुनि की हैं कन्यका सुखदान॥यह ताम्र नखको पाणि दक्षिण
देति ह हम तोहि। गहि करऊ बाहर कूपके तुम भए सम्मत मोहि॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच * ॥
नृप जानि ताको ब्राह्मणी गहि लियो दक्षिणपानि। किय कूप बाहिर भूप ताका रूपकैसी खानि।
तब भूप तासा बिदा व्है कै गए अपने धाम। तहँ रही बैठी देवजानी रोष पूरितमाम॥ जब गए
भूप ययाति आई देवजानी पास। घूर्णिका नामा सुदासी भरी शोक प्रयास॥ * ॥ देवजानी
उवाच॥ * ॥ यह बेगि दासी जायकै कहि पिता पास निदेश। यहि नगरमे बिषपर्वके हौं करागी
न प्रवेश॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच॥ * ॥ सो त्वरित तेहां जाय दासी शुक्रमुनिके पास। सो कहो
सब बृत्तान्त तासों भरी शोक उदास॥यह कहो है मुनि देवजानी परी बनके माह। बिषपर्व कन्यै
हनो ताकौं सुनऊ हे मुनिनाह॥यह सुनत आतुर चले मुनि गे देवजानी पास। लखि ताहि उरसा
लाय अैसैं कहो मुनि तपरास॥ जन लहत अपने दोषतैं सुख दुःख तौन महान। तुम कियो कछु
अपराध ताको लहो फल अतिमान॥ * ॥ देवजानीउवाच॥ * ॥ बिषपर्वकन्यै कही है सो
सुनसु हे मुनि बात। मो पिताको हैं द्विज प्रशंसक सदा तेरो तात॥हे भिक्षुकी तो बाप भिक्षुक प्रति
ग्राहक बिप्र। बिषपर्वकन्यै कहो अैसे मोहि प्रति अति क्षिप्र॥ करि क्रोध पूरण दर्प अैसे भरी
अति उतपात। हम कहा कन्या रावरो तुम कहा अैसे तात॥ * ॥ शुक्रउवाच॥ * ॥ हम हैं न
अैसे सुनऊ जाकी सुता हो तुम पर्स। बिषपर्व जानत मोहि जानत नऊष सुत युत धर्म॥ बल अचिंत्य

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० अद्वन्द्व ईश्वर महत सो अभिराम । है हे समस्त सो वसु दीसति भूमि मे नभधाम ॥ हम तासु ईश्वर नित्यह यह है स्वयम्भुववैन । जलवृष्टि हमहीं करतह चित चाहि जगजन चैन ॥ हम औषधिनको पोषिकै निति भरत गुणगण सब । यह देवजानी सत्य जानऊ कहत बचन अखर्व ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ मुनि बचन मधुर सुनीति कहि किय देवजानिहि शान्त । जो रही ही अति भई पीडित हाय क्रोध महान्त ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ जे सहत हैं परवादकौं तिन जगत जीता जानि । उत पतित क्रोध तुरङ्गसे जे गहतहै मतिमानि ॥ हैं तेई यन्ता सदृश नर लहि नीति रज्जु सनेत । जे क्षमा जलसौं क्रोध पावक कौं शमन कार देत ॥ हे देवजानी जानि ते सब जीति जगतहि लेत । जे करत मख शतबरषलौं प्रति मास हरष समेत ॥ ते क्षमावानहि तुलत नहिं यह कहत ह मतिमान । है लरत बालक धीर धरि करि क्रोध अतुल अयान ॥ अनुसरत हैं नहि तिन्है तिनके पिता माता तज्ञ । है क्रोधसा नहि पाप दूजो क्षमासौं नहि यज्ञ ॥ ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ हमहोय बाला धर्म्म और अधर्म्म अन्तर जौंन । अरु क्षमा क्रोध बलाबलौ सब नात जानति तौंन ॥ जब शिष्य गहत अशिष्यता तब सहत हैं न सुजान । मम वास रोचत हैं नहीं सङ्कीर्ण बृत्ति बिधाम ॥ अति बचनतें अभि जननको हैं करत निन्दा जान । ओचहत ते नहि बसत तिनमे पाप पुरहै तौंन ॥ जौंन अपनेका सुजानै बृत्तको सुप्रकास । तिन साधु जनके निकट रहिवो होत उत्तम बास ॥ बिषपर्ब जाके बचन दुःसह मथत हृदय अमान । अति अग्नि कामी यथा अरणी दारुकौं बलवान ॥ निति भजत शत्रु समृद्धिकौं हैं जन अकिञ्चन जौंन । सुनु मरेहूतें अधिक ते ह तात बरमति भौंन ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ तब क्रोध करि ऋषिगए हो बिष पर्ब जँह बर भूप । इमि कहन लागे बचन तासौं भए उग्र स्वरूप ॥ नहि चरित फलत अधर्म्मको ततकाल गो सम जौंन । अघकियो असहत बऊत दिनमै मूल काटत तौंन ॥ वह पुत्र पौत्रहि देत फल जौं नहीं देखत आपु । सो मिटतहै नहि कैसेहूँ हत पापको सन्तापु ॥ तुम हनो कचकौं अङ्गिरस को पौत्र द्विज तप धाम । नहि योग्य बधके शिष्य मेरो भक्त अति अभिराम ॥ किरि देवजानी सुताको तुम कियो अति अपमान । बिषपर्ब तुम्हरे बंशको हम करत त्याग महान नहि रहगे तो देशमे मो बचन जानत सांच । तुम करत अपने दोषकी नहि शान्ति मानत लांच ॥ ॥ * ॥ बिषपर्बोवाच ॥ * ॥ हे धर्म्म सत्य समूह मोपर कृपाकीजे नाथ । सबभांतिसा दिति बंश कोहै कुशल तुम्हरें हाथ ॥ तुम जाऊ गे तजि हमै तौ हम जाय सिन्धु समात । है न हमकौं शरण अन्यत छोडि तुमकौं तात ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ हे देवजानी को न अप्रिय सहो हमसौं जात । तुम करऊ ताहि प्रसन्न जातें मिटै सब उतपात ॥ * ॥ बिषपर्बोवाच ॥ * ॥ असुरेंद्रकी जो ऋद्धि सिगरी आप ईश्वर तास ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ तो ऋद्धिके हम सत्य ईश्वर सहित बंश बिलास ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कुरु देवजानीकौं प्रसन्न सु दैत्यकुल अवतंश ॥ * ॥ बैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ गे देवजानीके आ०प०
निकट बिषपब सुमुनि प्रसंश ॥ सब कहो मुनि बिषपबके बर बचन परम प्रमान ॥ * ॥ देवजानी उबाच ॥ सुनि देवजानी कहो मो सौं कहैं नृपति सुजान ॥ * ॥ बिषपर्बोबाच ॥ * ॥ तुम देवजानी कहऊ सो हम करहिं सत्य न आन ॥ * ॥ देवजानीउबाच ॥ * ॥ तो सुता कन्या सहस महँ मम होय दासीमान ॥ अनुजाय मेरे पिता मेरो जहां मोका देय ॥ * ॥ बिषपर्बोबाच ॥ बिषपर्ब धात्री तास पठई जाय आवऊ लेय ॥ * ॥ बैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ सो जाय धात्री भूप तनया सौं कहे इमि बैन । उठि चलऊ हे शर्मिष्ठ चाहति वंश को जौं चैन ॥ शुक्र छोडत दितिज कुलकौं देवजानी हेत । जो देवजानी कहै सो चलि करऊ सखिन समेत ॥ * ॥ शर्मिष्ठो बाच ॥ * ॥ जो देवजानी कहैगी हम करैंगीं सो सर्व । नहि शुक्र जांहि न देवजानी दाष लहि मोरर्ष ॥ * बैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ तब सहस कन्या सहित आई चढी शिबिका तौंन । लहि परम शासन पिताको तेहि कियो पुरतें गौंन ॥ * ॥ शर्मिष्टोबाच ॥ * ॥ दै सहस कन्या सहित तो परिचारिका अभिराम । अनु चलहिंगी जब जाऊगी तुम परममतिके धाम ॥ ॥ * ॥ देवजानीउबाच ॥ * ॥ हम भिक्षु को प्रतिग्रही कन्या मो प्रसंशक तात । तुम हो प्रसंशित भूपकन्या कहति हो का बात ॥ * शर्मिष्टोबाच ॥ * ॥ अब होय जैसें ज्ञाति रक्षण तथा हमको कार्य अनु चलैंगीं तँह जहां तुमकौं पितादेहै आर्य ॥ सुनिकै प्रतिज्ञां तासकी इमि दास भावप्रमान। तब देवजानी पितासौं इमि कहे बचन सुजान ॥ * ॥ देवजानी उबाच ॥ * ॥ हे सत्य तो बिज्ञान विद्या महाबल तपधाम ॥ बैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ कहि देवजानी यौं सु पूजित गई स्वपुर ललाम ॥ कछु दोश बीते देवजानी गई क्रीडा हेत । बर बिपिनि तेही असुर तनया सङ्ग सखिन समेत ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सहस सखी सगँ लएँ सुजान । शर्मिष्ठा सेवति सुखदान ॥ तहां जाय बिहरति अभिराम । क्रीडा करति यथा मन काम ॥ पियति माधवी मधु सुखदान । भोजन करे अनेक बिधान ॥ तँह ययाति नृप मृगया हेत । आए भरे त्रिषासौं चेत ॥ लखो देवजानिहि अभिराम । शर्मिष्ठा सेवति छबि धाम ॥ शुक्र सुता बैठी लखि भूप । शर्मिष्ठा सेवति अनुरूप ॥ दै सहस्र कन्या चऊँ पास । बैठी मध्य दोय छबि रास ॥ भूप जाय ढिग बोले बैन । को तुम कहा नाम छबि अैन ॥ * ॥ देवजानीउबाच ॥ * ॥ शुक्रसुता हमहैं सुनु भूप । यह मो सखी अनुग अनु रूप ॥ बिषपर्बादनुजेन्द्रकुमारि । अनुचर है यह सखी हमारि ॥ * ॥ ययातिरुबाच ॥ * ॥ किमि तव भई अनु चरीबाम । दैत्यराजकन्या अभिराम ॥ * ॥ देवजानीउबाच ॥ * ॥ होत सोई बिधि बिरचित जौंन । कथा बिचित्र कहै सब कौंन ॥ रूप बेष तो भूप समान । ब्राह्मी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० बचन कहत सुख दान ॥ कहा नाम तुम काके पुत्र । आए कहाँ बसत तुम कुत्र ॥ यजातिरुवाच ॥ ब्रह्म चर्य मे बेदाध्ययन । किये समस्त सुनो छबि अयन ॥ नऊषपुत्र हम भूप यजाति । सोम बंश जगमे बिख्याति ॥ * ॥ देवजानी उबाच ॥ * ॥ कौन हेत इत आए भूप । सो कहिए बिधिवत शुभ रूप ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ मृगयासक्त सलिल के हेत । इत आए हम रूप निकेत ॥ सुन्दरि करिए आज्ञा जौन । उचित होय सो करिए तौन ॥ देवजानी उबाच ॥ * ॥ द्वै हजार कन्या सह नाथ । शरमिष्ठा दासी मो साथ ॥ तो अधीन हम भई उदार । होऊ सखा मेरे भर्तार ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ उसनसबिप्रसुता अभिराम । हम तो भर्ता योग्य न बाम ॥ * ॥ देवजानीउबाच ॥ * ॥ ब्राह्मण क्षत्री समभव सङ्ग । भयो सुनऊ बर बिधिके अङ्ग ॥ तुम राजर्षि नऊषसुत भूप । हौ ऋषिपुत्र समान अनूप ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ एक देह भव चारो बर्ण । बिप्रा चार बिप्र अनुसर्ण ॥ * ॥ देवजानी उबाच ॥ * ॥ पाणिग्रहण को धर्म अनूप । प्रथम गहै सो भता भूप ॥ प्रथम गहो तुम मेरो पानि । तब हम तुम्हे कियो पति मानि ॥ ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ क्रुद्धसर्प पावक तें उद्ध । हैं दुर्धर्ष बिप्रबर दृढ ॥ देवजानी उवाच ॥ सर्प अग्नि तें द्विज दुर्धर्ष । कहऊ भूप बिधिवत उत कर्ष ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ दहत सर्प शिखि तें है एक । बिप्रक्रोध तें दहत अनेक ॥ यातें देहु पिता तव तोहि । तब तुम बरऊ अवश्यक मोहि ॥ * ॥ देवजानी उबाच ॥ * ॥ तूतो मागत है नहि मोहि । मै हौं बरती हौं नृप तोहि ॥ अदत्त बरऊ तुम मोहि नरेश । पिता दानकौं करु न अँदेश ॥ * ॥ बैसम्पायनउबाच धात्रीसौं सब कहि सु निदेश । पठयो पिता पास सन्देश ॥ शुक्र पास सो जाय सचैन । कहे देव जानीके बैन ॥ सुनत शुक्र यह बचन अनूप । देखो आय भूपको रूप ॥ देखत भूप शुक्र तप धाम प्रणत चरण बन्दे अभिराम ॥ * ॥ देवजानी उबाच ॥ * ॥ राजा नऊषपुत्र यह तात । गहि कर मोचो कूप निपात ॥ मोहि देऊ इनकौं सनमानि । और गहै गो को मो पानि ॥ * ॥ शुक्रउबाच ॥ बरो सुता मम तुम्हे नरेश । देत तोहि महिषी उद्देश ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ अधर्म मोहि न जाते होय । बर्णसङ्करज करु मुनि सोय ॥ * ॥ शुक्रउबाच ॥ * ॥ तो अधर्म हम मो चब भूप । मागऊ बर इच्छा अनुरूप ॥ बरि मम सुता शुभा अति पर्म । लहऊ प्रीति अति भूप सधर्म ॥ यह कुमारि शर्मिष्ठा जौन । कन्या बिषपर्वा की तौन ॥ याको भरण करेऊ अनु रूप । सुनऊ तौन संगम बिनु भूप ॥ * ॥ बैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ मुनि प्रदक्षिणा करि नरनाह । शास्त्ररीति सो कियो बिबाह ॥ पाय देवजानी बर बाम । लहो शुक्र सौं धन अतिमाम ॥ द्वै सहस्र कन्या अति रूप । शर्मिष्ठा सह पायो भूप ॥ पूजो शुक्र सहित दनुजेन्द्र । गए बिदा ह्वै कै मनुजेन्द्र ॥ गए यजाति स्वपुर अभिराम । सहित देवजानी छबिधाम ॥ सुदेवजानी को मत पाय । बन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अशोक ढिग धाम बनाय ॥ शर्मिष्ठा को राखो भूप । तहँ भरि सौख यथा अनुरूप ॥ दासी सहस आ०प०
सहित अभिराम । शर्मिष्ठा तेहि निवसति धाम ॥ सहित देवजानी सुख रूप । करत विहार
देव सम भूप ॥ बजत दिवस बीते ऋतु पाय । गर्भ देवजानी सुखदाय ॥ धरो गर्भ दशमास उदार ।
प्रथम परम भो दिव्य कुमार ॥ वर्ष सहस जब गयो विहाय । शर्मिष्ठा यौवन ऋतु पाय ॥ चिन्ता
आतुर भई सकाम । बिना लहे पति सधरम बाम ॥ कहा भयो का करौं विचारि । यह दृढ किर्यो
हिए निर धारि ॥ शुक्र सुतैं जैसैं पति ताहि । वरो तौन विधि हौंहू वाहि ॥ भूपपुत्र फल देहै मोहि ।
निहचै परति चित्त मो जोहि ॥ जौं एकान्त मे नृप इत आय । विधि बस मो गोचर ह्वै जाय ॥
विधि बस तहँ कढि आयो भूप । शर्मिष्ठहि तहँ लखो अनूप ॥ बनी अशोक पास अभिराम । बैठी
सुरति मनो विनु काम ॥ अन्य रहित तँह बैठे भूप । लखि शर्मिष्ठा समय अनूप ॥ साञ्जलि गई भूप
के पास । बोली बचन भरी मृदु हास ॥ * ॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ * ॥ बिप्र सोम सुरपति तव धाम ।
बसति जो बास परम अभिराम ॥ अन्य पुरुषको देखै ताहि । कहो भूप यह मिति मत चाहि ॥ रूप
शील कुल जानत भूप । याते मागति हौं अनुरूप ॥ कृपा सहित रति दीजै मोहि । भर्ता और न मो
तजि तोहि ॥ हौं जानत तो शील स्वरूप । नख शिखलौं कृचि भरी अनूप ॥ उसना कहो व्याह मे
जौन । सुनो सुखस्मिति जानत तौन ॥ *

॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

क्रीडामे बनिता निकट व्याह प्राण भय पाय । धनाहरण मे होति है मिथ्या अति सुखदाय ॥
बूझ साक्षी कहत हैं अनृत जानिकै जौन । परत नरकमे जाय सो मिथ्या पतित सो तौन ॥

॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥

राजा शीलक प्रजनको बिनसत मिथ्या बोलि । कष्टहूमे मिथ्या नही कहै सत्यत डोलि ॥

॥ * ॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ * ॥

यो है सम मत सखी पति होत सो पति सम तौन । सखी व्याह सौं व्याह सम वरै अखीपति तान ॥

॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

अब हमारो जौन मागत देत ताकौं तौन । याचतोहौ हमैं तुम सो कहहू इच्छा जान ॥ शर्मिष्ठो
बाच ॥ पाप तें मोकौं बचावो राखि स्वधरम भूप । पाय तुम तें प्रजा जगमैं करौं धर्म्म अनूप । तीनि हैं ए
अधन भूपति पुत्र भार्या दास । सुनो इन तीनोनको धन तास हैं ए जास ॥ देवजानी प्रिया तो हम भई
दासी तास । और पति मो होय गोको भजऊ आनद रास ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ भूप बोलि तथास्तु ता
सा ताहि अति सनमानि । भरे आनद दनुज जाको गहो कर सौं पानि ॥ करि समागम दुऊनसौं दोउ
उलहैं अतिशय मोद । दुऊँन पूजे दुऊनकौं मन मान पाय विनोद ॥ गए दोऊ धाम अपने काम को

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पा०प० तुकछाय।लहोशमिष्टाजु तासौं गर्भसङ्गम पाय॥कालपाय सुभ जो ताके पुत्र अति अभिराम।देवजानी शोचकरि सुनि गई ताके धाम ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ कहन लागी बचन अैस भरी शोच सन्ताप। काम लालच लागि सुन्दरि कियो का यह पाप॥ शर्मिष्टोबाच ॥ अतिथि आयो एक दिन ऋषि महा तपको धाम। दयो वर यह भयो तातें पुत्र अति अभिराम ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ भयो अैसें बऊत नीको पुत्र तुमकौं बाम । चहति जानो तौंन मुनिको कहऊ गोत्र सुनाम ॥ * ॥ शर्मिष्टोबाच ॥ * ॥ भरोहो तप तेजसौं मुनि ययाग्रीषम भानु। नाम गोत्र न बूझि ताको सकी तात मानु ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ भयो असो जौन है तौ कछू मेरे रोष। पुत्र पाई परम मुनिसा भई तुम निर्दोष ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ अन्योन्य अैसें कहि सु दोऊ बिहसि कै अभिराम॥ देवजानी भरी आनद गई अपने धाम ॥ देवजानी के भए सुत दोय अति सुखदान । जेष्ठ यदु सु कनिष्ठ तुर्बसु परम देव समान ॥ भए शर्मिष्टातनय त्रय द्रूह्य अनु पुरुबीर । भरे आनदसा बिलोकि ययाति भूप गम्भीर ॥ कछू दिनपर देवजानी अरु ययाति नरेश । गए बनकौं भरे आनद जहां निर्जन देश ॥ लखे खेलत तहां जाय कुमार चारु सुरूप । भरी बिस्मय देवजानी रही चाहि अनूप ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ कहौ काके कुवर हैं ए भूप अति सुखदान । तेज तें अरु रूपतें ए लगत आपु समान ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ भूपसौं तब पूंछिकै इमि देवजानी बन। लगी बूझन बालकन सौं करैं चित्त अचैंन ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ कहा नाम सु वंश तुम्हरो पिता माता कौंन। कहऊ तुम सब सत्य हमसौं सुनो चाहति तौंन ॥ बालकन तब अङ्गुलीसौं दियो भूप बताय। अरु कह्यो शर्मिष्ठा हमारी जननिहै सुखदाय ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ एहि भांति कहि कै सकल बालक गए भूपति पास। भूप आदर कियो नहि लहि देवजानीत्रास ॥ गए शर्मिष्ठानिकटते करत रोदन बाल । सुनत बालक बचन ब्रीडित भए तब छितिपाल ॥ बालकन को भूप पैं इमि देखि प्रेम ललाम । देवजानी कही तेहां कुटिल बाणी आम ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ होयकै आधीन मेरो कियो अप्रिय पर्म । आसुरीत डरी नेकुन करत आसुर कर्म ॥ * ॥ शर्मिष्टोवाच ॥ * ॥ जान ऋषि हम कहो तुमसौं तौंन सत्य न आंन । डरी यातें नही कीन्हौं न्याय धर्म समान ॥ बरो तुम जब परम भर्त्ता बरो हम तब तौंन। होत भर्त्ता सखी भर्त्ता सुनऊ सुन्दरि जान ॥ पूज्य मम तुम ब्रह्मकन्या पूज्य तुमकौं भूप। भयो तुमतें पूज्य हमको भूमिपाल अनूप ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुने अैसे बचन ताके देव जानी क्रुद्ध। कहो हम इत रहैंगी नहि कियो अप्रिय उद्ध ॥ चली सहसा शुक्रपैं करि सजल राते नैन। भूप ताके चले अनु नहि कह मानति बैन ॥ गई आतुर शुक्रके ढिग प्रणत परसे पाय । भरे खेद ययाति भूपौ तहां पऊंचे जाय ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ धर्मकौं जु अधर्म जीतो भो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व्यतिक्रम सर्व। अधिक मोतैं असुरकन्या भई सुनि अथर्व ॥ तीनि जाए पुत्र तासे नृप ययाति आ०८०
उदार। भए मम दुर्भाग्यनोकैं तात देाय कुमार॥ धर्मातमा विख्यात हैं यह नऊषनन्दन जान
करो है उल्लङ्घ तुम मर्य्याद बाधी तौंन ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ धर्मज्ञ व्है कै कियो तुम सु
अधर्म अप्रिय भूप । जरा धर्षित तुम्हे करि है अचिर आयु कुरूप ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥
आइ मांगो सुनऊ ऋतुवर विहित धर्म्म विचारि । दियो यातैं जानि उचित अनन्यगति निर
धारि ॥ देइ नहि ऋतुदान मागैं पुरुष करि अपमान । होत है सो भ्रूणहा यह कहत विदुष
प्रमाण ॥ काम आतुरगम्य तिय ऋतुदान मागै आय। देत न हि सो भ्रूणहा नर विहित धर्म
नशाय ॥ जानि कै यह धर्म कारण सुनऊँ मुनिवर तौंन । पापभयतैं कियो हम विषयबजाको
गौंन ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ लई मेरी नही आज्ञा होय मो आधीन । चौर यातैं भयो धर्मा
चारमा हि प्रबीन ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ जरा भूपयजाति पाई पूर्ववय तजि तौंन। उय
उशनस शापसों अतिशीघ्र सुसुचिति रौंन ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ अतृप्त हौं मै देवजा
नीमे सु यौवन पाय । कुरु कृपा मुनि जरा जातैं यसे मोहि न आय ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥
मृषा होत न बचन मम तुम जरा लहि हौ भूप । जरा चाहऊ देऊ ताको लेऊ वैस अनूप ॥
॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ राज्य कीरति पुत्र मेरो लेइगो सुत तौंन । जरा मेरी लेइ यौवन
बयस देहै जौंन ॥ * ॥ शुक्र उवाच ॥ * ॥ देऊ जाकौं चहऊ ताकौं जरा करि मम ध्यान। लेऊ
जाकी वैस ताकौं करऊ नृप सुखदान ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ जरा पाय ययाति भूपति
गए स्वपुर सखेद। ज्येष्ठ तनय बोलाय यदुसौं कियो वचन निबेद ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥
जरा मेरी लेऊ अपनो मोहि यौवन देऊ। विषय तृप्ति न भई मोकौं पुत्र यह सुनि लेऊ ॥ वर्ष एक
सहस्र यौवन सह विषै करि भोग। फेरि यौवन दै तुम्हे हम जरा लैहैं रोग॥ * ॥ यदुरुवाच ॥ * ॥
जरा दोष अनेक भाजन पापपुञ्ज कुरूप। जरा यातैं नही लहैं सुनऊ तुमतैं भूप ॥ पुत्र तुम्हरे बऊत
हमसौं महत प्रियतर और । जरा दैकै लेऊ यौवन तास नृप सिरमौर ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥
पुत्र औरस होय तुम नहि देत यौवन मोहि। बंश होय अराज तुम्हरो कहत हैं हम तोहि ॥ लेऊ
तुर्वसु जरा मेरी मोहि यौवन देऊ । गयो अबही नही मेरो विषयभोग सनेऊ ॥ तुर्वसुरुवाच ॥
कामभोगविनाशिनी बलरूपहरणी जौंन । बुद्धिध्वंसनि जरा भूपति हम न लहैं तौंन ॥
॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ पुत्र औरस होय तुर्वसु कहत ऐसे बैंन। सुनऊ यातैं लहऊ गे तुम प्रजा
नाश अचैंन ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ देइ ऐसैं शाप तुर्वसुकौं ययाति नरेश । द्रुह्य
शर्मिष्ठा तनयसौं कियो फेरि निदेश ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ वर्ण रूपविनाशिनी यह जरा
मेरी लेऊ। द्रुह्य वर्षहजारलौं तुम मोहि यौवन देऊ ॥ गए वर्ष हजार दैहौं फेरि यौवन तोहि ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० जरा पापस्वरूप मेरी फेरि दीजो मोहि ॥ द्रुह्युरुवाच ॥ होत है असमर्थ सबविधि पाय कै नर जौन। भूप ऐसी जरा दारुण लेहि गे न हि तौन ॥ यजातिरुवाच ॥ होय औरसपुत्र यौवन देत हौ न हि मोहि। द्रुह्य यातैं कामनाप्रिय नही मिलि हैं तोहि ॥ यजातिरुवाच । पापमय यह जरा मेरी करऊ अनु स्वीकार॥ देऊ यौवन मोहि अपनो औधि वर्ष हजार॥अनुरुवाच॥ जीर्ण शिरशुव होय भोजन करत नर अपवित्र॥ कर्म्महा नहि जरा लेहौं जास विषम चरित्र॥ *॥ यजातिरुवाच ॥*॥ कहत या अनु नही लेहैं जरा अतिदुखदाय । पुत्र लखि हौ आपने सब मृतक यौवन पाय ॥ अग्नि होत्रादिकनसौं तुम रहित व्है हौ अज्ञपाय मेरे श्राप वारो दाप है अकृतज्ञ॥यजाति रुवाच॥सुनऊ पुरु प्रियपुत्र मेरी जराको तुम लेऊ । हे तु विषमविलास यौवन आपनो मोहि देऊ ॥ लहो उशनसश्राप तृप्त न भयो यौवन पाय । लेऊ मेरो जरारूपी पाप यह दुखदाय ॥ विषयका हा भोग कछुदिन करा तो बल खेय। गए बर्ष सहस लेहौं जरा यौवन देय ॥ *॥ बैसम्पायनउवाच ॥*॥ पिताके सुनि वचन ऐसे पुरू परममतिमान। भूप तुम जो कहत हौ सो करौं गे सुखदान॥ लेउँ गो हौं जरा देहौं तुम्हैं यौवन भूप।तात आपु बिहार कीजै स्वेच्छया अनुरूप ॥*॥यजातिरुवाच॥*॥ देत हौं पुरुपुत्र तुमकौं बचन यह सुखदान। हौंहि गे तो प्रजा राजा सहत सम्मतिमान ॥ कियो उशनस ध्यान ऐसैं बचन कहि कै भूप। दई पुरुका जरा लीन्हौं आपु यौवन रूप ॥ पाय यौवन भूप लागो करण विषय बिलास। भांति नाना यथा इक्षा रमत आनदरास ॥ काम सुख उत साह धर्म हि रक्षिकै अभिराम। विषय भोग यजाति भूपति करत भो बलधाम ॥ यज्ञतैं करि तृप्त देवन्ह श्राद्धतैं भरि पित्र। दानतैं करि तृप्त भिक्षुक मानतैं द्विज मित्र॥ भक्ष्य भोजनतैं सु अतिथिन वैश्यजन गण पालि। सूद्र शासन सहित राखे खलनके गण घालि ॥ प्रजा पालो धर्मसौं करि मनोरञ्जन भूप । यथा पालत जगतको सुरराज बरषि अनूप ॥ नरसिंह भूप यजाति पाले प्रजा धर्म सु नीति। करै नाना भांतिसौं बर विषयभोग सप्रीति॥ तृप्त भोगनसौं भयो अरु भयो चिन्न नरेश। गए बर्ष सहस सगुऊ भूप परम निदेश॥ सहसु विस्वाची अप्सरा जाय नन्दन मांह। भोग कीन्हौं काम कौतुक कलासौं नरनांह॥ जाय अलकापुरीमे चढि मेरुशृंग सुदेश । भोग नाना भांतिसौं करि भयो तृप्त नरेश॥ पूर्णवर्ष सहस्र भो तब पुत्र पुरुपहँ आय। कहो ऐसी भांतिसौं लखि परम आनद पाय॥भोग कीन्हैं भोगकी इमि कामना नहि जाय। हविष डारो जितो तितनो ह्व्य वह सरसाय॥ दुःख जानो दुर्मतिनसौं सदा जीर्ण न होति।तैंन तृष्णारोग छाडैं शान्ति सुमति बनेति ॥ भयो बर्ष सहस्र पूरण पुत्र यौवन लेऊ । जरा मेरी पापरूपिनि ताहि मोकौं देऊ॥ सुनऊ यातैं छोडि याकौं ब्रह्ममाहि ललाम। लई कै वन बसौंगो मृगगणनमे अभिराम॥पुत्र होय प्रसन्न हम तव देत यौवन लेऊ । देत राज्य सहृद तुमही पुत्र सहित सनेऊ ॥ * ॥ बैसम्पायन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

उवाच ॥ * ॥ जरा लीन्हो भूप यौवन लियो पुरु अभिराम । राज्यको अभिषेक पुरुकौं चहा आ०प० भूप ललाम ॥ ब्राह्मणादिक वर्ण आए भूपपैं मतिमान । कहन लागे सकल अैस नीति रीति विधान ॥ शुक्रकन्या पुत्र जेठो छोडि कै यदु ताहि । देत पुरुकौं राज भूपति कौंन नीति निबाहि ॥ ज्येष्टको अतिक्रमण करि नहि लहत राज्य कनिष्ठ । दियो तुमहि जनाय भूपति धर्म पालऊ शिष्ट ॥ * ॥ यजाति रुवाच ॥ * ॥ ब्राह्मणादिक वर्ण सिगरे सुनऊ मेरो बैन । ज्येष्ठसुतकों राज्य यातैं देय हमकौं हैंन ॥ ज्येष्ठयदु नहि कियो मेरे बचनको सनमान । पिता आज्ञा भंग कारक सो न पुत्र समान ॥ यदु और तुर्वसु द्रुह्य अनुसों कियो आज्ञा जैंन । बचन मेरो भंग करि कै कियो नहि इन तैंन ॥ कियो पुरु मो बचन पालन धर्म धारण शिष्ट । जरा मेरी लई पुरु सो राज्यभाक कनिष्ट ॥ शुक्र मोकौं दयो बर तो जरा ले है जैंन । पुत्र सोई राज्यभागी होय मो नृप तैंन ॥ कहऊ तुमहू ब्राह्मणादि सकल वर्ण समाज । उचित है यह देऊ पुरुकौं भूप विधिवत राज ॥ * ॥ प्रजाउवाच ॥ * ॥ पुत्र गुणसम्पन्न माता पिताको हित होय । योग्य है सब खके सो यदपि अवरज सोय ॥ * ॥ वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ पौर जनपद जननके सुनि बचन भूप यजाति । राज्यको अभिषेक पुरुकों कियो नीकी भांति ॥ देइ पुरुका राज्य बनकौं लई दीक्षा भूप । गए तापस द्विजनके सँग धारि तपको रूप ॥ भयो यदुको बंश यादव जवन तुर्वसु बंश । द्रुह्यके भे भोज अनुको बंश म्लेछन संश ॥ भयो पुरुको बंश पौरव परम कीरतिमान । भए जामे भूप तुमसे धर्मसे सुखदान ॥ बसे वनमे जाय भूपति खाय फल अरु कन्द । अग्नि पितर सु देवतनकों तृप्त करि तजि दन्द ॥ अतिथिको आतिथ्य कीन्हो वन्यफलसों भूप । रहे कछु दिन धारिकै नृप शिला वृत्ति अनूप ॥ पूर्णबर्ष सहस्र अैसें रहो भूपति तैंन । रहे बर्ष सु तीस तेंहां पान कै जल सैंन ॥ एक बर्ष सु वायु भक्षण कियो नितिप्रति भूप । पञ्चाग्निमे तप भए करते एक बर्ष अनूप ॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

एक चरणसों ठाढे भूप । रहे मास षट अचल स्वरूप ॥ पुण्य कीर्त्ति करि तप अभिराम । गए स्वर्गकौं तेजसधाम ॥ रहे स्वर्गमे कछुदिन जाय । भूप यजाति मोदसों छाय ॥ कछू कालमे इन्द्र गिराय । दियो स्वर्गतैं कारण पाय ॥ नभतैं गिरि पुहमीपर भूप । आए नहि यह सुनो अनूप ॥ गए यजाति स्वर्गकौं सच्च । फेरि सुनो हम भूपति दच्च ॥ राजा वसुमत अष्टक साथ । प्रतर्दन सु शिविसह नरनाथ ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ कौन कर्म्मसों भूपति फेरि । गए स्वर्गकौं कहऊ निबेरि ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ गए स्वर्ग फिरि भूप यजाति । सुरसह रहत पाय विख्याति ॥ देवलोक अरु ब्रह्म सुलोक । तहां करत सञ्चार अरोक ॥ दीर्घकालसों तेंहां बास ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० सुनो यजाति कियो सुखरास ॥ नृप यजाति वर पुरुष प्रकाश । भए एकदिन सुरपति पास ॥ नृपसों कथा प्रसङ्गहि पाय । पूछत भए शक्र सुरराय ॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ पुरु धरि कै तव जरा उदार । भूप कियो क्षितिपर सञ्चार ॥ फिरि दे राज्य कहो तुम जौन । कहिए भूप सत्य सो तौन ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ गङ्गा यमुना मधि जो देश । ताके पुरु तुम होऊ नरेश ॥ मध्यदेश अरु भूको जौन । तौन ऊ लहौ तुमहि बलभौन ॥ प्राच्यदेश भ्रातन कहँ देऊ । किएँ परस्पर रहेऊ सनेऊ ॥ क्रोधीतें अक्रोधाविष्ट । क्षमावान अक्षमते भिष्ट ॥ पशुतें मानुष ज्यौं मति मान । यथा मूर्खतें विदुष सुजान ॥ क्षमावानसों करत न क्रोध । क्रोधिनसों लहि क्रोध विरोध ॥ क्षमावानको चित्त विकार । करत सो क्रोधिनको संहार ॥ दुःखितकों मति दीजे क्लेश । वचन कठोर न कहि ऊ विशेष ॥ करि अभिचार कर्म्म अरिनाश । यह विचार मति खोजो पास ॥ जौन वचन सुनि जन दुख लेत । तौन वचन नहि कहत सनेत ॥ दुखद कठोर तीक्ष्ण कटु बैन । रहति न लक्ष्मी ताके ऐन ॥ सज्जन जाके चऊँदिशि रहत । वचन असज्जनके शत सहत ॥ खलके वचन बाणसे जौन । साधु सहत नहि पलटत तौन ॥ भूतनसे जो दया महान । मधुर वचन कहि दीवो दान ॥ यहि सम ईश्वर भक्ति न और । तातें कहेऊ न वचन कठोर ॥ पूज्य पूजिए दीजै दान । जाचिए न कब हौंऊ सुजान ॥ पुरुसों यह करि परम निदेश । दियो राज्य हम सुनऊ सुरेश ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ करि सनाथ सबकर्म्म नरेश । मह तजि कै आए बनदेश ॥ बूझत सो कऊ सत्यस्वरूप । तो सम तपमे हो को भूप ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ सुर गन्धर्व मनुज ऋषि माह । मोसमको तपमे सुरनाह ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ करि सुर ऋषि नरको अपमान । गर्व बचन नृप कहे अजान ॥ तात छिन्न पुण्य व्है भूप । गिरऊ स्वर्गते ममता रूप ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ करि सुर ऋषि नरको अपमान । छिन्न पुण्य जौं भयो महान ॥ तौ मोहि डारऊ तहां सुरेश । जहां बसत सज्जन शुभदेश ॥

॥ * ॥ महीधरीछन्द ॥ * ॥

यह जानि सुर नर ऋषिनको नहि फिरि अनादर कीजियो । अब जाऊ भूप यजाति इनते संग सज्जन लीजियो ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ पतमान सुर पुरतें यजाति हि देखि सुरसम आवते । तव आइ अष्टक राजऋषि इमि कहन लागे भावते ॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥ तुम कौन हो जुजुवावा सव सदृश तेज मह इनसे । वरजलद पटल विदारि नभतें चले आवत भानसे ॥ लखि परत तुमकौं गगनतें हम रहे सर्व विचारि कै । तव नियत ज्ञान न होत हमकौं सोहि जो निरधारि कै ॥ हम तुमहि पूछि न शकत आगें तुम हमे बूझत न हो । तुम कौन हो अति रूप आवत कौन कारणसों कहो ॥ तजि मोह भय सत सङ्गमे तुम आय निर्भव व्है रहो । है सुखच्युत सत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जननकौं सतसङ्ग निर्भय पद अहो ॥ है ताप करमे अग्नि प्रभु बिस्तारमे धरणी सुनो । प्रभु होत अभ्यागत सु तैसैं सज्जननको हा गुनो ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ हम नहुष पुत्र ययातिहैं हत पुण्य व्है अनुमानिए । करि गर्बकौं सुर लोकतैं चुत गिरत क्षितिपर जानिए ॥ हम बैश वृद्ध न कियो यातैं तुमहि बन्दि प्रणाम हे । हैं द्विजनमे अति पूज्य तपबर और बिद्याबान हे ॥ * ॥ अष्टक उवाच ॥ * ॥ तुम कहतहौ सो सत्यहै यह सुनहु भूप ययाति हे । हौ बढे बिद्या बैश तपमे बंद्य हो सब भांति हे ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ है धर्म्म कर्म्म बिनाश कारक गर्ब गहन कठोरजे । नहि लेत ताको सन्त जे हैं धर्म्म रक्षणसौं रते ॥ हो पुण्य मेरैं बहुत सो तो गर्बसौं बिनशित भयो । यह जानिकै कामादिके बस होत नहि सो मतिरयो ॥ धनबान जे करि यज्ञ बर लहि पुण्य अति अवदातहैं । पढि बेद तप करि मोह तजि नर स्वर्गकौं जे जातहैं ॥ नहि दुःख लहिकै करिय खेद अदृष्ट बलवत मानिए । सुख दुःख पावत जीव सो तो दैव बल बस जानिए ॥ * * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जानि अदृष्ट बली मतिमान । हर्ष करैं नहि खेद सुजान ॥ सुखतैं हर्ष न दुखतैं खेद । करत धीर जे बेत्ता बेद ॥ भयतैं मोह न अष्टक मोहि । नहि सन्ताप मानसिक जोहि ॥ धाता मोहि करी बिधि जौंन । हूहैं नियत तथा हम तौंन ॥ स्वेदज अण्डज उद्भिज सर्प । कृमि जलजीव भरे जे दर्प ॥ तृण काष्ठादि कर्म्मक्षय पाय । मिलत आदिकारण मे जाय ॥ सुख दुख दोऊ अनित्यहि जानि । अष्टक चित्त खेद न हिमानि ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनि ययातिके अष्टक बैंन । पूछन लगे पुनर्भरि चैन ॥ ये ये लोक प्रधान अनूप । तिनमे बसे जितिक दिन भूप ॥ ते हमकों सब कहिए पर्म । तुम नारद सम वक्ता धर्म ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ हम हैं सार्बभौम बर भूप । तप बल जीते लोक अनूप ॥ सहस बर्ष करि तप अभिराम । लहि परलोक गए सुर धाम ॥ गए सुरेश पुरी सुखदान । सहस द्वार शत योजन मान ॥ बर्ष सहस्र तहां करि बास । महा मोद लहि बिबिध बिलास ॥ गए प्रजापतिलोक उदार । तहां बास करि बर्ष हजार ॥ फेरि सुनौं देवेश निबेश । जाइ बसे बहु दिवस सुभेश ॥ अमर पूज्य तँह भए अनूप । ईश्वर सदृश पाइ बर रूप ॥ फेरि बसे नन्दन बन जाय । होय काम रूपी मुद पाय ॥ तहां अयुतशत बर्ष बिहार । कियो अप्सरन संग उदार ॥ देवदूत तँह बोलो आय । तीनि बेर उच्चस्वर छाय ॥ ध्वश यजाति भूप अति आम । सुनत छोडि नन्दन बन माम ॥ सुनतहि भयो तहांते भ्रष्ट । क्षीणपुण्य व्है कै लहि कष्ट ॥ अन्तरिक्ष गत सुरगण बैन । सुकरुण कहे जे सुने अचैंन ॥ गिरो स्वर्गतैं भूप ययाति । क्षीणपुण्य व्है कै बिख्याति ॥ तब उनसौं हम कहो उदात । सतजनमाहिं करहु मम पात ॥ यज्ञभूमितो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० दियो बताय। तिनसौं देखि क्षिप्र सुख पाय॥ आयो यज्ञधूम अनुसार। ज्ञापक भरो सुगन्ध उरार॥ * ॥ अष्टकउवाच॥ * ॥ नन्दन बनतैं कारण कौंन। पाय कियो बसुधाका गौंन॥ * ॥ ययातिरुवाच॥ * ॥ क्षीणबित्तनरकौं ज्यो जानि। त्यजत कुटुम्ब भृत्य अपमानि॥ क्षीण भएँ नर पुण्य बिसांति। त्यजत स्वर्गतैं सुर तेहि भांति॥ * ॥ अष्टकउबाच॥ * ॥ क्षीणपुण्य तँह कैसैं होत। बढो मोहि यह संशय सोत॥ पुण्यवान जनकेहि के धाम। जात कहो तुम हमको आम॥ कहत भूप यह प्रश्न बिचारि। उत्तर देऊ परम निरधारि॥ * ॥ ययातिरुबाच॥ * ॥ क्षीण पुण्य तजि स्वर्ग नरेश। भूमि नर्कमे करत प्रवेश॥ मछादि जीवके भोजन हेत। तनु धरि बिविधटट्टि को लेत॥ तात दुष्ट कर्म्मको त्याग। करिवो उचित सुनऊ बरभाग॥ * ॥ अष्टकउबाच॥ * ॥ नाना जीव खात करि नेह। फिरि सो होति कौंन बिधि देह॥ * ॥ ययातिरुबाच॥ * ॥ देह कर्म्मकृत धरि बऊरूप। जीव प्रगट व्है फिरत अनूप॥ देह नाशतैं सुनऊ प्रकाश। होत नहीं आत्माको नाश॥ भौम नर्क यह देह बिधान। गनत न तँह बसि बर्ष प्रमान॥ लहिकै महा मोहको फन्द। सहित करै नहि यत्न अमन्द॥ बर्ष अनेक करत सर्बास। फेरि गिरत लहि पुण्य बिनास॥ धरत देह सो नर्क समान। नाना दुःख सहत सो प्राण॥ * ॥ अष्टकउबाच॥ * ॥ नभतैं गिरिसा आत्मा रूप। गर्भबास किमि करत सो भूप॥ * ॥ ययातिरुबाच॥ * ॥ जलमे मिलि सु होतहैं रेत। कर्म प्रभाव योनि सो लेत॥ रतस तिय रज संगम पाय। होत गर्भ कर्म्मज फल छाय॥ * ॥ अष्टकउबाच॥ * ॥ जलसौं रेत कौंन बिधि होत। कहऊ ययाति सुमतिनिधि पोत॥ * ॥ ययातिरुबाच॥ * ॥ जल सँग जीव गर्भमे आय। करत बास ताकौं जो खाय॥ ताके तनमे रेत स्वरूप। व्है कै रहत सुनऊ सो भूप॥ पूर्ब कर्मको लहि अनुसार। जन्म लेत बसि गर्भागार॥ यथा कर्म सुख दुखसौं छाय। जन्मत मरत कर्म फल पाय॥ * ॥ अष्टकउबाच॥ * ॥ कहऊ चतुर्बिधि आश्रमधर्म। हे ययाति नृप बक्ता पर्म॥ * ॥ ययातिरुबाच॥ * ॥ पाठ लेइ गुरु आज्ञा पाय। गुरुको कार्य्य करै सुखदाय॥ पहिलैं जगै गुरूसौं नित्य। अनु शोचे करि सेवन हित्य॥ अप्रमत्त मृदुधीरजवान। दाताभ्यासी सुमति सुजान॥ अैसो होय बिप्रबर जौंन। ब्रह्म चर्य्यफल पावै तौंन॥ * ॥ अथ गृहिधर्मः॥ * ॥ धर्मरीति करि धन उत्पन्न। करै यज्ञ देइ दान प्रपन्न॥ आवै अतिथि अन्न तेहि देइ। आपु कुदान न अनुचित लेइ॥ रहै धर्मैं आश्रमको धर्म। सो गृहस्थहै पावन पर्म॥ * ॥ अथ बाणप्रस्थधर्मः॥ * ॥ आपु लैआवै सोई खाय। पाप कर्मसौं दूरि पराय॥ देइ औरकौं लेइ न आपु। देइ न जीव मात्र कहँ तापु॥ बनमे बसै सु नियताहार। सो मुनि पावै सुसिधि उदार॥ * ॥ अथ भिक्षकधर्मः॥ * ॥ करि उत्पन्न आपु नहिं खाय। सबसौं भिन्न बिरक्त सभाय॥ मठ बन माहं करैसो सैंन। एकस्थलमे नित्य रहैंन॥ भोजन कल्प करै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मृदु अन्न । होय जितेन्द्री गुणसम्पन्न ॥ देशान्तरमे फिरै अनन्य । भिक्षुधर्मपालक सो धन्य॥ आ०प
जाही क्षण उपजै बैराग। तबहीं तजत जगत बडभाग॥ राग द्वेष सुख कामहिं जीति । बनमे बसै सो जाय अभीति॥ दश पूरव दशपर भववंश। भरै पुण्य तजि देह प्रसंश॥ *॥ अष्टकउवाच ॥ *॥ कितिक सुमुनि अरु कति मुनिधर्म । सुनो चहत नृप कहिए पर्म ॥ *॥ ययातिरुवाच ॥ बनमे बसै पृष्ठ देइ ग्राम । ग्राम बसै बन पृष्ठ अकाम ॥ सो है मुनि निस्पृह सुनु भूप। परम पुण्य मय धर्मस्वरूप ॥ *॥ अष्टकउवाच ॥ *॥ दै प्रकारके मुनिबर जौंन। नृप विधिवत सो कहिए तौंन ॥ *॥ ययातिरुवाच ॥ *॥ ग्राम्यधर्मको करिकै त्याग। बनमे बसै यो मुनिबर भाग ॥ ग्राम पृष्ठ सो मुनि अभिराम । अनग्नि अगोचाचरण अधाम ॥ कौपीन मात्र पट राखत तौंन। रक्षक प्राण अशन करि जौंन ॥ छोडि कामना कारज सर्ब। धारैं मुनि ब्रत सकल अखर्ब॥ बसत ग्राममे मुनिबर जौंन। गहन पृष्ठ कहिए मुनि तौंन ॥ शुद्धाहार करै अभिराम । छोडैं हिंसा साधन साम ॥ तप तनु क्षीण पीन शुचि कर्म। शून्य बासना विषय अपर्म ॥ जीतित देऊ लोक ललाम। सो मुनि महत लहत तपधाम ॥ गोदव मुख मे लेत अहार । मोक्ष लहत सो सुमुनि उदार ॥ *॥ अष्टकउवाच ॥ *॥ दुहू भांतिके मुनि मे भूप। प्रथम लहत को मुक्ति अनूप ॥ ॥ *॥ ययातिरुवाच ॥ *॥ बनबासीहैं योगी जौंन । हैं सबभांति मुक्त बर तौंन ॥

॥ *॥ दोहा ॥ *॥

इन दोउनके माहिं जो योगी सो पश्चात। अरु ज्ञानी सो लहत हैं सद्य मोक्ष अवदात ॥
करत तपस्या मरत जो योगी व्है अल्पाय। जन्मान्तरमे लहत तो मोक्ष परम सुखदाय ॥
सेवत कुमति असत्य जो महा कुकर्म स्वरूप। तिनकौं मुक्ति अलभ्य है बिना आर्जव भूप ॥

॥ *॥ अष्टकउवाच ॥ *॥

तुम्ह बोलायो कौंन तुम आए कित कित जात। किन पठये कहिए नृपति भरे तेजसा गात ॥

॥ *॥ ययातिरुवाच ॥ *॥

क्षीणपुण्य भू भव नरक परिवेको नभ छोडि। कहि तुमसौं हम परहिंगे तुर सुर शासन ओडि॥
परत समय सुरबर कहो परऊ सुजनमे जाय। मो देखत तो सङ्गमे सकल सन्तसमुदाय ॥

॥ *॥ अष्टकउवाच ॥ *॥

भौमनरकमे मति मरऊ सुनऊ कहत जो बैन। देत पुण्य परलोक हम हैं जे मम मति अैन ॥

॥ *॥ ययातिरुवाच ॥ *॥

गज गो अश्वसुवर्णहु जितने जीव ललाम। तितने दिव गत लोक हतो अष्टक अभिराम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥

ते तुम लेऊ ययाति नृप सकल हँकारे लोक। भू दिविस्थ हम देतह तजऊ मोहगत शोक॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ हम सम होत न दान प्रवृत्त। लीबो दान विप्रकौं हित्त॥ हमहिं दानदीबो अभिराम। लीबो धर्म न क्षात्र ललाम ॥ * ॥ प्रतर्दनउवाच ॥ * ॥ मोहि प्रतर्दन जानु नरेश। कहियत सो यह सुनऊ निदेश॥ कितिक हमारे लोक अनूप। तुम जानत सो लीजै भूप॥ * ॥ ययातिरुवाच॥ * ॥ लोक तिहारे बऊत अमन्द। परम धर्ममय विज्ञ बिलन्द॥ एक एकमे बसि दिन सात। मिजै न अन्त कल्प लौं जात ॥ * ॥ प्रतर्दनउवाच ॥ * ॥ ते हम देत लेऊ अभिराम। ताके होऊ नाथ सुखधाम ॥ * ॥ ययातिरुवाच॥ * ॥ तेजस्वी नहिँ पर उपकार। लेत न परेऊँ बिपत्ति उदार॥ * ॥ बसुमानउवाच ॥ * ॥ हौं बसुमान कहत तो भूप। कितिक दिव्य सम लोक अनूप॥ * ॥ ययातिरुवाच॥ * ॥ गगन भूमि दिशि बिदिशि समान। तपत भानु जिन करण महान॥ तितने लोक विदित तव भूप। भरे पुण्य कृतकर्म अनूप॥

॥ * ॥ बसुमानउवाच॥ * ॥ प्रपात यत्न न करऊ नरेश। लेऊ लोक ते पुण्यावेश॥ तृण एक देकै क्रय करि लेऊ। प्रतिग्रह दोषज भय तजि देऊ॥ * ॥ ययातिरुवाच॥ * ॥ मिथ्या क्रय हम करत न तौन। बालक धन जिमि बञ्चक जौन॥ काहूँ करो न ऐसो कर्म। तौन करैं काहूहै धर्म॥ ऐसैं कहो ययाति नरेश। लीबो दान न हमकौं बेश॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बसुमानउवाच॥ * ॥ देत जे हम लोक सिगरे लीजिए ते भूप। जाहिंगे नहि तहां हम जो तुम्हे क्रय न अनूप॥ * ॥ शिबिरुवाच॥ * ॥ लोक मेरे स्वर्गमे हैं सुनऊ भूपति जौन। होऊ ताके जाय भोक्ता देतहैं हम तौन॥ * ॥ ययातिरुवाच॥ * ॥ साधुजनको कियो नहि तुम मनऊँ मे अपमान। भए लोक अनन्त तातैं स्वर्गमे सुखदान॥ * ॥ शिबिरुवाच॥ * ॥ देत हैं हम होऊ भोक्ता जाय तिनके बीर। करऊ क्रय मति जाय पावत जहां आनद धीर॥ * ॥ ययाति रुवाच॥ * ॥ इन्द्रसम तुम भूप शिबि तव लोक लसत अनन्त। रमत लोक न दत्तमे हम लहत मोद न सन्त॥ * ॥ अष्टकउवाच॥ * ॥ लोक लेतैं एकको है लगत तुमकौं खर्ब। लेऊ सबके रहैं गे हम भूमिमे नृप सर्ब॥ * ॥ ययातिरुवाच॥ * ॥ जौन करिबैं योग्य हमहैं यत्न कीजै तौन। तेहि पन्थने नहि चलहि गे जेहि कियो कबऊ न गौन॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच॥ * ॥ कियो लोभ न नृप ययाति सुधर्म राख्यो भूपाभयो यातैं पुण्य जैसो रह्यो पूर्व अनूप॥ पांचरथ पांचऊनका तहँ भए आवत पर्म। देखि अष्टक तिन्हे ऐसे भयो कहत सधर्म॥ * ॥ अष्टकउवाच॥ * ॥ कौन के ए देखियतहै पांचरथ अतिमान। गगन पथसे चले आवत लसत भानु समान॥ * ॥ ययाति

CC0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रुवाच ॥ * ॥ हैं तुम्हारे पुण्यके ए परम तेजशधाम। स्वर्गतैं ए चल्ले आवत धराकौं अभिराम ॥ आ०प०
अष्टकउवाच ॥ * ॥ चढऊ रथपर जाऊ नभकों सुनऊ हे क्षितिपाल। हमऊ आवत हैं कछूदिन गँए पाएँ काल ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ चलैंगे हम संग तुम्हरे स्वर्गकौं तपधाम । देखि परत सु बिरजपथ यह स्वर्गकौं अभिराम ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ चढे ते सब जाय रथपर परम पावन भूप । भरत क्षितितें गगणलौं बरधर्म भाष अनूप ॥ अष्टकउवाच ॥ पूर्व मम रथ चलैगो यह रहो मेरे जान। जात शिबिरथ चल्लो आगैं भरो बेग महान ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ दियो सब उतपन्न करि बसु धर्म हेत यथेष्ट। भो उसीनर पुत्र शिबि यहिभांति सुनिए श्रेष्ठ ॥ दान तप ही सत्य धर्म सु क्षमा सौम्य सुसंग। बसत ए गुण परमपावन सदा शिबिके अंग॥ *॥ बैसम्पायन उबाच ॥ * ॥ फेरि अष्टक नृप ययाति हि लगे बूझन बैंन। कौंन हो तुम कौंनके सुत कहां तुम्हरो अैंन ॥ कियो तुम जो करै गे अब कौंन अैसे काम ॥ ययातिरुवाच ॥ नऊषपुत्र ययाति हैं हम पुरुपिता अभिराम ॥ कहत हैं हम गुह्य यह सो सुनऊ अष्टक बैंन। हैं सु मातामह तिहारे जानि मानऊँ चैंन ॥ लई पृथ्वी जीति हम सब कियो अतिसै दान । अश्वमेध अक्षेय कीन्हे एकशत सविधान ॥ दई पृथिबी ब्राह्मणनकौं बाजि गज रथ पूरि। दए कोटिन गउनके गण भरे मणिगण भूरि ॥ सत्यसौं मो रहति भूशिखि मरुत गगण अनन्त। कहत हौं नहि झूठ यातैं सत्य पूजत सन्त ॥ द्विजनमधि हम पञ्चजन की कथा कहि है जौंन। होय पावन परम सो मम लोक लहि है तौंन ॥ *॥ ॥ * ॥ वैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ दुहिता पुत्रन भूप तारे नृपति ययातिकौं । गे फिरि स्वर्ग अनूप पुण्य कीर्त्तिसौं भरि जगत ॥ * ॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दित नारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि ययात्युपाख्यानवर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ *👄*👄*👄*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥*॥जनमेजयउबाच ॥ * ॥ सुनो चाहत भए जे पुरुवंशमे बरभूप । बीर्य्यबान पराक्रमी अति सत्य धर्म्म स्वरूप ॥ भूमिभर्ता वंशकरता दुःखहर्त्ता बीर । कहऊ तिनके वंशको बिस्तार सुमुनि गभीर ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ कहत हौं नृप जौंन बूझत परम पुरुको वंश। भए तामे वंशकर जे भूप परम प्रसंश ॥ प्रवीर ईश्वर तीसरे रौद्राश्व सुत अभिराम । भए पुरुतैं महाबल ए जए पौष्णावाम ॥प्रवीर सुवन मनस्यु भे शरसेनि रानीमाह ।पर्यन्त चारो सिन्धुला सब भूमिके नरनाह ॥ सु मनस्यु सुत भे शक्त अरु संहनन बाग्मी तीन। जये सौबीरी सु भायात महाबल पीन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

नृप मनसुके सुत अभिराम। भए सिअकेशीमे आम ॥ अन्वग्भानु प्रभृत बऊवीर। तिनको बंशन चलो गँभीर।रौद्राश्व पुत्र अतिबलके धाम।भए अप्सरामे दश आम॥घृचेयु अरु कक्षेयु उदार। कृकणयु स्थंडिलेयु सुकुमार ॥ बनेयु जलेयु कहे अभिराम। तेजेयु और सत्येयु ललाम॥धर्मेयु सु सन्नतेयु वर धीर।भए दशौ दिगपतिसे बीर॥मेघृचेयुके पुत्र ललाम।अनाधृष्टि अतिसै बलधाम॥ अनाष्टिके सुत मतिनार। धर्म्म धुरन्धर वीर उदार॥ भे मतिनार कुमार सुधीर।तंसु महानसु अतिरथ बीर ॥ भए द्रुह्य चौथे बलधाम। भए तंसु सुत इतिनु ललाम ॥ रथान्तरा भाय्यासे आम। भए इतिनु सुत पांच ललाम॥दुष्यन्त सूर अरु भीम उदार। प्रवसु औरवसु वर सुकुमार॥भए ज्येष्ठ राजा दुष्यन्त। खलदलगञ्जन रञ्जन सन्त ॥ भए तास सुत भरत नरेश। शुचि शकुन्तला मे बलबेश॥ भरतभूपके भार्यातीन। तिनके नव सुत भए मलीन॥ देखे पुत्र न हीं अनुरूप।भरत उदास भए तब भूप॥रानि न देखे भूप उदास।पुत्रन पठै दए यमपास॥महत यज्ञ तब कीन्हो भूप। भुमन्यु सुत तँह लहो स्वरूप॥ भरद्वाज मुनि कियो सदश्य। पुत्रमान भो भूप प्रसश्य ॥ लखि भुमन्युसुत आयु समान। किय युवराज भूप सुखदान॥ सो भुमन्यु सुत दिविरथ बीर। ताके भए पांच सुत धीर ॥ सुहोत्र सुहोता सुहवि सुजान। सुयजु ऋचीक महाबलवान॥ पुष्करिणी रानीके नन्द। भए पांच दिव सुत सुखकन्द ॥ सुहोत्र ज्येष्ठ तामे भो भूप। कियो राज्य अतिसै सुखरूप॥ इक्षाकी रानीकौं पाय। तीनि पुत्र जाए सुखदाय॥ अजमीढ सुमीढ महाबलवान। भे पुरुमीढ कनिष्ठ सुजान॥ भे अजमीढ नृपति अभिराम। तीनि तास तिय षडसुत आम॥ ज्येष्ठ कक्ष धूमिनिके नन्द। नीलिनि तनय दोय सुखकन्द॥ दुष्यन्त और परमेष्ठि उदार। जन्हु व्रजिन रूपिण सुकुमार॥ भए तीनि केशिनिके बार। रविसम तेजसके आगार॥ परमबली दुष्यन्त अनूप। अरु परमेष्ठी सुबल सुरूप॥ इन दोउनके बंश सुढार। भे पञ्चालय उग्र उदार॥ बली जन्हुनृपके अभिराम। भए कुशिक बर बलके धाम॥ भए कक्षके सुत सम्बर्ण। भूमिपाल अति आनद भर्ण॥ भयो महाक्षय ताके राज। भयो नष्ट सब प्रजा समाज॥ चढि आए पाञ्चाल नरेश। सम्बरण भूपको जीतो देश॥ सम्बरण भूप तब सहित समाज। भजे ते कुलको तजि राज॥तीर सिन्धुनदके बनमांह। बसे जाय गिरिकी गहि छांह॥ गयो बसत तहँ बरिस हजार। गे वशिष्ठ मुनि तहां उदार॥ कियो भूप पूजन अभिराम। भे प्रसन्न मुनि करुणाधाम॥ बिनीत कहो सम्बरण क्षितीश। होऊ पुरोहित मो मुनिईश॥ कहि तथास्तु मुनिवर तपधाम। साम्राज करो अभिषेक ललाम॥ तब पुरुबंश भूप सम्बर्ण। लियो राज्य करि अरिसंहर्ण॥ तपतीसे सम्बरण महीप। जाए कुरु पौरवकुलदीप॥ भो जात कुरु जांगल देश। तप करि किय कुरुक्षेत्र नरेश॥ कुरुके भए बाहिनीमांह। पांचपुत्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुनिए नरनाह ॥ अविक्षित अभिस्यन्त मुनि आम। चैत्ररथौ जनमेजय नाम ॥ आठ अविक्षितके सुकुमार। कुरुकुल भूषण भए उदार॥ ज्येष्ठ परीक्षित भे सुखदान। सबलाश्व आदि राज गुणवान॥ आ०प०

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

विराज साल्मलि बलमय भाए। उच्चैःश्रवा भङ्गकर जाए ॥ जितारि भए अष्टम गुणमए। जिनतेँ वंश भाति बहु भए ॥ सप्त परीक्षितके सुत नीके। भए महाबल अतिशुभ श्रीके॥ जनमेजय अरु कक्षसेन बर। सत्यसेन सु सुषेण सुमिति घर ॥ चित्रसेन अरु इन्द्रसेन शुभ। तेजस भरे मनो रबि है उभ ॥ भीमसेन भो अरिदलदर्ता। दानी परम सविधि मखकर्ता ॥ जनमेजयके भए सुहाए। पुत्र आठ सुषमासोँ छाए ॥ धृतराष्ट पाण्डु वाल्हीक कहाए। निषध और जाम्बूनद भाए॥ कुण्डोदर सु पदाति सोहाए। भे बसाति लहुरे गुणगाए॥ धृतराष्ट्र भए राजा बलभारे। तिन बाण बसु पुत्र अवतारे॥ कुण्डिक हस्ति बितको जानौ। कुण्डिन क्राथ हबिश्रब मानो॥ इन्द्राभवसु सु मन्यु सुढारो। औ अपराजित बरबल वारो ॥ धार्तराष्ट्र सुत भे बहु नीके। तिनके मध्य महाबल श्रीके ॥ प्रतीपादि भे त्रय बलभारी। धर्म्मनेत्र बसुनेत्र बिचारी॥ *◆*◆*◆*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भे प्रतीप अनुपम बरभूप। त्रय सुत भे ताके अनुरूप॥ देबापी शांतनु वाल्हीक। बिपिनि बसे देवापी नीक ॥ शांतनु भे राजा अभिराम। अरु बाल्हीक महाबलधाम॥ भरत वंशमें नृप बलवान। भए अनेक देवऋषि मान॥ शान्तनु करसों परसत जाहि। तरुण करत है बृद्धो ताहि ॥ गंङ्गा भइ सुभार्या तास। भीष्म सत्यब्रत भे सुत जास ॥ भीषम पितुप्रिय करिबो चाहि। योयनगन्धा व्याही ताहि॥ सु परासरसोँ जो सुखदानि। ही व्यासहि जाए गुणखानि॥ शांतनुत भे दोय कुमार। ताके भए जे परमउदार ॥ बिचित्रबीर्य्य चित्रांगदखर्ब। चित्रांगद हि हते गंन्धर्ब ॥ काशिराजकी कन्या जान। अम्बिका अंबालिकासु तौन॥ बिचित्रबीर्य्य हि दई बिवाहि। भीष्म जीति रण ल्याए चाहि॥ नृप बिचित्रबीर्य्य दिबमांहि। गए सु लहे अपत्य बिनाहि ॥ सत्यवती व्है दुःखितमान। देखि बंशको छेदमहान॥ करो व्यासमुनिको सु स्मर्ण। आए द्वैपायन दुःखहर्ण ॥ सत्यबतीसोँ बोले व्यास। कहा करैँ सो कहहु प्रकास ॥ सत्यबत्युवाच ॥ भ्राता तब बिनु मरो अपत्य। होत बंशको नाश महत्य ॥ ताके साधु प्रजा उतपन्न। करहु पुत्र यह सुनहु प्रसन्न॥ कहि सु तथास्तु व्यास तपधाम। किय उतपन्न पुत्र अभिराम॥ धृतराष्ट्र पाण्डु अरु बिदुर सुजान। नृप धृतराष्ट्र महामतिमान॥ सौ सुत जाए अतिबलबान। द्वैपायनको लहि बरदान॥ तामे चारि भए परधान। दुर्योधन राजा बलबान॥ दुःशासन बिकर्ण बरबीर। चित्रसेन सेनामह धीर॥ भई पाण्डुके भार्य्या दोय। कुन्ती माद्री सुखदा सोय ॥ पाण्डु हनो मुनि मृगकेरूप। कामाशक्त अजानि अनूप॥ शाप दियो तेहि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० जब तियसंग। करिहऊ नृप तब तजिहऊ अंग ॥ सुनत बिवर्ण ऊै गए भूप । स्त्री प्रसंग तजि दयो अनूप ॥ शाप सौ कुन्ती माद्री पास जाय कहो सो करण बिनाश ॥ पुत्र बिना गति लहत न कोय। करऊ तौन जातैं सुत होय ॥ यह सुनि कुन्ती मंत्रप्रसाद। तीनि पुत्र जाए निर्बाद ॥ धर्मराजको करि आव्हान । लहो युधिष्टिरपुत्र महान ॥ भीमसेन मारुततैं बीर। सुरपतितैं अर्जुन रणधीर ॥ ॥ * ॥ पाण्डुरुवाच ॥ * ॥ कुन्ती माद्रीपर करि नेऊ। पुत्रोत्पादनि बिद्या देऊ ॥ एवमस्तु कहि कुन्ती जौंन। माद्रीहि दई सु बिद्या तौंन ॥ दस्राबाहन माद्री कीन्ह । नकुल सु सहदेव सुत द्वै लीन्ह ॥ माद्रि हि किएँ लख्यो श्रृंगार । परश्रत मरे पाण्डुभर्त्तार ॥ कुन्ति हि सौंपि पुत्रबर तौंन। माद्री करो पाण्डु अनुगौंन ॥ तबते पाण्डव कुन्ती साथ मुनि लै हास्तिनपुर गे नाथ॥ भीष्म बिदुर सह जन समुदाय। मुनिन कहो तँह ऐसे जाय ॥ ए हैं पाण्डुतनय अभिराम । सत्य सुनऊ अति बलके धाम॥ इह कहि गे जब मुनि अनुकुल सुर दुन्दुभि द्वै बरखे फूल॥ तहाँ रहे पाण्डव अभिराम पितृकर्म सब किया ललाम। बालापनतैं तिनसौं रुष्ट। दुर्योधन दोषकरत हो दुष्ट॥ तिन्ह हि निकारण करे उपाय धृतराष्ट्रऊको मंत्र मिलाय॥ छलमिसि पाण्डु सुतन्ह समुझाय दिए बारणा बत हि पठाय ॥ तहाँ जराय लाहको धाम। बिदुर मंत्र लहि बचे ललाम॥ गए तहांतैं मारि हिडम्ब। एकचक्रापुरकौं सह अम्ब॥ बकराक्षसकौं मारि महान। गे पञ्चाल पुरी हि सुजान॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

द्रौपदीकौं ब्याहि कै फिरि देश अपने जाय। पुत्र तिन उतपन्न कीन्हैं पाण्डुसुत सुखदाय ॥ धर्मके प्रतिबिंध्य भो सुत भीमके सुत सोम। श्रुतकीर्ति अर्जुन तनय भो सो भरो बरबल तोम ॥ शतानीक सु नकुलके सहदेवके श्रुतकर्म। पांच सुत ए द्रौपदीके भए सबल सधर्म ॥ सैव्यनृपकी सुता ही जो देविका अभिराम । सो युधिष्टिर भूप व्याही चाहि सुषमाधाम ॥ भयो तासे पुत्र सो यौधेय पूरण धर्म। सु बलंधरा काशीशकी जो रही कन्या पर्म ॥ भीमसेन हि बरी सो बलभूरि बिक्रम देखि। सर्वगन्ता भयो ताके पुत्र बरबल भेखि ॥ श्रीकृष्ण भग्नी जो शुभद्रा बरी अर्जुन तौंन। अभिमन्यु ताके भए नन्दन कृष्णके प्रिय जौंन ॥ सु रेणुमतिका चैद्यपतिकी सुता जो अभिराम। नकुलकौं सो बरी सुत निरमित्र भो गुणधाम ॥ मद्रपतिकी सुता बिजया बरी सो सहदेव। सुहोत्र ताके भयो नन्दन भूप जानऊ एव ॥ घटोत्कच सह भे एकादश पाण्डवनके नन्द। बंश कर अभिमन्यु तिनमें भए कुरुकुलचन्द ॥ सु बिराटतनया उत्तरासौं भयो ताको ब्याह। गर्भ तासे भयो ताको सुनऊ हो नरनाह ॥ ब्रह्मास्त्र प्रेरित गिरो लखि कै गर्भसौं बिनुप्रान। लयो कुन्ती चक्रमें सो कृष्णआज्ञा मान ॥ मास षटको गर्भ जीवित करौंगो अभिराम। कियो जीवित

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

गर्भ सो कहि कृष्ण करुणाधाम ॥ परिक्षीण सुबंश होतें भयो यह अभिराम । कहो श्रीयदुनाथ आप्य
ताको है परीक्षित नाम ॥ लही माद्रवती सु रानी वर परीक्षित भूप । तौन माता रावरी सुत जास
आप अनूप ॥ वपुष्मा है रावरेकी भूप महिषी जौंन । शतानीक सु शङ्कुकर्ण सुपुत्र जाई तौंन ॥
लही वैदेही सुपत्नी शतानीक उदार । अश्वमेधदत्त सुपुत्र जाई तौंन अतिसुकुमार ॥ सुनै जो
पुरुवंशकीर्त्तन परम जो अभिराम । लहै गो सो चारिफलकौं महाआनदधाम ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवा
सिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि वंशानुकीर्तनो
नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ *

॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भीषमोत्पत्ति कहनकौं श्रीबरबीर बिशाल । शान्तनुनृपकी कहत हौं सो उत्पत्ति नृपाल ॥
इक्ष्वाकुवंश सम्भव भयो ख्यात महाभिष भूप । सत्यवाक धर्मात्मा पराक्रमी अतिरूप ॥
अश्वमेध सहस्र करि पुन राजसूय सुठान । दत्त करि देवेशकौं सो गयो स्वर्ग सुजान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

देवऋषि अरु ब्रह्मऋषि अरु राजऋषि अभिराम । रहे सुरगणसंगमें नृप महाभिष विधि धाम ॥
गई गंगा तहा विधिपैं धरे नारीरूप । उडो ताको वायुवस पट परमउज्जल भूप ॥
रहे ताकौं देखि सुरऋषि अधोमुख करि नैन । महाभिष नृप चाहि ताकौं रहे पूरेचैन ॥ दियो
ब्रह्मा शाप ताकौं धरऊ नरको रूप । कर्मान्तमें तुम आइ हौ यहि लोककौं फिरि भूप ॥ चिन्ति
सिगरे भूप मनमें महाभिष क्षितिपाल । पुत्र होहि प्रतीपके सो भरो पुण्यविशाल ॥ धैर्यचुत लखि
महाभिषकौं पुण्यपूरण जौंन । ताहि मनमें राखि गंगा कियो तहँते गौंन ॥ क्षीणवपु अति भरे
कमल लखे वसुगण जात । कहो जैसे भए कौं सुरसरित तूहो बात ॥ अल्प लहि अपराध दीन्हो
शापमु मुनि वशिष्ट । खिन्न यातें भए सुरसरि जानि अप्पुअदृष्ट ॥ रहे संध्या करत मुनिवर कियो
हम न प्रणाम । चले ठिग ह्वै लहि निरादर क्रोध करि तपधाम ॥ शाप दीन्हो योनिगत तुम होऊ
सिगरे जाय । महामुनिके वचन सांचे भकत कौंन मिटाय ॥ मात गंगे पुत्र कीजै हमहि धरि नर
रूप । मानुषीके जठरमे नहि बास रोचन रूप ॥ वसुनको सुनि बचन गंगा कहे जैसे बैन । पिता ह्वै
है को तुम्हारो नरनमे मतिजौंन ॥ * ॥ वसवऊचुः ॥ * ॥ सुप्रतीपको सुत होनहारो परम शान्तनु
भूप । सो हमारे योग्य कर्ता होय गो नररूप ॥ * ॥ गंगोवाच ॥ * ॥ यहै है सिध्यान्त मेरो कहत हौं
तुम जौंन । तास प्रिय इच्छित तिहारो मोहि करिबै तौंन ॥ * ॥ वसवऊचुः ॥ * ॥ होंहि बालक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० तान अपने सलिलमाह बहाय ।तुरित दीजो देह छत जेहि होय निस्तरि जाय ॥ * ॥ गंगोवाच॥ पुत्रहेतुक संग मेरो सुनऊ तासों जौंन। करे ऐसे कहो तुह्मरो व्यर्थ ह्वै है तौन॥ * ॥ वसवऊचुः॥ *॥ हम अष्ट अष्टमभाग देहै आपनो अभिराम। पुत्र तासों होय गो सो महाबलको धाम ॥ होय गो नहि पुत्र ताके करै गो न बिबाह।गए यहसिद्धांत करि बसु भरे अतिउतसाह ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ *॥ सु प्रतीप भूपति जाय गंगा द्वारमे अभिराम। करत हे बऊकाल तँ तप तरुण तेजस धाम ॥ करँ भूप समान आकृति धरँ नारीरूप । निकसि गंगा सलिलसों दृगि गई जेहां भूप ॥ दहजंघा भूपकी अतिरूप तापैं जाय । गई बैठि बिलोकि ताहि प्रतीप संभ्रमछाय ॥ कहोहौं सो करौं तो प्रिय कहऊ सुन्दरि जौंन ॥ * ॥ गंगोवाच ॥ * ॥ भजऊ मोकौं चाहि तुमकौं कियो हा इत गौन ॥ * ॥ प्रतीपउवाच ॥ * ॥ परस्त्रीको गमन हों नहि करतहौं बसुकाम। अस मानवर्ण भार्या नहि बरत सो व्रतमाम ॥ * ॥ गंगोवाच ॥ * ॥ अश्रेयसी नहि नहि अगम्या कहन जोग्य न भूप। भजति हौं तुम भजऊ मोकों दिव्य कन्यारूप ॥ * ॥ प्रतीप उवाच ॥ * ॥ प्रथम तुमहि निवृत्त कीन्हो कहति होगी जौंन । अन्यथा कीन्हें हने धर्म्मव्यतिक्रम तौंन ॥ आइ दहिण जंघपैं तुम गई बैठि सुजानि । पुत्र कन्या खुधाकोहै तौन विहित स्थानि ॥ कामिनीको भोग्य जंघा विहित बाम सुजानि। नही तुमकों बरत यातें होत अनुचित जानि ॥ होऊ यातें पुत्र पत्नी बरत सुतहित तोहि। तुमहि कीन्हों प्रथम सो कछु दोष देऊ न मोहि ॥ *॥ गंगोवाच ॥*॥ होय सोई कहत हौ धर्म्मज्ञ जो तुम बैंन। भक्ति सों तव भोग करिहों भरतवंश सचैंन॥ धरापर जे भूपतिनके मुकुट तुम अभिराम । वर्षशतलों कहि न पावत पार तो गुणग्राम ॥ धर्मज्ञ सुनिए समय लहि कै करों गोहों जौंन । राबरेको पुत्र कबहू रोंकि है नहि तौंन ॥ रहत ऐसें पुत्रसों तब बढै गी मो प्रीति । पुत्रसों प्रिय पुण्यसों सो स्वर्ग लेहै जीति ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ *॥ सु तथास्तु सुनि भूपके बर बचन बाला तौंन । भई अन्तरध्यान तबहो करि यथाविधि बैंन ॥ तेहि काल भूप प्रतीप लागे करण तप अभिराम । पुत्रप्राप्ति विचारि हिय मे सविधि सह बरबाम ॥ भो महाभिष पुत्र तिनको वृद्धपनमे आय । धरो शान्तनु नाम यात शान्तवयमे पाय ॥ समुझि अपने पुण्यवारे लोक परम उदार। धर्म्म कर्म्म हि करन लागे जन्म शान्तनु बार ॥ सु प्रतीप शान्तनु यौवनस्थ बिलोकि बोले बैंन ।बाम आइ हि एक आगैं दिव्य तो हित अैंन ॥ मिलै तुमकौं आइ थौं वह रहसमे अभिराम। जानि दिव्य महान आदर कीजियो मतिधाम ॥ भजैगी वह तुम्हे तातैं भजऊ गे तुम ताहि । देत हैं हम तुम्हे आज्ञा प्रथम मङ्गल चा हि ॥ कहि सु मिष्टावचन सब विधि पुत्र सौं सुखदान । गए रानो सहित बनकौं नृप प्रतीप सु जान ॥ भए मृगयाशील शान्तनु भप अतिबलवान। हनत मृग बराह महिष सु व्याघ्र सिंह महान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

असत बननमे एकदिन सो गयो गंगातीर । सिद्ध चारण वृद्ध जँह तप करहि ध्यावत धीर ॥ तहां आप्
देखी परम बाला श्रीसमान स्वरूप।ज्योतिमय तनु तरुण भूषे दिव्यभूषन भूप॥लसति पद्म समान तन
दुति सुधा सदृश निचोल । लसति सो एकाकिनी तँह रूपराशि अतोल ॥ लखत ताको भए
पुलकित भूप रूप अमन्द । शरदराकामध्यको लखि कुमुद जैसे चन्द ॥ सुधासी छबि पान करि
नहि तृप्ति पावत नैन। देखि सो तेहि भूमिपतिकों भरी अतिशय चैंन ॥ देवजा को दानवी हो
अप्सरा तुम बाम।किन्नरी कै मानुषी कै यक्षिनी अभिराम॥देखि ऐसें भूप तासों कहे बचन ललाम।
तुम्हे याँचत होऊ मेरी भारया गुणग्राम॥ * ॥वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ भूपके सुनि बचन कोमल
भरी मृदु मुसुकानी।कहे ऐसें बचन सुन्दरि भूप संन्निधि आनि ॥ बसुनसों जो कियो पन सो स्मरण
करि निरधारि। कहन लागी भूपसों बर बचन आनद भारि ॥ वश्य अनुगा हौंउंगी तव परम
महिषी भूप। करऊ गे जौं सुनऊ मेरे बचनके अनुरूप॥ कौंा जो मै शुभ अशुभ नहि करऊ वारण
तास । कहऊ गे नहि बचन अप्रिय रहौं गी तो पास ॥ नही तो हौं त्याग करिहौं करैं वारण भूप।
कह्यो सुनत तथास्तु शान्तनु बचन तास अनूप॥अतुल पायो हर्ष ताकौं लहत अति अभिराम।पाणि
गहि ले गए भूपति ताहि अपने धाम॥ तास इच्छा करत कबहू भंग कहत न बैन। भए भोगासक्त
शान्तनु भरे आनद मैन ॥ हाव भाव सनेह चातुर बन्द बिधि बर दत्त । भए दोऊ दुऊनके मन
हरण बासो अत्त ॥ सुरति रंग तरंगमे भे दोऊ मग्न अनूप । मास ऋतु बऊ बर्ष बीतत नही जानो
भूप ॥ भए आठ सुपुत्र ताके दिव्यदुतिके भौन । भए जब जब दिए तब तब डारिजलसे तौंन ॥
करति प्रियतो हरति नरतनु धरऊ अपनो रूप। आत्म धारासाह डारे पुत्र यह कहि भूप ॥ लगो
अप्रिय महा शान्तनु भूपकौं यह कर्म । त्याग भयते कहत हैं नहि जानि महत अधर्म।भयो अष्टम
पुत्र तब इमि हँसत हँसत नरेश । कहो तासों वचन ऐसें करे धर्म निवेश ॥ कौनहौ तुम कान
की यह करति सुतबध कर्म।पुत्रघ्नि डरतिन पापकौं यह करनि क्रूर अधर्म॥ * ॥ गंगोवाच ॥ * ॥
पुत्रकाम न हनोगो यह पुत्र लेऊ उदार। जाति हौं मै भयो पूरण रहो जौंन करार ॥ नदी गंगा
जन्हुतनया सुनऊ हम हैं भूप। देव कारज हेत तोठिग कियो बास अनूप ॥ अष्टबसु ए पुत्र मेरे
भए आय सु जौंन।पाय शाप बसिष्ठसों इन जन्म लीन्हों तौंन॥बिना तुम इन योग्य क्षितिपर जन
कहो नहि अन्य। और हमसी मानुषी को जननि जगमे धन्य॥ जननि जबे हेत तिनकी धरो मानुष
रूप। जनक व्है तुम जोति लीन्हो लोक अक्षय भूप॥बसुन हमसों बचन मागो सुनऊ भूपति तौंन।
जन्म होतें डारि जलमे दीजियो निज भौन॥ भए शाप विमुक्त बसु हम जाति अपने धाम । खसि
तब यह पुत्र पालेऊ महाव्रत अभिराम ॥ अष्ट अष्टम अंश यामे बसुनको सु अनूप । महावीर
पराक्रमी यह पुत्र मेरो भूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

१०प० स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीस्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि भीष्मोत्पत्तिवर्णो नामचतुस्त्रिंशोध्यायः ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ शान्तगुरुवाच ॥ * ॥ फिरि कहऊ आपव नामको मुनि वसुनको का पाप। सब भए मानुष योनिगत मुनि दयो लहि जो शाप ॥ तुम दियो गङ्गापुत्रसो यह करैगो का कर्म । वसु ईस जे सबलोकके तेँ भए जो निज पर्म ॥ यह कहऊ सब वृन्तात सुरसरि आपु सह बिस्तार । बैसम्पायन उवाच ॥ यह सुनत लागी कहन गंगा चरित परमउदार ॥ * ॥ गंगोवाच ॥ * ॥ वरुण सुत भो पूर्व जो सु वशिष्ठ आपव नाम । गिरि मेरुके ढिग तास आश्रम लसत अतिअभिराम ॥ तप करत आपव रहे तेहां परमबनमे भूप। ही दक्षकी जो सुता सुरभी जई तिहि गो भूप॥ परम कश्यप सुमुनि तेँ नन्दिनी नाम लहि पर्म । दई सुमुनि वशिष्टकोँ विधि हवन साधक कर्म ॥ सो चरत ही तेहि विपिनिमे भय रहित धेनु उदार । गए तहँ पृथ्वादि वसु तेहि विपिनि रमत सदार ॥ तह एक वसुद्यौ की सुभार्या लखी धेनु सु आय। सोभरी अति आश्चर्य द्यौकोँ दयी तौन देखाय॥ अति पीन कामदुघा सुसाध्वी शृंग पुछ ललाम। अति भरी गुणसोँ नन्दिनीकोँ देखि द्यौ अभिराम॥ तब कहन लागे स्वप्रियासोँ तास गुणगण तौँन। है प्रिये गाय वशिष्ठको पय पियत याको जौँन ॥ सो मनुज जीवत अयुत बर्षन होत यौवन क्षीन । यह सुनत लागी कहन द्यौसोँ प्रिया प्रेमासीन ॥ है सखी मेरी एक क्षितिपर भूपकन्या पर्म । है जितवती यह नाम ताको रूपराशि सुधर्म ॥ सो उशीनर राजर्षिकी है कन्यका अभिराम। यह गाय ताके हेत मोकोँ आनि देऊ ललाम॥ पय पान याको कर जबलों सखी सो सुखदान । यह रहैं बत्सासहित तबलों धेनु मेरे धाम ॥ यह करौ यातें परम प्रियहै नही मेरे आन । सुनि वचन ताको द्यौ सुवसु पृथ्वादि सकल सुजान ॥ सब बसुन सो गो हरण कीन्हो भए अतिअज्ञान । सो कियो नहि सुस्मर्ण मुनिको तेज तप अतिमान ॥ फल लेइ मुनि वर गए बनतें परम आश्रम धाम । लखी नहि तह नन्दिनी सह बत्स अति अभिराम॥ तब लगे ढूढन ताहि बनमे लही नहि सो पर्म। तब ध्यान धरि कै लखो लीन्हे जात वसु भरि भर्म॥ करि क्रोध दीन्हों शापतिनको होऊ मानुष जाय । जिय जानिकै गोहरण मुनि वर दोष अतिसै पाय ॥ लहि शाप ऐसें जानि वसु तब गए मुनिबर पास। सब किये बसुबर बिनय तासों भरे अतिसय त्रास ॥ तब भए सु मुनि प्रसन्न तिनसों कहे ऐसें बैँन। अनु वर्ष भीत रहोऊ ग सब शाप मुक्त सचैँन॥ है द्यौको यह कर्म इनके शापको नहि नाश। यह करै गो बहुबर्षलों धरि मनुज तनु क्षिति बाश॥ नहि होय मेरो बचन मिथ्या कहो तुमसों जौँन । यह द्यौ मनुज

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

शरीर धरि नहि प्रजा करि है तान ॥ हित पिताको करि करैगो नहि व्याह अपनो एह। सब शास्त्र आप्त
वेत्ता होय गो धृतमान पुण्य सनेह ॥ यह बचन कहि कै गए मुनिबर परम अपने धाम । तब आय
बसु सब कहो मोसों बचन विनय ललाम ॥ हमहोंहि जब जब डारि तब तब दीजियो जलबीच।
सो कियो हम यह बचन उनको मोक्षदानन भीच॥यह शापतें मुनिके अकेलो यौ बसु अभिराम।
क्षिति बसै गो बज्रवर्ष यह वरवीर बलको धाम ॥ * ॥ वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ यह बचन
कहि लै सुत हि गंगा भई अन्तरध्यान । तहांतें नृप गए घरको भरे शोकमहान॥ सो देवब्रत गांगेय
सोई भीष्म बलको धाम । भो गुणाधिक नृपति शान्तनुसों सुबो अभिराम ॥ हो महाभाग्य सुभूप
भारत व्यास यह इतिहास । भो पुण्यमय यह महाभारत करण पातक नाश ॥ * ॥ वैसम्पायन
उवाच ॥ * ॥ नृप भयो शान्तनु देवऋषिसौं पूज्य अति मतिमान । गुण भरे जामे श्रेष्ठ अति ही
सकल देव समान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

दान क्षमा धृति बुद्धि विवेक। भरो भयो शान्तनु नृप एक ॥ वंश प्रजाको रक्षक भूपा कम्बु ग्रीव बरबाहु
अनूप॥ बारण मत्त समान उदार। नृप लक्षणयुत भूभर्तार ॥ नीति भरो लखि तास चरित्र। भए धर्म
रत प्रजा पवित्र ॥ पूरण अर्थ सत्यसों युद्ध। ऐसो और भूप को उद्ध ॥ ऐसो लखि तेहि भूप अनेक।
राज राजपद कियोभिषेक॥ बिना शोक भय दुःख नरेन्द्र। निशि दिन रहति प्रजा बरेन्द्र ॥ लहि
पति शान्तनुनृपकों भूप। दान यज्ञरत भए अनूप ॥ लहि शीलक शान्तनु अभिराम। नियम धर्मरत
प्रजा ललाम॥ ब्राह्मणकों क्षत्री अनुसरत। शासन क्षत्री वैश्यगुण धरत॥ द्विजानुरक्त क्षत्र विशजौन।
शासन करत शूद्रपर तौन ॥ बसत हस्तिना पुरमें बेश । समुद्रान्तक्षिति कियो निदेश ॥ दान धर्म्म
तप तें अभिराम। अतुल लह्यो श्री नृप बलधाम ॥ राग द्वेषत रहित नरेश। भयो सोम सम सुखद
सुवेश॥ भयो भानु सम पूर प्रताप। अन्तक सम लु क्रोधको दाप॥ क्षिति सम लसत क्षमाको धाम।
हिंसा रहित महत अभिराम ॥ ब्रह्म धर्म्म करि मुख्य नरेश। करत यथोचित राज निदेश ॥ यथा
पराध दंड करि भूप । करत राजसह नीति अनूप ॥ छत्तिशवर्ष कियो बनबास । रतिसुख लह्यो
न बनिता पास ॥ भरो सकलगुण पिता समान ॥ महाबली अति धीरजमान ॥ ताके भयो पुत्र
गांगेय। तेजोमय अति सदा अजेय ॥ मृग शरसों हनि शान्तनु भूप। गङ्गातट आए अनुरूप॥ कूल
प्रबाह सुरसरिको देखि। भूप रहे चित्तमें अवरेखि ॥ चले देखिबे कारण तौन। जल प्रबाह कूल
कारक जौन ॥ लखो तहां चलि दिव्यकुमार। करत शस्त्र अभ्यास उदार ॥ तीक्ष्ण शरनसों अम्बु
प्रबाह । राखो रोकि भरो उत्साह ॥ शरसों रोकैं सुरसरिनीर । लखो पुत्र बरबीर गम्भीर ॥ * ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ *॥ रोलाछन्द ॥ *॥

आ०प०

भए बिस्मित देखि शांतनु कृत अमानुष कर्म्म। बन बसे यात नही चीन्हो आपनो सुत मम॥ भीष्म पितहि बिलोकि मोहित कियो माया छाय। भए अन्तरध्यान तब ही गए सलिल समाय॥ देखि अद्भुत भूप शान्तनु पुत्र यह निरधारि। देऊ मोहि देखाय गङ्गासा कह्यो ढिग बारि॥ धारि उत्तम रूप गङ्गा निकसि जलसौं आय। गहँ दक्षिण पाणिसौं सुत भीष्मकौं सुखदाय॥ दृष्ट पूर्व तउन चीन्हौ सुरसरीकों भूप। स्वेत बसन अनूप भूषण धरे दिव्यनृरूप॥ लेय के यह जाऊ घरकों पुत्र है बलधाम। वेद सांग बशिष्टसों सब पढे अति अभिराम॥ महाधनुष कृतास्त्र है सुर असुर सम्मत बीर। पढो उशना पास सिगरे शास्त्र अथ गभीर॥ देव गुरुसों पढी विद्या रही तापैं जौन। राम दीन्ही शस्त्र विद्या आपनो सब तौंन॥ राजधर्म समस्तबेत्ता महाकार्मुक बीर। देति हैं हम पुत्र यह लै जाऊ घर रणधीर॥ *॥ वैसम्पायनउवाच॥ *॥ जान्हवीकी पाय आज्ञा पुत्र लै अभिराम। गए शान्तनु भूप हास्तिन सुपुर अपने धाम॥ सर्व काम समृद्ध मानो आपुकों क्षिति नाथ। भीष्मकों युवराज कीन्हों सचिव मुनिगण साथ॥ बंश पौरव राष्ट्र रञ्जित कियो शान्तनु नन्द। पुत्र सह रममान भो नृप भरो मोद अमन्द॥ वर्ष चारि बिताय ऐसें नृपति शान्तनु बीर। एक दिन मृगयार्थ बनकों गए यमुनातीर॥ लहो अदभुत तहां फैलो परम सौरभ भूप। लगे ढूढँत फिरण बनमे तास मूल अनूप॥ तहां देखि दासकन्या दिव्यरूप अमन्द। लगे पूछन देखि तासों भूप कुरुकुलचन्द॥ कौंन की हो कौंन तुम इत करति हो का कर्म। कहो तोहि हम दास कन्या नाव बाहति धर्म॥ दासराज सुपिताकी हम परम आज्ञा पाय। रूप सौरभ माधुरीसों भरी ताकी काय॥ देखि ताकों वरो मनमे भरो सुगुण अनूप। दासपतिसों जाय मांगो ताहि शान्तनु भूप॥ दासराज सु वचन नृपसों कहे मितिमय लेय। जात मात्रहि कन्यका सो होति बरकों देय॥ हृदय मे है कामना हो कहत तुमसों भूप। धर्म पत्नी हेत मांगत याहि जो अनुरूप॥ सत्यवादी सत्य मोसां करऊ पन अभिराम। देंउगो मै तुम्हे कन्या परम गुणकी धाम॥ भूप सोकों मिलै गो बर कौंन तुमसम आन॥ * ॥ शान्तनुरुवाच॥ *॥ कहऊ सो बर समुझि ताको प्रथम करि अनुमान॥ आसि देहै योग्य दीवे होयगो बर जौंन॥ *॥ दासउवाच॥ भूप तो अनु होय राजा पुत्र याको तौंन॥ *॥ वैसम्पायनउवाच॥ *॥ सके देय न ताहि बर सो रहे भूपति मौन। बरी मनसिज आगि अतिशय भरी मानस भौन॥ धरे मनमे दासकन्या रूप राशि अमन्द गए हास्तिन नगरकों भूपाल कुरुकुलचन्द॥ एकदिन अति शोच पूरित ध्यान धार भूप। देव व्रत लखि आय लागे कहन बचन अनूप। कुशल है सबभांति तुमकों भूप सेवत सर्व। तात शोच न योग्य तुमकों शोचकारक खर्व॥ ध्यान धारें सेन मोसों कहत हो कछु बैंन। पुत्रके सुनि बचन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बोले अरे भूपति चन ॥ ध्यान धारें रहत हों सो सुनो तास बिबेक । महाभारत बंशमे तुम पुत्र मेरे आप
एक ॥ शस्त्र नियमित नित्य पौरुष युद्धप्रिय तुम बीर । देखि लोक अनित्य यातें डरत हम भय
भीर ॥ परै जौं गांगेय तुमकों बिपति बिधि बस आय । तौ हमारे वंशकी बर बृद्धि बीर नशाय ॥
शतपुत्रतें तुम अधिकहौ बरबीरबिरद बिशाल।बृथा दारा बरणको हों करत उत्सव हाल।बंशको
न बिनाश चाहत चहत तो कल्यान । एक पुत्र अपुत्र ता सम कहत धर्म बिधान ॥ अग्निहोत्र सु
बेद बिद्या पौत्रलौं सुखदान । षोडशांश न पुत्रके ए होत सकल समान ॥ बिदित सकल मनुष्य
से है प्रजनमे यह बात । रहत सहित अपत्य ताकों कऊँ न संशय तात ॥ शस्त्र नित्य अमर्षमय तुम
हेरि हर्षतु युद्ध । होय जौ कऊँ निधन तो लहि कै अदिष्ट बिरुद्ध ॥ यहै कारण शोचको है हमे
घेरे सत्य । होत जनको व्यर्थ जीवन भए नष्ट अपत्य ॥ * ॥ बैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ जानि कारण
भूपको सब देवब्रत मतिमान । गए मंत्री बृद्धपैं जो भूप सुखद सुजान ॥ ताहि पूछों भूपके । जो
शोच कारण रूप । कहो मंत्री दासकन्या बरण चाहत भूप ॥ बृद्ध क्षत्रिण सहित भीषम गए ताके
पास । पिताकै हित जाय मागे तौंन कन्या आस ॥ दासेश तिनकों पूजि बिधिवत कहे ऐसे बैन ।
राज मण्डल मध्य बैठे भीष्म जँह मति अैन ॥ भए कुलके नाथ शान्तुभूप पुत्र उदार। शस्त्र भृतमे
श्रेष्ट तुम हौ भूमिके भर्त्तार ॥ कौंन बांछित पाय कै सम्बन्ध अतिशय रूप। छोडि कै शोकाग्निमे सो
तपैगो नहि भूप॥भई जाके सुक्रसों सो पुरुष आपु समान।सत्यवतिका नाम राखो चारुगुणकोधाम
कहो सत्यबती हि व्याहन हेतु मोसौं तात । भूप शांतनु पिता तव अति धरमधर अवदात॥ असित
नामा देवऋषि सत्यबति हि मागो आय । ताहि हों नहि दियो सुनिए भूपसुत सुखदाय ॥ कन्या
पिताके भावत कछु कहत हौं सुनु भूप । बलवान भाव सपत्न ताको देखि यामे रूप॥ सापत्न जाके
भए तुम सुर असुरकै गन्धर्व । चिरंजीवित जानिए नहि तुह्मे कोपैं सर्व ॥ यहै यामे दोष है अरु
सकल भांति अनूप । दानदीबे माह लीबे माह सुनिए भूप ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥
दासके सुनि बचन बोले देवब्रत तप अैन । पिताके हित कहत क्षत्रिनमध्य अैसो बैन ॥ लेत हों
मै महाव्रत यह परम दुस्कर तौंन । कियो काज न करहि गे अब होहि गे नर जौंन ॥ करहि गे
हम कहत जो तुम सहित दास समाज । पुत्र याको होयगो हम ताहि देहै राज॥ भीष्मकी सुनि कै
प्रतिज्ञा फेरि बोले दास । आपु दीन्हों बचन सोहै सत्य सत्यनिवास ॥ एक है सन्देह मेरें करऊ
ताको बोध । रावरेको पुत्र करिहै राजहेत बिरोध ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ जानि कै
मत दासको अरु पिताको हित बीर। करी दुस्कर अति प्रतिज्ञा देवब्रत बरबीर ॥ गांगेयउवाच ॥
दास सुनु मो बचन कहत जो पिताके प्रियहेत । आजुतें लै मरणलौं ब्रत ब्रह्मचर्य्य सु लेत ॥
अपुत्र मोका मिलै गो स्वर्गस्थ लोक ललाम । देवब्रतके बचन सुनि भो दास पुलकित साम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० दइ कन्या लेऊ बोलो दास पति अनुकूल । सत्यव्रतपर देइ दुन्दुभि सुरन बरषे फूल ॥ भीष्म व्रत इन लियो याते भीष्म इनको नाम । सुरण सबहिन मगणतँ यह कहो बचन ललाम ॥ तब कहो सत्यवतीयसों इमि भीष्म सविनय बैन । चढऊ रथपर परम माता चलऊ अपने ऐन ॥ ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ वचन कहि यौं भीष्म रथपर लियो ताहि चढाय । गए हास्तिन नगरकों ढिग पिताके सुखदाय ॥ सुनत शान्तनु भीष्मको यह कर्म्म दुष्कर नाम ॥ करऊ इच्छा मरऊ तबही दयो वर अभिराम ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ व्याह करि लै गए शान्तनु ताहि अपने धाम । भरे अति सन्तोष मनमे पाय पूरण काम ॥ भयो परम सुपुत्र ताके कछू बीतँ काल नाम चित्रांगद सु राखो तास प्रिथ्वीपाल ॥ भए काल बितीत कछु फिरि भयो पुत्र ललाम । बिचित्र बीर्यसु भूप शान्तनु धरो ताको नाम ॥ प्राप्त यौबन भए सुत नहि तब हि शान्तनु भूप । काल बस व्है गए सुरपुर लहो लोक अनूप ॥ मरे शान्तनु भूपके लहि जननिको मत माम । कियो चित्रांगद हि राजा भीष्म अतिबलधाम ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

चित्रांगद निज सौर्य्य समान । मनमे गणत न भूपति आन ॥ अपने बलके आगें धीर । सुर असुर नहु निदरत बीर ॥ गन्धर्बप चित्रांगद नाम । महाबीर मायाको धाम ॥ आयो चढि लखि दर्प बिरुद्ध । तासों लरो भूप अति क्रुद्ध ॥ कुरुक्षेत्र सह सम्वत तीन । दोऊ लरे शस्त्रपरबीन ॥ सर सती सरिताके तीर । नृप गन्धर्ब लरे बरबीर ॥ तुमुल युद्ध तहँ भयो महान । दोऊ शर बरषे मेघ समान ॥ माया बलकरि कै गन्धर्ब । चित्रांगदकँह हनो अखर्ब ॥ गो गन्धर्ब स्वर्गको भूप । जीति समर लहि बिजय अनूप ॥ भीष्म तास देहांतक कर्म । कियो बेदबिधि वेत्ता धर्म ॥ बिचित्र बीर्य्य को करि अभिषेक । भीष्म कियो राजा सविवेक ॥ बिचित्र बीर्य्य हि बालक देखि । पालत राज्य भीष्म हित भेखि ॥ सत्यवतीके मत अनुसार । भीष्म न पालत राज्य उदार ॥ यौबन सह लखि आतृहि भूप । व्याहो चहो भीष्म अनुरूप ॥ काशिराजके कन्या तीनि । भरी रूपसों परम प्रबीनि ॥ तिनको करत स्वयम्बर भूप । सुनो भीष्म यह सुबिर अनूप ॥ रथ चढि गए अकेले बीर । काशीपुरी भीष्म रणधीर ॥ सत्यवती की आज्ञा पाय । देखो तहां भूप समुदाय ॥ भीषम तिनकहनकों देखि । भे प्रसन्न भ्राता सम लेखि ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

करति कीर्त्तन बिरदबंश सु नामको अभिराम । बैतालिका तहँ बरी कन्या स्वयं भीष्म ललाम ॥ लई रथपर राखि तिनकौं महाबल रणधीर । कहन लागे ब्याह जे सब भांति केबर बीर ॥ ब्राह्म आर्ष सु आसुरो अरु राक्षसो गान्धर्ब । दैव प्राजापत्य अरु पैशाच भाषत सर्ब ॥ करत राक्षस सो स्वयम्बर करत भूपति बीर । जीति कै जो हरत कन्या भूमिपति रणधीर ॥ हरत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हैं हम सुनऊ कन्या भूप सहित समाज ॥ करऊ यत्न विचारि कै सब जय पराजय काज ॥ खडे आप
हैं हम करैं निश्चय सुनऊ भूपति युद्ध । सह महीपन्ह काशिपति सौं वचन कहि इमि उद्ध ॥ लई
सु रथ चढाय शिखरी कन्यका रणधीर । चले कहि कै वेग सौं तब भीष्म कौरव बीर ॥ देखि
लीन्हे जात कन्यन्ह भीष्म कौं क्षितिपाल । उठे सिगरे मञ्च तें अति भरे कोप कराल ॥ पहिरि कै
सन्नाह रथ चढि लए शस्त्र समूह । चले पीछे भीष्मके सब भूप बाधैं जूह ॥ तब होन लागो नृपनसो
अरु भीष्मसौं अति युद्ध । नृपन एकहि साथ छोडे बाण अयुत सक्रुद्ध ॥ भीष्म ते शर शरण त
सब काटि कीन्हे खण्ड । एक एकन कौं हनें शर तीनि तीनि प्रचण्ड ॥ घेरि लीन्हो चहूं दिशि त
कौरवहि तिनि जाय । लगे बर्षन बाण ज्यौं गिरिराज पैं घन आय ॥ सर्ब भूपन पांच पांच सु हने
बिशिख महान । भीष्म तिनकौं काटि दै दै हने तिन कौं बान ॥ शक्ति सङ्कुल तुमुल भो रण बही
शोणित धार । ध्वज धनुष खण्डन रुण्ड मुण्डन भरी भूमि उदार ॥ हने तेहाँ बीर भीषम शत शहस्र
न भूप । कौन ताको हस्त लाघव लहै बीर अनूप ॥ जीति भूपति सकल रण मे एक भीषम बीर ।
लए कन्यन्ह चले हास्तिन नगर कौं रणधीर ॥ महा रथ तब शाल्व राजा भरो क्रोध महान । चलो
पीछैं भीष्म के मद भरो दुर्द समान ॥ लयो चाहत कन्यकन कौं तिष्ठ तिष्ठ पुकारि । हनन लागो
शरण सौं अति बेग सौं रथ चारि ॥

॥ * ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ * ॥

सुने बैन ताके भरे क्रोध भारी । करैं नैन राते महा युद्ध कारी ॥ फिरे भीष्म कालाग्नि से शत्रु मर्दी ।
पुरदाह कर्त्तार जैसैं कपर्दी ॥ भिरो हांक दै शाल्व सौं वीर ऐसा । महा मत्त मातंग सों सिंह
जैसैं ॥ रहे सर्ब राजा चितै दूरिठाढे । भिरे शाल्वसौं भीष्म बीरारि गाढे ॥ महा बीर सो शाल्व
सामन्त मर्षा । महा मेघसौं भीष्म प बाण वर्षा ॥ लयो छाय बाणावली सौं सु ऐसे । भरो भार
नीहार सौं सूर जैसे ॥ रहे युद्ध मे भूप जे पूर्व हारे । चितै कै चहूँ ओर ते जै पुकारे ॥ सुने बैन ताके
महा क्रोध कीन्हो । शरजाल कौं काटि कै चूर्ण दीन्हो ॥ लये सु प्रचेतास्त्रकौं भीष्म कोपे । महा
बारि सौं अग्निके वश्य लोपे ॥ हरे अस्त्रसों अस्त्र कौं शाल्व राजा । भयो युद्ध का फेरि सन्नद्ध साजा ॥
महाक्रोध कै सारथी भीष्म मारो । हने बाण चन्द्रार्ध सों अर्ब चारो ॥ गिरे भूमि पैं शाल्व संघूर्ण
ऐसैं । हनो शैल बज्रास्त्र सौं शक्र जैसे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जीति शाल्व कहं विजय लहि भीषम अति बल बीर । कन्यन्ह लै हास्तिन नगर गए महा रणधीर ॥
अपने अपने नगर कौं गए सकल ते भूप । हिएँ सराहत भीष्मको बल पौरुष अनुरूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० कन्यन्ह लै भीषम गए शासत राज्य अमन्द । जहँ बिचित्र बिरय नृपति कौरव कुलकोचन्द ॥
धमधुरन्धर सत्यव्रव धर भाव सुख दान । लए गए त कन्यका भगिनी सुता समान ॥

॥ * ॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

ते जीति समर बिचित्र बीर्याहि दई कन्या ल्याय । जब व्याह करिबँ चहो तिन सँा भरे भूपति चाय ॥ तब ज्येष्ठकन्या काशिपति की बिहँसि बोली बैन । हाँ पूर्व मन मे वरो हो नृप शाल्व कह लहि चैन ॥ नृपशाल्वहूँ मोहि बरी मन मे पिता को मत पाय । कतव्य मोकाँ हो स्वयम्बर सोइ नृप सुखदाय ॥ यह जानि सो धर्मज्ञ कीजै रहै जामे धर्म । इमि कहो द्विजबरबृन्दमे तेहि भीष्म सँा तजि भर्म ॥ यह सुनि बिचारि सु बूझि बिप्रण सँा सुधर्म स्वरूप । जो ज्येष्ठ अम्बा कन्यका सो बिदा कीन्ही भूप ॥ हीं अम्बिका अम्बालिका बरभाग्य भारी जैान । ते दई व्याहि बिचित्र बीर्यहि बेद बिधिते तैान ॥ अति भए कामाशक्त भूप बिचित्र वीर्य ललाम । लहि काशिपति की कन्यका अति रूप गुण की धाम ॥ ते चन्द्रवदनी भरी यौबन चपल चष कटि छीन । पद पाणि राते निबिड जघन नितम्ब उरभव पीन ॥ नृपदस्र सम अति रूप को बर तियन को मन चोर । सो सप्तवर्ष सु भयो रति रसरङ्गमे तरबोर ॥ तब भयो अठयँ बर्ष भूपहि राज जक्ष्मा रोग । सब बैद्य औषध करत हारे यत्न करि हित लोग ॥ बिचित्रबीर्य सबित्र सों व्है अस्त गो यमलोक । अति भए चिन्तामग्न भीषम भरे पुरजन शोक ॥ सब प्रेतकारज कियो भीषम भरे अतिशय खेद । लहि मातु आज्ञा गोत्र बिप्रण सहित बिधिवत बेद ॥ * ॥ बैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ अति दीन व्है सह बंधु सुत को सकल करि मृतकम । कहि सत्यवती सु भीष्मसों बर बचन शान्त सधर्म ॥ तब कियो आश्वासन बधुन को पुत्र कांक्षिनि भूप । सब बंश धर्म बिचारि भीषम कौं महाव्रत रूप ॥ इमि कहो तेहिं गांगेय कों सुत सुनऊ मेरो बैन । अब रहो तुम लों कौरवन कों पिण्ड पावन चैन ॥ ज्यों कर्म करि शुभ देवपुर को होत निश्चय गैान । त्यों सत्यव्रत है सत्य तुम मे सुनऊ निश्चय तैान ॥ तुम धर्म और अधर्मको सब भांति जानत रीति । हो पढे श्रुति सहदेव के सब अङ्ग नाना नीति ॥ तुम बिपति को प्रतिकार जानत शुक्र गुरु सों पाय । हों कहति करि बिश्वास याते धर्म बिद सुखदाय ॥ जो कहति करिबे कार्य सो तुम करऊ सुनि कै बीर । मम पुत्र भ्राता तो मरो अनपत्य बाल शरीर ॥ तो भ्रातपत्नी काशिपति की कन्यका अभिराम । ए पुत्र कामा भामिनी हैं रूप यौबन धाम ॥ तुम करऊ इन मे पुत्र को उत्पन्न धर्म बिचारि । यह होत नातरु बंश कौरव अस्त लेऊ उबारि ॥ बैसम्पायनउबाच ॥ * ॥ सब सुने माता सहित सुहृदन के कहे ए बैन । तब ट्यो उत्तर भीष्म अैस बचन सुधरम अैन ॥ यह कहति हैं सो धर्म हैं जन करत पाय विपत्य । जो कियों पन तव हेत हम सो अम्ब जानऊ सत्य ॥ हम तजैं त्रिभुवन राज्य को नहि सत्य का अभिराम । बरु तजै पृथ्वी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

गन्ध का जल तजै रस रसधाम ॥ तजि योति देइ स्वरूप का सु स्पर्श गुण कों वात। अरु शब्द विनु आ०
आकाश होय सु अनल शीतल गात ॥ रवि छोडि देइँ प्रकाश कौं अरु शीतता कों चन्द। हौं
सत्य कौं नहि तजों कबहूँ बोलि बचन अमन्द ॥ इमि भीष्म के सुनि गन्धकाली बचन मिति के
ऐन। सो कहन लागी सत्यव्रत सौं फेरि ऐसे बैन ॥ हौं सत्य तिथि तो पुत्र जानति भरो अतुल
प्रभाव। तुम चहऊ त्रिभुवन रचऊ अन्य स्वतेज सों युत चाव ॥ जो कहो मेरे अर्थ सो हों सकल
जानति पुत्र। सो करऊ जात धर्म सह नहिँ मिटै बंशज सूत्र ॥ यह देखि आपत धर्म कौं धरु
पिता को धुर धीर। लखि प्रजा जाकौं होहि हर्षित तौन कीजै बीर॥सो पुत्र कांक्षिणि धीर्य छोडैं
दीन करति बिलाप। फिरि भीष्म तासों कहन लागे धरैं धर्म असाप ॥ हे जननि देखऊ धर्म मेरो
करऊ सो न बिनाश। नहि सत्य च्युति यह करति क्षत्रिण को प्रशंस्य प्रकाश ॥ यह होय शान्तनु
बंश यासा फेरि ऐसो तोहि। हम कहत क्षत्रिय को सनातन धर्म सुनु इत जोहि॥सो करऊ आपद
धर्म गुणि कै सह पुरोहित जाय।फिरि होय जाते बंश अक्षय लोक सम्मत पाय॥ * ॥ भीष्मउवाच
व्है परशुराम सक्रोध लहि कै पिता बध कृत दोष।बर भुजा काटी सहस्रार्जुन की महा करि रोष॥
फिरि धनुष लै क्षितिकरी क्षत्री बिना एकइस बार। अति डारि नाना भांति के बर शस्त्र अस्त्र
उदार॥लखि नाश क्षत्रीबंश को तब क्षत्रपत्नि आय। बर बेद विप्रन संग कीन्हैं सुतन के समुदाय॥
हैं पाणिग्राहक पिता क्षेत्रज पुत्रको यह धर्म। सब बेदबेत्ता कहत हैं मत शास्त्रको यह पर्म ॥ फिरि
भयो तातैं बंशक्षत्री जगतमे यह जौन। हम कहो यह इतिहास क्षत्रिन को उचित है तौन ॥
फिरि कहत हौं इतिहास माता सुनऊ सो अभिराम।ह्वै तो सुमुनि उत्तथ्य ताकी परम ममता बाम॥
हैं बृहस्पति सु उतथ्य ऋषिके देव गुरु लघु भ्रात। तिन सुरति मम तासौं सु मागो भरे मनसिज
गात॥ * ॥ ममतोवाच ॥ * ॥ तो जेष्ठभ्राता को हमारैं गर्भ है अभिराम। है अन्य गर्भ न धारि
बेका उदरमे मो धाम॥ यह बेद पढत षडंग मेरे जठर मे मति मान।तो रेत परम अमोघ सो नहि
लहैगो सुस्थान ॥ तुम नहीं मोसौं रमऊ यातैं मानि मेरो बैन। अति भयो कामाशक्त जीव न
लहत रतिबिनु चैन ॥ जब करण लागो सुरति तब वह गर्भ बोलो बैन। है अन्य के इत बास को
अवकाश तात सचैन॥ जब रेत लागो गिरन तब वहिँ गर्भ पाय बठाय। दिय रोंकि रेतस राह
सो वह गिरो क्षितिपर जाय॥ तब क्रोध करि कै बृहस्पति इमि दियो ताकौं शाप। तुम अन्ध होऊ
सु बीर्य मोकृत व्यर्थ को लहि पाप॥तब अन्ध व्हैके जन्म लीन्हों सो उतथ्य अपत्य। भो व्याह प्रद्वेषी
सु भार्या सो भरी गुण सत्य॥ भे गौतमादिक पुत्र तामे परम तप के धाम। मुनि पढो सुरभी पुत्रसौं
गोधर्म अति अभिराम॥ सो वल्लोबई समान लागो रमण बनितन संग। तब और मुनिबर देखि
तेहि मर्याद त भो भंग॥तब क्रोध करि तिन कहो यह नहि योग्य आश्रम बास।यह अन्धमुनिको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अ०प० भलोहै नहि राखिबो गृह पास॥नहि करतिसो सन्तोष पतिको पुत्र लहि कै बास।तब कहो तासो अन्धमुनि क्यों करति द्वेष अकाम ॥*॥ प्रद्वेष्युरुवाच ॥*॥ जो करै पालन तौन पति जो भरै भर्त्ता तौन॥ हम भरण करि तो पुत्र पायो रहो निर्धन भौन। हम नित्य श्रम करि भई आर्त्त न भरौंगी अबतोहि ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ तब अन्धमुनि सुनि कहो ऐसें क्रोध सौं मन पोहि॥लै मोहि चली भूप पैं चलि चहति जौ धन बाल ॥*॥प्रद्वेष्युरुवाच ॥*॥ तो दत्त हौं नहि लेउ गी धन दुःख कारण हाल ॥ जो होय इच्छा करऊ तुम हम तुम्हैं कोउ न भर्त्ता॥* ॥ दीर्घतमोवाच ॥ * ॥ हम आजुतें मर्याद यह जगमाह थापन कर्त्ता॥शुचि होय नारी एक पति कीजिये जबलौं तौन।जो जाय दुसरे पुरुष पैं तौ लहै पातक भौन॥ हे जियत पतिके मरें करति जो अन्यसौं रति बास।यह सत्य ताको नर्कमे बऊ कालहूहै धान॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच॥ * ॥ यह बास मोहि निकारि कहन हिरमै ओरे साथ।यह न्याय आशङ्का हिए द्विज कह्यो इमि नरनाथ॥यह सुनत बचन द्विजान्ध के रिसि ब्राह्मणी अति छाय । तब कहो पुत्रन सौं पकरि यहि देऊ बेगि बहाय॥यह सुनत पुत्रन पकरि ताको बांधि उडुप बनाय॥ तब सुरसरीके सलिल मे धरि दियो ताहि बहाय। सो बहत गो जहं न्हात हो बलि नाम को बर भूप।लखि काढि ताकौं बूझि समुझो दत्त सकल अनूप॥करि पुत्र हेतुक वर्ण ताको जानि नृप तप धाम। सो गयो अपने भौन कौं लै भूप अति अभिराम ॥ सुत करऊ मुनि उत्पन्न जे धर्मार्थ कुशल महान । मुनि कहो सुनत तथास्तु तासौं जानि भूप सुजान॥

॥ * ॥जयकरीछन्द ॥ * ॥

भूप सु दोष्णा रानी जौन। ताके पास पठाई तौन ॥ दृढ़ अन्ध लखि रानी ताहि । दासी ता पहँ दई पठाहि ॥ ताके आदि सुकाक्षो बान । पुत्र एकादश भए सुजान॥ तिनकौं पढत बिलोके भूप। कहो हमारे पुत्र अनूप॥ ऋषि नृप सौं इमि कहो अनूप। एतो नहि हैं मेरे भूप॥ शूद्रयोनिमे जाए सर्व। काक्षीवदादि पुत्र अखर्व॥ अन्ध दृढ़ मोहि देखि कुरूप। किय अपमान सुदोष्णे भूप॥ मोपहं दासी दई पठाय । ताके भए पुत्र समुदाय ॥ बऊ बिधि कीन्ही बिनय नरेश। भे प्रसन्न तब मुनि तपवेश ॥ बलि भूपति मुनि आज्ञा पाय । दियो सुदोष्णहि तुरित पठाय॥ रानी को सब परसि शरीर। बोले मुनिबर तप गम्भीर ॥ रानी तुम्हरे पुत्र उदार। हूहैं रबि सम भूमर्त्तार॥ अंग बंग कलिंग अमन्द।पुंड्र शुह्म भे ताके नन्द॥ भए देश ए तिनके नाम। करो जहां तिन राज्य ललाम॥ ऐसें बलिराजाको बंश । भयो पूर्व बर धर्म प्रसंश॥ और भए क्षत्री बलवान। ब्राह्मण सौं उत्पन्न महान॥ यह सुनि कै माता करि तौन। होय बंश है बूडत जौन॥ ब्राह्मण होय सु तप गुण रास।धन दै करऊ निमंत्रण तास॥ बिचित्र बीर्य्य की रानी माह।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

करै प्रजासौं कुरु नरनाह॥ वैसम्पायनउवाच॥ सत्यवती भीषमसौं बैन। कहो सलज पाइ कै चैन॥ आ

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

तुम कहत हौ सो सत्य भीषम सुनऊ मेरे बैन। बिश्वाससौं तो कहति हौं वर बंश सम्भव चैन॥ नहि योग्य तुमसौं कहनके हे कौंन ऐसो धर्म्म। धर्म्म सत्य स्वरूप हौ तुम बंश पावन पर्म्म॥ प्रथम सुनि मो वचन कीजो योग्य जौंन सचाव। रही मेरे पिताके एक धर्मवाहक नाव॥ प्राप्त यौंवन हौं गई तहँ नाव बाहन कांम। नदी तरिबे मुनि परासर गए तहँ तप धांम॥ चली उनको पार लै जब नावपैं बैठाय। मधुर बचन सकाम व्है कै कह्यो मो ढिग आय॥ शाप भयतें सुमुनिको नहि सकी करि अपमान। तेजलैं मोहि मध्य यमुना कियो बश तपभान॥ अन्धकार पसारि चँऊ दिशि नावपैं तपधाम। मत्स्यगन्ध मिटाय मेरो दियो सौरभ नाम॥ कहो मोसौं सुमुनि तजि मो गर्भ यह अतिरूप॥ कालिन्दीके द्वीपमे लऊ पूर्बरूप अनूप॥ भो परासर पुत्र योगी महातेजसधाम। पुत्र कन्या पनेको मों महामुनि अभिराम॥ वेदके करि कै बिभाग सो भयो व्यास सुनाम। अष्टादश पुराणहि पूर्ण बिरचे तप गुणधाम॥ पिताके सङ्ग गयो तबही जन्म लै तपसत्य। उत्पन्न करि है भ्रात पत्निनमाह तौन अपत्य॥ गयो कहि जब परै तुमको आय दुःख बिशाल। स्मरण मेरो कीजियो हौं अम्ब ऐहौं हाल॥ भीष्म जौं तुम कहौ तौ सुस्मर्ण कीजै तस्य। बिचित्र बीर्य्यके क्षेत्रमे सो करो पुत्र अवस्य॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच॥ * ॥ भीष्म सुनत महर्षि कीर्त्तन कहो अञ्जलि जोरि। श्रेय जाते होय अम्ब सु करऊ कहत निहोरि॥ भीष्मके सुनि बचन ऐसे महाआनदभर्ण। गन्ध काली व्यासमुनिको कियो तब सु स्मर्ण॥ मात चिन्तन समुझि कै मुनि पढत आए बेद। भए तासौं प्रगट तबहीं महा तप हर खेद॥ कियो बिधिवत तत्र पूजन पुत्रको अभिराम। गोदमे लै सून्य बरखी भरी करुणा माम॥ बास मोचे गन्धकाली देखि कै सुत पर्म। जननि सोचो बारिसौं तब जानि व्यास सु धर्म॥ व्यास ऐसैं कहे तासौं बचन आँनदभौंन। होय बांछित कहऊ माता करौं मै अब तौंन॥ महामुनिको करी पूजा राजशोहित पर्म। ग्रहण कीन्हो तौंन बिधिवत जानि कै मुनि धर्म॥ देखि पूजित प्रीतिमान सु आसनस्थ ललाम। कुशल बूझो गन्धकाली पुत्रसों अभिराम॥ जनकको अरु जननिको उत्पन्न है सुत तात। पिता स्वामी पुत्रको है तथा स्वामिनि मात॥ सुबिधान बिहित सु पुत्र मेरे हौ यथातुम पर्म। सु बिचित्र बीर्य्य सुपुत्र मेरो तथा अवरज धर्म॥ पितातें ज्यों भीष्म मातातें तथा तुम भ्रात। बिचित्रबीर्य्य सु भूपके हौ सुनऊ मुनि अवदात॥ भूप शान्तनु पुत्र ए हैं सत्यपालक बीर। करत बुधि अपत्यमे नहि राज्य शासन धीर॥ तुम करऊ भ्राता स्नेहतें सन्तान पालक बंश। मम निदेश सु भीष्मको लहि बचन परम प्रसंश॥ कृपा करि कै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० जननय बर रक्षण रथ पर्म । कहति कोमल बचनसो मम करऊ पूरण धर्म ॥ कनिष्ट भ्राताकौं सुभार्य्या रूप यौबन धाम । पुत्र चाहै धर्म बिधिसों सुनऊँ अति अभिराम ॥ उतपन्न करऊ अपत्य इनमे हौ समर्थ सुजान । बंशके अनुरूप भूपति बंशकर सुखदान ॥ * ॥ व्यासउबाच ॥ * ॥ गन्धकाली अब तुंम पर अपर जानति धर्म । सुमति याते धर्ममे तो रहति निष्टित पर्म ॥ पाय आज्ञा रावरेकी धर्म कारण जानि । करोंगो तो सकल बांछित पूर्ब बिधि अनुमानि । मित्रा बरुणके सम देऊँ भ्राताकों सुपुत्र सुजान । भ्रातपत्नी करहि ब्रत हौं कहत जो सुखदान । बर्ष दिनलौं सुब्रत धरिकै सुद्ध करि कै काय । बिना ब्रत के करैं बामन सकति सो ढिग आय ॥ ॥ * ॥ गन्धकाल्युवाच ॥ * ॥ शीघ्र मेरी क्षुधा जैसैं लहहि गर्भ असन्द । बिना राजा प्रजा जनपद नष्ट होत सदन्द ॥ * ॥ व्यास उवाच ॥ * ॥ पुत्र देउँ अकालमे जौं करै यह ए बास । बिरूप मेरो देखि कै सहि कर हि भाव ललाम ॥ गन्ध और बिरूप मेरो सहै गीं जो अद्य । गर्भकौं सो लहै गीं बरबंशकारक सद्य ॥ जो सहि सकै सजवाय शय्या लखे तौ मम राह । ह्वै अम्बिका बर धारि भूषण भारी भूरि उमाह ॥ यहि भांति मुनि कहि जननिसों तब भए अन्तरध्यान । जाय कै तब गन्धकाली क्षुधापैं मतिमान ॥ धर्म्म अर्थ सयुक्तासौं कहे हितमित बैंन । कहति धर्म रहस्य सो सुनु बधू आनद अैंन ॥ कुरुवंश लहत बिनाशकौं मो भाग्यको क्षय पाय । देखि मोकंह व्यथित है कुरुबंश पीडा छाय ॥ भीष्म मोकौं दई है मति बंश कारक बुद्धि । तौन है तो बस्य मोकौं करऊ फेरि समृद्धि ॥ धरै जोन भुजानपैं यह राज्यको गुरभार । गन्धकाली कहि करायो बचन यहस्वीकार ॥ दिए भोजन अतिथि ब्राह्मण बिबिधिभांति बोलाय । * । बैसम्पायन उवाच । * । देखि ताको गन्धकाली ऋतुस्नाता पाय ॥ मधुर बचन सु बोलि पठयो ताहि सैन अबास । हे बधू देबर रावरो सो आइ है तो पास ॥ निशीथमे सो आइ है वह महा तपको धाम । मानि स्वश्रू बचन सोई जाय सेज ललाम ॥ भीष्म बरबल और कौरब अष्ट भे हे जौन । अम्बिका एकाग्र मनसों चित्य कै सब तौन ॥ अम्बिका पहँ प्रथम आए मानि जननि निदेश । दीप द्योतित भवनमे मुनि कियो जाय प्रबेश ॥ कपिल छूटी जटा जाकी नयन अनल समान । गैंाह मोछसो नकुके रङ्ग घोरवेश महान ॥ अम्बिकासो भरी भयतें देखि मुनिको रूप । कियो मुनि सम्भोग तासों जननि प्रिय अनुरूप ॥ अम्बिका नहि लखी सन्मुख रही मूंदे नैंन । लही नहि सम्भोग जन्य प्रसन्न ह्वै कै चैंन ॥ चले जब मुनि गन्धकाली बचन पूछो आय । त्रिकाल दरसी महामुनि यह दियो बचन सुनाय ॥ राजपुत्र सु होय गो बलबान याके अम्ब । अयुत गजबल भरो ह्वहै शास्त्रको अवलम्ब ॥ महा भाग्य सु महा बुद्धि सु राजऋषि अभिराम । होहि गे शत पुत्र ताके महाप्रबल ललाम ॥ बै गुणतें यह सुनऊ माता

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अन्ध हूहै तौंन । वचन मुनिके सुनत माता कहो कारण कौंन ॥ कुरुवंशको पति अन्ध यह नहि आ०प०
योग्य है तपधाम । ज्ञाति वंश विवृद्धि कारक देऊ दुतिय ललाम ॥ ❀❀❀❀❀❀❀

॥ ❀ ॥ सोरठा ॥ ❀ ॥

समय प्रसवको पाय अन्ध भए धृतराष्ट्र नृप । सत्यवती दुखछाय फेरि विनय मुनिसों कियो ॥

॥ ❀ ॥ रोलाछन्द ॥ ❀ ॥

दीजिए मुनि पुत्र जो कुरुवंशके अनुरूप । तथास्तु कहि कै गन्धकालीसा गए मुनि भूप ॥ फेरि कहि अम्बालिकासौं बचन करि परमान । गन्धकाली पूर्व बिधिवत कियो मुनिको ध्यान ॥ फेरि आए तथाविधि तहँ महामुनि अभिराम । तथाविधि अम्बालिकाके गए निशिमे धाम ॥ देखि सो मुनि रूप भयतैं भई पाण्डु स्वरूप । देखि तासों व्यास ऐसे कहो बचन अनूप ॥ भई जो तुम पांडु सोका देखि भय भरिमान पाण्डु व्है है पुत्र तो अम्बालिके बलधाम॥पांडु नामक भूप सो यह चले कहि जब व्यास । गन्धकालो जाय बूझो बचन मुनिके पास।कहो मुनि सुत पांडु हूहै महाबलको धाम। जननी फिरि सुत एक मागैं मुनिसो अभिराम । गए व्यास तथास्तु कहि अनुप्राप्त भो जब काल ॥ पुत्र भो अम्बालिकाकैं पांडु रूप बिशाल ॥ भरो लक्षण सर्वसौं श्री सिन्धुसो गम्भीर ॥पुत्र जाके भए पाण्डव पांच अतिरथ बीर ॥ ऋतुकालमे फिरि अम्बिकाकौं पठै मुनिके पास।गन्धकाली चाहि चितमे पुत्र सुन्दर तास ॥ ❀❀❀❀❀❀❀

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

सो मुनिको दुरगन्ध बिचारि । रूप कुरूप हिएँ निरधारि ॥ दासी मुनिपहँ दई पठाय । पट भूषणसौं चारु बनाय ॥ मुनि आगमन देखि सुखदाय । तेंहि चलि आगैं परसे पाय॥ आज्ञा लहि कै बैठी पास । मुनि तासो किय सुरति बिलास ॥ अतिसै पाय मदन रसरङ्ग । रहे निशा भरि मुनि तेहिसङ्ग ॥ तासौं कहो जात मुनि ओक । मिलि है तोहि पतिव्रत लोक ॥ बसो गर्भमे तो औमान। धर्म पाय ऋषि शाप महान ॥ विदुर नाम अति विद्यामान । धृतराष्ट्र पाण्डु भ्राता सुख दान ॥ सत्यवतीसौं कहि यह व्यास । शूद्रा सङ्गमको इतिहास ॥ माताके ऋणसों है मुक्त । कहि दासीकों गर्भ सयुक्त ॥ व्यास भए तब अन्तरध्यान । यहि विधि करि कुरुवंश सुजान ॥ ❀❀❀

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविनाकृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि वंशोत्पत्तिवर्णनो नाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ❀❀❀❀❀❀❀

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जनमेजयउवाच ॥❀॥ ऐसो करो कौंन सो कर्म ।जासों लहो शाप प्रभु धर्म ॥ कान

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० ब्रह्मऋषिको लहि शाप। पायो धर्म योनिगत पाप ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ हौ माण्डव्य सुऋषि तपधाम। आश्रममे तप करत ललाम ॥ ऊरधबाऊ वृक्षके मूल। खरे मौनव्रत तरुके तूल ॥ नृप घरमे चोरी करि चोर। मुनिबनमाह छपे लखि भोर ॥ नृपरक्षक अनु बूझो आय। गए चोर कित देऊ बताय ॥ सु मुनि मौनव्रत कहो न बैंन। ढूढन लगे ते आश्रम ऐंन ॥ धन सह गहे भटन तहँ चोर। पकरि लयो मुनिसह बरजोर ॥ सधन चोर गहि ल्याए भूप। कहो रक्षकन जाय अनूप ॥ रक्षकगण नृप आज्ञा पाय। मुनिकों धरे शूलपहँ जाय ॥ बऊत काललौं शूलासीन। मुनिबर रहो अहार बिहीन ॥ नहि भूलो मुनि बेदाध्ययन। बैठो शूलशिखा तप अयन ॥ ताके तपतें मुनिजन सर्ब। पायो तिन सन्ताप अखर्ब ॥ निशिमे धारि शकुन्त स्वरूप। ताके पास जात मुनि भूप ॥ तासों पूछत भरे उताप। हे मुनि करो कौंन तुम पाप ॥ जातें सहत महत यह कष्ट। कहऊ तौन मुनिबर सुस्पष्ट ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहो मुनिनसो मुनि इमि बैंन। मोसों दोष परस्पर हैंन ॥ दुख न सहत अपने बिन पाप। कोऊ जानो निश्चय आप ॥ रक्षकजन मुनि जीवित देखि। शूली पर बैठो अब रेखि ॥ तिन सब कहो भूपसों जाय। सुनत नृपति आयो भय पाय ॥ लगो कहन विनीत सु बैंन। जो मुनि कै मुनि पावै चैंन ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ जो अज्ञान मोह बस कर्म। हे मुनिबर हम कियो अधर्म ॥ क्षमा करऊ सो हे तपधाम। क्रोध योग्य नहि हम मतिमाम ॥ यह सुनि कृपा कियो मुनि भूप। कृत अज्ञान कुकर्म कुरूप ॥ मुनिकों कृपा युक्त नृप चाहि। लगे शूलसों काढ न ताहि ॥ चितितें कढो न गुदतें शूल। बल करि थके खैंचि गहि मूल ॥ भूप महा मुनिसों तब भाखि। काटिलयो सो गुदसम राखि ॥ शूल सहित बन गे तपधाम। अणि मांडव्य कहाए नाम ॥ तब बलतें जीतो परलोक। गए धर्मराजाके ओक ॥ धर्मराजकों बैठो देखि। लागे कहन महामुनि लेखि ॥ कौन कियो हम दुष्कर कर्म। ऐसो दियो जास फल धर्म ॥ बेगि कहऊ तुम हमसों तौंन। फेरि लखऊ मो तपबल जौंन ॥

॥ * ॥ धर्मउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

पतंगिकाके पूंछसे सीक चलाई जौंन। लहो तास फल महा मुनि शूल सहन भो जौंन ॥

॥ * ॥ अणिमाण्डउवाच ॥ सोरठा ॥ * ॥

तनु अपराध हि पाय दण्ड दियो इतनो बडो। शूद्र योनिमे जाय धर्मराज हूजै मनुज ॥
हौं थापत मर्य्याद धर्म फलोदय लोकमे। बर्ष चतुर्दश बाद पाप कर्म फल जन लहै ॥
सुनिबर दीन्हो शाप लहि इतने अपराधकों। धर्मराज बिनुपाप शूद्र योनिगत मनुज भे ॥

॥ * ॥ चरणाकुलछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ जनमें तीनि कुंवर छबि छाए। कुरु जाङ्गल कुरुवंश सोहाए

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कुरुक्षेत्र में बर्द्धित भए। भरे भाग्य राज्यश्री मए ॥ बढी शस्य सब रस मय रूरी । होति वृष्टि आ
लहि समय सुपूरी ॥ फूले फले वृक्ष छबि सरषे। रिष्ट पुष्ट वाहन सब हर षे ॥ बणिक बजारन्ह मे
धन भारे । नानाभांति शिल्पगुण वारे ॥ सुभट साधु कोविद मुद गहे। खल शठ चोरन कितहूँ
रहे ॥ नगर देश शतयुग सों छायो। यज्ञधर्म को कर्म सोहायो ॥ सब अन्योन्य प्रीति हैँ राख।
अनृत बचन जन कोउ न भाखैँ ॥ दम्भ क्रोध अरु लोभ बिहीनैँ। सुजन परस्पर आनद भीनें ॥
नगर सदृश रत्नाकर सोहै। भरो मणिन सों जन मन मोहै ॥ घन प्रासाद गगण सों लागे। पुर महेन्द्र
पुर सम छबि पागे ॥ नदी बिपिनि गिरि सरवर जेहां । बिहरत पुरजन मुदभरि तेहां ॥ कोऊ
कृपिण न बिधवा नारी। कुरु बर्द्धित पुरजन सुख चारी ॥ कूप अराम सभा सर बापी। जहँ तहँ बसे
बिप्रबर जापी ॥ सर्व ऋद्धिमय मंगल नाना। होत देश मे बेस बिधाना॥रक्षित भीष्म धर्म तें सोह।
अति रमणीय राज्य मन मोहैँ॥परपुर दलि निज बर्द्धित कीन्हो॥राज्य भीष्म निर्भय करि दीन्हो ॥
जन्मकृत्य कुँवरन की चाहैँ। प्रजा नित्य उत्सव उत्साहैँ ॥ पुरमह घर घर यह धुनि सुनिए। देऊ
देऊ गुणियैँ निरगुणि ए ॥ धृतराष्ट्र पण्डु अरु बिदुरहि पालैँ। सुत सम भीष्म प्रेमकरि लाल॥सह
संस्कार शास्त्र श्रुति पढे। धनुर्बेद पढि योबन मढे ॥ ज्ञान बिधान भली बिधि जाने । नीति रीति
पढिकै सुखसाने ॥ भे बिख्यात पण्डु धनुधारी । भे धृतराष्ट्र महा बलभारी ॥ नहि मतिमान
बिदुर सम कोऊ। सत्य धर्म जानत सबकोऊ ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆**

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

काशिराज सुगणी कन्या बीरसू अभिराम। देश भो कुर जाँगलौ सब देश मे धनधाम ॥ धर्म
बिद मँह भीष्म सम नहि और भूपति धन्य । पुरण मे नहि हस्तिनापुर सदृश है पुर अन्य ॥ चक्षु
बिनु धृतराष्ट्र कौँ नहि कियो राजा रूप। कियो भीष्म बिचारि कै यह पण्डु कों तब भूप ॥ भीष्म
उवाच ॥ * ॥ गुणन ते यह बंश मेरो बिदुर अति बिख्यात। जीति कै क्षितिपाल सिगरे नीतिसों
बरभात। करो रक्षित पूर्ब जे कुरुबंश मे भे भूप। उच्छेद कबहु न लहो ममकुल परम पावन रूप॥
ब्यास हम अरु गन्धकाली धर्म पथ गहि सत्य। कुलस्थापन कियो फिरि सब तुमहि करि उतपत्य॥
बंश बर्द्धित होय जैसैँ धर्म तैँ अनुरूप। करहि हम अरु बिदुर तुम मिलि तथा कार्य अनूप॥ सुनत हैँ
यदु बंशमे है कन्यका अभिराम । मद्रपति अरु सुबल के है सुता सुषमा धाम ॥ ते योज्ञ मम
सम्बन्ध के है परम बंश प्रशस्य । बिदुर तिनकौँ बरो चाहत सुतन्ह हेतु अवस्य ॥ बिदुरउवाच ॥
पिता माता परम गुरु हम सबन के हौ बीर । एहि बंश को हित होय जैसे करऊ तैसे धीर ॥
॥*॥ बैसम्पायनउवाच॥*॥सुनो भीषम द्विजन सौँ है सुबलकन्या जौँन। शत पुत्रको बर लहो है

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० करि शम्भु सेवन तौन ॥ सुबल पैं तब दियो प्रोहित पढै कन्या हेत । गान्धारपति सुनि अन्धवर अति भयो चिन्तित चेत ॥ सुकुल ख्याति बिचारिकै गान्धारपति मतिमान । धृतराष्ट्रका सो कही कन्या देन कौं सुखदान ॥ गान्धारि सुनि धृतराष्ट्र कौं हैं चक्षुहीन सुजान । पिता माता देत भोकौं ताहि व्याहि बिधान ॥ बसन सौं बऊ भाँति बाँधे नेत्र अपने पर्म्भ । सुबल राज सु सुता शुभगा धारि पतिव्रत धर्म्भ ॥ सुबल नृप सुत शकुनि आए लएँ भगिनी साथ । सकल गुण सम्पन्न जेहाँ रहे कौरव नाथ ॥ व्याहिकै धृतराष्ट्र कौं सो देइ दाइज भूरि । भीष्मसौं सत्कार लहि गे स्वपुर आनद पूरि ॥ सुबलजा पतिधर्म्म धारे रहति अति अभिराम । लेति पुरुष न अन्यको सो बदनछू तैं नाम॥यदुवंश मे बसुदेव को हैं पिता सूर नरेश ।पृथा ताकी सुता ह्वां गुण भरी सुषमा बेश॥ सूर नृपकी फुफू को सुत कुन्ति भोज सु भूप । सूर सौं तेहि जाइ मांगे पुत्रदान अनूप ॥ सूर तासौं कहो ह्वैहै प्रथम जौंन अपत्य । भोज दैहै तौन तुमकौं बचन जानऊ सत्य॥ प्रथम कुन्ती दई ताकौं दई सूर नरेश । कुन्तिभोज सु पालि तासौं कियो परम निदेश ॥ करऊ पूजन अतिथ ब्राह्मण इहाँ आवहिं जौंन । पाय आज्ञा पिता को सो करन लागी तौन ॥ गए दुर्वासा तहां अति उग्र लखि आसन्न । सब भांति तिनकौं पूजि कुन्ती किये बऊत प्रसन्न ॥ दियो ताकौं मंत्र सुमुनि भविष्य बिपति बिचारि । प्रयोग को बिधि सहित अैसैं बचन कहि निर धारि ॥ जेहि देवको यहि मंत्रसौं तुम करऊगी आव्हान । सो आय तुमकौं देयगो बरपुत्र अति बलवान॥ तेहि मंत्रको फल बूझिबे कौं पृथा करि अनुमान। करो तब तेहिं मंत्र कौं पढि भानुको आव्हान ॥ भरी विस्मय चले आवत भानु कौं लखि नैंन । आइ नीरे सूर तासौं कहे अैसे बैन ॥ कहऊ सुन्दरि करहि का तो मनोवांछित हाल । * । कुत्युवाच । * । दियो हमकौं महा मुनि यह मंत्र हौं दिन पाल ॥ ताहि जानन हेत कोन्हौं देव तो आव्हान । करति तुमहि प्रणाम जैये कृपाकरि जग त्रान ॥ * ॥ भानुरुवाच ॥ * ॥ विदित हमकौं दियो तुमकौं मंत्र मुनिवर जौंन । छोडि भय मम करऊ सङ्गम सुनऊ सुन्दरि तौंन ॥ सु अमोघ दर्शन होत मेरो सुनऊ हे सुखदान । नतरु ह्वहै दोष तुमकौं किए को आव्हान ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ बचन सुनिकै भानुको कन्यत्व को भय मानि । नही सङ्गम कियो चाहति पृथा अति सुखदानि ॥ फेरि अैसैं कहो तासौं अर्क आदर युक्त । कृपातैं नव होऊगी तुम दोषतैं अति मुक्त ॥ यहि भांतिसौं कहि बचन तासौं होय भानु सकाम। आइकै तट किये सङ्गम पृथासौं अभिराम ॥भयो तबसुपुत्र ताके महा धनुधर वीर । सहित कुण्डल कवच भो श्रीमान सुतनु गभीर ॥ फेरि दै कन्यत्व ताकौं तबहो अभिराम।तमनाश कर श्रीभासकर दिवकौं गए बल धाम ॥ देखि तौन कुमार कुन्ती भई चिन्ता मान। रहै मेरो लाज कैसैं करौं कौंन बिधान ॥ दयो सुत सो डारि जलमे लाज कुलकी धारि । बहो जात सो देखि ताकौं लयो सूत निकारि ॥ रही राधा तास पत्नी दयो ताकौं जाय।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पुत्रसम सो लगी पालन महा आनद छाय ॥ नाम धेय समेत ताको कियो जातक कर्म्म । बहु आ
मान सो शस्त्र वेत्ता होतभो अति पर्म्म ॥ भानु सन्मुख बैठि तबलौं करैं राधन तौंन । जाहिं जबलौं
पीठि पीछे महा आतप भौन ॥ तेहि समै मे जो विप्र तासौं जौंन मागे जाय । तौंन ताकौं देय तबही
कर्ण अति सुखपाय ॥ धरे ब्राह्मण रूप आए इन्द्र ताके पास । कवच कुण्डल सहित मांगो चाहि
सुतहित प्रयास ॥ काढि तनते कवच दीन्हो ताहि सङ्ग्रज जौन । भए शक्र प्रसन्न अतिशय कवच
लै कै तौंन ॥ दई शक्ति अमोघ ताकौं बोलि ऐसे बैंन । सुनो जापैं घालि हौ सो एक बचिबे है न ॥
प्रथम हौं बसुषेण वर फिरि कर्ण धारो नाम । कवच दीन्हो काढि तन तें काढि अति अभिराम ॥
कर्म्म कीन्हो महा अद्भुत छूरिकासौं फारि । कवच दीन्हो सहित कुंडल दानधर्म्म विचारि ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविनाकृतमहाभारतदर्पणेआदिपर्वणिकर्णोत्पत्तिवर्ण
नोनामषड्विंशोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ बैसपायनउवाच ॥ * ॥ गीतीछन्द ॥ * ॥

सो रूप गुण सम्पन्न सुन्दरि धर्मशीला बाम । है कुन्तिभोज महीप कन्या पृथा अति अभिराम ॥
सो बरन चाहति भूप कोऊ परम रूप निहारि । तब कुन्तिभोज बिचारि कै यह चित्त मे निर
धारि ॥ रचिकै स्वयंबर बोलि लीन्हे चहूँदिशि के भूप । नृप रङ्गमे तहँ प्रथै देखो पाण्डु को
अनुरूप ॥ सम सिंह दर्प वृषाक्ष उन्नत बक्ष अति बलवान । सब सभा छाए तेजसौं सो लसत
मानऊ भान ॥ तब देखि ताकौं भई कामाकुलित कुन्ती बाम । भरि लाज दीन्हो माल सौंपहि
राय ताहि ललाम ॥ सो बरी ताहि बिलोकि कै जे रहे अन्य नरेश । ते यथा आए तथा सिगरे
गए अपने देश ॥ तब कुन्तिभोज बिबाहि दीन्हो पृथा कौं अभिराम । बर बेदबिधि सौं पाण्डु नृप
कौं महा छबि को धाम ॥ हय हस्तिगण मणि बसन भूषण दिए अमित अनूप । व्है बिदा कुन्ती
सहित आए स्वपुर कुरुकुल भूप ॥ नृप पाण्डु कुन्ती सहित आए स्वपुर कौं अभिराम । बर सुदिन
पाय प्रवेश कीन्हौं सहित मङ्गल धाम ॥ * ॥ बैसंपायनउवाच ॥ * ॥ तब भीष्म दुसरो व्याह कीबे
पांडुको मतिमान । सह सचिव ऋषिन समेत सेना कियो तब प्रस्थान ॥ नृप मद्रपति के चले
पुर को मद्रपति सुधिपाय । सो आइ आगें करी पूजा गयो स्वपुर लेवाय ॥ बरदयो आसन दिव्य
ताकौं अर्घ पाद्य समेत । फिरि देइकै मधुपर्क बुझो कुशलप्रश्न सनेत ॥ जब आगमन को हेत पूछो
भीष्म तब मतिमान सुनि कहो कन्या हेत आये यहो शल्य सुजान ॥ हम सुनी भगिनी रावरी है
परम माद्री नाम । सो बरो चाहत पांडु नृपके अर्थ अति अभिराम ॥ तुम योग्य हौ सनबंधके मम
हौंनि हारे भूप । सो बिचारि सु मद्रपति यह कीजिए अनुरूप ॥ सुनि भीष्म के ए बैन बोलो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

°प° मद्रपति अभिराम। नहि मोहि तुमते ओर है संबन्ध मे गुणधाम॥ मम बंश मेजे पूर्व हैं तिन कियो धर्म प्रवृत्त। सो साधुहै कि असाधुहै सो होत है न निवृत्त ॥ वह व्यक्त ह्वैहै भीष्म तुमका विदित है जगमाह। नहि योग्य तुम सो देऊ कहिबे सुनऊ कुरु कुल नाह ॥ सुनि मद्रपति के बचन बोले भीष्म नीति सुजान। यह धर्म आपु स्वयंभु भावो पूर्व परम प्रमान ॥ जो होतहै कुलधर्म अपनो सो प्रमाण महान। नहि दोष तामे होतहै जो बंश विहित बिधान ॥ यह भीष्म कहि सु मंगाय मणिगण हेम रत्न अतोल। गज अश्व रथगण बसन भूषण दिए अमित अमोल ॥ सो लेइकै धन शल्य भूपति प्रीति करि अभिराम। तब दई अपनी स्वसा माद्री परम गुणगण धाम ॥ सो भीष्म माद्री मद्रपति की स्वसा लै बर बीर। तब गए हास्तिन नगरकौं जँह पण्डु कुरु कुल धीर ॥ शुभ पाय लग्न मुहूर्त्त सम्मत भीष्म भरि उत्साह।तब कियो माद्री पांडुको हित बंश वृद्धि बिबाह॥ करि पृथा माद्री सङ्ग भूपति यथाकाम बिहार। नृप पांडु रजनी तीस बीते कियो बिजय बिचार॥ सब जोतिबे कौं भूमि सेना सङ्ग लै चतुरङ्ग। तब निकसि बाहेर परो पुर के भरो बीर उमङ्ग ॥ पद बन्दि भीषम प्रभृति कुरुकुल वृद्धके अभिराम। धृतराष्ट्र ब्राह्मण ऋषिन के बर बन्दि चरण सलाम॥तब चलो सबसौं बिदा ह्वै कै परम आशिष पाय। शङ्ख भेरी पटह बाजे दुन्दुभी सुखदाय॥ बर खुले बाण निसाण अति बर सिन्धु लहरि समान। चढि चली सेना हली छिति छपि छार सौं मैं भान ॥ नृप पांडु लीन्हे महाबल बरबीर सुभटन्ह सङ्ग। सब जीति शत्रु दशार्ण लीन्हें दंड करि रणरङ्ग ॥ फिरि मगध के सब भूप जीते समर मे वरबीर। तब तहाँ रहिकै लयो तिनसौं महा धन रणधीर ॥ फिरि जाय मैथिल देशमे जे रहे भूप बिदेह। तब तिन्हे जीते समरमे नृप पांडु बर बल गेह ॥ नृप काशि पति अरु सुम्हपति जे पौंड्रपति क्षितिपाल। ते समरमे सब जीति तिनसौं लयो दंड बिशाल ॥ शर ओघ ज्वाल समान जाको पांडु पावक रूप। परि सलभ से सब जरे रणमे महा बल अरि भूप ॥ सहसैन अरिगण जीतिकै नृप पांडु अति बल बीर। ते किए अपने बश्य सिगरे भूप जे रणधीर ॥ जे गए जीते समरमे नृप पांडुतैं अतिमान ॥ तिन एक मानो सूर ताकौं शक्र सो बलवान ॥ ते पाणि जोरि रसाल लीन्हे मिले आय नरेश। गज बाजि रथ सो हेम अम्बर दए मणिगण बेश॥ सो लए तिनसौं दंड नाना भाँति रत्न महान। बऊ महा धन समुदाय लीन्हे पांडु नृप बल वान ॥ मुद करत हास्तिन पुरहि जनपद जनन कौं अभिराम। सो पांडु नृप गो निकट हास्तिन नगरके बलधाम ॥ जे पूर्व कुरु धन देश हारी रहे प्रबल नरेश। ते सकल जीते पांडु नृप करि युद्ध भे निःशेष ॥ सह सचिव पुरजन भीष्म आगें गए भरि आनन्द। अति लए धन नृप पांडु आवत लखो कुरुकुलचन्द ॥ सह कौरवन लखि भीष्म आवत महा बल को धाम ॥ तब उतरि रथतें पांडु बन्दे चरण चारु ललाम ॥ फिरि यथा योग्य सुपौर जनपद जनन को

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

करि मान। अति मर्दि परपुरराष्ट्र आयो देखि पुत्र सुजान ॥ तब भीष्म बरसे लाय हियसों परम आनंद लोचन नीर। लखि भरे पुरजन सकल कुरुकुल महामोद गँभीर ॥ बर बजत भेरी शङ्ख दुन्दुभि पटह अति अभिराम। तब गए भीष्म लेवाय हास्तिन नगरकों बलधाम ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ धृतराष्ट्रकी तब लेइ आज्ञा पांडुनृप धन जौंन। सो दियो भीष्महि गन्धकालिहि अम्बिकाको तान ॥ फिरि बिदुर सुहृद अमात्य जन जे रहे सेवक पर्म्म। लखि यथायोग्य बिचारि कै दिये पांडु नृपति सुधर्म्म ॥ अति भरी माता हर्षसों नृप पांडुकों लै गोद। जिमि सची लाय जयन्तकों हिय लहति अतिशय मोद ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पांडु उपार्जित धनकौं पाय। नृप धृतराष्ट्र मोदसों छाय ॥ अश्वमेधसम यज्ञ महान। शत संख्या कीन्हैं सबिधान ॥ बिपुल दक्षिणा दै कै भूप। भयो प्रसन्न महा शुचिरूप ॥ कुन्ती माद्रीको सत पाय। बनमे बसे पांडुनृप जाय ॥ छोडि प्रसाद भवन अभिराम। नाना भांति शयन सुख धाम ॥ मृगयाशक्त रहत बर बीर। हिमगिरिके दक्षिण रणधीर ॥ गिरि पर शाल सघन बन माह। कुन्ती माद्री सह नरनाह ॥ ह्वैक रेनुकामे सुर नाग। लसत पांडुनृप तथा सभाग ॥ खड्ग बाण धनु धारैं पर्म। पहिरैं मणिनजटित बर बर्म ॥ महाशस्त्रबिद नृपकौं देखि। बनचर कहैं देव अस देखि ॥ ताकौं भोग बलु सुखदान। पठवत निति धृतराष्ट्र सुजान ॥ रहो पारसव देवक नाम। ताके कन्या सुनो ललाम ॥ भीष्म मानि कै ल्याए ताहि। दई बिदुरकौं तौंन बिबाहि ॥ तामे करे पुत्र उतपन्न। बिदुर आपु सम मति सम्पन्न ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ गान्धारी के शत सुत भए। महाबीर अतिसै बलमए ॥ धृतराष्ट्र पुत्र बेश्यामे एक। भयो भूपसों भरो बिवेक ॥ भए पांडुसुत पांच ललाम। कुन्ती माद्रीमे बलधाम ॥ भए देवतनतें सब तौंन। बंश बृद्धिके कारण जौंन ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ गान्धारीके शत सुत जौंन। भए कौंन बिधि कहु द्विज तौंन ॥ कालान्तरको कितने पाय। जिए कितिक दिन कहहु बुझाय ॥ धृतराष्ट्रपुत्र बेश्यामें एक। करो कौन बिधि छोडि बिबेक ॥ गान्धारी सम भार्या जास। धर्मचारिणी अति कबिरास ॥ सदा सुश्रूषणमे अनुवृत्त। तासों कैसें भए निवृत्त ॥ शापयुक्त जो पांडु नृपाल। ताके तेजस भरे बिशाल ॥ भए देवतनतें सुत बीर। पांडव पांच कौंन बिधि धीर। कहहु सबिस्तर यह बृतान्त। बैसम्पायन मुनि मतिकान्त ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ स्नान क्षुधाश्रमतें मुनि व्यास। गान्धारीके आए पास ॥ गान्धारी करि यत्न अनेक। तोष्यो मुनिकहँ सहित बिबेक ॥ ताहि कहो मागन बर व्यास। शत सुत तेहि मागे तिन पास ॥ पति सँग लहो गर्भ ऋतु पाय। गान्धारी अति आनंद छाय ॥ धरँ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० गर्भ बीते द्वै बर्ष प्रसव भयो नहि कारक हर्ष ॥ कुन्तीके सुत भो अभिराम । सुनो भानु सम तेजस धाम ॥ थिरता देखि उदर को भूरि । भई बिकल अति चिन्ता पूरि ॥ सो पतिसों करि यत्न उपाय । उदर आपनो कूटो जाय ॥ गिरो उदरत लोह समान । मांसपिण्ड गुरु कठिन महान ॥ तास फेंकिब कियो बिचार । तब आए मुनि व्यास उदार ॥ मांसपिण्ड सो मुनिबर देखि । गांधारीसों बूझो लेखि ॥ कहा कियो तुम चाहत याहि । सत्य दियो तेहि ताहि बताइ ॥ * ॥ गान्धार्य्युवाच ॥ पुत्र भयो कुन्तीके ज्येष्ठ । भरो भानुसो तेजस श्रेष्ठ ॥ सुनि कै भरी खेद उतपाता । यातें कियो उदरको घात ॥ शत सुत दायक तो बरदान । भयो मांस कोपिंड महान ॥ व्यास उवाच ॥ दियो सुबर हम तुमकौं जौंन । हे गान्धारी कूहै तौंन ॥ कुंड एकशत घृतसों पूर्ण । मांगऊ गान्धारी अति तूर्ण ॥ गुप्त स्थलमहँ देऊ धराय । मांसपिंड सींचऊ जलनाय ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ भो बऊखंड परंत जल तौंन । मांसपिंड हो अति दृढ जौंन ॥ खंड अंगुष्ट पर्व सम मान । एक अधिक शत भए सुजान ॥ ते सब क्रम तें खण्ड अनूप । घृतघटमांह धरे सब भूप ॥ गुप्तस्थलमहँ रचित राखि । गए व्यास मुनि अैसें भाखि ॥ बर्ष एक अति कीजो यत्न । फेरि लखोगी सुतचय रत्न ॥ तिनमे तें लहि क्रम अनुरूप । प्रथम भए दुर्योधन भूप ॥ प्रथम जन्म तें क्रम अनुमान । भए युधिष्ठिर ज्येष्ठ सुजान ॥ जेहिदिन भो दुर्य्योधन भूप । तेहि दिन भीमसेन बलरूप ॥ जन्मत दुर्योधन भय भौंन । महाराव करि रोयो तौंन ॥ ताके सङ्ग शब्द गोमायु । खर बोले भइ उल्लत बायु ॥ चारो ओर भयो दिगदाह । सुनि धृतराष्ट्र त्यजो उतसाह ॥ भरे भीति बोले इमि बैंन । ल्यावऊ द्विजबर जे मति अैंन । भीष्म बिदुर जे सचिव उदार । बृद्ध जे कुरुकुलमे सरदार ॥ तिन्हैं बोलाय कहे ए बैंन । भरो भीतसों निर्गत चैंन ॥ ज्येष्ठ युधिष्ठिर कूहै भूप । कुलबर्द्धन बर धर्मस्वरूप ॥ ताके अनु यह मो सुत जौंन । राज्य करै गो सुनिए तौंन ॥ याके जन्मत चारो ओर । बोली शिवा शब्दगण घोर ॥ भयो शकुन भयकारक भूरि । कहऊ बिप्रबर फल हि बिसूरि ॥ बिदुर सहित बर बिप्रण तौंन । कहो भयो अशकुन भय भौंन ॥ ज्येष्ठ पुत्र तो होते भूप । अशकुन भए महाभय रूप ॥ वंश नाश कारक सुव्यक्त । भयो कीजिये याकौं त्यक्त ॥ और शान्ति नहि यामे भूप । करि सुत त्याग होऊ सुखरूप ॥ एक जणशत सुत तव पर्स । रहि हैं कुरुकुल कुशल सधर्म ॥ एक त्यागि सुत जगत सचन । करऊ भूप यह मानऊ बैंन ॥ सुनऊ परम यह नीति निदेश । उचित होय सो करऊ नरेश ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एक छाडि कुल राखिए कुल तजि ग्राम सुजान । देश राखिए ग्राम तजि देश राखिये प्राण ॥
द्विजन कहो बिदुरौं कहो कुल रक्षणके हेत । नहि मानो धृतराष्ट्र नृप पुत्र प्रीति भरि चेत ॥
भए पुत्र धृतराष्ट्रके एक मासमे सर्ब । दुर्य्योधन जेठे भए ता अनु जेठे खर्ब ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भई कन्या एक अधिकी सुतनते अभिराम। भयो शतते अधिक जान युयुत्सु वैश्यको धाम॥ गर्भ क्लेशित भई जब गन्धार पतिजा भूप। धृतराष्ट्र वैश्यासों रमे व्है काम पीडित रूप॥ भयो ताही वर्षमे धृतराष्ट्रतें सुत तीन। महावीर युयुत्सु वैश्यापुत्र मति वर जान॥ भए जैसें एक अधिकी पुत्र शत अभिराम। भई गन्धारी सुता बढि सुतनतें गुणधाम॥ * ॥ जनमेजयउवाच॥ * ॥ कहे तुम हम सुने हे धृतराष्ट्र सुत शत जौन। भई कैसें एक अधिकी सुता कहिए तौन॥ दियो हो शत पुत्रको वर भहा मुनि अभिराम। लही कैस कन्यका गन्धार पतिजा नाम॥ खण्ड कीन्हों शत सुमुनि वह मांसपिण्ड उदार। भई नहि सौबली कन्या दुःसला फिरि दार॥ कहऊ मुनि समुझायके यह भयो अति सन्देह। अधिक किमि शत सुतनते भइ दुःसला छबि गेह॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच॥ * ॥ मांस पिण्डहि सींचि कै जल शीतसों मुनि व्यास। किए सम शत खंड कल्पित सुनऊ भूपति तास॥ यथा कल्पित भाग लहि घृत कुण्डमे ते नाय। लगी सेवन धाय तिनकों यत्नसों सुखदाय॥ याके अनन्तर सौबली करि सुताको अनुराग। लगी करण विचार जैसे भरी भूरी सौहाग॥ होंहि गे शतपुत्र मेरे सत्य मुनिवर बैन। एक होती कन्यका तौ परम लहती चैन॥ दौहित्र सम्भव लोककों गति लहत अति अभिराम। जामाट लखि कै प्रीति पावति महा मनमे वाम॥ शत पुत्रते जौं अधिक होती कन्यका लघु मोहि। धन्य कहते पुत्र सह दौहित्र जगजन जोहि॥ सत्य मख तप दान व्रत गुरु चरण सेवन पर्म। होउ तो मो एक कन्या रूप राशि सुधर्म्म॥ मांस पिंड विभाग लागे करणकों जब व्यास। एकशत गणि खंड बोले सौवलीके पास व्यास उवाच॥ * ॥ पुत्रके शतखंड ए हैं सत्य मेरे बैन। एक लेउ सु सुताको यह खंड पावऊ चैन॥ सौबली घृतकुम्भ और मगंद्र कै अभिराम। धरो ताने कन्यकाको भाग लहि मनकाम॥ कहो भूपति दुःसलाको जन्मको क्रम जौन। कहऊसो अब कहैं आगे होइ इच्छा जौन॥ जनमेजय उवाच॥ *॥ धृतराष्ट्रके सब सुतन को क्रम ज्येष्ट लघु को आम। सुनो सो जो कहो हौं तुम पूर्व अति अभिराम॥ सकल अतिरथ युद्ध कर्ता रहे सब विद बेद। व्याह करि धृतराष्ट्र तिनको भए निर्गत खेद॥ दुःसलाकों व्याहि दीन्हो जयद्रथकौं भूप। तौन मुनिवर पूर्व तुमसों सुनो हो अनुरूप। धृतराष्ट्र के सब सुतनको भो आर्ष शम्भव तौन। असनुष्य विधिसों मनुज शम्भव कियो मुनिवर जौन॥ पांडुके अब वंशको सुनि कहऊ सर्व विधान। भए पांडव सकल जैसें देव राज समान॥ कहो अंश अवतरण मे तुम देवसम्भव जौन। कहो तिनके जन्मकौं मुनि सहित विस्तर तौन॥ * ॥ वैसम्पायन उवाच॥ * ॥ महावनमे पांडुनृप हे फिरत मृगया हेत। लख्यो यूथप मृगन को हो मृगीकौं रति देत॥ मृग मृगीकौं पांडु मारे पाँच बाण महान। तौन हो मुनि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पु॰ पुत्र भाष्या सहित तपसनिधान॥शरविद्ध सो सह मृगी कीन्हों मनुजवत आलाप॥भूमि प गिरि महा व्याकुल लगो करण बिलाप ॥ काम क्रोधी नष्टमति नहि करत अैसे कर्म्म । कियो जैसो भूप तुम यह क्रूर कर्म्म अधर्म्म ॥ नहि बुद्धि दैबिहि हरति कबहुँ हरति दैवीं बुद्धि । होति दैवी आय तैसी लहत जन गण शुद्धि॥धरमातमनमे मुख्य है कुल रावरो अभिराम । कियो आपु समान नहि यह भूप अधरम काम ॥ * ॥ पांडुरुवाच ॥ * ॥ नृप वृत्ति जो है शत्रुमै सो मृगनहूमे उक्त। जौन मृग मम करत निन्दा तौन नहि बिधि युक्त॥प्रगट छल करि मारिवो मृग कहो भूपति धर्म्म ।करत निन्दा वृथा मृग हम कियो क्षत्रीकर्म्म ॥ करी सत्रासोन सुमुनि अगस्त्य मृगया पर्म्म ।दयो आज्ञति सुरणकों मृग मांसकी लहि पर्म्म ॥*॥ मृगउवाच ॥*॥ हनत हैं नहि अरिनहूकों बीर समय बिचारि।सुप्त कामाशक्त और प्रमत्तकों निरधारि ॥ पांडुरुवाच ॥ लहत जैसें हनत तैसें अरि मृगण का भूप । क्षात्रधर्म बिचारि कैतब कहऊ मृग अनुरूप ॥मृगउवाच॥हनत मृग नहि ताहि निन्दत भूप अपने हेत । नहीं मेरो लखो मैथुन कियो कर्म्म अचेत॥सर्ब जन हित सर्ब हसित सुरति सङ्गम काल । करत मैथुन हनत मृगको भूप सुमति बिशाल ॥ यह मृगोमे हम प्रजा कारण कियो सुरति प्रसङ्ग । तौन सो पुरुषार्थ को फल कियो भूपति भङ्ग ॥भए परम विवेकमय कुरुवंशमे तुम भूप। मोहि मारो सुरतिमे यह कियो नहि अनुरूप ॥ स्वर्ग नाशक धर्म्म ध्वंसक अजश कारक जौन। जानि रति रस रङ्ग सुख यह कियो कारज कौन ॥ क्रूर कर्म्म बिचार बिनु यह कियो पापाचार। हनो मोकों दोष रहित बिचारि कै न उदार॥ फल पत्र भोजन करत धारे रहत मृगको रूप॥ बसत बनमे बिप्र मुनि गहि शांतवृत्ति अनूप ॥ हनो मोहि बिचार बिनु हौं देत यातें शाप। करत बनिता सङ्ग मरिहो भूप लहि यह पाप ॥ सुमुनि किन्दम नाम हौं हम धरे मृगको रूप। रहत बनमे मृगन सँग फल पत्र भक्षत भूप ॥ मनुज तनुसों भई हमकों करत रति अति लाज। मृग मृगी व्है करत यातें ऊते रति सुख साज॥ब्रह्महत्या होयगी नहि तुह्मे भूप सुजान ।मानि कै मृग हनो मोहि न भयो मुनिको ज्ञान ॥ काम मोहित जानि कै मृग मोहि मारो भूप। मृगी सह तेहि पापको फल लहऊ गे अनुरूप ॥ प्रिया सङ्गम करऊ गे जब कामबश क्षितिपाल। जाऊ गे जमलोककों नृप पांडु लहि सो काल ॥ प्रिया व्है सह गामिनी तो सङ्ग जैहै भूप। जास सङ्गम करत मरिहौ सुनऊ भूप अनूप ॥ यथा सुखमे दुःख दीन्हो मारि कै नृप मोहि। तथा सुखमे दुःख ह्वैहै प्राप्त भूपति तोहि ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ मृगरूप मुनि यहि भांति कहिकै छोडि दीन्हो प्राण। गए पांडु महीप व्है दुःखार्त्त मनस महान ॥ बन्धुसा तजि गए मुनि मृत भूप भरि संतापास्थान पैं सह भार्य्या लागे जाय करण बिलाप ॥ * ॥ पांडुरुवाच ॥ * ॥ शत बर्षमे लै जन्म दुर्गति लहत करि दुःकर्म्म। कामजाल बिमोहतें भ्रम भरें भूलत धर्म्म ॥ भूप शान्तनु धर्म्मधुरको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पुत्र मेरो तात । काम बशह्वै बालपनमे लहो सरुज निपात ॥ क्षेत्रमे तेहि काम आत्मा के महा मुनि व्यास । मोहि जायो भयो व्यसनी धरे हिंसाभ्यास ॥ मोक्षको व्यवसाय करि हौं पिता की लै बृत्ति । त्याग करिकै कामना सब रहौं होय निबृत्ति ॥ एक व्है तपनिष्ट बास एकैक तरुके पास । रहि हौ सु भिक्षा बृत्ति करि व्है भिक्षु निर्गत आस ॥ भूमिशाई शून्यमे करि बृक्ष मूल निकेत । प्रिया प्रिय तजि शोच हर्ष अमान मान समेत ॥ चतुर्बिध जन चलाचलमे धारि दाया पर्म्म । मानि कै स्वप्रजाइव सब त्यागि हिंसा धर्म्म ॥ एककालमे दश पांच घरतैं मागि भिक्षा खाय । करैं अनशन मिले बिनु संतोष मनमे छाय ॥ लाभ और अलाभमे सम रहत हैं तपधाम । देह छीलै कोऊ लावै मलयलेप ललाम ॥ कल्याण अरु कल्याण तिनके चहत नहि मतिमान । जीवितेछा मरण इछा रहि तजे समज्ञान । असक्य जीवित उदै हित है क्रिया करिबो जौन ॥ छोडि तिनकौं देइ जानि निमेष भंगुर तौन । करै जानि अनित्य इन्द्रियकी क्रियनको त्याग । छोडिकै धमार्थ धोवैं आत्मकल्मष दाग ॥ पापसौं निर्मुक्त होय सु काटिकै भय जाल । अवस्य व्है कै रहगो सम बायु के सबकाल ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

एहि प्रकारसौं धीरज धारि । राखैं तनुपथ अभय बिचारि ॥ अपत्योत्पादन त हीन । भोमै शाप पाय कै छीन ॥ करिबे जोग्य न है गृह धर्म । बाणप्रस्थ योग्य ममपर्म ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यह कहि कै दुःखारत भूप । ऊरधस्वास लई अति रूप ॥ कुन्ती माद्रीकौं नृप देखि । कहन लगे यह बचन बिसेखि ॥ माता पिता नहीसौं जाय । भीष्म बिदुर सौं अति समुझाय ॥ कहि यो इमि पद तिनके देखि । मेरे ए सुबचन अवरेखि ॥ गए पाण्डु बनकौं बरराज । सकल छोडि कै सहित समाज ॥ सुनि भर्त्ता को बचन महान । कुन्ती माद्री कहो समान ॥ करिबे योग्य सु आश्रम और । है भूपाल सुनऊ शिरमौर ॥ सो आश्रम संग्रह करु भूप । हम सह तुम तप करऊ अनूप ॥ जातैं स्वर्गऊ माहि उदार । हम तुम्हैंहि पावैं भर्त्तार ॥ करि निग्रह इन्द्रिन को ग्राम । भर्तृ लोक लहिबेके काम ॥ छोडि काम सुख सकल ललाम । तुम सँग तप करि हैं अभिराम ॥ जौं हम कौं तजि हौ तुम भूप । प्राण छोडि हैं अद्य अनूप ॥ पाण्डु रुवाच ॥ * ॥ जौं तुम्हार अैसो व्यवसाय । सुनऊ प्रिया हम सत्य सुभाय ॥ पिता वृत्त हम धरिहैं तौन । धर्म्म भई अति अव्यय जान ॥ छोडि ग्राम्य सुख अन्नाहार । करि हैं तप अति उग्र उदार ॥ बलकल बसन मूल फल भक्ष्य । महा बिपिनि मँह बास अरक्ष्य ॥ हवन स्नान दुहूँ करि काल । फल भोजन मृगचर्म्म जटाल ॥ शीतातप सहि क्षुधा पियास । तन शोषक करि सुतप प्रयास ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० करि एकान्तस्थलमे बास । पक्वापक्व असन जल पास ॥ जाय सु बाणप्रस्थ के पाहि ॥ कबहूँ कछू मागि हौं नाहि ॥ कौन कहै कुलजनकी बात।सत्य कहत हौं तुमसों ख्यात॥ विपिनि बासको शास्त्र विधान।एकएक त उग्र महान॥ कांक्षमाण करिबेकौं तौन। जबलौं करै देहँ यह गौन॥ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रानिन सौं अैसैं कहि भूप । चूडामणि कुण्डल अनुरूप॥ धन नणि बसन जे रहे महान। रानिनके भूषण सुख दान ॥ पांडुनृपति सब बिप्र बोलाय ।दियो सकल यह बचन सुनाय॥जाय हस्तिना पुर नृप पास ।कहेऊ पांडु कीन्हों बनबास ॥ अर्थ काम रति सुखद बिलास। तजि नृप पांडु कीयो बन बास ॥गए भार्य्यान सह बनमाँह। कहेऊ जहाँ कुरुकुल नरनाँह ॥ तास अनुग परि चारक जौंन। ए सुनि पांडु बचन सब तौंन ॥ भीम आर्त्तस्वर हाहा कार । करि रोए भरि शोक उदार ॥ उष्ण अश्रु मुञ्चत भरि शोक ।गए नागपुरते नृप ओक ॥ धृतराष्ट्र निकट धन लीन्हे तौन। कहो भयो वृत्तान्त सु जौंन ॥ सुनि तिन तैं वृत्तान्त नरेश।भए शोकबस करुणा बेश॥ असन शयन तजि भोग विरक्त । भए भूप अति शोकाशक्त ॥ करत मूल फल पांडु अहार। करन लगे घनगहन बिहार ॥ गए नागशत गिरिकौं भूप । रानिन सहित धरे मुनि रूप ॥ फिरि चैत्र रथ बनको देखि ॥ कालकूट गिरि क्रोडि विशेखि ॥ क्रोडि महा हिमगिरि अति रूप । गए गन्ध मादनकौं भूप ॥ सिद्ध ऋषिणसौं रक्षित होय । रहत बिषम सम थलमहँ सोय ॥ इन्द्रद्युम्न सरको तब जाय । हंसकूट गिरि गे सुख दाय ॥ गिरि शतशृङ्ग गए नृप नाथ । करण लगे तप मुनिगण साथ ॥ मुनिगणके प्रिय दरशन भूप । भए सु पत्निन सह अनुरूप ॥ काहूके भे भ्रात समान । काहूँ मानो सखा बिधान ॥ काहूँ पुत्र सदृशकरि प्रीति । वृद्ध मुनिन मानो सह नीति ॥ बञ्चत काल तहँ तप करि भूप ।भए परम निःकल्मषरूप ॥ ब्रह्मऋषिण के सदृश नरेश । भए भरे तप तेज अशेश ॥ अमावास्या लहि मुनि सर्व । भरे महा तपतेज अखर्व ॥ब्रह्माके दर्शनके काम । चले बिचारि सकल तपधाम ॥ चलत देखि मुनिगण कहँ भूप । बूझन लगे बचन सुखरूप ॥ आजु कहाँ तुम सहित समाज । जात कहौ हमसौं मुनिराज ॥ * ॥ ऋषिरुवाच ॥ * ॥ मेला आजु ब्रह्मपुर माह । देवर्षि पित्रनको नरनाह ॥ तहां जात हम सब तपधाम । स्वायम्भूदर्शन मन काम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनतहिँ उठे पांडु यह बैन । पत्निन सहित भरे हिय चैन ॥ मुनिन सङ्ग चलिबेकौं चाहि । स्वर्ग अपार पार अवगाहि ॥ चले उदङ्मुख मुनिगण साथ । पत्निन सहित पांडु नरनाथ ॥ मुनिन कहो तब नृपसौं बैन । पथ यह भूप योग्य तव हैन॥ स्वर्ग मार्गमे व्है हम जात।दुर्ग मार्ग अति घोर लखात।महा नदिन के घोर करार। गव्हर गुहा शैल बनचार ॥ कोटिन जहां विमान समूह । देवन के क्रीडा बन जूह ॥ उच्च निच्च धनपति उद्यान । सकत जाय को तहँ बिनु जान॥ हिमसौं भरो सो देश महान । तरु पक्षी मृग बंग जहाँ न ॥ कहूँ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दूर्ग ऐसे अतिगात। जाके पक्षी पार न जात॥ वायु जाय कै येाग समृद्धि। जिनके परम खेचरी आप्य सिद्धि॥ शैलराज मह गमन समान। ए नहि राज सुता सुखदान॥ दुःख येाग्य ए हैं नहि भूप। लहिहैं कष्ट तहाँ अति रूप॥ ॥ ॥ पांडुरुवाच॥ ॥ ॥ प्रजाहीन हैं नर मुनि जैान। स्वर्ग द्वार नहि पावत तैान॥ तन रहत तातें हम नित्य। देखि आपनेा अप्रज निमित्य॥ भए न पितृ सु ऋण न मुक्त। यातें रहत पापतें युक्त॥ होत मनुज ऋण धारें चारि। देव पित्र ऋषि सुनर बिचारि॥ इनतें छुटे बिना नहि स्वर्ग। पावत कहत धर्म्म विद वर्ग॥ मखतें देव श्राद्धतें पित्र। ऋषि ऋणि पढे सुवेद पवित्र॥ बिना अपत्य श्राद्धको नाश। लहत न पित्र स्वर्गको बास॥ क्रूर कर्मको कीन्हे त्याग। मिटत मनुज ऋणि सुनऊ सभाग॥ देव मनुज ऋषि ऋणितें मुक्त। मुनि हम भए कर्म करि युक्त॥ ॥

॥ ॥ रोलाछन्द॥ ॥ ॥

पित्र ऋणिसेां छुटे अबलेां सुनऊ नहि तपधाम। होत हैं तब प्रजा कारण परम पुरुष ललाम॥ पिताके ज्यें। क्षेत्रमे मुनि मेाहि जायेा व्यास। चहत अपने क्षेत्रमे त्यें। प्रजा हैं। सुखरास॥ ऋषि रुवाच॥ होयगे तेा प्रजा राजन् दिव्य देव समान। दिव्यचखसें। जानि कै हम कहत वचन प्रमान॥ दैव निर्मित कर्म्मको यह कहत नृप उद्देश। प्रगट फलकें। पाइ हेा हे नियत सुनऊ नरेश॥ तैान फलको यत्न कीन्हे सुनऊ भूप सुजान। पुत्र गुण सम्पन्न सिगरे लहऊ गे बलवान॥ वैशम्पायन उवाच॥ ऋषिनके सुनि बचन मनमे भए चिन्तित भूप। शाप हत अनुमानिके सब भाँति अपनेा रूप॥ कहेा लहि एकान्त कुन्तीसें। बचन मतिमान। करऊ यत्न अपत्यको यहि बिपतिमे सुखदान॥ अपत्य नामक धर्म्मके समुदायको थिति मूल। यह जानु कुन्ती सत्य बादिनि धीर धर्म्म अतूल॥ दानजप तपयज्ञ व्रत बर नियम निष्ठित जैान। होतहैं न अपत्य बिनु ए सुनऊ पावन तैान॥ तैान हम तहँ प्रगट देखत सुनऊ सुन्दरि बैन। शुभ लेाकको नहि लहैंगे अनपत्य व्है कै चैन॥ मृग शापत मेा प्रजा कारक भाव व्है गेा नष्ट। पुत्र द्वादश भाँतिके हैं सुनऊ ते अस्पष्ट॥ सुनु बन्धु दायाद हैं षट ए पुत्र धर्म्म विधान। हे अबन्धु दायाद षट विधि प्रिया पुत्र सुजान॥ स्वयं जात प्रणीत दूजेा परिक्रीत सुजैान। पैानर्भवेा कानीन पंचम स्वैरिणी भव तैान॥ स्वयं जात जेा पुत्र औरस कहत जैान प्रणीत। पांडु आदिक पुत्र जैसें करे व्यास पुनीत॥ परि क्रीत जेा धन देय द्विजसें। लेय पुत्र कराय। पुनर्भू मे होय पैानर्भव सुसेा हे तहे सुखदाय॥ व्याह दूजेा होय ताको पुनर्भू सेा दार। शास्त्रको अवगाहि कै मत कहत बुद्धि अगार॥ स्वैरिणी भव जैान जारज होय पतिके धाम। देइ कन्या व्याहि यह संकल्प पढि अभिराम॥ संकल्पश्च॥ अस्यां येा जायते पुत्रः समे पुत्रेा भविष्यति॥ ता कन्यकाके होय पुत्र सेा पुत्र धर्म्म बिधान॥ ॥ अथषट अबन्धु दायादा॥ ॥ देई माता पिता जाकें। दत्त सेा गुण मान॥ देय कै धन लेइ जैसेा क्रीत कहिये ताहि। सहोढकन्या गर्भमे जेा पुत्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० आवत व्याहि ॥ पुत्र कृत्रिम आपुसौं सो होय आय प्रसन्न । पुत्र गोत्रज बन्धु तें जु कराइऐ उत्पन्न ॥ तौन पञ्चम पुत्र षष्टम चेटिका भव आम । लेत उत्तम तैं अपत्य विपत्तमे मति धाम ॥ *❁**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुत्र जो भ्राता एक कै औरस होय उदार । सो दशभ्रातनको करै धर्म्म सहित उद्धार ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पुत्र औरस तैं अधिक हैं श्रेष्ट सम्भव जौंन । स्वयंभु मनुको बचन यह हम कहत तुम सौं तौंन ॥ पुत्रके जनमाइबे मैं आपुकौं लहि हीन । तुम्है तातैं देत आज्ञा प्रिये जानि प्रवीन ॥ सदृशते कै अधिकतैं उत्पन्न करऊ अपत्य । सुनऊ सारद डायनी इतिहास भो सौं सत्य ॥ सो बीर पत्नी पाय आशा सुमतिकी अभिराम । दुर्जयादिक पुत्र जाए त्रीणि बलके धाम ॥ तथा तुम बर विप्र सौं अति उग्र तपमय जानि । पुत्रके उत्पत्यकी विधि करऊ यत्न सुजानि ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पांडुके सुनि वचन कुन्ती कहन लागी वैन । बचन मो सो कहन कौं यह योग्य तुम कौं है न ॥ धर्म्मपत्नी पतिव्रतरत धरें तुममे प्रीति । चहति तुमसौं पुत्र की उत्पत्य धर्म्मज रीति ॥ स्वर्गहू के गमन की है साध तो मनकाम । देऊ मोहि अपत्य तुम तैं अन्यको अभिराम ॥ सुनऊ यह पौराण की तुम कथा मोसौं भूप । सुनो हैं हम प्रथम जो द्विजबरन सौं अनुरूप ॥ पूर्व नृप व्युषिताश्व हो अति ख्यात बलको धाम । कियो सुर सन्तोष करि बऊ यज्ञ अति अभिराम ॥ जीति चारो दिशा लीन्ही भूपते बलवान । काक्षीव पतिकी सुता भार्य्या लही आपु समान ॥ नाम भद्रा तास अति गुण रूप मय सुखदान । भयो भोगाशक्त तासौं भूप अतिबलवान ॥ राज यक्ष्मा भई ताको मरो सो वह भूप । शोक आरत भई भद्रा महा दुःखित रूप ॥ * ॥ भद्रोवाच ॥ * ॥ बिनापति है जियति नारी धर्म्म शीला जौंन । मृत कहूतैं ही तिहै सो अधिक जावऊ तौन ॥ यहि भांतिसौं सब गोदमे लै करत ताहि बिलाप । सुनो अन्तरध्यान वाणी भई सरता ताप ॥ उठऊ भद्रा जाऊ घरकौं लेऊ बर अभिराम । पुत्र तो मे करौगो उतपन्न बलको धाम ॥ चतुर्दशीकै अष्टमीकौं सेजमे तो आय । सङ्ग तेरो करौं गो हौं ऋतुस्नाता पाय ॥ पुत्रार्थिनी सो बचन सुनि कै कियो तौन विधान । मृतक पतितैं भए त्रीणि सु पुत्र शाल्व महान ॥ मद्रपति भे चारि तातैं पुत्र अति अभिराम । तथा मो मे मानसिक सुत करऊ भूप ललाम ॥ जनमाइवेके योग्य हौ तुम पुत्र तप [illegible] ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यहि भांति कुन्तिके बचन सुनि पाण्डुनृपति सुजान । [illegible] धर्मज्ञ ऐसैं कहन लागे बैन ॥ कियो यह व्युषिताश्व सो हो अमर सम तप ऐन । कहत हौं [illegible] है तत्व सुनिए तौंन । ऋषिन परम पुराण पुरुव धर्म भाखो जौंन ॥ स्ववश्य आगैं रहत [illegible] चारिणि सर्व । करहि अपने कामना व्यभिचार पाय न खर्व ॥ होय आगे रहो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुन्दरि सुनऊ अैसो धर्म । त्रिजग योनिन मेरहो अब धर्मसो वह धर्म ॥ वह धर्म उत्तर कुरु आ॰
सुनामा खण्डमे है दार । अद्यापि ताहि महर्षि धारण करत बुद्धि अगार ॥ सो सनातनधर्म इक्षिन
को अनुग्रह कर्न । यहि देसमे मर्य्याद बांधो महामुनि मिति धर्न ॥ उद्दालक सुमुनिको पुत्र
हो मुनि श्वेतकेतु महान । मर्याद यह तेहि परम बाँधी सुनऊ तास बिधान ॥ श्वेतकेतु स पिता
देखत बिप्र आयो एक । पकरि ताकी जननिकों लैं चलो सुरति निकेत ॥ मुनिपुत्र कीन्हो कोप
अनुचित हिए मे निरधारि । पिता वारण कियो तेहि प्राचीन धर्म बिचारि ॥ सब वर्ण कीजै अङ्ग
नाते सुत अरुन्धित होय । रमै अपने वर्णमे गो सदृश कामुक जोय ॥ श्वेतकेतुन धर्मसो वह सहो
अति करि कोप । करो इस्त्री पुरुषको मर्याद यह आरोप ॥ नारि पतिको छोडि कै रति और
नरसों पाय । ब्रह्महत्या पापकौं लहि नर्कमे सो जाय ॥ पुरुष जौन पतिव्रतासों करै गो रति रङ्ग
आजुतें यह पाप ताको तजैगो नहि सङ्ग ॥ पति तियहि भेजै प्रजा काजै पुरुष औरै पांहि । जौ
जाय नहि तौ बसै यहही पाप तिहि तियमांहि ॥ मर्य्याद अैसी भांति थाप्यो श्वेतकेतु महान ।
तौन हमकौं विदित है तहँ सुनो हे सुखदान ॥ व्यासतें कुरुवंश जैसें वृद्धि भो अभिराम । तौन
कारण देखि मेरो करऊ बचन ललाम ॥ परि कहै करिबें जौन सो कर्त्तव्य तियकौं कर्म्म । पति
बचनको उल्लङ्घ करिबो सो न पतिव्रत धर्म्म ॥ ऋतुस्नाता होय इस्त्री जाय तब पतिपास । बिना
ऋतु संयोग पतितैं मने कामबिलास ॥ सुत लालसी उप जायबेकी सुतहि नहि सामर्थ्य ।
कही मेरी मानि सांजलि करुण सुन्दरि व्यर्थ ॥मम मानि आज्ञा जानि कै बर बिप्र तप सम्पन्न ।
करऊ गुणमय बीरपुत्र सु प्रथा तुम उतपन्न ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पाण्डुके सुनि बचन कुन्ती कहे
बैन ललाम ॥कुन्त्युवाच ॥ अतिथि पूजन करत ही हौं पिताके बसि धाम ॥गए दुर्वासा अति तहां
उग्रतपके धाम । कियो सेवन तास हौं सब भांतिसों अभिराम ॥तिन दियो होय प्रसन्न मोको मंत्र
सहित बिधान ।कहो तुम यहि मंत्रतें जेहि देवको आह्वान॥ करौं गी सो वस्य ह्वै आय तो अभि
राम ।प्रजा तास प्रसादते तुम लहै गी बलधाम ॥महा मुनिको बचन सो है सत्य सुनिए भूप । समै
ताको प्राप्त भो तो बचनके अनुरूप ॥कहो तुम जेहि देवको तेहि देवको आह्वान ॥करौं हौं धरि
नियम जप करि मंत्र सहित बिधान ॥पांडुरुवाच ॥धर्म्मको आह्वान पहिले करऊ सुन्दरि पर्म्म॥
होय जाते पुत्र पावन प्रजापालक धर्म्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तथास्तु तासों कहो
कुन्ती सुपतिशासन पाय । करि प्रदक्षिण दण्डवत किय भूपकौं सुखदाय ॥ * ॥ वैशम्पायन
उवाच ॥ * ॥ गन्धारजा कौं गर्भ धारे बर्ष बीतो एक । कियो कुन्ती धर्म्मको आह्वान तब सवि
बेक ॥ प्रथम पूजन द्रव्यसों करि धर्म्मको अतिपर्म्म । फेरि कीन्हो मन्त्रको जप चाहि आगम धर्म्म ॥
मंत्र बलतें धर्म्म आए बिप्र ताके पास । चढे चारु बिमानप सम सूर्य्यके सङ्कास ॥ बिहसि बोले

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कहऊ कुन्ती कहा दीजै तोहि। कही कुन्ती धर्म्मसों प्रभु पुत्र दीजै मोहि। संयोग कुन्ती धर्म्मका करि पुत्र जायो तोन। धर्म्म सोहै धर्म्ममें सब जीवको हित जौन॥ पञ्चमी मितपक्ष ज्येष्ठा तुला को लहि ब्रैन। अष्टमाब्द मुहूर्त्त अभिजित परम पूरित चैन॥ मध्यान्हमे यशसिन्धु कुन्ती पुत्र जायो धर्म्म। जात मात्र सुपुत्र नभ मे सुनी बाणी पर्म्म॥ धर्म्मभृतमे श्रेष्ठ ऊहै यह नरोत्तम वीर॥ धरासवको भूप हूहै सत्यवक्ता धीर॥ पांडूको यह प्रथम पुत्र सु है युधिष्ठिर नाम। होय गे तिऊँ लोकमे यह कथित अति अभिराम॥ तेजमय सम धर्म्मतें सुत पाय पांडु सुजान। बल ज्येष्ठ लगे होत है अब करऊ सुत बलवान॥ पांडुको सुनि बैन कुन्ती वायुको आव्हान। कियो पढि कै मंत्र आए वायु जे जनप्राण॥ चढे मृगपर परम सुन्दर महाबलके धाम। कहा कुन्ती देहि तुम कॉ कहऊ सो अभिराम॥ सलज्ज कुन्ती पुत्र मागो महाबल अतिकाय। अरि दर्पहा करि वायु सङ्गम दियो सुत सुखदाय॥

॥ * ॥ चरणाकुलछन्द ॥ * ॥

भीमसेन सुत ताको जायो। महावीर बलमय छविछायो॥ जनमत ताहि गगन बे बाणी। भई सुनी अतिसै सुखसानी॥ बलिन माह यह अतिबल भायो। कुन्ती तनय भीम यह जायो॥ कुन्ती रही भीमकॉ लीन्हें। धरें गोदमे निश्चित कीन्हें॥ आयो व्याघ्र अचानक तेहां। गिरिपर बैठी कुन्ती जेहां॥ देखत भगी महा भय मानी। गिरा गोदतें सुतहि भुलानी॥ गिरो शिला जेहि भीम खरारी। भई चूर्ण सम शिला सो भारी॥ पांडु शिला लखि विस्मय पायो। जेहि दिन भीम सेन तहँ जायो॥ ताहि दिन दुर्योधन भए। फेरि पाण्डु यहि चिन्तभए॥ लोकाधिक सुत भयो न भारी। देव दनुज सम बरबल चारी॥ देव राजको सेवन कीजै। तप करि महाबीर सुत लीजै॥ पांडु ऋषिणसों मंत्र सुकीन्हों। सम्वत्सर व्रत कुन्तिहि दीन्हों॥ आपु एकपद क्षिति पर धारें। करत महातप मन कह मारें॥ इन्द्राराधन अैसें करिकै। भए भानु सम तेजस भरि कै॥ बऊतकाल पर वासव आए। कहन लगे नृपसों मुद छाए॥ * ॥ इन्द्रउवाच॥ * ॥ देत भूप सुत तुमकौं अैसो। काहू लहो न अबलौं जैसो॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

गो ब्राह्मण सुसुहृद हित साधक। खल दुर्जनकौं दुःसह बाधक॥ भूपति सुनि सुरपतिके बैन। सो कुन्ती सो कहो सचैन॥ तुम पह सुरपति महत प्रसन्न। दियो चहत सुत गुण संपन्न॥ पुत्रोत्पन्न करऊ तुम तौंन। महाबीर जगजेता जौंन॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ भूपतिके कुन्ती सुनि बैन। इन्द्राबाहन कियो सचैन॥ आए सुरपति तापँह तूर्ण। दियो पुत्र अर्जुन गुणपूर्ण॥ जनमत मात्र ताहि सुखदान। गगण गीरा बोली अतिमान॥ सुनो जीव जन सकल अशेष। जामे कुन्ती नाम विशेष॥ कार्त्तिवीर्य्य सम शिव अभिराम। इन्द्र सदृश तो सुत बलधाम॥ भई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बिष्णुतैं अदिति प्रसन्न। तिमि तुम यह लहि गुणसम्पन्न ॥ सर्व भूमिपति क्षितिके जोति। बसमह आप्य
करिहि भुजबल भीति ॥ याके प्रबल भुजा बल पाय । पावक खांडव बनमे जाय ॥ बसा मास
जीवनका खाय। हूहै तिमि अजीर्न नशाय॥ अश्वमेध शतन सह तीन। करिहै जीति सकल क्षिति
ईन॥ परशुराम सम धनुधर धीर। भो कुन्ती तो सुत बरबीर ॥युद्ध माह गहि अस्त्र सुरोष। करि है
शङ्करको सन्तोष॥अस्त्र पाशुपत देहै याहि।शङ्कर होय प्रसन्न सराहि॥निवात कवच दानव बलवान।
सुरपति द्वेष जो करत महान॥ तो सुत सुरपति आज्ञा पाय।तिनको नाश करै गो जाय॥दिव्यअस्त्र
सुरपति सह लच । देहैं याहि सुशीक्षा तब ॥यह अद्भुत बाणी अभिराम।कुन्ती सुनो सूतिका धाम॥
उचो चरित गगण धुनि जौन । हर्षित भए सुनत मुनि तौन॥ सह सुरपति नभमे सुरवृन्द । करण
लग खन सुखद नरिन्द ॥ बजी दुन्दभी गगण गँभीर। बरषत सुमन यथा घन नीर ॥ कद्रूके सुत जे
बर नाग।बैनतेय सह पक्षि सभाग॥ गन्धर्ब सर्व अप्सरन समेत।आए करत गान शुभहेत॥सकल प्रजा
पति बसुगण सङ्ग।आए सप्त ऋषि भरे उमंङ्ग॥सकल प्रचेतस मुनिगण सर्वआए किन्नर यक्ष अखर्व॥
गए महर्षि सकल तपधाम । बशिष्टादिक भरि मोद ललाम ॥ हाहा हूहू तुम्बुरु जान । चढे
बिमानन गावत तौन । सौम्य रूप धरि द्वादश भान ॥ गए एकादश रुद्रमहान ॥ दस मरुत
बसु बिश्वेदेव । चढे बिमाननआए एव ॥ देवगणन के सकल बिमान । मुनिन लखे जे तपस
महान ॥ जे श्रुत शृङ्ग रहे जन आन। तिन नहि देखे दिव्य बिमान ॥ महताश्चर्य्य लहो मुनि सर्व।
अखिल सुरागम देखि अखर्व ॥ पांडु सुतनपर अतिसै प्रीति । मुनिगण करण लगे लखि रीति ॥
और पुत्र उत्पादन रूप । देखो कहन चहत हैं भूप ॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ चौथे सुतके हेत
नरेश। अब हमसौं मति करऊ निदेश ॥ तीनि पुत्रसौं आपत धर्म्म । चौथें होत खैरिणी कर्म्म ॥
पञ्चम सुत यहि बिधि करि नारि । दासी सम सो लेऊ बिचारि ॥ सकल धर्म्मवेत्ता तुम भूप ।
गुणि कै कहव बचन अनुरूप ॥ कुन्तीपुत्र भए अभिराम । भे धृतराष्ट पुत्र शत आम ॥ माद्री कहे
भूपसौं बैन ।तब एकान्त मँह पाय अचैन॥ तुम मे हमै नही सन्ताप ।रतितैं रहित भए लहि शाप॥
कनिष्ठा व्है ज्येष्ठाके बस्य। रहिबेकौं नहि खेद अवस्य ॥ गान्धारीके भे सुत जौन । दुख नहि भयो
सुने ते तौन ॥ है मोकौं यह दुःख महान। भई अपुत्रा होय समान ॥ तब निमित्तत कुन्ती मांह ।
पुत्र भए सुनिए नरनाह ॥ कुन्ती मत्र पुत्र करमोहि । देय कृपा करि तो हित जोहि ॥ सपत्नि
भावको लहि अभिमान ।हौं कहि शकति न सुनऊ सुजान॥ तुम भूपति करि मोपँह प्रीति। तासा
कहऊँ बुझाय सुनीति ॥ * ॥ पांडुरुवाच ॥ * ॥ यह मेरे हियमाँह बिचार । निशि दिन रहत
सुप्रिये उदार ॥ यातैं नहि कहि सको सचैन। मानऊ कै नहि मानऊ बैन ॥ अब तुम्हरे जिय
कोमत जानि । करत यत्न हम सुनऊ सुजानि ॥ निहचै वचन हमारो जौन । प्रथा मानि है सुनिकै
तौन ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ *॥ पांडु प्रथाकँह पाइ एकान्त। कहन लगे बिधिवत मतिमन्त ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० कुलकी बृद्धिहेत अनुमानि। तुमसों कहत सुनऊ सुखदानि ॥ कृपा तरणि पर लेऊ चढाय। दुख समुद्रके पार लगाय ॥ माद्रीहूकों करऊ बिशोक। कीर्त्ति बढै तो कामदलोक ॥ करऊ अपत्य सहित अभिराम। तो अनुगमना दुःखितबाम ॥ सुनि भूपतिके अैसे बैन। कुन्ती पाय हियमे चैन॥ तब माद्रीकों निकट बोलाय। दियो मंत्र व्है शुचि सुखदाय॥ एकबेर करि हौ आव्हान। करी देव सो पुत्र प्रदान ॥ करि माद्री द्वै पुत्र बिचार। आवाहे अश्विनी कुमार ॥ ****

॥ * ॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

तब आद्र दस्र उदार तापैं सङ्ग करि सुखदान। द्वै पुत्र बर उतपन्न कीन्हे सङ्ग सुगुण समान ॥ हैं नकुल ज्येष्ठ कनिष्ठ हैं सहदेव अति अभिराम। फिरि होत तातैं गगण बाणी भई परम ललाम॥ ए रूप गुण सम्पन्न व्है हैं दस्र सम सु कुमार। अति भरे तेजस भाग्यशाली धरैं रूप उदार ॥ शृङ्ग बासी मुनिन कीन्हों नाम तिनको पर्म। सो युधिष्टिर ज्येष्ठ मध्यम भीमसेन सधर्म ॥ किय नाम अर्जुन इन्द्र सुतके युद्धको जेतार। दिय नकुल अरु सहदेव माद्रीतनय नाम उदार ॥ एक एक बत्सर अनु भए ते सकल पाण्डव पर्म। अति बीर धीर पराक्रमी बलवान सत्य सधर्म॥ लखि पाण्डु पाचौं पुत्र अपने देवरूप समान। अति पुलक पूरे रहत निशि दिन भरे मोद महान॥ सब ऋषीएकों प्रिय भए ते ऋषितियनकों सम प्राण। फिरि कहो माद्री हेत कुन्ती सों महीप सुजान ॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ हौं एक सुत हित मंत्र दीन्हो युग्म देव बोलाय। द्वै पुत्र जाये कियो वञ्चन डरी देखि स्वभाय ॥ फिरि कहऊ मति यहि हेत मोकों देऊ यह बर रूप। सुनि रहे चुपव्है पाण्डु ताको जानि मानस रूप ॥ इमि देव सम्भव पाण्डुके सुत भए देव समान। कुरुवंश बर्धन सहित लक्षण जगतके सुखदान ॥ अति सिंहदर्प सु सिंहगामी सिंहग्रीव ललाम। बर बीर धनुधर महारथ अतिबाऊ बलके धाम ॥ ते बढे गिरि हिमबानमे शत शृङ्ग पैं अभिराम ॥ अति भए अचरज मान मुनिसब देखि कै बलधाम॥ जे पांच पांडु सु तनय धृतराष्ट्रके शत जौंन। ते बढे थोरे कालमे कुरुवंश बर्धन तान ॥ अति दर्शनीय सु सुतन्ह देखत रन्य बनमे भूप। फल पुष्प नवदल भरे साखो सरस सुरभि अनूप ॥ हैं मदन ध्वजसे मत्त मधुकर घिरे अति अभिराम॥ मनु काम क्रीडा हेत ऋतुपति करे रचित ललाम॥ * 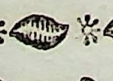 * 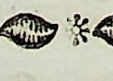 * *

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसाज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविनाङ्कितमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि पांडुवोत्पत्तिर्नामत्रि सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ * * * * 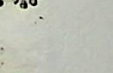

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

फिरत अैसे बिपिनिमे सह मद्रजा क्षितिपाल। भए मदनाशक्त अति विधि रचित पऊँचो काल ॥ एक सुबसना सङ्गमे लखि मद्रजाकों भूप। भरो काम ज्वानुके तनु तापसों अतिरूप ॥ एकान्तमे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मृगलोचनी तिय चन्द्रवदनी पाय । मथित मन्मथ भए भूपति समय पँऊचे आय ॥ सके सहि आप० महि काम पीडा बिवस व्है कै भूप । पकरि लीन्हो मद्रजा कौं भए कामस्वरूप ॥ बऊत वारण कियो बल करि छूटि भजिवो चाहि । काम पीडित भूप भूलो शाप दारुण ताहि ॥ सुरति तासों कियो बलबस कालप्रेरित भूप । लहो तबहीं शापबस नृप पांडु सबको रूप । गतचेत भूपहि देखि माद्री लयो हियमाँ लाय । लगी रोदन करण अतिशय शब्द करुणा छाय ॥ सह सुतन तँह सुनि गई कुन्ती धरैं अतिशय भीति । जहाँ माद्री लए भूप शरीर कौं करि प्रीति ॥ कहो माद्री प्रथासों तुम एक आवऊ अत्र । छोडिकै सुकुमार चारु कुमार सिगरे तत्र ॥ छोडि कुन्ती तहा पुचन्हि गई ताके पास । करति रोदन भरी दुखसों देखि सुपति बिनाश ॥ देखि माद्री परी छिति पर भूपकौं हिय लाय । लगी करण विलाप कुन्ती शोक सिन्धु समाय ॥ रहो रक्षित सदा मोसों बीर अति मतिमान । कियो तुम अतिक्रमण कैसें जानि शाप महान ॥ नियत रक्षा योग्य करि बेऊ तोहिपति अनुरूप । सुनो कैसें विजन में तुम कियो लोभित भूप ॥ शाप तें रति दीन तुमकौं रहस मे से पाय । भूलिगो शृगवचन कैसें हर्ष हिय उपजाय ॥ धन्य माद्री अधिक मोसों भाग्य तुम्हरो जौन । भरो रति रस रङ्ग पतिको लखो आनन तौन ॥ * ॥ माद्रीउवाच ॥ * ॥ बऊत ताहि निबारि हारी रोध नाना भाँति । नही मानो कियो सोई लिखी जो विधि पांति ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ ज्येष्ठपत्नी ज्येष्ठ मोकौं धर्म फल अधिकार । अवश्य भावी भावतें सो करऊ तुम न निवार ॥ प्रेत पति बस खपतिके हौं करौंगी अनुगौन । पुत्र सिगरे पालियो तुम जाय अपने भौन ॥ माद्री उवाच ॥ * ॥ जाहिंगी पतिसाथ पालऊ पुत्र तुम सह चैन । काम तृप्ति न भई मोकौं मानि ए मो बैन ॥ गमन मो करि मरे भूपति काम तृप्ति न पाय । करौंगी हौं तृप्त इनकौं प्रेत पुरमे जाय ॥ आत्मसुत सम नही मोमे दृत्ति तो सुत माह । पाप यातें होय गो हौं जाउँगी सह नाह ॥ पालिहौ तुम पुत्र मेरो आत्मपुत्र समान । मोहि है विश्वास तुम कौं जानि सम सुख दान ॥ मरे मेरो सङ्ग करि कै भूप धरि मन काम । सङ्ग मोकौं जाइबो है भूपके अभिराम ॥ देह मेरी भूपके यहि देह सङ्ग ललाम । जारिबो है उचित तुमकौं सुनऊ कुन्ती आम ॥ सावधान सु होय मेरे सुतनको प्रति पाल । कीजियो हे प्रथा कहिए और कासौं हाल ॥ येहि भाँति कहि कै चिता पर नृप देह धरि तपधाम । अग्नि दैकै जाय बैठी मद्रजा अभिराम ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ पाण्डुको लखि मरण मुनिबर सकल व्है एक तंत्र । कहा करिबे योग्य अब सो करण लागे मंत्र ॥ तापसउवाच ॥ * ॥ राज्य राष्ट्र सुछोडि अपनो आइकै इत भूप । शरण गहि मुनिवरण की तप करत हो अनुरूप ॥ पुत्र लघु अति सहित दारा छोडि कै इस पास । गयो जमपुर पांडु भूपति पाय निधन प्रकास ॥ तास आत्मज सहित दारा अस्थि करिबे कर्म्म । लेइ चलि ए हस्तिनापुर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

०प्र० इहै अपनो धर्म्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ ते परस्पर मंत्र करि ऋषिवृन्द देव समान । हस्ति
नापुर चलन कों सह प्रथा सुत सुखदान ॥ चले तब हीं लेय सिगरो पांडुको परिवार । गए सोरह
दिवस मे मे प्रथा पुत्र उदार ॥ हस्तिनापुर सत्रहेदिन चढे घटिका होय । गए भूपति भौन
के बर द्वार पै मुनि लोय ॥ द्वारपालन सौं कहो इमि मुनिन बचन ललाम । आगमन मम भूप
सा तुम करऊ जाहिर आम ॥ द्वारपालन सभा मे चलि कहो बिधिवत तान । सहित कुन्ती पुत्र
लै मुनिवृन्द आगम जौंन ॥ मुनि सहस्रन्ह सङ्ग चारण आगमन सुनि भूप । हस्तिना पुरमे सभासद
भए बिस्मय रूप ॥ सहित दारन्ह पौरजन मुनिवृन्द देखन हेत । चले चारो बरण घर तैं निकसि
हर्षित चेत । भीष्म सह वाल्हीक लीन्हे सोमदत्त उदार ॥ बिदुर सह धृतराष्ट्र भूपति चले सह
परिवार । गन्धकाली पांडुसू अम्बालिका है जौंन । राजदारण सङ्ग सो गन्धारजा है तौन ॥
दुर्य्योधनादिक सर्ब सुत धृतराष्ट्रके अभिराम । धरे भूषण एकशत सह शुभट बलके धाम ॥ देखि
मुनिबरवृन्द करि कै दण्डवत अनुरूप । जाय तिनके निकट बैठे सकल कौरव भूप ॥ भयो जब
निःशब्द तब नृप यथा बिधि अभिराम । कियो पूजन भूप भूरि समाज सत तपधाम ॥ भीष्म अञ्जलि
जोरि बोले मुनिन सों अभिराम । राज्य जनपद आपुको है लीजिए तपधाम ॥ तिन ऋषिनमे
एक जटा जिनधर बृद्धमुनि तपऐन । पाइ मत मुनि गणनको इमि कहन लागों बैन ॥ पांडु
नृप तजि कामभोग सुब्रह्मचर्य्य बिधान । जायकै शतशृङ्गगिरिपर कियो तप अति मान ॥ भो
युधिष्ठिर धर्म्मतैं यह पुत्र अति अभिराम । भीमसेन सुबायुते यह पुत्र भो बलधाम ॥ इन्द्र तैं यह
पुत्र अर्जुन भयो अतिरथ धीर । महा धनुधर जगत जेता शक्र सम बरबीर ॥ नकुल अरु सहदेव
दोऊ दस्रसुत अभिराम । भए माद्रीमाहँ ए नरबीर गुणके धाम ॥ बिपिनिचारी नित्य धर्म्म सु
पांडु नृप अवतंस । रहो बूडत कियो उधृत पितामह को बंश । पुत्रजन्म सु बृद्धि बेदाध्ययन लखि
कै भूप ॥ पांडु पायो परम मनमे प्रीति अति अनुरूप । वर्त्तमान सु धर्म्म मे लहि पुत्रलाभ बिशोक ।
भए सत्रह दोस पाए पांडुकौं पर लोक ॥ भूप तनुधरि चितापर सह बेदबिधि अभिराम ।
मद्रजा सहगामिनी ह्वै गई पतिव्रत धाम ॥ जौंन तिनको शक्ति करिबे होय कीजै तान । अस्थि
तिनके पुत्र हैं ए महा बलके भौंन ॥ प्रेतकार्य निबृत्ति करिकै पितृमेध बिधान । लहैं जैसे पांडु
नृप धर्म्मज्ञ धर्म्म समान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ कुरुन सौं यहि भाँति कहि सह गुह्यकन
मुनि बृन्द । लखत सबके भए अन्तरध्यान सुनऊँ नरिन्द ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥
सब पांडुको प्रेतकर्म्म सो बिदुर आपु बिचारि । राज बिधि करबाइऐ बर बेदबिधि निर धारि ॥
रत्न पसु धन बसन जाको जौंन बांछित होय । सतकार पूर्वक भांति नाना देऊ ताको सोय ॥
नहि शोच करिबे योग्य है नृपपांडु धर्म सुधीर । देवसम्भव देव सम सुत पांच जाके बीर ॥ * ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदुर भाषि तथास्तु भीषम सहित कुरुकुलसाथ । राजबिधि सौं चले लै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जहँ सुथल गङ्गा पाथ ॥ अस्थि माद्रीपांडुके धरि परम सिबिका माह । गन्ध पुष्प सुबर्ण बहुविधि अरचिकै नरनाह॥पौर कुरुकुल सङ्ग चारोबर्ण बाद्य बजाय । यज्ञ अग्नि सु लएँ ब्राह्मण ज्वलित तपमय काय ॥ जाय प्रेतबिधान किन्हो सकल गङ्गातीर । सहित पांडव भीष्म कुरुकुल दियो अञ्जलि नीर ॥ कियो द्वादश द्योस लौं सब और्द्धदैहिक कर्म ।करि सपिंडीकरण पायो शुद्धताकहँ पर्म ॥ कुरुबंशकौं दे प्रथम भोजन सबिधि कुरुकुल भूप । फेरि नाना भांति भोजन द्विजनकौं अनुरूप ॥ दिए दान बिधानसौं गज अश्व शिबिका चौर । रथ बसन मणिगण हेम भूषण ग्रामगण नृपमौर ॥ भीष्म पाडव सहित कुन्ती लएँ सवर निवास । कुरु मुख्य सचिव सुसहित सेवक सकल दासीदास ॥ पारजन पदजनन लीन्हैं कियो नगर प्रवेश । रहत शोचत पांडुनृप कौं करैं शोकाबेश ॥ शोक दुःख बिमूढ लखि कै व्यासमुनि तहँ आय । गन्धकाली अम्बसौं इमि कहे बचन बुझाय ॥ महादारुण काल आयो करै गो सुख नाश । पापिष्ट निति प्रतिदिवस सिगरे करहिगे परकाश ॥ महि माहिँ थोरी शस्य व्है है लहैं माया जोर । धर्म हूहै लोप सिगरे काल आवत घोर॥ कुरुनके अन्याय ते क्षिति क्षीण व्हैहै सर्ब । तपोबनमे जाय होऊ सु योगयुक्त अखर्ब ॥ आत्म कुल क्षय लखऊ मति हे अम्ब करि इत बास । व्यासके सुनि बचन मानो सत्य करि बिश्वास ॥ बिदा करिकै व्यास माता अम्बिका पैं जाय । कहन लागी बचन अैसे खेदसौं अतिछाय ॥ तो पौत्र के अन्याय तैं यह भरत बंश सु जौंन । सहित सेना सचिव सेवक नाश लहिहै तौंन ॥ शोकपीडित पांडु माता सहित बनको गौंन । करतिहौं हौं जौन भावै तुम्हैं कीजै तौंन ॥ यह बचन सुनि बन गवन को तेहिँ कहो करि स्वीकार । बधुन सह तब गन्धकाली गई बिपिनि उदार ॥ भीष्म आज्ञा सहित बन मे कियो तप अतिमान । योगयुक्त सु त्यागि तनुकौं लही गति सुखदान ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ संस्कार उपनयनादि लहि अति भरे पांडव कांति । भए बर्धित पायकै बर भोग नाना भाँति ॥ खेलमे धृतरष्ट्राके शतसुतन सङ्ग गंभीर । होत सबसौं श्रेष्ट पांडव महाबल बर बीर ॥ केश गहत पछारिकै फिरि शीस ऊपर मारि । खैंचिकै कछुदूरि रोवत देत क्षितिपर डारि ॥ एक शत ते एक मर्दत भीभ भीम शरीर । खेलमे गहि पटकि डारत धरत कोउ न धीर ॥ पकरि खैंचत भूमि पै घँसिजात जानु सुबक्ष । छोडि देत सो देखि रोवत भरे असुअन अक्ष ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जल क्रीडामहँ भरो उमङ्ग । पकरि लेत दश बालक सङ्ग ॥ गहिरे जलमे बूडत जाय । छोडि देत करि मृतकप्राय ॥ धृतराष्ट्र तनय जब फल के हेत । चढे महातरु देखैं लेत ॥ भीमसेन तब बिटप हलाय । तिन्है बिकल करि देय गिराय ॥ बाहुयुद्ध मे जब मे जौन । होय भीम समकौरव कौन ॥ स्पर्धमान धृतराष्ट्र कुमार । उत्तर देत न डरे उदार ॥ देत सुभीमसेन दुख भूरि । सहत ते अति बलवान बिसूरि ॥ करत बाल्यबस अप्रिय जौंन । नही द्रोह धरि मनमे तौंन ॥ जान

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० भीमकहँ अति बलवान । दुर्योधन धरि क्रोध महान ॥ पाप कर्म तिन कियो बिचार । कुमति बिरोध हिए अनुसार ॥ ऐश्वर्य्य मोह धरि द्रोह उदार । तब यह कीन्हो मत्र बिचार ॥ मध्यम कुन्तीसुत बलवान । याको निग्रह करो महान ॥ उद्यान माहँ याको लहि सुप्त । गहि गङ्गामे कीजै गुप्त ॥ युधिष्ठिर अर्जुन गुरु लघु जौन । गहि कारागृह डारैं तौन ॥ करैं राज्य तब निर्भय होय। यह निश्चयकरि पापससोय ॥ भीमसेन सौं दाव बिचार । देखत रहत सो सदा उदार ॥ दुर्यो धन जल विहरण हेत । बिरचे बहुविध सुपट निकेत ॥ सर्ववस्तु तँ पूरण तौन । कम्बलपट बिर चित गृह जौन ॥ कीन्हों ऊदक क्रीडन नाम । प्रमाण कोटि सो थल अभिराम ॥ भक्ष्य भोज्य अरु पेय सु चोष्य । लेह्य पदारथ षटरस पोष्य ॥ नाना व्यञ्जन सूद बनाय । तहाँ धरे अतिसे सुखदाय । परिचारक तहँके सब आय । दुर्योधन सों कहो सुनाय ॥ तब दुर्योधन दुर्मति ऐन । कहे पांडवन सौं हमि बैन ॥ गङ्गातीर परम उद्यान । तहाँ जातहैं क्रीडामान ॥ भ्रातन सह जल क्रीडा हेत । चलहु युधिष्ठिर सुमति निकेत । एवमस्तु कहि पांडव बीर । चले रथन पर चढि रण धीर ॥ चले जानचढि कौरव सर्ब । सहित पांडवन सैन अखर्ब ॥ कढि पुरते कुरु पांडव बीर । गए जहाँ उद्यान गँभीर ॥ सेना छोडि सबल कुरुबंश । गए सु पांडव बीर प्रशंश ॥ बैठे प्रट कुटि कन महँ जाय । हिमगिरि हरिन सिंह मनु आय ॥ लसैं बिचित्र चारु पटधाम । सर बापी जिन बिकट ललाम ॥ कुरु पांडव तहँ बैठे जाय । भोजन करत बस्तु सुखदाय ॥ दुर्योधन करि पाप बिचार । कालकूट सह भक्ष्य उदार ॥ दियो भीम कहँ भोजन तौन । अपने हाथ सबिष होय जौन ॥ हँसि हँसिकै अति आनद छाय । दियो भीमकह बहुत खवाय ॥ भीमसेन नहि जानत दोष । भोजन करि पायो सन्तोष ॥ दुर्योधन अति भए प्रसन्न । पुरुषाधमकृत पापा सन्न । भीमसेन दारुणबिष खाय । अन्न सङ्ग सो गए पचाय ॥ धार्त्तराष्ट्र सह पाण्डव बीर जलक्रीडा सब करत गभीर ॥ जलक्रीडा करि अयवत भान । पहिरे सुष्क बसन सुखदान ॥ करि बिहार लिए सबन बिराम । थके भीम करि अति व्यायाम ॥ प्रमाण कोटिमे सुस्थल पाय। भीमसेन तहँ सोए जाय ॥ शीतबात श्रम बिषबस होय । भीमसेन ये अतिसे सोय ॥ बांधि लतन सौं सिगरे अङ्ग । दुर्योधन भरि पाप तरङ्ग ॥ मृतक सदृश सौं बीर उठाय । दियो अथाह सलिल मे नाय ॥ गो निःसंज्ञ सलिलके अन्त । गिरो नागपुर मे बलवन्त ॥ नाग कुमार मानि अतिदोष । काटन लगे महा करि रोष ॥ सर्पदंश के बिषकौं पाय । कालकूट बिष गयो नशाय ॥ भीमसेन तब लहो प्रबोध । बन्धन डारि तोरि सक्रोध ॥ डसत रहे जे अहिगण सर्ब । मारे बृहत्व आजिगे खर्ब ॥ सर्प राज बासुकि के पास । कहन लगे ते पूरित त्रास ॥ बद्ध मृतक सम पुरुष महान । गिरो आय इत सुनहु सुजान ॥ जानि परै बिष कीन्ह पान । मम दंशित सो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जगो सुजान ॥ मारत हमै महाबल कौंन । नागराज चलि देखऊ तौंन ॥ नागराज बासुकि तहँ आय । देखो भीमसेन अतिकाय ॥ आर्य्यक नाग तास दौहित्र । ताको यह दौहित्र पवित्र ॥ यह सम्बन्ध जानि नागेश । व्है प्रसन्न यह कियो निदेश ॥ करैं कहा प्रिय याको मान । देऊ रत्न धन मणि अभिराम ॥ यह सुनि कै बोलो सो नाग । नागराज तुम भए सराग ॥ दिए कहा धनके सनमान । छमा सहित दीजै रस पान ॥ सहस्र नागबल कारक जौंन । तुम रसकुण्ड पियावऊ लान ॥ यह बासुकि शासन सुनि नाग । कहो भीमसौं भरि अनुराग ॥ सुचि व्है पूरबमुख उपविष्ट पियऊ सो रस लहि परम सुदिष्ट ॥ करण लगे रस भीम सो पान । एक खाश्रमहँ कुण्ड प्रमाण ॥ ऐसे आठ कुण्ड गम्भीर । पान कियो कुन्तीसुत बीर ॥ नागदत्त लहि शय्यापर्म्म । शोए भीम सेन गत भर्म्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कुरु पांडव बिनु भीम प्रभात । चले हस्तिनापुर अवदात ॥ नाना भांति जान असवार । कहत भीम गे प्रथम उदार ॥ पापी दुर्योधन खलमान । लखो न भीमसेन बलवान ॥ भ्रातनसह अति भए प्रसन्न । भए सो हास्तिन नगरासन्न ॥ युधिष्ठिर धर्म्मशील अतिशुद्ध । जानत तास न पाप विरुद्ध ॥ करि अपने मनमे अनुमान । जानो तास कलङ्क सुजान ॥ कुन्तीसौं बूझो घर जाय । आए भीम कहा हैं माय ॥ कहा गए न परै हैं चाहि थके ढूढि नहि पावत ताहि ॥ हम जान्यो घर आयो अय । इहां न लखत होत मन व्यय ॥ कहा पठायो ताकौं अम्ब । आयो नहि अति भई बिलम्ब ॥ कहऊ अब मोसौं तुम तौंन । भीम करण को कारज जौंन ॥ गहत न मोमन ता प्रति चाव । बढत शोकसो अन्तर्भाव ॥ भीमसेन हो शोवत अत्र । मारो गयो जानि यत तत्र ॥ युधिष्ठिरके सुनि ए बैन । प्रथा कहन लागी हत चैन ॥ * ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

न ही देखो भीमकौं नहि इहां आयो बीर । करऊ सानुज ढूँढिवेको तास यत्न गँभीर ॥ कहि युधिष्ठिरसौं सो ऐसैं भई व्यय महान । बोलि मागो बिदुरकौं हित जानि परम सुजान ॥ बिदुर हा नहि लखत भीमहि भयो का अभिराम । उद्यानते सब चले आए गे कहां बलधाम ॥ दुर्योधनाके चत्तुको नहि प्रीतिकर है तौंन । दुष्ट दुर्म्मति हनो ताको ननए आवत भौंन ॥ महा आकुल भई बातैं कहति तुमसौं बैन । तात कहिए बात सो जेहि सुनत आवै चैन ॥ * ॥ बिदुर उवाच ॥ * ॥ कहऊ ऐसैं बैन मति ए शेष है सुत जौंन । ए सुनै गो जौं बचन वह तौ मारि है सब तौंन ॥ दीर्घायु हैं सब पुत्र तो हैं सत्य मुनिके बैन । आइ है तो पुत्र देहै फेरि तुमको चैंन ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदुर यह कहि गए घरकौं समय साधक जौंन । भरी चिन्ता रही कुन्ती सुतन सह सुनि तौंन ॥ भीम अठए दोस जागे पचे सो रस बीर । शांत्व पूर्वक नाग लागे कहन बचन गभीर ॥ जौन तुम यह पियो रस अति बीर्य्य बलके धाम । युद्ध दर्जय अयुत गज बल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

होऊ तो अभिराम ॥ दिव्य जलमें स्नान करि यहि जाऊ घरकौं बीर । होहिँगे तो भ्रात चिन्ता करत दुखित गम्भीर । स्नान करि शुचि बसन धरि वर गन्ध स्रज अभिराम । विषन्न औषधि सहित किय परमान्न भोजन साम ॥ दिव्य भूषण दियो नागन पूजि कै अभिराम । बिदा व्है कै नागप तिसौं चले अपने धाम ॥ शीष पर धरि नाग ल्याय प्रनाए कोटि हि पास । बिदा व्है कै भीमसौं ते गए अपने बास ॥ तहांतें तब भीम कोन्हें हस्तिनापुर गौन । मात भ्रातन निकट आए भरो आनद भौन ॥ बन्दि जननी ज्येष्ठभ्राता के चरण अभिराम । करे लऊरे बन्धु तिनके घ्राण मस्तक साम ॥ लियो सबहिन अङ्कमे भरि भाग्य बस तुम आय । मिले असे कहत फिरि फिरि मोद हियन समाया ॥ कियो जेदुर्योधने सो कहो कृत सब तौंन ॥ कहो सबसौं नाग पुरमे दोष गुण भो जौंन ॥ धर्म्म भूपति भीमसौं यह कहो सार्थक बैन । रहो अबही मौन कछु दिन योग्य कहिबे हैं न ॥ यहि भाँति कहि सब भ्रातरण सौं तब युधिष्टिर भूप । रहत हैं अन्योन्य निशि दिन सावधान स्वरूप ॥ सकुनि दुःसासन सुयोधन कर्ण कुटिल सभाय । पाण्डवनके मारिवेकौं चहत रहत उपाय ॥ पाण्डु नन्दन मंत्र तिनको सकल जानत तौंन । करत सोइ परम हित लहि बिदुरको मत जौंन ॥ गुरु शिक्षा हेत तिनके समुझि कै अभिराम । भए समुद्भव कृपाचार्य कौं कियो मतिधाम ॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ कहऊ कृपको जन्म कैसे भयो भएतें विप्र । शस्त्र विद्या लही कैसें शास्त्र विद्या विप्र ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ भए द्वान सुपुत्र गौतम के भयो जनि सङ्ग । धनुष धारो पढो विधिवत धनुर्वेद सदङ्ग ॥ महातप करि शस्त्र विद्या सकल शीखो तौंन । महा तप तें अस्त्र तें भो इन्द्रको भय भौन ॥ इन्द्र जानपदी पठाई अप्सरा अभिराम । गई सो तपभङ्ग कौं मुनि निकट आश्रम धाम ॥ एक बसना देखि ताके अङ्ग काम कृशान । बरो मुनिबर कँपो करततें गिरो धन्वाबान ॥ धीर धरि तजि भजे आश्रम कँपो मुनिको अङ्ग । गिरो रेत अचेत शरमे द्विधा व्है कै भङ्ग ॥ भई कन्या पुत्र मुनिके बीर्यतें शरमाह । गए मृगया हेत सान्तनु तहा कुरु नरनाह ॥ गयो तहँ एकचार शरमे देखि कै द्वै बाल । धरो तहँ शर अजिन धनु लखि गयो नृप पँहचान ॥ कहो सो वृत्तान्त नृपसौं भूप गो चलि तब । लखो बालक मिथुन शरमे अजिन शर धनु यत्र ॥ जानि मुनिके तनय भूपति लिए ते उठवाय । कृपा करि लै गए घरकौं पुत्र वत सुखदाय ॥ कियो जातक कर्म्म बर्द्धित भए ते अभिराम । कृपा सह ल्याए महीपति धरो कृप यह नाम ॥ जानि तपबल सौं शरद्वत भूपके ढिग आय । दियो सान्तनु नृप हि सो कुल जाति गोत्र बताय ॥ चतुर्विध धनुर्वेदविद्या दई सकल पढाय । रहे कृप कछु दोउमे आचार्य ताकों पाय ॥ धनुर्वेद सु पढे तासौं सकल विधिवत धीर । पाण्डुसुत धृतराष्टके भे महारथ बर बीर ॥ वृष्णि यादव अन्यनृपके तनय तापैं आय । धनुर्विद्या पाय कृपके गए शिष्य कहाय ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ भीष्म पौत्रनकौं सुचाहत अधिक विद्या देन । महाबल धनुबेदविदको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सोय लागे लेन ॥ देवसत्व सुबुद्धि वर धनु वेदपारग धीर । भरद्वाज तनय द्रोण प्रसुरामशिष्य आनंद
सु वीर ॥ पाण्डवनकौं कौरवन कौं शिष्यताके हेत ॥ द्रोण पूजन कियो विधिवत भीष्म प्रमुदित
खेत ॥ द्रोण प्रमुदित भए तिनकौं कियो शिष्य उदार । कियो शिक्षा धनुर्विद्या विविधि भाँति
अपार ॥ भए थोरे दोसमे ते शस्त्रवेत्ता सर्व । सकल कौरव सकल पाण्डव वीर विरद अखर्व ॥
जनमेजय उवाच ॥ * ॥ भए कैसें द्रोण काके पुत्र अति बलवान । शस्त्रविद्या लही कासौं कही
तौन सुजान ॥ केहि भाँति आए हस्तिनापुर पुत्र अश्वत्थाम । लही कैसें तौन कहिए सहित
विस्तर साम ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यज्ञ शालामे घृताची अप्सराकौ देखि । गए
गङ्गा स्नानकौं फिरि भरद्वाज विशेखि ॥ फेरि ताकौं लखी तेंहा न्हात ही कविधाम । सूक्ष्मपटतन
नाह लपटो बढो मन्मथ साम ॥ गिरण लागो रेत सो मुनि धरो द्रोणी माह । भयो तामै पुत्र सोहै
द्रोण हे नरनाह ॥ पढे बेद सदङ्ग सिगरे द्रोण तपके धाम । अग्नि वेश मुनोन्द्रकौं तब भरद्वाज सलाम ॥
अग्न्यास्त्र पढिबे हेत दीन्हो सौंपि सुनिए भूप । आग्नेय अस्त्र सु लही तासौं द्रोण सविधि अनूप ॥
भरद्वाज मुनोन्द्रको हो सखा पृषत नरेश । द्रुपद ताको पुत्र भो पांचाल जाको देश ॥ द्रोणके संग
द्रुपद खेलत पढत हो अनुरूप । भरे पृषत नरेश पाछें द्रुपद भो तँह भूप ॥ स्वर्गकौं मुनि भरद्वाजो
गए तपके धाम । द्रोण आश्रममे तहां रहि कियो तप अभिराम ॥ पुत्र कारण पिता आज्ञा सहित
मुनिवर द्रोण । भरद्वतीसौं व्याह कीन्हौं सखा कृपको जौंन ॥ अग्निहोत्र सुधर्म्म पालिक गौतमो
तपधाम । जई अश्वत्थाम नामक द्रोणसुत अभिराम ॥ पुत्र लहि कै द्रोण मुनिवर देखि कै
आसन्न । बास करि कै रहत तेहां भए अतिहि प्रसन्न ॥ सुनो द्रोण सु विप्र गणकौं देत भृगुपति
वित्त । चले शिष्यन सहित ता पँह धरे धनमे चित्त ॥ गए द्रोण महेंद्र गिरिकौं लखो भृगुपति राम ।
जन्म कुल कहि गोत्र अपनो कियो सविधि प्रणाम ॥ छोडि कै सब चलो चाहत विपिनिकों जब राम ।
कहन लागे द्रोण तासौं बचन मधुर ललाम ॥ वित्त मागन हेत आयो तुह्मै जानि बदान्य ।
भरद्वाज सुवंशसम्भव होय जो निज मान्य ॥ कहो तब भृगुनाथ अैसें द्रोणसौं अभिराम । भयो
आगम विप्र अपनो कहऊ जो मनकाम ॥ द्रोण अैसें कहो सुनि भृगुनन्दके इमि बैन । दीजिए
धन विविधि हमकौं अहे तपवर अैन ॥ * ॥ राम उवाच ॥ * ॥ रहो जो धन अब हमसौं हेम
रत्न ललाम । ब्राह्मणनकौं दियो हौं सो निसेष हे तपधाम ॥ धरा देवी सागरांता लई ही हम जौंन ।
दई कस्यपकौं सो सिगरी सहित पत्तन तौन ॥ रहो शेष शरीर मेरो सुनऊ हे तपधाम । अस्त्र शस्त्र
महार्ह बाकी रहे हैं अभिराम ॥ शस्त्र और शरीर मेरो चहऊ मागऊ तौंन । द्रोण तुमकौं देहि
गे हम होय इच्छा जौंन ॥ प्रयोग सह संहार दीजै अस्त्र हमकौं सर्व । अरु रहस्य विधान तिनकी
कृपा सहित अखर्व ॥ कहि तथास्तु सु दिये ताकौं अस्त्र सिगरे राम । धनुर्वेद पढाय दीन्हो सह
रहस्य ललाम ॥ विदा ह्वै भृगुनन्द सौं लहि अस्त्र शस्त्र प्रकाश । जानि कै प्रिय सखा आए द्रुपद

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

नृपके पास ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ द्रोण आए द्रुपद पत्र कहो ऐसे बैन । भूप आयो सखा मोका जानिए भरि चैन ॥ द्रोणके इमि बचन सुन ते भरो अमरष भूप । कहन लागे द्रुपद ऐसे होय उग्र स्वरूप ॥ द्रुपदउवाच ॥ अज्ञान कैसो बुद्धु हो तो विप्र अप्रिय मान । कहो मोका सखा सहसा आय के तुम जान ॥ सखा ऐसे नरनके नहि होत भूप महान। धनहीन क्षपण सु विप्र भिक्षुक फिरत मागत दान ॥ सोहाई बीतैं कालकैं बद्ध जीर्णताकौं लेत । रही तुमसा मित्र तासो बाल्यवय लहि हेत ॥ रहत सख्य न अजर काहूके हृदयमे विप्र । काल बीतैं बद्धतकालहि क्रोध बिनग्रत चित्र ॥ रही हमसौं प्रीति तुमसौं एक वासहि पाय । सख्य निर्धन धनिकसौं नहि होत है सुखदाय॥ सूरसैं अरु क्रोधसौं नहि होति प्रीति समान होति है क्षुद्र स्थूलसौं नहि प्रीति चित्तसुख दान॥ सम वित्ततैं सम जातितैं द्विज होत सख्य विवाह।रथी अरथी सा नही है सख्यको उतसाह ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ द्रुपदके सुनि बचन ऐसे द्रोण भरि कै क्रोधाघरी द्वै जौं मौन रहि कै कियो मनको बोध ॥ प्रतीकार बिचारि मनमे कारणान्तर पाय । गए हास्तिन नगरको कुरुवंश जहँ सुखदाय॥ रहे गौतम सदनमे प्रच्छन्न करि कै वास । कृपाचार्य्य न होत जब सुत द्रोणको बल रास॥ शस्त्र सिक्षा देत तब कुरु पाण्डवनकौं भूप ॥ रहे जैसे कछूदिन तँह गूढ धारे रूप ॥ निकसि हास्तिन नगरतैं कुरु पाण्डुपुत्र ललाम । जाय परिसरमे सु खेलत दण्ड गुल्ली आन ॥ परो गुल्ली बेग बसते कूपमे सो जाय । ताहि काढिन शकत कोऊ करत बद्धत उपाय ॥ श्वेतकेश सु बिप्र तेहां लखो श्याम स्वरूप । करत कछु सत कर्म बैठो निकट निर्जल कूप ॥ गए ते तँह सकल बालक मग्नमन उतसाह । कहन लागे द्रोण तिनसो धरे कछु चितचाह ॥ मन्द हँसिके कुशल बासौं शस्त्र बेत्ताबीर । निन्द्य तव है सत्रो बल औ शस्त्रविद्या धीर ॥ सकत हो नहि काढि गुल्ली भरतवंशज होय । सहित गुल्ली मुद्रिका हौं काढि देहौं दोय ॥ चारु मुदरी काढि करतैं कूपमे बिनु वारि । डारि दीन्हो लखत सबकैं कछू कार्य्य बिचारि ॥*॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ काढिहौ जौं कूपतैं यह सुनऊ हे वरविप्र । मंत्रतैं क्षपके सु लहि हौ सदा भिक्षा चित्र ॥ * ॥ द्रोणउवाच सीकि मुष्टि प्रमान हो करि मंत्र योजित जौंन । कहत ताको बीर्य्य देखऊ अन्य सो नहि तौंन ॥ सीकसो सो भेदि गुल्ली सीकसौं सो सीक । काढि तुमकौं देत गुल्ली लखऊ नृपसुत बीक ॥ * ॥ वैशम्पयनउवाच ॥ * ॥ कहो जो सो द्रोण कीन्हो देखि अद्भुत कर्म । भरे अति आश्चर्य्य ते सब भरे आनंद पर्म ॥ *॥ कुमारउवाच ॥ * ॥ मुद्रिकाव अवस्य काढऊ सुनऊ हेवर विप्र । * ॥ वैश्म्पायनउवाच ॥ * ॥ धनुष धरि शरविद्ध मुदरी काढि लीन्ही विप्र ॥ कढी मुद्रा देखि अद्भुत कर्म जानि कुमार । * ॥ कुमारउवाच ॥ * । औरमे यह परम विद्या है न विप्र उदार ॥ कौन हो तुम विप्र कीजै कहा तुम्हरो काम । कहऊ सो हम करहि कारज आपुको अभिराम ॥ * ॥ वैश्म्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रोण सुनि कै बचन तिनके कहे ऐसे बैन । भीष्म सो गुण रूप हमरो कहऊ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जाय सचैन ॥ सुनत हमकों जानि लेहै अहे राजकुमार । * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जाय कै आ०प०
तिन भीष्मसों सब कहो कर्म उदार ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनत कुमारन के बचन जानि द्रोण बरबीर । भीष्म मानि गुरुयोग्य जिय हर्षित भए गँभीर ॥
आपु आय आदर सहित ताकों गए लेवाय । पूजन करि पूछन लगे सकल वृत्त सुखदाय ॥
हेतु आगमन को सकल कहन लगे तब द्रोण । पूर्व चरित सब आदि ते आत्म वृत्त सम तौन ॥
अग्नि वेश्य ऋषि पैं गए शस्त्राभ्यास विचारि । पूर्व वयक्रम मे पठन धनुर्वेद निरधारि ॥
ब्रह्मचर्य्य धारे जटा रहे तहां बहुवर्ष । गुरु सुश्रूषण करि लहे अस्त्र शस्त्र युत हर्ष ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पांचाल राजको द्रुपद कुमार । शरविद्या हित गयो उदार ॥ तहाँ बहुत दिन करि सह बास । सखा भयो सो मोहित रास ॥ कहन लगो इमि मोहि सशर्म । हम स्वपिताके प्यारे पर्म ॥ पिता करी जब मो अभिषेक । कहत सुनहु तब सहित विवेक ॥ वर तो भोग्य होय गो सर्व । कहत सपथ करि बचन अखर्व ॥ मोसुख भोग रही तो बश्य । यह जानहु तुम सखा अवश्य ॥ यह कहिकै लहि शस्त्राभ्यास । विदा होय सो गये आवास ॥ ताको बचन सत्य अनुमानि । नित्य स्मरण कियो सुख मानि ॥ पितृ नियोग पुत्रको लाह । चाहि कियो हौं भूप विवाह ॥ लहो गौतमी माहँ अपत्य । औरस अस्वत्थामा सत्य ॥ महा विक्रमी सूर समान । भरो तेज अतिबल सुखदान ॥ धनिक सुतन कँह पीवत क्षीर । लखि बालकपन भरो गँभीर ॥ मागै अस्वत्थाम्मा क्षीर । पाए बिनु रोवै सु अधीर ॥ तब हौं भयौं दुखित अति भूप । नहि गृहस्थ सीदत शुचि रूप ॥ फिरे देश बहु चिन्ता चाय । कहू न लही एक हम गाय ॥ शुद्ध प्रतिग्रह चाहत भूप । कहू न लहो आपु अनुरूप ॥ पिष्ट घोरि जल स्वेत बनाय । ताहि देत कहि क्षीर पियाय ॥ क्षीर मानिकै सो करि पान । नचत बाल्य बस सुत सुखदान ॥ ताहि देखि जे बालक आन । करत हास्य मेरो अपमान ॥ है धिग यह निर्धन द्विज द्रौन । कहू न पावत है धन जौन ॥ जास पुत्र पिष्टोदक पान । करि नाचत है क्षीर समान ॥ यह सुनि भई बुद्धि मो भ्रंश । करो आत्म निन्दा कुरुवंश ॥ यह चिन्तन करि भयो उदाश । कियो दूरि तजि सबसों वाश ॥ परसेवा न करौं पापिष्ट । यह विचार मनमे करि शिष्ट ॥ भीषम हम सह पुत्र सदार । गयो द्रुपदनृप पाश उदार ॥ प्रीतिपुरातन जानि सुजानि । सख्य बचन ताको अनुमानि ॥ राज्याभिषिक्त सुनो जब ताहि । कार्य सिद्ध भो चितमे चाहि ॥ सो प्रिय सखा हमारो भूप । समुझि बचन ताको अनुरूप ॥ आयो जानि मित्र नृप तोहि । जानहु पूर्व सखा प्रभु मोहि ॥ यह सुनि बचन हमारो भूप । बोलो वचन निरादर रूप ॥ द्रोण कहे ताके ते बैन । पहिले कहे ते फेरि कहै न ॥ हम जानत तुमकौं नहि विप्र । रहत कहातैं आए क्षिप्र ॥ जानत हम न प्रतिज्ञा तौन । राज्यार्थक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० भाषत तुम जैान ॥ एक दिवसको भोजन देत । जाऊ आपने बिप्र निकेत ॥ यह सुनि तास बचन अपमान ॥ तब सदार हम कियो पयान ॥ किया प्रतिज्ञा मनमे तैान । कछु दिनमे है करिबैं जैान। द्रुपद बचन सुनिकै धरि क्रोध । चाहि शिष्यकीबे श्रुतिबोध ॥ भीष्म तिहारो जो मनकाम । हम वर्धित करिहैं अभिराम ॥ हास्तिनपुर हम आए भूप।कहऊ सो करैं कार्य अनुरूप॥ *॥ बैशम्पायन उवाच ॥ *॥ सुनत द्रोणके ऐसे बैन । भरे भीष्म अतिसे चित चैन ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ *॥ धनुष उतारि बैठिए आपु। द्रोणाचारय बुद्धि कलापु ॥ तुमतैं व्है है मम सब कार्य । सत विद्या सो दीजै आर्य ॥ भोग्य भोग सब करऊ सप्रीति । कुरु कुलमे व्है पूज्य सुनीति ॥ कुरुकुलमे है बित्त जो सर्ब । यह जो राज्य सराष्ट्र अखर्ब ॥ ताके तुम राजा अभिराम । यह तो सब कुरुवंश ललाम ॥ तुम्है होय जो बांछित बिप्र । जानऊ सो सम्मादित छिप्र ॥ हमहि मिले तुम भाग्याधीन । करो अनुग्रह अति द्विज दीन ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ *॥ द्रोण कियो तहँ सुचित बिराम । पूजो भीष्म सबिधि गुणधाम । शिष्यहेत सब पौत्र बोलाय । सौंपि दिए तिनको सुखदाय ॥ बिबिधि भाँति धन धान्य समेत । दियो रचित करि चारु निकेत ॥ कुरु पाण्डव करि शिष्य सप्रेम । शिक्षा करत द्रोण धरिनेम ॥ शिष्यनको लहि प्रणत सचैन । एकदिन द्रोण कहो इमि बैन ॥ * ॥ द्रोण उवाच ॥ *॥ बांछित कारय मो हृदि एक।तुम कृतास्त्र व्है भाँति अनेक ॥ दीजो मोहि कहौं गो जैान । कहऊ भरत कुल बर्धन तैान ॥ यह सुनि कौरव रहे चुपाय । कहो तथास्तु पार्थ सुखपाय ॥ तब अर्जुनको मूर्धा घ्रान । कीन्हों द्रोण परम सुत दान ॥ भरे प्रेम अति हिय सौं लाय । बरषे नेत्र सलिल सुखदाय ॥ द्रोण दिव्य सब अस्त्र बिधान । दिए पाण्डवनकौं जयदान ॥ राजनके सुत तहाँ अनेक । सस्त्र हेत गे सहित बिवेक॥अन्धक वृष्णि बंशके भूप।आय भए तँह शिष्य अनूप॥ कर्ण सूत सुत आयो तैान । धरत पार्थ सौं दुर्षा जैान ॥ दुर्योधनको आश्रय पाय । करत कुटिलता दुष्टस्वभाय ॥ अस्त्राभ्यास माहँ अभिराम । अर्जुन अधिक भए बलधाम ॥ अस्त्र शस्त्र बिधिमे अ समान । द्रोण पार्थकौं कहत सुजान ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*

॥ * ॥ महिखरीछन्द ॥ * ॥

अस्त्र शस्त्र बिधान जैसें द्रोण सबहि बताय कै ।सूदन मुखको दै कमंडल नीर हेत पठाय कै॥ वर बदनको दै कुम्भ सुतकौं शीघ्र भरिकै जाय सो । लहि एक तब लों ताहि अस्त्र रहस्य देत बताय हो ॥ यह जानि अर्जुन वारुणास्त्र सुपढि कमंडलकौं भर। द्रोणसुतके साथ गुरुढिग आय सो तुरतहि धरै ॥ गुरुपुत्रसौं निजु लेत बिद्या एकक्षण न जुदे रहै । तब भयो पारय सरस सबसें अस्त्र बिद्यामे महै ।गुरु सु शुश्रूषामे सुअर्जुन नित्य तत्पर रहत हे ।अति अस्त्रके अभ्यास तैं सो द्रोणकौं प्रिय महत हे॥ सो अस्त्रके अभ्यासमे लखि पार्थकौं तत्पर अहो । पुनि बोलिकै तब सूदका यहि भांति द्रोण शिखै कहो ॥ नहि बिना दीप न कबऊ दीजो पार्थकौं भोजन सुनो ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

यह नहीं मेरो बचन कबहू कहेऊ तासों हे गुनेा॥करत अर्जुन रहे भोजन बात अतिश्रय आयगेा। आ०प०
हेा बरत जौंन प्रदीप महमे लगे तौन बताय गेा ॥ तब करत भोजन हाथ मुखतें अनत जानत
जानिकै। अभ्यास कारण पार्थ मनमे लियेा तब अनुमानि कै ॥ तब करण शस्त्राभ्यास निशिमे
लगे लक्ष्य निपात कौं। सुनि गए तहँ चलि द्रोण निशिमे सहत ज्या आघात कौं ॥ तब लियेा
हियसों लाय ताकौं परम प्रीति विचारि कै। नहि होय तोसेा और धनुधर कहत सेा निरधारि
कै॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ गज अश्व रथ चढि भूमिमे रचि दई रणविधि जौंन है।
असि गदा तोमर शक्ति पट्टिश शस्त्रविधि जेा तौन है॥ सब दियेा द्रोण बताय ताकौं युद्धविधि
अभिराम कौं। नहि जोति जातें सके कोऊ पार्थ बलकेधाम का॥ सुनि धनुर्विद्या कुशल ताकौं
चहूँ दिशिते आय कै। भे राजपुत्र अनेक ताके शिष्य गुणगण पाय कै ॥ तब एकलव्य हिरण्य
धनुष निषादपतिको पुत्र जेा। सेा शिष्यहूबेहेत धनु गुरु द्रोणके चलि पास गेा॥नहि कियेा ताकौं
शिष्य द्रोण निषाद नीच बिचारि कै। सेा गयेा शीस छुवाइ पदसों मूर्ति हियमे धारि कै॥ तब
जाय बनमे द्रोणकी मृतमई मूर्त्ति बनाय कै। गुरु भावना करि अर्चि विधिवत भक्तिसों मन लाय
कै॥ सेा करण शस्त्राभ्यास लागेा मूर्ति गुरुवत पाय कै॥ सहज शीघ्रता सन्धान मोचन हस्त लाघव
परम जेा। सेा करि अनिस अभ्यास सीखेा धनुर्धर बर करम केा॥ लहि द्रोण आज्ञा कुरु सपां
डव गए मृगया करण ते। संग लेय मृगया साज गे बर भृत्य आनद भरण जे ॥ तहँ एक श्वान सु
छोडि दीन्हेां भ्रमत सेा बन महं गयेा। जहँ करत शस्त्राभ्यास हेा एकलव्य बलसों अतिसयेा॥
सेा लगेा भूकन देखि तहं तेहि सात सर मुख भरि दयेा। वह श्वान शरसों भरेा मुख चलि पांडवन
के ढिग गयेा॥ सेा श्वा भरेा मुखबाण पांडव देखि अति विस्मय भए। अति हस्त लाघव शस्त्र बेधन
जानिकै व्रीडित भए॥ तब ताहि ढूढत गए बनमे देखिकै बूझन लगे। तुम शिष्य काके कौन के
सुत शस्त्र शिक्षामे पगे॥ *॥ एकलव्यउवाच॥ * ॥ बर सुत निषाधाधीशके सुहिरण्य धनु जेहि
कहत हैं। हैं शिष्य द्रोणाचार्यके धनुबेद तासों लहत हैं॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥तब
पांडवन तेहि जानि नीकी भांतिसों मन महं लियेा। तिन आय अद्भुत कर्म ताको द्रोणसों सब
कहि दियेा॥ लखि एकलव्यहि पार्थ मनमे महा चिन्तित व्है रहे। लहि द्रोणकौं एकान्तमे यहि
भांतिसों बोलत भए॥ *॥ अर्जुनउवाच॥ *॥ यह कहेा तुम नहि शिष्य मेरेा अधिक तुम ते
होय गे। सेा देखि शिष्य निषाद तुम्हरेा बचन सिगरेा खेाय गे॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥
तब घरी द्वै क बिचारि मनमे द्रोण निहचै करि लए। तब सव्यसाची सहित द्रोण निषादपति
सुत पहँ गए॥ सेा धरें रूप किरातको शर धनुष कर लीन्हें खरेा। हेा करत शस्त्राभ्यास बनमे
अनिस अतिबलसों भरेा॥ लखि चले आवत द्रोणकौं गुरु मानिकै आगें गयेा। सेा एकलव्य सु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

शीससों पद बन्दिकै ढाढो भयो ॥ तब कियो पूजन यथाविधि गुरु द्रोणको सननानिको करजोरि आग रहो ढाढो शिष्य आपुहि जानि कै ॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

द्रोण तब एकलव्यसों यहि भांति बोले बैन । शिष्य हो तौ दीजिए गुरुदक्षिणा बल अैन ॥ एकलव्य सुनि गुरु बचन अैसें कहो भरि आनन्द ॥ एकलव्यउवाच॥करऊ आज्ञा कृपा करि सो देहि गुरु गुण कन्द ॥ बैशम्पायनउवाच॥ सुने अैसे बचन ताके बीरताके धामदच्छ करको देऊ अगुठा कहो द्रोण ललाम ॥ द्रोणके सुनि बचन दारुण एकलव्य बिचारि । काटिकै धरि दयो अँगुठा बचन बिरद निहारि ॥ निषाद तबते धनुष खैचत अंगुलीसों सर्ब । तास तबत हस्त लाघव ह्वै गयो कछु खर्ब ॥ द्रोण साचें भए अर्जुनको गयो मिटि खेद । पार्थसो नहि और बेत्ता जगतमे धनुबेद ॥ भीम दुर्योधन भए अति गदारणमे तज्ञ । धनुर्बेद रहस्य ज्ञाता द्रोण सुत सर्बज्ञ ॥ गन्धा रजाके पुत्र भे असिचर्म बिधिविद ज्ञान । शस्त्रास्त्र विद्या गगन पारग भए अर्जुन भान ॥ श्रेष्ट सबते सुरथ वाहक भे युधिष्टिर जैान । अस्त्रको उपदेश कीन्हों तुल्य सबको द्रोण ॥ बुद्धि बल उत्साह अस्त्राभ्यास ते अभिराम । भए सबमे एक अर्जुन महारथ बलधाम ॥ बलाधिक लखि भीमकों कृत शस्त्र पार्थ महान । धृतराष्ट्रके सुत दुष्ट तिनसों करत द्वेष विधान ॥ शिष्य सिगरे लेइकै गुरु द्रोण अति बलवान । प्रहार पटुता जानि बेकों रचो लक्ष्य बिधान ॥ एक वृक्ष बनाय राखो वृक्ष ऊपर दूरि । द्रोण लक्ष्य बताय शिष्यनकों दयो मुद पूरि ॥*॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ रहऊ तुम यह लक्ष बेधन हेत करि सन्धान । कहैं हम तब शीसयाको काटियो तजि बान ॥ कहो प्रथम युधिष्टिरहि सो द्रोण बचन ललाम । करऊ सर सन्धान क्रोडेऊ बचन सो सुनि आम ॥ पांडुसुत तब धनुष लीन्हों जोरि खैचो बान । रहे लक्ष्य चितौत ठाढे घरी द्वै परिमान ॥ द्रोण पांडव नन्दसों तब कहो अैसे बैन । लखत लक्ष द्रुमस्थ पक्षी कहो बलके अैन ॥ कहो पांडव द्रोणहों प्रभु लखत हैं हमताहि । घरी द्वै पर द्रोण तासा फेरि बोले चाहि ॥ * ॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ वृक्षपक्षी हमे भ्रातन सहित देखत भूप । कहो तिन तुम कहत तिनको देखि परत स्वरूप ॥ पूछि फिरि फिरि द्रोण तिनसों कहे अप्रिय बैन । जाऊ तुममे लक्ष्य बेधन योग्यताई हैन ॥ धृतराष्ट्र के दुर्योधनादिक पुत्र सकल बोलाय । बूझि अैसें बिदा कीन्हे अरुचि बचन सुनाय ॥ भीम आदिक और जे हैं शिष्य अति बलवान । बूझि अैसें बिदा कीन्हो द्रोण करि अपमान ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रोण अैसें पार्थसों तब कहो हँसिकै बैन । करऊ तुम यह लक्ष बेधन महाबलके अैन ॥ रहऊ मेरे बाक्यके समकाल शर सन्धानि । सुनऊ पारथ द्वै घरी लौं सम्भर कार्म्मुक तानि ॥ सुनत मंडल कार धनु करि सव्य साची बीर । लखत ठाढे लक्ष पक्षी ध्यान धारे धीर ॥ द्वै घरीपर द्रोण पूछो पार्थ सो इमि बैन । लक्ष देखत मोहि देखत और कौं मति अैन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लखत हौ मै लक्ष पत्ती वृक्ष तुमहि न बीर । द्रोण होय प्रसन्न घटिका दोयलौं धरि धीर ॥ आ०प०
द्रोण अर्जुनसौं कहो फिरि लखतहो तुम जौंन । भार्तबंशावतंस मोसौं सत्य कहिए तौंन ॥ कहो पारथ लक्षकोहौं शीष देखत एक । कहो द्रोण सु तजऊ सायक करऊ बिलंब न नेक । सुनतहीं गुरु बचन पारथ छोडि दीन्हो बान ॥ लक्षको शिरकाटि क्षिति पर दयो डारि सुजान ॥ हर्षभरि तब द्रोण लीन्हौं पार्थकौं हिय लाय । द्रुपदकौं सह बन्धु जोतो जानिकै सुख पाय ॥ एक दिन सह शिष्य गङ्गा न्हानगे भरि चाह । न्हातमे तँह द्रोण जङ्घा आय पकरो ग्राह ॥ छुटनकी सामथ है पर कहो शिष्यन्ह पास । सुनत जलतें निकसिगे सब भरे मनमे त्रास ॥ सुनतही शरपाच अर्जुन जोरि धनुमे चंड । मारिकै जल मग्न कीन्हें ग्राहके षटखंड ॥ द्रोण अर्जुन रहे तेहा गए जहँ तहँ सब । भरे अतिआनन्दसौं आचार्यप्रीति अखर्ब ॥ द्रोण अर्जुनकौं महात्मा जानिकै बलधाम । कहो दुर्धर ब्रह्मशर यह अस्त्र लेऊ ललाम ॥ प्रयोग सह संहार तुमकौं देतहैं हम बीर । डारियो न मनुष्यपैं यह सुनऊ कबऊ धीर ॥ जगत करिहै भस्म पाए अल्प यह आधार । समन याके जगत मेहै और अस्त्र उदार ॥ करै बाधा शत्रुकोऊ महारणमे बीर । छोडियो यह अस्त्र पावक पुञ्ज सो तब धीर ॥ कहि तथास्तु पवित्र व्है कै जोरि अञ्जलि आय । लियो सो परमास्त्र गुरुसौं सहित बिधि सुखदाय ॥ धनुर्द्धर तो सदृश जगमे होइगो नहि और । पराभवकौं लहैगे नहि सुनऊ त्वचीमौर ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ धृतराष्टके सुत पाण्डुके सुक्षतास्त्र द्रोण बिचारि । जायकै धृतराष्ट नृपलौं कहो मति निर धारि ॥ बाल्हीक कृप अरु सोमदत्त सभीष्म बिदुर सुजान । रहे बैठे सभामे जहँ व्यासमुनि भगवान ॥ प्राप्तविद्या रावरेके भए सब सुत भूप । लखऊ तिनकी शस्त्रशिक्षा महाराज अनूप ॥ ते देखायो चहत तुमकों शस्त्रको अभ्यास । जौंन हमसौं लियो करिकै बऊत भाँति प्रयास ॥ व्है प्रसन्न सुबऊत अैसे कहन लागे भूप ॥ * ॥ धृतराष्टउवाच ॥ * ॥ भरद्वाज सुतनय कीन्हो महत कर्म्म अनूप । शुभद्योसको अनुमान करि जेहि देश मे अभिराम । जौन चहत बिधान तहँ सो कहऊ हे मतिधाम ॥ सचक्षु जनन्ह देखाइबेकौं चहत हैं हम तौंन । अस्त्र हेतु प्रयास करिकै सुतन लीन्हैं जौंन ॥ बिदुर जो गुरु कहै सो सब सौज तुम करि देऊ । लगत सबसों अधिक मोकौं परम प्रिय अति बेऊ ॥ सम अष्टक्षणि गुल्म बिस्तर उच्च दक्षिण और । रङ्ग भूमि बनाय पूजनद्रव्य धरि तेहि ठौर ॥ इमि सुनि बुलाय समाज कों करवाय डिण्डिम राव । रङ्गभूमि बिशाल कीन्ही बिदुर प्रज्ञ सचाव ॥ भूपके तँहँ बैठबेके जोग्य बिरचो धाम । धरे नाना भाँतिके तहँ शस्त्र अति अभिराम ॥ तिय जननके बैठिवेके जोग्य कीन्हें भौंन । मञ्च ऊचे जान पदजन बैठिवेकौं तौंन ॥ तेहि योस भूपति सहित भीषम सचिव लीन्हें सङ्ग । कृपाचारय सहित आए रची जँह क्षिति रङ्ग ॥ सहित मुक्ताजाल मणिगण कनक रचित अनूप । महत प्रेक्षागारमे तँह जाय बैठे भूप ॥ गन्धारजा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० सह प्रथाआई राजवनितन सङ्ग । जाय बैठी तँहा जँह ते परत देखो रङ्ग ॥ ब्राह्मणादिक
बण चारो पौरजन सविलास । कुरु पाण्डवनको चहत देखो महा शस्त्राभ्यास ॥ बजे बाद्य अनेक
बिधि धुनि करत मनु लजदान । कौतूहलीजन शब्द सोहत रङ्ग सिन्धु समान ॥ स्वेतपट उपवीत
तनुरुह स्वेत पहिरे माल । पुत्रसह तँह द्रोण आए अस्त्र सिन्धु बिशाल ॥ वेद पूजन कियो बिधि
वत द्रोण धारकधर्म्म । पाय पूजामंत्र मङ्गल पढे बिप्रन्ह पर्म्म ॥ लएँ नाना शस्त्र आए भृत्यवर्ग
उदार ॥ पहिरिकै सन्नाह ढाढे भए शस्त्र कुमार ॥ धरे धनुष तुणीर पैठे रंगमे अभिराम। और अनु
क्रमतँ युधिष्ठिर भए आगें आन ॥ करन लागे अस्त्रबिद्या धरे अद्भुत कर्म्म । कुवर नृपधृतराष्ट्रके
सब शस्त्र शोभित वर्म्म ॥ चहूँदिशि शरचले कोऊ लेत शीस नवाय । कोऊ निर्भय लखत बाणा
वलीको हरषाय ॥ नाम अङ्कित शरण सौं ते लगे बेधन लक्ष। हस्त लाघव करत नाना बाजिसादो
दत्त ॥ लगे तिनहि सराहिवे जनवृन्द अद्भुत जानि। भो कोलाहल शब्द तेहाँ सुनत अति सुखदा
नि ॥ चल लक्षबेधन करय नाना भाँति रथचढि बीर। गज अश्व पैं चढि शस्त्र डारत भाँति भाँतिन
धीर ॥ खड्ग चर्म्म सु धरे कोऊ भूमिपैं बलवान। शस्त्र शिक्षा करन लागे धरे बिधि बिधान ॥ सु
भीमसेन सु जोधनो लै गदा अति बलवान । रङ्ग भूपर गए दोऊ शैल शृङ्ग समान ॥ लगे गर्जन बीर
दोऊ महाप्रबल उदार । बांधि सव्यासव्यमंडल लगे करण प्रहार ॥ धृतराष्ट्रसो सब विदुर बिधिवत
कहत सबको कर्म्म । सौबली सौं कहति कुन्ती देखि सो कृतपर्म्म ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कुरुराजके
अरु भीमके हैं पक्षके जन जौन । खेदकरत सराहि बोलत हर्ष विस्मय तौन ॥ करण जनघन शोर
लागे मचोरोर अपार। क्रोध करि करि गदाको दोऊ करत घोर प्रहार ॥ क्षुब्ध अर्णव सदृश लखि
कै रङ्गभूमि महान। पुत्रसौं तब द्रोण अैसें कहो अति मतिमान ॥ द्रोणउवाच ॥ जायकै तुम करऊ
वारण दोऊअति वरवीर । होय जाते रङ्गमे नहि भङ्गभाव गँभीर ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोऊ उद्दित
मदा कीन्हे क्रोधकौं अति धारि। मध्यमे तँह जाय गुरुसुत दियो तिनहि निवारि ॥ रङ्ग अंगण माह
आए द्रोणबोले बैंन । कहऊ बाद्य निवृत्ति करिबैं हे विदुर मतिअैन ॥ पुत्रतँ अति मोहि प्रियतर
शस्त्रवेत्ता जान । बिष्णुके सम बीर अर्जुन कौं लखऊ तुम तौंन ॥ द्रोणके सुनि बचन ताके चरण
चिन्ति सुधीर । पहिरि अंगुलि त्राण सिगरे भये ढाढो बीर ॥ धरैं काञ्चन कवच अर्जन लए धनुष
महान। इन्द्रधनु सह तडित मानो लसतहै जलदान ॥ फूलि सो तब उठो ताके उठत सिगरे रङ्ग ।
बाद्य नाना लगे बाजन शङ्खधुनि शुभ सङ्ग ॥ इन्द्रको यह पुत्र कुन्तीतनय पाण्डव बीर । कहन अैसे
लगे सिगरे भरे मोद गँभीर। सुनत अैसे बैंन कुन्ती भरी मोद उदार ॥ वहन ताके उरजते तब लगी
पयकी धार । धृतराष्ट्र अैसो सुनत शब्द सु तुमुल अति गम्भीर ॥ क्षुब्ध सिन्धु समानहै यह विदुर
को धुनि धीर ॥ * ॥ विदुर उवाच ॥ * ॥ नृप परित्राण पालन उठो बलको धाम । देखि ता
कौं होतहै यह शब्द अति अभिराम ॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ धन्य हम बिधि कृपा करि ए

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दिए सुत बलवान। प्रथा अरणी ते विधा भ पुत्र अग्निसमान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ आ०प०
रङ्गजन तनु भरे आनद भए स्वस्थ गँभीर। लगे गुरु कहँ अस्त्र लाघव तब देखावन वीर ॥ छोडि
के अग्यस्त्र चऊंदिशि करी अग्नि महान। डारिकै वरुणास्त्र ताकौं कियो शान्ति सुजान ॥
वायव्य अस्त्र चलाय कीन्हो वायु अति बलवान। अस्त्रतजि पर्जन्य चऊंदिशि करे जलद
महान॥ छोडिकै भौमास्त्र कीन्हों भूमि माह प्रवेश। डारिकै गिरि अस्त्र अपनो धरो गिरिसम
बेश ॥ छोडि अन्तर्ध्यान अस्त्र सु भए अन्तर्ध्यान। क्षणकमे लघु क्षणकमे गुरु परे देखि सुजान ॥
क्षणकमे रथ अय ऊपर क्षणकमे रथ बीच। उतरि रथते शस्त्रके प्रक्षेप करत निभीच ॥ सुकुमार
सूक्ष्म कठार शरसा लक्ष्यभेदे बीर। भ्रमत लोह बराह छेदो मारि मुखमे तीर॥ पांच एक समान
फेरि न फिरन पायो तौन। गोविषाण सरज्जु घूमत कोश ताको जौंन ॥ तेहिं राह काढे भेदिकै
बर एक विंशत बान। यहि भांति लक्ष्य अनेकविधि के करे बेध सुजान ॥ बाँधिमण्डल गदा खिल्ला
सो देखाई बीर। सस्त्र नाना भांति की करि क्रिया विधिवत धीर ॥ शस्त्र कर्म समाप्त कीन्हो पार्थ
यहि विधि सर्व। भयो मन्दी भूत खजनन बायको सु अखर्व ॥ चण्ड धुनि भुजदण्ड को बर खबल
लूचक जौंन। सुनी बज्राघातसम सब द्वारतैं अति तौंन ॥ गिरे गिरि कै भूमि फाटी किधौ घन
घहरात। द्वारदिशि इमि कहत हरत रङ्गके जन मात ॥ पञ्च पाण्डव सहित शोभित भए द्रोण
अमन्द। यथा हस्त नक्षत्रके संगलसत राका चन्द॥ नृप सु योधन सहित भ्रातन्ह सङ्ग अस्त्थाम।
उदितायुध वृन्दमे इमि लसत अति अभिराम ॥ दानवन को जीति कै सुरसङ्ग ज्यासुरनाथ।
लसत यौं धृतराष्ट्र नन्दन मध्य भ्रातन साथ ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जन घन गे बिलगाय कर्ण महाबल पाय पथ। रङ्ग भूमि मे आय चकित चखन चाहत भयो ॥
सहज कवच अभिराम लसत कर्ण कुण्डल परम। धरैं धनुष बलधाम मनऊ चरणचारी सु गिरि॥
सिंह सदृश बलवान भरो भास सम भानुके। कनकलता सममान महा दान गुण गण भरो ॥
रङ्ग चऊँदिशि देखि नमस्कार रूप द्रोणकौं। आदर सहित विशेखि कियो कर्ण बर धनुषधर ॥
कोआयो यह बीर चाहि चकित सब व्है रहे। बोलो बचन गँभीर कर्ण महाबल दर्पसों ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पार्थ कर्म तुम कीन्हो जौंन। तातैं करत अधिक हम तौंन ॥ सुनत बचन यह जनगण वृन्द।
खरे भए ते दरि नरिन्द ॥ सुनत लहो दुर्योधन मोद। अर्जुन भरे लाज अरु क्रोध ॥ पाय द्रोण
को आज्ञा तौंज। कियो कर्म अर्जुन किय जौंन ॥ भाइन यह दुर्योधन बीर। यो कहि भरो अङ्ग
मह धीर ॥ * ॥ दूर्योधनउवाच ॥ * ॥ तो आगम भो अति सुभचार। मिले भाग्यवश मोहि
उदार ॥ राज्य सहित सम्पति मो जौन। करऊ यथेष्ट भोग तुम तौन ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तुम सहसख्य जौन यह भूप। सो सब कृत्य समान अनूप ॥ द्वन्द्व युद्ध पारथके साथ। चहत कियो हम हे कुरुनाथ ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ करि प्रिय भोग सकल सो साथ। धरऊ चरण दुसमनके माथ ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जानि निरादर अपनो बीर। अर्जुन बोले बचन गँभीर ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ बिना बोलाएँ आवत जौन। बिनु पूछैं बोलत है तौन ॥ इनको गमन लोक है यच। तुम्हैं मारिहौं पढवत तच ॥ ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ सबकौं रङ्ग समान अशेष। यामे है तौकहा बिशेष ॥ बीर्य श्रेष्ठ राजा अभिराम। बल क्षत्रीको धर्म ललाम ॥ क्षेप बचन दुर्बल को काम। शरसौं कहऊ जौं हौ बलधाम ॥ सौंहै गुरुके तेरो शीस। हरि हौ शर सौं दिखे बीस ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ गुरु की आज्ञा पाय ललाम। पार्थ उठे धरि धनु बलधाम ॥ भ्रातन सह दुर्योधन पास। भयो कर्ण ठाढो बलरास ॥ युद्ध हेत होऊ बर बीर। भे सन्नद्ध उद्यत रण धीर ॥ तब घन आए मढे अकाश। सह विद्युत इन्द्रायुध पाश ॥ धरि अर्जुन पर प्रीति सदङ्ग। सुरपति आए देखन रङ्ग ॥ तब भास्कर आए घन पाश। घन गत कियो तिमिर को नाश ॥ अर्जुन घन छाया उप गूढ। लखो जनन्ह सब समरारूढ ॥ परे भानु आतप शुचि बर्ण। देखि परे सबही कौं कर्ण ॥ जहँ धृतराष्ट तनय बल बीर। इस्थित कर्ण तहां रणधीर ॥ जहां भीष्म कृप गुरुबर द्रोण। तहां रहे पारथ बल भौंन ॥ भयो द्विधा तब रङ्ग स्वरूप। भई भिन्न रानी सब भूप ॥ भई मोह बश प्रथा महान। जानि पुत्र दोनो सुखदान ॥ आश्वासन कुन्ती को आय। कियो बिदुर चन्दन छिरकाय ॥ पाय चेत लखि पुत्र बिरोध। कुन्ती लहति न मनमे बोध ॥ उदित चाँप दुऊनको देखि। बोले कृप अतिमति अवरेखि ॥ कुन्ती पुत्र पार्थ कुरुबंश। पाण्डु तनय नृप सुकुल प्रसंश ॥ माता पिता तुम्हारे जौन। कर्ण स्वबंश कहऊ तुम तौंन ॥ तब अर्जुन लहि तुम्हे समान। करै न करै युद्ध बलवान ॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि कै गो कर्ण लजाय। कहो न कछु रहि गयो चुपाय ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ आचार्य सुनऊ यह शास्त्र प्रमान। राज जोनिहै विविधि समान ॥ सूर कुलीन सु सेना धीश। इन्हे कहत क्षत्री बुध इश ॥ जौ अराज अर्जुन निरधारि। लरत न इनसौं असम विचारि ॥ तौ हौं करत अङ्गको भूप। करि अभिषेक कर्ण अनुरूप ॥ दुर्योधन करि कै अभिषेक। राज चिन्ह दीन्हे सविवेक ॥ चामर छत्र सहित अभिराम। शोभित भयो कर्ण बलधाम ॥ राज्य प्रदान सदृश तुम जौन। देउँ भूपसो कहिए तौन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ अत्यन्तसख्य तुमसों हम बीर। चाहत कहो सुयोधन धीर ॥ कहो तथास्तु कर्ण सुनि भूप। मिले लाय हियसौं सुख रूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ शिथिल सखेद कँपत सब गात। अधिरथ नाम कर्णको तात ॥ गयो रङ्गमे यष्टी हाथ। धरो कर्ण लखि पदपर माथ ॥ तेहि गहि हिय लायो कहि पूत। भर मोद जलसा चष सूत ॥ अभिषेकाद्र शीस करि घ्रान। दृगजलसौं सीचो सुखदान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जानि सूतसुत बचन सहास । भीमसेन बोले तो पास ॥ तोहि धारिबें योग्य प्रतोद । आ०प० कुलहि देखु का भयो समोद ॥ तो बध उचित न है रणमाह । सूत पुत्र कहँ कुरुकुलनाह ॥ अङ्ग राज्य नहि तोहि समान । पुरोडास कहँ भक्षत श्वान ॥ सुनो कर्ण करि कोप महान । लखो गगण दिशि करि मुख भान ॥ उठो सुयोधन सुनि व्है क्रुद्ध । भ्राट बिपिनि तें ज्यों हरि उद्ध ॥ भीमसेनसों ऐसे बैंन । कहन लगो राते करि नैंन ॥ तुम्हे योग्य ए बचन न भीम । क्षत्री ज्येष्ठ होत बल सीम ॥ क्षत्री नदी सु प्रभवस्थान । नही देखि वो योग्य सुजान ॥ सलिलोद्भव है पावक जौन । सकल जगतमे व्यापक तौन ॥ दधिच अस्थि भव बज्र महान । हने दनुज जेहि अति बलवान ॥ शर सम्भव सब कहत कुमार । जाको अतुल प्रभाव उदार ॥ क्षत्री भए जे ब्राह्मण रूप । कौशिकादि तप तेज अनूप ॥ कलसोद्भव आचारय द्रोण । अस्त्र शस्त्रबेत्ता बर जौन ॥ गौतम शरसम्भव कृप बीर । अस्त्र शस्त्रबेत्ता रणधीर ॥ जन्म तुम्हारो जैसे जौन । सुनऊ भीम हम जानत तौन ॥ कुण्डल कबच सहित बलधाम । रविके सदृश सूत सुत आम ॥ जनति भूमी नहि व्याघ्र महान । जानऊ कर्ण तथा बलवान ॥ पृथ्वी राज्य योग्य बरबीर । अङ्गराज्य है कितिक गँभीर ॥ अनेक बाऊबल सह हम जौन । सम न तास भुजबलकहँ तौन ॥ रथ चढि धनु खैचौ बरबीर । सुनि भो हाहाकार गँभीर ॥ साधुवाद धुनि सहित बिशेश । गए अस्तकौं तबहि दिनेश ॥ दुर्योधन गहि करसों कर्ण चले धामकहँ प्रमुदित वर्ण ॥ बरी मसाल विशाल ललाम चले रङ्ग तजि कै निजधाम ॥ पांडव भीष्म द्रोण कृपबीर । गए स्वधाम सकल रणधीर ॥ प्रथा दिव्य लक्षण सब देखि । पूर्व पुत्र मनमाहँ बिशेखि ॥ गुप्तप्रीति मनमे अभिराम । धरैं कर्ण पर रहति ललाम ॥ लहि दुर्योधन कर्ण सप्रीति । डारि दई अर्जुन कृतभीति ॥ कर्णबीर कहि नाना बैन । दुर्योधन कहँ कियो सचैन ॥ कियो युधिष्ठिर यह अनुमान । कर्ण सदृश नहि धनुधर आन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकबिना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्बणि शस्त्रदर्शनोनाम अष्टत्रिंशोध्यायः ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भे कृतास्त्र कुरुपांडुसुत देखि द्रोण मतिधाम । दियो चहत गुरु दक्षिणा लखत काल अभिराम ॥
तब सब शिष्य बोलाय कै कुरुपाण्डब बरबीर । देऊ हमै गुरुदक्षिणा कहो द्रोण रणधीर ॥
द्रुपदराज पांचालको पकरि समरमे लेऊ । ताहि हमै गुरुदक्षिणामे तुमसब मिलिके देऊ ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुनत गुरुके बचन रथ चढि चले सिगरे वीर । सहित द्रोणाचार्य्य कौरव परम पांडव धीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

०प० तुम सहसख्य जौन यह भूप। सो सब कृत्य समान अनूप ॥ द्वन्द युद्ध पारथके साथ। चहत कियो हम हे कुरुनाथ ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ करि प्रिय भोग सकल मो साथ। धरऊ चरण दुसमनके माथ ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जानि निरादर अपनो बीर। अर्जुन बोले बचन गँभीर ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ बिना बोलाएँ आवत जौन। बिनु पूछेँ बोलत है तौन ॥ इनको गमन लोक है यत्र। तुह्मै मारिहौं पठवत तत्र ॥ ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ सबकौं रङ्ग समान अशेष। यामे है तौ कहा बिशेष ॥ बीर्य श्रेष्ठ राजा अभिराम। बल क्षत्रीको धर्म ललाम ॥ क्षेप बचन दुर्बल को काम। शरसौं कहऊ जौं हौ बलधाम ॥ सौंहै गुरुके तेरो शीस। हरि हौ शर सौं बिखे बीस ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ गुरु की आज्ञा पाय ललाम। पार्थ उठे धरि धनु बलधाम ॥ भ्रातन सह दुर्योधन पास। भयो कर्ण ठाढो बलरास ॥ युद्ध हेत दोऊ बर बीर। भे सन्नद्ध उद्ध रण धीर ॥ तब घन आए मढे अकाश। सह बिद्युत इन्द्रायुध पाश ॥ धरि अर्जुन पर प्रीति सदङ्ग। सुरपति आए देखन रङ्ग ॥ तब भास्कर आए घन पाश। घन गत कियो तिमिर को नाश ॥ अर्जुन घन छाया उप गूढ। लखो जनन्ह सब समरारूढ ॥ परे भानु आतप शुचि बर्ण। देखि परे सबही कौं कर्ण ॥ जहँ धृतराष्ट तनय बल बीर। इस्थित कर्ण तहां रणधीर ॥ जहां भीष्म कृप गुरुबर द्रोण। तहां रहे पारथ बल भौंन ॥ भयो द्विधा तब रङ्ग स्वरूप। भई भिन्न रानी सब भूप ॥ भई मोह बश प्रथा महान। जानि पुत्र दोनो सुखदान ॥ आश्वासन कुन्ती को आय। कियो बिदुर चन्दन छिरकाय ॥ पाय चेत लखि पुत्र बिरोध। कुन्ती लहति न मनमे बोध ॥ उद्दित चाँप दुज्जनको देखि। बोले कृप अतिमति अवरेखि ॥ कुन्ती पुत्र पार्थ कुरुबंश। पाण्डु तनय नृप सुकुल प्रसंश ॥ माता पिता तुम्हारे जौन। कर्ण स्वबंश कहऊ तुम तौन ॥ तब अर्जुन लहि तुम्है समान। करै न करै युद्ध बलवान ॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि कै गो कर्ण लजाय। कहो न कछु रहि गयो चुपाय ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ आचार्य सुनऊ यह शास्त्र प्रमान। राज जोनिहै त्रिबिधि समान ॥ सूर कुलीन सु सेना धीश। इन्है कहत क्षत्री बुध इश ॥ जौ अराज अर्जुन निरधारि। लरत न इनसौं असम बिचारि ॥ तौहौं करत अङ्गको भूप। करि अभिषेक कर्ण अनुरूप ॥ दुर्योधन करि कै अभिषेक। राज चिन्ह दीन्हे सबिबेक ॥ चामर छत्र सहित अभिराम। शोभित भयो कर्ण बलधाम ॥ राज्य प्रदान सदृश तुम जौन। देउँ भूपसो कहिए तौन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ अत्यन्तसख्य तुमसों हम बीर। चाहत कहो सुयोधन धीर ॥ कहो तथास्तु कर्ण सुनि भूप। मिले लाय हियसौं सुख रूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ शिथिल सस्वेद कँपत सब गात। अधिरथ नाम कर्णको तात ॥ गयो रङ्गमे यष्टी हाथ। धरो कर्ण लखि पदपर मारथ ॥ तेहि गहि हिय लायो कहि पूत। भर मोद जलसा चष सूत ॥ अभिषेकाद्र शीस करि घ्रान। दृगजलसौं सीचो सुखदान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जानि सूतसुत बचन सहास । भीमसेन बोले तो पास ॥ तोहि धारिबें योग्य प्रतोद । आ०प० कुलहि देखु का भयो समोद ॥ तो बध उचित न है रणमाह । सूत पुत्र कहँ कुरुकुलनाह ॥ अङ्ग राज्य नहि तोहि समान । पुरोडास कहँ भक्षत श्वान ॥ सुनो कर्ण करि कोप महान । लखो गगण दिशि करि मुख भान ॥ उठो सुयोधन सुनि ह्वै क्रुद्ध । भाट विपिनि तें ज्यों हरि उद्ध ॥ भीमसेनसों अैसे बैन । कहन लगो राते करि नैन ॥ तुम्हे योग्य ए बचन न भीम । क्षत्री ज्येष्ठ होत बल सीम ॥ क्षत्री नदी सु प्रभवस्थान । नही देखि वो योग्य सुजान ॥ सलिलोद्भव है पावक जान । सकल जगतमे व्यापक तान ॥ दधिच अस्थि भव वज्र महान । हने दनुज जेहि अति बलवान ॥ शर सम्भव सब कहत कुमार । जाको अतुल प्रभाव उदार ॥ क्षत्री भए जे ब्राह्मण रूप । कौशिकादि तप तेज अनूप ॥ कलसोद्भव आचारय द्रोण । अस्त्र शस्त्रवेत्ता बर जान ॥ गौतम शरसम्भव कृप वीर । अस्त्र शस्त्रवेत्ता रणधीर ॥ जन्म तुम्हारो जैसे जान । सुनऊ भीम हम जानत तान ॥ कुण्डल कवच सहित बलधाम । रविके सदृश सूत सुत आम ॥ जनति भूमी नहि व्याघ्र महान । जानऊ कर्ण तथा बलवान ॥ पृथ्वी राज्य योग्य बर बीर । अङ्गराज्य है कितिक गँभीर ॥ अनेक बाऊबल सह हम जान । सम न तास भुजबलकहँ तान ॥ रथ चढि धनु खैचो बरबीर । सुनि भो हाहाकार गँभीर ॥ साधुवाद धुनि सहित विशेश । गए अस्त्रकौं तबहि दिनेश ॥ दुर्योधन गहि करसों कर्ण चले धामकहँ प्रमुदित वर्ण ॥ बरी मसाल विशाल ललाम चले रङ्ग तजि कै निजधाम ॥ पांडव भीष्म द्रोण कृपबीर । गए स्वधाम सकल रणधीर ॥ प्रथा दिव्य लक्षण सब देखि । पूर्व पुत्र मनमाहँ विशेखि ॥ गुप्तप्रीति मनमे अभिराम । धरैं कर्ण पर रहति ललाम ॥ तहि दुर्योधन कर्ण सप्रीति । डारि दई अर्जुन कृतभीति ॥ कर्णबीर कहि नाना बैन । दुर्योधन कहँ कियो सचैन ॥ कियो युधिष्ठिर यह अनुमान । कर्ण सदृश नहि धनुधर आन ॥ ❀❀❀❀❀

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि शस्त्रदर्शनोना माष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ❀❀❀❀❀

अ०५० गए ते पंचालकौं सह नगर मर्दत देश। महाबल सह द्रुपद पुरमे कियो जाय प्रवेश ॥ कर्ण दुर्यो धन युयुत्सु विकर्ण अतिबल बीर। जलसिन्धु दुःशासन सुलोचन युद्धमे अतिधीर ॥ और बऊत कुमार नानाभाँति कारक युद्ध। पूर्व समर प्रवेश कौं सब बचन बोलत उद्ध ॥ रथी शादो वीर ते पुर पैठि कै बलवान। राज पथमे गए लीन्हे सङ्ग सैन महान॥ द्रुपद नृप सुधि पाय सेना देखि पहिरि सन्नाह। कढोभ्रातन सङ्ग रथचढि भरो युद्ध उछाह ॥ करत ते शरवृष्टि गर्जत घोर शब्द महान। स्वच्छ रथ चढि द्रुपद आयो निसित बर्षत बान ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ द्रोणसौं करि मंत्र अर्जुन कहे ऐसे बैन। द्रुपद नृपके जीतिबेकी शक्य इनमे है न॥ करि पराक्रम चुक हि कौरव तज हि दर्प महान। युद्धमे तब द्रुपदकौं गहि लेउँ गो बलवान ॥ अर्धक्रोश सुनतहीं यह मंत्र दृढ करि धोर। रहे ठाढे पार्थ भ्रातन सहित गुरुढिग बीर ॥ लखे धावत कौरवनको द्रुपद करि कै क्रोध। महासेना सग लीन्हे आइ कीन्हो रोध ॥ चढो रथपै शीघ्रगामी द्रुपद धावत एक। त्रास बसतैं कौरवन तेहि लियो मानि अनेक ॥ द्रुपदके अति तीव्र शरवर चले चारो ओर। बजे शङ्ख पृदङ्ग भेरी द्रुपद पुरमे घोर ॥ करण तब पांचाल लागे सिंहनाद महान। धनुज्यातल शब्द न भयौ भरत भो अतिमान ॥ दुर्योधनो सह बन्धु लागे बाण बर्षण बीर। बाण बिद्धन द्रुपद मानत महान दुर्जय धीर ॥ व्यथित कीन्ही महासेना कौरवनकी सर्ब। सह बन्धु दुर्योधन सकर्ण बिकर्ण बोर अखर्ब ॥ और भूपति तनय सिगरे रहे जे बल भूरि। चक्रलौं संचार करि दिय द्रुपद बाणन्ह पूरि ॥ निकसि पुरजन लए यष्टी मुसल परिघ उदार। कौरवन की चमू चऊ दिशि लग करण घोर प्रहार ॥ भजे कौरव देखि अतिसै तुमुलरण अतिघोर। करत हाहाकार सिगरे गए पाण्डव ओर ॥ आर्त्त तिनको शब्द सुनिकै हर्षि पांडव बीर। बन्दि गुरुके चरण रथ पर चढे रणरस धीर॥ धर्मसौं इमि कहो अर्जुन करऊ तुम मति युद्ध। करे माद्रीतनय रक्षक चक्रके अति उद्ध ॥ करो सेनाअग्र गामी भीमकौं बलवान। शत्रु सेना शब्द सुनि कै भरे क्रोध महान ॥ गए कुन्तीपुत्र आतुर हाँ कि कै रथ बीर। पांचाल सेना सिन्धु सी भट भरी शब्द गँभीर॥ गदा धरिकै भीमसेना मध्य पैठे जाय। जहाँ गज समुदाय जंता चढे बर बल पाय ॥ गदा गहि मदमत्त बारण लगे मारण बीर। कुम्भ मस्तक भिन्न कुञ्जर गिरत धरत न धीर॥ लगे बज्र निपात जैसैं गिरत गिरबर सान। गदा को लहि घात ऐसे गिरत हिरद महान ॥ अश्व रथ सपदाति गण घन लगे मरदन भीम। चलित कीन्ही द्रुपद सेना बाऊबल बर सीम ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ द्रोणको प्रिय करण हेतु बिचारि पार्थ महान। द्रुपदपै रथ हाँकि आए निसित छाडत बान ॥ मारि कै चतुरङ्गिणी तब दई सेना डारि। यथा दावादहन क्षणमे देत बनघन जारि ॥ पांचाल सृंजय क्रोध करि कै धनुष धरि अतिकाय। पार्थको रथ शरणसौं बऊ लियो चऊदिशि छाय ॥ सिंहनाद उदार करि पांचाल सरत समान। युद्ध भो अति घोर अद्भुत निसित बर्षत बान ॥ सिंहनाद न सहो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अर्जुन कियो क्रोध अखर्ब। डारि कै शर जालमे ते किए मोहित सर्ब ॥ लेत छोडत बाणके नहि आ०प०
परत अन्तर देखि। पार्थके धनु ते कढै मनु बिधिए पाँति विशेखि॥ सत्यजित सह द्रुपद धायो भरो
क्रोध महान। कीय लीन्हो पार्थको रथ वर्षि कै बर बान॥ हलहला अति शब्द बाढो द्रुपद सेना
बीच। गहो चाहत सिंह ज्यौं गजनाथ मत्त निभीच ॥ देखि अर्जुन चलो आवत सत्यजित बर
बीर। द्रुपद रक्षाहेत धायो पार्थ पै रण धीर ॥ द्रुपद अर्जुन युद्ध द्रुपद बीर बिरद अखर्ब। इन्द्र
बलि सौं लगे दोऊ मथन सेना सर्ब ॥ सत्य जितके पार्थ मारे मर्ममे दश बान। सत्यजित शत शर
चलाए पार्थ पै अतिमान॥ इन शरसो हस्त लाघव कियो फाल्गुण बीर। काटि दीन्हो सत्य
जितके धनुषको गुणधीर ॥ सत्यजितसो डारिकै धनु चाप लीन्हो आन। हत हय रथ सहित
पार्थकौं हने बज्र बान ॥ सत्यजितके लगत शर करि कोप पार्थ प्रचंड। नाश तास विचारि
खैचो जोरि शर कोदंड ॥ अश्व ध्वज धनु सूत बाणन्ह मारि डारे बीर। लेत फिरि फिरि
चाप तेऊ काटि डारत धीर ॥ बिरथ व्है कै सत्यजित गो छोडिके संग्राम। द्रुपद भ्राता भजो
लखि करि क्रोध अति बलधाम ॥ पार्थपै अतिवेग लागो निसित बर्षण बान। तुमुल कीन्हो
युद्ध अर्जुन सौं महा अतिमान ॥ पञ्चशरसौं पार्थ धनु ध्वज अश्व सूत सँघारि। कियो अतिशय
हस्त लाघव दियो क्षितिपर डारि॥ धनुष शर तजि वीर अर्जुन खड्ग धरि उदंड। द्रुपदके रथपै
गयो चढि नाद करि अति चंड ॥ लियो गहि पाचाल पतिकौं बामकरसौं बीर। देखि
भागी द्रुपद नृपकी सकल सैन अधीर ॥ देखाइबैं सबसैन्यकौं अति बाहुबल अभिराम।
सिंहनाद महान कीन्हौं पार्थ अतिबलधाम ॥ चले लै पाञ्चाल नृपकौं देखि सकल कुमार।
लगे लूटन द्रुपद पुर तजि बंश बिरद उदार ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ द्रुपद सम्बन्धी सुअप
नो भीम करऊ सनेऊ। तास सेना हनऊ मति गुरुदक्षिणा चलि देऊ ॥ * ॥ वैशम्पायन
उवाच ॥ * ॥ मानि बचन सु पार्थको तब तजि वृकोदर युद्ध। फिरे पाय न क्षत्र रणमे बीररस
बश उद्ध ॥ पार्थ गहि पाञ्चालकौं गुरु द्रोणके ढिग आय। सौंपि दीन्हो दक्षिणा जो कही हो
सुखदाय ॥ तथा विधि लखि द्रुपदकौं हसि द्रोण बोले बैन। लहो अपने योग्य भूपति पूर्व
सख्य सचैन ॥ हास्य करि हसि द्रोण बोले फेरि भूपति पास। क्षमाभाजन विप्र हम सो
प्राण को नहि त्रास ॥ बाल्यपनमे कियो क्रीडा साथ हम तुम जौंन। फेरि बाढति प्रीति मनमे
समुझि कै सब तौन ॥ योग्य तुम सो सख्य करिवैं भयो चाहत भूप। देऊ आधो राज्य हमकौं
कीजि ये अनुरूप ॥ होत है न अराज राजहि सख्य सुनऊ ललाम। कियो यात राज्यकौं
हो यत्न सह बलधाम ॥ करऊ दक्षिण कूलको तुम राज्य सुरशरि वार। देऊ उत्तर कूलको
जो देश हम हि उदार ॥ * ॥ द्रुपदउवाच ॥ * ॥ भूलि दे भुलाय ऐसी महत जन की रीति।
कियो तुम सौं चहत हैं हम द्रोण अक्षय प्रीति ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सत्कार करि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० कै द्रुपदकौं तब छोडि दीन्हो द्रोण । द्रुपद आधो बांटि दीन्हो राज्य अपनो जौंन ॥ माकन्दि नामा पुरी गङ्गातीर अति अभिराम । दीनमन व्है बसे तेहा द्रुपद विगलित काम ॥ नदी चर्मन्वतोलौं सुर शरित दक्षिण भाग । देश शासन करत लहि पाञ्चाल बिभव विराग ॥ छात्र बलते नही देखत द्रोण परिभव भूप । हीन मानत आपु कौं। द्विज उग्र बलतैं भूप ॥ पुत्र प्राप्ति विचारि क्षितिपर फिरत रहत नरेश । द्रोण बसि अहिछत्र पुरमे करत पालन देश ॥ *

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ जब गयो सम्बत एक। धृतराष्ट्र सहित बिवेक॥युधिष्ठिर हि युवराज। तब कियो सहित समाज ॥ अति जानि कै गुण धाम । शत धर्म्म रत अभिराम ॥ थिर धीर सहन स्वभाव । जन पालिवेमे चाव ॥ कछु करत क्रूर न कर्म्म । श्रुति शास्त्रवेत्ता पर्म ॥ कछु दिवसने मति छद्द । भो पितातैं गुण बृद्ध ॥ असि गदा रथ धनु युद्ध । बलिरामतैं लहि उद्ध ॥ लहि शस्त्र शिक्षा सर्व । भो भीम प्रबल अखर्ब ॥ पढि धनुर्बेद समस्त । शर त्यागमे लघु हस्त ॥सब भाँति वेधत लक्ष । दृढ मुष्टिमे अति दक्ष ॥ है धनुर्धरमह गण्य ।नहि पार्थ सम कोउ अन्य ॥ इमि द्रोण बोले बैन । लखि शिष्यसम बल अैन ॥इमि द्रोण अर्जुन पास । वर कहे बचन प्रकाश ॥ लहि समाजे वर वीर। जेंहि सकल कौरव धीर ॥ सु अगस्त्य शिष्य ललाम । धनुबेदमे अभिराम ॥ मुनि अग्नि वेश्य उदारमम गुरू सुतप अपार ॥ दिय कृपा करि जो मोहि ॥ सो देत पारथ तोहि ॥ बरपात्रतें निधि काढि । लहि धरी भाजन बाढि ॥वर ब्रह्मशिर है नाम । अति अस्त्र तेजस धाम ॥ सो देत मोसों बन । यह कहो करुणा अैन ॥ यहि अस्त्र को न प्रयोग । है मनुज सहिवे योग ॥ सो पाय अल्प अधार । यह दहै गो संसार ॥यह देत तुमको जौंन। सो और योग्य रहो न ॥ जो महा मुनिको बैन। सो पालियो बल अैन ॥ गुरु दक्षिणा मोहि देह । यह पार्थ सहित सनेह॥ जब करण चाहो युद्ध । तब लेऊ मोसों उद्ध ॥ यह पार्थ करि स्वीकार । गुरु चरण बन्दि उदार ॥ तब चले उत्तर ओर ।यह भयो क्षिति परसोर ॥ नहि सदृश अर्जुन वीर । है धरा धनुधर धीर ॥ असि गदा रथ धनु युद्ध । मे पार्थ पारग उद्ध ॥ सहदेव नीति विधान । गुरु पास पाय महान॥धरि भक्ति प्रीति सदङ्ग । निति रहत भ्रातन सङ्ग ॥ गुरुते सुशिक्षा पाय । प्रिय बन्धु नकुल सचाय ॥ अति चित्र योधी वीर । भो महारथ रणधीर ॥ त्रयवर्ष कारो यज्ञ । सौवीर भूप रणज्ञ ॥ चढि पार्थ मारो ताहि । अति युद्ध दुर्मद चाहि ॥ नहि पांडु जीतो जौंन । जवनाधिपति बल भौन ॥ किय ताहि अर्जुन वश्य । है वीर धीर प्रशस्य ॥ सौवीर बित्तल भूप । सो हनो पार्थ अनूप ॥ प्रिय युद्ध नृप सौवीर । सुमित्र नामक धीर॥ वर शरण मारो ताहि । वीभत्सु जय यश चाहि ॥ ले भीमसेन सहाय। मरुदेश पारथ जाय ॥ सब जीति तहके भूप । धन लियो अमित अनूप ॥ सो एकरथ बल वान । जिमि उदित ग्रीषम भान ॥ फिरि गए दक्षिण देश। तँह जीति सकल नरेश ॥ धन ओघ लै अभिराम । गे पार्थ कुरुकुल धाम ॥ यहि भाँति पांडव वीर । परदेश जीति गँभीर ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ आ०प०

तिन्हे जानि अति वीर विचारि। महा धनुष धारी निरधारि॥ पांडु सुतन सह दूषित भाव। धरि धृतराष्ट भए गत चाव॥ चिन्तापर नहि निद्रा लेत। दुष्ट विचारण लागे हेत॥*॥वैशम्पायन उवाच॥*॥राजनीतिबेत्ता मंत्रज्ञ। कनिक विप्र बोलवायो तज्ञ॥*॥धृतराष्ट उवाच॥*॥कनिक कहऊ तुम करि है तौंन। राजनीतिके लायक जौंन॥ *॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ बोलो कनिक नीच्च अति बैन। राज नीतिके विधिवत चैन॥ हमते सुनऊ बचन यह भूप। राजनीति बिधि विहित अनूप॥ उद्दित दंड रहे नृप तौंन। प्रगट देखावे पौरुष जौंन॥ भेद रहित राखे निज अङ्ग॥ लखे और को भेद प्रसंग॥ परको देखे भेद बिरोध॥ तेहि पथ पैठे करिकै सोध। उद्दित दंड रहै इमि भात। लखि जाकौं सब रहै डरात॥ सर्व कार्य्य साधक जो दंड। ताहि न भूलै भूप प्रचंड॥ पर नहि देखैं अपनो छिद्र। यौं करि राखैं भूप विनिद्र॥ रहै कूर्म्मसम अङ्ग छपाय। जातैं छिद्र न परै लखाय॥ करैं अपूरण कार्य नकोय। करै सोई जो पूरण होय॥ छोडि न देय शत्रुकहँ शेष। होय दुखद लहि समय विशेष॥ टूटि रहै कांटो गडि पाय। देइ दुःख लहि समय सहाय॥ शत्रु होय अपकारक जौंन। निश्चै मारि डारिये तौंन॥ शत्रु बुद्ध कारक बलवान। भजो होय लहि विपति महान॥ जौं वह मिलै तो हनै नरेश। छोडिदए नहि कारण बेश॥ निर्बल रिपु नहि निदरण योग। याय अग्निकण तृणसंयोग॥ दहत महावन घन अभिराम॥ देखि शत्रु अतिसै बलधाम॥ अन्ध बधिर सम रहैं सुजान। हनै समय पाएँ बलवान॥ लुब्धक मृतसम धारैं घात। मृगको करत समय लहि पात॥ करि सामादि उपाय सुजान। करि बश हनै शत्रु दुखदान॥ दया न करिए कबहूँ जोय। रिपु व्है दीन शरणगत होय॥ मरैं शत्रुके भयको नाश। रहे शत्रु है अवसि विनाश॥ दंड शत्रुकौं देइ महान। रिपुके निकट जात बलवान॥ तीनि तास पहिलैं हरि लेय॥ फेरि शत्रुको बध सु बिधेय॥ होय दासद्रव रहि रिपुपाश। समय पायकै करै विनाश॥ प्रथम हरै ऐस्वर्य महान। रिपुके अङ्ग करै बसमान॥ सचिव अमात्य सहित सेनेश। करै शत्रुके सबश नरेश॥ सब चारिते लेइ मगाय। ऐसे चारि करै सुखदाय॥ हनै प्रथम जो नरबर मूल। फेरि हनै शाखा प्रतिकूल॥ राष्ट्र दुर्ग सह कोश महान। पाँच करै बश प्रथम सुजान॥ फेरि तास मारण मत धारि। दण्डदाबि रणमे अरि मारि॥ साम दाम बिधि भेद पसारि। मत्त पाय अरि बन्ध न डारि॥ गहै प्रथन फिरि हनै रिसाय। तांबूल पर्ण भोजनमे नाय॥ साधिभृत्य विषदेय दिवाय॥ सोवत जारै अग्नि लगाय॥ करि एकाग्रमन रक्षित होय। रहि अरिछिद्र विलोकै सोय॥ रहै शत्रु तँ सभय सुजान॥ साधुबेश धारे मुनिमान॥ अरि जब करै विश्वास निहारि। तब बृकलौं तुर मारेडारि॥ नमितन डार करै फल लेच। अरिबध फल तामे चित देय॥ धरे कन्धपर शत्रु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० सराहि। घटला पटकै औसर चाहि॥ छोडै शत्रु न दुर्बल देखि। बिनय बचन कै कहैं बिशेखि॥ हनो शत्रु करि चारि उपाय। होत शत्रु छोडे दुखदाय॥ *~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कैसें चारि उपाय करि हनै शत्रु बलवान। बिधिवत सो कहिए कणिक यथातथ्य मतिमान॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ कणिकउवाच ॥ * ॥ सुनऊ यह बृत्तान्त भूपति कहतहैं हम जौंन। नीति बेत्ता कर्म्म जम्बुक कियो बनमे जौंन॥ आखु जम्बुक व्याघ्र बृक अरु बभ्रु पाँचो मित्र। लखो बनमे कियो जम्बुक कहत तौन चरित्र॥ तिन लखो बनसे मृगनको एकरहो जूथप जौंन। कियो ताके ग्रहणमे यह मत्र मतिबर भौंन॥ * ॥ जम्बुकउवाच ॥ * ॥ व्याघ्र तुमतें ग्रहणमे यह शक्यहै नहि जैन॥ बेग याको महत अतिही युवा प्रबल सचैंन॥ व्याघ्र बऊ उद्योग कीन्हा सक्यो हनिबे तन। कहत यातें सुनऊ मेरो मंत्रमय यहबैन॥ करे यह जब शैन मूषक चरण काटे ताल। गहऊ तुम तब याहि मृगपति बिना घाय प्रयास॥ करहिं भोजब मास सबमिलि पाय अति अभिराम। सुनत जम्बुकबचन तेसब भए मुदित ललाम॥ मानि जम्बुक बचन मूषक चरण काटो ताल। बेगते असमर्थ मृग पति कियो ताकोनाश॥ देखि मृगकौं मृतक जम्बुक कहो तिनसौं बैन। आइए अस्नान करि हम करत रक्षित जैन॥ नदीके अस्नानकौं ते गए सिगरे भूप। रहो जम्बुक तहाँ बैठो धरे चिन्तित रूप॥ स्नान करिकै प्रथम आयो व्याघ्र अति बलवान। लखो जम्बुक तहाँ बैठो भरो शोच महान॥ * ॥ व्याघ्रउवाच ॥ * ॥ कहा चिन्तित भए जम्बुक कहऊ बुद्धि उदार। मांस भोजन करऊ फिरि सब करहिं विपिनि बिहार॥ * ॥ जम्बुकउवाच ॥ * ॥ महाबल मृगराज सुनिए कहो मूषक जौंन। लगो परम असह्य हमकौं बचन निन्दित तौंन॥ धिग्महा मृगराज बल सम हनित मृगपल खाय। पाइहैं अति तृप्ति पौरुषबिना बीर कहाय। तास खरतर बैन सुनि नहि रुचत भोजन मोहि। मोहि रुचत न आखु अति लघु नाथ निन्दत तोहि॥ * ॥ व्याघ्रउवाच ॥ * ॥ कहे मूषक क्षुद्र जैसें बचन तौ सुनि मित्र। तास दंशित मास यह तजि जातहैं अपवित्र॥ मारि नाना भांतिके मृग खात बनमे जाय। खाऊ तुमहू लखऊ मेरो बाऊबल उत आय॥ बाघ यह कहि गयो तँहा गयो टक सुभुखान। कहो तासो व्याघ्र तुमपै करे क्रोध महान॥ भलो तुम्हरो होयगो नहि परत जैसो जानि। सुनत सह परिवार भाजो महाटक भयसानि॥ आखु आयो कहो जम्बुक देखिकै मतिजैन। मित्र आयो नकुल जैसे गयो कहिके बैन॥ रुचत नहि मृग मांस हमकौं करत खरतर नास। महा कोमल आखुको हौं चहत खायो मास॥ सुनत भागो आखु भयबस पैठि गो बिलमाह। यहि बीच आयो नकुल तासौं कहो जम्बुक नाह॥ बिना कीन्हें युद्ध मोसौं मांस भोजन है न। कहो बाऊ उठाय जम्बुक नकुलसौं इमि बैन॥ नकुलउवाच॥ व्याघ्र टक मति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मान भूपक गए तुम सौं हारि। जात हम तुम बीरवर नहि लहैं गे निरधारि॥ कणिकउवाच॥ आ०प०
एहि भांति सबकौं बचिकै मतिमान जम्बुक धीर। एक व्हैकै करण लागे मांस भोजन बीर॥
होय ऐसो सुमति भूपति लहै गो सुखतान। करै भीति देखाय सबकैं भीरु भूपति जान॥ करै
विनय देखाय बशमहँ सूर नृप बलभान। तेजसौं सम न्यून कौं वसमे करै क्षितिरान॥ लब्ध
अरिका देइ धन सह क्रोधको धरि त्याज। यह कहो आगैं और सुनिए भर्तबंश सरोज॥
सखा भ्राता पिता सुत गुरु मिलै अरिसौं जाय। अवसि ताको करै वध नहि तजै सन्मुख पाय॥
सपथ धरि दै दान माया विरचि विषकौं देय। हनै अरि जेहि भांति पावै संग यह दृढ लेय॥
अभिमानमे रत गुरुज कार्य्या कार्य्य को न विचार। जो करै नहिं तो दण्ड ताहिज देय भूप
उदार॥ शत्रु दुर्जन समानमे उद्योग करि जय लेय। क्रुद्ध आपु अक्रुद्ध सो व्है बिहँसि उत्तर देय॥
क्रोधहूम शत्रुको नहि करै निन्दा भूप। हनै जबलौं कहै तबलौं बचन प्रिय अनुरूप॥ मारि
अरिका कृपाकरि फिरि करै शोच महान॥शांतके कहि बचन परको करैं बोध महान।चलित पथ
नेंदेय ताकौं दण्ड कर्म्म समान। घोरकरि अपराध कोंफिरि धर्मपथ जो लेत। असत सो अपराध
ताकौं राज शशि सम नेत॥ मारि अरिकौं युद्धमे फिरिदेय धाम जराय।अधम नास्तिक चोरकौं
नहि अभय देय बुलाय॥ देइ प्रत्युत्थान आसन और धन अभिराम।हनै अरिकौं समय लहि करि
प्रथम विश्वस्त धाम॥ विश्वासहूके नरनसौं नहि रहै कबहु निशङ्क। नही जास विश्वास तासौं नित्य
शङ्का अङ्क॥विश्वसिततैंजो होय,भयसो करै मूल विनाश।रहै शङ्कित ताऊ सो है जास अति विश्वास॥
चारि लायक जननकौं करि चारि जे बहु रङ्ग। स्वदेशमे परदेशमे ते पढै देय सुढङ्ग॥ धरैं नाना
बेषकौं ते रहैं जँह जनजूह। चौहटे बन बागमे करि कूपके ढिग ऊह॥ देवतालय सुराम्टह सु वजा
रमे अभिराम। बिहारमे गिरि गहनमे जहँ जन समूह ललाम॥ कहत बचन विनीत धारैं हृदयमे
जुर रूप।हँसत बोलै कर्म्म जाके रौद्रहैं अति भूप॥ शांत पथ शुचि विनय सबसौं करै दंड प्रणाम
अरिदेशमे एहिभांति राखै चारि मतिकेधाम॥ सदा रहत प्रसन्न सबसौं निठुर कारज काल।
सदा जयकौं लहत ऐसैं रहत जो भूपाल॥ ज्यों धरें फल पक्वकों रति कुएँ काचो होय। सो न
जीरण होय कबहूँ कहतहैं कविलोय॥ अर्थ धर्म्म सुकाम साधन कौं भए फल पर्म्म। तीनिहूँ
से तीन पीडा भए अतिशय कर्म्म॥ धर्म्म अतिशय करें पीडा करत अर्थ सुकाम। अर्थ कामहूकों
सो द्वै द्वै व्यथाकारी नाम॥ गर्व नृपकौं जोग्य नहि नितिरहै शांत स्वरूप। मंत्र द्विजसों करै राखें
अर्थ इच्छाभूप॥ जैंन तैन सुकर्म्म करिकै मृदुल दारुण सर्व। दीनताकों दूरि करिकै व्है समर्थ
अखर्व॥ करण लागै विहित सिगरे धर्म्मके तब कर्म्म। कष्टके बिनु लहैं लहत न भद्रकों नर
पर्म्म॥ कष्टकों सहि जियत जो सो लहत मोद उदार। बुद्धिहारैं शान्ति कीजै पूर्वइक्त बिचार॥
करि झूठआदर तोषिऐ दुरबुद्धि आवत जान। तृणकीजै देइकै धन विदुष जो मति भान॥ शत्रु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० सों करि सन्धि सोवत अभय माने जौंन। वृक्षपैं ज्यों सोयकै नर गिरें जागत तौंन ॥ मंत्रकों करि गुप्त राखै सावधान नरेश। आकारकों अप्रगट राखैं राखि चार सुवेश ॥ अरि मर्म भेदे बिना कीन्हें विना दारुण कर्म्म। मत्स्यघातीलों हनेबिनु लहत ऋद्धि न पर्म्म॥ खिन्न दुर्बल अन्न जल बिनु देखि वर वल बीर। हनै दै बिश्वासकों कछु करै बिलम्बन धीर ॥जात दीन न दीनपैं कृतकार्य बहत न साथ। निःशेष कार्य्य न कीजिए कछु रखी अपने हाथ॥ जौंन संग्रह कीजिए सो राखिए करि यत्न॥ प्रथम करि उत्साह कीजै कार्य्य माह प्रयत्न॥ कियो चाहै सो न जानैं कोऊ बिनु प्रारम्भ। प्रथम कीजै यत्न बारण सभय हरि आरम्भ॥प्राप्त भयकों देखि ताकों हनै निर्भय होय। दण्डतें अरि हारि आवै ताहि राखत जोय ॥ मृत्युको सो ग्रहण खच्चरि गर्भलों निरधारि। कार्य्य आगे होय गो सो प्रथम लेय बिचारि ॥ बिन किए निश्चय बुद्धिसों नहि करै कार्य्य महान। उत्साह कीजै यत्नतें जौ चहै श्रीसुखदान ॥ *⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

प्रथम देश अरु काल बिचारै। भाग्यसदृश तबकार्य निहारै ॥ देश काल श्रेयस्के कारण। कहत तुम्हैं हौ करि निरधारण॥अल्प जानिकै अरि जो छाडैं। ताल समान मूल दृढ माडैं ॥ पावक कण ज्यों वनमह डारै। करैबृद्धि अति कानन जारै॥ लीजै आपु न अरिको दीजै। आशादेय ताहि थिर कीजै॥ दूरिकालको वादो राखै। आए समै बहानो भाखै ॥ समय पायकै ताहि प्रहारै। अरिमर्दन नृप आनद भारै॥ पांडवादि गणिए अरि जिनकौं। भूपति करहु नीतिबश तीनकौं॥ भूपति राज्य न वूडै जैसैं। सावधान करु कारज तैसैं ॥ भरे सकल कल्याण बिचारो। बचन हमारे हियमह धारो॥ रक्षण अपनो हियमे धारो। पाण्डुसुतनते भूप बिचारो ॥ हैं बलवान करहु अब सोई। पश्चात्ताप न जाते होई॥ यह कहि कणिक स्वधाम सिधाए। नृप धृतराष्ट्र शोकसौं छाए॥ नीति परम यह जो चित धरिहै। भूपति अभयराज सो करिहै॥ *⬭*⬭*⬭*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथात्मजेन गोकुलनाथकबिना बिरचिते महाभारतदर्पणे आदिपर्बणि राजनीतिवर्णनोनामो णचत्वारिंशोध्यायः॥ *⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नृप दुर्योधन अरु शकुनि कर्ण दुशासन बीर। दुष्ट चतुष्टय मिलि कियो दुष्टमंत्र गम्भीर॥ आज्ञालहि धृतराष्ट्रकी रचो लाहको धाम। पाण्डुतनय कुन्ती सहित दहिबेकौं अभिराम॥

॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥

हे मुनि बिस्तरसह कहो जतुगृह सुनियत जौंन। जरो तान पाण्डव गए सुरसरितरि बिधि कौन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ आ० प०

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनऊ भूप सह विस्तर तौन। जतुगृह दहन पांडुसुत गौन॥ भीमसेनकौं अतिबल जानि। पार्थहि महा धनुधर मानि॥भो सताप दुर्योधन भूप। हिए विचारो मंत्र कुरूप॥ कर्ण शकुनि दुःशासन सङ्ग। हनन उपाय करत बऊ रङ्ग॥पांडव ताहि बराएँ जात। पाय विदुरको मत अवदात॥ पौर देखि पांडव गुणधाम। कहत प्रसंशित बचन ललाम॥ लहि हैं कै लहि ह नहि राज। ज्येष्ठ पांडुसुत सहित समाज॥ कहैं सभा चलरमह सर्व। पुरजन परिजन कहैं अपर्व॥ प्रज्ञा चक्षु अचक्षु निहारि। दियो न मंत्रिन्ह राज्य विचारि॥ अब कैसें ताके ए पोत। सुनऊ कौनविधि राजा होत॥ भीष्म प्रथम तजि सहित समाज। कीबो चहो बऊरि नहि राज॥ ज्येष्ट पांडुसुत तरुण महान। धर्मशील ते दृढ समान॥ सो करुणाकर राजा होय। जगजन साधु कहै सब कोय॥ भीषम विदुर सहित परिवार। नृप धृतराष्ट सपुत्र उदार॥तिन्हे भोग नानाविधि देत। पूजन करत सनीति सचेत॥ पांडु तनयके भरे नुराग। कहत पौरजन इमि बडभाग॥ दुर्योधन तिनके सुनि बैन। भयो क्रोधमय सहत अचैन॥ गो धृतराष्ट्र पिताके पास। वन्दि चरण इमि कहे प्रकास॥कहत पौरजन सुनी सो बात। भरी अशुभ सो सुनिए तात॥तुमहि भीष्म कहँ निदरि महान। चहत पांडवनकौं पतिमान॥यह मत भीष्मऊको है भूप। तजे राज्य याते अनुरूप॥ हम कौं दुखद कहत जे बैन। पुरजन सुनऊ तात मतिअैन॥ पितराज्य गुणतें अभिराम। पांडु पूब पायो बलधाम॥ अन्ध दोषतें समुचित राज। तुम नहि पायो सहित समाज॥ अब व्हे हैं जौं पांडव भूप। क्रमतें तास तनय अनुरूप॥ हम सब राजबंशतें हीन। सुतन सहित व्हे हैं अतिदीन॥ करि हैं लोक निरादर सर्व। जानि अराज मानिकै खर्व॥ सदा कष्टकौं लहि हैं भूप। परसौं जीवन पाय कुरूप॥ तिनकौं होय न जातें राज। तात करऊ सो नीति समाज॥ जौं तुम होते पहिले भूप। राज्य औसि हम लहत अनूप॥ अैसे सुनें पुत्रके बैन। कणिक बचन गुणिकै मति अैन॥ दिधा चित्त व्है रहे विचारि। धर्माधर्म पक्ष निरधारि॥ नृप दुर्योधन शकुनि सकर्ण। दुःशासन अति दुर्मति भर्ण॥ ए चारौ मिलि बैठि एकान्त॥ कियो मंत्र दृढ सहत अशान्त॥ तब धृतराष्ट्र भूप पहं जाय। दुर्योधन इमि कहो बनाय॥ हमकौं भय पांडवतें तात। इन्हे निकासें हत उतपात॥ तातें युक्ति करऊ तुम तौन। पांडव कराहिं इहातें गौन॥ भेद दाम करि साम उपाय। तिन्हे शांत पूर्वक समुझाय॥ बार्णावत कहं पठवऊ भूप। सुनिए सुतके बचन अनूप॥ चिन्ति धरिक लो रहे चुपाय। फेरि बचन बोले मतिछाय॥ पांडु नृपति हो धर्म निधान। निज परिवार भरे मनमान जोसो भक्ति करत अभिराम। राज्यकृत्य पूँकृत सब आम॥ भोजन मात्र न जानत आन। देत हमैं धनल्याय महान॥ पाण्डु तुल्यहै पांडव धर्म्म। गुणवान लोक विख्यात सु पर्म्म॥ तिन्हे निकासि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० सकत बिधि कौन। राज्य पितामहको यह जौंन ॥ पाले पाण्डु अमात्य स सैन। ते सब पांडवके हित अैन ॥ पाले तिनके पुत्र पउच। ते सहाय करिहै नहि कुच ॥ सत्कृत ताके नागर सर्ब। करिहैं तास सहाय अखर्ब ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ जानिकै जनजन्य दोष सु कियो हम यह भूप। देइकै धन मान सबकौं किए खबश अनूप ॥ नियत सकल सहाय मेरो करहिंगे सप्रधान। पांडवनकहँ बिदा कीजै आसु अभय सुजान ॥ शान्ति पूर्बक बारणावत नगरकौं अभिराम। होयगो जब राज्य मेरे खसन सकल ललाम ॥ सहित कुन्ती लेहिंगे तब पांडु सुतन्ह बोलाय। खबशह्वै कै रहैंगे तब भच्य भोजन पाय ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ अभिप्राय सु रहति मेरे नित्य यह समचित्त। करत प्रगट न पुत्र याते जानि पाप निमित्त ॥ भीष्म बिदुरसु द्रोण गौतम सकल ए बलवान्। बिदा कीबो पांडवनको मानिहैं न सुजान ॥ और कौरव बंशमे बर सदृश है मम जौन। मानिहैं नहि बिषम छति यह धर्म्मयुक्त सु तौंन ॥ तिन्हे कैसैं मारिहैं हम हैं महाबलधाम। सङ्ग तिनके पैर जग जन मरहिंगे अभिराम ॥ * ॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ मध्यस्थ भीषम द्रोणसुत नहि तजी हमकौं भूप। जहाँ सुत तहँ द्रोण रहिहैं है अबश्य अनूप ॥ द्रोणकौं नहि तजत गौतम सहित सुत अभिराम। प्रगट मो हित गुप्त परको बिदुर सो धनकाम ॥ एक शक्य न हमै बाधा करणकौं बलवान। पांडवनके अर्थ याको तजऊ शोच महान ॥ सहित माता पांडवनकौं बिदा कीजै भूप। बारणावत जाहि अैसो करऊ युक्ति अनूप ॥ बिनिद्र कारक शल्यहियको देऊ मेटि महान। शोक पावक कर्म्मते एहिं लही नाश अमान ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भूप दुर्योधन क्रमहि ते राज्यके जन जौंन। देइकै धन मान बिधिवत किए बश सबतौंन ॥ धृतराष्ट्र प्रेरित चतुर मंत्री सभामे अभिराम। बारणावत नगर बर्णन लगो करण ललाम ॥ रत्नरचित सुबारणावत नगरके ढिग भूप। शैव यात्रानिकट आई परम रम्य अनूप ॥ भूप आज्ञातैं कथा यह कही मंत्री जौंन। सुनत पांण्डव नृपति चाहो तहाँ कीबो गौंन ॥ पापमन धृतराष्ट्र तिनकौं कहो अैसे बैंन। कहत मोसों आइकै सबलोग देखि सचैन ॥ बारणावत नगरहै अति रम्य सुषमा धाम। बसत चारो बर्ण जेहाँ सुमति सधन ललाम ॥ बारणावत जानकौं जौं होत सुमन उदार। तौ युधिष्ठिर सहित भ्रातन करऊ जाय बिहार ॥ सहित कुन्ती जाऊ तेहाँ लेऊ धन मनमान। द्विजनकौं अरु आइअनकौं करऊ खेच्छादान ॥ कछू दिन तँह बिहरिकै सुख सकल करि अनुभूत। फेरि हास्तिन नगरकौं सह मोद अैयो पूत ॥ बूझिकै धृतराष्ट्रको मत आपुकौं असहाय। तथास्तु उत्तर दियो ताकौं धर्म्म नृप शुचि भाय ॥ भीष्म द्रोण सु कृपाचारज बिदुर कुरु कुल बृद्ध। सोमदत्त सु भूरि अरु बाल्हीक सुमति समृद्ध ॥ रहे बृद्ध अमात्य जे बरबिप्र जे तपधाम। गन्धारजा अरु सह पुरो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हित पौरजन अभिराम॥ युधिष्ठिर बर नृपति तिनके पास क्रमते जाय । बारणावत जात ह हम आ०प०
कहो दीन सुनाय ॥ भूप शासन पायकै तहँ जात सहपरिवार । प्रसन्नव्हैकै विदा करऊ सु बोलि
बचन उदार॥ देऊ आशीर्बाद जातैं होय मो कल्यान। सकल कौरव पांडु सुतके बचन सुनि
सुखदान ॥ होउ शुभ तव इमि सु आशीर्बाद दै अभिराम । व्है प्रसन्न सु विदा कीन्हो भरे मोद
ललाम॥ सहित मङ्गलचारकरि गृहकार्य हो सब जौंन।कियो सहपरिवार पाण्डव बारणावतगौन॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजसहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीस्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि बारणावतगमनो
नाम चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ सुनि धृतराष्ट्र भूपके बैन । पांडु सुतनप्रति छलके ऐन ॥
भरे मोद दुर्योधन भूप।जानि मनोरथ सिद्धि अनूप॥बैठे आपु रहसमे जाय।लयो पुरोचनकौं बोल
बाय॥पाणि पकरि कै बोले बैन।तुमसो हितू हमारे है न॥अति बिश्वास तुह्मारो मोहि।तातैं कहत
मंत्र यह तोहि ॥ गुप्त राखिकै हियमह तौन।करि निर्मूल शत्रु मो जौन॥कहत जो हम सो करिए
जाय। अति चतुरापन भरो उपाय ॥ पांडु सुतन्ह कँह दियो निदेश । सभामध्य धृतराष्ट्र नरेश॥
नगर बारणावत विख्यात।तँह उत्सव बिहरणकौं जात॥ रासभयुक्त करऊ रथ तौन।होय शीघ्रगामी
अति जौंन॥आजु बारणावत लेइ जाय।तौन सारथी करऊ सहाय॥तहाँ जाय बिरचेऊ अभिराम।
चतुः शाल लाक्षाको धाम॥ घृत सन तैल सुराल मिलाय। ऊपर सघन मृत्तिका लाय ॥चऊं
दिशिबन्द एक दिशि द्वार। तामे लाएऊ अरर उदार ॥ अग्नि सहायक बस्तु सु जौंन। चहूंओर
राखेऊ बऊ तौंन ॥ नगर बाहिरे रचेऊ सो धाम। गुप्त किहेऊ लाक्षा अभिराम ॥ करेऊँ परीक्षा
लखहि न तौंन। पांडव लाखरचित गृह जौंन ॥ राखऊ ऐसो धाम बनाय। परम बिचित्र लखत
सुखदाय ॥ तहाँ जाहि जब पांडव भूप । पूजन किहेऊ आइ अनुरूप ॥ कुन्ती सह तहँ दीजो
बास। सहित सुहृदजन बिहित बिलास॥ आसन जान शयन सुखदान। दीजो बिधि बर बिहित
सुजान ॥ प्रथापुत्र जानै नहि तौंन। ऐसी करियो रचना जोन॥ कछू काल जब जाय बिहाय।
सुखसों सोंवै निद्रा पाय ॥ तब तुम दीजो अग्नि लगाय। द्वारओर लहि बायु सहाय॥ घरके सङ्ग
जरैं गे तौंन। हमै दोष फिरि देहै कौन॥ पुरोचन सु दुर्योधन पास। करी प्रतिज्ञा पाप प्रकास॥
रासभ रथपर चढो उताल । गयो बारणावतकौं हाल॥ जौंन कहो दुर्योधन भूप। करो पुरोचन
सो अनुरूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ बायुवेग घोरे मगवाय। लए पांडवन रथमे लाय॥
बन्दि भीष्म के चरणललाम । कुरु कुल बृद्ध सगुरु अभिराम॥ तिनके चरण बन्दि मति धीर।
चढे रथनपर पांडव बीर॥ समान बैस तिन सौं मिलि भूप। लघुन तिन्है बंदे अनुरूप॥ सर्ब अमा
त्यनकौं सनमानि। चले बारणावत सुख दानि॥ बिदुर आदि कुरु पुङ्गव जौंन । भरे शोक कछु गे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सह तौन ॥ तहां एक द्विज दुःखित बैन। कहन लगो यहिभाँति अचैन॥ विषम लखत धृतराष्ट्र नरेश। सुत पांडवनकौं कुल बेश॥ पांडव परम पुनीत अमन्द। सहि नहि सकत तिन्है मतिमन्द॥ पिता राज्य पायो इन जौंन। नृप धृतराष्ट्र सहो नहि तौन॥ यह अधर्म्मको कर्म्म कुमन्द। कैसे सहत भीष्म कुरु नन्द॥ इन्है निकासो पुरतें जौंन। कियो अनीति परम यह तौंन॥ रहे पिता सन शान्तन भूप। तया बिचित्रबीर्य अनुरूप॥ तैसे पांडु भूप सहधर्म्म। गए स्वर्ग कौं लहि गति पर्म॥ पांडु पुत्र ए बालक जान। नृप धृतराष्ट्र सहत नहि तौन॥ हम सबकों यह सुखदन हेत। कियो भूप यह जौंन अनेत॥ अहतजि तहाँ चलै हम सर्ब। जात युधिष्ठिर जहा अखर्ब॥ दुखित प्रजनका लखि नृप धर्म्म। तिनसों कहो बचन यह पर्म॥ पिता मान्य गुरु नृप है जौन। कहैं अवश्य कीजिए तान॥ तुम सब सुहृद हमारे पर्म। जाऊ धाम कों तजि दुख भर्म॥ जब देखेऊ कछु कार्य हमार। तब तुम कीन्हे ऊ प्रिय उपकार॥ यहसुनि पुरजन सहित सनेह। आशीर्बाद दै गए स्वगेह॥ बिदुर युधिष्ठिर सा तब बैंन। कहिबे चहे अर्थके अैंन॥ बिदा भए जब पुरजन सब। करे युधिष्ठिर ढाढ अर्ब॥ पथ बिदुर तब कहे सु मूढ। जाको अर्थ न समुझै मूढ॥ नेह लाखको दियो बुजाय। भावी अग्नि दाह दुखदाय॥ करिकै सुरसरि ओर सुरङ्ग। कढिबेकौं करि कुञ्चित अंग॥ संग पुरोचन कुलको भौंन॥ ताहि जराय कीजियो गौंन॥ मिलिहै तरणि सुरसरी माँह। तापैं चढि जैयो नरनाह॥ यह सुनि कहो युधिष्ठिर भूप। सो जानो हम बिदुर स्वरूप॥ यह शिक्षा करि बिदुर सलाम। गए प्रदक्षिण करि निजधाम॥ बिदुर भीष्म पुरजन गण जान। हास्तिन पुर जब गे करि गौंन॥ कुन्ती आइ युधिष्ठिर पास। पूछन लगी सो अर्थ प्रकास॥ बिदुर गूढ जो बोले बैन। जानो कहो जो तुम लहि चैन॥ सो सा कहो तास तुम अर्थ। पुत्र युधिष्ठिर सुमति समर्थ॥ हौं सुनि वेकौं चाहति तौन। बिदुर तुम्हार बचन मत जौंन॥

॥ * युधिष्ठिरउवाच॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गृहमे उठि है अग्नि जब कढिबेको मग जान। रहिबे सदा बिनिद्र व्है कहो बिदुर सब तौंन॥
गूढ बचन शुभ तास हम जानि अर्थ अभिराम। उत्तर अपने बोधको तासों कहो सलाम॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बैशम्पायन उवाच॥ * ॥ गए अठए दोस तेहाँ पाण्डु नन्दन बीर। बारणावत नगर को ढिग धीरनिधि गम्भीर॥ बारणावत नगरमे जे रहे पुरुष प्रधान। गए आगे लेन कौं ते भरे मोद महान॥ चढे हय गज रथनपर बर बसन भूषण धारि। बन्दि चऊदिशि खरे भे बर भरे मोद निहारि॥ मध्य तिनके लसे अैसैं पांडु पुत्र नरेश। तारकागण मध्य शशि ज्यौं सुरन माझ सुरेश॥ सत्कार लहि पुरजनन सौं बर तास करि सत्कार। बारणावत मे गए जन वृन्द सहित उदार॥ बिप्र वर जे तहा हैं तब गए तिनके धाम। अरु पुरुष हे सु प्रधान तहँ गे तऊनके अभिराम॥ जाय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

करि सत्कार आए सह पुरोचन वीर । शिबिरमें जँह ऊती माता भरी मोद गँभीर ॥ भक्त आ०प०
पान सु शयन आसन यथा योग्य ललाम । दिय पुरोचन आनि सबकौं विहित विधि अभिराम ॥
पुरजननते तें सेव्यमान सु परम पाण्डव धीर । वारणावत नगरमे वर बसे दश दिन धीर ॥ फिरि
पुरोचन कही तिनसौं धाम विरचो जौंन। वाश करिबेहेत पाण्डव करऊ प्रभु तँह गौंन॥ पुरुष व्याघ्र
सु गए तहँ चलि लाखको जँह धाम । ध्यान करि श्रीकृष्णको तँह किय प्रवेश ललाम॥ धर्म्म भूपति
भीमसौं तहँ कहे अैसे वैन। देखिके चऊँओर ताकौं अग्निको यह अैन ॥ वसा घृत है लाख मिश्रित
गन्ध कीजै घ्रान। सर्जरस हि मिलाय कै छत शिल्पकर्म्म विधान ॥ मुञ्जगुण अरु वाश दारु सु भरे
घृतसौं सर्ब । व्यक्त कीन्हे आप जेहे शिल्पकर्म्म अगर्ब ॥ विश्वास थाती यह पुरोचन दाहिबेकौं
आहि । साथमो धृतराष्ट्र सुतको मंचकौं अवगाहि ॥ विपति भावी जानि हमकौं विदर अति मति
मान । कियो बोधित प्रथम हमकौं परमहित सुखदान ॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ आग्नेय जौं
यह गेह है अति विदित तुमकौं भूप । पूर्व जेहाँ रहे तँह चलि रहैं निर्भय रूप॥ इँहा रहिए यत्नसौं
व्है सावधान महान। गुप्त कीन्हे जानिबो यहि धामको गुणभान ॥ यहि धामको गुण जानिबो जौं
जानि है यह दुष्ट। तौ पुरोचन क्षिप्र देहै अग्नि करि विधि पुष्ट॥ डरत हैं न अधर्म्म निन्दाते पुरोचन
क्रूर । धृतराष्ट्र सुतके मंच धारैं महापातक पूर ॥ हम हि जारे बाद करि है भीष्म क्रोध किमर्थ ।
जानि कै दुर्योधन हि फिरि भए कोपित व्यर्थ ॥ जाहि जौ हम भागि कितहूँ दाह भयतें क्षुब्ध ।
चारतें करि सोध हनि है सो सुयोधन लुब्ध॥ पदच्युत्य धन हीन हम वह सपद अति धनवान। अवश्य
हमको हनै गो करि कै उपाय महान ॥ यहि पुरोचन पापकौं छलि गुप्त करि कै रूप । कबऊ
कबहू धामसे यहि बास विहित अनूप ॥ रहै मृगयाशील व्हैके फिरै वनमे जाय । भाखिबेकौं
पन्थ सूधो लीजिए ठहराय ॥ विवर अबहीं करैं क्षितिमे भाखिबेकौं राह । गुप्त जामे भए ते नहि
करै पावक दाह ॥ वसत जामे नही जानै यह पुरोचन पाप । पुरोचनसौं गुप्तकारज राखिए करि
आप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ विदुर पठयो सुहृद अपनो खनक एक सुजान । मिलो आइ
एकान्तसे नृप धर्मसौं सुखदान॥ कहन लागो विदुर सोकौं दियो भूप पठाय । कहो मोसौं पाण्ड
वनको करऊ प्रिय तुम जाय ॥ कहऊ सो हम करहि कारज आपुको प्रिय जौंन । खनक है क्षिति
खननकी विधि सकल जानत तौंन ॥ गुप्त दीन्हें विदुर कहि विश्वासके ए वैन । सुनऊ सो मै कहत
हौं नृपधर्म आनद अैन ॥ कृष्णपक्ष चतुर्दशी निशिसे पुरोचन जौंन । भौनके तब द्वार अग्नि लगाय
देहै तौंन॥ दहनकौं सह प्रथा तुमकौं कियो मत्र बिचार। गेहमे यहि लाखके है अधम अन्धकुमार॥
चलतमे जे विदुर तुमसौं कूट बोले पद्य। कहो सो विश्वास कारण सुनऊ हमसौं अद्य॥
सुनत तासौं नप युधिष्ठिर कहे अैसे वैन । तुम्हैं जानो विदुरके विश्वासके हो अैन ॥ छपो है नहि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० मो प्रयोजन हौ महामतिमान । बिदुरके प्रिय यथा हौ तुम तथा मो सुखदान ॥ अग्नि कारक द्रव्यमय गृह रचो मेरे हेत । रचो पाप पुरोचनै धृतराष्ट्र सुतको नेत ॥ सधन है सह सैन सहित सहाय दुर्मति तौंन । कियो चाहत हमहि बाधा महा पातकभौन ॥ हम हि मोचऊ अग्नितें यह करऊ मो उपकार । मो दहनतें धृतराष्ट्र सुतको होत काम उदार ॥ सुरङ्ग आयुध भवन चऊं दिशि कियो दुष्ट महान । जास नहि प्रतिकार है मम अशुभकर दुखदान ॥ कहो पहिले बिदुर हमसो जानि आपत्काल ॥ प्राप्त सो अब भयो हमको देखिपरत कराल ॥ करि पुरोचनसौं सु हमकौं गुप्त मोचऊ मित्र । कहि तथास्तु सो खनक लागो करण सु निजचरित्र ॥ लगो परिखा भरिबेको करैं मिसि अभिराम । कियो गुप्त सुरङ्ग तँह तैं मध्य लाक्षाधाम ॥ कपाट तापैं राखि कै सम भूमिके करि तौंन । नहि पुरोचन लख्यो कीन्हे भौन भीतर गौन ॥ भौंनहीके द्वारप ग्रोरहत है निति मन्द । बसत सायुध क्षपामे तहँ सजुग पाण्डु सु नन्द ॥ फिरत मृगया करत दिनमे लखत पथ अभिराम । बिश्वास देइ पुरोचन हि तिन ठगो मतिके धाम ॥ अतुष्ट कै समतुष्ट तेहां रहे पाण्डव भूप । खनक ते नहि और जानत तास मान सरूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तिन्है सुमनस देखि कै बिश्वासवश अनुमानि । भो पुरोचन सुखी मनमे सिद्धि कारज जानि ॥ पुरोचन हि एकवर्ष बीतैं देखि हर्षित रूप । कहो भ्रातन पास जैसैं तब युधिष्टिर भूप ॥ बिश्वसितसे जानि हर्षित भो पुरोचन दुष्ट । भयो बञ्चित भागिवेकौं समय आयो पुष्ट ॥ बारि आयुध गेह जारि पुरोचन हि अघरूप । डारिकै षटमनुज इत तब भजऊ गुप्त अनूप ॥ सस्त्रीक बिप्र बोलाय कुन्ती दिए भोजन भूरि । लेत आज्ञा धामको निज गए आनद पूरि ॥ निषादपत्नी पञ्चपुत्रन सहित बिधिबश आय । पाय भोजन मद्य पान सो गिरी अतिमदछाय ॥ लाखके गृह भौनमे सह सुतन मृतक समान । जहां सूतत हो पुरोचन महापाप निधान ॥ तहां आगि लगाय दीन्हौं भीमसेन सुकुद्ध । लाख गृहके द्वारमे फिरि प्रबल पावक उद्ध ॥ फिरि चऊँ दिशि लाख गृहके दई आगि लगाय । जरत सो सब धाम लखि कै पाण्डुसुत सह माय ॥ गए पैठि सुरङ्गमे कढि सहित जननी बीर । लपट बाढी चहूँदिशि भो अनल शब्द गँभीर ॥ सुनत जागे पौरजन कढि आय ताके पास । कहन लागे बचन जैसे भरे खेद अयास ॥ * ॥ पौर उबाच ॥ एहि पुरोचन धाम बिरचो आत्म नाशन हेत । मानि मत धृतराष्ट्र सुतको महापाप निकेत ॥ धिक्कार है धृतराष्ट्रकौं यहि भांतिकी मति जास । भ्रातसुत अति सुमति तिनको कियो जैसैं नाश ॥ यहि पुरोचन लह्यो तैसो किधो जैसो कर्म्म । बिश्वाससौं हा जरे पाण्डव परम पूरण धर्म्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ बारणावत नगरबासी करत बहत प्रलाप । घेरिकै सो धाम निशिभरि रहे सहित सताप ॥ गए पाण्डव निकसि बिलिते सहित जननी भूप । चले निशिमे गए सो दुख भरे गुप्त स्वरूप ॥ भीति निद्रा भरे पाण्डव सहित माता सब । भए चलत अलक्ष्य बर सुकुमार परम अखर्ब ॥ **

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ आ०प०

भीमसेन अतिबल गँभीर। तिनकौं लियो उठाय सुधीर ॥ लियो कन्धपर कुन्ति हि धारि। माद्री तनय अङ्कमे डारि ॥ युधिष्ठिर अर्जुनकौं गहि पानि। चले निशामे श्रमबश जानि ॥ पथमे परत वृक्ष जे अग्र। उरतैं तोरत तिन्हे समग्र ॥ धरतैं उन्नत भूमि बिदारि। चले बेगतैं अतिबल धारि ॥ सुर सरितको गहैं करार। गए तहांतैं दूरि उदार ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि लाक्षागृहदहनोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जेहि बनको संकेत पहिले कहि पठयो बिदुर। तेहाँ मनुज सचेत पठै दियो प्रति पांडवन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तेहि तहँ देखे बनमे जाय। कुन्ती सहित बीर बरकाय ॥ चारनतैं दुर्योधन कर्म। जानो प्रथम बिदुर मति पर्म ॥ तब सो पठयो मनुज सुजान। जानि आपनो आप्त महान ॥ तब तेहि कहो पांडवन पास। यह नौका अति दृढ सुखरास ॥ चढे निषाद मढे बिश्वास। फेरि कहो सो बचन प्रकाश ॥ कूटपथ जो बिदुर सुजान। पढो चलतमे अति मतिमान ॥ पढो पथ सो करि बिश्वास। युधिष्ठिर भूपतिके पास ॥ बिदुर पठायो हमकौं भूप। बिश्वासक दै पथ अनूप ॥ कर्ण सुयोधन भ्रातन सङ्ग। तुम जीतऊ गे करि रणरङ्ग ॥ यहि नौकापर चढऊ उदार। सुखसौं जाऊ सुरसरी पार ॥ तिन्हैं नावपर व्यथित चढाय। दियो बिदुरको बचन सुनाय ॥ मूर्खाग्राण लाइदो अङ्ग। तुमकौं सत्ता कहो अशङ्क ॥ बिदुर पठायो नरबर जौंन। नाव चढाय पांडवन्ह तौंन ॥ गयो क्षिप्र ले गङ्गापार। जय आशिष तब दियो उदार ॥ पांडुसुतनको सुनि संदेस। बिदा भयो सो पाय निदेश ॥ गङ्गा उतरि युधिष्ठिर भूप। चले क्षिप्र धरि गूढ स्वरूप ॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोर भयो तब पौरजन गे लाक्षागृह पास। अग्नि बतायो डारि जल करिकै महत प्रयास ॥

ढूढन लागे पांडवनकौं सब अग्नि बुताय। तहाँ पुरोचनकौं लखो जरो प्रथमही जाय ॥

लखी किराती सुतन सह जरी परी गृह बीच। जानो कुन्ती सुतन सह मरी डरी तहि मीच ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पाण्डव नाश हेतु यह कर्म्म। करो सुयोधन भरो अधर्म्म ॥ यह कहि पुरजन भरें उताप। तह सब लागे करण बिलाप ॥ यह जानत धृतराष्ट्रजो कर्म्म। कियो सुयोधन भरो अधर्म्म ॥ भीष्म द्रोण कृप कुरुज उदार। इनहूँ करो न धर्म्म बिचार ॥ नृप धृतराष्ट्र हि लिखिए पत्र।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सिद्धि भयो तब कारज अब ॥ पाण्डव जारे जननि शरीर । भरऊ हृदय महं मोद गभीर ॥ खनक तौन सों तेहां आय । मूदि दयो बिलि मुखर जनाय ॥ पौरजनन वृतान्त लिखाय । कौरव पतिपहँ दियो पठाय ॥ धृतराष्ट्र सुनत अति अप्रिय तौंन । पांडव जरे लाखके भौंन ॥ लगे शोक भरि करण बिलाप। जानि पुत्रकृत कर्म्मज पाप ॥ आजु मरो मो भ्राता बीर । जरे न पाण्डव धीर गँभीर ॥ कुन्ती राजकन्या सुबिधान । सुतन सङ्ग सो जरी सलाम ॥ जाहि शीघ्र तहँ पुरुष सुजान । क्रिया कर हि तिनकी सविधान ॥ तिनके अस्थि बिहित संस्कार । करै वेदविधि क्रिया उदार ॥ यथा योग्य बिप्रनकौं दान । देहि बिहित भोजन पट जान ॥ तहां मरे जे नरबर और । तिनके सुहृद जाहि तेहि ठौर ॥ धृतराष्ट्र सहित कुरुकुल समुदाय । दई जलांजलि सतिल मिलाय ॥ तहँ रोए करि सकुल बिलाप । करिबेको गोपन निजु पाप ॥ भरे पौरजन शोक कहान । कियो बिदुर कछु समय समान ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ पांडव दक्षिण दिशि निरधारि । चले निशामे नखत निहारि ॥ पयबश गए सघन बन माह । भए श्रान्त सब कुरु नरनाह ॥ फेरि भीमसों अैसे बैन । कहो युधिष्टिर करुणा अैन ॥ यातें अधिक कष्ट है कौन । दिशा ज्ञान बिनु बनमह गौन ॥ जानि न परो हमै यह पुष्ट । जरो कि बचो पुरोचन दुष्ट ॥ फेरि हमै वाही विधि बोर । लए चलऊ बनमाह गभीर ॥ यह सुनि भीम युधिष्टिर बैन । लयो उठाय महाबल अैन ॥ कुन्ती सहित सुचारो भ्रात । लै कै चले यथा बरबात ॥ तास वेगको बायु अखर्ब । लगँ लगे घूमन तरु सर्ब ॥ भीम कियो जेहि पथ व्है गौन । अतरु भयो तहँ कानन तौंन ॥ जैसे अति मद भरो मतङ्ग बलवश करत गहन घन भङ्ग ॥ सह माता भ्राता सुकुमार । भे मूर्छितसे अमित उदार ॥ तरे अनेक नदी भुजजोर । नांघे कूटक गारे घोर ॥ पऊंचे अजल अफल बनमाऊ घोर जोव जहँ भरू तहँ साँझ ॥ भरो महातम कछु न लखात । वहन लगो अति दारुन बात ॥ भए तृषाश्रम पीडित बीर । चलि न शकत धरि नोद गँभीर ॥ प्रथा तृषावश व्याकुल होय । मांगो सलिल सुतनसों जोय ॥ सुनि कै भीमसेन बरबीर । लेइ गएँ जहँ बिपिन गँभीर ॥ माताबचन सुनत अति दीन । दुखित भए भरि करुणा पीन ॥ लखि बटबृक्ष महा घन छाह । तहां राखि कुरुकुल नरनाह ॥ कहो युधिष्टिरसों इमि भीम । आपु रहऊ इत कुरुकुलसीम ॥ हौं जल ढूढन जात सलाम ॥ इत बोलत सारस जल धाम ॥ इतै जलाशय अैसि गँभीर । सुनति करति मो निहचै धीर ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आज्ञा पाइ सुधर्मकी भीमसेन बलधाम । गए बेगसों तहँ चले लेन सलिल अभिराम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रहे सारस जहँ बोलत गए तहँ तुर भीम । देखि हरषे बिमल सरबर महाबलके सीम ॥ तहँ पाणी पान करि सुस्नान करि बरबीर । सलिल बस्त्र भिगोय आए भरे मोद गँभीर ॥ ढै कोस तहते

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ऊ तो सर करि वेग वायुसमान। भ्रातवत्सल मातृभक्त सु भीम कुरुकुल भान॥ शोक अमसे भरे आ०प०
तिनकौं परे क्षितिपर देखि उरगसे सब बिना शय्या आस शोवत लेखि॥ शोकतैं अति आर्त लागे
करण भीम विलाप। कष्ट यातैं और देहै कौन पूरुवपाप॥ लखत हैं क्षिति परे भ्राता जननिकौं
हम तौंन। इन्द्रकेसे भवनमे निति रहे शोवत जौंन॥ कुन्तीभोज सु कन्यका वसुदेव भगिनी पर्म।
तौंन कुन्ती परा क्षितिपर पुत्र जाके धर्म॥ विचित्र वीर्य्यसुषा भार्या पांडु नृपकी जौंन। जननि
हमस सुतन की निस्तरण सोवति तौंन॥ नरव्याघ्र सु सर्वभ्राता योग्य त्रिभुवन भूप। आन्त क्षिति
पर परे सोवत दीन जनके रूप॥ नील अम्बुद सदृश अर्जुन कौंन जास समान। परो क्षिति पर
लखत यातें कान कष्ट महान। देऊ दस्र समान माद्री तनय सुषमाधाम। बिना ते आस्तर्ण
सोवत भूमिपैं अम क्षाम॥ नही जाको ज्ञाति है कुल नाश कारण भौंन। जियत सुखसौं ग्राम
मध्यज एक तरुसम तौंन॥ एक तरु जो ग्राममे फल पुष्प पत्र समृद्ध। कहत ताकौं चैत्य पूजत
सकल जन हैं वृद्ध॥ ज्ञातिके बऊ सूर जाके धर्मविद मतिमान। जियत है सर्वाय लहि सो हित
हि सुहृद सुजान॥ पुत्र सह धृतराष्ट्र भूपति दुष्ट दुर्मति पीन। कै विवासित चहो जारो बचे
दैवाधीन॥ दाहतैं बचि आय यह तरु पाय पावत चैन। जाहिगे केहि दिशाकौं लहि क्लेश
कानन चैन॥ रहै होय सकाम अब धृतराष्ट्र नन्दन पुष्ट। हमहि आज्ञा देत नहि नृप धर्म्म
व्हैकै रुष्ट॥ नतरु सहित समाज तिनकौं मरदि गरद मिलाय। क्रोध करतो शान्त अन्तक
शोक तिनहि पठाय॥ यहि भाँति कहि करि क्रोध लीन्हो भीम भूरि उसांश। दीन मन लखि
भए ज्या बिनु अर्चि अनलप्रकाश॥ विश्वसित अम भरे सोवत पृथकजन से सर्ब। जागिबेके
योग्यहै यह विपिनि भयद अखर्ब॥ यहाँ तैंहैं जानि मोकौं परत नगर नगीच। जागिकै कोउ
आय जाय न मनुज इत बनबीच॥ अम रहित व्है जब जागिहैं सह जननि मेरे भ्रात। सलिल ए
तब पियहिगे हौं जगत जबलौं प्रात॥ करि सु निश्चय भीम तेहाँ रहे जाग्रित बीर। साढ भ्राता भक्त
अति धर्म्मज्ञ धारे धीर॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ तेहि विपिनितैं कछु दूर बैठो शाल तरुपर
आय। हिडिम्ब राक्षस मांस भक्षक श्याम घन सो काय॥ दारुणाकृति पिङ्गलोचन दशन वदन
कराल। लम्बउदर नितम्ब लाल श्मश्रु भूरे बाल॥ महा तरुसमग्रीव कन्धर खडे जाके कान।
ईश्वरेच्छा सो लखो तेहि पाण्डुपुत्र महान॥ बेर बेर जभांय फिरि फिरि लखत तिनकीओर। पाय
मानुषगन्ध बोलो श्वासौं इमि घोर॥ बऊत दिनमे मिलोहै अब भक्ष्य सुप्रिय जौंन। स्नेह
सलिल सु बहति जिव्हा करति आतुर गौन॥ दन्तोष्ठ ए अति तीक्ष्ण मेरे जास दुःसह पात। सफल
तिनकौं करौंगो लहि मनुज चिक्कन गात॥पकरि मानुष कण्ठ धमनी काटि करि गत प्रान। रुधिर
मांसन सुरस फेनिल कियो चाहत पान॥जायकै तुँ जानु के ए करत बनमे सैन। मनुज गन्ध सु महत
इनको घ्राण कारक चैन॥लारिकै ए मनुज सिगरे ल्याय मेरे पास।करत निद्रा देश मेरे नही तोका

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

वास ॥मानुषनको मांस हम तुम उदर भरिकै खाय। करै नाना भाँति सौं तब नत्य ताल बजाय॥ हिडिम्बके यहि भाँतिके सुनिकै हिडिम्बा बैन । गई भ्राता बचनतें जँह करत पाण्डव सैन ॥ जाय देखो पाण्डवनकौं प्रथा सह अभिराम । तहाँ जागत रहे बैठे भीम अति बलधाम ॥ नैरिती सो भीमसेनहि देखि दिव्य स्वरूप। वरो कामा शक्त व्है कै हृदय माह अनूप ॥ महा बाहु कुमार वय कमलाक्ष सिंह समान। करौं भर्त्ता इन्हे मेरे योग्यहैं सुखदान॥ क्रूर हिंसक बचन भ्राता के करा नहि तौंन। बली भ्राता प्रीति सौं है स्नेह पतिको जौंन॥मारि खाएँ इन्हे व्हैहै तृप्ति नहि चिरकाल। नतरु यातें मोद मिलिहै बहुत काल बिशाल॥ कामरूपिणि मानुषीको रूप धारि ललाम। भीम सेन समीप आई सलज पूरित काम॥दिव्य भूषण बसन धारैं मधुर बोली बैन। इते आए कहातें हौ कौन सुषमा अैन ॥ देवरूपी पुरुषहैं ए कौंन सोवत जौंन। कौंनहै यह बाम सोवति रूप तेजस भान॥सगेहसे निश्चिन्त सोवत हौं न चाहत भोर। नही जानत बिपिनि यह क्रव्याद सेवित घोर॥ हिडिम्ब राक्षस बसतहै यहि बिपिनिमे बलवान । तेहिं पठाई मोहि करिबे क्रूर कर्म्म बिधान॥ सो हमारो है सहोदर दुष्टभाव बिचारि । तौन तुमकों चहत भोजन कियो बलबश मारि॥ देखि तुमकौं देवसम बररूप गुणको धाम । करो तुमकौं चहतिहौं पति आपनो अभिराम ॥ जानिकै यह करऊ मोसौं योग्य जैसो कर्म्म । काम हतहा नही मेरो त्याग तुमका धर्म्म ॥ पुरु षाद राक्षस सौं करौंगी तुम्हे रक्षित बीर। मोहि सह गिरि दुर्गमे चलि बास करिए धीर ॥ खेचरी हौं तुम्हैं सह अति रम्य थलमे जाय।रमौगी तो सङ्ग लहिहैं प्रीति अति सुखपाय॥भीमसेनउवाच॥ जननि भ्राता जेष्ठ सोवत छोडिकै तजि धर्म। राक्षसी अनु जाय तो यह करै कौंन कुकर्म ॥ असुर भक्षण हेत सोवत छोडि जननी भ्रात। कामबश व्है अधम अैसो कौंन तो सँग जात॥राक्षस्यवाच॥ करहिगी प्रिय रावरो हम इन्हे देऊ जगाय । तुम्हैं सहपरिवार राक्षस सौं सुलेउँ बचाय ॥ भीमउवाच ॥*॥ राक्षसी सुख सुप्त भ्राता सहित माता जौंन। अधम राक्षस भीति तें अब करै बो धित कौंन ॥ गन्धर्व किन्नर मनुज सह तन मो पराक्रम घोर।कहा राक्षस बापुरो यह जौंन भ्राता तोर॥जाऊ कै तुम रहऊ सुन्दरि करऊ चाहऊ तौन। पठै कै तुम देऊ भ्राता अधम है तो जान॥ वैशम्पायन उवाच॥ *॥बडी लागी बेर जानि हिडिम्ब राक्षस दुष्ट। उतरि तरु तें चलो पाण्डव घोर व्है अति रुष्ट॥घोर धारे रूप आवत भरो क्रोध महान।लखि हिडिम्बा भीमसौं भरि भीतिसौं मतिमान॥ कहन लागी दुष्ट राक्षस चलो आवत जौंन। कहति जो मै सहित भ्रातन करऊ हे प्रभु तौंन ॥ काम चारी राक्षसी हौं भरी बल अभिराम । चढो मेरो पीठिपैं हों जाउ लै नभ धाम ॥ देऊ बेगि जगाय माता सहित भ्राता बीर । जाउँ लैकै गगण मै हौं तुम्हे सबकौं धीर ॥ भीमउवाच ॥*॥डरै मति मो पास सुन्दरि कौंनको भय तोहि।हनतहौं हौं अधम राक्षस महा देखत तोहि॥ नहीं मो बल सदृश है यह अधम राक्षस जौंन। सहै प्रबल प्रहार मेरो बीर अैसो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कौन ॥ देखि मत्तमतङ्ग सुण्डादंड से दोर्दंड।उरू परिघ समान औ उर अति समुन्नत चंड ॥इन्द्र आ०पं०
विक्रम सदृश विक्रम है हमारो जानि। नहि निरादर करऊ मनमें मोहि मानुष मानि॥ हिडिम्बो
वाच ॥ देव रूपी नरव्याघ्र न करति तो अपमान ।लखो राक्षस को पराक्रम मनुजमे अतिमान॥
वैशम्पायनउवाच ॥ भीमके सुनि वचन राक्षस देखि भगिनी रूप। बनी रतिसम धरे भूषण वसन
माल अनूप ॥पुंप्रार्थिनी तेहि जानि राक्षस क्रोधकरि अतिघोर। कहन लागो श्वसासों दुगफारि
लखि तेहि ओर॥ कौन मेरे भक्षमे करि सकत अप्रिय काम। डरति है मम कोपसों नहि भई
मोहित बाम ॥धिक्कार असती तोहि है मो अहितकारिणि सर्व। भई राक्षस वंशमे त अयश्य कर्त्री
सर्व॥ इन्हे मारत सहित तोहि हिडम्ब हौं बलऐन। चलो कहि यौं दशन चावत किए राते नैंन॥
ताहि आवत देखि सोहैं भीमसेन उदार। कहे भर्त्सन बैन बज्रबिधि तिष्ठ तिष्ठ प्रचार ॥ भीम
सेन विलोकि राक्षससों कहे इमि बैन। श्वसापर अति क्रोध कीन्हें हनो चहत अचैन॥ वेगतें इत
आउ मोपै रे नराशन दुष्ट। बाल बधतें कहा पैहै सुयश राक्षस रुष्ट॥ अनयकारी अन्य कोऊ
अपरको नहि बाध। स्ववश मोकौं वरी यह नहिं भरोहै अपराध॥ देहचारी कामप्रेरित श्वसा
तेरीबाल। तो पठाई देखि मोछबि भई बिवस बेहाल॥करी मोपै कामना यह पाय मनसिज दोष।
करतनिन्दा हनो चाहत वृथा कीन्हें रोष॥ चहत मारो याहि मेरे लखतरे मतिमूढ।युद्धमो सौं
आय करु जौं भयो क्रोधारूढ॥ तोहि जमको पुरीकों हौं एक देत पठाय। ताल फलसौं फोरि
तेरो शीस करि बिनु काय॥ तोरिकैतो अङ्ग क्षितिपर डारिहौ सामर्थ। अथ कंक शृगाल गृध्रक
ढोरिह करिहर्ष ॥ विना राक्षस करतहौं यह अथ कानन भूरि। फिरहिंगे इत मनुज बनचर
अभय आनद पूरि॥लखे गी तो श्वसा तोकों हतो मोतें अथ।यथा मारो सिंहको। गज गिरो उन्मदमथ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बाधाबिन तब होयगो यह बन रक्ष ललाम।तोहि मारि जब देउ गो पठै प्रेतपतिधाम॥

॥ * ॥ हिडम्बउवाच ॥ * ॥

गर्जे व्यर्थ कहें कहा करऊ सो कर्म्म महान। हे मनुष्य जातें बचे काल बश्यतो प्रान॥
होय पराक्रम जौंन सो प्रगट देखावऊ मोहि। बलाबलो तब आपनो समुझि परैगो तोहि॥

॥ * ॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

तब बली आपुहि मानिहो जब भिरऊ मोसौं आय। हौं मारिकै जमलोक तोकों देत दुष्ट
पठाय॥ करि पान तेरो रुधिर पीछे सुप्त तिनहि सँहारि। अनु श्वसा अप्रिय कारिणीको प्राण
लेहौं मारि॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सो बोलिकै एहि भाँति बाऊ उठायकै अति उद्ध।
तब चलो सोहैं भीमके बलभरो बल्गत क्रुद्ध ॥ अतिभीम भीमपराक्रमी चलि बेगसौं बलवीर।
गहि लई ताकी भुजासौं कछु हसतसे रणधीर। तब खैंचिकै तेहि लै गए धनु आठ भूमि प्रमान।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० ज्यों अल्प मृगकों सिंह मर्दत पकरिकै बलवान ॥ सो क्रुद्ध राक्षस भयो मर्दित भीम भुजके जोर। तब बाऊसों गहि भीमसेनहि लगो गर्जन घोर॥फिरि खैचिकै बल सों बृकोदर लै गए तेहिदूरि। नहि सुनत जागहि भ्रात माता शब्द याको भूरि॥तब लरे ते अन्योन्य दोऊ भरे सुबल गंभीर। सुनि शब्दतिनको सहित माता जगे पाण्डव वीर॥तँह लखि हिडिम्बाकों खडी अति प्रथा बिसयकाय॥तब लगी बूझन देखिकै अति सुन्दरी अतिकाय ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ अतिभए बिस्मित पाण्डुनन्दन लखत ताको रूप । फिरि लगी कुन्ती बोलि मीठे बैन बूझन भूप ॥ तुम कौंन आई कहातें इत चहति हौ का काम । हौ बिपिनि देवी अप्सरा कै भरी रूप ललाम ॥ सो कहऊ हमसों सत्य सुन्दरि बोलि मीठे बैन ॥ हिडिम्बोवाच ॥ यह बन हिडिम्ब सु रक्षकोहै खच्छ बासक अैन ॥ सो मोहि ताकी स्वसा जानऊ अंब अति अभिराम॥ हा भ्रात प्रेरित इतै आई तुह्मै बधिबेकाम ॥ इत देखि अतिबल पुत्र तो नव कनक बनक स्वरूप। व्है रही ताके स्वबश प्रेरित करी मन्मथ भूप ॥ हौं बरी करि भर्त्तार तोसुत महाबल बरकाय॥तब ताहि हौं लै जान चाहे कियो बऊत उपाय॥ जब लगी मोकों वेर बऊ लखि महा राक्षस दुष्ट। तब इतै सो सह तुह्मै हनिबे हेत आयो रुष्ट ॥ गहि ताहि सो लै गयोहै तव पुत्र सो भर्तार। ते लरतहैं बनमाह गर्जत बलीवीर उदार॥ * ॥ बैशंपायनउवाच ॥ *॥ यह सुनत ताके बचन धर्म नरेश अर्जुन बीर । उठि चले तेहां राखि माता पास अवरज धीर ॥ तिन लखे दोऊ लरतहैं जय चाहि कै बलवान। अति उठी क्षितितें धूरि दावा धूम धार समान ॥ ते पांसु रञ्जित धराधरसे ऊपे उग्र निहार । तब देखि भीमहि लरत तासों कहो पार्थ उदार॥ हे बृकोदर डरऊ मति अति करऊ निर्भय रारि॥हम तो सहायक इतै आए याहि डारत मारि ॥*॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ तुम करऊ मति संदेह तेहालएऊठाढे मौन। सुनु मो भुजातर भए अैसे बचतहै कऊ कौन ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ इत हमै रहिबो है न यातें हनऊ याहि उतास । लखि भई प्राची अरुणह्वबे चहत प्रातःकाल ॥ यह करी माया राक्षसीको पाय रौद्र मुहूर्त। अब भीम क्रीडा करऊ मति कछु बेगि मारऊ धूर्त्त ॥ * ॥ बैशंपायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनत अर्जुनको बचन भे भीम ज्वलन स्वरूप । वह धरो बल जो जगत क्षयकृत धरत वायु अनूप ॥ गहि ताहि लागे यौं फिरावन महा चक्र समान। सो तजत है नहि देहतें वह राक्षसाधम प्रान ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ जौं भयो तुमकौं भार यह तौ तजऊ राक्षस युद्ध । हौं हनत याहि सहाय तो करि होऊ तुम श्रम शुद्ध ॥ यह सुनत पारथको बचन करि भीम क्रोध गँभीर । तब डारि ताको भूमिपर गहि लगो मर्दन बीर ॥ परो क्षितिपर करण लागो घोर आरत घोर। तब भीमसेन उखारिडारो मध्य तें भुज जोर ॥ सो मरो जानि हिडिम्बकौं क्षितिपरो देखि महान। अति भए हर्षित धर्म्मनृप करि भीमको सन्मान॥तब करो पूजन भीमको सब पाण्डवन अभिराम। अति भरे आनंद जानिकै सम प्राण प्रिय बलधाम ॥ यह कहो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अर्जुन भीमसा नहि भलो यह बनवास । यह नगरह अति निकट यातें उचित दूरि निवास॥ आ०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तँहतें चलिबेको कियो पाण्डु सुतन प्रस्थान । भीम हिडिम्बा सौं कहो बचन सक्रोध महान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभि गामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि हिडिम्ब बधोनाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ भीमउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैर लेति है राक्षसी बिबिधि मोहन डारि । जाऊ हिडिम्बा आपने भ्राताको पथ धारि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ भएँ क्रोध लहि दोष गँभीर । दुखीको बध करत न धीर ॥तनु रक्षणतें रक्षणधर्म्म । कहत बिचारि बेदविद पर्म्म ॥बध करिबेकौं आयो रक्षहनो ताहि बर बल रक्षदक्ष॥ है ताकी यह भगिनी दार।कहा क्रोध कार करी तुम्हार॥ वैशम्पायनउवाच॥हिडिम्बा करि कुन्ति हि परणाम । बन्दि युधिष्ठिरकौं अभिराम॥ कहन लगी कुन्तीसौं बैन।भई बिनीत भरे जल नैन॥ दुख दुस्तिनको मनभव जौंन।हे अम्बा तुम जानति तौंन॥भीमसेन कृत सो हम पाय । हो समय गुणि कै हे माय ॥ गयो सिराय काल अब तौंन । भयो समय अब आनद भौंन॥ छोडि सुहृद प्रिय खजन सुधर्म । बरो जो नरव्याघ्र पति पर्म ॥ जौ तुम अरु तव सुत बलवान। तजि हे तो तजि हा मै प्रान ॥ सत्य कहति तुमसौं यह बैंन । करऊ कृपा मो पैं यश अैंन ॥ मूढ भक्त अनुगामिनि जानि। स्वसुत करऊ मो पति सुखदानि॥देऊ जाउँ लै तिन्हैं यथेच्छ । प्राण सदृश जो मोहिअपेक्ष ॥ फेरि ले अैहौं तुम्हरे पास। यह निश्चय मानऊ बिश्वास ॥ जब मेरो करि हौ अवसर्न ।तब तो आय देखि हौं चर्न ॥ तब दुखतें करिहौं उद्धार । अपथ बिपिनि गिरिमाह उदार ॥तब ले जैहौं पीठि चढाय। महा शीघ्र करि गति सुखदाय॥अम्ब कृपा करु सहित सनेह।स्वसुत भीम मोकौं पति देह॥ आपतकाल पाय कै प्राण । राखत जेहि तेहि भांति सुजान ॥ सब स्वधर्म्मकौं अङ्गीकार । करि कै राखत साधु उदार ॥ आपतकाल मह जो धर्म्म । राखत सोइ धर्म्मविद पर्म्म ॥रक्षक प्राण धर्म्म सुखदान । छोडेतें सोइ भक्षक प्राण ॥ करत धर्म्मबश यो बो कर्म्म। ताहि न निन्दत सुमति सु धर्म्म॥ * ॥ युधिष्टिर उबाच ॥ * ॥ कहति हिडिम्बा सो सब सांच। यह सब कहत बेदविद पांच॥ स्थिर व्है रहेहु सत्यमे तौंन । हे सुन्दरि तुम भासो जौंन ॥ स्नान नित्य करि कर्म्म ललाम । मङ्गल विधि धारे अभिराम ॥ जबलौं भानु होहि नहि अस्त । भजऊ भीम सँग दिवस समस्त ॥ संध्या होत हमारे पास । भीमसेन आवहि सुखरास ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कियो हिडिम्बा सो स्वीकार। सुनि बोले तब भीम उदार॥ सुनहु राक्षसी मेरो बैन। समय बद्ध यह सत्य सचैन॥ पुत्र होय गो जबलौं तोहि। तबलौं तो सङ्ग रहिबो मोहि ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच॥ * ॥ कहि तथास्तु तिनके पास। लेय भीमकहँ चली अकाश॥ शैल शृङ्ग जहँ अति रमणीय। जहाँ देवतायतन कमनीय॥ मृग पक्षीगण जहँ कल रूप। तहां जाय धरि बेश अनूप॥ मधुर बचन बोलति मृदु अङ्ग। रमति तहां पांडव के सङ्ग॥ जहां नदी गिरि गहन ललाम। तँह तहँ जाय रमति अभिराम॥ नाना भांतिन करति बिहार। जई हिडम्बा पुत्र उदार॥ बक्तु महान बिरूप सुनैन। खडे कर्ण अति जबको अैन॥ महाकाय अतिमाया धाम। बिपुल अङ्ग सब सबल ललाम॥ सम्भव मनुज अमानुष रूप। बाल बयस तनु युबा अनूप॥ सर्ब अस्त्रमे पर वर बीर। महा प्रकर्ष बली रणधीर॥ लहति राक्षसी जबही गर्भ। तब प्रसब करतिहै अर्भ॥ कामग काम रूप अभिराम। पुत्र हिडिम्बाको बलधाम॥ अकच आय कै परशे पाय। भीमसेनके अति सुखदाय॥ माता पिता तासको नाम। धरो घटोत्कच बलको धाम॥ भयो पांडवनसौं अनुरक्त। सो प्रिय भो तिनको बरे भक्त॥ बास काल भो जीर्ण सुजान। कहि सु पांडबनसौं परमान॥ समय बन्ध करिकै अभिराम। गई हिडिम्बा अपने धाम॥ कार्य्यकालमे कीन्हे स्मरण। आशु पिता लखि हौं तो चरण॥ व्है कै बिदा घटोत्कच बीर। गयो सो उत्तर दिशिकौं धीर॥ तिहिको इन्द्र कियो उतपन्न। हेतु शक्ति जो कर्णासन्न॥ स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुल नाथेन कविना कृत महाभारतदर्पणे आदिपर्बणि हिडिम्बा विवाह घटोत्कचोत्पतिर्नाम त्रिचत्वाविंशोऽध्यायः॥ * * * * * * * * * * * *

तौन तौन बन नाघत जाय। हनि बराह मृगके समुदाय॥ राज्यांतरकों गए उताल। सह कुन्ती कुरुकुल क्षितिपाल॥ कीन्हैं जटा सुबल्कल बास। अजिनाम्बर धारैं छबिरास॥ बने तपस्वीसे बर काय। थकैं लेत कहुँ जननि उठाय॥ गुप्तजात कहु प्रगट अमन्द। पढत बेद बेदाङ्ग सचन्द॥ आगे जाय लखो मुनिव्यास। जास भानु सम सु तप प्रकाश॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तास चरण बन्दन तिन कीन्हों। मुनि प्रसन्न व्है आशिष दीन्हों॥ माता सहित सु अंजलि [illegible] बैठे जाय सु मुनिके धोरैं॥ * ॥ व्यासउवाच॥ * ॥ हम पूर्बहि सब जानत रहे। यह जे [illegible] तुम लहे॥ अन्ध सुतन छल जौंन बिचारो। पापकर्म्म करि तुम्हैं निकारो॥ सो सब कर्म्म [illegible]। मिले तुम्है हित चाहत कीन्हौं॥ अब चित माह बिषाद न आनो। होनहार [illegible]॥ हमको तुम समानहौ दोऊ। न्यूनाधिक यामे नहि कोऊ॥ साधु दीन [illegible] प्रीति तिनपैं अवरेखैं॥ अधिक प्रीति है तुमपैं तातैं। कियो चहत तो हित हम यातैं॥ यह रमणीय नगर ढिग थारैं। तहाँ बसहु चलि गुप्त बिचारैं॥ फिरि जब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हम तुम पै चलि ऐ हैं। तहाँ जाइयौं जहाँ बसै हैं ॥ आश्वासन तिनको इमि करि कै। आ
एक चक्राके ढिग मुद भरिकै ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ जीवत्पुत्रि प्रथा सुन मोसौं । बचन
भविष्य कहत हम तोसों ॥ धर्म युधिष्ठिर पुत्र तिहारो। जीति हि धरा सिन्धुलौं चारो ॥ अर्जुन
भीम महा बल दोऊ। इन सौं जीति हि भूप न कोऊ ॥ राजसूय हयमेध सु विधिसौं। धरा जीति
करि हैं बऊ निधि सौं ॥ जाचमान जन मानस भरि हैं । राज्य हस्तिना पुरको करि हैं ॥
वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यौं कहि विप्र धाममे राखो। चलत व्यास तिनसों यह भाखो ॥ कुन्ती
रऊ सपुत्र इत तबलौं। फिरि आवै तौ पँह हम जबलौं ॥ कहि तथास्तु पांडव शिर नाए। गए
व्यासमुनि जहतैं आए ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ एक चक्राको पांडव गए। कहा करत ते
तेहां भए ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ पांडव रहे कछुदिन तेहाँ। मुनिवर व्यास राखि गे जेहाँ॥
सरिता बाग सरोवर भाए। लखत फिरत पांडव छवि छाए ॥ पांडव भिक्षा मागि ले आवै। देहि
जननिकौं जो कछु पावै ॥ देइ लगाय भाग जो माता । भोजन करहि तौन सब भ्राता ॥ आधेमे
जननी सब भाई। आधो खाहि भीम सुखदाई ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

ऐसें बीति गयो बऊकाल। रहत तहाँ बर बीर बिशाल ॥ एक दिवस भिक्षाके हेत। पांडव चारि
गए सहनेत ॥ भीम रहे माताको पास। भयो बिप्र घर रुदन प्रकास ॥ सो सुनि कुन्ती दायाधाम।
सहि न सकी सो करुणा साम॥ दुख तैं मथित भयो हिय ऐन। कहो भीमसो तब यह बैन ॥ सुखसौं
बसे बिप्रके धाम। सहित सनेह पाय बिश्राम ॥ चिन्तितही हम चितमे नित्य। कहा बिप्रको कीजै
हित्य ॥ हमसे साधु बसत जेहि पाश्र। ताके करत दुःखको नाश ॥ तेई पुरुष जगतमे सार।
जे नहि नाशत पर उपकार ॥ तनु उपकार पाय मतिमन्त। प्रत्युपकार करैं गुरु सन्त ॥ तातैं यहि
ब्राह्मणको कष्ट। प्रत्युपकार हरे अस्पष्ट ॥ * ॥ भीमउवाच ॥ * ॥ दुःख हेत जौ जानो जाय।
दुस्कर हूँ करिए व्यवसाय ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ इतनेमे सह भार्य्या बिप्र। फिरि रोयो
सुनि कुन्ती क्षिप्र ॥ गई तास अन्तःपुर माह। ज्यौं गो बत्सपास नरनाह ॥ पुत्र सुता सह बिप्र सभा
र्य्य। भरे शोकसौं देखो आर्य्य ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ धिग जीवन जाको गतसार। जीवन
दुखसो भरो अपार ॥ करत त्रिवर्ग आतमा भोग। सहत दुख लहि तास बियोग ॥ सुनत मोक्ष
सो देखत कौन। अर्थ कष्ट करि लहिए जौन ॥ ताको नाश होत अति दुःख। लखो कछू नहि
कारण सुःख ॥ सह कुटुम्ब तँह जैअै भागि। जहँ निःचिन्त रही सुख पागि॥ तुम न ब्राह्मणी मानो
तौन। बचन हमारो आनदभौन ॥ माता पिता कुटुम्ब समेत। यहि पुर बसे मरे यहि हेत ॥ जैसे
नगर बसे का चैन। तुम मानो नहि मेरो बैन ॥ पंऊचो बन्धुनाश सो आय। कारक महा दुःख
समुदाय ॥ तातें ऐसि मरत हम जाय। बन्धु त्यागि नहि जीवन न्याय ॥ गृहस्थ आश्रम की सुख

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मूल। धर्म्म चारिणी निति अनुकूल ॥ पुत्र प्रसूता भार्य्या धर्म्म । त्याग तुम्हारो हमै न पर्म्म ॥ पुत्र प्राणसम अतिप्रिय जौन । ताको त्याग सहत है कौंन ॥ प्राप्त भयो नहि यौवनतास । पति हित राखो धरि बिधि न्याश ॥ दौहित्र लोकको दाता जौंन । दुहिता त्याग शकै सहि कौंन ॥ अधिक नेह सुतसौं सब कहत । कोऊ प्रीति कन्यामे लहत ॥ मोकौं दोऊ सदा समान । करौं देहको अपने दान ॥ तौ परलोक माँहि यह मोहि । व्है है दुःख कहत सो तौहि ॥ मेरे भार्य्यादिक हैं जौंन। तिनको पालन करि है कौंन॥तुममे त्याग एकको जौंन । राखि आपुकौं निन्दित तौंन ॥ परो विपति सागरमे व्यक्त । होत नही तरिबेकौं शक्त ॥ जहैं कौंन गतिहिँ हम अद्य । सबके सङ्ग मरण सुख सद्य ॥ * ॥ ब्राह्मण्युवाच ॥ * ॥ दुःख करऊ मति अज्ञ समान । हे पति तुमहौ परम सुजान॥जो जनमत सो मरत अवश्य । होत कार्य्य जो भावी बश्य॥ स्त्री सुत सुता आत्म हित अर्थ । करत जगत सब जानि समर्थ ॥ व्यथा छोडि सब देऊ सुजान । मेरो त्याग करऊ मतिमान॥ नारिनको यह कारज धर्म्म । करैं प्राण तजि पतिहित पर्म्म ॥ करैं सु भार्य्याकौं जेहि अर्थ। सोभो मोमे तुम्है समर्थ ॥ कन्या पुत्र सु तुमतैं पाय । तुमसौं भई उरिण सुखदाय ॥ कन्या सुतको रक्षण जौन । पोषण सह करि हौ तुम तौंन ॥ तुम बिनु हम सब बिधि असमर्थ । करि हैं कहा बिना प्रभु अर्थ ॥ गर्बित भरे दोष नर जौंन । लेहैं हठि कन्या यह तौंन ॥ जे संबन्ध जोग नहि जाति । हौं रक्षण करिहौं केहि भाँति ॥ बिधवास्त्रीकौं लम्पट जौंन । चाहत भ्रष्ट कियो हठि तौंन ॥ तासौं हा केहि भाँति बचाय । कुल पथमे रहिहा सुख पाय ॥ सुतकौं बिद्या दीबे योग । हौंहि समर्थ न बनिता लोग ॥निन्दा पाय लोकमे विप्र। तजि हौं देह अवश्यक क्षिप्र॥ तब ए बालक मोसौं हीन। मरि है यथामीन जलक्षीन ॥ तुम बिनु मरत तीनि हम बिप्र । तातैं करऊ त्याग मो क्षिप्र ॥ सधवा मरै सुपुत्रा बाम । तास भाग्य बुध कहत ललाम ॥ दान यज्ञ व्रततैं अभिराम । तियकौं पति हित कृत फल माम ॥ तौन कियो हौं चाहति धर्म्म । तुमकौं इष्ट सु कुलकौं पर्म्म॥ मित्र पुत्र धन भार्य्या जौंन । करत बिपत्ति हरण हित तौंन ॥ आपत हेत राखिए बित्त । धन दै दारा रक्षण हित्त॥ आत्माको धन दारा देय । करि रक्षण बुध वर सो लेय ॥ दुहूँ लोकमे फलद बिचारि । कर सुत स्त्री बुध निरधारि ॥ कुल आत्मा मति तुला चढाय । तौलें आत्मा अधिक लखाय॥आत्मा राखऊ [illegible] मोहि । मोसुत पालेऊ मागति तोहि ॥ अवध्य दारहि बुध जन कहत । राक्षस होत धर्म्म [illegible]त॥यह बिचारि नहि मारिहि मोहि।पुरुष जानि नहि छोडि हि तोहि ॥ यातें मोहि पठा [illegible] । कियो बऊत सुख तुम्हरे साथ ॥ पुत्रादिक फल तुम्ह तें पाय । करण उचित यह मोहि [illegible] कीजियो भार्य्या जौंन । रक्षण करी धर्म्मतो तौंन ॥ मोहि तजऊ यह समुझि निमित्त । [illegible] रक्षण सुत बित्त ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनि ताकौं लाय हिय रोयो बिप्र सुजान । दुःखार्णवमे मग्न भो जानि प्रिया प्रियप्रान ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

देखि माता पितहि दुःखित तास कन्या जौंन । भई दुःखित कहन लागी बचन ऐसे तौंन ॥ भए दुःखित कहा रोवत करऊ मो सुनि बैंन । धर्म तेहीं त्याज्यकौं तुम तजऊ पावऊ चैंन ॥ अपत्यको यह होतु दुखते लेइ पितहि उबारि । यहि कालमे हौं होति ध्रुव दुखसिन्धु देति उतारि ॥ नर्कते जो करै तारण पुत्र कहिए तौंन । दौहित्र चाहत पितर याते करण तारण जौंन ॥ लेति जीवित राखि तो हौं पिता यह निरधारि । बाल भ्राता मरैं तो यह नष्ट होत बिचारि ॥ तव पिण्ड ऊ है सुनऊ पितरणको क्रिया हत हीन । पिता माता हीन भ्राता होहि गी हम दीन ॥ मरैंगो लहि महत दुर्गति सुनऊ यातैं तात । रहो तोतैं पित्रपिण्ड शुचित्त माता भ्रात ॥ पुत्र आत्मा सखा भार्य्या सुता दुःख समान । त्याग करि मो आत्म रक्षण करऊ तात सुजान ॥ अनाथ तुम बिनु फिरौ गी जँह तहां कपिनि समान । तुम्है तारे लहौं गी हौं परमपद सुखदान ॥ हौंउगी सब भांति दुःखित तजैं तुमकौं तात । तजऊ मोकौं राखिए मो सुखी माता भ्रात ॥ रुदन करि द्विज सुता ऐसे कहो नाना भांति । कहत बनत न तौंन सिगरो महा दुखकी पांति ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह बचन सुनि सह ताहि रोए पिता माता भूरि । सुनत बालक पुत्र बोलो बिहँसि बचन बिसूरि ॥ करऊ रुदन न पिता माता अरी भगिनी बाल।कहो सबके पास चलि इमि बचन खलित रसाल॥ एक ले तृण हाथमे इमि कहो बालक बैन । पिता यातैं मारिहौं मैं राक्षसहि बल ऐन ॥ अव्यक्त ताके बचन सुनि लखि रहो द्विज मुसकाय । कहन लागी बचन कुन्ती समय तासों पाय ॥ * ॥ कुन्युवाच ॥ * ॥ दुःखको जो मूल है सो कहऊ मोसो बिप्र । करौं मै प्रतिकार ताको समुझि शक्य सचित्र ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ यह दुःख हरिबे जोग्य है नहि मनुज के मतिमान । बसत राक्षस महा बक यहि नगरढिग बलवान ॥ यहि देशको यहि नगरको सो ईश है अति दुष्ट । सो नित्य मानुष मांस भोजन पाय होत सुतुष्ट ॥ करत है पर चक्रते यह नगर रक्षण तौंन । लैंत बाह प्रमाण भोजन नित्य व्यञ्जन जौंन ॥ महिष दै एक मनुष गृहप्रति क्रमहि ते कर चण्ड । सो बार आवत बजत बीतें बर्ष दारुण दण्ड ॥ पञ्च बिंशति सेरको है कहत खारी मान।बीस खारीको कहत हैं बाह सकल सुजान ॥ नहि दण्डदीवे करै यो जन यत्न जानि अवार । क्रोध करि सो करै ताको नाश सह परिवार ॥ बेत्रकीय स्थानमे है भूप सवरव तौंत । करत है नहि मन्द बुद्धि उपाय याको जौंन ॥ कुराजमे यहि बसत हैं उद्विग्न नित्य महान । जँह रहैं सब बर्णके बर विदुष बिप्र समान॥भूप भार्य्या बित्त हैं ए तीनि सुखद अनन्द । भई सङ्गति तिऊनकी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अब हते कारक दन्द ॥ भयो प्राप्त सो बार हमकों कष्ट कारक नेत । परो देन सु एक मानुष असुर भक्षण हेत ॥ मनुज लीजै मोल इतनो बित्त मो ढिग है न । सुहृद तनको दान यह नहि सहो जात अचैन ॥ छुट जासौं असुरसौं यह परति गति नहि जोहि । महा दुःख समुद्र बाढो चहत बोरन मोहि ॥ चहत सह परिवार राक्षस प्राप्त कोवँ गौंन । दुष्ट भक्षण करो हमकौं दृष्ट ह्वै करि तौंन ॥ कुंत्युवाच ॥ करऊ कछु न बिषाद यह दुख देखिकै हे बिप्र । कियो यत्न बिचार हम तो बिपति हारक क्षिप्र ॥ बाल कन्या पुत्रहैं तोइ नहि पालि हि कौंन। पास राक्षस दुखदके तुम करु न दम्पति गौंन॥पाँच मेरे पुत्र तामे एक जैहैं तत्र ।बिप्र तोहित अधम राक्षस रहत बलिप्रिय यत्र॥ ॥ब्राह्मणउवाच ॥ जीव हेतन करहिगे हम बिप्र बधको कर्म । करत हैं अकुलीन जैसो स्वार्थ हेत अधर्म ॥ आत्म आत्मज मरण हमकों बिप्र बधतें श्रेय ।बिप्र बधके पाप कीन्हे नही निष्कृति अमेय। जानिकै बध बिप्रके तें आत्मबध अभिराम । आत्मबधको पाप तब जब मरै अपने काम ॥ गेह आयो आपने कै सरण लहि भयदाप । ताहि त्यागें अभय मागें हने पूरण पाप ॥ नहि करत निन्दित कर्म आए बिपति धर्म बिचार । सहित पत्नी मरण हमकों श्रेय सुनऊ उदार ॥ ॥ * ॥ कुंत्युवाच ॥ * ॥ बिप्र रक्षण कियो चाहति बुद्धि मेरो नित्य । पुत्र शतलौं हौंहि तबहूँ लहत दृष्टि न चित्य ॥ नही राक्षस शक्यको है बिप्र मेरो पूत । महाबल बर मंत्रबेत्ता कहा राक्षस धूत ॥ जायगो यह सकल भोजन लएँ राक्षस पास । होयगो नहि बध्यताके लहै गो न प्रयास ॥ आइ मेरे पुत्रसौं करि युद्ध असुर महान । गए ते यमलोककौं तन छोडि भाजो प्रान ॥ पुत्रकौं मम जीतिबेके योग्य है नहि बीर । अस्त्रबिद्या पढँ सिगरी कौतुकी रणधीर ॥ यह बात मेरी द्विज न कहियो कबऊ काहू पास । नहि छाज मेरे सुतनको करि है उपद्रव आस ॥ यह बचन सुनिकै पृथाको द्विज भरे दम्पति मोद । लगे पूजन पृथाका लहि बिबिधि भाँति बिनोद ॥ गई कुन्ती सहित द्विजबर पवन सुतके पास । कहो दीन्हों बचन हम यह करऊ पुत्र प्रयास ॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥ भीमसेन तथास्तु बोले सुनत माता बैन । जानिकै धुरधर्म्म पुत्रके बीरवर बल ऐन॥लेइ भिक्षा तहां आए बेद पाण्डव बीर। जानिकै आकार बूझो धर्म्म भूप गँभीर ॥ जननिसों एकान्तमे लहि महत कारण तौंन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ कियो चाहत भीम तो मत पाय कारज कौंन ॥ * ॥ कुंत्युवाच ॥ * ॥ बचन तें मो करैगो यहि बिप्रको उपकार । महत क्षति तें होयगो यहि नगरको उद्धार ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ कियो तुम यह महातीक्ष्ण कर्म्म दुष्कर कौंन। परित्याग सुपुत्रको यह साधु निन्दित तौंन ॥ त्यजति अपने पुत्रकौं परपुत्रके अनुराग। लोक बेद बिरुद्ध भाषत सुमति सुतको त्याग ॥ बाऊबलतें जास सोवत पाय अभया नन्द। राज्य अपनो लियो चाहत मारि दुर्जन मन्द ॥ धृतराष्ट सुत नहि लेत निद्रा जाहि करि अकर्ण। भरो चिन्ता रहत है सह बन्धु बर्ग सकर्ण ॥ कढे जाके बाऊबलतें जारि लाक्षा गौंन।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हतो दुष्ट पुरोचनको शत्रु समत जान ॥ जास भुजबलतें सु चाहत लयो अपनो राज । युद्धमे आप्य०
धृतराष्ट सुतको मारि सहित समाज ॥ करो यह व्यवसाय करि कै बुद्धि धारण कौंन । दुःखत व्है
गई है का लोप मति गति जौंन ॥ कुंत्युवाच ॥ पुत्र बुद्धि विनाशतें यह कियो हम नहि कर्म ।
रहे यहि द्विज भौनमे व्है गुप्त सुखसो पर्म ॥ कियो प्रतिउपकार याके रहो चाहति नित्य । पुरुष
सो उपकार प्रतिउपकार चाहै चित्य ॥ लाखहटह सु हिडम्बवधमे भीम बरबल जौंन । जानि कै
विश्वास कीन्हों भीम अति बलभौंन ॥ तुम्हे गजसे चारि भ्राता महा बिपिनि मझार । लएँ आयो
तरुन्ह तोरत लहो नेक न भार ॥ जन्मत हि मो कते जो गिरो गिरिपर चण्ड । भई जाके भारतें
गिरिशिला पृथु अति खण्ड ॥ तब हि जानो भीम हूहै महाबल बर वीर । विप्रको उपकारकों
तब कियो यह मति धीर ॥ लोभतें अज्ञानतें नहि कियो यह हम कर्म । विप्रको उपकार कीबो
जानि पूरण धर्म ॥ करि विप्रको उपकार क्षत्री लहत पावन लोक । करत क्षत्रीको सु क्षत्री जान
बधते रोंक ॥ कहत ताहि सराहि सबकोंउ धन्यबीर विराम । लहत सो अति कीर्त्तिको दुऊँ लोकमे
अभिराम ॥ करत रक्षण वैश्यको जो भूप अति बलवान प्रजा रञ्जन लहत सो दुऊँलोकमे सुखदान ॥

॥ * ॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

जो शरण आएँ करत पालन शूद्रको बलधाम । सो लहत जन्म धनाढ्य कुल मे राज पूजित नाम ॥
यह कहो हम सों व्यासमुनि बर बचन पावन पर्म । है कठिन करिबो तौन कीन्हें रहत महत सु
धर्म ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ द्विज कियो जो तुम त्राण माता कृपा करि अवदात । फिरि
भीम यातें आइ हैं करि जातुधान निपात ॥ यहि द्विज हि सहित कुटम्ब जैसे जननि कहतू
बैन । भीमकेरो गमन यातें पौरजन जो नैंन ॥ * । वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सो रात्रि बीतत
भक्ष्य लैगे भीम तँह बलवान । हो रहत जौने बिपिनिमे बक जातुधान महान ॥ तब नाम लैकै
लगे टेरण करन भौंजन अन्न । सो भीमके सुनि बचन आयो महा क्रोधापन्न ॥ अति लोहिताक्ष
कराल सिगरे अरुण जाके बाल । हो कानलों मुख फटो जाको खडे कर्ण कराल ॥ सो चलत
दाबत भूमि भयकर श्यामगिरि सो काय ॥ लखि किए भुकुटी भङ्ग चाबत दशन अति रिसि छाय ।
तँह करत भोजन अन्न देखो भीमकौं बर बीर । तब कहन लागो बचन जैसें भरो क्रोध गँभीर ॥
जो अन्न मेरे अर्थ आयो करत भोजन कौंन । रे महामति अन्ध चाहत कियो यमपुर गौंन ॥ सुनि
बैंन ताके भीमसेन सु हँसत सो वर बीर । सो अन्न लागे करण भोजन महाबल धरि धीर ॥ इमि
गर्जि बाऊ उठाय दोऊ मुष्टिको दिग्वि आय । अति वेगसों दुऊ करण ताडो महाबल सों
छाय ॥ नहि भीम ताकौं गणो कछु नहि तजो भोजन भूर । तब दृष्ट एक उखारि लै सो चलो
अमरष पूरि । करि भीम भोजन पान करि जल पाणि धोय उदार ॥ तब भए ठाढे युद्ध को अति
क्रोध सु बल अगार । सो दृष्ट डारो आय तँह तब बाम करसों भीम । गहि डारि दीन्हो भूमि पै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

[illegible] तरु तुङ्ग बर बल सीम ॥ तब लरण लागे तरुणसों दोऊ महा बरबल बीर । बक बोलि कै फिरि गाल अपनो गहो भीम हि धीर॥ अति भीम भुज बर युद्धमे तेहि कियो श्रमवश भूरि।तब लगे मर्दन डारि छितिपर जानुसौं रिसि पूरि ॥ गहि दच्छकरसों ग्रीव ताकी बामसैं कटिबास । करि दुगुण ताकौं तोरि डारो भीम बरबल रास ॥ रव करत भैरव तास मुखतैं वही श्रोणित धार । तब गयो तनु तजि प्राण ताको महा पापागार ॥ सो शब्द सुनि जे रहे राक्षस तहाँ सेवक तास । ते गए घरतें निकसि कै सब मृतक बकके पास ॥ ❀

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि बकवधोनामचतु स्वारिंशोऽध्यायः ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ ❀

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तिनसौं भीमसेन बलवान । समाधान करि कियो प्रमान ॥ अबतैं मानुष हिंसा जान । फेरि न इत तुम कीजौ तान॥ कहे तथास्तु राक्षसन बैन । गए दीन ह्व अपने ऐन॥ भीमसेन बक लयो उठाय। पुरद्वार पैं राखो जाय ॥ देखि भीम बल बकको नाश । राक्षस भजे भरे अतित्रास ॥ भीमसेन करि गुप्त सरूपाब्राह्मणके घर आए भूप॥कहो युधिष्ठिरसौं बृतान्त। जो राक्षससों भयो नितान्त॥ कढे पौरजन होत प्रभात । मरो लखो तहँ बकको गात । भरो रुधिर गैरिक गिरिमान । मुदित भए जन देखि महान ॥ ते एक चक्रापुरमे जाय । कहो सु समाचार सुखदाय ॥ सुनि साचरज चले जनबृन्द । पुरके छोटे बडे नरिन्द ॥ बिस्मित भए देखि जन पर्म । बक बध समुझि अमानुष कर्म ॥ जानि गणित करि सबको बार । द्विजसों बूझन लगे उदार॥पांडु सुतन कहँ बिप्र छपाय । कहन लगो इमि बैन बनाय । रोवत देखि हमै एक बिप्र । मंत्रसिद्ध इत आयो छिप्र ॥ पुर सह देस रोझो छलेश । तब यह मोसों कियो निदेश ॥ हम लै जैहैं ताको अन्न । मोहित होऊ न सोच आपन्न ॥ सो लै गयो अन्न बक पास । तेहि यह कियो कमसुखरास ॥ यह सुनि चारोबर्ण सुपर्म । ब्राह्मण पूजन कियो सधर्म । पुरजन सगटह गए सुखरास । तब कीन्हो तहँ पांडव बास ॥ जनमेजयउवाच ॥ करि बकबध पांडव धृत धर्म । फेरि कियो आगें का कर्म॥ वैशम्पायनउवाच ॥ तेहि बधि रहे तहाँ बक मारि । वेदाध्ययन करत ब्रत धारि ॥ कछु दिन बीतें ब्राह्मण एक। बसो तहँ भरो बिबेक॥ ताको करि पूजन तेहि बिप्र । बासस्थान दियो शुचि छिप्र ॥ देशान्तरकी कथा अनूप । कहन लगो सो द्विज बर भूप ॥ सह कुन्ती पांडव तहँ जाय ।सुनत सो बिधिवत श्रुति [illegible] ॥ कहो सो तेहि यह कथा अनूप । है पाञ्चाल देशको भूप॥ द्रुपद सुता ताकी छबि रासा [illegible] तास॥धृष्टद्युम्न महाबल जौन।सुता द्रौपदी सुषमा भौन॥ यज्ञागिनि तैं भए [illegible] परम अभिराम ॥ यह सुनि पांडव कथा अनूप ।तब पूछो सह पितर भूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पांडवा ऊचु ॥ * ॥ इनको जन्म सहित बिस्तार । कहऊ विप्र हे सुमति उदार ॥ लही आ
शस्त्र शिक्षा किमि खल । धृष्टद्युम्न द्रोणसों दल ॥ पूर्व द्रोणसों अतिहि बढाय । तज्यो द्रुपद
केा सख्य सुभाय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ ऐसे सुनि पांडवके बैन । सविधि लगे द्विज
कहन सचैन ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ भरद्वाजतें द्रोणोत्पत्ति । भई यथा लहि कामाक्ति ॥
द्रुपद मैत्री शस्त्राभ्यास । फेरि सख्यको यथा बिनास ॥ परशुराम शरविद्यादान । कियो द्रोणको
ज्यौं सविधान ॥ द्रोण शिष्य कुरुकुल अभिराम । भए लहे जिमि शस्त्र ललाम ॥ सु गुरुदक्षिणा
पन करि जौन । पारथ गहो द्रुपदकौं तौन ॥ दियो बढाय द्रोणकह राज । जीति द्रुपदकहँ
सहित समाज ॥ प्रथम कथा यह बरणी जौन । द्विजबर कही फेरि सो तौन ॥ प्रथम कथा यह सब
हम कही ॥ फेरि कहत मति गति श्रमलही ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ द्रुपद अमर्षी नृपअभिराम ।
ढूढत फिरत विप्र तपधाम ॥ पुत्र जन्मको धरि हिय हेत । महा शोचसों पूरित चेत ॥ चहत द्रोणसों
लीन्हों बैर । राज्य हरणको पूरण मैर ॥ जानत द्रोण प्रबल अति मान । श्वास लेत भरि शोच
महान ॥ प्रतीकार करिवेके हेत । ढूढत द्विजबर तपस निकेत ॥ गङ्गा यमुनाजूके तीर । बसत
जहाँ मुनि पुण्य शरीर ॥ बसत जहाँ ब्राह्मण तपधाम । भ्रमत गयो तँह भूप ललाम ॥ याज उपयाज
विप्र तँह भूप । देखे भरे तेज तपरूप ॥ कन्या सम्भव कर्ण समान । दोऊ सहोदर श्रुति पथ
मान ॥ जाय द्रुपद नृपतिनके पास । कहो विनीत मानि विश्वास ॥ जानि भरो तपबल उपयाज ।
कहोविनीत द्रुपद महराज ॥ जैसें होय पुत्र बलवान । हनै द्रोणकौं समर अमान ॥ करऊ कृपा
करि सो क्रतु क्षिप्र । देहों गो अर्बुद बरविप्र ॥ तुमकौं वांछित ह्वहै जौन । देहौं सकल सुनऊ
द्विज तौन ॥ कियो न यह सुनि कै स्वीकार । मुनि उपयाज विवेक उदार ॥ यह सुनि भए उदास
न भूप । सेवा करत रहे अनुरूप ॥ गयो एक संवत्सर बीति । तब उपयाज कहो यहि रीति ॥ याज
हमारो भ्राता जौन । महा लुब्ध करि है यह तौन ॥ ताके पास जाइए भूप । सो कराइ है मख
अनुरूप ॥ सुनि उपयाज बचन क्षितिपाल । गयो याजके आश्रम हाल ॥ अयुत आठ दैकै अभिराम ।
गऊ सु दुग्धवती क्षविधाम ॥ मुनिको करि पूजन अनुरूप । तासों कहो बचन द्रुमि भूप ॥ अर्बुद एक
देहौं हम गाय । तुमसों मुनिबर यज्ञ कराय ॥ द्रोण वैर पावकको ताप । हरऊ बरसि अनुकम्पा
आप ॥ द्रोण महाबल तपको धाम । महाबीर जेता रणमाम ॥ ब्राह्म क्षात्र दोनो धरि धर्म्म । महा
धनुर्धर बेधक मर्म ॥ क्षत्रतेजतें ब्राह्मणतेज । होत अधिक अतिभरो सतेज ॥ यातें डरि आयो तव
पांहि । अति तेजोमय गुणि भू माहि ॥ अधिक द्रोणसों तुम द्विज पर्म । ब्रह्म कर्मसों भरे सधर्म ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

द्रोणनाशकर पुत्र जो प्राप्त होय ज्या मोहि । याज करऊ सो कर्म गो अर्बुद देहौं तोहि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह सुनि याज यज्ञ बिधि कर्म। नीकी भाँति बिचारि सु पर्म ॥ महत कर्म चितमे अनुमान। लिय उपयाजहि बोलि सुजान ॥ नाश द्रोणको करिबे हेत । याज बिचारो कर्म सचेत ॥ यज्ञ द्रव्य सब लयो मगाय। अरु ऋत्विज बोले शुचिकाय ॥ यज्ञ करण लागो मुनि याज । लए बेद बिद बिप्र समाज ॥ कहो याजमुनि नृपके पास । सुत कन्या हूहै हबिरास ॥ पुत्र महाबल वीर उदार। रणदुर्जय दुर्जन हन्तार ॥ रणमे करिहि द्रोणको नाश । महा बीरवर बलको राश ॥ याज समाप्ति यज्ञकी पाय । रानीसौं इमि कहो बोलाय ॥ मोढिग आवऊ शुचिता धारि। सुत कन्या लीजै सुकुमारि ॥ * ॥ राज्ञ्युवाच ॥ * ॥ * ॥ ऋतुस्नानसौं शुचि व्है विप्र। तब तो ढिग आंऊंगी क्षिप्र ॥ हौं सुतार्थिनी बांछित चेत। तबलौं रहऊ सु मोप्रिय हेत ॥ * ॥ याजउवाच ॥ याज हव्य जो कीन्हों सिद्ध। किय उपयाज सो मंत्र समृद्ध ॥ सो का काम न देय ललाम। रानी रहऊ जाऊ कैधाम ॥ * ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ * ॥ यह कहि याज अग्नि मुख तौंन। दियो हव्य सुतकल्पित जौंन ॥ परत हव्य पावकमे भूप। प्रगट भयो सुत देवस्वरूप ॥ *❀*❀*❀***

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

ज्वाल बर्ण सु घोर रूप किरीट धारें बर्म। खड्ग धनु शर लएँ निनदत बेर बेर सो पर्म ॥ अग्नि तें सो निकसि तबही चढो रथपर बीर । देखिकै पांचालजन जय कियो शब्द गँभीर ॥ भूपको भो शोकहर बर द्रोणहा करि युद्ध। सुनो सबहिन गगण बानी भई उद्भत शुद्ध ॥ मख कुंडतें फिरि कढी कन्या भरी रूप ललाम। लसति श्यामा कमल नयना कुंचितालक माम ॥ करज राते पीन उरसिज बनी भोहँ अनूप । धरें मानुष बेश प्रगटी परम शक्ति स्वरूप ॥ नील उत्पल सदृश जाको गन्धकोश प्रमान। रहत पसरो रूप जाके होति कौन समान ॥ देव दानव मनुज जाको चहत अद्भुत रूप । गगणवाणी भई ताके प्रगटहोत अनूप ॥ हेतु है यह क्षत्र कुलके नाश को वर बाम। करैगी सुरकार्य लहिकै समय अति अभिराम ॥ यहि हेत कौरव बंशको क्षय होय गो अतिमान। यह सुनत जन पांचाल हर्षित कियो शब्द महान ॥ द्रुपद महिषी याजसों इमि कहे बचन सुधन्य। मोहि तजि ए पुत्र जननी नही जानै अन्य ॥ कहो याज तथास्तु तासों होय कै संतुष्ट। कियो तिनको नाम बिप्रन्ह दक्षिणा लहि पुष्ट ॥ धृष्ट भाषण माहि अरु भो बित्तवत बर रूप। धृष्टद्युम्न सुनाम याते द्विजन राखो भूप ॥ द्युम्ननाम सुवित्तको है कहतहै मतिमान ॥ अस्त्रादि है सब क्षत्रियनको बित्त परम महान ॥ धृष्टद्युम्न सु भयो तेजस्वी महाबल धाम। कहो कृष्णा कन्यकाको देखिकै तनश्याम ॥ भये पुत्र सु कन्यका यों द्रुपदके मखमाह । गए तिनकों धाम अपने लेइ कै नरनाह ॥ अस्त्रविद्या दियो ताकों द्रोण अति मतिमान । अमिट भावी जानि लीवे हेत सुयश महान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ यह सुनत कुन्ती पुत्र सिगरे शस्त्रविद्द समान।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भए तेहाँ चलो चाहत महामति बलवान ॥ देखि कुन्ती सुतनको तँह चलो चाहत चित्त। लगी आप्य०
कहिबे धर्मसों इमि सत्यवादिनि हित्त ॥ * ॥ कुंत्युवाच ॥ * ॥ बजत दिन एहि रम्य पुरमे
रहे द्विजके धाम। लखे सिगरे विपिनि बापी चारु थल अभिराम ॥ मिलति है अब नहीं भिक्षा
इते भक्ष्य समान। सु भिक्ष है पाञ्चाल देश सु चलै तहँ सुखदान ॥ यज्ञसेन महीप सुनियत ब्रह्म
भक्त ललाम । बजतदिन एक ठौर रहिबो होत नहि अभिराम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुमत
तुमकौं जान कारज सुहित हमकौं तौन । मम कनिष्ठनकी बात मन की हम न जानत जौंन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ।

सुनि ब्राह्मणसों सो कथा तहाँ रहे ककुत्थास। करत परीक्षा व्यास जो कहो आगमन औास ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कहो कुन्ती सुतन सों जब गमन कीवँ बैन। बिप्र सों तब लई आज्ञा भरे पांण्डव चन ॥ कियो
पुर पाञ्चालकौं। प्रस्थान धर्म नरेश । तहाँ आए महा मुनिबर व्यास पुण्यदिनेश ॥ देखि आवत
व्यासकौं चलि गए आगें धर्म । सहित भ्रातन्ह दण्डवत करि कियो पूजन पर्म ॥ पाय आज्ञा जाय
बैठे पांडुसुत मुनिपास। कुशल बूझि सु कहन लागे महामुनि इतिहास ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥
रही बनमे महा मुनिको कन्यका अभिराम। भरी लक्षण सकल साध्वी रूप गुणकी धाम ॥ पूर्व
जन्मज कर्मकौं लहि भई विधवा तौंन । नही ताका मिलो सुखकर सङ्ग पतिको जौंन ॥ पत्यर्थ
तप तेहि कियो तातें भए शङ्कर तुष्ट। कहो तासा मामिवँ बर कामना कर पुष्ट ॥ पञ्च आवत तेहि
सु मागो भरो गुण भर्त्तार। कहो शङ्कर पञ्च मिलि हैं तोहि सुपति उदार ॥ तेहि कह्यो कन्ये एक
माग्यो बरद बर अभिराम। पञ्चपति मोहि देत कैसें ईश करुणाधाम ॥ कहो शङ्कर पञ्च आवत
मोहि मागो जौंन। लहउगी तुम पञ्चपति धरि अन्य देह सु तौंन ॥ द्रुपदके यज्ञाग्नि त सो भई
प्रगट ललाम । बिहित विधिसो तुम्हे पत्नी मिलैगी छविधाम ॥ जाऊ अब पाञ्चाल पुरका तौन
पत्नी पाय । होऊ गे लहि सुखित आगें परम श्री सुखदाय ॥ यहि भाँति कहि कै पांडवन्से। गए
मुनिवर व्यास ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ गए जब मुनि व्यास पांडव भरे मोद ऊलास ॥
चले उत्तर दिशाकौं करि जननि आगे सर्ब । गए शङ्कर तीर्थ जेहाँ परमपूत अखर्ब ॥ गए पांडव
निशामे चलि सुरसरीके पास । लए उत्सुक पार्थ आगें चलत हेतु प्रकाश ॥ गन्धर्ब तँह जल
माहँ क्रीडा करत बनितन सङ्ग। देखि इनकों चले आवत भरो क्रोध उमङ्ग ॥ तानि कै धनु बाण
बोल्यो बचन यों गन्धर्ब। भई संध्या घोर इत सञ्चार समय न खर्ब ॥ असीलव निशि उपरि सरिता
निकट मनुज न जात। गन्धर्ब राक्षस यक्ष कीन्हे गमन करत बिघात ॥ कहत निन्दित नदी तटको
गमन निशिमे तज्ञ ॥ सबल राजा जाय नहि का और मानुष अज्ञ ॥ गन्धर्ब हौं अङ्गारपर्णसु महा
बलको धाम। नही जानत चलो आवत अरे मानुष चाम ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ समुद्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

०प० हिमगिरि पार्श्व सुरसरि निकट आवत रोध। दिवस निशिमे कहत है को महा मूर्ख अबोध॥ मुक्त होय अमुक्त कै निशि दिवसमे अभिराम। नियम काल न कहैं सुरसरि गमनमे मतिधाम॥ शक्ति तैं सम्पन्न हैं हम तोहि धर्षण योग। नहि युद्धवेत्ता तुम्हे पूजत मनुज दुर्बल लोग॥ कालिंदी सर स्वती गङ्गा गण्डकी अभिराम। गोमती शरजू रथस्था सप्त सरित ललाम॥ नदी हैं ए पापहारिणि पुण्य पावनि सर्व। पास इनको जाइवेको काल नियम न खर्व॥ जात गङ्गा निकट वारण करत हौ तुम जौंन। है सनातन धर्म नहि तो कहो मानै कौन॥ वैशम्पायनउवाच॥ अंगारपर्ण सो सुनत अैसें क्रोध करि अति मान। तानि कै धनु लगो छोडन विशिख निसित महान॥ सुफिराय उल्मुक पार्थ कीन्हे बाण ताके भंग। यथा नलिनी नाल तोरत द्विरद दुर्मद अंग॥ *⬭*⬭*⬭*⬭

॥ *॥ अर्जुनउवाच॥ *॥ जयकरीछन्द॥ *॥

मोहि देखावत भीति अयान। हौं स्त्री अस्त्रज्ञ महान॥ डारत अस्त्र अमोघ अरुद्ध। छोडि देउ यह माया युद्ध॥ वैशम्पायनउवाच॥ यह कहि अर्जुन क्रुद्ध महान। छोडो अग्नि अस्त्र सम भान॥ तेहि दीन्हो रथ तास जराय। खेचर गिरो भूमिपर आय॥ ज्वलित अङ्ग अति मूर्छा छाय। गन्धर्व गिरो धरणीपर आय॥ पार्थ पकरि कच खैचत बीर। लैगे जहाँ जुधिष्ठिर धीर॥ तब गन्धर्व की भार्य्या जौन। शरण युधिष्ठिरके गइ तौंन॥ ताको कुम्भीनसी सुनाम। त्राण कियो चाहति पति आम॥ *॥ गन्धर्वउवाच॥ *॥ रक्षित करऊ मोहि बरबीर। छोडऊ पति मो कृपा गँभीर॥ ॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच॥ *॥ रणमे हारो यशते हीन। वास सहाय जास अतिदीन॥ ताहि हने का सुयश गँभीर। याको तजऊ पार्थ बरबीर॥ *॥ अर्जुनउवाच॥ *॥ जाहि जिवो गन्धर्व अनूप। दीन्हों अभै युधिष्ठिर भूप॥ *॥ गन्धर्वउवाच॥ *॥ जीते गए समरमे आम। अङ्गारपर्ण हों तजि हो नाम॥ तुमसों दिव्य शस्त्रधर धीर। भयो समागम लाभ गँभीर॥ है गन्धर्व सुमाया जौंन। दियो चहत अर्जुनको तौंन॥ हम करि पूर्व तपस्या साम। यह विद्या पायी अभिराम॥ रणमे जीति पकरि बलवान। छोडि देत जो रिपुको प्राण॥ सो कल्याण लहत बरबीर। नाना भाँति सुनऊ रण धीर॥ दयो सोमको मनु अभिराम। विद्या परम चाक्षुषी नाम॥ विश्वावसु सो शशिसों पाय। मोहि दई विद्या सुखदाय॥ जौं गुरुदत्त लहै नर खर्ब। होय नष्ट विद्या शुचि सर्व॥ यहि विद्याको वीर्य्य महान। कहत तौंन सुनिए सुखदान॥ चहै चक्षुषों देखो जौंन॥ परै यथास्थित देखि सु तौंन॥ एक चरण तप करि षटमास। तब यह विद्या लही प्रकाश॥ बिना किएँ व्रत तुम्हे सो देत। देखि तुम्हे सबभाँति सनेत॥ यह विद्या लहि कै अभिराम। देवन सदृश भए कृतकाम॥ जे गन्धर्वज अश्व अनूप। देव जान जे मनगति भूप॥ दृढ होत नहि क्षीण लखात। महा तेजमय सम बर बात॥ शत शत पाचौं भ्रातन्ह तौंन। देहौं अश्व महागति जौंन॥ पुरा दक्षके शीष प्रहार। कियो वज्रको इन्द्र उदार॥ शतधा फूटि वज्र सो गयो। सुरन बटोरि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

खंड सो लया ॥ ताको सुरन्ह लगायो भाग । सकल जगतमह सह अनुराग ॥ सहित सार जो आ०प०
बस्तु प्रसंश । तामे प्रबल बज्रको अंश ॥ द्विजके पाणि बज्रको बास । क्षत्रीके रथमाह निवास ॥
दान बज्र है बैश्य सुजान । शूद्रसो कम बज्र सुखदान ॥ रथमे हय है मुख्य ससत्व । याते तिनमे है
बज्रत्व ॥ गन्धर्वज्र जे अश्व अखर्ब । करिहै सिद्ध काम तो सर्व ॥ जनमे अश्व जो वडवासूर । रथ
वाहक अति बलको पूर ॥ यथा काम जब कामज वर्ण । प्राप्त होत कीन्हे अस्वर्ण ॥ *👄*👄*

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

प्रीतितैं कै भीतितैं तु म देत बिद्याजौन । सुनऊ हे गन्धर्व हमकौं लेत रुचत न तौन ॥ गन्धर्वउ
वाच ॥ * ॥ संयोग जो बर नरनको सो प्रीतिकर अभिराम । प्राणदान सुप्रीतिसों हम देत
बिद्या साम ॥ लेहि गे अग्न्यस्त्र तुमसो परम उत्तम जौंन । योग्य है प्रतिदान तुमको सुनऊ पारथ
तौंन ॥ अर्जुनउवाच ॥ अस्त्र देकै लेहिगे गन्धर्व तुमसो अर्ब । कियो हमहि जो देखि धर्षण कहऊ
कारण सर्ब ॥ चले आवत निशामे हम बेदबिद सम बिप्र । देखि हमको कियो बाधा धनुष धरि
जो क्षिप्र ॥ * ॥ गन्धर्वउवाच ॥ * ॥ नही आश्रम चारिमे नहि बिप्र अनुग निहारि । कियो धर्षित
तुम्हे यातैं दूरितें निरधारि ॥ देव दानव नारदादिक ब्रह्मऋषि जे सर्ब । पढत हैं कुरुवंशको यश
सुनै तौन अखर्ब ॥ बेद औ धनुबेदमे हैं बिदित तो आचार्य्य । धर्म बायु सुरेश दश्र सु पांडु अरु नृप
आर्य्य ॥ देव मनुज सु पितर हैं बर ए तुम्हारे पार्थ । तिन्हे जानत है सु हम ह कहत तोहि यथार्थ ।
सकल भ्राता सूर है तव चरित जिनके पर्म । जानि कै सब भाँति तुमकौं कियो धर्षणकर्म ॥ रहत
इस्त्री सङ्गमे लखि पुरुष आवत आन । क्षमा नहि करि शकत हैं जे बीर बर बलवान ॥ बल बढत
रजनीमे हमारो भरो भूरि प्रताप । कियो बनिता सङ्गतैं अति क्रोध प्रबल प्रलाप ॥ गयो जीतो युद्ध
मे हौं कहत कारण तौंन । हौं जितेन्द्री सकल तुम बर युद्धकर बल भौंन ॥ और कामाशक्त स्त्री
लरत मोसौं आय । निशामे हे सुनऊ पारथ शकत जियत न जाय ॥ जौंन कामाशक्त स्त्री करि
पुरोहित बिप्र । पाय ब्रह्म प्रसाद जीतै निशाचरगण क्षिप्र ॥ सत्यबादी बेदबिद तपमय पुरोहित
जास । लहत जय सो जियत भूपति मरैं सुरपुर बास ॥ करत रक्षण राज्य श्रीको धर्मको
अभिराम । सदृक्ष जाको है पुरोहित बेदबिद तपधाम ॥ लहत केबल सौर्यसौं नहि बिजय
भूप महान । पाय बिप्र सहाय ताको होय अनुग सुजान ॥ नियत यह तापत्य कुरुकुल बंश
बर्द्धन बीर । बिप्रप्रमुख नरेश पावत बृद्धि सिद्धि गभीर ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ तापत्य
हमकौं कहो सो को ऊतो तपती बाम । कहऊ सो गन्धर्व हमको ते यहै अभिराम ॥ * ॥
बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ पार्थके सुनि बचन ए गन्धर्व परम सुजान । कहन लागो पूर्व सो बृत्तान्त
सुखद महान ॥ * ॥ गन्धबउवाच ॥ * ॥ भई तपती भानुकन्या जोतिमय सम सूर । नही जाके

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० सदृश बनिता जगतमें छबिपूर ॥ प्राप्त यौबन देखि ताको भए चिन्तित भान । लहत नहि भर्त्तार ताके रूप शील समान॥ कुरु बंशमे सुत छत्तको सम्बरण भो अभिराम।करत सेा रबिको उपासन सन्निधि पूजन साम ॥सदृश तपती के बिचारेा तास लखि रबिरूप ।दियेा कन्या चहे ताकेां जानि कै अनूरूप॥ एकाकी सम्बरण बनकेां गयेा मृगया हेत।टषापीडित अश्वताको गिरेा तहँ गत चेत॥ सम्बरण बनमें व्है पदाती फिरण लागेा भूप । तहाँ कन्या जेातिमय एक लखी श्रीसम रूप॥ नही तीनेालेाकमे तिय तास रूप समान । धरें तियतन जेाति रबिकी भूमि पै सुखदान ॥ ताहि लखी सदनाभिसेां व्है तप्ततन अति भूप । सम्बरण नृप तब लगेा बूझन बेालि वचन अनूप ॥ कौंन हेा तुम कौंन की यहि बिपिनिमे का काम।हेा अकेली फिरति सुन्दरि रूप कैसी धाम॥असुर सुरजा किन्नरी गन्धर्ब मनुजा जौंना।आजुलेां नहि लखी तेामस बाम छबिकी भौंन ॥कमलनयने चन्द्रमासेां वदन तेा अभिराम । देखिकै मन मयत मेरेा महा उन्मद काम ॥ कहेा ऐसें भूप तासेां नही बेाली तौंन।बोजुरीसी दूर देखत कियेा नभकेां गौंन ॥ताहि ढूढन बिपिनिमे सम्बरण लागे भूप। लहेा ताहि न फेरि चऊँदिशि भए व्याकुल रूप ॥ मदन मेाहित गिरेा क्षितिपर भूप अति अभिराम । देखि तपती फेरि आई तहा छबिकी धाम ॥ उठऊ उठऊ महेाप ऐसें मधुर बेाली बैन। छेाड़ गेा कल्यान तेा नृप मेाह जेाग्य तुम्हे न ॥सुनत नृप सम्बरण ताके मधुर बचन ललाम। स्खलित बेाले बैन मुखतें मेाह मण्डित काम ॥ आसि मेाकेां भजऊ तुमका उचित है सुखदान। मनज मेाकेां काम शरतें व्यथित छेाडत प्राण ॥ सुनेा जीवित राखिबेकेां हेां न हेात समर्थ । भयेा किङ्कर रावरेा मनसथ्य मारत व्यर्थ॥कृपा करि कै सुनऊ सुन्दरि भजऊ यातें मेाहि। जानि अपनेा मत्त मेरेा त्याग उचित न तेाहि ॥ व्याह करि गान्धर्व मेाकेां भजऊ हे छबिधाम । व्याहमे गान्धर्व मुनिगण कहत हैं अभिराम ॥ * ॥ तपत्युवाच ॥ * ॥ नही हौं स्वाधीन कन्या पिताबश कुल धर्म । मेाहि मागऊ पितासेां जौं प्रीति मेामे पर्म्म ॥ हैं परस्पर चित्तहारी सुनऊ हम तुम भूप। देखि तुम विकल तैसें देखि हौं तेा रूप ॥ पिता भयतें निकट तेा नहि शकति आय उदार। कौंन कन्या चहति हे नहि प्राणपति भर्त्तार॥ भानु मेरे पिताको तुम जाय मागऊ भूप। नमस्कार व नियम व्रत करि कृपा युक्त अनूप ॥देहि तुमकेां मेाहि तौ हेा हौंउ पत्नी नाथ। रावरेकी हेाय किङ्कर दाससें जौं साथ ॥ सावर्णिसेां हेां कनिष्ठा हे भानुकन्या भूप। नाम तपती कहत मेरेा तौन स्वरूप ॥ * ॥ गन्धर्वउवाच ॥ * ॥ यहि भांति कहि सेा गई नभकौं भानुजा अभि राम। देखि भूपति गिरे क्षितिपर व्यथित कीन्हेां काम ॥ सचिव ढूढत सहित सेना भूपकौं मति मान। पाई देखेा परेा क्षितिपर विगत सँज्ञ सुजान ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥ आप०

लखि सम्बरण भूपपहँ आयो । सचिव महा शोकानल छायो ॥ दौरि उठाय भूपकँह देखो । कामानलसों मोहित लेखो ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बृद्ध कुलीन सचिव मतिमान । हरषो देखि भूप सह प्राण ॥ फिरि शुभ मधुर कहे कल बैन । तजु भय भूप होय गो चैन ॥ क्षुधा पिपासा व्यधित बिचारि । मुख शिर सींचो शीतल बारि ॥ पुण्डरीकको मुकुट बनाय । धरत शीषपर गयो सुखाय ॥ भो सचेत जब नृप बलबान । करे बिदा सब शुभट सुजान ॥ राखो एक सचिवकों पास । बैठो शिला उपरि नृपनाथ ॥ शुचि व्है कै भूपति मतिमान । लगो अराधन भानु सुजान ॥ अंजलि जोरि उर्द्धमुख भूप । करत अराधन मति अनुरूप ॥ बशिष्ठ महामुनिको स्मर्ण । करण लगे भूपति सम्बर्ण ॥ द्वादश दिवस निशा गइ बीति । सकुल पुरोहित मुनि करि प्रीति ॥ तपतीतैं हृत चित्त बिचारि । दिव्य चक्षुतैं मुनि तिरधारि ॥ गए बारहे दिन नृप पास । करिबैं चाहि कार्य सब तास ॥ लखत भूपके मुनि तपधाम । गए गगण पथ गहि अभिराम ॥ सुमुनि कृतांजलि रबि ढिग जाय । खडे भए निज नाम सुनाय ॥ कहो भानु लखि मुनिसों बैन । कौनहेतु आए तप अैन ॥ इच्छा हो सो मांगऊ बिप्र । देहौं तुम्हे दुकरौ छिप्र ॥ यह सुनि मुनि बशिष्ठ तपधाम । कहे बिनीत बचन अभिराम ॥ * ॥ बशिष्ठउवाच ॥ * ॥ तव कन्या तपती है जैन । सम्बरणहेतु मागत हम तैन ॥ है राजा सो धर्म्म धुरीन । भर्त्ता तपती योग्य कुलीन ॥ सुने दिवाकर मुनिके बैन । कहन लगे मुनिसों लहि चैन ॥ सम्बर नृपनमह श्रेष्ठ कुलीन । तुम बशिष्ठ मुनिबर तप पीन ॥ तपती योषित वरा सुजान । सबतैं अधिक कन्यकादान । यौं कहि दिनमनि बचन ललाम । तपती कन्याकौं अभिराम ॥ मुनिकँह दियो सम्बरण हेत । भरे कृपासों प्रभा निकेत ॥ रबिसों बिदा भए मुनिनाथ । चले लेइ तपतीकों साथ ॥ चले गगणतें नृपके पास । देखि भरे सम्बरण उलास ॥ मुनि लीन्हें तपतीकों साथ ॥ आंए जहां रहो नृपनाथ ॥ बिधिवत पाणि ग्रहण कराय । तपतीकों दीन्हों मुनिराय ॥ मुनिबरकी लहि कृपा अनूप । भूप प्रिया पाई अतिरूप ॥ नृप मुनिआज्ञा पाय उदार । तेहि गिरि बिहरत समुद सदार ॥ बिदा होय नृपसों अभिराम । गए बशिष्ठ आपनैं धाम ॥ द्वादश बर्ष रमे तहँ भूप । गिरिकानन लहि परम अनूप ॥ ताके देश नही जलदान । बर्षे द्वादश बर्ष प्रमाण ॥ क्षुधा पिपासाको लहि त्रास । स्थावर जङ्गम भए बिनास ॥ परो न ओस बून्द तहँ भूप । गए जीव तजि देश अनूप ॥ तजि मर्य्याद जाति कुल धर्म्म । करत भए जन कुत्सित कर्म्म ॥ भयो नगर यमपुर सम तैन । प्रेत समान करैं जन गैन ॥ लखि बशिष्ठ करि कृपा महान । बरषे तपबल व्है जलदान ॥ तपती सहित भूपकों ल्याय । स्वपुरमाह राखो सुखछाय ॥ फिरि बरषे सुरपति सुखदान । भई शस्य तातैं अति

CC-0, In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० मान ॥ तातें भरे प्रजा अति हर्ष। यज्ञ कियो नृप द्वादश वर्ष ॥ * ॥ गन्धर्वउवाच ॥ * ॥ तपती सो रविसुता ललाम ॥ ताको भयो पुत्र कुरुनाम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तातें हम तुमकों कहो हे पारथ तापत्यातान विदित तुमकों कियो कथा पुरातन सत्य ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वास्तिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि तपती उपाख्यानवर्णनोनाम पञ्चचत्वारिंशोध्यायः ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनिकै गन्धर्वको वचन भरे आनन्द। लसे पार्थ छबिसों भरे ज्यों पुर्णको चन्द ॥
कहन लगे गन्धर्वसों यो पारथ मतिमान। चित्र भयो मुनि सुमुनिको तप बल चरित महान ॥
बंश पुरोहित पूर्व जे रहे हमारे इष्ट। विस्तरसह ताकी कहो कथा जो सुमुनि वशिष्ट ॥

॥ * ॥ गन्धर्वउवाच ॥ * ॥

ब्रह्माको सुत मानसिक भयो महा तपधाम। दम समसो जेहि वश करे जीति क्रोध अरु काम ॥
क्रूर करो अपराध अति जाको विश्वामित्र। कौशिक कुल नाशो नहो सम रवि सुमुनि सचित्र ॥
पुत्र शोकसों तप्त ह्वै तजो न समता पर्म्म। विश्वामित्र विनाशको दारुण कियो न कर्म्म ॥
मरेपुत्र यमलोकतें फेरि ल्याइबे हेत। कीन्हों यत्न न जानिकै गुणि मर्याद समेत ॥
जाहि पुरोहित करि कियो सकल भूमि वशरूप। इक्ष्वाकु बंशमे भए जे पूर्व महाबल भूप ॥
यज्ञ कराए नृपणकों नाना भांति अनेक। यथा बृहस्पति इन्द्रको पूरोहितस विवेक ॥
तातें कोऊ बेदविद धर्म्मशील द्विज जौन। भरो सुगुण तपनिष्ठ तुम करऊ पुरोहित तौन ॥
क्षत्री चाहत बृद्धि जो कीवे राज्य समृद्ध। करै पुरोहित बेदविद धर्म्मकर्म्म मे सिद्ध ॥
ऐसो द्विजवर देखिकै करहि पुरोहित आप। जातें दुख मिटि जाय सब सम्पति मिलै अमाप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ विश्वामित्र वशिष्ठ सुजान। कियो बैर केहि हेतु महान ॥ आश्रम वासी राजस हीन। बैर कियो केहि कारण पीन ॥ सो हमसों सब कहऊ बुझाय। हे गन्धर्व परम सुखदाय ॥ * ॥ गन्धर्व उवाच ॥ * ॥ यह वशिष्ठ उपाख्यान प्रसिद्ध। त्रिभुनमे सब भाखत वृद्ध ॥ कान्यकुब्ज जो देश महान। गाधि भूपहो तास सुजान ॥ कुशिक बंश भूषण अभिराम। विश्वामित्र तास सुत आम ॥ विश्वामित्र सबल नरनाह। मृगया हेतु गयो बनमाह ॥ मरु थलमे मारे मृग भूरि। क्षुधा त्रिषा श्रमसों अतिपूरि ॥ गो वशिष्ठके आश्रम भूप। मुनि पूजन कीन्हो बहुरूप ॥ दियो वन्य भोजन अभिराम। मधुफल कन्द सुमधुर ललाम ॥ कामधेनुसों कहो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बशिष्ठ। देऊ भक्ष्य सबकौं स्वादिष्ट॥ जाकौं भयो अभीप्सित जौंन। दयो नन्दिनी ताको तौंन॥ आ०प०
षट रस दीन्हे अमृत समान। भक्ष्य नन्दिनी अति सुखदान॥ रत्न वसन भूषण अभिराम। सबका
दिये यथा मनकाम॥ पीन जंघ मंडुकसम नैन। सुन्दरि पुछ शृङ्ग कविऐन॥ ग्रीव दृष्टिसु
आयत पुष्ट। देखि भयो भूपति सन्तुष्ट॥ देखि नन्दिनिहि विस्वामित्र। लगो सराहन भरो चरित्र॥
देखि नन्दिनिहि पूरित चैन। ऋषिसौं कहन लगो इमि वैन॥ *॥ विस्वामित्र उवाच॥ *॥
अर्बुद गाय घटोभी लेऊ। हे मुनि मोहि नन्दिनी देऊ॥ *॥ बसिष्ठउवाच॥ *॥ देव पितर
यज्ञारथ जौंन। नृपति अदेय नन्दिनी तौंन॥ *॥ विस्वामित्र उवाच॥ *॥ हौं क्षत्री सबविधि
बलवान। तुम द्विज लेत वेद पढि दान॥ तपकरि शान्त वृत्ति बल हीन। हौं भूपाल सकल विधि
पीन॥ नहि देहौ लै अर्बुद गाय। तौ लेहौं बरबश छोरवाय॥ *॥ बसिष्ठउवाच॥ *॥ जौ
तुम भूप प्रबल बरबीर। तौ लेइ जाऊ करऊ मतिधीर॥ *॥ गन्धर्बउवाच॥ *॥ विस्वामित्र
सुनत यह भूप। हरी नन्दिनी गाय अनूप॥ कसा दण्डसौं मारत घेरि। भजति नन्दिनी मुनि
दिशि हेरि॥ खडी भई मुनि सन्मुख जाय। हम्भा शब्द बोलि सो गाय॥ *॥बसिष्ठउवाच॥ *॥
तो रव सुनियत रुदन समान। हरत भूप यह प्रबल अयान॥ कहा नन्दिनी कीजै यत्न॥ क्षमा
त्यागत होत प्रयत्न॥ गौरुवाच॥ कसा दण्डसौं मारत मोहि। मुनि अनाथलौं देखत तोहि॥ *॥
॥ *॥ रोलाछन्द ॥ *॥

॥ *॥ गन्धर्बउवाच ॥ *॥ नन्दिनीको सुनत क्रन्दित लखत दंड प्रहार। धैर्यसो नहि
चले मुनिवर क्षमासिन्धु अपार॥ तेज बलबर होत क्षत्री क्षमा बल द्विज जौन। क्षमा मोहि न
तजति नन्दिनि रुचै कीजै तौन॥ *॥ नन्दिनी उवाच॥ *॥ कहा मोकौं तजतहौ मुनि कहत
ऐसे बैन। त्याग बिनु तव मोहि हरिबैं योग्य को बल ऐंन॥ *॥ बसिष्ठउवाच॥ तजत तुमकौं
नन्दिनी नहि रहऊ जौं बल गात। बत्स तो दृढ दामसौं नृपबाधि लीन्हे जात॥ रहऊ यह सुनि
बचन मुनिके भई रुद्र स्वरूप। अरुण चख करि ऊर्ध ग्रीबाँ कियो घनरव भूप॥ सैन विस्वामित्र
की बऊ शृङ्ग घात चलाय। क्रोध करिकै दौरि चऊदिशि दियो दूरि भजाय॥ क्रोध करिकै
पुछतैं अङ्गार बरषो भूरि। जरन लागी सकल सेना महा भयसौं पूरि॥ करे पैदा अङ्गते सब सबर
म्लेछ अनन्त। धरे आयुध कवच कार्मुक सुभट कारक अन्त॥ बीर नाना भाँतिके अति काय
बिबिध स्वरूप। लगे बिस्वामित्र सेना मारि मरदन भूप॥ एक एक सुभटन प्रति ते सप्त सप्त
प्रमान। हनन लागे घेरि चऊदिशि तैं अजेय महान॥ अस्त्रवर्षे भाँति नाना व्यथितव्है चतुरङ्ग।
चमू बिस्वामित्रकी चऊँ ओर भाजी भङ्ग॥ नहि मरे कोऊ म्लेछते रण रङ्ग राते बीर। भजी सेना
कौशिको अधमरी होय अधीर॥ चमू बिस्वामित्रकी गइ भाजि योजन तीनि। नहो रक्षण भयो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० कौशिक रहे देखत दीन ॥ नन्दिनी फिरि गई मुनि ढिग भजी सेना चाहि। देखिकै मुनि लगे लालन करण ताहि सराहि ॥ ब्रह्म तेज बिचारिकै अति चंड परम प्रशक्त। क्षात्र बलसों भए बिस्वामित्र देखि बिरक्त ॥ धिक्कार है यहि क्षात्र बलको ब्रह्मबल बल तौंन। महाबल सो होत है तपतेज सम्भव जौंन ॥ बिचारिकै यह ऋद्धि राज्यसमृद्धिकों सब त्यागि। भोग सो व्है बिमुख लागे करण तप अनुरागि ॥ लोक तपके तेजसों अति तप्त कीन्हे सर्ब। पियो सोम द्विजत्व लहिकै इन्द्र सङ्ग अखर्ब ॥ * ॥ गन्धर्व उबाच ॥ * ॥ इक्ष्वाकु बंशज भूपहो कल्माषपाद ललाम। गयो मृगया हेत बनमे हने मृग अभिराम॥ श्रांतव्हैकै चलो बनते सो अकेलो भूप। यजमान बिस्वामित्र ताकों कियो चहत अनूप ॥ संकीर्ण बन पथ गहे आवत तृषापीडित तौंन। बसिष्टको सुत लखो आवत शक्ति जेष्ठो जौंन॥ छोडि मेरो देऊ पथ यौं कहो भूपति ताहि। तजऊ मोपथ भूपसों इमि कहो मुनिसुत चाहि॥ कहत अैसें दुऊनसों बढि बाद गो अतिमान। हनो भूपति कसासों मुनि पुत्रकों बलवान॥ कसाको लहि घाव मुनिसुत भरो क्रोध उताप। दियो अैसें शाप ताकों भरो सुतप प्रताप ॥ होय राक्षस सदृश मोकों हनोहै तुम भूप। होऊ राक्षश मनुज भक्षक धरऊ अधम स्वरूप ॥ गच्छ राजा अधम व्है नरमाँस भक्षक लुब्ध। फिरऊ क्षितिपर कहो अैसें शक्ति मुनिसुत क्षुब्ध ॥ समुझि पछिलो बैर बिश्वामित्र गुप्त स्वरूप। तहाँ आए जहाँ कीन्हों कर्म्म अैसोभूप ॥ समुझि पुत्र बसिष्टको नृप शक्तिकों तपधाम। शरण चाहो गहनकों जब जानि अपनो काम ॥ पढै राक्षस दियो कौशिक मन्त्र बल तब छाय। कियो त्वरित प्रवेश नृपको देहमे तेहि आय ॥ बसो किङ्कर नाम राक्षस भूपके हिय बीच। गए बिश्वामित्र तब यह जानि करि छत नीच ॥ राक्षसान्तर बशेतैं कल्माष नृप मति मान। भयो पीडित चल्यो तह तैं नष्टव्है गो ज्ञान ॥ चलत बनतैं मिल्यो नपकों क्षुधा पीडित बिप्र। सहित आमिष अन्न मागो भूपसों तेह क्षिप्र ॥ कहो नृप कल्माष तासों रहऊ इत आसन्न। कछू क्षणमे आइकै हम तुम्हे देहैं अन्न ॥ इतै उत फिरि भूप सोयो भौन भीतर जाय। जागि आधी रातिमे इमि कहो सूद बोलाय॥ भक्ष्य मागो बिप्र मोसों बिपिनि ढिग तहँ जाय। सहित आमिष अन्न ताको देऊ पाक बनाय। यहि भाँति मुनिकै भूपसों करि सूद महत प्रयाश। नहो पावत कछू आमिष कहो नृपके पाश॥ कल्माष राक्षश स्ववश अैसें कहो तासों बैन। देऊ लै नरमांस जा कऊ और माँस मिलैंन॥ बद्ध नरको होत जँह बध सूद तेहाँ पाय। मांस मानुष ल्यायकै करि पक्व दीन्हा लाय ॥ दिव्य चक्षुसों जानि ब्राह्मण मनुज मांस अभक्ष। क्रोध करिकै कहो यातें होऊ भूपति रक्ष॥ शक्तिको हो शाप पहिलें भयो फिरि यह और। तीसरे हिय मध्य राक्षस भयो भूपति घोर॥ एकयोश बनमे फिरत बेखो शक्तिकौं अभिराम। कहो दीन्हौं शाप मोकौं लेऊ सो फल आम॥ तुम्हे यातें खातहौं अब जाऊ यमके गेह। पकरिकै तब शक्ति मुनिको कियो भक्षण देह॥ शक्तिको लखि मरण कौशिक कहो मो फिरि ताहि। बसिष्टके शत पुत्र भक्षण हेत बऊत सराहि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बशिष्टके शत पुत्र जैसे लियो तेहि नृप खाय। यथा मृगपति यायके मृगजूथ रहित सहाय॥ मुने आप
कौशिक हने शत सुत भरे शोक महान। यथा बाडव अग्निका हिय मध्य समुद अमान॥ कियो
अपने मरणको मुनिराज नियत बिचार। नही कौशिक नाशकौं हिय धरो क्रोध उदार॥ मेरुके
चढि शृङ्ग ऊपर गिरे मुनिबर जाय। परे जापर शिला सो भइ तूलसम सुखदाय॥ मरे नहि गिरि
शिखर तें तब कियो अग्नि प्रवेश। महा इन्धन वृद्धि ज्वाला भई शीतल भेश॥ बाँधिकै गुरु शिला
गरसा सिन्धु जलमे जाय। शोक पूरित गिरे मुनिबर मरण इछा छाय॥ दियो बाहेर काढि मुनिकौं
सिंधु लहरिन्ह नाम। खिन्न व्है कै गए मुनिबर फेरि आश्रम धाम॥ सुतन्ह बिनु सो देखि आश्रम
भरे शोक समूह। चले कढि फिरि गहन गिरि मे मरण कीन्हे उह॥ नदीवर्षा काल की लखि बढी
शरय तरङ्ग। गिरे यामे ताधि अपने पास सौं सवअङ्ग॥ तोरि सरितैं पास दीन्हो काढि सो तप
धाम। सो बिपासा नाम तबसौं लही अति अभिराम॥ शोक सौं भरि गहन गिरिमे फिरत मुनि
चऊँ ओर। भरी हिमजल नदी देखी याह पूरित घोर॥ गिरे तामे गिरतभाजी नदी शतधा होय।
है शतद्रू नाम ताकह कहत मुनि जन लोय॥ आपु कौं लखि परे थलमे नदीजल बिनु जानि। मानि
मरण अशक्य अपने चले मुनि तप खानि॥ गए नाना भाँति के गिरि गहनमे तपधाम। अदृश्यन्ती
शक्ति भार्या जाति अनु अभिराम॥ सुनो सहित षडङ्ग निखन बेद को सुखदान। पढत है इत कौन
बूझो सुमुनि शक्ति समान॥ करत को अनुगमन मेरे चलो आवत साथ। अदृश्यन्ती शक्तिभार्या
सुषा तो मुनिनाथ॥ बसिष्ठउबाच॥ पुत्रि को यह करत बेदाध्ययन धुनि अभिराम। शक्ति सौं यह
पुराश्रुति धुनि सुनत हे सुख धाम॥ अदृश्यन्ती उवाच॥ कुक्षिमे मो शक्तिको है गर्भ हे तप अैन
भयो द्वादश वर्षको सो करत बेदाध्ययन॥ गन्धर्वउवाच॥ सुनत व्है सन्तुष्ट मुनिबर फिरे आश्रम
ओर। कल्माषपाद सो रहो बैठो तहाँपथमे घोर॥ उठो भक्षण करनकौं सो महा मुनिकौं हेरि।
अदृश्यन्ती देखि ताकौं कहो मुनि मोढेरि॥ मृत्यु सो यह दण्ड लीन्हें महादारुण रूप। हनन
आवत हमै देखो तात मुनिबर भूप॥ कौन याहि निवारिवे हैं योग्य त्रिभुवन बीच। करऊ रक्षा
मोहि नातरु हनोचाहत नीच॥ बसिष्ठउबाच॥ * ॥ डरऊमति यह भूपहै कल्माष पाद सुजान।
भयो राक्षस शापतें यहिं बसत बिपिनि महान॥ * ॥ गन्धर्वउबाच॥ * ॥ ऊंकार सौं मुनि कियो
बारित देखि आवत ताहि। मंत्र पूत सुडरिकै जल कियो पावन वाहि। छूटि गो नृप
शाप सौं लहि बर्ष बारह अन्त। कौंन छूटत पाप सज्जन कृपा पाए सन्त॥ गयो ताके देह तें कढि महा
राक्षस घोर। भए भोर बिलोकि दिनकर भजत जैसें चोर॥ पाय संज्ञा भूप मुनि सौं कहे जैसे
बैन। दास हौं मैरावरे को शिष्यहैं तप अैन॥ होय जो तव इष्ट कहिए करों सो मै काज।
बसिष्ठउबाच॥ * ॥ कियो तुम सब जाय कै अब करऊ अपनो राज॥ नहि अनादर बिप्रको तुम
फेरिकी जो भूप॥ * ॥ राजोबाच॥ * ॥ नही ब्राह्मणको अनादर करों गो लखि रूप। कुठौं जै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० से पितर ऋणि सों चहत तुम सों तौंन । देऊ मोहि अपत्य यात कृपाकरि तप भौन॥तथास्तु कहि कै महा मुनि तब गए नृपके साथ। पुरी पावन कोशलाकौं कियो फेरि सनाथ ॥भए हर्षित प्रजा सिगरे लियो आगें जाय।भाग्य वस वऊ योसमे प्रभु सहित मुनिबर पाय ॥ भई हर्षित पुरी अति शय पाय कै पति भूप।यथा लहत सुरेशकों अमरावती अनुरूप॥पाय आज्ञा भूप महिषी पठै दीन्ही तौंन ।समय लहि कै महा मुनि पहँ पुत्र चाहति जौंन ॥सुमुनि तासों किए सङ्गम देइ गर्भ अनूप। बिदा व्है कै चले आश्रम आपने सुख रूप ॥ गर्भकों बऊ का लबीतो भयो प्रसव न अर्भ । अस्म ले कै भूप पत्नी तदा कूटो गर्भ ॥ भयो बीते वर्ष बारह पुत्र तब बलधाम। पार्थ यातें धरो अस्मक पुत्र को नृप नाम ॥* ॥ गन्धर्वउवाच ॥ *॥ अदृश्यन्ती पुत्र जन्मी जाय आश्रम माह । शक्ति कुलको वृद्धि कारक सुनऊ कुरुकुल नाह ॥ जात कर्म्म सु पौत्रको सब कियो मुनि भगवान । जात मुनि को प्राण राखो पौत्र व्है सुख दान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धरो परासर यातें नाम । मुनि वसिष्ट लहि आनद माम ॥ सो जानत मुनिबर कहँ तात । जन्म प्रभृति लखि कै अवदात ॥ तात कहत मुनिबर कह तौंन । लखेन पिता आपनो जौंन ॥ पिता अदृश्यन्ती ढिग ताहि । कहन लगो मुनिबर कहँ चाहि ॥ अदृश्यन्ती सुनिकै भरि नैंन । कहो परासर सों इमि बैंन ॥ भयो पिता तो इनते जात । राक्षस भखो तुम्हारो तात ॥ सुनि मुनि सुत करि क्रोध उदार । दहन लोक सब कियो बिचार ॥ तब वसिष्ट मुनि बारण तास । कीन्हो यह कहिकै इतिहास ॥ कृत बीर्य नामहो पूरब भूप । भृगु कुलको ह्वो शिष्य अनूप ॥ तेहि करि यज्ञ बऊत धन धान्य। गुरु कुलकों दीन्हो करि मान्य ॥ गयो स्वर्गको सो बर भूप । भए जे तेहि कुल पुत्र कुरूप ॥ तिनको भयो कछू धन काम । जानि वित्त बऊ गुरु कुल धाम ॥ लीबे हेत गए ते सर्ब । तिन काहूँ धन दीन्हो खर्ब ॥ काहूँ धरो भूमिमे गाडि । जानि छत्र भय धनमे बाडि॥ काहूँ दयो द्विजनको बित्त । तिनको दीबो जानि अहित्त ॥ खनत कढो गृहमे धन भूरि । क्षत्री देखि महा रिसि पूरि ॥ भृगु कुल जनको करि अपमान । तानि शरासन मारे बान ॥ मारे तिन्है गर्भ सो फारि । कीबे भृगु कुल नाश बिचारि ॥ भृगुकुल पत्नी गिरिमे भागि । बसी जाय अतिशय भय पागि ॥ एक सगर्भा भृगुकुल बाम । भरी महा तपतेज ललाम ॥ क्षत्रिणको भय भूरि बिचारि । राखो गर्भ उरूमे धारि ॥ तहां अन्यहो भृगु कुल बाल । देखि परम सो गर्भ बिसाल ॥ आता मरण के भय सों जाय । क्षत्रिण औंसो दियो बताय ॥ हनिबे गर्भ गए तहँ तौंन । लखो ब्राह्मणी तेजस भौंन ॥ कढो गर्भ सो ऊरू फारि । भरो क्रोध अतितेजस धारि ॥ भए अन्ध क्षत्री लखि ताहि । यथा उलूक भानुको चाहि ॥ बिना चक्षुते गिरिबन माह । गिरत फिरत कोउ गहत न बाँह ॥ शरण ब्राह्मणीके तेजाय । बिनती करन लगे शिर नाय ॥ तो प्रसाद ते चक्षु समेत । हम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

घर जात अधर्म अनेत ॥ कृपा सपुत्र करऊ तुम अम्ब। सापराध हम गत अवलम्ब ॥ *॥ ब्राह्मणी आ०प० उवाच ॥ * ॥ हम नहि कियो दृष्टि तव रोध । ऊरुज यह भार्गव अति क्रोध ॥ मारे यब तुम भृगुकुल जात । करण लगे यब गर्भ निपात ॥ हम यह गर्भ बर्ष शतमान। ऊरुमे धारो वर सम भान ॥ गर्भ मांह ये बेद अथर्ब । यहिके बदन बसे ते सर्ब ॥ पिता घातको बैर बिचारि । हनो चहत यह तुम्हे निहारि ॥ हरो और्बके तेजस नैन । भजऊ ताहि चाहत जौं चैन ॥ यह सुनि ते गे ऊरुज पास । लागे बिनय करण सम दास ॥ सुने बिनीत कृपानिधि बैंन । भए प्रसन्न लहे तिन नैन ॥ जनमे उरु भेदि अवदात । और्ब नाम याते बिख्यात ॥ सर्बलोकको नाश बिचार । और्ब कियो मनमाह उदार॥ चहो उरिन पितरनसौं होन । लोम नास करि तेजस भौंन ॥ तपते तपित कियो सब लोक । देब दनुज सब भए सशोक ॥ कियो अनन्दित पितरन्ह सर्ब । कुल बन्दन तिन लहो अथर्ब ॥ पितृलोक ते पितर सचैन।आइ कहन लागे इमि बैन ॥ * ॥ पितरऊचुः ॥ *॥ और्ब लहो तो तपस प्रभाव । धरऊ पुत्र अब कृपास्वभाव ॥ हम सब रहे अशनु न तात । क्षत्रिण सो जो लहो निपात ॥ बऊत दिवसलौं नर तनु धारि । लोकान्तरको बास बिचारि ॥ चाहि क्षात्रकर मरण निमित्त। एनित निकासो याते बित्त ॥ बैर हेत धन राखो तौन । हमै बित्तसो कारज कौंन ॥ हमपैं शकै मृत्यु नहि आय। तब हम सब यह रचो उपाय ॥ लहत आत्महा लोक न पर्म । क्षत्रिणसो जानो बध धर्म ॥ क्षत्री लोक दहऊ नहि तात। क्रोध करत तप तेज निपात ॥ ॥ * ॥ और्बउबाच ॥ * ॥ कियो क्रोध बस हम पन जौंन । लोकनाशको अनृत न तौंन ॥ होत जान कारण लहि क्रोध । वाको करत मनुज ये रोध ॥ कहत त्रिबर्ग सुमतिजन जौंन। करि न शकत ते रक्षण तौंन ॥ पालन शिष्ट दुष्टको नाश। करिबो नृपको धर्म प्रकाश ॥ *******

॥ * ॥ गीतीछन्द ॥ * ॥

हम गर्भमे सब सुनो माता रुदन सहित बिलाप । यब आय मारो तात मेरो कियो क्षत्रिण पाप ॥ सहगर्भ भृगु कुल नाश कीन्हों क्षुद्र क्षत्रिण आय । अति क्रोध आय प्रबेश तबही कियो मेरे काय ॥ लै गर्भमे मोहि पिता माता गए चऊदिशि भागि । नहि शरण तिनकौं दयो काहूँ देखि करुणा पागि ॥ यब पापको प्रतिषेधकर्त्ता होय प्रबल महान । तब पापकौं नहि करै कोउ लोकमे मतिमान ॥ जहँ पापको प्रतिषेधकरता होत है नहि तात । तह लोकमे सब बढत है अति पापको उतपात ॥ जो जानिकै प्रभु पापको नहि करत है प्रतिकार । सो पाप ताकौं लगत है यह कहत सुमति उदार ॥ नहि कियो रक्षित पितर मेरे भूप ये बलबान । हौं कियो चाहत भस्म यात लोककों अतिमान ॥ यह बचन करिबे रावरेको होत हों न समर्थ । हमलोक ईश्वर लगत याते हमै पाप अनर्थ ॥ मम क्रोधसम्भव अगि चाहत दहे लोक अमान । सो किए ते संहार करि है

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० मोहि भस्म महान॥ हम जानि लीन्हो लोककी हित कामना तब जाँन।तुम कहऊ जामे लोककौ
मम श्रेय कारक तौंन॥ पितरऊचुः॥ है क्रोध जन्य यो अग्नि चाहत दहन लोक अखर्ब।सो छोडि
दीजै सलिलमे जो सृष्टि कारक सर्ब ॥ हैं सलिल भवरस सकल करता जगतकौं है आप। तुम
तजऊ तामै सिन्धुमे जो सहै क्रोध प्रताप॥ यह क्रोधजाग्नि सु दहै गो जल लोकमय अभिराम।
तब होयगो पन सत्य थारो सुनऊ हे तपधाम॥ नहि लोक सह सुर भस्म ह्वहै सहित जनपद सर्ब॥
बशिष्टउवाच॥ तब और्ब डारत सिन्धुमे भो क्रोध अनल अखर्ब॥ सो अग्नि बडवावदन व्हैके लगो
शेषण वार। तुम हे परासर करऊ मति अब लोक दहन विचार॥ *॥ गन्धर्बउवाच॥ *॥ यह
सुनत वचन बशिष्ठके तजि क्रोध दीन्हे तज्ञ।सह मुनिपरासर बेदबिद बर करण लागे यज्ञ॥*॥

॥*॥ रोलाछन्द॥*॥

सकल राक्षस भस्म कारक करत सत्र सुजान। शक्तिको बध समुझि जारे बाल बृद्ध महान॥
बशिष्ट मुनि नहि ताहि बरजो रक्षवध अनुमानि।है प्रतिज्ञा दूसरी यह तजै गो नहि जानि॥अग्नि
त्रयमधि सत्रमे इमि लसत मुनि अभिराम। मूर्तिमत है अग्नि चौथो महा तेजस धाम॥ अन्य तँ
यह सत्र दुस्कर कहत मुनि हि सराहि। अत्रि सहित पुलस्ति तेहाँ गे समापन चाहि॥ सत्रसौं
सब राक्षसनको बंश रक्षण चाहि। परम सत्र स्थानमे सुपुलस्त्य बूझो ताहि॥ अजान जौन अदोष
राक्षस बधे तिनकौं क्षिप्र। नाश मेरी प्रजाको हो योग्य तुम हि न बिप्र॥ धर्म्म है द्विजको न यह
तजि सम परासर कर्म्म। कियो जौन अधर्म्म यह बश क्रोधके मुनि पर्म्म॥धर्म्मज्ञ शक्ति हि चहतका
व्यतिक्रमन कोवो क्षिप्र। प्रजा मेरी नाशिवो नहि योग्य तुमकौं बिप्र॥ स दोष मारो शक्तिकौं हो
शापसौं जो जन्य। नही हिंसा कियो काहूँ आय राक्षस अन्य॥नहिशक्ति राक्षस भक्ष्य करिवे योग्य
हे तप धाम। भए विस्वामित्र बिप्र निमित्त मात्रक माम॥ वास पायो स्वर्गमे कल्माषपाद सु भूप
शक्ति सह सब पुत्र मुनिके सुरण सङ्ग सुखरूप॥ *॥ गन्धर्ब उवाच॥ *॥ पुलस्त्य सहित वशिष्ठ
ऐसँ कहो तासौं बैन। कियो सत्र समाप्ति तबही शक्ति सुत तपअैन॥ सर्ब राक्षस सत्रको जो रहो
पावक दृढ। हिमाद्रिके सो जाय उत्तर पार्श्व राखो कृढ॥ वृत्त राक्षस अस्त्र अवहू करत भक्षण
तौंन। देखि परत सो पर्व पर्वनमाह तेजसभौंन॥ *॥ अर्जुन उवाच॥ *॥ कल्माषपाद सु कौन
कारणसौं स्वभार्य्या जौंन। दियो सुमुनि बशिष्ठ तामे कियो कैसँ गौंन॥ क्यौं अगम्या गमन कीन्हो
धर्मधर मुनि होय। शिष्यपत्नी जानिकै यह कहऊ कारण जोय॥ *॥ गन्धर्ब उवाच॥ *॥
कहो पूरब वृत्त सब अब कहत बूझत जौंन। सुनऊ सो एकाग्रमन करि पार्थ बरबल भौंन॥ शाप
बस व्है भूप बनमे सहित भार्य्या जाय। फिरण लागो भयो व्याकुल क्षुत्पिपासा पाय॥ तहाँ देखो
बिप्र मैथुन करत पत्नी संग। देखि भाजो भूपको सो छोडि कै रतिरङ्ग॥ पकरि लीन्हों बिप्रकों नृप
दौरि कै बलवान। ब्राह्मणी लखि कहन लागी भयाक्रांत महान॥ कहति हौं सो सुनऊ भूपति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कृपाकरि मो बात। सूर्यबंश सप्रभव तुमहो लोकमे विख्यात॥ धर्मरत व्है शापवश यह करऊ आपु आ०प०
न पाप। ऋतुसमयमे पति मरणको मति देऊ मोहि उताप॥ नहि भयो मेरो अर्थ नहि सुत हेतु
कीन्हो जौंन। कृपा करि कै छोडिए मो गहो भर्त्ता तौंन॥ यहि भाँति करति बिलाप ताके लियो
भर्तहि खाय। क्रोधमय जहँ अम्बु ताको परो क्षिति पर आय॥ वरण लागी अग्नि तहँ भरि
ब्राह्मणी सन्ताप। कल्माषपाद महीपकौं इमि दियो दारूण शाप॥ निज भार्य्या पहँ जाऊगे ऋतु
समयमे जब भूप। होयगो तव मरण मेरे शापके अनुरूप॥ जौन सुमुति वशिष्ठके तुम लिए सुत
सब खाय। भारया तो पुत्र लहिहै तास संगम पाय॥ सो पुत्र कहै बंशकर तो अरे अधम नरेश।
अंगिरस कन्या ब्राह्मणी कहि कियो अग्नि प्रवेश॥ शापसौं नृप सुक्त भार्यापे गयो ऋतु जानि।
शाप कहि तेहि कियो वारण प्रिया पति सुखदानि॥ वशिष्ठ तपतैं ज्ञानतैं सब जानिकै वृत्तान्त।
तास भार्य्या गमन कीन्हों प्रजा हेतु नितान्त॥ प्रजाहेतु विचारि भूपति जानि शाप महान। दियो
मुनिके संग पत्नी आपनी सुखदान॥ पार्थ सुनि वृतान्त यह गन्धर्वको हित हेरि। विप्र पौरोहित्य
लायक लगे बूझन फेरि॥ ❀❀❀

आ०प० बात ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ जान हम पाञ्चाल पुरकौं तहाँ उत्सव भूरि । है स्वयम्बर द्रौपदीको करत नृप मुद पूरि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यज्ञागिनि तें भई ललाम । तेजस भरी रूपकी धाम ॥ धृष्टद्युम्नकी भगिनी तौंन । अग्नि कुण्डते प्रगटे जौंन ॥ खड्ग कवच धनु धरें ललाम । द्रोण शत्रु अति बलको धाम ॥ राजा राज पुञ्ज बल भान । सहित समाज गए तहँ तौंन ॥ गए बेदबिद ब्राह्मण सर्ब । गए महामुनि तपस अखर्ब ॥ गए तरुण सुन्दर नर जौंर । बेत्ता अस्त्र महारथ तौंन ॥ ते तहँ बिजय हेतु छिति पालगो सुबर्ण मणि देत बिशाल ॥ तहाँ लेइ धन मणि अभिराम । उत्सव देखि जाहिगे धाम ॥ देव सदृश तुम सुन्दर सर्ब । लक्षण मण्डित अङ्ग अखर्ब ॥ कृष्णा तुमसे तें कोउ एक । देखि बरै गो भरी बिबेक ॥ यह भ्राता सब तें श्रीमान । महाबाऊ तन मुदिर समान ॥ बिजय योग्य दरशत सब भाँति । भरो सकल लक्षण युत काँति ॥ * ॥ युधिष्टिरउवाच ॥ * ॥ चाहत भोजन अन्न सुधर्म्म । देखो चहत स्वयम्बर पर्म्म ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यह कहि चले सुपाण्डव नन्द । लखत देश पाञ्चाल अमन्द ॥ पथमे मिले महामुनि व्यास ॥ देखत पाण्डव लहो हुलास ॥ पूजन कीन्हें यथा प्रकार । लहो महामुनिसों सत्कार ॥ कथा कहतभे आज्ञा पाय । गए द्रुपद पुरकौं सुखदाय ॥ बन सरबाग लखत रमणीय । गए द्रुपदपुरकों कमणीय ॥ शनैः शनैः तँह करिकै बास । कुन्ती लहै न पथा प्रयास ॥ लखो नगर लखि सेना स्थान । कुम्भकार घर बसे सुजान ॥ ब्रह्मवृत्तिसों भिक्षा न्याय । निशिमे भोजन कियो बनाय ॥ कोऊ जानत भए तिन्हैं न । पैर रहे तकि गुनि बल अैन ॥ भूप द्रुपदके यह मनकाम । देउ अर्जुन हि सुता ललाम ॥ ढूढन हेत पार्थको बीर । करो अनन्य धनुष गँभीर ॥ अन्तरिक्षमे बिरचो यंत्र । मध्य छिद्र अति भ्रमत स्वतंत्र ॥ ताके ऊपर बिरचो लक्ष । छिद्र मध्य शरसाधि समक्ष ॥ लक्षबेध जो करिहै बीर । सोई पारथ धनुधर धीर ॥ और भूपको होय न काम । यह करि है अर्जुन बलधाम ॥ * ॥ द्रुपद उबाच ॥ * ॥ यह धनुकरै सज्य जो बीर । बेधै लक्ष धनुर्द्धर धीर ॥ ताहि बरै कृष्णा कबि भान । अैसो कर्म करै गो जौंन ॥ * ॥ बैशंपायनउबाच ॥ * ॥ द्रुपद दियो यह बचन सुनाय । उच्च बोलि कै सत्य स्वभाय ॥ यह सुनि तहँ आए बर भूप । कर्ण सुजोधनादि अतिरूप ॥ ब्राह्मण मुनि तपस्या धाम । बैठे मञ्चनपर अभिराम ॥ आए पुरजन भरे उमङ्ग । पुर ईशान रचो जहँ रङ्ग ॥ चित्र बिचित्र रचे तहँ मञ्च । मणिन जडित युत सुषमा सञ्च ॥ चऊँदिशि सौध सुधासे सुद्ध । लसत रजत गिरिसे अति उद्ध ॥ पुष्प माल सों बेष्टित सर्ब । चन्दन सिञ्चित भूमि अखर्ब ॥ मणि तोरण सोहत चऊँ पास । रजत रचित चवर छबिरास ॥ कनक जाल मण्डित चऊमान । धूप धूम घन घेर समान ॥ कहलो कहै रङ्ग कबि जौंन । थकति गिरा बरणत सब तौंन ॥ असम्बाध

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मत द्वार लखाम । रचित मणिनसों अति अभिराम ॥ तहाँ आय मज्जनपर भूप । बैठे करि आ०प० मंडन अनुरूप ॥ विप्रवृन्दमे पांडव आय । बैठे ब्राह्मण वेश बनाय ॥ जब आए चऊँदिशिके भूप । भरे भूरि बलरूप अनूप ॥ दिवस सोरहें जुरो समाज । विहित मुहूर्त सुमङ्गल काज ॥ तब कृष्णाको करि शृङ्गार । रङ्ग सखी बर बिप्र उदार ॥ कनकमाल दै कै अभिराम । ल्याए रङ्ग मध्य छविधाम ॥ सोमककुलप्रोहित तप बृद्ध । कियो तहाँ तेहि होम समृद्ध ॥ विप्र पढन लागे सखैंन । पाय दक्षिणा पूरित चैंन ॥ वारण कियो बाद्य तब भूप । भयो रङ्ग निस्वन अनुरूप ॥ धृष्टद्युम्न महाबल ऐंन । रङ्ग मध्य इमि बोलो बैंन ॥ सकल भूप यह सुनऊ प्रमाण । है यह धनुष लक्ष यह बाण ॥ यंत्र रंध्रमे व्है शर बाण । काढि लक्ष बेधैं अतिमाण ॥ करै कुलीन कर्म यह जौंन । बरै ताहि कृष्णा छवि भौंन ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि भूपनसों कहि वचन धृष्टद्युम्न बलधाम । फेरि द्रौपदीसों कहो नीति निपुण अभिराम ॥
आए सब क्षितिपाल ए रहे धरापर जौंन । लक्ष बेधकों जो करै कुलप्रसूत बलभौंन ॥
ताहि बरऊ तुम द्रौपदी राज समामे अद्य । करऊ प्रतिज्ञा तातको सत्य शुभे अनवद्य ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भरे ईरषा परसपर ते सिगरे क्षितिपाल । उठे अलंकृत सबलको धार गर्व विशाल ॥
रूप बल कुल शील यौवनके भरे मदराग । धरे मनसिजवेग जैसे मत्त हिमगिरि नाग ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

द्रौपदीकों वरहि गे हम महाबल बरवीर । कहत ऐसें उठे सिगरे भूप बृद अधीर ॥ चहत जीतो द्रौपदीकौं भूप सिगरे तौंन । काम प्रेरित मञ्च तजि कियो रङ्ग क्षितिपर गौंन ॥ तहां बैठि विमानपर सुर असुरगण गन्धर्व । यक्ष किन्नर अप्सरन सह लखत आय अखर्व ॥ रहे यदुकुल बीर देखत उठे नहि अभिराम । पाय मत श्रीकृष्णको अति परम आनदधाम ॥ श्रीकृष्ण देखो जहां बैठे रहे पाण्डव बीर । रामसों कहि दियो तिनहि देखाय पुलकित धीर ॥ भए मन्मथ व्यथित सिगरे भूप अति बलधाम । बसी तिनके हृदयमे एक मूर्त्ति कृष्णा वाम ॥ बजत नाना दुन्दुभी भरि गयो गगण विराम । भयो सकुल गगणमे अति फिरत बिमल विमान । बेणु बीणा पणव बाजत मुरज अति सुखदान ॥ भूपगण तब चलि धनुष धरि करि पराक्रम भूरि । गए फिरि टुचैं धनादिक अति परिश्रम पूरि ॥ अङ्ग बङ्ग कलिङ्गके नृप द्रोणसुत सह कर्ण । पौंड्रपति जब नाधिपो सब भए हारि बिवर्ण ॥ धरे मण्डन भरे मनमथ करैं भुज बल गर्व । धनुष सज्जन भयो सिगरे हारि व्हैं गे खर्व ॥ महाधनुष कठोरसा नृप गए मनमे हारि । चलत एक न करत कल बल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० बरुत भांति विचारि ॥ करत हा हा शब्द नृप मन करैं कृष्णाओर। गई आशा टूटि सिगरी भरे श्रमसो घोर ॥ देखि सब एहिभांति नृप उठि कर्ण धीर महान। धनुषकों करि सज्ज गुणसो किए योजित बाण ॥ लक्ष्य वेधित करै गो यह जानि पाण्डव बोर । ध्यान धरि श्रीकृष्णको मनमाह धारो धीर॥ देखि कै तब द्रौपदी इमि टेरि बोली बैन। सूतसुतको बरौंगी नहि योग्य मेरे है न ॥ सामर्थ हसि लखि सूर्य्यकौं तब भए कर्ण निवृत्त। चेदिपति शिशुपाल भो तब धनुष हेतु प्रवृत्त ॥ धनु उठावत महाश्रम करि गिरो क्षितिपर जाय। जरासिन्धु सु महाबल तब उठो अति रिसि छाय॥ धनु उठावत पाय कै श्रम गिरो भूपर तौंन। गिरे क्षितिपर धनु उठावत शल्य भूपति जौन॥ भए संभ्रम भूप सिगरे गयो मिटि उतसाह । हारि मनमे भए लज्जित सुनऊ कुरु कुलनाह ॥ भए भूप निवृत्त जब तब महाबलको धाम। उठे पारथ बिप्र गणके मध्यतैं अभिराम ॥ लगे ऐसैं कहन ब्राह्मण देखि धनुढिग जात । पार्थकौं ह्वै बिमन कोऊ कोऊ पुलकित गात ॥ कर्ण शल्य प्रभृति नृपसौं नयो नहि धनु जौंन। शक्य होत नवाइबेकौं ताहि द्विजकुल कौंन ॥ हँसे ब्राह्मण जाँहि गे यह कार्य्य होत असिद्धि। राजगणमे कही जैहे चपलताई कद्धि ॥ दर्पसों कि अदपसों कै चपलतासौं बिप्र। जात धनुष नवाइबेकों साधु वारण क्षिप्र ॥ * ॥ अन्यब्राह्मणाउचुः ॥ * ॥ हास्य लाघव होयगो नहि भूपगणसौं द्वेष। जानिए नहि कौन हैं यह धरे द्विजबर वेश ॥ युवा अति भीमभुजा दण्डसे दोर्दण्ड । पीन कन्धर उर सुगिरि सम धैर्य्यमान प्रचण्ड ॥ सिंहगति उत्साहसो यह जात है बर बीर । सिद्धि करि है कार्य्य यह उत्साह कारण धीर॥ कौन कार्य्य असाध्य है द्विजबरणसों अभिराम । महाबलसौं भरे देखत करैं तप व्रत धाम॥ परशुराम निक्षत्र क्षिति किय पियो सिन्धु अगस्त्य । सज्य करि है धनुषकों यह बिप्र याते सत्य ॥ सुनत ऐसैं द्विजनके बज्र भांतिके बर बैंन । जाय धनुढिग भए ठाढे पार्थ अतिबलऐंन ॥ करि प्रदक्षिण धनुषकों धरि कृष्णको हिय ध्यान। लियो धनुष उठाय जोरे सगुण करि कै बान । कियो जो नहि सज्य काहूँ भूप करि बल यत्न। लियो पार्थ उठाय धनु सो कियो कछु न प्रयत्न॥ साधि कै शरपांच बेधो लक्ष बिधिसों तौंन। कहो धृष्टद्युम्न पहिले वेध बिधिसौं जौंन ॥ गिरत क्षितिपर लक्ष बाढो जयति शब्द अमन्द । लगे बरषण सुमन सुरगण भरे द्रुपद अनन्द ॥ करैं हाहाकार भूपन्ह शब्द मानि अमर्ष। बाद्य लागे बजन नानाभांति पूरित हर्ष॥ सूत बन्दी सहित मागध करत गुणिगण गान। भरो राजा द्रुपद तिनकों देखि प्रीति महान॥ सहाय कीवैं पार्थको नृप चहो सहित समाज। गए माद्रीसुतन सहित निवासकों कुरुराज ॥ देखि बेधो लक्ष कृष्णे महा आनद पाय। काञ्चनी जयमाल दीन्हो पार्थकों पहिराय॥ रङ्गमे तेहि जीति पारथ बन्दि द्विजबर पाय। चले कृष्णा सहित कुन्ती जहा तँह सुखदाय॥ दई कन्या बिप्रकों यह देखिकै सब भूप। अन्योन्य लागे लखन इतउत कोप करि अनुरूप॥ निदरि कै सब नृपतिगणकों सदृश तृण अनुमानी। दियो चाहत बिप्रकों यह द्रौपदी गुणखानि ॥ रोपि कै फिरि वृक्ष काढत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लगत फल अभिराम। तथा हम हि बोलाय कीन्हो द्रुपद अनुचित काम॥ बिप्रको अधिकार है आ०प०
नहि इहां सुनऊ प्रसिद्ध। वरत क्षत्री स्वयम्बरमे भूप कन्याहट्ट॥ जौन कन्या बरै काहू भूपको
गुणमान। डारि ताकों अग्निमे सब चलो नृपति सुजान॥ विप्र जौं चापल्यसों यह करै कोऊ कर्म्म।
नाहि मारत नही क्षत्री जानि कुलको धर्म्म॥ फिरि स्वयम्बरमे न ऐसो करै कोऊ भूप॥ हनऊ
यातें द्रुपदकों यहि कर्म्मके अनुरूप॥ मारिबेकों द्रुपदकों नृप चले आयुध धारि। पाञ्चालपति
द्विज शरण लीन्हों भाजि अभय विचारि॥ चले आवत धरैं आयुध भूप वृन्द सुक्रुद्ध। भीम पारथ
फिरे सोई धनुष धारे उद्ध॥ भीम वृक्ष उखारि कै करि कालदण्ड समान। भए ठाढे समरकों
फिरि भरे क्रोध महान॥ भीमको लखि कर्म अर्जुन भयो निर्भय वीर। विजय धनु धरि भए ठाढे
युद्धकों फिरि धीर॥ देखि कै श्रीकृष्ण हलधरसों कहो इमि बैन। महाधनु जो धरे अर्जुन नियत
सो बल ऐन॥ वृक्ष जौन उखारि लीन्हे खरो है बलधाम। शत्रुहन्ता भीम सो यह और को नहि
काम॥ जाहि देखो रङ्गमे अति प्रांशु कनक समान। पङ्कजाक्ष प्रलम्ब भुज सोइ धर्मपुत्र सुजान॥
समरूप दोय कुमार देखो रङ्गमे तुम जौन। मद्रजाके तनय ते हैं महाबल मतिभौंत॥ कहन यों
बलभद्र लागे कृष्णसों सुख पूरि। बची कून्ती सुतन सह यह आजु भो दुख दूरि॥ लै कमंडलु
अजिन ठाढे भए द्विज वर सर्वाकरऊ भौति न पार्थसों कहि कहा ए नृप खर्व॥ कहो पारथ विहँसि
कै तुम लखऊ सब वर विप्र। दूरि ठाढे इन्हे बाणन्ह मारि जीतत क्षिप्र॥ कर्णादि आवत देखि
क्षत्रिण भरे क्रोध गँभीर। चले धनु धरि युद्धकों कुरुवंश भूषण वीर॥ बध्य है द्विज युद्धमे इमि
बोलि भूपति बैंन। धरैं आयुध चले सहसा करैं राते नैन॥ कर्ण अर्जुन भिरे दोऊ भरे बल उद्धत्त।
यथा करिणी एक पैं गज दोय अति मदमत्त॥ भीम पै नृप शल्य आयो भरो गर्व महान। करण
लागे धीर दोऊ मल्ल युद्ध समान॥ दुर्योधनादिक भूप सब द्विज वृन्दके ढिग जाय। करण लागे
युद्ध तिनसों धरे मृदुल स्वभाय॥ ❀◠❀◠❀◠

आ०प० ब्रह्म तेजका जानि अजेय।गयो छोडि कै रण राधेय॥लरे भीम नृपशल्यसुक्रुद्ध। जैसैं मत्त महागज उद्ध ॥ मल्लयुद्धमहँ मुष्टि प्रहार। करत बीर बल भरे उदार ॥ नाना दाव करत बरवीर।भीमसेन करि क्रोध गम्भीर ॥ शल्य भूपकहँ क्षितिपर डारि। छोडि दियो करि स्ववश पछारि॥ हँसे बिप्र बर आनद पाय । गए शल्य उठि बहुत लजाय ॥ शल्य कर्णकी हारि निहारि । भे संकित सब भूप बिचारि ॥ द्रोण राम बिनु अर्जुन जौंन । असकर्ण कहँ जीतै कौंन ॥ बिना भीम बलदेव महान। जीतै कौंन शल्यकौं आन ॥ तजहु बिप्रगणसौं अब युद्ध । रक्ष्यसदां ब्राह्मण हैं शुद्ध ॥ यह कहि फिरे युद्धतैं भूप । गए करैं सब लज्जितरूप॥ तिनके ए सुनि बचन गँभीर। चुपव्है रहे खडे कुरुबीर॥ ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ भीमार्जुनके कर्म बिचारि । कुन्तीसुत मनमे निरधारि ॥ कृष्ण निवारे ते सब भूप। कहि कै बचन नीति अनुरूप ॥ जीते ब्राह्मण रङ्ग महान। कहन लगे इमि सकल सुजान ॥ कृष्णा द्रुपद सुता छबिधाम । ब्राह्मण बरो जीति अभिराम ॥ कृष्णाजिन धारी द्विजभोर। तातैं चले निकसि कुरुबीर ॥ मनमे कुन्ती कियो बिचार । आए पुत्रन भई अबार ॥ हनै नही दुर्योधन दुष्ट । जानि इन्है करि यत्न दुरुष्ट ॥ बीति गयो भिक्षाको काल। आए नहि मो पुत्र बिशाल॥ नियत व्यासको बचन महान । भो विपिरीति कहा अतिमान॥ चिन्ता करति प्रथा इमि भूरि। रहो गगण घनसौं अति पूरि॥ भए परान्ह गए बल सीम। सहित द्रौपदी अर्जुन भीम॥ जेहि कुलालके रही अगार । शोचति कुन्ती अम्ब उदार ॥ भार्गबशालाके ढिग जाय। भीमार्जुन बाले सुखदाय॥ कहो अंब हम भिक्षापर्म।ल्याए हैं सो लेहु सधर्म॥ कुटी मध्यतैं कुन्ती बैन। लखे बिना बोली भरि चैन॥ भोजन करहु पुत्र तुमसर्ब। लखो कुटीतैं निकसि अखर्ब॥ कृष्णा सहित देखि अभिराम। भीमार्जुन ठाढे बलधाम॥ संशय भरी प्रथा अतिऐन। बिनु बिचार हौं बोली बैन॥ धर्मनीतिसौं भरी महान। गहि कर कृष्णाको सुखदान॥ भूप युधिष्टिरके ढिग जाय। कहे बचन चिन्तासौं छाय ॥ * ॥ कुत्युवाच ॥ * ॥ पुत्र सकल तुम जानत धर्म । कहहु बिचारि उचित जो पर्म ॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रङ्गमे यह जीति कन्या द्रुपदको अभिराम। भैक्ष्य मोसौं कहो अबिदित अनुज तो बलधाम॥ कहे मै तुम करहु भोजन सहित भ्राता सर्ब। बचन मेरो होत मिथ्या नही पुत्र अखर्ब ॥ पांचाल [illegible] सुताकों नहि लगै आय अधर्म। करहु तैसैं पुत्र धर्म बिचारि कै अति पर्म॥ * ॥ बैशम्पायन [illegible] ॥ * ॥ धर्मराज सु प्रथाके सुनि बचन क्षणक बिचारि। कहन लागे पार्थसौं इमि बैन नीति [illegible] नीति ल्याए द्रौपदीकौं तुम हि सोहति बीर। अग्नि साक्षिक करहु याको पाणि ग्रहण [illegible] उवाच ॥ * ॥ अधर्म भाजन मोहि करहु न बिहित नहि यह धर्म। प्रथम करहु [illegible] हमहि क्रमतैं पर्म ॥ भीमादि चारो बन्धु हम अरु यह सु कृष्णा जौंन।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अनुगहैं नृप रावरेके उचित कीजै तौन ॥ पांचालको हित होत जामें नष्ट होय न धर्म। रावरेके आ०प०
वश्यहैं हम उचित कीजै पर्म ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ धर्मनृप सुनि जिष्णुके सह बचन
भक्ति सनेह। द्रौपदीकौं रहे लखि तव भूप सुधरम गेह ॥ द्रौपदीकौं लगे देखन सकल पांडव
बीर । लखति सबकौं द्रुपदजा बसि हृदय माह गँभीर ॥ द्रौपदीकौं लखत सबको मथो मन्मथ
चित्त। धर्म भूपति लयो सबको जानि मानस वृत्त ॥ स्मरण करिकै व्यासमुनिको बचन परम
प्रमान। परस्परके द्वेषतैं डरि कह्यो इमि मतिमान ॥ होय सबकी भारया यह द्रौपदी छबिधाम।
प्रथा व्यासमुनीन्द्रकोहै बचन सत्य ललाम ॥ बचन भ्राता जेष्ठको सुनि सकल पांडववीरासोई अर्थ
हियमे धारिके भरिरहे मोद गँभीर ॥ तहां सह बलदेव आए कृष्ण करुणाधाम।रहे अबिदित
तहा पांडव प्रथा सहित ललाम ॥ लखो भ्रातन मध्य बैठो धर्म नृपति सुजान । पंच पावक सदृश
हरि अति भरे मोद महान ॥ चरण गहि कुरुनाथके कहि बासुदेव स्वनाम । प्रथाके फिरि पाय
बंदे कृष्ण सह बलराम ॥ कहो बूझि सुकुशल हरिसौं यो युधिष्ठिर भूप। हमै जानो कौंन बिधि
इत रहत अबिदित रूप ॥ बासुदेव सुबिहसि ऐसैं कहो तिनसो बैन। बिना पांडव करैं ऐसे कर्म
को बल ऐन ॥ बचे लाक्षा भौनतैं तुम भाग्यबस बरबीर। भयो नहि धृतराष्ट्रसुत को पाप काम
गँभीर ॥ हमै आए इतै लेहैं जानि तुमकौं भूप। रहो जबलों इतै तबलो किएँ गुप्तस्वरूप॥ लेइ
आज्ञा पांडवनसौं कृष्ण सह बलबीर । गए बासस्थानकौं तुर किए गुप्त शरीर ॥ गुप्त व्हैकै तहां
आयो धृष्टद्युम्न अनन्य। लोनहोय कुलालगृह मे रहो बैठि सुधन्य ॥ भीमादिपांडव जाय ल्याए
मागि भिक्षा पर्म। धरो आगैं धर्मनृपके नीति निर्मित कर्म ॥ प्रथा ऐसे द्रौपदीसौं कहो बचन
प्रसन्न। लेऊ यह बलि करऊ देऊ जो दीन चाहत अन्न॥ शेषको द्वै भाग करिकै एक भीमहि देऊ।
एकमे षटभागकरि हम सहित तुमसब लेऊ ॥ प्रसन्न व्हैकै द्रौपदी सब कियोबचन प्रमान। कियो
सहपरिवार भोजन प्रथा अति सुखदान ॥ सह देव तब कुश ल्याय क्षितिपर दियो सेज बिछाय।
अजिन तापर डारि पांडव तहाँ सोए जाय ॥ शीसकी दिशि प्रथा कृष्णा रही पाइन ओर। मध्यमे
करि धर्मकौं भीमादि दोनो ओर॥ खेद कृष्णा नही मनमे लही नहि अपमान।लगेबार्त्ता करन
पाण्डव धरैं बीरबिधान ॥ व्यूहरचना अस्त्रकी अरु शस्त्रकी अभिराम । रथनकी अरु हथनकी
अरु गजनको बलधाम ॥ युद्ध नाना भाँतिके अति उदु बेद प्रमान । कही विधिवत गरजि घन से
बीरबर बलवान ॥ देखिकै आचार तिनको श्रवण करि बर बैन । देखि कृष्णहि भए धृष्टद्युम्न
पूरित चैन ॥ जायकै नृप द्रुपदसों सब कहो बिधिवत तौन। देखि सुनि गे पाण्डवनको चरित
चर्चा जौन ॥ देखि करत प्रलाप नृपकौं हरो द्वन्द्व अमन्द । बरषिकै घन करत जैसैं दूरि चातक
दन्द ॥ युवा यो रक्ताक्ष कृष्णाजिनी देव स्वरूप। सज्ज करि धनु लक्ष्य बेधो यथाबिधि जेहि भूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० गहे कृष्णाअजिन जाको गई सह अभिराम। सघन घन सो महा भुज बरबीर बलको धाम॥ कनक वर्ण सुमत्त गजसों दूसरो हो जौंन। देखि आवत युद्धकौं नृप क्रुद्ध व्है बलभौंन॥ महा वृक्ष उखारि कै जेहि हने भूप विशाल। जोतिकै ते गए दोऊ समरसिंह कराल॥ अग्नि अर्चि समान भार्गव कर्म्म आला माह। रही बैठी जननितिनकी जानिए नरनाह॥ बन्दि ताके चरण तिन तब कहो कृष्णा पास। बन्दिवेकौं चरण बन्दे द्रौपदी छबिरास॥ रहे बैठे तासढिग सम अग्नि नरबर तीनि। जाय तिनमे एक बैठे दोऊ भुजबलपीन॥ कहो धृष्टद्युम्न फिरि तहँ सुनो देखो जौंन। पाण्डवनको चरित क्रम तें बिहित बिधिवर तौंन॥ महा क्षत्री तिनहि जानऊ तजऊ संशय तात। भई आशा रावरे की सफल अति अवदात॥ सुनत हे यो बचें पाण्डव अग्नि ते बलधाम। किम्बदन्ती भई साँचो जानिए अभिराम॥ सज्ज करि धनु लक्ष्य बेधै महा दुस्तर जौंन। बिना अर्जुन और क्षत्री भूमि भूषण कौंन॥ भरे आनद सुनत राजा द्रुपद सुतके बैन। बोलि प्रोहित तहाँ पठयो सभासद मतिअैन॥ वचन सुनि कै द्रुपदके द्विज गयो तहँ अभिराम। जहाँ कुलबंशभूषण रहे वर बलधाम॥ कहन लागो विप्रसो नृप दियो जो कहि बैन। सहित आदर बिहित वर्णन सुनत श्रुतिकर चैन॥ तुम्हे जानो चहत भूपति द्रुपद हे बलधाम। बेध कर लखि लक्ष्यको हिय भरे आनदमाम॥ ख्यात ज्ञाति सुवंश अपनो कहऊ हे बरबीर। भरऊ आनद हृदय मेरे सहित द्रुपद गँभीर॥ पाण्डुनृप महाराज दोऊ सखा हे सुखदान। क्षुधा ताकी कियो चाहत सुता द्रुपद सुजान॥ रही यह निति कामना हिय भूपके अभिराम। देउ कृष्णा पार्थकौं यह अग्निजा छबिधाम॥ भयो जौं यह परम कारय सुकृतको फल तौंन। पुण्य ते कुरुवंशके अति सुहित आनद भौंन॥ कहत बचन पुरोहित हि इमि देखिकै नृप धर्म्म। भीम सौं तब कहो ताकी करन पूजा पर्म्म॥ भीम आसन देय विधि वत करी पूजा तास। लगे कुरुकुल भूप तासौं कहन बचन प्रकास॥ लक्ष्य भेदन दावपर नृप सुता राखो जौंन॥ भेदिकै सो लक्ष्य लायो बीर धनुधर तौंन॥ वर्ण वंश सुशील कुलको कियो कछुन विचार। करत अब उत्ताप मनमे भूप व्यर्थ उदार॥ द्रुपद अपनी कामनाकौं देखिहै सम सिद्धि। योग्य रूपा कन्यका यह साधु हमकों वृद्धि॥ सहित मौर्बी धनुष करिबो निबलका नहि काम। धनुर्विद्या विदविना को लक्ष्य बेधत साम॥ उत्ताप करहि न हेतु दुहिता सुनऊ यातें भूप। लक्ष्य बेधन करत को विनु क्षत्र वंश अनूप॥ करत वार्त्ता धर्म्मनृप हें विप्र सौं आसन्न। आय तँह नृप सुतको सो सिद्ध भोजन अन्न॥ *॥दूतउवाच॥*॥सिद्धिहै जेवनार भूपति रावरेके हेत। चलऊ भोजन करऊ कृष्णाव्याहि लहऊ सनेत॥ लसत काञ्चन पद्म चित्रित परम स्यन्दन भूप। बैठि तिन सहित अनुज आनद रूप॥ *

॥*॥ जयकरीछन्द॥*॥

॥*॥ वैशम्पायनउवाच॥*॥ चले रथन पर चढि अभिराम। सानुज भूप युधिष्ठिर आम॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कुन्ती कृष्णा रथपर एक । बैठि चली अति भरी विवेक ॥ प्रथम पुरोहित गयो प्रसन्न । द्रुपद आ०प०
नृपति जहँ हे आसन्न ॥ कहे युधिष्ठिर नृप जे बैन । कहे पुरोहित ते सह चैन ॥ सो सुनि भूप द्रुपद
सुख पाय । धरी तहां सब वस्तु मगाय ॥ धूप परीक्षाकरिबे हेत । यथा व्यसन चाहत जन चेत ॥
फल मणिमाल बसन बज्र रङ्ग । गो वृषभादि परम पशु सङ्ग ॥ शिल्प करणके द्रव्य विधान । ते
तहँ धरे बिरचि सुखदान ॥ खड्ग चर्म धनु इषुधि उदार । तोमर परिघ बडाबर भार ॥ शक्ति रिष्टि
बर वर्म बिचित्र । रत्न रचित रथ बिहित बहित्र ॥ जे रण जयकारक अभिराम । अस्त्र शस्त्र तहँ
धरे ललाम ॥ कुन्ती कृष्णा सहित उदार । द्रुपद नृपतिके गई अगार ॥ नृप महिषी ते आगे जाय।
कुन्तीकौं पूजो सुख पाय ॥ चले उतरि रथतें बर बीर । सिंह समान धरैं गति धीर ॥ राजा सचिव
सहित समुदाय । पुलकित भए देखि सुखपाय ॥ आसन परम जहां अभिराम । तहँ पांडव बैठे
बलधाम ॥ नृप भोजन थल गयो लेवाय । कनक पीठ ऊपर बैठाय ॥ सूद लगे तब परसन अन्न ।
नाना भांति स्वाद सम्पन्न ॥ तृप्त भए भोजन करि बीर । शिशिर सलिल करि पान गँभीर ॥ उठिके
चले खात ताम्बूल । नहि देखो ते वस्तु अतूल ॥ गए तहाँ जहँ शस्त्र समाज । देखि प्रसन्न भए कुरु
राज ॥ देखि भए नृप द्रुपद प्रसन्न । जानो क्षत्रबंश सम्पन्न ॥ द्रुपद बोलाय युधिष्ठिर भूप । द्विज
सम किय व्यवहार अनूप । यौं बूझन लागे करि प्रीति । तुम्हे जानिए हम केहि रीति ॥ कौन वर्ण
सम्भव अभिराम । हौ तुम सब भ्राता बलधाम ॥ कै तुम देवरूप धरि आय । कृष्णाहेत बीर बर
काय ॥ करऊ दूरि तुम मो सन्देह । सत्यसार भाषत मति गेह ॥ संशयान्त आनद अभिराम ।
देऊ कृपाकरिकै बलधाम ॥ तुमकौं जानि व्याह तेहि रीति । कृष्णाकों करिए करि प्रीति ॥ * ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ होऊ व्यग्रमति द्रुपद नरेश । ईप्सित तो सिधि करिहि अशेष ॥ हम क्षत्री
पाण्डव कुरु बंश । तनय प्रथाके परम प्रसंश ॥ ज्येष्ठ युधिष्ठिर मेरो नाम । भीमार्जुन ए बर बल
धाम ॥ इन जीती तो सुता नरेश । रहे भूप सब लखत सुबेश ॥ जहँ कुन्ती कृष्णा अभिराम । माद्री
तनय तहां बलधाम ॥ तजऊ दुःख हम क्षत्री भूप । लही सुता तो सुकुल अनूप ॥ मानऊ सत्य
सु बचन सुजान । हौ हमकौं तुम गुरू समान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भए मोद बश गद
गद भूपा दे न सके उत्तर अनुरूप ॥ बडी बेरमे यत्न समेत । बोले बचन द्रुपद हित हेत ॥ कौन
भांति पुर तजो नरेश । सो कहिए कुरुकमलदिनेश ॥ कहो सो सब बिधिवत नृप धर्म । तजो
जौनबिधिसौं पुर पर्म ॥ नृप धृतराष्ट्रहि निज्यो भूप । सुनि ताके सब कर्म कुरूप ॥ द्रुपद भूप
आश्वासन बैन । राज्य हेत बोले भरि चैन ॥ दियो द्रुपद वर भौन बताय। रहे धर्मनृप तासे जाय॥
सौज सकल तहँ द्रुपद नरेश । पठय देत सह विभव हनेश ॥ धर्म नृपतिसों द्रुपद नरेश । सुदिन
विचारि सु कियो निदेश ॥ पाणिग्रहण कृष्णाको भूप । पार्थ करै लहि सुदिन अनूप ॥ * ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि कहो धर्म नरनाह । है हमहूँकौं करिबे व्याह ॥ द्रुपदउवाच

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० तुमहो पाणिग्रहण करि लेऊ। नतरु चहऊ भ्रातन कहँ देऊ ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ हम सबकी महिषी अभिराम । द्रुपद होयगी कृष्णा बाम ॥ प्रथम कहो जो मातैँ बैन। करिवैँ त्याग हमै सो हैँन ॥ कृष्णा इस्त्री रत्न ललाम । सो जीतो अर्जुन बलधाम ॥ है हममे एक नियम अखर्ब । रत्नभोग करिए हम सर्ब ॥ तौन प्रतिज्ञा सकत न टारि । धर्महानि मन माह बिचारि ॥ सबकी पत्नी कृष्णा पर्भ । होय अग्नि साक्षिक युत धर्म॥ * ॥ द्रुपद उवाच ॥ * ॥ बहुत एकके पत्नी होय ।बहु पति करति न बनिता कोय॥ लोक बेद बिधि बिहित बिरुद्ध। कैसैँ यह कहियत मतिशुद्ध॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ जानत सूक्ष्मन धर्म बिचार। चलत पूर्बजन पथानुसार ॥ कहत असत्य न करत अधर्म । सुनऊ भूप यह मो मति पर्म ॥ कहो बचन मो माता जौँन । करिवें हमै अबश्यक तौँन ॥ तामे करऊ न शङ्का भूप । करिवैँ तुम्है तौन अनुरूप ॥ * ॥ द्रुपदउवाच ॥ * ॥ धृष्टद्युम्न तुम कुन्ती सर्ब । करऊ नियतसौँ करैं अखर्ब ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ करत जहाँ ए बचन बिलास । आए तहाँ महामुनि व्यास ॥ पाण्डव सहित द्रुपद महराज । पूजो मुनिकौँ सहित समाज ॥ परमासनपर बैठि ललाम । बूझो कुशल महा तपधाम॥ आज्ञा लहि मुनिबरकी भूप । आसनपर बैठे सुखरूप ॥ बूझो द्रुपद मधुर कहि बैन । हेतु द्रौपदी के मतिऐन । होय धर्मपत्नी तिय एक । बहु पतिकी यह कहऊ बिबेक ॥ **◆*◆*◆**

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ लोक बेद बिरुद्ध है अति गूढ यह नृप धर्म्म । कहऊ मत तुम आपनो सब यथामति गुणि पर्म ॥ * ॥ द्रुपदउवाच ॥ * ॥ जानि परत अधर्म्म हमकों बहुत पति तिय एक । पूर्ब काहूँ कियो नहि यह कर्म्म सहित बिबेक ॥ एहि कर्मको व्यवसाय हमसौँ होयगो नहि जानि ।धर्म यह सन्देह पूरण परतु है अनुमानि ॥ * ॥ धृष्टद्युम्नउवाच ॥ * ॥ कनिष्ठकी तिय माह रमिहै जेष्ठ भ्राता जौँन । सदबृत्त होय सुधर्म ताको रहैगो बिधि कौन ॥ धर्म होय अधर्मकै यह उचित है नहि कर्म्म । पांचपतिकी होय भार्या द्रौपदी नहि पर्म्म ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ अनृत मो नहि कहति बाणी गहति मति न अधर्म्म । है अधर्म न जानि यामे गहत मो मनमर्म्म ॥रही गौतम बंश कन्या पूर्ब जदिला नाम।बरी सो बहु ऋषिन तौँही भरी धर्म ललाम॥ मुनि जासु बार्क्षी महा सुन्दरि पूर्बही तपधाम।बरी सु दश प्रचेतसनकों भरी पुण्य सु माम ॥ धर्म मय गुरु बचन जननी परम गुरु गुण भौँन । हमै करिबो औसि ताकी परम आज्ञा जौँन ॥ ॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ यो युधिष्ठिर कहतहैँ सो सत्य मेरो बैन । अनृतहौँ नहि कहति कबहूँ जानि पातक ऐन ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ कहोंगो नहि भूप सबसौँ धर्म यह अभिराम । यो युधिष्ठिर कहतहैँ सो सत्य धर्म ललाम॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रुपदकी गहि बाह मुनि लै गए भीतर भौँन । धर्म कुन्ती धृष्टद्युम्न सु कियो तेहा गौँन ॥ जाय तहँ मुनि कहन लागे द्रुपदसौँ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सो धर्म्म । बऊत पतिके एक पत्नी होय जैसें पर्म्म ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ सत्र नैमिषारण्यमे आ०प०
हे करत सुरगण सर्व । पशुनको यमराज बध तहँ रहे करत अखर्व ॥ रहे दीक्षित पितृपति नहि
हले प्रजन विशाल । मरण बिनु जगजीव भे बऊ पाय कै चिरकाल ॥ सोम शक्र कुबेर साध्य प्रचेत
सादि अखर्व । देव बिधिपँह जाय बोले मनुज भय भरि सर्व ॥ पितामहउवाच ॥ मनुजतें भय कहा
तुमकौं अमर तुम बलधाम ॥ देवाऊचुः ॥ भए अमर समान मनुज न मरत बाढे माम ॥ अमर
भे सब मनुज याते सुनो हे लोकेश । अमरगण अरु मनुजगणमे रह्यो कछु न विशेष ॥ * ॥ पिता
महउवाच ॥ * ॥ सत्रमे हैं प्रवृत यज्ञ नहि मनुज मारत तौन। भएँ सत्र निवृत्त ह्वै है मनुज मारण
जौन ॥ कीवो यतन यमराज धरि लै वीर्य्य तुम्हरो पाश । गतवीर्य्य ह्वै है मनुज तिनको करहि गे ते
नाश ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ भए तहँ सब देव जेहाँ होत सत्र महान । जाय बैठे सुरशरीको
पास लहि सुखदान ॥ तहाँ देखे बहे आवत पुण्डरीक अनन्त । चले तिनको मूलदेश न तहांतें
सुरकन्त ॥ लखी गङ्गा मूलमे जलमध्य ठाढी बाम । करति रोदन गिरत असु सो होत कञ्ज ललाम ॥
देखि अर्जुन लगे पूछन इन्द्र ता ढिग जाय । कौन कारण करति रोदन कौन हो इत आय ॥
॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ जानि हो तुम शक्र जो हौं करति रुदन सदन्द । चले आवऊ लखऊ
मेरो रुदन कारण कन्द ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ गए ताके चले पीछे लखो पुरुष महान ।
अच्छ क्रीडत सहित बनिता सिद्ध आसनमान ॥ गिरि शृङ्ग ऊपर देखि जैसें इन्द्र बोले बैन । लोक
तीनो बश्य मो सुराज हौं बल अैन ॥ विहँसि कै तब देव देखो जानि शक्र हि क्रुद्ध । भए काष्ठ
समान देखत इन्द्र अङ्ग सुरुद्ध ॥ अच्छक्रीडा अन्त रुदती बामसौं इमि बैन । कहो देव सु ल्याय
इत जेहि गर्व फेरि लहै न ॥ छुवत ताके गिरे क्षितिपर सभय कँपत सुरेश । फेरि अैसो कीजियो
मति कियो देव निदेश ॥ टारि यह गिरि बिबर शिलकौं पैठि कै बलवान । चारि तामे और
देखेऊ आपु रूप समान ॥ टारि गिरि शिल बिबरमे सम रूप देखे चारि । होंहि गे यहि भाँति
हम यह भए दुखित विचारि ॥ क्रोध करि कै शक्रसौं इमि कहो देव महान । कियो हमसौं गर्व
ताको लहऊ फल अतिमान ॥ देवके सुनि बचन सुर पतिगिरे कम्पित पीन। जोरि कै कर देवसों
व्है कहन लागे दीन ॥ * ॥ देवउवाच ॥ * ॥ लहत सो न प्रसाद तुमसे शीलके जन जौन ।
भए अैसे पूर्व ए तुम रहऊ तहँ करि भौन ॥ जन्म लै नरयोनिमे करि बऊत जनको नाश ।
स्वकर्म वश व्है करऊगे फिरि इन्द्रलोक निवास ॥ * ॥ पूर्वेन्द्रउवाच ॥ * ॥ मनुज लोकहि जाहिगे
हम जहा मोक्ष विधान । धरहि जननीमे हमारो गर्भ देव महान ॥ धर्म वायु सुरेश दस्र सु
पिता हौंहि ललाम । युद्ध करि दिव्यास्त्रसौं नरपतिनसौं बलधाम ॥ देह तजि सुरलोकमे फिरि
करैं बास महान ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ बचन तिनके सुनत पञ्चम इन्द्र गुणि मति मान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० देव मोकों कार्य्य है सुरलोकमे सम्पन्न । बीर्य्य मेरो होयगो नर योनिमे उतपन्न ॥ बिश्वभुक अरु भूत धामासि बिसु चौथो शाँति । गुहामे जे रहे बऊदिन परे होय अकाँति ॥ अरु मुतेजखी सु पञ्चम इन्द्र ए बर सर्ब ।दियो तिनकों इष्ट सिगरो कहो जैाँन अखर्ब ॥सुन्दरी सो बाल रुदती तीन्है भार्य्या हेत । कहो लीवँ जन्म तियको कृपासिन्धु निकेत ॥ गयो तिन सह देव सो जहँहे नरायण पर्म । कहो तिनसों करण सो जगदीश धारक धर्म॥दियो रोम उखारि व्है तिन श्वेत कृष्ण ललाम। बसो देवकि रोहिणीके गर्भमे सो साम ॥श्वेत भो बलभद्र कृष्ण सो कृष्ण जगदाधार । भए पाञ्चै इन्द्र पाण्डब बीर धीर उदार ॥ भयो पञ्चम इन्द्रतें यह सव्य साची बीर । भई लक्ष्मी तौन कृष्णा भरी रूप गँभीर ॥ नतरु इस्त्री होति कौं मख कुंडतें अभिराम । गन्ध जाको क्रोश चारी रूप शशि सम साम ॥ दिव्य चक्षु सुदेत तुमकौं लखऊ तिनकां भूप ।प्रथा पुत्रनको सु पूरब जैाँन इन्द्र स्वरूप ॥ * ॥ बैशंपायनउबाच ॥ * ॥ दिव्य चक्षु सु द्रुपदको तब दियो मुनिबर व्यास । लखन लागे पांडबनको पूर्ब रूप प्रकास ॥ धरे हेमकिरीट माला दिव्य भूषण सर्ब । प्रौढ उन्नत ताल से सुरनाथ सदृश अखर्ब ॥ लहो अति आश्चर्य भूपति देखि माया साम । द्रौपदीको लखी श्रीसम जोतिमय अभिराम ॥ जानि तिनकी परम पत्नो देखि कै अनुरूप । होय हर्षित व्यास मुनिके चरण अरचे भूप ॥ * ॥ व्यासउबाच ॥ * ॥ बिप्र कन्यै शम्भु पूजो चाहि सुपति उदार । देत बर बस प्रेम मागो ईशसों सरवार ॥ मिलहि गे पति पांच तो बर बचनके परमान । देह धरिकै और लहि है दिव्य पति सुखदान ॥ देब रूपिनि सुता सो यह भई है तो भूप । देव बिहित सु लहैगी यह पञ्चपति अनु रूप ॥ स्वर्ग लक्ष्मी महा तप करि पांडबनके हेत । भई तो मखकुंडतें धरि परम पति ब्रत नेत ॥ * ॥ द्रुपदउबाच ॥ * ॥ सुता एकहि व्याहिबेकों कियो सम्मत पर्म । कौनके है शक्यमे जो देब निर्मित कर्म ॥ होउ पत्नो पांडबनकी परम कृष्णा जैाँन । शम्भुको बर भयो पहिले तौन टारत कौंन ॥ * ॥ बैशंपायनउबाच ॥* ॥ कहो मुनिबर आजु है दिन लहे शशि बल पर्म । प्रथम पाणि ग्रहण कृष्णाको करो नृप धर्म ॥ बसन भूषण दिव्य मणिमय द्रुपद भूप मगाय । किए भूषित पांडबनकौं जानिकै सुखदाय ॥ करि अलंकृत द्रौपदीकौं तहँ बोलाई भूप । सुहृद मंत्री तहाँ आए धारि दिव्य स्वरूप ॥ बेश्मजन गण मणिन मंडित लसो अति अभिराम । यथा राका शशी तारणसहित गगण ललाम ॥ महा अद्भुत आय तेहा कह्यो नारद चैन । ब्याह जबलौं हौं हिये यह रही कन्या अैन ॥ धौम्य मुमुनि समान पावक बिहित बिधि अभिराम ॥ मंत्रबिद करि अग्नि स्थापन होम करि तपधाम ॥ कियो योजित धर्म नृपसों द्रौपदीकों ल्याय । सह प्रदक्षिण ब्याह कीन्हों पाणि ग्रहण कराय ॥ अहनि अहनि सुक्रमहितें भोमादि पांडब सर्ब ।पाणि ग्रहण सु द्रौपदीको कियो सबिधि अखर्ब ॥दियो दायज पांडवनकों द्रुपद बित्त सु साम ।दिए स्यन्दन तिन्है शत शत मणिन जडित ललाम ॥ दिए तितने मत्तवारण मेरुसे बलधाम । दई दासी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुन्दरी नवयौवना अभिराम ॥ दए भूषण वसन नाना भाँतिके बऊरङ्ग ।पृथक पृथक सु पांडवन आ०प०
कों भरे मोद तरङ्ग ॥ व्याह करि बर पाय लक्ष्मी परम पांडव बीर । लगे सुरपति सदृश बिहरण भरे मोद गँभीर ॥ पांडवनकों सँङ्ग लहिकै द्रुपद नृप बलधाम । दानवनसों देवतन सों भए निर्भय साम ॥ द्रुपद दासी दई तेकहि नाम अपनो जाय । भरी आनद लगी परसन प्रथाके बर पाय ॥ भरी मङ्गल आय कृष्णा प्रथाके पदकञ्ज । बन्दि आशिष परम पाए मोदमय मनरञ्ज ॥ व्याह उत्तर पांडवनकों दये कृष्ण पठाय । अश्व रथ मणि बसन भूषण गज नके समुदाय ॥ दास दासी रूपगुणमय मणिन्ह मंडित पर्म्म । दिये सहसन पठै जानै जौन सेवा धर्म्म ॥ सौज धनद समानको सो लियो पांडव नन्द । दियो जौन पठाय आनद भरे यदुकुलचन्द । भरे विभव बिभूतिसो सम इन्द्रके अभिराम । लसे कृष्णा सहित पांडव बीरबर बलधाम ॥ * ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्बणि द्रौपदी स्वयम्बरबर्णनोनाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ समाचार भूपन मगवाए । पठै बिश्वसित दूत सोहाए ॥ सुनो द्रौपदी आनद भरी । बीर पाण्डबनके सँगबरी ॥ करि धनु सज्य लक्ष्य जेहि मारो । सो हो अर्जुन अतिबल भारो ॥ शल्य भूप जेहि मर्दन कीन्हो । बृत्त उपारि नृपन्ह भय दीन्हो ॥ सो है भीमसेन बलभारी । अरिगण गहन दहन समचारी ॥ पांडव ब्रह्म रूप धरि आए । रङ्गमाह सुनि बिस्मय छाए ॥ प्रथा ससुत जतुगृहमह जरो । अैसि खबरि प्रथम सुनि परी ॥ भूपन्ह फिरि जनमे से माने । पांडव बीर भाग्य बर जाने ॥ भीष्म और धृतराष्ट्र नरेशै । कहि धिक्कार गए निज देशै ॥ चले सुयोधन बिमन सभाई । कर्णादिक सहसैन सहाई ॥ दुःशासन इमि कहत लजानो । बिप्र रूपत तिन्हैं न जानो ॥ ननरु द्रौपदी हि कैसैं बरते । पांडव जानि हमै जौं परते ॥ होत दैव बिरचित सो साँचो । पौरुष बिधि सहाय बिनु काँचो ॥ आनद बिगत खेदसों छाए । हास्तिन नगर सुयोधन आए ॥ देखि पांडबनकों भय भारे । अग्नि दाह कृतकर्म्म बिचारे ॥ जानि द्रुपद सह सुतन सहाई । चिन्ति पांडवनकों दुखदाई ॥ बिदुर सुनो कृष्णाकों बरे । पांडव सकल मोदसों भरे ॥ दर्प बिहीन सुयोधन भए । भरे लाज अतिसै दुखमए ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धृतराष्ट्र पास ईमि बोले बैन । बिदुर भरे हियमे अतिचैन ॥ बढे भाग्यबश कुरुकुल भूप । यह सुनिकै धृतराष्ट्र अनूप ॥ लही सुयोधन कृष्णाबाम । जानि कहो बर बैन ललाम ॥ भाग्य भाग्य यह बोले बैन । बीष्म सहित भरे अति चैन ॥ सहित सुयोधन कृष्णा बाम । स्यावऊ मो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० समीप अभिराम ॥ भूषण बसन अमोल मगाय। दीवैं चहत ताहि सुखदाय ॥ कहो बिदुर सुनिए चितिपाल। बरो पाण्डवन कृष्णावाल ॥ द्रुपद तिन्है पूजे भरि प्रेम। हैं पांडव तेहां सहलेम ॥ द्रुपद सहायक भूपति जौन। मिले पांडुपुत्रणसो तौन ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ मम पुत्रनतैं पांडव सर्व। मोहि बिदुर कर मोद अखर्व ॥ पाण्डव कुशली सहित सहाय। द्रुपद भूप सम्बन्धी पाय ॥ निर्धन होय कौन बर भूप। अपनो बिभव न चहत अनूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदुर कहो सुनि नृपके बैन। रहो बुद्धि यह तुम्है सचैन ॥ गए बिदुर तब कर्ण समेत। दुर्योधन आए हतचेत ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ बिदुर निकट तो अपगुण भूप। तुम्है न हम कहि सकत अनूप ॥ करिवैं अन्य करत हौ आन। यह तौ भूप न तुम्है समान ॥ तिनकेबल विधातके बैन। कहिवे योग्य तुम्है मति अैन ॥ करिबें समय योग्य जो मंत्र। सो विचार हम कियो स्वतंत्र ॥ ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ करिवें हमै चहत तुम जौन। बिदुरहि नही लखावत तौन ॥ याते कहत तास गुण पर्म्म। जातैं बिदुर न पावे सर्म्म ॥ जो तुम पुत्र बिचारो मंत्र। सहित कर्णसो कहऊ स्वतंत्र ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ बिप्र चतुर अति आप्त महान। पठै देऊ तिनपास सुजान ॥ अैसो भेद करै सो जाय। तिनमे बियह देय कराय ॥ की द्रुपदहि दे बित्त महान। सहित पुत्र सह सचिव सुजान ॥ अैसें लोभित करै अनूप। पांडव त्याग करैं ज्यौं भूप ॥ इहां बासकों दूषण धारि। कै राखै तंह तिन्है बिचारि ॥ कै करि भीमहि कछू उपाय। हने गुप्तविष भक्ष्य खवाय ॥ ताके मरे बिगत उतसाह। होहिं पांडुसुत सुनु नरनाह ॥ राज्य हेत फिरि करै न यत्न। जामै इनको प्रबल सपत्न ॥ है अजेय अर्जुन बलवान। सङ्ग रहै जो भीम महान ॥ ताहि मरे अर्जुन बलहीन। जीतै कर्ण समरमे पीन ॥ व्है बलहीन उहांतें आय। रहैं हमारो शासन पाय ॥ तब तिनके निग्रहको यत्न। भूप करैं तब सहित प्रयत्न ॥ जो इनमे निर्दोष उपाय। तास प्रयोग करऊ सुखदाय ॥ तबलों पांडव नृप पांचाल। करैं न जबलों प्रीति बिशाल ॥ निग्रह यत्न करणकों अक्ष। कहै बीतें काल अनेक ॥ साधु असाधु बिचारऊ तौन। करऊ कर्ण मनभावै जौन ॥ कर्ण उवाच ॥ * ॥ दुर्योधन यह गिरा तुम्हारी। सम्यक हमै न परति बिचारि ॥ करें उपाय न पांडव नाश। होत तिहारे सुनऊ अवश्य ॥ प्रथम उपाय करे तुम जौन। बिधि बश भए व्यर्थ सब तौन ॥ [illegible] तिहारे हे ते सर्व। पक्षहीन पांडव बध खर्व ॥ तब तो चलो उपाय न एक। तुम चाहो बिधि [illegible] ॥ जात्यपक्ष भे ते बलवान। होत बश्यके बीर सुजान ॥ चहत पिताको पद अभिराम। [illegible] बीर बलधाम ॥ तिनमे भेद बिचारत जौन। ह्वबें योग्य न भूपति तौन ॥ एक नारिमे [illegible] धारें प्रेम अखर्व ॥ भेद परस्पर तिनके मांहि। जानो निश्चय व्है है नाहि। धृष्टद्युम्न पांडव [illegible] परसार प्रीति गँभीर ॥ ते उपाय सब होत न भूप। कहत सो किजे तुरित अनूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ आश्व०

जबलौं बल बाधै नहीं पांडव सह पांचाल । तबलौं चलिकै मारिबो परम मंत्र क्षितिपाल ॥
सबल हमारो पक्षहै अबल द्रुपदको पक्ष । तातें अबही मारिबो मंत्र परम है दक्ष ॥
सहित पांडवन जीति हैं चक्रादिकी क्षिति वृद्धि । बाहन मित्र सबंश तब द्रुपद पाइहै वृद्धि ॥
पाण्डुतनयके राज्यको सो करिहै तब यत्न । तब न कछू बनिआइ है व्यर्थ होइहै प्रयत्न ॥
सुतन सहित जबलौं नहीं करै सैन समुदाय । तबलौं द्रुपदहि मारिबो मंत्र परम सुखदाय ॥
वासुदेव जबलौं नही लए सैन समुदाय । पांडव राज्य निमित्तकौं करैं न आय सहाय ॥
बसु बाहन समुदायकौं जबलौं नहि बलबीर । पठवै यदुबंशी सुभट सैन सहायक धीर ॥
दीबो चाहत राज्यलौं पांडव हित यदुनन्द । विक्रमतें पाई मही भरत भूप कुरुचन्द ॥
विक्रमतें सुरपति किये जीति लोक सब बश्य । क्षत्र बंशकों योग्यहै विक्रम भूप अवश्य ॥
तातें तबलों लै चमू सह सहाय क्षितिपाल । बस करि ल्यावऊ पांडवन्ह मारि भूप पांचाल ॥
साम दान नहि भेदतें पांडव साध्य नरेश । यातें विक्रम कीजिए क्षत्रधर्म उद्देश ॥
याते और न परतहै मंत्र देखि अभिराम । पांडव जाते होहि बश महाबीर बलधाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनत कर्णके बैन नृप धृतराष्ट्र महाबली । कहन लगे मतिअैन नीति निपुण जे बचन बर ॥ भीष्म द्रोणसों मंत्र बिदुर सहित करि लेऊ तुम । होय जौन दृढ तंत्र सुखकर सोई कीजिए ॥ तब सबकों बोलवाय मंत्र करण लागे नृपति । आश्य सकल सुनाय भरे खेद धृतराष्ट्र नृप ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रुचतहै नहि पांडवनसों हमै बियह भूप । यथा हमकों रहे पांडु सुतथा तुम अनुरूप ॥ हमै प्रिय गान्धारजा अरु प्रथाके सुत सर्ब । यथा हमकों रक्षते तव पुत्र त्यों हि अखर्ब ॥ तथा कुरुकुल सर्बको ए रक्ष्यहै अभिराम । हमहि याते रुचतहै नहि सुनऊ बियह साम ॥ देऊ याते बांटि तिनको भूमि आधी भूप । जो पितामह पिताकोहै अंश तास अनूप ॥ यथा जानत तुम सुयोधन राज्य अपनो सर्ब । तथा जानत सुनऊ तेऊ पिता अंश अखर्ब ॥ जौन उनको अंश यह तौ रावरो किमि भूप । धर्मतेहै दुऊनको यह राज्य सुनऊ अनूप ॥ देऊ तिनको राज्य आधो बांटि साम समेत । मचहै यह परम भूपति सकुलकुशल निकेत ॥ करऊ कीर्त्तिन नष्ट जगमे कीर्त्ति जीवन सार । रहति कीरति जियत तबलों मरेऊ मनुज उदार ॥ कीर्त्तिबिन से लोकमे जन जियत मरण समान उचित कुलके करऊ अपने पूर्व सदृश महान ॥ जियत पारथ प्रथाहु निज भाग्यते अभिराम ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० भाग्यते नहि भो पुरोचन अधमको कृतकाम ॥ सुनो जबसों जरी कुन्ती सुतन सहित अनूप । सुजन के नहि सके सोंहैं ताकि तबसो भूप । पाण्डवनको जरे सुनिकै लोक तुमकों दोष । देतहैं न पुरोच नहि करि धर्म दूषण रोष ॥ भयो जीवन पाण्डवनकों दोष हरतब भूप । करऊ दर्शन पांडवनको उचित तो अनुरूप ॥ नतरु जीवत पाण्डवनको अंशहै बर जौंन । नही लीबे इन्द्रहूके शक्य सुनिए तौन । नित्यहै ते सत्यमे रत धर्ममे अभिराम । राज्य भागो पुत्र तव तिमि पाण्डु सुतऊ ललाम ॥ धर्मकरिबे तुम्हैं जो कुल कुशलमो प्रिय भूप । देऊ आधो बाँटि तिनको राज्य यह अनुरूप ॥ ॥ *॥ द्रोणउवाच ॥ *॥ धृतराष्ट्र नृप सतमत बूझे जानिकै नर पर्म । ताहि कहिबो उचित बचन यशस्य कारक धर्म ॥ भीष्म जो यह कहतहै सो हमै सम्मत भूप । देऊ तिनको राज्य आधो बाँटिके सुखरूप ॥ पठैदीजै द्रुपदपैं है प्रियम्बद नर जौंन । देइकै बऊरत्न भूषण द्रुपदजा हित तौंन ॥ कहै सो तहँ जायकेतो वचनके अनुरूप। होहि जाके सुनत पांडव सुखी सोमक भूप॥शान्त बचन सुनाय फिरि फिरि पांडवनको तौंन । हरै मनगत खेद सिगरो पूर्वसंभव जौंन ॥ द्रुपद पुत्र नको सु भूषण बसन देय ललाम । करै कृष्णासहित तौन प्रसन्न अति अभिराम ॥ उक्तिसो तव हस्तिनापुर को कहै सो गौंन । करहि जब स्वीकार पाण्डव महाबर बलभौंन ॥ लेइ आज्ञा पाडवनकी जाय शोभन सैन । सहित दुःशासन सु और विकर्ण मतिको अैन ॥ पाय तुमसो प्रीति मत परधान को लै पर्म । पितपद बर रहै गेते व्है प्रसन्न सुधर्म ॥ सहित पुत्रन तुम्है करिबे योग्यहै यह भूप । कहो भीषम बचन यह सो सुहित धर्म स्वरूप ॥ * ॥ कर्ण उबाच ॥ * ॥ अर्थमान सु लहत तुमसो अन्तरङ्ग सु जौंन । अश्रेय मंत्रसो देत याते और अद्भुत कौंन ॥ दुष्टता मनमाहि राखै कहै सुहित समान । करै ताको बचन कैसें श्रेय सुनऊ सुजान ॥ होतहै बिधि विहित दुखसुख सुनऊ सबकौं भूप । मूर्ख बिदुष बिवेक है नहि प्रबल कर्म अनूप ॥ अम्बु बीच महीप आगें रहो मगध नरेश । क्षीण जाको सकल इन्द्री रही श्वासाशेश ॥ महाकर्णि अमात्य ताको राज्यको धरि भार । राज्य सर्वस रत्न बनिता कियो खबश उदार ॥ खबश करि ऐश्वर्य्य सिगरो कियो चाहो राज । तेहि न पायो राज्य ताको विना भाग्य समाज ॥ होय गो तो भाग्यमे जौं राज्य बिहित अनूप । लखत सबको करऊ गे तुम नियत कुरुकुल भूप ॥ दुष्टको सु अदुष्टको सब लेऊ भाषित जानि । होतहै बिधि बिहित सबकों राज्य लीजै मानि ॥ * ॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ पाण्डवनसों दुष्टताधरि भाग्य दोष बिचारि । कहत हौ राधेय जैसे बचन तुम निरधारि ॥ स्वकुल बर्द्धन परम हित यह मंत्र सुनि अभिराम । याहि मानत दुष्ट हौ तुम दुष्ट तासों साम॥ अन्यथा जौं करहि गे यह मंत्र नृप हित रास । लहै गो कुरुवंश थोरे कालमाह बिनास ॥ *॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ रहित संशय श्रेयकर गुरु भीष्मके ए बैन । नही सुनिबे योग्यधामे बाक्य एको है न ॥ भीष्मके गुरु द्रोणके बर बचन सित हित धाम । कहत सुनि राधेय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तिनको अहितसो न लखाम॥ करऊ चिन्तित और इनसों अधिक नहि मतिमान। कौंन इनसो आश्व०
सुहित तुमकौं सुनऊ भूप सुजान॥ कियो नहि अपकार इनको कछू तुम मतिअैन। दोष बिनु
ए कहैं गे क्यों अहित तुमसों बैन॥ यहि लोकमे मतिमान उत्तम पुरुष ए अभिराम। देहिगे कोहि
भांति तुमकों जिम्ह मंत्र अकाम॥ यथा तवसुत तथा पांडव रहित संशय भूप॥ करै इनमे भेद
सो नहि चहत श्रेय अनूप॥ प्रीति अपने सुतनमे है तुमहि भूप विशेष। करत है सो प्रगट सबकों
सूतको सुत एष॥ असमर्थ सोंहें पांडवनके पुत्र हैं तव सर्व। कहत भीषम द्रोणसो है सत्य भूप
अखर्व॥ सव्यसाची महाधनुधर कुइ पांडव बीर। जीति सकत न युद्धमे मघवान लों रणधीर॥
अयुतगज बल भीमसेन सु युद्धमे लखि कुइ। देवतौ नहि सकत ताकों जीति हे मति उइ॥ नकुल
अरु सहदेव तैसे युद्ध निपुण महान। क्षमा दाया सत्य सागरकों न धर्म समान॥ जासु मंत्री
कृष्ण जाको पक्षधर बलराम। है सहायक सात्यकी सो जासु धनुधर साम॥ ससुर जाको द्रुपद
स्याला धृष्टद्युम्न सभ्रात। अशक्य तिनकों जीतिबोहै सुनऊ कुरुकुल तात॥ करऊ सुतको भाव
तिनसों भली बिधिसों भूप। क्षत पुरोचन अयश जातें धोय जाय कुरूप॥ अनुग्रह जो भूप तिनपै
कुरुनकों गुणधाम। सहित जीवित श्रेय दायक वंश बर्धन साम॥ महाराजा द्रुपद तासों पूर्व
बैर नसाय। प्रीति कीन्हें बढैगो बर पक्ष अति सुखदाय॥ बऊत है यदुवंश सिगरे धीर बीर स्वरूप।
कृष्ण जहँ तहँ रहै गे ते कृष्ण जहँ जय भूप॥ सामहीसों कार्य साधन करत हैं मतिमान। भए
बिग्रह जय पराजय बिहित बिधिसु सुजान॥ सुने पांडव जियत उत्सुक देखिबेकों सर्व। महत जन
पद स्वपुरबासी भरे मोद अखर्व। कर्ण शकुनि सुयोधनहि हतधर्म देत कुबुद्धि। सो न करिबे
योग तुमकों पाय सुमत सशुद्धि॥ पूर्व तुमसों कहो हो हम तौन समुझहु भूप। है सुयोधन दोषतैं
क्षय क्षत्रको अति रूप॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥ भीष्म शान्तनु तनय द्रोण महान ऋषि
मतिसाम। बिदुर तुम जो कहत हौ सो सत्य आनद धाम॥ पांडुसुत मो पुत्र मोकों धर्मते सु स
मान। बिहित है यह दुहुनकों सम राज्य सत्य सुजान॥ कृष्ण ल्यावऊ पांडवनकों प्रथा सह मति
अैन। परम आदर सहित तिनसों बोलिकै बर बैन॥ सुषा कृष्णा परम मेरी भाग्य सालिनि
जौंन। जिए मेरे भाग्यतैं सह प्रथा पांडव तौंन॥ भाग्यतें तिन लही कन्या द्रुपदकी कबिधाम।
भाग्यतें जरिगो पुरोचन बचे पांडव साम॥ भाग्यतें यह दुःख मेरो मिटो बिदुर अखर्व। भाग्यतें
फिरि मिलहि गे मोहि पांडुके सुत सर्व॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच॥ * ॥ धृतराष्ट्रको लहि परम
शासन बिदुर मतिके धाम। चले लै पांचाल पहँ धन बसन भूषण साम॥ प्रथा कृष्णा पांडवनकों
सहित द्रुपद समाज। दियो दीबे हेत तिनकों जौंन कुरुकुल राज॥ धर्मशास्त्र बिवेक बिद तहँ
जाय बिदुर सुजान। सहित पांडव द्रुपद भूपति सों मिले सहमान॥ कुशल बूझो द्रुपद पांडव
बासुदेव समेत। आनन्द पूरित मिले सबसों स्नेहरञ्जित चेत॥ कियो पूजन पांडवन तब बिदुरको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० लहि चैन । बिदुर बूझो कुशल तिनसों स्नेहसों भरि बैन ॥ दिए धन मणि बसन भूषण भाँति नाना जौंन । कहे फिरि धृतराष्ट्रके बर बचन प्रियकर तौंन ॥ द्रुपद तनयनकों दए बर बसन भूषण पर्म । फेरि कुन्ती द्रौपदीकों दियो बिदुर सधर्म्म ॥ द्रुपद पाण्डव कृष्णसों इमि कहन लागे बैन ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ कहे जे धृतराष्ट्र बूझन कुशल प्रश्न सबैन ॥ कुशल बूझो भीष्म तुमसों सहित द्रोण सप्रीति । चहत तो सम्बन्धहे कुरुबंश भूप सुनीति ॥ सम्बन्ध तुमसों करि कृतारथ भए चित अनुमानि । भयो है कुरुबंश सादर लाभ दुर्ल्लभ जानि ॥ बिदाकीजै पाण्डवनकों जानिकै यह भूप । चहत सह कुरुबंश देखो नृपति इनको रूप ॥ लखो चाहैं सहित कृपा प्रथाकौं कुरु बाम । बिदाकीजै सहित कृष्णा पाण्डवनकौं माम ॥ पाय आज्ञा रावरी हौं देउ दूत पठाय।पांडवनको आगमन सो कहै सुख जाय ॥ *॥ द्रुपदउवाच॥ कहतहो तुम बिदुरसोहै बचन बिहित महान । पांडवनको गमन हास्तिन नगरकौं सुखदान ॥ नहीं कहिबे योग्य हमकौं गमनके जे बैन। कहैं पांडव प्रथम हमसों महा मति बलऐन ॥ सहित राम सुकृष्ण पांडव गमनहै अभिराम।महा प्रियकर पांडवनके पक्ष पालक आम ॥ *👄*👄

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ पराधीन हम भूप सुजान । कहो जो तुम सो हमै प्रमान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बोले बासुदेव मतिधाम । गमन लगत हमकौं अभिराम ॥ अथवा जौंन कहैं पाञ्चाल । जानतहै सबधर्म बिशाल ॥ * ॥ द्रुपदउवाच ॥* ॥ जो सम्मत तुमकों यदुबीर । समैं सदृश सोकीजै धीर ॥ जैसें पांडव हमकों सर्ब । बासुदेवकों तथा अखर्ब ॥ तथान चाहत पांडव श्रेय । कियो चहत ज्यौं कृष्ण अनेय ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रुपद नृपतिको आज्ञापाय । पांडव सहित कृष्ण सुखदाय ॥ कृष्णा प्रथा बिदुर मतिमान । हास्तिन पुरकौं कियो पयान ॥ सुनि आवत पांडव बलबीर । पठए कौरव नृपति गँभीर ॥ चित्रसेन बर पुत्र बिकर्ण । गौतम द्रोण चमू आभर्ण ॥ तिन्हे समेत सु पांडव बीर । हास्तिन पुर आए रणधीर ॥ शोभित भयो नगर अभिराम । बरैं दीप ज्यौं गृह लखाम ॥ पुरजनपद्जन भरि हिय चैन । कहन लगे इमि मङ्गल बैन ॥ आए दुखहारी बरबीर । प्रानतहे जे सुतवत धीर ॥ आजु पांडु नृप बनते फेरि । आए मनऊ परत इमि हेरि ॥ सुनत प्रजनके प्रियकर बैंन । पांडव भरे मोद हिय ऐंन ॥ धृतराष्ट्र भीष्मके बन्दि सु पाय।बंध रहे तिनके छिरि जाय ॥ कुशल प्रश्न कहि सबसों बीर । भरे हृदयमह मोद गँभीर ॥ धृतराष्ट्र नृपतिकी आज्ञा पाय । कियो प्रबेश धामसे जाय ॥ कियो तहाँ कछुदिन बिश्राम । सहित सु बासुदेव बल धाम । लीन्ह सहित धृतराष्ट्र बोलाय । कहो पांडवनसों समुझाय ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ बियह होय न तेरि महान । यातैं यह तुम करऊ सुजान ॥ इन्द्रप्रस्थमह कीजै बास । परम रम्य बल योग्य निवास ॥ पारथतैं रक्षित अभिराम । सुरपति तैं ज्यौं सुरसब धाम ॥ आधोराज्य लेऊ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अभिराम । खांडव प्रस्थ जाऊ बलधाम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भूप बचन लहिके सु आ०प० प्रमान । कियो पांडवन तुरित पयान॥गे श्रीकृष्ण सहित तँह बीर । जहाँ बिपिनि खांडव गम्भीर॥ तहँ करि शान्ति बेदबिधि धर्म । चाहि नगर रचना तहँ पर्म ॥ सह द्वैपायन मुनि तपधाम । नेई नगरकी दई ललाम॥ परिखा कीन्ही सिन्धु समान । गिरि सम रचे प्रकार महान ॥ हिमगिरि कन्दर सम पुरद्वार । रत्न जडित बर लगे केवार ॥ तहँ बैठे रक्षक बरबीर । धरे शस्त्र बऊ बल गम्भीर ॥ धरी शतघ्नि ऊर्द्ध प्राकार । अरिदल बल कारक संहार । बऊ बिस्तीरण रचित बजार ॥ बणिक सदन धन धरे उदार ॥ महत शुभ्र हिमगिरिसे भौन । नगर लसो सुरपुरसो तौन ॥ मध्य नगरमे भूपतिधाम । बैजयन्त सम लसत ललाम ॥ आय बसे तँह द्विजबर वृन्द । धर्म धुरन्धर पाय नरिन्द ॥ चऊँदिशितँ व्यापारी आय । क्रय बिक्रयके रचत उपाय ॥ बसे शिल्पबिद आय अनेक । बऊ भाषाबिद जन सविबेक ॥ नानाबिधिके बाग बिशाल । नगर निकट बिरचे छबि जाल॥फूले फरे बिटप बऊरङ्ग । बऊतभाँतिके लतिकन सङ्ग ॥ कलरव मंडित अति अभिराम ॥ मधुकर निकर करैं जहँ धाम ॥ लताभौन कुसुमित अतिमाम । सर पञ्जर कीन्हे मनुकाम ॥बापी लसैं भरी बरनीर । भू मुद्रा सम लसै गँभीर ॥ सरबर भरे सलिल अभिराम । हंस करँण्ड चकनके धाम ॥ फूले कमल लसत सह भौर । श्रीके मनु बिधि बिरचित चौर ॥ परम सुदिन लहि कियो प्रबेश । खांडव प्रस्थमाहि अचलेश ॥ पञ्चपांडवनसों पुर तौन । सुरपुर सदृश लसो छबि भौन ॥ तिनको तहा प्रबेश कराय । गए द्वारिकाकों यदुराय ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकबिना बिरचिते महाभारतदर्पणे आदिपर्बणि युधिष्ठिरराज्य लाभोनाम अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द॥ * ॥

जनमेजयउवाच ॥ इमि लहि पांडव राज्य महान । आगे कहा कियो मतिमान ॥ ते सब महा सत्ववर बीर । रमे द्रौपदीसों किमि धीर ॥ पाँच पाण्डव द्रौपदी एक । रहो कान बिधि धर्म्म बिबेक ॥ सुनो चहत सो सह बिस्तार । कहो सो बिधिवत सुमुनि उदार ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच राज्य पायकै बिधिवत धर्म्म । पालन कियो युधिष्ठिर पर्म ॥ पांडव जहँ बैठे रणधीर । आए नारद तपस गँभीर ॥ आसन जौन आपनो पर्म । दयो महामुनिकौं नृप धर्म॥ बैठे मुनिबर जब तब भूप । पूजन कियो यथा अनुरूप ॥ राज्य निबेदन करिकै पर्म । ठाढे भए जोरि कर धर्म ॥ आशीर्बाद देइ तपधाम । नृपसों बैठन कहो ललाम॥ पठयो कृष्णा पास कहाय । आए नारद मुनि बरदाय॥ कृष्णा शुचि ह्वै धरि पट पर्म । मुनिपद बन्दे आय सधर्म ॥ ठाढी भई जोरि कै पानि । आशीर्बाद

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पाय सुख दानि॥ विदा कियो जब मुनि तपधाम। कृष्णा गई स्वभौन ललाम॥ तब रहस्यमे मुनि मति ऐन। कहे पांडवनसौं इमि बैन॥ नारदउवाच॥ कृष्णा धर्म सुपत्नी एक। तुम पति पांचसौं सहित विवेक॥ जाते तुममे भेद न होय। हे पांडव करिए बिधि सोय॥ सुन्द उपसुन्द दनुज हे दोय। तिनकौं जीति सकै नहि कोय॥ भ्राता दोऊ अतिबल भौंन। बध्य अन्यसौं रहे न तौंन॥ एकराज्य अरु एकै धाम। आसन शय्या एक ललाम॥ मरे सु तिलोत्तमाके हेत। भए कामसद मोहित चेत॥ अन्योन्य प्रीतिकर सौहृद जौंन। भूपति तुम्हे राखिवैं तौंन॥ जाते तुममे भेद न होय। अहो युधिष्ठिर कीजै सोय॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सुन्द उपसुन्द कौनके पुत्र। कैसैं भयो भेदको सूत्र॥ कैसे मारेगए सुतौंन। ही तिलोत्तमा नारी कौंन॥ सुनो चहत सो सह बिस्तार। कहो महा मुनि कृपागार॥ नारदउवाच॥ सुनऊ पुरातन यह इतिहास॥ भ्रातन सहित हमारे पास॥ हिरण्यकश्यपके कुल मांह। भयो निकुम्भ दैत्य नरनाह॥ ताके तनय भए बलवान। सुन्द और उपसुन्द सुजान॥ निश्चय एक सुकारज एक। रहो दुहून समान बिवेक॥ भोजन निद्रा प्रिय कृतकर्म। हो अन्योन्य दुऊनको पर्म॥ प्राण एक द्वै रूप समान। ऐसे जानि परे बलवान॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

त्रिभुवन जीतनकौं कियो तिन बिचार बलधाम। जाय विंध्यगिरिमे लगे करण तपस्या साम॥
बायु भक्षत अपनो करत मांस हवन हविपुष्ट। ऊर्ध बाऊ ठाढे रहे क्षितिपर दए अँगुष्ठ॥
व्है बिनिद्र तिन तप करो महा घोर अति मान। लहि तप तेजस प्रगट भो गिरिमे धूम महान॥
बिघ्न करण तब देवता लगे भरे भय भूरि। तिन एकौ मानो नही रहे ध्यानमे पूरि॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

आय बिधितब कहो तिनसों कहऊ वांछित जौंन। सुन्द हे उपसुन्द तुमकौं देहि हम बर तौंन॥ देखि बिधि कौं जोरि अञ्जलि दोऊ ठाढे होय। कहन लागे जौंन इच्छा रही सो सुख भोय॥ काम रूपी सहित माया शस्त्र बिद्या जौंन। अमर व्है हम रहैं दोऊ दीजिए बर तौंन॥ ब्रह्मोवाच अमरत्व बिनु बर होय गो सब तुम्हे असुर महान। अमरत्वको शङ्कल्प पहिलैं करो तुम न सुजान॥ त्रैलोक्यको जय चाहिकै तुम कियो तप अतिमान। होयगो सो सकल तुमकों नियत मो बरदान॥ अमर सम तुम मृत्युकी बिधि कहऊ और बिचारि। देहि सो हम तुमहि नियमित चित्तमे निर धारि॥ * ॥ सुन्दोपसुन्दावूचतुः ॥ * ॥ जीव त्रिभुवनके न हमको होहिं भयकर अन्य। मरहि तब हम बन्धु दोऊ मारिकै अन्योन्य॥ * ॥ पितामहउवाच॥ * ॥ मरण तुम्हरो होयगो एहि भांतिसों वरबीर। और सों नहि मरऊगे तुम सुनऊ हे रणधीर॥ * ॥ नारदउवाच॥ * ॥ देइ बिधि बरदान तिनकों गए अपने धाम। भए ते तपतैं निबृत्ति सु पाय कै मनकाम॥ जानि तिनकों लब्ध वर हे सुहित तिनके जौंन। गए तिनके पास पूरित हर्षसों हिय भौंन॥ बसन भूषण

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बिबिधि बिधिके पहिरि कै अभिराम। एक मत व्है करण लागे दोऊ अपनो काम॥ दैत्य पुरमे आ०प०
भो कोलाहल मोदमय सुखदान। करत क्रीडा भयो तिनकों बर्ष दिवस समान॥ करि निवृत्त
सु परम उत्सव दैत्य ते बलधाम। कियो त्रिभुवन जीतिवेकौं सबिधि सबल पयान॥ कूदि कै दोउ
दैत्य नभकौं गए जहँ सुरओक। जानिकै बरदान भाजे गए सुर बिधिलोक॥ जीति सुरपुर यक्ष
राक्षस भूत खेचर जौंन। मारि तिनकौं भूमिपर फिरि गये दुर्म्मद तौंन॥ पैठिकै पातालमे सब
जीति लीन्हे नाग। सिन्धुबासी म्लेछ जीते रहे जे बरभाग॥ जीतिवेकौं भूमि सिगरी दियो फिरि
फरमाय। बाक्य ऐसो बोलि तीक्ष्ण सैन सकल बोलाय॥ देवर्षि अरु राजर्षि जे हबि देत मख
करि माम। हनऊ तिनको देवबल जे बृद्धि कारक काम॥ भए असुर प्रवृत्त लागे हनन ऋषि
द्विज धाय। देखिकै गिरि गहनमे भए लीन बिप्र पराय॥ दियो अतिशय क्रोध करि जिन मुनि
तिनकौं शाप। भयो बर बश तौन निष्फल सकल तपस प्रताप॥ भग्न आश्रम किए सिगरे
श्रुवा डारे तोरि। अग्निहोत्र ऊताश्नो लै दए जलमे बोरि॥ भयो हाहाकार दशदिशि भजे
सुर मुनि सर्ब। गए बिधिके पास व्याकुल भरे भीति अखर्ब॥ जीति करि त्रैलोक कम्पित खबश
करिकै माम। जायकै कुरुक्षेत्रमे ते रहे बरबल धाम॥ भे पितामह पास सिगरे देव मुनि गण
जात। कहो क्रमते सुन्द औ उपसुन्द छत उत्पात॥ पितामह सुनि क्षणक चितमे रहे तौन
बिचारि। जौंन बिधिसौं होय तिनको नाश सो निरधारि॥ बिश्वकर्म्मासौं पितामह कहो तब एहि
भांति। रचऊ बनिता एक अद्भुत भरी नख शिख कांति॥ बिश्वकर्म्मा पितामहके बन्दि पद अभि
राम। रची बनिता चिन्ति चितमे रूप कैसी धाम॥ रत्नकोटिन तास तनमे पचित करि रुचिरङ्ग
करे नखतें शीषलौं सब प्रभा पूरित अङ्ग॥ नही कोऊ अङ्ग ऐसे दृष्टि जिनमे जाय। फेरि बाहेर
कढो चाहै सिन्धु सुषमा पाय॥ लेइ तिल तिल सार सुषमा तिन्हूँ पुरमे जौंन। नाम तास ति
लोत्तमा बिधि धरो लखि छबि मौंन॥ जायकै तेहि पितामहके बन्दि पद अभिराम। कहो
मोकौं रची जाके हेतु सो बिधि काम॥ * ॥ पितामहउबाच॥ * ॥ सुन्द अरु उपसुन्दकौं तुम
करऊ लोभित जाय। ते परस्पर मरहि जातें क्रोधकौं अतिपाय॥ * ॥ नारदउबाच॥ * ॥ पिता
महके बन्दि पद तहँ देव गण हे जौंन। करण लागी तिन्हे मण्डल चहूँदिशि छबिभौंन॥ पूर्व
मुखहे पितामह हे तास दक्षिण ईश। रहे उत्तर देवता चहूँ ओर ऋषि अवनीश। इन्द्र हरको
धैर्य्य वश नहि फिरो मुख अभिराम। कढो हरकों बदन चऊदिशि गई जित बरबाम॥ इन्द्रके चऊँ
ओर निकसे देहमे बर अक्ष। भे चतुर्मुख ईश तबसौं इन्द्र भे सहसाक्ष॥ देव और महर्षि तेहि
दिशि फिरे करि मुख बैन। तिलोत्तमा जेहि ओरकौं किय करत मण्डल गौंन॥ भयो कारज
चलत ताकें लियो सुरगण मानि। महत अद्भुत रूपकी अति सिद्धि सम्पति जानि॥ जोति त्रिभु
बन दैत्य ते जग निःसपत्न बिचारि। लगे बिहरण छोडि कै पर यत्न आनद धारि॥ भाग्यबलु सृष्टि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० सौं लहि मोद वृद्धि ललाम। लगे नाना भांति बिहरण पाय थल अभिराम॥ विंध्यके सम शिखर पर तरु सघन सुमन समूह। जाय तहते लगे बिहरण सङ्ग बनिता जूह॥ पान करि अति बारुणी मद मत्त सबविधि तौंन। तिलोत्तमै सो समै लखिकै तहां कीन्हौं गौंन॥ पहिरि सूहा सूक्ष्म अम्बर एक अतिहि ललाम। सुमन बीनति परी तिनकी दृष्टिमे छविधाम॥ सुन्द औ उपसुन्द लखि कै होय कामाशक्त। दुऊन पकरे जाय दोऊ हाथ व्है मदमत्त॥ कहन लागे परस्पर यह उचित हमकौं बाल। होय क्रोधाशक्त कीन्ही दुऊन भृकुटि कराल॥ कोप अग्नि अमान बाढो भसम व्है गो नेह। लई तिन गुरु गदा करमे भरे दारुण तेह॥ लगे करण प्रहार दोउ भरे मद बल बान। गदाको लहि घात दोउ गिरे बिगलित प्रान॥ भजे सहवर सकल तिनके गए पैठि पताल। सहित देवन तहां आए पितामह छितिपाल॥ दियो सुवर तिलोत्तमाकौं पितामह अभिराम। यथा सुख तुम करऊ सञ्चर जगतमे छवि धाम॥ देय ताकौं सुवर ऐसो इन्द्रको जयलोक। व्है प्रसन्न सु पितामह तब गए अपने ओक॥ नारदउवाच॥ एक निश्चय सुहृद दोऊ हे सहोदर दौंन। लरे हेत तिलोत्तमाके करे यमपुर गौंन॥ कहत यातैं स्नेहते हम सुनऊ नृपति सनेत। होंय तुममे भेद जैसैं नही कृष्णांहेत॥ करऊ तैसो होयगो तब भद्र मम प्रिय पर्म्म॥ वैशम्पायन उवाच॥ वचन सुनि यह महामुनिके पांडुसुत सह धर्म्म॥ बर्ष दिनको बार बाँधो क्रमहितैं तिन सर्व। महामुनिके निकट ऐसो कियो नियम अखर्व॥ द्रौपदीके निकट देखै अन्यकों जो अन्य। बर्ष बारहि नियम करि सो करै बास अरन्य॥ नियम यह ठहराय नारद गए अपने धाम। रहे तैसैं सकल पाण्डव सङ्ग कृष्णा बाम॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि सुन्दोपसुन्दवध वर्णनो नामोणपञ्चाशोऽध्यायः॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ करि प्रतिज्ञा रहे ऐसैं पाण्डुतनय ललाम। अन्य भूप खवश्य कीन्हे शस्त्रबल बलधाम॥ रहो जैसे पाण्डवनके खवश कृष्णापर्म। तौन नियम निबाहि वेसे चारु चाहि खधर्म॥ बऊत बर्ष सुराज्य तिनकौं करत गे जब तुष्ट। बिप्रगोधन हरो काहूँ आय तस्कर दुष्ट॥ हरैं गोधन क्रोध करि नृप द्वारपैं द्विज आय। करण लागो सोर नाना भाँति बचन सुनाय॥ षष्ठांशहारी भूप जौं नहि करै रक्षा पर्म। ताहि सिगरे देशको सब लगत आय अधर्म॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ हरो द्विजधन चोर याते धर्मलोप विचारि। अभय दीन्हो पार्थ ताकौं प्राणिसे कर धारि॥ पाण्डवनके परम आयुध रहे हे जेहिधाम। द्रौपदी सङ्ग रहे तेहाँ धर्म नृपति सकाम॥ तहाँ चाहत जाईवेकौं शस्त्र लीबैं बीर। समुझि कै सोनियम तेहाँ सकल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प०

जायन धीर ॥ रुदन द्विजको गो हरण कृत सुनत पावत खेद । जानि पातक लगो चाहत जौन निन्दित बेद ॥ जौँन रोवतविप्रकौँ हौँ करौँ रक्षण पर्म । क्षात्रकर्म बिरोध लागत आय नास्तिक धर्म ॥ अजात शत्रु महीपको करिकै निरादर जौँन । गए गृहमे लगै हमकों अनृत पातक तौँन ॥ भूप भौँन प्रवेश कीन्हेँ होयगो बनबाश । बिप्र गोधन राखिए बरु लहै देह विनाश ॥ यह शोचि अर्जुन जाय नृपढिग लेय आज्ञापर्म । लै सु धनुष तूणीर रथचढि चले पहिरि सुबर्म ॥ मारि चौर समूह द्विजकौँ देइ गोधन सर्ब । आयकै नृपचरण बन्दे पाय प्रीति अखर्ब ॥ कहो पारथ नृपति सौँ तब देऊ बनब्रत मोहि । सत्य जातेँ रहैँ मेरो पूर्ब पनकौँ जोहि ॥ सुनत अप्रिय भूप आरत खलित बोले बैन । कियो जौन प्रवेश द्विजहित हमै अप्रिय है न ॥ जाय जौँ गुरुनिकट अवरज ता न धर्म बिरोध । जाय अवरज पास गुरु तौ धर्मलोप सुबोध ॥ नही बनकौँ जाऊ यातेँ लगतहै न अधर्म । * । अर्जुन उवाच । * । सत्यसौँ नहि चलौँगो है सत्य भूपति पर्म ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच लेइ आज्ञा भूपकी बन चले पारथ बीर । बेदबिद बर द्विजनको सगँ चलो भीर गभँीर ॥ सूत बन्दी सह पुराणिक साधुसङ्ग उदार । पार्थ सङ्ग सहाय लीन्हे गए गङ्गाद्वार ॥ लखत पथमे सरित सरवर बिपिनि नाना पर्म । सुनऊ भूपति कियो तेहाँ जौन अद्भुत कर्म ॥ करे बिप्रन अग्निहोत्र अनेक तहँ अभिराम । भयो तातेँ तीरगङ्गा द्वारको छबिधाम ॥ *◆*◆*◆*◆*◆**

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

गङ्गास्नान करणकौँ धीर । जिष्णु गए बरबीर गभँीर ॥ करिकै स्नान सु संध्या पर्म । तर्पण कीन्हों सबिधि सधर्म ॥ कढन चहो जब जलतेँ भूप । तब यह कौतुक भयो अनूप ॥ नागराज कन्या अभिराम । हरिलै गई आपने धाम ॥ लखि पारथको अद्भुत रूप । कामासक्त सु होय अनूप ॥ बरत लखोतहँ पावक पर्म । नागराज गृह माह सधर्म ॥ तहाँ हवन कीन्हो कुरुनन्द । अग्निलहो अतिमोद अमन्द ॥ अग्निकर्म करि फाल्गुण बीर । तासौँ बोले बचन गभँीर ॥ कान हेत यह साहस बाम । कियो कौँन हौ तुम अभिराम ॥ भई कौनतेँ भर। सुबेश । कहौ कौनको है यह देश ॥ * ॥ उलूप्युवाच ॥ * ॥ ऐरावतकुल सम्भव नाग । है कौरव्य महा बलभाग ॥ ताकी हौँ दुहिता यह धाम । देखि रूप तव भई सकाम ॥ मोहि अनन्य जानि कुरुचन्द । आत्म दानदै भरऊ अनन्द ॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ ब्रह्मचर्यब्रत हमकौँ पर्म । द्वादश बर्ष दियो नृपधर्म ॥ सो न अनृत करि सकत महान । चहत कियो तो प्रिय सुखदान ॥ * ॥ उलूप्युवाच ॥ * ब्रह्मचर्य कारण सबिधान । हमसब जानति सुतऊ सुजान ॥ कृष्णाकारण यह ब्रत बीर । नही औरसौँ सुनऊ गभँीर ॥ इतहू है नहि दूखित धर्म । सुन्दर मो रक्षण कृतपर्म ॥ भक्त आर्त्तका भजि बो जौँन । सुभग सुनऊ है सतमत तौँन ॥ नहि अैसो करिहौ सुखदान । हमै देखिहौ तौ गत प्राण ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० प्राणदानको धर्म अमन्द । तौन करऊ हे कुरुकुलचन्द ॥आरत दीननके सु शरण्य । शरणद होऊ हमै तुमधन्य ॥ कामारत हम याचति तोहि । पूरण काम करऊ प्रभु मोहि ॥ अहिपति जाके सुनि इमि बैन । करो तास सङ्गम सह चैन ॥ रहे निशाभरि ताके भौन । भोरहोत किय पारथ गौन ॥ सहित उलूपी बीर उदार । अहि गहतँ गे गङ्गाद्वार ॥गई उलूपी अपने धाम । दे पारथकौं सुवर ललाम॥ जलचरतँ तुम होऊ अजेय । मोप्रिय पारथ बीर अमेय ॥ बिप्रनसौं सब कहि सुख दान । किय हिमगिरिके पार्श्व पयान ॥ लखि अगस्त्य बटको बलधाम । गिरि बशिष्टको गए ललाम॥ करि भृगुतुंग तीर्थमे स्नान । दिए अनेक दान अतिमान ॥ हिरण्य बिंदुके तीरथ जाय। लखत चले गिरिबन सुखदाय ॥ गए द्विजनसह बीर सुधर्म । प्राचीदिशि देखनको पर्म ॥ अङ्गबङ्ग के तीरथ जोन । करि सुगयादिक सिगरे तौंन ॥ दै बिप्रणको दान अनेक । गे कलिङ्गढिग भर बिबेक ॥ बिदा भए ते द्विजबर सर्ब । रहैं जे पारथ सङ्ग अखर्ब ॥ खल्प जननसगँ पारथ बीर । गए समोद सरित्पति तीर॥लखत कलिङ्ग देश अभिराम । गे महेंद्रगिरि पास ललाम गए सिन्धु तट व्है मणिपूर । भरे महा आनदसो हूर ॥ तँह तँहके तीरथ अभिराम । लखत देवतनके बरधाम ॥ मणिपूरनगरमे देखो जाय । चित्रांगदा नाम सुखदाय ॥ भूप सुता सुषमाकी धाम । भए देखि पारथ सह काम ॥ गए चित्र बाहन नृप पास । कहन लगे फाल्गुण मतिरास ॥ बरो चहत तो कन्या भूप । हम क्षत्री तो कुल अनूरूप ॥ सुनि बूझो तेहि भूप ललाम । काके पुत्र कहो तो नाम ॥ हम पाण्डव कुन्तीसुत भूप । कहत धनञ्जय नाम अनूप ॥कहो नृपति तेहि पारथ पास । पूर्व हमारे भो बलरास ॥ भूप प्रभञ्जन नामक बीर । बिना पुत्र व्है दुखित गँभीर ॥करन तपश्या लगो महान । भए प्रसन्न शम्भु सुखदान ॥ एकैक प्रसवतो कुलमे भूप। ह्वैहै दिय बरदान अनूप ॥ सबके भए सु पूर्व कुमार । भई हमारे सुता उदार ॥ ताहि पुत्रसम मानि प्रसंश । ताते चहत चलायो वंश ॥तामे होय एकसुत जौंन। होय सो सो कुल बर्धन तौंन ॥ यह करि प्रथम प्रतिज्ञा पर्म । फेरि बरऊ तुम याहि सधर्म ॥ करिकै प्रथम प्रतिज्ञा तौंन । पारथ बरी ताहि छबिभौंन ॥ बर्ष तीनि तहँ करिकै बास । करि उत्पन्न पुत्र बलरास ॥ पार्थ बिदा भूपति सौं होय । चले सु दक्षिणदिशि सुखभोय॥ दक्षिण तीर्थ सिन्धुके तीर । ते सब देखत सुमति गँभीर ॥ सौभद्र अगस्त्य तीर्थ अभिराम । कारन्धम पौलोम ललाम ॥भारद्वाज तीर्थ शुचि नीर । देखो जाय धनञ्जय बीर ॥ तिन ढिग कोऊ मनुज न जाय । तब पूछो मन बिस्मय छाय ॥ मुनिबर ए तीरथ अभिराम । इन ढिग जात न कौं तपधाम ॥

॥ *॥ तापसउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारथ इनमे बसत है पाँच ग्राह अति घोर । स्नान करन जे जात तेहि पकरि खात बरजोर ॥
बरजो मुनिन सुवचन यौं कहिकै निर्भय बीर । तऊ गए पारथ तहाँ देखो तीर्थ गभीर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

वैशम्पायनउवाच॥सौभद्रतीर्थमे जायकै महाबीर बलवान।लगेपैठि कै करनतहँ अति निर्भय अज्ञान॥ आप्०
ग्राह आइकै पायगहि तब खैचो अति घोर। जल बाहेर पारथ कढे ताहि गहैं बरजोर॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कढत जलतैं भई सो अति सुन्दरी बर बाम । देखि ताकौं पार्थ बूझो कौंन तुम अभिराम॥ बर्गोवाच ॥ *॥ नाम बगा अप्सरा हम रही धनपति पास । सखी चारि समेत कामग भरी रूप बिकास ॥ गई सुरगति लोकमे तहँ लखो ब्राह्मण पर्म। भरो तेज स्वरूप जाको सुतप नियमित कर्म्म॥ देखिकै तपरूप ताको विघ्न करिबे हेत। गई आश्रम माह ताके भरी मन्मथ चेत॥ सैारभेयी सह समीची बुद्बुदा अभिराम। लतो पँचँई सहित कीवैं ताहिकी बश काम॥ नाचि गाय सुभाव नाना भाँति कीन्हे सर्व। भयो च्युत नहि ध्यानते मन तास अचल अखर्व॥ शाप हमकौं दियो तेहि द्विज धारि महत अमर्ष। ग्राह व्है कै रहो जलमे जाय सहसन वर्ष॥ शरण ताके भई बिनती करति इमि हम सर्व । शापसौं तब भयो हमकौं मरण प्राप्त अखर्व ॥ क्षमा करऊ अज्ञानतासों कियो हम बश काम । जानि बाम अबध्य नियमित विप्र करुणाधाम ॥ धर्मधुर मति होऊ हमकौं सुनऊ हिंसन योग। बाल अबल अबध्य सिगरी कहत सतमत लोग॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥* सुनत अैसे बचन तिनके भयो मुमुनि प्रसन्न । कहो अैसे बचन तिनसौं परम करुणापन्न ॥ शत सहस्र अन्तवाचक कहतहै मतिरास। होय तुमकौं बरष शतलौं ग्राह तनमे बास॥ करै गो जल बाहिरे जो ग्रसत तुमकौं बीर । लहऊगो तब पूर्व तनु तुम सुनऊ बचन गँभीर ॥ बचन हौं नहि कहत मिथ्या हँसतहूसे बाम । मोक्षते तब होहिगे ते तीर्थ नारी नाम ॥ *॥ बर्गोबाच॥ *॥ बन्दि कै तेहि बिप्रकों करि तीर्थ चिन्तन तान। फेरि सो नर लगी चिन्तन अचिर मोचिहि जौंन॥ भरी दुखसौं रही जहँ हम करत चिन्तन सर्व। देखि नारद मुमुनि आए लही मोद अखर्व॥ बन्दि कै मुनिचरण ठाढी रही लज्जित होय । मुमुनि बूझो मूल दुखको दियो कहि हम रोय ॥ कहा मुनि मुनि दक्षिणाब्धि समीप तीरथ बान। रहऊ तिनमे आइहै तहँ पार्थ बीर महान॥ काढि जल तें देइगो सो तुम्हे पूरव रूप । सुनो तब अब भयो हमकौं तौंन सत्य अनूप ॥ यथा मोचन कियो मोकों तथा हैं ए चारि। सखी मेरी बोर इनहू करऊ बाहर बारि । *॥ वैशम्पायनउवाच॥ * तिनहि जल तें काढि कीन्हो शाप मोचन बीर । पूर्व रूप समेत तिनकों बिदा करिकै धीर ॥ गए फिरि चित्राङ्गदाके लखनकौं मणिपूर । बभ्रुवाहन पुत्रकों लखि मोद पूरे सूर॥ गए फिरि गो कर्णकों तहँतें विभलु महान । गए पश्चिम सिन्धुतटके लखत तीर्थ सुजान ॥ तीर्थ परम प्रभास ताकों गए अति अभिराम। सुनत ताकों तहा आए कृष्ण आनद धाम॥ मिले लखि अन्योन्य दोऊ भरे मोद गँभीर । बूझि कुशल सु तहाँ बैठे सख्य साधन धीर ॥ हेतु बूझो पार्थसों बन गमनको यदुनन्द। कहो अर्जुन भयो जो बृत्तान्त पूर्व अमन्द॥ बिहरि तेहाँ कृष्ण पाण्डव बासकों अभिराम॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० गए रैवत अद्रिकों सुखभरे बीर ललाम ॥ कृष्ण आज्ञाते रचे हे बासभाँज सुभृत्य । सहित भोजन भाँति नानाशैन शय्याहित्य ॥ ग्रहण करि मणि बसन भोजन कियो पार्थ ललाम । नृत्य देखन लगे दोऊ बीर अति बलधाम ॥ बिदा करिके नर्तकनकौं सहित पाण्डवबीर।लगे विहरन सेजपै कहि वृत्तपूर्व गँभीर॥ दिग्गनके बृत्तान्त कहि सुनि गए दोऊ सोय । भोर जागे नित्यकृतकरिकै अलंकृत होय ॥ मणिन जडित सु रथनपैं चढि कृष्ण अर्जुनबीर । द्वारिकाकों चले मंडित पूर्व सु पुर गँभीर॥ पौर प्रमदा पुरुष पार्थहि देखिबेको आय । राजपथमे भए ठाढे बेष बिबिधि बनाय ॥ भोज अन्धक बीर सिगरे सहित सुषमा धीर। भे यथोचित मिलत ते सब भरे मोद गँभीर ॥ बहुत दिन श्रीकृष्णके बर भाँनमैं अभिराम । रहे पारथ कृष्णकेसगँ भरे मोद ललाम॥ भयो उत्सव वृष्णि अन्धक बंशकों अति पर्म्म ।गए तेहाँ सकुल सिगरे समुद भूप सधर्म्म॥दिए नाना भाँतिके तिनदाज तहँ अभिराम । रत्न रचित सु लसत गिरिके चहूदिशि बरधाम ॥ बजत नाना भाँतिके बादित्र तहँ सुखदान । ठौर ठौरहि नचत नर्त्तक होत गान महान ॥ युवा बाल सु वृष्णिबंशज धरैं बेष बिचित्र । चढे रथपर लसत कोटिन लखत होत चरित्र ॥ उग्रसेन सराम काम ससाम्ब यदुकुल बीर । चढे मणिमय रथनपैं तहँ गए समुद गँभीर ॥अक्रूर सारण वभ्रु गद सु बिदूरथ पृथु जौंन । असंख्यहै यदु वृष्णिबंशज कहैं कहलौ तौन ॥ सहित प्रमदन नृत्य देखन लगे ते तँह जाय । भयो उत्सव रम्य अतिशय भरो सुख समुदाय ॥ वासुदेव सु सहित पारथ तहाँ आए बीर। फिरन लागे मध्य उत्सव चढे रथपर धीर ॥ लखो अर्जुन तहँ सुभद्राकों परम छबिधाम । देखतहि अति भए व्याकुल पार्थ है बश काम ॥ देखि मन्मथ व्यथित बोले हँसतसे यदुबीर । बनेचरको कामबश इमि होतहै जु अधीर ॥ है सहोदर सार्णकी यह स्वसा मो अभिराम । परम प्रिय बसुदेवकोंहै यह सुभद्रानाम ॥ चहत तो मन कहैंतौ बसुदेवसों यह बैंन ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ स्वसा तो यह नही मोहै कौनकों छबिअैन ॥ होय ध्रुव कल्याण मेरो सर्वबिधि अभिराम । होय महिषा स्वसा तो यदुबीर जौ गुणधाम ॥ प्राप्ति की जो उपाय हमसौं कहऊ यदुपति तौंन । करहिगे सो करन लायक नरणकेहै जौंन ॥ * ॥ बासुदेवउवाच ॥ * ॥ है स्वयम्बर व्याह क्षत्री नृपनकौं अति पर्म्म । बरै काको कन्यका यह जानि परतन मर्म्म ॥ हरणकरि बलसो यो क्षत्री लेतहै कन्याहि । धर्म्महै यह परम सिगरे कहत बिदुष सराहि ॥ हरऊ अर्जुन सबलसों तुम स्वसा मेरी ताहि । है स्वयम्बर महा संशय बरैकाकों चाहि ॥ कृष्णको मत जानि धावन शीघ्र गामी जौंन । पार्थ पठयो धर्म पैं कहि कियो चाहत जौंन ॥ सुनत आज्ञा दै पठायो भूप भूषण धर्म्म । भे सुभद्रा हरणकौं सुनि पार्थ हर्षित पर्म्म॥सुनि सुभद्रा गई रैवत पूजिबेकौं अयापाइ आज्ञा कृष्णकी भए पार्थ सज्जित सद्य॥ घटित काञ्चन चढे रथपर धरे धनुबर बर्म।सक्ति खड्ग तुणीर तोमर भरे भेदक मर्म ॥बायुबेगी अश्वरथमे लगे किङ्किणि जाल । लए शस्त्र समूह सोहत ज्वलन सदृश बिशाल ॥ चले मृगया

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व्याजत कढि द्वारिकासों बीर। पूजि रैवतकों सुभद्रा फिरी देखत धीर॥ बाह गहि कै लई रथसों आ०प०
अङ्क ऊपर धारि। गहो हालिन नगरको पथ खरथ घन रव चारि॥ हरी ताकों देखि रक्षक भजे
पुरकी ओर। सभाद्वार समीप लागे कहन करि कै सोर॥सभापालक सों कहो तिन कियो पारथ
जौंन। सुनत तेहि बजवाय दीन्ही युद्ध भेरी तौंन॥ सुनत ताको वृष्णि अन्धक भरे छोभ महान।
सभाकों चलि गए ते सब बीरबर बलवान॥ दिव्य आसनपर सु बैठे जाय कै ते सर्ब।जिष्णु बिक्रम
सभापालक लगे कहन अखर्ब॥ सुनत ते सब क्रोध करिकै करे राते नैन। कहन ऐसे लगे भृत्यन्ह
बोलि आतुर बैन॥ करऊ योजित रथनकौं धरि शस्त्र नाना पर्म। धनुष ल्यावऊ कठिन गुर्वी गदा
काञ्चनवर्म॥ कहत ऐसें तुमुल बाढो रोर चारोओर। वारुणीमदमत्त गे बलभद्र तहँ सुनि सोर॥
कहन तिनसों लगे ऐसे बचन बर बलभौंन।करत हो का सर्ब तुमहैं कृष्ण बैठे मौंन॥ जानि इनको
भाव तब तुम करऊ क्रोध महान। रुचित इनकों होय जो सो करऊ सुनऊँ सुजान॥ सुनि हला
युधके बचन बस वृष्णवंश सुजान। रहे चुप व्है कृष्णको मत सुननकों सुखदान॥ कहन फिरि
बलभद्र लागे कृष्णसों इमि बैन। कहा बैठे मौन व्है कै सुनऊ हे मति अैन॥ प्रीतिसों तब पार्थको
सत्कार कीन्हों सर्ब। सुनऊ तेहि यहि भांति हम प्रतिकर्म कीन्हो खर्ब॥ देय शिरपर पाव मम
तेहि हरी भगिनी पर्म। नही सहिबे योग्य हमकों कियो जो तेहि कर्म॥ निष्कौरबी क्षिति करौ
गे करि क्रोध हे यदुबीर। बलभद्रके सँग बलकि बोले सकल यादव धीर॥*॥ बैशम्पायन
उबाच॥*॥ कृष्ण सुनि यह बचन बोले धर्म नीति समान। कियो नहि अपमान जानऊ पार्थ
सकल सुजान॥ अर्थ लुब्ध न तुम्हे जानो बरे जो धन देय। गोसहश्रको मागि कन्या बीर क्षत्री
लेय॥ करै बिक्रम कौंन कन्याको सुयह अनुमानि। हरण क्षत्री योग्य याते कियो पारथ जानि॥
भो सुभद्रा सु यश यातैं योग्य बरकौं पाय। प्रथाको सुत पांडु नन्दन बीरबर बल काय॥ नही
देखत समरमे जो लेइ पार्थ हि जीति। बिना रुद्रन सुरा सुर तेहि सकत देइ न भीति॥ हस्त
लाघव शस्त्र शाली कौन ताहि समान। फेरि ल्यावऊ सामते तेहि सुनऊ सकल सुजान॥ खपुर
अर्जुन जाय गे जौं तुम्हे रणमे जीति। नष्टव्हे है सुयश तो है साम करिबो नीति॥ बचन सुनि
श्रीकृष्णके बलभद्र कीन्हो तौंन। फेरि ल्याए याय यादव पार्थकौं निज भौंन॥ व्याहि दीन्हो श्वसा
ताकौं बिहित बिधि अभिराम। रहे सम्बत एक तेहाँ धनञ्जय बलधाम॥बृष्णि पूजित बिहरि तेहां
सह सुभद्रा बीर। जाय पुष्कर पास बाकी काल बितयो धीर॥ गए खांडवप्रस्थ अर्जुन बर्ष द्विदश
बिताय। नियम सहित सुजाय बन्दे धर्म नृपके पाय॥ बिप्र चरण सु पूजि पारथ गए कृष्णा पास।
कहन लागी द्रौपदी इमि बिहँसि बचन बिलास॥ प्रथम बाधो होय तासे लगैं नूतन बन्ध। पूर्ब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० बन्धन होय ढीलो जगतको यह धन्ध ॥ देखि करति बिलाप कृष्ण हि सामके कहि बैन। कियो शीतल जो सपत्नी दाह हो हिय अैन ॥ आय आतुर दै सुभद्रहि गोप जाको रूप। भो पठावत भोन माहीं पार्थ बीर अनूप ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लसी सुभद्रा अधिक अति लहि गोपीको बेष। श्रेष्ट भवनमे जायकै भूषित कियो अशेष॥
बन्द कृष्ण श्वसा चरण कुन्तीके अभिराम। घ्राण कुन्ती सुमुर्द्धाको कियो लहि मुद माम॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

दियो आशीर्बाद कुन्ती ताहि भाँति अनेक। फेरि कृष्णा पास भद्रा गई सहित बिबेक॥
बन्दि अनुगा कहो आपुहि पाय कृष्णा चैन। मिली उठि कै सहित आदर लाय कै हिय अैन॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निः सपत्न तो होय पति कहो द्रौपदी ताहि। भद्रै कहो तथास्थु सो बिहँसि सामुहे चाहि॥
सहित मोद पांडव भए कुन्ती पायो चैन। प्रजा भई हर्षित सकल अर्जुन आए अैन॥

श्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनाराणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकबिना कृतभाषायांमहाभारतदर्पणे आदिपर्बणि अर्जुनबन या वासुभद्राहरणबर्णनोनाम पञ्चाशदध्यायः॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

इन्द्रप्रस्थ गो अर्जुन बीर। कृष्ण सुनो लहि मोद गँभीर॥ चले राम सह कृष्ण उदार। सहित बृष्णि बंशी सरदार॥ सह अमात्य सह भ्रातृकुमार। सह अन्धक यदुबंश उदार॥ सहित सङ्ग सना अभिराम। उद्धव अरु अक्रूर ललाम॥ प्रद्युम्न शाम्ब अरु पुत्र अनेक। महाबीरबर भरे बिबेक॥ आए इन्द्रप्रस्थके पास। दीवैँ दायज सहित बिलास॥ सुनत युधिष्ठिर भरि आनन्द। पठए माद्रीसुत कुलचन्द॥ आगैँ जाय मिले दोउ बीर। भरे परस्पर मोद गँभीर॥ ते ल्याए सह कृष्ण उदार। हलधर यदुबंशी सरदार॥ खांडवप्रस्थ नगरमे आय। लखो राजपथ अति सुखदाय॥ मार्जित मलय सिक्त अभिराम। फैले सघन सुमन छबि धाम॥ भरो सुढार धूपको गन्ध। मधुकर गुञ्जत फिरत मदन्ध॥ धनिक बनिक जन सहित बजार। लसत भरो धनधान्य उदार॥ राम सहितके सब यदुबंश। गए भूपके धाम प्रसंश॥ बिप्र पौरजन जौँन उदार। पूजे तिन यदुकुल सरदार॥ हलधरसौं मिलि कै नृपधर्म। कृष्णहि लाय हृदयसौं पर्म॥ मूर्ध घ्राण कियो सह प्रेम। मुद लहि लागे बूझन क्षेम॥ बिनय सहित कहि कुशल ललाम। भीमहि पूजो यदुपति माम॥ तब यदुबंशिनको नृप धर्म। बिधिवत किय सत्कार सुपर्म॥ दायज धन जो ल्याए माम। दियो युधिष्ठिरकौं अभिराम॥ घटित कनक मणि मंडित जौँन। चारि अश्व योजित मन गौन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सहित सारथी सुरथ हजार। कृष्ण चन्द्र ते दए उदार॥ अयुत गाय मथुराकी जौन। घट भरि देहि परम पय तान॥ घोरी दई हजार अमन्द। जिनकों रङ्ग रूप सम चन्द॥ *◆*◆**

आ०प०

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

दई पाञ्चशत चपल बछेरी। जाती बातपुञ्ज सम हेरी॥ दासी सहस सुन्दरी श्यामा। मणिन जडित मनु कञ्चन दामा॥ सेबा सकल भाँतिकी जानै। मनकी वृत्ति चित्तमे आनै॥ बाल्हीक देशके घोरे दीने। एकलक्ष मणि जडित नबीने॥ दीन्हो मनुज भार शत सोनो। कृत अरु अकृत भाँतिके दोनो॥ द्विरद दिए अति मदमतवारे मणिन जडित कज्जलसे कारे॥ एक सहस गिरि बरसे वाढे। अरिदल बल मर्दन अति गाढे॥ राम गुणें सम्बन्ध सु ढारो। दायजमे धन दीन्हों भोरो॥ धर्म नृपति सो सब धन लीन्हों। राम कृष्ण जो दायज दीन्हों॥ अन्धक वृष्णि रहे बर जेते। नृप बिधिवत पूजे सब तेते॥ अन्धक वृष्णि मोदसौं भारे। तहँ कुरु वंशिन सङ्ग बिहारे॥ तहँ बहुदिन रहि आनद मए। बिदा धर्म भूपतिसौं भए॥ रामवृष्णि अन्धक सँग लीन्हे। गए द्वारिका आनद भीने॥ बासुदेव पारथ सँग रहे। इन्द्रप्रस्थमे आनद गहे॥ मृगया करत बिपिनिमे दोऊ। दुष्ट जीव बाँचत नहि कोऊ॥ पुत्र सुभद्राके तब भयो। कुरु कुल कमल भानुसो नयो॥ निर्भय मन्युमान वर भाको। भो अभिमन्यु नाम है ताको॥ ज्यौं जयन्त सुरपतिकें जायो। तैसो पुत्र धन जय पायो॥ महा उरस्क दीर्घभुज भारी। वृषभाक्ष भानु सम तेजस धारी॥ अयुत धेनु काञ्चन बहु दयो। भूप युधिष्ठिर आनद भयो॥ बासुदेवकौं परम पियारो। बालपनेतें भो मुद भारो॥ भयो पाण्डवनको हिय हारी। हितचख कमल मधुव्रत चारी॥ शुभ कर्म रहे चूडा दिक जेते। बिधिवत किए कृष्ण सब तेते॥ बढो सुभद्रा सुत तहँ ऐसे। शुक्लद्वितीयातें शशि जैसे॥ धनुबेद चारि भाँतिनको जेतो। शीखो अर्जुनसौं सब तेतो॥ मत्रमुक्त कर मुक्त सु तौंन। मुक्त हरण की है बिधि जौंन॥ बिना मुक्त जो अरि संहारी। शिखो बेदके भेद बिचारी॥ अस्त्र बिधान रहो सब जेतो। फाल्गुण दयो पुत्रकौं तेतो॥ क्रिया बिशेष युद्धकी जेती। पार्थ दई ताकौं सब तेती॥ अस्त्र प्रयोग बिहित बिधि दीन्हों। सुभद्रहि अपने सम कीन्हों॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

दुर्धर्ष सिंह समान दर्प सु महाधनुधर बीर। मत्तगजबल दुन्दुभी सम जास घोष गँभीर॥ कृष्ण सम सब भाँति ताको लसो रूप महान। जई कृष्णा पाञ्चपतिते पाञ्च पुत्र सुजान॥ धर्मको प्रति बिंध्य सुत भो भीभते सुत सोम। भयो श्रुतकर्मा सु अर्जुनतनय बर बलतोम॥ शतानीक सु नकुलसुतसहदेव सुत श्रुतसेन। एक एक सु वर्ष अन्तर पाय कै गुण ऐन॥ द्रौपदीके भए ऐसें पञ्च पुत्र सु पर्म। जातकर्मादिक सु तिनके किए सबिधि सशर्म॥ धौम्य आय कराय दीन्हें कर्म बिधि वत सर्ब। पढो तिन श्रुतिशास्त्र धरि ब्रत ब्रह्मचर्य्य अखर्ब॥ शिखी सिगरी शस्त्र लिद्या दिव्य मानुष

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० जौँन। दई तिनहि पढाइ पारथ युद्ध बिधि सब तौँन॥ भीष्म अरु धृतराष्ट्रकी लहि परम आज्ञा माम। जीति लीन्हें चहूँदिशिके भूप जे बलधाम॥ धर्म नृप लहि भए सिगरे सुखी जनपद लोग। पुण्यकृत जिमि रहत देही पाय देह निरोग॥धर्म काम सुअर्थ आपुहि प्राप्त होत हमेश।तिन्है पालत भूप चौथो होय आपु सुनरेश॥ अचल लक्ष्मी तास थिरि अति धर्म बिधिवत धारि।धर्म नृपति सु राज्य पालत बंशबिहित बिचारि॥लसै भ्रातन सहित अैसैँ धर्म भूपति तज्ञ।यथा चारो बेदके सँग परम सोहत यज्ञ॥ धौम्य आदिक बिप्र नृपके लसे यों चहूँपास। यथा सुरगण मध्यमे सुरनाथ आनदरास॥ नही केवल जानि राजा प्रजा पूरे प्रीति। प्रजाकों प्रिय यथा तैसैँ करत भूपति नीति॥ नहि असह्य असत्य अप्रिय कहत भूपति बैन। लोकको हित होय भूपति रमत दायक चैन॥ बिगतचिन्ता मुदित पाण्डव लसत यौँ अभिराम। मनऊ परपुर दहनकों हैं पांच पावक माम॥ गए कछुदिन कृष्णसों इमि कहो जिष्णु गँभीर। होति उस्मा बऊत याते चलऊ यमुना तीर॥ सुहृदजन सह बिहरि तेहाँ आइ हैँ लहि साँऊ॥*॥बासुदेवउबाच॥*॥ यहै पार्थ परम इछा रही मो हिय माँझ॥ बैशम्पायनउबाच॥ धर्म नृपकी लेइ आज्ञा चले दोऊ वीर।गए सुथल बिहारको तहँ भरे मोद गँभीर॥ बने नाना भाँतिके तहँ रम्य हर्म्य उदार। लसत सुरपुर सदृश यमुनातीर सह बिसतार॥भक्ष्य भोज्य सुपेय रसमय महा धन कृत जौँन।गन्ध माल्य समेत सोहत मणिन मंडित भौँन॥ गए तामे कृष्ण फाल्गुण भरे मोद उदार।सङ्ग बनितनके लगे तहँ करण बीर बिहार॥चन्द्र बदना पृथुल श्रोणी पीन उरसिज जास॥लगे तिनके सङ्ग बिहरण भरे बीरबिलास॥ गिपिनिमे जलमे सु अङ्गन धाममे अभिराम।कृष्ण पांडव सङ्ग बिहरैँ भरी मन्मथ बाम॥ देहि कृष्णा अरु सुभद्रा तिन्है भूषण बास। बारुणीसों छकी बैठी दोऊ रानी पास॥कोऊ नाच कोउ गावैँ हसै कोउ मत्त। पान कोउ करैँ मदिरा चलत गिरहि अशक्त॥ बेणु वीण मृदङ्ग धुनिसों भरो भौन ललाम। जाय अर्जुन कृष्ण बैठे बिपिनिमे अभिराम॥परम आसन बनो जेहाँ सघन बिटप महान। बिजय बार्त्ता कहन लागे पूर्ब कृत सुखदान॥ तप्त काञ्चन सदृश आवत लखो बिप्र महान। जोति जाल बिशाल ऊचो लसत ताल प्रमान॥ समश्रु जाको अरुण मुख सम कंज जटिल उदार। चीर बसन गँभीर आवत धीर ज्वालागार॥ देखि ताकों भए ठाढे कृष्ण अर्जुन बीर।कहन लागो बिप्र [illegible]नसों बोलि बचन गभीर॥ निकट खांडव प्रस्थके तुम बीर वर बलधाम।बऊत भोजी बिप्र मोकां [illegible]भक्ष्य ललाम॥ कृष्ण जिष्णु सु एकदिन मोहि करऊ तृप्त महान।सुनत ताके बचन बोले बीर [illegible]न॥ कहहु हमसों करहु गे तुम अन्न भोजन जौन।करहि सबिधि तयार नाना भांतिसो [illegible]ब्राह्मणउबाच॥ अन्न भोजन करत हम नहि अनल हैँ बलवान। जौँन हमकों योग्य भोजन [illegible]सुजान॥ इन्द्र खाण्डव बिपिनि रक्षण करत हैँ बलवान। मोहि दहन न देत बर्षत आइ मेघ महान॥ बसत ताको सखा तक्षक नाग यासे बीर। सगण रक्षण करत ताके हेतु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बिपिनि गँभीर ॥ अस्त्रविद तुम बीर दोनो होऊ मोहि सहाय । बिपिनि खाण्डव करो भक्षण आ॰प॰
तुमहि रक्षक पाय ॥ अस्त्रविद तुम उदक धारा करऊ वारण सर्व । चरों हों तव बिपिनि खाण्डव
सहित मोद अखर्ब ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ भगवान अग्नि किमर्थ चाहो दहो खाण्डव
बिप्र । कहऊ सहबिस्तार ताकों सुनो चाहत क्षिप्र ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ प्राचीन
भूपति रहो श्वेतकि यज्ञ करता माम । किए यज्ञ अनेक दीन्हे द्विजनकों धनधाम ॥ यज्ञ कीबो
दान दीबो सहित ऋत्विज पर्म्म । नित्य बारहमास ताको यहै नियमित कर्म्म ॥ यज्ञको अति धूम
लागें काल चिरलों भूप। भजे ऋत्विज होय व्याकुल सकल अन्य स्वरूप॥ पाइ आज्ञा ऋत्विजनकी
भूप यज्ञ समाप्त । और विप्रण सङ्ग कीन्हो दानदै परजाप्त ॥ शत बर्षलों फिरि कियो चाहो सत्र
भूपति तौन । करत कोऊ नही ब्राह्मण बर्णकों नहँ गौन ॥ बऊत भूपति यज्ञ कीन्हो सहित
सुहृद सुजान । शान्त सहित बिनीत दीबें कहि यथेप्सित दान ॥ क्रुद्ध ह्वै राजर्षि विप्रणसों कहो
इमि बैन । होंहि जौं हम पतित कीजै त्याग तौ तपअैन ॥ यज्ञअङ्ग को न कीबो योग्यहै उपघात ।
परित्याग न उचित करिबे त्याग योग्य न तात ॥ कियो चाहत कार्य्य पाय प्रसाद तुमसों क्षिप्र ।
करत मेरो त्यागजौं तुम द्वेषसों सब बिप्र ॥ करैंगे हम और ऋत्विज यज्ञ हेतु सुजान । यह बचन
कहि द्विजबरनसों चुप रहे भूप महान ॥ भए शक्य न यज्ञ जब करवायबेकों बिप्र । कहो अैसें
क्रोधकरिकै भूपसों तब क्षिप्र ॥ नित्य रहय प्रवृत्त तुम्हरो कर्म्म सुनए भूप । त्यागकरिबो चहत
लखत न शान्त हमरो रूप ॥ त्वराकों अति करतहो कछु भए भूपति अज्ञ। रुद्रपैं तुम जाऊ तुमहि
करायहैं सो यज्ञ ॥ चलो तिनके बचन सुनि करिक्रोध श्वेतकि भूप । कैलाशके ढिग जाय लागे
करन तप अतिरूप ॥ करत बरहैं सोरहैं दिन मूल फल आहार । करैं अनमिष उर्द्धबाऊ सु
रहत सदृश पहार । षट मास बीतें कृपाकरि शिव गए भूपति पास । भूप मागऊ तौन बर जो तुम
हि आनद रास ॥ रुद्रसों करजोरिकै यह सुबर मागे भूप । देऊ यज्ञ कराय मोकों ईश करुणा
रूप ॥ भूपको सुनि बचन बोले रुद्र करुणाधाम ॥ * ॥ रुद्रउवाच ॥ * ॥ भूप यज्ञ कराइबोनही
है हमारेा काम ॥ उग्रतप तुम कियो यातें सुनऊ भूपति बैन । समय पाय कराइह हम तुम्हे
मख मतिअैन ॥ करऊ द्वादशबर्षलों व्रत ब्रह्मचर्य्य उदार । देऊ अनिश अखण्ड ऊतभुक बदन
मे घृत धार ॥ जाचकै नृपकियो सेा हर दियो आज्ञा जौंन ॥ तहां बारह बर्ष बीते कियो शङ्कर
गौंन ॥ भए हम सन्तुष्ट तुमसों सुनऊ श्वेतकि भूप । ममांश दुर्बासा करैहैं तुम्हे यज्ञ अनूप ॥
यज्ञको सम्भार सिगरो करऊ सञ्चित जाय । यज्ञको सम्भार सुनि नृप कियो सञ्चित आय ॥ जाय
कै नृप रुद्रत फिरि कहो सञ्चित पर्म्म । होय दिक्षा भोर मोकों करऊसो प्रभु कर्म्म ॥ रुद्र सुनि नृप
बैन लीन्हो बोलि मुनि दुर्बास । कहो देऊ कराय नृपकों यज्ञ हे तपरास ॥ स्वीकार करि मुनि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० आय नृपकों दियो सत्र कराय। यथाकाम यथोक्त बिधि बहु दक्षिणायुत चाय॥ भए सत्र समाप्त ऋत्विज बिदा करिकै सर्ब। गो स्वपुरकों श्वेतकीनृप भरो मोद अखर्ब॥ बन्हिकों तबतैं अजीरणको भयो सुबिकार। जानि हीन स्वतेज पावक लही ग्लानि उदार जाय तब विधि पास पावक कहो अपनो क्लेश। लहौं पूरुव प्रकृति जैसें करहु तौन निदेश॥ कहो हँसि बिधि बर्ष बारह पियो आज्य उदार। भो अजीरणको सु यातैं तुमहि अग्नि बिकार॥ लहहुगे तुम पूर्व प्रकृतिहि कहत करहु सु तौन। दहहु खाण्डव बिपिनि पूरब दहोहो तुम जौन॥ बसत तहँ सब जीव तिनको बसा को करि पान। पूर्ब प्रकृतिहि लहहु गे तब अनल तुम सुखदान॥ सुनत बिधिसो जाय खाण्डव पिबिनि मे सहबात। लगे भक्षण करन धारें क्रोध को उतपात॥ देखि पावक बरत तँह जे रहे जीव महान। अग्निकों ते शमन लागे करन सहित बिधान॥ करनसों गज बृन्द लै जल लगे डारन सर्ब। बहु बदनके अहि सलिल लै तहँ लगे तजन अखर्ब॥ और सिगरे जीव करिकै यथा योग्य उपाय। अग्निको नहि चलो बल तिन दियो बेगि बताय॥ यहि भांति वार सु सात पावक लगे तँह करि क्रोध। चलोनहि बलकछू तँह तिन कियो शमित सरोध॥ ग्लानि पाय निरास व्है शिखि गए बिधिके पास। कहो सब बृतान्त अपनो भयो जौन प्रयास॥ रहे क्षणक बिचारि बिधि फिरि कहो पावक पास। सुनहु खाण्डव दहन को यह जतन बिगत प्रयास॥ धरो नर नारायणौ नररूप क्षितिपर जाय। करणकों सुरकार्य्य कुरु यदुबंशमे सुखदाय॥ बासुदेव सु कहत अर्जुन तिन्हैं लोक ललाम। गए खाण्डव निकट दोऊ बीरवर बलधाम। सहाय तिनसों जाय मागहु दहन खाण्डव दाव। सुरपतिहुतें नहि होइ रक्षण करहु भक्ष्य सचाव॥ ****

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पावक सुनि बिधिके बरबैन। जिष्णु कृष्णपैं गए सचैन॥ कहो जाय तिनसौं जो भूप। सोपहिले हम कहों अनूप॥ अग्नि बचन सुनि अर्जुनबीर। समय सदृश बोले रणधीर॥ हमपै उत्तम अस्त्र सु सर्ब। बहुत भाँतिके दिव्य अखर्ब॥ धनुष नही सो मेरे हाथ। जातैं हों जीतों सुरनाथ॥ नहि मो भुज बीरय सम तौन। सहै समरमे बरबल जौन॥ हमै चाहि यह इतने बाण। चुकै न क्षिप्र किए सन्धान॥ रथपर भार न सकत चलाय। जितिक हमै चहिए रणपाय॥ अस्त्र दिव्य मनबेगी जौन। पांडुरबर्ण चाहिए तौन॥ घन निर्घोष सु भानु समान। रथकाञ्चन जो रण जयदान॥ शस्त्र कृष्णके सुबल समान। है न हनै जो असुर महान॥ कर्म्म सिद्धि की जौन उपाय। हे पावक ते देहु बताय॥ जातैं होय निवारित शक्र। बारिधार बर्षत व्है बक्र॥ पौरुष कृत जे कारय सर्ब। ते करिहैं हम अनल अखर्ब॥ करन स्वकार्य्य सिद्धिके जौन। दीबेयोग्य होहु तुम तौन॥ यह सुनि शिखि पारथके बैन। कियो बरुणको स्मरण सचैन॥ पावक चिन्तित आपुहि जानि। आए तहाँ बरुण सुखदानि॥ कहो बरुणसों अग्नि गभीर। सोम दयो जो धनुष तुणीर॥ देहु बरुण तुम हमकों तौन। कपि भूषित

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

काञ्चनरथ जौंन ॥ गांडिव धनुष लहि अर्जुनबीर । करिहैं मो कारय गम्भीर ॥ बासुदेव लहि चक्र आ०प० महान । करिहैं मो कारय सुखदान ॥ बरुण देऊ हमको सो अद्य । धनुष तुणीर चक्र अनवद्य ॥ बरुण तथास्तु कहो सुनि तौंन । दीन्हो सर्व कहो शिखि जौंन ॥ सबशस्त्रणतैं जान अविद्ध । मथै सकल शस्त्रणकों रिद्ध ॥ परदल गहन दहन अति मान । सहस शस्त्रसम एक महान ॥ सुरा सुरणसों पूजित जौंन । दीन्हो बरुण महा धनु तौंन ॥ अक्षय दीन्हो दोय तुणीर । जिनतैं घटै न बाण गँभीर ॥ कपिध्वज रथ सह दिव्य तुरङ्ग । जिनके रुचिर रजतसे अङ्ग ॥ रत्न जडित अति घाष अनूप । रचो बिश्वकर्म्माको भूप ॥ जेहिरथपैं चढि सोम समर्थ । मारि करे असुरणकों व्यर्थ ॥ तेहि रथपर चढि अर्जुन बीर । सहित कृष्ण अति लसे गँभीर ॥ कनक यष्टिध्वज लसत ललाम । ताप कपि अङ्कित अभिराम ॥ जाको शब्द सुनत अरिसैन । महा भीति भरि लहत न चैन ॥ रथको करि सु प्रदक्षिण जिष्णु । मनमे बन्दि जगत्पति बिष्णु ॥ चढो सुरथपर धनुधर बीर । धरैं शस्त्र बर बर्म गँभीर ॥ गांडीव चाप बिधि निर्मित पाय । लसोपार्थ अति आनद छाय ॥ अग्नि पुरस्सर करि बलधाम । धारि धनुषपर ज्या अभिराम ॥ बीर करो धनु ज्या टङ्कार । खांडव जीव भरे भयभार ॥ लहिरथ धनु अक्षय तूणीर । भयो समर्थ पार्थ रणधीर ॥ दयो कृष्णको चक्र उदार । अग्नि समान बज्रमय सार ॥ याते त्रिभुवनमे जे बीर । असुर नाग नर राक्षस धीर ॥ रणमे तिन्हैं जीति हौं सर्व । दहन सु अरिदल गहन अखर्व ॥ दरि अरिदल फिरि कर मे आय । रहिहै तोपहँ चक्र सुभाय ॥ बरुण दई गुरु गदा उदार ॥ करणि हार दितिकुल संहार ॥ कौमोदकी सु नाम प्रसिद्ध । भरो महा आरमर्दन सिद्ध ॥ अर्जुन बासुदेवसों बैन । अैसैं पावक कहो सचैन ॥ शस्त्र धनुष रथपाय अखर्व । भए योग्य त्रिभुवन जय सर्व ॥ एक इन्द्र पन्नगहित अर्थ । करिकै युद्ध होयगो व्यर्थ ॥ **

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ बासुदेव सु चक्रकौं धरि युद्धमे वरबीर । करैं काहि न भस्म क्षणमे क्रोध करि रणधीर ॥ गांडीवधनु धरि इषुधि अक्षय पायकै उत्साह । चहत जीतो लोक हौं सब युद्धमे ऊतबाह ॥ घेरिकै चऊओर बन यह होऊ ज्वलित ऊताश । अभय व्हैकै चरऊ रक्षण करत हम चऊँपाश ॥ अग्नि सुनिकै कृष्ण अर्जुन के बचन अभिराम । धरो तेज सरूप खांडव दहनकों अतिमाम ॥ फैलि चारो ओर लागे दहन बिपिनि महान । भो दिखावत प्रलयको सो रूप अति बलवान ॥ शोर भो घन घोरकैसो जीव कांपे सर्व । लसो बन गिरि कनक ज्यौं लहि भानु किरण अखर्व ॥ चढे रथपर बीर दोऊ घेरि बन चऊँओर । हनन लागे जीव जे कढि चलत सूधे घोर ॥ परत अन्तर जानि नहि चऊँ ओर अति गति रेखि । लसे चक्र अलातसे रथ दोऊ सवदिशि देखि ॥ जरत खांडव बिपिनि जीव अनेक उडि नभ जात । करत भैरवनाद तिनको करत पार्थ निपात ॥ कोऊ आधे जरे झरसे कोउ बरत महान । जरत कोउ हियलाय सुत पितु मातकौं अति मान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० दाविदन्तन उछरि कोऊ निकसि चाहत जान। घूमिकै ते गिरत पावक माह आय अमान ॥ अस्त्र पक्ष सदग्ध पक्षी गिरत सकरुण मन्त । भए ब्राय जलासयो जरि मरे जीव अनन्त ॥ बरत कोऊ परत देखे जीव अग्नि स्वरूप । शरविद्ध कोटिन गिरे नभतें जीव शिखिमे भूप ॥ शरण मारे जीव बनके करत शोर महान । भयो सिन्धु समान तेहा रोर घोर सुजान ॥ बढे पावक शिखा व्याकुल भे दिवौकश सर्व। जाय लागे इन्द्रसों ते कहन सभय अखर्ब ॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥ दहत पावक मनुज सिगरे भयो का कलपान्त ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनत तिनसो लगे देखन आपुछ सुरकान्त ॥ बिपिनि खांडव रक्षिबेकों सुरण सह सुरनाथ।आय नभमे भए ठाढे लगे बरषण पाथ ॥ मुशल कैसन महतिधारा लगी गिरन अखर्ब । भई बीचहिँ सूखि पावक तेजतें ते सर्ब ॥ लगे बारण बारि धारा छोडि अस्त्र महान।छाय लीन्हों बिपिनि खांडव शरणसों अति मान॥सकत निकसि न जीव बनतें गए शर नभछाय । रहो तक्षक कुरुक्षेत्र समीप पहिले जाय ॥ रहो तक्षक पुत्र तेंहा अस्त्रसेन महान। यत्न कढिबे को न देखत गगण मंडित बाण ॥ रक्षणार्थ सु तास माता लीनि आधो काय । पुत्र सहित सु बेग धरि अति चली गगण उडाय ॥ पन्नगीको शीस दीन्हे काढि अर्जुन बीर । चलो कढिसुत नागको तेहि लखो सुरपति धीर ॥ ताहि बारण हेत बज्री बात वर्षि महान । छोडि मोहित कियो तेहिक्षण पार्थकों बलवान ॥ देखि माया तास बञ्चित नागतें व्है बीर । खगत जीवनकों करत द्वै तीनि खंड गँभीर ॥ कृष्ण जिष्णु सु अग्नि अहिकों दियो तब श्रमि शाप। रहैगो स्वस्थानतें तूं भ्रष्ट पन्नग पाप ॥ देखिनभमे इन्द्रकों करि क्रोध पारथ बीर । समुझि बचन लरण लागे छोंडि शर बर धीर ॥ देखि सुरपति लरत रणमे करैं पारथ क्रोध। डारिकै बर अस्त्र कीन्हो गगण पथको रोध ॥ बायु सागर क्षोभ करि किय जनित मेघ महान । लगे डारन बारि धारा प्रलयसम जलदान ॥ वायव्य अस्त्र सु छोडि अर्जुन कियो तास बिनाश। भयो गगण विकास क्षणमे सहित सूर प्रकाश ॥ बिबिधि आकृत धरो पावक नष्ट लखि प्रतिकार। जीव देहज बसाको करिपान अग्नि उदार ॥ अधिक व्है जाज्वल्य ध्वनिसों भरो जगत महान । कृष्ण अर्जुनसों सु रक्षित देखिबन अतिमान ॥ सम सुपर्ण सु बिहग जिनके बज्र से नख तुण्ड। मारिबेकों कृष्ण अर्जुनकों गए करिझुण्ड ॥ बमन लागे महा बिष अहि पार्थके ढिग जाय। शरणसों किय जिष्णु शिरविनु पन्नगनके काय ॥ असुर किन्नर यक्ष राक्षस क्रोधकरि अति मान। लरन आए पार्थसों करि नाद घोर महान ॥ शस्त्र नानाभाँतिके धरि अधर दातन पीस। पार्थतिनके शरणसों धर किए विगलित शीस ॥ कृष्ण चक्र चलाय कीन्हे दैत्य दानव नाश। रहे ठाढे सिन्धुबेला सदृश हरिबलराश ॥ शक्र खेत मतंगपै चढि लएँ सुरगण सङ्ग। चले लरिबे जिष्णु सों अति भरे क्रोधउमङ्ग ॥ असनि लैकै चले कहि यह हनन अब यहिबार। देखि उदित इन्द्रकों सब चले देव उदार ॥ कालधारे दंड लीन्हे गदा धनद महान । बरुणपाश सशक्ति सम्मुख चले

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सह मघवान ॥ दश वसुगण मृत्यु सुरसब लिएँ आयुध सर्व । इन्द्रके सगँ चले कोटिन अमर रुद्र आ०प० अखर्व ॥ मारिवें हरि जिष्णुकों तब भए अशकुन भूरि । प्रलयमेजेहि भाँतिसों अतिसै भयानक पूरि ॥ देखि आवत इन्द्रकों सह सुरण युद्ध बिचारि । कृष्ण पारथ चले आगे क्रोधकरि धनुधारि॥ देखि आगें चले आवत अमरइन्द्र महान । कृष्ण पारथ लगे मारण वज्रसे बर बान ॥ संकल्प भग्न सु होय सुरगण भूरिधारे त्रास । छोडिकै रण आस सुरगण गए सुरपति पास ॥ मुनिन अति आश्चर्य मानो भजे लखि सुरसर्व । इन्द्र हर्षित भए तिनको देखि सुबल अखर्व ॥ पाकशासन लरण लागे बरषिकै बरबान। जानिबेकों जिष्णुको बल जहाँलों अतिमान ॥ इन्द्रबर्षे बाण अर्जुन काटि डारे तौंन । अस्त्र फिरि मघवान बर्षे क्रोधकरि बल भौंन ॥ जिष्णु काटे शरणसों ते उपल पूरि अमर्ष । पराक्रम लखि पुत्रको अति इन्द्र पूरे हर्ष ॥ इन्द्र फिरि गिरि शिखर डारो जिष्णु पै अतिमान । कियो अर्जुन शिखर तिल सम वज्रसे हनिबान ॥ देखि खण्डित शिखर भाजे बिपिनि जीव उदार । मरे केते गिरे ऊपर चूर्ण भूत प्रहार ॥ शोर जीवनको भयो अति महा पावक रोर । भयो पूरित शब्द नभमे दिशनमे अति घोर ॥ कृष्ण छोडो चक्रकों धरिक्रोध अति बलराश । किए असुरण सङ्ग सिगरे वन्य जीव बिनाश ॥ पिशाच गज मृग सिंह कोल किरातके गणबीर । मारि डारत अनलमे रथहाँकि अर्जुन धीर ॥ चक्र छुटि हरि पाणिते करि जीव वृन्द निपात । चड करसों फेरि फिरि श्रीकृष्णके कर जात ॥ पिशाच राक्षस उरग मारत क्रोध करिकै भूय । भयोतब यदुनाथको अति अलख दारुण रूप॥ बिपिन रक्षि न सके सिगरे देव करि बल भूरि । भजे अर्जुन कृष्णसों रण छोडि भयसों पूरि ॥ देखिकै सुर सकल भाजे भए भीत स्वरूप । शक्रलागे कृष्ण अर्जुनकों प्रसंशन भूप ॥ भई तब इमि गगणबाणी सुनी सुरपति तौंन । नही खांडवबिपिनिमे तो सखा तक्षक जौन॥ प्रथम गो कुरुक्षेत्रको वह नाग भाग्य गँभीर । जीतिबेकों शक्यहैं नहि कृष्ण पारथ वीर ॥ पूर्वदेव सु नर नरायण महा बलके धाम।तुमज्ञ जानत शक्र इनकों भाँति सब अभिराम ॥ जीतिबेके शक्यहैं नहि समरमे ए वीर । सुरासुरसों पूज्यहै ए पूर्व ऋषि तपधीर ॥ जाऊ तातें लोक अपने सहित सुरगण शक्र । भोग्य खांडव बिपिनिको निजु जानि सुरपति वक्र ॥ गगण बाणी सुनत सुरपति छोडि महत अमर्ष । चले सुरगण सहित अपने लोक पूरित हर्ष ॥ समर तजिकै जात सुरपति सहित सुरगण भीर । देखि अर्जुन कृष्ण कीन्हो सिंहनाद गभीर ॥ गए ज्ञा सुरनाथ सुरगण सहित अपने धाम । होय निर्भय कृष्ण अर्जुन बिपिनि जारो माम ॥ देखि सकत न जीव बनके कृष्ण अर्जुन ओर । जरे सिगरे मरे मारे अग्निके मुख घोर ॥ मांस शोणित बसावो करि पान पावक भूरि।धूम रहित सु महति ज्वाला दियो नभलौं पूरि।अस्त आनन ज्वलित जिव्हा केश बर्चस मान। पिशाच पावक पिवत प्राणिनको बसा अतिमान ॥ कृष्ण अर्जुन कृत्यत वज्र बसा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० श्रोणित पाय । तृप्तिको लहि परम पावक भए मुदमय काय ॥ कटो तक्षक धामते मय नाम असुर महान । देखि धावत कृष्ण तापैँ कियो शरसन्धान ॥ देह धरिकै अग्निमागो ताहि भक्षण हेत । गयो सो वह शरण अर्जुन पास विव्हलचेत ॥ बैँन ताके दीन ताके श्रवण करि बलधाम । डरै मति इमि कहो तासो बीर पार्थ ललाम ॥ नमुचि भ्राता दैत्य मयको दियो अर्जुन शर्ण । नहो मारो कृष्ण करिकै क्षत्रधर्म्महिस्मर्ण ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पावक दाहो पञ्चदश दिनलौँ खांडव दाव । रक्षित व्है हरि पार्थसौँ लहो अनामय चाव ॥
तामे बांचे जीव षट मय तक्षकसुत नाग । सार्ङ्गक पक्षी चारि अरु जिनके पूरण भाग ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥

सार्ङ्गक पक्षी नहि दहे अग्नि कहो केहि हेत । बैशम्पायन चहत सो सुनवे कहऊ सनेत ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सार्ङ्गक पक्षिणकौँ जेहि हेत । दहो न शिखि सो सुनऊ सनत ॥ मन्दपाल हो ऋषि तपधाम । करे नेमव्रत बिहित ललाम ॥ लहि तप पार देह तजि तौँन । पितृलोककौँ कीन्हौँ गौंन ॥ तहाँ न तप फल पायो बिप्र । फिरो सकल लोकन्हमह क्षिप्र ॥ रहत पितृपतिढिग सुर जौंन । तासों कारण पूछो तौंन ॥ * ॥ मन्दपालउवाच ॥ * ॥ मो तप सार्जित लोक ललाम । तिनके द्वार मुदे अभिराम ॥ करो न क्षितिपर कौन सुकर्म । जाको फल यह भयो अपर्म । तौन करै तप हम फिरि जाय । जातैँ लोक खुलै सुखदाय ॥ * ॥ देवा ऊचुः ॥ * ॥ जाते ऋणी होत नर पर्म । सुनऊ बिप्र सो धर्म सुकर्म ॥ देव पितृ ऋषि ऋणहै तीन । तास हरण बिधि सुनऊ प्रवीन ॥ बेदाध्ययन यज्ञते बिप्र । ऋषि सु देव ऋण बिनशत क्षिप्र ॥ द्विज तुम कियो न दारा पर्म । होत पुत्र रक्षक कुलधर्म ॥ सुनऊ भए बिनु पुत्र ललाम । खुलत न लोक द्वार अभिराम ॥ पुत्रोत्पन्न करऊ जब बिप्र । लहऊ लोकफल तब तुम क्षिप्र ॥ पुन्नाम नर्कते लेत उबारि । तातैँ पुत्र कहत निरधारि ॥ बेद बिदनको सम्मत पर्म । प्रजोत्पत्तिद्विज करहु सधर्म ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ मन्दपाल सुनि दैवत बैन । प्रजा यत्नमहं लगो सचैन ॥ होत योनि केहि प्रजा सु क्षिप्र । ऐसैँ चलो बिचारत बिप्र ॥ बहुप्रज सार्ङ्गिकपक्षी देखि । भो द्विज सार्ङ्गिक शीघ्रज लेखि ॥ जरिता पत्नी करि छबि धाम । जनमाए सुत चारि ललाम ॥ पलिताकों लखि तापहँ जाय । करि पत्नी तेहि रहो लुभाय ॥ जरिता चिन्तित भई सनेह । पुत्रन तन तिन लखि तनु देह ॥ पुत्रन्ह भरति स्ववृत्ति समान । करति रहति रक्षण सुखदान ॥ जात हुताशन खांडव दाव । दहन हेत धारैँ अतिचाव ॥ मन्दपाल मुनि देखि बिचारि । जरितहि सह सुत तहँ निरधारि ॥ अग्निस्तव भो करण बिचारि । मन्दपाल मुनि मतिसों भारि ॥ * ॥ मन्दपालउवाच ॥ * ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जीव रूप तुम भोक्ता सर्व। ब्रह्म रूप हौ प्रगट अखर्व ॥ जाठर भौम दिव्य अभिराम। विविधि आप०
कहत तुमकों मतिधाम॥ पञ्चभूत रवि शशि यजमान। आठ रूप तो कहत सुजान॥ तुमतें रचित
विश्व अभिराम। तुम बिनु नष्ट कहत मतिधाम॥ नमस्कारकरि तुमकौं विप्र। सकुल जात पर
गतिको क्षिप्र॥ तडित जलद तुमही जगपाल। भूतदाह कारक तो ज्वाल॥ तुमतें कर्म कर्मते
भूय। तो भव अप जग करत अनूप॥ तुमही हव्य कव्यकौं लेत। देव पितृगणकौं तुम देत॥
पावक तुम धाता गुरु दक्ष। तुमही शशि अरु सूर अजस्र॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥
सुनिशोच मुनिकृत अभिराम। पावक पायो मोद ललाम॥ मन्दपाल मुनिसों इमि बैन।
कहन लगे ऊतभुक् लहि चैन॥ तुमको मुनिवर वांछित जौंन। क्षिप्र कहौ हम करिहै तौंन॥
मन्दपाल करजोरि विनीत। कहे अग्निसों बचन सुनीत॥ पत्नी पुत्र हमारे जान॥ खांडव बन
बासी है तौंन॥ प्रभु तुम खांडव दाहन जात। तिनको कीजो नहा निपात॥ कहो तथास्तु अनल
लहि चाव। तिनकों दहो न दाहत दाव॥ सार्ङ्गक ते बन दहत निहारि। भए विकल अतिसै
दुख धारि॥ सुतन देखि जरिता भरि तापशरण हीनव्है कियो विलाप॥ * ॥ जरितोवाच॥ * ॥
अग्नि दहत इत आवत दाव। धरें कराल कालको भाव॥ पीडित करत मोहि ए बाल। अपत्त
अरक्षक चरण अचाल॥ नहि हौं सकति इन्हे लै जाय। सुतको त्यागन जननि स्वभाय॥ पुत्रन्ह
मूरि पत्त सो पर्म॥ सह जरिबोहै समै सुधर्म॥ कुलपाल सु जरिता रिसु ढार। शारि सृङ्ग सु
प्रजा करतार॥ व्है है खम्ब मित्र तप धाम। द्वैपा ब्रह्मवेत्ता मतिधाम॥ ऐसे कहिगो निर्दय तात।
केहि लेइजाउ नाघि यह घात॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ ऐसे सुनि माताके बैन। बोले
सार्ङ्गकसुत मतिऐन॥ जाऊ स्नेह तजिमाता तब। होय न दहत ऊतासन यत्र॥ हमै मरे नहि
बिनसत बंश। तुमको व्है है पुत्र प्रसंश॥ यह बिचारि जो उत्तम होय। शीघ्र करऊ माता तुम सोय॥
॥ * ॥ जरितोवाच॥ * ॥ जरिते कहो बिचारि अधीर। आखु बिबर यह निकट गँभीर॥ यामे
पैठि जाऊ सुत दूरि। तहा न अग्निदाह भय भूरि॥ हम तब बिलमुखमे रज डारि। लहै सूदिसन
यत्न बिचारि॥ शान्त भए पावक निरधारि। तब हम रज देहै सब टारि॥ बचिबेको यह परम
उपाय। पावक सो सुनु सुत सुखदाय॥ *॥ सार्ङ्गउवाच॥ *॥ पत्तहीन हम निर्बल काय। आखु हमै
भक्षण करि जाय॥ निश्चय जानि परै भय यत्र। भुलेऊ अम्ब न जाई तत्र॥ पावकदाह अवश्यक
तौंन। निश्चय मरण आखुके गौंन॥ तातें अग्निदाह है पस। छूबो आखुभक्ष नहि धर्म॥ *
॥ * ॥ जरितोवाच॥ * ॥ दोहा॥ * ॥
बिल बाहेर लखि आखुकौं सो न गयो लै ताहि। शून्य बिबरमे जात तुम तात डरतहौ काहि॥
॥ * ॥ सार्ङ्गउवाच॥ * ॥
नहि देखो हम सेनकौं गहैं आखुकौं तौंन। भक्षण करिहै बिबरमे और होंहिगे जौंन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० है संशय इत आइबो पावक को बसबात। गए बिवरमे अन्य गहि इंदुर निश्चय खात॥
निश्चयतें संशय भलो मरिबेमे सुनु अम्ब।पुत्र होहिगे तोहि बज्र करऊ गगण अवलम्ब॥

॥ * ॥ जरितोवाच ॥ * ॥

गहैं आखु हम सेनको लखो गगणमे जात। हौं ताके अनु दूरि कछु गई प्रसंशत तात॥
तजि संशय सुत बिवरमे तुम सब करऊ प्रवेश। मो देखत पल आखुको खायो सेन निशेश॥

॥ * ॥ सार्ङ्ग उवाच ॥ * ॥

हम देखो नहि शेनकों मास आखुको खात। बिनु देखे संशय नही दूरि होतहै मात॥
नहि तुम मिथ्या कहतिहो मो रक्षणको अम्ब। संशयमे नहि ज्ञानको करति सुमति अवलम्ब॥
तवन कियो उपकार तुम नहि जानति हम जौंन। हूबो पोडित व्यर्थ हम अम्ब तिहारे कौंन॥
हौ तरुणी तुम सुन्दरी पति चित चाव समान। जाऊ पास पति होहिगे हमसे पुत्र महान॥

॥ * ॥ जयकरीकृन्द ॥ * ॥

हम करि पावक माह प्रवेश। लहि हैपावन लोक सुदेश॥ जौं पावक मो करो न घात। तौ हम पास आइयो मात॥

॥ *॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रेलाकृन्द ॥ * ॥

सुनत सो यहि भाँति जरिता पाय परम निदेश। गई उठि कै तहाँ पावक कियो जह न निवेश॥
तहा आए अग्नि मुनिसुत रहे जँह अभिराम। जरितारि लागे अग्निसों है कहन बचन ललाम॥
कष्ट आवत होत जायत प्रथम पुरुष सुजान। समय आए नही पावत तौंन कष्ट महान॥
समय आयो कष्टको जन नही जानत जौंन। लहतहै अति कष्टकों जन कालपाए तौंन॥

॥ * ॥ सारिष्टकउवाच ॥ * ॥ सुमति धीर सुबन्धुहै तुम कष्टके यहि काल। जननमे तुम एक हौ मतिमान सूर बिशाल॥ * ॥ स्तम्बमित्रउवाच ॥ * ॥ ज्येष्ठ तात समान हरता कष्टको अभिराम। ज्येष्ठको बिनु कृपा अवरज सकतको कोर काम ॥ * ॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ अग्नि आवत धामको सप्त धरे रूप कराल। सप्त जिव्हा ग्रासकर्ता भयद बदन बिशाल॥ * ॥ बैशं पायनउवाच ॥ * ॥ अन्योन्य ऐसें बचन कहि मुनि पुत्र मतिके धाम। अग्निको सुस्तोत्र लागे करन अति अभिराम॥ बायु उद्भव ज्वलन हौ तुम भूमि भूमिज रूप। आयहै तो अुक्र जातें जात बिश्व अनूप॥ चलैं चारो ओरकों तो अर्चि अनल महान।भानुकर बर दिशनमे ज्यों जात पसरि समान॥ सारिसक्रउवाच ॥ नही माता पिता जातन पत्र नहि भातार। जानिबालक शरण हमकों देऊ अनल उदार॥ जौंन है शिव रूप तव वर शिखा सप्त महान। करऊ तिनते हमहि रक्षित अनल जगसुखदान॥ * ॥ स्तम्बमित्रउवाच ॥ * ॥ सर्व हौ तुम एक पावक सर्वम अभिराम। धरतहौ तुम भूप सिगरे भरत भूत ललाम॥ अग्नि हौ तुम हव्यवाह सु हव्य हौ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुखदान। एक कहत अनेक तुमको बेदबिद मतिमान ॥ बिरचि तीनो लोकको फिरि करत आ०प०
तुम संहार।उत्पत्ति लयके स्थान हौ तुम अग्नि कहत उदार ॥ * ॥ द्रोणउबाच ॥ * ॥ खात जो
जन अन्न ताके उदरमे करि बास। पचन ताको करत पावक सर्व सर्वनिवास ॥ सूर्य्य व्है कै करणनैं
करि भूमिको रस पान । काल लहि करि बृष्टि सृष्टि सु करत बिबिधि बिधान ॥ करत अङ्कुर
हरित नवदल भरत सर सुखदान। सलिल सो तुम करत पूरण सिन्धु पूर महान ॥ करऊ रक्षित
हमहि मङ्गल मूर्त्ति होय अनूप । करऊ नाशन पाहि पावक बाल पालनरूप ॥ पिङ्गाक्ष लोहित
ग्रीव हमको छोडि सह उतसाह।दूरि जै अै अग्नि जिमि जन तजत सरित प्रबाह ॥*॥ बैशम्पायन
उबाच ॥ * ॥ द्रोणके सुनि बचन पावक होय परम प्रसन्न । मन्द पालहि दियो हो बरदान जो
सम्पन्न ॥ अग्निरुबाच ॥ द्रोण ऋषि तुम कहो सिगरो ब्रह्मज्ञान सधर्म। अभय सो तुम रहऊगै
लहि मोद मङ्गल पर्म॥मन्दपाल सु दियो हमको प्रथम तुमहि जनाय।छोडि मेरे पुत्र दीजो दहत
खांडव दाय॥पिताको तब द्रोण तुम्हरे बचनको लहि भार।कहऊ सो सब करहि हम मुनिपुत्र तो
उपकार॥द्रोणउबाच ॥ करत है उद्वेग हमको आखुभुक् निति आय। करऊ याको भक्ष सहपरि
बार उबरि न जाय॥बैशम्पायन उबाच ॥ तथास्तु कहिकै लगे पावक दहन खाण्डव दाव। सुतन
प्रति मुनि मन्दपाल सु भए बिगलित चाव ॥ अग्निसों तौ कहो हो नहि तऊ पावत चैन। पुत्रार्थ
चिन्तित कह्यो लपितासों तहा इमिबैन॥अशक्त मेरे पुत्र कैसैं होहिगे अभिराम।बहत बायु प्रचण्ड
वर्धित भयो पावक नाम॥तिन्हे रक्षण हेत जरिता करैं गो का यत्न। होय गी शोकार्त्त पुत्रन्ह देखि
बिगत प्रयत्न ॥ उडनमे असमर्थ पुत्रन्ह देखि तिनकी मात। होय कै शोकार्त्त चऊदिशि फिरगी
बिललात ॥ पुत्र मम किमि होहिंगे सह जननि निर्गत पाप। मन्दपाल हि कहत अैसैं बचन सुनि
सबिलाप ॥ कहन लपिता लगी अैसैं सह असूया बैन। सुतनके तुम हेत अैसैं कहत होय अचैन ॥
तेज मानस बीर्य्य तिनकौं अनलसौं भय है न । दियो मेरे निकट तिनकौं अग्नि अभय सचैन ॥
लोकपाल न करत मिथ्या बचन अपनो पर्म । सुतनते तुम स्वस्थ हौ यह कहत गोपैं मर्म ॥ मो
सपत्नी हेत तुम इमि कहत हौ दुखपूरि। नही मोमे स्नेह तैसो यथा तामे भूरि ॥ स्नेह पात्र सपुत्र
दारा त्यागिबो नही न्याय। जाऊ जरिता पास पावऊ चाव ताकौं पाय ॥फिरैं गी हम ह्व अकेली
कुपतिकैसी बाम । * । मन्दपाल उबाच । * । नही अैसो करत हैं हम कर्म व्है बश काम ॥ करत
शोच सु सुतनके हित जानि तिन हि सदन्द ।भूत छोडि भबिष्यको जो यत्न करत सो मन्द ॥सुनन्ह
देखन जात हम तुम करऊ स्वरुचि समान । बढो लखत प्रचण्ड पावक करत शोच महान ॥
॥ बैशम्पायन उबाच ॥ तहां जब नहि गयो पावक देखि जरिता आय । लगी लालन सुतनको
एक एकको हिय लाय ॥ देखि जरितहि अश्रु मोचति करति रुदन महान । नही तासौं कछू
बोले पुत्र ते मतिमान ॥ मन्दपालो गए सहसा सुतनप तव भूप। नही तिन कछु करो बन्दन रहे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आ०प० है संशय द्रुत आइबो पावक को बसबात। गए बिवरमे अन्य गहि इंदुर निश्चय खात॥
निश्चयतें संशय भलो मरिबेमे सुनु अम्ब।पुत्र होहिगे तोहि बज करऊ गगण अवलम्ब॥
॥ * ॥ जरितोबाच ॥ * ॥
गहँ आखु हम सेनको लखो गगणमे जात। हौं ताके अनु दूरि कछु गई प्रसंशत तात॥
तजि संशय सुत बिवरमे तुम सब करऊ प्रवेश। मो देखत पल आखुको खायो सेन निशेश॥
॥ * ॥ सार्ङ्ग उबाच ॥ * ॥
हम देखो नहि शेनको मास आखुको खात। बिनु देखे संशय नही दूरि होतहै मात॥
नहि तुम मिथ्या कहतिहो मो रक्षणको अम्ब। संशयमे नहि ज्ञानको करति सुमति अवलम्ब॥
तवन कियो उपकार तुम नहि जानति हम जौंन। हूबो पीडित व्यर्थ हम अम्ब तिहारे कौंन॥
हौ तरुणी तुम सुन्दरी पति चित चाव समान। जाऊ पास पति होहिगे हमसे पुत्र महान॥
॥ * ॥ जयकरोवाच ॥ * ॥
हम करि पावक माह प्रवेश। लहि हैपावन लोक सुदेश॥ जौं पावक मो करो न घात। तौ हम पास आइयो मात॥ ❀❀❀

सुखदान। एक कहत अनेक तुमको बेदबिद मतिमान ॥ बिरचि तीनो लोकको फिरि करत आ०प०
तुम संहार।उत्पत्ति लयके स्थान हौ तुम अग्नि कहत उदार ॥ * ॥ द्रोणउबाच ॥ * ॥ खात जो
जन अन्न ताके उदरमे करि बास। पचन ताको करत पावक सर्ब सर्बनिवास ॥ सूर्य्य व्है कै करणतैं
करि भूमिको रस पान । काल लहि करि बृष्टि सृष्टि सु करत बिबिधि बिधान ॥ करत अङ्कुर
हरित नबदल भरत सर सुखदान। सलिल सो तुम करत पूरण सिन्धु पूर महान ॥ करऊ रक्षित
हमहि मङ्गल मूर्त्ति होय अनूप । करऊ नाशन पाहि पावक बाल पालनरूप ॥ पिङ्गाक्ष लोहित
ग्रीव हमको छोडि सह उतसाह।दूरि जै अै अग्नि जिमि जन तजत सरित प्रबाह ॥*॥ बैशम्पायन
उबाच ॥ * ॥ द्रोणके सुनि बचन पावक होय परम प्रसन्न। मन्द पालहि दियो हो बरदान जो
सम्पन्न ॥ अग्निरुबाच ॥ द्रोण ऋषि तुम कहो सिगरो ब्रह्मज्ञान सधर्म। अभय सो तुम रहऊगे
लहि मोद मङ्गल पर्म॥मन्दपाल सु दियो हमको प्रथम तुमहि जनाय।छोडि मेरे पुत्र दीजो दहत
खांडव दाय॥पिताको तब द्रोण तुम्हरे बचनको लहि भार।कहऊ सो सब करहि हम मुनिपुत्र तो
उपकार॥द्रोणउबाच ॥ करत है उद्वेग हमको आखुभुक् निति आय। करऊ याको भक्ष सहपरि
बार उबरि न जाय॥बैशम्पायन उबाच ॥ तथास्तु कहिकै लगे पावक दहन खाण्डव दाव। सुतन
प्रति मुनि मन्दपाल सु भए बिगलित चाव ॥ अग्निसों तौ कहो हो नहि तऊ पावत चैन। पुत्रार्थ
चिन्तित कह्यो लपितासों तहा इमिबैन॥अशक्त मेरे पुत्र कैसें होहिगे अभिराम।बहत बायु प्रचण्ड
वर्धित भयो पावक नाम॥तिन्हे रक्षण हेत जरिता करैं गी का यत्न। होय गी शोकार्त्त पुत्रन्ह देखि
बिगत प्रयत्न ॥ उडनमे असमर्थ पुत्रन्ह देखि तिनकी मात। होय कै शोकार्त्त चऊंदिशि फिरगी
बिलखात॥ पुत्र मम किमि होहिंगे सह जननि निर्गत पाप। मन्दपाल हि कहत अैसें बचन सुनि
सबिलाप ॥ कहन लपिता लगी अैसें सह असूया बैन। सुतनके तुम हेत अैसें कहत होय अचैन ॥
तेज मानस बीर्य्य तिनकौं अनलसों भय है न। दियो मेरे निकट तिनकौं अग्नि अभय सचैन ॥
लोकपाल न करत मिथ्या बचन अपनो पर्म। सुतनते तुम स्वस्थ हौ यह कहत गोपैं मर्म ॥ मो
सपत्नी हेत तुम इमि कहत हौ दुखपूरि। नही मोमे स्नेह तैसो यथा तामे भूरि॥ स्नेह पाच सपुत्र
दारा त्यागिबो नही न्याय। जाऊ जरिता पास पावऊ चाव ताकौं पाय ॥फिरैं गी हम ह्व अकेली
कुपतिकैसी बास। *। मन्दपाल उबाच।*। नही अैसो करत हैं हम कर्म व्है बश काम॥ करत
शोच सु सुतनके हित जानि तिन हि सदन्द्र।भूत छोडि भबिष्यको जो यत्न करत सो मन्द्र॥सुनन्ह
देखन जात हम तुम करऊ स्वरुचि समान। बढो लखत प्रचण्ड पावक करत शोच महान ॥
॥ बैशम्पायन उबाच ॥ तहां जब नहि गयो पावक देखि जरिता आय। लगी लालन सुतनको
एक एकको हिय लाय ॥ देखि जरितहि अश्रु मोचति करति रुदन महान। नही तासों कछू
बोले पुत्र ते मतिमान॥ मन्दपालो गए सहसा सुतनप तब भूप। नही तिन कछु करो बन्दन रहे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मौन स्वरूप ॥ * ॥ मन्दपालउवाच ॥ * ॥ इनसुतनमे लघु जेष्ठ कोहै कहहु प्राण समान। नही बोलति कौंनकारण भई मौन महान ॥ * ॥ जरितोवाच ॥ * ॥ कहा तुमसौं सुतनसौं है कार्य्य मुनि मतिराश। गए हमकौं छोडि जँह तँह जाऊ प्रियतम पाश ॥ * ॥ मन्दपाल उवाच ॥ स्त्रीनको नहि और हारक स्वर्ग पथको गौंन। जारगमन सपत्नि दुखतैं पिति निरादर जौंन ॥ अरुन्धती भगवती मुनि सुबशिष्ट तपको धाम। नहि सपत्नी करहि शोचत भई यातैं क्षाम ॥ हौं अपत्यन्ह हेतु आयो कहति तुम इमि बैन। भई है तो भाँति लपिता भरी भूरि अचैन ॥ नारिको बिश्वास करिबो पुरुषकौं नहि काम। होतिहै नहि आप्तपतिकी स्वार्थ चाहति बाम ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ लगे सेवन पिताकौं मुनि पुत्र सुनि इमि बैन। लगे लालन मन्दपाल स्वसुतनकौं लहि चैन ॥ * ॥ मन्दपालउवाच ॥ * ॥ प्रथम कीन्हो बिनय तुमकौं मोचिबेके हेत। स्वीकार हमसों कियो पावक परम सत्य निकेत ॥ धर्म तुह्मरी मातुको अरु अग्निको बरदान। जानिकै नहि पूर्ब आए बीर्य तो अतिमान ॥ हमै प्रति सन्ताप करिबो योग्य तुमकों है न। पुत्र तुमकों अग्नि जानत ब्रह्मऋषि तपऐन ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ समाधान स्वसुतनकों यहि भाँति करि अभिराम। और थलकों गए लै मुनि मन्दपाल सबाम ॥ अग्नि दाहो बिपिनि खांडव पार्थ हरि बल पाय। बसा मेद प्रबाहको किय पान आनद छाय ॥ देखि पार्थहि परे पावक भरे तृप्ति उमङ्ग। स्वर्गते मघबान आए लएँ सुरगण सङ्ग ॥ कृष्ण अर्जुनसों कहो यह कियो दुस्कर कर्म तुष्ट हैं हम लेऊ बर तुम जौंन चाहऊ पर्म ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ पार्थ मांगे अस्त्र सुशिगरे दिव्य जे अतिमान। कहो दीबे तौन आए समय शक्र सुजान ॥ प्रसन्न तुमसों होहिगे जब शंभु सुनऊ अखर्ब। पार्थ तुमको देहिगैं तब अस्त्र बिधिवत सर्ब ॥ काल हमकों बिदित है सोसुनऊ कुरुबर बीर। करऊ गेतप उग्र तुम तब देहिगे रणधीर ॥ आग्नेय अरु बायव्य सिगरे अस्त्र मेरे जौंन। देहिगैं सरहस्य परम अमोघ तुमको तौंन ॥ प्रीति अर्जुनसों निरन्तर रहै मो अभिराम। कृष्ण मागो इन्द्रसो यह देऊ बर सुखधाम ॥ देय यह बर अग्निसों व्है बिदा सुरण समेत। गए आनद भरे सुरपति फेरि [illegible] निकेत ॥ मांस भक्षि सबसा शोणित पान करि ऊतबाह। कृष्णपारथसों कहो यहि भाति [illegible] ॥ दोउ तुम नरव्याघ्र हमकों तृप्त कीन्हों पर्म। देत आज्ञा जाऊ भावै करो सो [illegible] ॥ [illegible] यहि भाँति अर्जुन कृष्ण आज्ञा पाय। परिक्रम्य मय सह नदीकेतट गए फिरि [illegible] ॥ गौरि श्रीगणनाथके भजि चरण चारु उदार। आदि पर्व समुद्रको करिभयो दर्पण पार ॥

[illegible] ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] सदा सोहत सङ्ग सुषमा धाम। बसौ राधाकृष्ण सो मनमाह मो अभिराम ॥

स्व[illegible] महाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासि र[illegible] गोकुलनाथकविना कृतभाषामहाभारतदर्पणे आदिपर्वसमाप्तिनामैक पञ्चाशदध्यायः ॥ * शुभमस्तु शकाब्दाः १७५१ सम्बत् १८८६ भाद्रस्य ७ दिवसे मुद्रा समाप्ता ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ * ॥

॥ * ॥ महाभारतदर्पण ॥ * ॥

॥ * ॥ सभापर्व ॥ * ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

चरण चारिफल धाम चिन्तामणि गणनाथके। लहत यथा मनकाम दरश्यत अरचत जगतजन॥
नन्दनन्दनके पाय बन्दनीय चरअचरके। सदा सन्त सुखदाय जनमन मानसके कमल॥
चरण सरोज उदार तापहरण हरिके परम। जिनतें निकसति धार सुरसरिता मकरन्दकी॥
राधाजूके पाय भवभयहरण सरोजसे। बसत जहां सुखदाय मनमधुकरो ब्रजराजको॥
चरण कमल अभिराम परम सन्त बलभद्रके। सो मन अलिकेधाम सरस मोद मकरन्दमय॥
॥ * ॥ श्लोकः ॥ नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमं। देवीं सरस्वतीं व्यासंततो जयमुदीरयेत्॥ * ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारथसों तब मय कहों कृष्णचन्द्रके पास। कै विनीत करजोरि कै बचन मधुर सुखरास॥

॥ * ॥ मयउवाच ॥ * ॥

कृष्ण उदित हे हननकों भक्षणकों ऊतवाह। तुम रक्षीत कीन्हें हमै करिकै कृपा अथाह॥
कहऊ करैं सो रावरे कारय बांछित जौन। तुम हमकों शरणद भए पारथ करणभौन॥

॥ * ॥ जयकरोछन्द ॥ * ॥

अर्जुनउवाच॥ * ॥ तुम करि चूके सकल सो काम। हम प्रसन्न तुमसों अभिराम॥ * ॥ मय उवाच॥ * ॥ कहत सो तुमकों योग्य सुजान। चहत कियो हम प्रीतिसमान॥ हम सु विश्वकर्मा अभिराम। दैत्यनके सुनिए मतिधाम॥ तो कारज कछु चाहत करण। हे बरवीर धीर मुद भरण॥ * ॥ अर्जुनउवाच॥ * ॥ हमतें रक्षित आपुहि जानत। तौ हम तो कृतकार्य्य न मानत॥ तो सङ्कल्प अमोघ नशाय। तौ हरि कार्य्य करऊ कछु जाय॥ मयको बचन सुनत बलवीरा। क्षण एक रहे बिचारि गँभीर॥ मनमह लोकनाथ निरधारि। सभा करणकँह कहो बिचारि॥ योग्य धर्म्मराजाकें जौन। सभा सदन रचिए मय तौन॥ जाको लहै न जन उपमान। ऐसी रचऊ सभा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ह०प० सुखदान ॥ जातैं तो मतिको परभाव । दिय कहैं जनगण युतचाव ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥
बचन ग्रहण करि तौन सुदार । सम बिमान किय सभा बिचार ॥ तब हरि अर्जुन मयकों साथ ।
लएँ गए जेहां कुरुनाथ ॥ कहो पूर्व सिगरे बृत्तान्त । सभा करण मत तास नितान्त ॥ धर्म्म तास
कीन्हों सत्कार । मे प्रसन्न मय दैत्य उदार ॥ बृषपर्बा दानव जो भूप । तिहि कोन्हैं बऊयज्ञ अनूप
॥ बिमल बिन्दु सरवरके पांहि । ताकी कथा सभाके मांहि ॥ धर्म्म भूपकों कही बखानि । तदनु
दैत्यमय मेधा तानि ॥ स्वस्थ होय कै कियो बिचार । सभा रचनको परम उदार ॥ आज्ञा कृष्ण
पार्थकी पाय । शुभ मुहूर्त लहि कै सुखदाय ॥ करि द्विज पूजन दै बऊदान । सर्ब कलुनमे सुखद
सुठांन ॥ सभारचनके काज अनूप । बर सुप्रज्ञ मयदानव भूप ॥ हस्त अयुत चऊँदिशि बिस्तार ।
समभू नापी परम सुठार ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ खाण्डवप्रस्थमांह करिवास । कछुदिन
बासुदेव सुखरास ॥ पाण्डवसों लहि प्रीति अमन्द । बिदा होंन चाहो ब्रजचन्द ॥ चाहि पिता
दरशन सुखदाय । धर्म्मराजकी आज्ञा पाय ॥ प्रथा चरण बन्दे अभिराम । कहि सु बिदाके बचन
ललाम ॥ मूर्धाघ्राण कियो हियलाय । कुन्ती दृगभरि आनदछाय ॥ फेरि गए भगिनीढिग नाथ
भरे बिलोचन आनद पाथ ॥ सत्य सार्थ हित कहि कै बैंन । जौंन अनुतर पूरित चैंन ॥ स्वजन
संदेस तासु सुनि सर्ब । बन्दित पूजित होय अखर्ब ॥ भगिनीसों ह्वै बिदा ललाम । गए द्रोपदीके
चलि धाम ॥ तासों बिदा होय कै सौंम्य गए जहां हे मु निबर धौम्य ॥ बंद्य धौम्यके चरण ललाम ।
गए पांडवनके फिरि धाम ॥ यात्रा योग्य कर्म्म करि सर्ब । ह्वै शुचि दीन्हों दान अखर्ब ॥

॥ *॥ रोलाछन्द ॥ *॥

पहिरि भूषण बसन अरचे द्विजनकों अभिराम । बन्दि कै गणनाथकों किय कृष्ण गमन
ललाम ॥ स्वस्ति बाचन द्विजनसों सुनि पाय दधि फल फूल चढे काञ्चन सुरथपैं कढि नगरतैं अनु
कूल ॥ लएँ आयुध सकल लागे सकुन होन अखर्ब । लगे रथमे सैव्य अरु सुग्रीव मन जव अर्ब ।
प्रेम भरि नृपधर्म्म बाहन लगे रथ अभिराम । चढे पारथ सुरथ पीछैं चमर लै कविधाम ॥ भीम
माद्रीतनय ऋत्विज धौर जनगण सङ्ग । रथन पैं चढि चले पीछैं भरे प्रेम उमङ्ग ॥ अनुग भ्रातन
सहित जैसैं लसे कृष्ण ललाम । नम्र शिष्यन सहित जैसैं लसत गुरु गुण धाम ॥ धर्म्म नृपके वन्दि
पद तिमि बृकोदरके पाय । पार्थसों फिरि मिले यदुपति अङ्क भरि सुखपाय ॥ नकुल अरु सहदेव
बन्दे चरण हरिके साम । गए पांडव क्रोस दै यदुबीर सङ्ग ललाम ॥ मागि आज्ञां धर्म्म नृपसों
भूप श्रीबलबीर । फेरि सहजन पांडवनकों बोलो बचन गँभीर ॥ चले द्वारावतीको गहि परम
पथ अभिराम । लगे पांडव लखन हरिकों भरे प्रेम ललाम ॥ देखि रथ यब परो नहि तब दियो
मन करि साथ । प्रेम पूरित गए खांडवप्रस्थकों कुरुनाथ ॥ चढे रथपर सहित दारुक बेगसों
बलबीर । गए द्वारावतीकौं हिय भरे मोद गँभीर ॥ महति सेना सह सकल यदुबंश आगैं आय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

यथोचित करि कृष्ण पूजन गए धाम लेवाय॥ वृद्ध माता पिताके हरि पाय वन्दि ललाम। वन्दि कै सु०प०
बलभद्रको मुद भरे आनद धाम ॥ प्रद्युम्न साम्ब सु निसट सद अनिरुद्धकौं हिय लाय। भरे
आनद रुक्मिणीके धाममे फिरि जाय ॥ सभा मणिमय रचनको मयदैत्य मनमे धारि । कहन
लागे पार्थसौं यहि भांतिसौं सुविचारि ॥ जात उत्तरदिशाकौं फिरि आइ हौं करि कार्य्य ।
कैलाशगिरिमै नाकके ढिग कहत तुमसौं आर्य्य ॥ वृषपर्व दितिसुत यज्ञ करिबेकौं चहो अभि
राम। रची मै मणिमयी नीको सभा परम ललाम ॥ बिन्दुसरके पास सो है सभाद्रव्य सु तत्र।
धरो है वज्र सभा रचिहौ ल्याय कै सो अत्र ॥ विषपर्वभूपति मारि अरिदल महाबलको धाम।
मयी काञ्चन गदा राखी बिन्दुसरढिग माम ॥ विदित मोकौं भीमके वज्र योग्य है वरभार ॥
यथा है गांडीव पारथ योग्य धनुष उदारावरुणकेरो शङ्ख है तँह देवदत्त गँभीर।महाघोष सो देत
तुमकौं आनिकै बरवीर ॥ यह वचन कहि ईशान दिशिकौं चलो दनुज निसांकागयो तुर कैलाश
उत्तर जहां गिरिमैनाक ॥ हिरण्य शृङ्ग सु अद्रिकेढिग बिन्दुसर अभिराम । लही सुरसरि
कियो जेहां भगीरथ तपमाम॥ जगतहित जहँ करे ब्रह्मा यज्ञ परम अनेक। जूपचैत्य सु कनकमय
जँह रचित सहित बिवेक ॥ इन्द्र जँह करि यज्ञ पाई सिद्धिकौं अभिराम । कियो विधि जँह
सृष्टिकौं अतितिग्मतेजसधाम ॥ सहित नर नारायणौ विधि शम्भू यम जँह जाय । कियो सु
युग सहस्रौं तप परम आनद पाय ॥ वासुदेव सु जाय जेहां करे सत्र अनन्त । कनक चैत्य सु
दए मणिमय जूप रूप सिमन्त ॥ जाय कै तहँ गदा शङ्ख सु सभाद्रव्य सु जौन । सहित धन सो
उडाय ल्यायो दनुजगण सह तौन ॥ ल्याय कै मय सभा तेंहा रची भासुरपर्म्म । तिऊँलोकमे
विख्यात है जो योग्य भूपति धर्म्म॥भीमसेन हि गदा दीन्ही रत्न रचित उदार। शङ्ख दीन्हों पार्थकों
जो महा शब्दागार ॥ अयुतहस्त प्रमाण चऊदिशि स्वर्णमय अभिराम । सभा सुरपतिसभा
सम बर भानुभास ललाम ॥ ताहि रचत पाय मयको परम शासन मान । आठ सहस सुनाम
किङ्कर रक्षगण बलवान ॥ घोर खेचर रक्त पिङ्गल नेत्रके वरकाय। तहां सरसी रची मय अप्रतिम
मणिगण लाय ॥ मणिनके बिरचे मनोहर कञ्ज परम सुढार । बिहग मणिमय कूर्म्म ऊषबर
कनकके सहचार ॥ वज्र रङ्गके सोपान बिरचे स्फटिकके अभिराम । निष्पङ्कजलमे लहरि
मुक्तातुल्य बिन्दु ललाम ॥ नीलमणिकी बँधी वेदी चारु अति चऊँओर । परैं तिनकी झलक
सरसी माहि स्वच्छ सुडोर ॥ निरखि ताकौं नीलमणिमय जानि जगती ताहि। भूरि भ्रमसौं परे
तामे परत हैं जन चाहि॥ ता सभाके चऊँ दिशि तरु भरे सुमन सुरङ्ग। चारु सौरभ भरे सरबर
चऊँदिशि सुतरङ्ग ॥ हंस कौक करण्ड बोलत जलज मधुकर मान । पाण्डु वनकौं देत तिनको
गन्ध अनिल सुजान ॥ रची चौदहमासमे मय सभा ऐसी पर्म्म। धर्म्म नृपकौं दई सो अति
चातुरी कृतकर्म्म ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स॰प्र॰ स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायांमहाभारतदर्पणे सभापर्वणि सभारचनोनामप्रथमोध्यायः ॥ ❀ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ❀ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ❀ ॥

सभामाह प्रवेशको जब कियो शुभदिन भूप।दियो भोजन भूप द्विजदशसहसकौं अनुरूप ॥ आज्य पायस मिलित मधु सह सक्कली अभिराम । मांस छाग बराह मृगको स्वाद पूरित माम ॥ मूल फल दल साक व्यञ्जन खाद्य जे सुखदेय । चोस्य चर्व्य अनेक बिधिके रचित खट रसपेय ॥ बसन माल्य सुगन्ध लेपन गो कनक अतिमान । पूजि नाना भाँतिसौं दिय द्विजनकौं बऊदान ॥ पुण्याह बाचनको भयो तहँ घोष मङ्गलकार । बजे नाना भाँतिके बर बाद्य पटह उदार ॥ तहाँ बन्दी वृन्द लागे पढण सुयश प्रबन्ध । जल्ल मल्ल सु नट्ट लागे करण नाटक धन्ध ॥ दयो तिनको दान भूपति सहित भातँन्ह पर्म । लसे सदश सुरेश सो लहि सभा क्षितिपति धर्म॥ व्यास आदिक सकल मुनिबर रहे जे तपधाम । आइ बैठे भूपकेढिग सभामे अभिराम ॥ भूप नाना देशके जे रहे सुहृद अखर्ब। आइ कै ते सभामे नृप पास बैठे सर्ब॥ असित देवल सत्य सुनक सुमन्त जैमिनि आम। पैलस्य शुक मैत्रेय तित्तिरि धौम्य मुनि तपधाम ॥ याज्ञवल्क्य सुलोमहर्षन अरु पराशर पर्म। पर्वतो सावर्ण बालब नासकेतु सुधर्म ॥ कौण्डिन्य भृगु शांडिल्य गौतम और शौनक आम। मार्कण्डेय अरु कहे कहलो और जे तपधाम ॥ कथा भूपति पास त सब कहत धर्म बिधान। भूप हे जे कहत तिनके नाम सुनऊ सुजान ॥ संग्रामजित अरु मुञ्जकेतु सु उग्रसेन ललाम। कक्षसेन सु दुर्मुखो अरक्षेमको बलधाम ॥ अङ्ग बङ्ग कलिङ्ग भूपति कमठ अरु काम्बोज। पुलिन्द कम्पन मित्रकर्षण चेकितान सयोज ॥ श्रुतायुध जबनाधिपति अरु भीमरथ बलवान। शिशुपाल आदिक भूप नानादेशके अतिमान ॥ भजत बैठे सभामे नृपधर्मको अभिराम । यदुवृष्णिकुलके कुँवर जे हुईर्ष अतिबलधाम ॥ अक्रूर कृतबर्मा सु सात्यकि आऊको मतिमान। गद सु बिष्टयु और सारण महाबल सुखदान ॥ कैकेय अरु बसुमान सैनिकि और बऊ नरभूप । सभामेहैं भजत धर्म नरेशकौं अनुरूप ॥ पार्थ आश्रित राजपुत्र अनेक अतिबलबान । धनुर्वद सु पढत धारे ब्रह्मचर्य्य महान॥ क्षेत शिक्षा वृष्णिवंशज कुंवर ए बर बोर। साम्ब अरु युयुधान सात्यकि अरु सुधर्मा धोर॥ अनिरुद्धके संग भूपसुत बऊ शिखत शस्त्राभ्यास । सखा तुम्बुरु पार्थको सो रहत है निति पास ॥ गन्धर्व असुर तौर्य्यत्रिकमे कुसलमति अति जौंन। गान बाद्य सुबाद्य बिधिवत करण लागे तौंन ॥ तेहि समाजे नृपधर्मकौं सब भूप भजत अखर्ब । यथा सुरपतिकौं सुधर्म्मामाहि सुरगण सर्ब ॥ ❀ ॥ रोलाछन्द ॥ ❀ ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ ❀ ॥ भूप ऋषि गन्धर्वसह नृपधर्म जहँ अभिराम। सभामधि तहँ नारद आए

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब्रह्मऋषि तपधाम ॥ तेजपुञ्ज अमोघवार्ता परम तपनिधि आम । देखि नृप उठि अगरि दीन्हे सप्त०
अर्घ्य पाद्य अछाम ॥ अभ्यवादन सहित आतन करत भे अतिमान । दियो आसन महा मुनिको
प्रीति सहित सुजान ॥ देत भे मधुपर्क करिकै आसनस्थ अनूप । सविधि पूजन कियो मुनिको धर्म
नृपवर भूप ॥ लहो मुनि सन्तोष पूजन पाय नृप सौं पर्म। लगे पूछन भूप सौं सह अर्थ काम सुधर्म॥
नारदउवाच ॥ * ॥ अर्थहै सबसिद्धि मन तो धर्म रतहै भूप । रहतहै मन सुखासीन अबिघ्नहै
अनुरूप॥ जौन पितृ पितामहादिक की रही सत वृत्ति ।अर्थ धर्म सुकाममै सो भई तौन निवृत्ति ॥
अर्थ सो नहि होत बाधित धर्म तो अभिराम।धर्मअर्थहि तौन बाधत अर्थ धर्महि काम॥ धर्म अर्थ
सुकाम सेवन करत काल बिचारि ।आदि मध्य सु अन्त दिनके यथाक्रम निरधारि ॥ *⊂⊃**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

षट् गुण सेवत नृपनके साधत शांत उपाय । रहत परीक्षत चौदहौ उभै प्रकार सचाय॥

॥ * ॥ षट्गुणनाम ॥ * ॥

बचन कुशलता बिक्रम तर्क स्मृति मतिमान । करिबो जह भविष्यको नीति शास्त्रको ज्ञान॥

॥ * ॥ सप्त उपाय नामः ॥ * ॥

साम दान बिधि भेद अरु दण्ड मंत्र अवदात । औषध और बलाबलौ को बिचार ए सात ॥

॥ * ॥ चौदह दोष यथा छपै ॥ * ॥

मिथ्याबाक प्रमाद क्रोध नास्तिकता आलस । दीर्घ सुचता गुप्त रहव इन्द्रियबस लालस ॥ निज
मतको करतव्य अपटुसौं मंत्र करव सोउ । औरसि जौन करतव्य तासु है अनारम्भ जोउ ॥ नहि
करव देव उतसव शुभद मंत्र प्रकाशव अनय अति । अरु बऊत शत्रुसौं लरन कह तुरित चलव
चौदह अनिति ॥ *⊂⊃* ॥ चौदह निरीक्षणीय नाम ॥ * ॥ छपै ॥ * ॥ *⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃

हय गज गढ भट देश कोश अधिकार दिए जन । शत्रु शास्त्र बेवहार चार अन्तहपुर दमन ॥
आमद खर्च बिधान तासु कागद बिसतारन । हय गज भट रथ आदि तासु शख्या अवधारन ॥
अरु अनाजको साज सब ए चौदह करिकै रुचित । देशकाल अनुमान करि निति निरखव भूप
हि उचित ॥ *⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃* ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*
आठ कर्म्म सेवन करत सुनो भर्त कुल दीप । कृषी बणिक गढखानि अरु करलीबो अवनीप ॥
बन ग्रामणि गज राखिबो सदा चराई हेत । उजरो देखि बसाइबो नदिन बाँधिबो सेत ॥

सात प्रकृति तुव कुशल है लोभ रहित हित रूप । बैद योतिसी सैनपति धर्माध्यक्ष अनूप ॥
देत जान चतुरङ्गिनिहि सबिधि अहार बिधान।शुभद पुरोहित शास्त्रबिद किलेदार बलवान ॥
तुव मुख तुव मंत्रीनमुख चार भृत्य मुख तौन । मंत्र प्रकाशित होत तुव कहो भूप मतिभौन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० सित्र शत्रु अरु मध्य को करतव जानत भूप। बिग्रहको अरु सन्धिको जानत सेवन रूप ॥
दृढ़ शुद्ध मतिमान हो कीन्हे मंत्री दक्ष। मंत्र मूल है बिजयको दायक ईक्षित अक्ष ॥
ब्राह्मी शुद्ध मुहूर्त मै हित चिन्तवत नरेश। निद्राबश तौ रहत नहि निद्रा देति कलेश॥
थोरो श्रम अरु अधिक फल शीघ्र करत सो कर्म। जानतहो सब प्रजनको नाम ग्राम हित धर्म॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सहस मूरख देइ भूपति लेत पण्डित एक। बुद्धिमान सुजानसो कल्याण करत अनेक॥ धान्य धन जल अस्त्र सुभटन भरे गढतो सर्ब। गढन नगरन सुघर शिल्पी चार बसत अखर्ब ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रगट अठारह अङ्ग है जिनके अरिके जौन। चार बदन तिनके सुनत निति करतब थिति गौन॥
छपै ॥ मंत्री अरु युवराज पुरोहित सेना नायक। जो कारागृहपाल जिते अन्तःपुर लायक ॥
अरु खजानची दक्ष दिवान नगरपति चायक। धर्माध्यक्ष सुजान सभाग्रह शासन दायक ॥
अरु न्याय दण्ड अधिकार जेहि द्वारपाल न्यामक प्रबुधि। अरु देश प्रजापालक जिते अटबी गढपालक सुबुधि॥ * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * *

अरु कारज करता जिते ए अष्टादश अङ्ग। खबर लेत इनकी सदा चार राखि कैसङ्ग ॥
चारचक्षु करिकै रहत देखत अहित समस्त। रहत पुरोहित कहत तुव सुधरम करम प्रशस्त ॥
कुशल तुम्हारे योतिसी रहत जनावत सर्ब। ग्रह क्षत तन धन अवनिको जो उतपात अखर्ब ॥
देत रहत हो चाकरण समै समै धनमान। देत रहत हो जाचकन अन्न धन सहित बिधान ॥
बिद्यावन्त गुणीनकहँ यथायोग सनमानि। यथा उचित धन देतहै निज सुधर्म अनुमानि ॥
तोहित त्यागे देह जिन तिनके तिय सुत आदि। तिनको पोषण करत हो कै नहि करत प्रमादि ॥
अनई व्यतनी अरिहि सुनि शीघ्र जातकै नाहि। देश कोश अरु सुभट बल आनत निजबशमाहि ॥
मणि धन दै कै करत हो अरि निधि भेद उपाय। निज इन्द्रिणकह जीतिकै जीतत अरिन सचाय॥
करषत रहत धन प्रजा तो चाकर देशीय। दूतादिक दुरब्यसन तौ नहि बरतत क्षत भीय ॥
उत्तम मध्यम अधम नर तिन्है परखि क्षितिपाल। यथा उचित पद देत हो गुणि नृप नीति बिशाल॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ग्राम ग्राम की खबरि निति सुनत रहत सविधान। एक नजर समदेश सब रक्षत हो मनमान ॥
बिघन कछू सुनि देशमै कीन्हे बिना उपाय। सोचत तौ नहि सुचितव्है अन्तह पुरमै जाय ॥
लसित बस्त्र धारण किए गह खड्ग अभिराम। तुम कहँ सेवत रहतहै सुभट जूह सब जाम ॥
बृद्ध सुबुधिको सङ्गकरि खोवत मानस ताप। मेटत औषध नियमकरि रोगादिकको दाप ॥
अरथी याचक बिरति हन देखत कृपा समेत। रोकत तौ नहि बृत्तिह न की सुवृत्ति धनहेत ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हतो बँग्ग चितिपाल जे ते सिगरे तो सङ्ग । तो शत्रुण सौं लरनकों है अति गहे उमङ्ग ॥ स०प०
ब्राह्मण बृन्द सुपाच नित असन करत तुव गेह । सरुचि दक्षिणा पाय ते आशिष करत सनेह ॥
बाजपेय मख अमल अरु पुण्डरीक मख पर्म । करिबेकी बर भावना आनत हिएँ सधर्म ॥
बृद्ध बिप्र गुरु साधुजन तरु उत्तम जे अत्त । तिनहि देखिकै करतहौ नमस्कार हे दत्त ॥
मङ्गल द्रव्य लिए रहत नित्य पुरोहित साथ । पढत रहत स्वस्तेन द्विज करता सुभट सनाथ ॥
बुद्धिबृत्ति तुव थिर रहति सतकारज पैं भूप । यश सुधरम आयुष करणि काम अर्थ अनुरूप ॥
थिरमति भूपति सुबुधि सौं बिजय लहत सब काल।बचन पालिबो नृपनको सुधरम सुगुन बिशाल॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कुत्सित कर्म प्रजाको देखि । ताडि हरत तुम सुधन बिशेखि ॥ तुव आमात्य पकरि फिरि ताहि । ताडत तौन अधिक धन चाहि ॥ सधन चोरकह पकरि सबाह । तुम राखत कारां गृह माहँ ॥ तासों लहि कछु धनबेवहार । छोडत तौन अमात्य तुम्हार ॥ *◡* ॥* ॥ दोहा ॥ * ॥ *◡

धन दारा श्रुत बेद तुव है सु सफल हे भूप ।सकल काज फल प्रभवहै फलतैं सबै अनूप॥

॥ * ॥युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥

धन दारा श्रुत बेद ए सफल कौनबिधि तात । सो कहिए अब पृथक करि नारदमुनि अवदात॥

॥ * ॥ नारदउबाच ॥ * ॥

अग्नि होत्र फल बेदके दान भोगफल बित्त । रति सन्तति फल दारके श्रुतफल शील सुचित्त ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउबाच ॥ * ॥

प्रश्नोत्तर कहिकै इबिधि नारदमुनि बिधिपुत्र । फिरि बूझन नृपसौं लगे कुशल राजनय सुत्र ॥

॥ * ॥ नारदउबाच ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

व्यापारी चउदिशिके आय । देत तुम्हैं कर सबिधि सचाय ॥ बेचि खरीदि कुशल सौं जात ॥ तुम्हैं प्रशंसत सरुचि बिभात ॥ नित कर लेत हाटमे जौन । तामधि दास दुरावत तौन ॥ साचर माल उभै परकार । धन आमद निर बिघन बिचार ॥ *◡*॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *◡*◡*

सुफल अन्न घृत सिद्धकरि प्रजा तुम्हारे भूप । अंश बिप्रको देतहै यो शुभदायक रूप ॥
शुभ कारज जानत नृपति करताको सतकार । करत प्रशंसत हौ सबिधि राजि सभा आगार ॥
हय गज रथ सेवन सबिधि अरु लक्षण बेवहार । जानतहैं सौ भृत्यसब यथायोग निरधार ॥
अति दृढ बिबिधि प्रकारके अस्त्र शस्त्र समुदाय ।हौ अरजन कोन्हे नृपति दायक बिजय सहाय॥
मारत मंत्रप्रयोग सौं शत्रुणकौं जन जौन । अति आदर करिकै तिन्हैं राखतहौ बल भौन ॥
अग्नि सर्प अरि रोग अरु तस्कर दुखद कुभेश । तिनके भयसों भूमिपति रक्षत हौ निज देश ॥
पङ्गु अन्ध निरबन्धु अरु निर आश्रयी अयान । तिनको पालन करतहौ भूपति पितासमान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सं०प० क्रोध आदि षटदोष जे तिन्हे किएहो दूरि । निद्रालस्य अघ मृदुलता दीर्घ सूचता भूरि ॥
देत कहतहो जाहि जो शीघ्र देत सो ताहि । निदरत तो नहि ताहि कछु देन कहतहो जाहि ॥
काज अपूरब जौन जेहि करि न सकत जन और । ताको करता ताहि नृप तोषत सबिधि बडौर ॥
अनुपम कारज करत जो ताको मनको भाव । बूझि भूमिपति करतहो बरधित ताको चाव ॥
काज अनूपम करत सो लहत न धन अधिकार । कैसो मरिबोबर गुणत कै तो बिपिनि बिहार ॥
जासौं कारज लेत कछु दे आशा आधार । सो आशा पूरण करत आशा बश संसार ॥
शुद्ध सुबुधि सतकारजी सुगुणी भृत्य सहास । निदरत तो नहि ताहि लखि तासु बर्ग छत दोस ॥
नाम सुयशके अचल हित करत सुकारज जौन । तासु त्यागतो गुणत नहि सुनो भूप मति मौन ॥
दान युद्ध मै गहत तो नहि लालच अरु भीति । दान युद्धमै शीघ्रता कीरबोई नृप नीति ॥
बाक्यदत्तके देनमै गहर करत तो नाहि । सो बिनु पाए याचकहि कल न परत हिय माहि ॥
सुयश पुण्यमधि भूमिपति रुचि राखत अधिकाय । सुयश पुण्य दुऊलोककी गति शोधक सुखदाय
करता उत्तम करमके बन्धु सुभट कबियार । तिन्हे प्रशँसत भूमिपति बैठि सभा आगार ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिन्हे प्रशंसत नृपहि सुनि सब साधत शुभकाज । तातेबरधत नृपतिको धरमदेश यशसाज ॥
भरतबँशके चरितको करत रहत अनुमान । सबदिन गोपीनाथकी सुधिराखत मनमान ॥

॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥

नारद मुनिके बचनसुनि नीतिभरे नृपधर्म । करिप्रणाम कर जोरिकै कहन लगे इमि पर्म ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥

यथा कहत हम करहिँगे तथा सुनऊँ तपधाम । जासौं सागर मेखला क्षिति लहिहैं अभिराम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ नारद उबाच ॥ * ॥ तेजतें नृपकरत चारो बर्ण रक्षण पर्म । करिबिहार समोद फिरि सुरलोक लहत सधर्म ॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥ पूजिकै फिरि पाय आज्ञा कहन लागे भूप । धर्मनिश्चय यथातथ्य सु कहो सुमुनि अनूप ॥ यथान्याय स्वशक्ति मिलि हम करहिगे सो सर्ब । हेतुमान सदर्थ जो तुमकहे बचन अखर्ब ॥ चलो चाहत पूर्बजनके सुपथमे अभिराम । तथाचलिबे सक्यहम नहि यथा ते तपधाम ॥ यहिभाँति कहिकै बाक्य मुनिसौं धर्मबिद नृपधर्म । रहत जानि मुहूर्त्त भरि मुनिलोकचारी पर्म ॥ * ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ ॥ युधिष्ठिर उबाच ॥ * ॥ रहत तुम बिधिरचित लोकनमे फिरत तपधाम । सभा अैसी और कितहूँ लखोहै अभिराम ॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥ भूपके सुनि बचन बोले बिहसि सुमुनि सुजान । लखीनहि नरलोकमे हम सभा अैसी आन ॥ सभा जैसी रावरी मणिमई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

यह अभिराम सभाविधि यम वरुण सुरपति धनदकी सुललाम॥ लखीसो हम कहत भूपति सकल सुनिए तौन। दिव्यरूपा सुरनतैं अति सेव्य मान सु जौंन॥ बचन नारदके सुनत सह मुनिन्ह नृपति सुजान। कहन लागे सुनोचाहत कहऊ मुनि सुखदान ॥ रचितहै केहि द्रव्यतैं विस्तार केतिक अयाम। पितामहकौं कौन सेवत सभामे अभिराम॥ इन्द्र वरुण कुबेर यमको कहऊ सेवत कौंन। सभामे तिहि सभासद व्है सुनो चाहत तौंन ॥ यहि भाँतिके सुनि धर्मनृपके महामुनिवर बैंन। ॥ * ॥ नारद उवाच ॥ * ॥ विश्वकर्मा रचित सुरपतिसभा सुषमाअैंन ॥ विस्तीर्ण शतयोजन लसत शतअर्ध तास अयाम । पञ्चयोजन उच्च कामग योतिमय अभिराम ॥ जराशोकविवर्जिता कल्याण शुभदा सर्व। वेस आसन रम्य प्राप्तो सुमन सहित अखर्व॥ तेहि सभामे परमासनोपरि लसत शक्र ललाम।श्रीसहित शुभदा शची जाके लसति है दिशि बाम॥तेहिसभामे सुरनाथ सेवन करत सुरगण सर्व । गुरु आदि देके देवऋषि अरु सिद्ध साध्य अखर्व ॥ इन्द्रअनुचर हेममाली सकल दिव्यस्वरूप। भूप जे वर यज्ञकर्त्ता धर्मकर्म अनूप ॥ हरिचन्द्रमहीप नरवर महाऋषि तप धाम। भजत कोटिन्ह सभामे सुरनाथकों अभिराम ॥ गन्धर्व किन्नर यक्ष अप्सर सूरशिशुह पौंन। अग्नि जल क्षितिमेा सहायन भजत सुरपति तौंन॥ अर्थधर्म सु काम विद्युत जलदगण अभिराम। यक्षसर्व सदक्षिणा रति सहित सेवत काम ॥ गन्धर्व अप्सर गान नृत्य सुकरत रहत अखर्व। इन्द्रके मन मोदकारक कृपाचाहत सर्व॥ गुरु शुक्र सुरपति पाश्र रहत सुनित्य पूजित तौंन । सर्व लोका धीश सेवत चराचर शुचि जौंन॥ और सकल महातमा चढि दिव्य विमल विमान। जात पूजि अनन्त ते सुरनाथसो लहि मान ॥ सभा पुष्कर मालिनी सुरनाथकी अभिराम। लखी ऐसी कही सेा रमणीय तेजस धाम॥ इति इन्द्रसभावर्णनं ॥ कहत अब यमराजकी हम सभा देखी जौंन। विश्वकर्मै करी निर्मित पार्थ सुनिए तौंन ॥ तेजमय शतयोजना चऊँओर विस्तर मान। शीत उष्ण समान जामे भरी हर्षमहान॥ क्षुत्पिपाशा जराशोक न दैन्य जामे नेक। भक्ष्य भोज्य अनेक जामे मिलत कर्म्म विवेक॥ भोग्य कारक वस्तु जामे मिलै कर्म्म समान। राजर्षि अरु ब्रह्मर्षि जामे सभासद मतिमान॥इन्द्रद्युम्न ययाति नऊष सुभरत आदिक भूपाभए अवलौं गए जे तजि भूमि धर्म स्वरूप॥ करत सेवन धर्मको ते भरे परमानन्द । जात जे दुःकर्म करि ते तहाँ पावत दन्द ॥ भूप नाम समानके जँह लसत अमित अखर्व। लहत फल सम कर्मके तनत्यागि जात जो सर्व॥स्वधा स्वाहा यज्ञ पतिरऊ तास मूरतिमान। धर्म नृपकों भजतहैं ते सभामध्य महान॥ जगत जन ते जात ऐसी सभामे सुखरूप। तास वर्णन कीजिए हम कहाँलौं कुरुभूप॥*॥ इति यमसभावर्णनं॥ **

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ नारदउवाच॥ * ॥ वरुणसभा सुनिए कुरुभूप । धर्मसभा सम बृहत अनूप ॥ सलिल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० मध्य जो निर्भय धर्म।वरुण वारुणी सहित सुधर्म॥ मणिमय आसनपैं अभिराम। बैठे लसत परम छविधाम॥ वासुकि आदिक नाग अखर्ब। भरे मोद सेवत ते सर्ब॥ भानु भजत जसमाह अनन्द। वरुणसभा मह पाइ अनन्द॥ बलि आदिक दितिके सुत जौन। वरुणसभाकँह सेवत तौन॥ सिन्धु सकल धरि मूर्त्ति ललाम। गङ्गादिक सरिता अभिराम॥ पल्वन बापी कूप तडाग। मूर्त्ति मन्त सेवत बडभाग॥ गन्धर्वाप्सर किन्नर जौन। करत तौर्यत्रिक सब तौन॥ मंत्री मतिबर सुनाभ नाम। सो सेवत सह बंश ललाम॥ ऐसीसभा वरुणकों भूप। हम देखी सो कही अनूप॥ ॥ *॥ इतिवरुणसभावर्णनं ॥ *॥ नारदउवाच ॥ *॥ सभासदनको सुनिए भूप। रत्नमयी भा भरी अनूप। वरुण सभाकेसम बिस्तार। योतिमयी सो लसति उदार॥ तपबलरची आपु है जौन।शशि समान भा भूषित तौन॥ है रजताचल शिखर समान।उन्नत सुखदा परम सुठांन॥ गुह्यक कहत गगणमे जाहि। सदृश बिमान कहत सुर ताहि॥ कनक प्रशाद उच्च बज्ररङ्ग। दिव्य लसत मणिमण्डित अङ्ग॥ दिव्य गन्धसौं पूरित तौंन। विद्युत बलित अभ्र इव जौंन॥ तहँ कुबेर बैठे धनपाल। मणिमय भूषण धरे बिशाल॥ बनितादिव्य सहस्रन्ह पास। तहाँ करत धनपाल बिलास॥ सोहति अलकापुरी बिचित्र। मणिन जडित मनु उदित सबित्र॥ सुरतरु गन्धहि लीन्हें पौंन। अनिश करत तहँ मन्थर गौंन॥ तहाँ लसत सुरमुनि बर जूह। अप्सर सह गन्धर्व समूह॥ तौर्यत्रिक अति करत ललाम। धनपतिसौं लहिकै मनकाम॥ किन्नरमुख्य लसत तँह सर्ब। तौर्यत्रिक ते करत अखर्ब॥ लक्षणयक्ष सगण अभिराम। धनदराज कँह भजत ललाम॥ लसति भगवती लक्ष्मी तत्र।नल कूबर सह धनपति यत्र॥बजत जात हम तहाँ सुजान। और जात जे हमै समान॥ बर ब्रह्मर्षि देवऋषि तत्र। रहत अनेकन धनपति यत्र॥ प्रीति सहित शङ्कर भगवान। लए भूतगण सङ्ग महान॥ कृपाभरे धनपतिके पास। आवत उमासहित सुखरास॥ धनद पूजि शङ्करके पाय। भयो सखा शिवको सुखदाय॥ भगदत्तादिक भूप अनेक। भजत धनेश्वरको सविवेक॥ बन्धु बिभीषण भजत सुजान। हि मालयादिक गिरि अतिमान॥ शङ्ख पद्म आदिक निधि जौन। भजैं धनदकौं वसिकै भौंन॥ इति कुबेरसभावर्णनं॥ नारद उवाच॥ *॥ सभा पितामहकी अब भूप। वर्णन करत तथा अनुरूप॥ फिरत मनुज वपु मोकौं पाय। दयो भासकर मोहि सुनाय॥सभा मानसिक ज्योतिस्वरूप। जाको रूप अमन्द अनूप॥हौं सुनि सभा सुगुण अभिराम। कहौं भानुसौं बचन ललाम॥ सभा देखिबैं इच्छित जोहि। दीयेव लाय भासकर मोहि॥विधि उपासनाको विधि सर्ब। करिकै मोपै कृपा अखर्ब॥ सहस्र वर्षलौं की न्ही तौंन।सभा लखी तब तेजस भौंन॥ जानौ पै न तास परमान। विस्तर अरु आयामस्थान॥ सुख स्वरूप है उष्ण न शीत। जरा व्याधिको बिगलितभीत॥ क्षुधा पिपासा जहाँ न मानि। परति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

समान सु सुखमय जानि ॥ नानारूप मणिन हौं पर्म्म । मनु बिरची सो सभा सुकर्म ॥ निदरति स०प०
रबि शशि अगिनि प्रकास । गगण अन्तमह जाको बास ॥ रचत चराचर लोक अमान । रहत पितामह तँह सुखदान ॥ दक्ष प्रचेता पुलह वशिष्ठ । भृगु मरीचि कश्यप तप शिष्ठ ॥ गौतम अत्रि अङ्गिरस जौंन । पुलस्त्य बालखिल्या तपभौंन ॥ मुनि अगस्त्य अरु वर यमदग्नि । भरद्वाज दुर्वास समग्नि ॥ सनत्कुमारादिक तपधाम । रहत ब्रह्मऋषि तहां ललाम ॥ गगणजाल जितनो बिनु लिम्ब । लख तहाँ सो समप्रतिबिम्ब ॥ वेद शास्त्र सबविद्या जौंन । मूर्तिमन्त सोहैं तँह तौंन ॥ सहस अठासी ऋषि समुदाय । ब्रह्मसभामें नितिप्रति जाय ॥ बन्दि पितामहके पद तौंन । ते सब करत यथा गत जौंन ॥ गुह्यक दैत्य देव बर वर्ण । गन्धर्वाश्वर सिद्ध सुपर्ण ॥ दर्शन हेत जात ए सर्ब । करत पितामह कृपा अखर्ब ॥ प्रति पदकौं ए सिगरे जात । होति सभा सङ्कुल अवदात ॥ दीप्य मान ब्रह्मश्री पाय । योतिमयी सो सभा लखाय ॥ लोकन माह सुदुर्लभ जौंन । ब्रह्मसभा देखी हम तौंन ॥ भूप मनुष्यनमें अभिराम । सभा तुह्मारी यथा ललाम ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुकवीनायककवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचितेभाषां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि नारदनोति कथने इन्द्रयमवरुणकुबेरपितामहसभावर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

सभा बिडौजादिकनकी सुनी सहितबिस्तार । अब कछु पूछत और सो कहिए बुद्धिअगार ॥

॥ ❀ ॥ रोलाछन्द ॥ ❀ ॥

कहो तुम यमलोक कौं तजि देहकौं नृप सर्ब । एक सुर पुरकौं गए हरिचन्द्र नृपति अखर्ब ॥ पिता मेरे पांडु नृपवर गए सो केहि लोक । तौन हमसौं कहो बिधिवत महामुनि तपओक ॥ नारदउवाच ॥ ❀ ॥ हरिचन्द्र भूपति शस्त्रबल तें जीतिकै सब भूप । करी सागर मेखला क्षिति सबश्व सधन अनूप ॥ कियो नृप हरिचन्द्र यज्ञ सु राजसूय महान । पाय आज्ञादयो भूपन्ह ल्याय धन अतिमान ॥ द्विजनकौं तँह दई भूपति दक्षिणा बऊ भूरि । दए नानाभाँति भोजन बसन आनद पुरि ॥ राजसूय सुयज्ञ करि हरिचन्द्र भूपति तौन । पाय पुण्याधिक्य कीन्हो अमरपतिपुर गौंन ॥ राजसूय सु यज्ञ भूपति करत जो अभिराम । जायकै सो बशत सुरपुर शक्र साथ ललाम ॥ संग्रामसे जे निधन पावत सूर सनमुख जाय । लहतहैं सुरलोक को ते महत सुख समुदाय ॥ उग्र तप करि तजतहैं यो देह यह अभिराम ॥ जाय सुरपति लोकमे सो बसतहै तपधाम ॥ पिता तो नृपपांडु भूपति कहे हमसौं बैंन । देखि श्री हरिचन्द्र को मनभरे भूरि अचैंन ॥ जातहौ क्षिति लोक कौं सुनि सुनऊ मो सन्देश । युधिष्ठिरकौं कहि सु दीजो यह तु परम निदेश ॥ भूमि जीतन योग्यहौ तुम बीर भ्रातन साथ । राजसूय सु यज्ञ की जै हेतु मो कुरुनाथ ॥ पाय तुमसो पुत्र हम सुर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० लोकमे नहि जाय। बसत सम हरिचन्द्रके सुर सभामे सुखदाय ॥ कहो हम यह भूप तुमसौं पांडु को सन्देश ॥ करऊ तुम सङ्कल्प तिनको सत्यसहित निदेश ॥ जाऊगे सह पूर्व सुरपति लोककौं अभिराम ॥ बिघ्न होत अनेक यहि मखमाह हे मतिधाम । छिद्र देखत रहतहैं यज्ञघ्न राक्षस सर्वयुद्ध क्षत्री शमन होत सु क्षिति अराजक सर्व॥जौंन पूँछो भूप हमसौं कहो हम सब जौंन। देऊ आज्ञा द्वारिकाकौं करैं अब हम गौंन ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यहि भाँति कहिकै पार्थ सौं ह्वै बिदा मुनि तपधाम।गए मुनिन समेत द्वारावती कौं अभिराम ॥ महा मुनिके बचन सुनि निश्वास लै नृपधर्म । राजसूय बिचारि करिबो लहतहै नहि शर्म ॥ महर्षि करिकै यज्ञ पावत पुण्य लोक बिचारि । हरिचन्द्र श्रीसुनि यज्ञ करि बो नियत किय निरधारि ॥ भूप पूजे सभासद सब सभासदन्ह नरेश । होय जैसें प्रजनको हित करि बिचार बिशेश ॥ करि अनुग्रह प्रजनपर सम करत हित अभिराम ॥ साधुधर्म सुधर्म सुनत सधर्म नृपति ललाम । भूप सँग्रह भीम पालन जिष्णु कृत पर नाश। पाय करत स्वकर्म सिगरे प्रजा बिगलित त्राश ॥ करत साशन धर्मको सहदेव बर मतिमान । करतहैं ताको प्रशँसा नित्य बिबुध महान ॥ यथा काम सु होति बर्षा भए जनपद पुष्ट । करत बाधा नहीं कबहूँ चोर ठगजन दुष्ट ॥ प्रजा मानत धर्म नृपको पितृ मातृसमान । बर्ण चारो रहत हैं अनुरक्त अति सुखदान ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ सहित मंत्रिन्ह भ्रातरण सौं कहौं फिरि फिरि भूप । राजसूय सुयज्ञ करिबे हेत बचन अनूप ॥ मन्त्रिण ऊचुः ॥ राजसूय सु यज्ञसौं जिमि बरुण जल सब जीति । सम्राट भो तिमि होत नृपहूं जीति भूमि निभीति ॥ सम्राट गुणके योग्यहौ तुम धर्मधुर कुरु भूप। सुखद तो शुचि समय मानत यज्ञको अनुरूप ॥ क्षत्र सम्पति स्वबसहै तब यज्ञकीजे तौंन । अग्नि षटजिहि माहि बर्धित करैं बर तपभौंन ॥ प्रथम दर्बी होम करि फिरि क्रमहि ते सब यज्ञ । सर्बजित नृप होतहै अभिषेक लहि तब तज्ञ ॥ सामर्थ हौ सब भाँति तुम हम रावरे बश सर्ब ॥ यज्ञ कीजै अचिर भूपति राजसूय अखर्ब ॥ सुहृद सब हिम कहो ऐसें भूपसौं बरबैंन। बचन सुनत सधर्म्म तिनके पायकै नृपचैन ॥ यज्ञ करिबैं योग्य आपुहि जानिकै तब भूप। धरो श्रीश्रीकृष्णको हियमांह ध्यान अनूप ॥ सहित भ्रातन्ह [illegible]जनसौं यज्ञ करिबे हेत । बचन लागे कहन फिरि फिरि भरे आनद चेत ॥ धौम्यव्यास हि [illegible] भे इमि तदनु नृप सहुलास ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ मो यज्ञ इच्छा सिद्धि कैसे [illegible] रास ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह बचन सुनिकै भूपके ते मत्र बिदजन सर्ब। [illegible] कह्यो नृप तुम यज्ञ धोम्य अखर्ब ॥ कियो तिनके बचनको सत्कार भ्रातन्ह पर्म्म । [illegible] काल आगम फिरि बिचारो धर्म्म ॥ सामर्थ्य आगम देशकों जो लेइ प्रथम बिचारि [illegible] कार्य करतें नही पावै हारि ॥ स्वमँत्रते नहि यज्ञको प्रारम्भ कीवो पर्म्म।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

यह जानिकै श्रीकृष्णको सुस्मर्ण कीन्हौं धर्म्म ॥ जगत्कर्त्ता जगन्मय जगदीश योग्य विचारि। स०प०
त्वरित पठयो त्वरितगामी दूतकौं निरधारि ॥ इन्द्रसेन सो दूत पहुंचो द्वारिकामे जाय । कहो
नृप सन्देस सिगरो बन्दि हरिके पाय ॥ दर्शनोत्सुक धर्म्मनृपकों जानिकै अभिराम । चले आतुर
दूतकों सँग लए आनदधाम ॥ इन्द्रप्रस्थ सु त्वरित आए जहां हे नृपपर्म्म । कियो पूजन सहित
भ्रातन्ह नृप युधिष्ठिर पर्म्म ॥ बन्दि कुन्तीकौं गए जहँ रहे अर्जुन बीर । नकुल अरु सहदेव बन्दे
चरण समुद गभीर ॥ कियो क्षणक बिराम हरि तब धर्म्मनृप तँह आय । स्वप्रयोजन कहन लागे
कृष्णसों सुखपाय ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ हमै बांछित राजसूय सो कहत तुमसों नाथ ।
जानि कै सब भांतिकी है योग्यता तब साथ ॥ भूप सर्वेश्वर लहत यो राजसूय सु यज्ञ । तौन
हमसों कहत करिबैं सुहृद सिगरे तज्ञ ॥ हमै निश्चय सोइ करिबैं गिरा तब जो पर्म्म । कोऊ सौहृ
दत कहत नहि दोषको जो मर्म्म ॥ कोऊ अपने स्वार्थकौं प्रिय कहत हैं सब तौन । यहि भांतिको
सब जननको लखि परत कहिवो जौन ॥ सर्वज्ञ हौ तुम कृष्ण हमसों कहऊ योग्य बिचारि ॥
श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ राजसूय सु योग्य तुम हौ गुणनतैं निरधारि ॥ भूप तुमकौं बिदित सब हम
कहत कछुक विशेष । कियो क्षत्रीबंशको सब परशुराम अशेष ॥ क्षत्रबंश सु भयो नूतन जौन अब
अभिराम । कियो यहसङ्कल्प क्षत्रिण नियम बन्ध ललाम ॥ ऐल अरु इक्ष्वाकु सम्भव क्षत्र बंश
अनेक । भोग क्षितिको करत चहुँदिशि भरे सुबल बिबेक ॥ जरासन्ध महीपकौं ते सहित लक्षी
भूप । करत अद्य उपासना व्है तास बंश अनुरूप ॥ शिषुपाल नृप सेनेश ताको भयो है बलवान ।
दन्तवक्र सु हंस डिम्भक भजत ताहि सुजान ॥ यवनेश पश्चिमदिशाके सह भूपवृन्द अनेक ।
जरासन्ध नरेशकौं ते भजत सहित बिबेक ॥ भगदत्त पांडु नरेशको जो सखा है बलवान । पूर्व
दिशिके नृपन सह सो भजत ताहि सुजान ॥ भूप उत्तरदिशाके जे महाबल रणधीर । जरासन्ध
नरेशकों तैं भजत सुमति गँभीर ॥ भोजबंशज पांड्य पौंड्रक भूप जे क्षितिपाल । पाञ्चाल दक्षिण
तजी क्षिति धरि भीति तास बिशाल ॥ जरासन्ध नरेश सिगरे जीति कै क्षितिनाथ । स्ववश कीन्हैं
भजत हैं ते रहत ताके साथ ॥ यादबनकौं जीति पीडित कियो कँस महान । जरासन्ध सु दई
ताकों सुता द्वै सुखदान ॥ स्वजाति पीडित कियो तासौं पाय कै बल भूरि । कँस करण अनीत
लागो महामदसों पूरि ॥ कियो मेरो स्मरण रक्षणहेत तिन दुखपाय ॥ कियो हम बध तास सह
बलभद्र तेहां आय ॥ जरासन्ध नरेश यह सुनि चलो तब करि कोप । जानि कै अति प्रबल हम
यह कियो मंत्र अरोप ॥ * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * * *

महा अस्त्रसों मारि हैं नित्य बर्षसौ तीनि । तऊन हमसों होयगो याको अति बलक्षीनि ॥
सुरसम प्रबल सहाय हे हँस डिम्भक बलवान । बध नहि जिनको शस्त्रसों करता युद्ध महान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० हनो हँसकों राम यह कहो डिम्भकसों आय। काहूसो सुनि कै डिभक महा शोकसों छाय॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

यमुनामांह बूडि सो मरो। यह सुनि हंस शोकसौं भरो॥ सोउ महाबली रणधीर। बूडो यमुनामांह गँभीर॥ जरासन्ध तिनको सुनि मर्ण। बलक्षय अपनो करि सुस्मर्ण॥ शोच भरो हिय माह गभीर। गयो स्वपुरकों फिरि रणधीर॥ तब हम सब लहि मोद अमन्द। मथुरामाह बसे तजि दन्द॥ जरासन्धकी दुहिता तौंन। कँस कुमतिकी पत्नी जौंन॥ गई पितापहँ भरी उताप। हनु पतिको करि कहों बिलाप॥ जरासन्ध लै सैन महान। चलो क्रोध करिकै बलवान॥ कियो रहो जो पूर्व बिचार। सो मनमे करिकै निरधार॥ कुल कुटुम्ब सब बित्त ममेत। भजे छोडि बर बिभव निकेत॥ उन्नत पश्चिम दिशिके मांहि। रैवत नामा पर्वत पाहि॥ कुशस्थली नगरीमे जाय रहे दुर्ग अति उग्र बनाय॥ सह परिवार महा बलवान। साबधान तहँ बसत सुजान॥ जरासन्ध सों इमि भय पाय॥ हम छोडी मथुरा सुखदाय॥ तुम साम्राठ योग्य हौ भूप। क्षत्र धर्म्मसों भरे अनूप॥ जबलों जरासन्ध महिमाह। तबलों होय न मख नरनाह॥ लहि जिन क्षितिपन तासा हारि। गिरि कन्दरमे राखे डारि॥ कियो चहत है सोऊ यज्ञ। राजसूय सुनिए नृप तज्ञ॥ यातैं लए भूप सब जीति। किए शङ्कर सेवन सह प्रीति॥ ताके डरतैं हमहूँ भूप। गए छोडि मथुरा सुखरूप॥ यज्ञ कियो जौं चहत नरेश। तास हनन मह करो प्रवेश॥ नृपन्ह छुटाय रचहु बर यज्ञ। औरन बिधि यामे नृपतज्ञ। यह है मत मेरो सिद्धान्त। तुम्हैं रुचै सो कुरु नृपकान्त॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ कहे कृष्ण तुम जे ए बैंन। सँशय हरण परम मुद अैंन॥ तातैं क्षमा क्षेमको धाम। करिबो कृष्ण हमै अभिराम॥ यज्ञारम्भ करे तैं ऋद्ध। हूबो तास दुरासद सिद्ध॥ हम हू शङ्कित भए महान। तास दुष्टता करि अनुमान॥ तब भुज बलको आश्रय बीर। करि हम रहत अशङ्कित धीर॥ जरासन्धसौं शङ्कापाय। तुमहूँ बसे द्वारिका जाय॥ तुम कै ताहि हनै बलबीर। भीमसेन कै अर्जुन धीर॥ और हनै को ताकौं भूप। जरासन्ध नृप प्रबल अनूप॥ हमका सकलभाँति सुखदान। बचन कृष्ण तो परम प्रमाण॥ यह सुनि भीमसेन बरबीर। बोले बचन सुनीत गँभीर॥ * ॥ भीमसेन उवाच॥ *॥ बिन उद्योग नृपति बलवान। लहत न वृद्धि ऋद्धि सुखदान॥ उद्योगी दुर्बल क्षितिपाल। जीतत सो अरि प्रबल बिशाल॥ कृष्ण माह नय बल अति पाल। अर्जुनमे रणजय सु महान॥ मगधेश्वरको साधन जौंन। करि हैं सत्य सुनहु नृप तौंन॥

॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ कार्यारम्भ करत अज्ञान। देखत नही शत्रु बलवान॥ मान्धाता जयतैं साम्राज। पालि भगीरथ प्रजा समाज॥ तपतैं कार्तबीर्य बलवान। बलतैं भरत भूप मतिमान॥ मरुत [illegible] सहित समाज। लहे सु इमि इन पद साम्राज॥ लहिबेमे सम्राज्य अनूप। पञ्च जयादि हेतु बर भूप॥ ते तुममे लखि परत सदाहि। क्या सम्राज्य पायहौ नाहि॥ है साम्राज्य योग्य बलवान।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जरासन्ध हू बर मतिमान ॥ पै न चहत हैं ताहि महीप । कोऊ सुनो भारतकुलदीप ॥ तुम्हे चहतहै स०प०
सर्व नृपाल । जरासन्ध एक बिना बिशाल ॥ भजत भूप दै रत्न महान । तिनसों मोद न लहत अज्ञान ॥ नृप मूर्द्धा अभिषेकित जौंन । बलतें करे वश्य सब तौंन ॥ बलिकारक बलिपशुसों प्रीति । होति नही यह नियमित नीति ॥ तासों और नृपनसो हैं न। इमिही प्रीति सुनो बलऐन ॥ शस्त्र मरणतें क्षत्री पूत। होत सुनऊ यह धर्म अकूत ॥ जरासन्ध वध यातें भूप। हमको करिबो योग्य अनूप ॥ नृपति कुलीन छियासी जोति । कारामहसे करे अनीति ॥ बाको रहे चतुर्दश जौंन । स्ववश कियो चाहत है तौंन॥ जरासन्धकँह हनै जो वीर। लहै जगतमहँ सुयश गँभीर॥ सो सम्राट भूप अभिराम। होय जगतमँह सुषमाधाम ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ स्वारथ चाहि तुह्मौं बरबीर । हम नहि पठै सकत रणधीर ॥ भीमार्जुन सम नेब समान। तुम सन सम केशव सुखदान ॥ नर सन चक्षुहीन है जौंन । व्यर्थ तास है जीवन तौंन ॥ जरासन्ध बलभीम अपार। यमौ न तास होय जेतार ॥ यहि स्वारथ मे सुनिए मोहि। प्राप्तअनर्थ परत ह जोहि ॥ तातें कियो नियत हम एक। सुनऊ कृष्ण सो सहित बिबेक ॥ यज्ञकार्यको करिबो त्याग। रुचत हमै है बरबडभाग ॥ राजसू यकी इच्छा जौंन । देति परतु हमे दुखतौंन ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ श्रेष्ठ धनुष लै अक्षय तुणीर। चढो कपिध्वज रथपर बीर ॥ अर्जुन आय सभाके ऐन । कहे जुधिष्ठिरसों इमि बैन ॥ शस्त्र धनुष चाहत हैं जौंन । प्राप्त भए हमकों सब तौंन ॥ ** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥*

भयो सुकुलमे जन्म सो सुमति सराहत सर्व । कियो पराक्रम चाहिए तैसो भूप अखर्ब ॥
होत न परबश बीर्य सों दीर्घ रुचत है मोहि । बंश बीर्यसम नहि भयो सो गत प्राय सो जोहि ॥
कुलनि बीर्यमे जो भयो बीर्यवान नर धीर । सो असंख्य सब जगतमे सुनिए बुद्धि गँभीर ॥
मनो वृत्ति अरिजीतबे मे है जाको भूप । ताकौं क्षत्री कहतहैं रहित अन्य गुण रूप ॥
निबीर्य सबगुणयुक्त है सो क्षत्री निष्काम । और सर्वगुण गौणहै बीर्यहि मुख्य ललाम ॥
जो बलवान प्रमाद बश सो नहि कार्य समर्थ । पैठि प्रमादद्वार रिपु करत सकल बल व्यर्थ ॥
मोह दीनता भूपको करत सकल बलनाश । सावधान तातें तजैं दोऊ होत उलाश ॥
जरासन्धको मारिबो भूप सोचिमो सर्व । यज्ञ कार्यको साधिबो यातें कहा अखर्ब ॥
कर्मारम्भ किए बिना जन निर्गुण टहरात । प्रगट करैं गुण नियतकैं जन गुणमान लखात ॥
लीबो जिमि सन्यासको सुलभ मुनिनकौं सर्ब । तिमि हि सुलभ साम्राज्य है हमकौं भूप अखर्ब ॥

॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥

भरतबंश कुन्तीतनय अर्जुन बीर महान । कहे भूप ए बचन बर आपु योग्य मतिमान ॥
अमर सुने नहि युद्धमे जे न करत है गौन । रात दिवसमे जात मरि सुयशी अयशी जन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ *॥

नीति बिधिसौं शत्रु पै चढि जाइबो सुखदान। सुनय सो अनुपायसौं लरि लहत भ्रम अतिमान ॥ दोऊ जय नहि लहत लरि बऊ लेय सङ्ग सहाय । नीति यह अति प्रबल अरिके निकट हू जै जाय ॥ कूलद्रुमके निकट आएँ नदी देति गिराय । तथा अरि ढिग गए मारण सधत सकल उपाय ॥ रंध्र अपनो गुप्त करि पररंध्र देखै भूप । लरै नहि बलवान रिपुसौं देखि अपनो रूप ॥ नीति यह मतिमानको सो रुचति हमकौं धर्म। बेष भ्रतधरि गुप्त व्है अरि निकट हूबो पर्म ॥ गएँ अरि तनुके निकट फिरि सधत हैं सबकाम । एक सो सब भूमि भोगत महाबलकौं धाम ॥ जरा सन्ध हि भए प्रापत मरण अपनो होय। स्वर्ग मिलिहै जन प्रसंशा करै गे सबकोय॥ युधिष्ठिर उबाच॥ जरासन्ध सो भयो कैसें कृष्ण प्रबल महान । अग्निसे लहि तुम्हे सो नहि जरो सलभ समान ॥ ॥ * ॥ श्रीकृष्णउबाच ॥ * ॥ जरासन्ध चरित्र बूझत भूप सुनिए तौंन । बृहद्रथ हो मगधको क्षितिपाल अतिबलभौंन ॥ काशिपतिकी सुता ही दै अङ्गजा अभिराम। व्याहि दीन्ही बृहद्रथकौं भरी गुण कबिधाम ॥ कियो पन सम राखिबेको भूप तिनसों पर्म । रमो भूप समान तिनसों बचन पालि सधर्म ॥ गयो यौबन भयो सुत नहि बंशकर अभिराम । पुण्य यज्ञ सु किए नाना भाँतिके सुतकाम ॥ काक्षीव गौतमको तनै मुनि चण्ड कौशीक जौंन। गयो इक्षा आपनोसों तहाँ पुर ढिग तौन ॥ सुनत आए भूप तेंहाँ लए पत्निन्हँ साथ ।आम्रतरुतर रहे बैठे जहाँ मुनिबर नाथ ॥ सहित पत्निन्ह पूजि मुनिकों तुष्ट कीन्हौं भूप । कृपा करिकै कहो मुनिबर बचन सत्य स्वरूप ॥ तुष्टहै हम भूप मागऊ होय बांछित जौंन। सहित पत्निन्ह प्रणत व्है नृप कहन लागो तौंन ॥ राजोबाच ॥ तपोबनकों जाइ हैं हम राज्य तजि तपधाम । भाग्यहीन अपुत्र हमकों कहा बरको काम॥ सुभित व्है मुनि ध्यान धारो महामुनि तपधाम।गिरो मुनि उत्सङ्गमे तब आम्रफल अभिराम॥ तौन फल लै मंत्र पढि करि कै कृपा तपभौंन।भूपकों सो दियो अतिबल पुचकारक तौंन॥ कहो मुनिबर जाऊ अपने भौंनकों तुम भूप । भए तुम कृत कृत्य यह फल पाय मङ्गलरूप ॥ भूप मुनिके बचन सुनि पद बन्दि आए धाम । दुऊन पत्निनकों दियो सो आम्रफल अभिराम ॥ तिन कियो भोजन द्विधा करिकै दुऊन लहि अतिचैन । दुऊन धारो गर्भ मुनिको महा अबिचल बैंन ॥ देखि तिन्हहि सगर्भ भूपति लहो मोद गंभीर । भयो तिनकों प्रसव सुतको अर्द्ध अर्द्धशरीर ॥ देखि ते उदबिग्न व्है अति लगी कांपन भूप । मंच करि कै त्याग कीन्हौं दुऊन जौंनि कुरूप ॥ नृप सद्म बाहेर चतुष्पथमे गई धात्री डारि । सप्राण दोऊ खण्ड मनमे मृतकसे निरधारि ॥ मांस अशना जरा आई राक्षसी तहँ जौन। ले जाइबेकों दोऊ बांधे खण्ड सम करि तौन ॥ खण्ड दोऊ मिलत ही जुरिगए सुनिए भूप। एक रूप कुमार भो अति चारु बीर स्वरूप ॥ चकित चख करि राक्षसी नहि शकी ताहि उठाय। बज्रसार समान बालक देखि कै बरकाय ॥ रक्ततल करमुष्टि मुखमे देइ सो सुखदान । लगो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रोदन करण गरजो मनऊ मेघ महान॥ शब्द सुनिसो भ्रांत अन्तःपुर सुजन बर भूप। निकसि कै तँह गए कीन्हेँ चकित चिन्तत रूप॥ राजपत्नी गई ते तँह श्रवत उरसिज क्षीर॥ पुत्र प्राप्ति निराश जिनको व्यथित मनसँ गँभीर॥ सहित पत्निन्ह देखि भूपहि चाहि सो सुकुमार। भई चिन्तित राक्षसी हिय दया धारि उदार॥ करति हौँ यहि भूपके हौँ देशमे निति वाश। मोहि याके पुत्रको नहि उचित कीवो नाश॥ मानुषी तनु धारि बालक गोदमे लै तौँन। प्रगट बोली भूपसौँ इमि बचन आनदमौँन॥ *॥ राक्षस्युवाच॥ *॥ देति हैँ तव पुत्र हम यह लेऊ नृप अभिराम। तो भारजनमे भयो है द्विज बचन तेँ बलधाम॥ डारि धात्री गई है हम कियो रक्षण भूप। श्रीकृष्णउवाच॥ *॥ स्तन्य सिञ्चित लियो सुत नृप भारजन अनुरूप॥ भूप सुनि वृत्तान्त सो सब भयो हर्षित भूरि। लगे पूछन राक्षसीसौँ प्रीतिसौँ अति पूरि॥ कौँन हौ तुम कहऊ सुन्दरि देवतासी पर्म। कृपा करि कै दियो हमको पुत्र पूरित धर्म॥ *॥ राक्षस्युवाच॥ *॥ जरा नामा राक्षसी हम कामरूपीनि भूप। बसति पूजित धाममे तब देवता अनुरूप॥ गेह गेहन्ह मनुजके हम रहति नित्य नरेश। गृहदेवता धरि नाम बिधि रचि कियो नित्य निदेश॥ दानवनके नाशकौँ बिधि हमै बिरचो भूप। भीत्तिपर लिखि मूर्ति मो सुत सहित तरुण स्वरूप॥ सहित बिधि जो मोहि पूजत होति ताकी बृद्धि। जो न पूजत लहत सो क्षय प्रजासहित समृद्धि॥ भई पूजित धाममे तब बिबिधि निधि अभिराम। कियो तव उपकार चाहत रही नित्य ललाम॥ तब पुत्रके द्वै भाग बिधिबश लखो हम इत आय। जोरि दीन्हो भयो तौन कुमार अति बरकाय॥ भई कारण मात्र हमभो भाग्यते यब भूप। मेरु भक्षण शक्य हमकौँ कितक बालक रूप॥ दियो व्है हम तुष्ट तो गृह माँह पूजन पाय॥ *॥ श्रीकृष्णउवाच॥ *॥ भई अन्तरध्यान सो एहि भाँति कहि सुखदाय॥ लेय तौन कुमार भूपति गए अपने धाम। किए जातक कर्म सिगरे मोदमय अभिराम॥ जरासन्ध सुनाम यातेँ पुत्रको मगधेश। कियो करिवे जराउत्सव मगधमाह निदेश॥ भयो वर्द्धित महा तेजस मगध पतिसुत तौन। अप्रमाण महान बलको भूप है अब जौँन॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीस्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना कृतभाषामहाभारतदर्पणे सभापर्वणि मंत्रविचार जरासन्धोत्पत्ति वर्णनोनामत्रितीयोध्यायः॥ *◆*॥ श्रीकृष्णउवाच॥ दोहा॥ *◆◆*◆*

तहां चंड कौशिक सु मुनि गएँ कछु फिरि काल। आए सुनि नृप बृहद्रथ पायो मोद बिशाल॥
सचिव सपत्नी सहित नृप लए पुत्र अभिराम। आए बन्दि मुनिके चरण पूजो सबिधि ललाम॥
राज्य सहित नृपपुत्र कौँ कियो निबेदन ताहि। पूजा लहि मुनि नृपतिसौँ कहन लगे इमि चाहि॥
हम जानो बृत्तान्त सब ज्ञान चक्षुसौँ भूप। पुत्र तिहारो होय्यगो जैसो प्रबल अनूप॥

CC-0: In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सत्व बल श्रीरूपको क्रमतैं पाय महान । स्ववश भूमि सब भूमिपति जीति करिहि बलवान ॥
लहि हैं परिपन्थी सकल याके भूप बिनाश । सफल बर्णको होय गो यह रक्षक सुखके रास ॥
त्रिपुरान्तकको होय गो याकौं दर्शन भूप । भयो बृहद्रथ पुत्र तो अति बलवान अनूप ॥
यह कहि मुनि नृपकौं कियो बिदा अपने धाम । गए बृहद्रथ नगरकौं सहपरिवार ललाम ॥
ज्ञाति कुटुम्ब बोलाय सब भूपति सहित बिबेक । जरासन्ध को बेदबिधि कियो राज्य अभिषेक ॥
भए सुबृद्ध निबृत्ति लहि भूप बृहद्रथ तौंन । पत्निन सह तपहेतु नृप कियो तपोबन गौंन ॥
कछु दिनमे पत्निन सहित गए स्वर्ग कौं भूप । जरासन्ध बल बीर्य्य तैं जीते नृपति अनूप ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जरासन्ध अति प्रबल महान । जीते सकल भूप बलबान ॥ तासो आय लरे नृप जौंन । मारे गए समरमे तौंन ॥ जीति लई श्री सबकी सर्ब । नदी नीर ज्यौं सिन्धु अखर्ब ॥ दियो चण्ड कौशिक बर जौंन । जरासन्ध कीन्हौं सब तौंन ॥ कंस हि हनो कृष्ण बरबीर । तातैं बाढो बैर गँभीर ॥ जरासन्ध शतबार फिराय । फेकी गदा महारिषि छाय ॥ शौ योजन मथुरामे तौंन । गिरी जाइ अति गुर्बी जौंन ॥ कहो कृष्णसौं पुरजन जाय । गदापात लखि बिस्मय छाय ॥ गदाबसान देश सो भूप । अबलौं कहत सुलोक अनूप ॥ हंस डिम्भक मंत्री मतिमान । जरासन्धके भए सुजान ॥ जे न शस्त्रतैं मारे जात । युद्ध निपुण बलभारे गात ॥ तिनसौं लरे न नीति सुढार । गुणि कै अन्धक वृष्णि कुमार ॥ * ॥ बासुदेवउबाच ॥ * ॥ हँस डिम्भक जल बूडे तौंन । मारो गयो कंस खल जौंन ॥ जरासन्धके बधको काल । प्राप्त भयो अब भूप बिशाल ॥ जरासन्धको जीतनहार । सुरासुरौ नहि भूप उदार ॥ मल्ल युद्धसौं जीतो जाय ॥ हम यह चाहत रचो उपाय ॥ हममे नीति भीम बलबान । रक्षण करता पार्थ सुजान ॥ करो चहत मागधको नाश । सेनारहित पाय बलराश ॥ करि हि एकसौं मागैं युद्ध । हनि हैं भीमसेन तब क्रुद्ध ॥ जौं तुमकौं मेरो बिश्वास । बन्धु दोउ दीजै ज्यौं न्यास ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ धर्म नृपति सुनि मतिसम्पन्न । भीमार्जुन मुख देखि प्रसन्न ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ हे अच्युत नहि तुम्हैं समान । यह कहिबो जगजन सुखदान ॥ तुम पांडव कुलके हौ नाथ । हम आश्रित तव सेवक साथ ॥ कहऊ नाथ हम कीजै तौंन । तुम बिनु है श्रीदायक कौन ॥ जरासन्ध को मरिबो जौंन । नृपगण मोचन यशके भौंन ॥ राजसूय को हूबो सिद्धि । तो आज्ञामे चलैं समृद्धि ॥ क्षिप्र होय जैसे यह काम । तैसे करऊ कृपाके धाम ॥ तुम्ह हि तीनिसौं भए बियोग । जीवन लगत हम हि सम रोग ॥ जहाँ कृष्ण तहँ अर्जुन धीर । जह अर्जुन तहँ यदुपति बीर ॥ बलिनमाँह है अति बलवान । भीमसेनके कौंन समान ॥ भीमार्जुनकौं लैकै साथ । कहा न तुम करिहौ यदुनाथ ॥ ज्यौं नेता सह सैन समर्थ । नतरु सुमति नेता बिनु अर्थ ॥ नय बिधान बेत्ता

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बलधाम । तुमकौं करि आगें अभिराम ॥ लहिहैं सकल कार्य्यकी सिद्धि । हम श्रीमाधव तुमतें स०प०
वृद्धि ॥ सकल कार्यके साधक अर्थ । कृष्ण तुम्हे बिनु कौन समर्थ ॥ जबलौं कार्य होय नहि नाथ ।
तबलौं पार्थ रहैं तो साथ ॥ भीमसु अर्जुन कीन्हे सङ्ग । रहैं बीर दोउ भरे उमङ्ग ॥ नय जय बल
कँह पाथ समान । बिक्रम करत कार्य्य सुखदान ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ इमि सुनि
श्रीमार्जुन बलबीर । चले मगधपतिबधकौं धीर ॥ धरि मुनिबेश परम अभिराम । लसे बीरवर
बलके धाम ॥ भए अमर्ष भरे बरबीर । रबि सोमाग्नि समान शरीर ॥ जरासन्धकौं मृतक समान ।
जानो इन्हे देखि बलवान ॥ नाना देखत देश उदार । गए गण्डकी सरजू पार ॥ देखि अयोध्या
मैथिल देश । गए सुरसरीपार नरेश ॥ चले पूर्वदिशिकौं बलधाम । भए मगधपुरपास ललाम ॥
गोरथगिरिपर चढि कै भूप । लखो मगधपुर रम्य अनूप ॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥ लखऊ
मगधपुर पार्थ सुरम्य । चऊँ दिशि गिरि आवरण अगम्य ॥ पशु पक्षी बन बापी जौन । अति रम
णीय लसत हैं तौन ॥ भूद्रामे गौतम उतपन्न । किय कात्तीवादिक सम्पन्न ॥ मुनिकी कृपा जाय
अभिराम ॥ ए मनु बँशी क्षत्री आम ॥ स्वस्तिक कौशिक आलय नाग । अरु मणिमान भरे चित
राग ॥ रहत हैं ते पुरहि सदाहि । अप्रमादत धरि हिय माहि ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
ऐसे कहि कृष्णार्जुन भीम । चले मगधपुरकौं बलसीम ॥ हृष्ट पुष्ट जहँ चारो वर्ण । धरे सु
उत्तम बसनाभर्ण ॥ गए नहीं ते पुरके द्वार । कियो प्रवेश नांघि प्राकार ॥ चैत्यक गूरे दिए गिराय ।
दूहे शिखर पर जो कबिछाय ॥ जहँ मांसाद बृषासुर दुष्ट । भूप बृहद्रथ मारो रुष्ट ॥ मांस चर्मके
पटह बनाय । राखे तीनि महत धरवाय ॥ डारे फोरि तिन्हे तिन बीर । जरासन्ध शिरसमरण
धीर ॥ भृङ्ग मगधपति पूजित जौन । दियो गिराय भुजबल तौन ॥ तब देखन कहँ मगध नरेश ।
करो बीरचय पुर परबेश ॥ दुष्ट सकुन लखि द्विजन अनेक । कहो भूपसो शान्ति बिबेक ॥ जरा
सन्धकौं दिरद चढाय । डारो ऊपर अग्नि फिराय ॥ शान्तिहेत मगधेश्वर भूप ॥ नियम व्रत
कीन्हौं शुचिरूप ॥ निरायुध ब्रह्मचर्य्य धरि बेश । युद्धाकाङ्क्षी कियो प्रवेश ॥ *⬭*⬭*⬭*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देखि समृद्ध बजारते महावीर बरजोर । लए माल्य भूषण बसन रङ्गन भरे सजोर ॥
जरासन्धके सदनमे कियो प्रवेश अमान । लखत तथा गो गोष्टकों तरुण सिंह बलवान ॥
श्रीमार्जुन गोबिन्द बर धारैं बसनाभर्ण । जरासन्धको सभाकौं चले चाहि अरिदर्ण ॥
शालतम्भसे बाऊबर चन्दन चर्चित पर्म । शोहत जिनके जगत जयकारक धारक धर्म ॥
तिन्ह चाहि पुरजन सकल मत्त मतङ्ग समान । रहे चाहि चख चकित करि बिस्मय भरे महान ॥
नांघि तीनि कक्षा गए चले तहां बरबीर । जरासन्ध बैठो रहो जहां महा रणधीर ॥
पूजन योग्य निहारि उठि आय निकट मगधेश । कुशल प्रश्न आगे मनको कीन्हौं परम निदेश ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

स०प० भीम अर्जुन रहे चुप ह्वै सुनत ताके बैन। महाबली कृष्ण बोले नीति मतिके ऐन॥ मौनव्रत सु निशीथ बिनए नही बोलत भूप। गयो नृप गृहकौं सभालयमांह राखि अनूप॥ जरासन्ध निशी घमे तँह फेरि आयो बीर। कहन तासौं लगे ते इमि बचन बोलि गँभीर॥ दूरितैं हम इहां आए अतिथि जानऊँ भूप। जौन मांगै देऊ हमकौं तौन दान अनूप॥ सहनशील न सहैं का खल करै कान न कर्म। का अदेय बदान्यकौं नहि शान्तकौं परधर्म॥ यहि शरीर अनित्यतैं नही करत ध्रुव यश जौन। ह्वैसमर्थ सो शोचकरिबे योग्य निन्दत तौन॥ हरिचन्द्र व्याध कपोत सिबि बलि रन्ति देवसुजान। भए नित्य अनित्य तैं यश परम राखि महान॥ लखि परस्पर तिन्हैं देखत जरासन्ध नरेश। कहन तिनसौं लगो ऐसैं बचन सहित अँदेश॥ बैठि जैए बिप्रको यह धरे कै तब बेश। भीम अर्जुन कृष्ण तहाँ गए बैठि नरेश॥ मगधेश बोलो बचन फिरि इमि बेश दूषण देत। नही स्नातक फिरत बाहर गन्ध माल्य समेत॥ कौंनहो ज्यावात अङ्कित भुजनके बर बीर। क्षात्र ओजस धरैं ब्राह्मण कहत व्याज गभीर॥ धरैं बसन सराग चाँसर मलय लेपित काय। सत्य कहिए कौंन हौ तुम कपट बेश बनाय॥ चैत्य गिरिको शृङ्ग तोरो नांघि कै प्राकार। इहाँ आए द्वार तजि तब प्रगट क्षत्रउदार॥ होत ब्राह्मण वचन बल नहि कर्ममे बलवान। कर्म है यह रावरेको बेष कनक समान॥ कियो हम सौं कौंन पूजन आय सहित विधान। सुनत यह श्रीकृष्ण बोले बचन अति मतिमान॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ * ॥ विप्र क्षत्री वैश्य स्नातक लेत व्रत अभिराम। विशेष नेम सुलेत कोउ अविशेष नेम ललाम॥ विशेषनेम जो लेत क्षत्री कहत श्री सुखदान। पुष्पधारक कहत सुश्री सुनऊ भूप सुजान॥ बाहुबल वर होत क्षत्री वचन बल न हि भूप। कहत बचन प्रगल्भ नहि विधि रचित भुजबल रूप॥ भूप देखो चहत हौ तो देखिहो अब तौन। अट्टारतैं अरिगेहमे शुभ द्वारतैं हितभौन॥ करत धीर प्रवेश याते विहित विधि अनुमानि। करत ग्रहण न शत्रु पूजन कार्य भावी जानि॥ *॥ जरासन्धउवाच बैर तुमसौं कियो हम कब कियो तो अपराध। स्मरण हमका होत नहि तुम करत व्यर्थ विवाद॥ अर्थ धर्म न हनो तब तुम कहत अरि केहि हेत। बाधबिनु अपराध रोपत सो बृजिन गति लेत॥ क्षात्र धर्म सुधर्ममे सब श्रेष्ट कहत सुजान। निष्पाप हम तेहि धर्मसे तुम कहत सदृश अयायन॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ * ॥ कुलकार्य बाहक पुरुष कोऊ होत ए बलवान। हम भए तुमपैं आय उदित तास बचन प्रमाण॥ दिए कारागेहमे सब पकरि क्षत्री भूप। कियो चाहत रुद्रबलि करि तिन्हे बध पशु रूप॥ साधु क्षत्रिनकौं हनत नहि भूप यह क्षत धर्म। कौन यातैं अधिक आगैं कियो चहत अधर्म॥ फिरत हैं हम धर्म रक्षण करत हैं बलवान। इमि मनुजको आलम्भ अबलौं लखो सुनत न कौंन॥ तुम होय क्षत्रिय करि सु क्षत्रिहि पशूसदृश अमान। कियो चाहत रुद्रकौं बलि कहौं कौंन विधान॥ करत हैं जे कर्मकौं जेहि जेहि अवस्थामाह। तेहि तेहि अवस्थामे करत ते भोगकौं नरनाह॥ ज्ञाति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

क्षयकर जानि तुमकौं भरो पाप गँभीर। तुम्हैं हनिबे हेत आए अर्क्षरक्षक बीर॥ज्ञाति पालन हेत सभ०
क्षत्री बली वर मतिधाम।जाय रणमे लहैगो नहि कौन स्वर्ग ललाम॥रण यज्ञ दीक्षित होय क्षत्री स्वर्ग
कौं जो जात। तौन जीवत लोककौं यह धर्म है विख्यात॥स्वर्गदायक यज्ञ जग यश उग्रतप अभिराम।
मरत जो निष्कपट रणमे लहत स्वर्ग ललाम॥ सैन्यकी बाऊल्यतैं बलदर्पते नरनाह। परनिरादर
योग्य नहि बल वीर्य नर नरमांह॥ मिलैगो समकै अधिक बलको तुम्हैं जब वीर। जानि परिहै
तुम्हे तब बल आपनो गँभीर॥ जाऊ मति यमलोककौं सह सुत अमात्य ससैन। युद्ध तुमसो चहत
हैं हम नियत ब्राह्मणहै न॥कृष्ण हमवसुदेवके सुतपंडुसुत ए बीर।भीम अर्जुन ख्यात जगमे महाबल
रणधीर।कहत हैं हम सुनऊ थिर व्है करऊ युद्ध नरेश।छोडि देऊ नरेश कै सब जाऊ कै वमदेश॥
॥*॥ जरासन्धउवाच ॥*॥ विना जीतें युद्धमे हम गहे नहि क्षितिपाल। कौन हमसौं युद्धमे
लरिकै भयो वश काल॥दुखद जीविन्ह जीतिबो यह क्षात्रधर्म ललाम। जीति वश करि कीजिए
जो रुचै सो मनकाम।जीति हम वश करे जिनकौं देवतार्थ बिचारि।क्षात्रधर्म बिसारि तिनकौं तजैं
को निरधारि॥सहसैन्यसों सहसन्य लरि हैं एकसों हम एकद्वै तीनि कूसौं लरैं गे हम बाँधि बल
अतिरेक॥ वैशम्पायनउवाच॥*॥ यहि भाँति कहि कै कृष्णसौं चितचाहि युद्ध अनूप। पुत्रको
अभिषेक करिबेकौं दयो कहि भूप॥ सु सर्ण सेनापतिनको मगधेश कीन्हौं तौन। हँस डिम्भक रहे
हे जे महाबलके भौंन॥ युद्धमे हे गए मारे जन्मकौं फिरि पाय। ख्यात कौशिक चित्र
सेन सु नामसों भे राय॥ आकाशबाणी भई ही जो प्रथम रणमे भूप। भीमसौं यह
वध्य है तब तज्यो जानि अनूप॥ तौन करि सुवर्ण मनमे कृष्ण अति बलधाम। तहाँ आए भीम
सह मगधेश हनिबे काम॥ युद्ध निश्चय किए ताकौं जानि कै यदुबीर। कहन लागे मगधपतिसौं
भाँति इमि रणधीर॥*॥ श्रीकृष्णउवाच॥*॥ कियो चाहत युद्ध तुम हम तीनमे कोहिं साथ।
होइ तुमसों लरणकौं सो सज्ज करऊ मनु नाथ॥ जरासन्ध नरेश सुनि यह कृष्णवचन विशेष।भीम
सौं हम लरहिंगे यह दियो कहि मगधेश॥ भीरु हौ तुम कृष्ण मथुरा छोडि कै स्वस्थान। भीतितैं
मन भाजि लीन्हो सिन्धुशरण महान॥ युद्धके तुम योग्य हौ नहि जिष्णु है यह बाल। युद्धमे मम
योग्य है यह भीमसेन विशाल॥मन्धमाला धारि औषध व्यथाहर लै पर्म।आय प्रोहित कियो तब
स्वस्त्ययन मङ्गल कर्म॥सज्ज व्हैकै जरासन्ध सु क्षत्रधर्म बिचारि।किरीट तजि कै केश बाँधो सुदृढ
करि निरधारि॥ उठो कहि इमि भीमसौं मगधेश बलको धाम। बीर भीम सु लरे तोसों हारेऊ
यश माम॥ भीमसेन यहि भाँति कहिके उठो मगधनरेश। भीम लहि स्वस्त्ययन हरिसों कृपा
सहित निदेश॥ जरासन्ध समीप आए चाहि युद्ध गँभीर। भए नरशार्दुलसौं हैं बाऊआयुध बीर॥
भए दोउ अन्योन्य हर्षित चाहि जय बलवान।कर ग्रहण पूर्वक किये बन्दित दुऊन दुऊन महान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० दोऊ व्है रणमत्त उन्नत बाऊ ताल बजाय। दुऊँन धारें दुऊँनके कर कन्ध ऊपर आय॥ मल्लयुद्ध विधान सिगरे करण लागे बीर। करण लागे सिँ हसे दोउ महाबल रणधीर॥ दाव नाना भावके दोउ करत अति बलवान। हनत हैं अन्योन्य करि कै क्रोध उद्द महान॥ लरे दोउ उत्साहसों दोउ भरे बल बर बीर। लगे देखन पौरजन चऊँ ओर आय अधीर॥ प्रथम कार्तिक प्रतिपदाकों होंन लागो युद्ध। चतुर्दशि निशिमे भरो मगधेश श्रमसों उद्ध॥ श्रान्त लखि मगधेशकों इमि कहे सु यदुपति बैंन। भीमकों तँह कियो बोधित श्रमित भो बलऐंन॥ कौन्तेय श्रान्त न करत पीडित शत्रुकों बरबीर। फारि कै तृण एक दीन्हों डारि सो हैं धीर॥ भयो पीडित तजै गो यह कष्टतें पर प्राण। नहो तातें याहि पीडित करण योग्य महान॥ कृष्णके सुनि बैन जाने जरासन्ध हि क्लान्त॥ मारिबेकों ताहि कीन्हों भीम सुमति नितान्त॥ताहि जीतनहेत कीन्हो क्रोधकौं अति उद्ध। करण घोर प्रहार लागे भीमसेन बिरुद्ध॥कृष्णसों यहि भाँति बोले भीम यह बर बैंन। जरासन्ध हिमारिबे की बुद्धि धरि मतिऐंन॥नहो बलतें रुकत है यह दुष्ट है बर बीर। बँधी है कटि कक्ष याकी बसनसों गम्भीर॥भीमके सुनि बचन ऐसे कृष्ण बोले बैंन। लरा याके मारिबेमे कीजिए बल ऐंन॥दैव जो बल राबरो है अनिलको अभिराम। तौंन कोजै प्रगट यापै भीम अतिबलधाम॥कृष्णको यह बचनसुनि कै भीम अति बलवान। उठाय कै गहि लगे फेरण ताहि चक्र समान॥ सौ बारता हि फिराय छिति पर डारि कै बर बीर। जानुसों कटि दाबि कै गहि तोरि डारो धीर॥ पाणिसों गहि पाय दोऊ फारि कीन्हों दोय। फेरि गरजे भीम घनसम महादुर्भद होय॥ नाद सुनि सो मगधवासी भए कम्पित सर्व। तियन्ह डारे गर्भ सुनि से। भरी भीती अखर्व॥डारि पुरके द्वार ताकौं गए निशिमे बीर। कियो सज्जित जरासन्ध महीपको रथधीर। कृष्ण चढि सह पांडवन सब जाय मोचे भूपरत्न अर्प भूपतिन्ह तिन कृष्णकौं अनुरूप॥ तेहि दिव्य रथ चढि भीम अर्जुन सहित श्रीयदुनाथ। गए गिरिपुर बाहि रैं सब लएँ भूपति साथ॥तारकासुर युद्धमे चढि जौन रथपर भूप। जिष्णु बिष्णु सँहारि दनुजन लही जय अनुरूप॥ शक्र दीन्हों उपरिचर बसुकौं सुरथ अभिराम। लहो बसुसों हहयसों जरासन्ध ललाम॥ तौन रथ लहि भए हर्षित कृष्ण अरु कुरुबीर। दिव्य हयसों युक्त जो बर बायुगमन गँभीर॥निरालम्ब सु रहति जापैं ध्वजा अति अभिराम। कियो चिन्तित गरुडकों तब कृष्ण आनद धाम॥बेगसों तब ध्वजा पर खगनाथ बैठे आय। लसो सानु सुमेरुको ज्यों उदित दिनकर पाय॥ चढे रथपर चले भीमार्जुन सहित बलवीर। भए समथलमांह ठाढे निकसि गिरितें धीर॥ तहां आए मगधके सब निकसि चारो बर्ण। कियो पूजन कृष्णको बिधिसहित बसनाभर्ण॥भएबन्धन मुक्त जे क्षितिपाल आनंद चाहि॥ कियो पूजन कृष्णको सबिधान भूरि सराहि॥ भीम अर्जुन युक्त तुमकों चित्र को बलबीर। धर्म्मको प्रतिपाल यह जो कियो कर्म्म गभीर॥ जरासन्ध सुग्राहसों तुम हमै मोचो जौंन। और जगमे करैगो यह दूसरो कृत कौंन॥ परे हे गिरि दुर्गमे तुम कियो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सोचन ईश। भयो तुमकों प्राप्त यश अति अतुल है जगदीश॥ करऊ आज्ञा जौंन सो हम करहिं स०५०
दुष्कर वीर। आपने करि जानिए सब नृपनको रणधीर॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

हृषीकेश तिनसों इमि बैंन। कहे कृपा करि राजिव नैंन॥ राजसूय जो यज्ञ महान। कियो चहत नृप धर्म्म सुजान॥ ताको तुम सब करऊ सहाय। कहे तथास्तु नृपन सुख पाय॥ दिए रत्न तिन हरिकों भूरि। लिए कृपा करि आनंद पूरि॥ जरासन्ध सुत जो सहदेव। सह अमात्य आयो सो एव॥ नम्र होय अति कियो प्रणाम। दिए रत्न अतिशय अभिराम॥ दियो अभय ताकों यदु बीर। कियो राज्य अभिषेक गँभीर॥ कियो एकत्र पार्थिवन्ह सर्ब। कृष्णदेवसों समुद अखर्ब॥ जरासन्ध सुत अपने धाम। गयो पाय अभिषेक ललाम॥ भीमार्जुन सह कृष्ण कृपाल। लीन्हे रत्न असँख्य विशाल॥ आए इन्द्रप्रस्थकों बीर। गए युधिष्टिर नृपपँह धीर॥ भरे मोदसों मिले सचैंन। कहे कृष्ण नृपसों इमि बैंन॥ तो वश भाग्य भीम बलवान। जरासन्धकों हनो महान॥ कारामहते भूप छुटाय। दिए रहो तो यज्ञ क्षितिछाय॥ कुसल सहित भीमार्जुन बीर। अक्षत मिले तुमसों रणधीर॥ पूजे धर्म्म नृपति सुखदान। बासुदेवकों सहित विधान॥ भीमार्जुनसों मिले सचैन। लाय हृदयसों आनद अैन॥ जरासन्धके हने अनूप। भए अजातशत्रु कुरुभूप। बिदा किए ते भूपति सर्ब। ल्याए जिन्हैं छुटाय अखर्ब॥ धर्म्म नृपतिसों लहि सत्कार। गए भूप भरि हर्ष उदार॥ जैसैं बासुदेव मतिमान। मारो जरासन्ध बलवान॥ जरासन्धको बध कर बाय। धर्म्मराजकी आज्ञा पाय॥ बन्दे चरण प्रार्थके जाय। आशीर्बाद पाय सुखदाय॥ बिदा द्रौप दीसों फिरि होय। सुभद्राहि कहि मोदसो मोय॥ भीमार्जुन सह माद्रीनन्द। सबसों बिदा होय व्रज चन्द॥ बन्दि धौम्यकों तपस गँभीर। चले द्वारिकाकों यदुबीर॥ चढे तौन रथपैं अति गौन॥ जरासन्ध हति ल्याए जौंन॥ युधिष्टिरादिक पाण्डव आय। कियो प्रदक्षिण आनद पाय॥ गए कृष्ण तब धर्म्मनरेश। कियो नृपनकँह अभय निदेश॥ प्रजापालनादिक जे कर्म्म। करे धर्म्म नृप पालक धर्म्म॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषा महाभारतदर्पणे सभापर्वणि जरासन्ध बधो नाम चतुर्थोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ बेशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अक्षय पाय तुनीर धनु रथ सु कपिध्वज माम। अर्जुन धर्म नरेशसों बोले वचन ललाम॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

धनुष अस्त्र लहि पक्ष हरि भूमि सुयश बल भूप। बर्द्धित कीवो कोशको कारज हमै अनूप॥
लियो चहत सब नृपनसों कर वर धर्म्म नरेश। धनद दिशाके विजयको दीजै हमै निदेश॥
तिथि मूहूर्त्त नक्षत्र है आजु परम अभिराम। धर्म्मराज करि कै कृपा आज्ञा देऊ ललाम॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स्व०प०

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

अर्जुन के सुनि कै बचन धर्म्मराज सुख पाय। कहे बचन गँभीर मृदु भरे सनेह सुभाय ॥
बिप्र पूजि स्वस्त्ययन सुनि सहित सैन गँभीर। जाऊ दुहद अभिय करण सुहृदनकेहित बीर ॥
बिजय होय ध्रुव पार्थ तो सिद्ध होय सब काम। यह सुनि भूपतिके बचन चले ससैन्य ललाम ॥
अभिदत्त रथपैं चढे धरे धनुष गांडीव। बिजय करण धनपति दिशा चलो पार्थ बलसीव ॥
भीमसेन माद्रीतनय एऊ सैन समेत। चले चहि चारोदिशा बिजय करणके हेत ॥
भीमसेन पूरुवदिशा शासन नृपसों पाय। दक्षिण गे सहदेव अरु पश्चिम नकुल सचाय ॥
रहे सु खांडवप्रस्थमे धर्म्म राज अभिराम। सहित परम लक्ष्मी लएँ सुहृदनको गण माम ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दिशा बिजय बिस्तरसौं कहिए। सुने बिना मुनि मोद न लहिए ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ अर्जुन कियो बिजै दिशि जाको। प्रथम चरित्र कहत हम ताको ॥
प्रथम कुलिन्द देश बश कीन्हों। अनर्त पुलिन्द देश जय लीन्हों ॥ तिनके भूप सहित बलमए।
साकलद्वीप बिजयकों गए ॥ प्रतिबिंध्यादि भूप बश कीन्हें। तिनसौं दंड यथेच्छित लीन्हें ॥ प्राग्
ज्योतिषकौं तिनसह गए। नृप भगदत्त युद्ध मुख भए ॥ तहां युद्ध दारुण अति कीन्हों। आठ दिव
सलौं रण गरँ भीन्हों ॥ तब भगदत्त वचन इमि कहे। रणमे अजित पार्थकों लहे ॥ *👄*👄*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पुत्र हौ तुम इन्द्रके अति युद्धमे बलवान। शक्रके हम सखा हैं रणमे सुरेश समान ॥ तऊ तुमसौं
युद्धमैं हम रुचत हैं नहि बीर। कहऊ हमसौं है अभीप्सित तुम्हें जो रणधीर ॥ कहऊ हमसों
करै हौ तुम हमै पुत्र समान ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ कुरुबंश भूषण नृप युधिष्ठर धर्मपुत्र
महान। कियो चाहत यज्ञ सो अति दियो चाहत दान ॥ राजसूय सो कियो चाहत सुनऊ भूप
सुजान ॥ दीजिए कर पिताके तुम सखा हौ अनुरूप भए हौ जु प्रसन्न हमसौं योग्य तुमकौं भूप ॥
भगदत्तउवाच ॥ * ॥ यथा तुम हौ तथा हमकौं धर्म नृपति समान। कहौ गे सो करैंगे हम
पार्थ बीर महान ॥ भगदत्तके सुनि बचन अैसैं कह्यो अर्जुन बीर। कर दान मे छत सर्ब है भगदत्त
भूप गँभीर ॥ जीति कै भगदत्तनृपकौं कियो अर्जुन गौन। गए उत्तरदिशाकौं धनपाल पालित
जौन ॥ गिरिबीचके गिरिबाह्यके गिरिपासक जे देश। तिन्हैं अर्जुन जीति लीन्हों दण्ड सहित
नरेश ॥ उलूकपति सु बृहन्त नृपपैं गए पार्थ ससैन। निकसि पुरतें लरो नृपति बृहन्त बलको अैन ॥
महारण करि शक्रो शहि नहि पार्थको सो प्रहार। हारि कै तेहि दियो कर बर रत्न अमित
उदार। सुबृहन्तकौं फिरि राज्य दै कै सङ्ग लीन्हें बीर ॥ गए सेनाबिन्दुकौं करि लियो स्ववश
गँभीर ॥ रहे मोदापुरीके चऊँ ओर जौन नरेश। लिए पारथ जीति तिनसौं दण्ड रत्न बिशेश ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जीति सेनाबिंदुको पुर देवप्रस्थ महान। बिश्वगश्व नरेश पौरवपैं गयो बलवान॥ जीति ताको समरमे कर लियो तासों भूरि। गयो फिरि काश्मीरकों कुरुबीर आनद पूरि॥ काश्मीरपति नृप लोहितहि सहसङ्ग जीतो बीर। कोकनद सु त्रिगर्तनृपसों लियो दण्ड गँभीर॥ जीति अभिसारी पुरी नृप उरगवासी जीन। रोचमानहिं जीति कीन्हों सिंहपुरकों गौन॥ वाल्हीक अरु कांबोज सुम्ह महीप जीते सर्ब। पार्थ तिनसों दण्ड लीन्हों रत्न जाति अखर्ब॥ युद्ध ऋषिकनसों भयो अति सुरासुर सम भूप। जीति तिनसों लिए वसु हय सुकोदर सम रूप॥ मयूर समके लिए तिनसों दण्डमे बज्र अर्ब। जीतिकै हिमबान बासी भूप अर्जुन सर्ब॥ श्वेत गिरिकों गए तहँ के जीतिकै सब भूप। गए तहँ जहँ बसत है किम्पुरुष दिव्य सरूप॥ द्रुमपुत्रकों तहँ जीति रणमे लियो कर बर बीर। गए हाटक नाम गुह्यक देशसों रणधीर॥ सांत्वसों बश तिन्है करिकै लेइ कर अभिरान। गए मानस सर जहां है ऋषिनको बिश्राम॥ गन्धर्व रक्षित देश जीते लिए कर बर अर्ब। बिचित्र तित्तिर रङ्गके मंडूक नामक सर्ब॥ फेरि उत्तर गए बर हरिबर्षकों कुरुबीर। चहो जीतन देशसो जब भरे हर्ष गँभीर॥ द्वारपालक तहांके तब धरैं अतिबर काय। कहन लागे आय अर्जुन बीरसों समुझाय॥ पार्थ तुमसों जीतिवेकों शक्य नहि यह देश। जाऊ अब कल्याण तुमकों भयो प्राप्त अशेष॥ जात यामे मनुज सो नहि जियत है सुनु भूप। युद्धकर्त्तन को न यामे देखि परि है रूप॥ और इक्षा होय जो तुम कहऊ तौन अखर्ब। देहिं गे करि पूर्ण तुमकों तौन अर्जुन सर्ब॥ कहो अर्जुन धर्म नृपकों देऊ कर अभिराम। जाहिंगे तब देशमे नहि हमहि जौन सलाम॥ दिव्य भूषण बसन मणिगण दिए तिन अतिमान। लेय कै सो पार्थ तहँतें फिरे सबल सुजान॥ लेइ कै धन बसन मणिगण अश्व रत्न अमान। फिरे करि धनपाल दिग्गिकी बिजय पार्थ महान॥ आय खांडवप्रस्थकों करि बिजय पार्थ अखर्ब। कियो अर्पण धर्म नृपके आयसोंहैं सर्ब॥ पाइ आज्ञा धर्मनृपकी गए अपने धाम। पार्थ आनदसों भरे सब पूर्ण करि मनकाम॥ ****

स्वस्तिश्रीकाश्मीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविना कृतभाषा महाभारतदर्पणे सभापर्वणि अर्जुनदिग्बि जयवर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः॥ *** ॥ बैशम्पायनउवाच॥*॥ दोहा॥ *॥ ***

भीमसेन दिग बिजयकों बर बल लीन्हैं सङ्ग। आज्ञा लहि नृपधर्मकी सङ्ग चमू चतुरङ्ग॥
चले पूर्वदिग्गिकों गए प्रथम जहां पाञ्चाल। तिन्हैं शांत्वसों बश कियो लीन्हों सु कर बिशाल॥
फेरि गए कुंडिननगर जीते सकल बिदेह। गए दशार्णव देशकों जहां सुधर्मा गेह॥
किया निरायुध युद्ध तेहि भीमसेनके सङ्ग। भीम जीति ताकों कियो सेनापति बर अङ्ग॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अश्वमेधपति राचमानकौं जीति महा बलवान । पूर्वदेशकौं जीति सब लीन्हौं दंड महान ॥
फिरि दक्षिणदिशिकौं गए जहँ पुलिन्दपुर धर्म । जीति सुमित्र महीपकौं कर लीन्हौं जय धर्म ॥
फेरि चेदिपुरकौं गए जहाँ नृपति शिशुपाल । मिले चेदिपति आयकै पूछो कुशल रसाल ॥
किए निवेदन राज्यकौं करिकै श्रेष्टाचार । हँसिकै पूछो भीमसौं कीवैं कहा बिचार ॥
धर्मराज कीवैं चहत राजसूय वर यज्ञ । यातैं लीवैं नृपनसौं हमकौं दण्ड शतज्ञ ॥
भीमसेन तेरह दिवस तहाँ रहे बलवान । बिदाभए शिशुपालसौं लैकर रत्न महान ॥
जीति कुमार अधीशजो श्रेणिमानहो भूप । कोशलपति नृप वृहदल कौं जीतो अनुरूप ॥
दीर्घयज्ञ नृप महाबल बौध पुरीको जौन । जीति ताहि कर लै कियो भीमसेन फिरि गौंन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

नृप गोपाल बत्तके जौंन । लियोदण्ड सब जीते तौंन ॥ मल्लाधिप सब जीति नरेश । गए जे हिम गिरिकेढिग देश ॥ अल्पकालमे जीते तौन । फेरि तहाँते कीन्हो गौंन ॥ काश्मिराज जो बीर महान । ताहि जीति कर लियो अमान ॥ मत्स्य मलयके भूपति सर्व । जीति भीम कर लए अखर्व ॥ भीम सेन उत्तरदिशि जाय । बत्स भूमि जीतो कर पाय ॥ दक्षिण मल्ल लिए सब जीति । तुरित दण्ड तिन दियो सभीति ॥ बैदेह जनक जीते नृपसर्व । शर्मक वर्मक भूप अखर्व ॥ जीति किरातधिप बलवान । जीते मगधनरेश अमान ॥ दण्ड प्रचण्ड जीति नृप तौंन । जरासंध पुरकौं किय गौंन ॥
जरासन्ध सुतसौं बरवीर । कहे शान्तिमय बचन गँभीर ॥ ते सब भूपन्ह लीन्हें सङ्ग । गए कर्ण पर भरे उमङ्ग ॥ भयो कर्णसौं दारुण युद्ध । जीतो ताहि भीम रणउद्ध ॥ मोदागिरि बासी नृप जौंन । भीमसेन जीते सब तौंन ॥ बासुदेव जो पौंड्र नरेश । जीतो ताहि भीम सह देश ॥ समुद्रसेन बंगाधिप जौंन । ताहि सैन सह जीतो तौंन ॥ ताम्रलिप्त कर्बटपति धीर । सुह्मज बसत सरितपति तीर ॥ ए मलेच्छनृप जीते सर्ब । भीमसेन बलवान अखर्ब ॥ बज्रविधानके देश गँभीर । ते सब जीति बृकोदर बीर ॥ लए हेम मणिरत्न उदार । जीतिम्लेच्छ जे सागरनार ॥ तिन धन मणि मुकुता अभिराम । कोटिन दीन्हें परम ललाम ॥ सो सब लएँ भीम रणबीर । आए इन्द्रप्रस्थकौं धीर ॥ धर्मराजकौं अर्पण तौंन । ल्याए जीति महाधन जौंन ॥ *

स्वस्तिश्रीकाश्मीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाश्मीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कवीना कृतभाषा महाभारतदर्पणे सभापर्बणि भीमसेन दिग्विजयवर्णनो नाम षष्टोध्यायः ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

अज्ञा लहि नृपधर्म को लए सैन चतुरङ्ग । दक्षिण दिशि सहदेव गे जीतन भरे उमङ्ग ॥
जीति सूरसेनाधिपन्ह मत्स्यदेश कौं जाय । जीते मत्स्याधिपनकौं लयो दंड बरकाय ॥
दन्त बक्र चितिपालकौं जीति लियो कर साम । फिरि सुकुमार सुमित्र नृपकौं जीते बलधाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बासी गिरि गोश्रृङ्ग के जीति निषादनरेश । श्रेणिमन्त कौं जीति कर लीन्ह रत्न विशेष ॥ स०प०
नर राष्ट्र हि सो जीति गो कुन्तिभोजपुर बीर । कर बर लीन्हौं रत्न बऊ करिकै प्रेम गंभीर ॥
सरिता चर्मन्वती पै जम्भक सुत को बास । सैन्य सहित सहदेव तँह गए महा बलरास ॥
जीति युद्धमे कर लयो तासौं बीर महान । फिरि दक्षिण दिशिकौं गए कुरुकुल पङ्कज भान ॥
जीति सेक परसेक नृप लीन्हैं रत्न महान । तिन्हैं सहित फिरि नर्मदातीर गयो बलवान ॥
जीति अवन्तीके नृपति प्रबल बिंद अनु बिन्द । कर लैकै फिरि भोजकट पै चढि गयो नरिन्द ॥
युद्ध भयो तँह दिवस द्वै भीष्मक नृपके साथ।जीति ताहि कर बर लयो अतिबल कौरव नाथ ॥
वेणातटकान्तारके प्राकोटकके भूप । नाटक के हेरम्बके मारुधके अनुरूप ॥
रम्यग्राम नाचीनके अर्बुक के बलवान । तिन्हैं जीति रणमे लयो कर बर कुरुकुल भान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

जीति बाताधिपहि जीति पुलिन्दपतिकौं बीर। दिशा दक्षिण जाय जीतो पांड्य नृपहि गँभीर ॥
भए दक्षिण देश किष्किन्धा पुरी जँह भूप । मयंद द्विविदसु लरेवानर निकसि अतिबल रूप
सात दिन तँह भयो तिनसौं घोरयुद्ध महान ॥ कहन द्विविद मयन्द लागे जानि कै बलवान ।
आऊपाण्डव तुष्टहै हम लेऊ रत्न ललाम। होय नहि नृपधर्मको मखभग अति अभिराम ॥ रत्न
लै सहदेव माहिषमतीकौं बलवान । नील भूपति जहाँहो दुर्धर्ष अग्नि समान ॥ भयो तँह
सहदेव सौं अतिघोर तासौंयुद्ध। अग्निदेवसहाय ताकी करत सो अति उद्ध ॥ जरन लागी सैन
सब चतुरङ्ग प्रगटी ज्वाल । बरन लागे बसन सबके शस्त्र सुरथ बिशाल ॥ देखि सेना जरत व्हैके
भ्रान्तमन कुरुबीर। मौन व्हैकै रहे तँह सहदेव धारैं धीर ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ यज्ञके
हित करतहें सहदेव दिग जय कर्म । अग्नि कीन्हौं क्रोध इतनो कौन हेत सधर्म ॥ * ॥ वैशम्पायन
उवाच ॥ * ॥ पुरी माहिषमती बासी अग्निदेव पवित्र । भएहें परदाररत यह सुनो पूर्व चरित्र ॥
नील नृपकी रही कन्या सुन्दरी अति भूप । होमाग्नि बारण जाय सो सह पिताके शुचिरूप ॥
व्यजन सों बऊ धमन कीन्हे वरै अग्नि न तौन । चारु ओष्ठन सों न जबलौं देइ सुन्दरि पौन ॥ करी
मापैं कामना ऊतबाह अति अभिराम । कियो तासों चहत सङ्गम अग्निव्है वशकाम ॥ जायसेज
जँह तहाँ पावक धारि सुन्दररूप । बिप्रव्हैकै कहे तासों बचन सङ्गम भूप ॥ कियो तेहिं स्वीकार
सङ्गम लियो पावक साथ । नहीं माहिषमतीको यह चरित जानत नाथ ॥ रमत ब्राह्मण रूप
सों एक दोस देखो भूप। लगे शस्त्र बिधान सों तबदेन दंड अनूप ॥ कोपतँ प्रज्वलित पावक भए
तब अति साम। देखिकै भय भरो भूपति कियो दण्डप्रणाम ॥ समय लहिकै दई कन्या अग्निकौं
सो भूप । कियो बिनय बिधान सौं अति भए नम्रस्वरूप ॥ नील नृपकी सुताको करि ग्रहण
तब ऊतबाह। मागि ए बर भूप लागे कहन भरि उतसाह॥भूपमागो सैन्यमे मो होय परभय नाश।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भए अन्तरध्यान तबहीं कहि तथास्तु जताश ॥ जातवश अज्ञान भूपति पुरीको तेहि जौंन ।
जीतिबेको दहत है शिखि शिखासों नृपतौंन ॥ माहिष्मतीको तियनको बरद्यो अनल अखर्ब ।
होऊ खेच्छाचारिणी सम खैरिणीके सर्ब ॥ जातहे नहि कोउ तेहाँ बिजय कारक भूप । अग्निको
भय मानि मनमे महा दारुण रूप ॥ अग्नि अघतँ भई पीडित देखि सेनासर्ब । धरमात्मा सहदेव
धारे रहो धीर्य्य अखर्ब ॥ होयकै शुचि अग्नि सुस्तव करन लाग भूप ॥ * ॥ सहदेव उवाच ॥ * ॥
त्वदर्थहै हे अग्नि यह आरम्भ धर्म स्वरूप॥वदन हो तुम देवतनके अग्नि हे अभिराम। करत पावन
जगत यातँहे सो पावक नाम ॥ वहत हव्य सु कहत यातँ हव्य वाह समर्थ । जातवदस कहत याते
भए वेद त्वदर्थ ॥ चित्र भानु सुरेश अनल हिरण्यरेता आम । स्वर्गके तुम द्वारदाता ज्वलन शिखि
अभिराम ॥ पिङ्गेश वैस्वानर ध्रुवङ्ग सु भूरि तेजस सर्ब । कुमारसू भगवान रुद्र हिरण्य गर्भ अखर्ब ॥
अग्नि देऊ सु तेज हमकौं पवन देऊ सु प्राण । होय दाता भूमि बल जल शर्मकौं सुखदान ॥ अप
गर्भ हो तुम ममहा सत्वसु जातवेद सुरेश । देवमुख मो करऊ रक्षण सत्य तेजसदेश ॥ ऋषि बिप्र
देवत दनुजके तुम यज्ञ कारण नाम । धूमकेतु सु शिखी हो तुम पापहा अभिराम ॥ अनिल
संभव सकल प्राणा माँहँ प्राणी स्वरूप । कृपाकीजै यज्ञ कारण जानि धर्म अनूप ॥ * ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ अग्निको यह मंत्र पढिकै होम करिहै जौन । आहुतिकौं सो पाय छुटिहै
पापसौं सब तौंन ॥ * ॥ सहदेवउवाच ॥ * ॥ यज्ञकौं नहि बिघ्न करिबो अग्नि तो अनुरूप । कुश
बिछाय सु भूमिपैं यह वचन कहिकै भूप ॥ सेनाग्रमे तब जाय बैठे महा व्रत धरि धीर। कियो अग्नि
प्रवेश नहि फिरि सैनमाहँ गभीर ॥ रूपधारँ बिप्रकौं करि कृपा तेजसजैन । शान्ति पूर्वक अग्नि
तहँ रमि आय बोले बैन ॥ उठऊ हे सहदेव जानो रावरो हम कर्म । पुरी माहिष्मती है यह रक्ष
हमसौं पर्म ॥ करहिगे सहदेव रक्षित रावरो अनुरूप । कियो दण्डप्रणाम अञ्जलिजोरकै
कुरु भूप ॥ कियो पूजन अग्निको सहदेव सहित बिधान । जाय पावक नील नृपकौं दियो पठय
सुजान ॥ पूजिकै सहदेवकौं दिय नील कर बर भूरि । लेय सौं सहदेव दक्षिणकौं चले मुदपूरि ॥
लियो कर बर जीति दक्षिणदिशाके सब भूप । गए भीष्मक भूपके बर बिषय पास अनूप ॥ जानि
पी हर रुक्मिणीको लियो करसम सङ्ग । जीति सागर निकटकेसब भूप करि बर जङ्ग ॥ रावणा
नुज पास दूत पठायकै बर बीर । लिए नाना भाँतिके बऊ रत्न कुरुकुल धीर ॥ सूरसेनहि जीति
करि वश्य बिपिनि दण्डक सर्ब । द्वीप वासीम्लेच्छ राक्षस जे निषाद अखर्ब ॥ कालमुख नर रक्ष
सभव सुरभि पट्टन जौंन । ताम्रद्वीप सु एकपाद तिमिङ्गिलाधिप तौंन ॥ कर हाटके रत्न सहित
को कल पठै कै तहँ चार। तहांके अधिपतिन सौं लिए दण्ड रत्न उदार ॥ मरु कच्छको फिरि जाय
जीतो लियो दण्ड अमान । जीति दक्षिण दिसाहै सन्तुष्ट अति बलवान ॥ गए खांडव प्रस्थका

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बहु लिएँ रत्न अखर्व । कियो अर्पण धर्मनृपके जाय आगें सर्व ॥ कृतकर्म व्है भरि भक्ति बन्दे पार्थ चरण ललाम । सहदेव द्विजबर पूजि कीन्हों बास सानद धाम ॥ *❁*❁*❁*❁*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकबिनाकृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि सहदेवदिग्विजयवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कहत नकुलको बिजय अब पश्चिमदिशिको जौंन । वासुदेव जीती दिशा बिजै करी फिरि तौंन ॥ लएँ सयन चतुरङ्गिनी चाव चढो बरबीर । करत भूमि कम्पित गयो रोहीतकपुर धीर ॥ मत्त मयूरण सौं भयो तहां युद्ध अतिघोर । जीति तिन्हैं रणमे लयो दंड बीर बरजोर ॥ सैरी सक फिरि महा गिरि जीति कियो बश बीर । जीत्यो फिरि आक्रोशकौं करिकै युद्ध गँभीर ॥ जीति दशार्णमहीप सब चलो दंड लै भूप । शिबि त्रिगर्त्त मालव बिजय कीन्हो जाय अनूप ॥ कर्पट मध्यमकेय अरु बाटधान द्विज सर्व । भूप पुष्करारण्यके जीते सकल अखर्व ॥ सिन्धुतीर बासी नृपति अरु अभीरगण जौंन । भूप सरस्वतिके निकट बसत जीति लिय तौंन ॥ रोलाछन्द ॥ मत्स्यके अरु पर्वताश्रित दिव्य कटपुर भूप । जीति सह पञ्जाब लीन्हो दंड नकुल अनूप ॥ * ॥ अर्द्धचरणा ॥

द्वारपालक सु हारऊणके रामठके नृप जौंन । जीति दंड लै किय स्ववश पश्चिमके नृप तौंन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बासुदेवपहँ दूत पठाय । नृप शासन पठयो कहवाय ॥ सहित यादवन शासन तौंन । मानो बासुदेव बलभौन ॥ मद्रदेशकों गयो सो बीर । जँहँ मातुल नृप शल्यगँभीर ॥ तासौं लियो दण्ड करि साँम । रत्न हेम मणि बसन ललाम ॥ चले तहाँ ते नकुल नरेश । गए सिन्धु तटके जहँ देश ॥ जीते म्लेच्छ भूप बलवाँन । सैयद सेखौ मुगल पठान ॥ तिनसौं लीन्हे रत्न महान ॥ नाना भाँतिनके सुखदान ॥ फिरो नकुल कुरुकुल अभिराम । लए महाधन रत्न ललाम ॥ दश हजार भरि ऊँट उदार । रत्न सैन सह पांडु कुमार ॥ इन्द्रप्रस्थकौं आयो बीर । धर्मनृपतिकौं दयो गँभीर ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकबिना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणिनकुलदिग्विजयवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सत्यपालक धर्मनृपतैं नित्य रक्षा पाय । शत्रु निर्भय प्रजा करत स्वकर्म सब सुखदाय ॥ पाय नाना भाँति पूजा आइ कै जल दान । करत वर्षा यथा काम सुदेशकौं सुखमान ॥ ईति भीति न होति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० कबहूँ पाय नृपति सुधर्म । प्रातिसौं सब आइ भूपति करत सेना पर्म ॥ धर्म बिधिवत धनागमतैं भई अति धनबृद्धि । बर्षतलौं खर्च कीन्हें घटै जो न समृद्धि ॥ कोष्ट कोश समृद्ध अति लखि धर्मराज उदार । यज्ञ करिबेको कियो मनमाह परम बिचार ॥ आय नृपसौं कहन लागे सुहृद सुमति बिशाल । भूप करिए यज्ञ करिबैं योग्य है यह काल ॥ सुनो तबही कृष्ण आए निकट करुणाभौंन । जगतकारण जगन्मय जगदीश अव्यय जौंन ॥ बसुदेवकौं सब राजकारज सौंपि कै अभिराम । लएँ बज्रधन ओघ सेना सङ्ग अति बलधाम ॥ तौंन धन सब धर्मनृपकौं दियो सिन्धु समान । महा धनसौं भरो अतिशै इन्द्रप्रस्थ महान ॥ उदैते ज्यौं सूर्य्यके सब लहत जगत प्रकास । इन्द्रप्रस्थ सु भयो तैसैं भरो आनदरास ॥ मोदसौं चलि कृष्णसौं मिलि धर्मनृप अभिराम । सत्कार करि कै लगे बूझन कुसल प्रश्न ललाम ॥ धौम्य मुनि ब्यासादि ऋत्विज सहित भ्रातन्ह सर्ब । कहे यौं श्रीकृष्णसौं नृपधर्म बचन अखर्ब ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ श्रीकृष्ण हे तव कृपाते सब भूमि मेरे सर्ब । तो दयाते भयो है धनबृद्धि भूरि अखर्ब ॥ दियो चाहत तौंन हम सब बासुदेव सुजान । अग्निके अरु द्विजनके मुखमाह सहित बिधान ॥ कियो चाहत यज्ञ हम तुम सङ्ग हे बलबीर । सहित भ्रातन्ह करुं आज्ञा कृपा सहित गँभीर ॥ करुं दीक्षित आपुकौं तुम यज्ञ पुरुष महान । यज्ञतैं तव होंहिगे हम पापमुक्त सुजान ॥ नाथ हमकौं देउ आज्ञा सहित भ्रातन्ह बीर । राजसूय सु करै हम तवकृपा पाय गँभीर ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ श्रीकृष्ण सो सुनि कहो अैसे बरणि गुण अभिराम । सांम्राटके तुम योग्य हौ नृपधर्म गुणगण धाम ॥ लहैं तुमको यज्ञके हम होत सब कृतकृत्य । करुं स्वेच्छित यज्ञ है हम श्रेय कारक नित्य ॥ कहउं गे तुम कृत्य जो हम करहिगे सो सर्ब ।*॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ भए मन सङ्कल्प सफल ससिद्धि नियत अखर्ब ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सहित भ्रातन्ह पाय आज्ञा कृष्णकी नृप धर्म । यज्ञकी सब बस्तु सञ्चय करण लागे पर्म ॥ सहदेवकौं तब दियो आज्ञा सहित मंत्रिन्ह भूप । यज्ञाङ्ग बस्तु यथोक्त सञ्चउ द्विजन सह अनुरूप ॥ धौम्यकी आज्ञा प्रमाण सु यज्ञको सँभार । जथाक्रमसो लेउ सकल मगाय बीर उदार ॥ इन्द्रसेन बिशोक पुरु सारथिनकौं बोलवाय । कह्यो अन्नसु सकल रसको करुं सञ्चय जाय ॥ जथा काम सु गन्ध रसमय द्विजनको प्रिय जौंन । भक्ष चारि प्रकारके बज्र करुं सञ्चित तौंन ॥ भूपसौं सहदेव अैसैं कहो आतुर आय । कियो हम सम्भार सञ्चय भूरि सब सुखदाय ॥ व्यासमुनि तब लिए ऋत्विज बोलि बेदस्वरूप । भए ब्रह्मा आपु सामग भो सुसामा भूप ॥ याज्ञबल्क्य अध्वर्य्य भे भो पैल होता पर्म धौम्य मुनिबर सहित कीन्हो होमको जिन कर्म ॥ सुत शिष्य बर इन सबनके भे और होत्रक भूप । पुन्याह बाचन कियो तिन करि जह सु बिधि अनूप ॥ बिहित बिधि मखसदनमे सब तहाँ ऋत्विज जाय । कुण्ड बेदी शिल्पकनसौं यथाबिधि बनवाय ॥ बेश्म बनवाए तहाँ बज्र गन्धमय अभिराम । सहदेवसों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तब कियो आज्ञा धर्मनृपति ललाम ॥ निमंत्रणार्थक दूत चऊदिशि तुरित देऊ पठाय । विप्र स०प० भूपति बनिक शूद्र सु मान्य लेऊ बोलाय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दै निमंत्रण पत्र पठए दूत जे तुरगैंन । जाय कै ते यथा शासन न्यौति आए भैंन ॥ राजसूय सु यज्ञदीक्षा दियो परम ललाम।मुनिन्ह धर्म नरेशकौं वर बेद बिधि अभिराम॥यज्ञायतनकौं भए दीक्षित गए भूपतिधर्म। द्विज सहस्रन सङ्ग लीन्हे भरे तपस सुधर्म ॥ भाट ज्ञातिसु सुहृद सचिवन सचि सहसन सङ्ग । भूप नानादेशके बऊ भरे प्रीति उमङ्ग ॥ देश देशनके सु आए विप्र अगिनित पर्म । बेदवेत्ता साङ्ग धारैं नियम सुव्रत सुधर्म ॥ दिए बास बनाय तिनकौं भिन्न भिन्न ललाम।अन्त बसन सु सैन बऊरस भरे अति अभिराम ॥ बसे तिनमे जाय कै बऊ बिप्र आदर पाय । कहन लागे कथा नाना भातिकी सुखछाय॥करत भोजन बिप्र बृन्द अनेक परिसनहार।कहत तिनके होत अैसो शब्द परम उदार देऊ देऊ सु इन्हैं भोजन करऊ करऊ सु सोर । रहत राती द्यौस फैलो तहाँ चारौओर ॥ भूप हास्तिनपुर पठायो नकुलकौं मतिमान । भीष्म द्रोण सबिदुर नृप धृतराष्ट्र ससुत महान ॥ कृपाचार्य्य सु और जे कुरुबंशके बरमान। तिन्हे जाय लेवाय आवऊ यथा उचित सुजान ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ नकुल हास्तिननगरकौं तब जाय कै सुखरूप । भीष्मकौं धृतराष्ट्र नृपकौं दिय निमंत्रण भूप॥सत्कार सौं लहि कै निमत्रण द्रोण आदिक सर्ब। चले मनमे प्रीति धारैं द्विजन सहित अखर्ब॥ चले सुनत प्रसन्न ह्वै बऊ पौरजन गण बृन्द। सभा यज्ञ बिलोकिबेकौं सहित धर्म नरिन्द ॥ दिशनके सब आय पहुची भूप अति अभिराम।गए खांडवप्रस्थकौं बऊ लए रत्न ललाम ॥ भीष्म नृप धृतराष्ट्र भ्रातनसह सुयोधन भूप। बिदुर सौबल कर्ण भूपति यज्ञसेन अनूप ॥ शल्य भूरिश्रवा कौरव सोमदत्त सुजान। द्रोण सह सुत कृप जयद्रथ साल्वनृपति महान॥सिन्धुतटके म्लेच्छ भूपन सहित नृप भगदत्त। बृहद्बल अरु पार्बतीय अनेक नृप बलमत्त ॥ कालिङ्ग कुन्तल भूप पौंड्रक बासुदेव महान। बङ्ग मालव भूप आन्धक द्रबिडपति बलवान॥ काश्मीर सिंहल कुन्ति भोज सु गौरबाहन भूप। बाल्हीक ससुत बिराट अरु शिशुपाल सबल अनूप ॥ और नानादेशके जे रहे भूपति सर्ब। लए आए रत्नकोचय यज्ञमाह अखर्ब ॥ राम गद अनिरुद्ध सारण सांब सह बरबीर। प्रद्युम्न उल्मुक निसठ आए बृष्णिबंश गभीर॥बृष्णिबंशी और हे जे महारथ बलवान। सकल आए यज्ञमे नृपधर्मके सुखदान ॥ बास भैंन सु दिए तिनकौं जथा योग्य ललाम । भूरि भरि बऊ भक्ष्यसौं सह बापिका अभिराम॥ कियो पूजन धर्म्म भूपति नृपनको सबिधान।गए ते तहँ दियो जाकौं जैंन बासस्थान ॥ कैलाश शिखर समान बासस्थान लहि बर भूप।घटित कञ्चन जडित मणिन्ह सुरेश सदन सरूप ॥ छणक करि बिश्राम देखन सभा यज्ञ महान । तहां आए भूप ज्यौं सुरलोक अमर समान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ गुरुके अरु पितामहके जाय बन्दे पाय । धर्मनृप फिरि कहन लागे बचन सत्य सुभाय ॥ यह यज्ञमे मोपै अनुग्रह कीजिए तुम सर्ब। करौ श्रेय हि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प्राप्त मोहि यह देय द्रव्य अखर्ब ॥ यहि भाँति कहि कै किये योजित कर्म्ममे नृपधर्म्म । यथायोग्य बिचारि सौंपे नृपनकौं मखकर्म्म ॥ दुश्शासन हि दिय भक्ष्यभोजन कर्म्मको अधिकार । द्रोणसुत सौं कहो करिबैं द्विजनको सहकार॥ नृपति पूजन करण सञ्जयसौं दियो कहि भूप। और भूपनका दयो बहुकार्य सदृश स्वरूप ॥ वाल्हीक अरु धृतराष्ट्र जयद्रथ सोमदत्त उदार । रमत स्वामी सदृश सबपर धरत शासन भार ॥ नृपसुयोधन लेत सबकी नजरिकौं धन जौंन । करो व्ययकर बिदुरकौं नृप महामतिको भौंन ॥कृष्ण लीन्हौं द्विजनके पद धोयबेको कर्म्म । चाहि तीनोलोकमे फलप्राप्ति पावन पर्म्म ॥ रहे ऊपर छाय सिगरे आय देवबिमान । सु रसदन सदृश सुद्विजनके बर बास बिबिधि बिधान ॥ नृपनके बहु बास गृह अति रचित रत्न अनूप । लसी श्री सह अमित शोभा बरणि सकत न भूप॥ सहित राजन्ह धर्मनृपकी सभा अनुपम जौंन । सो सुधर्म्म सदृश शोभित भई सुषमामौंन ॥ ऋद्धितैं नृपधर्म्म शोभित भयो बरुण समान। बहु दक्षिणा सुख अग्नि मखकरि भयो सम मघवान ॥ बिप्र भोजन रत्न दान सु देई आहुति पर्म । तृप्त कीन्हैं सुरणकौं सब भाँतिसौं नृपधर्म्म ॥ सुर बिप्र आदिक बर्ण चारो भरे मोद ललाम । अन्न दान महान आहुति पाय कै अभिराम ॥ यज्ञपूरण दिवसमे जे रहे बिप्र अखर्ब ।सहित भूपन्ह गए ते मखभौंन भीतर सर्ब ॥ नारदादिक ब्रह्मऋषि तँह लसत बेदीपाश। राजऋषिण समेत कीन्हैं धर्मनृपति प्रकाश ॥ कर्मअन्तर पाय बिदुषण कियो शास्त्र बिचार । करत नाना भाँतिसौं सिद्धान्त मत निर्धार ॥ नार्द लक्ष्मी धर्मनृपकी भए देखि प्रसन्न । देखि क्षत्र समूह गुणि मुनि भए चिन्तासन्न ॥ समुझि अंश अवतरण भे जो भयो हो निरधार ।सुरणसौं बिधिभवनमे क्षिति गमन करत बिचार ॥ कियो कृष्ण स्मरण मुनि हरि भयो क्षत्री तौंन । घालि हैं अरिपालि हैं पन कियो पूरुब जौंन ॥ जगतकारक सुरणसौं इमि कहो हो समुझाय ।अन्योन्य हनि कै लोकमे फिरि बास कीजा आय॥सुरणकौं यहि भाँति आज्ञां देय कै जगदीश। आपु लीन्हौं जन्म क्षत्री होय यदुकुल ईश ॥ औसि क्षत्रिण को करै गो नाश श्रीभगवान ।समुझि कै यह भए मुनिमनमे सुचिन्तित म्लान ॥ *◆*◆*◆

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

तब भीष्म बर मतिमान । इमि कहे बचन प्रमाण॥ बरसमै योग्य बिचारि । नृपधर्मसौं निरधारि ॥ इन नृपनकौं सनमान ।करि पूजिए मतिमान॥आचार्य ऋत्विज जौंन ।सम्बन्धमे बर तौंन॥ मुनि और प्रिय जो पर्म । नृप पूज्य हैं षटधर्म ॥सुनु क्रमहिते इक एकाए पूज्यहैं सबिबेक॥ है श्रेष्ठ इनमे जौन । है पूज्य पहिले तौंन ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ तुम पूज्य प्रथम बिचारि । कहु पिता मह निरधारि ॥ ◆*◆*◆ ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *◆*◆*◆*

करि भीषम निरधार धर्मराजसों यों कहो । पूजन योग्य उदार कौन कृष्णतें और है ॥
सो सब नृपन्ह मझार सबल पराक्रमतें महा । रबिसे लसत उदार भरे महा तपतेजसों ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ स० प०

भीषमको आज्ञाको पाय। सहदेव कृष्णकों पूजो जाय ॥ शास्त्र विहित विधि पूजन जौन। यदुपति ग्रहण कियो सब तौंन ॥ कृष्णहि पूजित लखि शिशुपाल। सहि न सको धरि क्रोध बिशाल ॥ भीषमकी करि निन्दा भूप। कहे धर्म्मसों वचन कुरूप ॥ वासुदेवकौं निन्दित बैंन। कहन लगे दुर्मतिको अैंन ॥ है बार्सेय न पूजन रूप। छोडि महात्मा एसव भूप ॥ नही पाण्डवन्ह योग्य अचार। पूजो वृष्णिवंशको बार ॥ जानत उचित न पाण्डव बाल। भीष्मवृद्ध हतमति वशकाल ॥ धर्म्म नृपति तुम प्रीति बिचारि। कियो अनीति हिएँ निरधारि ॥ सम्मत मे अबभीष्म अयान। गने जाहिबे सहित बिधान ॥ वृष्णि अराजक राजनमाह। ताहि पूजिहै को नरनाह ॥ पूजो कृष्णहि वृद्ध समान। भरैं तात सुत पूज्य सुजान ॥ वर्त्तमान नृप द्रुपद उदार। पूजन योग्य न वृष्णि कुमार ॥ अरचो कृष्णहि गुणि आचार्य। रहत द्रोण यह अनुचित कार्य ॥ ऋत्विज मानि पूजिबो जौन। रहत आश अति अनुचित तौंन ॥ शान्तनु तनय भीष्म कुरु वृद्ध। तेहि तजि पूजन कृष्ण असिद्ध ॥ अश्वत्थामा जँह नृपधर्म्म। कृष्ण पूजिबो तहा न पर्म्म ॥ कृपसह जहाँ सुयोधन भूप। कृष्णार्चन तँह अनुचित रूप ॥ जेहाँ द्रुम किंपुरुषाचार्य। तहाँ कृष्णको अरचत आर्ज ॥ भीष्मक भूप जहाँ बलवान तँहँ कृष्णहि को पूजत सुजान ॥ जहाँ रुक्म भूपाल कुलीन। तँहँ कृष्णहि को पूजत दीन ॥ एक लक्ष्य जँह शल्य नरेश। कृष्णहि पूजत को तेहि दश ॥ बलिन माह अतिसै बलवान। परशुरामको शिष्य सुजान ॥ छोडि कर्ण बरबीर अजेय। कृष्ण पूज्य कैसैं बार्सेय ॥ ऋत्विज नही अचार्य न तौंन। बंश अराजक सम्भव जौंन ॥ अरचो कृष्ण सो तुम कुरु भूप। चाहि आपनो स्वार्थ अनूप ॥ रहो पूजिबैं वृष्णि कुमार। व्यर्थ बोलाए भूप उदार ॥ भीति लोभ नहिं साम बिचारि। कर दीन्हों हम यह निरधारि ॥ प्रवृत धर्म्म कारयमे जानि। हम सबहिन मनमे अनुमानि ॥ तुम भूपनको करि अपमान। पूजो कृष्ण अपूज्य महान ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्महीन याकी करै पूजा कौंन अयान। जरासन्ध सो नृप हनो करि अन्याय महान ॥
छोडि युधिष्ठिरकों गई अब धर्मता सर्ब। प्रगट कृपिणताई भई कृष्णहि पूजैं सर्ब ॥
भीरु कृपिण कुन्तीतनय तुमकों पूजो जौंन। नही बिचारो कृष्ण तुम योग्य न हमको तौंन ॥
योग्य तुम्हैं पूजन न जो सोतुम लियो समान। निर्जनमे लहि हव्य ज्यौं निर्भय भक्षत श्वान ॥
भयो न यामे नृपनको कछु अपमान प्रकाश। करो कौरवन कृष्ण तो पूजन मिसि परिहास ॥
क्लीव कामिनी लहत ज्यौं भयो कृष्ण यह कर्म्म। भूपनकी बिधिसों करी पूजा जो नृपधर्म्म ॥
लखे युधिष्ठिर भीष्म अरु बासुदेव सहसर्ब। हैं जैसे तैसे मुहे करता असद अगर्ब ॥
यौं कहिकै शिशुपाल उठि तजि आसन अनुरूप। चलो सभा तजि बाहिरैं सहित सपत्नी भूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तब उठिके शिशुपाल प्रति चले युधिष्ठिर भूप । नीति शान्ति पूरण कहत ऐसे बचन अनूप ॥
ऐसे कहिबे योग्य नहि कहे यथा तुम बैन । परुष बचन शिशुपाल हैं महापापके ऐन ॥
भीष्म न जानत धर्मकों यह को कहै सुजान ॥ भीष्म महाव्रत धर्म निधि बेत्ता सत्य प्रमाण ॥
सबज भूप तुमत अधिक सकल बृद्ध बलधाम । बैठे लखि हरषित भए हरि पूजन अभिराम ॥
सब कृष्णको भीष्म सब जानत यथा विधान । तुम तैसो जानत नही हे शिशुपाल समान ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यह अनुनयके योग्य नहि हे नृपधर्म कृतज्ञ । कृष्ण जगद्गुरुको लखैं पूजन सहत न अज्ञ ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

जीति सकिहि समरमे करि सबज्ञ सबी जौन । छोडिदेत सु कृपाकरिहै तास गुरु बर तौंन ॥ यहि भूपगणकी सभामे नहि कृष्ण जीतो जाहि । समर मे हम सात्वतीसुत नही देखत ताहि ॥ नही केवल हमै अच्युत अर्च्यहैं अभिराम । लोकतीनो जाह पूजित महा बलके धाम ॥ कृष्णतें बज्र गए जीते प्रबल सबी बीर । जगत सिगरो है प्रतिष्ठित कृष्ण मे रण धीर ॥ कियो ताते बृद्ध गणमे कृष्ण पूजा भूप । बुद्धि यह नहि सदृश है तो बचन नहि अनुरूप ॥ ज्ञान बृद्धन सों सुन हम कृष्णके गुणग्राम । बाल्य पनते कर्म सिगरे सुने अति अभिराम ॥ प्रीतिकौं सम्बन्ध कौं न बिचारिकै मनमाँह । सौर्य जययश देखि पूजो कृष्णकौं नरनाह ॥ करि परीक्षा भूप गणको सु गुण सकल बिचारि । बृद्ध भूपन छोडि पूजो कृष्ण गुण निरधारि ॥ ज्ञान बृद्ध सु द्विजनमे क्षितिपति न्हमे बलवान । शूद्रते वय बृद्ध तैसे वैश्य जो धनमान ॥ साङ्ग बेत्ता बेदके हैं महा बलके धाम । पूजिबेके हेतु हैं द्वै कृष्णमे अभिराम ॥ अधिकहैं श्रीकृष्णतें यहि जगतमे नर कौंन । सौर्य श्री कीर्त्ति दान धृति मति कीर्त्ति सन्तति भौंन ॥ पूज्य गुरु आचार्य यातें जानि पूजो जौंन । सुनऊ सबकौं उचितहै अब क्षमा कीबो तौंन ॥ चराचर मय जगत कारक कृष्ण अव्यय रूप । प्रकृति है अव्यक्त यातें कृष्ण पूज्य अनूप ॥ मन बुद्धि सह शर तत्वमय यह चतुर्विध जग जौंन । चराचरके कृष्ण है आधार आनद भौंन ॥ सूर शशि सु न क्षत्र यह दिशि दशौ जे अभिराम । सकल जगत प्रपञ्च ताको कृष्णके बलधाम ॥ गायत्री मुखहै छन्दको मुख बेदको ऊतबाह । सरित मुखहै सिन्धु तें से मनुज मुख नरनाह ॥ नक्षत्र मुख शशि सूरहै मुख तेजमयको सर्ब । मेरु गिरिमुख बिहगके मुख बैनतेय अखर्ब ॥ उर्ध अध अरु जौंन तिर्यग जगतकी गति जौंन । देवलोक समेतको मुख कृष्ण आनद भौंन ॥ बाल यह शिशुपाल कहत अयान ऐसे बैन । बिना जाने कृष्णकौं जगदीश आनद अैंन ॥ को न मानत पूज्य पूजत कृष्णकौं नहि कौंन । दुष्कृत्य मानत कृष्ण पूजन दुष्ट दुर्मति भौंन ॥ दुष्कृत्य तिनकौं योग्यहै सोलहैगे फल हाल । काल बश यह कहत ऐसे बचन नृप शिशुपाल । बिश्मयायन उवाच ॥ * ॥ यहिभाँति कहिकै रहे चुप ह्वै भीष्म अति मतिमान । कहन यों सहदेव लागे भरे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

क्रोध महान॥ कृष्ण हमसों पूज्यमान न सहैगो जो भूप।शीसपै हम चरण ताके दहिगे अनुरूप॥ स०प०
बचनको मो देइ उत्तर होय जो बरबीर । बध्य हमसों होय सो धनु धारिकै रणधीर ॥ पितर
गुरु आचार्य सब बिधि पूज्य कृष्णहि जानि । करी सहित बिधान पूजा सुनो सब मतिमानि॥
नहीं काहूँ दियो उत्तर भूप जे बलऐन । रहे सुनि सहदेवके यहि भातिके बरबैन॥ सुमन वृष्टि
सुभई तब सहदेवपैं अभिराम। गगण त बर भई बाणी साधु साधु ललाम ॥ बजाय कृष्णाजिन
सु बोले नारदमुनि तपभान। जो न पूजे कृष्णकौं सो जियत मृतक समान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ *
रहे पूजा योग्य जे तँह बिप्र क्षत्री आन। पूजि कै सहदेव तिनकौं कियो कर्म समाप्त ॥ देखि पूजित
कृष्णकौं अति कोप करि शिशुपाल।कहन लागो नृपनसों करि तामनेच बिशाल॥होत हम सेनेश
सबके सुनऊ तुम वर भूप।वृष्णिवंशी पांडवन पै होऊ अज्य स्वरूप॥चेदिपति सब नृपनसों यहि भाँ
तिके कहि बैन।यज्ञके विध्वंशको किय यंत्र दुर्मति ऐन॥ क्रोधवश्य बिवर्ण आनन भए तब क्षिति
पाल। लिए तिन्हहि बोलाय सिगरे दुष्टमति शिशुपाल॥ कृष्णपूजन नृप युधिष्टिरको नहीं अभि
षेक। होन पावै तथा करिए होय कै सब एक॥ क्रोध मूर्छित भए कीन्हे सबल निश्चयभूप।कहन
लागे बचन ऐसैं बिकृत मन अनुरूप॥सुहृद वारित वपुष तिनके लसे ऐसैं उडु। यथा गर्जत सिंह
आमिष हरत व्है अतिक्रुद्ध॥ देखि तौन बलौघ सागर सदृश नृप समुदाय। युद्ध कों श्रीकृष्ण इच्छा
किये बर बलकाय॥ बैशम्पायनउवाच॥ भूप मंडल देखि सागर सदृश तब नृप धर्म। कहन लागे
भीष्मसों तब बचन ऐसैं पर्म॥अब जो करतव्य सो कछु पितामह मतिमान। यज्ञ बिघ्न न होय जाते
प्रजनको सुखदान॥ धर्मनृपके बचन सुनि इमि कहे भीषम बैन। करऊ भयमति कुशलको हम
प्रथम साधो ऐन॥ यथा सोवत सिंहकौं लखि बटुरि भूँकत श्वान।वृष्णि सिंह न जगत तौलौं बको
नृपति अयान॥ कृष्ण सिंह समान उठिहै क्रोधकरि जब उडु। भगैंगे तब श्वानसे ए नृपति परि
हरि युद्ध॥ कृष्ण जाको चहत पउयो सर्बथा यमधाम। करत बुद्धि बिरोधताको ऐसेहीं मति
माम॥ चतुर्बिधिकी सृष्टि जो तिऊँलोकमे अभिराम। उतपत्य कारक नाश तिनको कृष्णहे
कृतधाम॥ *॥ बैशम्पायनउवाच॥ *॥ भीष्मके सुनि बचन ऐसे चेदिपति अतिक्रुद्ध। कहन
फेरि कठोर लागो बैन धारि बिरुद्ध॥ *॥ शिशुपालउवाच॥ *॥ चहत भूपन्ह सभयकीवैं
भीतिके कहि बैन। बंशबालक जराहूमे तोहि लाज लगैं न॥ तीसरेपन धर्म बिगलित कहत ऐसैं
जौन। बंशके तुम भए भूषण योग्य तुमको तौन॥ अन्ध ज्यौं पथ पार चाहत अन्धको गहि अंश।
अग्रणी करि तुन्हे तैसैं भयो यह कुरुवंश॥ पूतनाको घात पूर्वक कर्म याको जौन। होतहै सुनि
व्यथित अति मन कहत तुम्हरे तौन॥ कृष्णको गुण करत कीर्तन भीष्म ह्वै मतिछिन्न। होति जिह्वा
रावती कौं नहो शतधा भिन्न॥ करैं बालो निखिल निन्दा जगतके जन जास। करत हो तुम वृद्ध
व्है कै भीष्म सुस्तुति तास॥ बालपनमे हत्यो केशी वृषभ बक करि क्रोध। कहा यासे चित्रहै पशु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० पक्षि युद्ध अबोध ॥ दारु सकट अचेतको यहि कियो जौँन निपात । पाय सौँ हैँ कौन अद्भुत भीष्म यामे बात ॥ बल्मीक सम गिरि सात दिनलौँ धरो कर पर जौँन । सुनहु भीषम चित्र मानत महा यामे कान ॥ बालनमे बहुत खायो अन्न गिरि पर जौँन । कहा मानत चित्र यामे सुनहु भीषम तौँन ॥ अन्न जाको खायकै यह भयो अति बलवान । हनो सो नृप कंसकौँ करि निंद्य कर्म महान ॥ नहि सुनो यह मत सतनको तुम कहत सो हम पर्म । सुनहु सो कुरुकुलाधम हे भीष्म अबिदित धर्म ॥ बिप्र गो स्त्री अन्नदाता बसी जाके पास । धर्मबिद करि शस्त्रपात न करत तास बिनास ॥ सन्त शासन करत ऐसैँ सुजनकौँ मतिमान । देखि उलटो परत तुमकौँ भीष्म धर्म बिधान ॥ ज्ञान बृद्ध सुबृद्धकहि करि कृष्ण सुस्तव जौँन । अजान सो व्है कहत हमसौँ कौरवाधम तौन ॥ गो स्त्रीघ्न व्है जो बचनतैँ तब लहो पूजन पर्म । होत सुस्तव योग्य सो किमि भीष्म ए करि कर्म ॥ नीच है तो प्रकृति भीषम भूरि भाँति अशुद्धि । सङ्गतैँ भइ पांडवनकी पापकारिणि बुद्धि ॥ कृष्ण जाके पूज्य तुमसे धर्म दर्शक यस्य । क्यौँन पांडव धर्मपथते होहि भ्रंश अबस्य ॥ धर्मबिद व्है भीष्म कन्या काशिपतिकी पर्म । नाम अम्बा अन्यकौँ जो बरो चाहति धर्म ॥ हरौ कैसैँ ताहि कीन्हा महा कुत्सित काम । तजी ताही बिचित्र बीर्यसो धर्मको हो धाम ॥ भ्रातृ दारनमे भए सुत अन्यतैँ अभिराम । धर्म मानी लखत हे तुम भीष्म चरित ललाम ॥ भीष्म तुमकों धर्मकारक ब्रह्मचर्यन जौँन । दान बेदाध्ययन मख जो दक्षिणा बाहुल्य । पुत्रके षोडशांसहूके होतहै नहि तुल्य ॥ करै व्रत उपवास नाना भांतिके तप सर्ब । व्यर्थ होत अपुत्रके बहु भाँति सुकृत अखर्ब ॥ अनपत्य बृद्ध अधर्मचारक भीष्म हौ तुम जौँन । लहहु गे तुम हंसकी बिधि अद्य यमपुर गौँन ॥ ज्ञान बिद जन सो सुनो हम पूर्व यह इतिहास । भीष्मसो हम कहत हैँ सुनिए तिहारे पास ॥ हंस एक समुद्रके हो द्वीपमे अतिबृद्ध । कहत कहत अपनी ज्ञातिमे सो बचन धर्म समृद्ध ॥ *****

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पक्षिन धर्ममान अनुमानि । ताकों देहिँ भक्ष्य निति आनि ॥ अंड दिए तिन ताके पास । जानि धर्मबिद छोडैँ त्रास ॥ पक्षी जाहिँ भक्ष्य हित सर्ब । तब वह खाय अंडमतिखर्ब ॥ छीण भए जब अंड अनेक । शङ्कित भयो चतुर द्विज एक ॥ छपि तेहि देखो ताको कर्म । सात अंड यह भरो अधर्म ॥ तेहिँ कहि दियो द्विजनपहँ जाय । तिनहूँ देखो तहां छपाय ॥ मिथ्या बृत्त जानि कै ताहि । अंड क्षयको दुख अब गाहि ॥ महापापमय ताहि बिचारि । सब पक्षिण मिलि डारो मारि ॥ तुमहू ज्ञाति हस्तते अद्य । भीषम बध पावोगे सद्य ॥ यातें यासों कियोन युद्ध । इन कीन्हों सो न्याय बिरुद्ध ॥ द्विजबनि भीमार्जुन सह भाय । हनो ताहि करि सछल उपाय ॥ कृष्ण लखो हो तास प्रभाव । यातैँ छल करि साधो दाव ॥ इन्है न अर्घदियो मगधेश । भोजनहीकों कियो निदेश ॥ जा जगकारक हो यह मूढ । बन्यो बिप्र क्यौँ छल करि गूढ ॥ सत पथतैँ तुम दिए गिराय ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तुम्हे कहत हित कुरुकुल राय ॥ हम यह जानत अद्भुत कर्म। तुम मंची तहँ सकल अधर्म ॥ * ॥ सप्त
वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बचन तासु सुनि अनुचित भीम । भए क्रोध अतिशै बल सीम ॥ ज्यों
युगान्तमे काल कराल।देखि परे इमि भीम बिशाल॥उठे भीम करि क्रोध महान।गहो आय भीष्म
बलवान ॥ नीतिबिहित कहि नाना बैंन । भीमहि शान्ति कियो मतिऐंन ॥ लखि शिशुपाल
भीम कहँ क्रुद्ध । सह मो नेक बरबल उद्ध ॥ कहो चेदिपति हँसि इमि बैंन । भीमहि क्रुद्ध देखि बल
ऐंन ॥ भीम हि तजऊ भीष्म बलवान । मो पावकपहँ सलभ समान ॥ भीष्म चेदिपतिके सुनि बैंन ।
कहे भीमसों यों मति ऐंन ॥ * ॥ भीष्मउबाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *❀*❀*❀*❀**
भयो चेदिपतितनय यह अस्त्र धरे भुज चारि । रोदन लागो करण यह घोर खरस्वर धारि ॥
भए समय माता पिता सुबन्त सहित परिवार । बिकलरूप लखि त्यागको लागे करण बिचार ॥
तब अकाश बाणी भई ऐसो भाँति उदार । भयो नृपति श्रीमान तो अतिबल भरो कुमार ॥
तातें डरऊ न करऊ शिशुपालन हे भूपाल । है अजेय यह अस्त्रतें याको मृत्यु न काल ॥
सुनि अकाशबाणी भरी सुत स्नेहसों भूरि । कहन लगी याकी जननि महा मोदसों पूरि ॥
कह्यो देववाणी जो यह फिरि सो कृपा समेत।कहै सो याके मरणको बिधि बिरचित जो हेत॥
फेरि गगणबाणी भई गए अङ्कमे जास । दै भुज गिरि हैं होइ गो तिसरा नैन बिनाश ॥
सो याको हन्तार है यह बिधि बिहित प्रमान। यह सुनि भूपति शिशनके अद्भुत जानि महान॥
अस्त्र चतुर्भुज भयो है चेदिनृपतिकें पूत । गए देखिबेकों तँहा अचरज भरे अकूत ॥
तिन्हैं पूजि कै यथाबिधि चेदिपति मतिमान । लै सब तिनके गोदमे राखो पुत्र सुजान ॥
अस्त्र चतुर्भुज यह रहो भयो न बिकृत स्वरूप। राम कृष्ण यह सुनि गए जहाँ चेदिपति भूप ॥
पितृ श्वसाके धाममे गए दोउ बरबीर । बूझि कुशल पूजन कियो आनद भरी गँभीर ॥
धरो कृष्णके गोदमे जननी याकों ल्याय । गिरी दोय भुज तीसरो गो चख भाल समाय ॥
देखि सभय करि कै बिनय जननी याकी जैंन । बर मागो श्रीकृष्णसों जानि कृपाको भैंन ॥
मोहितसों शिशुपालके कीजो क्षमा पराध । पितृश्वसा मोहि जानि कै यह बर देऊ अबाध ॥

॥ * ॥ श्रीकृष्णउबाच ॥ * ॥

पितृ श्वसा अपराध हम याके शैलों उद्ध । क्षमा करैं गे मानि तो बचन प्रमाण बिशुद्ध ॥

॥ * ॥ भीष्मउबाच ॥ * ॥

यह दर्पित शिशुपाल लहि दयो जो बर ब्रजचन्द्र । यातें ऐसे कहत है बचन महा मतिमन्द्र ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भलीभांति नहि चेदिपति तुम करी जो स्वीकार । करत निन्दा कृष्णको जो जगन्नाथ उदार ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

द्यो० प० भीमसेनादिकन मेरे सदृश है क्षितिपाल । कहत ऐसे जानि परति सु भए हौ बश काल ॥ तेज याको अंश हरिकै परत है निरधारि । कृष्णसो फिरि लियो चाहत नियत याकों मारि ॥ सुनऊ कुरुशार्दूल यातें चेदिपति सब काल । नहीं हमकों गणत सबकों रहो गर्जि बिशाल ॥ वैशम्पायन उवाच॥सहो बचन न भीष्मको ह्वै चेदिपति अति क्रुद्ध।लगो उत्तर देन ऐसी भाँतिसो अतिउद्ध॥शिशुपालउवाच ॥ द्वेषी हमारो कृष्ण ताको करत गुण गण गान।करत सुस्तव रहत वन्दी सदृश होय महान।।करत संस्तव जौ रमत मन भीष्म तो अभिराम । कृष्णकों तजि करऊ तिनको भूप जे बलधाम।।बाल्हीक दरद सु कर्ण द्रुण सपुत्र अतिरथजौन।करऊ संस्तव भीष्म इनको योग्य जेबल भौन॥ समुद्रान्ता महीमे अप्रतिम जो है भूप ।सो सुयोधन छोडि बर्णत कृष्णकों मतिकूप॥ द्रुपजयद्रथ रुक्म भीष्मक दन्तवक्र नरिन्द्र।भगदत्त द्रुपद विराट शकुनि सु भूपविन्द्र अनुविन्द्र॥ बृषसेन शंख सु एकलव्य कलिङ्ग पति बरबीर । शल्यादि भूपन कोन काहे करत कीर्त्तन धीर॥धर्म वादिनके बचन तुम सुने हौ नहि पर्म।आत्म निन्दा आत्म अस्तुति करत है न सु धर्म॥पर स्तुति पर निन्दनाके किए लागत पाप। एन चारौ वृत्तिकबहूँ करत बुद्धि अमाप॥ अस्तुत्य नहि यह कृष्ण ताको करत अस्तव जौंन । भक्तितेंकै मोहतें यह भीष्म मानत कौंन ॥ भोजनृपकी प्रजा यादव वहत नित्य निदेश।जगत उत्पति प्रलयको तेहि कहत कारण बेश॥नहीं श्रुत पथ गहति है तो बुद्धि बचन विरोध। मूलिङ्ग पक्षी कहत कछु कछु करत क्रम अबरोध॥मूलिङ्ग शकुनि हिमाद्रि उत्तर रहत ताको अैन। नहीं साहस करऊ ऐसे रहत बोलत बैन॥ सिंह दशनन्हसध्य जो लगि मांस कछु रहि जात ।लखत अपनो नहीं साहस काढि कै सो खात॥ सिंह इच्छासों सुजीवत भीष्म पक्षी तौन । नृपनकी इच्छासों जीवन त्यौं तिहारो जौंन ॥ लोकमे यह दुष्ट कर्मा भीष्म तुमसो है न। वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीष्म उत्तर दियो इमि सुनि चेदिपतिके बैंन । जेहि नृपपनको हम जियत इच्छातें सु नऊ शिशुपाल। तिन्हैं कृष्ण सम गणत जानत भए सब बशकाल ॥ भीष्मके सुनि बचन बोले दुष्टनृप जे सर्ब । कृपा योग्य न बृद्ध है यह भरो गर्व अखर्ब ॥ मारि पशु सम याहि सब मिलि देहिं सहण जराय । सुनत तिनके बचन बोले पितामह रिषि छाय ॥ कहत हैं सो सुनो पशुसम चहत मारण जौंन । देत ताके शीशपर पद होय सन्मुख तौंन ॥ पूज्य हमसों जगतसों ए लसत अच्युत बीर । निकट जाकी होय मृत्यु सो होय सन्मुख धीर ॥ भीष्मके सुनि बचन बोलो चेदिपति बलवान। राखि इच्छा युद्धको श्रीकृष्णसों अतिमान॥बासुदेव सुचलो हम सों युद्धकों रणमाँह। तुम्हे हनि हो सहित पांडव लखत सब नरनाँह॥ छोडि राजन्ह तुम्हे अरचो जिन्ह अराजक दाग। बाल्यतासों चहत तुम सह कियो तिनको नाश॥ यहि भाँति कहि कै गर्जि कै सो भयो ठाढो बीर । तास सुनि इमि बचन बोले कृष्णचन्द्र गँभीर ॥ सात्वती सुत भयो सो अरि सुनऊ सिगरे भूप ।नृसंश ऐसो और है नहि पापपूरण रूप॥ प्राग्जोतिष नगरकों हम गए तब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

यहआय । शून्य द्वारावतीकौं लहि दियो सकल जराय ॥ करत क्रीडा भोज नृपका रैवता सम्प०
चलमाह। मारि कै लै गयो गहि यह सुनऊ सब नरनाह॥अश्वमेध सु करत हे वसुदेव मेरे तात।
मारि रक्षक गयो हय लै कियो यज्ञ विघात ॥ वभ्रुपत्नी पितापहँ सो बीरपुर ही जात । बीचहीमे
हरी यहि छल कियो धर्म विघात ॥ विशालापतिकी सुकन्या नाम भद्रा जौंन । कारूष पतिको
भेष धरि यहि हरण कीन्ही तौंन ॥ जनकभग्नीहेत इतनो सहो हम अपराध । लखो सो तुम
सकल भूपन्ह कियो अब जो बाध ॥ कियो जौंन परोक्ष सो हम सहो सकल नरेश । नही सोमे
होत है अब क्षमाको आवेश ॥रुक्मिनीमे रही याकी व्याह बाँछा जौंन ।शूद्रकौं श्रुति संहिता ज्यौं
भई प्राप्ति न तौंन ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ आदितें यहि भाँति सुनि कै कृष्णके सब बैंन।
शिशुपालकौं तब लगे निन्दन भूपमति कै अैंन ॥ कृष्णके यहि भाँतिके सुनि वचनकौं शिशुपाल ।
उच्च करि कै हास बोल्यो वचन बीर विशाल ॥ पूर्व पति हौ रुक्मिनीको सभामे यह बैन । कहत
तुमकों कृष्ण लज्जा नेक लागति है न॥और मानी कहै को इमि सभामे हरिबात।अन्य पूरुब पति
स्वपत्नी को निलज विख्यात ॥ क्षमा करऊ न क्षमा तुम तौ लेऊ सुनि यह बैंन । क्रोधतें तो प्रीतितें
कछु हमै छवे है न ॥ चक्रकौं तब कियो चिन्तित कृष्ण मनमे बीर। चक्र आयो पाणिमे अति भरो
तेज गँभीर ॥ उच्चस्वरसौं कहो तब श्रीकृष्ण भूपन्ह पाश।कियो अबला क्षमा जो सो सुनऊ कारण
तास ॥पूर्व वर हम दियो याकी जननिकौं निरबाध।क्षमा याको करहिगे हम एकशत अपराध॥
लौन पूरण भयो अब तुम लखऊ सिगरे भूप। देत याकौं दंड हम अब यथा योग्य अनूप ॥ यहि
भाँति कहि कै चक्र दीन्हौं छोडि श्री यदुराय। कायतें शिशुपालको शिर परो क्षितिपर जाय॥
शिशुपालको कढि तेज तनतें महा सूर समान । कियो जाय प्रवेश श्रीश्रीकृष्णमे सुखदान॥ रहे
मानि सुमहत अद्भुत देखि कै सबभूप।अनभ्र बरषो गगनतें जल असनि पात अनूप॥ हली क्षिति
क्षितिपाल सिगरे भए अचल समान । श्रीछलकौं लखि कै भए सब विगतचेत महान ॥ कोऊ
मीजत हाथ कोऊ रसन दाबे दन्त । कोउ सराहत कृष्णको लहि मोद अति क्षितिकन्त॥ गए
केशव पाश मुनिवर भरे मोद अखर्ब। सहित विप्रन्ह भूप सज्जन प्रीति पूरित सर्ब॥ करण सुखव
लगे सिगरे भरे मोद महान । धर्मनृपकी पाय आज्ञा पार्थ परम सुजान॥ चेदिपतिके तनयको
अभिषेक अति अभिराम। कियो भूपन्ह सङ्ग लीन्हे विहित सुविधि ललाम॥ भयो विधिवत यज्ञ
पूरण धर्मनृपको पर्म । सुखारम्भ अविघ्न बऊ धन धान्यमय सह गर्म॥ समाप्त कीन्हौं धर्म भूपति
राजसूय सुयज्ञ। सहाय करता पाय कै श्रीकृष्णकों सर्वज्ञ ॥ कियो अवभृथ स्नान जब यज्ञान्तमे
नृपधर्म। आय कै सब भूप तब यों कहन लागे पर्म॥साम्राज्य लहि तुम भए वर्धित भाग्यतें अभि
राम। अजमीढकूके सुयशतें तो सुयश भो अतिनाम ॥ विविधि विधिसों भए पूजित देऊ आज्ञा
भूप। जाहिं अपने नगरकों हम सकल नृप सुखरूप ॥ सुनि युधिष्टिर नृपनके यहि भाँतिके बर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सु०प० बैन। बिदा कीन्हे दै यथोचित परम पूजन चैंन ॥ प्रीतिसों मम इहां आए यज्ञमे सुखदाय। कहो
भ्रातनसों सु इनके देशलों सह जाय ॥ कुसलसों पजचाय इनकों बेगि आवज बीर। एक एकन
सङ्गते तब चले धर्म गँभीर ॥ धृष्टद्युम्न बिराटके सँग द्रुपदके सँग पार्थ। भीम नृपधृतराष्ट्रके
सँग बली भीम महार्थ ॥ सपुत्र द्रोणाचार्य्यकों सहदेव अति मतिमान। सुबलके सँग गए पठवन
नकुल बीर महान ॥ द्रौपदीके तनय अरु अभिमन्यु ए बर बीर। गए पर्वतके नृपनके सँग
पठवन धीर ॥ गए पठवन और छत्री अन्य जे हे भूप। यहि भाँति कीन्हों बिदा सबको पूजि
कै अनुरूप ॥ गए पूजा पाय कै जे रहे द्विजबर सर्ब। यों युधिष्टिरसों कहो तब बासुदेव अखर्ब ॥
देऊ आज्ञा जाहि हमहूँ द्वारिकाकों भूप। भाग्यते भो प्राप्त तुमकों राजसूय अनूप ॥ यह बचन
सुनि कै कहो अैसे धर्मनृप अभिराम। कृपाते तब यज्ञ बर हम लहो करुणाधाम ॥ कहै कैसे
चलन तुमकौं सुनऊ हे प्रियप्राण। तुम्हे देखें बिना लहत न मोदकों सुखदान ॥ अबश्य तुमकौं
योग्य जावैं द्वारिकाकौं बीर। बचन सुनि यह धर्मनृप सह कृष्ण समुद गभीर ॥ बिदा ऊबेकों
गए तब प्रथाके चलि पास। साम्राज्य पायो पुत्र तव तो पुण्यतें सुखरास ॥ सिद्धार्थ बसुमत पुत्र भे
तब लहऊ मोद महान। बिदा तुमसौं होय चाहत द्वारिका हौं जान ॥ बिदा कुन्ती सह सुभद्रा
द्रौपदीसों होय। कढे अन्तः पुर सु बाहेर महा आनद भोय ॥ स्नान करि दै दान सुनि कै द्विजनसों
खलैन। सुरथ दारुक तहाँ ल्यायो मेघसम गति अैंन ॥ तार्क्ष्यके तन सुरथकों करिके प्रदक्षिण
धीर। चढे रथपर चले द्वारावतीकों बलबीर ॥ चले प्यादे साथ रथके सहित भ्रातन्ह धर्म। भरैं
लोचन बारिसौं अतिप्रेम पूरित पर्म ॥ तब करो ठाढो सुरथ हरि इमि कहन लागे बैंन। प्रजा
पालन कीजियो व्है सावधान सचैंन ॥ प्रीतिसों सम्पन्न कीजो बान्धवनकौं सर्ब। यहिभाँति कहि नृप
धर्मसों श्रीकृष्ण बचन अखर्ब ॥ गए द्वारावतीकौं व्हैं बिदा श्रीबलबीर। सहित भ्रातन्ह धर्म
नृप गे धामकौं धरिधीर ॥ सभा गृहमे नृप सुयोधन रहे शकुनि समेत। लखत शोभा परम
अद्भुत भरे अचरज चेत ॥ ❀❀❀

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ स०प०

संशय हमकों जो भयो सुनिए मुनिवर तौन। करता तास निवृत्तिको तुम बिनु जगमे कौन॥
विविधिकहे उतपात जो नारद मुनि तपधाम। अन्तकृत्त अरु दिव्य अरु पार्थिव जो अतिमाम॥
भए चेदिपतिके मरत ए तीनो उतपात। ताकौं लखि संशय हमै कहो तास फल तात॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भूपतिके सुनिकै बचन बोले व्यास अधर्ष। रहिहै फल उतपातको भूपति तेरह वर्ष॥
तुमकौं कारण करि नृपति क्षत्रबंशको नाश। दुर्योधनको दोष लहि ह्वहै नृपति प्रकाश॥
भीमार्जुनको लहि प्रबल विक्रम धूप अखर्ब। व्ययको क्षत्री लहैगे जे धरणीपैं सर्ब॥
व्हैहै खम निशान्तमे तुम्हे आजु नृपधर्म। तामे दरशन होय गो नीलकण्ठको पर्म॥
पितृराजकी दशाकौं देखत उग्र स्वरूप। हर दरशन ऐसे तुम्हे ह्वहै हे कुरुभूप॥
यामे अब तुम शोच कछु करऊ न नृप अनुरूप। करत कालको अतिक्रम कौन जगतमे भूप॥
यहकहिकै कैलाशकों गए महामुनि व्यास। शोच भरे नृपधर्म इमि बोले भ्रातन्ह पास॥
सुने बचन सबव्यासके सत्यसुमेरु समान। क्षत्र निधन कारण हमै मरिबो सुयश महान॥
फाल्गुण बोले बचन सुनि धर्मराजके भूप। शोच न कीबो उचितहै बुद्धि बिसनके रूप॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बोले धर्मराज इमि बैंन। व्यास बचन सुधिकरि मतिऐंन॥ करत आजुतें मै पन जौन। सुनऊँ बन्धु भीमादिक तौन॥ बर्ष त्रयोदशलौं मैं नाहि। बचन कठोर कहौं गो ताहि॥ काहूसोंह होय सगर्ब। करि बिचार तजि बुद्धि अखर्ब॥ सुत महँ अन्य माहियुत चाव। राखों गो मै निति सम भाव॥ जातें भेद न होय अमूल। भेद महा बिग्रहको मूल॥ बिग्रह रक्षण करैं बिचारि। सम पर जन्य रहैं निरधारि॥ जातें निन्दा करै न लोक। होय न बिग्रह कारण तोक॥ धर्म नृपतिके सुनि इमि बैंन। तथा चले पाण्डव मतिऐंन॥ सभामाह करि यह निरधार। धर्मराज सह बन्धु उदार॥ देव पितृ करि तर्पित भूप। करि मङ्गल अस्नान अनूप॥ भ्रातन सह भरि मोद अखर्ब। करिकै विदा भूपगण सर्ब॥ कियो युधिष्ठिर स्वपुर प्रवेश। सचिव पुरोहित सह सुखदेश॥ रहे सु योधन सकुनि समेत। लखत सभा भरि अद्भुत चेत॥ लखो फटिकमय थल अभिराम॥ भरो मनो जलसौं अति साम॥ तहाँ हलनको राखि बिचारि। चले सुयोधन बसन उतारि॥ तहाँ जानिथल गए लजाय। आगेचले शोचसौं छाय॥ भरो फटिक सर जलसौं जौन। भूमि समान जानिकै तौन॥ चले गिरे तामे भ्रमछाय॥ लखिकै हँसे भीम बरकाय। बसन पठायो सुनि नृपधर्म। आगे चले पहिरिसो पर्म॥ भीमार्जुन अरु माद्रीनन्द। लखो हँसत कौरव कुलचन्द॥ भरो अमर्ष क्रोधसों छाय॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सभ० बैन। बिदा कीन्हे दै यथोचित परम पूजन चैंन ॥ प्रीतिसों मन इहां आए यज्ञमे सुखदाय। कहो भ्रातनसों सु इनके देशलों सह जाय ॥ कुसलसों पहुचाय इनकों बेगि आवहु बीर। एक एकन सङ्गते तब चले धर्म गँभीर ॥ धृष्टद्युम्न बिराटके सँग द्रुपदके सँग पार्थ। भीम नृपधृतराष्ट्रके सँग बली भीम महार्थ ॥ सपुत्र द्रोणाचार्य्यकों सहदेव अति मतिमान। सुबलके सँग गए पठवन नकुल बीर महान ॥ द्रौपदीके तनय अरु अभिमन्यु ए बर बीर। गए पर्वतके नृपनके सँग पठवन धीर ॥ गए पठवन और छत्री अन्य जे हे भूप। यहि भाँति कीन्हों बिदा सबको पूजि कै अनुरूप ॥ गए पूजा पाय कै जे रहे द्विजबर सर्ब। यों युधिष्टिरसों कहो तब बासुदेव अखर्ब ॥ देउ आज्ञा जाहि हमहूँ द्वारिकाकों भूप। भाग्यते भो प्राप्त तुमकों राजसूय अनूप ॥ यह बचन सुनि कै कहो ऐसे धर्मनृप अभिराम। कृपाते तव यज्ञ बर हम लहो करुणाधाम ॥ कहै कैसे चलन तुमकौं सुनउ हे प्रियप्राण। तुम्हे देखें बिना लहत न मोदकों सुखदान ॥ अबश्य तुमकौं योग्य जाबैं द्वारिकाकौं बीर। बचन सुनि यह धर्मनृप सह कृष्ण समुद गभीर ॥ बिदा ऊबेकों गए तब प्रथाके चलि पास। साम्राज्य पायो पुत्र तव तो पुण्यतैं सुखरास ॥ सिद्धार्थ बसुमत पुत्र भे तब लहउ मोद महान। बिदा तुमसौं होय चाहत द्वारिका हौं जान ॥ बिदा कुन्ती सह सुभद्रा द्रौपदीसों होय। कढे अन्तः पुर सु बाहेर महा आनद भोय ॥ स्नान करि दै दान सुनि कै द्विजनसौं सुखैन। सुरथ दारुक तहाँ ल्यायो मेघसम गति अैंन ॥ तार्क्ष्यके तन सुरथकों करिके प्रदक्षिण धीर। चढे रथपर चले द्वारावतीकों बलबीर ॥ चले प्यादे साथ रथके सहित भ्रातन्ह धर्म। भरैं लोचन बारिसौं अतिप्रेम पूरित पर्म ॥ तब करो ठाढो सुरथ हरि इमि कहन लागे बैंन। प्रजा पालन कीजियो व्है सावधान सचैंन ॥ प्रीतिसों सम्पन्न कीजो बान्धवनकौं सर्ब। यहिभाँति कहि नृप धर्मसों श्रीकृष्ण बचन अखर्ब ॥ गए द्वारावतीकौं व्हैं बिदा श्रीबलबीर। सहित भ्रातन्ह धर्म नृप गे धामकौं धरिधीर ॥ सभा गृहमे नृप सुयोधन रहे शकुनि समेत। लखत शोभा परम अद्भुत भरे अचरज चेत ॥ ❀❀❀

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ स०प०

संशय हमकों जो भयो सुनिए मुनिवर तौन। करता तास निवृत्तिको तुम बिनु जगमे कौन॥
त्रिविधिकहे उतपात जो नारद मुनि तपधाम। अन्तरिक्ष अरु दिव्य अरु पार्थिव जो अतिभाम॥
भए चेदिपतिके मरत ए तीनो उतपात। ताकौं लखि संशय हमै कहो तास फल तात॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भूपतिके सुनिकै बचन बोले व्यास अधर्ष। रहिहै फल उतपातको भूपति तेरह बर्ष॥
तुमकौं कारण करि नृपति क्षत्रवंशको नाश। दुर्योधनको दोष लहि ह्वहै नृपति प्रकाश॥
भीमार्जुनको लहि प्रबल विक्रम धूप अखर्ब। व्ययको क्षत्री लहैगे जे धरणीपैं सर्ब॥
व्हैहै सभ निशान्तमे तुम्हे आजु नृपधर्म। तामे दरशन होय गो नीलकण्ठको पर्म॥
पितराजकी दशाकौं देखत उग्र स्वरूप। हर दरशन ऐसे तुम्हे ह्वहै हे कुरुभूप॥
यामे अब तुम शोच कछु करऊ न नृप अनुरूप। करत कालको अतिक्रम कौन जगतमे भूप॥
यहकहिकै कैलाशकों गए महामुनि व्यास। शोच भरे नृपधर्म इमि बोले भ्रातन्ह पास॥
सुने बचन सबव्यासके सत्यसुमेरु समान। क्षत्र निधन कारण हमै मरिबो सुयश महान॥
फाल्गुण बोले बचन सुनि धर्मराजके भूप। शोच न कीबो उचितहै बुद्धि बिसनके रूप॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बोले धर्मराज इमि बैंन। व्यास बचन सुधिकरि मतिअैंन॥ करत आजुतें मै पन जौन। सुनऊँ बन्धु भीमादिक तौन॥ बर्ष त्रयोदशलौं मैं नाहि। बचन कठोर कहौं गो ताहि॥ काहूसोंह्वै होय सगर्ब। करि बिचार तजि बुद्धि अखर्ब॥ सुत महँ अन्य माहियुत चाव। राखों गो मै निति सम भाव॥ जातें भेद न होय अमूल। भेद महा बिग्रहको मूल॥ बिग्रह रक्षण करैं बिचारि। सम पर जन्य रहैं निरधारि॥ जातें निन्दा करै न लोक। होय न बिग्रह कारण तोक॥ धर्म नृपतिके सुनि इमि बैंन। तथा चले पाण्डव मतिअैंन॥ सभामाह करि यह निरधार। धर्मराज सह बन्धु उदार॥ देव पितृ करि तर्पित भूप। करि मङ्गल अस्नान अनूप॥ भ्रातन सह भरि मोद अखर्ब। करिकै विदा भूपगण सर्ब॥ कियो युधिष्ठिर स्वपुर प्रवेश। सचिव पुरोहित सह सुखदेश॥ रहे सु योधन सकुनि समेत। लखत सभा भरि अद्भुत चेत॥ लखो फटिकमय थल अभिराम॥ भरो मनो जलसौं अति साम॥ तहाँ हलनको राखि बिचारि। चले सुयोधन बसन उतारि॥ तहाँ जानिथल गए लजाय। आगेचले शोचसौं छाय॥ भरो फटिक सर जलसौं जौन। भूमि समान जानिकै तौन॥ चले गिरे तामे भ्रमछाय॥ लखिकै हँसे भीम बरकाय। बसन पठायो सुनि नृपधर्म। आगे चले पहिरिसो पर्म॥ भीमार्जुन अरु माद्रीनन्द। लखो हँसत कौरव कुलचन्द॥ भरो अमर्ष क्रोधसों छाय॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पर्व तिन्हे न लखो सो चलो छपाय ॥ लखि आगे क्षिति नदी समानि । तामे पैरनको अनुमानि ॥ बसन उतारि परे तँह कूदि गिरे तहाँ क्षितिपर भ्रममूर्दि ॥ हमै देखि तँह जन समुदाय। उठि तँहते फिरि चले लजाय ॥ खुलो कपाट देखि सभद्वार । पैठत थामे भिरोकपार ॥ घूर्मित व्हैकै रहो निहारि। आगे चलो क्रोधको धारि ॥ तैसो द्वार देखिकै और । लगो कपाट भूप शिरमौर ॥ बलसों खोलन लगे केवार । मुखभर गिरो सो भूप उदार ॥ उठि आगेचलि देखो भूप। लगो कपाठ द्वार अतिरूप ॥ तहाँ रहे ठाढे व्है जाय। खोलि न सके भ्रमसम पाय ॥ ऐसें क्षलित होय तँह भूप। भयो दुखित सक्रोध कुरूप ॥ व्हैकै बिदा पाण्डवन पाश। चले क्रोध कीन्हें अप्रकाश ॥ भरो खेद दुर्योधन भूप । हास्तिनपुरको चलो कुरूप ॥ पांडव श्री पावक को ताप । ताको कर हृदय सह थाप ॥ नृपगण पांडव बश निरधारि । दुर्योधन मन पाप बिचारि ॥ भयो विवर्ण बिचार अनेका करत लहत सिद्धान्त न एक ॥ धर्म नृपति श्रीचिन्ति अनूप। भयो प्रमत्त सदृश कुरु भूप ॥ सौबल व्यय महा तब चाहि । फिरि फिरि बूझत कहत न ताहि ॥ हठ करि सकुनि शोचको रूप। बूझो तब बोलो कुरुभूप ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ भू बश करो युधिष्टिर रुर्ब। जिष्णु शस्त्र बल पाय अखर्ब ॥ कियो पांडवन यज्ञ महान । भए भूमिपर इन्द्र समान ॥ तिन्हे देखि भरि भूरि अमर्ष। मातुल दहत रहत तजि हर्ष ॥ कृष्ण हनो शिशुपाल नरेश । रहे बिलोकत भूप अशेष ॥ काहूँ न कियो तास प्रतिकार । लहि पांडव भय भूप उदार ॥ दए महीपन्ह रत्न महान। पंडु पुत्रकहँ वणिक समान ॥ देखि पांडवनको श्रीशुद्ध। दहत अमर्ष ऊताशन उद्ध ॥ हम मातुल यह कियो बिचार । अमरष सहो न जात उदार ॥ गरल खाँहि कै अग्नि प्रवेश। करैं मरण जिय बँतन बेश ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शक्ति मानको पुरुषव्है सहैं अमर्ष उदार । ऋद्धिमान लखि शत्रुकों आपुहि निदलाकार ॥
स्त्री पुरुष न षण्ड सम हैं हम मातुल भूप। सहै जो सम्पति शत्रुकी लखि अति उग्र स्वरूप ॥
सार्वभौम बसुमान अति कीन्हो यज्ञ महान । या विधिको लखि शत्रुको जरै न हमै समान ॥
हरिबेकों असमर्थ हौं ताको ऋद्धि उदार । एकाकी असहायकों मरिबो भलो बिचार ॥
दैव करत सो होतहै पौरुष होत निरर्थ। करे यत्न हम पूर्व जे भए ते सिगरे व्यर्थ ॥
तातें मामत प्रबल हम दैव यत्नतें सर्ब । नतरु रहत अबलौं सु क्या कुन्तीपुत्र अखर्ब ॥
ताको श्री लखि कै सभा कियो जो हास महान।मातुल सो हमकौं दहत निशिदिन अग्नि समान॥
कहियो तुम धृतराष्ट्र सों। लहि अमर्ष अतिमाम। दुःखित व्है हम जाहिगे हे मातुल यमधाम ॥

॥ * ॥ सकुनिरुवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

नृप युधिष्टिर सों अमर्ष न तुम्हैं करिबे योग । आपनी श्री जानिए जो करत पांडव भोग ॥ बचे पांडव भाग्यबश तुम किए यत्न अनेक । भए ते सब व्यर्थ उनपैं नही लागे एक ॥ लहीहै तिन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

द्रौपदीसह द्रुपदपुत्र सहाय । वासुदेव सहाय जाके महाबल वरकाय ॥ पिताके तिन अंशमे स०प०
श्री लहीहै अतिमान । बढे ताके तेजसो तो रुदन व्यर्थ सुजान ॥ धनंजय गांडीव धनु है इषुधि अक्षय जौन । दिव्य अस्त्र अनेक पाए पूजि पावक तौंन ॥ धनुषतें अरु बाजुबलतें किए बस क्षिति पाल । अग्निते मय दैत्य रक्षित कियो बीर विशाल ॥ सभा मय करि रचित तहँ बसु सहस राखे रत्न । बहत ताकौं तौन यामे रोइबो का पत्न ॥ कहतहौं असहाय आपुहि जो सुयोधन बीर । तौन मिथ्या रावरेहैं बन्धु शत रणधीर ॥ द्रोण अतिरथ पुत्र सह अरु कर्ण अति बलबीर । कृपा चार्य्य सभ्रात हम नृप सोमदत्त सुधीर ॥ इन्हहि सहित सहाय तुमसब भूमि जीतऊ भूप । * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ तुम सहित ए अतिरथन्ह हम बल बाँधिकै अतिरूप ॥ पांडवनकौं जीति पहिले भूमिकै बश सर्व । स्ववश दीजै सभा सह क्षितिपाल सकल अखर्व ॥ * ॥ सकुनिरुवाच ॥ धनञ्जय अरु वासुदेव सभीम धर्मनरेश । नकुल अरु सहदेव सह सुत द्रुपद नृप बलवेश ॥ इन्हे जीतन योग्यहै नहि सुरासुर बलधाम । दिव्यास्त्र जानत सकल ए हैं महारथ धनुषास ॥ जाहिं जीते जौंन बिधि हम तौंन जानत भूप । कहत तुमसों तौंन सुनि हिय माह धरऊ अनूप ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ मरै सुहृद न सैन जाते होय बश नृपधर्म । कहऊ तौंन उपाय मातुल महामति अतिपर्म ॥ * ॥ सकुनिरुवाच ॥ * ॥ द्यूतप्रिय नृप धर्म जानत द्यूत खेलि न भूप । आव्हान कीन्हे द्यूततें न निवृत्त होत अनूप ॥ द्यूतमे हौं कुशल मो सम नही त्रिभुवन माँह । करऊ तुम आव्हान यातें द्यूतको नरनाह ॥ राज्यसह श्री जीति ताकी लेहिगे हम सर्व । कहऊ तुम धृत राष्ट्र पैं यह मंत्र परम अखर्व ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ कुरुराज सौं तुम प्रथम मातुल आपु कहिए जाय । प्रथम नहि कहि सकत हम फिरि कहब औसर पाय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ देखि आए सह सुयोधन धर्म नृपको यज्ञ । धृतराष्ट्र सौं एहि भाँनि सौबल कहन लागे तज्ञ ॥ गन्धारजाके तनयसौं जो कियो मंत्र उदार । सकुनि नृप धृतराष्ट्रसौं तेहि मंत्रके अनुसार ॥ ॥ * ॥ सकुनि रुवाच ॥ * ॥ कहन लागे नृप सुयोधन भयो दुर्बल भूरि । जानिए नहि कौंनसो हियमाह कारण पूरि ॥ रहत चिन्ता भरो होय विवर्ण गोतम सर्व । परत जानि न शत्रु संभवको न हेतु अखर्व ॥ नही तुम सुत ज्येष्ठको हिय शोक करत विचार । * । धृतराष्ट्र उवाच । * । कहि सुयोधन शोकको का मूल पुत्र उदार ॥ सुनो चाहत सकुनि मोसौं कहत दुर्बल तोहि । पुत्र ह्रसता को न कारण परत हमकौं जोहि ॥ राज्यको अधिकार तुमकौं दियोहै हमसर्व । सकल भ्राता सुहृद तुमसौं करत प्रीति अखर्व ॥ बसन दिव्य सुखाद भोजन यान तुर सुखदान । परम सज्या गेह उत्तम बास रूप निधान ॥ प्रजा जन अनुसरत सासन करत आज्ञां जौंन । पुत्र दुर्बल दीन ताको कहऊ कारण कौंन ॥ * ॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ करत भोजन बसन पहिरत यथा कुपुष भूपा लखत धारि अमर्षकौं हम काल अन्त अनूप ॥ सन्तोष दाया गर्व भय जो करत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

धारण भूप। लहतहै नहि महत श्री सो कहत सुमति अनूप ॥ रुचतहै नहि भोग हमकौं दहत रहत शरीर। पाण्डवनकी देखिकै अति ज्वलित ऋद्धि गँभीर ॥ देखि शत्रु समृद्ध आपुहि हीन मानि नरेश। भयो यातैं दीनमन तन क्षीण बिबरण बेश ॥ सही स्नातक द्विज अठासीसहस्र जाक पास रहत दाशो तीस तीस सु करैं सेवा जास॥दश सहस्र सु बिप्र भोजन करत जाके धाम। धर्म्म नृपके साथ सुबरण पात्रमे अभिराम॥कांबोज नृप बज्र रङ्गके बज्र मूल्य कंबल जान। गज अश्व गोबरवास अनगण रूपगुणकी भाँन॥उष्ट्र खच्चर भरे अनगण कनक अति अभिराम। हेतु बलिकेलिए आए धर्मनृपके धाम ॥ रत्न नाना भाँतिके बज्र लएँ अमित अनूप। यज्ञमे चज्रँवीरके सब तहाँ आए भूप॥ दयो कुन्तीपुत्रकौं तिन आइ नृपन्ह महान। नहि लखो हम यहि भाँतिको कज्रँ धनागम अति मान॥ अपार देखि धनौघ अरिको सुनज्र हे नृप पर्म। भरे चिन्ता रहत निशि दिन नेक लहतन शर्म ॥ कृषी कारक बिप्र लीन्हैं परम बलिपशु सर्ब। द्वारपैं ते खरे बारित रहत नित्य निखर्ब॥कनक केते कुम्भ लीन्हैं भरे उदक ललाम। यज्ञांतके सुस्नान कारण महा मङ्गल धाम॥ औषधिनको सुरस दीन्हौं औषधीश पठाय। बरुण श्रीसलिलेशके पठए महा सुखदाय॥ पूर्व पश्चिम और दक्षिण सिन्धुको बरबार। रत्न रचित सुकुम्भ आए भरे सहसन भार॥ बासुदेव सु शङ्खमे भरि सलिल उत्तम तौंन। सांब्राजको अभिषेक कीन्हौं महा मङ्गल भौंन॥देखिकै सो भयो हमकौं शोक अति ज्वर रूप। और अद्भुत लखो तँह सो कहत सुनिए भूप ॥ बिप्र परिसन हार तँहा रहे लक्ष प्रमान। शङ्ख धुनिकी रही संज्ञावँधी ज्ञापक बान॥ होतहै रोमांच हमकौं शङ्ख धुनि सुनि भूप। राति दिवश अनन्त बाजत घनस्वन अनुरूप ॥ सभासो नृपगणनतैं अति लसी यों अभिराम। यथा उडुण सङ्ग शशि लहि बिमल गगण बिराम॥ पार्थिवन बज्र भाँतिके बज्ररत्नके बर भार। दिए कुन्तीतनयकों तिन बणिक सदृश उदार॥ इन्द्र बरुण कुबेरकी श्रीयथाहै अभिराम। तथा सम्पतिहै युधिष्टिर नृपतिकी अतिमाम॥देखि सो हों दहत हौं नहि शांति पावत भूप॥ ॥ * ॥ सकुनि उबाच॥ * ॥ पांडवनकी लखो लक्ष्मी जौंन अतुल अनूप॥ पांडवी श्री हरणको यह सुनो यत्न नवीन। द्यूतमे सो सदृश जगमे है न और प्रबीन॥ द्यूत प्रियकों ते यहै नहि खेलि जानत तौंन। द्यूतकों रणकौं बोलाएँ करत आतुर गौन॥ नियत ताकौं जीतिहैं हम कपट करिकै भूप। हरैं गे सब रिद्धिताको ज्वलित ज्योत्स्ना रूप॥*॥ बैशम्पायनउबाच॥*॥ कहो आतुर सुनि सुयोधन सकुनिके ए बैंन। धृतराष्ट्रसों ए अब बिदहैं महामतिके अैंन ॥ जीति लेहैं पँडु सुतकी परम सोथी सर्ब। द्यूतकौं आव्हान कीजै तास तात अखर्ब ॥ * ॥ धृतराष्ट्र उबाच॥ * ॥ महा मति सो बिदुर मंत्री बूझि लीजै ताहि। द्यूत करिवो कहैगे हम तास मत अवगाहि॥ * ॥ दुर्योधन उबाच॥ * ॥ नही करिवो द्यूतकहिहैं बिदुर नृप मतिमान। तात कीन्हैं द्यूत बिनु हम नियत तजिहैं प्राण ॥ मरे हमरेबिदुर सह तुम सुखी रहिहौ भूप। हमै बिनु यह भोगकी जो भूमि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सकल अनूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ आर्त सुनि कै बचन ताके प्रणययुक्त नरेश। स०प०
काय्य कारिण बोलि कै इमि कियो भूप निदेश ॥ सहस्र खम्भ लगाय मणिमय सभा अति अभिराम। मनोरमा शतद्वार जामे आसु रचऊ ललाम ॥ रचित करि कै सभा ऐसी बेगि कहियो आय। शान्ति अर्थ सुपुत्रके इमि कहो नृप सुखदाय ॥ बोलि कै तब विदुरकौं इमि लगे बूझन भूप। आपु जानत द्यूतके सब दोषकौं अनुरूप ॥ * ॥ विदुरउवाच ॥ * ॥ व्यवसायमे एहि रावरे हम नही मोदत पर्म। पुत्र भेदन होय जातैं कीजिए सो कर्म ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ विदुर पुत्रनमे न मेरे बढै बिग्रह रूप। देव ऐसी करै मोपै कृपा परम अनूप ॥ अशुभ कै शुभ होय कारबो द्यूत सुहृद समान। विदुर करिबो भयो निश्चय दैव अति बलवान ॥ विदुर हम तुम भीष्म द्रोण सु तहाँ बैठैं पास। द्यूतमे नहि होयगो बश दैव अनय प्रकास ॥ जाऊ खाण्डव प्रस्थकौं तुम नृपयुधिष्टिर पास। बोलि ल्यावऊ यह न कीजो तहाँ मंत्र प्रकास ॥ दैव इच्छाप्रबल जातैं भयो यह उत्पन्न। बचन सुनि धृतराष्ट्रके व्है विदुर चिन्तासन्न ॥ गए भीषम पास बृद्ध बिचार सुमति उदार ॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ भयो कैसैं द्यूत यह क्षिति क्षत्रको संहार ॥ रहे तामे मुख्य के नृप द्यूत भाषो जाहि। द्यूत रूप अनर्थ सो नहि रचो कहिए काहि ॥ क्षत्रनाशक द्यूतकौं मुनि कहऊ सह बिस्तार ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ विदुरको मत मानिकै धृतराष्ट्र नृप सुखसार ॥ एकान्तमे सुतसौं लगे एहिभाँति कहन सुजान। पुत्र द्यूत न करऊ सम्मत विदुरको न महान ॥ कहैं गे नहि विदुर हमसौं अहित ह्वै है जौन। लेत मानि सो परम हित हम बिदुर भाषत तौन ॥ बृहस्पति जो इन्द्रसौं बर कही नीति प्रमान। पढी सो सब विदुर सहित रहस्य सुमति महान ॥ बचनमे हम चलत ताके जानि कै मतिधाम। यथा उद्धव बृष्णि कुलमे महामति अभिराम ॥ द्यूतमे अति भेद पुत्र बिलोकि परत प्रकाश। करऊ द्यूत न भेद बाढे राज्य लहि है नाश ॥ पिता माता योग्य कारज कियो हम तौ तौन। प्राप्त तुमको भयो सो पद पितामहको जौन ॥ शास्त्रविद सुत ज्येष्ठ पायो राज्य पद अभिराम। औरकौं जो अलभ्य सोहै भाग्य तुम हि ललाम ॥ पाय राज्य समृद्ध करिबो शोक उचित न तोहि ॥ शोकको सुत जान कारण सो सुनावऊ मोहि ॥ * ॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ नही मोकौं रुचति है साधारणी श्री भूप। पाण्डवनकी देखि कै श्री महत ज्वलित स्वरूप ॥ पाण्डवनके स्ववश पृथ्वी देखि कै अतिमान। दुःख पूरित धीरतासौं धरेहौं हौं प्रान ॥ सिन्धुतटके भूप बासी लए रत्न उदार। लखे बारित खरे अनगण धर्मनृपके द्वार ॥ जेष्ठ हमकौं जानि कै नृपधर्म करि सनमान। कहो लीबो रत्नको जो दण्डको अतिमान ॥ रत्न ल्याए भूप जिनि सो लेत हम अभिराम। हारि कै व्है रहे ठाढे लहो अन्त न माम ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिन्दु सरसा न्याय कै मय रत्न फाटिक जान । सभा बिरची तहा हौं किय देखिबेकौं गैान ॥
भरो जलसौं सहित पङ्कज स्फाटिक मय स्थल देखि । चलो बस्त्र उठाय कै तँह हँसो भीम निरेखि ॥
क्रोध करि हौं कियो चाहो बुद्धि ताकी व्यर्थ । क्षमा करिकै रहो आपु हि जानि कै असमर्थ ॥
भीमसेन हि मारि बेकौं हियेमाह बिचारि । गयो रहि शिशुपाल बारी दशाकौं निरधारि ॥
तहाँ तैसी देखि बापी पूर्व भ्रम मन न्याय । चलो सहसा जानि थल हौं गिरो जलमे जाय ॥
कृष्ण पारथ सहित कृष्णा हसैं हम हि निहारि । लहत हौं अति व्यथाकौं अपमान तौन विचारि ॥
राज प्रेरित किङ्करन पट दयो हमकौं आय । ता समैको दुःख हमसो तात बरणि न जाय ॥
द्वार हौं नहि जहाँ तेहाँ जानि द्वार समान । घाव लागो सभ्रम पैठत भास माहि महान ॥
आय कै सहदेव हमकौं गहो शोचि उदार । कहो इत व्है चल्ल भूपति परम सुन्दर द्वार ॥
धृतराष्ट्रसुत उत जाइअै है द्वार सुलभ महान । भीमको यह बचन हमकौं भयो शल्य समान ॥
नाम जिनको सुनो नहि हम पूर्व कबहूँ भूप । रत्न अैसे लखे तेहाँ परम दिव्य स्वरूप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जितने रहे भूमि पर भूप । द्वीप शैल बन बसत अनूप ॥ अबलौं सुने न जिनके नाम । ते लीन्हे धन रत्न ललाम ॥ जिनकी संख्या कही न जाय । देखत पार शकै को पाय ॥ जो देखत भो अवरज मोहि । कहँलौं कहौं तात सब तोहि ॥ सो धनधर्म नृपति कहँ आय । तिन दीन्हौं अति आनद पाय ॥ सो लखि बढो तापअति तात । करत सो मोहियमहँ उतपात ॥ जिन दीन्हैं गज अयुत अनूप । तेऊ रुके द्वारपर भूप ॥ चित्ररथो गन्धर्व नरेश । जो बासवको अनुग सुरेश ॥ दिव्य चारि शत दीन्ह अर्ब । बायु सदृशगति माह अश्वर्ब ॥ बिराट मत्स्यनृप कुञ्जर मत्त । बर द्वै सहस दये जनमत्त ॥ द्वै सहस हय छबिस नाग । नृप बसुदान दए बडभाग ॥ दासी सहस चतुर्दश बेश । दास अयुत पटु बिहित निदेश ॥ हय गज रत्न असेय बिशाल । दयोयुधिष्ठिरकौं पाञ्चाल ॥ बासुदेव करिकै सनमान । दयो किरीटीकौं सुखदान ॥ सहस चतुर्दश कुञ्जर तौन । घनसे बरषत मदजल जौन ॥ कृष्ण पार्थआत्मा सुखदान । पार्थ कृष्णको प्राण समान ॥ बासुदेव अर्जुनके अर्थ । स्वर्ग लोकहौं तजो समर्थ ॥ कृष्ण अर्थ अर्जुन मतिमान । चाहत दयो महाबल प्रान ॥ मलयाधीश मलयको सार । कनक पात्र भरि अमित उदार ॥ धन मणि रत्न अनेकन भार । लै आए पाण्डवनृप द्वार ॥ ऊपे सुमणि मुकुतनके जाल । गज असंख्य गिरि सदृश बिशाल ॥ पठए सिंहल भूप उदार । बारित लखे धर्म नृप द्वार ॥ लाखन भूप महाबल रास । बारित देखि पैारिके पास ॥ अैसो बिभव शत्रुको जोहि । अतिभय भई मूरछा मोहि ॥ तीनि अयुत गजप असवार । धर्मनृपतिके भृत्य उदार ॥ सादी पद्म एक बलवान । अर्बुद रथ गज मए महान ॥ पदा तिकी संख्या के कहै । भक्ष्य भोज्य जे नितिप्रति लहैं । भोजन कियो कियो नहि जौन । निर्णय करति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

द्रौपदी तौन ॥ दुऊन दियो नहि दण्ड समान। भूप द्रुपद श्रीकृष्ण सुजान॥सम्बन्ध सु मैचीके भाव। सं०ए०
दयो जथेच्छासों भरि चाव ॥ मूर्धाभिषिक्त भूप समुदाय। सेवत धर्म नृपतिकौं आय ॥कोटिन गज
घटोघ्नी जौन। दई युधिष्टिरकौं तिन तौन॥ अभिषेकार्थ भाण्डनृप सर्व।ल्याय कनकके देत अखर्व॥
कञ्चन रथ वाल्हीक ललाम। दयो अश्वशित वर अभिराम ॥ जोरत भयो सु दक्षिण राय।अतिही
महत हर्षसौं छाय॥दयो चेदिपति ध्वजा लगाय। शस्त्र सु दाक्षिणात्य नृप ल्याय॥नृप वसु दान दयो
बरपील । ल्यायो मत्स्य सकट समशील ॥ जल अभिषेक अवन्तीनाथ । दियो उठाय आपने
हाथ॥ चक्रितान दिय आनि निषङ्ग । काशीपति दिय धनु बऊरङ्ग ॥ मणिन जडित असि शल्य
ललाम। दीन्हो ल्याय परम छबिधाम ॥ धौम्य व्यास मुनि नारद सङ्ग।देवल असित भरे मुदअङ्ग॥
धामदग्नि सह कियो अभिषेक । धर्मनृपतिको सहित विवेक ॥ धरो सात्यकी छत्र ललाम। व्यजन
भीम अर्जुन अभिराम ॥ पूर्व कल्पसँह इन्द्र हि जौन। शङ्ख प्रजापति दीन्हौं तौन ॥दियो क्षीरनिधि
तौन पठाय।वारुण महत परम सुखदाय॥तातें कृष्ण कियो अभिषेक।नृपति युधिष्टिरकौं सविवेक॥
देखि भयो हौं मूर्छित भूप। तास भाग्य श्रीसहित अनूप॥ बजे तहाँ बऊशङ्ख महान। सो सुनि उठो
रोम अति मान ॥ धृष्टद्युम्न अरु पाण्डव सर्ब। सात्यकि केशव हँसे अखर्ब ॥हमै देखिकै मूर्छित भूप।
सो बिलोकि हौं भयो कुरूप ॥ भए जे पूर्व भूप अतिधर्म। तिनते अधिक भयो नृपधर्म ॥ राजसूय
करि यज्ञ महान। हरिश्चन्द्रके भए समान॥ ऐसी देखि पार्थ श्रीभूप ।हमै न जीवन लगत अनूप॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ज्येष्टतनय तुम करऊ मति पाण्डुसुतनसो द्वेष । द्वेषीजन तेहि लहत हैं कबहू सुख न अशेष ॥
जानत कपट न मित्र सो सदृश युधिष्टिर भूप। तुमसों कबहू धरत सो नही द्वेषको रूप ॥
तुल्य स्वजन बलबीर्यतें जो भ्राता मतिमान । ताकी श्री लोभैं चहत करि कै मोह महान ॥
कांक्षा तुमकौं यज्ञकी भई होय जौं पर्म । सप्ततन्तु मख कीजिए सह ऋत्विजन सुधर्म ॥
तुमहूँको भूपति सकल देहैं धन अतिमान। परधनमे बांक्षा करत सो नहि आर्ज सुजान ॥
नित्योयोग स्वकर्म रति परधन प्रीति न जौन । शरणागतको पालिबो बैभव लक्षण तौन ॥
दक्ष विपत्ति व्यथा सहै धरै नित्य उत्साह । होय अमत्त विनीत सो पावै मोद प्रवाह ॥
बाऊ समान जो पाण्डुसुत तिन्हैं न छेदन धर्म । स्वार्थहेत कीजै न सुत मित्रद्रोहको कर्म ॥
पाण्डुसुतनसो द्रोहको करिबो है न विवेक । रहो हमारो पण्डुको पिता पितामह एक ॥
देऊ यज्ञ करि दान बऊ करऊ सो भोग महान।बनितन सँग क्रीडऊ अभय करि चित्तवृत्ति समान॥

॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

है न जाके बुद्धि ताकों सकल पढिबो बाद। यथा दर्बी नही जानति सूपको सुख स्वाद ॥ जानि कै
का हमै मोहत कहत ऐसो जौन । स्वार्थको कै ज्ञान तुमहि न हमहि दूषत तौन ॥ जिन्ह नहि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० पथ ज्ञान तिनक चले पीछे भूप । औरस भ्रमसों भरो भटकत लहत पथ न अनूप ॥ वृद्धसेवी जि तन्द्री दृढबुद्धि हो तुम तात। स्वकार्य्य जानत मोहकर क्या कहत हमसों बात ॥ लोककी है वृत्तित नृप वृत्ति भिन्न प्रमाण। अर्थ चिन्त न करै नित्य अमत्त भूप सुजान ॥ जीतिबो सब भाँतिसो यह राजवृत्ति ललाम। धर्मको न अधर्मको सुबिबेक करिबो काम ॥ शत्रुसम्पति लीजिए करि गुप्त प्रगट उपाय । शत्रुबाधक बुद्धि सो है शस्त्रअति सुखदाय ॥ शत्रुकौं अरु मित्रकौं नहि लिखत कछु मतिमान । दुःखदाता आपुकौं सो शत्रु सुनऊ सुजान ॥ असन्तोष सो मूल औको कहत नृपकौं भूप । बृद्धिको है यत्न करिबो परम नीति स्वरूप ॥ ममत्व सो नहि कीजिए ऐश्वर्य्यबाधक माहि। नमुचिसों सल्लाह करि फिरि हनो सुरपति ताहि ॥ सु सनातनी है वृत्ति हनिबो अरिनकौं सहदर्प । दोयकौं क्षिति ग्रसति जैं सैं बिबर बासिन्ह सर्प ॥ अप्रबासी द्विजन नृप जो करत शत्रु बिरोध । जातितैं अरि मनुजकी नहि होत मनुज सुबोध ॥ बृत्ति जास समान बैरी होत है नर तौंन । करत है सो नाश जैसैं रोग सञ्चित जौंन ॥ पांडवनकी महालक्ष्मी हमै भावति है ना लेहि गे सो औसिकै रणमाह करि है सैंन ॥ बढत पांडव नित्य मेरो घटत जात स्वरूप । नहीं हमको रुचत जीवन होय अैसो भूप ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ सन्ताप पावत पांडवनकी देखि कै श्री जान । जीति लेहै द्यूतमे हम बेगि भूपति तौंन ॥ नृप युधिष्ठिरकौं बोलावऊ हस्तिनापुर भूप। जीति ताकी लेउँ श्री सब तजऊ संशय रूप ॥ धनुष पन शर अस्त्र मौर्बी खेल पटुता जौंन । अक्षको है फेंकिबो मम महा स्यन्दन तौंन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ अक्षबिद ए करत है श्री हरणको उतसाह । देऊ याते द्यूत आज्ञा हमै हे नरनाह ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ विदुर शासन हमै सम्मत बूझि तासो लेहि । यहि कार्य्यको फलपाक निश्चय फेरि आज्ञा देहि ॥ * ॥ दुर्यो धनउवाच ॥ * ॥ बिदुर देहै फेरि तो मति हमै निश्चय भूप । पांडवनके परमहित नहि चहत हम हि अनूप ॥ औरकी सामर्थतैं नर करत है नहि काम । एकसी मति होति है नहि दोय की अभिराम ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ बलिनके सँग जौंन बिग्रह हमै रुचत न तौंन । पुत्र होत बिकार तासों महाभयको भौंन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ कियो पूरुब जनम पहिले द्यूतको व्यवहार । होत है नहि नाश तामे शस्त्रको न प्रहार ॥ बचन मानऊ शकुनिको करि देऊ आज्ञा भूप। सभा रचना करणको मणिगणन्ह जडित अनूप ॥ द्यूत है सुखद्वार पावत मोद खेलत जौंन । योग्यहमको पांडवनके सङ्ग कीबो तौंन ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ हमै रुचत न कहत जो तुम करऊ भावै जौंन । फेरि पीछे तपऊ गे तुम समुझि होत न तान ॥ बिदुर सो यह सकल जानत महामतिको धाम । प्राप्त ऊहै जौंन भय क्षिति क्षत्रक्षयकर साम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यहि भाँति कहि कै देवइच्छा प्रबल मानि नरेश । कामकारन्हसों कहो यहिभाँति उच निदेश ॥ मणिनमय सु सहस खम्भ लगाय कै अभिराम । सभा कोसप्रमाण चऊँदिशि रचऊ सुषमा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

धाम ॥ सुनत कारीगर हजारन जाय सुमति महान। सभा बेगि बनाय आए भूपपै सुखदान॥ सभा स०प०
को सुनि सिद्धि भूपति शोच सो हिय छाय । महा मंत्री विदुरसो इमि कहे बचन बोलाय ॥ नृप
युधिष्ठिरकौं सु ल्यावऊ बिदुर जाय बोलाय। सभा देखैं रत्नमय तहँ रचै द्यूत सु आय ॥ सकल
भ्रातन सङ्ग लीन्हे मोदसौं अभिराम । पुत्रको मत मानिकै इमि कहे बचन ललाम ॥ अन्यायके
सुनि बचन बोले बिदुर सुमति स्वरूप ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * । तहाँ हमकौं जायबो यह
रुचतहै नहि भूप ॥ करऊ मति कुलनाशको यह द्यूत मूल महान । भिन्न ह्वैहै पुत्र तो छत कलह
लहि अतिमान ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥खेद करत न कलह हमकौं देव इच्छा जौंन । बिदुर
नाहि निवारिबेके योग्य जगमे कौंन ॥ बिदुर मेरो मानि शासन बेगि तातैं जाय । तुरत आवऊ
धर्मनृपकौं सहित बन्धु लेवाय ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदुर यह सुनि चढे रथपर चल
जँह नृपधर्म । गए खांडवप्रस्थकौं धृतराष्ट्र पीडित मर्म ॥ गए भूपति भौंनको जो धनद धाम
समान । देखिकै नृपधर्मको अति लहो मोद महान ॥ पूजि भूपति बिदुरको हिय भरे मोद
उदार । फेरि बूझो कुशलहै धृतराष्ट्र सह परिवार ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ बिदुर
तुम्हरो लखतहैं मन हर्ष हीन मलान । लहो पथमे कष्ट तौ नहि कछू कहऊ सुजान ॥
बिदुरउवाच ॥ * ॥ कुशलहैं धृतराष्ट्र भूपति कुशल सुतन समेत । पुत्रके गुण नीतिसौं अति प्रीति
पूरित चेत ॥ बूझिकै सब कुशल कहिबैं कहो फिरि यह बैंन । सभा यह तो सभासम सो लखऊ
आइ सचैंन ॥ तहां खेलऊ सहित भ्रातन्ह द्यूत सुहृद समान । देखि सङ्गम सुतनको हौं लहो
मोद महान ॥ रचोहै तँह द्यूत जेजे कितवहै तहँ दक्ष । तिन्हैं लखिहो जायकै तहँ धर्म्म नृपति
समक्ष ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ कलह मूलक द्यूत काकों रुचत बिदुर सुजान । योग्य तुम
को लगत का तो बचन हमहि प्रमाण ॥ बिदुरउवाच ॥ द्यूत मूल अनर्थको हम नियत जानत
भूप। कियौ तास निवारिबेको यत्न हम बऊ रूप॥पास तो धृतराष्ट्र हम कों दियो सहठ पठाय ।
श्रेय अपनो इहा चिन्तन करऊ तुम सुखदाय ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ औरके तँह कि
तवहै धृतराष्ट्रके सुत सङ्ग । बिदुर कहिए सङ्ग जिनके होय द्यूत उमङ्ग॥ * ॥बिदुरउवाच ॥ * ॥
सकुनिहै छत हस्त जानत बिविधि बिधिको द्यूत। हैं बिबिंशति आदि सिगरे कितव भूपतिधूत ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ लगत संशय धूत धोरी कितव तेहां सर्ब । विधि रचित सोई होतहै बस
जास जगत अखर्ब ॥ बिदुर हों धृतराष्ट्रको नहि सकत शासन टारि। द्यूत रणकौं हम बोलायेतैं
रहत नहि हारि ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदुरसौं यहि भांति कहि दिय सैन साह
कहाय। और रानिन सहित सेना चले कुरुकुलराय ॥ चढे रथ पर लगे जामे बायु बेग तुरङ्ग।
गए हास्तिन नगरको भीमादि भ्रातन्ह सङ्ग ॥ जायकै धृतराष्ट्रसौं सब मिले पांडव बीर । भीष्म

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

द्रोणादिकनसों फिरि मिले सबसों धीर ॥ सहित भ्रातन्ह धर्म्मनृप धृतराष्ट्रके गृह जाय। गांधा रजा पतिव्रताके तहँ परम परसे पाय॥ हर्ष कुरुकुलमे भयो तँह पांडवनकों देखि। बसे ते ते हि धाममे जे रत्न रचित बिशेखि॥ बहूजे धृतराष्ट्रकी श्री द्रौपदी की चाहि। खेदसौं भरि भूरि हियको रही प्रगट सराहि॥ कियो सन्ध्या पूजि बिप्रन्ह अङ्गराग लगाय। सस्त्रीक पांडव भरे आनद सज सोए जाय॥ प्रात उठि करि नित्य आन्हिक द्विजनकों दै दान। सभाकौं फिरि गए सानुज धर्म्म नृपति महान॥ सभा मे जे जाय पहिले रहे बैठे भूप। मिले तिनसौं सहित भ्रातन्ह धर्म्मनृपति अनूप॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकब्रीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि युधिष्ठिरनृपतेर्द्यूतसभाप्रवेशोनामदशमोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोलाछन्द ॥ * ॥

सभामे जब जाय बैठे पाय आसन पर्म्म। सकुनि तव इमि कहन लागो कपट कारक कर्म्म॥ सकुनिरुवाच॥ * ॥ बिछी चौपरि सभामे सब लखत तुमकों भूप। धरे अक्ष अनूप कीजै द्यूत समय सुरूप॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ * ॥ द्यूत छन्दन मूल जासे भरो सौबल पाप। नीति रहित अनीतिमय भयभूरि कारक ताप॥ कितवकी सनमान वरणै नही सज्जन लोग। सकुनि हम सु कुमार्गमे नहि तुम्हैं जीतन योग॥ * ॥ सकुनिरुवाच॥ * ॥ द्यूत जानत भूपनीकी भांतिसों नरजौंन। सकल भांतिनकी क्रियामह होतहै पटु तौंन॥ अक्षके आधीन पनको जीति हारि नरेश। हारिबो अरु जीतिबो व्यवहार मात्र निदेश॥ छोडि शङ्का बचनतैं कै प्रगट पन धरि भूप। द्यूत कीजै पांडु नन्दन आपने अनुरूप॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ * ॥ असित देवल महामुनि जे जात लाकन्ह सर्ब। कहोहै तिन द्यूतमाहँ बिचारि पाप अखर्ब॥ युद्धमे जयधर्म्म कारक द्यूत मे जय पाप। कहतहैं नहि आर्य मिथ्या बचन कारक ताप॥ कपट माया रहित शत ब्रत युद्ध जय अभिराम। यथाशक्ति सुद्विजनके हित जौन धनमो धाम॥ द्यूत अति करि जीतिबो नहि तुमहि सकुनि समान। कपट करि पर धन हरण हम चहतहैं न सुजान॥ कितवहुनकौं कपट वृत्त न [illegible] महान॥ * ॥ सकुनिरुवाच॥ * ॥ जीति पण्डित लेत मूर्खहि अबलकों बलवान॥ [illegible] होतहै जेहि कर्म्म माह उदार। जीतिलेत असीक्षितहि तँह कपट को न बिचार॥ [illegible] भांति हमपै कहत कपट प्रवृत्त। लगै जौं भय द्यूतसौं तौ होऊ भूप निवृत्त॥ * ॥ युधि[illegible]॥ * ॥ रणद्यूतकों आव्हान कीन्हैं हौं न होत निवृत्त। व्रतहै हमारो जगतमे [illegible] सत्यहै बिधि रचितहै हम भाग्यके बस भूप। द्यूत हमसौं कौन खेलै गो इहां अनुरूप॥ * ॥ * ॥ * ॥ दोहा॥ * ॥ * ॥ * ॥

धरिहै पण मो सदृशको कहिए सौंबल तौंन। सगँमे ताके द्यूतको प्रारभँ कीजै जौंन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ स०प०

पन धन धरिहै भूप हम तो पन सदृश महान । सौबल मातुल खेलिहै तुम सो द्यूत सुजान ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

और धरै पन द्यूतको दुसरो होय खेलार । बिषम द्यूत तासों कहत जे है सुमति उदार ॥ इतनो कहत सो जानिकै कीजै द्यूत सुजान। होत अन्यथा सो नहीं जो बिधि लिखित प्रमाण॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

होत द्यूत प्रारम्भ सुनि नृप धृतराष्ट्र समेत । भीष्म द्रोण कृप बिदुर तँह आए दुःखित चेत ॥ सुहृद द्यूतप्रारम्भभो पहिलेसुनिएभूप॥युधिष्ठिरउबाच॥यहमणिमालबिशालममजासयोतिमयरूप॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

याके सम पन धरिए भूप । जातैं होय द्यूत अनुरूप ॥ * ॥ दुर्योधन उबाच ॥ * ॥ मणिधन बहुत हमारे जौन। याके सम पन राखत तौन ॥ द्यूतारंभ कीजिए भूप।यामे योग्य न मत्सर रूप॥

॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥ तब लै अक्ष सकुनि बिद द्यूत । जीतो कहो फेकिकै भूत ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उबाच ॥ * ॥ कनक भरे ए कुम्भ हजार । हौंसो राखो सह भंडार ॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥ फेकि अक्ष सो बल कुल रूप । बोलो यह हौं जीतो भूप ॥ * ॥ युधिष्ठिर उबाच ॥ * ॥ यह रथ स्यन्दन सहस समान । व्याघ्र चर्म मंडित सुखदान ॥ कनक घटित मणि जडित ललाम । घन सम नाद सु जैत्र सुनाम ॥ द्युत सित बसु बाजिन्ह सह जौन । धरत सकुनि हम पण रथ तौन ॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सो बल कुल औन । हो जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उबाच ॥ * ॥ तरुणी दासी सक्त ललाम । कनकाभरण बसन अभिराम॥ रूप भरी पहिरे मणि हार । जेजानै सब कला उदार ॥ संगीत रीतिमें कुशल सुजान। सेवा दक्ष बिनीत महान ॥ बिप्र बरन्ह कँह सेवै तौन । आज्ञा पाय हमारी जौन ॥ यह धन हो पण धरत अनूप । अक्ष फेकिअै सौबल भूप ॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥ सुनत हर्षि सौबल कुल औन । हो जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उबाच ॥ * ॥ लक्ष दक्ष सो दास समूह । जेमनकी समुझत सबऊह ॥ मणिमय भूषण बसन उदार । पहिरैं सकल सुबेश कुमार ॥ कनक पात्र कर लीन्हें सर्ब । अतिथिन्ह भोजन देत अखर्ब ॥ यह धन हौं पण धरत अनूप । अक्ष फेकि अै सौबल भूप ॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल कुल औन । हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उबाच ॥ * ॥ गज सहस्र मदमत्त महान । कनक भूल झम्मित गिरि मान॥ कनकाभरण भरे अभिराम । निर्भय सरल सुभाव ललाम ॥ आठ आठ करणी जिन सङ्ग । महा दन्त अरि पुरकर भङ्ग ॥ यह धन हौं पन धरत अनूप । अक्ष फेकिए सौबल भूप ॥

॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल कुल औन । हौं जीतो यह बोलो बैन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रथ सहस्र मणि जडित स अर्ब । कनक चक्र ध्वज भूषित सर्ब ॥ चढे चित्र योधी रथवान । वायुवेग गति जे अतिमान ॥ यह धनहौं पण धरत अनूप । अक्ष फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल कुल अैन । हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ तित्तिर बर्ण अश्व गान्धर्ब । दियो चित्ररथ तुष्ट अखर्ब ॥ जीतो जिष्णु युद्धमे जाहि । दीन्हैं तेहि करि प्रीति सराहि ॥ यह धन हौं पन धरत अनूप । अक्ष फेंकिअै सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ सुनि हर्षित सौबल कुल अैन । हो जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रथ अरु सकट अयुत अभिराम । बाह युक्त अति रचित ललाम ॥ बर्ण बर्णके जिनपैं बीर । साठि हजार चढे रणधीर ॥ यह धनहौं पण धरत अनूप । अक्ष फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल कुल अैंन । हौं जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ पात्र लोह तामेके जौंन । कनक द्रोण सर पूरित तौंन ॥ हैं निधि भरे धरे सत चारि । द्विजन हेत राखे निरधारि ॥ सो धन हों पन धरत अनूप । अक्ष फेंकिअै सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनत हर्ष सौबल कुल अैंन । हों जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सरबस हारी द्यूत यों जब भयो घोर महान । सर्ब संशय हरण बोले बचन बिदुर सुजान ॥ भूप पहिले कहा हम तुम नहीं मानो तौंन । नहीं औषधि रुचति ताहि असाध्य रोगी जौंन ॥ गोमायुके सम जौंन रोयो जन्म लेतहि पाप । कुलघ्न दुर्योधन भयो कुरु बंशको सन्ताप ॥ यह बसत यह गो मायु जानो नहीं तुम बश मोह । सुनऊ उसन सनीति यातैं छोडि दीजै छोह ॥ चढत माध्विक लेनकौं मधुवृक्ष ऊपर जाय । लहत दैवाधीन मधु सो पतन नियत लखाय ॥ करत द्यूताशक्त यह अतिरथिनं सौं अति वैर । पूर्व याकौं तजो नहि तुम मोहको लहि मैर ॥ भोज अन्धक यादवनमिलि कंसको किय त्याग । कृष्ण ताकौं हनो तिनको पाय मत बडभाग ॥ धृतराष्ट्र शासन पाय तो त्यों जिष्णु अति धनुधारि । कुल कुशल हित दुर्योधनहि सम दरित डारै मारि ॥ काक देइ मयूर लीजै श्यार दै शार्दूल । करऊ अथ इमि पांडवनको भूपआनद मूल ॥ श्लोकः ॥ त्यजे त्कुलार्थ पुरुषं ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् । ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥ शुक्रसौं यह नीति सुनिके असुर अति बल सर्ब । जम्भको करि त्याग दीन्हों जानि अधम अखर्ब ॥ जौंन पत्तो कनक उगिलत बसै सो निज भौंन । ताहि मारत लोभबश ह्वै कुमति पापी तौंन ॥ पांडवनसौं नहीं कीजै द्रोह यातैं भूप । पत्तिहा नर सदृश लहिहो तापकौं अति रूप ॥ काम तरु से पांडवनके सुगुण सुमन समान । भूप मालाकारसे ह्वै चुनऊ अति सुखदान ॥ अनल ह्वै मति भस्म कीजै मूलतैं अभिराम । ससुत सह परिवार बरबस जाऊ मति यमधाम ॥ सकल पार्थन सा करै को युद्ध अति बर बीर । सुरन सहित सुरेश जैसैं महा बल गम्भीर ॥ द्यूत बिग्रह मूल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दारुण भयो यह अतिमान । धृतराष्ट्रसुत उतपन्न तामे करत वैर महान ॥ कुरुवंश छत्र समूह स०प
जात लहै गो दुख भूरि । होय गो मदतैं सुयोधन क्षेम क्षितित दूरि ॥ अनुसर परमति विदुष
अपनी छोडि कै मति जौंन ॥ चढि नाव बाल मलाहकी पै सुनो बूडत तौंन ॥ द्यूत जीतत पुचका
प्रिय लगत सो सुनि भूप । हास अनु जिमि होत विग्रह नाशकारण रूप॥ शकुनि शीखित द्यूतको
मत बढो अति हियमाह । कियो सम्मत धर्म नृपसों कलऊ तौ नरनाह ॥ प्रतीप शान्तनुवंशके
तुम सुनऊ उग्रश्रवा सनीति । परऊ ज्वलित न अनलमे करि मन्दको मत प्रीति॥ क्रोध पांडव कर
हि गे जब प्रलय पावक मान । कौंनसे तुम द्वीपमे तब राखि हौ भजि प्राण ॥ पर्वतिनसों शकुनि
शीखो द्यूतको छल सर्व। तहाँको यह जाउ सैबल दुष्ट दूर्मति खर्व ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥
औरकी तुम करत अस्तुति निन्दि हमकौं छत्त ॥तुम्हे जानत भले हम तुम अन्धमे अनुरक्त। कहति
रसना रावरी हियमाह आशय जौंन ॥ व्यालसे मार्जारसे तुम बसत हमरे भौंन। भर्ई निन्दक
विदुर है नहि पापते भय तोहि । जीति हों अरि लयो फल मति परुष बोलऊ मोहि ॥ अमित्र
होत असह्य कहि करि शत्रुको गुणगान । धृतराष्ट्र आश्रित कहत यातें रुचति जो मनमान ॥
करऊ नहि अपमान मो मति शिखऊ वृद्धन पाश्र्व । परकार्य्यमे व्यापार करि मति करऊ यशको
नाश ॥ परुष बोलु न विदुर कर्त्ता आपुकों अनुमानि । खसिके नहि वचन तुमकों बूझि हैं हम
जौंनि। गर्भमे जो करत रक्षण सोई कर्ता एक । तास प्रेरित जगत सिगरो बहत सहित विवेक ॥
होति ताको जौंन इच्छा करत हैं हम तौंन । परदर्ग द्वेषीको न दीजै बास अपने भौंन ॥
विदुर जेहाँ रुचै तेहाँ जाय कीजै बास ॥ * ॥ विदुरउवाच ॥ * ॥ नीति वक्ताके न ऐसैं कहत
कोऊ पास ॥ प्रथम राखत चित्त अपनो गुप्त कोन्हैं भूप। समय लहिकै हनत द्वेषि हि धारि अपनो
रूप॥ प्रथम करिकै सुहृद पीछैं देत दूषण जौंन । श्रेयकौं नहि लहत सो मति हीन भूपति तौंन ॥
कुरुनाथकौं हित मंत्र रुचत न यथा तरुणि हिं दृद्ध । हिताहित सब कार्यमे प्रिय कियो चाहत
सिद्ध॥ प्रिय अपथ्य जो कहत पापी रुचत सबकों तौंन।कटुपथ्य वक्ता है सुदुर्लभ तास श्रोता जौंन॥
धर्मरत प्रिय अप्रियको भय तजेसत्य स्वरूप। कटुपथ्यवक्ता सुहृद जास सहायवान सो भूप॥ व्याधि
हर कटुतीक्ष्ण उग्र सु सुयशमुख सुखभौंन। शान्ति लऊ नृप पान करि सत मंत्र औषधि तौंन॥चहत
हौं कुरुवंशको कल्यान कारण भूप। पाण्डवनकौं करौ तौ मति भूलि कोपित रूप॥ हम कहो सो
धृतराष्ट्र मनमे राखि मंत्र उदार। जौंन इच्छा होय आगैं करऊ तौंन विचार॥ * ॥ शकुनिरुवाच
बऊत हारे बित्ति उबरो होय भूपति जौंन । राखि ए पन समुझि कै कौंन्तेय निजधन तौंन ॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥कहा बूझत शकुनि मेरे बित्ति आध अखर्ब। है न संख्या लक्ष कोटिन
कोन प्रयुत सअर्ब॥ तौंन हौं पण धरत हौं धन सकल असित अनूप । फेंकि दीजै अक्षकौं अब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रथ सहस्र मणि जडित स अर्ब । कनक चक्र ध्वज भूषित सर्ब ॥ चढे चित्र योधी रथवान । वायुवेग गति जे अतिमान ॥ यह धनहौं पण धरत अनूप । अक्ष फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल कुल अैन । हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ तित्तिर वर्ण अश्व गान्धर्ब । दियो चित्ररथ तुष्ट अखर्ब ॥ जीतो जिष्णु युद्धमे जाहि । दीन्हैं तेहि करि प्रीति सराहि ॥ यह धन हौं पन धरत अनूप । अक्ष फेंकिअै सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ सुनि हर्षित सौबल कुल अैन । हो जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रथ अरु सकट अयुत अभिराम । वाह युक्त अति रचित ललाम ॥ वर्ण वर्णके जिनपैं बीर । साठि हजार चढे रणधीर ॥ यह धनहौं पण धरत अनूप । अक्ष फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल कुल अैंन । हों जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ पात्र लोह तामेके जौंन । कनक द्रोण सर पूरित तौंन ॥ हैं निधि भरे धरे सत चारि । द्विजन हेत राखे निरधारि ॥ सो धन हों पन धरत अनूप । अक्ष फेंकिअै सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनत हर्ष सौबल कुल अैंन । हों जीतो यह बोलो बैंन ॥ *👄*👄*👄* ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ *👄*👄*👄** सरबस हारी द्यूत यों जब भयो घोर महान । सर्ब संशय हरण बोले बचन बिदुर सुजान ॥ भूप पहिले कहा हम तुम नहीं मानो तौंन । नहीं औषधि रुचति ताहि असाध्य रोगी जौंन ॥ गोमायुके सम जौंन रोयो जन्म लेतहि पाप । कुलघ्न दुर्योधन भयो कुरु बंशको सन्ताप ॥ ग्रह बसत यह गो मायु जानो नहीं तुम बश मोह।सुनऊ उसन सनीति यातैं छोडि दीजै छोह॥ चढत माध्विक लेनकौं मधुवृक्ष ऊपर जाय । लहत दैवाधीन मधु सो पतन नियत लखाय ॥ करत द्यूताशक्त यह अतिरथिनं सौं अति वैर । पूर्व याकौं तजो नहि तुम मोहको लहि मैर ॥ भोज अन्धक यादवनमिलि कंसको किय त्याग । कृष्ण ताकौं हनो तिनको पाय मत बडभाग ॥ धृतराष्ट्र शासन पाय तो त्यों जिष्णु अति धनुधारि । कुल कुशल हित दुर्योधनहि सम दरित डारै मारि ॥ काक देइ मयूर लीजै श्यार दै शार्दूल । करऊ अथ इमि पांडवनको भूपआनद मूल ॥ श्लोकः ॥ त्यजे त्कुलार्थ पुरुषं ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् । ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्॥ शुक्रसौं यह नीति सुनिके असुर अति बल सर्ब । जम्भको करि त्याग दीन्हौं जानि अधम अखर्ब ॥ जौंन पत्तो कनक उगिलत बसै सो निज भौंन । ताहि मारत लोभबश ह्वै कुमति पापी तौंन ॥ पांडवनसौं नहीं कीजै द्रोह यातैं भूप । पत्तिहा नर सदृश लहिहो तापकौं अति रूप ॥ काम तरु से पांडवनके सुगुण सुमन समान । भूप मालाकारसे ह्वै चुनऊ अति सुखदान ॥ अनल ह्वै मति भस्म कीजै मूलतैं अभिराम । ससुत सह परिवार बरबस जाऊ मति यमधाम ॥ सकल पार्थन सा करै को युद्ध अति बर बीर । सुरन सहित सुरेश जैसैं महा बल गम्भीर ॥ द्यूत बिग्रह मूल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दारुण भयो यह अतिमान । धृतराष्ट्रसुत उतपन्न तामे करत वैर महान ॥ कुरुवंश छत्र समूह स०प
जात लहै गो दुख भूरि । होय गो मदतैं सुयोधन छेम छितित दूरि ॥ अनुसर परमति बिदुष
अपनी छोडि कै मति जौंन ॥ चढि नाव बाल मलाहकी पै सुनो बूडत तौंन ॥ द्यूत जीतत पुचका
प्रिय लगत सो सुनि भूप । हास अनु जिमि होत बिग्रह नाशकारण रूप॥ शकुनि शीखित द्यूतको
मत बढो अति हियमाँह । कियो सम्बत धर्म नृपसों कलऊ तौ नरनाह ॥ प्रतीप शान्तनुवंशके
तुम सुनऊ उग्रन सनीति । परऊ ज्वलित न अनलमे करि मन्दको मत प्रीति॥ क्रोध पांडव कर
हि गे जब प्रलय पावक मान । कौंनसे तुम द्वीपमे तब राखि हौ भजि प्राण ॥ पर्वतिनसों शकुनि
शीखो द्यूतको छल सर्व। तहाँको यह जाउ सो।बल दुष्ट दूर्मति खर्व ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥
औरकी तुम करत अस्तुति निन्दि हमकौं छत्त ॥तुम्हे जानत भले हम तुम अन्यमे अनुरक्त। कहति
रसना रावरी हियमाह आशय जौंन ॥ व्यालसे मार्जारसे तुम बसत हमरे भौंन। भर्ई निन्दक
बिदुर है नहि पापते भय तोहि । जीति हों अरि लयो फल मति परुष बोलऊ मोहि ॥ अमित्र
होत असह्य कहि करि शत्रुको गुणगान । धृतराष्ट्र आश्रित कहत यातें रुचति जो मनमान ॥
करऊ नहि अपमान मो मति शिखऊ बृद्धन पाश । परकार्य्यमे व्यापार करि मति करऊ यशको
नाश ॥ परुष बोलु न बिदुर कर्त्ता आपुकों अनुमानि । स्रष्टिके नहि वचन तुमकों बूझि हैं हम
जौंनि। गर्भमे जो करत रक्षण सोई कर्ता एक । तास प्रेरित जगत सिगरो बहत सहित बिवेक ॥
होति ताको जौंन इच्छा करत हैं हम तौंन । परदर्ग द्वेषीको न दीजै बास अपने भौंन ॥
बिदुर जेहाँ रुचै तेहाँ जाय कीजै बास ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ नीति बक्ताके न ऐसैं कहत
कोऊ पास ॥ प्रथम राखत चित्त अपनो गुप्त कीन्हैं भूप। समय लहिकै हनत द्वेषि हि धारि अपनो
रूप॥ प्रथम करिकै सुहृद पीछैं देत दूषण जौंन । श्रेयकौं नहि लहत सो मति हीन भूपति तौंन ॥
कुरुनाथकौं हित मंत्र रुचत न यथा तरुणि हिं दृष्ट । हिताहित सब कार्यमे प्रिय कियो चाहत
सिष्ट॥ प्रिय अपथ्य जो कहत पापी रुचत सबकों तौंन।कटुपथ्य बक्ता है सुदुर्लभ तास श्रोता जौंन॥
धर्मरत प्रिय अप्रियको भय तजेसत्य स्वरूप। कटुपथ्यबक्ता सुहृद जास सहायवान सो भूप॥ व्याधि
हर कटुतीक्ष्ण उग्र सु सुयशमुख सुखभौंन। शान्ति लऊ नृप पान करि सत मंत्र औषधि तौंन॥चहत
हौं कुरुवंशको कल्यान कारण भूप। पाण्डवनकौं करौ तौ मति भूलि कोपित रूप॥ हम कहो सो
धृतराष्ट्र मनमे राखि मंत्र उदार। जौंन इच्छा होय आगैं करऊ तौंन विचार॥ * ॥ शकुनिरुवाच
बऊत हारे बित्ति उबरो होय भूपति जौंन । राखि ए पन समुझि कै कौंन्तेय निजधन तौंन ॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥कहा बूझत शकुनि मेरे बित्ति आध अखर्ब।है न संख्या लक्ष कोटिन
कोन प्रयुत सअर्ब ॥ तौंन हौं पण धरत हौं धन सकल असित अनूप । फेंकि दीजै अबकौं अब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० सुनऊ सौबल भूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ धारिकै छल डारि पासे शकुनि पूरित चैन। जिता हौं यह नृप युधिष्ठिरसों सो बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ अजा अश्व बऊधेनु उदार । रहैं जे अमित सरितपति वार ॥ सो धन हौं पण धरत अनूप । अब फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ सुनत हर्षि सौबल छल अैंन। हौं जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ पुरजन पद भू दस न जौंन।द्विज बिनु जन पन राखत तौंन॥ बैशम्पायनउबाच ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैंन। हौं जीतो यह बोलो बैंन ॥ युधिष्ठिरउबाच राज पुत्र मणिभूषित बीर । यह धन परम हमारे धीर ॥ यह धन पण हम धरत अनूप । अब फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैंन । हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ श्याम युवा कञ्जायत नैंन । सिंह शदृश बर भुज बल अैंन ॥ धरत नकुलकों सु पण अनूप। अब फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ शकुनिरुबाच * ॥ हारे नकुल सुनो प्रिय पर्मा तब का पण धरि हौ नृपधर्म ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैंन। हौं जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ करत धर्म शासन अभिराम । पण्डित परम महामति धाम ॥ मम अति प्रिय सहदेव अनूप। धरत सो पन हे सौबल भूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैंन। हौं जीतो यह बोलो बैंन ॥ ॥ * ॥ शकुनिरुबाच ॥ * ॥ माद्री पुत्र तुम्हैं प्रिय जौंन । भूपति जीति लए हम तौंन ॥ भीमसेन अर्जुन मह भूप। तो प्रिय गौरव अतिशय रूप ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ कहत अधर्म अनयके बैन । सुहृद भ्रातभेदक छल अैन ॥ समर सिन्धुको बोहित जौंन । अरिदल मर्दन बरबल भौन ॥ कौन धनुर्द्धर जिष्णु समान। शत्रु समूह तिमिरिको भान ॥ यह धन हम पण धरत अनूप। अब फेंकिअै सौबल भूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैंन। हौं जीतो यह बोलो बन ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ जो पाण्डवमह धनुधर बीर । हौं जीतो सो जीष्णु गभीर ॥ भीमसेन जो अतिप्रिय भूप। करऊ ताहि अब पण धन रूप ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ जो मम मंत्री परम सुजान । वज्रीसम रणमध्य महान ॥ नतभ्रू लखत तिरीछे जौंन । अरिगण गज पञ्चानन तौंन ॥ गदा युद्धमे उद्ध कराल । भएँ कुद्ध परप्रोडन काल ॥ करत भीमकहँ पण धन रूप। अब फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैंन। हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ होय शेषधन जौंन अनूप । कीजै द्यूत सो पण धरि भूप ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ सकल भ्रात प्रिय हम अवशेष । करि हैं द्यूत धारि पणवेष ॥ हौं आपुहि पण धरो अनूप। अब फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैंन। हौं जीतो यह बोले बैन ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ यह तो आप कर्म कियभूप। छोडि शेष धन आपनो रूप ॥ हारे सो नहि तुम्हरे योग । कहा कहैं गे सुनि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सब लोग ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ हारे धर्मनृपतिसों बैन । अैसे कहे शकुनि क्रूर अैन ॥ स०प०
शकुनिरुवाच ॥ * ॥ हारे बिना प्रिया धन एक । है पांचाली नृप सबिबेक ॥ सो धन पण राखऊ नृपधर्म । आपुहि जीति लीजिए पर्म ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ नहि अति बडी न छोटी जैान । नहि अतिपीन न कृशत तैान ॥ नील प्रलंब सु कुञ्चित केश । मुख समान शशि तनु कटिदेश ॥ भरी सकल गुणगण अभिराम । कमलायत लोचन छविधाम ॥ इन्दीवर वरणी सुखरास । सदृश मालती अङ्ग सुवास ॥ सदृश इन्दिराजाको रूप । बचन सुधासम कहति अनूप ॥ शील सुमति दयाको धाम । पांचालदुहिता अतिगुणग्राम ॥ सो धन हौं पण धरत अनूप । अब फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि धर्मनृपतिके बैन । धिग धिग भो तहँ शब्द अचैन ॥ क्षोभित भई सभासह खेद । भीष्म द्रोण कृप भे युत खेद ॥ शिर गहि बिदुर यथा गत प्राण । लेत अधोमुख श्वास महान ॥ फिरि फिरि बूझत नृपति अनैन । का का जीतै बचन सचैन ॥ कर्णादिक युत मोद गँभीर । औरनके बरषे दृगनीर ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि क्रूरअैन । हा जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ बिदुर द्रौपदि हि ल्यावऊ जाय । प्रिया पांडवनको सुखदाय ॥ दासिन सङ्ग बहारै धाम । जो अपुण्यशीलनको काम ॥ *

॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥

कहत सुयोधन दुर्बचन हमसों कारक नाश । परो चहत हौ नर्कमे बद्ध भयो यम पास ॥
मृगपतिकों कोपित करत ज्यों मृग नीरे जाय । तुम जानत नहि शिर चढे सर्प दर्पसों छाय ॥
इन्हैं न अब कोपित करऊ जाऊ न हठि यमधाम । दासी योग्य न द्रौपदी भरी पुण्य अभिराम ॥
प्रथम आपुकों हारि फिरि ताहि धरो पण भूप । रहे ईश नहि धर्मनृप सो क्यौं दासीरूप ॥
धरो वेणु फल सदृश यह तुम दुर्योधन जैान । द्यूत बैरभय नाशको कारण कीन्हों तैान ॥
कहत शल्यसे बचन अब नीचकर्म करि पाप । सुनत सुजन दुख लहत जे करत नर्कमह ताप ॥
मत्स्य यथा बंडसी गिलै पिष्ट लोभके सैर । करै कंठभेदन सो त्यौं करो न तुम यह बैर ॥
जगजनसों पारथ कबऊ अैसे कहत न बैन । भूकत जे नर श्वानसे इमि अनीतिके अैन ॥
धातराष्ट्र नहि सुनत भो बचन पथ्य सुखराश । सर्व हरण डूबे चहत अन्त कुरुनको नाश ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

दुर्योधन करि कोप कहि है धिग तोकों क्षत्त । प्रातिकामिको बोलि कै बोलो इमि मदमत्त ॥

॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

प्रातिकामी सूत ल्यावऊ द्रौपदीका जाय । पांडवनसों डरऊ मति ज्यों बिदुर भीरु सुभाय ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ प्रातिकामी बचन सुनि गो द्रौपदीके पास । दूरि ठाढो जोरि कर यों कहे बचन सत्रास ॥ द्यूत मदसों मत्त हारे तुम्है धर्म नरेश । जीति तुमको नृप सुयोधन दियो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० हम हि निदेश ॥ द्रौपदीका जाऊ लै धृतराष्ट्रनृपके धाम। सङ्ग दासिनके कर तहँ जाय कै गृह काम ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ प्रतीकामी कौन हारत भूप भार्या पर्म । द्यूतको धन और कछु का लहो नहि नृपधर्म ॥ * ॥ प्रातिकाम्युवाच ॥ * ॥ रहो नहि धन और जब तब दियो आतन्ह हारि। आपुकौं फिरि हारि तुमकौं हारि गे सुकुमारि ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ कितब सो तुम जाय बूझऊ सूतसुत मति भौंन । प्रथम हारे आपुकौं कै हमै कहिए तौंन ॥ सभामे वह जानि कै फिरि चलऊ हमहि लेवाय। जानि कै कत भूपकौं हम चलै गी निजु पाय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जाय कै सो सभामे इमि कहन लागो सूत। नृप युधिष्ठिर पास भूपन्ह मध्य भो जहँ द्यूत। प्रथम हारे आपुकौं कै हम हि धर्म नरेश । द्रौपदी यह तौंन बूझति कहऊ सत्य निदेश ॥ गतचेत व्है गे धर्मनृप सुनि सूत सुतके बैंन । कहो साधु असाधु नहि कछु व्यथित व्है अति चैन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ पांचालजा यह प्रश्न पूछै सभामे इत आय। सुनै गे सब भूप एऊ कहैं गे सतिभाय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ प्रातिकामी राजभवनहि गयो शासन मानि। कहे ऐसें द्रौपदीसौं बचन जोरे पानि ॥ * ॥ प्रातिकाम्युवाच ॥ * ॥ सभामे तुमकौं बोला वत राजपुत्र अमान। नाश कौरव वंशको अब होंन चहत महान ॥ द्रौपद्युवाच ॥ सुख दुःखकौं बिधि रचत है सो लहत अज्ञ सुजान। धर्म रक्षित करत है सो स्वास्थ्यकौं अतिमान ॥ तजै धर्म न तिन्है सो सम बचन जाय सधर्म। कहऊ हमकौं जे बोलावत ज्येष्ट पावन पर्म ॥ तेहि सभामे चलि द्रौपदीके दिए बचन सुनात। धृतराष्ट्रसुतको जानि हठ सब रहे शीस नवाय ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनि युधिष्ठिर कियो चाहत है सुयोधन तौंन। दूत पठयो द्रौपदीकौं रहो सम्मत जौन ॥ एक बस्त्रा रुदन करत रजस्वला असहाय । स्वसुर नृप धृतराष्ट्र आगे होऊ ठाढी आय ॥ राजपुत्री सभामे लखि तुम्है भूपति सर्ब । निन्दि है धृतराष्ट्र सुतको जानिकै कत खर्ब ॥ दूत कृष्णाके सदन सो सुनत पऊँचो पर्म । कही वार्त्ता सकल सो जो कही ही नृपधर्म ॥ भए पांडव दीनसे सब धर्मके परिपास। कहो सुत धृतराष्ट्रके लखि सूतसौं सम हास ॥ प्रातीकामी इहा ल्यावऊ द्रौपदीकौं जाय। सूत लागे सभ्यजनसौं कहन इमि भय छाय । कहा कहिहैं द्रौपदीसौं जाय अब हम बैन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ भीमतें भय लहत सूत सो सुनु ऊ शासन बैन ॥ जाय कृष्णहि ल्याय गहि सब भ्रु कीन्हें वश्य। चलो सो सुनि भूपको युत क्रोध बचन अवश्य ॥ धाममे अति रथनके सो गयो कृष्णा पास । लाज तजि नृपपास चलि इमि कहे बचन सहास ॥ उठो यह सुनि पोंछि दृग जल द्रौपदी अभिराम। भरो भयसौं चली जेहां अन्धनृपको धाम ॥ गहि दुःशासन लए ताके पकरि पावन केश। खैंचि लैकै चल्यो हौ जहँ सभामध्य नरेश ॥ गहे चोटी नमितमुख करि पापमय शठ तान । खैंचि ल्यायो द्रुपदजाकौं महा दुर्मति भौंन ॥ रितुमती हौं मै एकवसना कहो सकरुण मन्द। जान योग्य न सभामे हौं कृपाकुरु कुरुनन्द ॥ गहि दुःशासन केश बलसो चलो लै वर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ओर। कृष्ण कृष्ण सुजिष्णु कृष्णा करति सकरुण शोर ॥ * ॥ दुःशासनउवाच ॥ * ॥ रजस्वलाकै एकबसना होऊ कै बिनबास। द्यूतमे तुम गई जीति बसऊ दासिनपास ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ गृहीतकेशी आर्द्रबसना कम्पमान अचैन। लाजभय अति कोपसों इमि कहे कृष्णै बैन ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ एहि सभा माह कृतज्ञ सिगरे धर्म्मवेत्ता भूप। इहां ठाढे हो न लायक नही मेरो रूप ॥ क्रूरकर्म्म अनार्य मोकौं खैंचि मति बशपाय ॥ कोपि है जब राजसुत तो करिहि कौंन सहाय ॥ धर्म्मसुतहै धर्म्म मे रत सूक्ष्म धर्म्म बिचारि। छोडि गुण अणुमात्र दोष न लहति तास निहारि॥दुष्ट खैचत केश मो नहि कोऊ निन्दत तोहि। धर्म्म हत धिग भारतनकौं व्यथित मोकौं जोहि ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहति अैसैं लखति तिरछैं कुपित भर्त न ओर। कोपाग्नि बारति द्रौपदी तन पांडवनके घोर ॥ लखति कृष्णा पांडवनकौं लखि दुशासन क्रुद्ध। खैंचि आतुर बोलि दासी हँसतसो अति उद्ध ॥ कर्ण शकुनि दुशासनो दुर्योधनादिक चारि। भए हर्षित भूप सिगरे और दुखित निहारि ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ पणपै लगाय न सकतहै परधनहि कोऊ जगमाहि। हम गए जीते प्रथम नृप इमि कह्या सबहिन पाहि ॥ है पतिहि के आधीन नारी होति संशय है न। पणपै लगाई फेरितोकौं कहैं का हम बैन॥सर्बस्व तजि नृप धर्म्म करिहै धर्म्मसौं दृढ प्रीति। यह हेतुतैं नहि देय उत्तर सकत गुणिकै नीति ॥ कहे कीन्हौं शकुनिके फिरि तुम्हैं पणधन भूप ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ कैतवन्ह करि कपट खेलो द्यूत करि छल रूप ॥ धर्म्म नृप नहि कपट जानत हारि गे केहि भाय। हारि आपुहि नृप हमै पणकरो सो नहि न्याय ॥ सभामे कुरु बृद्धहै सुत वधूके सबईश। प्रष्णको मम देंहि उत्तर समुझि बिश्वेबीश ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रुदति कृष्णा व्यथित देखति कृपिण से पति ओर। पुरुष अप्रिय बाक्य बोलो तब दुशासन घोर ॥ गिरो अञ्चल दुष्ट खैचत द्रुपद जाहि महान धर्म्म नृप पर किये बृकोदर देखि क्रोध महान ॥ * ॥ भीमउवाच ॥ * ॥ होति कितवनके जो दासी ताहि नहि पणलाय। नही खेलत द्यूतकौं हिय दया तास बसाय ॥ दियो जो धन रत्न भूपन्ह शस्त्र वाह अनूप। राज्य आत्मा हमै सबकौं जौन हारे भूप ॥नही याते क्रोध हमकौं ईश हौ तुम सर्ब। द्रौपदीको हारिबो सो किय अयोग्य अखर्ब ॥ पांडवनकौं पाय पति यह क्लेश योग्य न जौंन। क्रूर कर्म्मा कौरवनसौं दुःख पावति तौंन ॥ देतहौं यहि कर्म्मको फल तुम्हैं अति रिसि पागि। करत तो कर भस्महौं सहदेव ल्यावऊ आगि ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ भीमसेन न कहे अैसे पूर्ब कबहूँ बैंन। धर्म्म गौरव गयो तो पर पास पाय अचैन ॥शत्रुतैं आहूत राजा क्षात्र धर्म्म बिचारि। हारिगे सरबस्व सोऊ कीर्त्तिकर निरधारि ॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ यहि भांतिको जौ जानते नहि कर्म्म फाल्गुण बीर। बाऊ दोऊ भस्म करते धर्म्म नृपकी धीर ॥ * ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ पांडवनको द्रौपदीको दुःख करि असमर्ण । धर्म्म बिद धृतराष्ट्र सुत इमि कहे बचन बिकर्ण ॥ द्रौपदीके प्रष्णकौं नृप कहऊ सहित बिबेक । बिना बचन बिबेक कीन्हे लगत पाप अनेक ॥ भीष्म अरु धृतराष्ट्र गुरु बर कहो सम्मत जौन । द्रोण कृप आचार्य सबके बिदुर अति मति भौंन ॥ काम क्रोधहि छोडिकै सति कहऊ सिगरे भूप । द्रुपद जाके प्रश्नको सबिबेक करि मति रूप ॥ कहो ऐसे भांति बऊत बिकर्ण मतिके ऐंन । साधु ओ न असाधु बोले भूप कीज बैंन ॥ कोप करि तब श्वास लेइ बिकर्ण बीर सुजान । कहन लागो नृपनसौं यहि भांति बाक्य महान ॥ न्याय यामे कहत सो हम सुनऊ सिगरे भूप । महीपतिकौं चारिहैं ए व्यसनके अति रूप ॥ द्यूत मृगया पानमद अति सुरति सङ्गम जौंन । धर्म्म तजि अनुरक्त इनमे होतहै नृप तौंन ॥ यहि व्यसन रत जो क्रया करत सो नही मानत तज्ञ । भए तातें व्यसनरत यहि पांडु नन्दन यज्ञ ॥ कितव प्रेरित द्रौपदीकौं कियो पण नृपधर्म । समान जो सब पांडवनकौं द्रुपदजाहै पर्म । प्रथम जीते गएहैं जे पांडु नन्दन सर्ब ॥ फेरि क्रष्णाकों कहो पण करन सैावल खर्ब ॥ यह सकल हेतु बिचारि जानत अजित क्रष्णा पर्म । यह सुनत सभ्यन्ह शब्द जय जय कियो पूरित धर्म्म । प्रश्न समान बिकर्णकौं जब शकुनि निन्दित सोर । नितान्त भो तब कर्ण बोल्यो क्रोध मूर्छित घोर ॥ *॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ बिकर्ण बऊत बिकार देखत जगतमे निरधारि । अनल अरणीतें प्रगटि फिरि देत ताकौं जारि ॥ नही भूपन्ह कहे कछु सुनि द्रौपदीके बैंन । बिजित जानो धर्म्मतें चुपव्है रहे मतिऐंन ॥ बाल्यते तुम दृढ कैसे बचन बोले जौंन । नही नीको भांति जानत धर्म्मको पथ तौंन ॥ अजित जान्यो द्रौपदिहि तुमकौं न बिधि मतिधाम ॥ सरबस्व हारे धर्म्म नृप तेहि सभ्य क्रष्णा वाम ॥ एक बसना ताहि ल्याए इहां सो न अधर्म्म । कहत तौन बिकर्ण सुनिए बचन मेरे पर्म्म ॥ एकभर्त्ताखियनकौं बिधि रचित धर्म्म ललाम । एक रमति अनेकसौं सो बन्धकीहै बाम ॥ कहे बाल बिकर्णके का सुनु दुशासन बीर । पांडवनके छोरि लीजै द्रौपदी सहचीर ॥ कर्णके सुनिकै दुशासन पाप पूरित बैंन । बसन खैंचन द्रौपदीको लगो दुर्मति ऐंन ॥ *॥ बिष्णुपद ॥ *॥ दशासन लगो खैचन चीर । क्रष्णक्रष्ण सो जपति क्रष्णा भरी सोच गँभीर ॥ जगत व्यापक जगत आत्मा क्रष्ण करुणा ऐंन । भए गद गद सुनत आरत द्रौपदीके बैंन ॥ आय आतुर पास ताकें भए बसन स्वरूप । दीन बन्धुसो करत दीन सहाय त्रिभुवन भूप ॥ कढन अम्बर लगे नाना रङ्गके अभिराम । बसन रूपो परी सबकौं देखि क्रष्णाबाम ॥ जयति जयति सु शब्द बोलत सभा सद जन सर्ब । धिग धिग दुशासनकौं कहत धृतराष्ट्रनृपकौं खर्ब ॥ भयो हाहाकार चऊदिशि देखि दुस्कर कर्म्म । कहत सभ्य प्रसंशि सिगरे द्रौपदीकों पर्म्म ॥ दीनबन्धु दयाल दीनानाथ बिरद अमान । क्योन त्रिभुवन नाथ पालै शरणकौं सुखदान ॥ गे दुशासन दुष्टक थकि बसन खैचत हाथ । अमि तन्है क्षितिपैं गिरो जय जयति गोकुलनाथ ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ स०प०

भीमसेन करि क्रोध महान। कहन लगे इमि बचन अमान ॥ * ॥ भीम उवाच ॥ * ॥ बसत लोकमे क्षत्री जौन। सुनै बचन यह मेरो तौन ॥ कहे न काहू ऐसे बैन। भए पूर्वजे अति बलऐन॥ जौंयह करौं सत्य नहि भूप। पितृलोक नहिँ लहौं अनूप ॥ यह दुःशासन पूरित पाप। याको हृदय फारि सह दाप ॥ जौं नहि करौं रुधिरकौं पान। रणमे तौ शत शपथ महान ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ भूपन्ह सुने भीमके बैंन। लगे सराहन जे मति अैंन ॥ धार्तराष्ट्रकों निन्दत सर्ब॥ देखि बसनकी राशि अखर्ब ॥ बाहु उठाय बिदुर मति धाम। कियो सो शब्द निवारण माम॥ कहन लगे इमि बचन प्रमाण। मरे नीति नृपधर्म महान ॥ * ॥ बिदुर उवाच ॥ * ॥ प्रश्न द्रौपदी कीन्हौं जौंन। सकरुण सुनो नृपन्ह तुम तौंन ॥ उत्तर तास कहत नहि भूप। पीडित होत स्वधर्म अनूप ॥ आर्त्त सभामे आवत जौंन। ज्वलित दुःख पावकसौं तौंन ॥ सभ्य सुधासम कहि मित बैंन। करत सधर्म सोचि युत चैंन ॥ कहो बिकर्ण यथा युत धर्म। तथा सत्यसब भाषहु पर्म ॥ देखत धर्म सो सुनिकै न्याय। उत्तर देय नरहै चुपाय ॥आधो पाप अनृतको ताहि। मनमे न्याय नियत अवगाहि ॥ उलटो कहै न्यायसे जौंन। पूर्ण पाप फल पावत तौन॥ प्रश्न सधर्म द्रौपदी जौंन। कहो सुनो तुमसब नृप तौंन ॥ उत्तर याको जौन सधर्म। कहहु बिचारि सुमति मों पर्म ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनिकै परम बिदुरके बैंन। बोले कोऊ न नृप मति अैंन॥ कहो दुशासनसौं राधेय। दासिहि जाहु धाम मह लेय ॥ कँपति द्रौपदिहि सो मति मन्द। खैंचो पकरि राहु ज्यो चन्द ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ दुःशासन दाया करु नक। करवैंहो जो प्रथम बिबेक ॥ सो मै कियो न उत्तम कर्म्म। अब करिलउ जो उचित सुधर्म्म॥ कौरव वृद्ध जो अति मतिधाम। करति तिन्हैं हौं दण्ड प्रणाम ॥ कम्पित लहि दुःशासन दाप। परी भूमि पर करति बिलाप ॥ * ॥ द्रौपद्यु उवाच ॥ * ॥ जिन मोहि लखी स्वयंबर मांह। लखत सभामे ते नरनाह ॥ * * * * ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ * * * * लखो रबिशशि नही मेरो पूर्ब कबहू रूप। सभामे अब लखत मोकौं चहूँ दिशिके भूप ॥बायुको अस्पर्स मेरो सहत हे नहि बीर। मोहि खैंचत दुष्ट यह अब सहत सो रणधीर ॥ सहतहैं कुरु बृद्ध देखत कालकों बिपरीति। स्नुषा कन्या लगति जिनको ते न गनत अनीति ॥ सती बनिता सभामे यह आनिबो मो जौंन। करतहै क्षिति पतिनको यह धर्म नाश सु तौंन ॥ धर्म युक्ता बामको जो सभा माह प्रबेश। धर्मबेत्तन कहो नहि यह बेद बिहित निदेश॥ धर्म नृपकी जौंन महिषी द्रुपद कन्या जौंन।कृष्णकी हों शखी योग्य न सभामे मो गौन॥कहत दाशी देत मोकों क्लेश दुष्ट महान। सो न हौं सहि सकति अब चिरकाल दुःख अमान॥गई जीती कै न जीती सत्य कौरव सर्ब। कहहु उत्तर तौन लहि कृत करौ जौंन अखर्ब ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ कही पहिलैं धर्मकी गति रही सूक्षम जौंन। जानिबेके शक्य है नहि बिदुष जनकौं तौंन ॥ धर्म जो बलवान मानत लोकमे सो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

धन । तिहि धर्मको मर्यादसों पर होत दुर्बल पर्म ॥ तो प्रश्नके न विवेक को कहि सकत नियत बि
चारि। निकउ होयहि बंशको क्षय परतहै निरधारि॥भए कौरव लोभ मोहाशक्त यहि कुलमाह।
हौ बधू तुम जानकी सो धर्म च्युत नरनाह ॥ भयो तुमकों द्रौपदी यह कष्ट प्राप्त महान। तज
तजति न धर्मको तुम जानिकै सुखदान ॥ धर्मविद द्रोणादि वृद्ध बिलोकि यह छत खर्ब। शून्यसे ए
भए बैठे प्राण गतसे सर्व॥ नृप युधिष्ठिर प्रश्नमे यहि कहैं सोय प्रमान।अजित हौ के गई जीति तौन
सत्य महान ॥*॥ बैशम्पायनउवाच ॥*।बजत कुररी सदृश रोवत द्रौपदीकौं देखि। नही बोलत
कोउ भय धृतराष्ट्रसुतको लेखि ॥ मौन लखि सब नृपनकौं सुत अन्धनृपको जौंन। हँसत सो
हमि कहन लागो द्रौपदीसो तौंन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ *॥ भीमादि पांडव द्रौपदी तो
प्रश्नको निरधारि । नही प्रभु तो धर्म नृपकौं कहैं सकल बिचारि ॥ करैं झूठो धर्म नृपको
सुनत सिगरे पाँच। छुटजगी तब द्रौपदी दासित्वतैं तुम साँच ॥ धर्म भूपति कहै तो नहि आपुकौं
जब ईश । दासित्व तजि तब एककौं तुम भजऊ विश्वेश ॥ दुखितहैं ए सकल कौरव दुःख तो
निरधारि । सत्य कहत न पांडवनको हीनभाग्य बिचारि ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ *॥
यह सुनि सुयोधनकौं प्रसंशन लगे सिगरे भूप । धर्म नृपके बचनकौं सब रहे चाहि अनूप॥
कहत पांडव कहा सुनि धृतराष्ट्रसुतके बैंन । लगे सब नृप लखन तिनको ओर कीन्हे नैंन ॥
॥ *॥ भीमउवाच ॥ * ॥ ईश जौं यहि बंशको नहि होत धर्म नरेश । तौंन हम यह सहत तो
छत पाप जन्य कलेश ॥ प्राणके मम ईशहैं ए धर्म नृपति अखर्ब । हारिमाने ते इन्हे हम गए जीते
सर्व॥ नही जीवत जीव मोसों भूमि धारी जात । द्रौपदीके केशको असपरस करि बिनु बात ॥
लखऊ मो भुजदण्ड सुंडादंडसे अतिमान । इन मध्यपरि नहि जाय जीवत इन्द्रसो बलवान ॥
धर्मके हम पाशबद्ध सु करत जिष्णु निरोध। नही यातें कष्टतें हम छूटि पावत बोध ॥ धर्मनृप जौं
कह तो ज्यौं मृगन्ह सिंह महान । धृतराष्ट्रके इन सुतन्हकों करमर्दि करत पिसान ॥ * ॥
बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीष्म द्रोण सु विदुर बोले क्षमा कीजै बैंन। तुम्हे हम सबभांति जानत
योग्य हौ बलबैंन ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ भीष्म क्षत्ता द्रोणहैं यहि सभामे धनमान। स्वामि
निन्दा करत जे सम शत्रुके बलवान॥ निधनहै जन तीनि जगमे पुत्र नारीदास। पितापति प्रभु लेइ
सिगरो वित्त जो इन पास ॥ द्यूत हारे भए पति तो दास क्षणाबाम। दासपत्नी रहति स्वामीके
वश अभिराम ॥ जायके नृप सदनमे तुम करऊ दासी कर्म्म। धृतराष्ट्रके सब पुत्रहैं पति रावरे
के पर्म्म॥ और पति कहुहोय जातैं भाव दासी मुक्त। निन्दि दासिनकौं नहै वज्र पतिन सो रति
युक्त। द्यूतमे सब हारि पांडव भए दास अखर्ब । भई दासी द्रौपदी तुम ए न तो पति सर्व॥ *॥
बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भरे भीम अमर्ष यह सुनि करे दारुण रूप। बधें धर्म्म सुपाससों इमि
कहन लागे भूप ॥ * ॥ भीमसेनउवाच॥ *॥ करत कोप न सूतसुत पर पाय हम पद दास ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आपु याहि न हारते इमि कहत को मो पास ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीमको सुनि सम्प
बचन बोले यौं सुयोधन भूप। धर्म्म भूपसों व्यलक बैठे धरें मौन स्वरूप॥ भीम अर्जुन मद्रजासुत
स्वबश है तो पर्म्म। प्रश्न कृष्णाको कहऊ जौं अजित जानऊ धर्म्म॥ यहि भांति कहि पट टारि
जङ्घा बामकौं हँसि हेरि। द्रौपदीसौं कहो योधन मोहमदसौं घेरि॥ सुंड सम दृढ बज्रसी बर
भरी लक्षण सर्व। लखऊ कृष्णा प्रीतिसौं यह उरू बाम अखर्ब॥ भीमसेन बिलोकि ऐसें कहन
लागे बैंन। सभाजनन्ह सुनाइ कै अति करैं राते नैंन। पितृलोक न लहों कृत यह करों जौ न
उदार। हनौ ऊरू युद्धमे करि गदाको सुप्रहार॥ भीमके तन ओततें कोपाग्नि किरण कराल।
जरत ज्यों तरु कोटरनतें कढति ज्वाल बिशाल॥ * ॥ बिदुरउवाच॥ * ॥ धृतराष्ट्रसुत अति
द्यूत किय पण भई कृष्णा बाम। देखि परत न क्षेम मंत्री जहां दुर्म्मति धाम॥ आपु हारे बिना कृष्ण
हिं करत जो पण भूप। जाति जीति नतरु है यह स्वपण सदृश अनूप॥ * ॥ दुर्योधनउवाच॥ * ॥
भीमादि पांण्डव धर्म्म नृपकों देहिं बोलि अनीश। दासित्वतें तब द्रौपदी छुटि जाय बिश्वेबीश॥
अर्जुनउवाच॥ * ॥ हमसबके ऐ ईश पहिलें द्यूतके हे भूप। हारि आपुन पौं गए नहि रहो ईश
स्वरूप॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ सुख भवन हो धृतराष्ट्रको तहँ आइ सघन शृगाल। लगे
बोलन रासभो बऊ करत शब्द कराल॥ शब्द सुनि गान्धारजा कृप भीष्म बिदुर सद्रोण। स्वस्ति
स्वस्ति सु कहन लागे जानि अतिभय भौंन। बिदुर अरु गान्धारजा धृतराष्ट्रके चलिपास कहो सो
उतपात सिगरो भरे अशेषय त्रास॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥ नष्ट भो दुर्योधना यह
महा दुर्मति ऐंन। द्रौपदी नृपधर्मपत्नीसौं कहत इमि बैंन॥ यहि भाँति कहि धृतराष्ट्र गुणि भय
भूरिकर उतपात। कहे कृष्णासौं बचन शुचि शांतिमय अवदात॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥
द्रौपदी बर मागि मोसौं जौंन बांछित तोहि। बधुनमे लखि श्रेष्ठ तोकौं होत आनंद मोहि॥
द्रौपद्युवाच॥ * ॥ देत जौं बर दीजिए तौ भूप मागति जौंन। धर्म नृपति अदास होहिं सुधर्मको
बर भौंन॥ दाससुत प्रतिबिन्ध मेरे पुत्रकौं अभिराम। कहै कोऊ जगतमे नहि महा निन्दित
नाम॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच॥ * ॥ होय कल्याणी सो तैसो कहति हो तुम जौंन। दूसरो बर
मागिए अब होय बांछित तौंन॥ चहत मो मन देनकौं बर तुह्यैं बऊ अभिराम॥ * ॥ द्रौपद्यु
बाच॥ * ॥ सरथ सधनु सु भीम अर्जुन माद्रिसुत बलधाम॥ दास फलतें मुक्त हौंहि सो देऊ
सुबर सुजान॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच॥ * द्रौपदी तुम कहति तौंन तथास्तु बर सुखदान। तीसरो
बर मांगि कृष्णा जौंन भावै तोहि। बऊनमे तुम श्रेयसी अति प्रीतिकारक मोहि॥ * ॥ द्रौपद्युबाच
लोभ नाशक धर्मको नहि मोहि भावत भूप। तीसरो बर मागिवो है नहीं मो अनुरूप॥ एक बर
है वैश्य इस्त्रीचेत्रजनकौं होय। तीनि बर है भूपकौं द्विजवर्ण बऊ बर होय॥ पापाब्धितें ए

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सप्त० भए हैं उत्तीर्ण मोपति पर्म । भद्रकौं बज्र लहैंगे करि पुण्यकारक कर्म ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥
सुनी है तिय आजुलौं जो भद्ररूप प्रधान । नही ऐसो कर्म काहूँ औरको सुखदान ॥ क्रोध
पाण्डव कौरवनको महा दारुणरूप । शान्त कीन्हौं द्रौपदी नृपद्रपा पाय अनूप ॥ दुःखाब्धिमे
ए रहे बूडत पाण्डुसुत सह धर्म । भई नौका द्रौपदी यह पारकारणि पर्म ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच
पाण्डवनकौं भई सुखी परम गतिक्रत हर्ष तौन सुनिकै भीम बोले पाय अमित अमर्ष । भीमउवाच
पुरुषकौं ए तीनि जोतिसु कार परम प्रकास । पुत्र औ सतकर्म विद्या सुनो देवलपास ॥ प्राण
गत अप्रविचतन हत होत सहित विकार । देत तीनो पुरुषकौं ए उर्ध सुगति उदार ॥ ज्योति सो
मम हतो इन करि भारयाको पर्ष । होइ गो शतपुत्र कैसें जिसु कारक हर्ष ॥ अर्जुनउवाच ॥
कहत है जे नीच जनगण परुष अप्रिय बैन । नही कबँहू कहत ताकौं साधुजन मति अैन ॥ सन्त
समुझत सुक्रतकौं सुखर्ण करत न बैर । विज्ञ जानत सदृश अपने जीवकौं तजि बैर ॥ भीमउवाच ॥
तात सतुर सँहारि शत्रुन इहाँ सो चलि बीर । बाहिरैं निर्मूल कीजै बचै एक न धीर ॥ इहाँ व्यर्थ
बिवाद कीवो करैं कर्म अखर्व । मारि कै सब शत्रु कीजै भूमिकौं बश सर्व ॥ भीम ऐसे बचन कहि
कै भद्रजासुत सङ्ग । लखत तिनकौं एनसे सम सिंह करि भ्रू भङ्ग ॥ क्रोधतैं सब ओततें तब
बाढन लागी ज्वाल । धरो देखि कराल कारक प्रलय कैसो काल ॥ बाज गहि कै करि निवारण
धर्मनृप मतिमान । गए अञ्जलि जोरि ढिग धृतराष्ट्रके सुखदान ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥
होय आज्ञा करै सो हम क्षमा कुरु नरनाह । चहत हैं हम रावरेकी रहो आज्ञा माँह ॥ धृतराष्ट्र
उवाच ॥ * ॥ होय तो कल्याण जाहि अरिष्ट सकल नशाय । राज्य अपनो सधन तुम अब कर
ऊ पालन जाय ॥ वृद्ध शासन मानि मेरो जानि पथ्य सुजान । धर्मगति तुम सूक्ष्म जानत धर्मनृप सुख
दान ॥ धर्म जँह तँह बुद्धि है जहँ बुद्धि तँह सन्तोष । परुष भाषत अधम नर सम्वादमे करि रोष ॥
आर्य्यजनकी तजत नहि मर्यादकौं जन सन्त । सतसङ्गसेवत आदकै तुम कियो सो क्षितिकन्त ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बचन सुयोधनको परुष हियमे धरऊ न धीर । अन्ध हमहि देख ऊ चितै गान्धारी दिशि बीर ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

क्षमा करिवो योग्य है नहि भूप यह कुरुवंश । शास शासन करत हौ तुम तात परम प्रशंश ॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥

जाहु खाण्डवप्रस्थकों अब धर्मनृपति ललाम । प्रीति भ्रातनसों रहो मन धर्ममे अभिराम ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

यो सुनिकै धृतराष्ट्रके बचन बोलि सत बैन । चले सु खांडवप्रस्थकों धर्मनृपति मति अैन ॥
चढे मेघसे रथनपै पंडुतनय बलवान । चले सु खांडवप्रस्थकों सह कृष्णा सुखदान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी सं० वासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि द्यूत वर्णनो नामैकादशो ध्यायः ॥ ❀

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

जनमेजयउवाच ॥ ❀ ॥ अन्ध नृपतिको आज्ञा पाय । चले युधिष्ठिर सधन सहाय ॥ सुनत सुयोधन जौंन चरित्र । कियो तौन कहिए मुनि मित्र ॥ बिदा कियो धृतराष्ट्र नरेश । सधन जात पांडव निजदेश ॥ यह सुधि पाय दुःशासन दुष्ट । गो दुर्योधन पास अपुष्ट ॥ दुखसों भरे कहे ए बैंन । सहित कर्ण सौबल कृत अैन ॥ ❀ ॥ दुःशासनउवाच ॥ ❀ ॥ दुखसों कियो सबश हम जौंन । बृद्ध कियो कृत नाशित तौंन ॥ गयो सहित धन शत्रु महान । तिन्हे महारथ जानु सुजान ॥ कर्ण शकुनि दुःशासन साथ । गए सुयोधन जँह कुरुनाथ ॥ आतुर कहन लगे मृद बोल । धरँ हृदयमहँ दुःख अतोल ॥ ❀ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ❀ ॥ तात नीति तुम सुनी न तौंन । कही शक्र सो सुरगुर जौंन ॥ शत्रु हनी करि बिबिधि उपाय । नतरु युद्ध करि सहित सहाय ॥ गहि अहिकौं करि कुपित कराल । शिर धरि नहि छोडी क्षितिपाल ॥ नानाशस्त्र धरे बरबीर । रथारूढ धरि कोप गँभीर ॥ तो कुलकौं करिहैं निःशेष । ए आसीविषसे सु विशेष ॥ अर्जुन धरे अक्षय तूणीरा जात धनुष टङ्कारत बीर ॥ भीम गदा उद्यम महान । जात सुनो हम हे मतिमान ॥ नकुल खड्ग धरि चर्म उदार । सहदेव धर्मनृप गुप्ताकार ॥ तेरथपर चढि आतुर जात । सैन जोरि करि है उतपात ॥ सहि हैं मो कृत नही विकार । समुझि द्रौपदी क्लेश उदार ॥ फेरि द्यूत बनबास निमित्त । कीबो हमै तात है हित्त ॥ यहि बिधि तिन्हे सबश करि भूप । द्वादशाब्द बनबास अनूप ॥ करँ तेकि हम निर्जित होय । बनमे बसैं दोयमह कोय ॥ बर्ष तेरहँ रहैं अज्ञात । बनमे बसँ भए फिर ज्ञात ॥ फेरि द्यूतकौं करिए भूप । यह हमकौं कृत परम अनूप ॥ सौबल जानत द्यूत अतूल । जीति होहिगे हम दृढ मूल ॥ सेना सङ्ग लेइ अतिरूप । बीतँ बर्ष चयोदश भूप ॥ तिन्हे जीति है रणमे मारि । करऊ मंत्र यहतात बिचारि ॥ ❀ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ ❀ ॥ बेगि प्राति कामी तुम जाय । फेरि पांडवन ल्याय बोलाय ॥ करै द्यूत पांडव फिरि आय । मेरे सुतन सङ्ग पण लाय ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ गौतम द्रौण बिदुर मतिमान । सोमदत्त बाल्हीक सुजान ॥ गुरुसुत भूरिश्रवा बिकर्ण । भीष्म सहित सब धर्माचर्ण ॥ बोले करऊ द्यूत मति भूप । कारक कुसल क्षामको रूप ॥ सुत प्रिय सुनो न भूपति अन्ध । कियो बोलाय द्यूतको धन्ध ॥ ❀ ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ ❀ ॥ गान्धारी तब नृपपँह आय । कहे धर्मयुत बचन बनाय ॥ जन्मत दुर्योधनके छत्त । अैसँ कहे बचन दुखमत्त ॥ यह सुत तजऊ छोडि अतित्रास । यह कारक कुरुकुलको नाश ॥ जनमत शब्द कियो सम श्यार । भो यह नाशक बंश कुमार ॥ अपने दोष सलिलमे भूप । तुम्हे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब॰प॰ बूझिबो नहीं अनूप ॥ बाल अशिष्टनको मत मानि । नाशक बंश होऊ मति जानि ॥ बाँधो सेतु न देऊ गिराय। कुपित पांडवन्ह कुरु न बोलाय ॥ शस्त्र देत नहि काहूदंड । होत बालमति दुष्ट न चंड॥ कुलनाशक तजि दीजै याहि । यह कृत करि करुकुलकों पाहि॥गान्धारी कहि नीति अनूप। सो धृतराष्ट्र न मानो भूप ॥ प्राप्त नाश नहि कुलको जौंन । हम नहि टारि सकत है तौंन ॥ जो तुम कहति होय सब तौंन।पांडव करै इहाँ फिरि गौंन ॥ पांडव और हमारे पूत। खेलै फेरि यथा बिधि द्यूत ॥ पांडव पास सूत सुत जाय । दिए भूपके बचन सुनाय ॥ बैठी सभा सकल नृप धर्म्म । तेहाँ धरे अक्ष अति पर्म॥ तुम्हे बोलायो तुम्हरे तात।द्यूत खेलिबेकौं सह भ्रात॥सुने प्राति कामीके बैन।बोले नृपति धर्म्म मति अैन॥युधिष्ठिर उवाच ॥बिधि बश लहत सुखा सुख सर्व । तास न खबश निष्टत्ति अखर्व ॥ जानत क्षयकर द्यूत महान । है उल्लंघ्य न बृद्धाह्वान ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ अद्भुत हेम हारिण अभिराम । विधि बश लुब्ध भए श्रीराम ॥ नीरे होति बिपति जब भूप । व्है बिपरीति जात मतिरूप ॥ यह कहि भ्रातन्ह सह नृपधर्म्म । फिरि आए गुणि सौबल कर्म्म ॥ गए सभामह पांडव भूप । करत दुखितहित चेत सरूप ॥ * ॥ शकुनि रुवाच ॥ * ॥ छोडि बृद्ध धन दीन्हो जौंन । कहत एक पण धरिए तौंन ॥ द्यूत हारि हम कै तुम भूप । बनमे बसैं धारि मुनि रूप ॥ बारह बर्ष तेरहे जाय । काहू पुरमे रहै छपाय ॥ हौंहिं प्रगट तौ तेरह बर्ष । अैसैं बिपिनि बसैं तजि हर्ष॥ जो जीतै सो दोनो राज । करैं भोग सम्पति ससम्राज ॥ बर्ष चयोदश यह ब्रत जौंन । पार यथा बिधि करि कै तौंन ॥ लेय आपनो फिरि सो राज । करो भोग सुख सहित समाज ॥ अैसो करि व्यवसाय बिवेक । खेलऊ द्यूत राखि पण एक ॥ यह बिचारि कै धर्म्म नरेश। राखऊ पण बन राज्य निसेश ॥ यह शुनि रहे सभासद जौंन । कर उठाय सब बोले तौंन ॥ ॥ * ॥ सभ्याऊचुः ॥ * ॥ इन बान्धव जनकौं धिकार। कहत न जे भय जानि उदार॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुने धर्म्म नृप जनधन बैन । लाज धर्म्मबश व्है मति अैन ॥ फेरि द्यूत चाहो मति राश । जानि कुरुणको निकट बिनाश ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ पालक धर्म्म सु हमसो भूप । द्यूताह्वत आइ अनुरूप ॥ नहि निवृत्त ह्वहैं तो सङ्ग । शकुनी करहि गे द्यूत प्रसङ्ग ॥ राज्य एकदिशि सह धन राश । एक औरपण धरि बनबाश ॥ राज्य करै पण जीतै जौंन । हारै जाय बिपिनि कँह तौंन॥ करो धर्म्म नृपसो स्वीकार । फँको अक्ष शकुनि छल सार ॥ हौं जीतो यह बोल्यो बैन । सौबल महापापको अैन ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ हारि पार्थ बनबास बिचारि । सबहिन लियो मृगाजिन धारि ॥ धरैं तिन्है अजिनाम्बर देखि । चल्यो चहत बनको अवरेखि ॥ दुःशासन इमि बोल्यो बक्र । भयो प्रबृत्त सुयोधन चक्र ॥ पाण्डव बिपतिनर्कको पाय । बज्रत कालकों गिरे अबाय ॥ धनतें मत्त न मानो त्रास । कियो सुयोधन नृपको हास ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ च०प०

तब पाण्डव बनकों चले हारि राज्य धन धाम। तजे शस्त्र भूषण वसन धरे अजिन अभिराम ॥
हम सम पुरुष न जगतमे रहे जे करत विचार। ते अब देखैं आपुकों ज्यों तिल षंड असार ॥
बुद्धिमान ह्वै द्रुपदनृप कियो कहा यह कर्म्म। क्लीव पांडवनकों दई कृष्णा कन्या पर्म्म ॥
अजिन बास धनपास नहि हतश्री राज्य निहारि। सुख न लहैगी द्रौपदी पति कुरु अन्य विचारि ॥
ए कुरुवंशी गुण भरे महाबली धनवान। इनमे कोऊ एकपति कृष्णा बरऊ समान ॥
यथा चम्मको रचित मृग तथा पंडुसुत सर्ब। इन पतितन्हसेएँ कहा व्यर्थ षण्ड पति खर्ब ॥
कहे दुश्शसन क्रूर मति परुष महा इमि बैन। सुनत भीम अतिक्रोध करि कहन लगे यों बैन ॥

॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥

क्रूर पाप जनसौं कहत ऐसे बचन अनर्थ। सौबलकी विद्या लहें बोलत भयो समर्थ।
यथा वाक्यरतें व्यथित करत अरे शठ मोहि। तथा मारि कै समरमे समुझावौ गों तोहि ॥
जे अनुगामी तो सकल सम्बन्धीजन जौन। तिन्है मारि देहौं पठै समरमध्य यमभौन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

भरा क्रोध ऐसे कहत भीमाजिन धरिबास। दुःशासन उठि कै लगो नाचन ताके पास ॥
धर्म्म बद्ध लखि पांडवन्हमधि नृप सभासमाज। गज गज लागो कहन दुःशासन तजि लाज ॥

॥ * ॥ भीम उवाच ॥ * ॥

अरे क्रूरकर्म्मा परुष कहिबो तोहि समर्थ। छल बलते धन पायकै ऐसे बकत अनर्थ ॥
तौन बृकोदर सुकृतको पावै लोक महान। फारि हृदय तो समरमे करै न शोनित पान ॥
महारथिनके लखत हनि अन्धनृपतिसुत सर्ब। समर मध्य तब लहै गो मो मन शान्ति अखर्ब ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

चलत बनकौं भीमकी गति सदृश खगति बनाय। चलन लागे नृप सुयोधन हँसतसे मुख छाय ॥ फेरि आधो काय लखि सो भीम क्रोधारूढ। कहो सह परिवार हनि समुझाइ हौं तोहि मूढ ॥ देखि कै अपमान यह धरि क्रोधकौं अतिमान ॥ जात अनु नृपधर्मके इमि कहो भीम सुजान ॥ भीमउवाच ॥ * ॥ हम सुयोधनहा सु अर्जुन कर्णहा वर वीर। शकुनिहा सहदेव रणमे होहि गे धरि धीर ॥ कहत हैं हम सभामे फिरि टेरि बचन महान। करै सो विधि सत्य हमसो भए रण अतिमान ॥ गदा सौं हनि कै सुयोधन पापकौं शिर जौन। चरण तलसौं दाबि कहि ह बृहद्बाणी तौन ॥ बाक्यसूर दुःशासनाको फारि उरस महान। समर मे मृगराजसे हम रुधिर करि है पान ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ रहे गो सो लखे गो यहि बचनको व्यवसाय।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० भीम तेरह वर्ष बीत समय संयुग पाय ॥ भीमसेनउवाच ॥ कर्ण दुःशासन सुयोधन शकुनि शोणित जौन । चौदहँ वर्षान्त मे भू पान करिहै तौन ॥ * ॥ अर्जुनउवाच * ॥ भीमसेन नियोगते तव समर सोह पाय । हनो गे हा कर्णकौं जो महादुष्ट स्वभाय ॥ कर्णके जे सङ्ग लरि है और भूप महान । तिन्है यमपुर देहिगे पऊचाय मेरे बान ॥ प्रभा छोडैं सूर शशि गिरि चलै जौ हिमवान । तौ प्रतिज्ञा होय मेरो व्यर्थ सुनऊ सुजान ॥ चौदहँ जौ बर्ष देहै नहि सुयोधन राज । होय गो सो सत्य जो हम कहत मध्य समाज ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ पार्थ अैसें कह्यो तब सहदेव करि अतिक्रोध । कहन लागे शकुनिके बध करणको करि बोध ॥ * ॥ सहदेवउवाच ॥ * गांधारकुल यश हरण यह नहि मानु अज्ञ अयान । प्राणहर्त्ता समरमे ए है निमंचित बान ॥ तुम्है करि उद्देश मातुल भीम बोले जौंन । सह बन्धु तुमकौं समरमे हम मारिहै बलभौंन ॥ नकुलउवाच ॥ * ॥ दुखित कृष्णहि कियो जिन धृतराष्ट्रसुतन्ह महान । मारि रणमे देहि गे फल तिन्है तास समान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ करि प्रतिज्ञाबन्त यौं नरव्याघ्र पांडव बीर । गए छूवँ बिदा तब धृतराष्ट्रपहँ रणधीर ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ सोमदत्त सभीष्म कृप बाल्हीकसों मतिमान । बिदुर द्रोण सपुत्रसों नृप और जौंन सुजान ॥ बिदा हम धृतराष्ट्रसों अब होत आनद पाय । देऊ आज्ञा कृपा करि तुम मिलहि गे फिरि आय ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ नहीं काहूँ दियो उत्तर लाजवश नत नैन । मानसिक कल्याण तिनको भे मनावत अैन ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ राजकन्या प्रथा दृढ्ढा अबल दुर्बल रूप । योग्य नहि बनवासके है सुनऊ कुरुकुल भूप ॥ बसै गी मम धाममे सो यत्नसौं अभिराम । जाऊ तुम कछु दोसम तो सुफल छूहै काम ॥ * ॥ पाण्डवाऊचुः ॥ * ॥ तथास्तु कहि फिरि कहे तिन भरि प्रीति बचन अखर्ब । पितव्य हौ तुम पितासम हम तुम्है जानत सर्व ॥ परम गुरु तुम कहौ हमकौं करैं गे हम तौन । सकल जानत आपु हौ करतव्य हमकौं जौंन ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ होत व्यथित न विपतिमे ते सुनऊ भूपति धर्म । जिन्है जीतत शत्रु कोऊ करि कुनीति अधर्म ॥ धर्मज्ञ तुम हैं युद्धजेता जिष्णु, अरिहा भीम । नकुल अर्जक बित्तको सहदेव अति मति सीम ॥ धर्म चारिणि द्रौपदी सुंग धौम्यमुनि तपधाम । होयगो कछु दोसमे कल्याण तो अभिराम ॥ यहि भाँतिसौं कहि विदुर मनमे भरे भूरि विषाद । धर्मनृपको दिए नाना भाँति आशीर्वाद ॥ ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धर्म नृपति तथास्तु बोले बिदुरके सुनि बैंन । भीष्म द्रोण हि बन्दि बनकौं चले अतिबल अैंन ॥ बिदा छूवँ द्रौपदी तब गई कुन्ती पास । बचन बोली चलनके बन भरे जे दुख रास ॥ बन्दि मिलि कै सबिधि कृष्णा चली जब बन ओर । भयो पाण्डव भौंनमे अति भोर करुणा सोर ॥ जात देखत द्रौपदीकौं भरी ताप अचैन । शोक विव्हल कहन कुन्ती लगी अैसे बैन ॥ नही तोकौं शोक करिबो व्यसनकौं यहि पाय । धर्म जानि सुशील बनितनको परम सुखदाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

किए भूषित दोऊकुल तुम साधुतासों पर्म। भाग्यते नहि जरे कुरुजिन कहे बचन अधर्म॥ विघ्न स०प०
रहित सु जाऊ पथमे भरो पतिव्रत प्रीति। विपतिमे कुलवधुनको नहि होत मन विपरीति॥ धर्म
रक्षित मनुज श्री सब लहत बिनऊ प्रयत्न। सहदेव मो प्रिय पुत्रको सबभांति कीजो यत्न॥ तथास्तु
कहि कै चली कृष्णा बिदा होय अचैन। एक बसना रजस्वला दुखबारि बरषत नैन॥ प्रथा रोवत
देखि ताके चली अनु दुख पाय। जाय कै तहँ लखे सिगरे सुतनकौं सुखदाय॥ लाज भारे अधोमुख
कृष्णचर्म्म धारे सर्ब। खुसी देखत शत्रु तिनको दुखित सुत हि अखर्ब॥ देखि अैसें सुतनकौं भरि
प्रथा मनसन्ताप। करि अखिद्गित भांति नाना लगी करण विलाप॥ * ॥ कुन्त्युवाच॥ * ॥
धर्म्म दृत्त चरित्र भूषित देवरति मति जौंन। दुःख ते जन लहत हैं यह विधि विपर्जय कौंन॥
कौनको यह शाप लागो जानि परत न मोहि। दोष मेरे भाग्यकौं सुत जान जननी तोहि॥ भरे
सद्गुण पुरुष ते नहि दुःख भोगी होत। हाय कैसें बसैं गे बनदुर्गमे मम पोत॥ जानती हम पुत्र
तुमको नित्य जौं बनबास। पण्डु पीछें आवती नहि हस्तिना पुर पास॥ पितु हो तुम्हारा धन्य
ताको भयो पूर्ब हि मर्ण। नहि देख तो यह जो तुम्हारो समय बऊदुख कर्ण॥ धन्य माद्री गई जो
पतिसङ्ग पतिव्रतलोक। भयो जीवन जगत मे यह हमै दायक शोक॥ भूलि गो कर्माङ्क लिखत
न परो बिधिकौं जोहि। अन्त मेरो नहीं यातें मृत्यु पावति मोहि॥ कृष्ण बासी द्वारिकाके महा
मोद निकेत। करऊ रक्षित मोहि करुणासिन्धु सुतन्ह समेत॥ आदि अन्त विहीन तुमकौं भजत
है नर जौंन। तिन्है रक्षत बिरद व्यर्थ न तुम्हैं कोवे तौंन॥ धर्मशील सु पुत्र मेरे बिपति जोग्य अहै न।
दीनबन्धु सु करै इनपै कृपा करुणा अैंन॥ नीतिवेत्ता भीष्म गौतम द्रोण जँह बर बीर। तहाँ
बिपति अनीति सम्भव लहै कौन गँभीर॥ यहिभाँति बिलपति प्रथाके बर बन्दि पांडव पाय। चले
बनकौं बिदुर कुन्तिहि गए दुखित लेवाय॥ कौरवनकी तियन सुनि सब द्रौपदी अपमान। लगीं
रोदन करण अपने पतिन्ह निन्दि महान॥ अनय पुत्रन्हको सकल धृतराष्ट्र नृप निरधारि॥ उद
बिग्न मन व्है धरत हैं नहि शांतिकौं सुबिचारि॥ बिदुरकौं बोलवाय मागो अन्ध कौरव भूप॥
लगे बूझन पांडवनके गमनको अनुरूप॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ गए कैसें सकल पांडव द्रौपदी
सुनि धौम्य। कहऊ सहित विधान हमसों हे बिदुर मति सौम्य॥ * ॥ बिदुरउवाच॥ * ॥ धर्म
नृप मुख मूँदि पटसों बाऊ निरखत भीम। जिष्णु शिकता गए छींटत भूप अनुबल सीम॥ लीपि मुख
प मृत्तिका सहदेव अति मतिमान। पांशु सिगरे अङ्गमाह लगाय नकुल सुजान॥ केशसों मुख
मूँदि कृष्णा भरैं लोचन बारि। साम पढत सो धौम्यमुनि यम देवता निरधारि॥ दर्भ लीन्हे हाथ
मे नृप साथ तप बर जात। करैं लोचन अरुण अतिशय चहत सो उतपात॥ धृतराष्ट्रउवाच॥
गए पांडव बिबिधि कीन्हे रूप याकोहेत। तौन हमसों कहऊ बिधिवत बिदुर समुझि सचेत॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० विदुरउवाच ॥ * ॥ तनय तुम्हरे राज्य धन सब लियो छलसो जीति । तजत तबहूँ धर्मनृप नहि धर्मपथसो प्रीति ॥ दया करि तव सुतनपैं किय धर्म नृपमुखरोध । जानि व्है ह भक्ष मेरी पर दृष्टि सक्रोध ॥ नही मेरे बाऊबलसम औरको बलभूप भीमसेन सु जात यातें लखत स्वभुज स्वरूप ॥ सङ्ग शत्रुनके चहत छत कियो बाऊ समान । बाऊ देखत जात याते भीम अति बलवान ॥ पर्व छीटत जात झिकता क्रोधसों बरबीर । बाण बर्षण चहत रणमे तथा तौन गँभीर ॥ नही कोऊ हमै चीन्है चित्तमे निरधारि । जातहै मुखखिन्न करि सहदेव सुमति बिचारि ॥ नकुल पांसु लगाय तनमे जात है छविधाम । नही मोहित होय तरुणी देखि कोउ अभिराम ॥ एकबस्त्रा रुदति कृष्णा जाति महत अचैन । रजस्वला रजरक्तबसना कहति ऐसे बैन ॥ किए जिनकैं भयो हमकौं प्राप्त यह दुखमाम । होंहि बर्ष चतुर्दशे हतनाथ तिनकी बाम ॥ भरी रजके रक्तसों करि पति नका जलदान । जाहि हास्तिन नगरकों ते भरीशोक महान ॥ किए नैऋत दर्भ पढत छतान्त दैवत बेद । जात तपनिधि धैर्य्य आगैं भरो जो अति खेद ॥ मरे कुरुकुल बेद ऐसैं पढो चाहत तान । क्रोधसों भरि देखियैसे करत पांडव गौन ॥ धिक्कारहै कुरु गुरुणकौं जे वृद्ध शिशुमतिउद्ध । देश बाहेर पंडसुत जिन किए छलकरि उद्ध ॥ प्रीति नीति न कौरवनमे दुर्बिनीत अखर्ब । भरे दुखसा कहतहैं पुर प्रजा ऐसैं सर्ब ॥ कढत तिनके गिरी बिद्युत दाहिने पुरपास । रहो पर्व न राऊ रविकों आय कीन्हो ग्रास ॥ भयो उल्कापात हास्तिन नगर दहिनी ओर । लगे बोलन मद्ध अरु गोमायु बायस घोर ॥ भए नानाभाँतिके उतपात अमित स्वतंत्र । भरत कुलको नाशहूबे पाय तोदुर्मंत्र ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ ** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ **

कहत रहे धृतराष्ट्रसों जहाँ बिदुर रसभङ्ग । नारदमुनि आए तहाँ लएँ महर्षिन्ह सङ्ग ॥
कहे कौरवी सभामे बचन महा मुनि क्रुद्ध । बर्ष चौदहे आजुतैं घोर होयगो युद्ध ॥
दुर्योधनको दोष छत कारण पाय महान । भीमार्जुन कुरुवंशको करिहैं नाश समान ॥
ऐसैं कहिकै महा मुनि व्है गए अन्तरध्यान । धारे ब्राह्मी सिद्धिकों बैठे बिमल बिमान ॥

॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ * ॥

तब दुःशासन शकुनि सह कर्ण सु योधन भूप । द्रोणहि जानि शरण्य चलि सौंप्यो राज अनूप ॥
द्रोण सुयोधन भूपसों कहन लगे इमि बैन । कर्ण दुशासन शकुनि सह देखि सभीति अचैन ॥
बध्य न पांडवकों कहत देव तनय बलधाम । है त्रिकाल बेत्ता जठर जे द्विजबर मतिमाम ॥
शरण गतको करत रक्षण यथाबल अनुमान । तथा सुत धृतराष्ट्रके नहि त्याज्यहै सुखदान ॥
पाण्डु तनय बश कर्म्मके हारि गए बन भूप । द्वादशाब्द बशि बिपिनिमे करि ब्रत नियम अनूप ॥
दुःख समुझि सब आपनो तो छत दोष महान । बैर लेहिंगे ऐसि ते महाबीर बलवान ॥
सख्य भेदत द्रुपदको हम लिय राज्य बढाय । पुत्रहेतु तेहि मख कियो सो बध करण उपाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तपत जाज उपजाजके पुत्र लहो तेहि भूप । धृष्टद्युम्न अरु द्रौपदी कन्या अग्निस्वरूप ॥ स०प०
अग्नि कुण्डतें भयो सो धरे धनुष असि वर्म । ताते हमकों होय गो मरणरूप भयकर्म ॥
द्रुपद पक्ष नृपधर्मके सुतन सहित रणधीर । भीमार्जुन जाके अनुज अतिबल अतिरथ बीर ॥
भए युद्ध तिनसों नियत मरण हमारो भूप । धृष्टद्युम्नकों कहत सब द्रोणमृत्युको रूप ॥
नियत प्राप्त सो काल भो तो कृतते कुरुनाह लही जो श्री यह कर्म्म करि तौन तालतरुछाह ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

करऊ यज्ञ वर भोग बिधान । वर्षचौदहँ युद्ध महान ॥ हूहै सुनऊ भूप मतिराम । सब वंशको जामे नाश ॥ सुनि धृतराष्ट्र द्रोणके बैन । कहो बिदुरसों भरो अचैन ॥ फेरि पांडवन ल्यावऊ कृत्त । होहि कदाचित ते न निवृत्त ॥ तौ ते जाहिँ सहित सतकार । रथन्ह चढे सहअस्त्र उदार ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि पांडव वनगमनवर्णनोनाम द्वादशोऽध्यायः ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ छन्द ॥ ॥

हारि द्यूतमे पाण्डव भूप । जब बन गए धारि मुनिरूप ॥ तब चिन्तावश भए नरेश । लेत श्वास भरि भूरि अदेश ॥ देखि व्यसन भूप महान । बोले सञ्जय नीति समान ॥ सञ्जयउवाच ॥ भू वसु मती पाय कै भूप । पठै पांडवन्ह बन मुनि रूप ॥ तुम अब शोच करत केहिकाम । लहि श्री करऊ भाग अभिराम ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ सञ्जय करि पार्थन्हसों बैर । बढो न काहि शोचको मैर ॥ सञ्जयउवाच ॥ * ॥ तो कृत बैर भयो यह भूप । लोकनाश भवितव्य अनूप ॥ भीषम द्रोण बिदुरको बैन । तो सुत नहि मानो सुखऐन ॥ सूत प्रातिकामिहि पठवाय । किय अनीति द्रौपदि हि बोलाय ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ जाकौं दैव पराभव देत । ताकी बुद्धि प्रथम हरि लेत ॥ भएँ विपर्यय बुद्धि सुजान । लखत अनय नर नीति समान ॥ लखत अनर्थ अर्थ सम तौन । अनरथ गणत अर्थ है जौन ॥ खैचत कृष्णा हि सभामझार । सम्भावित रण भयो उदार ॥ श्री सम रूप अयो निज्ञा जौन । अग्निकुण्डतें प्रगटी तौन ॥ज्योति समान सभामह चाहि । बिना कितव को खैंचत ताहि ॥ सो रजस्वला शोणितयुक्ता । एकवसन कच बन्धन मुक्ता ॥कृष्णा लखत पांडवन ओर । हारे जौन द्यूतमहँ घोर ॥ सुने सक्रोध सभाके ऐन । सो पुत्रनके अनुचित बैन ॥ जासु चक्षु क्रोधानल सर्व । भस्म करै यह भूमि अखर्ब ॥ सोसुत भस्माशेष समान । सञ्जय जानिपरत सविधान ॥ सभामध्य कृष्णाको गौन । सुनत शोक पूरो सो भौन ॥ गान्धारी सह कुरुकुल बाम । रोदन करण लगी अतिमाम ॥ अग्निहोत्र नहि सायङ्काल । कीन्हो विप्रन्ह कुपित विशाल ॥ प्रलय दुन्दभी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० बाजी घोर। बायु प्रचण्ड वहो अति जोर ॥ ॥ दिनमह उल्का परे अखर्ब। ग्रसो राहु रबिकों बिनु पर्ब ॥ रथशालामहँ अनल प्रचण्ड। लगो गिरे ध्वजखंडित दण्ड ॥ दुर्योधनके हवनागार। शिवा सोर भो प्रगट उदार ॥ करण लगे रासभ अतिसोर। सो उतपात समुझि अतिघोर ॥ भीष्म द्रोण बाल्हीक सु भूप। सोमदत्त कृत चिन्तित रूप॥ बिदुरसहित तिन कहे अचैन। हो सुनि ताश मानि हितबैन ॥ कहो द्रौपदीसों हम जौन। इच्छित होय मागु बर तौन॥ बर कृष्णा मागे मो पास। हौंहिँ पांडुसुत सकल अदास॥ सरथ सशस्त्र जाहिँ निजधाम। और न भूप हमे मन काम॥ तब इमि कहो बिदुर मतिमन्त। इहलौं रहो भरत कुल अन्त॥ श्री समान कृष्णा छबि पीन। लही पांडवन दैबाधीन॥ तास क्लेश पांडव बलवान। सहि हैं नही अमर्ष अमान॥ वृष्णि बशके जे बरबीर। अरु पाञ्चाल महा रणधीर॥ तिन सह सत्य प्रतिज्ञा बीर। बासुदेव तें रक्षित धीर॥ जिष्णु आइ करि हैं संहार। सहित भीम पाञ्चाल उदार॥ सुनि गांडीव धनुष टङ्कार। गदा भ्रमण स्वन सबल अपार॥ को रणमे सहि है सुनि भूप। हमै साम रुचि नहि रणरूप॥ कौरव बैं पांडव बलवान। जरासन्ध जिन हनो महान॥ तातें करिबो साम सुनीति। कहे बिदुर दुहुँ कुलकर प्रीति॥ ****॥*॥ दोहा॥*॥ *******

साम करे ते होयगो नितिप्रति श्रेय महान। हम सञ्जय मानो न यह बिदुरबचन सुखदान॥
पुत्रछोहके मोहबश भयो भ्रष्ट मो ज्ञान। बिदुर बचन मानो न मै हे सञ्जय मतिमान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्बसमाप्तिर्नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥ ****॥*॥ दोहा॥*॥ *******

बिधुबिधु मुनिदृग पद्य यहि पबमाँह अभिराम। प्रथम सभा रचणा पुनः सभा प्रवेश ललाम॥
नारद मुनिको आगमन कुशल प्रश्न सह नीति। देबसभा बरणन कियो सहित महामुनि प्रीति॥
राजसूयको मंत्र फिरि जरासन्ध उतपत्ति। जरासन्ध बध नृपनका मोक्षण प्रिय करि अत्ति॥
सकल दिशनको बिजय कहि राजसूय अभिराम। राजनको आगमन कहि फिरि धनदान ललाम।

॥*॥ जयकरीछन्द॥*॥

फेरि कृष्णको पूजन जौन। फिरि शिशुपाल क्रोध किय तौन॥ गो शिशुपाल भूप सुरभौन। यज्ञ समाप्ति कृष्णको गौन॥ खांडवप्रस्थ सुयोधन बास। सभा लखत फिरि ताको हास॥ सुयोधन शोच अन्धनृप मंत्र। फिरि पांडव आवाहन तंत्र॥ सरबस्व द्यूतमे हारे धर्म। कृष्णाकर्षण रूप कुकर्म॥ दियो द्रौपदी हि नृप बरदान। फिरि अनुद्यूत भयो अतिमान। बनप्रस्थान कियो नृपधर्म॥ इतिक प्रसङ्ग पर्बमे पर्म॥ *॥*॥ शुभमस्तु शकाब्दा १७५१ भाद्रस्य २२ सम्बत् १८८६ *॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स्वस्ति श्रीयुतमहाराजाधिराजकाशीराज

श्रीउदितनारायणस्याज्ञया

श्रीगोकुलनाथकविना

संग्रहीतभाषामहाभारतदर्पणस्य

वनपर्व

कलिकातामहानगरेशास्त्रप्रकाशमुद्रायन्त्रे

श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितेन

शोधितं मुद्रितञ्च

शकाब्दाः १७५१ सम्वत् १८८६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ * ॥

॥ * ॥ महाभारतदर्पणः ॥ * ॥

॥ * ॥ वनपर्व ॥ * ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अरचि चरण सुकुमार चिन्तामणिगणनाथके । भवसागरको पार सुलभ जानि जनकों परै ॥
वन्दि चरण अभिराम चिन्तामणिगणनाथके । पाई सुमति ललाम भारतदर्पण रचन को ॥
जास गोद गणनाथ ध्यान धरऊँ ता अम्बको । वितरत चारिऊँ हाथ चारु चारिफल चाहत ॥
करपर धरि गिरिराज बसे राधिकाके हिएँ । पालत सन्तसमाज गोकुलको गोपाल भजु ॥
त्रिभुवनपति नन्दनन्द जास ध्यान धारैं रहत । सो राधा हर दन्द जास ननद विंध्याचली ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ ॥

धर्म धुरन्धर वीरवर मम प्रपितामह सर्व । हारि द्यूत लहि कौरवन सों अपमान अखर्व ॥
कियो कौंन छत सो कहऊ हे मुनि महत सुजान । वैशम्पायन सु बसि वन पांडव शक्र समान ॥
अनु तिनके वनकों गए कौंन सुहृद मतिमान । कहां बसे भोजन कहा कीन्हों प्राप्ति समान ॥
कृष्णा सह कैसें भये द्वादशवर्ष व्यतीति । पाय महत वनबासको दुःख सहो केहि रीति ॥
कहऊ तौंन विस्तर सहित सुनो चहत हम तौंन । कियो पाण्डवन विपिनि बसि वैशम्पायन जौंन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

द्यूत हारि धृतराष्ट्र सुतसों लहि कै अपमान । हास्तिनपुरसों क्रोध करि चले महाबलधाम ॥
वर्द्धमानपुरद्वारसों निकसि सकृष्णा धीर । चल्ल सु उत्तरदिशाको धरें शस्त्र बरबीर ॥
इन्द्रसेन आदिक तहां पन्द्रह भृत्य सुजान । रथ लीन्हें गयभय सकल आए अतिजवमान ॥
गए पाण्डवन्ह जानि कै पुरजन पूरे शोक । लगे कौरवनकों कहन बचन जे निन्दित लोक ॥
भीष्म द्रोण कृप विदुरकी मति अनुमानि अनीति । लगे वचन निन्दित कहँन चारोवर्ण अभीति ॥

॥ * ॥ पौराऊचुः ॥ * ॥

कर्ण दुःशासन सकुनि नृप दुर्य्योधन खल सर्व । राज्य करण चाहत सकल पूरे पाप अखर्व ॥
यह कुरुवंश नशायगो सहित प्रजा पुरदेश । कौंन मोद पावत तहां पापी जहां नरेश ॥
सुहृद्द्वेषी धृतराष्ट्रसुत पापाचार सहाय । अभिमानी निर्दय महालोभी नीच स्वभाय ॥
सिगरो भूमि न है इहाँ जँह दुर्य्योधन भूप । तहां वसैं चलि जात जँह पाण्डव धर्म स्वरूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० यह कहि पुरजन मिलि गए जँह पांडव सुखदान। कहन लगे कर जारि यौं सहित सनेह सुजान ॥
हम दुखभानिन्ह छोडि के जात कहां बरबीर। हमहू सब चलि है तहां जात जहाँ तुम धीर ॥

॥ * ॥ जयकराछन्द ॥ * ॥

छल करि जीतो तुम्हैं अनेत। दुष्टन्ह सुनि व्याकुल है चेत ॥ त्याग हमारो करऊ न भूप। जानि भक्त अनुरक्त स्वरूप ॥ दुष्ट भूपके बसि कै राज। हम विनशहि गे सहित समाज॥ गुण अरु दोष सङ्ग फल जौंन। सुनऊँ भूप हम कहियत तौंन ॥ बर सुगन्ध दुर्गन्ध हि पाय। ह्वै सुगन्ध दुर्गन्ध सो जाय ॥ बढत मोह मूर्खनके सङ्ग। साधु सङ्गतें सुमति तरङ्ग ॥ सुमति सङ्ग करिबो अभिराम। बसिए नहीं कुमतिके ग्राम ॥ धर्मवानसँग बाढत धर्म। पापिनके सँग बढत कुकर्म ॥ दरश परश पापिनको पाय। बाढै पाप पुण्य घटि जाय ॥ करत सङ्ग पापिनको जौंन। सिद्धि समृद्धि न पावत तौंन॥ नीच कुकर्मिनके बसि पास। लहति सुमति जनकी मतिनाश ॥ करैं सुमति श्रेष्ठनको सङ्ग। बढहि सिद्धि बुधि लहति उमङ्ग ॥ सुमति साधु वृद्धनको साथ। किए समृद्धि लहत क्षितिनाथ ॥ विद्या वंश कर्म अवदात। जाको ताहि सेइऐ तात ॥ मिले भिन्न सब सुगुण ललाम। तुमहीमे लहिए अभिराम ॥ बसो चहत गुणभूषण पास। लहिवेकों श्री सुखद निवास ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ हम हैं धन्य जगतमे सर्व। जास प्रजा करि प्रीति अखर्व ॥ निर्गुण हम हि भाषत गुणवान। जे द्विजादि वर वर्ण सुजान ॥ तातें हौं भ्रातन सह बैंन। तुमसों कहत जानि हित चैंन ॥ सो न अन्यथा करिबे योग। तुम्है स्नेह वश जानि वियोग॥ भीष्म विदुर कन्ती धृति वृद्ध। पालनीय ते तुम्है समृद्ध ॥ तुम सब तिन्हैं शोकवश जानि। पालनकीजो हित अनुमानि॥ होऊ निवृत्त मानि सो बैंन। शपथ हमारि तुम्हैं मतिऐंन ॥ सुजन हमारे व्यास समान। स्नेह सहित पालेऊ सुखदान ॥ कारज एतनो परम हमार। कीजो सो मेरो सतकार ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धर्मराज ए बैंन सुनाय। तिन्हैं निवृत्त किये समुझाय ॥ तेरो ए करुणा रत घोर। हाहाकार भयो अति सोर ॥ प्राण्डवगुण वरणत अभिराम। ते सब गए आपने धाम ॥ गए पौरजन जानि गँभीर। महाधनुर्धर पांडव वीर ॥ रथ चढि गए जान्हवी तीर। जहँ वट रहो प्रमाण गँभीर ॥ सलिल पान करि कै तेहि रैंन। भरे दुःखसों कीन्हों अैन ॥ भरे स्नेहसों दुःखित छिप्र। सामि अनमि गए तहँ विप्र ॥ तिन सह शोभित भयो नरेश। ज्यौं नक्षत्रगण मध्य निशेश ॥ अग्निहोत्र कीन्हे तपधाम। पढत वेदधुनि धारि ललाम॥ मधुर बचन कहि वेदविधान। किय नृप आखाशन मतिमान ॥ कहत पुराण कथा इतिहास। बीति गई निशि भयो प्रकाश ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशी वासिरघुनाथकविश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि पौरप्रत्यागमन वनप्रस्थानवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ द०प०

लहि प्रभात वेला परम नित्यकर्म करि विप्र । चलिवेकों नृपधर्मके भए अग्र सब क्षिप्र ॥
धर्मनृपति तब द्विजनसों कहन लगे यहि भाँति । क्षुत सरबस रही नही हमसो नेक बिसाँति ॥
हम मृगपल फल मूल दल करि हैं नित्य अहार । सङ्ग हमारे होय गो तुमको कष्ट उदार ॥
भए क्लेश द्विजवरणको लहत देवता क्लेश । हमै सह्य द्विजदुःख नहि फिरिए मानि निदेश ॥

॥ * ॥ ब्राह्मणाऊचुः ॥ * ॥

भूप तिहारी जौंन गति ताको उदित सर्व। हम हि तजऊ मति भक्त तव दर्शक धर्म अखर्व ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

परम भक्ति मम द्विजनमे हम है हीन सहाय । तो सेवन बनि है नही हे द्विजवर सुखदाय ॥
देखि द्रौपदी क्लेश अति राज्यहरणदुख पाय ॥ भ्राता मेरे मोहवश भरे व्यकलता काय ॥
दुःखार्दित लखि कै इन्है हों ककुकार्य्य निदेश । कहि न सकत इनसों ककू हे द्विजवरन विषेश ॥

॥ * ॥ ब्राह्मणाऊचुः ॥ * ॥

करऊ हमारे भरणकी नहि चिन्ता तुम भूप । ल्यावहिगे हम आपुकों भक्ष्य भोज्य अनुरूप ॥
ध्यान जाप करि कहैं गे सब विधि तो कल्याण । चित्त रमण करि ह सदा कहि कै कथा पुराण ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

कहत विप्र तुम सत्य सो रमि है तुममे चित्त । न्यून भाव लखि आपनो ग्लान होत हम मित्त ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥

लख हि हम केहि भाति भोजन करऊ तुम सब ल्याय।कृपा हमपैं करत तुम यह सहो दुख न जाय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यहि भाँतिसों कहि धर्मनृप गिरिपरे क्षितिपर क्षिप्र। लागे लखि इमि कहन शौनक नाम मुनिबर विप्र ॥ भूप कारण शोकके अनगणित हैं दुखराश। मूढ़कों ते ग्रसत हैं नहि जान पंडित पास ॥ श्रेय ज्ञानविरुद्ध जे हैं दोषकारक कर्म। जात तिनके निकट तुमसे भूप नहि नृपधर्म ॥ यम नियम प्राणायाम आसन धारणा अरु ध्यान । प्रत्याहार और समाधि ए वसु अंग योग बिधान ॥ तिन सहित जो है बुद्धिविमला श्रेयकारक सर्व । श्रुति स्मृतिमे कथित तुममे बसत तौंन अखर्व॥पाय कै अतिदुःखको हैं मनुज तुमसे जौंन। शारीर मानस व्यथातें नहि होत पीडित तौंन ॥ मनस्थिरकी करणि गीता कही जनक बिदेह । कहत हैं हम तौंन सुनिए भूप सहित सनेह ॥ मनज देहज दुःखते जन होत पीडित सर्व । तास हों उपसमन तुमसों कहत सुनऊँ अखर्व ॥ व्याधि इष्टवियोग श्रम अरु दुष्टको संयोग। देह सम्भव दुःखकारण कहत चारि सुलोग ॥ करैं औषधि व्याधि बिनशति आधि मनको रोध । मतिमान जनते ज्ञान सेती करत मानस बोध ॥ करत मानस दुःख सिगरी देहकों उत्ताप । तप्त लोहो परैं घटको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० तपत जैसें आप ॥ ताप मनको शान्ति कीजै ज्ञान जलकों डारि । मिटें मानस दुःखके सुख लहत सुमति बिचारि ॥ स्नेह मानस दुःखको है मूल सुनऊँ सुजान । स्नेह बश ह्वै जन्तु दुखको करत यत्न महान॥ शोक भय श्रम दुःखकारण स्नेह जानऊ भूप । भाव उपजत स्नेहतें अनुरागको फिरि रूप ॥ अश्रेय करते होऊ इनमे भाव मूल महान । यथा सिगरो बिटप जारति कोठरामि सुजान ॥ बिना पाए विषयकें सब होत त्यागी रूप । करत त्याग जो विषयकों लहि सोई त्यागी भूप॥धन मित्र पायन लिप्त तातें होत त्यागी जौंन । मनज स्नेह विनाशकारक ज्ञान कहिए तौंन॥ स्नेह लिप्त न होत ज्ञानी पुरुषकों अवदात । लगत सलिल न यथा सङ्गत पाय पंकज पात ॥ राग जीतो पुरुष कर्मज दुःखसों परिपूरि । लहत इच्छा होति तातें विषय तृष्णा भूरि ॥ उद्वेग कारणि पाय पूरणि महति तृष्णा जौंन । दुःत्याज्य है दुर्मतिनकों नहि होति जीरण तौंन ॥ राज पावक चोरको भय धनिककों अतिमान । अर्थ करत अनर्थ काकों नही सुनऊ सुजान ॥ अर्थ आगम करत सबविधि मोह बन्धन भूप । कार्पण्य अरु उद्वेग ममताको बढावत रूप ॥ अर्थ कारण करत नाना भाँतिके जन कर्म । होत दुखतें बित्तक्षयतें करत पीडित मर्म ॥ मूर्खकों सन्तोष नहि सन्तोष पण्डित कर्त । अन्त तृष्णाको नही सन्तोष आनद भर्त ॥ बिना इच्छा बित्त आगम कहत परम सुजान । धर्मार्थहूकी जौंन इच्छा वदत विज्ञ महान ॥ धर्मनृप नहि करऊ बांछा कबू वस्तु समाह । धर्मसों तब कार्य्य तौ तजु बित्त इच्छा चाह ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ अर्थ इच्छा नही मेरे भोगकरिबे हेत । द्विजन्ह भरिबे हेत मन मो बित्त इच्छा लेत ॥ बिप्र हमसो होय कोंन गृहस्थ आश्रम माह । अनुगको नहि भरण पालन करै गो नरनाह ॥ बैश्वदेव विधानसों सब प्रथम करि कै पर्म । अतिथकों फिरि देय भोजन यथा योग्य सधर्म ॥ उदक आसन ठौर देय सु बोलि मीठे बैंन । गृहीको यहधर्म आवै जौंन अपने ऊँन ॥ अतिथको सतकार करिबो गृहीको है धर्म । अन्न जल थल देइ सादर बचन बोलै पर्म ॥ नही अपनेअर्थ कीबो पाकको अधिकार । देव पितृ निमित्त बिनु पशुमारिबो न बिचार ॥ देत हैं जो कृपाकरि कै अतिथ आन्त हि अन्न ।सहत पावत पुण्यकों सो भए क्षुधित प्रसन्न ॥ रहत जैसी भाँति जौंन गृहस्थ धर्म बिचारि । लहत पावन पुण्यकों हे बिप्र सो निरधारि ॥ * ॥ शौनकउवाच ॥ * ॥ जगत यह बिपरीत पडमे कष्ट है अति मान । रसहरण इन्द्री करहि बशमे मनुजकों सु महान॥मूढ जैसे सारथीकों चपल तुरङ्ग कुराह । करैं इन्द्री आपने जब विषयको उतसाह ॥ पूर्वके संकल्पतें जो भयो मन तहँ आय । भरो इच्छा चलत इन्द्री विषयको है धाय ॥ संकल्प बीज सुकाम जनकों विषय अरसों मारि । करत दग्ध पतङ्गसौं लोभाग्निमे सो डारि॥ विहार अरु आहार मोहित होय कै सो भूप।मोह मुखमे परो सो नहि लखत आत्मारूप ॥ यहि भाँति नाना योनिमे सो जाय जीव अयान । बश्य अविद्या रहत है सो भ्रमत चक्र समान । कही यहगति भूपतिनकी अबुध हैं जन जौंन ॥ मोक्षकामी धर्मरतकी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कहत अति सुनु तौन ॥ वेदको यह वचन है कुरु कर्मको निःकाम। मानको तजि करी तातें सर्व वन्य०
कर्म खलाम ॥ यज्ञ वेदाध्ययन दान सु तप शमादम साँच। अलोभ अरु ए आठ वरणत धर्मके पथ याच ॥ आदिके जे चारि दायक पितृलोक महान। अन्तके ते चारि दायक देवलोक सुजान॥ धर्मके अष्टाङ्ग पथचलि शुद्ध आत्मा जौन। शुद्ध करि कै कर्मको नर जगत जीतत तौन ॥ राग द्वेष विमुक्त ह्वै ऐश्वर्य्य दैवत खेत। प्रजा पालन करत हैं ते क्षमा सहित सनेत। तथा समता धारि तुमहूँ करि तपस्या पर्म। सिद्धिको लहि वृद्धि होऊ अचिन्त हे नृपधर्म ॥ पितलोक सु प्राप्तको सिधि लही तुम करि कर्म। भरणको द्विज करि तपस्या खेऊ सिद्धि सधर्म ॥ कियो चाहत जौन करत सो करि तपस्या सिद्ध। करि तपस्या होऊ तातें भूप सिद्धि समृद्ध॥ वैशम्पायन उवाच॥ सुनि सु शौनकके वचन यहि भाँतिके नृपधर्म। कहे जाय सो धौम्यमुनिसों मध्य आतन्ह पर्म ॥ वेदपारग विप्रजे सो भए अनुगत सर्व। तिन्हैं पोषण शक्त हौं नहि भरो दुःख अखर्व ॥ तिन्हैं तजिबे शक्त हौं नहि योग्य दीबँ दान। कहा करिबे योग्य हमकौं कहऊ धौम्य सुजान ॥ मुहूर्त भरि धरि ध्यान बोले धौम्य मुनि तपधाम। धर्मनृपसों कहन लागे बचन अति अभिराम ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ क्षुधा पीडित पुरा सिगरे भए जीव महान। कृपा कीन्हौं भानु तब लखि पितासे सुखदान॥ उत्तरायण होय रसकों करषि करि सो पान। दक्षिणायन होय क्षितिमे धरत जग्मा मान ॥ क्षेत्र भूत सो भए रवि तब होय उग्मा रूप। गगनगत रवि तेज मेघाकार सो लहि भूप ॥ बारि बरषि सु प्रगट कीन्हा औषधी निशिनाह। चन्द्र तेज सशिक्त भो रवि आपु आपुहि लाह॥ षटरसालय औषधी भो अन्न तातें पर्म। भानुमय यह अन्न जानऊ जगत जीवन धर्म॥ पिता हैं सब जगतके रवि भरण ताको लेऊ। भूप तप करि प्रजनको उद्धार करु ससनेह ॥ पूर्व भूपन्ह हरो तप करि प्रजन्हको दुख सर्व। तथा तप करि करऊ तुमहूँ विप्र भरण अखर्व ॥ जनमेजयउवाच ॥ धर्म भूपति कौन विधि सों कियो तप अभिराम। भानु राधित कियो किमि द्विज भरण धरि मनकाम ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ कहत हैं हम तौन भूपति सुनऊ सुचित खलाम। धौम्य दिये नृप धर्मकों जे अष्टशत रवि नाम ॥ धौम्यउवाच ॥ स्तोत्रं ॥ सूर्य्यो र मार्य्यभगस्त्वष्टा पूषार्कः सविता रविः। गभस्तिमानजः कालोमृत्यु धाता प्रभाकरः ॥ पृथिव्यापश्च तेजश्च खम्बायुश्च परायणं। सोमोबृहस्पतिः शुक्रोबुधोङ्गारकएवच ॥ इन्द्रोविवस्वान् दीप्तांशुः शुचिः शौरिः शनैश्चरः। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दोवै वरुणोयमः॥ वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैंधनस्तेजसांपतिः। धर्मध्वजोबेदकर्त्ता वेदाङ्गोवेदवाहनः ॥ कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिः सर्वमलाश्रयः। कला काष्ठा मुहूर्तश्चक्षपा यामस्तथा क्षणः ॥ सम्वत्सरकरोश्वत्थः कालचक्रोविभावसुः। पुरुषः शाश्वतोयोगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः॥ कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षोविश्वकर्मा तमोनुदः। वरुणः सागरोंशश्च जीमूतोजीवनोरिहा ॥ भूताश्रयोभूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः। स्रष्टा सम्वर्तकोवह्निः

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब० प० सर्वस्यादिरलोलुपः ॥ अनन्तः कपिलोभानुः कामदः सर्वतोमुखः। जयोविशालोवरदः सर्वधातुनिषेवितः॥मनःसुपर्णोभूतादिः शीघ्रगः प्राणधारणः।धन्वन्तरिः धूमकेतुरादिदेवोदितेः सुतः॥द्वादशात्मारविन्दाक्षः पिता माता पितामहः। स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपं॥ देहकर्त्ता प्रशान्तात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः।चराचरात्मा सूक्ष्मात्मामैत्रेयः करुणान्वितः॥एतद्वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामित तेजसः नामाष्टशतकञ्चेदं प्रोक्तमेतत्स्वयंभुवा। सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवन्दितं॥ बरकनकशताशनप्रभंप्रणिपतितोस्मि हिताय भास्करं।सूर्योदयेयः सुसमाहितः पठेत्सपुत्रदारान्धन रत्नसञ्चयान्॥लभेत जातिस्मरतान्तरः सदा धृतिञ्चमेधाञ्च सविन्दते पुमान्।इमंस्तवं देववरस्य योनरःप्रकीर्तयेच्छुचिसमनाःसमाहितः॥विमुच्यते शोकदवाग्निसागरात्लभेत कामान्मनसा यथेप्सितान्॥

॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धौम्यपुरोहितके सुनि बैंन । समय समान परम मतिअन ॥ विप्र त्यागके भरे विचार । रहे युधिष्ठिर भूप उदार ॥ तप करिवेकों धरि मति धीर । रवि पूजन करि सविधि गभीर ॥ रवि सन मुख जलभीतर जाय।बायुपान करिकै कुरुराय॥योग धारणा करिकै धीर।लगे करण जप कुरुवर बीर॥ शुचि व्है नियतवाक नृपधर्म । लागे पठन रविस्तव पर्म॥ युधिष्ठिरउवाच ॥जगदात्मा जग चक्षुमहान।तुम हौ जगतोत्पति स्थान॥तुम योगिनकी गति अभिराम।तुमही धारक लोक ललाम॥ मुमुक्षुणके स्वर्गद्वार। हौ तुम भानु तेजसागार ॥ ऋषिगण अर्चित तुमहीं सूर। तोरय दिव्य काम ना पूर॥ सिद्ध यक्ष चारण गन्धर्व। गुह्यक पन्नग सुर गण सर्व॥ इन्द्र उपेन्द्र असुरगण जौंन। लहत कामना तुमतें तौंन॥ बालखिल्य सब तुमकों सेय।सबसों श्रेष्ठभए सिधि लेय॥सप्त लोक नह कौंन महान। भानु होय तो तेज समान।भानु लेय तो तेज महान।।रचो विश्वकर्मै अतिमान।सु नाभचक्र सो लै हरि पाश। कीन्हों दनुज बंशको नाश ॥ करि निदाघमे तुम रस पान । प्राविटमे वर्षत सुख दान॥ मही त्रयोदश द्वीपा जौंन ।तव कर करत प्रकाशित तौंन॥ उदय बिना तो भानु महान। होत जगत सब अन्ध समान ॥ उदय बिना तो जे मखकर्म । होत प्रवृत्त नही श्रुति धर्म॥ जो विधि दिवस सहस युगमान । आदि अन्त तुम तास महान ॥ मनुमनु पुत्र जगत जन जौंन॥ ताके तुम प्रभु तेजसभौंन ॥ प्रलय समय तव क्रोधज आगि । करति त्रिलोक भस्म सो लागि॥ तव करजनित मेघ बज्ररङ्ग । करै जगत मय सलिल तरङ्ग ॥ तुम फिरि द्वादश आत्मा धारि। सोषत सहत प्रलय कर बारि ॥ विष्णु प्रजापति रुद्र सुरेश । अग्नि समान तुम ब्रह्म अशेष॥ सविता सूर भानु तुम हंस । मिहिर त्वषाकपि सूर प्रसंश ॥ पूषा विवस्वान रवि धर्म । मित्र सहस्र रश्मि तुम पर्म॥ तपन अंशुमाली आदित्य । गोपति मार्तण्ड तुम नित्य ॥ दिन कृत् सूर्य सरराय दिनेश। सुसप्ताश्व हरितास्य ग्रहेश ॥ तुरगामी तमोघ्न तपधाम । दिवाकरार्क अनन्त विराम॥ षष्टि सहस्रोकों नर जौंन। करत सु तो पूजन मतिभौंन॥ भक्त शान्त एकाग्र सु जान। लहत सो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

वृद्धि सिद्धि अतिमान ॥ आधि व्याधि नहि लहत विपत्या। रवि तो पूजन व्रत धरि सत्य॥ पाप रोगतें वर्ज्य
बिरहित तौन। जीवत सुखी भक्त तो जौन॥ अतिथि भरण व्रत भरें उदार। अन्नकाम मोहि दया
अगार॥ होऊ अन्नपति दाता अन्न। भक्त जानि हे करुणा सन्न॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥
सुस्तव सुनि कृत धर्म नरेश। भए कृपा करि प्रगट दिनेश॥ * ॥ विवस्वानुवाच॥ * ॥ जो अभि
लषित तुम्हे हे भूप। सो लहिहऊ तुम परम अनूप॥ देत अन्न तुमकौं हम सर्व। द्वादश वर्ष
प्रमाण अखर्व॥ ताम्र पिठर यह लीजै भूप। देत तुम्हैं करि कृपा अनूप॥ नाना विधिके भक्ष्य
अमान। यातें मिलहि तुम्हैं सुखदान॥ द्रुपद सुता भोजन पर्य्यन्त। दहै पिठर सुभक्ष्य अनन्त॥
वर्ष चौदहे तुमको राज। फेरि मिलै गो सहित समाज ॥ * ॥ * ॥ रोलाछन्द॥ * ॥ *

भानु ऐसी भाँति कहिकै भए अन्तरध्यान। सोच यह जो पढै गो एकाग्र व्है मतिमान॥
सुनै गो शुचि होय कै वृद्धि सिद्धि लहि है तौन। लहै गो सुमनोर्थकों दुऊकाल पढि है जौन॥
समरमे जय लहै गो जो नित्य पढि है धीर। भरे मेरो लोक लहि है भरो तेज गँभीर॥ * ॥ वैश
म्पायनउवाच॥ * ॥ कढे जबतें धर्मनृप इमि सूरसों बर पाय। भरे आँनद धौम्यमुनिके जाय
परशे पाय॥ मिले भ्रातन अङ्कमे लै द्रौपदीकों साथ। महानसमे कियो स्थापित पिठर सो कुरु
नाथ॥ पाक तामे किएँ थोरो भूरि बाढत जात। चतुर्विधको भक्ष्य चुकत न अनेकन जन खात॥
अक्षय्य सो वह अन्न भोजन द्विजनकों करवाय। अनुज भ्रातन सहित भोजन आपु कीन्हों जाय
द्रौपदी फिरि कियो भोजन शेष सो सुखदान। द्विजगणनकों इमि देत भोजन विहित विधि सन
मान॥ धौम्यसों सस्तयन लहि सबद्विजन पांडव बीर। काम्यवनकों गए गङ्गातीरतें मतिधीर॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदिवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे सूर्योपासन पाकपात्रप्राप्तिकाम्यवनगमनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा॥ * ॥

गए पाण्डुसुत विपिनिकों तब धृतराष्ट्र नरेश। बोलि बिदुरकों इमि कहो पूरें बचन अदेश॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥

उसना सम मतिमान तुम जानत धर्म बिधान। मानत कुरुकुलमे तुम्हे सबकों गुणत समान॥
कुरुकुलकों जो पथ्य है कहो तौन मतिमान। भयो अकारज महत हम तौन करैं सुखदान॥
पाण्डव जासो मूलतें नही उखारैं मोहि। बूझत सच सो जानि कै बिदुर परम हित तोहि॥

॥ * ॥ बिदुरउवाच॥ * ॥

सकल वर्ण अरु राज्य है धर्म मूल हे भूप। व्है प्रवृत्त तुम धर्ममे पालऊ स्वकुल अनूप॥
गयो धर्म सब सभामे बढो पाप अतिकाय। कीन्हों सो छल धारि कै बीरबल सहित सहाय॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० द्यूत सभामे धरमधुर कुन्ती तनय बोलाय। कियो पराजित शकुनि करि छलमय चूद्र उपाय ॥
पाण्डुसुतनको मानहर रूप कियो बध जौंन । पापशुल्क व्है सुत बचैं करु उपाय नृप तौंन ॥
बांटि पाण्डवनको दयो राज्य सु धन तुम जौंन । देऊ तिन्हैं सनमानकरि नृप धृतराष्ट्र सु तौंन ॥
पाण्डुतनय सनमानतें सबविधि कुशल सुजान। अधिक तुष्टिहूहै तिन्हैं करें शकुनि अपमान ॥
अैसो कीन्हें बचैंगे पुत्र तिहारे भूप । नतरु होयगो कुरुके कर्मनाशको रूप ॥
क्रुद्ध भीम अर्जुन भए करिहैं सबनाश । सो अर्जुन गाण्डीवहै महाधनुष जा पास ॥
अन्नत तो सुत जगत हित वचन कहो हम जौंन।पुत्र तजऊ कुलहित नृपति तुम नहि मानो तौंन ॥
साम करैं तो पुत्र तौ होय राज्य सुखरूप। तुमकों होय सँताप नहि प्रीति योगतें भूप ॥
नतरु सु योधनको पकरि देऊ पाण्डवन्ह राज।अजा तारिं याचन करिहि विधिवत प्रजा समाज॥
पार्थिव भजिहै बैश्यसे तुमकों सकल नरेश । शकुनि सु योधन सूत सुत धरिहैं धर्म निदेश ॥
सभाजन्य अपराधकों दुःशासन करजोरि । क्षमा करावै भीमसों छला पास निहोरि ॥
तुम बूझो हमकों कहा और कहैं हम भूप। यह करिकै तुम होऊगे नृप कृत कृत्य स्वरूप ॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

वाक्य पाण्डव हित कहे तुम विदुर हमसों जौंन। अहित मेरे सुतनके नहि हमै करिबें तौंन॥
पाण्डवनके हितूहौ तुम परे यातें जानि । नहीं मेरे करै को सुतत्याग करि हित हानि ॥ भ्रातृ सुततें पुत्र औरस है सुयोधन पर्म । पार्थ त्यागै देहकों यह करैगो को कर्म ॥ विदुर भावे जाऊ तहँ तुम कुटिल कहत महान । यथा असती तजति पतिकों करें छल सनमान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ एहि भाति कहि धृतराष्ट्र नप किय बसन भीतर गौंन। क्षोभ लहिकै बिदर किय उठि पाण्डवन पह गौंन ॥ पाण्डवन बनवासको उद्देश करि अभिराम। गए गङ्गातीर तें चलि कुरु क्षेत्र ललाम ॥ कालिन्दी सरस्वती सरिता तीरपै करि बास । गए पश्चिमदिशाकों करि बनन माहि निवास ॥ मरु धन्वमे सरस्वतीको लहि परम सुन्दर तीर । बसत मुनिबर वृन्द जँह लखि काम्य बिपिनि गभीर॥ द्विजन सह तँह बसे जेहा मृगनको समुदाय । शान्त मानस पाय मुनिवर वृन्दको सु सहाय ॥ पाण्डवनके देखिबेकी लालसा धरि पर्म । काम्यबनकों विदुर आए जहा हैं नृपधर्म ॥ धर्मनृप लखि विदुर आवत लगे करण विचार। कहन लागे भीमसों यहि भांति बचन उदार ॥ कहा कृत्ता कहैगो इत आय हमसों बैंन । शकुनि प्रेरित द्यूत करिबें फेरि आवत हैन ॥ बोलिबें ममशस्त्र जीतो शकुनि चाहत तौंन।द्यूतकों आकृत व्है हम औसि करिहै गौंन ॥गाण्डीव जीतो गयो मिलिबो राज्यको सन्देह। भीम आगम विदुरको यह लगत संशय गेह ॥विदुर देखो निकट व्है नृपधर्मकों अभिराम। सहित भ्रातन्ह द्रौपदी द्विजवृन्द माह ललाम ॥सहित भ्रातन्ह विदुरकों लखि लियो आगें भूप। विदुर सबसों मिले हर्षित भरे प्रेम अनूप ॥ हेतु बूझन लग

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भूपति आगमनको जौन। वृत्तान्त सब धृतराष्ट्रको कहि विदुर दीन्हो तान ॥ विदुरउवाच ॥ ब०प०
धृतराष्ट्र हमसों कही कहिबें पथ्य जानि समान । सम सुतनकों अरु पाण्डवनकों होइ जो सुख दान ॥ कौरवनकों पथ्यसो हम कही नीति विधान। सो न तोकों रुचो श्रीकर सुनऊ कुरुकुल भान ॥ क्रोध करिकै कही तुमकों रुचै तँह तुम जाय। रहौ चाहत विदुरहैं हम रावरी न सहाय॥ त्यक्त तासों पास आए रावरे मतिऐंन॥ सभामे हम कही सो सब यादि राखऊ बैंन ।शत्रुसों लहि क्लेश साधत क्षमा करि जो काल। बढतसो तनु अग्नि ज्यों लहि समिध होति विशाल ॥भिन्न होय सहाय जाके करत नहि धनभोग। दुःख भागी होतहै ते पाय समय सयोग ॥ स्वजन जनकों सहित आदर राखिहै जो भूप। सहाय बलसों तौन लेहै जीति भूमि अनूप ॥ ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ ॥ आलस्य तजि सो करहिगे तुम कहत जो मतिमान । और करिहै कहौगे जो देशकाल समान ॥ ॥ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ ॥ विदुर पाण्डव पासको जब गए बनको भूप । खेदसों धृतराष्ट्र को तब भयो व्यथित स्वरूप ॥ स्वर्ण मोहित विदुरके नृप सभा गृहमे जाय । गिरे मूर्छित पाय संज्ञा उठे फेरि अघाय ॥ कहन संजयसों लगे यहि भांति सकरुण बैंन। जाय ल्यावऊ विदुरकों जो बन्धु मेरो मतिऐंन॥बिना विदुर न रहत मेरो सुनऊ संजय प्रान।कियो कबहू नही जेहिंअपराध सो अनुमान॥ मानि सञ्जय चले नृपके सुनत करुणा बैंन। गए जँह नृपधर्म हे सह विदुर मतिके ऐंन॥ रौरवा जिन धरे आतन्ह सहित द्विजगण सङ्ग । विदुर सह नृपधर्मकों लखि भरो तेजतरङ्ग॥ धर्मनृपको करो पूजन जाय सञ्जय पास। भीम अर्जुन किय यथोचित विहित पूजन तास ॥ भूप बूझो कुशल सञ्जय भए जब आसीन। कुशल आगम हेतु सञ्जय लगे कहन प्रवीन॥सञ्जयउवाच॥करत हैं अस्त्रण तो धृतराष्ट्र विदुर सुजॉन । चलौ तिनकों देखि ए तुम बिना त्यागत प्रान ॥ धर्मनृपसों बूझि छत्ता करऊ बेगि पयान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ धर्म आज्ञा लै गए फिरि विदुर अपने स्थान॥ कह न इमि धृतराष्ट्र लागे विदुर सों करि प्रीति । मिले मेरे भाग्य सों फिरि हमै बन्धु सनीति॥ राचि दिन मह लही निद्रा नही तुमबिनु छत्त। रहे देखत आपुकों हम मोहमद उनमत्त ॥ अङ्कमे लै विदुरकों करि घ्राण मूर्धा भूप। क्षमाकीजौ तौन जो हों कहो बचन कुरूप ॥ विदुरउवाच ॥ शान्त हम सब भाँति हौ तुम परम गुरु मम भूप॥ पाण्डु सुत तव पुत्रकों हम लखत हैं समरूप ॥ अन्योन्य जैसें बचन कहिकै दोऊ भ्राता पर्म । विदुर अरु धृतराष्ट्र भूपति लहो अतिशय शर्म ॥ ॥ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ॥ विदुर आए कियो तिनको परम आदर भूप। सुनि महा दुर्मति नप सुयोधन होय दुःखित रूप ॥ कर्ण शकुनि दुःशासनहि सो भयो कहतो बैंन । यहि भाँतिको अति खेद कारक मोह अतिके ऐंन ॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ विदुर हित अति पाण्डवनके भूप मंत्री पर्न । फेरि जबलौं नही फेरै तात को मत मर्म ॥ करो तौलौं मंत्र करि यहि भाँति बुद्धि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० चरित्र। नही देखैं पाण्डवनकों इहा आए मित्र॥मरैंगे बिष शस्त्रसों कै करै अग्नि प्रवेश। आगमन जौं पाण्डवनकों लखैं गे यहि देश॥ शकुनिरुवाच॥बाल मतिकौं लीजिए नहि सुनु सुयोधन भूप। फिरैंगे नहि गए पाण्डव नियम करि अति रूप ॥ सत्यबादी पाण्डुसुत नहि नाघिहैं मिति पर्म। मानिहैं तो तातको नहि बचन जे नृपधर्म ॥ मानि कुरुपति बचनकों ते आइहैं जौं भूप। फेरि तिन कों द्यूत करि हम जीति हैं अनुरूप॥ होंहिगे मध्यस्थ हम सब परम हित तो जौंन। छिद्र तिनको देखिहैं करि गुप्त अपनो तौंन॥ कर्णउवाच॥ कियों ईप्सित चहत हम सब रावरो मतिऐंन।मानि कै यह धरौ अपने चित्तमे तुम चैंन॥ एक मति हम सर्ब है तो सुमतिके अनुरूप। नही पाण्डव आइहैं बिनु काल बीते भूप॥ मोहते जो आइहै तौ जीतिहै करि द्यूत॥ वैशम्पायनउवाच॥ सो सुयोधन बैंन सुनिकै कहो जो सुतसूत॥ नही हर्षित भयो बैठो बदन फेरि उदास। देखिकै तब कर्ण गुणिकै तहां अति बलराश॥ सौबल दुःशासन सोंह ऐसैं होयकै अति क्रुद्ध। होय उन्नत बलकि बोलो भुजनकों करि उद्ध॥नही मानत मत हमारो भूप जौं मतिधाम।करैं हम सब भूपको प्रिय सदृश कर अभिराम॥ सज्जव्है चढि रथनपै हम सर्ब सह बल उद्ध। पाण्डवनकों हनै बनमे जायकै करि युद्ध॥ शान्त व्हैकै बसै बनमे जाय दूरि अजान।होंहिं तब धृतराष्ट्रके सुत निर्बिबाद महान॥ पाण्डुसुत धन रहित जौलौं मित्रगणसों हीन। मारिबेकेशक्यतौलौंसुनऊँ मो मत धीन॥ सूतसुतको बचन यह सो भयो सम्मत सर्ब। चढे ते सब भूप रथपर सज्ज होय अखर्ब॥चले हनिबें पाण्डवनकों करैं निश्चय माम। तिन्हैं प्रस्थित जानि आए व्यास तँह तपधाम॥ मने करिकै तिन्हैं आए अन्धनृपके पास। बचन प्रज्ञा चक्षुसों इमि कहन लागे व्यास॥ व्यासउवाच॥ सुनऊँ सो धृतराष्ट्र तुमसों कहत जो हम बैंन। कुशल जासों रहै कुरुकुल करऊ सो मतिऐंन॥ प्रिय न हमकों पाण्डु सुत जे गए बनकों भूप। तो पुत्र जीतो जिन्हैं छलकरि द्यूत कपट स्वरूप॥गए तेरह बर्ष ते बनबास दुःख बिचारि। कौरवन्ह ते भस्म करिहै क्रोध पावक डारि॥ सुनऊँ तातें पापमय तो पुत्र दुर्मतिभौन। पाण्डवन्हकों हनो चाहत राज्य कारण तौंन॥ बारि बोहै उचित तातें मूढ सुतको भूप। हनो चाहत तिन्हैं अपनो तजो प्राण अनूप॥ बिदुर भीषम द्रोण कृप हम यथाहैं मतिमान। तथा नृपधृतराष्ट्र तुमकों कहत साधु सुजान॥ महा बिग्रह स्वजनमे सो कहत नीति न तज्ञ। लेऊ अजय अधर्म मति यह कर्म करि जिमि अज्ञ॥ बिबादकी मति पाण्डवन प्रति जास ऐसी भूप। सो न तुमसौं होति वारित अनय कारण रूप॥ मन्दमति तो पुत्र अथवा बसैं बनमे जाय। पाण्डवनके सङ्गमे सब छोडि सैन सहाय॥ पार्थसौं तव पुत्रसौं जब होय सङ्गज प्रीति। होऊ तब कृत कार्य तुम धृतराष्ट्रभूप सनीति॥ जन्मतें जो शीलजनको होत सुनऊ सुजान। मनुजकौं देहांत लौं सो तजतहै न अमान॥ भीष्म द्रोण सबिदुर तुम गुणि बुद्धिसो बर आर्य। नष्ट पूर्व न होय पहिलें करऊ अपनो कार्य॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ महामुनि नहि रुचो हमकों द्यूत सम्भव कर्म। दैव प्रेरित कियो हम यह लोक निन्दित धर्म॥ भीष्म द्रोण सु बिदुर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अरु गान्धारजाको तौंन। रचो नहि यह भयो कारज मोहके वस जौंन॥ सुनु सुयोधन कुमति को वन्द०
हौं सकत नहि करि त्याग। तजत नहि मनकों महामुनि पुत्रको अनुराग॥ व्यासउवाच ॥ कहत
सुन धृतराष्ट्रसो है सत्य वचन सधर्म। पुत्र तें नहि है पदारथ जगतमे कछु पर्म॥ करत दुर्बल
पुत्रसे अति स्नेह जननी तात। जानिकै असमर्थ पोषण भरणमे अवदात॥ पाण्डु तुम अरु विदुरमेरे
पुत्र हो सु समान। पुत्र तो चिरकाल जीवित चहत सुत सुखदान॥ पांडुके सुत पांच दुःखित रहत
कपट विहीन। जियहि गे केहि भांति बर्धित होहिगे किमि पीन॥ पाण्डवनकों हीन लखि
हौं चहत ताप अखर्व। जौं जियायो चहत भूपति कौरवनकों सर्व॥ पुत्र तो तौ गहैं समता पाण्डवन्ह
सों भूप। धृतराष्ट्रउवाच॥ कहतहौ तुम महामुनि सो परम सत्य अनूप॥ भीष्म द्रोण सविदुर
हारे कहि कहत तुम जौंन। आपुहू समुझाइ कैहो पितामह मतिभौंन॥ व्यासउवाच॥ हमै
देखन हेतु आवत महामुनि मैत्रेय। पाण्डवनकों देखि आए तेजपुञ्ज अमेय॥ तो सुत सुयोधनकों
सुशिक्षित करैगें ऋषि तौंन। करैगो नहि पुत्र तो जब कहैंगे ऋषि जान॥ शापदेहैं महाऋषि
सब क्रोध करि कै साम। वैशम्पायनउवाच॥ गए यह कहि व्यास आए तौंन ऋषि तपधाम॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऋषि पूजन करि विहित विधि सहित सुयोधन भूप। प्रणय सहित लागे कहन मुनिसों वचन अनूप॥
कुरु जाङ्गल सों आयमन भयो ससुख अभिराम। सुखसों पाण्डवहैं सकल महावीर बलधाम॥
चहत प्रतिज्ञाने रहो सुस्थिर ह्वै ते सर्व। खिन्न होंयगो तौ नहो कुरु सौभाच अखर्व॥

॥ * ॥ मैत्रेयउवाच॥ * ॥

तीर्थ सुयात्रा करत हम कुरु जाङ्गलवों जाय। देखी इच्छासों लखो धर्म राजकों पाय॥
धरें जटाजिन द्विजन सह करत विपिनमे वास। लखिवेकों तिनकों तहाँ आए मुनि तपरास॥
तहाँ सुनो तव पुत्रको द्यूत अनर्थ कुरूप। जियत तिहारे भीष्मके यह न योग्य हो भूप॥
होते नियह राजु के तुम्ह कृपा करि भूप। तो प्रवृत्त होतो नहो वियह घोर स्वरूप॥
घोरन कैसी सभालों भई जो बार्त्ता सर्व। सो नहि राजति मुनिनकी सभामाह अतिखर्व॥
तजि धृतराष्ट्रसहोपकों दुर्योधनसों बैन। ऋषि मैत्रेय लगे कहन नीति निपुण मतिऐन॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥

सुनहु सुयोधन वचन मम तोहित जो बलधाम। द्रोह पाण्डवनसों करत सो न तुम्ह अभिराम॥
हर महा पाण्डव प्रबल अयुतनाग बल बीर। सत्यव्रत राजस दमन है अतिरथ रणधीर॥
बक हिडिम्ब किर्मीरको जिन बध करो महान। जात तिन्हैं लखि पथ गहैं हो किर्मीर समान॥
ताहि भीम तबहि हनो मखपशु सो अतिकाय। गिरि समान सो सिंह ज्यों हनत क्षुद्रमृगपाय॥
जरा सन्ध नृपको हनो भीमसेन वरवीर। अयुत नाग बलजास हो युद्ध निपुण रण धीर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स०प० सम्बन्धी पाञ्चालहैं बासुदेव से जास। मरण शील नहि होयको समर सामुह तास॥
साम पाण्डवनसों करौ सुनऊ सुयोधन भूप। बचन हमारो मानिकै छोडि क्रोधका रूप॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सुनि मैत्रेय बचन सुखदान। नृपति सुयोधन परम अयान॥ जंघा ठोकि चरण सों भूमि। लागो लिखन गरबसों घूमि॥ बिहसि न बोलो सुनि सो बैंन। फेरि रहो मुख दुर्मतिअैंन॥ देखत ताकों अग्नि समान। क्रोध भयो ऋषिकों अतिमान॥ बिधिप्रेरित दीवेकों शाप। जलस्पर्श ऋषि कियो सदाप॥ दियो शाप राते करि नैंन। यह दुर्य्योधनकों तपअैंन॥ भीमसेन रणमे व्है रुष्ट। भेदन करी उरू तो दुष्ट॥ महा प्रहार गदासों मारि। देहै तोहि भूमिमे डारि॥ तब धृतराष्ट्र कह्यो इमि बैंन। अैसो होय न हे तपअैंन॥ * ॥ मैत्रेयउवाच॥ * ॥ समता लहै पुत्र तव भूप। गहै शाप तब व्यर्थ स्वरूप॥ नतरु होयगो शाप अवश्य। बचन हमारे जानु अनश्य॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ भीमसेन बल जानन हेत। ऋषिसों नृप इमि कहो सनेत॥ कैस हने भीम किर्मीर। राक्षस रहो महाबल बीर॥ ॥ मैत्रेयउवाच॥ ॥ अब न कहैगे तुमसो भूप। तो सुत सामन गहत अनूप॥ यह छत्ता कहिहै मतिमान। गए हमारे भूप सुजान॥ ऋषि मैत्रेय सु कहि यह बैंन। गए आपने आश्रम अन॥ ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ ॥ सुनो चहत किर्मीर निपात। कहऊ सविस्तर मतिअवदात॥ राक्षस भीम भिरे जेहि रौस। तौन बिदुर सुनबेकी हौस॥ * ॥ बिदुर उवाच॥ * ॥ भीम अमानुष कीन्हो कर्म। सुनो तौंन हम कहत समर्म॥ हारि द्यूत इत पाण्डव बीर। चले तीनि निशि द्योस अभीर॥ काम्यकवन मँह पहुचे जाय। निशि निशीथमह राक्षस आय॥ राक्षस रहत बिपिनि मह जौन। करत न तहँ पशु मानुष गौंन॥ पैठत तहँ तिनको पथ आय। तेहिँ रोको करि भयङ्कर काय॥ ज्वलित अग्निसे जाके नैंन। उल्मुक लए भूरि भय अैंन॥ आनन बाऊ करे अतिमान। कढे दन्त कच ऊर्ध महान॥ करे राक्षसी माया भूरि। शब्द भयङ्कर करि दिशि पूरि॥ तास नाद सुनि घन सम तौंन। भजे सोर करि खगगण जान॥ बनचर भाजे जीव अखर्ब। कम्पित भयो बिपिनिसो सर्ब॥ तेहि क्षण कहो भयङ्कर बात। भरो गगण रज तम सरसात॥ रहे न जानत पाण्डव बीर। ताहि बसत तिहि बिपिनि गभीर॥ कृष्णाजिनधर देखि स्वरूप। गिरि सम तेहि पथ रोको भूप॥ तास भयङ्कर देखत काय। कम्पित कृष्णा भई डराय॥ अतिही सो तहँ पाय अचैंन। किए आपने मुद्रित नन॥ मूर्छित देखि द्रोपदिहि भूप। गही पाण्डवन आय अनूप॥ देखि राक्षसीमाया घोर। नाशो धौम्य मंत्रके जोर॥ देखि नष्ट सो माया उद्ध। राक्षश चलो फारि चख क्रुद्ध॥ भूरि क्रूर धरि काय महान। काल सदृश लखि परो अमान॥ धर्मनृपति इमि बूझो ताहि। को तुम आए का कृत चाहि॥ कहो युधिष्ठिर सो तेहि बैंन॥ हम किर्मीर महाबल अैंन॥ वक भ्राता हम राक्षस बीर। बसत काम्यबन जानि गँभीर॥ जीति युद्धमे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मानुष पाय । होत तृप्त हम ताको खाय ॥ को तुम इत आए करि गान । भक्षसमान हमारे ब०प० भान ॥ जीति युद्धमे तुमकों सर्व । खाय पाइ है तृप्ति अखर्व ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ वचन तास सुनि सगरव माम । बोले धर्मनृपति बलधाम ॥ धर्मराज हम पाण्डव धीर । भीमार्जुन सह भ्राता बीर ॥ हम हृत राज्य चाहि बन बास । आए जँह तो पिबिनि बिलास ॥ विदुर उबाच ॥ * ॥ तब बोलो हम दैवाधीन । लहे भक्ष्य तुमसे अतिपीन ॥ भीमसेनके मारण हेत । हम धरि आयुध उद्दित चेत ॥ ढूढंत फिरो भूमिमे सर्व । मिलो न कहू भ्रातृहा खर्व ॥ सो उह मिलो भ्रातृहा अद्य । मोचन चहत भ्रातृऋण सद्य ॥ बनबासी मम सखा हिडिम्ब । हनो दुष्ट ताकों बिनु लिम्ब ॥ हरण करी यहि भगिनी तास । यह अन्याय धरे हों पास ॥ अर्धनिशामँह याकों पाय । औगि मारिहों सहित सहाय ॥ याको रुधिर माँस लै भूरि । बक तर्पण करिहों मुद पूरि ॥ भ्रातसखाको हो ऋण जान । मोचन आजु करौं गो तौन ॥ करिवें भक्षण याको मोहि । आजु युधिष्ठिर देखत तोहि ॥ बोले यह सुनि कै नृपधर्म । यह असक्य तो करिबे कर्म ॥ दशव्यायाम सुष्टयु तरु जौन । भीम उखारि लियो कर तौन ॥ धनुष चढायो अर्जुन बीर । बारित कियो भीम रणधीर ॥ तरु लै चलो महाबल अैन । तिष्ठ तिष्ठ यह बोलत बैन ॥ दौरि भीम तरु तान उदार । तास शीषपरि कियो प्रहार ॥ तरु प्रहार तें चलों न तौन । उल्मुक हनो लए हो जौन ॥ बाम चरणसों उल्मुक भीम । बारण कियो महाबल सीम ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तरु उखारि लै राक्षस धायो । भीमसेन पर आय चलायो ॥ बारि भीम फिरि ताहि प्रहारो । राक्षसहूँ फिरि तरुवर मारो ॥ अैसे लरे परस्पर दोऊ । महाबली नहि हारत कोऊ ॥ हृच्छ प्रहार शीषपर डारैं । फटै न शीषक शीष बिचारैं ॥ भए भूजसे जर्जर साखी । लरत क्रोध करि दोऊ प्रमाखी ॥ तरुसों लरे घरी द्वै दोऊ । महा प्रबल नहि हारे कोऊ ॥ राक्षस शिला भीमकों मारो । अचल अचल सम भयो बिहारो ॥ बाऊ उठाय भीमपँह धायो । मनऊ राऊ रबि आसन आयो ॥ दोऊ प्रचारि दुऊन लपटाने । लरण लगे अति बलसों साने ॥ तुमल युद्ध तिनसों अति बाढो । नख दातनसों दारुण गाढो ॥ भीम सभुज बल बर निरधारो । कृष्णा लखति सभीति निहारो ॥ गहो भुजनसों भीम अमर्षी । त्यों किर्मीर महा दुर्धर्षी ॥ भयो प्रहार शब्द अति अैसें । चटकत जरत बेनुबन जैसें ॥ भीम मध्य गहि ताहि पछारो । जैसें तरुवर अनिल उखारो ॥ भीमसेनसों मर्दित हारो । कम्पित भयो भूमिमे डारो ॥ गहो भीम ताकों चहि मारो । फटे पटह सम गरज संहारो ॥ बडीबेरलों ताहि फिरायो । पशु सम हनन लगो मनभायो ॥ उरदि जानुसों कटि कुरुधीरो । ग्रीवा पकरि पाणिसों तोरी ॥ क्षितिपर पकरि कठोरन लागे । बोले बचन क्रोधसों पागे ॥ पोछा नहो अधम बक आजु । यमपुरकों ह्वै चले गताशु ॥ अैस

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० बालि भीम बलभारो । मृतक जानि तेहि छितिपर डारो ॥ घन सम मारि दनुज मुदकाए ।
कृष्णा सहित द्वैतबन आए ॥ भीमसेन गुण बरणन लागे । धर्मराज अति आनंद पागे ॥ * ॥
बिदुरउवाच ॥ * ॥ भीम हनो किर्मीर हि जैसें । हम तँह सुनो कहो सो तैसें ॥ तौन बिपिनि
निःकण्टक करि कै । पाण्डव रहे तहां मुद भरि कै ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यों किर्मीर
निपातन सुनि कै । भरे शोच कुरुपति मन गुणि कै ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशी
वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि
काम्यवन गमनकिर्मीरवध वर्णनोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि पाण्डव बनकों गए वृष्णन्धक सह भोज । गए ते काम्यक बिपिनिकों ओज भरे करि खोज ॥
धृष्टकेतु पाञ्चालसुत चेदिनृपति बरबीर । आये अरु कैकेय तहँ जहां धर्मनृप धीर ॥
निन्दि कौरबनकों कहे कहो कर हम तौन । आगें करि श्रीकृष्णकों है चली बर जौन ॥
सुसुति करि नृपधर्मकी कहो कृष्ण यदुभान । वासुदेवउवाच । कर्ण सुयोधन शकुनिको रक्त करो भूपान
कहो नृपन्ह अभिषेक करि धर्मराजसों पर्म । कुलाचरणको मारिबो बेदबिहित है धर्म ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

दुःख पाण्डवनको चिते भए जनार्दन क्रुद्ध । समन पार्थ लागे करण बर्णि पर्म गुण शुद्ध ॥
पूर्वदेह धरि कृष्ण जो किए कर्म अभिराम । सो बर्णन लागे करण फाल्गुण सद्गुनधाम ॥
दिगमिति बर्ष सहस्र प्रभु सांयमह व्रत धारि । कृष्ण गन्धमादन फिरे करि भक्षण फल बारि ॥
बर्ष एकादश सहस तुम पुष्करके तट जाय । करो महातप बास करि अम्बु पानकों पाय ॥
बसे बिशाला पुरीमे ऊर्ध बाऊ शतबर्ष । बायु पान करि कै करो तप अति उग्र अधर्ष ॥
रहे बदरिकाश्रम तहाँ एक पाद तेहि भाँति । उत्तरीय बिनु अङ्गमे धमनी रहो सकांति ॥
रहे सरस्वतीतीर त्यों कृष्ण सु द्वादश बर्ष । दिव्य सहस सम बसि प्रभासमे कियो सुतप सह हर्ष ॥
एक चरण ठाढे रहे अचल समान महान । लोक रचणके हेतु तुम कहो व्यास मतिमान ॥
सबमे व्यापक आपु हो आदि अन्त अभिराम । यज्ञ यज्ञपति नित्य हो कृष्ण तपस्याधाम ॥
प्रगट भए तुम मनुजमे हरि नारायण रूप । ब्रह्मा तुम अग्नि सूर्य्य यम बरुण सुरासुर भूप ॥
बायु रुद्र भू काल नभ अग्नि दिन धनपाल । कर्ता चर अरु अचरके तुम श्रीकृष्ण बिशाल ॥
बिष्णु होय अवरज भए सुरपतिके सुखधाम । त्रिभुवण नायो चरणसों बामन व्है अभिराम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भय प्रादुर्भाव तुम्हरे कृष्ण देव अनन्त । करो तव तुम दैत्य दानव राक्षसनको अन्त ॥ जीति भूप अनेक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कीन्हों रुक्मिनीसों व्याह। बसे द्वारावतीमे यदुवंशके नरनाह॥मारि भूप अनेक कीन्ही द्वारिका बप्प
सुखराश। मात्सर्य्यको पन अनृत तुममे रहत कीन्हें बास॥ अभय मागत सभामे ऋषि बृन्द तुमसों
धीर। भूतनाश युगान्तमे करि धरत आपु गँभीर॥ युगादिमे तव नाभिपङ्कजतें सु ब्रह्मा
होत। चराचर बज्र भाँतिके जे जगतमाह तनोत॥ मधुकैटभ हि तेहि हनत उद्दित देखि तुम
करि क्रोध। भालते किय प्रगट अम्बक शूलपाणि सबोध॥ भये शम्भु स्वयम्भु अैसें देहतें तव
बीर। साम्यनानुग रावरे इमि कहो नारद धीर॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ यहि भाँति
कहि कै रहे चुप व्है पार्थ अति मतिमान। कहन तब श्रीकृष्ण लागे जगतके सुखदान॥ हम सो तुम
हो तुम सो हम तव जे हमारे तौंन। तव अहितते मम अहित हैं सो मित्र तो हित जौंन॥ पार्थ तुम
नर हम नारायण लोक काल स्वरूप। भए क्षितिपर आइ कै कुरु वृष्णिकुलके भूप॥ अनन्य
हमसों पार्थ तुम हम नही तुमसों अन्य। मम तोन अन्तर जानिबेकों सक्य कोऊ धन्य॥ ॥
वैशम्पायनउवाच॥ ॥ यहिभाँति पार्थसों कह्यो नृपबृन्दमे यदुबीर। धृष्टद्युम्न सु पाण्डवन
सहितें सु कृष्णा धीर॥ कहन लागी कृष्णसों चलि क्रोधभारे बैंन॥ * ॥ द्रौपद्युवाच॥ * ॥
पूर्व तुमकों प्रजापति सब कहत हैं मतिऐंन॥ देव देव सुलोकनायक भूत व्यापक सर्ब। ब्रह्मादि
देवन सङ्ग क्रीडत यथा बालक खर्ब॥ बिराट रूप सु रावरो है बासुदेव महान। आत्मदर्शी
ऋषिणके तुम परम हौ सुखदान॥ स्वधर्म जे हैं राजऋषि हौ पर्म गति तुम तास। लोकपाल
सुलोक हौ स्थिति प्रलय तुम्हरे पास॥ तौन हो दुःख कहति तुमसों सुनऊ मो यदुबीर। ईश हौ
तुम जगतके सह मनुज अमरशरीर॥ भार्य्या हों पाण्डवनकी सखी तो यदुनन्द। स्वश्वा धृष्टद्युम्नकी
हों लहो इतनो दन्द॥ रही इच्छीधर्मसों हौं वस्त्र धारे एक। मोहि खैंची सभामे कुरुतनय
अनय अनेक॥ देखि मोहि रज रक्त वस्त्रा हसो कौरव रुष्ट। मानि दासी भाव मोसों भजन चाहो
दुष्ट॥ धृष्टद्युम्न सु जियत पाण्डव वृष्णि भूषण तोहि। धृतराष्ट्र भीषम सुषा दासी कियो बर
बश मोहि॥ करति निन्दा पांण्डवनकी महा जे बलवान। धर्मपत्नीको बिलोकत रहे कष्ट
महान॥ भीमबलकों पार्थके गाण्डीवकों धिक्कार। क्षुद्र खैंचत मोहि जे सहि रहे देखि उदार॥
कृष्ण सास्वत धर्म यह सतपुरुष पालत जौंन। धर्मपत्नी करै रक्षित अल्पबल पति तौंन॥
किए रक्षण भार्य्याको प्रजारक्षण तौंन। प्रजा रक्षित करे रक्षित होत आत्मा जौंन॥ लेत
आत्मा भार्य्यामे जन्म पुत्र स्वरूप। कहत जाया भार्य्याकों सुमति यातें भूप॥ रक्ष्य भर्त्ता भार्य्यातें
सुनऊ प्रभु एहि हेत। पुत्ररूपी होय कै परि जन्म मोमे लेत॥ ए न ताकों त्यजत लेत जो शरण
इनकी आय। नही रक्षण कियो मेरो शरण गत इन पाय॥ भए मोमे पाण्डवनतें पांच परम
कुमार। नही तिनकों देखि रक्षित कियो मोहि उदार॥ धनुर्धर परसों अजेय कुमार मेरे सर्ब।
सहो कों अपमान इन धृतराष्ट्र सुतको खर्ब॥ अधर्मतें तिन राज्य लीन्हों कियो इनकों दास।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सभामे जिन मोहि खैचो पकरि कुन्तल पास ॥ सकै को करि सज्ज धनु गाण्डीव जौन गभीर। जगतमे बिनु भीम अर्जुन तुम्हैं बिनु बलबीर ॥ भीम बलकों पार्थ पौरुषकों महत धिक्कार। जियत जो धृतराष्ट्रको सुत तौन दुष्ट उदार ॥ राज्यबाहर कियो माता सहित चाहि अधर्म। सुनऊ प्रभु तेहि किये इनसों बाल्यमे जे कर्म ॥ शयनमे अहि आनि दारुण सकल अङ्ग कटाय। बांधि डारो भीमकों जलमाह गरल खवाय ॥ बारणावत इन्हैं पठयो लाखको रचि भौन। पाण्डुसुत बिश्वाससों सह प्रथा कीन्हों गौन॥ जरत बांचे भागि तहँ तो कृपातें यदुबीर। गए बसत हिडिम्ब हो जेहि बिपिनिमांह गभीर ॥ एक चक्राकों गए तेहि मारि तहँ बलवान। हनो द्विज हित तहँ बक जो रहो असुर महान ॥ द्रुपद पुरकों गए तहँतें जहां पाई मोहि। करि अमानुष कर्म अर्जुन लक्ष्य भेदो जोहि ॥ जीति नृपगण रुक्मिणी तुम लई ज्यौं बलबीर। तौन हों बन बसति खसू बिना दुखित गँभीर ॥ तौन ए बरबीर अति बल सूर सिंह समान। रहे सहि किमि दखि मोमे क्षुद्रको अपमान ॥ प्रियापत्नी पांडवनकी जौन रणमह रुद्र। कृष्ण तिनके लखत मेरो गहो कच कुरु क्षुद्र ॥ यहि भांति कहि मुख मूदि पटसों द्रौपदी दुख पूरि। लगी रोदन करण दृगजल बुंद बर्षत भूरि ॥ पूँछि कै दृग पुनः कृष्णा कहन लागी बैन। गरो गद गद करे ऐसें भरी महत अचन ॥ नही मेरे पुत्र भ्राता पतिन तुम यदुबीर। क्षुद्र मे सों कियो अप्रिय लखो जिन धरिधीर ॥ क्षमा होत न दुःख मेरो हँसो सूतज जौन। कृष्ण तुमसों रक्ष्यहों बिधि चारिसों सुनु तौन ॥ सम्बन्ध गुरुता लक्ष्य प्रभुतातें सुनो बलबीर * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * कहो बीर समाजमे इमि कृष्ण तासों धीर ॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥ क्रोध जिनपैं द्रौपदी तो रोइ हैं तिय तास। पार्थके शर बृष्टिसों लखि युद्धमे पतिनाश ॥ अर्थ जो मै पाण्डवनको करहि गे हम तौन। सत्य तुमकों रेइ हैं क्षितिपालपत्नी जौन ॥ गिरै नभ हिमवान हालै धरा जा फटि जाय। कृष्ण वचन न होत मिथ्या सुनऊँ औसर पाय ॥ कृष्णके सुनि वचन कृष्णा छोडि कै दुख घोर। लगी सस्मित लखब तिरछ जिष्णुके मुख ओर ॥ कहो अर्जुन द्रौपदीसों बिहसि कै तब बन। नही रोदन करऊ सुन्दरि धरऊ चितमे चैन ॥ होय गे सो कहो जो यदुनाथ बचन गँभीर। * । धृष्टद्युम्नउवाच। * । द्रोणको हां हनै गे भीष्महि शिखण्डी बीर ॥ भीम मारै गे सुयोधन दुष्टकों सह भ्रात। जिसु करि है सूत सुतको युद्धमाह निपात ॥ अशा कृष्णसहायतें सु अजेय हैं हम सर्ब। इन्द्रहूसों नही हारैं का सुयोधन खर्ब ॥ कहो सन्मुख कृष्णके यहि भांति बीरन्ह बैन। मध्य तिनके कृष्ण ऐसें कहो आनँद बैन ॥ आहूतहू बिनु आवते हम द्यूतमे नृपधर्म। द्यूत होन न पावतो हम तान करते कर्म ॥ दोष नाना भांतिके हम द्यूतमांह दिखाय। भीष्म आदिक सङ्ग लै कुरु बृद्धके समुदाय॥ कहो मम नहि मानते तौ करत निग्रह तास। द्यूत प्रेरक रहे तिनको करत तेहां नाश ॥ एक दिनमे होत जामे नाश धनको सर्ब। प्रबर्त होन न देत ऐसो द्यूतकम अखर्ब ॥ रह नहि हम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

द्वारिकामे नतरु आवत भूप । होन पावत द्यूत नहि तो दुःखकर अति रूप ॥ आइके हम द्वारिकामे सुनो सो नृपधर्म । दुःख तो सब कहा सात्विकि द्यूत सम्भव कर्म ॥ सुनत दुःखित भए अतिशय दुःख तो अतिरूप । देखिबेकों बेगि आए रावरेकों भूप ॥ दुःख मग्न विलोकि तुमकों धर्मनृपति महान । भई हमकों दुसह दारुण व्यथा अकथ अमान ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रहे कैसें दूरि हरि कहँ गए कहिए तौंन । कौंन ऐसो रहो कारज करन लागे जौंन ॥ * श्रीकृष्ण उवाच ॥ शाल्व नृपको मारिबेकों गए हे हम भूप । सौभपुर कहँ तहां ताको सुनऊ कारण रूप ॥ यज्ञमे शिशुपालकों हम हनो जो करि क्रोध । तौंन सुनि तेहि हो नही लहि भूरि भाट विरोध ॥ क्रोध करि सो शून्य द्वारावतीकों चढि आय । रहे हम इत लरो वृष्णिकुमार कोमल पाय ॥ चढो मनन विमान पर सो तहां आयो दुष्ट । हने वृष्णिकुमार कितने लरे जे रण रुष्ट ॥ भङ्ग करि पुर विपिनि ऐसे वचन बोलो तौंन । कहा हैं वह भाटहा वसुदेवको सुत जौंन ॥ कहऊ द्वारावती बासिऊ भयो सो कहँ दुष्ट । ताहि रणमे मारि जै हो सौभपुरको तुष्ट ॥ गयो नाना भांतिके दुर्बचन कहिकै जौंन । सुनो द्वारावतीमे हम जायकै सब तान ॥ ताहि हनिबेको कियो हम नियत मनमे भूप । देशमे नहि युद्ध जानो प्रजनकों सुखरूप ॥ शाल्वके वधकों गए हम सौभपुरकों बीर । तान ढूढत मिलो हमकों सरितपतिके तीर ॥ आव्हान ताको कियो हम तब पांचजन्य बजाय । भरो सो डैधरी लरिकै युद्ध सन्मुख आय । यहि कार्य ते हम नही आए हस्तिनापुर भूप । रहत मेरे होत कैसे द्यूत अनय स्वरूप ॥ सुनो हास्तिन नगरमे जो भयो द्यूत कुकर्म । बेगि आए तुम्हे दुःखित देखिबे नृपधर्म ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ शाल्वको बध सहित विस्तर कहऊ फिरि बलबीरा होत तृप्त न श्रोत्र सुनिकै तो पराक्रम धीर ॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥ हतो हम शिशुपालकों सुनि शाल्व नृप करि क्रोध । सहित सेना आइ कीन्हों द्वारिकाको रोध ॥ व्योमचारी जानप चढि शाल्व नभमे जाय । कियो रुन्धित दसो दिशितें सहित सैन सहाय ॥ होन लागो युद्ध तिनसों रहे जे तहं बीर । चले आयुध सकल दिशिते सघन चंड गंभीर ॥ सुदृढ नाना भांति रक्षित पुरी सो अतिमान । रहतजामे वृष्णि यादव बीरवर बलवान ॥ सैन सह चतुरङ्ग राजा उग्रसेन सुजान । शाम्ब गद प्रद्युम्न उद्धव बीरवर बलवान ॥ शस्त्र नाना भांतिके अति उग्र यंत्र उदार । सहित पुरके ओर चारो बज्रसार प्रकार ॥ सावधान सु रहत हे तहँ वृष्णि अन्धक वीर । जानि आगम शाल्वको सह सैन सुभट गँभीर ॥ ओर चारो महत परिखा भरी सलिल अखर्व । धरी वुर्जनपैं भुसुण्डी महत आयत सर्व ॥ दुर्ग अतिही महत रक्षित भटनसों चऊओर । तौंन घेरो शाल्व भूपति सैन लै अति घोर ॥ एक मानुष निकसिवेकी रही कितऊ न राह । परी सेना शाल्वकी अति भरी युद्ध उछाह ॥ सौभनाम विमानपै चढि छाडि सैन गँभीर । शाल्व द्वारा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० वतीप गो पतगँसो बरबीर ॥ शाल्व सेना देखि आवत बीर बृष्णिकुमार । चारु दोष्ण सु शाम्ब अरु प्रद्युम्न बीर उदार ॥ साल्व सेनासौं भिरे ते निकसि बाहेर बीर । कठिन कार्मुक धारि करमे शाम्ब क्रुद्ध गँभीर ॥ क्षेम वृद्धि जो शाल्वको हो चमूपति बलवान । लरे तासों मारिबाणन्ह करो व्यथित महान ॥ क्षेम बृद्धिऊभई माया क्रोध करि शरजाल । शाम्ब ऊपर डारि दीन्हों महा घोर कराल ॥ शाम्ब माया शरणसों सो काटिकै बलवान । तास रथपैं क्रोध करिकै सहस बर्षे बान ॥ क्षेम बृद्धि सो भजो रणतैं बाणबेधित भूप । देखि आयो बेगवान सु दैत्य क्रुद्ध कुरूप ॥ बेगवान सु दैत्य पर तब गदा शाम्ब फिराय । मारिकै यमराजपुरकों दियो ताहि पठाय ॥ मारि ताकों शाल्व सेना माह पैठो बीर । मथनलागो शरणसों अति भरो क्रोध गभीँर ॥ चारुदोष्ण कुमारसों तहँ बीबिध दानव आय । तुमुल रण तहँ भयो दोऊ महाबल अतिकाय ॥ अन्योन्य दोऊ क्रोध व्हैकै गरजि गरजि महान । बृत्र बासव सदृश लागे निशित बर्षण बान ॥ चारुदोष्ण सुबाण लीन्हों अग्नि अर्क समान । सुमहास्त्रको पढि मंत्र छोडो क्रोध करि बलवान ॥ ❀

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

लगत बाण सो रथतें बीर । गिरो धरणिपर छोडि शरीर ॥ गिरो बिबिन्ध शाल्व नृप देखि । सेना भई व्यथित अवरेखि ॥ कामग सौभजान असवार । फेरि समरमह गयो उदार ॥ देखि द्वारिका बासी सैन । चढो सौभपर अतिबलऐंन ॥ शाल्व नृपति कह अतिबल मानी । कम्पित भई बिषम रण जानी ॥ तब प्रद्युम्न निकसि बलऐंन । यों सुभटनसों बोलो बैंन ॥ समाधानसों तुम सब बीर । ठाढे इहां रहो धरि धीर ॥ लखो हमारो युद्ध महांन । शाल्व निवारण करत सुजांन ॥ निशित शरणसो सेना मारि । देत शाल्वकी क्षितिपर डारि ॥ करी अभीत स्वसेना सर्ब ॥ लरन लगो प्रद्युम्न अखर्ब ॥ यदुबंशिनिसों कहि इमि बैंन । चढो परमरथपैं बलअन ॥ मकर केतु यों लसो बिशाल । मुख पसारि मनु धावत काल ॥ चपल तुरगँ इमि लसे अमान । मनऊ गगण मह चहत उडान ॥ बिद्युत सदृश चाप अति घोर । फिरत दुहू करमै दुहु ओर ॥ जोरत खैचत कोडत बान । अन्तर देखि न परो अमान ॥ बर्णबिकृत नहि भयो अनूप । कँपो न अङ्ग तास कुरुभूप ॥ गर्जनि ताको सिंह समान । सुनत वृष्णिबंशी सुखदान ॥ कढि प्रद्युम्न फौज तें तूर्ण । चलो शाल्वपर अमरष पूर्ण ॥ प्रद्युम्नागम लखि बलवान । शाल्व क्रोध करिकै अति मान ॥ छोडि सौंभ नभचारी जान । माया मय रथ बिरचि महान ॥ तापै चढि धनु धरि रण धीर । मीनकेतुसौं लरा गभीँर ॥ करीबाणबर्षा अति घोर । मीनकेतु रथप चहुँ ओर ॥ तब बरषे मकरध्वज बान । लहो शाल्वनृप मोंह महान ॥ सौभराज लहि तास प्रहार । भरो क्रोध धरि धनुष उदार ॥ बरषो अग्नि सदृश बर बान । मकरध्वजपर जलद समान ॥ तब प्रद्युम्न क्रोध करि बीर । लीन्हों मर्मभेदकर तीर ॥ शाल्व हृदयमह हनो सो बान । भेदो हृदय सबमेँ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

महान ॥ रथतें गिरो शाल्व बर बीर । तास चमू लखि भजी अधीर ॥ हाहाकार भयो अति ५०५०
मान । गिरत शाल्व भूपति बलवान ॥ कछुकबेर मह संज्ञा पाय । उठे शाल्वनृप फेरि रिसाय ॥
लै कोदण्ड चण्ड भुजजोर । हनो मीनध्वजके शर घोर ॥ शर सहि सो प्रद्युम्न गँभीर । रहो
अचल सो ढाढो धीर ॥ मूर्छा पाय गिरो रथमाह । गरजो देखि शाल्व नरनाह ॥ फेरि चला
बन लागो बाल । शाल्वनृपति भरि हर्ष महान ॥ लखि मकरध्वजको वश मोह । व्याकुल भए
वृष्णि भरि छोह ॥ तब दारुकसुत सूत प्रबीन । हाँकि चलो रथ रण तजि दीन ॥ कछू दूरि रथ
रण तजि जात । उठि प्रद्युम्न कहो इमि बात ॥ सूत करो तुम यह का कर्म । रण तजि चले
छोडिकै धर्म ॥ वृष्णिवंश सम्भव जे बीर । तिनको तहँ नहि धर्म गभीर ॥ देखि शाल्वको रणमें
उद्द । भयो कहा भय तुम्हे बिरुद्द ॥ सूतउवाच ॥ भयो न मोह हमै भय बीर । जानो शाल्व
प्रबल रणधीर ॥ रक्ष्य सारथिहि मोहित सूर । रथी सारथिहि ज्यों बलवीर ॥ तो रक्षण हम
धर्म विचारि । ल्यायो हों रणतें रथ टारि ॥ सुनि प्रद्युम्न सूतके बैन । कहो स्वरथ फेरण बल
अैन ॥ ऐसो फेर न कीजो कर्म । यह न महाबीरनको धर्म ॥ सो न वृष्णि कुल जात प्रमान । जियत
तजै रण भूमि महान ॥ भूमे गिरे शरण जो लेय । भजे कि शस्त्र डारि जो देय ॥ बाला बाल वृद्ध रथ
हीन । तिन्हैं हनत नहि बीर प्रबीन ॥ सूत कर्म शिक्षित तुम पम । जानत वृष्णिवंशको धर्म ॥
धर्म वृष्णिवंशिनको जानि । रण भू फेरि न तजियो मानि ॥ भजो युद्धते होय सभीति । कृष्ण विलो
कि न करिहै प्रीति ॥ गद बलभद्र सामुहें मोहि । कहिहैं कहा पलाइत जोहि ॥ दृष्णिवंशकी
नारी जौन । मोकौं देखि पलाइत तौन ॥ करिहैं हाँस लेय मम नाम । यातें हमे भलो
यमधाम ॥ धरिकै भार हमारे माथ । गए यज्ञ देखन यदुनाथ ॥ कृतवर्मा आवत मो साथ ।
मोहि निवारेहो गहि हाथ ॥ शाल्वहि जीति सकत हों बीर । तुम इत रहऊ महारणधीर ॥
हमको शंब पलाइत देखि । कहा कहैंगे बचन विशेखि ॥ रण तजि पितापास करि गौन । कहिहैं
कहा सूत मतिभौन ॥ कर प्रवृत्त रथ रणमुख हेरि । ऐसो कर्म न कीजो फेरि ॥ दारुक नन्दन
योग्य न तोहि । रणते करिबो बाहेर मोहि ॥ हमयुद्धार्थी हैं अतिमान । चलऊ जहां नृपशाल्व महान ॥

॥ * ॥ बासुदेव उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मराज प्रद्युम्नके सूतपुत्र सुनि बैन । कहन लगो यहि भांतिसों नीति निपुण मतिऐन ॥
विहित सूतको धर्म जो प्रथम कहो हम तौन । सूत कर्मकी निपुणता बीर लखऊ अब जौन ॥
दारुकतें उतपन्न हों तातें शोभित बीर । रथतो करत प्रवेश जँह शाल्वसैन गम्भीर ॥

॥ * ॥ बासुदेव उवाच ॥ * ॥

यह कहि बाग उठायकै हयन्ह कसासों मारि । चलो शाल्वकी सैनप्रति महावेगको धारि ॥
नाना भांतिके करत विचित्र विधान । बाम ओर करि शाल्वकी सेना धरि जवजान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० हत प्रतोदतें तुरगँते चहत गगणकों जान। धरणि नचावत चरणतें महा बेग बलवान ॥
दक्षिणदिशि प्रद्युम्नकों देखि शाल्व अतिउद्ध । दारुक सुतकों तीनि शर हनो होय अतिक्रुद्ध ॥
दारुक सुत मानो नही शरप्रहार अतिघोर । चलो हाँकि रथ बेगसों शाल्व दाहिनी ओर ॥
बाण अनेक विधानके सौभराट बलवान। छोडतभो प्रद्युम्नपै करिकै क्रोध महान ॥
ते शर अपने शरणसों काटि गिराए बीर । मकरध्वज अतिरथिनमे महाधनुर्धर धीर ॥
कटे देखिशर शाल्व तब करिकै क्रोध महान । धरिकै माया आसुरी बरषण लागो बान ॥
असुरअस्त्र अनुमानिकै मीनकेतु बरबीर । योजित करि ब्रह्मास्त्रकों दरो ताहि रणधीर ॥
दमन लगो ब्रह्मास्त्र सो दनुजनको समुदाय। शिर मुख हृदय बिदारिकै कियो जर्जरित काय॥
शरपीडित निपतित चिते क्षुद्र शाल्वकों बीर । कियो बाणसन्धान सो जो परसमन गँभीर ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

बृष्णिबृन्दमह अर्चित जोहै । अग्नि समान बाण बर सो है॥ ज्यासङ्गम शरसों जब भयो। हाहाकार गगणमँह भयो ॥ सुरन्हसमेत अमरपति आए । तहँ नारदकँह बेगि पठाए॥ नारद कही सुरणकी बानी । रौहिणेयसों आनद सानी ॥ शाल्व वध्य तुमतें नहि मानो । याकी मृत्यु क्षत्रकर जानो॥ एहि विधिकी लिपि व्यर्थ न कीजै । शर संहारि तूणमह दीजै॥ या शरसों उबरत नहि कोऊ। बीर बिचार करऊ तुम दोऊ ॥ व्है प्रसन्न प्रद्युम्न बिचारो । ज्यासों शर सन्धान निवारो ॥ शाल्व नृपति शर पीडित भागो। उठि चढि सौभ गगणमग लागो ॥ ॥ वासुदेवउवाच ॥
कुरुपति जब तो मखतें गयो। द्वारावतिहि बिलोकत भयो ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

लखी हों द्वारवतीकों खेद पूरण भूप। यज्ञ बेदाध्ययन होत न प्रजाज्ञान सरूप ॥ भष्ट उपवन नगरके चऊओरके अभिराम । देखि प्रमदा पुरुष सिगरे भरे क्षोभ अकाम ॥ क्षतधर्मसों हम लगे बूझन कहऊ कारण जौंन । पायकै हत श्री भयो यह नगर आनदभौंन ॥ कहो तेहि वृतान्त सिगरो शाल्व क्षत नृपधर्म। सुनत हों तेहि मारिबेको कियो निश्चय पर्म॥ समाधान सु प्रजनको सबभांतिसो करि भूप । लेइ शासन उग्रसेन महीपको अनुरूप ॥ बृष्णिबंशिनसो कहे हम हर्ष कारक बैंन । शाल्व बधकौं जात हमको देखियो सहचैंन ॥ शाल्व नृपको मारि तुमको देखिहै फिरि आय। दुन्दभी बजवाय दीन्हो स्वपुरको सुखदाय॥ बृष्णिवंशिन कहो ताको जाय मारऊ बीर। द्विजनके पदवन्दि आशिष लेय मोद गँभीर ॥ चढे नन्दौघोष रथपर पाञ्चजन्य बजाय। सौभपुरको चले सह चतुरङ्ग सैन सहाय॥ देश गिरि बन सरित नानाभातिकी अवगाहि। सौभना मा नगर ताको जाय घेरो चाहि॥ सुनो तहँ है शाल्वभूपति सरितपतिके तीर। सौभपै चढिभयो तेहाँ सहित सेना बीर॥तहाँको हम जाय देखो सिन्धु नाभी माह।सौभपै चढि रमत सो सह दनुज

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बलनर नाह ॥ देखि हमकौं दूरसो आव्हान लागो करण । युद्धको कछु हँसत सो बलमत्त भूलो मर्ण ॥ शार्ङ्ग मुक्त न तहाँ पऊचे बाण मेरे पम । क्रोध मेरे भयो तब अति सुनऊ हे नृपधम ॥ बाण धारा लगे बर्षण मेघसो सो बीर । कियो छादित हमै सेना सहित अति गम्भीर ॥ शरवर्षतैं नहि भई अंकित सैन मेरी भूप । युद्धलागे करण सैनिक बीरवर अनुरूप ॥ शाल्व सैनिक असुर वीरन्ह बाणको झरि लाय । दई मेरी सैन सिगरी चक्रदिग्गिते छाय ॥ कोऊ देखि न परो काऊ हि भयो शर तम जाल । मंत्रपढि हमऊँ चलाए बाण बऊ क्षितिपाल ॥ युद्धको मम सैनिकनको मिलो नहि अस्थान । गगणमे सो सौभ देखो भयो कोस प्रमान ॥ तहा मेरी सैंन ठाढी रही देखत भूप । मोहि दर्पित करत हे करि नादको अनुरूप ॥ बाण मेरे दानवनके अङ्गमे अतिमान । सलभ ज्यो गिरि शृङ्गमे त्यों लगे सकल समान ॥ हलहला शब्दसो भयो तब तेहि सौभमे अतिघोर । गिरण लागे दनुज कटि कटि सिन्धुमे करि सोर ॥ शङ्खको हौं नाद कीन्हा मनुजभयकर भूरि । कढत अपनी चमूकों लखि शाल्व भयसों पूरि ॥ प्रगट करि कै दनुज माया करण लागो युद्ध । शस्त्र नाना भांतिके बऊ लगो बर्षण उद्ध ॥ ताहि मायाअस्त्रसों हौं कियो बारण भूप । शिखर डारन लगो तब धरि दुष्ट माया रूप ॥ धूरि पूरि अँगार बर्षण लगो सो अतिमान । तास मायामयी शरसों कियो नाश महान ॥ व्योममे शशिसूर तारा परे शत सह देखि । दिवश निशि दिशि बिदिस हमकों परो नहि कछु लेखि ॥ कियो प्रज्ञां अस्त्र योजित जानि माया खर्ब । तूल चयकों अनल जैसें कियो नाशित सर्ब ॥ भयो तब सब दिशनमे अति बिमल भूप प्रकाश । करण लागे युद्ध हम तब देखि मायानाश ॥ युद्ध करि कै शाल्व हमसों भयो फिरि नभलीन । शस्त्र नाना भांतिके बऊ लगो बर्षण पीन ॥ शरनसों ते काटि कै करि खण्ड डारे भूप । भयो तब नभमाह हाहाकार भयङ्कर रूप ॥ तब सहस्रन्ह शरनसों रथ बाजि सूत समेत । छाय हमकों लियो दनुजन्ह किहो व्याकुल चेत ॥ कहो हमसों व्यथित दारुक शराक्रंन्न शरीर । भागिबे नहि योग्य यातें रहत हों यदुबीर ॥ शक्य हों नहि रहन केशव अङ्ग बेधित बान । सारथीको बचन सुनि हम दुखित दीन महान ॥ लखे हम तब बाण बेधित अङ्ग ताके सर्ब । बहति ताकी देहतें सब रुधिरधार अखर्ब ॥ कियो आश्वासन सु ताको बचन कहि सविवेक । चढो रथ तँह पुरुष आयो द्वारिकातें एक । शाल्व मारो जनकको तब द्वारिकाको जाय । बोलिबेको तुम्हैं दीन्हों उग्रसेन पठाय ॥ युद्ध छोडऊ बेगि चलिए द्वारिकाको बीर । तुम्हे रक्षा योग्य करिबे वृष्णिवंश गभीर ॥ सुनत ताको बचन व्याकुल भयो मेरो चेत । छोडि आए द्वारिकामे इन्हैं रक्षा हेत ॥ प्रद्युम्न अरु बलभद्र सात्विकि साम्ब सह अनिरुद्ध । सके रक्षि न द्वारिकाको मरे का करि युद्ध ॥ इन्हैं जीवत मारिबेको शक्य को बसुदेव । मरे आनकदुन्दभीके सङ्ग ए सब एव ॥ भयो बिकल नाश सबको फेर बेर बिचारि । शाल्व सों फिरि युद्ध लागो करण धीरज

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

धारि ॥ फेरि देखो पिताकों हों गिरत नभतें भूप । हाथ पाय पसारि बिथरे केश मृतक स्वरूप ॥ हनत आवत शूल यष्टिशसों निशाचर घोर । लएँ आवत गगणसों यहि भांति कीन्हें सोर ॥ मोहबश हम भए करतें गिरो धनुष महान । परे रथपर हाथ पाय पसारि मृतक समान ॥ घरी ह्वैमे भई संज्ञा हमै जब नृप धर्म्म । फेरि हम नहि कछू देखो दनुजमाया कर्म्म ॥ जानि माया राक्षसी फिरि लेइ धनुष महान । शरनसों पुनि मारि डारण लगे असुर अमान ॥ शाल्व अन्तर ध्यान भो फिरि सहित सोभ नरेश । परो जब नहि देखि मनमे भयो महत अँदेश ॥ दनुज लागे करण जहँ जँह गगणमे अतिसोर । शब्दवेधी अस्त्र तहँ तहँ लगे डारण घोर ॥ दैत्य दारुण लगे वर्षण शैल शिखरन्ह कोपि । सहित रथ तिन दियो हमकों चहूँदिशितें तोपि ॥ भए हम अप्र गट चारोओरतें गिरिमाँह । लखें बिनु सो सैन भाजी हहा करि नरनाह ॥ देखि हमकों परो नहि नभ दिशा चारोंओर । देखि हर्षित भए अरि करि सुहृद रोए सोर ॥ कियो हम सु स्मर्ण हरिप्रिय वज्रको तब भूप । स्मर्ण करत सो पाणिमे मम बसो आय अनूप ॥ मारि तासों चूर्ण सम हम किए पाहन सर्व । भए लहि गिरि भार कम्पित सु रथवाहक सर्व ॥ देखि मोकों बन्धु मेरे लहो हर्ष महान । जलद पटल बिदारि निकसो क्रोक जैसें भान ॥ सूत दारुक कहो मोसों शमदृक तब बैन । कृष्ण देखो सोभ पर यह शाल्व है बलऐन ॥ बेगि याके मारिबेको यत्न कीजै धीर । मरत नहि मृदुयुद्धसों यह करुऊ कर्कश वीर ॥ यत्न नानाभाँतिके करि हनो शत्रु बिचारि । नहि निरादर कीजिए लघु शत्रुकों निरधारि ॥ हनऊ यातें बेगि याकों नहो ।वत वऊकाल । बध्य नहि मृदुयुद्धतें यह करऊ बीर कराल ॥ जेहि हेतुतें यहि कियो सहित द्वारिकाकों जाय । तौंन तत्व बिचारि बधकों करऊ बेगि उपाय ॥ सोभ जातें गिरै मारो जाय यह खल बीर । करऊ तौंन उपाय आतुर करऊ बेर न धीर ॥ मुहूर्त भरि थिर रहो दारुक सो सु कहि कै बैन । स्मर्ण चक्र सुनाभको हम कियो तेजस ऐन ॥ चक्र आयो पाणिमे मम दनुज अन्तक रूप । करो प्रेरित वचन यह कहि सुनऊ सो कुरु भूप ॥ हनऊ सोभ निपाति दानव दुबन मेरे जौंन । चलो नभकों चक्र सो मम पाणि प्रेरित तौंन ॥ प्रलय कारक दूसरो मनु उदय भो मार्तण्ड । लखि सुदर्शनको परो यहिभाँति रूप प्रचण्ड ॥ सोभ डारो द्विधा करि हर हनित त्रिपुर समान । फेरि आयो पाणिमे हनि दनुज वृन्द महान ॥ फेरि प्रेरित कियो हम कहि शाल्वको बध भूप । शाल्वकों करि द्विधा डारो ससो चण्ड स्वरूप ॥ शाल्वको बध देखि भाजे दैत्य चारोओर । बऊत डारे मारि क्षितिपर शायकनसों घोर ॥ गए रथ लै सोभके ढिग शङ्खको करि नाद । भए हर्षित सुहृद जन सुनि जानि कै निर्वाद ॥ मेरु शिखर समान सोभस सौध गो पुर मान । देखि भाजी तरुणि तिनकी लए दुःखित प्रान ॥ सोभ शाल्व निपाति ऐसी भाँतिसों नृपधर्म । गए द्वारावतीकों तँह भयो आनद पर्म ॥ याह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हेतुत हम नहि आए हस्तिना पुर भूप । होत द्यूत न नृप सुयोधन रहत जीवित रूप ॥ होत का वप्प०
अब सेतु फूटे निकसि ज्यों जल जात । होन हारी होयगी सो समै पाएँ तात ॥ * ॥ वैशम्पायन
उवाच ॥ * ॥ यह भाँति कहि कै पाण्डवनसों विदा ह्वै यदुनाथ । स्वसा सह अभि मन्युकों लै
गए घरकों साथ ॥ धृष्टद्युम्नौ विदा ह्वै सुत द्रौपदीके सर्व । गए लै पाञ्चाल पुरकों भरे दुःख
अखर्व ॥ धृष्ट केतु सुखसा अपनी भागिनेय समेत । मुक्तिमति खपुरिकों लै गए विव्हल चेत ॥
कैकेय भूपति विदा ह्वै कै पांडवनसों बीर । गए अपने नगरकों मन भरे शोच गँभीर ॥ रहे
ब्राह्मण वैश्य जे कुरुदेश बासी पर्म । सहित आदर विदा कीन्हें तिन्हें भूपति धर्म ॥ भयो काम्यक
विपिनिमे समुदाय हौ इमि पर्म । धौम्य आज्ञा लै करायो सज्ज रथ नृपधर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे श्रीकृष्णागमन
आत्मबधोपाख्यान वर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ * ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥ *

धर्मराज भ्रातन सहित कृष्णासह अभिराम । धौम्य सहित रथ पै चढे चले छोडि वनकाम ॥
बसन हेम बहु द्विजनकों देय दक्षिणा भूरि । चले महाबन द्वैतकों द्विजन्ह सहित मुदपूरि ॥
सकल शुभद्राके बसन भूषण बर कुरुनाथ । पठये द्वारावतीकों इन्द्रसेनके साथ ॥
आय तहाँके विप्रवर सकल वर्ण समुदाय । ऐसें सब लागे कहन सकरुण बचन सुनाय ॥
पिता सदृश नृपधर्म तुम हमकों पुत्र समान । छोडि कहाँकों जात हौ कृपासिन्धु सुखदान ॥
बहुत बार तिनके बचन सकरुण सुनि भरि प्रीति । अर्जुन तब तिनसों लगे ऐसे कहन सनीति ॥
बारह बर्ष बिताय कै बनवास अतिमान । तब हम अरि कै सुयशको करि है ग्रास महान ॥
अर्जुनके ए बचन सुनि ब्राह्मणादि सब वर्ण । सुति करि नृपधर्मको लगे प्रदक्षिण कर्ण ॥
लै आज्ञा नृपधर्मकी प्रजा सविप्र अखर्व । चले आपनें देशकों भरे शोचसों सर्व ॥
बिदा तिन्हें करि धर्मनृपश्रातनसों इमि बैन । सादर लागे कहन तब शील सुमतिके ऐन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

द्वादश बर्ष विपिनिको बास । करिबे हनै सुनऊ सतिरास ॥ देखऊ होय महाबन जौन ।
बहु मृग बहु पक्षिणको भौन ॥ बहुत पुष्प फलतें रमणीय । बसैं जहाँ मुनिगण कमनीय ॥
तहां करैं ए बर्ष व्यतीत । यह सुनि बोले जिष्णु सनीत ॥ नारद व्यासादिक मुनि जौन । करत
सर्वलोकन मह गौन ॥ तुम सेवत तिनकों मतिमज्ञ । तुमसो और कौन सरबज्ञ ॥ मनुजलोकमे
अविदित जौन । तुमसों भूमि भागसो कौन ॥ श्रेय हेतु तुम जानत भूप । कहै करैं तँह बास
अनूप ॥ यह बन द्वैतनाम अभिराम । जहां सुपुण्य सरोबर नाम ॥ पुष्प फलनसों अति रम
णीय । बसत जहां द्विज बर कमनीय ॥ द्वादशाद्द तहँ करी बिहार । तो सम्मत जौ होय उदार ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ तुम जो कहो हमै सो पर्स । तँह चलि पार्थ बसऊ सह धर्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तहां गए चलि पाण्डव सर्ब । द्वैतबिपिनि जँह ससर अखर्ब ॥ साग्नि अनग्नि द्विजनके साथ । रथतें उतरि गए कुरुनाथ ॥ तहँ वनबासी द्विज तपरास । आए बऊत धर्मनृप पास ॥ नाना भांतिनके तरु पर्म । फूले फले लखे नृपधर्म ॥ बऊत जातिके सुरंग विहङ्ग। बोलत स्तुति सुख भरे उमङ्ग ॥ करिणिन सह गजजूथप जौंन । बिस्सि फिरत अन गणित जौंन ॥ सरस्वती सरिताके तीर । देखि सिद्धगण बसत गँभीर ॥ तँह तजि जान गए कुरुबीर ॥ आए तँह मुनिबृन्द सुधीर ॥ बनबासी देखनके हेत । आए भरे कुतूहल चेत ॥ सिद्ध मुनिनको पूजन पर्म । बेदबिहित कीन्हों नृपधर्म ॥ पाणि जोरि नृपधर्म सुजान । बैठे तिनमह भूप महान ॥ पाय मुनिनसों पूजन पर्म । हर्षित भयो महा नृपधर्म ॥ लहि कदम्ब तरुकी घनछाँह । बैठे सह भ्रातन्ह कुरुनाह ॥ तेहि बन विहरत भूप कुमार । लहि बनबासज दुःख उदार ॥ सरस्वती सरिताके तीर । जहाँ शाल तरु बिपिन गँभीर ॥ जती द्विजनकहँ भोजन भूप । देत मूल फल अन्न अनूप ॥ यज्ञसु श्राद्धादिक जे कर्म । धौम्य करावत नित्यसो पर्म ॥ मार्कण्डेय सु मुनि तपराश । आए तँह भूपतिके पास ॥ ज्वलित ऊताशन सम मुनि पर्म । कियो तास पूजन नृपधर्म ॥ कृष्णा सहित पाण्डवन्ह देखि । मुनिगण मध्य लसत अवरेखि ॥ स्मर्ण हिएँ रघुबरको धारि । बिहँसे सुमुनि महा निरधारि ॥ भए बिमन लखि कै नृपधर्म । मुनिगण भए सुलज्जित पर्म ॥ तब मुनिसों बूझो कुरुभूप । हेतु बिहँसिबेको अनुरूप ॥ * मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ हँसे न खुसी भए कुरुबीर । हर्षज दर्पण सोमे धीर ॥ तो बिपत्य यह लखि अतिसाम । समुझो दाशरथी हम राम ॥ मानि पिताको शासन साम । लक्ष्मण सहित बसे बन राम ॥ हम ऋषि मूक शिखर पर धीर । देखो धनुष धरे वर बीर ॥ सहस्राक्ष सम त्रिभुवन भूप । लोकपाल नेता अनुरूप ॥ त्यागि भोग बन बसे सधर्म । अतिबल करत न दुःकृत कर्म ॥ बर भगीरथादि जे भूप । भए महाबल धर्म स्वरूप ॥ भूमि जीतिबश कीन्ही सर्ब । कियो अधर्म न प्रबल अखर्ब ॥ बिधितें बिहित जौंन मर्य्यादा सन्त करत नहि ताके बाद ॥ करि बिधि बिहित सप्तऋषि कर्म । नभमे बसत प्रभा धरि पर्म ॥ अति बल गिरिसम गजबर जान । नहि बिधि बिहित तजत पथ तौंन ॥ नाना योनिज भूत अखर्ब । नहि बिधि बिहित तजत पथ सर्ब ॥ तुम हो सत्य धर्मप्रिय नीति । तुम सब सकत भूत गण जीति ॥ तो यश तेज दीप्त अतिजौंन । लियो सुयोधन कुल करि तौंन ॥ यथा प्रतिज्ञा करि बनबास । सो लेहो करि कौरव नाश ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धर्म नृपतिसों कहि इमि बैंन । मार्कण्डेय तपस्यार्थैंन ॥ बिदा होय कुरुपतिके पास । गए पुरातन मुनि तपराश ॥ पाण्डव बसे द्वैतबन सर्ब । ब्राह्मण सङ्कुल भयो अखर्ब ॥ बेद घोषसों पूर्ण महान । ब्रह्मलोकके भयो समान ॥ ज्या निर्घोष बेद धुनि पाय । शोभित बिपिनि भयो सुखदाय ॥ बकदालभ्यकुलोद्भव

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

नृपधर्म । वक दालभ्य कुलोद्भव पर्म ॥ संध्या करण लगे जब भूप । ऐसे वचन परम सुखरूप ॥ बल्व०
लखऊ द्वैतबन हेकुरु बीर । संध्या समय पाय द्विज धीर ॥ करैं प्रज्वलित होम ऊतास । लसत
चहूदिशि सरवर पास ॥ तुमतें रचित विरचें धर्म । नाना मुनि सम्भव द्विज पर्म ॥ जगत श्रेष्ठ
जे ब्राह्मण भूप । करे एकत्र तिन्हैं अनुरूप ॥ सुनऊँ वचन यह मेरो पर्म । भ्रातन्ह सहित अहो
नृपधर्म ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥
ब्राह्मण खत्रीसों मिलें खत्री ब्राह्मण माँह । दहै शत्रुज्यों बन अनल अनिल मिलें नरनाह ॥
खत्री ब्राह्मण हीन जो सो न युद्ध जय लेत । दुहूं लोकतें होतहै नष्ट सो भ्रष्ट अचेत ॥
सुधरम रत गत मोह द्विज जा भूपतिके पास । सोई बैरिणको करत रणमह मारि विनाश ॥
औकर पालन प्रजाको धर्म धरत नृप जौन । लहत उपाय न सिद्धिको तजि ब्राह्मण कज तौन ॥
पाई बिप्रप्रसादतें बसि श्री अक्षय रूप । द्विजसों कीन्हें दुष्टता भई नष्ट सो भूप ॥
बिप्र बिमुख भूपाल जो भूमि बरत नहि ताहि । जैसें निर्गुण पुरुषकों तजति सुन्दरी चाहि ॥
खत्री ब्राह्मण हीनको नष्ट होत बल सर्व । अनुपम मतिहै बिप्रकी खत्री प्रबल अखर्व ॥
दोऊ जब मिलिकै चलै जीतैं लोक महान । दहत महा बनकों यथा अग्नि मिलें पवमान ॥
लेत विप्रसों बुद्धि बर सेावी नृप जौन । अलभ लाभकों लाभ जो बृद्धि करणकों तौन ॥
यशी बेदबिद बजत श्रुत धरैं जो नीति बिचार । भूपति ऐसे विप्रकों राखै पास उदार ॥
ब्राह्मणमे है वृत्ति ते उत्तम है नृपधर्म । यातें तो यश जगतमे पसरो है अतिपर्म ॥
॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
महामुनिनके पुत्र जे रहे महश्रुतिधर्म । तिन सब नहि पूजित कियो तब बक मुनिकों पर्म ॥
बैठे भ्रातन सहित तँह धर्मनृपति अभिराम । कहन लगे इतिहास कछु दुसह दुःख बिश्राम ॥
प्रिया पंडिता सुन्दरी कृष्णा प्रति मतिअैन । कहन लगी नृपधर्मसों बचन बिसारे बैन ॥
॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥
धार्तराष्ट्र कृत दुःखसो नियत नसेमे भूप । कुशशायी अजिनीबरी देखि तपति तव रूप ॥
मा सह तुमकों चलत बन अजिनम्बरकों धारि । रोंए सिगरे जगत जन बिना दुष्ट ए चारि ॥
शकुनि सुयोधन सूतसुत दुःशासन अघअैन । चलत हमै बनकौं नही इनक पसिजे नैंन ॥
॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥
लखति शय्या रावरीयह कहावह अभिराम ॥ सुखोचित दख लहत तुम यह क्लेश मोहत
माम ॥ सभामे मणिमय आसन पैं स नृप समुदाय । लखति तुमको रही सो हों लखति
ऐसें हाय ॥ चीर अजिनम्बरधरे कुशशयन पर तो गात । देखिकै नपधर्म मोसों सहो दुःख न

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जात॥ जैन चन्दन लिप्त तो तन सूर्यकान्ति समान। धूलि धूसर लखति सो दुख कहा यातें आन॥ जैन सुबरण पात्रमे भरि अन्न अमृत समान। देति सहसन द्विजनकों हम रही अति सुखदान॥ बण्यभोजी भई हमसो पत्रपुटकन माह। दुःख यातें और कछु है कौन हे नरनाह॥ कनक कुण्डल धरें मणिमय छद जे मतिमान। तव आतरनकों करावतहै मिष्ट भोजन पान॥ निन्हे सब कों लखति हौं मै बण्यभोजन कर्त्त। दुःख योग्य न रहे ते सब महा दुखसों भर्त्त॥ भीमसेनहि करत कारज सकल अपने हाथ। देखि बढत न क्रोध क्यों तो समय लहि कुरुनाथ॥ जान भूषण बसन बिहरत रहे जे बज रूप। अजिनाम्बरा लखि तिन्हैं तो किम चढत क्रोध न भूप॥ सर्ब कौरव हन नको जो करतहैं उतसाह। भीम तो यनकी प्रतीक्षा करतहैं नरनाह॥ बऊबाऊ अर्जुन तुल्य जैन दुबाऊ अर्जुनबीर। बाणबर्षत युद्धमे करि हस्त लाघव धीर॥ जास पाय प्रताप सिगरे आइकै बरभूप। यज्ञमे तो कियो सेवन होय भृत्य स्वरूप॥ पुरुषसिंह सो मनुज दानव देव पूजित बीर। देखि दुःखित ताहि क्यों नहि करत क्रोध गभीर॥ पांडु नृपकी सुषा कन्या द्रुपदकी अभि राम। बीरपत्नी धर्म्मचारिणि अनुग तो बलधाम॥ सहति दुख बनबासको लहि दुष्टसों अप मान। देखि मोहि न होत तुमकों क्रोध भूप महान॥ क्रोधहै नहि रावरे यह नियत जानो भूप। लखत दुःखित सहित भ्रातन्ह हमै शान्तस्वरूप॥ क्रोध रहित न होत क्षत्री कहतहै ससार। तौन उलटी लखति तुममे सुनऊ भूप उदार॥ करत तेज न प्रगट क्षत्रीजौन औसर पाय। सो न आदर लहै जगमे षंड सदृश लखाय॥ क्षमाकरिबो योग्यहै नहि शत्रु प्रति रणधीर। मारिबेके शक्यहैं ते तेजसों तवबीर। क्षमाको लहि काल क्षत्री क्षमा करत न जौन॥ होत अप्रिय जगतमे परलोक नाशक तौन॥ कहतिहौं इतिहास यामे तौन सुनिए भूप। प्रल्हादसों बलि जौन बूझो क्षमा तेज सरूप॥ बलिरुवाच॥ तात श्रीकर क्षमाहै कै तेज कहिए तौन। सहित निर्णय मिटै जासों भयो संशय जौन॥ प्रल्हाद उवाच॥ क्षमा ते यश नित्यमे नहि श्रेयकर मतिमान। तात जानऊँ रूप जैसो दुऊनको सविधान॥ नित्य कीन्हें क्षमाके नृपलहत दोष महान। भृत्य आदर करतहैं नहि डरत रिपु न समान॥ जीव मात्र न डरत ताकौं तेहीन बिचारि। नित्यकीबो क्षमा को श्रेयकर निरधारि॥ भृत्य हरत सुवित्त ताको जौन शान्ति स्वरूप। सरबस्व ताको लियो चाहत जेरधिकारी भूप॥ देत जाहि देवाय धन नहि देत भृत्य अमान। क्षमीकों नहि कोऊ मानत होत मृतक समान॥ कटुक बोलत क्षमिहि अरिलौं मित्रभृत्य सपुत्र। दार धामहि हरणको नित रहत बाधैं सूत्र॥ क्षमी की बनिता करैं जहँ चहैं तँह स्वार। कण लागैं प्रजा निर्भय होयकै व्यभिचार॥ नित्य कीन्हें क्षमाकें नर लहत दोष अनेक। क्षमा जेहाँ योग्य तेहाँ कीजिए सबि बेक॥ क्षमावानन माहिँ ऐसे होत दोष अनेक। क्षमिनके ए दोष तुम अब नो सहित बिबेक॥ योग्यमे सु अयोग्यमे है दण्ड करिबो जौन। होत विग्रह मित्र हू सों अयशकरण जौन॥ द्वेष कारो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लोकमे सब स्वजन ताके होत। लहत सो अपमान जातैं बित्त हानि तनोत ॥ सन्ताप द्वेष समोह ब०प०
नातें बढत शत्रु अनेक। दण्डतें अरु क्रोधतें जो करत विगत विवेक ॥ स्वजनतें ऐश्वर्य तें गिरि परत
ह नर तौन। अहित हित हूमे रहत नित तेज धारें जौन॥ होत ताते व्यथित सब जिमि सर्प आएँ
धाम। लोक जासों व्यथित ताको होत विभव न साम ॥छिद्र ताको रहत देखत लोक जातें सर्ब।
योग्य धरिबो उग्रता अरु मृदुलता न अखर्ब ॥ यथा काल सु धरी मृदु ता उग्रता मतिमान।
करें साधन कालको सुख लहत सुनऊ सुजान ॥ क्षमाको अब कहतहै हम काल सुनिए तौन।
कहत हैं मतिमान जाकों नीतिवेत्ता जौन॥ पूर्व जेहि उपकार कीन्हों करै सो अपराध।क्षमा तेहां
करत बुधजन करत तास न बाध ॥ अबुद्धि कृत अपराध लखिकै क्षमा करत सुजान। पाण्डित्य
सबकों होति नहि सब ठौर सुनऊ प्रमान ॥ बुधिसों अपराध करि जो कहै वश अज्ञान। ताहि
दीजै दण्डकों अन्याय जानि महान ॥ क्षमा कीजै एक प्रथमहि जानिकै अपराध। दूसरो जौं
करै करिए तुरित ताको बाध ॥ अज्ञान तें अपराध जौं कछु होय दानव भूप। समुझि नीको
भाँति सों तह क्षमा करन अनूप ॥ शमसों हनिए सुदारुण औ अदारुण ताहि। शमसों कछु
है असाध्य न कहत सुमति सराहि ॥ देश काल बिचारि अपनो बलाबल अनुमानि।सिद्धि होय
सो करै जो जन देश कालहि जानि ॥ होत जासे जौन ताको तौन देश न काल । तहाँ करत न
कार्यको प्रारम्भ सुमति बिशाल॥ क्षमाको नहि काल है अब धरऊ तेजसरूप।कार्यको जो काल
जानत भूप सो कुरु भूप ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ क्रोध हर्ता क्रोध कर्ता राजश्रीको सर्ब।
जानि सुन्दरि क्रोध है क्षय बृद्धि करण अखर्ब ॥ क्रोधकों संहरत जो है जन्म ताको पर्म्म । नित्य
क्रोधी पुरुषको है क्रोध नाशक कर्म्म ॥ प्रजनको जो नाश ताको मूल क्रोधहि होत। करै हमसो
कौन ऐसे क्रोधको सु उदोत ॥ पाप कारक होत क्रोधी हनत गुरुके प्रान । परुष क्रोधी कहत
है करि महतको अपमान ॥ वाच्य और अवाच्यको है कुपितकौन बिचार । कुपितकों नहि कार्य
कछु दुर्वचनको आधार॥अवध्यहूकों बधत क्रोधी बध्य राखत पास।देत अपनी आतमाकों कुपित
यमपुर बास ॥ क्रोधमे लखि दोष नाना धीर हमसे जौन । जीति क्रोधहि अभय राखत लोक
दोनो तौन ॥ यह बिचारि न बढत कृष्णा क्रोध मेरो पर्म्म। आत्म परको करे रक्षण होत है अति
धर्म्म॥ मूढन रहत शक्ति करत जो बली ऊपर कोप।करत अपनो प्राण सो यमपुरी माह अरोप॥
तजे आत्मा आपु सों परलोक बिनसत साम । अशक्तकों हैं क्रोध हरिबे द्रौपदी अभिराम ॥
सुनऊँ सुन्दरि बली दुर्बलकों सदां सुखदान। क्षमा करिबो पुरुषको हित कहत सकल सुजान॥
क्रोधको जो बिजय करिबो साधु बरणत तौन।क्षमा करिबो जगतमे है बिजयको वर भौंन॥ असत्य
सों हैं सत्य श्रेय नृशंस सो अनृशंस। यथा करिबो क्रोध बर्जित कियो सुमति प्रशंस ॥ क्रोध बर्धित
की जो बाधा करत हैं मतिमान। कहत तेजस्वी तिन्हैं जे जगत माह सुजान ॥ नहीं क्रोधी कार्य

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

और अकार्य देखत मन्द । सुनऊ तातें दूरि कीजै क्रोध दायक दन्द ॥ दाक्षिण्य सौर्य अमर्ष तुर ता है तेजस्वी माह । क्रोध जीते जिन्हें ते गुण लहत नहि नरनांह ॥ क्रोधकों तजि पुरुष पावत तेज कों अभिराम । मनुज लोक विनाश कारक क्रोध है अतिमाम ॥ तजतहैं सतपुरुष होतें क्रोधकों अतिमान । करहिँ कैसे त्याग सो हम क्षमाको सुखदान ॥ क्षमावानन पुरुष होते धरासे धृतधीर । होति प्रीति न मनुजमे अति बढति कलह गँभीर ॥ क्षुद्र व्हैके कहत क्रोधी और छकों क्षुद्र । होत तातें जगतमे जन नाश कारण उद्र ॥ क्रोधवश सुत हनत जन कहि पिता सुतकों तैंान । हनति भार्या पतिहि भार्यहि हनत है पतिजैंान ॥ कोपवशजग होत तौ जनजन्म कैसें लेत । जन्मका रण प्रीति है यहि लोक माँह सनेत ॥ क्षमावान सो लोकमे हैं मोद कारणसर्व । क्षमाही सों होत हैं सब सिद्धि कार्य अखर्व ॥ कही काश्यप महा मुनि यह सुनऊँ गीता तैंान । जानि तुमकों परै सुन्दरि क्षमाकों गुण जैंान ॥ धर्म यज्ञ सु शास्त्र श्रुति है क्षमा अति अभिराम । जैंान जानत करत सबपैं क्षमा तैंान ललाम ॥ सत्य धर्म सु भूत भावी शौच सुतप उदार । तैंान सब तुम क्षमा जानऊँ जगतको आधार ॥ ब्रह्मलोक सो लहत है जे क्षमावान सुजान । तैान कृष्णा बजै कैसें क्षमाकों अति मान ॥ क्षमावान समान कोऊ जगतमे नहि आन । ब्रह्म पदकों लहत हैं जे क्षमा धरत सुजान ॥ क्षमा गीता महा मुनिकी कही सुनि करि बोध । क्षमा धरिकै रहऊ कृष्णा करऊ अब मति क्रोध ॥ पितामह आचार्य गौतम विदुर सञ्जय जैंान । सोमदत्त युयुत्सु अरु श्रीकृष्ण मेधा भैंान ॥ व्यासादि सब ए साम नितिहों कहत नृपके पास । राज्य दैहैं हमैं जानत नतरु लहि ह नास ॥ भयो भामिनि प्राप्त दारुण कौरवनकों काल । हमै निश्चय रहो सुनऊ सुपूर्वही सों हाल ॥ नहि सुयोधन राज्य योग्य सु क्षमा तामे हैं न । राज्यके हम योग्य यातें क्षमावे हैं चैंन ॥

॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तैंान बिधाताकों करति नमस्कार हों भूप । जिन दीन्हो मति आपुकों महा मोहको रूप ॥
पिता पितामहकी रही नित्य वृत्ति जो पर्म । मति तामे भङ्ग अन्यथा जातें तो व्यधर्म ॥
पूर्व कर्म अनुसार विधि भोग जन्म दै देत । नित्य सो तातें चहत हैं व्यर्थहि मोक्ष स्वेत ॥
दया धर्म छटजुता करे मिलति न श्री अभिराम । पूर्व कर्म सो देत है सुख दुख श्री अरु नाम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भया तुमकों प्राप्त यह जो दुःख दुःसह भूप । नहीं ताको योग्य तुम नहि बन्धु तोअनु रूप ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मप्रिय तुम हौ सदा सहित बन्धु वर बीर । हौं धर्मार्थक राज्य तो जीवन सनि गँभीर ॥
भ्रातनसह तजि हौ हमहि तुम न तजऊ गे धर्म । बुद्धि हमारी भूप यह नीके जानति पम ॥
धर्म स्वरक्षक भूपको रक्षित करत सु धर्म । सो न तुम्हे रक्षित करत यह भो उल्टो कर्म ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुधर्मनाह अनन्य ता मति सुनिए नरनाह । तजत सङ्ग नहि धमको यथा मनुजकों छाह ॥ ब०प०

॥ * ॥ जयकरोछन्द ॥ * ॥

तुम नहि करत निरादर भूप । जगतमाह सबको अनुरूप ॥ सिन्धुमेखला पृथिवी पाय । तुममे गर्व न परो लखाय ॥ स्वाहा स्वधाकार करि पुष्ट । देव पितरकों कीन्हें तुष्ट ॥ देइ ब्राह्मण न्हको मनकाम । करो तृप्त तुम भूप ललाम ॥ स्वर्णपात्रमह भोजन सर्व । अतिथिनको हम दियो अखर्ब ॥ नहि अदेय बिप्रन्हकों भूप । तुमकों रहो न कछू अनूप ॥ अश्वमेध आदिक सब यज्ञ । बिधिवत तुम कीन्हें सरबज्ञ ॥ द्यूत कियो धरि मति बिपरीति । तामे हारे पाय अनीति ॥ सहित राज्य धन शस्त्र अखर्ब । हम सह भ्रातन्ह हारे सर्ब ॥ ऋजु तुम वक्ता सत्य बदान्य । द्यूत व्यसन मति कियो अमान्य ॥ देखि दुःख तो बिपति अमान । हमै होत है क्लेश महान ॥ इहा कहति इतिहास पुरान । सो सुनिए भूपति सुखदान ॥ दैवाधीन जगत जन जैंन । सुख दुखदाता बिधि बर तैंन ॥ पूर्व जन्मके कर्म समान । नभ समान व्यापक भगवान ॥ पाप पुण्यके माही सोय । करत प्रवृत जानत बुध लोय ॥ बँधो डोरिसों पक्षी जैंन । प्रभुवश रहत स्ववश नहि तैंन ॥ तैसें जगजन दैवाधीन । रहत स्वतंत्र न कर्मासीन ॥ स्वर्ग नर्ककों बिधिवश जात । ज्यों तृणतूल भए बश बात ॥ युक्त सुधर्म अधर्मनमाह । ईश्वर करत सुनऊं नरनाह ॥ व्यापक भूतनमे जगदीश । लक्षित होत न बिम्बे बीश ॥ हेतु मात्र है पूरब कर्म । देह क्षेत्रसंज्ञक है पर्म ॥ जातें कर्म शुभा शुभ सर्ब । करवावत सो ईश अखर्ब ॥ लखु प्रभाव मायाको तास । यथा कर्म जो किए प्रकाश ॥ हनत भूत भूतनके हाथ । करि कै मायाबश जगनाथ ॥ मिथ्या मानत जे दृढज्ञान । मृगतृष्णा सम जगत महान ॥ मिथ्या जगतहि मानत सांच । देखि मूढजन बिधिछत नाच ॥ रचत मिटावत सांच देखाय । कर्त्ता करत चरित्र स्वभाय ॥ करत अचेतन चेतन काय । काष्ठ हि काटत काठ लगाय ॥ ऐसें भूत भूतके हाथ । नाश करावत त्रिभुवननाथ ॥ संयोग बियोग करावत तैंन । प्रभु क्रीडत बालक सम जैंन ॥ माता पिता न सम सुखदान । होत रोष करि शत्रु समान ॥ पण्डित शीलवान सह क्लेश । लखति दुष्टको आनंद बेश ॥ तुमकों बिपति सुयोधन ऋद्ध । यह बिधि कारज नित्य समृद्ध ॥ कर्त्ताकों लागत कृत कर्म । और लगत न धर्माधर्म ॥ ईश्वर कर्त्ता ताकों योग । करिबो कर्मजन्य फल भोग ॥ ईश्वर प्रबल न भोगै तैंन । है असक्त दुर्बल जन जैंन ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ यह बिचित्र कृष्णा तो बैंन । हैं नास्तीक धर्मके जैंन ॥ हम नहि चहत कर्मफल तैंन । दीजै देय बस्तु है जैंन ॥ कीजै होम जो है हवनीय । बेदाज्ञा यह है कर्मनीय ॥ यामे फल कछु होय न होय । करै गृहस्थ बेदबिधि जोय ॥ धर्म करी न धर्म फल चाहि । शास्त्र बेदको मत अवगाहि ॥ शङ्कित करै धर्मकों जैंन । है नास्तिक सम हि नर तैंन ॥ करै धर्ममे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० शङ्का पात । सा जन तिर्य्यग योनिकों जात ॥ यथा वेदते सूद्र विहीन । होत न तौंन सुलोका सोन ॥ पापी महा सूद्र सम तौंन । करत धर्ममे शङ्का जान ॥ मार्कण्डेय महातपधाम । धर्महितें चिरञ्जीवी आम ॥ व्यास वशिष्ठादिक मुनि जौंन । भए धर्मतें चेतसभौंन ॥ शापानुग्रह करिबें शक्त । लखऊ द्रौपदी इनकों व्यक्त ॥ करत प्रसंशित ते सब धर्म । सुर सम धर्मधुरी ऋषि पर्म ॥ तोहि न योग कहिबो छबिऐंन । धाता धर्म हि निन्दित वैंन ॥ धर्मा शङ्की और प्रमान । मानत मूढ न बश अज्ञान ॥ समुझि आपनो सांच विचारि । सुमतिनको मत देत बिगारि ॥ इन्द्रिनके प्रियमे करि छोह । लहत धर्म पथ लखि अतिमोह ॥ प्रायश्चित्त शुद्ध नहि तौंन । करत धर्मम शङ्का जौंन ॥ तिनको नष्ट होत परलोक । करत जो शास्त्र धर्म पथ रोक ॥ काम लोभको लहि उतपात । ते नर मूढ नर्कमे जात ॥ शिष्ट जननतें विहित जो धर्म । तामे शङ्का होति न पर्म ॥ ऋषिण कहो जो धर्म उदार । सो स्वर्गिणकों नौ कर पार ॥ निःफल होय सुकृत जौं धर्म । बूड़ जगत पाय तम भर्म ॥ तौंन लहै सज्जन निर्वान । पशु सम जीवै बश अज्ञान ॥ वेदाध्ययन तपस्या दान । हौंहि विफल जौं कर्म महान ॥ तौ मुनि कर हि न धर्माचार । विफल होय जौं कृपा उदार ॥ फलद जानि श्रेयसकृत कर्म । विज्ञ सनातन धारत धर्म ॥ कृष्णा आपनो जन्म विचारि । लेऊ धर्मको फल निरधारि ॥ यह दृष्टान्त देखु छबिऐंन । बिना धर्म बरजन्म लहै न ॥ तोक लाभतें सुमति हि तोष । बऊ लहि मूर्खन पावत मोष ॥ जन्म नाश हैं विरचित देव । याको कोऊ न जानत भेव ॥ मोह भरे जे प्रजा महान । जन्मत मरत रहित निर्वान ॥ करिए दान यज्ञ जे पर्म । देत कर्मफल साखत धर्म ॥ ब्रह्मै कहो सुतन्हके पास । यह जानो कश्यप मतिरास ॥ तातें तो संशय अतिमान । कृष्णा मिटो निहार समान ॥ सर्व सत्य करि मति व्यवसाय । नास्तिक बुद्धि सो देऊ नशाय ॥ ईश्वर सबको धारक तास । निन्दा करऊ न हे मतिरास ॥ जाको पाय प्रसाद ललाम । मानुष होत अमर अभिराम ॥ ❀◉❀◉❀◉❀

॥ ❀ ॥ द्रौपद्युवाच ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

ईश्वर निन्दा करति नहि औ न करति अपमान । प्रजा रचत जो प्रजापति निन्दति ताहि सुजान ॥
आरत करति प्रलापकों मोहि विचारऊ धीर । फिरि विलाप चाहति कियो सुनिए तान गँभीर ॥
निश्चय कीजै कर्मको जीवन कर्म सुजन्य । विना कर्मसों जियत हैं स्थावर जीव न अन्य ॥
बला जन्मत हीं करत उठि कै गोस्तन पान । पूर्व जन्म संस्कार बिनु ऐसो होत न ज्ञान ॥
अङ्गमांहि विशेषतें मानुष होत सुचेत । कर्म वृत्तिको प्राप्तिको करत दुऊँदिशि हेत ॥
पूर्व जन्म संस्कारको फल भोगत सब कोय । प्रगट तौंन कर्मज कहत सकल सयाने लोय ॥
बिना कर्म नहि जीवकों वृत्ति मिलति है भूप । कर्मज फल भोगत नियत सो न मिटत अनुरूप ॥
कर्म करऊ सानन्द वै भूपति होऊ न म्लान । जानत करिबो कर्मको सो जन बिरल सुजान ॥
जानत रक्षण वृद्धि जो ताको बाढत कार्य्य । भक्षण कर न भरै सो क्षीण होत है आर्य्य ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दैवाश्रय करि रहत जो अरु जो हठ मत छूट । कर्म बुद्धि जो सो सरस हैं ए दोऊ मूढ ॥ ब०प०
छोडि कर्म जे रहत हैं दैवाधीन अयान । काँचो घटगत सलिल ज्यों दुःखित होत निदान ॥
कर्म शक्त हठ बुद्धि जो करत न कर्म समान । सो न जियत दुर्बल यथा बिना नाथ बलवान ॥
अकस्मात् धन जगतमे लहत पुरुषहै जौन । हठबुद्धो सो यत्नकों व्यर्थ कहत है तौन ॥
दैवाधीन जो पुरुष धन पावतहै अभिराम । दैवदत्त सो जानिए निश्चय सुनऊँ ललाम ॥
जो करि अपने कर्मकों पावतहै धन भूप। पौरुष ताकों कहतहैं लखि प्रत्यक्ष अनुरूप॥
पुरुष प्रवृत्त स्वभावतें बिनु कारण धन पाय । तौन पूर्व अनुग्रहतें कर्मनको सुखदाय ॥
हठतें विधितें कर्मतें भावतें अरु सु जौन । फल पावतहैं पुरुष सो पूर्व कर्मभव तौन ॥
पुरुष शुभाशुभ जगतमे कर्म करतहै जौन । पूर्व कर्म फलको उदय भूप जानिए तौन ॥
संख्या करिबे शक्य नहि कर्म सुनऊँ कुरुवीर । नगर धामको सिद्धिको कारण पुरुष गँभीर ॥
तिलतें तैल सुदारुतें पावक गोतें क्षीर। करि उपायकों बुद्धितें सुमनस लेत गँभीर ॥
ऐसें स्थिति कर सिद्धि सो होति लोककों वीर । कही सिद्धि गति कालकी यथा अवस्था धीर ॥
ब्राह्मण राखो पिता सब ऊतो महा मतिमान । कही नीति यह तातसों लोन्हें शास्त्र विधान ॥
नीति बृहस्पतिको कही सकल कही तेहि जौन । हों बैठीही गोदमे सुनी नृपति सब तान ॥
सो तुमसों वर्णन कियो कर्म प्रसंशित नीति । करिबो तुमकों योग्यहै सुनऊँ भूप करि प्रीति ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रौपदीके वचन सुनि करि भीमसेन अमर्ष । श्वास लै कै कहन लागे वचन यों दुर्धर्ष ॥ राज्य धर्म सु भई पथमे चलऊ सुनिए वीर । धर्मार्थ काम विहीन व्है बन बसें का रणधीर ॥ धर्मतें ऋजुतरतें नहि ओजतें समाज । द्यूत छलसों नृप सुयोधन हरो हमरो राज ॥ सिंहसों गोमायु आमिष लेइ छल करि धूत । लियो तैसें राज्य हमसों अन्ध नृपके पूत ॥ धर्मसों कछु छद्म व्है तजि राज्य अर्थहि भूप । दुःखसों हौ तपत क्यों बन बासको लहिरूप ॥ सावधान न रहे तुम तौ हरो तिन तव राज । जिष्णु रक्षित कोन हरिबो इन्द्रहको काज। ऐश्वर्य्य हरणसो जियत हमरे भयो तो कृत भूपभए जानैं सुहृद दुःखित शत्रुगण सुखरूप॥बन्द हम व्है गए आज्ञा पाय तो क्षितिपाल ॥नतरु हम धृतराष्ट्र सुतकों हनत तँह ततकाल । मृगवृत्ति लखि यह रावरी हम भूप सह परिवार । महा दुखसों भरे मनमे रहत तपत उदार ॥ धर्म्म धर्म्मसु रहत हौ तुम कहत व्है कृश भूप ।निवेदतें जन लहत है जगमाह क्लीव स्वरूप ॥ ज्ञानवान समर्थ तुम हम सबनको बल देखि। क्षमावश न अनर्थ आगम परत तुम को लेखि॥ क्षमावान सु हमहि सबकों नृप सुयोधन तौन । अशक्त मानत दुःख यातें युद्ध मरण न जौन ॥ निःकपट व्हैके युद्धमे है मरण श्रेय महान । कीर्त्ति जगमे होति मिलत सुलोक अति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० शङ्का पात । सा जन तिय्यग योनिकों जात ॥ यथा बेदते सूद्र बिहीन । होत न तौंन सुलोका सीन ॥ पापी महा सूद्र सम तौंन । करत धर्मसे शङ्का जान ॥ मार्कण्डेय महातपधाम । धर्महितें चिरञ्जीवी आम ॥ व्यास बशिष्ठादिक मुनि जौंन । भए धर्मतें चेतसभौंन ॥ शापानुग्रह करिबें शक्त । लखऊ द्रौपदी इनकों व्यक्त ॥ करत प्रशंसित ते सब धर्म । सुर सम धर्मधुरी ऋषि पर्म ॥ तोहि न योग कहिबो छबिऐंन । धाता धर्म हि निन्दित बैंन ॥ धर्मा शङ्की और प्रमान । मानत मूढ न बश अज्ञान ॥ समुझि आपनो सांच बिचारि । सुमतिनको मत देत बिगारि ॥ इन्द्रिनके प्रियमे करि छोह । लहत धर्म पथ लखि अतिमोह ॥ प्रायश्चित्त शुद्ध नहि तौंन । करत धर्मसम शङ्का जौंन ॥ तिनको नष्ट होत परलोक । करत जो शास्त्र धर्म पथ रोक ॥ काम लोभको लहि उतपात । ते नर मूढ नर्कमे जात ॥ शिष्ट जननतें बिहित जो धर्म । तासे शङ्का होति न पर्म ॥ ऋषिण कहो जो धर्म उदार । सो स्वर्गिणकों नौ कर पार ॥ निःफल होय सुकृत जौं धर्म । बूड जगत पाय तम भर्म ॥ तौंन लहै सज्जन निर्बान । पशु सम जीबै बश अज्ञान ॥ बेदाध्ययन तपस्या दान । हौंहि बिफल जौं कर्म महान ॥ तौ मुनि कर हि न धर्माचार । बिफल होय जौं कृषा उदार ॥ फलद जानि श्रेयसकृत कर्म । बिज्ञ सनातन धारत धर्म ॥ कृष्णा आपनो जन्म बिचारि । लेऊ धर्मको फल निरधारि ॥ यह दृष्टान्त देखु छबिऐंन । बिना धर्म बरजन्म लहन ॥ तोक लाभतें सुमति हि तोष । बऊ लहि मूर्खन पावत मोष ॥ जन्म नाश हैं बिरचित देव । याको कोऊ न जानत भेव ॥ मोह भरे जे प्रजा महान । जन्मत मरत रहित निर्बान ॥ करिए दान यज्ञ जे पर्म । देत कर्मफल सास्वत धर्म ॥ ब्रह्मै कहो सुतन्हके पास । यह जानो कश्यप मतिरास ॥ तातें तो संशय अतिमान । कृष्णा मिटो निहार समान ॥ सर्व सत्य करि मति व्यवसाय । नास्तिक बुद्धि सो देऊ नशाय ॥ ईश्वर सबको धारक तासनिन्दा करऊ न हे मतिरास ॥ जाको पाय प्रसाद ललाम । मानुष होत अमर अभिराम ॥ *👄*👄*👄*

॥ *॥ द्रौपद्युवाच ॥*॥ दोहा ॥ *॥

ईश्वर निन्दा करति नहि औ न करति अपमान । प्रजा रचत जो प्रजापति निन्दति ताहि सुजान ॥
आरत करति प्रलापकों मोहि बिचारऊ धीर । फिरि बिलाप चाहति कियो सुनिए तान गंभीर ॥
निश्चय कीजै कर्मको जीवन कर्म सुजन्य । बिना कर्मसों जियत हैं स्थावर जीव न अन्य ॥
बला जन्मत हीं करत उठि कै गोखन पान । पूर्व जन्म संस्कार बिनु ऐसो होत न ज्ञान ॥
अङ्गमांहि बिशेषतें मानुष होत सुचेत । कर्म बृत्तिको प्राप्तिको करत दुऊँदिशि हेत ॥
पूर्व जन्म संस्कारको फल भोगत सब कोय । प्रगट तौन कर्मज कहत सकल सयाने लोय ॥
बिना कर्म नहि जीवकों बृत्ति मिलति है भूप । कर्मज फल भोगत नियत सो न मिटत अनुरूप ॥
कर्म करऊ सानन्द वै भूपति होऊ न म्लान । जानत करिबो कर्मको सो जन बिरल सुजान ॥
जानत रक्षण बृद्धि जो ताको बाढत कार्य्य । भक्षण कर न भरै सो क्षीण होत है आर्य्य ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दैवाश्रय करि रहत जो अरु जो हठ मत छूट । कर्म बुद्धि जो सो सरस हैं ए दोऊ मूढ ॥ व०प०
छोडि कर्म जे रहत हैं दैवाधीन अयान । काँचो घटगत सलिल ज्यों दुःखित होत निदान ॥
कर्म अक्त हठ बुद्धि जो करत न कर्म समान । सो न जियत दुर्बल यथा विना नाथ बलवान ॥
अकस्मात धन जगतमे लहत पुरुषहै जौन । हठबुद्धी सो यत्नकों व्यर्थ कहत है तौन ॥
दैवाधीन जो पुरुष धन पावतहै अभिराम । दैवदत्त सो जानिए निश्चय सुनऊँ सलाम ॥
जो करि अपने कर्मकों पावतहै धन भूप। पौरुष ताकों कहतहैं लखि प्रत्यक्ष अनुरूप॥
पुरुष प्रवृत्त स्वभावतें बिनु कारण धन पाय । तौन पूर्व अनुग्रहतें कर्मनको सुखदाय ॥
हठतें विधितें कर्मतें भावतें अरु सु जौन । फल पावतहैं पुरुष सो पूर्व कर्मभव तौन ॥
पुरुष शुभाशुभ जगतमे कर्म करतहै जौन । पूर्व कर्म फलको उदय भूप जानिए तौन ॥
संख्या करिबे शक्य नहि कर्म सुनऊँ कुरुबीर । नगर धामकी सिद्धिको कारण पुरुष गँभीर ॥
तिलतें तैल सुदारुतें पावक गोतें क्षीर। करि उपायकों बुद्धितें सुमनस लेत गँभीर ॥
ऐसें स्थिति कर सिद्धि सो होति लोककों बीर । कही सिद्धि गति कालकी यथा अवस्था धीर ॥
ब्राह्मण राखो पिता सब ऊतो महा मतिमान । कही नीति यह तातसों लीन्हें शास्त्र विधान ॥
नीति बृहस्पतिकी कही सकल कही तेहि जौन । हों बैठीही गोदमे सुनी नृपति सब तान ॥
सो तुमसों वर्णन कियो कर्म प्रशंसित नीति । करिबो तुमकों योग्यहै सुनऊँ भूप करि प्रीति ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रौपदीके बचन सुनि करि भीमसेन अमर्ष । श्वास लै कै कहन लागे बचन यों दुर्धर्ष ॥ राज्य धर्म सु भई पथमे चलऊ सुनिए बीर । धर्मार्थ काम विहीन व्है बन बसें का रणधीर ॥ धर्मतें कृतुतईतें नहि ओजतें ससमाज । द्यूत छलसों नृप सुयोधन हरो हमरो राज ॥ सिंहसों गोमायु आमिष लेइ छल करि धूत । लियो तैसें राज्य हमसों अन्ध नृपके पूत ॥ धर्मसों कछु छत्र व्है तजि राज्य अर्थहि भूप । दुःखसों हौ तपत क्यों बन बासको लहिरूप ॥ सावधान न रहे तुम तौ हरो तिन तब राज । जिष्णु रक्षित कोन हरिबो इन्द्रहको काज। ऐश्वर्य्य हरणसो जियत हमरे भयो तो कृत भूपाभए जातें सुहृद दुःखित शत्रुगण सुखरूप॥बन्द हम व्है गए आज्ञा पाय तो क्षितिपाल ॥ननरु हम धृतराष्ट्र सुतकों हनत तँह ततकाल । मृगबृत्ति लखि यह रावरी हम भूप सह परिवार । महा दुखसों भरे मनमे रहत तपत उदार ॥ धर्म्म धर्म्मसु रहत हौ तुम कहत व्है कृश भूप ।निबेरतें जन लहत है जगमाह क्लीव स्वरूप ॥ ज्ञानवान समर्थ तुम हम सबनको बल देखि। क्षमावश न अनर्थ आगम परत तुम को लेखि॥ क्षमावान सु हमहि सबकों नृप सुयोधन तौन । अशक्त मानत दुःख यातें युद्ध मरण न जौन ॥ निःकपट व्हैके युद्धमे है मरण श्रेय महान । कीर्त्ति जगमें होति मिलत सुलोक अति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० सुखदान ॥ हने जा रणमाह अरिकों युद्ध करिकै भूप । श्री सहित तौ लहैं सिगरी भूमि परम अनूप ॥ सर्वथा यह कार्य करिबो योग्य हमकों आम । क्षात्रधर्म्म न दुःख सहिबो महा कुत्सितकाम ॥ जो निरन्तर काम अर्थीधर्म्म अर्थ विहीन । नष्ट होत सुमित्र ताके अर्थ धर्म्म क्षीण ॥ वारि सूखें मीनको है यथा मरण प्रकाश । नहीं तातें धर्म्म अर्थहि तजत जे मतिराश ॥ धर्म्मार्थ कारण कामके ज्यों अग्नि अरणी पर्म्म । धर्म्म मूलक अर्थहै त्यों अर्थ मूलक धर्म्म ॥ धर्म्मार्थ कारण दुऊनके दोउ मेघ जलधि समान । काम अर्थी चहतहै नहि कामतें कछु आन ॥ काम लोभाधीन देखत धर्म्म मूल न जैंान । वध्य सो सब जीवमे है नर्कपातो तैंान ॥ अर्थ काम विनाश पावत जरा मरणहि पाय । यह अनर्थ महीप हममे परत तैंान देखाय ॥ पञ्च इन्द्री हृदय मनकी विषय वश जो प्रीति । कामसो फल कर्म्म उत्तमको सुनऊ नृप नीति ॥ अर्थ धर्म्म सुकाम इनकों भिन्न भिन्न सुजान । सदा सेवत यथा काल विचारिकै मतिमान ॥ धर्म्म पहिले अर्थकों फिरि कामकों अभिराम । दिवसमे निति करत सेवन शास्त्रविधि मतिधाम ॥ कामकों फिरि अर्थकों फिरि धर्म्मकों मतिमान । विधा करिकै वयसकों बुध भजत शास्त्रविधान ॥ परम श्रेय सु मोक्षमे मति कहऊ यातें भूप । नतरु राज्यसु प्राप्तिमे मन दीजिए अनुरूप ॥ आचरित तुमतें धर्म्म सो है विदित हमकों सर्व । धर्म्मज्ञ संज्ञित करतहैं जे सुहृद सुमति अखर्व ॥ दान मख सतपुरुष पूजन वेदधारण जैंान । यहि धर्म्ममे रत बलीहैं दुऊँलोकमे नृप तैंान ॥ अर्थहीन न शक्यहैं यहि धर्म्म सेवनमाह । और सब गुण आपुमे हैं सुनऊ हे नरनाह ॥ धर्म्म मूलक जगत अधिक न धर्म्मतें कछु और । बऊत धनसों होत साधन धर्म्मको नृपमौर ॥ होत भिक्षातें न अर्थ न क्लोवतातें भूप । नहो तुमकों योग्य जांचत्रा द्विजनको अनुरूप ॥ तेजतें करु अर्थ इच्छा यत्न आपु समान । भुजाबलहै विदित क्षत्रिणको स्वधर्म्म महान ॥ धर्म अपनो लेय हनिए शत्रुको समुदाय । पार्थ हम सह तुम सुयोधनकों हनऊ दुखदाय ॥ धर्म अपनो जो सनातन तैान धरिए भूप क्रूरकर्मा होत क्षत्री भयो तँह तो रूप ॥ प्रजा पालन रूप फल सो भूपकों यशदान । है सनातन विहित विधि यह क्षात्रधर्म महान ॥ भए स्वधरम हीन जगमे लहत जन परिहास । हृदय क्षत्री सदृश कीजे शिथिलताको नास ॥ वीर्य धरिकै धराको धुर करऊ धारण धीर । शुद्ध धर्मात्मा धराको करत भोग गँभीर ॥ बन्धु जेठे असुर ह जे धरे परम समृद्धि । जीति तिनकों कपटसों सब सुरन्ह लीन्ही ऋद्धि ॥ तुमऊ जीतऊ कपट करि इमि बली शत्रुन्ह धीर । नहो अर्जुन सो धनुर्द्धर भूत भावी वीर ॥ गदाधर यहि जगतमे नहि और मोहि समान । करऊ बलतें युद्ध नृप बलवान सम नहि आन ॥ अर्थ देत सो प्रथम चाहत लियो बऊधन जैंान । बीज बोवत तोक पावत बऊत फलकों तोन ॥ उदय होय न बीज तेंहा विपिन कीबो व्यर्थ । प्रथम उदय विचारिकै तँह दान कीजै अर्थ ॥ बऊमित्र जैान अमित्र ताके मित्रमे करि भेद । मित्रविनु करि ताहि कीजै स्ववश भूप अखेद ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बटुरिकै बज्र अबल मारै शत्रुकों बलवान। काढिकै मधुहारको ज्यों लेत मधुकर प्रान॥ सूर्य्य व०प०
पालत हरतहै ज्यो जीव जगके सर्व। होऊ भूपति भानुसे तुम हरण भरण अखर्व॥ नहीं चन्द्री लोक
पावत तौन तपतें धोर। लेत रणमे जीतिकै कै मरणतें बरबीर॥ करत जो कछु पाप राजा पाय
भूमि अखर्व। दान दै करि यज्ञ अनुसो तौन मेटत सर्व॥ जानपद अरु पौरजन हैं बाल
बूढे जौन। बिप्रबर तुमकों प्रसंशित करत भूपति तौन॥ बेद जैसें शूद्रके मुख चौरमे ज्यौं
साँच। राज्य तैसें है सुयोधनमाँह भाषत पांच॥ यह अवस्था पाय हमसब लहो जैसो
रूप। तो उपद्रवसों भए हम नष्ट सिगरे भूप॥ चढऊ रथपर सज्य व्है लै बिप्र आशिष
पर्म। बेगि हास्तिन नगरकों अब चलऊ भूपति धर्म॥ अस्त्रविद भट सहित भ्रातन्ह
धनुर्द्धर बलवान। आसीबिषोपम महाबल सह मरुत ज्यों मघवान॥ सबल तें अरि मरदि
मारऊ युद्धमे अनुरूप। राज्य अपनो लीजिए धृतराष्ट्र सुत सो भूप॥ सहै कों गाण्डीव मुक्त सु शि
लीमुख बरबीर। बेग मेरी गदाको सहि सकै को रणधीर॥ कैकेय सृञ्जय बासुदेव समेत हम रण
मांह। लहहि क्यों नहि राज्य अपनो सुनऊ हे नरनाह॥ *॥ बैशम्पायनउबाच॥ *॥ यहि
भाँतिके सुनि भीमके बर बचन भूपति धर्म। कहन लागे धैर्य्य लीन्हे बैन जैसे पर्म॥ धृतराष्ट्र सुतको
राज्य लीबे हेत खेलो द्यूत। कितवमे प्रति होत भो तहँ तात सौबल धूत॥ भयो तँह जो द्यूत
सो है बिदित तुमकों सर्व। शकुनि फेंके अक्ष देखे भरे कपट अखर्व॥ भए हम न निवृत्त तेहा
धीर धरिकै बीर। क्रोध हनत कु पुरुषके लहि समय धैर्य्य हि धीर॥ होत पौरुष सत्वसों नहि
आतमाको रोध। होनहारी होति जैसी होत तैसो बोध॥ दियो दुख धृतराष्ट्रके सुत हमे यों
अतिमान। दास कीन्हें हमे कीन्हों द्रौपदी तँह आन॥ तुम धनञ्जय सकल जानत भयो जो
तँह धन्य। सभामे सतनरनके ढिग सहित धर्म निबन्ध॥ राज्य हेत न जात हमसों तजो तौन
बँभोर। भलो मरण सु धर्म तजि नहि भूमि मागत बीर॥ होय उद्दित द्यूतमे तुम गदा मागो
बय। तब न कीन्हों कृत्य जो व्है जिष्णु कारित सय॥ समै पहिलें रहो करिबें कहत हौ अब
जौन। कहत फिरि फिरि मोहि क्यों अब काल बीतो तौन॥ करत दुःखित बज्रत हमकों यथा
बिषरस पान। देखि कृष्णा दुःख तबहों क्षमा तुम न समान॥ सो न लङ्घन शक्य पन कुरुमध्य
कीन्हों जौन। सुखोदयको काल देखऊ भीम नियमित तान॥ सत्य मेरी जो प्रतिज्ञा सुनऊ सो
कुरुबीर। राज्य धन नहि सत्य की है कलातुल्य गँभीर॥ *॥ भीमसेनउबाच॥ *॥ सर्ब हारी
कालकी कीन्हीं प्रतिज्ञा भूप। काल बन्धन मर्त्य व्हैकै देखि काल स्वरूप॥ अमित होय सु आयु
जानै कै सु आयु प्रमान। होय तीनो कालको कै जाहि ज्ञान सुजान॥ सो प्रतिज्ञा कालवारी
करै श्री महिपाल। कहैं का हम और तुमसों आपु बिज्ञ विशाल॥ काल तेरहबर्ष हमकों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

२५० दखिबें मतिमान। आयुको करि नाश आवत मरण जास न ज्ञान॥ मरण देही के रहत है देहमें निति साथ। करऊ तातें राज्य मिलबेकी सु घटना नाथ॥ बैर लेय न शत्रुसों सो अबल अधम पुमान। अफल ताको जन्म व्यर्थहि जियत सो अज्ञान॥ हिरण्य दायक पाणि तो पृथु की सि कीर्ति सुजान। मारि अरिसों युद्धमें भू भोगिए अति मान॥ अमर्ष जात ऊतासतों अति चण्ड हैं नरनाह। तप्त तासों लेत निद्रा नहीं निशि दिन माह॥ महा फाल्गुण तप्त है अति जो धनुर्द्धर बीर। सिंह जैसें गुहा पैठो भरो क्रोध गँभीर॥ सहित मातुल नकुल अरु सहदेव बर बलवान। रहत ईक्षत रावरो प्रिय परम जो सुखदान॥ पाप पूरित विपति ऐसी भई हमकों भूप। नीच दुर्बल राज्य हमरो करत भोग अनूप॥ घृणा क्षयुता शील जन्यज दोषतें अति मान। सहत ह बनबासकों यह घोर दुःख महान॥ क्षमाको धृतराष्ट्रसुतपर करत हौ का भूप। करतव्यमें आलस्य करि जन होत डुण्डुभ रूप॥ बर्ष बारह बिपिनमें हम रहैंगे सुखबास। तेरहें केहि भाति रहि ह गुप्त व्है मतिरास॥ मूठि भरि तृण डारि मूढो जात नहि हिमवान। को न जानत आपुकों किमि करऊ गे अपिधान॥ ⊂⊃⊂⊃⊂⊃॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ ⊂⊃⊂⊃⊂⊃⊂⊃⊂⊃ छपत न सूर गगण मह भूप। तथा जगत जाहिर तो रूप॥ शाल वृक्ष सम्पन्न समान। छपि है क्यों पारथ बलवान॥ माद्रीसुत सम सिंह अनूप। कैसें ए छपिहैं कुरूभूप॥ राजसुता कृष्णा अभिराम। गुप्त होयगी क्यों मतिधाम॥ अति उन्नत यह मेरो रूप। कौन भाँति छपिहै कुरू भूप॥ किमि बनि है रहिवो अज्ञात। और सुनऊ भूपति उतपात॥ जिन्हैं राज्यतें दए निकारि। ते सब भूप क्रोधकों धारि॥ पाय सुयोधनसों सनमान। सेवत ताहि जानि सुखदान॥ ते सब सोध हमारो पाय। ताकों देहैं तुरित बताय॥ तेरहमास कियो बनबास। हम सब सुनऊ भूप मतिरास॥ देखऊ तौन सहित परमान। वर्षचयोदश आधि समान॥ मास वर्षके प्रति निधि सर्व। कह बेदबिद सुमति अखर्व॥ एक वृषभकों बदर प्रमान। देइ भक्ष तृण सह पयपान॥ सत्य त्यागको प्राश्चित जौंन। कुरु नृप कहत धर्मबिद जौंन॥ करऊ शत्रु बध निश्चय भूप। क्षात्र धर्म नहि और अनूप॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ भीम बचन सुनिकै नृपधर्म। रहे बिचारि श्वास लै पर्म॥ राजनीति हम सुनी अनेक। वर्णाश्रमको धर्म विबेक॥ हम जानत सब विधि निर धारि। घरी द्वैक इमि रहे बिचारि॥ भीमसेनसों आतुर बैंन। बोले धर्मनृपति मतिअैंन॥ युधिष्ठिरउबाच॥ नीके कहत बचन तुम भीम। हों अब कहत सो सुनु बलसीम॥ साहस करि जो करिए कर्म। ताहि जानिए भरो अधर्म॥ सुकृत सुसंचित कर्म जे बीर। सिद्धि करत सो शीघ्र गँभीर॥ बाल्य चपलतातें करि कर्म। चहत सिद्धि सो सुनु तजि भर्म॥ भूरिश्रवा भीषम कृप द्रौण। सतपुत्र सम धनुधर कान॥ अश्वत्थाम शल्य जलसन्ध। महा धनुर्द्धर बीर मदन्ध॥ दुर्योधन सह भ्रातन्ह सब। अस्त्रशस्त्रबिद बीर अखर्व॥ हम तें दुःखित भूपति जौंन। ताके साथ सुनत सब तान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

वृष्ण काम बल लहि सनमान। धरैं युद्ध जय यत्न महान ॥ दीवैं चहत प्राण करि युद्ध। मो मतिमें ब०प०
यह निश्चय उद्ध ॥ भीष्म द्रोण कृप वीर सुजान। जानत हमकों तिन्हैं समान ॥ लहि धन तासों
सह सनमान। दियो युद्धमें चाहत प्रान ॥ दिव्य अस्त्रके वेत्ता सर्व । हैं अजेय रणमाह अखर्व ॥
युद्धामर्शी कर्ण सुवीर। धरैं अभेद्य कवच रणधीर ॥ ए अजेय वर पुरुष महान। जाके सङ्ग महा
बलवान ॥ बिना सहाय सुयोधन नास। है अशक्य यह तजऊ प्रयास॥ लहत न निद्रा चिन्ता सीन।
जानि सूतसुत युद्ध प्रवीन ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीमसेन यह बचन बिचारि। चुप व्है
रहे शङ्कि निरधारि ॥ तिनसों होत सु यों सम्बाद। व्यास गए तँह तप मर्याद ॥ पूजित होय महा
मतिऐंन। कहे धर्मनृपसों इमि बैंन ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ पाण्डव तो चित वृत्ति बिचारि।
हम आए यह मति निरधारि ॥ *◠*◠*◠*॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ◠*◠◠◠*

भीष्म द्रोण कृप कर्ण तें द्रोण तनय तें बीर। शङ्का जो तुमकों भई जानि सो लई गँभीर॥
ताकों हों नाशो चहत शास्त्रहि लखि करि धर्म। तौन करऊ धरि धैर्यको होंऊ विगत भयभर्म॥
तब लै गए एकान्तमें धर्मनृपतिकों व्यास। सार्थ बचन लागे कहन करिकै कृपा प्रकास ॥
श्रेय काल तुमकों भयो प्राप्त युधिष्ठिर धीर। देहै अर्जुन अरिनकों जातें अविभव बीर॥
हम तें उक्त सुसिद्धिकी मूर्ति सदृश अभिराम। विद्या तुमकों देत सो जास प्रति स्मृति नाम ॥
अर्जुन साधन करैगो महाबाऊ जेहि पाय। लेहै अस्त्र अनेक विधि इन्द्र रुद्र पहँ जाय ॥
वरुण धनद यमराजकों लखि शकिहै सो बीर। महा पराक्रम तें भरो तपते परम गँभीर ॥
ऋषि पुराण अति तेजमय अच्युत जिष्णु अजेय। नारायण जाकों रहत सदा सहाय अमेय ॥
लोकपतिनसों अस्त्र लहि महा दिव्य वर बीर। महत कर्मकों करैगो युद्ध जुरें रणधीर ॥
एहि बनकों तजि और बन बसऊ जाय नृपधर्म। एकठौर चिरकालको बसिबो होत न पस ॥
होत हेतु उद्वेगको तपस्वीनकों भूप। होत जानि क्षय मृगजको दन्द मूलको रूप ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

ऐसें कहि नृपधमसों व्यास महामुनि बैंन। अन्तरध्यान भए चलत बिदा होय तपऐंन ॥
नृपति युधिष्ठिर मंत्र सो धरि मनमें अभिराम। काल कालमें जप करण लगे तास मतिधाम ॥
व्यास बचनतें छोडि कै द्वैतविपिनि सुखदान। गए सरस्वति निकट जहँ काम्यक गहन महान ॥
द्विजन सङ्ग तँह जायकै धर्मनृपति मतिराम। भ्रातन्ह सहित अमात्य तहँ कियो विपिनमें बास ॥
बेदाध्ययन सुनत करत मृगया नित्य महान। पितृ देव अरु द्विजनकों करत तृप्त बलवान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशी
बासिरघुनाथकविश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे श्रीयुधिष्ठिर
प्रति द्रौपदीभीमसंवादे व्यासागमनमंत्रदानपार्थस्यतपोभिगमनवर्णनेपञ्चमोऽध्यायः ॥ *◠*◠

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प०

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कछुदिन बीते धर्मनृप समुझि व्यासके बैंन । अर्जुन सौं लागे कहन रहस महाँमतिअन ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

भीष्म द्रोण कृप कर्ण अरु द्रोणपुत्र वरबीर । चतुश्चरण इनमे बसत धनुर्वेद गम्भीर ॥
दैव ब्राह्म मानुष सकल जानत अस्त्र बिधान । देत तिन्हैं धृतराष्ट्रसुत भोजन करि सनमान ॥
शक्ति देखायो चहत ते ताहि पाय रणकाल । करत सुयोधन भूमिको सागरान्त प्रतिपाल ॥
हमकों तुम प्रिय प्राण सम है तुमपै सब भार । कृत्य काल अब प्राप्त है आगें बीर उदार ॥
द्वैपायन हमकों दियो मंत्र महारणधीर । जातैं कारय जगतमे होत प्रकाश गँभीर ॥
तौन मंत्रसो युक्त व्है स्ववश राखि मन बीर । पावऊ देवप्रसादकों यथाकाल रणधीर ॥
होऊ उग्रतप युक्त तुम धरैं शस्त्र बिख्यात । मार्ग न काहूसों कहो उत्तर दिशिको जात ॥
दृत्तासुरसों भीत व्है सुरन्ह अस्त्र समुदाय । दिए इन्द्रकों आपने सुनऊ धनञ्जय जाय ॥
ते सब अस्त्र एकत्र हैं इन्द्र पास अतिमान । जाऊ तहां ते देहिगे अस्त्र सकल मघवान ॥
तपव्रत धरि लै मंत्र अब जाऊ देवपति पास । यह कहि दीन्हों धर्मनृप मंत्र सो तेजस रास ॥
दीक्षित धारें नियम व्रत निश्चल उग्र गँभीर । बिदा कियो तब धर्मनृप अर्जुनकों बरबीर ॥
आज्ञा लहि नृपधर्मको लखिवेकों सुरराज । धरे तूण गाण्डीव धनु बर्म सु शस्त्र समाज ॥
दान देइकै द्विजनकों सुनि स्वस्त्ययन महान । धनुष धरें बनकों चले अर्जुन हर अरिप्रान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

चलत देखि अर्जुन अभिराम । बोली कृष्णा बचन ललाम ॥ आशिर्बाद अनेक अनूप । दए प्रीति भरिकै अनुरूप ॥ सुनि कृष्णाके बऊबिधि बैंन । आशीर्बाद नीतिक अैंन ॥ करो प्रदक्षिण भ्रातन्ह साथ । धौम्य महामुनिकों कुरुनाथ ॥ चले धनुषधारें कुरुबीर । गए कोडि पथ जीव अधीर ॥ ऐंद्रयोगते युक्त महान । जात बीर पथमे बलवान ॥ तपसिनतें सेवित हिमवान । पर्वत कों पऊचो बलवान ॥ योगयुक्त मनगति धरि धीर । नाघि चलो हिमगिरिकों बीर ॥ गयो गन्धमा दनके पास । निशि दिनि चलो न धरो प्रयास ॥ इन्द्रकील गिरि नीरे जाय । ठाढो भयो बीर सुख दाय ॥ दिव्य गिरा सुनिकै तहँ बीर । चऊदिशि लगो बिलोकन धीर ॥ दक्षतरे बैंठो तपधाम । देखो भरो तेजसों माम ॥ सो बोलो अर्जुनसां बैंन । धनुधर हो तुम कौंन अचैंन ॥ सर्व शस्त्रकों धारें बीर । क्षात्रधर्मकों धरे गभीर ॥ इहां शस्त्रको कारज कान । यह है शान्त ऋषिणको भौंन ॥ धनुष कार्य्य नहि इहा न युद्ध । फेकि देऊ यह धनुष बिरुद्ध ॥ प्राप्त परमगतिकों तुम तौंन । आज तेजते लेति न जौंन ॥ हँसत हँसत इमि बोलो बैंन । ब्राह्मण तौंन महा तपअन ॥ चलो नमिति ते फाल्गु बीर । लखि प्रसन्न सो भयो गँभीर ॥ व्है प्रसन्न अर्जुनके पास । कहे बचन इमि आनदरास ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बर मागऊ हम इन्द्र सुजान। होय जैंन तुमकों सुखदान ॥ शक्र बचन सुनि के मतिचैंन। बोले अर्जुन साञ्जलि बैंन ॥ शक्र हमारो यह मनकाम। चख सकल तुमसों अभिराम ॥ हम चाहत सो देऊ शिखाय। यह बर देऊ परम सुखदाय ॥ बोले इन्द्र कृपाके भान। इहाँ अस्त्रको कारज कौंन ॥ जांगऊ लोक भोग सुख आप्त। भए परमगतिकों तुम प्राप्त ॥ यह सुनि इंद्र बचन कुरुबीर। कहन लगे अति धारे धीर ॥ हम चाहत अमरत्व न तात। कामलोभतें सुनिए ख्यात ॥ भ्रातन्ह छाडि बिपिनिके मांह। हम आए तुम पै सुरनांह ॥ लीन्हे बिना बैर अरिपास। लोकन ह्वमें कीर्ति न तास ॥ तैसे सुनि पाण्डवके बैंन। बोले शक्र कृपाके अैंन ॥ जब देखऊ मैं तुम भूतेश। शूलपाणि अम्बक सु महेश ॥ तब हम देहैं तुमकों तैंन। अस्त्र समूह पास मो जान ॥ यत्न देव दर्शनको बीर। कीजै इहा धारि कै धीर ॥ दर्शन लहिहू हौ तुम सिद्ध। तब लहिहो सब अस्त्र समृद्ध ॥ फाल्गुणसों इमि कहि सुखदान। भए इन्द्र तब अन्तरध्यान ॥ रहे जिष्णु तेहां धरि धीर। करण तपस्या लगे गँभीर ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ भगवन् पार्थ कथा अभिराम। सुनो चहत सह बिस्तर साम ॥ जैसें लहे अस्त्र बर बीर। ज्यों बनमें गो एक गँभीर ॥ कैसें हरकों किये प्रसन्न। सो सब कहऊ बिस्तरापन्न ॥ अत्यद्भुत हरसो संग्राम। सुनो करो पार्थ बल धाम ॥ सो सब कहऊ बिस्तर छिप्र। तुम त्रिकालदर्शी हौ बिप्र ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहि हू हम सह बिस्तर तैंन। महाराज पूछत तुम जैंन ॥ कुरुपतिकी आज्ञा लहि भूप। गए बिपिनिकों पार्थ अनूप ॥ दर्शन चाहि शक्रको बीर। धरें अस्त्र सब धनुष गँभीर ॥ कार्य्य सिद्धिकों हिए बिचारि। दिशा उदीचीकों निरधारि ॥ गिरि हिमवान शिखर पर जाय। करण लगे तप अति मनलाय ॥ नाना तरु फल पुष्पित सर्ब। बऊ मृग कूजत बिहँग अखर्ब ॥ चारण सिद्ध जहां तप पीन। अन्य मनुज दर्शनसों हीन ॥ गयो तैंनबनमहँ जब बीर। गगण दुन्दुभी बजी गँभीर ॥ तान दुर्ग गिरि बिपिनि बिहाय। हिम गिरि परशे हो कुरुराय ॥ तहां लखत तरु बिपिनि बिचिच। सरित बिहँग नादित सुपबिच ॥ ॥ रोलाछन्द ॥

बिपिनिमें तेहि रमत अर्जुन उग्र तप धरि धीर। दर्भ आसन अजिन पटको पीन कीन्हें चीर ॥ पक्व पत्र जो गिरत क्षितिपर करत भोजन तैंन। तीसरेदिन मास अैसे एक गो करि गैन ॥ दिवस छटएँ मास दुसरें पत्र भोजन कर्त। अगा पुरो मास तिसरे तथा भोजन धर्त ॥ मास चौथें करण लागे वायुपान अहार। जई बाऊ सुनिरा लम्ब अंगुष्टके आधार ॥ रहे ठाढे जटा धारे तडित पुञ्ज समान। तब महर्षिन्ह देखि ताको उग्रतप अतिमान ॥ जाय कै हरपास लागे कहन ऋषि बर सर्ब। पार्थ जो हिमवान पै तप करत उग्र अखर्ब ॥ देव पारथ करत है तप महा उग्र अमान। तास तपके तेजसों भो धूममय हिमवान ॥ कहा करिवें चहत है

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० हम नही जानत ईश । तप्त ताके तेजसों हम भए हैं जगदीश ॥ निवृत्त ताकों करहु करि कै कृपा करुणाधाम । सुनत तिनके बचन बोले उमापति अभिराम ॥ महादेव उवाच ॥ * ॥ करहु तुम न बिषाद फाल्गुन हेतु धारहु धीर । खुसी ह्वै कै बेगि जै है यथा आयो बीर ॥ तास हों सङ्कल्प जानत धरैं मनमे जौंन । नही सो ऐश्वर्य चाहत स्वर्ग सुखको भान ॥ जौंन कांक्षित ताहि सो हम करत अद्य सुजान । देवके सुनि बचन हर्षित कियो ऋषिण पयान ॥ किरातको धरि बेश शङ्कर कनक बिटप समान । धनुष लै श्रीमान आए बिष सदृश बर बान ॥ बेगसों तहँ चले मानो देह धरि हुतबाह । चली देवी सङ्ग त्यों धरि रूप भरि उतसाह ॥ चल नाना बश धारैं भूतगण घन सङ्ग । बाम सहसन साथमे बहु रूपकी बहु रङ्ग ॥ भयो बन निःशब्द सो तब पाय कै कछुत्रास । मूक नामक दनुज तेहिक्षण गयो फाल्गुन पास ॥ मारिबेकों जिष्णुकों बाराहको धरि रूप । देखि अर्जुन सज्ज करि धनु कहो ऐसैं भूप ॥ हनन आयो मोहि बिनु अपराध अधम अकाम । पठै यातें देत तोकों अरे अन्तकधाम ॥ देखि ताकों हनत अर्जुन महाधनुधर बीर । शम्भु रूप किरात बारण कियो बोलि गँभीर ॥ प्रथम है यह लक्ष्य मेरो हनो याहि न जानि । ताहि मारो बाण अर्जुन बचन तासु न मानि ॥ शम्भु रूप किरात ताकों हनो साथ हि बान । दुहुनके शर सङ्ग लागे बज्रपात समान ॥ मरो सो बहुबाण बेधित धारि राक्षस रूप । फेरि जिष्णु किरात देखो कनक बनक अनूप ॥ महा काय सहाय बनिता धरैं धनुष महान ॥ प्रसन्न ह्वै कै लगे बूझन बोलि बचन प्रमान । कौंन हौ यहि शून्य बनमे फिरत बनितन सङ्ग । डरत हौ नहि कहौ तन तो लसत सुबरन रङ्ग ॥ कोलरूपी दनुज मेरो प्रथम लक्ष्य किरात । निदरि मोकों सुनहु तामे कियो क्यों शरपात ॥ नही मृगया धर्म यह जौ कियो तुम मो पास । नही यातें बचत जीवत करत हों तो नाश ॥ किरात सुनि कै पार्थके इमि बचन बोलो बैंन । देखि हमकों शून्य बनमे डरहु मति मतिऐंन ॥ सदा यहिबन भूमिमे है बास मेरो बीर । बसे तुम किमि आइकै यह बिपिनिमांह गँभीर ॥ शून्यबनमे तुम एकाकी बसत क्यों सुकुमार । सदां सुखकों उचित हौ तुम अग्निबर्ण उदार ॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ गाण्डीव आश्रय परम हमकों अग्निसे बरबान । बसत बनमे जानि आपुहि सुनु कुमार समान ॥ मृग समान बिचारि याकों हनो दानव जौंन । हमै मारणकों सो आयो पापको अति भौंन ॥ * ॥ किरातउवाच ॥ * ॥ प्रथम मेरे बाणसों यह हनो गो बलवान । गयो यमके सदन याको छोडि कै तन प्रान ॥ लक्ष्य मेरो प्रथम हो यह सुनहु यातें बीर । प्रथम मारि सुडारि दीन्हों भूमिमे हम धीर ॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ दोष अपनो गनत नहि कार और पैं आरोप । मन्द दर्पित करत हौं मै आजु तेरो लोप ॥ खरो रहि अब बज्रसे शर करत तौपैं पात । करो चेष्टा बांचिबेकी तजहु बाण किरात ॥ बाणकी करिवृष्टि अर्जुन लियो ताकों छाय ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भए तीन किरातकी सबदेहमाह समाय॥ कहे फिरि फिरि मन्द मन्द किरात ऐसें बैन। मर्म ६०५
भेदी बाण करज्ञ प्रहार हे बलऐंन॥ बैन सुनि यह निसित लागे जिसु बर्षण बान। भए शोभित
बीर दोऊ करत युद्ध महान॥ बाणबर्षण लगे दोऊ दोऊ पर बलधाम। कियो जिसु किरातपर
सब बाण झरि अतिसाम॥ तुष्ट मन करि लिए शङ्कर लीन करि ते बान। फेरि अच्छत शरीरसों
लखि परे अचल समान॥ देखि अर्जुन भए विस्मित बाण व्यर्थ विचारि। लगे कहन किरातसों
तब साधु साधु पुकारि॥ आश्चर्य्य यह सुकुमार गिरि हिमवानको सुकिरात। गाण्डीव मुक्त नाराचसो
छत होय अविकल गात॥ रुद्र कै यह यक्ष सुरपति परत जानि प्रकाश। दिव्य गिरि हिमवानमे
है देवतनको बास॥ नहीं मेरो बाण जाल समान पावक भैंान। विना शङ्कर जगतमे सहि सकै
मरवर कौंन॥ देवता कै यक्ष कोउ रुद्र बिनु रणकाम। लरै मोसों देउँ ताको पठै हों यमधाम॥
होय हर्षित जिष्णु शतधा लगे छोडन बाँन। शूलपाणि प्रसन्न व्है सो करण लागे पान॥ भए ते तूनीर खाली क्षणकमे सुनि भूप। देखि कै सो भए अर्जुन सभय विस्मित रूप॥ लगे चिन्तन करण
अर्जुन अग्निकों तब तौंन। दियो खाण्डवदाहमे धनु तून अक्षय जौंन॥ कहा जोरे धनुषमे
नहि रहे एकौ बांन। महत है यह पुरुष कोऊ करत जो शरपान॥ कोटिसों अब धनुषकी
अह मारि कै बलधाम। पठै कै यमसदन पाऊँ युद्ध जय अभिराम॥ धनुष गलमे डारि लीन्हो
खैंचि अपने पास। हनन लागे मुष्टिसों करि जिष्णु कोप प्रकाश॥ धनुष तौंन किरात लीन्हों
लीन करि बलवान। भए ठाढे जिष्णु लै तब खड्ग निशित महान॥ अन्त करिबे युद्धको धरि वेग
आए चंड। हनो शीघ्र किरातके असि भई सो द्वै खंड॥ शिलासों अरु तरूणसों तब करण
लागे युद्ध। ग्रहण तौंन किरात कीन्हों शिला तरु बर उद्ध। फेरि लागे जिसु मारण मुष्टि वज्र
समान। मुष्टिघात किरात रूपी कियो श्रीभगवान॥ भयो तब चट चटा शब्द सु मुष्टिघातज
उद्ध। जिसु और किरात दोऊ करत अति बल युद्ध॥ लोम हर्षन युद्ध कीन्हों भुजनसों बर
बीर। द्वैघरीलों वृत्र बासव यथा अति रणधीर॥ फेरि जिष्णु किरातकों तब कियो उरसों
घात। मरदि उरसों कियो मूर्छित जिष्णुकों सु किरात॥ भुज उर सघर्षन सों सु पावक भयो
प्रगटित भूप। शम्भु कीन्हों गात्रसों अति मर्दि पीडित रूप॥ जिसु हरके तेजसों तब लहो मोह
महान। भए फाल्गुन गात्र पीडित सिकुरि पिण्ड समान॥ निश्वास व्है कै गिरे क्षितिपर जिष्णु
सबसम बीर। घरीद्वैमहँ पाय संज्ञा उठो फिरि रणधीर॥ शरण्य जानि महेशकों तब लियो
शरण अनूप। लिङ्ग पार्थिव बिरचि अरच्यो सुमन माला भूप॥ सुमन माल किरातके सो शीश
पर अभिराम। देखि हर्षित भए अर्जुन पाय बोध ललाम॥ परे हरके पाय पैं तब जाय कै मति
अन। कृपा करि कै ईश घन गंभीर बोले बैंन॥ * ॥ महादेवउवाच ॥ * ॥ तुष्ट तुम पैं भए हम
लखि तो अमानुष कर्म। शौर्य्य धीरज तैं न चूकी और तो सम पर्म॥ तेज बल सम है हमारो अरु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तुम्हारो बीर । जिष्णु जानऊ हमै आपु न प प्रसन्न गँभीर ॥ देत हैं हम दिव्य अर्जुन परम तुमकों ज्ञांन । जीति हो रणमाह अरिगण सुराशुर बलवान ॥ अस्त्र अनवारित जो तुमकों देत ह हम बीर । धरापर सो बिना तुम नहि और धारक धीर ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ शूलपाणि पिनाकधरको सहित देवी रूप । तहाँ देखत भए अर्जुन कृपा पाय अनूप ॥ जानु शीश लगाय क्षितिसों कियो दण्ड प्रणाम । तुष्ट हरकों कियो अर्जुन भक्तिसों अभिराम ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ नीलकण्ठ पिनाकधर हर शम्भु भव भूतेश । लोककार कार्य्यतते यना मय लोकेश ॥ देव देव गिरीश अम्बक शंभु गिरिजानाथ । नीलकण्ठ कपालधर कलकलाधर सुत माथ ॥ दक्षयज्ञ बिनाशकारण रुद्र सरहर सर्व । पार्वतीपति कमललोचन कृपासिन्धु अखर्व ॥ कृपा चाहत रावरी अब कृपा कीजै ईश । क्षमा कुरु अपराध मेरो क्षमामय जगदीश ॥ इहां आयो परम दर्शन रावरो निरधारि ॥ महागिरि हिमवान पर तो प्रीति नित्य बिचारि ॥ नहीं मोकों होय मै अपराध कीन्हो जैांन । अज्ञानवश यह दोष मेरो क्षमा कीजै तैांन ॥ किया वश अज्ञान जा हम रावरेसों युद्ध । शरण मोहि बिचारि कीजै क्षमा करुणा उद्ध ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ कहो हँसि कै शंभु ऐसें पार्थसों अभिराम । बाऊ गहि कै लाय उरसों महा करुणा धाम ॥ महादेवउवाच ॥ रहे नारायण सहित तुम पूर्व तन नररूप । बद्रिकाश्रममे कियो तप वर्ष अमित अनूप ॥ तुम्हैमे अरु बिष्णु मे है तेज पुञ्ज महान । तेजतें तुम बिष्णु दोऊ धरत जगत महान ॥ शक्रके अभिषेकमे तुम धनुष धरि घननाद । सङ्ग हरिके किये दनुजन्ह मारि कै निर्बाद ॥ तो करोचित धनुष हो गाण्डीव जो बलधाम । करि सुमाया कियो सो हम अस्त्र अति अभिराम ॥ तूण अक्षय रहे दोऊ योग्य तुम कौं जैांन । देत हैं हम लेऊ फाल्गुन तूण धनुवर तैांन ॥ अरुज तो तनु होय गो मम प्रीतित बलवान । लेऊ हमसों मागि वर तुम चहो जैांन सुजान ॥ अर्जुनउवाच देत हो प्रभु हमै वर तो देऊ मागत जैांन । दिव्य अस्त्र जो पाशुपत है घोर दोजै तैांन ॥ ब्रह्म शिर है नाम जाको भरो तेज अखर्व । करत पाय युगान्तकों जो प्रलय यह जग सर्व ॥ कर्ण भीषम द्रोणसों भवितव्य है प्रभु युद्ध । महादेव प्रसादतैं तब तिन्हैं जीतौं उद्ध ॥ दनुज राक्षस यक्ष पन्नग भूत गण गन्धर्व ॥ संग्राममे हों करौं जातें भस्म तिनकों सर्व ॥ कढैं जातें शस्त्र नाना भातिके वर बान । करें संचित धनुषतें पर गहन दहन समान ॥ द्रोण भीषम कर्ण कृपकों लेउँ रणमे जीति । काम हमकों प्रथम यह सो देऊ प्रभु करि प्रीति ॥ * ॥ भवउवाच ॥ * ॥ देत तुमकों पाशुपत यह अस्त्र मो प्रिय बीर । समर्थ धारण मोक्ष अरु संहारमे तुम धीर ॥ वरुण इन्द्र कुबेर यम नहि वायु जानत जैांन । पाशुपत यह अस्त्र जानै जिष्णु मानुष कान ॥ नही काहू मनुज पै यह देऊि तजियो बीर । जगतको सबनाश करि है पाय अल्प शरीर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तुरित सुनि सो पार्थ शुचि व्है शम्भुके ढिग जाय । कहन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लागे जोरिकै कर देऊ साथ पठाय ॥ दियो तौंन पठाय शङ्कर नाश सह संहार । मूर्तिमान वन्य०
समान अन्तक अस्त्र तौंन उदार ॥ पार्थपँह सो गयो जैसें उमापतिके पास। मोद धरि करि प्रीति
अर्जुन ग्रहण कीन्हो तास ॥ हलन लागी भूमि तब गिरि सहित कानन सर्व। भई भेरी शङ्खकी
धुनि गगणमाह अखर्व ॥ जाज्वल्यमान सु घोर अस्त्र सो मूर्तिमान विशेखि । देव दानव भए
विस्मित जिष्णुके ढिग देखि ॥ स्पर्श हरको पाय फाल्गुण लहे परम प्रकाश । जौंन किल्बिष रहो
किञ्चित् भयो ताको नाश ॥ फेरि शङ्कर कृपाकरिकै धनुष दीन्हो तौंन । गाण्डीव नामक दनुज
नाशन प्रथम लीन्हौं जौंन ॥ छोडि हिमगिरि परम शङ्कर उमासह अभिराम । गए नभकौं
लखत अर्जुन रहे आनदधाम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ देखि हरकौं जात नभकौं भानु
अस्त्र समान। पाय विस्मय रहे ठाढे जिष्णु तँह बलवान ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ *
भयो कृतारथ जगमे धन्य । सो समान को नरवर अन्य ॥ शङ्कर मोहि पाणिसों पर्श । कियो कृपा
करिकै दै दर्श ॥ परमात्मासों लहि रण साम । जीतें जानें अरिगण ग्राम ॥ ऐसे चिन्तित
पारथ पास । आए तहा वरुण सुविरास ॥ मणि वैदूर्य्य सदृश आभास । सकल दिशन कहँ
करत प्रकास ॥ जादन दीनद नाग महान । लए सङ्गमे मूरतिमान ॥ कनक वनक तन चढे
विमान । आए तहँ धनपाल महान ॥ सहित यक्ष लहि दुतिवर जास । सकल दिशन्ह मह भरो
प्रकाश ॥ पार्थ पास आए यमराज । लए सङ्ग सब पित्र समाज ॥ प्रलय चण्ड करपे अतिचण्ड ।
चढे विमान लए कर दण्ड ॥ ऐरावतपर चढे सुरेश । अर्जुन ढिग आए तेहि देश ॥ सुरन सङ्ग
धारे मित हरष । मनु हिमगिरिपर शशि स नरष ॥ दक्षिणदिशि ठाढे यमराज । भरे प्रीतिसों
सहित समाज ॥ धर्मराज तब वचन गँभीर । अर्जु सों बोले दमि धीर ॥ लखऊ जिष्णु करि दृष्टि
विशाल । हम सह सब आए दिक्पाल ॥ दिव्य दृष्टि तुमकों हम देत । तुम मम दर्शन योग्य
सनेत ॥ तुम पुराण ऋषि हौ नरनाम । अति तपपुञ्ज महा बलधाम ॥ विधि आज्ञा कर्तव्य
बिचारि । आए इहां मनुजतनु धारि ॥ जनमो वसु धरि भीष्म स्वरूप । सो तुमसों मरिहै करू
भूप ॥ मम पितु अंश कर्ण वरवीर । जिष्णु, मरिहि तो मारैं धीर ॥ जनमे दनुज जे भूपति रूप ।
मरिहैं तो मारैंते भूप ॥ दनुज निपात कवच जे धीर । मरि हैं ते तोते वरवीर ॥ तो यश अचल
रही कुरुनाह । तुम तोषो हरकों रणमाह ॥ हरिवे हैं भू भार अखर्व । फाल्गुण हरि सह तुमकों
खर्व ॥ लेऊ दण्ड मम अस्त्र अमान । करऊ अमानुष कर्म महान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
लियो सो अस्त्र सविधि कुरुवीर । मंत्र सहित उपचार गँभीर ॥ पश्चिमदिशि ठाढे ह्वै बैन । बोले
वरुण महा जलऐंन । सबी मुख्य पार्थ तुम वीर । क्षात्रधर्मधारक गंभीर ॥ हम ह वरुण लखऊ
सुविरास । देत अस्त्र वारुण वर पास ॥ सहित मोक्ष संहार विधान । याते वचन न अरि बलवान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

उत्तरदिशितें बचन रसाल । अर्जुनसों बोले धनपाल ॥ देत अस्त्र प्रस्थापन नाम । सहित बिधान लेऊ बलधाम ॥ नृप धृतराष्ट्र चमू बरबीर । धर्षित करऊ युद्धमे धीर ॥ तब अर्जुन सो अस्त्र महान । लियो धनदसों सहित बिधान ॥ तब बोले सुरपति इमि बन । कोमल आनदकार सचैन ॥ कुन्तीपुत्र सिद्ध सुखदाय । लही प्रत्यक्ष देवगति पाय ॥ करिबे देवकार्य्य अभिराम । चलिबे परी तुम्हैं सुरधाम ॥ सज्ज होऊ तुम अर्जुन पूत । रथ लेइ आवत मातलि सूत ॥ तहां दिव्य वर अस्त्र अखर्व । सहित बिधान देहिगे सब ॥ पूजन कीन्हों सहित बिधान । दिगपालनको जिष्णु सुजान ॥ गए दिशापति अपने धाम । करि अर्जुनसों प्रीति ललाम ॥ जानि मनोरथ सिद्धि उदार । भरे मादसों पांडु कुमार ॥ सुरपुरकों चलिबो निरधारि । सुरपति रथपथ रहे निहारि ।

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि किरातार्जुन युद्ध बर्णनोनाम षष्ठमोध्यायः ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

आवत रथ नभतें अभिराम । करत प्रकाशित अम्बर धाम ॥ भरत दिग्गनमह नाद महान । जवन पटल भेदत सम भान ॥ दिव्य शस्त्र बज्रादिक जौन । जापैं धरे प्रभामय तौन ॥ इश हजार बाजी सम बात । जाकों वहत हरित रँग गात ॥ नीलध्वजा जापैं फहराति । कनकदण्ड मणि मय अति कान्ति ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ता रथपैं देखो चढो सूत कनक रथ भूप । लगे बिचारन पार्थ तब यह कोउ देव अनूप ॥
तब पारथ पँह आइके रथ तजिकै अभिराम । बचन लगो ऐसें कहन मातलि सहित प्रणाम ॥

॥ * ॥ मातलिरुवाच ॥ * ॥

पार्थ पार्थ हे शक्रसुत महाबीर बलधाम । तुम्हैं सुरेश लखो चहत सुरन सहित अभिराम ॥
बेगि चढो या सुरथपैं यह सुरपति प्रिय बीर । तात पठाये रावरे करिकै कृपा गँभीर ॥
ऋषि सुर गन्धर्बन सहित उत्सुक लखिबें तोहि । तुम्हैं लेन या लोकतें बेगि पठायो मोहि ॥
चढऊ सुरथपर सङ्ग मम सुरपुरकों चलु बीर । दिव्य अस्त्र सब पायकै बज्रि आइयो धीर ॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

मातलि पहिले बेगि तुम चढऊ सुरथ पर तौन । दान यज्ञ तपतें नहीं प्राप्त होतहै जौन ॥
तुम चढिकै पहिले करऊ सुस्थिर बाजी सर्ब । फिरि चढिहै हम सुजन ज्यों मतपथ पाय अखर्ब ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

मातलि सुनि फाल्गुण बचन चढो सुरथपर जाय । बाग पकरि नियमित करे तुरँग सकल तुरकाय ॥
दर्शनहे अर्जुन चढे फेरि सुरथपर जाय । ध्यान धारि श्रीकृष्णको गङ्गाजलसों न्हाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

देव पितरगण अर्चिकै वेद बिहित कुरुबीर । नानाविधि करि प्रार्थना शैलराजसों धीर ॥ ब०प०
रथ चढि ऊरधकों चले अर्जुन भानु स्वरूप । सुकृतिनके नभमे लखत बिमल बिमान अनूप ॥
सोम सूर्य्य अरु अग्निको तहाँ न लखो प्रकाश । पुण्यमान जन सुतनुको फैलो बिमल बिकाश ॥
तारा रूप जो जगतमे जानि परतहै भूप । दीप सदृश अति दूरतें जौंन महान स्वरूप ॥
अपने अपने लोकमे भरे प्रकाश गभींर । भूप सिद्ध लखिऐ मरे युद्धमाह जे बीर ॥
गन्धर्व गुह्यक ब्रह्म ऋषि अप्सार सूर समान । भरे तेज लखिकै भए फाल्गुण बिस्मयमान ॥
पूछन मातलिसों लगे ए को भरे प्रकाश । मातलि रुवाच । ए सुकृतीहैं आपने लोकनमे मतिरास ॥
तब देखो द्वारे खरो ऐरावत गज स्वेत । चतुर्दंत कैलाशगिरि की समताकों लेत ॥
सिद्धिमार्गमे जात इमि सो हो पाण्डव रूप । जैसे पूरुव कालमे हो मान्धाता भूप ॥
ऐसे देखत लोक सब राजनके समुदाय । स्वर्गलोकको गो चलो महाबीर कुरुराय ॥

॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पुरी सो अमरावती तहँ जाय देखो बीर । सर्वर्तु कुसुमित तरुणसो चहुओरलसति गभींर ॥ पुष्प सौगन्धिक तरुणके भरो गन्ध समीर । लहत ताको परस पावन मोद मण्डित धीर ॥ लखो नन्दन बिपिनि जामे अप्सरनको सङ्ग । दिव्य जामे कुसुम सोहत भरे नानारङ्ग ॥ करत तप ब्रत यज्ञ रणमे मरत निर्भय जौंन । तीर्थमे बहु न्हात पावत तास दर्शन तौन ॥ मांसाद गुरुतल्पग सुरापी नही देखत ताहि । यज्ञ हन्ता दुष्ट ताको सकै कैसें चाहि ॥ अप्सरनके गीत नादित बिपिनि देखत तौंन । शक्रकी प्रिय पुरीको तब कियो फाल्गुण गौंन ॥ तहा देवबिमान शत सह लखे अर्जुनबीर । खरे आवत जात चाहत लहो अद्भुत धीर ॥ गन्धर्व अप्सर बृन्दतें कुरुवीर सुस्तुति मान । सुमन गन्धित बायु बीजित भरो मोदमहान ॥ देवऋषि गन्धर्व सिद्ध प्रसन्नव्है अभिराम । पार्थको बहु भाँति पूजन कियो परम ललाम ॥ शङ्ख भेरी बाद्य सुस्तुति परम आशिष पाय । नक्षत्र पथ सुरबीथिकाकों लखो अर्जुन जाय ॥ इन्द्रआज्ञा पाय अर्जुन सुनत आशिष बैंन । देवगण सों मिले ऋषिबर भूप जे तप अन ॥ करत आश्वासन सुसबको मोद मङ्गल पाय । शतक्रतु सुरनाथकों तब तहां देखो जाय ॥ उतरि रथतें वीर अर्जुन गए शतक्रतु पास । राजचिन्ह समेत सोहत धरे परम प्रकाश ॥ गन्धर्व बंदी बिप्र बेद स्तुति करत अभिराम । जायकै तब देखि अर्जुन कियो दण्डप्रणाम ॥ भुजनसों गहि इन्द्र लायो हृदयसों सुखदान । पाणि गहिकै दियो आसन पास शक्र महान ॥ अङ्कमे लै कियो मूर्धाघ्राण फिरि सुरनाह । लियो फिरि बैठाय अपने शक्र आसनमाह । प्रेम करि तब इन्द्र अर्जुनकों सुमुख अभिराम । परशि करसों कियो श्रमसों शान्त सुषमाधाम । बेर बेर सुभुजा करसों कनक दण्ड समान ॥ लगे पोछन कृपा करिकै पुत्रकों मघवान । बिहँसिकै सहसाक्ष फाल्गुणकों भरे चित चैंन ॥ लगे चाहन चावसों नहि तृप्ति पावत नैंन । एक आसनप लसे दोउ परम परमापूर ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अ०५० उए चौदशिकां गणएमे मनो सह शशिसूर ॥ करत गायागान तुम्बुर आदि सब गन्धब । अप्सरी नाचन अप्सरा सब भरी रूप अखर्ब ॥ कमलसे चख चपल जिनके कठिन उरसिज पीन । पृथुल जघन नितम्ब त्रिबली बलित अति कटि क्षीण ॥ छबनि छहरे चिकुर चिकने पद्मसे पर पानि । सुधा बरषत सुधानिधि इमि लसति है मुसुकानि ॥ भौंह बङ्क कटाच्छ शितशर तानि मन्मथबीर । सिद्ध मम मृग मारिबेकों धनुष धारैं धीर ॥ हाव भाव कटाच्छ करि करि नृत्य भेद ललाम । नची सिगरी अप्सरा सुरसभामे अभिराम ॥ वैशम्पायनउवाच॥ देव सह गन्धर्ब तब सुरराजको मत पाय। देय अर्घ्य सु पाद्य पूजो जिष्णुकों सुखदाय ॥ गए फेरि लेवाय सुरपति भौनमे अभिराम । बसे अर्जुन जाय तेहां पिताको लहि धाम ॥ इन्द्र शिक्षा करण लागे दिव्य अस्त्र सुदार । संधानको अरु मोक्षको सु बिधान सह संहार ॥ बज्र अशनि सु अस्त्र दोऊ इन्द्र प्रिय लहि तौन । जिष्णु घातनको स्मरण करि कियो चाहो गौन ॥ पाय शासन इन्द्रको तहँ रहे शरमिति बर्ष । कृतार्थ फाल्गुण हों कहो हरि समय पाय सहर्ष ॥ चित्रसेनसों लेऊ अर्जुन नृत्य गीत बिधान । बादित्र जो सुर विहित कहै श्रेयकर सुखदान ॥ गीत बाद्य सु नृत्य तासों शिखो अर्जुन बीर । द्यूतको दुख समुझि मनमे लहत मोद न धीर ॥ चहत दुःशासन शकुनिको कियो बध बलवान। तौर्य्यत्रिक गुण पाय पावत मोदको न सुजान ॥ चित्रसेनहि रहसमे लै कहे सुरपति बैन। उर्वशी मे पार्थके आशक्त देखत नैन ॥ उर्बशीकों जाय पठवऊ पार्थ पास सुजान । होय जासों दिव्य रतिरस विज्ञसों बलवांन ॥ चित्रसेन तथास्तु कहि गो उर्बशीके पास। बचन तासों कहन लागो मृदुल मधुर सहास ॥ तुहै सुन्दरि विदितहै त्रिदिवेश पठयो मोहि । कियो चहत प्रसन्न जो हविधास जानत तोहि ॥ विख्यात जो गुण शील ते वर बीर धीरजधाम । एक रक्षक त्रिदिवको मघवान सम गुणग्राम ॥ रूपते वय बंशतें तप तेजतें सु महान । पुरुष त्रिभुवनमे न कोउ और पार्थ समान ॥ शक्र शासन सहित अर्जुन विदित तो सुखदाय । स्वर्गको सुख लहैं तव पदपदुम संनिधि पाय ॥ तौन करिए सुनऊ सुन्दरि शक्र शासन सङ्ग । सुनत सो मुसकाय हेरी भरी आनद रङ्ग ॥ चित्रसेनसों कहे अैसें उर्बशी तब बैन। कहत तुमसो सत्य फाल्गुण सकल गुणको अैन॥ सुनत ताकों व्यथित मोकों कियो अतिभय मार।जिष्णुकों जौं बरौं याते लाभ कौन उदार ॥ शक्र शासन बचनतें तब जिष्णु गुण अभिराम । सुनत हे गन्धर्बपति मोहि खबश कीन्हों काम ॥ चित्रसेन सु जाऊ तुम हम जाति जहँ सुखदाय । उर्बशी अज्ञान किन्हों सुरभ अलिक मगाय ॥ बसन भूषण दिव्य धरि बर गन्ध माल समृद्ध । धनञ्जयके रूप प्रेरित मदन शरसों बिद्ध ॥ रमति मनमे सङ्ग फाल्गुणके भरी उतसाह । चन्द्रमोदय देखि संध्या भरी रतिरस चाह ॥ चली अर्जुन सदनकों धरि मन्दगति कचभार । पृथुल जङ्घ नितम्ब तनु कटि कठिन उरज उदार ॥ सुधाधरषो बदन भृकुटी बङ्क चञ्चल नन । उदर क्षम बलि रोमराजी जघन सुषमाअैन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

नमित उरसिज भारसों कटि बधी त्रिवलीबन्ध । अङ्गराग सुगन्धसों अलि रहे घेरि मदन्ध॥ व०प०
क्षीण पटमे प्रगट दरशत कनक बनक सुअङ्ग । ऋषिनहूके भरै मननै महत काम तरङ्ग ॥ अरुण
पदतल अङ्गुली नख गूढ गुल्फ लखात । करे ईषत पान मधुसो मदनमद मय गात ॥ सूक्ष्म ओढें
उत्तरीय सो लसत मेचक रङ्ग । मनऊ राकाको सुधाधर क्षीण जलधर सङ्ग ॥ गई सो मनगामि
नी क्षणमाह फाल्गुण धाम । द्वारपालन जाय अर्जुन सों कहो अभिराम ॥ उर्बसीहै द्वार ठाढी
करे सब शृङ्गार । देऊ आवन कहो तिनसो पार्थ परमउदार ॥ मन सशङ्कित करै आगे गए धारे
धीर । भए लज्जित लखत ताको धरमधुरधर बीर । प्रणाम करि गुरुवत् सु पुजा कियो सहित
विधान ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ देवि आज्ञा करतिहौ का कहो नीति समान ॥ जिष्णु के
सुनि बचन बोली उर्बसी मतिरास । वचनते गन्धर्वके सब कहे सहित प्रकास ॥ * ॥ उर्वश्यु
वाच ॥ * ॥ चित्रसेन जो आइ मोसों कहे बचन प्रमान । तौंन सुनि हों इहाँ आई सुनऊ सो
सुखदान ॥ सभामे सुरराजकी सुरवृन्द आए सर्व । तहाँ हम सब अप्सरण मिलि कियो नृत्य
अखर्व ॥ तहाँ हमको रहे लखि तुम होय अनिमिष बीर । नृत्यान्तमे करि बिदा सबको शक्र
सुमति गभीँर ॥ चित्रसेनहि पठै दीनो इन्द्र तब मो पास। शक्र शासन चित्रसेन सुकहो इमि छवि
रास ॥ मम तुल्य पारथको भजऊ तुम जाय सुन्दरि अद्य। सकलगुण संपन्न सुन्दर सूर शुचि अन
वद्य ॥ तातकी तो मानि आज्ञा इहाँ आई बीर । चित्त मेरो प्रथमही तुम हरो हो रणधीर ॥
॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कर्ण करसों मूदि लज्जित जिष्णु बोले बन। कहति जो तुम वचन
हमको योग्य सुनवे हैन ॥ सदृश हौ गुरुदारके तुम उर्बशीं सह धर्म । सम सुकुन्ती सचीके हम
तुम्हैं जानत पर्म ॥ जौंन तुमको लखतहैं हम किए अनमिष नैंन।सहित कारण कहतहैं सो सुनऊ
सुन्दरि बैंन ॥ जननि पौरव बंशकी यह भरी मोद ललाम । तुम्हे देखत रहे यातें उर्बशी अभि
राम ॥ अन्यथा चित बृत्ति मम नहि तुम्हैं योग्य बिचार । गुरुऊते गुरुतरा तुमहौ बंशकरणि
उदार ॥ * ॥ उर्वश्यु वाच ॥ * ॥ प्रगट हमहैं बार बनिता सुनु सुरेशकुमार । गुरुस्थानार्पन
हमकों कीजिए न उदार ॥ कामतें हो तप्त मोकों भजऊ भक्त बिचारि ॥ अर्जुन उवाच ॥
उर्बशी सो सुनऊ जो हम कहतहैं निरधारि ॥ दिशा बिदिशा देव मेरे सुनत बचन महान ॥
यथा माद्री सची कुन्ती तथा तुम सुखदान ॥ जाऊ तुमको करतहौ मैं दण्डवत सु प्रणाम। मात्रि
वत तुम पूज्य सुतवत रक्ष हौं अभिराम ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ पार्थके सुनि बचन
ऐसें उर्बशी व्है क्रुद्ध । करे भृकुटी बंक कांपत शाप दीन्हों उद्ध ॥ * ॥ उर्वश्युवाच ॥ * ॥ पाइ
शासन पिताको तव इहां आई बीर।मोहि वरत न देति याते तुम्हैं शाप गभीँर॥नृत्य शीक्षक होय
इक्षिणमाह बसिहऊ जाय । हीन व्है पुरुषत्वतें तुम रहऊ षंड कहाय ॥ उर्बशी यह शाप देकै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० गइ अपने धाम। चित्रसेन समीप अर्जुन जाय आतुर माम। निशाको वृत्तान्त तासों प्रगट कीन्हों सर्ब। चित्रसेन सो इन्द्रसों सब कहो बात अखर्ब ॥ पार्थकों तब इन्द्र लीन्हों बोलि अपने अन। समाधान सु कियो कहिके शान्तिपूर्बक बैंन॥ पुत्र तुमकों उर्बशी जो दियो शाप महान। अज्ञात चितिपर बसऊगे तब होयगो सुखदान ॥ तेरहें सो बर्ष ह्वैहै शाप भोग बिनाश। क्लीवत्व नर्तन बेष तजिहै पुत्र तेरो पाश ॥ शक्रके सुनि बचन अैसें मोद लहि अभिराम। शाप चिन्तन तजो अर्जुन बीरबर बलधाम ॥ चित्रसेन समेत बिहरण लगे सुरपुर माह। चरित यह पढि काम अयतें बचैं गो नरनाह॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य मिश्रेण मणिदेवेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि अर्जुनस्यस्वर्गगमनान्तसुर्बशीशापोपाख्याने सप्तमोध्यायः ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

इन्द्रहि देखनको करि काम। लोमस ऋषि आए तपधाम ॥ कियो प्रणाम इन्द्रके पाश। बैठो देखि पार्थ बलराश॥ जीतो लोक कौंन करि कर्म्म। इन्द्रासन पर बैठो पर्म॥ सुनी अस्त्र इन्द्रके पास। बैठो आसन पर गत त्रास॥ ऋषिको चित्त बृत्तिको जानि। बोले इन्द्र बचन सनमानि॥ ऋषि जो भयो तुम्है सन्देह। तौंन सुनऊ हमसों तपगेह ॥ केवल मनुज न पार्थ ललाम। पुत्र हमारो है बलधाम॥ कुन्तीपुत्र महा रणधीर। अस्त्र हेतु इत आयो बीर ॥ इन्हैं न जानत तुम मतिमान। हैं ऋषि ए अति परम पुरान॥ नर नारायण सुनियत जौंन। फाल्गुण हृषीकेश है तौंन॥ कार्य्य अर्थ लीन्हों अवतार। बदरिकाश्रम मे जौंन उदार॥ बिष्णु जिष्णु को आश्रम तौंन। मूलदेश गङ्गाको जौंन॥ मम नियोगते जिन अवतार। लीन्हों हरिबेकों भू भार॥ असुर निपात कबच बलबान। करैं जे मो अप्रिय अतिमान॥ सुरन्ह गणन नहि लहि बर जौंन॥ दनुके पुत्र रसातल भौंन। भूगत जौंन बिष्णु बलधाम॥ जाको कपिल कहत मुनि नाम। सुनु जे सगर तनय बलराश। भए भस्म देखनही जाश॥ इमि हरि कारय करण अखर्ब। पार्थ हनैंगे तिनको सर्ब॥ अल्प कार्य्यके हेत ऋषीश। बोधित करैं कौंन जगदीश॥ दनुजन्ह मारि पार्थ बलधाम। जैहै फिरि चितिपर अभिराम॥ मम आज्ञातें तुम ऋषि पर्म। चितिपर जाय लखऊ नृपधर्म॥ यह सन्देश हमारो जाय। कहेऊ युधिष्ठिरसो समुझाय॥ दिव्य अस्त्र सब लहि अभिराम। जिष्णु आइ हैं इत बलधाम॥ तुम जे परम तीर्थहैं सर्ब। सह भ्रातन्ह तें करऊ अखर्ब॥ पाप बिगत करि तीर्थस्नान। करिहो राज्य भोग बलवान॥ अटत तार्थमे भूपति धर्म। तुम रक्षित कीजो ऋषि पर्म॥ जिष्णु इन्द्रके सुनिकै बैंन। लोमससों बोले सह चैंन॥ तुमसो रक्षितव्है नृपधर्म। तीरथ करैं यथाबिधि पर्म॥ तथा कीजिये हे तपधाम। करिकै छपा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

उदार ललाम ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ कहि तथास्तु लोमस तपभौंन । गए काम्य वनको करि गौन ॥ देखो तहाँ जात नृपधर्म । द्विज भ्रातनसह शोभित पर्म ॥ जनमेजय उवाच ॥ सुनि पारथका कम महान । कहा कहो धृतराष्ट्र सुजान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ पारथ गए शक्रके लोक । सुनत व्याससों भए सशोक ॥ सञ्जयसों बोले इमि बैंन । नृपधृतराष्ट्र तजैं चित चैन ॥ सञ्जय सुनो पार्थके कर्म । हमकों विदित रहो कछु मर्म ॥ मत्त विषय रत दुर्मति मन्द । पुत्र हमारो कर जग दन्द ॥ बीर धनञ्जय जाके साथ । सो जानऊ त्रिभुवनको नाथ ॥ जाके वर्षत बाण गँभीर । सन्मुख जाय कौंन असबीर ॥ मो सुत लहिहै मृत्यु अभंग । जिन्हकों युद्ध पाण्डवन्ह संग । को अर्जुनके सोहैं बीर । हों चिन्तत जय लही गँभीर ॥ कर्ण प्रमादी द्रोण सो वृद्ध । भीष्म तथा अर्जुन बल क्रुद्ध ॥ सञ्जय होनहार अति युद्ध । सूर सकल अपराजित उद्ध ॥ ए सब मरैं की अर्जुन बीर । होय शान्ति तब सुनऊँ गँभीर ॥ अर्जुनको हन्ता जेतार । नही जगतमे बीर उदार ॥ इन्द्र सदृश पारथ बल पुष्ट । किए खाण्डवमे पावक तुष्ट ॥ सकल भूमिके पार्थिव जीति । राज सूय जिन करो सनीति ॥ रबि करता पित जगत अखर्ब । त्यों अर्जुनशर मो सुत सर्ब ॥ सुनत जिष्णु रथ घोष महान । भजति भारती सैंन अमान ॥ * ॥ सञ्जयउवाच ॥ * ॥ जे तुम कहे भूप ए बैन ॥ ते सब सत्य महामतिऐंन ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

क्रोध भरे पाण्डव सकल महाबीर बलवान । लखि कृष्णाको सभामे कियो जौंन अपमान ॥
कर्ण दुशासनको बचन सुनि अति दारुण बीर । भरे क्रोध पांडव सकल यह मो मति गंभीर ॥
संतोषित हरकों कियो करि पारथ अति युद्ध । सुनो तौंन धृतराष्ट्र हम तास महत कृत उद्ध ॥
करि किरातके भेषकों धारि धनुष बर भाथ । सुबल परीक्षा करनकों लरे जिष्णु के साथ ॥
लोकपाल तहँ आय सब दिये अस्त्र सबिधान । फाल्गुणको तपतेज लखि भरे प्रीति अतिमान ॥
अष्टमूर्ति हरसों नही जीर्ण भयो जो बीर । कौंन ताहि जीतो चहत समरमाह रणधीर ॥
खैंचि द्रौपदीकों कियो घोर युद्ध सम्पन्न । दुष्ट दुशासन तब भए पांडव क्रोधासन्न ॥
कहो भीम जो क्रोध करि सत्य बचन सो भूप । उरू सुयोधनकी हनन मारि गदा अति रूप ॥
हैं पांडव सब अस्त्रबिद अमर न जीतैं जाहि । अन्त तिहारे सुतनको करिह रण अवगाहि ॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥

कहें भयो का कर्णके क्रूर बचन भरि मैर । कृष्णा आई सभामे पूर्ण भयो तब बैर ॥
मन्द भाग्य मेरो बचन सुनत नही मितिमान । जानि अचक्षु अशक्त मोहि मेरे सुत अज्ञान ॥
साबल कर्णादिक सचिव जौंन सुयोधन पाश । दोष शिखावत नित्य ते करता कुरुकुल नाश ॥
सहज मुक्त शर पार्थके दाहक मम सुत सर्ब । हूहै का जब क्रोध करि बर्षिहि बाण अखर्ब ॥
मंत्री रक्षक कृष्णहैं जाके त्रिभुवननाथ । को जीतैगो जगतमे लरिकै ताके साथ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० यह सञ्जय हम जिष्णु को सुनो कर्म अतिमान। बाऊयुद्ध हरसों कियो महाबीर बलवान ॥
पुत्र हमारे सर्वथा नाश लहैं गे सर्व। भीम पार्थ श्रीकृष्ण जब करिहैं क्रोध अखर्व ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥

शौच कियो धृतराष्ट्र जो सो सब व्यर्थ विचार। धर्मनृपतिकों प्रथमही दे बनवास उदार ॥
भोजन बनमे करत हे पांडव कहा सुजान। बन्य वस्तु के क्षेत्र भव कहो तौन मतिमान॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

बन्य वस्तु अरु मृगनको मांस मारि शर शुद्ध। ब्राह्मण पितरनकों अरपि किय भोजन अविरुद्ध ॥
ब्राह्मण सहसन्ह साथि जे अरु अनग्नि तपधाम। तिनकों भोजन देत हैं मृगपल नृप अभिराम
सविधि पतिनकों द्रौपदी भोजन प्रथम कराय। पीछे तें माता सहज आपु यथाविधि खाय ॥
मृगयाकों नृप पूर्वदिशि जाम्यवृकोदर बीर। पश्चिम उत्तर जात हे माद्रीसुत रणधीर ॥
पांच बर्ष अर्जुन बिना काम्यकबनमे भूप। यज्ञ होम करिके बसे धर्मनृपति शुचि रूप ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सुनि ताको अद्भुत चरित पूरे शोक महान। सञ्जयसों धृतराष्ट्र नृप बोले दुःखित मान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

दिवश निशि नहि परति निद्रा एक क्षण भरि मोहि। द्यूत सम्भव अनय अपने सुतनको अति
जोहि ॥ पांडवनको धैर्य्य सौर्य्य बिचारिकै अतिमान। परसपर अनुराग भ्रातनमे परम सुखदान ॥
नकुल अरु सहदेव अतिरथ युद्ध दुर्मद बीर। भीम अर्जुन सहित तिनसों लरै गो को धीर॥ निःशेष
मेरी सैनकों ते करैंगे बलवान। द्रौपदी को क्लेशसो नहि सहैंगे अतिमान ॥ वृष्णि अरु पाञ्चाल
रक्षित कृष्णसों सब जौन। भस्म मेरे सुतनकों रणमाह करिहैं तौन ॥ महा धनुर्धर भीम तिनमे
बीर अमित उदार। बीर घातिनि गदा लै जब करै गो सञ्चार ॥ गदाके बरवेगकों सहि सकी
भूपति कौन। सुहृद वचन न कियो जो हम समुझिहैं तव तौन ॥ * ॥ सञ्जयउवाच ॥ * ॥ व्यति
क्रम तुम कियो तौन समर्थ व्है कै भूप। नही रोके सुतन्हकों तव करत विग्रह रूप ॥ तिन्हैं
निर्जित द्यूतमे सुनि काम्यबनमे आय। समाधान सु कियो यदुपति बचन सत्य सुनाय ॥ द्रुपदको
सुत धृष्टकेतु बिराट नृप कैकेय। कहे जे तिन बचन लखि नृपधर्म दुखित अमेय ॥ चारसों हम
सुने तें सब कहत तुमसों मर्म। जिष्णु को सारथ्य मागो कृष्णसों नृप धर्म ॥ कियो सो स्वीकार
कीबँ युद्धमो यदुबीर। धर्मनृपको देखि धारैं अजिन वल्कल चीर ॥ धर्मनृपसों कृष्ण बोले भ्र
क्रोध महान। यज्ञमे जो लखी ही तो परम श्री अतिमान ॥ तौन सम्पति हरी तो करि द्यूत जिन
कुरुनाथ। मारि तिनको लेउगो सो सुनऊ जीवित साथ ॥ राम सह यदुवंशके जे महारथ ब
बीर। सहित धृष्टद्युम्न अरु शिशुपाल सुत रणधीर ॥ सङ्ग लै धृतराष्ट्रसुतकों कर्ण सह र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

माह। शकुनि सह दुःशासनहि हनिहौं सुनौ हे कुरुनाह॥ हस्तिनापुर बसहु गे तब जाय तुम कुरुभूप। लेइकै धृतराष्ट्रकी श्री तौंन परम अनूप॥ भूपगणमे कहो तब श्रीकृष्णसा नृपधर्म। धृष्टद्युम्न हि आदि तुम सब सुनहु भूपति पर्म॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥*॥ ग्रहण हम सब करत हैं तो बचन सत्य गँभीर। मारिहौ तुम शत्रु मेरे युद्धमे बलवीर॥ बर्षतेरहकी प्रतिज्ञा सत्य कीजै तौंन। करी हम नृपवृन्दमे यदुनाथ अनृत न जौंन॥ धर्मनृपको बचन सुनिकै सभासद नृप बीर। धृष्टद्युम्न हि आदि दै सब गए शान्त गँभीर॥ क्रुद्ध हरिको शान्त कीन्हों मधुर कहि नृप धर्म। द्रुपदजासों कृष्ण तब इमि कहन लागे पर्म॥ द्रौपदी तब क्रोधसो तजिहै सुयोधन प्रान। सत्य जानहु शोचकों तुम धरहु मति सुखदान॥ द्यूतनिर्जत देखि तुमकों कियो है जिन हास। हसैंगे गोमायु बृक करि मांस तिनको ग्रास॥ टारि तिनको शीष करिहैं गृद्ध शोणित पान। द्रौपदी जिन तुम्है खैची सभामे हतज्ञान॥ यहि भांति तहँ श्रीकृष्ण बोले सहित सिगरे भूप। शूर सब संग्रामकर्त्ता तेजमय अतिरूप॥ गए तेरहवर्ष न्योते तिन्हैं भूपति धर्म। गए सह श्रीकृष्ण नृप सब धाम अपने पर्म॥ राम कृष्ण सबृष्णिबंशी वीर सह पाञ्चाल। सहित पाण्डव मत्स्यपति कैकेय भूप बिशाल॥ जाय इनके सामुहें को युद्धमे बलवान। यथा सोहें सिंहके मृग चरै गो न अयान॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ द्यूतमे हम नही मानो बिदुरको बर बैंन॥ नाश कौरबबंशको भवितव्य है सह सैंन॥ अस्त्र कारण स्वर्गकों जब गए फाल्गुण बीर। सहित भ्रातन धर्मनृप तब कियो का धरि धीर॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ गए फाल्गुण स्वर्गकों तब काम्य बनमे जाय। बिप्र भातन सहित कृष्णा बसे तहँ सुखपाय॥ धनंजय अरु राज्यको लहि कै बियोग महान। शोकसागर मग्न चिन्ता करत हे अतिमान॥ भीम लागे कहन ऐसें धर्मनृपसों बैन। गए शासनसों तिहारे धनञ्जय बलऐंन॥ भएँ जाके नष्ट हम सब बृष्णिबंश समेत। कृष्ण अरु पाञ्चालके सुत नाश लहत सनेत॥ जास भुजबलके भरोसे समरमे हम सर्ब। जीति कै सब शत्रु चाहत भूमिभोग अखर्ब॥ कृष्ण सह हम कर्ण प्रमुख संहारि कै परपक्ष। बाहुबलतें कियो चाहत भूमि भोग समक्ष॥ करहु धारण धर्म क्षत्रिनको महामति रास। क्षत्रि धर्म न बिहित करिबो भूपकों बनबास॥ कहत हैं बुध राज्य करिबो क्षात्रधर्म सुजान। प्रथम द्वादशबर्षके हनु शत्रुकों बलवान॥ बासुदेव समेत सेना लेई कै अतिमाम। दीजिए धृतराष्ट्रसुतको मारि कै यम धाम॥ मारि है धृतराष्ट्रके सुत सकल हम रणधीर। कर्ण आदिक और जे भट होहिँ सन्मुख बीर मारि हैं हम शत्रुकों तब आय कै बनबास। दोष तजिबे सत्यको तुम कीजियो मतिरास॥ यज्ञ नाना भातिके करि पापको करि नाश। स्वर्गकों तब जाहु गे तुम अमरपतिके पास॥ छलीकों करि मारिऐ छल नही यामे पाप। धर्मबिद सब कहत हैं नहि लहत धर्म उताप॥ एक कीन्ह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० कृच्छ्रव्रत सो होत सर्ष समान । धर्म शास्त्र सु बेदको सब कहत बचन प्रमान ॥ तौंन देखत देश नहि जह जांय कै हम सब । छपैं गे जहँ तेरहे सम मांह व्हैकै खर्ब ॥ पठैकै सो चार हमकों जानि लेहै दुष्ट । फेरि हमकों बास बनको जानि परत सु पुष्ट ॥ नाघि ह जौ तेरहौ हम बर्ष दैबाधीन । द्यूतकों फिरि बोलि है सो तुम्है पापासीन ॥ आव्हांन कीन्हें द्यूतते न निबृत्त ह्वहौ भूप । द्यूतमे ते कुशल तुमकों जीति हैं छलरूप ॥ पुनः करिहौ बास बनको सुनऊ हे नरनाह । योग्य होऊ न आपु हमकों कृपिन करिबे माह ॥ देऊ आज्ञा हनै हम धृतराष्ट्रसुतकों भूप । दहै जैसें पाय पावक सघन गहण अनूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहत ऐसें भीमकों नृप शान्तिमय कहि बैंन । लाय हियसों घ्राण मूर्द्धाको कियो लहि चैंन ॥ नियत दुर्योधन हि हनि हौ युद्धमे तुम बीर । बर्षतेरह देऊ बीतन रहऊँ धारे धीर ॥ भीम जो तुम कहत ताको भयो प्राप्त सु काल । अनृत हम नहि करै गे यह सुनऊ बीर बिशाल ॥ बिना छल तब मारि हौ धृतराष्ट्रसुतकों बीर । कहे ऐसे भीमसों नृप धर्म चबन गँभीर ॥ गए ताही शमै तेहा धर्मनृपके पास । बृहदश्व ऋषिकों चलै आवत धर्मनृप तपराश ॥ जाय आगे ल्याय आसन देइ कै अभिराम । वेदबिधिसों कियो पूजन पुण्यमय तपधाम ॥ बृहदश्वसों नृपधर्म लागे कहन सकरुण बन । द्यूतकृत बृत्तान्त सिगरे आदितें मतिऐंन ॥ सुहृद जन ए आर्त्त हमसों बचन बोलत जौंन । करत हैं सबराति चिन्ता समुझि कै हम तौंन ॥ हमहि आदिक बसत जामे नित्य सबके प्रान । तान फाल्गुन बिना है हम सत्व हीन महान् ॥ कृतास्त्र आयो देखि है कब जिष्णुकों अभिराम । अल्पभाग्य न भूप हमसो भयो हो तपधाम ॥ मन्दभागी पुरुष हमसो कोऊ और न आन । नही देखो सुनोहू है महत मुनि मति मान ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ कहत तुम नृप मन्दभागी नही हमसो और । जौंन तुमहूतें दुखित हम कहत सुनु नृपमौर ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहन लागे भूप कहिए कृपा करि तपधाम । पाय हम यह दशा चाहत सुनौ सो अभिराम ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ स्वस्थ व्हैकै सुनऊ भ्रातन सहित कुरुकुल भूप । भयो तुमतें अधिक दुःखित नृपति जौंन अनूप ॥ निषधदेशाधिप रहो नृप बीरसेन महान । महत बली सो नियम युत धर्मिष्ट देबसमान ॥ भयो ताको पुत्र जो नल नाम सत्य दराज । ताहि पुष्कर द्यूत छलकरि जीति लीन्हों राज ॥ बसे बनमे एक भार्य्या सहित बिगलित जान । नही दास न स्वशा भ्राता सङ्गमे सुखदान ॥ लए ब्राह्मणबृन्द हौ तुम सहित भ्रातन्ह बीर । तुम्है करिबो शोच इतनो योग्य है नहि धीर ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कहऊँ नलको चरित बिस्तर सहित हे मतिमान । कौंन तुमसो और बक्ता सुनो चहत सुजान ॥ ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ भूप नल हो बीरसेन महीपकोसुत बीर । रूपबान सुजान जानत अश्व गुणिगण धीर ॥ सत्यबादी द्यूतप्रिय अक्षोहिणीपति भूप । जितेंद्री नर नारिको प्रिय करत हो अनुरूप ॥ भीम भूप बिदर्भको हो तैसोई बलवान । सर्बगुणसों भरो ताके रही नहि सन्तान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प्रजा हेतु सो करत हो बऊयत्नकों अभिराम । भाग्य बश ब्रह्मर्षि आए दमन तहँ तपधाम ॥ दन्य०
किये तोषित भीम भार्य्या सहित तिनकों भूप । प्रजाकी मनमाह राखे कामना अतिरूप ॥ प्रसन्न
व्है ऋषि दमन दीन्हौं तिन्हे बर अभिराम । भई कन्या रत्न एकसु पुत्र चय गुणधाम ॥ मददान्त
दमनसु पुत्र कन्या भई सो दमयन्ती । भरे गुणसों परम जिनकी विमल किर्ति फिरन्ति ॥ भई
दमयन्ती सुविधित वर्ण सुषमा धाम। सुन्दरी श्री सदृश जासो और को अभिराम ॥ गन्धर्व यक्षन
देवमे तिय तास रूप समान। मनुजमे हम सुनि देखि सुन्दरी नहि आन ॥ सिंहसो नल लोकमे
अप्रतिम जास स्वरूप । कन्दर्प माना देह धरि कै भयो भूपर भूप ॥ कहो दमयन्ती निकट
नल रूप काहूँ जाय । भीमजाको रूप काहू कहो नलसों आय ॥ सुनत रूप सु बढो तनम
दुऊनके अतिकामा भए नल न समर्थ धरिबे कामकों हियधाम॥ बसे अन्तःपुर समीपी बागमे तब
जाय । कनकबर्ण सु हंसको नृप लखो तह समुदाय ॥ एक तामे हंसकों गहि लियो तेहां भूप।
मनुज सम तब कहन लागो हंस बचन अनूप ॥ मारिबे हम योग्य नहि तो करैगे प्रिय काम।
भीमजाके निकट तब गुण कहै गे अभिराम ॥ यथा और न पुरुषमे सो करि हि मनसा भूप।
तथा तासों कहैं गे हम बचन जाय अनूप ॥ छोडि दीन्हों हंसकों नृप बचन सुनि सुखदाय।
भयो सो बैदर्भपुरकों हंसको समुदाय ॥ विदर्भ पुरकों जाय दमयन्ती निकट ते हंस । तिन्हैं
बिहरत भीमजा लखि कनक बनक प्रसंस ॥ सखिन सँगसों चली गहिबे तिन्हैं देखि ललाम । चले
पसरि ते हंसकान्ता बिपिनमे अभिराम ॥ हंसप्रति एक एक आली गहनकों छबिरास। गई दम
यन्ती सुगहिबे हंसकों जेहि पास ॥ मानुषी धरि गिरा बोली भीमजासों तैंन । नाम नल निषधेश
भूपति भूरि छविकोभैंन ॥ दूसरो है रूपमे नहि तास मनुज समान । भयो भूपति काम मानो
धारि रूप महान ॥ होउ ताकी प्रिया तुम तौ सफल जन्म स्वरूप। देवगण गन्धर्वमे हम फिरत
लखत अनूप ॥ यहि रूपको हम और देखो सुनो नहि ननाह। रत्न हो तुम तियनमे सो रत्न
पुरुषन माह ॥ होत सुन्दर सुन्दरीको सङ्ग अति गुणवान। भीमजा सुनि हंसके बर बचन अति
सुखदान ॥ हंससों इमि कहो जैसे कहउ नल सों जाय । हंस बोलि तथास्तु नलपैं गए ते सुख
दाय ॥ रूप यौवन कामना बैदर्भजाकी सर्व। कहो हंस सो जाय नलसों यथा बुद्धि अखर्व ॥
बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ सुने दमयन्ती सु जबसों हंसके बर बैंन। रहति नलको धरैं चितमे चिन्त
बन तजि चैंन ॥ ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥
भइ बिवर्ण बदना सुखदान । लेति रति निश्वास महान ॥ ऊर्ध दृष्टि उनमत्त समान । रहति
अहर्निशि धारें ध्यान ॥ पाण्डुर वर्ण भई सबदेह। कामानल तन तपत अछेह॥ निश्चल भरे नीरसो
नैंन । गद्गद गरो खलित मृदु बैंन ॥ निशिदिन लागै पलकन नेक । गयो भूलि सो शयन बिवेका।
दमयन्ती लक्षण बश काम। सखिन विचारि हिये अभिराम ॥ कुँवरि दशा भूपति पहँ जाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० विधिवत दीन्हों सखिन सुनाय ॥ भीमनृपति आखिनके बैंन । सुनि लागे चिन्तन मतिअैंन ॥ है अस्तस्थ सुता केहि हेत । लगे विचारन चिन्तितचेत ॥ भीमनृपति मनमाह बिचारि । यौबन प्राप्त भयो निरधारि ॥ सुता स्वयम्बर करिबो कार्य्य । निश्चय कियो हिएमहँ आर्य्य ॥ दियो निमंत्रण भीम पठाय । सम जे रहे भूप बर काय ॥ दमयन्ती स्वयम्बर जानि । भूपति चले बेष रब ठानि ॥ भीम कियो तिनको सतकार । पूजित ते तहँ बसे उदार ॥ याही समै गए सुरधाम । नारद मुनि पर्बत अभिराम ॥ सुरपति भौनँ गए तपरास । पूजित बैठे सुरपति पास ॥ त्रिभुवनचारी तिनको जानि । बूझो इन्द्र कुशल सनमानि ॥ नारदउबाच ॥ है हम कुशल अनामय रूप । कुशल लोक महँ सिगरे भूप ॥ बृहदश्वउबाच ॥ सुनि नारदके सुरपति बैंन । लगे फेरि बूझन लहि चैंन ॥ जो नृप धर्मज्ञ अभीत । पाय अस्तसों मरण पुनीत ॥ आवत रहे स्वर्गको जौंन । ते नहि आवत कारण कौंन ॥ नारदउबाच ॥ जाते स्वर्ग न आवत भूप । सो कारण सुनु नाथ अनूप ॥ बिदर्भनृपसुता छबि कुंड । दमयन्ती है नाम प्रसिद्ध ॥ तास स्वयम्बर होत उदार । तहां जात सबभूप कुमार ॥ ताको रत्न समान अनूप । हैं बांछित कीन्हें सबभूप ॥ अैसें कहत बचन तेहिकाल । अग्नि सहित आए दिगपाल ॥ ते सब सुनि नारदके बैंन । अैसे कहन लगे भरि चैंन ॥ हमहूँ तहां चलैगे सर्ब । लखन स्वयम्बर तास अखर्ब ॥ सगण सबाहन सब दिगपाल । चले बिदर्भ नगरको हाल ॥ चलो स्वयंबरकों नल भूप । भरोमोद अप्रतिम स्वरूप ॥ नलको लखो सकल दिगपाल । धरे मूर्त्तिमनु मदन बिशाल ॥ ते सब भए बिगत सङ्कल्प । रबिसो लखि नल रूप अनल्प ॥ कछु क्षण राखि बिमान अकास । उतरि कहन लागे नल पास ॥ हेहे नल सुनि बचन हमार । मम सहाय करु ह्वै कै चार ॥ * ॥ बृहदश्वउबाच ॥ * ॥ नल कीबो कीन्हों स्वीकार । फिरि बूझो निषधेश उदार ॥ को तुम हौंहि कौंनक दूत । कौंन कार्य्य तो करै सकूत ॥ यह सुनि नैषधेशके बैंन । बोले इन्द्र पाय कै चैंन ॥ जानऊ हमकों अमर समर्थ । दमयन्तीके आए अर्थ ॥ हम हैं इन्द्र अग्नि ए भूप । ए यम बरुण अनूपमरूप ॥ आए हम तौ पावन आस । कहऊ जाय दमयन्ती पास ॥ तुम्हैं प्राप्तकों ईच्छत सर्ब । इन्द्र बरुण यम अग्नि अखर्ब ॥ तिनमे देव अनुत्तम जौंन । बरऊ एककों तुम छबिभान ॥ यह सुनि नल सुरपतिके बैंन । प्रणय सहित बोले मतिअैंन ॥ हम तुम चाहत एक सु अर्थ । पठबऊ यामे मोहि न समर्थ ॥ आपु चहत बरिबे तिय जान । कहै अन्य सो बर तेहि कौंन ॥ * ॥ देबाऊचुः ॥ * ॥ पूर्व कियो करिबो स्वीकार । काहें करत न तौंन उदार ॥ बेगि कीजिए तान नरेश । जो हम तुमसों कहत निदेश ॥ * ॥ बृहदश्वउबाच ॥ * ॥ देव बचन सुनि कै नल भूप । बोले फेरि बैंन अनुरूप ॥ रक्षित सदनमाँह परबेश । कौनभाँति हम करैं सुरेश ॥ ॥ * ॥ इन्द्रउबाच ॥ * ॥ भूप भौंनमहँ करत प्रबेश । तुम्हैं न देखि हि कोऊ नरेश ॥ कहि तथास्तु तेहाँ गो भूप । दमयन्तीके सदन अनूप ॥ तहाँ लखो दमयन्ती हि जाय । सखिनमध्य बैठी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुखदाय ॥ दीप्यमान तन श्रीसम रूप । तनु कटि बडडे नैंन अनूप ॥ चन्द्र चन्द्रिका को जेतार । बन्प०
सस्मित सोहत बदन उदार ॥ देखि चारु हासिनि सो बाल । बढो भूपतन काम बिशाल ॥ सत्य
धर्म भूपाल बिचारि । थामो मदन हिए निरधारि ॥ देखि सखीगण नैषध भूप । उठी छोडि
आसन अतिरूप ॥ लगी प्रसंशन नलकों तैंन । बिस्मय भरी देखि छबिभैंन ॥ मनही माँह न
भाषे बैंन । चाहैं रूप अनूप सचैंन ॥ देव यक्ष यह कै गन्धर्व । मनमै लगी बिचारण सर्व ॥ सक न
बोलि भूपसों बैंन । लखैं सकल अनमिष करि नैंन ॥ सस्मित दमयन्ती अभिराम । नलसेां बोली
बचन ललाम ॥ हौ तुम को दायक चख चैन । बर्धित करत हिए मम मैन ॥ आए इहाँ अमर
बत बीर । जानो चहति तुम्हे हौं धीर ॥ इहाँ गमन कीन्हो कैंहि भाँति । लखो न काहू तो तन काँति ॥
रक्षक चऊदिशि धारक दण्ड । धरे भूप शासन अति चण्ड ॥ बोले यह सुनिकै नल बीर । दमयन्ती
सेां बचन गँभीर ॥ सुन्दरि जानु हमै नल भूप । देव दूत पन धारि अनूप ॥ आए पास तिहारे
बाल । लहो तुम्हे चाहत दिगपाल ॥ इन्द्र अग्नि यम बरुण जलेश । आए बरण तुम्हैं यहि देश ॥
रुचै देव यामे तो जैांन । बरि ए ताहि सुनो छबिभैंान ॥ तास प्रभाव चहो नहि मोहि । काहूँ
आवत लखिबे तोहि ॥ यहि कारजकों इनै सुरेश । पठयो तो ढिग देय निदेश ॥ यह सुनि
तुम्हैं रुचै करु तैंन । करि बिचार मनमे छबिभैंान ॥ बृहदस्वउवाच ॥ देवनकों करिकै परनाम ।
बोली दमयन्ती छबिधाम ॥ गहऊ पाणि मम सहित सनेह । तुम मेरे पति हौ छबिगेह ॥ हम अरु
जो मेरो धन सर्व । सेा तव करऊ व्याह गान्धर्व ॥ हंस बचन सेा दाहत चेत । आए भूप सकल मम
हेत ॥ तुम भ्रजमान न भजिहौ मोहि । तौ यह सुनऊ कहति प्रभु तोहि ॥ बिष भक्षण करिकै
जलमाह । बूडि मरौंगी सुनु नरनाँह ॥ दमयन्तीके सुनि ए बैंन । कहे बचन अैसें मतिऐंन ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दमयन्तीके सुनि बचन अैसे नल बर भूप । फिरि अैसे लागे कहन नीति प्रीति अनुरूप ॥
छोडि लोकपति देव तुम हमहि बरति सुखदान । हम मानुष पदरज सदृश तिनके हैं न सुजान ॥
करत जो अप्रिय अमरको मृत्यु लहत नर तैंन । तातें बरिए सुरनकौं चाहि मोहि छबिभैंान ॥
चैंासर भूषण बसन बर दिव्य सुगन्ध महान । पाय देवपति लहऊ गी भेाग परम सुखदान ॥
जैांन चराचर भूमिपैं करत ग्रास नहि काहि । जगत ईश लहि अग्निकौं बरै न को तिय ताहि ॥
जास दण्ड भय भूत सब करत धर्म अभिराम । धर्मराज पति पाय सेा को न बरै बरबाम ॥
देवराज दानव दरन सहस्राक्ष छबिभैंान । सुनाशीरपति पाय सेा बरै नही तिय कैंान ॥
बरुण बारिपतिकों बरऊ छोडि शङ्क छबिधाम । करि बिचार मनमे धरऊ सुहृद वाक्य अभिराम ॥
नैषधेशके बचन सुनि दमयन्ती फिरि बैंन । शेाचाकुल लागी कहन भरे बारिसेां नैंन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० नमस्कार करि सुरन्हकों सुनु नैषधपति भूप । तुम्हे कियो भत्तार हम कहति सो सत्य स्वरूप ॥

॥ * ॥ नलउवाच ॥ * ॥

दूत भए हम दूतको रहै जौन बिधि धर्म्म । सो उपाय सुन्दरि करहु लगै न मोहि अधर्म्म ॥
करि परार्थको यत्न हम करैं आपनो अर्थ । देवनसों भाषें बिना होय धर्म्म सब व्यर्थ ॥
भावी यह स्वारथ हमे होय जौन बिधि धर्म्म । सुन्दरि कीजै यत्न सो बिरचि बुद्धिबल पर्म ॥
तब दमयन्ती सो बडे बडे भारि जल नैंन । कहन लगी गद गद्भरे नल भूपतिसों बैंन ॥
यह उपाय हम बुद्धिसों कहति बिचारि अनूप । जौन करें तुमकों कछू दोष न लागै भूप ॥
तुम भूपति अरु अग्नि यम बरुण अमरपुर नाथ । सभा स्वयम्बरमे रहौ आय बैठि एकसाथ ॥
निकट सुरन्हके बरैंगो तब हम तुमकों भूप । तातें तुम्हैं न लागिहै नेक दोषको रूप ॥
दमयन्तीके बचनए सुनिकै नृप निषधेश । गए तहां जहँ अग्नि यम बैठे बरुण सुरेश ॥
नलकों आवत देखि तब इन्द्र सहित दिगपाल । निकट पाय पूछन लगे तहँकी बात बिशाल ॥
तुम देखो नैषधनृपति दमयन्ती छबिभैंन । कहो तौन सुनिकै हमै कहो बचन तिहि जैंन ॥

॥ * ॥ नलउवाच ॥ * ॥

तब शासनसों हम गए दमयन्तीके भैंन । रक्षत जाको दण्डधरि थबिर बिश्वसित जैंन ॥
हमै न तहँ काहूँ लखो पैठत तास निकेत । दमयन्ती देखो हमै तेहां सखिन समेत ॥
देखि हमै बिस्मित भई सो सह सखिन सुरेश । हम गुण बऊबर्णन कियो कहि तो नाथ निदेश ॥
मोहीमे सङ्कल्पहै ताको बरिबे हेत । दमयन्ती मोसों कहो तौन सुनऊ कहि देत ॥
तुम सह सुर आवैं सकल सभा स्वयम्बर माह । बरिहौंमै तिनके निकट तुमकों नल नरनाह ॥
तब तुमकों नहि लगैगो दोष कछू क्षितिकान्त । हे सुरेश तँह जो भयो कहो सो सब बृत्तान्त ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥

बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ काल तिथि क्षण पायकै शुभ भीम नृपति सुजान । किय स्वयम्बर सभामे सब नृपनको आव्हान ॥ सुनत पृथिवीपाल आतुर चले पोडित काम । भीमजा के पाय बेकी करें इच्छा नाम ॥ कनक तम्भ सुरुचिर मणिमय लसत तोरण सर्ब । तहां आए भूप ज्यों गिरि माहँ सिंह अखर्ब ॥ दिव्य आसन माह तेहाँ भए सब आसीन । धरे कुण्डल माल भूषण बसन सुषमा पीन ॥ तहां दमयन्ती सु आई रङ्गमे छबिधाम । हरण सबके किये देखत चक्षु मन अभिराम ॥ परे ताकी देहमे जहँ जाय जाके नैंन । रहै निश्चल होय तेहाँ पायकै छबिचैंन ॥ तहाँ देखे पुरुष बैठे पाँच एक स्वरूप ॥ कीर्त्यमान महीपगणमे सकल बिधि अनुरूप ॥ भीमजा लखि तुल्य आकृति तिन्हैं भेद विहीन । सकी चीन्हि न भूप नलकों भरी संशय पीन ॥ चिन्ह जितने लखे नलमे लखे तिनमे तौन भई चिन्तित जानिबेकों नियत नल छबिभैंन ॥ जानि कैसें परै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

के है देवता नल भूप। भीमजा यहि भाँति चिन्तित भई दुःखित रूप॥ देवतनके चिन्ह बृद्धनसों ब०प०
सुने हे जान॥ भूमि बैठे लखतिहौं नहि एक इनमे तौंन॥ बहुत भाँति बिचारि फिरि फिरि लहत
नियत न एक। शरण लीजै देवतनकी धरो तव शुभ बेक॥ कियो मनसा बचनसों तव सुरनकों
सु प्रणाम। जोरि अञ्जलि कम्प पूरित बचन बोली बाम॥ हंसकोहौं बचन सुनि पति कियो बरि
नल भूप। सत्यसों तेहि परै हमको देखि देव स्वरूप॥ जौंन मनसा बचनसों पति चहौ बरिबें आन।
सत्यसों तेहि देवको लखि परै रूप महान॥ होय जौं निषधेश मेरो बिधि बिहित भर्तार। सत्यतें
तेहि लखौ तौ मै देव रूप उदार॥ यथा मै यह नलाराधन धरो पतिब्रत धर्म। सत्यतें तेहि देवको
लखि परौ रूप सुपर्म॥ लोक पाल स्वरूप अपनो धरैं जो अभिराम। जानि जातें परैं मोकों नैषधेश
ललाम॥ सहित करुणा भीमजाके बचन रुदन समेत। सुनत नलमै जानिकै अनुराग सत्यनिकेत॥
देखिशुद्धि सुबुद्धि भक्ति सुराग नलके माह। शक्ति आपुहि देखिबेकी दई तेहि सुरनाह॥ सुरणकों
तेहि लखे बिन प्रस्वेद अनिमिख नैंन। अल्मान चौंसर धरे ठाढे भूमि परसत हैंन॥ पास छायाम्लान
माला स्वेद रज सह गात। लखो नलकों भूमि परसें नैंन सनिमिष भात॥ देवतनकौं देखि देखो
भूप नलकों मर्म। भूप नैषधकों बरी तब भीमजा सह धर्म॥ डारि माला कण्ठमे फिरि किए
लज्जित नैंन। छोर दुपटाको गहो नल भूपके छबिऐंन॥ कियो हाहा शब्द तब जे अन्य हे सब
भूप। देव ऋषि गन्धर्ब बोले साधु साधु अनूप॥ भीमजा सौं कहे तब नल भूप ऐसैं बैंन। देवतनकों
छोडि हमकों बरो तुम छबि ऐंन॥ सुनहु तातें कहहुगी तुम करैंगे हम तौंन। देहते करिहै न
मेरो प्राण जबलों गौंन॥ कहे दमयन्ती सों ऐसे बचन भूप ललाम। भए दोऊ परसपर अति
प्रीतिमय अभिराम॥ शरण मानस बृतिसों लखि तिन्ह ते दिगपाल। आठ बर तिन दिये नलकों
भरे मोद बिशाल॥ मनोगति प्रत्यक्षदर्शन सुरणको मखमाह। दिए बर ए दोय नलकों कृपा
करि सुरनाह॥ अग्नि दीन्हों प्रगटिहैं हम चाहि हौ तुम यत्र। लोक लहिहौ अन्तमे जे कहे
सम्भव सत्र॥ अन्नमे रस होयगो अति करहुगे जो पाक। कर्ममे मति रहैगी थिर दियो यम मित
बाक॥ बारि तेहाँ होयगो तुम चहौगे जँह भूप। बरुण दीन्हों माल जो निति रहै नूतन रूप॥
देइ बर इमि लोक अपने गए ते त्रिदिबेश। भूप आए रहे ते सब गए अपने देश॥ ब्याह कीन्हों
भीमभूपतिसुताको नल साथ। कछू दिन रहि गए अपने देश नैषधनाथ॥ पाय नारी रत्न पुण्य
श्लोक नैषध भूप। रमे नाना भाँतिसों सम सची सुरपति रूप॥ अश्वमेधहि आदि दैकरि यज्ञ बहु
दै दान। बाग बनमे रमे नल सह भीमजा सुखदान॥ भए भैमी माह नलतें सुत सुता अभिराम।
इन्द्रसेन सुपुत्र कन्या इन्द्रसेना नाम॥ यज्ञकरि बहुदान दीन्हों कियो बिबिधि बिहार। भरी
बसुसों करी रक्षित भूमि भूप उदार॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि दमयंतीस्वयम्बरबर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ बृहदस्व उवाच ॥ * ॥ छन्दः ॥ * ॥

लखि स्वयम्बर जातहे दिगपाल सह सुरनाथ । लखो कलिकों चलो आवत मिला द्वापर साथ ॥ देखि कलिकों लगे बूझन इन्द्र अैसें बात। साथ द्वापरके कहौ कलि कहाकों तुम जात॥ होत भैमीको स्वयम्बर सुनो हम सुरनाह। जाय ताकों बरौं गो मन लगो ताके माह ॥ इन्द्र हँसि तासों कहो व्हैगो स्वयम्बर तौंन । लखत हे हम बरी नलकों भीमजा छबिभौंन ॥ क्रोध करि तब कहो कलि सुरनाथसों इमि बैंन । देवतनके मध्य मानुषकों बरी यह नैंन ॥ दण्ड दीबे योग्य ताकों देउगो हौं दण्ड। बिहँसि बोले इन्द्र ता प्रति बचन सुनिकै चण्ड ॥ बरी भैमी ताहि आज्ञा पाय मम अभिराम । सर्बगुण संयुक्त नलकों बरै कौंन न बाम ॥ धर्मके सब भाँतिसों आचरण जाके पर्म। बेद पढि सबसाङ्ग जाके यज्ञ नियमित कर्म ॥ देवता सब नित्य जाके होतमखमे तृप्त । रहित हिंसा सत्यबादी दृढब्रतमे लिप्त ॥ सत्य धृति तप शौच दम सम ज्ञान अचल महान। बसत जामे भूपहै सो लोकपाल समान ॥ यहि भांतिके बर पुरुषकों जो दियो चाहत त्राश। करतहैं सो मूढ अपने हाथ अपनो नाश ॥ परै गो सो जाय नर्क अगाधमे अतिमाम । गए कहि यहि भाँति कलिसों इन्द्र अपने धाम ॥ कहो तब यहि भाँति द्वापर पास कलिजुग बैंन । भ्रष्ट नलकों राज्यतें करि भीमजा हत चैंन॥लहौंगो सन्तोष द्वापर मित्र सुनऊ निदेश।अक्षमे तुम जाय कै अब करऊ झटित प्रबेश॥ बृहदस्व उवाच॥यहि भाँति कलि जुगपास द्वापर नियत दै बिश्वास। च्छिद्र लखन प्रबेशकों सो लगो बसि नल पास ॥ लहो बरहें बर्ष कलि नलमे प्रबेश स्वरूप। मूत्र करिकै चरण शौच न कियो बिधिवत भूप॥ लगे संध्या करन जल आचमन करि निषधेश। जानि नृपकों अशुचि कलि किय भूप माँहँ प्रबेश ॥ जाय पुष्कर पास कलि तब कहे अैसें बैंन। द्यूतमे तुम जीतिहौ नलनृपतिकों मतिअैंन ॥ सुनत कलिके बचन पुष्कर भूप गो नल पास। गयो कलि फिरि साथ ताके अक्षमे करि बास॥ बचन पुष्कर कहे नल सों बेर बेर समक्ष। आजु भ्राता करहि गे हम द्यूत तुमसों अक्ष ॥ सहो नहि आव्हान ताको भूप नैषध बीर । भीमजाके लषत नृपपण लगे धरन गँभीर॥ हेम मणि रथ बसन भूषण लगे हारन भूप। निबिष्ट कलि नलमे परा मय लगो देन कुरूप॥ द्यूत वदसों मत्त भूपति नहिँ निवारण बैंन । सुहृदजनके सुनत हो जो महामतिको अैंन ॥ पौरजन सह मंत्रिगण सब चले भूपति पास। तथा बिधिकौ द्यूत सुनि करि बे निवारण तास॥ सूत भैमी सों कहो तब जाय आतुर चित्त । पौर मंत्री पौरि परहै खरे कार्य निमित्त ॥ भूप व्यसनहि असह मान सु सजल कीन्हे नैंन । पौरजनके आगमनको कहो नृप सों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बैन ॥ सहित मंत्रिन पौरजन तो देखिबेकों आय। पौरपर हैं खरे भूपति लऊ तिन्ह हिँ बोलाय॥ ब०प०
देखि करुणा भरी ताकों बारि पूरित बैंन। नही बोले भूप कलिवश भए तासों बैंन॥ पौर मंत्री
गए कहि यह नष्ट भो नलभूप। मास कैयो द्यूत पुष्करसों भयो अतिरूप॥ बृहदश्वउवाच॥
देखि भैमी भूपकों उनमत्त देवनमाह। शोक भयसों भरी कारज चिन्ति कै कुरुनाह॥ द्यूत
पातक जानि कै हित भूपको निरधारि। बृहत्सेना धायसों तब कहो जाय बिचारि॥ अमात्य लेऊ
बोलाय सब करि भूप शासन जाय। गयो हारो बचो जो धन देऊ तौंन सुनाय॥ भूप शासन
मानि बोलि अमात्य अपनो भाग। पौरि पैं फिरि गए पुरजन सहित भरि अनुराग॥ भीमजै फिरि
कहो तिनको आगमन सुनि भूप। नही बोले बचन कछु नहि भए मुदित स्वरूप॥ जानि कै नहि
शक्यमे नल भूपकों अभिराम। गई भैमी सजल कीन्हैं नैंन अपने धाम॥ कहो भैमी
बृहत्सेना धायसों हत चैंन। वार्ष्णेय सूत हि जाय ल्यावऊ भूपके कहि बैंन॥ बृहत्सेना भीमजाके
बचन सुनि उठि जाय। पठै कै हित दूत सूतहि लियो बेगि बोलाय॥ भीमजा वार्ष्णेयसों तब
सहित आदर बैंन। देश काल समान लागी कहन छाय अचैंन॥ तौन जानत करत हो नृप यथा
तुमसों प्रीति। सो भयो बिपरीति ताकी करु सहाय सुनीति॥ जात पुष्करके परत हैं जौंन चाहत
तान। परत पाशे भूप नलके हारि कै से भान॥ स्वजन मंत्रीणके न भूपति सुनत बचन प्रमाण।
बचन मरो नही मानत कहति जो सुखदान॥ सूत मेरो कहो कीजै शरण मोकों जानि। होत शुद्ध
न भाव मेरो बिपतिकों अनुमानि॥ जोरि ल्यावऊ अश्व रथमे भूपके प्रिय जौंन। पुत्र दुहिता
सहित कुण्डिन नगरकों करु गौंन॥ सहित रथ इन बालकनकों भीम नृपके भौंन। छोडिके तुम
तहां रहियो नतरु की जो गौंन॥ सूत पूछि अमात्य गणसों भीमजाके बैंन। लेय सन्मत चलो
लै सुत सुताकों मतिअैंन॥ बेग सों रथ हांकि पऊचो भीमनृपके धाम। इन्द्रसेन सु पुत्र कन्या
इन्द्रसेना नाम॥ सौपि कै नृपभीमकों रथसहित सूत सुजान। गो अयोध्या पुरीकों सो सूत दुखित
महान॥ जाय कै ऋतुपर्ण भूपति पास पऊचो तौंन। भयो ताको सारथी रथ पाय कै मनगौंन॥
॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ लियो पुष्कर सकल बसु अरु राज्य नलको जीति। बिहँसि पुष्कर
कहो तब नल पास होय अभीति॥ रहो धन नहि धरऊ अब पण भीमजाकों भूप। भए दुःखित
कहो नहि कछु चितै ताको रूप॥ क्रोध करि तब बसन भूषण देहतैं सु उतारि। एक राखो बसन
दीन्हौं सकल तेहां डारि॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे
बनपर्बणि नलोपाख्याने द्यूतबर्णनोनाम नवमोऽध्यायः॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बिपुल श्री तजि चलो पुरतें निकसि छोडि निकेत । एकबसना भीमजा अनुचली बिव्हल चेत ॥ सहित दमयन्ती रहे पुर बाहिरे दिन तीन । दियो पुस्कर नगरमे तब फेरि डौंडी पीन ॥ जाय गो नलपास जो है बध्य हमसों तौंन । गए नहि नल निकट कोऊ पौरजन हे जौंन ॥ रहे दमयन्ती सहित दिन तीनि करि जलपान । क्षुधा पीडित होय तहतें चले नृपति महान ॥ क्षुधा पीडित भए बऊदिन मिलो नहि कछु भक्ष्य । कनक बनक सु लखे पक्षी बिपिनिमाह समक्ष ॥ पास तिनके जाय भूपति तिन्हैं भक्ष्य विचारि । गहनकों पट छोरि कटिते दियो तिनपैं डारि ॥ बसन लै सो उड पक्षी गगणमे ते जाय । कहन लागे भूपसों यहि भांति बचन सुनाय ॥ देखि कै दिग बसन नलकों अधोमुख धृत मौन । अक्ष हैं हम तौंन भूपति तुम्हैं जीतो जौंन ॥ बसन हरिबैं हेत आए रुचो नहि तो रूप । जात बसन समेत बनमे देखि तुमकों भूप ॥ देखि तिनकों जानि तेई अक्ष नल मति अन । कहन भेमीसों लगे तब भूप ऐसे बैंन ॥ गिरे जिनके कोपतें ऐश्वर्य्यसों हम बाम । प्राणबाकी रहो सोऊ क्षुधापीडित साम ॥ करैं जाकें पौरजन नहि किथो मम सत्कार । अक्ष ते व्है विहँग मेरो हरो बसन उदार ॥ विषम प्राप्त कुदशाकों हम भए ते पति जौंन । आपनों हित सुनऊँ हमसों करऊ सुन्दरि तौंन ॥ जात हैं बऊ पथिक दक्षिण दिशाको पथ पाय । व्है अवन्ती क्षत्रदान सो नाधि गिरि अतिकाय ॥ बिंदुगिरि यह पयोष्णी है नदी अति सुखदान । बऊत आश्रम ऋषिणके जहँ कन्द सुफल महान ॥ बिदर्भको यह परम पन्था कोसलाको एह । बसत आगें देश दक्षिण भीमनृपको गेह ॥ भूप ऐसें कहे आरत बचन दुखसों छाय । चित्तमांह बिचार करि दिय भीमजा हि सुनाय ॥ बचन सुनि कै भूपके दृग भरे गद गद बैंन । कहन लागो भीमजा नलनृपतिसों मतिअैंन ॥ बढो हे उदबेग हियमे भएं बिव्हल गात । चिन्ति कै सङ्कल्प तुमरो कहत जो तुम बात ॥ राज्यहत बिनबस्त्र हौ अन क्षुधा पीडित रूप । छोडि कैसे जाऊ बनमे एक तुमकों भूप ॥ क्षुधा पीडित करत चिन्तन पूर्व सुख अभिराम । तजौं कैसें बिपिनिमे व्है दुःख हारिनि बाम ॥ नही भार्य्या सदृश औषध सर्व दुखको आन । बैद्य सम ते कहत हैं जे जगतमे मतिमान ॥ * ॥ नलउबाच ॥ * ॥ कहति हौ सो सत्य सुन्दरि भार्य्यासम मित्र । नही जगमे और कोऊ सुनऊ सुमति पवित्र ॥ तुम्हे हौं नहि त्यजो चाहत प्रिया करुन सँदेह । तजौं बरु यह प्रान मेरो देहरूपी गेह ॥ * ॥ दमयन्तीउबाच ॥ * ॥ जौन मोकों छोडिबेकी भूप इच्छा तोहि । तौ बिदर्भ सुदेशकों पथ को देखावत मोहि ॥ नही त्यजिबे योग मेरे आपु धर्मस्वरूप । चेत है हत रावरो तुम आसि तजि हौ भूप ॥ बेर बेर सु कहत दक्षिण देशको पथ जौंन । भूप मेरे शोकको अति होत कारण तौंन ॥ जाय अपने पिहरकौं यह चहत जौं तुम भूप । चलैं हम तुम सङ्ग जहँ बैदर्भ नगर अनूप ॥ तुम्हे पूजित करै गे बैदर्भपति सुख पाय । वहाँ बसियो भूप पूजित होय कै शुभदाय ॥ * ॥ नल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

उवाच ॥ * ॥ राज्य जैसो पिताका तव तथा मेरो राज ।तहाँ हम नहि जाहिगे यहिभाँति विगत द०द० समाज ॥ कियो ताकों शान्त ऐसे बचन कहि कै भूप।जान आधो बसन पहिरे भीमजा अतिरूप ॥ दोऊ पहिरे एकपट जह तहाँ बनके माह । फिरत देखो धर्मशाला एक तहँ नरनाह ॥ जाय तामे सहित भैमी कियो भूप प्रवेश । धूलि धूसर बसन बिनु अति मलिन धारे बेश ॥ सहित दमयन्ती लगे तहँ करण क्षितिपर शैन । शोय दमयन्ती गई अति अमित सुषमाऐन । शोक बश नलको न निद्रा परी तब कुरुभूप । करैं का नहि करै का यह बढो चिन्तारूप ॥ मरण हमकों श्रेय है की भीमजाको त्याग । सहति है अति दुःखकों यह भरी मो अनुराग ॥ सङ्ग मेरे नियत दुखकों लहैगी यह बाम । तजे संशय दुःखसुखके प्राप्तिमे अभिराम ॥ बेर बेर बिचारि कीन्हों नियत मनमे भूप । भीमजाको त्याग कीबो मोहि श्रेय अनूप ॥ तेजसों नहि करी धर्षित कोउ पथमे याहि । भरी तप अनुराग मोमे पतिव्रत व्रत जाहि । भीमजाके त्यागमे मति कियो नियत नरेश। क्यों न ऐसो करै कलि है करें जामे बेश ॥ बस्त्रहीन बिचारि आपुहि एक बसना ताहि । लगे करण विचार भूपति बस्त्र छन्तन चाहि ॥ जगै जैसें नही भैमी काटिए त्यों बास । धर्मशालाके लगे नृप फिरण चारोपास ॥ धरी देखि खड्ग तेहां निसित निर्मल जैान । लेइ ताको बसन आधो काटि लीन्हों तैान ॥ छोडि शोवत भीमजाकों चले पट लै भूप । फेरि आय जाय कै कछु दूर सकरुण रूप ॥ देखि सोवत भीमजाकों लगे रोदन कर्ण । भरी रजसों परी क्षितिपर भई बिरहित शर्ण ॥ धरे आधो बस्त्र क्षितिपर परी मत्त समान । जगैं कैसे रहैगी हम बिना यह सुखदान ॥ हमे बिन यह सती साध्वी बिपिनमे अतिमान । फिरैगी केहिभाँति जामे व्याघ्र व्याल महान ॥ आदित्य आश्विन रुद्र बरु अरु मरुत गण जे सर्व । भीमजा तो करैं रक्षण कृपा सहित अखर्व ॥ एहिभाँति कहि कै बचन मोहित प्रियाको लखि रूप । चले कलिहतज्ञान बनकों लौटि कै फिरि भूप॥जाय फिरि फिरि लौटि आवत भूप दोल समान। स्नेह अरु कलि दुऊनके बश भए भूप महान ॥ छोडि शोवत भीमजाकों भरे करुणा मार्म। भए कलि बश चले वनमे भूप नल बलधाम ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ गए नल तब जगी भैमी लखो भूप न पास। बिजनबनमे चाहि चऊदिशि भरी अतिशय त्रास ॥ ॥ जयकरीछन्द ॥

चऊँदिशि लखन लगी भर्तार। दुःख शोकसों भरी अपार ॥ हा नृप हा नृप कहि करि सोर। रोदन करण लगी अतिघोर ॥ महा त्राससों भरी अचैन। कहति बिलाप भरे बऊ बैन ॥ हिय हनि हाहा नाथ पुकारि। चऊँदिशि लखति बहत दृगबारि ॥ मरी बिनष्ट भई बनमाह। तुम्हैं बिना प्रियपति नरनाह ॥ तुम धर्मज्ञ नाम बर वीर। बक्ता सत्य बचन गँभीर ॥ बोले सत्य बचन तुम जैान। शोवत मोहि तजी तजि तैान ॥ प्रिय अनुरक्त जानि कै मोहि। छोडि जात यह उचित न तोहि ॥ सत्यगिरा करिबे तुम तैान ॥ लोकपाल ढिग बोले जैान ॥ मृत्यु न

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

य० होति बिहित बिनु काल । तुम बिनु हम जीवति क्षितिपाल ॥ भो परिहास पूर्ण यह भूप। दुःखित मोहि देखावऊ रूप ॥ रहे लतन्ह मह कहां छपाय । बोलत क्यों न पास मो आय ॥ क्रूर सकान भए तुम भूप। लखत हमारो दुःखित रूप ॥ बिलपति मोहि देखि छबिरास। आय न श्रान्त करत मो पास ॥ शोच आपनो हमै न भूप । तुम किमि रहि हौ एक सुरूप ॥ मो बिनु क्षुधा तृषारत होय। वृक्षाश्रित रहि हौ किमि शोय ॥ भरी शोक धरि क्रोध महान। इत उत रुदति फिरति सुखदान ॥ गिरति उठति फिरि फिरि छबिधाम । दुरति भीति भरि रोवति माम ॥ होय शोकसों तप्त महान । कहति श्वास लैकै अतिमान ॥ दियो कष्ट जेहि नलकों भूरि । रहो सो महा दुःखसों पूरि ॥ ऐसे बिलपति फिरति महान । बिपिनिमाह उनमत्त समान ॥ ऐसें रुदन करति छबिराश । गई महा अजगरके पास ॥ ग्रहण कियो तेहि अति बलवान। भीम सुताकों क्षुधित महान॥ग्रसत न शोचति आपुहि तौंन। नलको शोच करति छबिभौंन ॥ असर न ग्राऊ ग्रसत हो बीर। कों नहि धावत धारो धीर ॥ साय मुक्त लहि मति नरनाह। क्षुधातृषार्त बिपिनिके माह ॥ सो श्रम तो हरि है तव कौंन। मोहि बिना भूपति छबि भौंन ॥ तहँ मृगव्याध रहो कोऊ एक । बिहरत हिंसाको गहि टेक ॥ भैमीको सुनि रोदन तौंन। आय तहां तुरित करि गौंन ॥ अजगर ग्रसित देखि कै ताहि । मृगव्याधक करुणा अवगाहि ॥ निसित शस्त्र तेहि मुखमे डारि । महा सर्पकों डारो फारि ॥ अहि मुखतें गहि लियो निकालि। दमयन्तिहि जलसों प्रक्षालि ॥ आश्वासन करि देन अहार । बूझन लागो सो चरित उदार ॥ हो केहिकी मृगनैंना बाम । बनमे क्यों आई छबिधाम ॥ महत कष्टकों कैसें प्राप्त। भई बिपिनिमे बिरहित आप्त ॥ दमयन्ती सुनि ताके बैंन । सब वृतान्त कहो मतिअैंन ॥ आधो पट पहिरे छबिधाम निबिड नितम्ब पयोधर माम ॥ सुकुमारी सब अङ्ग अमन्द । आनन लशतपूर्ण ज्यौं चन्द ॥ कुटिल भौंह खञ्जनसे नैन। मधुर सहास सुधासे बैंन ॥ अैसो देखि व्याध सो रूप । भयो सकाम सुनऊ कुरुभूप ॥ सुनि सस्नेह बधिकके बैंन । समाधान पूर्वक मति अैंन ॥ भयो जानि तेहि कामासक्त। मानस भाव देखि कै व्यक्त ॥ तीव्र रोषसों भरी महान। भई ज्वालसी ज्वलित सुजान ॥ भैमीके धर्षनकों क्रुद्ध । पापी बधिक कियो मति उद्ध ॥ जैसे भरो सपान उमङ्ग।परो अनलमे चहत पतङ्ग॥भरी क्रोध भैमी अतिमान। दयो बधिककों शाप महान॥ नलतें अन्य पुरुष जौं पर्म । चिन्तन कियो न मन वच कर्म ॥ तौ यह अधम बधिक दुखदान। गिरो भूमि पर बिरहित प्राण ॥ * ॥ बृहदश्व उबाच ॥ * ॥ हनि मृगव्याध हि कियो पयान। दमयन्ती बनमे अतिमान ॥ झिल्लीधुनिसों नादित सर्ब । सिंह व्याघ्र जँह बसत अखर्ब ॥ जामे पक्षिणको समुदाय। तस्कर म्लेच्छ बसत अतिकाय॥ नाना भाँतिनके तरु जान।निबिड बढे तम गिरिसे तौंन॥ लसत धातुमय गिरिबर माम। दरी कुञ्ज अद्भुतके धाम ॥ सर सरिता बापी जलरास । बनबासी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दरू असुर पिचास ॥ पल्वल निर्झर अद्भुत रूप । वनचर पशु वरू लखे अनूप ॥ भरो तेजसों वन्य
धीरधीर । ढूढति फिरति तहाँ नलबीर ॥ भेमी डरति न लखि वनरूप । पतिदुखसों दुःखित अति
भूप ॥ बैठी शिला उपरि सुखदान । भरी कष्ट शिखि शिखा समान ॥ * ॥ दमयंत्युवाच ॥ * ॥
कहाँ गए नैषधपति मोहि । बनमे छोडि उचित नहि तोहि ॥ विपुल यज्ञ करि मिथ्या बैन । सो
हमसों बोले मतिजैन ॥ कहे बचन जे मेरे पास । स्मर्ण तौन कीजै छबिरास ॥ तव मम निकट कहे
जे हंस । बचन बिचारऊ तौन प्रशंस ॥ धरैं तुलापर सत्य सुवेद । परिहि नही समतामे भेद ॥
ताते करऊ सत्य सो बीर । कहो जो मेरेपास गँभीर ॥ नष्ट भई हम हा नल भूप । बोलत हमसों
क्यों न अनूप ॥ भक्षत हमै मृगादन एह । जौं तुम रक्षत नहि करि स्नेह ॥ नहि तुमते मेरे प्रिय आन ।
करऊ सत्य जो कहो सुजान ॥ अर्धाम्बर धारे छम रूप । बिलपति सम अनाथ हो भूप ॥ रुदति
मोहि रक्षऊ नरनाह । एकाकिनी सती बनमाह ॥ हम भाषति तुमसों नल बीर । तुम हमसों
कछु कहत न धीर ॥ गए कहां बूझौं केहि पाश । तुमकों हों दुःखित सुखराश ॥ तुमको बेढे सो
वत जैंन । आयो देखि कहै सो कैंन ॥ विपिनराज सार्दूल महान । तो सोहें आवति सुखदान ॥
पति ढूढति हौं दुःखित दीन । करु आश्वासन मो बलपीन ॥ जौ तुम नलको देखो होय ।
तौ मोसों कछु दुःखित जोय ॥ नतरु खाय मोकों बरबीर । मोचऊ यहि दुखतें गम्भीर ॥ स्वादु
सलिल यह सरिता जैंन । समाधान मो करिहै तैंन ॥ यह गिरि शृङ्ग सहित अति मान । विपिनि
केतु समसानु महान ॥ गिरिवर पह पूछौगी जाय । समाचार नलको सुखदाय ॥ हे गिरिराज
सु तुम्हे प्रणाम । आई तो दुहिता सम आम ॥ *👄*👄 ॥ * ॥ दोहा ॥ *👄*👄*👄*

भूपति भीम विदर्भपति धर्मधुरन्धर आम । तासु सुता जानऊ हमै दमयन्ती है नाम ॥
स्वसुर हमारो निषधपति बीरसेन बरबीर । ताको सुत नलबीर बर धर्मधुरन्धर धीर ॥
पुण्यश्लोक प्रसिद्ध सो भूप रूप अभिराम । भार्याहौं ताकी विदित दमयन्ती मम नाम ॥
आईहौं गिरि तो निकट त्यक्त सुप्रिय भर्त्तार । जानऊ दीन अनाथ मोहि पति बिनु दुखित उदार ॥
ढूढति नल पति नृपतिकों दीर्घबाऊ बरकाय । लखो होय जौं आपु गिरि हमकों देहु बताय ॥
एकाकी बनमे फिरति बिह्वल दुखित महान । जानऊ गिरिबर करि कृपा मोको सुता समान ॥
सत्य सत्य धर्मज्ञ तुम बीर धीर निषधेश । जौं मोकों या विपिनिमे दर्शन देऊ नरेश ॥
स्निग्ध मेघस्वन सम भरे प्रीति परम सुखदान । कब सुनि हैं तो बचन हम नल नृप अक्षत समान ॥
हे वैदर्भी आय कब कहिहै मो प्रति बैंन । श्रुति सुखकर सब शोकहर नाथ कृपाके अैंन ॥
करि प्रलाप गिरिके निकट दमयन्ती इमि भूप । उत्तरदिशिकों उठि चली भरी शोक अतिरूप ॥
चली तीनिनिशिदिवस तब तहां बिलोको जाय । भृगु वशिष्ठ सम ऋषिन्हको आश्रम अतिसुखदाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बायुभक्ष अपभक्ष हैं कोऊ पर्णाहार । तेजपुञ्ज तपधाम तहँ बैठे लसत उदार ॥
पहिरे बल्कल अजिन धरि जटाजूटको भार । रम्य तपस्विनको लखो मण्डल परम उदार ॥
समाधान करि चित्तको मुनि मण्डल लखि तौन । किय प्रबेश तँह भीमजा तेजपुञ्ज छबिभौन ॥
बन्दि तिन्हैं ठाढी भई जोरें पाणि बिनीत । शुभ आगम ताको कहो तब मुनिबरन्ह सप्रीत ॥
भैमीको पूजन कियो यथाउचित तपऐन । फेरि बैठिबेकों कहो कृपा सहित बर बैन ॥
मुनि दमयन्तीसों कहो कहा करैं तो कार्य । भैमी बूझो मुनिनसों कुशल यथास्थित आर्य ॥
मुनिन्ह कुशल कहिकै कहो को तुम हौ छबिधाम । कहा कियो चाहति तजौ शोक लहऊ बिश्राम ॥
बन देवी कै देवता या गिरिको छबिऐन । कै तुम दीन स्वरूप धरि आई कहिए बैन ॥

॥ * ॥ दमयन्त्युवाच ॥ * ॥

हम हैं मुनिबर मानुषी कहति सबिस्तर तौन । भीमबिदर्भनरेशको कन्या हम तपभौन ॥
निषधाधिप नल भूपको भार्या हों अभिराम । धर्मधुरन्धर बीर बर जेता पर पुर आम ॥
छली कितव एक द्यूतमे ताको करि आव्हान । सत्य धर्म नल नृपतिको जीतो राज्य महान ॥
ताकी मै भार्या बिदित दमयन्ती मम नाम । ढूढति ताकों फिरति गिरि गहन माँह तपधाम ॥
रम्य रावरे तपोबन नलनृप धारक धर्म । आयो होय तौ कहि करौ समाधान सो पर्म ॥
ककुदिनमे नहि लखौं गी जौं नलनृप अभिराम । देह त्यागि कै करौंगी स्वर्ग गमन तपधाम ॥
जिए हमारे अर्थका मिले बिना नल भूप । व्यर्थ सहौंगी दुःखकों परी शोकके कूप ॥
करति बिलाप बिलोकिकै दमयन्तिहि अभिराम । दमयन्तीसों कहन इमि लागे त तपधाम ॥
ककू दिवसमे होयगो आगे तो कल्याण । योग दृष्टि सों देखि हम तुमसों कहत प्रमाण ॥
देखऊगी नल नृपतिकों भरो मोद छबिभौन । ताके सङ्ग फिरि करऊगी राज्य तिहारो जौन ॥
दमयन्ती सों बचन इमि कहि करि कृपा महान । भए तपस्वी सब सहित आश्रम अन्तरध्यान ॥
दमयन्ती बिस्मित भई अद्भुत देखि चरित्र । कहा भयो आश्रम गए कहँ मुनि सदृश सबित्र ॥
शैल सरित बन कहँ गयो फूलो फरो महान । भयो स्वप्न सो कों कहा रही शोचि सुखदान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

शोच करिकै भई बिबरण दीन दुखित महान । घोर क्षितिकों गई करत बिलाप सो अतिमान ॥ देखि
बिकच अशोक फूलो महत मधुकर बैन । कहन ता प्रति लगी ऐसें भरे लोचन बैन ॥ करु बिशोक
अशोक मोकों नाम सदृश अनूप । कहऊ बनमे फिरत देखो कुशलसों नल भूप ॥ बोलि ऐसे गई दारु
ण देखमे छबिधाम । तहाँ देखो शैल सरिता बिपिनि सरबर माम ॥ तहाँ ढूढतिफिरो नलको करति
रुदन बिलाप । तहाते बऊ दूरि आई भरो शोक उताप । तहाँ देखो काफिला गज सुरथ बऊ जन
मान । रहो उत्तर नदीकों सो भरो सलिल महान । चली तिनके पास भैमी मनुजगण घन जोय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कियो जाय अवश तिनमे महाहर्षित हाय ॥ धरें आधे वस्त्रकों शोकात उन्मत रूप। भरे रज कच ६०५
मलिन विवरण देखि ते सुनु भूप ॥ लखत ताकों भजे कोऊ मनुज भय भरि भूरि सोर लागे करन
कोउ लखत चिन्ता पूरि॥कोऊ लागे हँसन कोऊ करन निन्दा तास।दया करिकै लगे बूझन कोऊ
भैमी पास॥कौन हौ तुम कौन कीदृन फिरति ढूढति काहि।मानुषी हौ कहा हम सब डरत तुमको
चाहि ॥ देवता यहि बिपिनि गिरि की आपु हौ छविधाम। सत्य कहिए जानि हमकों शरणगत
अभिराम॥ किधौं यक्षी राक्षसी कै मानुषी बर बाम। करऊ सो हम जाहि ज्यौं सब कुशल सों
लहि काम ॥ काफिलाके जननके इमि सुनत भैमी बैंन। कहन ऐसें लगी तिनसों भरी दुखमति
चैंन ॥ काफिलाके जुवा बालक थबिर हैं जन जौंन। सहित नेता हमै जानैं मानुषी सब तौंन॥
पिता मम सुविदर्भपति निषधेसहैं भर्त्तार। फिरति ढूढति ताहि हौं नल नाम भूप उदार ॥
ताहि जानत होऊ तुम तौ देऊ क्षिप्र बताय। नाम नल नरव्याघ्र अरिहा परम सुन्दरकाय॥
रहो जो शुचि नाम नायक काफिलाकौं जौंन। मनुज नहि नल नाम कोऊ लखो हम छविभौंन॥
सिंह कुञ्जर महिष भृग यहि बिपिनि माह अनूप। लखत आए नहीं देखो कहूँ मानुष रूप॥
मिली तुमही मानुषी बनमे न तरु सब बन्य। मणिभद्र होउ प्रसन्न हमकों यक्षराज सुधन्य॥
काफिला पति वणिक सों तब कहे भैमी बैंन। जाऊगे तुम कहाकों सब कहऊ हे मतिचैंन॥
॥ * ॥ वणिकपतिरुवाच ॥ * ॥ चेदिराज सुबाऊके पुर जाहिगे हम सर्ब। गयो चाहत शीघ्र
तेहा लाभ देत अखर्ब ॥ काफिला पतिके बचन सुनि भरी मोद ललाम। चेदिपुरकों चली
तिनके साथ सो छविधाम॥चली बनमे बजत दिन सो वणिकको समुदाय।लहो सरवर भद्रनामक
बसे तेहाँ जाय ॥ बजत इन्धन घास लखिकै सलिल अमल अनूप ॥ पाय नायकको सुआज्ञा
बसे सब तँह भूप॥ काफिला जब सोयगो सब अमित निद्रा पाय। अर्ध निशिमे तहाँ आयो वन्य
गज समुदाय ॥ पियन जल तहँ देखि गज हे काफिलाके जौंन। तिन्हे मारन हेत दौरे बिपिनि
कुञ्जर तान॥ रहे जे पथमाह सोवत मनुजके समुदाय। मरदि मारे गए ते लगि कुञ्जरनके पाय॥
भयो हाहाकार चऊँदिशि काफिलामे सोर। भजत कोऊ गिरत कोऊ भरे भयसों घोर॥ मनुज
ऊट अनेक मारे द्विरद दुर्मद सर्ब। बचे ते बन ओर भाजे भरे भीति अखर्ब ॥ दैव बश यहि भाँति
बनके द्विरद आय अमान। मरदि मारो काफिला सो सुनऊ भूप सुजान ॥ रत्न ते सब
बिथरिगे हे वणिक लादे जौंन। कहत भाजे लेउ जाकौं जौंन भावै तौंन॥ जनक्षय यहि भातिको
जब भयो भूप महान। जगी भैमी भरी भयसों सोर सुनि अतिमान ॥ गए जब गज बचे जे हे
काफिलाके लोग। कहन लागे कौंन से यह पापको भो भोग ॥ मणिभद्रकों नहि कियो पूजन
कहन लागे सर्ब। भयो तातें आय हमकों प्राप्त कष्ट अखर्ब॥ धनदको गणनायको नहि कियो
पूजन आदि। कहैं कोउ नहि शकुन पायो चले हे जब लादि॥ कहैं कोउ उनमत्त रूपा मिली

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

नारी जैंन। कियो है यह पाप तेही मानुषी नहि तैंन ॥ तेही माया बिरचि दारुण कियोहै संहार। राक्षसी कै यक्षिणी कै प्रेतिनी नहि दार ॥ पाय ताकों मारिहैं बज्र भांतिसों हम सर्ब। डारिकै तृण धूरि तापैं लकुट लेइ अखर्ब ॥ भीमजैं यहि भांति के सब सुने तिनके बैंन। गई बनमे भाजिकै भय भरी अतुल अचैंन ॥ जायकै तहँ करण लागी विविधि भांति बिलाप। भयो मोपैं विधि बिरुद्ध सो कौंन सो लहि पाप ॥ अन्त मेरे कष्टको अब भयो परत बिचारि। और यातैं देयगो विधि कौंनसो निरधारि॥ मिलो निर्जन देशमे यह हमै जन समुदाय। तैंन मेरे भाग्य बश बन गजन मारो आय। प्राप्त काल बिना न कोऊ मरत है यह सत्य। मरी मै नहि पायकै कौं गज बिमर्दन अत्य ॥ लोकपालनकों स्वयम्बर मे बरी नहि जैंन। नियत तास प्रभावतें यह लही हौं दुखभान ॥ यहि भांति बिबिधि बिलाप करिकै भीमजा अभिराम। गई तहँ द्विज बरण तामे बचे जे तपधाम॥ चेदिपुरकों गई तिनके साथ अचिर अनूप। होत संध्या जहां बसत सुबाऊ नामक भूप। धरैं आधो बसन भैमी कियो सुपुर प्रबेश। दीन क्रश उनमत्तसो लखि तास पुरजन बेश ॥ धरि कुतूहल लगे पीछें पौर बालक बाम। गई तिनसह भीमजा जहँ भूपको हो धाम ॥ राजमाता देखि ताकों भरी करुणा रास। बोलि धाचीसों कहो यहिं ल्याउ मेरे पास ॥ देत हैं जन क्लेश चाहति शरण दुःखित बाम। रूप याको करैगो सु प्रकाश मेरे धाम॥ श्री सदृश उनमत्त बेषा भरी रूप महान। जाय धाची ताहि ल्याई सौधमे सु सुजान ॥ तहां भैमीसों सो बूझन लगी जैसें बैंन। कान हौं तुम कौंनकी दुखभरी सुषमाअैंन ॥ मानुषी तुम मोहि जानो धरे पतिब्रत धर्म। राजसेवक जाति मेरी करति सेवा कर्म ॥ खायकै फल मूल संध्या भई जहं तहं बास रहो मो अनुकूल भर्ता सकल गुणको रास॥ रहतही पति पास छाया सदृशहों सुखदान। भयो दैवाधीन तासों अक्ष द्यूत महान ॥ हारिकै सरबस्व धारे एक बसन सो बीर। चलो बनकों चली ताके सङ्ग हों धरिधीर ॥ कारणान्तर पाय बनमे बसन ताकों तैंन ॥ गयो सो उनमत्त नग्नस्वरूप भो छबिभैंन। बहुत दिनसे भई निद्रा स्ववस हौं श्रम धारि। छोडि मोकों गयो पतिलै बसन आधो फारि ॥ महाबनमे फिरी ढूढत हौं न पायो ताहि। भरी करुणा राज माता ताहि बिजपति चाहि॥ कहो बसु मो निकट तोमे प्रीति मोहि उदार। ल्याइहैं मम मनुज तेरो ढूढिकै भरतार॥ ननरु इत उत फिरत इतहीं आइ है करि गान। बसत इतहीं लहौगी भरतारको तुम तैंन ॥ राजमाताके बचन सुनि कहे भैमी बैंन। करऊ नित्य निवन्ध इतनो बसौं तौ छबिअैंन ॥ उच्छिष्ट भोजन करौंगी नहि धोइ हा नहि पाय। बोलि हा नहि और काहू पुरुषके ढिग जाय ॥ और चाहै मोहि कोउ दण्ड बध्य सो तैंन। जाहिं मो भर्तार ढूढन सुहित ब्राह्मण जैंन॥ होय ऐसो नियम तौ हा बसौं तुम्हरे पास। न तरु मेरो बास इत नहि होयगो मतिरास ॥ कहो तासों राजमातैं खुशी व्है इमि बैंन। कहतिहो सो करौंगी सब बसऊ इत छबिअन ॥ राज

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जननी भीमजासों बोलि यों अभिराम । कहो दुहिता पास ऐसें जो सुनन्दा नाम ॥ याहि सैरंध्री विचारऊ तुल्य वय मतिमान । सखी थारी होय गी यह भरी रूप महान ॥ लेय भैमीको सुनन्दा गई अपने धाम । रही दमयन्ती सुपूजीत तहां मोदित माम ॥ ❀❀❀❀❀

खस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि नलोपाख्याने दमयंत्या चेदिपुरप्राप्तिवर्णनोनाम दशमोऽध्यायः ॥ ❀❀❀❀❀

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

तजि दमयन्तीकों नल भूप । चले बिपिनमे दुःखित रूप ॥ लखो लगी दावा वनमाहँ । सुनो शब्द यह तह नरनाह ॥ पुण्यश्लोक धाव नल बीर । डरऊ न मोहि उबारऊ धीर ॥ दावामध्य भूप नल जाय । देखो तहां नाग अतिकाय ॥ करैं कुण्डली अचल समान । बैठो भरो सो भोति महान ॥ बोलो नाग सो करि परनाम । नल भूपतिसों बचन ललाम ॥ हों कर्कोटक नाग अनूप लहो शाप नारदसों भूप ॥ कछु अपराध पाय तपधाम । ऐसें कहो क्रोध करि माम ॥ रहो इहां तुम अचल समान । जब नल नृप आइँ बलवान ॥ तुम्है लेय जाइहि यल और । तब तोहि तजी शाप अहिमोर ॥ इम सुनि शाप सबश अतिरूप । पदभरि चलिबे सक्य न भूप ॥ तुम्हैं श्रेय देहों सुखदान। मो रक्षा करु नृप बलवान ॥ सखा होहि गे हम तो भूप । मो सम नाग न और अनूप ॥ हम लघु होत विलोकु समत्त । मोहि लेय कै भूपति रत्त ॥ यों कहि भयो अँगुष्ट प्रमान। रहो जो सो नागेन्द्र महान॥ ताहि लेइ कै चलो नरेश । गो जहँ दाव विवर्जित देश ॥ मोहि तजत यह भूप महान । जानि नाग बोलो मतिमान ॥ गणत चलऊ अपने पद भूप । देहौं श्री पद पाय अनूप ॥ गणत चले पद नल बडभाग । दश जब कहो दशे तेहि नाग॥ दशत मात्र नलरूप महान । होय गयो सब अन्तरध्यान ॥ देखि आपनो विकृत सरूप । खडो रहो बिस्मित ह्वै भूप ॥ सबरूप धारे नागेश । ताकों देखो निषधनरेश ॥ तब कर्कोटक बोले बैन । भूपतिसों अति दायक चैन ॥ हम तो हरो सु आतँ रूप । तुम्हैं न चीन्हैं कोऊ भूप ॥ जेहि कल करि दिय तुमकों दुःख । सोमो विषबश लही न सुख ॥ मोविष जबलों तजी न काय । तबलों सो रहि है दुःख पाय ॥ बिन अपराध छलो जेहिँ तोहि । तासों रक्षण कीबैं मोहि ॥ दन्तिनसों भय तुम्हैं न भूप । मो प्रसाद यह पाय अनूप ॥ चारिबर्ण ते तुम्हैं न भीति । लेहौ शत्रु समरमे जीति ॥ जाऊ इहांतें कहत ललाम। बाऊक सूत आपनो नाम ॥ है ऋतुपर्ण निकट बर भूप । जानत अक्ष हृदयको रूप ॥ पुरी अयोध्याको पति बीर । है इक्ष्वाकुबंशमे धीर ॥ ताप जाऊ बेगि करि गौन। कहै मित्र तिहारो तौन ॥ देहै अक्ष हृदय सुखदाय । अक्ष हृदय सो तुमसों पाय ॥ अबदश

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हूहौ जब बीर । श्री समृद्धि तब मिलो गँभीर ॥ ससुत सदार मिलोतो राज । शोक करऊ मति सहित समाज ॥ बचन सत्य यह मेरे भूप । हरो जो हम तो अनुपमरूप ॥ स्वस्वरूप लखिबेके काम । स्मर्ण हमारो करि अभिराम ॥ बसन देत यह लीजै तौन । याहि ओढिहौ जब बलभौन ॥ तब तुम लखि हौ अपनो रूप । सत्य बचन ए मेरे भूप ॥ दे द्वै नृपकों बास ललाम । गयो नाग सो अपने धाम ॥ चल्यो तहाँते तब निषधेश । ऋतुपर्ण पुरीमे कियो प्रवेश ॥ दशए दिवश जाय तहँ भूप । देखो नृपऋतुपर्ण अनूप ॥ मिलि तासों कहि बाऊक नाम । सूतकर्ममे अति अभिराम ॥ अश्व न बाऊत मो सम और । जगतमाह सुनु नृपशिरमौर ॥ पाककर्ममे परम प्रवीन । हम जानत सब शिल्प अहीन ॥ जान होयगो दुष्कर कर्म । हम सब तौन करै गे पर्म ॥ ऋतुपर्णउबाच ॥ बाऊक बसऊ हमारे पास । तुम करिहौ सब हौ मनिरास ॥ सीघ्र जानपर हमकों प्रीत । करऊ तथा तुम तुरग विनीत ॥ अश्वाध्यक्ष करत करि प्रेम । मासिक अयुत लीजिए हेम ॥ बार्ष्णेय सु जीवन हैं जौन । तो स्वाधीन रहैंगे तौन ॥ * ॥ बृहदश्वउबाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऐसे सुनि ऋतुपर्णके सादर बचन अनूप । जीवन अरु बार्ष्णेय सह बसे तहां नल भूप ॥
दमयन्तीको स्मर्ण करि तहँ बसि नल नरनाह । पउत पद्य यह लहि निशा बढे बिरह तनमांह ॥
क्षुधा पिपासा आर्त कहँ करत होयगी सैन । तौन मन्दको स्मर्ण करि आश्रित काके अैन ॥
सुनि प्रतिसंध्या नल बचन बोलो जीवन बैन । करत शोच तुम कौनकों हे बाऊक मतिअैन ॥
शोचत जाकों नित्य सो कहौ कौनकी बाम । मन्दभाग्य वह कौन है पुरुष कहो मतिधाम ॥

॥ * ॥ नलउबाच ॥ * ॥

रहो सुन्दरी जौनकी तास अनृत सब बैन । पाय कछू कारण तजी ताहि कुमतिके अैन ॥
मन्दबुद्धि तजि ताहि व्है दुखित भ्रमत वऊदेश । शोक एकगावत रहत लहि निति निशा प्रवेश ॥
सकल महीमे भ्रमत सो कऊ जीवन कछु पाय । ताहि करत अस्मर्ण सो तहां बसत दुखकाय ॥
परे दुःख बनमे गई सङ्ग सुनारी जौन । ताकों तजि सो जियत है यातें दुस्तर कौन ॥
बाला एक अनभिज्ञपथ बिपिनि योग्य नहि तौन । क्षुधा पिपासाक्रान्तको दुस्तर जीवन जौन ॥
सिंह व्याघ्र सेवित बिपिनिमे तजि अैसी बाम । मन्दभाग्य मतिहीन सो सूत करै यह काम ॥
अैसें करि नैषधनृपति दमयन्ती अस्मर्ण । करत बास अज्ञात है जहँ भूपति ऋतुपर्ण ॥

॥ * ॥ बृहदश्वउबाच ॥ * ॥

नष्ट राज्य नलनृपतिको महिषी सह बनगौन । भीमनृपति सुनि व्है दुखित करि बिचार मतिभौन
ढूढनकों दीन्हें पठे ब्राह्मण सुहित अनेक । तिनसों अैसे बचन कहि दै धन बऊ सबिबेक ॥
दमयन्ती नलनृपतिकों ढूढऊ चऊदिशि जाय । देखि आइ है देउँगो ताहि सहस्र सु गाय ॥
तिन्हे लेआवै ग्राम तेहि देहौं नगर समान । यह सुनि कै चऊदिशि चले ढूढन बिप्र सुजान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

राज्य नगर पुर गिरि गहन ढूढत फिरत अखर्व । कहू नपावत नृपतिनल अमित भए द्विजसर्व ॥ ब०प०
सुदेव नामा बिप्र बर चेदिनगरमे आय । भैमीकों देखो सु तेहि भूपभौनमे जाय ॥
पुण्यकार्य्य हो भूपके तहाँ सु नन्दा साथ । जाय सुदेव लखो तहाँ भैमी विरहित नाथ ॥
मलिन बेष धारें लखी द्विज सुदेव इमि ताहि । धूम धारमे परति है अग्निशिखा जिमि चाहि ॥
ताहि देखि अति मलिन छव मनमे कियो बिचार । है दमयन्ती नियत यह लक्षण भरी उदार ॥
भूप कहो हो रूप जो सो यामे सुखदान । धन्य भए हम यह लखी भैमी रमा समान ॥
पूर्णचन्द्रसे वदनसों दशदिशि करति प्रकाश । दीप शिखाशी देह है भरी सु लक्षण जास ॥
दुष्कर कीन्हो कर्म नल कियो जो याको त्याग । देह आपनी धरै गो कैसें सो बड भाग ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

देखि याको दुःख सो मन होत दुखित महान । दुःखके यह पार कैसें जायगी सुखदान ॥ पाय कै नल राज्य यासो करैंगे इमि प्रीति । भ्रष्ट राज्य महीप जैसें पाय भूमि सुनीति ॥ तुल्य हैं बय शील कुलतें भूरि भारें धर्म । योग्य भैमी भूप नल नल योग्य भैमी पर्म ॥ समाधान सु हमै याको उचित करिबो भूरि दुःख देखो नही कबहूँ रहो सो दुख पूरि ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ ताहि लक्षण भरी सबविधि देखि कै निरधारि । गयो भैमी निकट बिप्र सुदेव बुद्धि बिचार ॥ बिप्र नाम सुदेव मेरो सुनऊ भैमी बैन । सखा भ्राताको तिहारे जानिए मतिऐंन ॥ भीमनृपको पाय शासन तुम्हैं ढूढन हेत । इहां आयो तुम्हैं देखत भरो आनद चेत ॥ कुशल हैं तो पिता माता सहित भ्राता सर्ब । सुता सुत तो कुशलहैं तहँ अरे मोद अखर्ब ॥ दुखितहैं सब बन्धु तो दुख समुझि कै अतिघोर । बिप्र सहसन्ह फिरत हेरत तुम्हैं चारोओर ॥ जानि बिप्र सुदेवकों करि भीमजा सनमान । लगी बूझन क्रमहिते सब बन्धु वर्ग सुजान ॥ लगी रोदन करण भैमी शोकसों अति पूरि । लखि सुनन्दा ताहि रोवत भरी दुखसों भूरि ॥ रुदन सैरंध्री करति चलि कहो जननी पास । बिप्रके टिग जाय याकों जानिए मतिरास ॥ चेदिपतिकी तहाँ भार्य्या सुनत आई त्विप्र जहां भैमी रही सहित सुदेव नामक बिप्र ॥ बोलि बूझो बिप्रसों इमि राजमातैं बैन । सुता किन को भारजा यह कौनको कबिऐंन ॥ बन्धुसों भर्त्तारसों यह भई कैसें नष्ट । कहो हमसों तौन द्विज बिस्तार सह सुस्पष्ट ॥ बिप्र सुनिकै राज माताके सु ऐसे बैन । कहन लागे बैठि सुखसों यथा क्रम मतिऐंन ॥ * ॥ सुदेवउवाच ॥ * ॥ भीम नाम बिदर्भपतिकी सुताहै यह पर्म । नाम दमयन्ती सु याको रूपराशि सुधर्म ॥ निषधपति हो बीरसेन महीप जो बरबीर । पुत्र ताको भूप नल धुर धरमधारक धीर ॥ भार्य्या नल भूपकी यह भरी सुगुण समाज । जीति भ्रातैं लियो ताको द्यूतमे धन राज ॥ गई दमयन्ती सुनृपके सङ्ग बनमे एक । खोज तिनको नही पायो कहू काहू नेक ॥ फिरत हेरत बिप्र सहसन्ह भूमिमे चऊँपास । मिली सो तव कन्यकाके धाममे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० छबिरास ॥ चिन्ह है भ्रूमध्य याके समा ललित ललाम । लखो सो हम मैल भूदो प्रभामय छबि धाम ॥ चिन्ह भूत बिरञ्चि बिरचो भाग्य कारक सर्ब । अग्नि जानोजात जैसें धूममाह अखर्ब ॥ सुनत बचन सुदेवके लै कै सु नन्दा नीर । भालधोय सुतिलक देखो जोतिजाल गँभीर ॥ लगी रादन करण सो लखि गोदमे लेताहि । राजमाता सह सुनन्दा मोदकों अवगाहि ॥ सुदाम्न भूप दशार्णपति जो भरो गुण अवदात । सुता ताको दोय हम अरु दूसरी तो मात ॥ भीमकों सो दई मोहि सुबाऊकों अभिराम । तोहि देखो बाल्यमे सुदशार्ण पतिके धाम ॥ यथा भैमी गेह है तो तथा मेरो धाम। कहन भैमी लगी तव कर जोरिकै अभिराम॥ अज्ञातहूँ हम रही सुखसों अम्ब थारे गेह । सर्बथा लहि मोद रक्षित भई सहित सनेह ॥ बहुत दिन मोहि भये बिछुरें जन निसों अभिराम । चहति हौं अब लखों ताकों महत मो मनकाम ॥ बसत मेरे तहां बालक जननि जनक बिहीन । देखिबेकी तिन्हैं मोकों लालसा अतिपीन ॥ जौ सु मेरो चहति हौ प्रिय कियो अति सुखदान । तौसु अब बैदर्भपुरकों जात दीजै जान ॥ कहि तथास्तु सुमातृभगिनी पुत्र शासन पाय । सहित सेना दिव्य दीन्हों सुखद जान मगाय ॥ बिदा कीन्हों राजमातैं देइ धन अभिराम । बन्धुगण सब आय पूजन कियो तास ललाम ॥ गइ सो बैपुरदर्भकों क्षिप्र भैमी भूप । कुशलसौं तहँ जाय देखो बन्धु बर्ग अनूप ॥ पिता माता सहित भ्राता सुता सुत अभिराम । कुशलसों सब जाय देखे भरी मोद ललाम ॥ किये पूजित देव ब्राह्मण बिबिधिबिधिसों पम । दियो बिप्र सुदेवकों गो सहस भूप सधर्म ॥ सुताकों लखि दए सानद ग्राम सधन महान । रही भैमी निशामे तह जननि पास सुजान ॥ बिश्राम लहिकै जननिसों इमि कहे भैमी बैन । चहति जीवन सहित मोको सुनऊ तौ मतिऐन ॥ यत्न नलके आनिबेको करऊ तौ मतिमान । बचन सुनि कै सुताके सो भई दुखित महान ॥ अश्रुपूरित नैंन आइ भीमनृपके पास । कहे ऐसें बचन नृपसों भरी शोक प्रयास ॥ करति दमयन्ती सु पतिको शोच भूप महान । छोडि लज्जा बचन हमसों कहै प्रगट सुजान ॥ करैं नलके हेरिबेमे यत्न नृप तो चार । सुनत ताके बचन नृप द्विज लए बोलि उदार ॥ चहूँ दिशिकों बिप्र सहसन दिए भूप पठाय ॥ चले ते चहुँ ओरकों नृप भीमशासन पाय ॥ गए दमयन्ती निकट तिन कहो हम सब जात । कहो भैमी द्विजनसों यह बचन अति अवदात ॥ जाऊ तुम जेहिदेश पुरमे पाय जन समुदाय । तहाँ कहियो बचन यह हम देति जौंन शिखाय ॥ गए कहँ लै कितव आधो बस्त्र मेरो फारि । छोडि शोवति बिपिनिमे प्रिय प्रियाकों हित हारि ॥ ताहि देखो यथा तुम सो तथा है बर बाम । दहति आधोबसन धारें चहति तोहि ललाम ॥ शोकसों सो भरी रोवति रहति निशि दिन भूप । ताहि उत्तर दीजिए सुनि कृपा सहित अनूप ॥ कृपा जातें करैं ऐसे और कहियो बैंन । भरण पालन करै सो पति कहत हैं मतिऐंन ॥ करे ते तुम त्याग क्यो धर्मज्ञ व्है कै बीर । ख्यात प्राज्ञ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कुलीन हो तुम दयावान गँभीर ॥ भए निर्दय आपु मेरे भाग्यको हय तौंन । करऊ अब नर वं०प०
सिंह मोपैं कृपा आनदभौंन ॥ वचन सुनि यह रावरो नर देउ उत्तर जान । विप्र ताकों जानि
यो नल भूप है नर तौंन ॥ कहै जो सो वचन हमसों तौन कहियो आय । धनिक निर्धन होय
कै सु अशक्त शक्त लखाय ॥ जानियो करतव्य ताको बोलि ऐसे बैंन । सहित आदर बिदा कीन्हें
द्विजनकों मतिअैंन ॥ गए ब्राह्मण चहूँदिशिकों नगर पुर बनबाग । घोष आश्रम सरित गिरिबर
रहै जौंन तडाग ॥ तौंन भैमीको वचन तहँ तहाँ कहत सुनाय । लहत नहि नल नृपतिकों द्विज
भए सभ्रम काय ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ पर्णद नामक विप्र सो बऊ दिननमें फिरि आय ।
कहन भैमी सों लगे यहि भाँति बचन सुनाय ॥ गयो खोजत नलनृपतिकों कोशलापुर साँह ।
कहो बचन सुनाय तो ऋतुपर्ण जहँ नरनाहँ ॥ नही उत्तर दयो काहूँ सभाजन सह भूप । चले
हम तब बिजनमे नर मिलो कुत्सित रूप ॥ नाम बाहुक सारथी ऋतुपर्णको है तौंन । पाकमे अति
निपुण वाहक शीघ्र स्यन्दन गौंन ॥ स्वास फिरि फिरि लेय रोदन लगो करन महान । बूझि हम
सों कुशल ऐसें लगो कहन सुजान ॥ विपतिहूँमे करैं रक्षण कुलस्त्री कुलधर्म । करैं रक्षण आपु
अपनो जीति स्वर्ग सधर्म ॥ भिन्न भर्तासों करैं नहि कोप जे वरनाम । चरित कवच सुप्राण धारण
करति हैं अभिराम ॥ मूढ पाय विपत्य जौं नर करै नारी त्याग । क्रोधको नहि करैं जे पतिव्रता हैं
वरभाग ॥ प्राण याचा हेतु जाको हरो पचिन्ह बास आधि पीडित करैं पतिपैं क्रोधनहि मतिरास ॥
राज्य श्रीसों भ्रष्ट दुःखित क्षुधितहूँ पर तौंन । करति हैं नहि क्रोध नारी परम उत्तम जौंन ॥ तौंन
ताके बचन सुनि हम दियो तुम्हहि सुनाय । जौंन चाहऊ करऊ तुम नृप पास देऊ जनाय ॥ पर्णाद
के सुनि बचन भैमी भरे खोचन नीर । जाय जननीसों कहो एकान्त माँह गभीर ॥ यहि अर्थको
नहि नेक जानै भीमभूप महान । निकट पठवति जननि विप्र सुदेवकों मतिमान ॥ यथा भीम
न लहै मो मत तथा करिबें तोहि । चहति हौ जौं प्रीति करिकै सहित जीवन मोहि ॥ यथा
ल्यावो जननि तुमपहँ मोहि यह बर विप्र । तथा जाय सुदेव तेहाँ भरो मङ्गल क्षिप्र ॥ आनि
बेंनलभूपकों जँह कोशलापुर माम । आन्त द्विज पर्णादकों दिय भूरि धन अभिराम ॥ पायके
नलभूपकों धन देउँगी अतिमान । बचन सुनि पर्णाद आशीर्बाद दिय सु महान ॥ बोलि विप्र सु
देवकों इमि कहे भैमी भूप । जननि संनिधि पायकै अति भरी शोक अनूप ॥ जाऊ क्षिप्र सुदेव पुर
जहँ कोशला क्षबिरास । कहऊ गे ऋतुपर्ण नृपसों बचन यह सुखरास ॥ करि स्वयम्बर फेरि भैमी
बरै भी भर्तार । जात हैं तहँ भूप जे वर रूप राज कुमार ॥ कालिह सूरय उदैकी है लग्न अति
अभिराम । बरो चाहत जाऊ तौ तुम भूमिपति क्षबिधाम ॥ जानि परत न जियत सो नल भूप अति
अभिराम । कहो ये यहि भाँति तुम तहँ जाय बचन ललाम ॥ तास बचन सुदेव सुनि तहँ जायकै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अ०८० छविरास ॥ चिन्ह है भ्रूमध्य याके समा ललित ललाम। लखो सो हम जैस भूदो प्रभामय छवि धाम ॥ चिन्ह भूत बिरञ्चि बिरचो भाग्य कारक सर्व। अग्नि जानोजात जैसें धूमनाह अदर्व ॥ सुनत बचन सुदेवके लै कै सु नन्दा नीर। भालधोय सुतिलक देखो जोतिजाल गँभीर ॥ लगी रादन करण सो लखि गोदमे लेताहि। राजमाता सह सुनन्दा मोदकों अवगाहि ॥ सुदाञ्च भूप दशार्णपति जो भरो गुण अवदात। सुता ताको दोय हम अरु दूसरो तो मात ॥ भीमकों सो दई मोहि सुबाऊकों अभिराम। तोहि देखो बाल्यमे सुदशार्ण पतिके धाम ॥ यथा भैमी गेह है तो तथा मेरो धाम। कहन भैमी लगी तब कर जोरिकै अभिराम ॥ अज्ञातहूँ हम रही सुखसों अम्ब थारे गेह। सर्वथा लहि मोद रहित भई सहित सनेह ॥ बऊत दिन मोहि भये बिछुरें जन निसों अभिराम। चहति हौं अब लखों ताकों महत मो मनकाम ॥ बसत मेरे तहां बालक जननि जनक विहीन। देखिबेकी तिन्हें मोकों लालसा अतिपीन ॥ जो सु मेरो चहति हौ प्रिय कियो अति सुखदान। तौसु अब बैदर्भपुरकों जात दीजै जान ॥ कहि तथास्तु सुमातभगिनी युत शासन पाय। सहित सेना दिव्य दीन्हों सुखद जान मगाय ॥ विदा कीन्हों राजमातें देइ धन अभिराम। बन्धुगण सब आय पूजन कियो तास ललाम ॥ गइ सो बैपुरदर्भकों क्षिप्र भैमी भूप। कुशलसों तहँ जाय देखो बन्धु बर्ग अनूप ॥ पिता माता सहित भ्राता सुता सुत अभिराम। कुशलसों सब जाय देखे भरी मोद ललाम ॥ किये पूजित देव ब्राह्मण विविधिविधिसों पम। दियो बिप्र सुदेवकों गो सहस भूप सधर्म ॥ सुताकों लखि दए सानद ग्राम सधन महान। रही भैमी निशामे तह जननि पास सुजान ॥ विश्राम लहिकै जननिसों इमि कहे भैमो बैन। चहति जीवन सहित मोको सुनऊ तौ मतिऐन ॥ यत्न नलके आनिबेको करऊ तौ मतिमान। बचन सुनि कै सुताके सो भई दुखित महान ॥ अश्रुपूरित नैन आइ भीमनृपके पास। कहे ऐसें बचन नृपसों भरी शोक प्रयास ॥ करति दमयन्ती सु पतिको शोच भूप महान। छोडि लज्जा बचन हमसों कहै प्रगट सुजान ॥ करैं नलके हेरिबेमे यत्न नृप तो चार। सुनत ताके बचन नृप द्विज लए बोलि उदार ॥ चहूँदिशिकों विप्र सहसन दिए भूप पठाय ॥ चले ते चऊँ ओरकों नृप भीमशासन पाय ॥ गए दमयन्ती निकट तिन कहो हम सब जात। कहो भैमी द्विजनसों यह बचन अति अवदात ॥ जाऊ तुम जेहिदेश पुरमे पाय जन समुदाय। तहाँ कहियो बचन यह हम देति जैन बिठाय ॥ गए कहँ लै कितव आधो बस्त्र मेरो फारि। छोडि शोवति बिपिनिमे प्रिय प्रियाकों हित हारि ॥ ताहि देखो यथा तुम सो तथा है बर बाम। दहति आधोबसन धारें चहति तोहि ललाम ॥ शोकसों सो भरी रोवति रहति निशि दिन भूप। ताहि उत्तर दीजिए सुनि कृपा सहित अनूप ॥ कृपा जातें करैं ऐसे और कहियो बैन। भरण पालन करै सो पति कहत हैं मतिऐन ॥ करे ते तुम त्याग को धर्मज्ञ व्है कै बीर। ख्यात प्राज्ञ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कुलीन हौ तुम दयावान गँभीर ॥ भए निर्दय आपु मेरे भाग्यको क्षय तौंन । करऊ अब नर सिंह मोपैं कृपा आनदभौंन ॥ वचन सुनि यह रावरो नर देउ उत्तर जान । विप्र ताकों जानि यो नल भूप है नर तौंन ॥ कहै जो सो वचन हमसों तौन कहियो आय । धनिक निर्धन होय कै सु अशक्त शक्त लखाय ॥ जानियो करतव्य ताको बोलि ऐसे बैंन । सहित आदर बिदा कीन्हें द्विजनकों मतिचैंन ॥ गए ब्राह्मण चहूँदिशिकों नगर पुर बनबाग । घोष आश्रम सरित गिरिबर रहै जौंन तडाग ॥ तौंन भैमीको वचन तहँ तहाँ कहत सुनाय । लहत नहि नल नृपतिकों द्विज भए सभ्रम काय ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ पर्णद नामक विप्र सो बऊ दिननमें फिरि आय । कहन भैमी सों लगे यहि भाँति वचन सुनाय ॥ गयो खोजत नलनृपतिकों कोशलापुर माँह । कहो वचन सुनाय तो ऋतुपर्ण जहँ नरनाहँ ॥ नही उत्तर दयो काहूँ सभाजन सह भूप । चले हम तब बिजनमे नर मिलो कुत्सित रूप ॥ नाम बाहुक सारथी ऋतुपर्णको है तौंन । पाकमे अति निपुण वाहक शीघ्र स्यन्दन गौंन ॥ स्वास फिरि फिरि लेय रोदन लगो करन महान । बूझि हम सों कुशल ऐसें लगो कहन सुजान ॥ विपतिहूँमे करैं रक्षण कुलस्त्री कुलधर्म । करैं रक्षण आपु अपनो जीति स्वर्ग सधर्म ॥ भिन्न भर्तासों करैं नहि कोप जे वरनाम । चरित कवच सुप्राण धारण करति हैं अभिराम ॥ मूढ पाय विपत्य जौं नर करै नारी त्याग । क्रोधको नहि करैं जे पतिव्रता हैं बरभाग ॥ प्राण याचा हेतु जाको हरो पक्षिन्ह बास । आधि पीडित करैं पतिपैं क्रोधनहि मतिरास ॥ राज्य श्रीसों भ्रष्ट दुःखित क्षुधितहूँ पर तौंन । करति हैं नहि क्रोध नारी परम उत्तम जौंन ॥ तौंन ताके बचन सुनि हम दियो तुम्हहि सुनाय । जौंन चाहऊ करऊ तुम नृप पास देऊ जनाय ॥ पर्णाद के सुनि बचन भैमी भरे लोचन नीर । जाय जननीसों कहो एकान्त माँह गभीर ॥ यहि अर्थको नहि नेक जानै भीमभूप महान । निकट पठवति जननि विप्र सुदेवकों मतिमान ॥ यथा भीम न लहै सो मत तथा करिबें तोहि । चहति हौ जौं प्रीति करिकै सहित जीवन मोहि ॥ यथा ल्याचो जननि तुमपहँ मोहि यह वर विप्र । तथा जाय सुदेव तेहाँ भरो मङ्गल क्षिप्र ॥ आनि बें नलभूपकों जँह कोशलापुर माम । आन्न द्विज पर्णादकों दिय भूरि धन अभिराम ॥ पायके नलभूपकों धन देउँगो अतिमान । बचन सुनि पर्णाद आशीर्वाद दिय सु महान ॥ बोलि विप्र सुदेवकों इमि कहे भैमी भूप । जननि संनिधि पायकै अति भरी शोक अनूप ॥ जाऊ क्षिप्र सुदेव पुर जहँ कोशला क्षबिरास । कहऊ गे ऋतुपर्ण नृपसों बचन यह सुखरास ॥ करि स्वयम्बर फेरि भैमी बरै गी भर्तार । जात हैं तहँ भूप जे वर रूप राज कुमार ॥ कालिह सूरय उदैकी है लग्न अति अभिराम । बरो चाहत जाऊ तौ तुम भूमिपति क्षविधाम ॥ जानि परत न जियत सो नल भूप अति अभिराम । कहो ये यहि भाँति तुम तहँ जाय बचन ललाम ॥ तास बचन सुदेव सुनि तहँ जायकै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सतिमान। कहे नृप ऋतुपर्ण सों सब यथा बिधि अभिराम। बृहदश्वउवाच॥ बचन सुनत सुदेवके ऋतुपर्ण भूप सुजान। बोलि बाहुकसों कहो यहि भाँति करि सनमान। सुनत दमयन्ती स्वयम्बर गयो चहत बिदर्भ।एकदिनमे जाहि बाहुक जोति जैसे अर्भ॥सुनत सो नल भूपको मन भयो दुखित महान। दुःख मोहित करति मैसो कर्म यह अविधान॥ सोचि जैसें रहे ककुत्थ अचल सोच्हे भूप।कियो चिन्तित अर्थ मेरे यह उपाय अनूप॥भक्ति कामाके बिदर्भी करति यह दुःकर्म। दीन ताकों तजो हम छल छाय बिरचि अधर्म॥ स्वभाव चञ्चल तियनको मम दोष दारुण पाय। करें जैसो सुत बिरह बस गो होय मुढ़ दनसाय॥कैसेहूँ यहकर्म सो नहि करै गी बरबाम। सती सो सहित कन्या पिताके ससि धाम॥ सत्य होय असत्यकै तहँ देखिए करि गौन। साधिए ऋतुपर्णकों यह महत कारज तौन॥ नियत करि ऋतुपर्णसों यह कहो बाहुक बन। चलैगे हम जानिकै यह बाक्यतो मति त्रैन॥ एकदिनमे जाहिंगे बैदर्भपुरनरनाह। गो परीक्षण अश्वबाहुक अश्व शाला माह॥ समर्थ अश्वा जौन ल्यायो अश्व जे हयकाय। तेज सवज सुजाति गुणमय परम शुद्ध स्वभाय॥ गुह्य दम्य आवर्त जिनमे सिन्धु संभव जौन। कहन लागे क्रोधकरि कछु भूप देखत तौन॥कहा ल्याए अश्व ए हे हास्य योग्य न तोहि। अबल हयए अश्वबाहुक बहैंगे किमि मोहि॥

॥ * ॥ बाहुक उवाच ॥ * ॥ भालमे एकशीसपे विय बज्रभेवर दोय। पार्श्वमे द्वय दोय भवरी पीठिपे एक होय॥ जाहिंगे बैदर्भकों ए तुरग संशय हो न। ननद कहिए भूप जोरैं ल्याय बाजी पौन॥ * ॥ ऋतुपर्ण उवाच ॥ * ॥ अश्वके तत्वज्ञ तुमहौ सुनऊ बाहुक बैंन। शीघ्र गामी तुरगँ रथमे जोरिए मतिश्रेन॥ चारि जैसे तुरगँ रथमे ल्याय जोरे भूप। भरे सुगुण सुजाति गतिमे वायु सदृश अनूप॥ चढे रथपर जाय तब ऋतुपर्ण आतुर मान। जानु केवल गिरेते तब तुरगँ अति बलवान॥ वेगसों नलभूप तुरगनपास आय उदार। भ्रान्त कीन्हों फेरिकै कर पोंछि करि सतकार॥ धूर बास उठाय तब वार्ष्णेय ढुतहि टारि। जालकों बैदर्भ पुरकों धरो वेग बिचारि॥ करो उद्दित तिन्हैं बाहुक परम उत्तम अर्ब। चलो रथ क्षिति छोडि नभमे भरो वेग अखर्ब॥ देखिकै ते अश्व रथकों बहत वायु स्वरुप। भयो नृप ऋतुपर्ण मनमे महत बिस्मित भूप॥ वार्ष्णेय चिन्तित भयो बाहुकको चित्ते हय ज्ञान। इन्द्रको है सूत मातलि जानिपरत सुजान॥ देखि बाहुकमे परे यहि भाँति लक्षण रूप। वाजिकुल तत्वज्ञ है यह शालिहोत्र अनूप॥ किधौ है नलभूप यह बर वाजि वाहक वीर। किधा नलकी पढी विद्या धारि बाहुक धीर॥ यहि भांतिसों बार्ष्णेय मनमे करत विविध बिचार। भयो प्रथमे चढो रथपर भूप सङ्ग उदार॥ देखि बाहुकको सु सारथि कर्म नृप मतिमान। कहो सह वार्ष्णेय मनमे मोह महत सुजान॥ नदी पर्वत विपिन सरवर देश वर विस्तार। चलो रथ चरखो सो तिनकों नाभि सुरथ उदार॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ व०प०

उत्तरीय भूपतिको जैान । गिरो वेगवस छितिपर तैान ॥ लीबैं ताहि कहो तव भूप । गिरो भूमिपर देखि अनूप ॥ बाऊक रथ रोकऊ अतिमान।भरो वेगसम बायु महान॥उत्तरीय यह गिरो उडाय । ताहि लेय बाष्णेय उडाय ॥ बोले नल ऐसे तब बैन।विहँसि भूप सुनु मतिके ऐन॥गिरो वेग वस उडिपट जैान । दूरिगयो योजनतैं तैान ॥ सो न मिलत तुमकों अब भूप। चलो वेगसों रथ अतिरूप ॥ विटप बिभीतक को पथ मांह । मिलो देखि बोलो नरनाह ॥ बाऊक लखो हमारो ज्ञान।संख्या माह परम अति मान ॥ नहि जानत सब कोऊ सर्व । नहि कोऊ सर्वज्ञ अखर्व॥काहू पुरुषमाह नहि एक । सर्वज्ञानको विहित विवेक ॥ बाऊक यामे जे फलपात।कहत गिरे जे लहि बर बात ॥ गिरे एक अधिकी शतपत्र । तिनतैं एक अधिक फल अत्र ॥ पाँच कोटिहैं पत्र नवीन । होय सहस फल शाखासीन ॥ करि ठाढो रथ बाऊक बन । कहन लगो नृपसों मतिऐन ॥ यह अतथ्य सम भाषत भूप । कियो चहत हम सत्य स्वरूप ॥ तोरि बिभीतकके दल सर्व । करत सत्य गनि भूप अखर्व ॥ लखत तुम्हैं तोरत हम पत्र । रऊ मूहूर्त भरि भूपति अत्र ॥ न तरु जाऊ यह पथ सुखदान । सङ्ग सूत बाष्णेय सुजान ॥ भूप शान्तिमय बोले बैन । तो सम रथ साहक छिति पैं न ॥ हम विदर्भ लो छनतैं बीर । गयो चहत हय कोविद धीर ॥ हम बाऊक तो शरण सुजान । कार्य विघ्न नहि करु मतिमान ॥ करिहैं हम कहिहो तुम जैान । निशिमुख पाय भीमके भैान ॥ * ॥ बाऊकउवाच ॥ * ॥ कलिद्रुमके मनि कै हम पत्र । चलिहैं बेगि भीम नृप यत्र ॥ वैसनस्य व्है भाषो भूप । जो शाखा हम कहैं अनूप ॥ ताके पत्र गनऊ तुम जाय । होऊ निवृत्त सत्यता पाय ॥ बाऊक रथ तजि करि द्रुत तैान । चढो जाय शाखापर तैान ॥ गनिकै बाऊक फल दल तास । गयो सविस्मय भूपति पास ॥ कहो कहे तुम जितने भूप । तितने फल दल गणे अनूप ॥ अतिअद्भुत हम लखो सुजान । तुमभे यहि विद्याको ज्ञान ॥ तुमतैं यह हम चहत अनूप । विद्या देऊ कृपा करि भूप ॥ त्वरित गमनको करि अनुमान । कहो भूप यह लेऊ सुजान ॥ जानऊ अत्र हृदय यह तत्र । हम संख्याकर भे सरवज्ञ ॥ बाऊक कहो हमै यह देऊ । हमसों अश्व हृदय नृप लेऊ ॥ भूप कार्य गौरवके क्षोभ । अश्व ज्ञान लोबेकें लोभ ॥ कहो लेऊ बाऊक यह ज्ञान । अत्र हृदय मोसों सविधान ॥ अश्व हृदय तुमसों हैं जैान । रहो धरें सो मो धन तैान ॥ यह करि अत्र ज्ञान सुखदान । बाऊकको दिय भूप सुजान ॥ अत्र हृदय पायो जब भूप । तब तनतजि कलि कढो कुरूप ॥ कर्कोटकको विष अति घोर । मुखतें बमन करत नहि थोर ॥ भैमीको शापानल जैान । मुखते कढन लगो तब तैान ॥ धर्मधुरन्धर नल छिति पाल । ताका कष्ट दियो वऊकाल ॥ व्है विमुक्त कलि विषसों तान । धरो रूप अपनो निज जैान ॥ कियो क्रोध नल कलिकों चाहि । चाहो साप देनकों ताहि ॥ तब कलि कँपत कहे इमि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० बैन । जोरि पाणि भरि भीतिअचैंन ॥ भूप कोप कीजै संहार । कीर्ति देत हम तुम्हैं उदार ॥ नाग राजके बिषकों पाय । जरो दोस निशि मेरो काय ॥ तुम भैमिहिं जब तजी सुजान । तब तेहि शाप दियो अतिमान ॥ तबतें दुःख घोर अति पाय । बसत रहे हम नृप तो काय ॥ हम तो शरण वीर बलअैंन । सुनु निषधेश हमारो बैंन ॥ तो कीर्तन जो करिहि अनूप । सो नो छत दुख लहि हि न भूप ॥ हमै भयार्त शरणगत जोहि । जैंन शाप देहो नृप मोहि ॥ यह सुनि कलिको बचन निदेश । कियो कोपसंहार नरेश ॥ यह कहिकै कलि भय भरि काय । बसो बिभीतक तरुमे जाय ॥ व्है अदृश्य सबसों कलि तैंन । कहे बचन नल नृपसों जैंन ॥ गत ज्वर भयो भूप निषधेश । भए नष्ट कलिकाय प्रवेश ॥ तज पुरातन पाय सहर्ष । चलो हाँकि रथकों दर्धर्ष ॥ करत बिभी तकमे कलि बास । जावो भलो न ताके पास ॥ उडे जात हय बिहँग समान । प्रेरित नलतें अति बलवान ॥ गो बिदर्भ पुर सन्मुख भूप । गो कलि स्वगृह धरे छद्मरूप ॥ भरो भूप नल आनद पोन । रहो एकतन रूप मलीन ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ साँझ होत ऋतुपर्ण उदार । गए बिदर्भ नगरके द्वार ॥ पुर रक्षकन्ह भीमपहँ जाय । कहो तास आगम सुखदाय ॥ *👄*👄*👄*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भीम नृपति ऋतुपर्णको सुनि आगम बिन कार्य । कहो देऊ आवन इहाँ कोशलेश नृप आर्य ॥
गए करत नादित दिशा रथध्वनिसों बरवाम ॥ दमयन्ती जानो सुनत नल रथ शब्द अभिराम ॥
घन निर्घोष समान धुनि सुनि दमयन्ती भूप । नल प्रेरित रथ रावसम भई सो बिस्मित रूप ॥

॥ * ॥ दमयन्त्युवाच ॥ * ॥

भूमि भरति यह सुरथ धुनि करति सो मोचित चैंन । जानि परतिहै मोहि यह आयो नल कविअैंन ॥
चन्द्रानन नल नृपतिकों जौं न लखौंगी अद्य । तौ हो या तन दुखितको त्याग करौंगी सद्य ॥
जौं नलके भुज पासमे आजु न फसिहौं जाय । तौं हों अग्नि प्रवेश करि दहिहौ दुःखित काय ॥
जौ न आइहै पास मो सिंह सदृश नल भूप । आजु आपनी देहको करिहौं नाश अनूप ॥
अनृत तास अपकारहों स्मरण न करिहौं एक । मर्य्यादा उल्लङ्घनो कहिहौं कबऊ न नेक ॥
क्षमावान अनुकूल प्रभु बीर बदान्य ललाम । गुणस्मर्ण ताके करति हों निशिदिन अभिराम ॥
अैसें करति बिलाप सो दमयन्ती कविधाम । चढी जायकै सौधपै नल दरशनके काम ॥
मध्यम कक्ष्यामे लखो रथ ऋतुपर्ण समेत । बाहुक अरु बार्ष्णेय यहै तातें सूत सनेत ॥
बाहुक अरु बार्ष्णेय तब रथ तजि उतरि सुजान । रथ ठाढो करि तुरगते छोरि लए बलवान ॥
रथ तजिकै ऋतुपर्ण तब गए भीम नृप पास । भीम भूप पूजन कियो तास सबिधि मतिरास ॥
तासों पूजित होयकैं कोशलेश बरभूप । बसो सो कुण्डिन नगरमे भरे बिचार अनूप ॥
तहाँ स्वयम्बरको लखत कहूँ न चर्चा चाल । इत उत देखत रहतहैं चकित भए क्षितिपाल ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दुस्त्रिणके नहि मंत्रकों जानत भीम नरेश। सहसा आगम तास लखि मनमे भरे अँदेश ॥ ब०१०
भीमनृपति ऋतुपर्णसों अैसें बूझे बैन। अकस्मात आगम भयो कौंनहेतु मतिअैंन ॥
लखो नही ऋतुपर्ण नृप कछू स्वयम्बर रूप। दुहिताहेतु आयो कहो नही भूपसों भूप ॥
तब विचारि ऋतुपर्ण नृप अैसें बोल्यो बन। दर्शनार्थ आयो तुम्ह जानि पुण्यको अैंन ॥
मनमे रहे विचारि तब भीमनृपति मतिभौंन। शतयोजनसों अधिक तहँ आगम कारण कौंन ॥
भोर जो याको होयगो हेतु जानि हैं तौंन। यह विचारि ऋतुपर्णकों दियो बासको भौंन ॥
अल्पकार्य्य आगमनको हमसों बोल्यो भूप। कारण याको परैगो भोर जानि अनुरूप ॥
भीम नृपतिके मनुज सँग कोशलेशके जाय। यथा सौध शय्या सहित दीन्हों धाम बताय ॥
बार्ष्णेय सह ऋतुपर्ण वसे भौंनमे जाय। रथ लै कै बाऊक बसे रथशालामे आय ॥
सेवा करिकै हयनकी बाऊक शास्त्रविधान। बसे आपु रथके निकट भरे मोद सुखदान ॥
बार्ष्णेय बाऊक सहित लखि ऋतुपर्ण नरेश। भई रथध्वनि कौंनको भैमी भरी अदेश ॥
नलरथकैसी ध्वनि भई यह रथध्वनि अतिसाम। शिखी कहा बार्ष्णेय सो नलविद्या अभिराम।
जातिरथनिर्घोष यह भो नलरथ सम मान। नैषधेश सो भो कहा यह ऋतुपर्ण महान ॥
दमयन्ती यह तर्क करि मनमे निजु ठहराय। नैषधनृपके लखनकों दूती दई पठाय ॥

॥ * ॥ दमयन्त्युवाच ॥ * ॥

रथ वाहक यह कौंन है केशिनि जानन जाऊ। विकृत रूप रथकेनिकट बैठो जो लघु बाऊ ॥
निकट जाय मृदु वचनसों कुशल बूझि अभिराम। तत्व तास सब समुझियो जौंन बसत हियधाम ॥
याकों लखि कै होति है शङ्का मोहि महान। यह मेरे मन हृदयकों लखत होत सुखदान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कहियो फेरि कथा तुम तौंन। द्विजपर्नाद कही ही जौंन ॥ ताको उत्तर समुझि सुजान।
मोसों आय कहेऊ सुखदान ॥ गई दूती बाऊक पैं धाय। भैमी लखति अटापैं आय ॥ * ॥ केशिन्युवाच ॥ * ॥ तुम मनुजेन्द्र कुशल सह चैंन। जानऊ यह दमयन्ती बैंन ॥ कब तुम चले इहाँकों बीर। आए कौंनहेत गम्भीर ॥ तौंन कहो तुम सत्य सुजान। भैमी सुनो चहति सुखदान ॥
॥ * ॥ बाऊकउवाच ॥ * ॥ सुनो स्वयम्बर कोशल भूप। भैमीको फिरि होत अनूप ॥ द्विजसों सुनि सो भूप महान। चलो इहाकों आतुरमान ॥ शतयोजन चारी बर अर्ब। हम जोते रथमाह अखर्ब ॥ * ॥ केशिन्युवाच ॥ * ॥ तुममे मनुज तीसरो जौंन। कहँगो कहो कौंनको तौंन ॥ तुमहो कौंन कौंनके बीर। यह विद्या कहँ लही गभीर ॥ * ॥ बाऊकउवाच ॥ * ॥ बार्ष्णेय सूत है नलको तौंन। नल जब कियो विपिनिकों गौंन ॥ तब ऋतुपर्ण भूपपहँ जाय। बसो सूत सो जीवन पाय ॥ * ॥ केशिन्युवाच ॥ * ॥ जानत काबार्ष्णेय सो मर्म। कहा गए नलभूप सधर्म ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

५० कहौ कान बिधि तुमसों तौंन ॥ हे बाहुक नल भूपति गौंन ॥ * ॥ बाहुकउवाच ॥ * ॥ नलके सुत अरु सुता सुजान । इतै छोडि सो गो मतिमान ॥ नलकों जानत पुरुष न आन । गूढ फिरत तजि रूप महान ॥ नल आत्मा जानत नलरूप । कै ताकी जो प्रिया अनूप ॥ कहत न नल अपनो आकार । काहूसों जो परम उदार ॥ * ॥ केशिन्युवाच ॥ * ॥ प्रथम अयोध्या गयो जो बिप्र । नारी बचन सो कहत पवित्र ॥ कितब गए तुम कित करि गौंन । आधोबसन लेइ मम तौंन ॥ सोवत छोडि बिपिनिमे मोहि । हों अनुरक्त प्रिया प्रिय तोहि ॥ यथा बिलोकी हो तुम ताहि । तथासो तुम्है परीक्षति चाहि ॥ दहति रहति निशिदिन छबिरास । पहिरे सोई आधोबास ॥ रोवति रहति निरन्तर तौंन । भरी दुःख पीडित छबिभौंन ॥ कहि प्रतिबाक्य बिहित सुखदान । तास तौंन यह प्रिय आख्यान ॥ कहहु फेरि तुम कृपा निधान । पूछति हौं मै तुम्है सुजान ॥ सुना चहति दमयन्ती तौंन । तो मुखतें हे आनदभौंन ॥ यह सुनि कै तुम उत्तर ताहि । दियो जो पूर्व कृपा अवगाहि ॥ सुनो चहति है भैमी तौंन । तातें फेरि कहौ छबिभौंन ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * यह सुनि व्यथित भए नलभूप । भरे बारि लोचन अतिरूप ॥ गद गद गरें खलित मुखबैंन । लगे सँभारि कहन मतिअैंन ॥ * ॥ बाहुकउवाच ॥ * ॥ लहि कै बिपति कुलीना बाम । आपु हि रक्षति आपु ललाम ॥ सत्य स्वर्गकों जीतैं तौंन । पतिबिन करैं क्रोध नहि जौंन ॥ चरित कवच करि राखैं प्रान । जे कुलबधू सुमति सुखदान ॥ गयो प्रान जात्राको आस । पक्षिण हरो तास बरबास ॥ पीडित भयो आधिसों उद्ध । कुलतिय हौंहि न तापैं क्रुद्ध ॥ आदर करौ निरादर माम । लखैं तथाबिधि पतिकों बाम ॥ भ्रष्टराज्य सो प्रियाबिहीन । क्षुधित व्यसनसों व्यथित मलीन ॥ तौंन बाक्य यहिबिधि कहि भूप । रुदन बरण लागे अतिरूप ॥ सो केशिनि तहाँतें जाय । दमयन्ती हि सब दियो सुनाय ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ दमयन्ती सो सुनि मतिमान । भई शोकमे मग्न महान ॥ शङ्कमान नलमे मति अैंन । कहो केशिनीसों इमि बैंन ॥ केशिनी जाहु भूपके पास । तास परीक्षा करु मतिरास ॥ चरित तास देखहु तुम तौंन । कारज कारण करै सा जान ॥ मागेहु अग्नि न दीजो ताहि । औ न देहु जल हठ अवगाहि ॥ याको चरित बिलोकहु जौंन । हमसों आइ कहेहु सब तौंन ॥ लखहु अमानुष जो तुम कर्म । हमसों आय कहेहु सो पर्म ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुनत भैमीके बचन यह केशिनी तहँ जाय । देखि बाहुक कर्म सिगरे भीमजा पँह आय ॥ दैव मानुष कर्म देखे जौंन ताके भूरि । तौन भैमीसों लगी सब कहन आनद पूरि ॥ केशिन्युवाच ॥ परम [illegible] आचार ताके हैं अमानुष सर्व । आजुलौं नहि लखो काहू औरमाह अखर्व ॥ देखि छोटो द्वार [illegible] जात नमत न तौंन । शीशमे नहि लगत है सो करत ताके गौंन ॥ जात ताक द्वार छाटो सो बडो है जात । अर्थ नृपऋतुपर्णके बहुमास शुचि अवदात ॥ भीमभूप पठाय दीन्हें

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पशुनके अतिनर्म। बिना सलिल सु कुम्भ पटए तहाँ रीते पर्म॥ लखत ताके भए घट ते सलिलसों सब पूर्ण।धोय बाहुक मांस राखो चुल्हिकापैं तूर्ण ॥मूटि भरि तृण लेइ रबिके कियो सन्मुख तौंन। बरण लागो तौंन तबही बिना पावक पौंन॥तौन अद्भुत देखि आई इहांआनदधाम।और अद्भुत लख तामे सुनहु सो अभिराम॥अग्निको अस्पर्श कीन्हें दहत हैं न उदार।वहति ताकी जितै इच्छा तितैको जलधार॥ और यह आश्चर्य्य देखो सुनहु भैमी तौन। हाथमे ले सुमन सो गहि मीजि डारत जौंन॥ भरत भूरि सुगन्धसौं सो धरत अधिक प्रकास। देखि आइ महत अद्भुत कहतिहौं तो पास॥ बृहद श्वउवाच॥ सुनो भैमी तास यह सब महत अद्भुत कर्म। जानि मनमे लियो आए नियत नल नृप पर्म ॥ देखि बाहुक रूप नलमे शङ्कमान अचैन । केशिनीसौं कहे अैसे मधुरसकरुणा बैन॥ जाहु पाय सुचित्त बाहुक पक्क कीन्हें जौंन। मास मेरे पास ल्यावहु कछू केशिनि तौंन॥ जायकै सो लखत बाहुक लियो मांस उठाय।मांस सो अतिऊष्ण दीन्हों भीमजाकों आय॥मास नलतें पचित बहुधा स्वाद जानति तास। खाय जानो सूतकों नलप्राप्त भो मतिरास ॥ व्यकल व्है कै धोय आनन परम सुन्दर हाथ। पढै दीन्हों सुतासुत तहँ केशिनीके साथ॥ इन्द्रसेन हि सहित भगिनी जानि आत्मज भूप। बेगि आय उठाय लीन्हों श्रवत नेत्र अनूप॥ सुरसुतोपम अङ्कमे लै भरे करुणा भूरि। लगे रोदन करण भूपति दुसहदुखसों पूरि॥ छोडि तिनकों लगें बाहुक कहन अैसे बैंन। केसिनी मम सुतन्ह सम ए पोत हैं छबिअैंन॥ बेर बेर सु तुम्हैं आवत दोखको अनुमान। करैंगे जन हम बिदेशी सुनहु हे सुखदान॥ *॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ देखि सर्ब बिकार नलको केशिनी सो बाम। जाय भैमी पास सो सब दियो कहि अभिराम ॥ सुनत दम यन्ती पठायो जननि पैं फिरि ताहि। भरी दुख यहिभाँति कहि नलको सुदर्शन चाहि ॥ हौं परी क्षित कियो बाहुककौं सु नल अनुमानि। एक शंङ्का रूपमे हौं चहति लीवें जानि॥ ताहि इतहि बोलाइअै कै जाउ हों ता पास । बिदित अबिदित तातसों सो देहु कहि मतिरास ॥ सुनत जननी जाय नृप पै कहो सो अनुरूप। अभिप्राय बिचारि ताको दियो आज्ञा भूप ॥ भूप आज्ञा पाय जननी बाहु कै बोलवाय । भीमजाके धामकों तब दियो ताहि पठाय॥ देखि कै नलभूप भैमीकों सदुःख बिचारि। शोक दुखसों भरे लागे बहन लोचन बारि॥ तथाबिधि लखि भूपनल कों भरी शोक उदार। भई दारुण दुःख सागरमाह मग्न अपार॥ धरे बसन कषाय जटिला मलिन रूप अचैंन। कहन बाहुकसों लगी यहिभाँति भैमी बैंन॥ पूर्व बाहुक [illegible] कहूँ धर्मज्ञ जाको नाम। सुप्त बनमे तजै बनिता पुरुष जो अभिराम॥ अनाग सश्रम [illegible] मोहित भारया बनमाँह। छोडि कै को जाय पुण्यश्लोक बिन नरनाँह॥ बाल्यवश [illegible]ाध ताके कियो कासो जोहि। भरी निद्रा बिपिनिमे जो गयो तजि कै मोहि॥ छेडि [illegible] बरी जाकों पूर्व व्है अनुरक्त॥ पतिब्रत मोहि पुत्रिणीको करै सो किमि त्यक्त ॥ [illegible] शाक्षिक देवतनके पास पकरो पानि।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० भरैं गो कहि सत्य सो तजि दयो का अनुमानि ॥ सुनत भैमीके बचन ए भरे शोक संताप। वहन नलक नेवते तब लगी धारा आप ॥ भ्रष्ट मेरो राज्य भो हम कियो जो तो त्याग। तौंन कलिकृत भयो भैमी सुनऊ सत्य सभाग॥ दुःखतें बनमांह जाको दियो हो तुम साप। दह्यमान सो बसत हो मम देहमे कलिपाप ॥ गयो मम व्यवसाय तपतें व्यकल निर्जित तौंन। दुखःकै सो अन्त व्है कलि पाप कै सो भौंन॥ मोहि तजि कलि गयो तब हम इहां आए बाम। अर्थ सुन्दरि रावरे नहि इहां हो कछुकाम॥ नहो नारी छोडि कै अनुरक्त पतिकों पर्म। वरो चाहति और पति तो सदृश लक्षित धर्म ॥ फिरत चऊदिशि दूत जेहां बसत भूप उदार। कहत भैमी कियो चाहति दूसरो भरतार ॥ सुनत सो ऋतुपर्ण आयो इहां त्वरित महान। सुनत यह नलवचन भैमी महा रुदन समान॥ जोरि अञ्जलि कन्य भयसों भरी बोली बैंन ॥ दमयंत्युवाच ॥ दोष शङ्का भूपमोमे योग्य तुमकों है न ॥ देवतनकों छोडि कै हम बरो तुमकों भूप। तुम्हे हेनरहेत पठए विप्र धर्मस्वरूप ॥ पद्य मेरे बचनको करि फिरे गावत तौंन ।भयो कोशल पुरीकों पर्णाद नामक जौंन ॥ जाय कै ऋतुपर्णके गृह तौंन गायो विप्रापाय कै प्रतिबाक्य ताको इहा आयो क्षिप्र॥ आदबेकों तुम्हें हम यह रचो भूप उपाय। एकदिनमे तुम्हें बिन को सकैगो इतआय ॥सकै बाहि तुरङ्गको शतएक योजन बीर। सत्य मै हिय धरनकी तब करति सपथ गम्भीर ॥ मनऊ तें जौं पायके ऋत करौंनेक बिचार । भूत साक्षी सदां गति तौ हरौ प्राण हमार॥ भूत साक्षी चरत जो रवि भुवनमाह उदार। हरौ मेरो प्राण जौं हम कियो पाप बिचार ॥ चन्द्रमा भूतस्थ जो यह फिरै साक्षि समान । हरौ मेरो प्राण जौं मम धरै किल्बिष ज्ञान॥ देवचय ए जगतजनके महत भूत अधार। कहौं ते सब सत्यकै अब तजौ मोहि उदार॥ सुनत ऐसें गगणगत यह बायु बोले बैन। पाप भैमी कियो नहि यह सत्य सुनु सति ऐंन॥ शील सिन्धु समान भैमी किए रक्षित धर्म। प्राप्त भैमीकों भए तुम तुम्हें भैमी पर्म ॥ छोडि शङ्का जाऊ भैमी पास हे नलभूप।कहत ऐसें गगणतें भइ सुमन वृष्टि अनूप ॥ बजन दुन्दुभि लगी नभसे बहन सुखद समीर।महत अद्भुत देखि नल नृप भरे मोद गँभीर॥रहित शङ्का खेचि भैमि हि लियो हिय सौं लाय। नागेश्वदत्त सु बस्त्र लीन्हो ओढि नृप सुखदाय॥ स्वर्ण करि नागेशको तब लहो अपनो रूप। लखो भैमी स्वस्वरूप सुलहों भर्ता भूप ॥ उच्च रोदन कियो हियसें लाय कै भर्तार। भूप लीन्हों गोदमे तब सुता सहित कुमार ॥ धरें मलिन स्वरूप भैमी हि लाय कै हिय भूप। बेर लौं ह्वै रहे सुस्थिर गोदमग्न अनूप ॥ जाय सब बृतान्त जननी कहो नृपसौं तौंन। सुनत सो नृप भीम आनदसों भरो हिय भौंन॥ भोर जब सुस्नान मङ्गल करहि गे सुखरूप। सहित दमयन्ती बिलोक हिये सु तब नलभूप ॥ व भैमी निशाभरि कहि विपिनिकों बृत्तान्त।अपुन अपनो समुझि फिरि फिरि भरे मोद नितान्त॥ मि[illegible]थेबध भूपति भीमजासों आय।भयो कारज सिद्धि सब तहँ बसे आनद पाय ॥ पाइ कै भर्तार भैमी [illegible]आनद पूर्ण। यथा सूखत धान जलधर आइ बर्षत तूर्ण॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

शोक तजि एहि भाँति भैमी विरहज्वर अपहाय। भई शोभित यथा राका शरद शशिको पाय॥ ७०

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिमानिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि दमयंतीनलसमागमवर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

भोर करि सुस्नान धरि बर बसन भूषण पर्म। गए भैमी सहित जेहाँ भीमनृपति सधर्म॥ कियो बन्दन ससुरको तब नृपति नल धृति धीर। गई भैमी पिता ढिग पद बन्दि मुदित गँभीर॥ भीम नृप निषधेशकों हिय लाय लीन्हो पर्म। पुत्रवत फिरि कियो पूजन यथाविहित सधर्म॥ कियो पूजन नृपतिको सह भीमजा नल भूप। हर्षसों सब नगरमे तब भयो शब्द अनूप॥ तथा लखि नल नृपतिकों जन भरे मोद तरङ्ग। सहित ध्वज पुर ससो ज्यौं शशि पाय क्षीरधि सङ्ग॥ सिक्त वीथी सुमन तोरण बँधे द्वारिहि द्वार। भए पूजित देवता जे नगर माह उदार॥ सुनो नृप ऋतुपर्ण बाहुक रूपहे नल भूप॥ मिले भैमीपास पायोमहत मोद अनूप॥ बोलि नलकों क्षमा मागो कोशलेशनरेश। कहो नल ऋतु पर्ण सों कुरु क्षमा बुद्धिनिवेश॥ सत्कार लहि ऋतुपर्ण ऐसे कहें नलसों बैन। भाग्य सों तुम लही दारा भीमजा छविऐन॥ अपराध हमसों भयो नहि कछु रावरो नलभूप। बसत हे अज्ञात मेरे धाममे सुखरूप॥ कछू जौं अपराध मोसों भयो होय सुजान। कीजिए सो क्षमा मोपैं कृपा करि मतिमान॥ कियो नहि अपराध मेरो तो कुबुद्धि बिशेश। किएहूँ नहि कोप मेरे क्षमाकरत नरेश॥ पूर्व हम तुम सखाहैं सम्बन्ध तुम सों भूप। प्रीति कीजै बसे हम तुम पास सुखित अनूप॥ बसत यह हय ज्ञान तो सम न्यास मेरे पास। देतहौं सो लीजिए सविधान नृप मतिरास॥ यहि भाँति कहि सो दई विद्या भूप नल अभिराम। तौन सो ऋतुपर्ण लीन्हो भरे मोद ललाम॥ देइकै सो अक्ष विद्या सरहस्य औ सविधान। और लेके सूत किय ऋतुपर्ण भूप पयान॥ भए जब ऋतुपर्ण तब नल भीमनृपके पास॥ बसे कुण्डिन नगरमे बहु दोस नहि मतिरास॥ * ॥ बृहदश्वउवाच॥ * ॥ भीम नृप सों बिदा ह्वै रहि मास भरि नल भूप। चले आप्त सहायसों जहँ निषध देश अनूप॥ एक रथ बर द्विरद घोडश तुरँग सबल पचास। छ शत प्यादे सङ्ग लीन्हे सूर जे बलरास॥ करत कम्पित भूमिकों अति बेगसों महँ जाय। कहन पुष्कर सों लगे यहि भाँति बचन सुनाथ॥ करऊ हमसों द्यूत आए जोरि बित्त अखर्ब। धरत भैमी सहित पण धन जौन मेरे सर्ब॥ यहै है सन्या समे तो राज्य प्राप्ति बिशुद्धि। फेरि करिए द्यूतकों यह नियत मेरा बुद्धि॥ एक पणकौं धरैं हम तुम प्राण जो अभिराम। जीति याकों लीजिए सरबस्व राज्य ललाम॥ फेरि चाहै द्यूत तासों द्यूत करिबो धर्म। नहीं चाहत द्यूत तौ करु युद्ध द्यूत सु पर्म॥ शान्ति लेहैं युद्ध करि हम कै सु तुम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० मतिभान। वंश भोज्य जो राज्य जैसें मिलै कीजै तौंन ॥ करऊ पुष्कर दोयमें एकमाह बुद्धि विचारि। अब द्यूतहि कीजिए कै लरऊ तुम धनुधारि ॥ बचन नलके सुनत पुष्कर बिहसि दर्मतिअैंन। आपनी जय जानि निश्चय कहन लागो बैंन ॥ भाग्यतें मम बित्त ल्याए जोरिकै तुम पीन। भाग्यतैं दुःकर्म भैमी को भयो सब छीन ॥ भाग्यतें हम लेत तुमकों जीति आजु सदार। जीतिके यहि बित्तसों रचि अलङ्कार उदार ॥ तौंन भूषण पहिरि भैमी रही मेरे साथ। सदा जैसे अप्सरा लहि स्वर्गमे सुरनाथ ॥ नित्य तुम्हरो स्मरणहे हम करत नैषध भूप। द्यूतमे मम प्रीति रूचत न और सङ्ग अनूप ॥ जीति तुमकों सहित भैमी भरौंगो मनकाम। होउँगो कृत कृत्य भैमी बसति मम हियधाम ॥ सुनत अैसे बचन ताके नैषधेश विरुद्ध। खड्गसों शिर चहो काटो कोप करि अति उद्ध ॥ विहँसि नल करि अरुण चख धरि बचन बोले तेह। धरऊ पण करि द्यूत हमसां जीतिकै सब लेह ॥ द्यूत फेरि प्रवृत्त भो नलनृपति पुष्कर साथ। एक पणको धारि जीतो ताहि नैषधनाथ ॥ जीतिके सरबस ताको भूप नल सह प्राण। कहन पुष्करसों लगे इमि बचन बिहँसि महान ॥ बिगत कण्टक मोद मय यह राज्य मम सुखधाम। नहो देखन योग्य पुष्कर तुम्हे भैमी बाम ॥ भए मेरे दास पुष्कर सहित तुम परिचार। हमै जीतन योग्य तुम कृत कर्मसों न उदार ॥ कियो कलि यह कर्म पुष्कर परो तुमहि न जानि। नही तुमपैं धरत हम यह दोष पर कृत मानि ॥ यथासुख तुम जाय जीवऊ तजत हम तो प्रान। जीतिकै धन अंश अपनो देत तोहि महान ॥ यथा मेरो प्रीति तुमपैं सुनऊ पुष्कर वीर। जियऊ भ्राता वर्ष शतलों भरे मोद गंभीर ॥ शान्त करि यहि भाँति ताकों भूप नल सुखदाय। पठै दीन्हों स्वपुरकों हिय मांहि फिरि फिरि लाय ॥ शान्त ह्वै यहि भाँति नलसों कहे पुष्कर बैंन। जोरि अञ्जलि वन्दना करि भरो चितमें चैंन ॥ कीर्त्ति अक्षय रहै जीवऊ वर्ष अयुत प्रमान। देत मेरे प्राणकों जो भयो हारि सुजान ॥ सत्कार लहिकै भूपसों तहँ मास भरि करि बास। गयो पुष्कर वास अपने स्वजन सह सुखरास ॥ बिदा करिकै पुष्करहि नल भूप सुषमाधाम। पुरी माह प्रवेश कीन्हों दोष लहि अभिराम ॥ पुरीमे पुरजननको किय समाधान नरेश। पौरजन सह आनन्द लहि भए पुलकित वेश ॥ कहन फिरि फिरि लगे पुरजन सह अमात्य अनूप। भए हम निश्चित आजु बिलोकि तुमकों भूप ॥ बिगत बलि भय स्वर्गमे फिरि पाइकै मघवान। लगे सेवन [illegible] तथा देव समान ॥ लगे पुरजन शान्त उत्सव करण जब सुखरूप। पठै सेना महत [illegible] आयो भूप ॥ भीमनृप सत्कार करिकै सुताको अभिराम। बिदा कीन्हों पुत्र कन्या [illegible] ॥ लखे दमयन्ती सहित इमि भूपनल निषधेश। सची सहित जयन्त ज्यों सुर पुरी बाद सुरेश ॥ राज्य शासन कियो करिकै यज्ञ बिबिधि बिधान। तथा तुमहू लहौगे नृपधर्म राज्य महान ॥ दुःख अैसो लह्यो नलनृप द्यूत करि सह बाम। फेरि अपनो राज्य पायो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आयकै अभिराम ॥ सहित भ्रातन द्रौपदी सह बिप्रगण तपधाम। धर्म चिन्तन करतहौ तुम ६०५०
बिपिनिमे अभिराम ॥ देत भोजन द्विजनकों बज्र धर्मनृपति समर्थ। रम्य काम्यक गहनमे बसि
रुदन करिबो व्यर्थ ॥ ॥ मंत्र ॥ ॥ कर्कोटकस्य नागस्य दमयंत्या नलस्यच।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्त्तनं कलिनाशनं ॥ ॥

भूपहै इतिहास यह कलिनाश कारक पर्म। तिन्है करिहै समाधान जे सदृश तो नृपधर्म ॥ जानि
चलता बिभवकी सबभांति सों बर भूप। नही ताके उदय क्षयमे होत शोच अनूप ॥शोच करज्ञ
न भूप यह इतिहास सुनि धरि धीर। दुःखमे नहि तुम्है करिबो योग्य खेद गँभीर॥ बिषम बिधिके
अएँ पौरुष होत अफल सुजान। नही खेदित करत आत्मा जिन्हैं सत्व प्रधान ॥ चरित जे नल
नृपतिको यह पढैगे अभिराम। नहि अलक्ष्मी जाय कबहूँ निकट तिनके धाम ॥ सुनहिगे ते
अर्थकों लहि होहिगे नर धन्य। पुत्र परम पउत्र पशुगण पाइहैं अनगन्य ॥ होय गे आरोग्य तापैं
करैंगे सब प्रीति। आइहै नहि निकट तिनके आधि व्याधिज भीति ॥ द्यूतके आव्हानको भय
भयो तुमको जौंन। अक्षज्ञ हम हैं धर्मनृप भय नाशिहैं सब तौंन ॥ अक्षको हम हृदय जानत
सबिधि सुनिए भूप। देत है हम तौंन तुमकों कै प्रसन्न अनूप ॥ ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ ॥
धर्मनृप बृहदश्व सों तब कहे अैसें वैन। अक्ष हृदय सो चहत तुमसों जानिबैं तपअैन ॥ अक्ष
हृदय बतायकै नृपधर्मकों अभिराम। बिदा व्है बृहदश्व ऋषि तब गए अपने धाम ॥ सुनो काहूँ
बिप्रसों नृपधर्म पारथ कर्म। बायु भक्षण करि करत तप उग्र अतिशय पर्म ॥ तीर्थयात्रा करत
आए बिप्र जे तपधाम। पार्थको तप कहेा तिन नृपधर्म सेा अभिराम ॥ शोच करिकै धर्मनृप
सुनि उग्रतप अति काय। बिप्र जे सरबज्ञ तिनसों लगे बूझन जाय ॥ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे
वनपर्वणि पार्थतपश्चरणवर्णनोनाम द्वादशोऽध्यायः ॥ नलोपाख्यानंसमाप्तं ॥ ॥

॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ ॥ जयकरीछन्द ॥ ॥

भगवन काम्यक बनते पार्थ। गए चाहि जब तप मय स्वार्थ॥ पाण्डव पार्थ बिना का कर्म। कियो
कहेा सेा बिप्र सधर्म ॥ भ्रातनकों पारथ गति पर्म। आदित्य माह जिमि बिष्णु सुमर्म ॥बिना ताहि
कैसें नृपधर्म। बनमे रहे कौन करि कर्म ॥ बैशम्पायनउवाच॥गए पार्थ काम्यकते यथा भए दुखित
सब पाण्डव सथा ॥ बिना सूत्र जिमि मुकुताहार। ज्यों पत्नी बिनुपत्न उदार ॥ ब्राह्मणार्थ मृग
याकों जात शुद्धबाणसों करि मृगघात॥यज्ञारथ बिप्रन्हकों देत तहां बसत उत्कण्ठित चेत॥जिष्णु
बिना सब रहत मलान कृष्णा शोच करति अति मान॥पार्थ बिना कृष्णा हत चैंन। कहे युधिष्ठिर
सों इमि बैंन॥ सहस बाज्ञ अर्जुन सम बीर। है द्विबाज्ञ अर्जुन रणधीर ॥ ताहि बिना सुनिए

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० नृपधर्म। हमैं न यह बन लागत पर्म ॥ ताहि बिना यह भूमि महान। हम देखतिहैं शून्य समान॥ नीलाम्बुज सम सुन्दर काय। चलत मत्तगज सम सुखदाय ॥ बारिजाक्ष ताकों बिन जोहि। काम्यक बन यह रुचत न मोहि॥ अशनिस्वन सम धनुटङ्कार। तास सुनें बिन भूप उदार॥नहीं लहत मेरो मन शर्णाकरत धनञ्जयको सुस्मर्ण॥सुनि बिलाप कृष्णाको बीर।बोले भीमसेन गम्भीर॥ भीमसेन उबाच ॥ कहति प्रीतिकर सुन्दरि बैंन । अमृतपानसम आनँदऐंन ॥ पीन बाऊ परिघो पम जास।भौबीं धर्षण सह छबिरास॥ताहि बिना यह जगत महान।लगत सूर बिन गगण समान॥ जाको करि आश्रय पांचाल। डरत नहीं रण माह बिशाल॥ हम लहि जास बाहु आधार। जीते जानत शत्रु उदार॥ बिना एक फाल्गुण बर बीर। धृति न लहत बन माह गभीर॥ नकुल पाण्डु नन्दन सतिऐंन। कहे बाष्पपूरित इमि बैंन॥ नकुलउबाच॥ रणमें जास अमानुष कर्म। बरणन करत देवता पर्म॥ ताहि बिना बनमें रति कौंन । उत्तरदिशिकों करि जेहि गौंन॥ रणमें जीति प्रबल गन्धर्ब। ल्याए दिव्य अनेकन्ह अर्ब॥ दिए धर्मनृपकों जेहि ल्याय।राज सूयमें हय समुदाय॥ भीमाबरज भीमकरकर्म। तेहि बिना लगत न काम्यक पर्म ॥ * ॥ सहदेवउबाच ॥ * ॥ धन कन्या रणमें जेहि जीति। नृपकों दियो अखर्ब सप्रीति॥ जीति बृष्णिवंशी बर काय। हरी सुभद्रा हरि मत पाय ॥ शून्य जिष्णु को आसन देखि। मन न लहत संतोष बिशेखि ॥ यहि बनतें बरु भलो बिदेश। बिना जिष्णु नहि रुचत नरेश॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ धनञ्जयकों उत्सुक बीर। सुनि भ्रातन्हके बचन गँभीर॥ कृष्णा सहित युधिष्ठिर भूप। भए शोच करि बिमन स्वरूप॥ नारद मुनि आवत तपधाम। देखो धर्मनृपति अभिराम॥ भ्रातन्ह सह चलि आगें ल्याय। पूजन कियो सबिधि सुखदाय ॥ पूजा तौंन लेइ अभिराम। आश्वासन कीन्हों तपधाम॥ कहोधर्म नृपसों सुनि बैंन। कहऊ सो देहिँ तुम्हैं मतिऐंन ॥ भ्रातन सह करिकै परणाम। कहो धर्मनृप हे तपधाम॥ तुम्है प्रश्न भए सब कार्य। पूर्ण भए मानत हम आर्य॥ जो हम कृपा योग्य तप ऐंन। हरु संशय मम कहि सित बैन॥ करत जे भूमिप्रदक्षिण गौंन। तीर्थन सह तत्पर नर जौंन॥ ताको फल सब सहित सु धर्म। कहिए तौंन महा मुनि पर्म॥ ॥ नारदउबाच॥ ॥ सुनऊँ स्वस्थ व्है भूपति तौंन। कहो पुलस्त्य भीष्मसों जौंन॥ भीष्म पूर्व सुरसरिता तीर। रहे पित्र व्रतधारि गँभीर॥ मुनिन सहित जहँ गङ्गा द्वार। रहे बसत तहँ भीष्म उदार॥देव पित्र ऋषि तर्पण तत्र।करत रहे भीषम नृप यत्र॥ तँह पुलस्त्यऋषि अति तपधाम। आइ गए कबहूँ अभिराम॥ तिन्हैं देखिकै भीषम भूप। भरे हर्षसों अमित अनूप॥ पूजन करि मुनिको अभिराम॥ कहो अनघ मै भयो ललाम॥ अञ्जलि जोरि रहे करि मौन। देखि प्रसन्न भए तपभौंन॥ ॥ * ॥ तुलस्त्यउबाच॥ * ॥ देखि सत्यसतो समदम धीर। हम प्रसन्न अति भए गँभीर॥ ऐसो पित्र भक्तिलो देखि। हम प्रसन्न तुम माह बिशेखि॥ हम अमोघ दर्शी गाङ्गेय। कहऊ जो तुम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हमकों सो देय ॥ कहउ जौन तुम भीषम आम । हम ताके दाता अभिराम ॥ भीष्मउवाच ॥ ब०प०
तुम्हैं प्रसन्न भए तपधाम । जानत सिद्धि भए सब काम ॥ जानत कृपा योग्य जौं मोहि । संशय
कहत सो हरिवे तोहि ॥ है मुनि कछु मेरे हिय गेह । तीर्थनमाह धर्म सन्देह ॥ तौंन सुनो चाहत
तपधाम । कहऊ सविस्तरसों अभिराम ॥ क्षितिको करत प्रदक्षिण गौंन । अमर समान परम
नर जौंन ॥ ताकों कहा होत फल धर्म । कहिए तौंन महामुनि पर्म ॥ * ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ * ॥
करि एकायमन सुनो सु तौंन । कहैं ऋषिन्हको है पथ जौंन ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥

हाथ पाय मन स्ववश है जे विद्या तपधाम । कीर्त्तिमान ते तीर्थको फल पावत अभिराम ॥
लेत प्रतिग्रह जे नहीं उदरपूर्तिसों तुष्ट । अहङ्कारसों रहित जे लहत तीर्थफल पुष्ट ॥
दम्भादिकसों हीन जो कार्य्यारम्भ न जाहि । लघ्वाहार जे होत नर मिलत तीर्थफल ताहि ॥
मुक्त पापतें क्रोध तजि होत जितेंद्री जौंन । सत्यशील दृढव्रत लहत भीष्म तीर्थफल तौंन ॥
ऋषिन्ह बिबिधि बिधि नख कहे देवविषय अभिराम। यथातथ्य तिनको मिलतफलइतउतदुऊधाम॥
नहि ते सक्य दरिद्रके प्राप्त होनकों तौंन । सामग्री ताकी बऊत मखबिस्तरकी जौंन ॥
करिबे योग्य सो नृपति कै कै समृद्ध जन जौंन । अर्थशून्य निर्जन नही सकै यज्ञ करि तौंन॥
करिबे सक्य दरिद्रके तुल्य यज्ञफल सर्व । हे भीषम हम कहत हैं सो विधि सुनऊ अखर्व ॥
जौंन गुह्य मत ऋषिणको कहत सुनऊँ मतिधाम । तीर्थ गमन है यज्ञतें पुण्यद अति अभिराम ॥
तीन दिवस उपवास करि जोन तीर्थमे जाय। देत हेम गो जे न ते धरत दरिद्री काय ॥
अग्निष्टोमादिक करत यज्ञ भूरि दै दान । तीर्थगमनफल पुण्यके ते नहि होत समान ॥
मनुज लोकमे विधि रचित तीर्थ लोक बिख्यात। पुष्कर नामक बसत जँह महाभाग अवदात ॥
तँह दश कोटि सहस्र जे तीर्थ पुण्यके धाम । जात त्रिसंध्यमे तहाँ सुनु कुरुकुल अभिराम ॥
आदित्य साध्य वसु मरुद्गण रुद्राप्सर गन्धर्व । नित्य जात पुष्कर निकट भरे मोदसों सर्व ॥
तेहि तीरथमे पितामह कमलासन तपरास । भरे प्रीतिमों करत हैं नित्य निरन्तर बास ॥
जेहि पुष्करमे देव ऋषि तप करि पूर्व महान । पाय सिद्धि सब पुण्यतें युक्त भए अतिमान ॥
देव पितर अर्चन करत करि कै पुष्कर स्नान। अश्वमेधतें दश गुणित पावत पुण्य महान॥
पुष्करके ढिग एक द्विजकों जो भोजन देत । यथाशक्ति दुऊँलोकमे सो मुद लहत सनेत ॥
पुष्करमे सुस्नानकों करत जाय नर जौंन । सो न लहत है योनिकों स्वर्ग बास करि तौंन ॥
नर कार्तिककी पूर्णिमामे जे पुष्कर न्हात । महापुण्यकों पाय सो ब्रह्मलोककों जात ॥
दुऊसंध्यामे करत जो पुष्कर स्नान सुजान । सफल होत ताकों सुनो सर्वतीर्थको स्नान ॥
नर नारी जो जन्म भरि करत पापको पास । पुष्करमे सु स्नानकेकरत होत सो नाश ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सर्वसुरनके आदि ज्यों मधुसूदन भगवान। सबतीर्थनके आदि ज्यो पुष्करहै सुखदान॥
नियत व्रत द्वादश बरष रहै जो पुष्कर पास। सर्व यज्ञकों लहत सो ब्रह्मलोकको बास॥
अग्निहोत्र शतवर्षलों किएँ नियत फल जौन। मिलत एक बसि कार्तिकी पुष्करके ढिग तौन॥
है पुष्कर त्रय पापहर आदि सिद्ध अतिमान। नदी त्रिधातामे मिलो सरस्वती सुखदान॥
दुष्कर पुष्करको गमन दुष्कर पुष्कर बास। करिबो तहँ तप दानको है दुष्कर मतिरास॥
तहँते जम्बूमार्गकों जाय रहै निशि पाँच। अश्वमेधके पुण्यकों तौन लहै नर साँच॥
होय पूत दुर्गति नही लहै सिद्धिकों पाय। चलै तहाँते सो परम तन्दुलिकाश्रम जाय॥
दुर्गति लहै न करै सो ब्रह्मलोकमे बास। फिरि अगस्त्य सर लहि करै देवार्चन मतिरास॥
फलाहार रहि तीनिनिशि होय कुमार समान। फेरि कण्वके जाय सो आश्रमकों मतिमान॥
धर्मारण्य सो आय है भरो धर्म अतिमान। तामें करत प्रवेश तेहि तजै पाप बलवान॥
यजातिपत्तन जाय सो अश्वमेध फलपाय। महाकालकों फेरि सो नियता सन व्है जाय॥
अश्वमेध फल लहै करि कोटितीर्थमे स्नान। भद्र नाग वट सर उमापतिको जो थान महान॥
तहां जाय करि गोसहस्र बितरणको फल पाय। शङ्करको गण होय सो अन्तकालमे जाय॥
देव पितृ तर्पण करै करि रेवामे स्नान। अग्निष्टोम सु यज्ञको फल पावै सुखदान॥
दक्षिणाब्धिकों जाय ऋषि ब्रह्मचर्य्यव्रत पर्म। अग्निहोत्र मखको लहै चढि बिमानयैं धर्म॥
सरिता चर्मन्वतीमे स्नान करै फिरि जाय। रन्तिदेव पूजन करै अग्निहोत्रफल पाय॥
अर्बुद गिरि हिमवानसुत ताकों फिरि चलि जाय। पूर्व धराकों बिवर जे मूदि रहो अतिकाय॥
आश्रम तहाँ बशिष्टको एकनिशा करि बास। गो सहस्रके दानको पुण्य लहै मतिरास॥
पिङ्गातीर्थ स्नान करि ब्रह्मचर्य्य धरि बीर। कपिला शतके दानको सो फल लहै गँभीर॥
तब चलि जाय प्रभासको तीर्थ जो पुण्य प्रकास। नित्य रहत जाके निकट तेजस भरो ऊतास॥
स्नान करत तेहि तीर्थमे शुचिमत व्है नर जौन। अग्निहोत्रमखफल लहत तीनि निशामे तौन॥
सरस्वती अरु सिन्धुको जँहँ सङ्गम तहँ जाय। लहै स्वर्ग गोसहसके बितरणको फल पाय॥
बरदान तीर्थकों जाय चलि फिरि सो नर मतिमान। दुर्वासा ऋषि बिष्णुकों दियो जहाँ बरदान॥
न्हाय तीर्थ बरदानमे गो सहस्र फल पाय। पुरी सो द्वारावतीकों नियतासन फिरि जाय॥
पिण्डारकमे स्नान करि सुबरन लहै महान। जामे लक्षित होतहै लक्षण पदम समान॥
देखि परति अवहूँ तहाँ मुद्रा अद्भुत रूप। जामे पदम त्रिशूलके अङ्क लखत कुरुभूप॥
सङ्गम सागर सिन्धुको लहि शङ्करके पास। तर्पण करि सु स्नान नर लहत वरुणपुर बास॥
शङ्कु कर्ण शिवको करै पूजन जो नरभूप। अश्वमेध दशको लहै सो फल परम अनूप॥
दमीनामके तीर्थमे ब्रह्मादिक सुर सर्व। शङ्करको सेवन करत तहँ करि स्नान अखर्व॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सबजन्मके पापसों छूटि जात नर तौंन। प्राप्त होत है ताहि फल अश्वमेधको जान ॥ ब०प०
बसुधारा जहँ तीर्थ है जाय तहाते तौंन। जातमात्र ताकों मिलै अश्वमेध फल जौंन ॥
तहाँ स्नान करि कै करैं तर्पण सबिधि सुजान। बिष्णुलोककों जाय सो पावै मोद महान ॥
तेहि सम तहँ है बसुन्हको तीरथ सुनऊ सुनीति। स्नान पान करि कै तहाँ लहै बसुन्हकी प्रीति॥
सिंधूत्तम बर तीर्थमें करै जो स्नान सुधर्म। पाप जाय सब छूटि सो काञ्चन पावै पर्म ॥
भद्रतुङ्गकों जाय जो शुद्ध शील मतिरास। ब्रह्मलोकमें जाय कै करै तौंन नर बास ॥
फिरि कुमारिकातीर्थकों जाय जो सेवत सिद्ध। तहाँ स्नान करि लहत नर स्वर्गलोक अति बृद्ध ॥
तहाँ रेणुकातीर्थ है जाकों सेवत सिद्ध। तहाँ स्नान करि होय द्विज अग्निके सदृश समृद्ध ॥
फेरि पञ्चनदतीर्थकों नियतासन करि गौंन। पञ्चयज्ञके फल लहै क्रमसों बरने जौंन ॥
भीमाकों नर जाय सो योनिकुण्डमें न्हाय। देवीपुत्र सो होत है कुण्डल तप्त हि पाय ॥
जाय करि ओंकुण्डकों त्रिभुवनमाह प्रसिद्ध। करि प्रणाम बिधिकों लहै गोसहस्रफल बृद्ध ॥
बिमल तीर्थकों जाय नर भरो पुण्य अबदात। जामें कञ्चन रजतके अबलों मत्स्य लखात ॥
तहाँ स्नान करि जाय सो इन्द्रलोककों त्रिप्र। सर्बपापसों मुक्त करि आत्मा आपु पबित्र ॥
पितृ देव तर्पण करै जाय बितस्तामाँह। बाजपेयको फल लहैं तौंन सुनऊ नरनाह ॥
बितस्त नाम काश्मीरमें है तक्षकको भौंन। बाजपेयको देत फल न्हात पापहर तौंन ॥
बडबाकों नर जाय सो तीर्थ जो त्रिभुवन ख्यात। संध्याकों सु स्नान करि यथाबिहित अवदात ॥
पावकको अर्पण करै यथाशक्ति परमान्न। अक्षय दान सो पितृनकों होत तोक महतान्न ॥
पितर देव ऋषि अप्सरा गुह्यक अरु गन्धर्ब। सिद्ध यक्ष किन्नर असुर बिद्याधर नर सर्ब ॥
रुद्र सु ब्रह्मादिक अमर तहाँ जाय अभिराम। दिव्य बर्ष सहस्रकी लैकै नियत ललाम ॥
करत प्रसंङ्ग सु बिप्रुकों जलमाही चरु डारि। सातबार ऋग्बेदसों सुस्तुति करत बिचारि ॥
बिभव देत बसु गुणित सब केशव तिन्हैं कृपाल। यथाभिलाषित कामना सोऊ देत बिशाल ॥
अन्तरध्यान सुहरि तेहाँ बिद्युत ज्यों घनमाहँ ॥ नाम सप्तचरु ख्यात है तीर्थ तास नरनाह ॥
राजसूय गोदानतें अश्वमेधतें तौंन। हैं सहस्रगुण देत चरु सप्तर्चिषमें जौंन ॥
व्है निवृत तहँतें चलैं ब्रह्मापदकों जाय। तहँ शिवको पूजन करै अश्वमेध फल पाय ॥
फेरि जाय मणिमन्तकों ब्रह्मचर्य्य धरि जौंन। अग्निष्टोमको फल लहै एकरात्रि बशितोन ॥
जाय देबिकाकों जहाँ शूलपाणिको धाम। बिप्रनकी उतपत्यको स्थान सुनत अभिराम॥
तहाँ स्नान करि शम्भुको अर्चन करै सुजान। करै निवेदन चरु तहाँ सो नर शक्ति प्रमान ॥
दोयकोश बिस्तार है आयत योजन पञ्च। तहाँ देबिकामें बसत तजि ऋषि देव प्रपञ्च ॥
जाय तहाँते तीर्थ बर दीर्घसत्र है जत्र। ब्रह्मादिक सुर करत हैं दीर्घ सत्रकों तत्र ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब॰प॰ जातमात्र ही दीर्घ श्रवनसे सुनऊ युधिष्ठिर भूप। राजसूय अरु अश्वमेधको कल फल मिलै अनूप॥
तहँतें विनशनतीर्थकों नियतासन व्है जाय। मेरुपृष्ठपर सरस्वती गुप्त वहति जहँ आय॥
चमसोद्भेद शिवोद्भद अरु नागोद्भदहि जाय। अग्निष्टोमको फल लहै चमसोद्भद अन्हाय॥
शिवोद्भदमे स्नान करि गो सहस्र फल लेय। नागोद्भदसो स्नानतें नागलोककों देय॥
शशयानतीर्थमे जाय करि स्नान धरै शशिरूप। गोसहस्रके दानको कल फल लहै अनूप॥
कुमारकोटिमे स्नान करि अरचै देव कुमार। अयुतगायको फल लहै करै सकुल उद्धार॥
रुद्रकोटिकों जाय कै स्नान जो करै उदार। अश्वमेधकों फल लहै करै सुकुल उद्धार॥
सरस्वतीसङ्गम जहाँ तहाँ जाय कै भूप। ब्रह्मलोक पावै परम करि सुस्नान अनूप॥
अत्र समाप्त कियो ऋषिण तहाँ तीर्थ अवसान। गोसहस्रको दान फल तहाँ लहै मतिमान॥
कुरुक्षेत्रको जाय तव जाको दर्शन पाय। पाप अनेकन जन्मको सञ्चित सो तजि जाय॥
कुरुक्षेत्रकों जाँउ मै कुरुक्षेत्रमे वास। करौं कहत ता मनुजको पाप महत है नास॥
कुरुक्षेत्रकी धूरि उडि जाकों परशत जाय। तौन परम गतिकों लहै पाप पुञ्ज जरि जाय॥
सरस्वती है याम्यदिशि जाके अति अभिराम। दृषद्वती उत्तर वहति कुरुक्षेत्रसो आम॥
तहाँ रहत हैं जीव जे बसत स्वर्गमे तौन। सरस्वतीके निकटमे रहत सास भरि जौन॥
ब्रह्मादिक सब देव तहँ आवत हैं अवदात। स्नान करत ताको मनुज ब्रह्मलोककों जात॥
राजसूय अश्वमेधको फल पावत अभिराम। द्वारपाल अर्चन करै तेहा सङ्कण नाम॥
सतत नाम जो विष्णुको स्थान तहाँकों जाय। अश्वमेधको फल लहै स्नान तहाँको पाय॥
पारिप्लव जो तीर्थ है जाय तहाँकों जौन। अग्निष्टोमको फल लहै तीनिराचिमे तौन॥
पृथिवी तीर्थ हि जाय सो गोसहस्र फल लेय। जाय फेरि सालूकिनी तीर्थ जौन सुखदेय॥
अश्वमेध दशको लहै फल तहँ करि सुस्नान। सर्व देविकातीर्थकों तहँते जाय सुजान॥
अग्निष्टोमको फल लहै नागलोकको वास। जहाँ तरण्डक द्वारपाल हैं तहाँ जाय मतिरास॥
गोसहस्रको फल लहैं पूजि तरण्डक भूप। जाय पञ्चनदतीर्थकों नियतासन सुविरूप॥
कोटितीर्थमे स्नान करि अश्वमेध फल पाय। आश्विनतीर्थ स्नान करि रूपवान व्है जाय॥
फेरि जाय बाराहको तीर्थ जहाँ अतिमान। अग्निष्टोमको फल लहै तेहाँ करि सुस्नान॥
फेरि जयन्ती पाय सो सोमतीर्थकों जाय। स्नान तहां करि फल लहै राजसूय सुखदाय॥
एकहंसमे स्नान करि गोसहस्र फल पाय। पद्मासन सो होत है ब्रह्मलोकमे जाय॥
जाय मञ्जुवटतीर्थकों सो शिवको सुस्थान। तीनिराचि बसि कै लहै गाणपत्य सुखदान॥
तहां यक्षिणीतीर्थ है त्रिभुवनमे विख्यात। तहां स्नान करि कै लहै सर्वकाम अवदात॥
कुरुक्षेत्रको द्वारसो मिलै प्रदक्षिणमाह। तौन सु पुष्करतीर्थ है न्हाय तहां नरनाह॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

परशुराम पुष्कर तहां स्थापन कीन्हों ल्याय । होय तहां कृतकृत्य नर अश्वमेधफल पाय ॥ ब०प०
जाय तहां जे रामके रचित तीर्थ ह्रद रूप । हनि क्षत्रिएके रुधिर तें भरे जे परम अनूप ॥
पितरन्हको तर्पण किथो तीन पञ्च ह्रद माह । पितर प्रीति करि रामसों यो बोले नरनाह ॥
पितर उचुः । हैं प्रसन्न हम राम अति तुमपैं हेबलभौन। विक्रमतें अरुपिट भक्तितें मागऊ वांछितजौन॥
यह सुनि पितरन्हके वचन बोले साञ्जलि राम। व्है प्रसन्न जौन करत हौ कृपा कृपाके धाम ॥
तौ मेरो यह पूर्व तप रहौं यथास्थित तौन । होय क्रोधबस हम किथो क्षत्रिएको वध जौन ॥
तो प्रताप तें पितर सो छोडैं मोकों पाप । तीर्थ भूत ए होहि ह्रद पुण्यद पूरित आप ॥
राम वचन यहि भांतिके सुनिकै पितर ललाम । कहे तथास्तु कृपा सहित गगण देशतें आम ॥
जो ह्रदमे जो स्नान करि करिहै तर्पण राम । पितर देहि गे कृपा करि तिन्ह सकल मनकाम ॥
ऐसे बर दै रामकों कृपा भरे सब पित्र । अन्तरध्यान भए तहां ज्यों घनमाह सवित्र ॥
भए राम ह्रद भांति यहि तिनमे करै जो स्नान । पूजि रामकों लहै सो सुबरण बऊत सुजान ॥
बंशमूल बर तीर्थमे स्नान करै नर जौन । देह शुद्धि लहि जायगो परम लोककों तौन ॥
लोकोद्धारण तीर्थमे करिहै जो सुस्नान । लोक आपने करै गे सो उद्धार सुजान ॥
स्नान करै श्रीतीर्थमे जो नर जाय ललाम । देव पित्रकों अर्चिकै लहै सो श्री अभिराम ॥
करै जो कपिलातीर्थमे स्नान जायकै पर्म । लहै सो कपिला सहसके वितरणको वर धर्म ॥
देव पितर अर्चन करै जाय धारि उपवास । सूर्य तीर्थमे लहै सो सूर्य लोकको वास ॥
रुद्रभवन बर तीर्थमे जाय करै सु स्नान । गो सहस्रके दानको फल पावै अति मान ॥
जाय शङ्खिनी तीर्थमे स्नान करै जो भूप । सो देवीको तीर्थ है पावै रूप अनूप ॥
ब्रह्मावर्त सु तीर्थकों तह ते नर चलिजाय । तहां स्नानकरि ब्रह्मलोकको जाय परम गतिपाय ॥
जाय सुतीर्थकको जहां देव पितरको वास । तहा स्नान करिकै लहै पित्रलोक सुखरास ॥
काशीश्वरको तीर्थ है अम्बुमतीमे जौन । गौन सु तीर्थक स्नान करि करै ब्रह्मपुर गौन ॥
माढतीर्थ सो है तहां करै जो तहँ सु स्नान । प्रजा बृद्धि सह श्री लहै परम परम सुखदान ॥
सीतावनमे तीर्थ त्रय तहँ करि गमन बिबेक । तिन्हमे कीन्हें स्नान नृप पाप रहत नहि नेक ॥
इन तीर्थन्हमे जाय नर स्नान करत हैं जौन । परम पुण्य लहिकै करत स्वर्ग लोकको गौन ॥
स्वाबित्लोमा यह परम तीर्थ तहां जो जाय । स्नान करत तन त्यागि सो स्वर्गलोककों पाय ॥
दशाश्वमेधिक तीर्थमे स्नान करत नर जौन । अन्तसमै तन त्यागिकै लहत परम गति तौन ॥
मानुष तीरथ जाय जहँ शरहत मृग करि गौन। तेहि शरमे गिरिकै लहो मानुषको तन तौन ॥
ब्रह्मचर्य व्रत धारि तहँ स्नान करै नर जाय । लहै मोद छुटि पायसों स्वर्गलोककों पाय ।
मानुषके पूरब दिशा कोश एक पर ह्रद । नदी आपगा नाम है जाकों सेवत सिद्ध ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० श्यामकाम्र तहँ बिप्रकों भोजन एक कराय । कोटि बिप्र भोजन जनित तौन तहां फल पाय ॥
देव पितर अर्चन करै स्नान तहां करि तौन । एकरात्रि रहिबो लहै अग्निष्टोम फल जौंन ॥
ब्रह्मोदुम्बर तीर्थकों जाय जो बिधिको स्थान । तहां सप्तऋषि कुण्डमे करि बिधिवत सु स्नान ॥
केदार कपिलके तीर्थमे शुचि करिकै सो काय । सर्व पापसों मुक्त व्है ब्रह्मलोकको जाय ॥
जाय कपिष्टल तीर्थकों नाम तास केदार । अन्तरध्यान सु सिद्धिकों पावैं तहां उदार ॥
जाय सो शङ्कर तीर्थको कृष्ण चतुर्दशि पाय । यथा बिहित पूजन करै शङ्करको सुखदाय ॥
सर्व कामकों पाय सो करै स्वर्गमे बास । तीनिकोटि सब तीर्थ है बसत जहा सर बास ॥
रुद्रकोटिके कूपमे कृदमे परम अनूप । ईला नामक तीर्थ है तहा सुनऊ कुरु भूप ॥
देव पितर अर्चन करत स्नान तहां करि जौंन । दुर्गतिकों नहि लहत है बाजपेय फल तौंन ॥
जाय तीर्थ किन्दानमे स्नान दान जप तौंन । अप्रमेय सो होत है करत यथाबिधि जौंन ॥
कलशी तीरथ बारिमे स्नान करत जो जाय । अग्निष्टोम को फल लहत तौंन परम सुखदाय ॥
सरक तीर्थके पूर्व है नारद तीर्थ सुजान । अनाजन्म बिख्यात सो करै तहां सु स्नान ॥
नारद आज्ञा पायकै देह त्याग करि तौंन । जाय लोकको लहै सो सबसों उत्तम जौंन ॥
दशमीमे शित पक्षकी पुण्डरीककों जाय । करै तहां सु स्नानको पुण्डरीक फल पाय ॥
विपिष्टप तीर्थहि जाय जहँ बैतरणी हर पाप । शिव पूजन करि गति लहै जो है परम दुराप ॥
फलकी बनकों जाय जहँ देव करत तप भूप । दृषद्वतीमे स्नान करि बसि निशि तीनि अनूप ॥
फलकी बन तर्पण करैं अग्निष्टोम फल देय । सर्व देवमे स्नान करि गो सहस्र फल लेय ॥
पाणिखात मे स्नान करि तर्पण करै जो भूप । तीनि निशामे अग्निष्टोमको सो फल लहै अनूप ॥
मिश्रकको तब जाय जहँ तीर्थ व्यास सब ल्याय । सर्व तीर्थके स्नान हित राखे तहां मिलाय ॥
स्नान मनोजवमे करै व्यास बिपिनिमे जाय । गो सहस्रके दानको लहै तहां फल पाय ॥
जाय फेरि मधुबटीकों देवी तीर्थ सु तौंन। लहै स्नानकरिकै तहां गो सहस्र फल जौंन ॥
दृषद्वती अरु कौशिकी को सङ्गम जहँ पर्म । स्नान तहां करि पापतें छूटि लहै बरधर्म ॥
व्यासथलीकों जाय जहँ पुत्रशोकसों व्यास । प्राण तजत दे देवतन रक्षण कीन्हों तास ॥
गो सहस्रके दानको जाय तहां फललेय । किन्दान कूपकों जाय फिरि प्रस्थ एक तिल देय ॥
ऋणसों व्है कै मुक्त सो परगति लहै अनूप । बेदीतीर्थस्नानमे गो सहस्र फल भूप ॥
चर चर सुदिन सुतीर्थ है तिनमे करि सुस्नान । सूर्यलोकको जानहै लहि वर पुण्य सुजान ॥
सप्तधूम तीर्थकों जाय करि गङ्गामे सुस्नान । अश्वमेधको फल लहै पूजि शंभु सुखदान ॥
देवीतीर्थस्नान करि गो सहस्र फल पाय । सो बामनके तीर्थकों चलो तहां तें जाय ॥
बामनको पूजन करै न्हाय बिष्णुपद पास । पाप मुक्त व्है सो करै बिष्णुलोकमे बास ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स्नान कुलपुनसे करै पूतकरै कुल सर्व । पवन कुण्डमे स्नानकरि हरिपुर लहै अखर्व ॥ ८७५
अमरकुण्डमे स्नानकरि पूजै तहा सुरेश । स्वर्गलोकमे जायकै वास सो करै हमेश ॥
शालिहोत्रके तीर्थमे करि बिधिवत सुस्नान।गो सहस्रके दानको सो फल लहै सुजान ॥
श्रीकुब्जसरस्वतीमे तहा जाय करै सु स्नान । अग्निष्टोमके पुण्यकों सो पावै सुखदान ॥
तवसो नैमिषकुब्जमे जाय करै सुस्नान । अग्निष्टोमको फल लहै तेहा सुनऊ सुजान ॥
जाय सो कन्यातीर्थमे स्नाकरै नर पर्म । गो सहस्रके दानको तौंन लहै फल धर्म ॥
जाय तीर्थ ब्रह्मण्यमे स्नान करतहै धन्य । क्षत्रादिक त्रयबर्ण जहँ पावतहैं ब्रह्मण्य ॥
ब्राह्मण तेहाँ स्नान करि शुद्ध परम गति लेत।सोमतीर्थमे जायकै स्नान जो करै सनेत ॥
सोमलोकको लहतहै तौंन परम सुखदाय।सप्त जे सारस्वत जहां तीर्थ तहाकों जाय ॥
मकणक जहां ब्रह्मर्षि हो तपसों भरो महान।कारण बस तहँ शिव बसे दै ताकों वरदान ॥
तिन सारस्वत तीर्थमे स्नान करै नर जौंन । सारस्वत वर लोकमे बास करतहैं तौंन ॥
लहतैं उशनस तीर्थकों जाय जो सुमति उदार । ब्रह्मादिक सुर ऋषि बसत जेहाँ सहित कुमार ॥
फिरि कपालमोचन जहां तीर्थ तहांकों जाय । स्नान करत सब पाप मिटि जाय तीर्थ फल पाय ॥
अग्नि तीर्थमे जाय जो स्नान करै नर बुद्ध। अग्निलोककों जायसो करि सब कुलकों शुद्ध ॥
कौशिक ऋषिके तीर्थकों जाय जौंन नर धन्य । स्नान करत सो लहतहै परम पुण्य ब्रह्मण्य ॥
ब्रह्मयोनिकों जाय नर व्है शुचि मन करि स्नान । ब्रह्मलोककों जाय करि बंश पूत सुखदान ॥
पृथूदक बर तीर्थमे स्नानकरै जो जाय । कार्तिकेयको तीर्थसो परम पुण्यकों पाय ॥
नारी नरसों होय जो पाप ज्ञात अज्ञात । स्नान पृथूदकमे करत तौंन नाश व्है जात ॥
अश्वमेधको फललहै स्वर्गलोककों जाय । पृथूदक सु सब तीर्थमे परम पुण्य फलदाय ॥
तहा मधुस्रव तीर्थ है करै स्नान तहँ जौंन । गोसहस्रके दानको फल पावतहै तौंन ॥
अरुणा सरस्वती जहाँ मिली तहाँ जो न्हाय । ब्रह्महत्याको पापसो तोनि निशामे जाय ॥
धर्मकीलमे स्नान करि कर्म भ्रष्ट द्विज जौंन । फेरि लहै ब्राह्मण्यको बिदर्भी मुनि उक्त तौंन ॥
बिदर्भी ऋषि ल्याए तहाँ चारो सिन्धु महान । दुर्गतिको नहि लहत नर करि तिनमे सुस्नान ॥
शत सहस्र अरु सहस्रके तिनमे करि सु स्नान । गो सहस्रके दानको तहँ फल लहत सुजान ॥
न्हाय रेणुकातीर्थमे देवार्चन करि जौंन । अग्निष्टोमको फल लहै पाप मुक्त व्है तौंन ॥
स्नान बिमोचन तीर्थमे करै जितेंद्री जाय । प्रतिग्रहके पापसों छूटै ताको काय ॥
पञ्चवटीमे स्नान चलि करै जितेंद्री जौंन । महापुण्यको पायकै लहै लोक सत तौंन ॥
तहँ योगेश्वर वृषध्वज आपु करत है बास । तिनको पूजन करि रहै गण व्हैकै शिवपास ॥
तेजस वारुण तीर्थ है भरो तेजसों तत्र । देवन सह अभिषेक बिधि किय कुमारको यत्र ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०पु० सेनापतिको सुरन्हके तहा करै जो स्नान । सेनानीके लोकको पावै तौंन सुजान ॥
तेजसके पूरुबदिशा हैं कुरुतीर्थ महान । ब्रह्मलोकको जाय नर करि तेहाँ सुस्नान ॥
स्वर्गद्वारको जाय जो नियतासन करि स्नान । ब्रह्मलोकको जाय सो पाय पुण्य मतिमान ॥
जाय जो अनरक तीर्थमे स्नान करै मतिमान । सो दुर्गति पावै नही सुनकुरुभूप सुजान ॥
रुद्र पत्नी तीर्थहै ताके नीरे भूप । देवी पूजन करि तहाँ लहै न दुर्गति रूप ॥
विश्वेश्वर जँह उमापति पूजै तहँ करि नौंन । महापापके दोषसों छूटतहै नर तौंन ॥
फिरि नारायण तीर्थकों पद्मनाभ जहँ जाय । विष्णुलोककों लहै सो रूप अनूपम पाय ॥
सर्व देवके तीर्थमे स्नान करै नर जौंन । सर्व दुःखसों छूटिकै अग्निसों सोहै तौंन ॥
जाय स्वस्तिपुरकों तहां करै प्रदक्षिण भूप । गो सहस्रके दानको फल पावै अनुरूप ॥
देव पितृ तर्पण करै पावन तीर्थहि जाय । अग्निष्टोम मखको लहै पुण्य परम सुखदाय ॥
गङ्गाकूट तहँ कूपमे कोटि तीर्थको बास । जात स्वर्गकों स्नान तहँ करिकै पातक नाश ॥
न्हाय आपगा तीर्थमे करै शिवार्चन जौंन । गार्हपत्य लहिकै करै स्वकुलोद्धारण तौंन ॥
स्नान करै गो स्थानु बट तट रहिकै निशि एक । रुद्रलोककों जाय गो पाय पुण्य अतिरेक ॥
आश्रम परम बशिष्टको बदरीकौं जो जाय । तीनि रात्रि तेहाँ रहै बदरी फलकों खाय ॥
बदरी भक्षण करि करै तप जो द्वादश वर्ष । तुल्य होत सो तौनके पाप पुण्य बर हर्ष ॥
रुद्रमार्ग बर तीर्थकों तीर्थ भक्त जो पाय । अहोरात्रि उपवास करि इन्द्रलोककों जाय ॥
एकरात्र बर तीर्थमे एकरात्र उपवास । नियत सत्यबादी लहै ब्रह्मलोकमे बास ॥
आश्रम जहँ आदित्यको जाय करै तहँ स्नान । करै यथाविधि भानुको पूजन सो मतिमान ॥
करि कुलको उद्धार सो सूरलोककों जाय । है प्रसिद्ध तिऊँ लोकमे भानु तीर्थ सुखदाय ॥
सोमतीर्थमे स्नानकों करै जाय नर जौंन । सोमलोकमे लहत है नित्य बासकों तौंन ॥
है दधीचके तीर्थमे सारस्वत सर शुद्ध । स्नान तहां करिकै लहै अश्वमेध फल उद्ध ॥
करै उपास जो तीनि निशि कन्याश्रममे जाय । स्वर्गलोककों जाय लहि कन्या शत सुखदाय ॥
तीर्थ परम सन्निहितमे ब्रह्मादिक सुर आय । मास मासमे न्हात है रविउपरागहि पाय ॥
अश्वमेधके पुण्यकों पावत हैं सब तौंन । अमा माह आवत तहां तीर्थ जगतमे जौंन ॥
जन्म जन्मको पाप सब करत जाय सु स्नान । ब्रह्मलोककों जाय सो करि तहँ आइ सुजान ॥
करै अचलुक द्वारपालको तहँ बन्दन जो भूप । कोटि तीर्थमे स्नान करि सुबरण लहै अनूप ॥
तहँ सङ्गाकूट तीर्थ है करै जो तहाँ सुस्नान । राजसूय हैमेधको सो फल लहै सुजान ॥
नैमिष क्षिति पर तीर्थ है पुष्कर नभमे परम । कुरुक्षेत्र तिऊलोकमे है विशेषकर धर्म ॥
कुरुक्षेत्रकी धूरि उडि जाकों परसति आय । ताके दुःकृत कर्मके पातक देति नशाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कुरुक्षेत्रकों जाइ कै नित्य करै तहँ बास। वचन कहत ए रहत नहि पातक तिनके पास॥ व०प०
तरंतुक सु अरु अरुन्तुक इनकोमधि अभिराम। मचक्रुक अरु रामह्रद पञ्चम तीर्थ ललाम॥
समन्तपञ्चक कहत इमि कुरुक्षेत्रकों तज्ञ। उत्तरबेदी पितामहकी कीन्हों है जब यज्ञ॥

॥ * ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ * ॥

धर्मराज जहँ तप कियो धर्मतीर्थ तहँ जाय। तहां स्नान करि सप्तकुल उद्धरै सुखदाय॥
स्नान सुपावनतीर्थ है जहां तहां फिरि जाय। अग्निष्टोमको फल लहै लोक मुनिन्हको पाय॥
सागन्धिक बन है जहां करै तहांकों गौन। तहं प्रवेश करि होत है मुक्त पापतें तौन॥
प्लक्षादेवी सरस्वती श्रेष्ठ सरित है यत्र। कढति प्लक्षतट बिबरतें स्नान करै नर तत्र॥
पितृदेव अर्चन करै अश्वमेधफल पाय। तीर्थ इशानाध्युषितकों फेरि तहांतें जाय॥
कछू दूरि है प्लक्षतीथतें तौन तीर्थ गुणगेय। कपिला दान सहस्रको बाजिमेधफल देय॥
सुगन्ध और शतकुम्भ अरु पञ्च यक्षकों जाय। महामोदकों लहै सो स्वर्गलोकको पाय॥
शूलखातमे स्नान करि अरचि देव अरु पित्र। शङ्करको गण होय सो तन तजि परम पवित्र॥
देवी जहँ शाकम्भरी जाय तहाँ नर जौन। करै बास तहँ तीनिनिशि शाक खाय कै तौन॥
शाक खाय बारहबरष करै जो तप अतिमान। देवीजूकी कृपातें फल सो लहै सुजान॥
सुवरणमय बर तीर्थकों जाय जो भरो विवेक। जहँ अराधि हरि शम्भुकों पाये सुवर अनेक॥
तहँ पूजन करि शम्भुको भक्ति भरो मतिमान। बाजिमेधफल पाय कै शिवगण होत सुजान॥
जाय सो धूमावतीकों निश्चय करि उपवास। मनसा वांछित फल लहै तौन तहाँ सुखरास॥
देवीके दक्षिणदिशा रथावर्तकों जाय। महादेवकी कृपा लहि लसै परम गति पाय॥
धारा नामक तीर्थकों जाय तहाँते जौन। स्नान तहाँ करि होत है शोच रहित नर तौन॥
स्वर्गद्वारके सदृश है तीर्थ जो गङ्गा द्वार। स्नान तहाँ करि कै लहै कोटितीर्थ फल सार॥
पुण्डरीककों फल लहै करि कुलको उद्धार। गोसहस्रके दानको बसि निशि एक उदार॥
सप्तगङ्ग त्रिगङ्गमे चक्रावर्त नहाय। देव पितृ तर्पण करै पुण्यलोककों जाय॥
तीनिनिशा उपवास करि जो कनखलमे न्हाय। अश्वमेधको पाय फल स्वर्गलोककों जाय॥
कपिलावटकों जाय कै एकनिशा उपवास। करि गोदान सहस्रको फल पावै मतिरास॥
कपिलनागपति तीर्थमे जाय करै सुस्नान। कपिलादान सहस्रको फल पावै सुखदान॥
ललतिकशान्तन तीर्थकों जाय करै जो स्नान। दुर्गतिकों पावै न सो सुनऊ भूप मतिमान॥
गङ्गायमुना मध्यमे न्हात जो जाय उदार। अश्वमेधको पाय फल करत स्वकुल उद्धार॥
सुगन्धतीर्थकों जाय सो ब्रह्मलोकको लहत। रुद्रतीर्थमे स्नान करि जाय स्वर्गकों महत॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

गङ्गा और सरस्वती के सङ्गममे न्हाय । अश्वमेधको पाय फल स्वर्गलोककों जाय ॥
भद्रकर्ण शिवको करै बिधिवत पूजन जौंन । दुर्गतिकों नहि होत हैं प्रात भूप नर तौंन ॥
तक्षकुञ्जात्मक तीर्थकों जाय जौंन नर भूप । गोसहस्रको पाय फल लहै सो स्वर्ग अनूप ॥
बटअरुन्धतीको तहाँ जाय समुद्रक न्हाय । अश्वमेध फल पाय कै स्वर्गलोककों जाय ॥
ब्रह्मावर्त सुतीर्थकों ब्रह्मचर्य्य धरि जाय । सोमलोककों जाय सो अश्वमेध फल पाय ॥
यमुना जन्मस्थान तहँ यामुनतीर्थ नहाय । अश्वमेधको पाय फल स्वर्गलोककों जाय ॥
देविसंक्रमणतीर्थकों जाय तहाँते जौंन । अश्वमेधको पाय फल करै स्वर्गको गौंन ॥
सिन्धुप्रभव बर तीर्थकों जाय तहातें जौंन । पाँचरात्रि बसि कै लहै बज्र सुबर्णको तौंन ॥
बेदीकों नर जाय जो अतिदुर्गम पथ भूप । अश्वमेधको फल लहै पावै स्वर्ग अनूप ॥
ऋषिकुल्याकों जाय जहँ बर्ण होत सब बिप्र । देव पितरकों अर्चि ऋषिलोक लहै सो क्षिप्र ॥
जाय जो नर भृगुतुङ्ग सो अश्वमेधफल लेय । बोर मोक्ष सो पापकों छोरि पासतें देय ॥
कृत्तिकामघासुमाहि जो करै जाय सुस्नान । विद्याकों सो लहत है चाहै यथा सुजान ॥
महा आश्रमहि जाय जो बसै एकनिशि भूप । सो छूट तसब पापतें पावै धर्म अनूप ॥
एककालमे निराहार रहि पावै लोक महान । तजैं महालयमे अशन एकमास मतिमान ॥
बज्र सुबर्णको लहत सो रहित पापतें होय । अश्वमेधकों फल लहै लहतमोदसों भोय ॥
बसत पितामह आपु जहँ बेतसिकाकों जाय । उशनसकी गतिकों लहै अश्वमेध फल पाय ॥
सुन्दरीका बर तीर्थकों जाय जौंन नर भूप । नियत लहै सो जगतमे परम अनूपमरूप ॥
जाय ब्राह्मणीतीर्थकों ब्रह्मचर्य्य धरि जौंन । जाय पद्मसम जान षढि ब्रह्मलोककों तौंन ॥
नैमिषकों फिरि जाय सब बसत सिद्धगण यत्र । दिव्य देवगण सह बसत आपु पितामह तत्र ॥
जावै नैमिषकों चहत ताको पाप नशात । तेहाँ करत प्रवेश सब पाप भस्म व्है जात ॥
पृथ्वीमे जे तीर्थ है ते नैमिषमे सर्ब । दशपुरुषालों पूर्व पर पावन करैं अखर्ब ॥
नैमिषमे जे तजत हैं करि उपवास शरीर । स्वर्गलोकमे जाय ते पावत मोद गँभीर ॥
गङ्गोद्भेद सुतीर्थमे बसत जो रजनी तीन । ब्रह्मरूप सो होत लहि बाजपेय फलपीन ॥
देव पित्र तर्पण करै सरस्वतीमे जाय । सारस्वत बर तीर्थमे लहै स्वर्ग सुदपाय ॥
जाय बाऊदासरितकों ब्रह्मचर्य्य धरि धीर । एकनिशा बसि स्वर्गकों जाय समोद गँभीर ॥
देवपितर तर्पण करै क्षीरवतीमे जाय । परम लोककों लहै सो बाजपेय फल पाय ॥
जाय जो बिमलाशोककों एकनिशा करि बास । स्वर्गलोककों जाय सो पुण्यमान मतिराय ॥
गोप्रतारकों जाय जो सरजूमाह उदार । गए राम जहँ स्वर्गकों सह पुरजन परिवार ॥
रामहृपाते तीर्थको लहि प्रताप तजि देह । गोप्रतारमे स्नान करि करै स्वर्गमे गेह ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रामतीर्थ जो गोमतीमे है सुनिए सो भूप । अश्वमेधको फल लहै तारै स्वकुल अनूप ॥ ब्र०प०
शतसाहस्रक तीर्थ तहँ तामे करि कै स्नान । गोसहस्र के दानको पावै पुण्य महान ॥
भर्तृस्थान सु तीर्थकों जाय तहां नर जौंन । अश्वमेधके पुण्यकों प्राप्त होत है तान ॥
कोटितीर्थमे स्नान करि पूजन करै कुमार । गो सहस्र को पाय फल तेजस लहै उदार ॥
जाय जो बारानशीकों पूजि बृषध्वज पर्म । कपिला ह्रदमे न्हाय लहि राजसूयको धर्म ॥
अविमुक्ततीर्थकों जाय फिरि काशी जाको नाम । छुटै ब्रह्महत्या गएँ देवदेवके धाम ॥
प्राणत्याग करि लहत जन जेहाँ मोक्ष महान । और जगतमे तीर्थ नहि बारानशी समान ॥
जहँ गङ्गा अरु गोमती सङ्गम किए ललाम । तीरथ मार्कण्डेयको तहां धर्मको धाम ॥
स्नान तहां करि कै करै अपनो कुल उद्धार । अग्निष्टोमको फल लहै सो नर परम उदार ॥
फेरि गयाकों जाय धरि ब्रह्मचर्य्य ब्रत पर्म । गवनमात्रमे लहै सो अश्वमेधको धर्म ॥
है प्रसिद्ध तिहुलोकमे तहँ अक्षयबट नाम । देय पितृहित तहाँ जो अक्षय होय सो माम ॥
देव पितर तर्पण करै महानदीमे न्हाय । कुलको करि उद्धार तिन अक्षयलोक हि जाय ॥
जाय सो धर्मारण्यमे जहां ब्रह्मसर पर्म । ब्रह्मलोंककों जाय सो अप्रमेय लहि धर्म ॥
ब्रह्मा तहँ सरमे कियो यूपारोपण जौंन । तास प्रदक्षिण करि लहै बाजपेय फल तौंन ॥
जाय सो धेनुक तीर्थकों तेंहांतें मतिरास । देइ तहां तिलधेनुकों एकराति करि वास ॥
सर्वपापसों रहित सो सोमलोककों जाय । गोपदके अबहूँ परै तेहाँ चिन्ह देखाय ॥
गोपदमे जो करत है स्नान सुनहुँ नृप जाय । होय अशुभकृत कर्म जो तेहां तौंन नशाय ॥
जाय गृध्रवटकों तहां भस्म लेप तन देय । बृषभध्वजकों पूजि द्विज द्वादशाब्द ब्रत लेय ॥
और बर्णको होत है तहाँ पापको नाश । जाय सो गिरिउद्यन्तकों चलि तहँतें मतिराश ॥
सावित्रीके चरणके चिन्ह परत तहँ देखि । तहँ संध्या ब्राह्मण करै सुब्रत भरो विशेखि ॥
संध्या द्वादशवार्षिकी होय उपासित ताहि । योनिद्वार तहँ प्रगट है जाय तहांकों चाहि ॥
तामे पैठि न योनिको सङ्कट पावत तौंन । कृष्ण शुक्ल दुहुपक्षमे बसत गयामे जौंन ॥
करत पूत सो सप्त कुल सो नर सहित बिबेक । बहुत पुत्र याते चहत गया करि हि कोउ एक ॥
बृषोत्सर्गकों करि हि कै अश्वमेध बरयज्ञ । यातें चाहत पुत्रबहु जन जगमे सरबज्ञ ॥
तिहँतें फाल्गुनदीकों जाय सुमति नर तौंन । अश्वमेधको फल लहै सहित सिद्धि बर जौंन ॥
धर्मप्रस्थकों जाय सो तेंहातें मतिरास । धर्मराज जहँ करत हैं नित्य नियमसों बास ॥
देव पितृ तर्पण करै कूपोदकसों न्हाय । मुक्त पापसों होय कै स्वर्गलोककों जाय ॥
ऋषिमतङ्गके जाय सो आश्रमकों मतिमान । गवामयन बर यज्ञको फल पावै सुखदान ॥
तहतें ब्रह्मस्थानकों जाय युधिष्ठिर जौंन । राजसूय अरु अश्वमेधको फल पावत है तौंन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जाय तहांते राजगृह करै तहां सुस्नान। तहाँ मोदकों लहै सो काश्मीरवान समान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पक्षिणीके नित्य जो नैवेद्यकों नरखाय । ब्रह्महत्यापापसों सो छूटि गतिकों जाय ॥ तीथमे मणिनागके जो करत है सुस्नान । गोसहसके दानको फल लहत तौंन सुजान ॥ करत ताके सलिलको जो परम पावन पान । सर्पको बिष नही ताको चढत है अतिमान ॥ जाय जौं ब्रह्मर्षि गौतमके सुवनको जौंन। कै अहल्यातीर्थमे सुस्नानकों नर तौंन॥ बाजपेय सु यज्ञको फल लहत है सो भूप। जाय तेहाँ राजऋषिवर जनकको जहँ कूप॥ जाय लोक सुविसु के करि कै तहाँ सुस्नान। पाप मोचन जाय विनशन तीर्थकों मतिमान ॥ बाजपेय सु यज्ञकों लहि जाय अग्निके धाम। सर्व तीर्थ जलोद्भवा लहि गण्डकी अभिराम ॥ जाय रविके लोककों वर बाजपेयसु पाय। है बिसल्या नदी जहँ तहँ तहाँतें सो जाय ॥ *~*~*~* ॥ *॥ दोहा ॥ *॥ *~*~*~*~*

अग्निष्टोमको पाय फल स्वर्गलोककों जाय । फेरि चले अभिबङ्गको जो तपबन सुखदाय ॥
गुह्यकगणमे लहै सो मोद परम अभिराम । जाय कम्पनानदीकों सेवित सिद्ध ललाम ॥
पुण्डरीकको पाय फल स्वर्गलोककों जाय। धारा जहँ माहेश्वरी तहां जाय जो न्हाय ॥
अश्वमेधको पाय फल कुल उद्धारै तौंन। जहँ पुष्करणी सुरनकी तहां जाय नर जौंन ॥
दुर्गतिकों सो नहि लहै तहां करै जो स्नान। बाजिमेधको पाय फल जाय स्वर्ग मतिमान ॥
जाय सोमपदतीर्थकों ब्रह्मचर्य्य धरि जौंन। स्नान महेश्वरपद करै बाजिमेध लहि तान ॥
कूर्मअसुर हरि तीर्थ तहँ कोटि धरे है ल्याय। ताहि मारि कै हरि धरे तेहां सकल छुटाय ॥
तहां करै सुस्नान जो तीर्थाकांक्षी आय । पुण्डरीकको फल लहै विष्णुलोककों जाय ॥
स्थल नारायण है जहाँ नित्य विष्णुको बास। ब्रह्मादिक सब देव तहँ लए ब्रह्मऋषि पास ॥
नित्य भजत जहँ बिष्णुकों शालग्राम स्वरूप । बिष्णुलोक पावैं तहां अश्वमेध लहि भूप ॥
जातिस्मर बर तीर्थमे स्नान करै जो जाय। जातिस्मर सो होत है सुनऊ भूप सुखदाय ॥
माहेश्वरपुर जाय जो पूजै हर सुखदाय। तहां करै उपवासकों मनवांछित फल पाय ॥
जाय सो बामनतीर्थको सर्वपाप हर जौंन। पूजन करि हरिको तहां दुर्गति लहै न तौंन ॥
सर्वपापहर कुशिकके फिरि आश्रमको जाय। सर्वपापहर कौशिकी नदीमाह तहं न्हाय ॥
राजसूय बर यज्ञको फल पावै नर तौंन । फेरि चम्पकारण्यको करै तहांते गौंन ॥
एकरात्रि तहं रहि लहै गोसहस्र फलदान । तहंते जेष्ठिलतीर्थको जाय तौंन मतिमान ॥
गोसहस्रको दान फल निशि बसि पावै तौंन। तहं विश्वेश्वर उमासह दरशन करि है जौंन ॥
लोक सो मित्रावरुणिके प्राप्त होयगो जाय । तीनिरात्रि बसि कै तहां अग्निष्टोमफल पाय ॥
कन्यासंवेद्य हि जाय जो नियतासन ह्वै जौंन। मनु प्रजापतिलोक सो पावत है नर तौंन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कन्यामें जो देतहै कछु थोरोसो दान । सो अक्षय बऊ होतहै मुनिजन कहत प्रमान ॥ ब०प०
जाय निबीर सुतीर्थको त्रिभुवनमाह प्रसिद्ध । बिष्णुलोकको जात सो अश्वमेध लहि कृद्ध ॥
देत जो दान निबीरके सङ्गममें अभिराम । महापुण्यको पाय सो जात शक्रके धाम ॥
आश्रम तहां बशिष्ठको करै जो तह सुस्नान । बाजपेयके पुण्यकों पावत सो मतिमान ॥
देवकूटकों जाय जहं ऋषिगण बसत उदार । अश्वमेधकों फल लहै करै सकुल उद्धार ॥
तहतें कौशिकह्रद जहां तहां जाय जो भूप । बिश्वामित्र मुनीन्द्र जहं पाई सिद्धि अनूप ॥
तहां कौशिकीके निकट बसै मासभरि जौन । अश्वमेधके पुण्यको प्राप्त होतहै तौन ॥
बीराश्रममें बसत हैं जहं कुमार तहं जाय । नियत मोदसो मरै सो अश्वमेध फलपाय ॥
जहां अग्निधारा बिदित जाय करै तहं स्नान । अग्निष्टोमके पुण्यको पावै तौन सुजान ॥
जाय पितामह सर जहां शैलराजके पास । अग्निष्टोम फल लहै करि स्नान तहां मतिरास ॥
कढो पितामह सुसरतें कुमार धारा जौन । स्नान तहां करिकै लहै नर कृतारथता तौन ॥
तब गौरीके शिखर चढि तहं स्तनकुण्ड नहाय । बाजपेय हयमेध फलपाय शक्रपुर जाय ॥
ताम्रारुणको जाय फिरि ब्रह्मचर्य धरि जौन । अश्वमेध लहि जाय सो ब्रह्मलोकको तौन ॥
जाय नन्दिनीको जहां सुरगण सेबित कूप । जौन पुण्य नरमेधको तौन लहै सो भूप ॥
न्हाय कालिका संगमें अरुण कौशिकी यत्र । तीनिराति उपबास करि छुटै पापसो तत्र ॥
जहां उर्वसी तीर्थहै सोमाश्रमहै यत्र । कुम्भकर्ण आश्रम जहां जाय चलो नर तत्र ॥
पूज्य होय सो जगतमें फिरि कोकामुख जाय । जातिस्मर्ण लहै तहां ब्रह्मचर्य धरि न्हाय ॥
प्राकनदीको जाय फिरि बिप्र कृतात्मा जौन । शक्रलोकको जाय सो छूटि पापसो तौन ॥
कौंच निषूदन तीर्थ जहं ऋषभद्वीपको जाय । सरस्वतीमें स्नान करि चढै बिमान सो पाय ॥
औद्दालक बर तीर्थहै मुनिगण सेबित जौन । जाय तहां करिस्नानकों छुटै पापसों तौन ॥
धर्मतीर्थको जाय जो मुनि सेबित अभिराम । बाजपेयको पाय फल चढैं बिमान ललाम ॥
अथ चम्पाको जाय जो भागीरथी नहाय । दण्डारतको लहि निकट गो सहस्र फलपाय ॥
लक्षीतिकाको जाय जो भरी पुण्य अभिराम । राजसूयको पाय फल चढैं बिमान ललाम ॥

॥ * ॥ पुलस्त्यउबाच ॥ * ॥

जायतीर्थ संबेद्यमें करै जो सायं स्नान । बिद्याको सो लहै जो भरी पुण्य बरज्ञान ॥
लौहित्य तीर्थ जो रामको लहिकै भयो प्रभाव । तहाँ जाय उत्तम लहै बऊ सुबर्ण युतचाव ॥
करतोयाको जायकै तीनि निशा करि बास । अश्वमेधके पुण्यको प्राप्त होय मतिरास ॥
गङ्गासागरके करै सङ्गममें सुस्नान । अश्वमेध दश गुणितको सो फल लहै सुजान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

गङ्गाके पर पारमे स्नानकरै जो जाय। बास त्रिरात्रि करें तहाँ छूटि पापसो जाय ॥
वैतरणीकों जाय जो पाप प्रणासनि सर्व । बिरजतीर्थमे स्नानकरि शशिसो लसै अखर्व ॥
गो सहस्रको फललहै करै स्वकुल उद्धार। पापपुञ्जके गहनको दहन सो तीर्थ उदार ॥
ज्योतिरथ्या रु सु शोणके सङ्गमको चलि जाय। देव पितृतर्पण करै अग्निष्टोम फलपाय ॥
शोण नर्मदाको जहाँ है उतपत्यस्थान । बाजिमेध फल लहत करि बंश गुल्ममे स्नान ॥
जाय कोशला माह जहँ ऋषभ तीर्थहै पर्म। तीनरात्रि ब्रत करि लहै बाजपेयको धर्म ॥
काल तीर्थहै कोशला मे तह करि सुस्नान। वृषभ एक दश दानको फल पावै अतिमान ॥
पुष्पवतीमे स्नान करि करै त्रिरात्रि उपास। गो सहस्रको पाय फल पूत होय कुलतास ॥
जाय बदरिका तीर्थमे स्नान करै जो भूप । दीर्घ आयुको लहै सो पावै स्वर्ग अनूप ॥
चम्पाको फिरि जाय जो भागीरथी नहाय। शिव दण्डाख्यहि पूजिकै गो सहस्र फलपाय ॥
फिरि लपेटिका तीर्थकों सुकृती जाय जो कोय। बाजपेयको फल लहै देवपूज्य सो होय ॥
परशुराम सेवित परम गिरि महेंद्रकों जाय। राम तीर्थमे स्नान तहँ अश्वमेध फल पाय ॥
ऋषि मतङ्गको है तहां तीर्थ परम केदार। गो सहस्र फलकों लहै करि सु स्नान उदार ॥
श्रीपर्वतकों जाय करि नदी तीर सु स्नान। अश्वमेध फल लहै करि शिवपूजन मति मान ॥
श्रीपर्वतमे बसत तहँ उमा सहित अभिराम। बसत पितामह सुरण सह भरे प्रीतिसों माम ॥
श्रीगिरिपर है देव ह्रद करै स्नान तहँ जौंन । अश्वमेधको फल लहै परम सिद्धिकों तौंन ॥
जाय ऋषभ पर्वत जहाँ शुर पूजित अतिमान। बाजपेयको पाय फल लहै स्वर्ग सुखदान ॥
कावेरीकों जाय जेहि रही अप्सरा सेय। तहा स्नान करि गो सहस बितरणको फल लेय ॥
तब समुद्रके तीरमे कन्या तीर्थ सु पाय । तहां स्नान करिकै सुरन छूटि पापसों जाय ॥
जहँ गोकर्ण समुद्रमे लोक नमस्कृत सर्व । ब्रह्मादिक जहँ देवता ऋषि किन्नर गन्धर्व ॥
सिद्ध यक्ष सागर सरित जाकों सेवत पास । तहाँ शम्भुकों पूजिकै जो रन करै उपास ॥
अश्वमेधको फल लहै होत सर्वगुण तौंन। द्वादश निशि पउबास करि होत पूत मतिभौंन ॥
त्रिभुवन पूजित है जहां गायत्रीको स्थान। गो सहस्रको फललहै बशि तीनिनिशि मतिमान ॥
[illegible] वापी ऋषिसम्वर्तकी तामे करिकै स्नान। जन्म लेय भरि भाग्य सों पावै रूप महान ॥
[illegible] सरितकों करै त्रिरात्र उपास । लहै बिमानस हंस सो सुनऊ भूप मतिरास ॥
[illegible] बसत सिद्ध जहँ आय । गवामयनको पाय फल बासुकिके पुर जाय ॥
[illegible] करि बाजिमेध फल लेय । बरदा सङ्गम स्नान तें गो सहस्र फल देय ॥
जाय [illegible] करै त्रिरात्र उपास । गो सहस्र फल पायकै करै स्वर्गमे बास ॥
सु कु शल बनमे जाय जो निशि त्रय करै उपास। अश्वमेध फल लहै करि स्नान तौंन मतिरास ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कृष्णवेणी जलोद्भव जो देव कृद आरण्य । स्नान करि तहँ होत है जन जातिस्मरण सुधन्य ॥ देवराज शतक्रतु तहा करि किय स्वर्ग पयान । अग्निष्टोम फल लहै तहँ गमन करत सुखदान ॥ स्नान सर्व कृदमे करै गोसहस्र फल लेय । नदी पयोष्णी स्नानतें गोसहस्र फल देय ॥ जाय दण्डकारण्यमे स्नान करै नर जैान । गोसहस्रके पुण्यकों पावतहै वर तैान ॥ पुष्कर अरु सर भङ्गके आश्रमकों जो जाय । लहै न दुर्गति सो करै स्वकुल पूत शुचिकाय ॥ सूर्य्यारककों जाय जहँ परशुरामको वास । रामतीर्थमे स्नानते मिलत कनक बहु तास ॥ न्हाय सप्तगोदावरी नियतासन नर जैान । महतपुण्य लहि जातहै देवलोककों तैान ॥ जाय देवपथकों चलो नियतासन धरि धीर । देव सत्रके पुण्यकों पावै तैान गभीर ॥ जाय तुङ्गारण्यको ब्रह्मचर्य्य धरि धर्म । करी बेद शिक्षा यहां सारस्वतऋषि पर्म ॥ ब्रह्मादिक सब देवता हरि हर सह दिगपाल । जहँ भृगुकोमख हेतु की आज्ञा दई बिशाल ॥ तब भृगु दीन्हों ऋषिन्हको विधिवत यज्ञ कराय । गए देवऋषि धामको यज्ञ पूर्णता पाय ॥ तुङ्गारण्य प्रवेशतें होत पापको नाश । शुद्ध होत प्रमदा पुरुष हे कुरुपति मतिरास ॥ नियतासन जो मास भरि तैंहा रहत उदार । ब्रह्मलोक सो जातहै करि कुलको उद्धार ॥ देव पित्र तर्पण करै मेधाबीमे जाय । मेधा स्मृतिकों लहत सो अग्निष्टोम फल पाय ॥ सर्वलोक विख्यात जो कालिञ्जर गिरि जाय । स्नान देवकृदमे करै गोसहस्र फल पाय ॥ स्नान तपस्या करत जो कालिंजर मे पर्म । स्वर्ग लोककों जात सो यामे कछू न भर्म ॥ स्नान करै मन्दाकिनी चित्रकूटकों जाय । देव पित्र तर्पण करै अश्वमेध फल पाय ॥ फेरि जाय धर्मज्ञ सो जेहां भरतस्थान । नित्य कुमार बसैं जहा सिद्धि लहै मनमान ॥ कोटि तीर्थमे स्नान कार गोसहस्र फल पाय । करत प्रदक्षिण भूप सो जेष्ठस्थानहि जाय ॥ शिवको पूजन करि तहाँ लसै सुधा सुसमान । तहँ सुनियतहै कूपमे चारो सिन्धु सुजान ॥ न्हाय तहाँ तर्पण करै देव पितृको भूप । नियतात्मा सो पूतहै गति सो लहैअनूप ॥ शृङ्ग बेरपुर है जहाँ जाय तहाको तैान । रामचन्द्र जहँ सुरसरित पार कियो हो गैान ॥ तहा स्नान करि सुरसरित ब्रह्मचर्य संयुक्त । बाजपेयको फललहैहोय पापसों मुक्त ॥ जाय मुञ्जवटको जहाँ शङ्करको सुस्थान । महादेवको तहँ करै पूजन सो मतिमान ॥ गङ्गामे सुस्नान करि करै प्रदक्षिण जैान । जन्मजन्मको पापतें मुक्तहोय नर तान ॥ तहँते जाय प्रयागकों संसुत जैान अखर्व । ब्रह्मादिक जहँ देवता लोक पाल ऋषि सर्व ॥ सनतकुमारहि आदि जे ब्रह्मपुत्र हैं जैान । नाग सुपर्ण सिद्ध वर सूर्य्यादिक ग्रह तान ॥ सरिता सागर दिक विदिक साभ्रा सुगन्धर्व । महादेव हरि प्रजापति बास करत जहँ सर्व ॥ तीनिकुण्ड तहँ अग्निके जापर सुरसरि जाति । भानुसुतादेवी तहां जो त्रिभुवनमे ख्याति ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प०

गङ्गा यमुना सङ्ग मिलि लोकपावनी जौंन । गङ्गा यमुना मध्य है जघन भूमिको तौंन ॥ प्रयाग जघनको अन्त है जौन उपस्थ उदार । नाग सु कम्बल अश्वतर जिन्हे क्षेत्र अधिकार ॥ प्रतिष्ठान अरु भोगवति बिधि मख बेदी तौंन । बेद यज्ञ जहँ मूर्ति धरि बसत सुनऊ मतिभौंन ॥ करत उपासन देव ऋषि तहँ बिधिको अभिराम । यज्ञ करत ऋषि देव तहँ ग्रहगण सहित ललाम ॥ नाम पुण्य बर तीर्थमे सब सो अधिक प्रयाग । नाम लेत चलि जात तहँ पाप न रहत सु भाग ॥ देवनकी मखभूमि है बिधि बर विहित सुजान । जहां कोटि गुण होतहै थोरो दीन्हें दान ॥ बेदलोकके बचन तें नही फेरि ए भूप । जौ प्रयागमे मरणकी उपजै बुद्धि अनूप ॥ साठि कोटि अरु दश हजार जहँ तीरथ बसत सुजान । बेद शास्त्र सब लखि परत जेहां मूरतिमान ॥ गङ्गा यमुना सङ्गमे तीरथ परम ललाम । बासुकिको सो तीर्थहै भोगवती अभिराम ॥ अश्वमेधको फल लहत करत तहां सुस्नान । तहां हंस प्रयतन लसै तीर्थ अमोच महान ॥ दशाश्वमेधिक तीर्थ है गङ्गामे कुरु भूप । कुरुक्षेत्र सम सुरसरित जहँ जो न्हाय अनूप ॥ कनखल और प्रयागमे गङ्गा स्नान महान । पाय सहस्र न्ह कर्मके मिटै जहां करि स्नान ॥ स्नान करत गङ्गा सलिल भस्म करत इमि पाप । जैसे काष्ठ समूहकों पावक प्रबल प्रताप ॥ कृतयुगमे सब तीर्थ बर पुष्कर त्रेता पाय । द्वापरमे कुरुक्षेत्र त्यौं गङ्गा कलि सुखदाय ॥ पुष्करमे जो तपकरै देय महालय दान । मलयाचलमें अग्निमे जरै जो नर मतिमान ॥ अनसनब्रत भृगुतुङ्गमे करि छोडत जो प्रान । गङ्गा पुष्कर कुरुक्षेत्रमे सो फल कीन्हें स्नान ॥ कीर्तनतें पावन करति देति दरश तें शर्म । स्नान पान तें सप्त कुलतारति गङ्गा पर्म ॥ जबलों अस्थि मनुष्यको रहत सुरसरी माह । स्वर्ग बास तबलों करत सो सुनिए नरनाह ॥ अन्य तीर्थमे स्नान तें देवालयमे जौंन । गङ्गाको सेवन किए लहत पुण्य बर तौंन ॥ * ॥ श्लोकः ॥ * ॥

न गङ्गासदृशं तीर्थं न देवः केशवात्परं । ब्राह्मणेभ्यः परं नास्ति एवमाह पितामहः ॥

है गङ्गा जेहि देशमे देश तपोवन तौंन । सिद्ध क्षेत्र सो भूमिहै सुरसिरता तट जौंन ॥
साधु बिप्र आत्मज सुहृद शिष्य जो है अनुकूल । यह रहस्य तासों कही सत्य धर्मको मूल ॥
धन्य पूत यह स्वर्गप्रद तीर्थ कथन अभिराम । गुह्य महर्षिनको महा पुण्य धर्मको धाम ॥
पाप हरण यह द्विजनके मध्य पढै गो जौंन । निर्मल व्हैकै जाय गो स्वर्ग लोककों तौंन ॥
श्रीप्रद अरिगण नाशकर मेधाजनक अनूप । जनकों आनदजनक यह तीर्थ कथन बर भूप ॥
पावै पुत्र अपुत्र जो अधन लहै धन साम । राजा जीतै भूमिकों बिप्र धन लहै ललाम ॥
शूद्र लहै मनकामकों बिप्र सु बिद्या पार । तीर्थ कथन यह जो सुनै शुचि व्है नित्य उदार ॥
गम्य अगम्य कहे सकल तीर्थ पुण्यकेधाम । जाय मानसिक वृत्ति सों जे अगम्य अभिराम ॥
देव ऋषिन्हकों साध्य है तीर्थ अगम्य सु जौंन । स्नान तहाँ ते करत हैं गगण मार्ग करि गौंन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुव्रत यहि विधि जाऊ तुम तीर्थन्हकों कुरुभूप । वृद्धि धर्मसों कीजिए परम धर्मको रूप ॥ ब०प०
आस्तिकतामे धारि मन नास्तिकताकों त्यागि । जाऊ मिलैगे तीर्थ ते सह सज्जन अनुरागि ॥
अव्रती अशुतात्मा अशुचि भीष्म क्रूर मति जास । नास्तिक ते नहि स्नानकों जात तीर्थके पास ॥
नित्यव्रती तुम धर्मके हौ दर्शी अभिराम। पिता पितामह देव ऋषि तोषित किए सलाम ॥
लोक वसुन्हको लहैागे तुम बास वसुसम भूप । नित्य कीर्तिकों लहऊगे भीष्म सुनऊ सु अनूप ॥

॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥

ऐसे कहिकै बिदा व्है ऋषि पुलस्त्य सम भान।भरे प्रीतिसों तब भए तेहा अन्तरध्यान ॥
आप्त तत्वदर्शी महा भीषम भूप समेत । गए चहूँ दिशि भूमिमे तीर्थ करनके हेत ॥
भई समाप्ति कथा परम तीर्थ कथनकी जैान । भरी पुण्य अतिमान सों पाप नाशिनी तैान ॥
यहि विधि तीरथ हेत जो फिरै भूमिमे भूप । अश्वमेध शत तें अधिक सो फल लहै अनूप ॥
तुम तातें अठगुण अधिक धर्म लहैागे भूप । यथा भीष्म पायो प्रथम करि यात्रा अनुरूप ॥
तो सँग यह ऋषिवृन्द सो तीर्थ करैगो सर्व । राक्षसगण जह रहत हैं बलसों भरो अखर्व ॥
तुमकों विना अगम्य है तीर्थ मनुजकों तैान।यह देवर्षि चरित्र वर तीर्थ कथन है जैान ॥
जो पढि है उठि प्रात सो होय पापसो मुक्त । पर्म धर्मको लहै गो तैान यथाविधि उक्त ॥
ऋषिन माह जे श्रेष्ठहै ते सब तुम्हरे साथ। तीर्थ करहि गे पुण्य तुम परम लहऊगे नाथ ॥
कुण्ड जठर बाल्मीक अरु कश्यप बिस्वामित्र। गैातम देवल अग्नित अरु मार्कण्डेय पवित्र ॥
भरद्वाज गालव बसिष्ठ मुनि उद्दालक तपधाम॥शैानक सह सुत व्यासमुनि दुर्बासा अभिराम॥
आवात्रि धैाम्य द्विजबृन्दसह महा मुनिनके साथ॥ इन तीर्थनके करनकों करु यात्रा कुरुनाथ ॥
यह महर्षि लोमस चलो आवत है तो पास । यात्रा कीजै तीर्थकों तिनके सँग मतिरास ॥
इनै सहित तुम तीर्थकों यात्रा करिहौ भूप । भूप महाभिषके सदृश लहिहौ कीर्ति अनूप ॥
यथा यजाति पुरुरवा भगीरथ नृपराम । यथा वृत्रहा तथा तुम सोभितहौ मतिधाम ॥
जैसे मनु इक्ष्वाकु पुरु बैण्य भूप यशवान । तैसे तुमहूँ लसतहौ धर्मराज मतिमान ॥
यथा मारिकै वृत्रहा दनुजन्हकों बलवान। त्रिभुवनको पालन करत कृपा सहित सुखदान ॥
तथा तुमऊ करि शत्रु क्षय प्रजा पालिहौ भूप । धरणीको तुम लहऊ गे धर्मनृपति अनुरूप ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

नारद मुनि ऐसें कियो आश्वासन सुखदान । आज्ञा लै नृपधर्म सों व्है गे अन्तरध्यान ॥
धर्मनृपति सो अर्थको चिन्तन करि ठहराय । तीर्थ गमनके पुण्यकों कहो ऋषिनसों जाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

म० स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिमानिना श्रीवन्दीजन काशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि तीर्थानुक्रमणिकावर्णनो नाम चयोदशोऽध्यायः ॥*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

भ्रातनको मत नियत विचारि । अज्ञा नारद को हिय धारि ॥ बूझो जाय धौम्यके पास । ऐसे धर्मनृपति मतिरास ॥ हम बिभत्सुकों पढयो जानि । दिव्यअस्त्र लीबैं जय खानि ॥ सो समर्थ बर वीर महान । छतो धनुर्धर कृष्ण समान ॥ नारद कहत जिष्णु यदुबीर । नर नारायण ऋषि रणधीर ॥ हमहू जानत धौम्यसुजान । सुने व्यासके वचन प्रमान ॥ योग्य शक्र दर्शनके जानि । हमहूँ पठ यो मति अनुमानि ॥ अस्त्रदिव्य लीबेकों सर्ब । जे अरिबनके दहन अखर्ब ॥ भीष्म द्रोण कृप अश्व त्थामा सकल अस्त्रवेत्ता बलधाम ॥ धार्तराष्ट्र तिनकों रण हेत । आदर करत अनेक सनेत ॥ चहत युद्ध पारथसो तौंन महाबली ए अतिरथ जौंन ॥ कर्ण सूतसुत जो बलवान । जानत दिव्यअस्त्र अति मान ॥ अनल समान युद्धमे जौंन । शर सम ज्वाल जास अतिगौंन ॥ धूलि धूम सम अस्त्र प्रपात । बर्धित करत सुयोधन बात ॥ सम सेना तृण गहन समान । तौंन सूतसुत अनल अमान ॥ कृष्ण वायुसों प्रेरित उद्ध । शरधारा धारे अतिक्रुद्ध ॥ धनु गाण्डीव इन्द्रधनु रूप । सदृश बलाका बाजि अनूप ॥ अर्जुन घनघमण्डसो बोर । बरसि बाणबर बुन्द गँभीर ॥ कर्ण कुटिल पावकको नाश । करिहि जिष्णु तब अति बलराश ॥ देवन्ह निकट शक्रसों पाय । दिव्यअस्त्र अर्जुन बरदाय ॥ ते सब अस्त्र धरें अभिराम । हम देखहिगे कब बलधाम ॥ ताहि बिना एहि बनमे पर्म । हम नहि लहत धौम्यसुनि सर्म ॥ बसिए और बिपिनिमे जाय । जह फल अन्न बऊल सुखदाय ॥ आज्ञा देऊ महामुनि तौंन । जहँ देखैं अर्जुन आगौंन ॥ आश्रम बिबिध सहित तपधाम । सर सरिता गिरि सहन ललाम ॥ जहँ तेहि बिपिनि चलऊ मुनि पर्म । बिना जिष्णु इत लहत न शर्म ॥ ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ तिन्हैं दीन मन उत्सुक देखि । समाधान मुनि कियो बिशेखि ॥ आश्रम जहाँ बसत तपधाम गिरि बन सर सरिता अभिराम ॥ कहत तौंन तुमसों हम भूप । सुनऊ शोकहर तौंन अनूप ॥ सहित द्रौपदी भ्रातन्ह बोर । सुनत लहऊगे पुण्य गभीर ॥ गए तहाँके शत गुण पर्म पुण्यलहौगे तुम नृपधर्म ॥ प्राचीदिशि मुनि सेवित जौंन । प्रथम कहत तुमसों नृप तौंन ॥ नैमिष तीर्थ प्रथम अभिराम । जहँ सबतीर्थ देवगण धाम ॥ जहँ गोमती पुण्यको भान । यज्ञभूमि देवनकी तौंन ॥ है गिरि गयनामक जहँ पर्म । तहाँ ब्रह्मशिर तीर्थ सधर्म ॥ जाके अर्थ कहे मुनि बैंन । पुत्र बऊत कीजै मतिऐंन ॥ तहँ तो कोऊ जाय गो एक । पिण्डदान करिहै सविवेक ॥ बृषो त्सर्ग कै करिहै तौंन । अश्वमेध करिहै कै जौंन ॥ दश पूरुव दश पर जे पित्र । करिहि तिन्हैं उद्धार प्रबित्र ॥ फल्गू नदी सु गयशिर यत्र । बट अक्षयकरणहै तत्र ॥ तहाँ देय पित्रन्हकों जौंन । अक्षय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

होय सुनऊ नृप तौंन ॥ प्राची दिशा कौशिकी नाम । बऊ फल मूल नदी अभिराम ॥ बिस्वामित्र वंप०
जहाँ मुनि धन्य । तप करिकै पायो ब्रह्मन्य ॥ गङ्गा नदी जहाँ सरबङ्ग । कियो भगीरथ जहँ बऊ यज्ञ ॥
देशपर्म उत्तम पाञ्चाल । तहाँ उत्पलावन सु बिशाल ॥ अतिहि मनोहर पुष्पित पर्म । मख कौशिक
जहँ कियो सधर्म ॥ जामदग्न्य जेहा सह बंश । बिस्वामित्रहि कियो प्रसंश ॥ कान्यकुब्जमे सुरपति
साथ । सोम पियो कौशिक मुनिनाथ ॥ क्षात्रधर्मको करिकै त्याग । भयो महामुनि विप्र सभाग ॥
अङ्ग यमुनाको सङ्गम जौंन । मुनि सेवित अति पावन तौंन ॥ जहाँ पितामह कीन्हों याग । याहीतें
सब कहत प्रयाग ॥ तहँ अगस्त्यको आश्रम रम्य । तहां तापसारम्य सु गम्य ॥ गिरि महेन्द्र भार्गवको
स्थान । जहँ बिधि कीन्हों मख बऊ मांन ॥ भागीरथी बसी जहँ जाय । बसत बिप्रतहँ तपत्रय काय ॥
केदाराश्रमहै अभिराम । जो मतङ्गमुनिको तपधाम ॥ गिरिकुण्डोद नाम अतिमान । कियो
तृषित नल जहँ जलपान ॥ जहाँ देवबन मुनिगण पर्म । नदीबाऊदा धारैं पर्म ॥ गिरिपर नन्दा
नदी ललाम । तीर्थ बऊत देवनके धाम ॥ पूर्व दिशामे तीरथ जौंन । विदित भूप हम बरणे तौंन ॥
तीनि दिशाके कहत ललाम । गिरि बन सरित सहित सुरधाम ॥ * ॥धौम्यउवाच ॥ * ॥ दक्षिण
दिशिमे तीरथ जौंन । भरे पुण्यसों सुनिए तौंन ॥ गोदावरी पुण्यमय आम । मुनिगण सेवित सुष
माधाम ॥ बेणी चक्ररथा जे सरित । पापबिमोचन जिनके चरित ॥ मुनिगण सेवित सुषमाधाम ।
नदी पयोष्णी अति अभिराम ॥ मार्कण्डेय महामुनि यत्र । नृग नृप कुलहि सराहत तत्र ॥ नृगके
यज्ञनमे मघवान । मदसों छके सोम करि पान ॥ महतदक्षिणा द्विजगण पाय । धनमद मत्त भए
सुखदाय ॥ तीर्थ बराह पयोष्णी माह । तास बायु लागत नरनाह ॥ आजन्मान्त पाप उडि जात ।
मूल तुङ्गसम तजि नर गात ॥ हरको तहाँ शिखर अभिराम । लखत ताहि पावत शिवधाम ॥ गङ्गा
दिक सबतीर्थ समान । एक पयोष्णी लसति सुजान ॥ जहँ माठरबन पुण्यद भूप । बरुणस्रोत
मिलिमे बर जूप ॥ ताके उत्तरदिशि अभिराम । लसत कण्वको आश्रम नाम ॥ बेदी शूर्पारकमे
लात । बर यज्ञदशि सुक्षत्रिको ख्यात ॥ तेहाँ चन्द्रा तीर्थ ललाम । तीर्थ अशोक तहाँ अभिराम ॥
है अगस्त्यको तीर्थ अनूप । बारुण द्रबिड देशमे भूप ॥ तहाँ कुमारी तीर्थ ललाम । है गोकर्ण तीर्थ
अभिराम ॥ शीत तोय ह्रदहै तह जौंन । दुर्लभ पापिनको है तौंन ॥ सो अगस्त्य शिष्याश्रम पर्म ।
तहँ बैदूर्य अटृसहै सर्म ॥ है चमसोद्भेदन अभिराम । है प्रभास जलनिधिढिग आम ॥ पिण्डारक
तहँ तीर्थ महान । सेवत जाको सुमुनि सुजान ॥ उज्जयन्त तहँ शिखर अनूप । तुरित सिद्धिदायक सो
भूप ॥ उज्जयन्तमे तपको जौंन । करै स्वर्ग पावतहै तौंन ॥ द्वारावती पुण्यकी राश । मधुसूदनको
जेहा बास ॥ प्रगट सु देव सनातन जौंन । धर्मरूप जगदात्मा तौंन ॥ तल बेदबिद जे द्विज पर्म ।
जाको कहत सनातन धर्म ॥ करत पबित्रनको जो पबित्र । जाके मङ्गलमई चरित्र ॥ कृष्ण देव देवन
को ईश । वास करत जेहां जगदीश ॥ इति पूरब दक्षिण दिशायां तीर्थवर्णम् । अथ पश्चिम दिशा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ पश्चिमदिशा अवन्ती जैन। ताके तीर्थ कहत सब तैंन ॥ नदी नर्मदा जहँ अभिराम । पश्चिम दिशिकों बहति ललाम ॥ त्रिभुवनमाह तीर्थहैं जैंन । बसत नर्मदामे सब तैंन ॥ देवन सङ्ग पितामह भूप । करत नर्मदा स्नान अनूप ॥ विश्वश्रवा मुमुनिको स्थान। धनद कियो जहँ यज्ञ महान॥ गिरि बैदूर्य्य शिखर अति चित्र । जामे अद्भुत स्वच्छ चरित्र ॥ तास शिखर पर सर अभिराम । फूले जामे कमल ललाम ॥ ऋदिनी तापे नदी पवित्र । ख्याए जाकों विश्वामित्र॥ जास तीर सतसङ्गम पाय । गिरे यजाति स्वर्गसों आय ॥ पायो फेरि लोकको भूप । नित्यधर्मसों भरे अनूप॥ तहा पुण्यऋदहै विख्यात।तहँ मैनाक अचल अवदात॥ तहाँ असित गिरिहै अभिराम । कच्छसेनमुनिको तहँ धाम॥ च्यवनाश्रम तहँ देत सुजान। तोक करे तप सिद्धि महान ॥ जम्बुमार्ग ऋषिनको तत्र । आश्रम परम ऋषिणके यत्र ॥ केतु माल तहँ गङ्गाद्वार। तहां सैन्धवारण्य उदार ॥ यहां ब्रह्मसर पुष्कर नाम। तहाँ ऋषिणको सन्ततधाम॥ पुष्कर मनसा करतस्मरण । करत सकल पातकको हरण ॥ स्वर्गवास पावतहै तैंन । स्नान करत पुष्करको जैंन ॥ इतिपश्चिमदिशायां तीर्थवर्णनम् ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ ⬭*⬭*⬭

तीर्थ उत्तरदिशामे जे पुण्यमय अभिराम । आयतन जे देवतनके कहत तैंन ललाम ॥तीर्थ मालिनि सरस्वति जहँ सिन्धु गामिनि पर्म। जहाँ यमुना तहँ ब्रह्मावतन तीर्थ सुधर्म॥यज्ञ करि मुनि जाय जामे करत अवभृथ स्नान। सहदेव भूपति कियो जाके तीर यज्ञ महान ॥ भरत भूपति किए तेहाँ अश्वमेध अनेका दान दीन्हों द्विजनकों मनमान सहित बिबेक॥ सरभङ्ग आश्रमहै जहाँ सर स्वती सरिता तीर।ऋषिन्ह सह तहँ बालखिल्यन्ह कियो यज्ञ गभीर॥दृषद्वती तहँ पुण्यपूरित नदी है अभिराम॥पाञ्चालमे न्यग्रोध नामक तीर्थ पुण्यदधाम॥ दालभ्य मुनिको परम आश्रम पुण्यमय अति मान। पलाश बन जहँ यज्ञ कीन्हों परशुराम महान॥किरात किन्नर बास गिरि बङ्क शिखर परम उदार।भेदि भागीरथी जाकों गई गङ्गा द्वार॥बसत करनखल माह सुरसरि तीर सनतकुमार। पुरुनामगिरि पूरूरवा जहँ भयो भूभर्तार॥कियो भृगु तप जहाँ सो भृगु तुङ्ग गिरि अभिराम।आदि अन्त अनन्त अव्यय बिसु आनदधाम ॥ तास आश्रम निकट बदरी विपिनके है भूष। उष्णतोया बहति गङ्गा जहाँ निर्मल रूप ॥ देखि परति सुवर्ण सिकता जहाँ बदरी पास । जाय करत प्रणाम हरिकों देव ऋषि मतिरास ॥ जहाँ नारायण तहाँ सबतीर्थ सुरगण धाम । पुण्य तप पर ब्रह्म आत्मा बिसु हरि अभिराम ॥ कहे क्षितिपर तीर्थ जेते देवतनके अैंन । जिन्हे सेवत देवगण गन्धर्व ऋषि भरि चैंन ॥ चलऊ भ्रातन्ह सहित द्विजगण तहाँकों बर भूप । सहित कृष्णा धर्मनृप धरि चित्तवृत्ति अनूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहत जैसें धर्मनृपसों धौम्य हे बर बैंन। देखि आवत परे लोमस महा मुनि तपऐंन ॥ द्विजन सह उटि धर्मनृप बर लियो आगें जाय। कियो पूजन दियो आसन दिव्य पूत मगाय ॥ आगमनको हेतु मुनिसों लगे बूझन भूप । कहन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लागे महामुनि कर हर्ष बचन अनूप ॥ फिरत हम सबलोकमे नृप गए सुरपतिधाम । तहां द०च०
सुरपति पास देखो जिष्णुकों अभिराम ॥ अर्द्ध आसन पै सो बैठो इन्द्रके बर बीर । देखि बिसय
भयो मेर चित्तमाहँ गभीर ॥ देवपति तव कहो हमसो जाऊ पाण्डव पास ॥ देखिवेकों तुम्हैं
आयो चित्र हैं। मतिरास ॥ बचनतें पुरुहूतके अरु जिष्णुके अभिराम । कहत हैं प्रिय बचन
तुमसों नृपति आनदधाम ॥ सहित भ्रातन्ह द्रौपदी सह भूप सुनिए तौंन । जिष्णुकों तुम दई
आज्ञा अस्त्र हेतुक जौंन ॥ प्राप्त अर्जुनकों भयो सो अस्त्र सुनिए भूप । ब्रह्मशिरहै नाम जाको
रौद्र रुद्रस्वरूप ॥ प्रगट अमृतसों भयो जो रौद्र अस्त्र महान । अस्त्र तौंन समंत्र पायो जिष्णु
सहित विधान ॥ शक्र वरुण कुबेर यमसों अस्त्र पाये चण्ड । वज्र पास समोहनास्त्र सु नाश
कारक दण्ड ॥ गन्धर्व विश्वावसु तनय सो तौर्य्यत्रिक सु महान । तौंन सहित विधान अर्जुन लहो है
मतिमान ॥ यहिभांति लहि कै अस्त्र सब गान्धर्व बिद्या जौंन । बसत सुरपति पास सो तो अनुज
अर्जुन तौंन ॥ जेहि अर्थ हमसों कहो सुरपति बचन यह अभिराम । सो अर्थ तुमसों कहत हैं
हम सुनऊ नृप मतिधाम ॥ जायकै नरलोकमे तुम बचन मेरे पर्म । कहऊ गे यहिभांति नियमित पाय कै नृपधर्म ॥ आइ है तो अनुज अर्जुन सहित अस्त्र अनूप । सुरनकों जो असक्य सो
करि कार्य्य दुष्कर भूप ॥ आपुकों तुम करऊ तपसों युक्त हे नृपधर्म । महत कारज हेतु है नहि
और तपसों पर्म ॥ कर्णकों हम यथाबिधिसों सुनऊ जानत भूप । सत्यवादी महोत्साही महाबलमय
रूप ॥ युद्धमे अति निपुण अतिरथ अस्त्र जानत सर्ब । है कुमार समान रनमे भानुतनय अखर्ब ॥
सव्यसाची महाभुज सो आइ है बरबीर । करऊ तबलों तीर्थयात्रा चहत जौंन गँभीर ॥ जौंन
सोमस महाऋषि फल कहै गे अभिराम । तौंन तौंन सुलहऊ गे फल तीर्थमाह ललाम ॥ कहे
सुरपति बचन ए हम कहे तुमसों जौंन । कहत हैं अब सुनऊ भूपति कहे अर्जुन तौंन ॥ धर्म
नृपकों धर्मसों तुम करऊ योजित जाय । धर्मके तुम सुमुनि जानत आपु सकल उपाय ॥ राजधर्म
समस्त जानत आपु हौ तपधाम । तीर्थके बर पुण्यसों चलि करऊ युक्त ललाम ॥ तीर्थकों जिहि
जाहि पाण्डव करहि तहँ गोदान । तथा तुम तहँ कीजियो इमि कहो जिष्णु सुजान ॥ होय
रक्षित तौंन तुमसों तीर्थमे सञ्चार । करत राक्षस नहीऊ हैं तिन्हे भयद उदार ॥ दधीचितें ज्यौं
शक्र रक्षित अङ्गिरसतें भान । तथा रक्षित करऊ पाण्डव जाय तपसनिधान ॥ देखि रक्षित भए
तुमतें पाण्डवनकों सर्ब । निकट तिनके जाहि गे नहि दनुज निर्ऋत अखर्ब ॥ इंद्र अर्जुन बचनतें
करि तुम्हे रक्षित भूप । तीर्थमे संग रावरे हम फिर हि गे सुखरूप ॥ बेर ह्वै हम तीर्थ सिगरे पूर्ब
देखे पर्म । बार तिसरी देखि हैं संग रावरे नृपधर्म ॥ तीर्थ यात्रा करी यह राजर्षि जे तपधाम ।
भए जे मनु आदि पूरब भरे तप अभिराम ॥ कुटिल पापी अज्ञान आलसी मूर्ख हैं नर जौंन । बक्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ पश्चिमदिशा अवन्ती जैान । ताके तीर्थ कहत सब तैान ॥ नदी नर्मदा जहँ अभिराम । पश्चिम दिशिकों बहति ललाम ॥ त्रिभुवनमाह तीर्थहैं जैान । बसत नर्मदामे सब तैान ॥ देवन सङ्ग पितामह भूप । करत नर्मदा स्नान अनूप ॥ विश्वअवा सुमुनिको स्थान । धनद कियो जहँ यज्ञ महान ॥ गिरि बैदूर्य्य शिखर अति चित्र । जामे अद्भुत स्वच्छ चरित्र ॥ तास शिखर पर सर अभिराम । फूले जामे कमल ललाम ॥ क्रदिनी तापै नदी पवित्र । ल्याए जाकों विश्वामित्र ॥ जास तीर सतसङ्गम पाय । गिरे यजाति स्वर्गसों आय ॥ पायो फेरि लोकको भूप । नित्यधर्मसों भरे अनूप ॥ तहा पुण्यक्रदहै विख्यात । तहँ मैनाक अचल अवदात ॥ तहाँ असित गिरिहै अभिराम । कच्छसेनमुनिको तहँ धाम ॥ च्यवनाश्रम तहँ देत सुजान । तोक करे तप सिद्धि महान ॥ जम्बुमार्ग ऋषिनको तत्र । आश्रम परम ऋषिणके यत्र ॥ केतु माल तहँ गङ्गाद्वार । तहां सैन्धवारण्य उदार ॥ यहां ब्रह्मसर पुष्कर नाम । तहाँ ऋषिणको सन्ततधाम ॥ पुष्कर मनसा करतस्मरण । करत सकल पातकको हरण ॥ स्वर्गवास पावतहै तैान । स्नान करत पुष्करको जैान ॥ इतिपश्चिमदिशायां तीर्थबर्णनम् ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ ⬭*⬭*⬭

तीर्थ उत्तरदिशामे जे पुण्यमय अभिराम । आयतन जे देवतनके कहत तैान ललाम ॥ तीर्थ मालिनि सरस्वति जहँ सिन्धु गामिनि पर्म । जहाँ यमुना तहँ प्लक्षावतन तीर्थ सुधर्म ॥ यज्ञ करि मुनि जाय जामे करत अवभृथ स्नान । सहदेव भूपति कियो जाके तीर यज्ञ महान ॥ भरत भूपति किए तेहाँ अश्वमेध अनेक । दान दीन्हों द्विजनकों मनमान सहित बिबेक ॥ सरभङ्ग आश्रमहै जहाँ सर स्वती सरिता तीर । ऋषिन्ह सह तहँ बालखिल्यन्ह कियो यज्ञ गभीर ॥ दृषद्वती तहँ पुण्यपूरित नदी है अभिराम ॥ पाञ्चालमे न्यग्रोध नामक तीर्थ पुण्यद माम ॥ दालभ्य मुनिको परम आश्रम पुण्यमय अति मान । पलाश बन जहँ यज्ञ कीन्हों परशुराम महान ॥ किरात किन्नर बास गिरि बङ्क शिखर परम उदार । भेदि भागीरथी जाकों गई गङ्गा द्वार ॥ बसत करनखल माह सुरसरि तीर सनतकुमार । पुरुनामगिरि पूरूरवा जहँ भयो भूभर्तार ॥ कियो भृगु तप जहाँ सो भृगु तुङ्ग गिरि अभिराम । आदि अन्त अनन्त अव्यय विष्णु आनदधाम ॥ तास आश्रम निकट बदरी विपिनके है भूप । उष्णतोया बहति गङ्गा जहाँ निर्मल रूप ॥ देखि परति सुवर्ण सिकता जहाँ बदरी पास । जाय करत प्रणाम हरिकों देव ऋषि मतिरास ॥ जहाँ नारायण तहाँ सबतीर्थ सुरगण धाम । पुण्य तप पर ब्रह्म आत्मा विष्णु हरि अभिराम ॥ कहे क्षितिपर तीर्थ जेते देवतनके ऐन । जिन्हे सेवत देवगण गन्धर्व ऋषि भरि चैन ॥ चलऊ भ्रातन्ह सहित द्विजगण तहाँकों बर भूप । सहित कृष्णा धर्मनृप धरि चित्तवृत्ति अनूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहत जैसें धर्मनृपसों धौम्य हे बर बैन । देखि आवत परे लोमस महा मुनि तपऐन ॥ द्विजन सह उठि धर्मनृप बर लियो आगें जाय । कियो पूजन दियो आसन दिव्य पूत मगाय ॥ आगमनको हेतु मुनिसों लगे बूझन भूप । कहन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आवे महामुनि कर हर्ष बचन अनूप ॥ फिरत हम सबलोकमे नृप गए सुरपतिधाम । तहां द०७०
सुरपति पास देखो जिष्णुकों अभिराम ॥ अई आसन पे सो बैठो इन्द्रके वर बीर । देखि विस्मय
भयो मेर चित्तमाहँ गभीर ॥ देवपति तव कहो हमसो जाऊ पाण्डव पास ॥ देखिवेकों तुम्हैं
आयो शिघ्र हौं मतिरास ॥ बचनतें पुरुहूतके अरु जिष्णुके अभिराम । कहत हैं प्रिय बचन
तुमसों नृपति आनदधाम ॥ सहित भ्रातन्ह द्रौपदी सह भूप सुनिए तौंन । जिष्णुकों तुम दई
आज्ञा अस्त्र हेतुक जौंन ॥ प्राप्त अर्जुनकों भयो सो अस्त्र सुनिए भूप । ब्रह्मशिर है नाम जाको
रौद्र रुद्रस्वरूप ॥ प्रगट अमृतसों भयो जो रौद्र अस्त्र महान । अस्त्र तौंन समंत्र पायो जिष्णु
सहित विधान ॥ शक्र वरुण कुबेर यमसों अस्त्र पाये चण्ड । वज्र पास समोहनास्त्र सु नाश
कारक दण्ड ॥ गन्धर्व विश्वावसु तनय सो तौर्य्यत्रिक सु महान । तौंन सहित विधान अर्जुन लहो है
मतिमान ॥ यहिभांति लहि कै अस्त्र सब गान्धर्व विद्या जौंन । बसत सुरपति पास सो तो अनुज
अर्जुन तौंन ॥ जेहि अर्थ हमसों कहो सुरपति बचन यह अभिराम । सो अर्थ तुमसों कहत हैं
हम सुनऊ नृप मतिधाम ॥ जायकै नरलोकमे तुम बचन मेरे पर्म । कहऊ गे यहिभांति नियमित पाय कै नृपधर्म ॥ आइ है तो अनुज अर्जुन सहित अस्त्र अनूप । सुरनकों जो असक्य सो
करि कार्य्य दुष्कर भूप ॥ आपुकों तुम करऊ तपसों युक्त हे नृपधर्म । महत कारज हेतु है नहि
और तपसों पर्म ॥ कर्णकों हम यथाबिधिसों सुनऊ जानत भूप । सत्यवादी महोत्साही महाबलमय
रूप ॥ युद्धमे अति निपुण अतिरथ अस्त्र जानत सर्ब । है कुमार समान रनमे भानुतनय अखर्ब ॥
सव्यसाची महाभुज सो आइ है बरबीर । करऊ तबलों तीर्थयात्रा चहत जौंन गँभीर ॥ जौंन
लोमस महाऋषि फल कहै गे अभिराम । तौंन तौंन सुलहऊ गे फल तीर्थमाह ललाम ॥ कहे
सुरपति बचन ए हम कहे तुमसों जौंन । कहत हैं अब सुनऊ भूपति कहे अर्जुन तौंन ॥ धर्म
नृपकों धर्मसों तुम करऊ योजित जाय । धर्मके तुम सुमुनि जानत आपु सकल उपाय ॥ राजधर्म
समस्त जानत आपु हौ तपधाम । तीर्थके बर पुण्यसों चलि करऊ युक्त ललाम ॥ तीर्थकों जिहि
जाहि पाण्डव करहि तहँ गोदान । तथा तुम तहँ कीजियो इमि कहो जिष्णु सुजान ॥ होय
रक्षित तौंन तुमसों तीर्थमे सञ्चार । करत राक्षस नहीऊ हैं तिन्हे भयद उदार ॥ दयोचितें ज्यौं
शक्र रक्षित अङ्गिरसतें भान । तथा रक्षित करऊ पाण्डव जाय तपसनिधान ॥ देखि रक्षित भए
तुमतें पाण्डवनकों सर्ब । निकट तिनके जाहि गे नहि दनुज निर्ऋत अर्ब ॥ इंद्र अर्जुन बचनतें
करि तुम्हे रक्षित भूप । तीर्थमे संग रावरे हम फिर हि गे सुखरूप ॥ बेर द्वै हम तीर्थ सिगरे पूर्ब
देखे पर्म । बार तिसरी देखि हैं सँग रावरे नृपधर्म ॥ तीर्थ यात्रा करी यह राजर्षि जे तपधाम ।
भए जे मनु आदि पूरब भरे तप अभिराम ॥ कुटिल पापी अशुद्ध आत्मा मूर्ख हैं नर जौंन । बक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० मत सुस्नान करत न तीर्थमे नर तैंान ॥ धर्ममति धर्मज्ञ हौ तुम सत्यबादी पर्म। बिषयसों हौ मुक्त लहि हौ धर्मको नृपधर्म ॥ गय भगीरथ अरु ययाति सु भए जैसे भूप। धर्ममे तुम धर्मनृप हौ तिन्हैं सदृश अनूप ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ हर्षतें यहि बाक्यको है परम उत्तर जौंन। महामुनि जो दीजिए सो देखि परत न तैंान ॥ स्वर्ण सुरपति करत जाको अधिक तासों कौंन। जास भ्राता जिष्णु तापर मिले तुम तपधैंान ॥ तीर्थ दर्शनकों कहत तुम हमै जो तपधाम। धौम्यसों सुनि भई ही मति हमैं तैंान ललाम ॥ तीर्थके जब गमनको तुम करऊ सुमुनि बिचार। राबरे हम संङ्ग तब ही चलै सुतप अगार ॥ गमनमे लखि बुद्धि नृपकी कहे लोमस बैंन। स्वल्प कीजै संङ्गके समुदायको मतिऐंन ॥ बिदा कीजै भिक्षु ब्राह्मण भो धनार्थी जौंन। क्षुधा पथश्रम शीतकों सहि सकै गे नहि तैंान ॥ पाकशासन्ह बिदा कीजै भृत्यको समुदाय। रहौं हास्तिन नगरमे धृतराष्ट्र नृप पैं जाय ॥ बैरजनन बश प्रीति जे तो सङ्ग है कुरुभूप। बसौं अपने धाममे ते जाय कै सुखरूप ॥ बसन भोजन देहि गे धृतराष्ट्र तिन हि बिशाल। न तरु देहैं प्रीतिसों तब भूमिपति पाञ्चाल ॥ यती पुरजन बिप्रगण बऊ भार पीडित जौंन। चले हास्तिन नगरकों सब भरे करुणा तैंान ॥ तिन्हैं नृप धृतराष्ट्र दीन्हों जीबिका अनुरूप। बसे हास्तिन नगरमे ते भरे आनद भूप ॥ तीर्थके जे योग्य ब्राह्मण बन्धुबर्ग समेत। बसे काम्यक बिपिनिमे निशि तीनि नियमितचेत ॥ करत याचा भूप पैं जे बिपिनिबासी बिप्र। आय कै ते कहन लागे बचन जैसे छिप्र ॥ जात हौ तुम सहित भ्रातन्ह तीर्थकों नृपधर्म। सङ्ग लोमसके महामुनि बृन्द लीन्हें पर्म ॥ हीन सक्य सु हमैं तुम बिन और को कुरुभूप। परमतीर्थ अगम्यकों लै जाय गो सुखरूप ॥ व्याघ्र निर्ऋत बराह गिरि बनमाह दुर्गम पथ। जाय हमसे सकै कैसें बिप्र दुर्बल तत्र ॥ शूर भ्राता राबरे ए महा धनुधर बीर। करै गे हम तीर्थ तिनतें होय रक्षित धीर ॥ कृपातें तब तीर्थ करि हम पुण्य लहि हैं पर्म। राजर्षि अष्टक लोम पाद समान तुम नृपधर्म ॥ प्रभास आदिक तीर्थ सुगिरि महेन्द्र आदिक जौंन। गङ्गादि सरिता बनस्थली पुलहादि वरणी तैंान ॥ देखि हैं हम तैंान चलि तब सङ्गमे रणधीर। भरतनृपके लोकको तुम लहऊ गे कुरुबीर ॥ राबरी है बिप्रमे जौं भूप भक्ति महान। बिप्र आज्ञा दीजिए करि कृपाकों सुखदान ॥ तीर्थ है जे व्याघ्र राक्षस बिघ्नकरसों घोर। तहाँ रक्षित करऊ गे तुम हमैं नृप भुजजोर ॥ तीर्थ नारद धौम्य लोमस कहे तुमसों जौंन। सहित भ्रातन्ह कीजिए बिधि बिहित तिनमे गौंन ॥ निष्पाप लोमससों सुपालित होय कै अभिराम। बचन तिनके सुनत भूपति भए पुलकित साम ॥ सहित भ्रातन्ह धर्मनृप तिन ऋषिणके सुनि बैंन। सङ्ग चलिबेकों कियो स्वीकार सादर चैंन ॥ लेय आज्ञा धौम्य लोमस महामुनिकी भूप। सहित भ्रातन्ह गमनमे तब धरो सुमन अनूप ॥ व्यास नारद सहित पर्वत महामुनि तपधास। तहाँ आए धर्मनृपकों देखिबैं अभिराम ॥ कियो पूजित

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अथा विधिसों तिन्हैं भूपति धर्म। सत्कार लहि ते भूपसों इमि वचन बोले पर्म ॥ ऋषयऊचुः॥ व०प०
सहित भ्रातन्ह नृपयुधिष्ठिर गहऊ ऋजुता जौंन। प्रथम करि मनु शुद्ध कीजै तीर्थकों फिरि गौंन॥ नियम कायिककों कहत बुध सुव्रत मानुष पर्म। मन बुद्धिको जो शुद्धि सो व्रत दैव भूपति धर्म॥ तीर्थको फल लेऊ तुम धरि दैव व्रतको भूप। कियो सो स्वीकार कृष्णा सहित नृपति अनूप॥ मुनिन्ह तब स्वस्त्ययन कीन्हों दिव्य मानुष जौंन। चरण नारद व्यास लोमस धौम्यके सुख भौंन॥ बन्दि पर्वत महाऋषिके पाय पावन पर्म। विपिनि बाशी मुनिनको सँग लेय कै नृपधर्म॥ मार्गशीर्ष बितीत करि कै पौषमे अभिराम। चीर अजिन सु धारि कै दृढ जटाजूट सलाम॥ पहिरि कवच अभेद्य तीरथकों चले कुरुभूप। इन्द्रसेन सो सुरथ पन्द्रह लए सज्ज अनूप॥ भृत्य लीन्हों और जे अनुकूल हे मतिमान। लए आयुध सकल अपने आपने बलवान॥ चले पाण्डव पूर्वदिशिको तीर्थ याचा हेत। भरे आनद करे मनको शान्त नियमित चेत॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनायकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि तीर्थ यात्रावर्णनोनाम चतुर्दशो ध्यायः॥

आपनो नहि दोष जानत कछू हम मुनिमौर। भए दुःखित नहीं हमसों होय गे नृप और॥ लहत बृद्धि समृद्ध दुर्जन पाप दुर्गुन भौंन। कहऊ लोमस महा मुनि हे हेतु यामे कौंन॥ लोमसउवाच॥ पापको श्री बढति कछुदिन करति पाप प्रकाश। कछूदिनमे लहति है सो मूलसहित बिनाश॥ देव दनुजनको सुनो तुम यथा बृद्धि निपात। धर्मको श्री पापको त्यों बढति पावति घात॥ लखो हम यह चरित सिगरो सत्य युगमे भूप। धर्मको श्री नित्य है श्री पापकी हतँ रूप॥ करऊ तुम यह तीर्थ यात्रारूप पुण्य महान। लहऊ गे श्री आपनी फिरि तौंन सुरन्ह समान॥ भगीरथ वसु मनु सगर पुरु पुरूरव जिमि भूप। तीर्थगमन स्नानतें लहि पुण्य पावनरूप॥ लहऊ गे यश जगतमे श्री सहित राज्य अनूप। मुचकुन्द मान्धाता तथा तुम धर्ममखके जूप॥ लहऊ गे सम देवतनके कीर्ति यश अभिराम। पापसों लहि है सुयोधन अचिर अन्तकधाम॥ बसत बनमे जहां तहँ द्विजवृन्द लीन्ह साथ। तीर्थ नैमिषबिपिनिके ढिग गए कुरुकुलनाथ॥ पाण्डवन करि गोमतीके तीर्थमे सुस्नान। द्विजनकों वऊ धनु धनको कियो तेहँा दान॥ तहँा तर्पण देव पित्रन्हकों सबिधि करि भूप। गए कन्या तीर्थकों गोतीर्थकों शुचिरूप॥ कालकोटीमे कियो विषप्रस्थ गिरि पर बास। बाऊदामे स्नान कीन्हों जाय कै मतिरास॥ देवयज्ञ स्थान जाय प्रयागमे तब भूप। स्नान करि कै बसे तेहां धरे व्रत शुचिरूप॥ कालिन्दी सुरसरित सङ्गम मे सु दै बऊदान। ब्रह्मवेदीतें कियो सह द्विजन्ह भूप पयान॥ बसत पथमे द्विजनकों फल मूल देत अहार। गए गयशिर नाम गिरितँह द्विजन सहित उदार॥ पुण्यमय जहँ पुलिन पूरित महा सरिता पर्म। दिव्य कूट विचित्र है जहँ धरा धर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० धुर धर्म ॥ ऋषिन्ह सेवित ब्रह्मसर जहँ लसत पुण्य स्वरूप । गए सुमुनि अगस्त्य जहँ यम राज पसुनु भूप ॥ बसत हैं यमराज जेहाँ नित्य पूरित चाव । नदिनकों जँहतें भयो है परम आविर्भाव ॥ नित्य ताके निकट शङ्कर रहत कीन्हें बास । तहाँ कीन्हों पाण्डवन बसि यज्ञ चातुर्मास ॥ तहाँ अक्षयनाम बट फल देत अक्षय जौंन । द्विजन सह उपवास कीन्हों चाहि भूपति तौंन ॥ तहाँ आए बिप्र शतसह यज्ञमे तपधाम । वेदविद ते कहन लागे कथा पुण्य ललाम ॥ समठ नामक बिप्र लागो कथा कहन अनूप । अमूर्तरयस महीपको सुत भयो जो गय भूप ॥ * ॥ समठउवाच ॥ * ॥ अमूर्तरयस महीपको सुत भयो हो गय जौंन । पुण्यके हम कर्म ताके कहत सुनिए तौंन ॥ यज्ञमे बऊअन्नके गिरि किए शतसह भूप ॥ दहीकी घृतकी सु कीन्ही सरित कृत्रिम रूप ॥ प्रवाह करि कै व्यञ्जननके नित्य शतसह देत । और ब्राह्मण करत भोजन पूत पावनचेत ॥ दक्षिणाके समय नभवे भरत ब्राह्मण सोर । वेदधुनिते सुनत हो नहिँ शब्द कोऊ ओर ॥ अन्न पान सुदानको दिशि देश देशनमाह । बिप्र गावत फिरथ गाथा जास हे नरनाह ॥ पूर्व काहूँ कियो नहि अब करै गो नहि भूप । यज्ञमे जो कियो गयनृप दान अनुपमरूप ॥ भये गयके यज्ञमे जे दक्ष देव महान । अन्यके ते हव्यकों ले सकत ह नहि दान ॥ गगणतारा सरित सिकता वृष्टि बिन्दु समान । सकै को गणि तथा गयके यज्ञ अगन सुजान ॥ करे यहि बिधि यज्ञ अनगण भूप गय अभिराम । हे युधिष्ठिर भूप यहि सरपास परम ललाम ॥ तहातें तव चले भूपति देइ दान महान । गए कुम्भज महामुनिको जहाँ परम स्थान ॥ लगे लोमससों सु बूझन तहाँ इमि नृपधर्म । केहि हेतु बातापी हि मारो सुमुनि कुम्भज पर्म ॥ रहो कौंन प्रभाव तासे दनुजमे अतिमान । केहि अर्थ कुम्भज महा मुनिको भयो कोप महान ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ महिमतीपुरमे रहो इल्वल दैत्य मायाभान । बातापि नामक रहो ताको अनुज भूपति तान ॥ तपयुक्त ब्राह्मण एकसों तेहि कहें ऐसे बैंन । इन्द्रके सम पुत्र हमको दीजिए तपऐंन ॥ नहीं ताको दियो ब्राह्मण पुत्र इन्द्र समान । क्रोध तव तेहिँ बिप्र ऊपर कियो अमित अमान ॥ करै तबतें दैत्य इल्वल अनुज छाग स्वरूप । मारि ताकों रींधि भोजन देइ द्विजकों भूप ॥ करै इल्वल भरेको जेहि बचनसों आव्हान । देह धरि सो तहां आवै जीव तान सुजान ॥ आव्हानअपने अनुजको तब करै तान पुकारि । तौंन मायावी कढे तब उदर द्विजको फारि ॥ यहिभाँति खाए द्विजनकों सो देय फिरि फिरि रष्ट । हने इल्वल बिप्र शतसह सो बातापी दुष्ट ॥ भए [illegible] सुमुनि अगस्त्य देखि चरित्र । अधो मुख करि कूपमे सब परे लटकत पित्र ॥ तिन्ह [illegible] लटकत हौ कहौ तुम कौंन । चहत सन्तति कहो तिन हम पित्र तेा तपभान ॥ [illegible] सन्तान उत्तम एक । मोक्ष तौ यहिनर्कसों हम लहैं सहित बिवेक ॥ कहो तिनसों सुमुनि कुम्भज कहत हौ तुम जौंन । तजऊ मानसदुःख तुम हम ऐसि करि है तौंन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

करण चिन्ता लगे मुनिवर प्रसवको सुस्थान। प्रसव अर्थ न लखत सुखी कछु आपु समान॥
जेहि जीवको जो अङ्ग सुन्दर लखेा ताको रूप। लेइ विरचो मानसिक वर वाम मुनिवर भूप॥
विदर्भ पति पुत्रार्थ तप हेा करत ताको तैान। धरी महिषीमाह ताकी सिद्धिको मुनिभैान॥
तहां जनमी सदृश विद्युत ज्योतिमय अभिराम। भई वर्द्धित अचिर सेा लहि समयकेां गुण धाम॥ ताहि जन्मतमाच भूप बेालायकै वर विप्र। जन्म कर्म विधान भावी लगे बूझन क्षिप्र॥
जन्म तास प्रसंगि विप्रन्ह कहेा अति अभिराम। जन्म कृत्त विचारि राखेा लेापामुद्रा नाम॥
कढति पवतें पद्मिनी त्यैा भई वर्द्धित तैान। अग्निकैसी शिखा राजति महा छविकी भैान॥
यौवनस्थ विलेाकि ताकेां सखी शत सँग भूप। राखि दीन्हीं तितिक दासी भजहि जे अनुरूप॥
यौवनस्थ सुशील सुन्दरि भरी गुणगण धर्म। नही काहूँ आय मागेा भूमिपति नृपधर्म॥ देखि ताहि विदर्भ भूपति भरी यौवन रूप। काहि दीजै कन्यका यह भयेा चिन्तित भूप॥ महामुनि अह कार्य्य येाग्य विचारि ताहि ललाम। विदर्भपतिसेां जाय मागेा कन्यका अभिराम॥ *॥
अगस्त्य उवाच॥ *॥ भूप चहत विवाह करिबैं पुत्र कारण धर्म। लेापामुद्रहि देउ हमकेां मानि बचन सुधर्म॥ सुनत मुनिके वचन भूपति भयेा व्यथित अचेत। नही नाहीं सकत हैं करि जनत हैं नहि देत॥ जाय रानी पास भूपति कहे ऐसें बैन। दहै गेा कोपाग्निसेां यह महामुनि तपअन॥
देखि दुःखित सहित माता पिताकेां अतिमान। लेापामुद्रै आय ऐसे कहे बचन सुजान॥ तात मेरे हेतु कीजै नही पीडित चित्त। देउ मेाहि अगस्त्यकेां तुम करउ त्रास निवृत्त॥ सुताके सुनि बचन भूप अगस्त्यकेां अभिराम। दई विधिवत ताहि कन्या महा छविकी धाम॥ लेापा महासेां कहेा तब महामुनि इमि बैन। छेारि डारउ बसन भूषण येाग्य तुमकेां हैं न॥ चीर वल्कल अजिन धारउ तजउ एकौगेय। धरउ मम सम सुव्रत सुन्दरि जैान आनद देय॥ गए गङ्गाद्वारकेां सह भारजा तपधाम। उग्र तप तहँ करण लागे त्रिया सहित ललाम॥ भूरि आदर पाय मुनिसेां भरी प्रीति महान। करति सेवन भई तत्पर भरी मेाद सुजान॥ करत सुमुनि विदर्भजा पैं प्रीति अति अनुरूप। ताहि भेा बउकाल बीतें चतुस्नान अनूप॥ तास सेवा शैाच तप वर देखि सुमुनि महान। मैथुनार्थ सु भूप जाको कियेा मुनि आह्वान॥ कहन मुनिसेां लगी सुन्दरि युगल जेारे पानि। विहँसि लेाचन किए नमित सु आजसेां सुखदानि॥ प्रजा कारण नियत भार्य्या बरत पति अभिराम। हेाय तुमसे प्रीति मम मुनि करउ तात ललाम॥
पिताके गृह यथा मम हेा शयन शय्या साथ। तथा मन्दिर शयनमे मुनि भजउ मेरे नाथ॥
सहित भूषण बसन सुन्दर चहति देखेा मेाहि। सहित भूषण बसन उत्तम भजउ हे प्रभु मेाहि॥
अजिन बसन कषाय रति रुचि करत हैं न ललाम। हेाम नहि अपवित्र भूषण बसन जे अभिराम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० ॥ अगस्त्य उवाच ॥ तौन मेरे है न धन तो पिताके है जौंन॥ लोपामुद्रोवाच ॥ ईश तुम सब जगतके धन हरण से तपभौंन॥ अगस्त्यउवाच॥ कहति हौ तुम सत्य सो तप विघ्नकारक बाम। होय नहि तप विघ्न जातें कहऊ तौंन सलाम॥ लोपामुद्रोवाच ॥ स्वल्पबाकी रहो मम ऋतु काल हे तपधाम। और भाँति न आइहैं हम पास तो अभिराम॥ चहति हौं तो धर्मको नहि लोप हे सुखदान। एहि भाँति मेरी कामनाकों करऊ पूर्ण सुजान ॥ अगस्त्यउवाच ॥ तो कामनाके हेत हम यह कियो नियत बिचार। जातहैं धन हेतु हम तुम इहा बसऊ उदार ॥ लोमसउवाच॥ चले सुमुनि अगस्त्य मागन बित्तकों अतिमान । श्रुतर्बाणमहीप हो जहँ राजऋषि सुखदान ॥ सुनत आगम महामुनिकों श्रुतर्बाण नरेश। आइ आगें पूजिकै ले गयो अपने देश ॥ जोरि अञ्जलि आगमनको हेतु बूझो भूप। अगस्त्यउवाच॥ इहाँ हम तिनिपाल आए चाहि बित्त अनूप ॥ होय काहूकों न पीडा यथाशक्ति सुजान। देऊ हमकों बित्त अपने भागमे मतिमान॥ लोमसउवाच॥ आय व्यय सु समान मुनिसों समुझि बोले भूप। होय अधिक सो लीजिए धन आपु सुतप अनूप॥ आय व्यय सम देखि सम मति चित्तमे निरधारि। लेत पीडा होय गी जनमाह महत बिचारि॥ श्रुतर्बाण समेत मुनि ब्रध्न्व हों जहँ भूप। गए तहँ तेंहि आय पूजन कियो सबिधि अनूप । भूप बूझो महामुनिसों आगमनकों मर्म्म। कहो मुनि हम बित्तमागन इहां आए पर्म्म ॥ होय काहूँकों न पीडा यथा शक्ति सुजान। देऊ हमकों बित्त अपने भागमे मतिमान ॥ लोमसउबाच ॥ आय व्यय सु समान मुनिसोंसमुझि बोले भूप। होय अधिक सो लीजिए धन आपु सुतप अनूप॥ आय व्यय सम देखि सम मति चित्तमे निरधारि। लेत पीडा होयगी जनमाह महत बिचारि ॥ श्रुतर्बाण ब्रध्न्व सह प्रसदस्युके गे पास। आइ आगे कियो पूजन यथाबिधि मतिरास॥ भूप बूझो महामुनिसों आगमनकों मर्म्म। कहो मुनि हम बित्त मागन इहा आए पर्म्म ॥ होय काहूकों न पीडा यथाशक्ति सुजान ॥ देऊ हमकों बित्त अपने भागमे मतिमान॥ लोमसउबाच॥ आय व्यय सु समान मुनिसों समुझि बोले भूप। होय अधिक सो लीजिए धन आपु सुतप अनूप॥ आय व्यय सम देखि सम मति चित्तमे निरधारि। लेत पीडा होय गी जनमाह महत बिचारि॥ ते भूप तीनौ परस्पर यह कहो मंत्र बिचारि। चलऊ मुनि जहँ दैत्य इल्वल रहो बऊ धन धारि॥ तहाँ हम सब जाय तासों मागिए बसु दान। लोमसउबाच॥ बित्त तासोंमागिबो है उचित हमहि समान। गए ते तब सकल इल्वल पास सह मुनि भूप॥ देखि इल्वल तिन्हैं आवत सहित मुनि अनुरूप॥ आतिथ्य तिनको कियो चितमे राखि छल बलवान। बातापि भ्राताकों तथा बिधि पक्व करि सबिधान। देखि शङ्कित भए ते राजर्षि मनमे भूप ॥ जानिकै बातापिको सो कर्म दुष्कर रूप ॥ समाधान सु कियो तिनकों देखि मुनि भयमान ॥ कहो याकों खाय करिहैं पचित हम सह प्रान ॥ गए ते नृप खानकों तब जाय तहँ मुनि भूप। पीठप तब जाय बैठे भक्ष्यकों शुचि रूप ॥ बिहँसि इल्वल परसि दीन्हों ताहि मांस अखर्ब। खाय लीन्हों महामुनि बातापिको पल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सर्ब ॥ बातापिको आव्हान इल्वल करण लागो चाहि। अपान बायु पमान मुनि तब छोठि दीन्हों ताहि ॥ निकसिऐ बातापि फिरि फिरि कहो इल्वल बैंन। कहो तासों बिहँसिकै तब महामुनि तपऐन ॥ निकसि आवैं कहातें हम दियो ताहि पचाय। भयो बिबरण जानि इल्वल पचित ताको काय ॥ जोरि पाणि अमात्य सह इमि कहन लागो बैंन। केहि अर्थ आए इहां कहिए करैं सो तपऐंन॥ अगस्त्यउबाच॥जानिकै हम तुम्हैं आए नृपन्ह सह धनवान।देऊ भूपन्ह सहित हमकों महाधन मतिमान॥ कै प्रणाम मुनिन्द्रसों इमि कहे इल्वल बैंन। दियो चाहत तुम्हैं हम जो कहऊ सो तपऐंन ॥ अगस्त्यउबाच ॥ अयुत गो सह अयुत सुबरण नृपनकों एक एक। कनक रथ सह द्विगुण हमकों देऊगे सबिबेक ॥ असुर तासों अधिक कछु धन दियो तिन्हहिँ ललाम। बिराव और सुराव हय युत कनकरथ अभिराम ॥ सहित धन सह नृपन्ह मुनिकों तुरगँ अतिगतिमान। सुमुनि आश्रमकों गए ते अश्व हे सुखदान। नृपन्ह सुमुनि निदेश लहि किए स्वपुरकों तब गौंन ॥ कियो पत्नीको सुबांछित महामुनि हो जौंन ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि अगस्त्यमुनिनाबातापिभक्षणबर्णनोनाम पञ्चदशमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ लोपामुद्रोबाच ॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

हे भगवान कियो तुम सर्ब। जों मो बांछित रहो अखर्ब॥ करऊ पुत्र मोमे उतपंन्न। एक बार बिक्रम सम्पन्न॥ अगस्त्यउबाच ॥सुन्दरि हमहैं तुष्ट महान।तो सुबृत्ति लखिबो सुखदान॥भामिनि सुनिए पुत्रबिचार। तुम्हैं रुचै सो लेऊ उदार॥ सहस लेऊ जगजन सम तान।कै शत लेऊ सहस सम जौंन॥कै दश लेऊ हजार समान। कै सहस्र सम एक सुजान॥ लोपामुद्रोबाच॥एक पुत्र जो सहस समान। तौंन दीजिए मुनि सुखदान॥ कहि तथास्तु मुनि आनद पाय। तासों सङ्गम कीन्हों जाय॥ ताहि गर्भ दैकै अभिराम।आपु गए बनकों तपधाम॥बनकों गए सुमुनि अवदात।बाढो गर्भ बर्षलों सात ॥ बीतो बर्ष सात जब भूप। भयो पुत्र अति मतिमय रूप॥ ज्वलन समान देखि अभिराम। दृढस्यु धरो ताको मुनि नाम ॥ बेद साङ्ग उपनिषद समेत।बालक पढत ज्ञानमय चेत॥ होम हेत ईन्षनको भार। गयो सो मुनिपहँ लएँ उदार ॥ इध्यबाह तातैं यह नाम। कहो अगस्त्य देखि बल धाम ॥ देखि तथाबिधि पुत्र अनूप। भए प्रसन्न महामुनि भूप ॥ तब अगस्त्यके पितर अतोक। प्राप्त भए जे उत्तम लोक ॥ तबसों हैं यह आश्रम ख्यात। मुनि अगस्त्यको अति अवदात ॥ भागीरथी लखऊ नृपधर्म। सेवत जाहि देव ऋषि पर्म ॥ यथा पताका प्रेरित बात। तथा धार धारैं अवदात॥ आय दिशा दक्षिणकों पर्म। माता सम पालति जन धर्म॥ हरके जठाजूटसों आय। भई सिन्धु महिषी सुखदाय ॥ पुण्यमई सुरसरिमे भूप। करऊ यथेष्टस्नान अनूप ॥ लोमसउबाच ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० सुनऊ युधिष्ठिर नृप अवदात । यह गृभुतीर्थ जगतमे ख्यात ॥ परशुराम जहँ करिकै स्नान । फिरि हृततेज लहो अतिमान ॥ सह भ्रातन्ह भूप । स्नान करऊ दै दान अनूप ॥ हरो सुयोधन तेजस तान । धर्म भूप लहिहौ फिरि तान ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सहकृष्णा सह भ्रातन्ह स्नान । कियो धर्मनृप भूप सुजान ॥ देव पित्र तर्पण सविधान । करि दीन्हों बिप्रन्हकों दान ॥ भए पाय तेजस अतिमान । सिंह समरजेता बलवान ॥ लोमससों पूछो नृपधर्म । परशुराम तेजस अतिपर्म ॥ कौनभाँति केहि हरो ललाम । तान कहौ हमसों तपधाम ॥ *॥ लोमस उवाच ॥ * ॥ परशुरामको जे जस हर्ष । सुनऊ भूप करि कहतस्पर्ष ॥ भए पुत्र दशरथके भूप । आपु विष्णु धरि देह अनूप ॥ रावणके बधकों नरनाह । हमहू लखो अयोध्याराह ॥ तेहि भंजो हर चाप गँभीर । यह सुनि चले परशुधर बीर ॥ पुरी अयोध्याके ढिग जाय । मिले रामसों अमरष छाय ॥ बऊत बहस करि बोले बन । लेऊ राम मो धनु बलऐंन ॥ धनु चढाइ कै खैंचऊ बीर । जानि परै तब खबल गँभीर ॥ तास तेज लीन्हों धनु साथ । खैंचि जगतपति श्रीरघुनाथ ॥ तब बोले भृगुपतिसों बैंन । रामचन्द्र त्रिभुवनके अैंन ॥ भृगुपति लखऊ हमारो रूप । देत दिव्य चख तुम्हैं अनूप ॥ रूप बिराट धरो अति मान । जामे त्रिभुवन बसत महान ॥ भृगुपति महत लखत सो रूप । व्है गए बिकल मूरछित भूप ॥ संज्ञा लहि करि बिनय बिनीति । रघुपतिसों व्है बिदा अभीति ॥ गिरि महेन्द्रमह किन्हों बास । बर्षएक रहि पूरित चास ॥ लखि भृगुपतिकों दुखित अचैन । तिनसों कहो पितर इमि बन ॥ * ॥ पितरऊचुः ॥ * ॥ यह नहि योग्य बिष्णुकों पाय । त्रिभुवन पूज्य बंद्य सुखदाय ॥ बधूसरा सरिताकौं जाऊ । तहाँ जायकै पुत्र नहाऊ ॥ प्रदीप्तोद सो तीरथ राम । भृगुमुनि जहँ तप कियो ललाम ॥ पिता बचनतें तह करि स्नान । पायो भृगुपति तेज महान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ फेरि सुनो चाहत तपधाम । मुनि अगस्त्यको चरित ललाम ॥ लोमस उवाच ॥ सुनऊ कथा अद्भुत कुरुनन्द । मुनि अगस्त्यको चरित अमन्द ॥ रहे दनुज कृतयुगमे घोर । रणदुर्मद बलवान कठोर ॥ कालकेय गण दारुण बीर । बृत्राश्रयको पाय गँभीर ॥ नाना आयुध लै अति उद्ध । सुरपति पै दौरे व्है क्रुद्ध ॥ चाहि बृत्रबध यत्न अखर्ब । गए पितामहप सुरसर्ब ॥ किएँ सुरस्तर सुर सुरनाथ । ठाढे भए जोरिकै हाथ ॥ देखि कृताञ्जलि सुरन्ह बिनीत । बचन पितामह कहे सप्रीति ॥ विदित तौंन हमको सुरसर्ब । कियो कार्य्य जो चहत अखर्ब ॥ सो तुमसो हम कहत उपाय । जातें बधऊ बृत्रको जाय ॥ दधीच नाम है मुनि तपधाम । तासो बर माँगऊ अभिराम ॥ येन कहे जब सो तपभौंन । अस्थि तास माँगऊ बर जैंन ॥ सो तजिकै तब देह महान । देहै तुम्हैं अस्थि सुखदान ॥ ताके अस्थि लेय तुम सर्ब । बज्र कीजियो तास अखर्ब ॥ घोर असुहनबज्र महान । तातें हनऊ बृत्र मघवान ॥ अब कहो हम तुमसो जैंन । क्षीप्र जायकै कीजै तौंन ॥ यह बिधि आज्ञा पाय अनूप । नारायणके प्रोक्तें भूप ॥ गे दधीचके आश्रम पास । सुरगण सहित

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुरपति मतिरास॥ सरस्वती सरिताके पार। जहाँ बिपिनि अति लसत उदार॥ षटपद गुञ्जत खग बहुरङ्ग। बसत सिंह मृग गज एक सङ्ग॥ नन्दन बनसम आश्रम तौंन। शोभा तास सकै कहि कौन॥ तहँ दधीचकों देखो जाय। सुरन्ह सूर्य्य सम धारे काय॥ ताके चरण बन्दि अभिराम। सुरन्ह यथाबिधि कियो प्रणाम॥ कहो पितामह बिधिसों जौंन। वर मागो सुरनायक तौंन॥ तब दधीच ह्वै परम प्रसंन्न। कहे बचन आनद सम्पंन्न॥ हम करि हैं तव हित सुखदेय। तजि हैं देह सुयश यह लेय॥ इमि दधीच देवनसों बैंन। कहि तन त्यागि गए बिधिऐंन॥ देवन्ह तास अस्थि समुदाय। भरे हर्षसों लियो उठाय॥ दियो बिश्वकर्मेकों जाय। जयकारण सब दियो सुनाय॥ बिश्वकर्मै बिधि बिहित बनाय। बज्र इन्द्रकों दीन्हों जाय॥ *॥ बिश्वकर्मोवाच॥ यह लै बज्र महत मघवान। करहु भस्म सब दनुज महान॥ त्वष्टाको लहि परम निदेश। बज्र हर्षसों लियो सुरेश॥ *॥ लोमसउवाच॥ *॥ रोलाछन्द॥ *॥ सहित देव समूह सुरपति बज्र लीन्हों जौंन। गए बृत्र समीप हो क्षिति गगण रोंके जौंन॥ काल केय कराल चहुँदिशि किए रक्षित ताहि। लएँ शस्त्र अनेक बहुबिधि बाहिबेकों चाहि॥ सुरन्ह असुरन्हसों भयो तब लोमहर्षण युद्ध। धरी द्वैलों त्रासकारक लोककों अति उद्ध॥ कटत गिरत शरीरशिर सम ताललफ अतिमान। शब्द हाहाकारसों भरि गयो गगण महान॥ नही सुर सहि शके तिनकों युद्धबेग महान। भरे भय तजि चले रण लखि दुखित भे मघबान॥ इन्द्र भयसों भरे रण तजि भए भूरि बिबर्ण। जाय सुरन समेत लीन्हों बिष्णुकी बर शर्ण॥ भरे कस्मल इन्द्रकों लखि बिष्णु अव्ययरूप। शक्रकों दे तेज अपनो कियो बर्धित भूप॥ देखि रक्षित बिष्णुसों तब इन्द्रकों सुर सर्ब। ब्रह्मऋषिन्ह समेत सबहिन धरो तेज अखर्ब॥ पाइ तेजस बिष्णु सों सह ब्रन्हऋषिन्ह महान। बृत्र गर्जो देखि सुरगण भए सबल समान॥ सुनत सो सबदिशा धरणी लगी हलन अनूप। शब्द सो सुनि घोर घनसम तप्त भो सुर भूप॥ भरे भयसों इन्द्र दीन्हों छोडि बज्र उदार। बृत्र क्षितिपर गिरो गत अशु लगत बज्र प्रहार॥ नही जानो बज्र छोडत पाणितें मघबान। बृत्रको नहि मरण जानो भरे भीति महान॥ भरे भयसों शक्र सरमे चले बूडन हेत। बृत्रबध लखि मोद सुरगण लहो ऋषिन्ह समेत॥ लगे असुरन्हकों हनन सुर बृत्रको बध पाय। दनुज भयसों भरे पैठे सिन्धुमे सब जाय॥ कालकेयन सिन्धुमे बशि कियो मंत्र बिरुद्ध। जगतको अब नाश कीजै इहां बसि कै उद्ध॥ बेदबिद तप करत तिनको प्रथम कीजै नाश। लोक धारण करत हैं करि यज्ञ ए तपरास॥ भएँ तिनको नाश ह्वैहै नष्ट सिगरे लोक। अभय हमकों बासकों हैं सिन्धुमेको ओक॥ कालकेयन निपत करि यह मंत्र महत बिरुद्ध। जगतके क्षय हकरणकों ते भए उद्दित उद्ध॥ रात्रिमे कढि सिन्धुतें ते मुनिनकों बरजोर। करत भक्षण पाय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० आश्रम तीर्थमे अतिघोर ॥ अधिक सत्रह आटसहस बशिष्ट आश्रममाह। करे भक्षण बिप्र जे तप करत हे नरनाह ॥ च्यवनके हे करत आश्रममाहँ तप द्विज जौंन । कालकेयन निशामे शत करे भक्षण तौंन ॥ रात्रिमे इमि करत दिनमे जात सिन्धु समाय। भरद्वाज मुनीन्द्रके फिरि सुनऊ आश्रम जाय ॥ बायुभक्षी सलिलभक्षी बीश ब्राह्मण पर्म। कालकेयन खाय लीन्हें कियो महत अधर्म ॥ एहिभाँति क्रमतेँ मुनिनके हे महत आश्रम जौंन। करत बाधा निशामे तहँ जाय अधरम भौंन ॥ काल प्रेरित करत बाधा कालकेयन्ह भूप । नही जानत कोऊ तिनको लखत है नहिँ रूप ॥ प्रात देखत मुनिनके बिनु मांस अस्थि समूह। परे आश्रम निकट चऊँ दिशि सङ्घ कैसे जूह ॥ बेदपाठ न करत कोऊ नष्ट भे मख सर्ब । कालकेयन कियो उत्सब रहित जगत अखर्ब ॥ यहि भाँति संक्षयमान द्विज बर रहे बाकी जौंन । भाजि कै ते दिशनमे गिरि गहणकों किय गौंन ॥ गुहामे कोउ जाय पैठे बिबरमे अतिमान। दैत्यकरतें मरणभयतेँ तजो काहूँ प्राण ॥ धनुर्धर जे बीर तिनके हनन हेतु उदार। हेरि हारे तिन्है तिनको मिलत नहि सञ्चार ॥ लहो श्रम अति नही पावत तिन्है सुरगण सर्ब । जगतको यह नाश कारण देखि अमित अखर्ब ॥ भूप अैसे देव गण सब होय दुखित उदार। सूरन्ह सहित सुरेश अैसो कियो मंत्र बिचार ॥ गए बिष्णु शरण्यकी तव शरणकों सुर भूप । लगे कहन प्रणाम करि कै भए दीन स्वरूप ॥ उतपत्य पालन नाशकर तुम हौ हमारे ईश। जगन्मय तुम जगत्कारण आपु हौ जगदीश ॥ कोलको धरि काय कीन्हों धराको उद्धार । होय बामन लियो बलिसों लोक तीनि उदार ॥ जम्भ असुर हि हनो जो हो यज्ञनाशक धर्म । यहिभांतिके बहु बिदित हैं प्रभु रावरेके कर्म ॥ हमै है सब भांतिसों गति रावरी अभिराम । देत तुम्ह हि जनाय यातें सकल करुणाधाम ॥ करऊ रक्षण लोक देवन्ह सहित सुरपति नाथ। चतुर्बिधि यह प्रजा बाढति कृपा के तव साथ ॥ प्राप्त भय यह भयो ब्राह्मणबर्णकों अतिमान । जानि परत न निशामे को हनत है भगवान ॥ क्षीणब्राह्मण भए धरणी लहै गी क्षय सर्ब । धराक्षयते लहै गो क्षय नाथ त्रिदिब अखर्ब ॥ महाबिष्णु प्रसादते तब लोक सब अभिराम । लहैंगे क्षय नही तुमतेँ होय रक्षित माम ॥ * ॥ बिष्णु रुवाच ॥ * ॥ बिदित कारण प्रजाक्षयको हमै है सुर सर्ब। कहत हैं हम तौंन सुनि कै लहऊ मोद अखर्ब ॥ कालेय तुमकों बिदित दारुण दुसह जे अतिमान । वृत्र सह जिन कियो मंन्थित प्रथम लोक महान ॥ शक्रतेँ हत वृत्रकों लखि भाजि ते भरि भीति। सिंधुमे ते बसे हैं सब प्राणसों करि प्रीति ॥ लोकक्षयकों निशामे ते हनत ऋषिन्ह उदार। मारिबेके सक्य नहि ते सिंधु अगम अपार ॥ सिन्धुके क्षय करणको तुम जाय बाधऊ डौर । बिना सुमुनि अगस्त्य अब्धि न सोषि है कोउ और ॥ समुद्र सोषेँ बिना कबहू सक्यमे ते हैँ न। सुरन्ह सहित सुरेश अैसेँ बिष्णु के सुनि बैंन ॥ पितामहकी लेय आज्ञा सकल सुर समुदाय। लखो सुमुनि अगस्त्यको तब तास आश्रम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जाय ॥ करत जास उपासना ऋषिवृन्द तेजसरूप । करण सुस्तव लगे सुरगण महामुनिको ब०प०
भूप ॥ * ॥ देवाजचु ॥ * ॥ चश्चित प्रिभुवन नऊषसो तव कियो हो तुम त्राण । डारि दिन्हों स्वर्गसों दुर्बुद्धिकों अतिमान ॥ क्रोधतें गिरिबिंध बाढो भानुरथपथ घेरि । रावरेके बचन वश्य ह्वै बढत है नहि फेरि ॥ लोकमे जब भयो सिगरे अन्धतमस प्रवृत्त । नाथ तुमकों पाय कै गिरि भयो तौंन निवृत्त ॥ नित्य भयसो भरे हमको आपु गति सुखदान । भए आरतमान सिगरे प्रजा परम सुजान ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ केहि हेतु करि कै क्रोध बाढो बिंध्यगिरि अतिमान । तौंन हों सब सुनो चाहत कहऊ मुनि सबिधान ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ कनक गिरिकों निति प्रदक्षिण करत रविकों चाहि । सूरसों गिरि बिंध्य जैसें कहो ऋषि अवगाहि ॥ मेरुको जैसे प्रदक्षिण करत हो तुम नित्य । करऊ मोहूकों प्रदक्षिण तथा हे आदित्य ॥ यहि भांति सुनि गिरिबिंध्यसों तब कहे दिनमनि बैंन । करत स्नेहासो प्रदक्षिण मेरुको हम हैं न ॥ दियो मार्ग देखाय यह जेहि कियो जगत महान । सुनत इमि करि क्रोध बाढो बिंध्य तब अतिमान ॥ रोकिबेकों सूर अग्निको परम पथ है जौंन । आय देवन्ह कहो बऊत न बिंध्य मानो तौंन ॥ अगस्त्यसों वृत्तान्त सो सब कहो देवन्ह जाय ॥ * ॥ देवाजचु ॥ * ॥ तुम्हैं बिन को सकत ताहि निवारि हे मुनिराय ॥ सुरन्हके सुनि बचन सुमुनि सदार गिरि पहँ जाय । कहो हमकों देऊ पथ गिरि सङ्कुचित करि काय ॥ जात दक्षिण दिशाकों करु कार्य्यको करि तौंन फेरि हम जब आइ हैं तब बाढि हो बलभौंन ॥ बिंध्यसों यहिभाँति दे कै बचन सत्य स्वरूप । जाय दक्षिणकों न अबलों फिरे मुनिवर भूप ॥ प्रभाव सुमुनिअगस्त्यको तुम हमै बूझो जौंन । कहो हम सब सहित बिस्तर भूप तुमसों तौंन ॥ सुरन्ह जैसें कालकेय सु दैत्य मारे सर्व । पाय सुमुनि अगस्त्यसों वर सुनऊ तौंन अखर्व ॥ सुरनके सुनि बचन जैसें कहे मुनिबर बैंन । कौंन कारण आय मागत कान बर मति जैंन ॥ बचन सुनि कै महामुनिके कहे सुरन्ह सकाम । पान कीजै सिन्धुको यह कार्य्य मम अभिराम ॥ हनै हम कालेय तब सुर विप्र द्वेषि जौंन । सुरनके सुनि बचन मुनि स्वीकार कीन्हों तौंन ॥ करैगे हम कार्य्य तब सब लोक आनद जैंन । चले पास समुद्रके मुनि बोलि जैसे बैंन ॥ सिद्ध सुर ऋषि नाग नर गन्धर्व किन्नर जौंन । चले मुनिके साथ अद्भुत देखिबेकों तौंन ॥ गए तीर समुद्रके गम्भीर जामे नाद । उठै तुङ्ग तरङ्ग जामे भीमभयकर याद ॥ जाय पास समद्रके मुनि कहे जैसे बैंन । लखऊ तुम सब पियत हैं हम बरुणको यह जैंन ॥ पान कीन्हों सिन्धुको मुनि कियो अद्भुत कर्म । देखि कै सुर सिद्ध मानुष भरे बिस्मय पर्म ॥ करण सुस्तव लगे मुनिको मनुज सुर गन्धर्व । सुमन बर्षे देवदुन्दुभि लगी बजन अखर्व ॥ निः सलिल देखि समुद्रकों सुर भरे हर्ष उदार । दिव्यास्त्र धरि कै असुरगणको लगे करण प्रहार ॥ कालकेयन कियो युद्ध मुहूर्त भरि अतिमान । गए मारे सकल खलते भरे पाप महान ॥ दनुज हे जे शेष ते सब भाजि कै सुनु भूप । वसे ते पाताल्से चलि धरा भेदि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० अनूप॥ कालकेयन्ह मारि कै सब चिदश मुनि पै जाय। कियो सुखव कहे ऐसे बचन आनद पाय महामुनि तव कृपातें सबलोक पायो चैन । कृपातैं तव हने इम कालेय दुर्मतिचैंन ॥ पूर्ण कीजे सिन्धुको मुनि कृपा सहित महान। छोडि दीजे सलिलकों प्रभु जैंन कीन्हों पान ॥ सुरनके सुनि बचन ऐसैं कहो मुनि सुखदाय । सलिल गो पचि सिन्धुकारण करऊ और उपाय ॥ सिन्धु पूरणहेतु मुनिके सुरन्ह सुनि ए वैंन। महा अद्भुत मानि मनमे भए चिन्तित चैंन ॥ यथा आए तथा सुर नर विदा ह्वै मुनि पास। गए विष्णु समेत सुर जहँ पितामह तपरास ॥ सुरन्ह मंत्र विचारि ऐसैं परस्पर मतिचैंन। कहे सागर भरणकारण पितामहसों बैंन ॥ *******

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायण स्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि अगस्त्यो पाख्याने विंध्यसमन समुद्रपानवर्णनोनाम षोडशोऽध्यायः ॥ ********

लोमसउवाच ॥ * ॥ कहो विधि सब सुरनसों तुम जाऊ अपने धाम । बऊत बीतैं काल भरि है सिन्धु फिरि अभिराम ॥ कुलोद्धारण होय गो जब भगीरथ क्षितिपाल । बचन सुनि विधिके गए सुर लगे परखन काल ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ ज्ञातिकारण भए कैसें कहऊ हे मुनि तौंन। सिन्धुपूरण कियो जेहि सो भगीरथ हो कौंन ॥ *** ॥ दोहा ॥ ***

सुनो तौंन तुमसों चहत कहऊ महामुनि धर्म । बिस्तर सह इतिहास सो भूपतिको युतधर्म ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

धर्मनृपतिके सुनि बचन लोमस ऋषि तपधाम । सगरमहीपतिको लगे कहन महात्म्य ललाम॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

बर इक्ष्वाकु बंश सम्भव हे सगर नाम बर भूप। रूप सत्व सम्पन्न अति भरो प्रताप अनूप ॥
ताखजङ्घ हैहय नृपति जीति युद्धमे ताहि। जीति भूप सब बश करे धर्मनीति अवगाहि ॥
भार्य्या ताकों हे भई भरा सु यौवन रूप । बैदर्भी एक दूसरी सैव्या परम अनूप ॥
पुत्रकामना धरि सगर पत्निन सह सुखदाय। उग्र लगे तप करण सो हरगिरिके ढिग जाय ॥
कियो महत तप उग्र जब योगयुक्त ह्वै भूप। महादेव ताकों मिले करि कै कृपा अनूप ॥
वरद प्रभूकों देखि कै आनद भरे विशाल। पुत्र अर्थ याचँना कियो पत्निन सह भूपाल॥
प्रीतिमान शङ्कर कहे ऐसैं बचन अनूप। मागे जौंन मुहूर्तमे तुम हमसों वर भूप ॥
ताके फलसों लहो गे तुम सुत साठिहजार । एकस्त्रीमे बल भरे अतिरणके जेतार ॥
एक सङ्गते पाइ हैं सकल मरणकों भूप। दूसरी स्त्रीको एकसुत ह्वै है परम अनूप ॥
शङ्कर अन्तर्धान तब यों कहि भए ललाम। पत्निन सह राजा सगर आए अपने धाम ॥
बैदर्भी सैव्यासिवन्ह धारो गर्भ अनूप । बैदर्भीकों समय लहि जनमो लौवा भूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सैव्याके सुत एक भो देवस्वरूप उदार। जब लौं वाके त्याग को कीन्हों नृपति विचार॥ ब०प०
अन्तरीक्ष बाणी सुनी तब नृप सगर गँभीर। भूपन साहस करि तजऊ पुत्रन्हको धरु धीर॥
अलाबु मद्धितें काढिकै बीज सकल सुखदान। घृत पूरण घटमे धरऊ यत्न सहित मतिमान॥
साठि सहस तुम लहऊ गे तव सुत सुन्दर भूप। महादेवसों दत्त ए तुमकों पुत्र अनूप॥
अन्तरीक्ष वाणी सुनत तथा कियो नरनाह। बीज एक एक लै धरे एक एक घट माह॥
धात्री राखी घटन्ह प्रति एक एक मतिमान। भे तातें बऊ कालमे प्रगट पुत्र बलवान॥
ऐसें साठिहजार सुत लहे सगर बलधाम। एक सङ्ग नृपधर्म लहि रुद्रप्रसाद ललाम॥
घोर क्रूरकर्मा सकल करत गगण लौं गैान। काहूकों मानत नही बाऊलतासों तैान॥
देवनकों बाधा करत सह राक्षस गन्धर्व। सब भूतनकों देत दुख ते सब हर अखर्व॥
बाधा लहि सब सुर गए शरण पितामह पास। कियो विरञ्चि विदा तिन्हैं ऐसें कहि सुखरास॥
स्वल्पकालमे सगर सुत लहिहै सकल विनास। घोर आपने कर्मसों करिहै यमपुर वास॥
सर्वलोक सह सुरन्ह सुनि ऐसें विधिकी वैन। मागि पितामहसों बिदा आए अपने ऐैन॥
तब बीतें बऊ कालके सगर भूप मतिमान। अश्वमेध वर यज्ञकी दीक्षा लई महान॥
यज्ञ अश्व क्षितिपर फिरत रक्षक साठि हजार। तैान पुत्र नृप सगरके बलसों भरे उदार॥
तोयसिन्धु तट तुरगँ सो व्है गो अन्तरध्यान। हेरि थके तब आय तिन नृपसों कहो सलान॥
सगर कहो सब दिशनमे तुम सब हेरऊ जाय। ते ढूढत चारो दिशा नृपकी आज्ञापाय॥
लहो नही तिन तुरगँ तब अरु यह हर्ता जैान। समाचार सब आइकै कहो पितासों तैान॥
नदी द्वीप बन शैल सब सागरसह चऊ ओर। ढूढि थके नहि हय लहत नही तुरगँकों चोर॥
ऐसें भूपति सगरसों कहो सुतन्ह सब आय। तिनसों नृपबर सगर सुनि बोले बचन रिसाय॥
फेरि न मोपह आइयो बिना तुरँग तुम सर्व। पाय पिता शासन चले ढूढन अश्व अखर्व॥
हेरत ते चारो दिशा बेगभरे जिमि बात। देखो जाय समुद्रको बिना सलिलको खात॥
खोदन लगे समुद्रकों लेकै फरस कुदार। सागरकों सुत सगरके अतिबल भरे उदार॥
असुर उरग राक्षस रहे ओर जीव तहँ जैान। महानाद लागे करण बध्यमान व्है तैान॥
भिन्न शीस त्वक अस्थि भे तहँके जीव महान। देखि परे अनगणित तहँ गिरे भए बिनप्रान॥
तिनकों खनत समुद्रकों बीति गयो बऊकाल। तिन न अश्व देखो तहाँ सुनऊ धर्म क्षितिपाल॥
पूर्वोत्तरके कोणमे खनि ते गे पाताल। तहा महीतलमे लखो बिचरत अश्वविशाल॥
कपिल तहाँ तप करतहे तेज राशि सम ज्वाल। तिन्हैं निदरि ते तब चले हर्षित प्रेरित काल॥
बधिबेकों हय क्रोध करि लखि मुनि कपिल महान। वासुदेव जाकों कहत मुनिवर विदुषसुजान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

१०५० देखो मुनि करि विकृत घए पूरित तेज महान । भए भस्म सब सगरके रहे जे पुत्र अमान ॥
असमंजसको पुत्रजो अंशुमान बरबीर । ऐसें कहो बोलाइकै सगर बचन गंभीर ॥
पौत्र पुत्र मेरे रहे साठि सहस्र सु जौन । भए भस्म मेरे लएँ कपिल कोपते तौन ॥
त्याग तिहारे पिताको कीन्हो जानि अनेत । रक्षणकोवें धर्मको पुरजनके हित हेत ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

कौन हेत नृप सगर सुत त्याग करो मतिमान । सुनो चहत सो महामुनि कहिए सहित बिधान ॥

॥ * ॥ लोमस उवाच ॥ * ॥

असमंजस सैव्या तनय गहि पुरजनके बार । बोरि नदीमे देयसो सदन करत सुकुमार ॥
गए पौर भय शोक लहि सगर भूपके पास । कहन लगे करजोरिकै सकरुण बचन प्रकाश ॥
पर चक्रादिक भीतिसों तुम रक्षत क्षितिपाल । असमंजस भयसों करऊ रक्षित हमकों हाल ॥
घोर बचन पुरजनके सुनि नृप रहे विचारि । सचिवनसों ऐसें कहो परम धर्म निरधारि ॥
पुरतें देऊ निकासि तुम असमंजसकों अद्य । जो मेरो प्रिय चहत तौ जाय करऊ यह सद्य ॥
यह सुनि मंत्रिण सो कियो दियो जो भूप निदेश । असमंजसकों नगरतें दीन्हों काढि नरेश ॥
यह सब हम तुमसों कहो यथा पुत्रको त्याग । पुरजनके हितहेतु किय यथा सगर बडभाग ॥
अंशुमानसों सगर नृप कहे बचन वर जौन । सो अब तुमसों कहतहैं सुनऊ धर्मनृप तौन ॥

॥ * ॥ सगर उवाच ॥ * ॥

असमंजसके त्यागत लहि पुत्रन्हको नाश । अरु अलाभतें अश्वके हमदुःखित मतिराश ॥
यज्ञविघ्नके मोहसों मोहित हमकों जोहि । ल्याय अश्वकों नर्कतें रक्षित कीजे मोहि ॥
अंशुमान सुनि सगरके बचन दुःखसों घूमि । चले तहाँ जहँ सिंधुमे रही बिदारित भूमि ॥
तौन मार्गसों सिंधुमे कीन्हों जाय प्रवेश । लखो तहा मुनि कपिलकों उदित मनऊ दिनेश ॥
देखि तुरग मुनिके गए सोहँचले उदार । साष्टाँग मुनि कपिलकों कीन्हों सो नमस्कार ॥
कहो सुमुनिसों कार्य तब साञ्जलि बिनया पन्न । अंशुमानकों कपिल मुनि देखत भए प्रसन्न ॥
कहो सुमुनि हम देत वर मागऊ चाहत तान। अंशुमान मागो तुरगँ हेतु यज्ञको जौन ॥
मागो फेरि द्वितीय वर पितरोद्धारण पर्म। कहो सुमुनि हम देत तुम मागो जौन सधर्म ॥
क्षमा धर्म अरु सत्यहै तामे सुत अवदात । धन्य सगर तो तें भए पुत्र मान तो तात ॥
तो प्रभावतें जाहिगे स्वर्ग तिहारे पित्र । भूप भगीरथ होय गो जब तो पौत्र पवित्र ॥
सो जब गङ्गा गगनतें ल्यावैगो तपधाम । आराधन करि शंभुको करि तप महत ललाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अश्वयज्ञको अंग हय सो लैजाऊ अनूप । करै समापन यज्ञ तो सगर पितामह भूप ॥ ब०प०
अंशुमान सुनि कपिलके ऐसे बचन ललाम । अश्वलेय आए जहाँ रहो यज्ञको धाम ॥
बन्दि पितामहँके चरण अंशुमान सह धर्म । मूर्द्धाघ्राण कियो नृपति वृत्त सकल सुनि पर्म ॥
मख समाप्ति भूपति कियो लहिकै अश्व सुजान । देवन सागरकों कहो नृपको पुत्र समान ॥
बऊत कालसों राज्य करि भूपति सगर उदार । गए स्वर्गकों सौंपि सब अंशुमानकों भार ॥
अंशुमान पालन कियो सागरलौं क्षिति सर्व । भो दिलीप ताको तनय तेजस भरो अखर्व ॥
दे दिलीपकों राज्य गो अंशुमान सुरभौन । नृप दिलीप विधिवत सुनो निधन पितृन्हको तान ॥
सुनि दिलीप भूपति भया दुःखित महत सुजान । गङ्गाके अवतरणको कीन्हों यत्न महान ॥
गङ्गा गिरी न स्वर्गतें कियो बिबिधि विधि कर्म । नृप दीलीपका पुत्र भो भूप भगीरथ पर्म ॥
धर्मपरायण शीलमय सत्यवाक अभिराम । राज्य देय ताकों गए नृप दिलीप मुनिधाम ॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

भयो चक्रवर्ती महा भूप भगीरथ वीर । जनमनरञ्जन जगतको पालक सुमति गँभीर ॥
सुनो भगीरथ कपिल मुनि किय पितरनको नास । यथा न पावत हैं पितर स्वर्गलोकको वास ॥
राज्य सौंपिकै शचिवकों भरो दुःखसों भूप । गए हिमालयके निकट कीवे सुतप अनूप ॥
आराधन सुरसरितको कीवेकों अभिराम । हिमगिरिको सुषमा लही अद्भुत परम ललाम ॥
लगे घोर तप करन तहँ भूप भगीरथ जाय । कीन्हों बर्ष सहस्र लों फल सु मूल जल खाय ॥
बीतो बर्ष सहस्र जब भरो कृपा अभिराम । दरशन दीन्हों सुरसरित धरिकै रूप ललाम ॥

॥ * ॥ गङ्गोवाच ॥ * ॥

महाराज चाहत कहा देहिँ कहा हम तोहि । तुम्हे भगीरथ देहि सो जौन मागिबै मोहि ॥
सुनि सुरसरिताके बचन कहो भगीरथ भूप । किए हमारे पितामह भस्म कपिल तपरूप ॥
तुरगँ ढूढिबें सगर सुत गे तहँ साटिहजार । कियो कपिल तिनकों लखत भस्मभूत सम क्षार ॥
स्वर्ग बासकौं लहैं ते तव सुरसरिता शर्म । तिनको तनय रसै सलिल जब तो पावन पर्म ॥
महा नदी याचत तुम्हैं यातें हों अभिराम । तो जलके परसें बिना ते न लहत सुरधाम ॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

सुनत भगीरथके बचन सुरसरि कहो प्रसन्न । करिहै हम तुम कहत जो कारज सब सम्पन्न ॥
गिरत गगणतें बेग मम भूप धारिहै कौंन । त्रिभुवनमे शङ्कर बिना धारि सकै को तौंन ॥
हरकों करऊ प्रसन्न तुम व्हैकै तप आसन्न । जटाजूट पर धारिहैं शङ्कर मोहि प्रसन्न ॥
तो पितरनको कार्य ते करिहैं कृपानिधान । भूप भगीरथ बचन सुनि गङ्गाके सुखदान ॥
जाय सु गिरि कैलाशकों तप करि उग्र महान । भूप भगीरथ शम्भुकों कियो प्रसन्न सुजान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० गङ्गा धारण करैंगे शिव इमि कह्यो ललाम । दियो भगीरथ भूपकों बर हर करुणाधाम ॥
बर दै शङ्कर कृपा करि गए जहा हिमवान । सहित पार्षदन जगतपति तहँ बैठे सुखदान ॥
कहो भगीरथ भूपसों ऐसें हर बरदान । जाचऊ नृप सुर सहितकों पतन हेतु मतिमान ॥
यह सुनि शङ्करके बचन शुचि व्है नर बर भूप । स्मर्ण करण सुरसरितको लागे परम अनूप ॥
स्मर्ण भगीरथको समुझि पुण्यसलिलकी धाम । गिरी स्वर्गते सुर सहित हर शिरपर अभिराम ॥
देखि गिरत सुर सरितकों सुरमहर्षि गन्धर्व । उरग यक्ष आए तहां देखन चरित अखर्व ॥
उद्धत धरें तरङ्गकों भरी मीनगण याद । धरी शम्भु सो शीशपर सुरसरि सुखद सनाद ॥
सो ललाटपर शम्भुके मुक्ता कैसी माल । तीनि धार धरिकै भई सुरसरि लसत बिशाल ॥
हंसपंक्ति सी फेणकी धारें धारा पर्म । कहू कुटिल सूधी कहूँ अति गति गहति सधर्म ॥
भरी फेणसों लसति कहु मत्त बधूसी धार । मंद मधुर धुनिसों भरीधौरी धार उदार ॥
यहि प्रकार तें गगणसों क्षितिपर आइ सचैंन । भूप भगीरथसों कहो सुरसरि ऐसे बैंन ॥
हमहि देखावहु तौंन पथ जित व्है चलैं अनूप । तौ कारजकों धरणिपर हम आईहैं भूप ॥
यह सुरसरिके सुनि वचन चले भगीरथ वीर । सगर सुतन्हके हे जहां क्षितितल माह शरीर ॥
गङ्गा धरि हर सुरन सह गए जहां कैलास । गङ्गा सहित समुद्रकों गए भूप मतिरास ॥
पूरण कीन्हों सलिलसों बरुणालयको रूप । गङ्गाकों दुहिता सदृश करी कल्पना भूप ॥
पूरण करो मनोर्थ करि पित्रन्हकों जलदान । भूप भगीरथ धर्मधुर कीर्ति जास अतिमान ॥
गङ्गा आई जौंन बिधि कहो सो हम नृपधर्म । करिबैं पूर्ण समुद्रकों पावन जलसों पर्म ॥
सिन्धु पान जैसे करो मुनि अगस्त्य तपधाम । पूण यथा समुद्र भो सोसब कहो ललाम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कृतमहाभारदर्पणे बनपर्वणि अगस्त्योपाख्याने समुद्रसोषण गङ्गावतरणवर्णनो नाम सप्तदशशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

चले तहांतें भूपति धर्म । क्रमतें भरे मोदसों पर्म्म । नन्दा परनन्दा अभिराम । सरिता तहां गए मतिधाम ॥ हेमकूट पर्वत जहँ पर्म्म । तहँ देखे अति अद्भुत कर्म्म ॥ बाताबद्ध सु मेघ महान । [illegible] तहां बर्षत पाषान ॥ कोऊ चढि न सकत गिरि तौंन । घन बर्षत सह आतुर पौंन ॥ तहां बेद [illegible] सुपर्म्म । कोंऊ देखि न परत सधर्म ॥ साँझ भोर पावक अभिराम । देखि परति तहँ [illegible] ललाम ॥ दसैं मक्षिका तेहां जात । सहि न शकै कोउ यह उतपात ॥ यहि बिधि तहँ अद्भुत बहु [illegible] युधिष्ठिर भूप ॥ लोमससों बूझो नृप तौंन । अद्भुत तहँ देखो नृप जौंन ॥ लोमस [illegible] सुनो पूर्व हम भूप । तैसें कहत सुनहु अनुरूप ॥ ऋषभ कूट यहि गिरिके

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

माह। ऋषभ रहो मुनिवर नरनाह ॥ जियो अनेक वर्ष यत तौंन। महातपस्वी नामसमान॥ व०प०
जनगण वचन सुनत करि क्रोध। यहि गिरिसों इमि भाखो रोध॥ तो पै चढै जौंन नर आय॥
तापैं उपल गिरै अतिकाय॥ बोलत इहां आइ नर जौंन। वारत मेघशब्दसों तौंन॥ तेहि मुनि
इहां कियो यह कर्म। वारणार्थ सुनिए नृपधर्म॥ नन्दा नदीपास सुर सर्व। आए द्विजवर
सकल अखर्व॥ शक्रादिकके दर्शन हेत। गए विप्र आनंदमय चेत॥ दुर्गम कियो देश यह भूप॥
एहि गिरिको करि रोधक रूप॥ तबतें एहिगिरिके कोऊ पास। आवत नहीं सुनो मतिरास॥
दर्शनको एहि गिरिके माम। होत न शक्र बिना तपधाम॥ तातें धरऊ मौंनको रूप। चढ्यो चहो
जौं गिरिपर भूप॥ इत देवन तप कियो महान। चिन्ह तासु देखऊ सुखदान॥ कुशाकार दूर्बा
घन जौंन। सम आस्तरण लसति भू तौंन॥ वृक्ष जूप सम सोहत सर्ब। इहँ मुनि सुर सब बसत
अखर्ब॥ सायं प्रात ऊताशन तास। देखि परत है नृप मतिरास॥ इहां भूप कीन्हेतें स्नान। छूटि
जात सब पाप महान॥ सानुज करऊ स्नान कुरुभूप। कियो धर्मनृप स्नान अनूप॥ चलेऊ कौशिकी
सरिता यत्र कौशिक कियो उग्रतप तत्र॥ नन्दामें करि कै सुस्नान। गए कौशिकीकों कुरुभान॥
देवनदी यह पुण्यस्वरूप। कौशिकको आश्रम शुचिरूप॥ यह आश्रम काश्यपको पर्म। जाहि
विभाण्डक कहत सधर्म॥ शृङ्गीऋषि जाके सुत भूप। तप प्रभाव सुनु तास अनूप॥ अनावृष्टिमे
लहि भय जास। बर्षे बासव आनंदरास॥ जन्म मृगीतें पायो तौंन। काश्यप सुत शृङ्गीऋषि जौंन॥
लोमपाद दुहिता अभिराम। दीन्ही ताकों शान्ता नाम॥ युधिष्ठिरउवाच॥ भो ऋषिशृङ्ग मृगीमे
जान। काश्यपसुत मुनि कारण कौंन॥ विरुध योनितें ऋषि अभिराम। भयो कौंन विधिसों तप
धाम॥ बर्षो शक्र तास भय पाय। अनावृष्टिमे कैसें आय॥ राजसुता शान्ता अभिराम। बरी मृगी
सुतकों किमि बाम॥ लोमपाद राजर्षि सधर्म। ताके देशमांहँ केहि कर्म। बर्षे इन्द्र न कृपा समेत।
तान कहऊ सब कृपा निकेत॥ सुनो चहत सह चित्त तौंन। कियो शृङ्गऋषि कारज जौंन॥ लोमस
उवाच॥ बैभाण्डक ऋषिशृङ्ग महान। जैसें भयो सो सुनऊँ सुजान॥ करत रहे ह्रदमे तप उद्ग।
ठाढे सुमुनि बिभाण्डक शुद्ध॥ करत गयो तप काल बिशाल। आईं तहाँ उर्वसी बाल॥ देखत
ताहि सुमुनिको रेत। गिरो बारिमे बिह्वल चेत॥ मृगी आय सो पयके साथ। रेतस पियो सुनऊँ
कुरुनाथ॥ मृगी गर्भ धारो अभिराम। पूर्व रही सुरसुता ललाम॥ शाप पितामहसों सो पाय।
मृगी भई क्षिति ऊपर आय॥ तौ तें जन्मि हिं ऋषि तपधाम। तब तें मोक्ष होयगो बाम॥ यह
बिधिसों सुनि शापोद्धार। मृगी भई सो भूप उदार॥ बर अमोघऋषि रेतस तौंन। भावी
होत दैवकृत जौंन॥ भयो मृगीसुत ऋषि तपधाम। सो ऋषिशृङ्ग जास है नाम॥ शृङ्गशीष भे
तास अनूप॥ नाम शृङ्गऋषि यातें भूप॥ भयो भूप सो बासी बन्य। लखो पितातें मनुज न अन्य॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब्र०प० तातें ताको मानस पर्म । ब्रह्मचर्य्यमे रहत सधर्म ॥ लोमपाद दशरथको मित्र। अङ्गदेशपति परम चरित्र ॥ कहो लोभवश मिथ्याबैंन । विप्रनसां जेहे तपचैंन ॥ कियो द्विजबरन्ह ताको त्याग । लोमपाद नृपको बश भाग ॥ पूरोहित तासों मखकर्म्म । करवाओ बिधि बिहित न पर्म ॥ तातें करि सुरपति अतिकोप । कियो अवर्षणको आरोप ॥ तब करि लोमपाद अनुमान। गए रहे जहँ विप्र सुजान ॥ कियो अबर्षण सुरपति जैंन। बूझो हेतु मुनिनसों तैंन ॥ जैंन भाँति बर्षै परजन्य । कहऊ उपाय तान मुनि धन्य ॥ भूपतिके ते सुनि कै बैंन । खमल कहन लागे मतिचैंन ॥ तिनमे एक विप्र मतिमान । कहो भूपसों बचन प्रमान ॥ तुमसों कुपित भए नृप विप्र । तास शान्ति यह कीजे क्षिप्र ॥ बेभाण्डक ऋषिशृङ्ग महान। तौन इहां ल्यावऊ तपवान ॥नारी ज्ञान न ताहि अनूप। सो बनितावश ह्वै है भूप ॥ सो जब आवै तुम्हरे देश । दृष्टि करै मघवान बिशेश ॥ यह सुनि शान्ति हिए निरधारि। चले तहांतें चिन्ता भारि॥ करि मिथ्याको प्रायश्चित। करि एकाग्र भूपति निजचित्त ॥ मुनि समाजसें आवत भूप। लह्यो प्रजा अति आनदरूप॥ कहो भूप मंत्री बोलबाय । ऋषि आगमको करऊ उपाय ॥ मंत्रिनसों सुनि भूप उपाय । बारबधू माँगी बोलवाय ॥ निपुण सर्वबिधि तिनकों जानि । कहन लगे भूपति सनमानि ॥ शृङ्गीऋषि अति बर तपधाम । ताहि इहाँ ल्यावऊ अभिराम ॥ तहां जाय करि कछू उपाय ।ल्यावऊ इहाँ खबशमे पाय ॥ राज भीति लहि ऋषिभय भूरि । तिहि असक्य गुणि कहो बिसूरि ॥ तिनमे एक बृद्ध मतिमान । नृपसों कहो बचन सुखदान ॥ यत्न करै गी हम क्षितिपाल । ऋषिके आननहेत बिशाल ॥ सरञ्जाम चाहैं हम जैंन । देव दिवाय भूपमनि तैंन ॥ तब ऋषिशृङ्ग आनिवे माहँ । हम समर्थ ऊहैं नर नाहँ ॥ सरञ्जाम तिन मागो जैंन । दीन्हों भूप तिन्हैं सब तैंन ॥ बसन रत्न भूषण अभिराम। दीन्हों भूप यथा मनकाम ॥ स्यामा चतुरा अनुपम रूप । चली लेइ सभँ थबिरा भूप ॥ जोरि नाव बऊ बिपिनि बनाय । कृत्रिम दल फल फूल लगाय ॥ अतिरमणीय मनोहर रूप । बिपिनि नाव पर रचो अनूप ॥ मुनि आश्रमके नारैं जाय । बारबधुन दिय नाव लगाय ॥ चार पठै लीन्हों ठहराय। जब ऋषि बृद्ध बिपिनिकों जाय ॥ तब तेहिँ बृद्धै सुता सुजान। मोहित करि सब मोह बिधान ॥ गो आश्रमते जब मुनिवृद्ध । तब तँह गई सुरूप समृद्ध ॥ तौन परम आश्रममे जाय। देखो ऋषिसुत तपमय काय ॥ बारबधू ऋषिसुत पहँ जाय । बूझो कुशल मधुर मुसकाय ॥ तापस कुशल इहाँके सर्ब । कन्द मूल फल कुशल अखर्ब ॥ रमत कुशलसों आश्रममाँह । हम देखन आए तुम पाँह ॥ सुमुनि कुशल है पिता तुम्हार । तुमतें पावत प्रीति उदार ॥ होत अबिघ्न नित्य स्वाध्याय । रहत कुशलसों मृग समुदाय ॥ * ॥ ऋषिशृङ्गउबाच ॥ * ॥ ऋद्धि रूपसां योनि समान। लसत प्रकाशमान सुखदान ॥ बंदनीय हम तुम्हे बिचारि । दियो अर्घ्य चाहत निरधारि ॥ सहित अजिन कुश आसन पर्म । बैठऊ तापर ससुख सुधर्म ॥ कहाँ तिहारो आश्रम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जैन । देवसमान फिरत तपभैन ॥ * ॥ वेश्योवाच ॥ * ॥ मम आश्रम अति रम्य उदार। ८०५०
योजन तीनि शैलके पार ॥ सुनऊ धर्म मम तपस निकेत । हम न प्रणाम काहूको लेत ॥ पाद्य अर्घ्य नहि कुअत सुजान हमै वंद्य तुम हौ सुखदांन॥ हम न वन्दन तुमतें लेत। सुनु व्रत मेरो तपस निकेत ॥ आलिङ्गन को हमरे रीति । तैंन करौ तुम गहि कै नीति ॥ * ॥ ऋषिशृङ्गउवाच ॥ * ॥ देत पक्कफल तुमकौं न तैंन । भल्लातक अमलकके जैंन ॥ करूष कट्फुद अरु धन्वान । पिप्पलके फल मधुर महान ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ दिए जे ऋषि फल ताकौं जैंन । चोखि बिसर्जन कीन्हें तैंन ॥ मोदक ऋषिकों दए ललाम । कहि ममबनके फल अभिराम ॥ माल्य दए सौरभ गम्भीर । दए बिचित्र बसन कहि चीर ॥ क्रीडन हसन लगे एक सङ्ग । ऋषिसन रंगौ ताके रङ्ग ॥ कन्दुक खेलन लगी सहास । नानाभाव करति ऋषिपास ॥ ऋषिके अङ्गनसों अंग लाय । करति अलिङ्गन गहि लपटाय ॥ कुसुमित गहति तरुणकी डारि । त्रिबली उदर उरोज उघारि ॥ भरी मदनमद लाज बिहीन । ऋषिसुतकों किय स्ववश अधीन ॥ बिकृत शृङ्ग ऋषिको मन पाय । बार बार भोडो हियलाय ॥ करि मिसि चली दिनान्त बिचारि । बिव्हल ह्वै ऋषि रहे निहारि ॥ ताकों गए मदनमद मत्त । रहे होय ऋषिशृङ्ग अशक्त ॥ ऋषिसन बसो जाय तेहि पास । शून्य विपिनिमे लेत उसास ॥ आए आश्रमको ऋषिबृद्ध । कश्यप सुत तप योगसमृद्ध ॥ बैठो देखि पुत्रको भूप । ध्यान धरैं मनव्यथित स्वरूप ॥ दृष्टि ऊर्द्ध करि लेत उसास । चित्तवृत्ति लखि बिव्हल तास ॥ कहो समिध ल्याए नहि तात । कहा न कियो होम अबदात ॥ धोए सुरा चमस नहि तैंन। दुही न होमधेनु है जैंन॥ नहो पूर्व सम हौ तुम तात । चिन्ता भरे बिचेतन गात॥ देखि परत तुम दीन समान । इहाँ कौंन आयो दुखदान ॥ * ॥ ऋषिशृङ्गउवाच ॥ * ॥ आयो इहाँ तपस्वी तात । जटिल प्रभामय मध्यमगात ॥ चख इन्दीबरसे द्युति सर्ण । अरुण पाणि पद सुबरण बर्ण ॥ नील सचिक्कन जटा सुगन्ध । एक बिशाल कनकगुन बन्ध ॥ आल बाल सम सुबरण दाम । धरे कण्ठमे अति अभिराम ॥ हृदयोपरि द्वै पिण्ड समान । रोम रहित देखत सुखदान ॥ प्रियुल नितम्ब क्षीण कटिदेश । बँधी मेखला सुबरण बेश ॥ अद्भुत लता चरणमे तास । बँधी चलत कूजति सुखरास॥ करमे कनक बनक धुनिमान । अक्षमाल सम मम सुखदान॥ अद्भुत तन अति कोमल चीर । तथा न मेरे लसत गभीर ॥ सुषमा सदन बदन बर जास । बचन सुधासम आनदरास ॥ कोकिल कूजितसो रमणीय । बाणी जास हरै हरणीय ॥ बन सुगन्ध लहि यथा बसन्त । सौरभ भरे तथा ते सन्त ॥ चक्रबाक सम चित्र ललाम । कल्पित कर्णन्हमे अभिराम ॥ वृत्त बिचित्र परम फल लेहि । ताकों डारि भूमिमे देंहिं ॥ सो फिरि उकरि पाणिमे जाय। यह अद्भुत देखो सुखदाय ॥ तिन्हैं देखि सुर सुतन्ह समान । तात प्रीति बाढी सुखदान ॥ तिन मोकों हियसों लपटाय । दियो बदनसों बदन लगाय ॥ चूँबि ओष्ठ कछु बोलैं बैंन।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अ०५० सो तौ परम मोदको अन॥ अर्घ्य पाद्य लीन्हों नहि पर्म। कहो हमारो यह व्रत धर्म॥ मम फल खाद्य दियो फल पर्म। अपनो अद्भुत दायक शर्म॥ जास स्वाद कछु कहो न जात। सौरभ भरे मधुर अति तात॥ छिकुला औ गुदली जिनमे न। खाए ऐसे पूरब मै न॥ दियो आपनो रुचिल पियाय। सौरभ स्वादभरो सुखदाय॥ बढो पियत सो हर्ष उदार। लगत भ्रमत से बिपिनि पहार॥ चित्रित भरो सुगन्ध बिशाल। डारिगए ते सुमन ससाल॥ मोसों गए स्नेह करि जौन। तात दहत तन मेरो तौन॥ चहत पास तिनके हौं जान। सदा सङ्ग तिनको सुखदान॥ तिनके संग तप करिबो पर्म। यथा करत ते सुमुनि सधर्म॥ चहत रहो तिनके संग नित्य। तिन विन लहत न मानस थित्य॥ * ॥ बिभाण्डकउवाच॥ राक्षस धारैं अद्भुत रूप। फिरत पुत्र बनमाह अनूप॥ करत विघ्न तपको बलवान। स्वेच्छ। रूप धरत अतिमान॥ मोहित करत रूप धरि धर्म। करत निपात लोक सुखधर्म॥ तिन्हैं न सेवत हैं मुनि लोग। करिबो तास बिश्वास न योग॥ करि तप बिघ्न लहत हैं शर्म। तिन्हैं न देखत मुनिजन पर्म॥ पुत्र असज्जन सेवत जौन। होत पाप मधु पीवत तौन॥ मुनि सुगन्ध बहि पहिरत माल। है न वेद विधि विहित बिशाल॥ सु ऋषिशृङ्गको यों समुझाय। बोभाण्डक ऋषि तामसकाय॥ तिन्हे बिपिनिमे ढूढन हेत। फिरे चहूदिशि कोपित चेत॥ तीनि दिवसलों हेरत हारि। चुको समिध फल मूल बिहारि॥ मुनि जब लेन गये फल मूल। तब तिन पायो समय अतूल॥ तब ऋषिशृङ्ग हि सोहँनहेत। ते तँहँ आई पुलकित चेत॥ देखि तिन्हैं मुनि शृङ्ग उताल। गो तिन पै लहि मोद बिशाल॥ कहो चले तव आश्रम यत्र। जबलों पिता न आवै अत्र॥ एकपुत्र काश्यपको जौन। बँदै नाव पर ले तब तौन॥ चारु चरित करि ऋषिहि भुलाय। सैन हि दीन्हीं नाव खोलाय॥ लोमपाद भूपति ढिग जाय। दीन्हों नाव तहाँ लगवाय॥ हो तहँ आश्रम क्षत्रिम रूप। ऋषिकों तहँ ले गई अनूप॥ लोमपाद नृप ऋषि पहँ आय। अन्तःपुरकों गयो लेवाय॥ बरषे आइ मेघ अतिमान। भो जलमय सब देश महान॥ लोमपाद नै ऋषि हि ललाम। दीन्हीं कन्या शान्ता नाम॥ सुऋषि कोपको हरत उपाय। किय भूपति सुरभी समुदाय॥ पथमे ठौर ठौर अभिराम। राखो सह गोपाल ललाम॥ खेतकार राखे अति क्षुद्र। देखै आय जौन ऋषि बृद्ध॥ तिनकों ऐसें दियो शिखाय। जब बूझै कोपित ऋषिआय॥ तब कहियो तव सुतको सर्ब। देश सहित गोबृन्द अखर्ब॥ कहा करैं तव प्रिय तपधाम। हम तव सेवक दास ललाम॥ काश्यप ऋषि आश्रममे आय। तहां न देखो सुत सुखदाय॥ ह्वल भूपतिको करि अनुमान। चण्डकोपसों भरे महान॥ चम्पापुर दाहन सह भूप। चले महाऋषि अनल स्वरूप॥ आन्त क्षुधित अति ऋषि तपधाम॥ गो ब्रजमे कीन्हो बिश्राम॥ गोपन्ह बिधिवत पूजो आय। तहां बसे सुखसों ऋषिराय॥ ऋषि प्रसन्न ह्वै लहि सतकार। गोपनसों इमि कहो उदार॥ यह ब्रज कहो कौनको पर्म। देश कौनको शुद्ध सधर्म॥ अञ्जलि जोरि कहो गोपाल। तव सुतको धन बिषय बिशाल॥ ठौर ठौर पूजित तप

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

धाम । सुनत तथाबिधि गिरा ललाम ॥ शान्त क्रोध व्हैकै तपरास । गए अङ्गपति नृपके पास ॥ ब०प०
पूजित नृपसों सु ऋषि महान । देखो सुतकों इन्द्र समान ॥ शान्ता पुत्र बधू अभिराम । देखी बिद्युत
सी छबिधाम ॥ ग्रामबधू सह सुतकों देखि । शांत भयो ऋषि कोप बिशेखि ॥ लोमपाद भूपति पैं
पर्म । कियो प्रसाद जानि ऋषि पर्म ॥ राखि पुत्रकों तहँ ऋषि बैंन । कहो शृङ्गऋषिसों तपऐंन ॥
पुत्र एक करिकै उतपन्न । भूपतिको प्रिय करि सम्पपन्न ॥ बनकों पुत्र कीजियो गौंन । किय
स्वीकार शृङ्गऋषि तान ॥ करि उतपन्न एक सुत पर्म । पिता प्रणीत कियो ऋषि कर्म ॥
शान्ता सहित बिपिनिमे जाय । बसे पिता सह तप रत काय ॥ ताको यह आश्रम अभिराम । तुम
बूझो सो कहो ललाम ॥ ताको ह्रद यह पुण्यद पर्म । स्नान इहां कीजै नृपधर्म ॥ ***
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि
काश्यपऋष्योशृङ्गोपाख्यानवर्णनोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ *********

॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कौशिकीते धर्मनृप तब चले सुनिए भूप । यथाक्रमतें देवतनके स्थान लखत अनूप ॥ गए
जेहाँ कियो गङ्गा सिंधु संगम पर्म । संधिमे सत पांच सरिताके महा नृपधर्म ॥ सहित भ्रातन्ह
द्रौपदी सुस्नान कीन्हों भूप । दान दीन्हों द्विजनकों बहु धेनु कनक अनूप ॥ चले तीर समुद्रके पथ
गहे भूपति धर्म । जहा बैतरणी नदी सु कलिङ्गमे अतिपर्म ॥ * ॥ लोमसउबाच ॥ * ॥ यह देश
भूप कलिङ्ग बैतरणी नदी अभिराम । पित्रपति जह यज्ञ कीन्हों सुरन सह अभिराम ॥ कूल
उत्तर परम बैतरणी नदीको भूप । ब्रह्मलोकहि जाइबेको सदृश पंथा रूप ॥ इहा क्रतु हे करत
ऋषि तहँ आपु शङ्कर आय । यज्ञके सब हरण कीन्हों परम पशु समुदाय ॥ कहो मेरो भाग यह
सब ऋषिनसों हर बैन ॥ ऋषिरुवाच ॥ धर्म द्रोह न कीजिए प्रभु धर्मके हौ ऐंन ॥ कियो सुस्तव
भाग हरकों दियो उत्तम जौंन । हर्ष पूर्व क रुद्र पूजनकियो नृप मतिभौन ॥ छाडि गे पशु रुद्र
अपनो पाय भाग ललाम । इहा जो यह गाय गाथा न्हाइगो मतिधाम ॥ इहा जो सुस्नान
करिहै गाइ गाथा तौंन । ब्रह्मलोकहि जाइबेको देखिहै पथ तौंन ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥
सहित भ्रातन्ह द्रोपदी नृप कियो तह सुस्नान । उतरि बैतरणी नदीमे सहित तर्पण दान ॥ * ॥
युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ स्नान कीन्हें इहा मोमे नाहि मानुष भाव । लोग सिगरे लखत है हम
परम पूरित चाव ॥ सुनत बैखानसनकी हम बेदधुनि है जौंन ॥ * ॥ लोमसउबाच ॥ * ॥ लक्ष
योजन तीनि शत पर होतिहै धुनि तौंन ॥ है स्वयम्भूको सुवन यह धर्मनृप अभिराम । पितामह
जहँ यज्ञ कीन्हों सुरन सह तपधाम ॥ दई कश्यपकों मही बिधि दक्षिणामे सर्ब । यज्ञान्तमे सह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० देश पर्वत सहित विप्रनि अखर्ब ॥ दुखित व्है तब कहो क्षिति इमि पितामहसो बैन । दानकीबो मनुजकों मोहि योग्य तुमको हैं न ॥ दान व्है है नाथ तुम्हरो हों रसातल जाति । कहो कश्यप देखि दुःखित धरासों एहि भांति ॥ भई फेरि प्रसन्न धरणी जान सुनिकै भूप । रसातलते निकसि कै इत रही बेदी रूप ॥ सुस्नान बेदी रूपसों यह लसत हैं अतिपर्म । होऊगे बलवान यापै जाय कै नृपधर्म ॥ सख्यायन यापैं चढनको हम करत धर्म नरेश । मनुजके यह छुवत बेदी करति सिंधु प्रवेश ॥ बेदिका पर जाय यह पढि मंत्र भूप सुजान । सिन्धुमे तब पैठिकै तुम करऊ विधिसों स्नान ॥ * ॥ मंत्र ॥ * ॥ नमस्ते विश्वगुप्ताय नमो विश्वधराय ते । सान्निध्यंकुरु देवेश सागरे लवणां भसि ॥ अग्निर्निर्चो योनिरापोऽस्य देवो विष्णोरेतल्लममृतस्य नाभिः । यह मंत्र पढिकै बेदिका पैं जाय चढिए भूप ॥ * ॥ मंत्र ॥ * ॥ अग्निश्चतेयोनिरिडाचदेहोरेतोधा विष्णोरमृतस्य नाभिः । यह मंत्र पढिकै सिन्धुमे सुस्नान करऊ अनूप ॥ यह मंत्र पठिकै सिन्धुमे सुस्नान करिबो पर्म । सिन्धुको न कुशायहते परस कीबो धर्म ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ मंत्र पढिकै बेदिकापै चढे भूपति जाय । मंत्र पढि यह सिन्धुमे सुस्नान कीन्हों आय ॥ कियो लोमस यथा आज्ञा तथा करिकै भूप । बसे जाय महेन्द्र गिरिपैं निशामे शुचि रूप ॥ तहां रजनी एक बसिकै धर्मनृपति उदार । चले भ्रातन्ह सहित करिकै मुनिन्हको सतकार ॥ कहे लोमस भूपसों सब मुनिनको कुल नाम । भृगु अंगिरस सु बशिष्ठ कश्यप वंशके तपधाम ॥ जाय तिनके पास साञ्जलि कियो बन्दन भूप । अक्षतव्रण हो रामको जो शिष्य बीर स्वरूप ॥ कहो तासों राम दर्शन देत कब इत आय । होहिं हमहूँ धन्य तुम्हरे संग दर्शन पाय ॥ * ॥ अक्षतव्रणउवाच ॥ * ॥ आगमन तो विदित है भृगुनाथकों नृपधर्म । क्षिप्र दर्शन देहिगे है प्रीति तुमपै पर्म ॥ लहत चौदशि अष्टमीकों दरश ए तप धाम । भोर चौदशि होयगी तब देखि हो नृप राम ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ अनुग हौ तुम रामके प्रत्यक्षदर्शी पर्म । कहऊ ज्यो भृगुनन्द जीती भूमि सकल सधर्म ॥ क्षत्रवंश निपात कैसें कियो कारण पाय । तौन हमसों कहऊ सिगरो कृपा करि मुनिराय ॥ * ॥ अक्षतव्रणउवाच ॥ * ॥ कहत हैं आख्यान यह हम सहत तुमसों भूप । कहत जो भृगुवंश भूषण कियो चरित अनूप ॥ रहे हैहय अधिप अर्जुन भूमिपति बलवान । राम मारो युद्धमे तेहि सहित बश अमान ॥ रही बाऊ सहस्र ताके चण्ड दण्ड स्वरूप । लही दत्तात्रेय कृपाते स्वर्गज्ञान अनूप ॥ ऐश्वर्य्य सिगरी भूमिको लहि दिव्य सुरथ अरोक । तौन रथपर चढो बर लहि जोति लीन्हो लोक ॥ किये बर्दित देव राक्षस ऋषिनको अतिमान । देव ऋषि गे बिप्रको तप प्रणकों सुखदान ॥ लगे कहन विनीत ऋषि सुर जोरिकै बुगपानि । हनऊँ अर्जुन भयो है हय वंशमे दुखदानि ॥ जातहै सुरलोककों सो पाय जान बिमान । सबीके संग करत क्रीडा जीतिकै मघवान ॥ इन्द्रके सगँ मंत्र विष्णु विचारिकै अभिराम । बदरिकाश्रमकों गए तप करणकों तपधाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

एहिकालमे क्षितिपाल क्षितिपर रहो गाधि नरेश। पुण्यशील सो रहो पालत कान्यकुब्ज सुदेश॥ ब०प०
गयो सो बनबाशकों तहँ भई कन्या पर्म। रूप कैसी रासि सो अपसरण सदृश सधर्म ॥ ऋचीक
भार्गव जाय मागी ताहि भूपति पास। भूप ऐसें कहे मुनिसों बचन हे मतिरास ॥ बंशको यह
धर्म मेरे नित्य सुमुनि उदार। देहि कन्या देय जो हय श्यामकरण हजार॥ * ॥ ऋचीकउवाच

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देहैं अश्व सहस्र हम श्यामकर्ण सित रूप । होइ हमारी भारया तव दुहिता हे भूप॥

॥ अकृतव्रण उवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

करि प्रतिज्ञा बरुणसों ऋषि अश्व मागे जाय। दिए अश्व सहस्र मुनिकों बरुण निर्मलकाय॥
अश्व गङ्गातें कढे तह अश्वतीर्थ प्रसिद्धि। अश्व देकै भूपको मुनि लई कन्या ऋद्धि॥ गए आश्रमकों
रिचीक सभार्य तपके धाम । देखिबेकों गए भृगु तह बधू पुत्र ललाम ॥ देखिकै सुतवधू भृगुमुनि
लहो मोद अनूप । यथाबिधि तिन कियो बन्दन पिताको अनुरूप॥ बधूसों एहि भाँति भृगुमुनि
कहो होय प्रसन्न। चहो सो तुम लेऊ हमसों मागि बर संपन्न॥ कहो तेहि कर जोरि द्वै सुत दीजिये
तपधाम। एक मोकों एक मेरी जननिकों अभिराम॥ * ॥ भृगुरुवाच ॥ * ॥ पुत्रकी उतपत्तिको
करि ऋतुस्नान सधर्म। अश्वत्थ औदुम्बरहि लीजो अङ्कमे भरि पर्म॥ ⊙*⊙*⊙*⊙*⊙*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तुम औदुम्बर भेटऊ जाय। माता तो पिप्पलकों पाय॥ यामे नहि कीजो क्रम भङ्ग। पुत्र
होहिगे परम सदङ्ग॥ *⊙*⊙* ॥ * ॥ रोलाच्छन्द ॥ * ॥ *⊙*⊙*⊙*⊙*⊙*

देतहैं द्वैभाग चरु को जननिकों अरु तोहि। बिष्णुको अति अंश यामे धरोहै हम पोहि ॥
यत्न सो कहि खाइयो मुनि भए अन्तरध्यान । भयो सो क्रम भंग इनसों सुनऊ भूप सुजान ॥
जननि खायो सुताको लै सुतै जननी भाग। बृक्षको आलिंगनौ सो पलटि उलटो लाग॥ जानिकै
क्रम भंग आए तहा मुनि तपऐंन । बहू सो करि कृपा ऐसें कहो भृगुमुनि बैंन॥ तरु अलिंगन
चरु सुभक्षण भयो सो बिपरीति । जननि वंचित कियो तुमकों सुनऊ तौंन सनीति॥ पुत्र तुम्हरो
होयगो सो धरी क्षत्रीधर्म । धर्म धारिहि बिप्रकोतो जननिको सुत पर्म ॥ श्वशुरसों करिबिनै
फिरि फिरि कहे सांजलि बैंन। पुत्रमेरो होय ऐसो नहीहै तपऐंन॥ क्षात्रधर्महि धरै मेरो पौत्र
अति बलवान। कृपाकरिकै कहो भृगुमुनिसो तथास्तु सुजान ॥ पुत्र भे यमदग्नि ताके पाइकै बर
काल। भयो भार्गवबंशभूषण भरो तेज बिशाल॥ भयो बेदाध्ययनतें सो महा बर्धित भूप। होत
ताके सदृश कोऊ नही मुनि अनुरूप ॥ धनुर्बेद अशेष ताकों भयो भासित सर्ब । चतुर बिधिकी
शस्त्रबिद्या मिली ताहि अखर्ब॥ बेदको अध्ययनकरि तप बेद बस करि भूप । प्रसेन जित नृपकी
सुकन्या बरी मागि अनूप॥ रेणुका मुनि पाइ भार्या भरो आनदराश। जाय आश्रममे बसे मुनि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० परम पत्नीपाश ॥ भये पांच कुमार ताके अनुज तामे राम । भए सबसो श्रेष्ठ तपबर वीर रसक धाम ॥ गए तपके हेतु बनकों पुत्रसब जब धीर । स्नानकीबे रेणुका तब गई सरिता तीर ॥ चित्रसेन महीप हो तह स्नान करत ललाम । देखिकै मन रेणुकाको व्है गयो बश काम ॥ करत क्रीडा सहित बनितन देखिकै सो भूप । रेणुकाको रेत जलमे गिरो बिव्हल रूप ॥ गई आश्रमको संशङ्कित जानि सुमुनि उदार । कोप कीन्हों रेणुकाको मानसिक व्यभिचार ॥ धिक्कार कहिकै कियो निन्दित रेणुकहि मुनि रुष्ट पुत्र आयो जेष्ठ बनतें रमणवान सु पुष्ट ॥ सुषेण बसु बिस्रावसो तह गए क्रम अनुरूप । कहो तिनसों मातृबधकों कोपकरि मुनिभूप ॥ कहो मातास्नेह बस तिन नही बचन सुजान । दयो मुनिबर शाप तिनकों भए सुतरु समान ॥ भए पीछे राम सबके रहे जेहाँ तात । देखि तासों कहो मुनिवर जननि शीस निपात ॥ परशु लेकै झटित काटो जननि मस्तक राम । कोपगो यमदग्निको तब देहतें अतिमाम ॥ बचनतें ममपुत्र तुम यह कियो दुष्कर कर्म । जौन मनमे होंहि ते सब मागु सुतबर पर्म ॥ राम मागो उठै माता भूलि बधते जाय । मातृबधको पाप हमकों तात लगय न आय ॥ मम सु भ्रातनको प्रकृति सो पूर्व वतही होय ॥ तात इनको आपु दाया दृष्टिसेती जोय । प्रतिद्वंदी युद्धमे नहि होय मोहि समान । रामको बर दिए ते यमदग्नि अति सुखदान ॥ एक दिन सब पुत्र मुनिके गए बनको भूप । तहां आयो कार्तबीर्य नरेश मत्त स्वरूप ॥ कियो पूजन रेणुकै फल मूलसों तब तास । भयो सो न प्रसन्न रणमदमत्त दुर्मतिरास ॥ मथित आश्रम कियो मुनिको छोरिलीन्हों गाय । चलो तरुबर तोरि सिगरे दए उढज गिराय ॥ राम आये बिपिनि तें तब कहो मुनि बृतान्त । हरण सुरभीको सुनत कियो राम कोप नितान्त ॥

धनुष लै तब चले आतुर तास पीछे राम । मारि भल्लन भुजा काटी परिघ सी अति साम ॥
राम रणमे भुजा ताको काटि एक हजार । मरो अर्जुन धेनु लै फिरि गए राम उदार ॥
बैर बांधो सुतन्ह ताके रामसों अति साम । एक दिन जब गए बनकों सहित भ्रातन्ह राम ॥
खबरि ले ते गए आश्रममे महा मुनि पास । मारि तीक्ष्ण शरनसों यमदग्निको कियो नास ॥
राम राम पुकारिकै यमदग्नि छोडो प्रांन । गए अर्जुनके तबै यह कर्म करि अति मान ॥
गए जब ते तहां आए समिध लीन्हें राम । पिताको एहि भाति देखो तेज पपको धाम ॥

॥ * ॥ रामउबाच ॥ * ॥

एहि भांतिके नहि योग्य एकहिँ कियो दुखित बिलाप । क्षुद्र मूर्खन्ह हनो इनकों मानि मेरो पाप ॥
हनो मृग सम धर्म पथ रथ महा मुनि तप दृढ । कार्तबीर्य महीपके सुत कुमति पाय समृद्ध ॥
कहैंगे का सचिव सुहृदन्ह पास ए सठ जाय । अशस्त्र मुनि धर्मज्ञकों हनि एक बनमे पाय ॥
एहि भांति बहुत बिलाप करि सह बन्धु द्विजन्ह सुजान । रामकीन्हों पिताको सब प्रेत कर्म बिधान ॥
सङ्कल्प कीन्हों क्षत्रबंशबिनाशको तब राम । युद्धमे धरि दिव्य अस्त्र अमोघ धनु अति साम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कार्तवीर्य्यमहीपके सब हनें सुत बलवान । और तिनके सङ्गमे जे रहे भूप अमान ॥
करी एकविसवार पृथिवी विना क्षत्री भूप । श्यमन्तपञ्चक करे ह्रद सर रुधिर पूरण रूप ॥
पितृतर्पण कियो तिनमे राम राजिव नैंन । प्रत्यक्ष तहँ यमदग्नि बोले शान्तिके बर बैंन ॥
यज्ञ करि कै तिन्हि कोन्हो इन्द्रकों तव राम । भूमि कश्यपकों दई सब दक्षिणामे नाम ॥
कनकवेदी दई चौरी रही जो दशव्याम । द्विजनकों सो दई मुनि नवव्याम उच्च ललाम ॥
खण्ड करि ले गए द्विज ते भए खाण्डव आम । देइ कश्यपकों मही भृगुनन्द तेजसधाम ॥
बसत नित्य महेन्द्रगिरि पर सुनऊ हे कूरुभूप । एहिभाति क्षत्रिणको भयो सब नाश कारण रूप ॥
राम आए अम्बु तिथिकों तहां तेजसधाम । कियो दर्शन सहित बिप्रन्ह धर्मनृप अभिराम ॥
कियो अर्चन सहित भ्रातन्ह रामको नृपधर्म । करी पूजा द्विजनकी सब प्रीति पूरित पर्म ॥
रामआज्ञा सो सु पूजित होय कै कुरुभूप । तहां बसि निशि चले दक्षिणदिशाकों सुखरूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि कार्तवीर्य्यबध वर्णनोनामोणविंशतितमोऽध्यायः ॥ ❀

॥ ❀ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

चलत सिन्धुके तीरके तीर्थ लखे अभिराम । जहां जहां जिनकों भजत बिप्रबृन्द तपधाम ॥
तहां तहां भ्रातन्ह सहित स्नान कियो नृपधर्म । पुण्य सहित सङ्गम जहां स्नान कियो तहँ पर्म ॥
देव पितृ तर्पण करत देत दान बज्र भूप । गए जहां गोदावरी सङ्गम सिन्धु अनूप ॥
द्रविड देशमे सिन्धु तट गए भूप निष्पाप । नारीतीर्थ अगस्त्यको तीर्थ जहां हरताप ॥
नारीतीर्थ समीप नृप सुनो जिष्णुको कार्य्य । अति अद्भुत नर जगतमे करै औरको आर्य्य ॥
कृष्णा औ भ्रातन सहित स्नान कियो नृपधर्म । चले सराहत जिष्णुको तिर्थोद्धरणक कर्म ॥
दई सिन्धुके तीर्थमे भूप सहस्रन गाय । दान प्रसंशे जिष्णुको सह भ्रातन्ह सुखदाय ॥
देखत तीर्थ समुद्रके सह भ्रातन कुरुभूप । सुर्पारक देखो नृपति परम पुण्यको रूप ॥
ककुक दूरि चलि बन लहो जौन परम बिख्यात । जहां देवतन्ह तप कियो राजन मख अवदात ॥
तहां अग्र धरती लखी बेदी परम अनूप । फिरि ऋचीक सुतके गए आश्रमकों कुरुभूप ॥

॥ ❀ ॥ रोलाछन्द ॥ ❀ ॥

बिष्णु ब्रह्मा ईश रबि शशि सुरन सह दिग पाल । सिद्ध ऋषि बसु पितर सागर नदिन सहित बिशाल ॥
आय तन तहँ लखे तिनके बिबिधि बिधिके भूप । तहां करि उपवास दीन्हो दान सबिधि अनूप ॥
स्नान तिन्हके तीर्थमे करि सबिधि भूपति धर्म । सूर्पारककों फिरि चले भूपति पुण्य पूरित पर्म ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सिन्धुतीरको पथ गहे धर्मनृपति सह भ्रात । गए सुतीर्थ प्रभासको त्रिभुवनमे विख्यात ॥
भ्रातन सह सह द्रौपदी लोमसादि द्विज साथ । परम प्रभास सुतीर्थमे स्नान कियो कुरुनाथ ॥
द्वादशनिशि दिन करि तहां पाणी पवण अहार । अग्नि चहूँदिशि बारि नृप कीन्हो सुतप उदार ॥
तहां उग्रतप करत सुनि भ्रातन्ह सह कुरुनाथ । राम कृष्ण आये तहाँ लए वृष्णिवर साथ ॥
पाण्डु सुतन्हकों तिन्ह लखो शयन करत क्षितिमाहँ । वृष्णिवीर रोए सकल भरे शोक नरनाहँ ॥
देखि द्रौपदीकों दुखित योग्य न दुःख उदार । यदुबंशिनके नेत्रतें वही अश्रुकी धार ॥
राम कृष्ण सात्यकि सहित वृष्णिबंश सब बीर । धर्मनृपति पूजन कियो तिनको सविधि गँभीर ॥
पाण्डुसुतनको तिन कियो पूजन सविधि उदार । राम कृष्ण बैठे तिन्हैं घेरि सहित परिवार ॥
तिनसों शत्रुण्को चरित कहो सहित बनबास । शस्त्रहेतु अर्जुनगमन सुरपतिपास निवास ॥
धर्मराजके बचन सुनि लखि दुःखित कृशरूप । बही वृष्णिबंशीनकी दृगजल धारा भूप ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥

सु प्रभासमे पाण्डुसुत मिले वृष्णिवरबीर । भई तहां वार्त्ता कहा ठहरो मंच गँभीर ॥
सकल महात्मा शस्त्रके बेत्ता सब अभिराम । पार्थनको अरु वृष्णिको प्रेम पुरातन मान ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

पाण्डु सुतनके चहूदिशि वृष्णिवीर आसीन । तहां राम आगे कहन भरे कोधसों पीन ॥

॥ * ॥ रामउवाच ॥ * ॥

धर्म करत नहि बहिकों क्षय नहि करत अधर्म । पार्थ सुयोधनकों लखे जानि परत है कर्म ॥
धर्मनृपति बनमे फिरत धरे जटिलको बेश । राज्य सुयोधन करत हैं अधरम भरी अशेष ॥
अरु धर्मते मानि है जन अज्ञान अधर्म । दुर्य्योधन नृपधर्मको देखि असत सतकर्म ॥
भीष्म द्रोण कृप बृद्ध नृप कैसे पावत शर्म । पाण्डुपुत्र नृपधर्मवेां बनबासो करि पर्म ॥
जे कुरुवंश प्रधान हैं तिन्हैं महत धिक्कार । कहा कहै गँ स्वर्गमे पितन्ह पास खबार ॥
समुझत नहिँ हम कौंन करि कर्म भए है अन्ध । अबहूँ नहि धृतराष्ट्रनृप तजत पापको धन्ध ॥
कछुदोषमे सुतन सह लखि है जाय महान । अन्तकपुरके बिटप जे फूले कनक समान ॥
भीष्मादिकको करैगे नाश चौसि नृप अन्ध । धर्मनृपतिको बास बन दियो सो भलो न धन्ध ॥
भीमसेन परदलदमन रोषे समन समान । जास हांक सुनि समरते को न भजै बलवान ॥
जब पारथ बनबासके दुखकों समुझि महान । नाश करैगे धनुष धरि रणमे समन समान ॥
भीमसेन प्राचीदिशा लई अकेलें जीति । दक्षिणदिशि सहदेव सब लीन्ही जीति सनीति ॥
पश्चिमदिशि बशमें करी नकुल अकेलैं बीर । खात फूल फल मूल ते बनमे फिरत गँभीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

यज्ञ हुताशनसों भई शिखा समान अनूप। तौंन द्रौपदी बिपिनिमे फिरति तपस्विनि रूप॥ ब०प०
धम समीरण शक्रते आश्विनेयते जौंन। भए फिरत बनमे सहत दुख मुनिव्रत धरि तौंन॥
सछल जीति नृपधर्मकों भार्य्या भ्रातृ समेत। राज्य सुयोधन करत नहि धरणि धसति केहि हेत॥
ऐसें श्रीश्रीकृष्णसों राम कहे बहु बैंन। सुनत भरे दुखसों नहीं बोले करुणा ऐंन॥

॥ * ॥ सात्वकिरुवाच ॥ * ॥

राम न करुणाको समै करिबे है अब जौंन। धर्मनृपति कछु कहत नहि बेगि कीजिए तौंन॥
जाके हौत सहाय जन सो न करत कछु कार्य्य। स्वजन सहायक करत हैं ताको कारज आर्य्य॥
कीन्हो यथा यजातिको अष्टक सैव्य सहाय। बन्धुबर्ग हित मित्र त्यौं करत समयको पाय॥
जाके स्वजन सहाय ते नहि असहाय समान। ते न लहत है जगतमे दुःख राम बलवान॥

॥ * ॥ अर्द्धचरणा ॥ * ॥

राम कृष्ण प्रद्युम्न सांब हमसे लहि स्वजन सहाय। पार्थ बसत ए बिपिनिमे कौंन हेतु दुखपाय॥
चलो सैन यदुबंशकी अस्त्र शस्त्र धरि माम। मारि तने धृतराष्ट्रके पठै देहिँ यमधाम॥
तुम सब लेऊ लपेटि क्षिति राम क्रोध करि उद्ध। नाश सुयोधनको कहा तुमको करि कै युद्ध॥
अर्जुन भ्रातासखा गुरु मेरे पिता समान। बासुदेव जानत जिन्हैं आत्मासम सुखदान॥
जौंन हेत चाहत मनुज गुरु सुत शिष्य सुजांन। सो मोकों करिबो उचित सुनऊँ राम अतिमान॥
करत सुयोधन युद्धको जिनके साथ बिचार। काटि अस्त्रसों अस्त्र सब तिनके सुनऊ उदार॥
तिन्हें मारि कै लेउगों दर्योधनको प्राण। तास सहाय कहों हिँ गे जे कौरव बलवान॥
प्रद्युम्न शरासन मुक्तशर निशित सकै सहि कौंन। शक्त न भीषम कृप करण अरु बिकर्ण सह द्रोण॥
जानत बल अभिमन्युको कृष्ण तनै बर बीर। सांब दुःशासनको करि हि रणमे मथन गभीर॥
भीष्म द्रोण सेना सहित सोमदत्त बलवान। कृष्ण भस्म करि हैं तिन्हैं तजि शर अनल समान॥
खड्ग चर्म्म अनिरुद्ध गहि हनि धृतराष्ट्र कुमार। रुण्ड मुण्डसों देहिँ गे धरणी पाटि उदार॥
गद उल्मुक सारण निसट बाहुक धनु धरि पर्म। चारुदोष्ण सब करैं गे वृष्णिबंश सम धर्म॥
वृष्णि भोज अन्धक सुभट करि कै क्रोध महान। मारि पुत्र धृतराष्ट्रके लेहैं सुयश अमान॥
भू शासन तबलों करि हि जिष्णु तनै बलभौंन। जबलों नाघै धर्मनृप द्यूतभूत व्रत जौंन॥
मम बाणनतें हतँ भए करण सुयोधन बीर। करै धर्मनृप राज्य यह है यश कार्य्य गभीर॥

॥ * ॥ बासुदेवउवाच ॥ * ॥

सात्वकि तुम जे कहे ते सत्य बचन सब बीर। जीति भूमि न औरते चहत युधिष्ठिर बीर॥
काम लोभ भयते नही तजै युधिष्ठिर धर्म। भीमार्जुन माद्रीतनय सहित द्रौपदी पर्म॥
भीमार्जुन सम युद्धमे कौंन धरा पर धीर। कौंन करैं गे भूमिको भोग भुजा बरबीर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० हम कैकय पाञ्चाल अरु चेदिराज बलराम । बिक्रम धरि लरि युद्धमे करि है अरिको नाश ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उबाच ॥ * ॥

यामे नहि सन्देह तुम सात्वकि कहत जो बैन । राज्य हमारो रक्ष है तुमते हे बलऐन ॥
कृष्ण एक जानत हमैं हम तिनकों सबिधान। परै यदा बिक्रम समै तुम्हैं जानि मतिमान ॥
तब तुम रणमे कीजियो दुर्य्योधनको नाश। हम देखो फिरि देखि है जांहिँ दशार्ण स्वबाश॥
कीजो नही प्रमाद तुम धर्ममाह सुखदाय। देखो हम समुदाय सह फेरि देखि है आय ॥
बिदा परस्पर भए करि इन्हकों सुप्रणाम । बालन्हकों भरि अङ्कमे दे आशिष अभिराम ॥
बिदा कृष्णकों करि चले भ्रातन्ह सह नृपधर्म । गए पयोष्णीनदी जहँ तीर्थ पुण्यमय पर्म ॥
मिलो सोमरससो सलिल जाको सोम समान । ताके तट बसि करि रहे केबल जलको पान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि तीर्थयात्रायां प्रभासतीर्थाभिगमनश्रीकृष्णसमागमबर्णनोनाम तितबिंशमोऽध्यायः ॥ *👁*👁*

॥ * ॥ लोमस उबाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

इहांयज्ञ कीन्हों नृग भूप । शक्र सोम करि पांन अनूप ॥ भए तृप्त लहि मोद महान । सुरगण सहित सुरपति अतिमान ॥ देवन सहित इहाँ सुरनाथ । कीन्हें यज्ञ पितामह साथ ॥ गयभूपति इत यज्ञ महान । किए द्विजनको दे बज्र दान ॥ बाजिमेध मुनिमित अभिराम । सोमपान किय इन्द्र ललाम ॥ यज्ञ समग्री शाला सर्ब । कियो हिरन्मय रचित अखर्ब ॥ दियो द्विजनकों दान महान । कौंन करै संख्या अतिमान ॥ स्वल्प रहो बाको भू भूप । जहा न किय मखसदन अनूप ॥ गयनृप सो करि कर्म अतोक । पायो सब सुरपतिको लोक ॥ करैं पयोष्णीमे सुस्नान । सो पावै ते लोक महान ॥ स्नान करज्ञ यामे सहभ्रात । पाप मुक्त हूजै अबदात ॥ बैशम्पायन उबाच॥ *॥ भ्रातन्ह सह तासे नृपधर्म । स्नान कियो दियो दान सुपर्म ॥ गिरि बैडूर्य्यनर्मदा यत्र । गए सहित भ्रातन्ह नृपतत्र ॥ तीर्थ तहा देबालय जौंन । रहे कहे लोमस मुनि तौंन ॥ तहँ तहँ गए जथाबिधि भूप । दियो द्विजनकों दान अनूप ॥ * ॥ लोमस उबाच ॥ * ॥ बैडुर्य्य अद्रिको दर्शन पाय । नदी नर्मदामे जो न्हाय ॥जाय तौंन देवन्हके लोक। राजऋषिन्हको पावै लोक॥ यह सर्जाति यज्ञको देश। हे शोभित सो लखऊ नरेश॥ इन्द्र जहाँ आश्विन सह सोम। पान कियो लहि आनद तोम॥ च्यवन इन्द्र पर करि जहँ कोप। करि जड कियो स्तम्भ सम रोप॥लही सु कन्या भार्य्या बाम।राज सुता जहँ च्यवन ललाम ॥ * ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ * ॥ भए इन्द्र जड लहि किमि रोध। च्यवन कियो कौंहि कारण क्रोध ॥ आश्विन पियो कौंनबिधि सोम । तौंन सकल कहिए तपतोम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ भृगुसुत च्यवन नाम हो भूप। सर समीप तप करत अनूप ॥ बीरा
सन बैठो बऊकाल। तापर भो बल्मीक बिशाल ॥ तहँ पिपीलिका भरी महान। भयो मृत्तिका
पिण्ड समान ॥ बऊतकाल बीतो एहि रूप। गो सर्याति तहाँ चलि भूप ॥ एहि सरमेसो करण
विहार। लिएँ भारया चारिहजार ॥ कन्या एक सुकन्या नाम। परम रूप गुणगणकी धाम ॥
करत सखिन सह विपिनि बिहार। गई सो जहँ मुनिच्यवन उदार ॥ मत्त मदन यौवन मदरूप।
तोरति सुमन फिरति तहँ भूप ॥ एक बसन पहिरें तनु तौन। करत फिरत दामिनिसो गौन ॥
ताहि अकेली लखि तप ऐन। स्नेह भरे बोले मृदु बैन ॥ सुने सुकन्यै नहि मुनिबोल। इत उत
फिरत गई तहँ लोल ॥ मुनिके नैन सु कन्यै चाहि। मनमे अति अद्भुत अवगाहि ॥ कहिए हैं का
अद्भुतरूप। कण्टकसों भेदे चख भूप ॥ तातें बिद्ध भए जब नैन। कियो क्रोध दारुण तपऐन ॥
सबको भो मुनिको लहि क्रोध। मूत्र पुरीष सहित अवरोध ॥ देखि दुखित सेनाको रूप।
सबसों बूझन लागे भूप ॥ च्यवन महामुनिको इत बास। महाक्रोधमै सो तपराश ॥ काहू
करो तास अपराध। जासों भयो महत यह बाध ॥ दुखित पिताकों लखि सह सैन। कहे
सभीत सु कन्यै बैन ॥ फिरत इहा बल्मीक उदार। तात लखो हम बिपिनि मझार ॥ तामे
देखे जीव अजान। योति भरे खद्योत समान ॥ तिनको भेदकियो हम बाय। भो अज्ञानबश्य
यह पाप ॥ यह सुनिकै बल्मीक समीप। गए महा भय परे महीप ॥ मुनिसों प्रणत भूप करजोरि।
बिबिधि प्रार्थना कियो निहोरि ॥ क्षमापराध करऊ तपभौन। भयो बाल्यबश अबिदित जौन ॥
च्यवन भूपको सुनि इति बैन। बोले क्रोध भरे तपऐन ॥ बेधो चख मम करि अपमान। धरे रूप
गुणखान महान ॥ तातें देऊ हमै यह भूप। सुता रावरी जौन अनूप ॥ सुनऊँ भूप यह बचन
बिशाल। तब हम करै क्षमा क्षितिपाल ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ ऋषिको बचन मानिकै
भूप। कन्या दीन्ही तिन्हैं अनूप ॥ कन्या लै मुनि भए प्रसन्न। गए भूप घर सुख सम्पन्न ॥ पाय सु
कन्या पति तपधाम। सेवा करण लगी अभिराम ॥ कछूकाल बीते तहँ भूप। आश्विनेय तहँ
गए अनूप ॥ तेहि सरमे करिकै सुस्नान। कन्यहि आवत लखी सुजान ॥ ताकों देखि परम छबि
ऐन। आश्विनेय बोले बर बैन ॥ हौ तुम कौन कौनकी बाम। एहि बनमे बिहरति छबिधाम ॥
सुकन्योवाच ॥ * ॥ नृप सर्याति हमारे तात। च्यवन महामुनि पति अवदात ॥ आश्विनेय
हँसिकै फिरि बैन। कहो सुकन्यासों मतिऐन ॥ दियो बृद्ध मुनिकों किमि भूप। तुम्हैं रूप गुण
भरी अनूप ॥ बिद्युतसी तुम ललति ललाम। तुमसी त्रिभुवनमे नहि बाम ॥ दिव्याम्बर भूषण बर
जौन। योग्य तिहारे सो हैं तौन ॥ है न चीर यह तुम्हैं समान। तुम हौ राज सुता सुखदान ॥ राज
जर्जरित बिरहित भोग। पति न सेइबे तुमकों योग ॥ रक्षण पोषण मे न समर्थ। ऐसे पतिको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० सेवन व्यर्थ ॥ छोडि च्यवनको हममे एक । वरऊ सुकन्या सहित बिबेक ॥ व्यर्थ न यौवन करु
ऋषिऐंन । सुने सुकन्यै तिनके बैंन ॥ * ॥ सुकन्योवाच ॥ * ॥ हम रत च्यवन माहँ व्रतधारि ।
ऐसो कहऊ न हमै निहारि ॥ सुने सुकन्याके इमि बैंन । दस्र कहो तासो लहि चैंन ॥ हम हैं
देवभिषक अभिराम । तरुण करैं तो पतिकों बाम ॥ तव तुम हम तीनऊँमे एक । वरेऊ प्रीति
करि सहित बिबेक ॥ बचनबन्ध यह मुनिकों जाय । बेगि सुकन्या देऊ सुनाय ॥ कहो सुकन्यै
मुनिसों जाय । तिनको बचनबन्ध सुखदाय ॥ प्रियाबचन सुनि तथा उदार । च्यवन कियो
करिबो स्वीकार ॥ सुनि मुनि बचन दस्रपहँ जाय । कहो सुकन्यै करऊ उपाय ॥ कहे सुकन्यासों
तिन बैंन । सलिल प्रवग्र करो तपऐंन ॥ रूपार्थी अति च्यवन नरेश । झटित कियो सरमाह
प्रवेश ॥ दस्रौ तौंनसरोवर माहँ । भए सग्र मुनिसह नरनाहँ ॥ दोय घरी मे निकसे सर्व । भरेरूप
तारुण्य अखर्व ॥ तीनो धारैं रूप समान । देखत चख चितके सुखदान ॥ कहे सुकन्यासों तिन बैंन ।
वरऊ जाहि चाहऊ ऋषिऐंन ॥ तिन्हैं सुकन्या लखि समरूप । रही बिचारि चित्त दै भूप ॥
बरी च्यवन ऋषिकों सो पर्म । मुनि पायो वय रूप सधर्म ॥ कहो दस्रसों च्यवन प्रसन्न । जिमि
हम भए रूप सम्पन्न ॥ तैसैं तुम्हैं सोमको पान । देहै मखमे सहित बिधान ॥ देवराजके देखत पर्म ।
सत्य कहत यह बचन सधर्म ॥ सुनत दस्र मुनि बचन प्रसन्न । गए स्वर्गकों सुखसम्पन्न ॥ च्यवन
सुकन्या सुरन्ह समान । करण बिहार लगे सुखदान ॥ सुनि मुनिकों सर्याति बयस्थ । तहँ
आए लहि मोद अकथ्य ॥ च्यवन सुकन्यहि देखि समान । पायो भूपति मोद महान ॥ ऋषि
नृपको करिकै सतकार । कही कथा अति शुभद उदार ॥ नृपसों मुनि बोले सुखदाय । देहैं
मख हम तुम्हैं कराय ॥ सरञ्जाम मखको हैं जौंन । करऊ एकत्र भूप तुम तौंन ॥ सुनि मुनि
बचन प्रसन्न उदार । कियो भूप मखको सम्भार ॥ पाय प्रशस्त दिवस बर भूप । रची यज्ञशाला
अतिरूप ॥ तहां च्यवन भूपतिसों यज्ञ । करवायो बिधिवत सरवज्ञ ॥ भयो तहां जो अद्भुतकर्म ।
तौंन कहत सुनिए नृपधर्म ॥ च्यवन पात्र भरि सोम सुजान । लियो दस्र हित सहित बिधान ॥
लेत पात्र किय बारण शक्र । मुनि न कीजिये कारज बक्र ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ दस्र न योग्य
सोमके पान । देवभिषज नहिं सोम समान ॥ च्यवनउवाच ॥ दस्र महात्मा सुरन्ह समान । भानु
तनै गुण भरे महान ॥ वृद्ध महा यौवन सम्पन्न । कियो हमै करि कृपा प्रसन्न ॥ देवन सह तुम बिन
मघवान । योग्य सोम ए सुरन्ह समान ॥ इन्द्रउवाच ॥ करत चिकित्सा धारि स्वरूप । मृत्युलोक
कमे फिरत अनूप ॥ मुनि न योग्य ए सोम समान । मानु कहतसो बचन सुजान ॥ * ॥ सोमस
उवाच ॥ * ॥ बेर बेर जब ऐसें शक्र । कहे च्यवनसों बचन सवक्र ॥ शक्रनिरादर करि मुनि
भूप । लियो सोम भरि पात्र अनूप ॥ दीबें चहत दस्रकों देखि ॥ बोले बचन इन्द्र अति तीखि ॥
इनको अर्थ सोम तुम लेत । तौ हम बज्र शीश तव देत ॥ यह सुनि बिहसि इन्द्रकों देखि ॥ सोम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पात्र मुनि लीन्हों तेखि ॥ कीव मुनि पर बज्र प्रहार । इन्द्र उठाई भुजा उदार ॥ भुजा स्तम्भ करिकै तपतोम । करण मंत्र पढि लागे होम ॥ कृत्यार्थ किय होम महान । इन्द्र नाशकों करि अनुमान ॥ कृत्या भई प्रगट अति घोर । च्यवन महामुनिके तपजोर ॥ मद नामक भो असुर महान । भरो भूरिबल काय अमान ॥ बदन घोर अति दशन कराल । मुख क्षिति नभलों बिवृत बिशाल ॥ दशन चारि जाके अति रूप । शत शत योजनके सुनु भुप ॥ और दशन दश योजन मान । अति कराल गिरिके समान ॥ योजन अयुत बाहुको मान । चख रवि शशि येक्रूर महान ॥ जिव्हा चपल तडित आकार । जातें चाटत बदन उदार ॥ भक्षण करिबेकों अति उद्ध । चलो शक्र पँहँ दनुज सुक्रुद्ध ॥ घोर असुर मद देखो शक्र । आवत भक्षण करिबे बक्र ॥ तम्भित भुज भरि भीति महांन । चाटन ओट लगे मघवान ॥ कहो च्यवनसों सुरपति बैंन । भीति भरे पीडित हत चैंन ॥ दस्र आजुतें करिहैं पान । सोम कृपा करि करु मुनि त्रान ॥ तो कृत कार्य्य सत्य सब बिप्र । को उल्लङ्घ करै सो क्षिप्र ॥ तो तपबलको चाहि प्रकाश । हम यह कार्य्य कियो तपरास ॥ सर्य्याति सुकन्याको यश जौंन । होय प्रसिद्ध कियो हम तौंन ॥ तातें कृपा करहु तपधाम । तो बांछित ह्वै अभिराम ॥ अैसे सुनि सुरपतिके बैंन । तजो क्रोध मुनि करुणाअैंन ॥ भए मुक्त भुज तब मघवान । मद बिभाग करि सुमुनि महान ॥ द्यूत तरुणि मृगया अरु मद्य । तिनमे धरो भाग मद सद्य ॥ दस्र सङ्ग सुरपतिकों सोम । पान करायो तब तप तोम ॥ आश्विनेय सह नृपको यज्ञ । करवायो मुनिबर सरबज्ञ ॥ तप प्रभाव जगमे बिख्यात । भयो महामुनिको अवदात ॥ सहित सुकन्या अति अभिराम । कियो बिहार तहां तपधांम ॥ ताको यह सोंहत सर पर्म । स्नान इहां कीजै नृपधर्म ॥ देव पितर तर्पण सबिधान । करिदीजै बिप्रणकों दान ॥ करत सैंधवारण्य बिहार । पुष्करकों नृप गयो उदार ॥ शिवकों जँहँ जपि मंत्र समृद्ध । पावत परम सिद्धि जन ऋद्ध ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ इहां स्नान करिकै मतिराश । कीजै पाप पुरातन नाश ॥ यह आचीक सु गिरि अभिराम । इहां नित्य सुर मुनिके धाम ॥ सोमतीर्थ यह इहां सुजान । बालखिल्य तप कियो महांन ॥ पुष्कर तीनि सु धर्म स्वरूप । करहु प्रदक्षिण इनको भूप ॥ शान्तनु नर नारायण अत्र । तप करि पायो परम परत्र ॥ एहिँ आचीक सु गिरिमे भूप । चरु भोजन किय ऋषिन्ह अनूप ॥ यमुनाको यह सोत ललाम । कियो कृष्ण तप जहँ अभिराम ॥ भ्रातन सह कृष्णा नृपधर्म । स्नान तहां चलि कीजै पर्म ॥ यह यमुना अघहरणि गभीर । यज्ञ अनेक भये तेहि तीर ॥ मांधाता सोमक नृप अत्र । किय सह देबि भूप बहु सत्र ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि च्यवनसर्यात्युपाख्यानबर्णनोनाम एकबिंशोऽध्यायः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व० प०

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भूप मान्धाता भए तिऊँलोकमे बिख्यात । यौवनाश्वमहीप सो केहिभांति सों अवदात ॥ केहि भांति पायो लोक पावन परम सबसों उच्च । लोक तीनौं सुबस कीन्हें बिष्णु सदृश अरुच्च ॥ सुनो सो हम चहत हैं सब कहऊ हे तपधाम । नाम मान्धाता भयो केहि भांतिसों अभिराम ॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ भयो मान्धाता महीपति जौंन भांति समूच्च । कहत हैं हम सुनऊ हे नृप चरित तौंन प्रसिद्ध ॥ इक्ष्वाकु कुलमे भयो नृप युवनाश्व सुमति महान । अश्वमेध सहस्र कीन्हें देइके बऊदान ॥ औ नाना भाँतिके मख किए सबिधि अनेक । भयो नहि युवनाश्वकें सुत सुता कोऊ ऐक ॥ पुत्र बिन व्है खिन्न सौंपि अमात्यकों भूभार । नित्य बनमे बास कीन्हों जाय भूप उदार ॥ शास्त्र बिधिसों धारि आत्मा ज्ञानकों मतिमान । क्षुधासों अरु त्रिषासों नृप होय दुखित महान ॥ गए आश्रमको रहे भृगु जहाँ अति तपधाम । तेहि रात्रिमे मुनि यज्ञ किय युवनाश्वके सुत नाम ॥ मंत्र पूत सु भरो चरुसों धरो कलश महान । जेहि खाय जनमे भूप पत्नी पुत्र इन्द्रसमान ॥ कलश चरुको यज्ञ बेदी उपरि धरिकै तौंन । जागरण तें निद्रा स्वप्न ते होत भे तपभौंन ॥ सुष्ककण्ठ त्रिषार्त जल तहँ जाय मागे भूप । सुनो काहू नहीं नृपके बचन अति कश रूप ॥ लखो सो तहँ कलश नृप चरु सलिलसों परिपूर्ण । खाय चरु जल पान कीन्हों जायकै तह तूर्ण ॥ पानकै जल परम शीतल खायकै चरु पर्म । तृप्त व्है अतिमान भूपति महत पायो शर्म ॥ जगे मुनि बर कलश देखो शलिल रीतो कौंन । लगे बूझन महामुनि यह कर्म कीन्हों कौंन ॥ कहो नृप युवनाश्वमुनिसों कियो हम यह कर्म । कहो भृगुमुनि कियो कारज योग्य नहिँ यह पर्म ॥ पुत्र कारक आप चरु यह धरो हो अभिराम । उग्रतपसों पूर्ण करि हम ब्रह्मतेज ललाम ॥ महाबल अति पौरुषी तप तेज पूर्ण महान । जीति लै जो युद्धमे मघवानकों अतिमान ॥ एहि भांतिसों हम कियो हो चरु पूर्ण तेजस पर्म । कियो नृपतुम तौंन भक्षण भयो योग्य न कर्म ॥ अन्यथा सो करणको नहिँ शक्य मेरे भूप । दैव कृत यह भयो जो तुम कियो कर्म अनूप ॥ तृषारत जलपान कीन्हों मंत्र पूरित जौंन । रहो भूपति भरो मेरे महातपसों तौंन ॥ तेहि आपसों सुत होय गो तव कुक्षितें नृप पर्म । करै गे तव रक्षणार्थ सु इष्टि अद्भुत मर्म ॥ शक्र सम सुत लेय जैसें जन्म तुमसों भूप । गर्भ धारण दुःखकों तुम लहऊ गे न कुरूप ॥ एकशत जब बर्ष बीते बाम कुक्षि बिदारि । भयो सुत युवनाश्वके रबि सदृश तेजस धारि ॥ मरे नहिँ युवनाश्व नृप यह भयो अद्भुत कर्म । सुनत देखन इन्द्र आए सुरण सहित सधर्म ॥ सुरण बूझो इन्द्रसों यह प्रीति पावन पाय । कहा करि है पान बालक करऊ तौंन उपाय ॥ तर्जनी शिशुके बदनमे दै कहो अभिराम । पान सो ते धारि है मान्धात याको नाम ॥ बढो सो दशशत अति बलभरो अनुपम रूप । बेद अरु धनुबेद सिगरे दिव्य अस्त्र अनूप ॥ करतही अभ्यास ताको मिले सब अतिमान । धनुष पायो शम्भुको शर दिव्य

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

निसित महान ॥ मिलो कवच अभेद्य ताकों दिव्य अति सुखदाय । राज्यको अभिषेक कीन्हों द
इन्द्र ताकों आय॥लयो त्रिभुवन जीति बिक्रमसों सु बिष्णु समान। भो अवारित तास शासन जगतमे
सुखदान॥रत्न सह राजर्षि आपुहि मिले ताहि सधर्म। भरी बसु सब भई बसुधा स्ववश ताके पर्म।
बिबिधि भांतिनके करे तेहि यज्ञ दै बऊदान।अर्धआसन इन्द्रको तेहि लहो भूप महान॥द्वादश
ब्द अवृष्टिमे जेहि घेरि कै परजन्य। वृष्टिकों करवाय कीन्हीं भूमि बसु सम्पन्न॥अयुत पयोष्णि सु
दई सुरभी मानधाता भूप। सुनो हमहूँ कहत जनगण द्विजनकों अनुरूप॥ सोमकुल गान्धार
पतिकों शरनसों मथि भूप। कियो शासन भूमिमे करि प्रजनकों सुखरूप॥ मानधाता भूपके यह
यज्ञको सुस्थान । पुण्यमय एहि कुरुक्षेत्र सु देशमे सम भान॥ कहे मान्धाता महीपतिके चरित
अभिराम। जन्मकारण सहित बूझो जैंन आपु ललाम ॥ *॥ बैशम्पायनउवाच ॥ *॥ तान
सुनि सब जैंन सोमस ककों चरित अनूप। फेरि बूझो चरित सोमक भूपको अनुरूप॥ *
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायण स्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि
मान्धातोपाख्यानवर्णनोनाम द्वाबिंशोध्यायः ॥ *

॥ * ॥ * युधिष्ठिर उबाच॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भो सोमक भूपति निमि पर्म। कहऊ तास सुनि कथा सधर्म ॥ * ॥ लोमसउबाच॥ * ॥
धार्मिक सोमकनृप अभिराम। शतभार्य्या जाके छबिधाम ॥तिन पत्निनमे करि बऊ यत्न। लहो
भूप नहिँ पुत्र सुरत्न ॥भयो बृद्ध जब भूप सुजान। करत हेतु सुत यत्न महान॥ भयो जन्तु नामक
सुत भूप। सो बनितनमे सुनऊ अनूप॥ ताकों घेरे माता सर्ब। करैं यत्न बऊभांति अखर्ब॥ तँहँ
पिपीलिका आई एक। ताकों लखो न काहू नेक॥ जन्तु कुँवरके चढि कटि मांहँ। तेहि काटो
सुनिए नरनाहँ॥ काटत रोयो जन्तु सहान। रोई तासु जननी अतिमान॥ भयो कोलाहल नृपके
भैंन। दुचित भयो सुनि कै नृप तैंन॥ दूत भूपसैं आतुरमान। आय कहो सो सहित बिधान॥
दुखित होय तंहं भूपति जाय। जन्तु पुत्र लिय हियसो लाय॥ * ॥ लोमसउबाच॥ दोहा॥
कियो प्रजापति यज्ञ इत इष्टीकृत अभिराम। सहस्र बर्षलों सुरन सह सह मुनि ऋषि तपधाम॥
अम्बरीष नाभाग नृप इत मख करो महँान। सुरभी तिन दश पद्म इत करी द्विजनको दान॥
नृप यजातिके यज्ञको यह सुस्थान ललाम। बेदिनते बऊभातिकी भूषित भू अभिराम।
हए ह्रद भृगुनन्दके पांच बिदित हैं जैंन। आश्रम यह अति रम्य है नारायणको जैंन।
एकरात्रि इत बास करि भोर कीजिए गैंन। कुरुक्षेत्रको द्वार यह धर्मराज मतिभैंन॥
यज्ञ यजाति महीप किय इहाँ देय मणिदान। सोमपान करि कै लहो मोद महा मघवान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तीर्थ सुप्रस्रावतरण यमुनामाह उदार । सुमति सकल जाको कहत महत स्वर्गको द्वार ॥
भरत भूप कीन्हो इहां शतयज्ञ अतिमान । अश्वमेधको तुरग इत छोडो पूत महान ॥
मरुत शत्र कीन्हों इहाँ पालित ऋषि संवर्त । इहाँ करे सुस्नानके लोक देखि सब पर्त ॥
पूत पापतें होऊ तुम स्नानइहाँ करि भूपबैशम्पायनउवाचतहँस्नान भ्रातन्हसहित कीन्हों भूप अनूप ॥
स्नान तहां भ्रातन सहित बिधिवत करि नृपधर्म । लोमससों अैसें कहे बचन मोदमय पर्म ॥
देखत हैं हम लोक सब तवतें मुनि मितिधाम । लखत धनुर्धर जिष्णुकों इन्द्र सहित अभिराम ॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

कहत युधिष्ठिर सत्य इमि लखत महाऋषि जैान । धर्मशील सेवित नदी यह सरस्वती तैान ॥
स्नान जो यामे करत नर छुटत पापसों सर्ब । इहां सारस्वत मख करो आय सुरेश अखर्ब ॥
करे ऋषिन्ह इत यज्ञ बऊ आय सुनऊ नृपधर्म । योजन पांच चहूदिशा यह विधि बेदी पर्म ॥
धर्मशील कुरु भूपको यह है देव सलाम । इहाँ त्यागि तन स्वर्गकों जात मनुज अभिराम ॥
नदी सरस्वती रम्य यह निर्मल सलिल प्रबाह । विनशन नामक तीर्थ है पुण्य पूर नरनांह ॥
मिली सिन्धुगा सरित जहँ सरस्वतीमे आय । चमसोद्भेद सुतीर्थ तहँ पापहरण सुखदाय ॥
लसत सिन्धुको तीर्थ यह परम पुण्यकों रूप । लोपामुद्रा बरी जहँ मुनिअगस्त्यकों भूप ॥
भरो प्रभासों इन्द्रकों परम प्रीतिकर जैान । नाम बिष्णुपद तीर्थ यह देखि परत है तैान ॥
नदी विपासा नाम यह जहँ सुतशोक निबिष्ट । हाथ पाय जहँ बांधि कै बूडत रहे बशिष्ट ॥
मण्डल यह काश्मीरको भरो पुण्यसों पर्म । देखो बसत महर्षि जहँ भ्रातन सह नृपधर्म ॥
उत्तरवासी ऋषिनसों भो यजातिसों बाद । जहँ कश्यपसों अग्निसों भयो बाद अतिनाद ॥
देखि परत यह मानसर जावेको पथ भूप । परशुराम जेहि अद्रिपर कीन्हो बास अनूप ॥
चतुरप्रतिपदाकों इहां अद्भुत होत चरित्र । सहित उमा हर देत हैं दरशन प्रगट पबित्र ॥
एहि सर तट मधुमासमे जन करि हर उद्देश । कुल कुशलारथ करत मख चारो बर्ण नरेश ॥
एहि सरमे बिधिवत करत स्नान भूप नर जैान । क्षीण पापहै स्वर्गको बास लहत जन तैान ॥
यह उज्जानक तीर्थ है जहँ तप कियो कुमार । अरु बशिष्ठमुनि तप कियो सह अरुन्धती दार ॥
जलपूरण यह ह्रद लसत जहँ शतपत्र अनूप । इहां रुक्मिनी तप कियो पाई त्रिभुवनभूप ॥
देखऊ यह भृगुतुङ्ग गिरि धर्मनृपति अतिमान । नदी वितस्ता देखिऐ पुण्य सलिल सुखदान ॥
जला उपजला सरित ए पूरी पुण्य अनूप । जहँ मख समकरि इन्द्रके भयो उसीनर भूप ॥
भूपसभामे तहँ गऐ इन्द्र अग्नि मतिधाम । करण परीक्षा भूपको धर्म धारि मनकाम ॥
चहत उसीनर भूपकों वर दीवेकों पर्म । यातें पहिले आइ कै करी परीक्षा धर्म ॥
श्येन बने मघवान धरि अग्नि कपोत स्वरूप । जंघमाह भूपालके कूपे जाय कै भूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भरे श्येनकी भीतिसों कम्पित रूप बनाय। शरनार्थी नृप जङ्घमे छपे ऊताश्रन जाय ॥श्येनउवाच॥ व०प०
धरमाला सब नृपन्हमें तुम्हैं कहत सब भूप। तुम्हैं न धर्म विरुद्ध यह कीनो कर्म अनूप॥
बिधि बिरचित यह भक्ष मम क्षुधा सतावति सोहि। याको रक्षण धर्म नहिँ त्याग धर्म है तोहि॥

॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥

शरनार्थी तोसों त्रसित आयो इहाँ कपोत। श्ये न त्याग ताको किऐ योग्य न मेरे होत॥
गो ब्राह्मणके हननते होत पाप जो उह। शरनागतके त्यागतें पातक तथा बिरुद्ध॥ श्येनउवाच॥
होत बढत जीवत जगत मे लहि भक्ष उदार। करम करै दुष्कर सकल तजो न जात अहार॥
भक्ष हरें तन तजै गो क्षुधित हमारो प्राण। दारासुत सब मरै गे मेरे मरे सुजान॥
रक्षत एक कपोतकों कोडि बज्रतको प्राण॥ धर्म जो बाधत धर्मकों सो नहि करत सुजान॥
काहूको न बिरोध करि करै धर्मसोधर्म। दोय बिरोधी धर्ममे गुरु लघु देखै पर्म॥
होय न बाधा धर्ममे गुरु लघु लेइ बिचारि। धर्म अधिक जामे नृपति कीजै सो निरधारि॥राजोवाच।
भाषत बज्रत सुनीति हौ बिहगोत्तम तुम बैन। हो हे कहा सुपर्ण तुम ऐसी मतिके ऐंन॥
जानि परत सरबज्ञ तुम जानत धर्म बिधान। शरणागतको त्याग है कछु न बिहित सुजान॥
श्ये न तुम्हारे हेतु हम करि है तौंन उपाय। यथा तृप्ति व्है है तुम्है क्षुधा शान्ति व्है जाय॥

॥ * ॥ श्येनउवाच ॥ * ॥

नहि बराह नहि छागको नहि मृगको पल भूप। और जीवको मास नहिँ भक्षण मम अनुरूप॥
देव बिहित यह भक्ष मम मानऊ हे मतिपोत। भूमि प्राल यह दीजिये मो हित कोडि कपोत॥
भक्षत श्ये न कपोतकों यह बिधि बिरचित नीति। बिना सार जाने चढत करि केहरि पर प्रीति॥

॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥

कहु राज्य हम देत हैं तुमकों खेचर सर्ब। बिन कपोत हम देहि गे जो तुम चहऊ अखर्ब॥

॥ * ॥ श्येनउवाच ॥ * ॥

जौ कपोत पर प्रीति है तुमकों भूप महान। धरि कपोतकों तुलापर देऊ स्वमाँस समान॥
यह खग हम मानी कृपा तुम पल मागो जौंन। मांस तुलापर राखि कै देत आपनो तौंन॥
काटि काटि पल तुलापर ज्यौं ज्यौं राखत भूप। त्यौं त्यौं गरु ओ परत है मनु कपोतको रूप॥
तनसे रहो न मास जब भूप उसीनर बीर। चढो तुला पर आपु तब धरम धुरन्धर धीर॥

॥ * ॥ श्येनउवाच ॥ * ॥

हम हैं इन्द्र कपोत यह है ऊतभुक अभिराम। धर्म परीक्षा करण तब हम आए मखधाम॥
काटो अपनी देहतें माँस जो भूप सुजान। तातें ह्वै है लोकमे कीरति सुधा समान॥
जबलौं जगमे मनुज यह कहि है तो बृत्तान्त। स्वर्गबास तुम करऊ गे तबलौं भूप नितान्त॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब्र०प० गए स्वर्गकों इन्द्र तब यह कहि बचन अनूप । भू नमलों भरि धर्मधुर महा उसीनर भूप ॥
गए उसीनर स्वर्ग धरि तन प्रकाशमय पर्म । भरी तेजसों यज्ञ भू यह ताको नृपधर्म ॥
इहां देवता आय कै करत निरन्तर बास । ऋषि मुनि तिनकों लखत हैं भरे जे तपस प्रकास ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि ह्येनकपोतीयोपाख्यानबर्णनोनाम त्रयोविंशतितमोध्यायः ॥ ❀

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

चिन्तामणि गणनाथकी लहिकै कृपा सहाय । गोकुल भार्त समुद्रकों पैरि पारकों जाय ॥

॥ ❀ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❀ ॥

उद्दालकको सुत तपधाम । स्वेतकेतु है जाको नाम ॥ ताको यह आश्रम नृपधर्म । सदा पुष्प फल पूरित पर्म । सरस्वती धरि प्रगट स्वरूप । जाकों दरशन दीन्हों भूप ॥ जाकी बाणी सुनिबैं हेत । भरी सारदा आनँद चेत ॥ एहि युगमे तप भरे असन्द । स्वेतकेतु उद्दालक नन्द ॥ अष्टाबक्र कहोडकजन्य । स्वेतकेतुके भै नेधन्य ॥ मातुल भागिनेय जे तौंन । जनक भूप पहँ कीन्हों गौंन ॥ तहाँ यज्ञशालामे जाय । कियो बाद बन्दी बुध पाय ॥ तिन तासों करि बाद हराय । पकरि नदीमे दियो बुडाय ॥ ❀ ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ ❀ ॥ कहऊ महामुनि सहित बिधान । इन सबहिँनको चरित महान ॥ ❀ ॥ लोमसउबाच ॥ ❀ ॥ उद्दालक शिष्य कहोडक नाम । रहा एक अतिमतिको धाम ॥ करि मुनिकी सेवा बऊकाल । पढो बेद सब शास्त्र बिशाल ॥ उद्दालक मुनि कन्या ताहि । दई सुजाता नाम बिबाहि ॥ ताके भयो गर्भ मतिअैंन । पढत पितासों बोलो बैंन ॥ यढत पिता तुम निशा समस्त । यह तौ कारज करत न सस्त ॥ बेद शास्त्र सिगरे अवदात । पढो कृपाते तव हम तात ॥ सुनि गर्भस्त पुत्रको बैंन । शिष्यन्ह माह अनादर अैंन ॥ दियो कहोडक शाप रिसाय । अष्टाबक्र होय तो काय ॥ स्वेतकेतुके बैस समान । अष्टाबक्र भयो मतिमान ॥ पूर्णगर्भसों पीडित अैंन । कहो सुजातै पतिसों बैंन ॥ मुनि कहोडककों निर्धन जानि । धनके अर्थ बऊत सनमानि ॥ नहिँ तुम पै धन सुमुनि उदार । प्रसव बिपत्ति बिदारण हार ॥ ककुधन यत्न करऊ अभिराम । प्रसव मास यह दशम ललाम ॥ सुनि कहोडक भार्याके बैंन । गए धनार्थ जनकनृपअैंन ॥ तहँ बन्दीकरि बादि हराय । दियो बारिमे ताहि बुडाइ ॥ उद्दालक सो सुनि मतिअैंन । कहो सुजातासों इमि बैंन ॥ समाचार यह कीजो मौंन । अष्टाबक्र सुनै नहि तौंन ॥ जानत उद्दालककों तात । स्वेतकेतुकों सो निज भ्रात ॥ द्वादशबर्ष गयो जब बीति । अष्टाबक्र जानि पितु प्रीति ॥ उद्दालककी बैठो अङ्क । मानि आपनो पिता निसङ्क ॥ स्वेतकेतु तेहा चलि आय । बाह पकरि कै दियो उठाय ॥ यह तो नही पिताको अङ्क । है जँहँ बैठे आइ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

निसङ्क ॥ यह कटुबचन हृदयमे धारि । गये जननिपहँ दृगजलधारि ॥ भरे क्रोध इमि बूझो बात । जननि कहाहै मेरो तात॥ शाप भीतिसों भरी नितान्त। कहो सुजातै सब इत्तान्त॥ तब राचिमे निज निरधारि । खेतकेतुसों कहो बिचारि॥ हमतुम मातुल कियो अधीत । साङ्गबेद स्मृतिशास्त्र सनीत॥ बेदघोष स्मृतिशास्त्र बिचार । सुनै जनक मखमाह उदार ॥ मातुल भागिनेय दोउ प्रज्ञ।गए जनक नृपको जहँ यज्ञ ॥ मिलो सुपथमे भूपति एक । ताके भृत्तन करिय बिबेक ॥ कहो सुपथ तजिबेके बैन । अष्टावक्र सुनो मतिअैन ॥ अष्टावक्र उबाच ॥ अन्ध बधिर स्त्री बहै जो भार । भूपतिकों पथ देत उदार ॥ भूपतिको पथ तजै न बिप्र । देय भूप द्विजकों पथ क्षिप्र ॥ राजोवाच ॥ बिप्र तुम्हैं हम तजि पथ देत । मानि तिहारो बचन सनेत॥ इन्द्रौ डरत बिप्रकों बिप्र । जाऊ यथारुचि सु मुनि सु क्षिप्र ॥ गए जनकको जेहां यज्ञ। अष्टावक्र समातुल तज्ञ॥ द्वारपालसों वारित होय। अैसे बचन कहे ऋषि सोय ॥ अष्टावक्र उबाच ॥ आए यज्ञ लखन तो भूप । सो देखो हम चहत अनूप॥ प्राप्त भए हम अतिथि नरेश । तो आज्ञातैं चहत प्रवेश ॥ भूप जनक हम आए अत्र । देखो चहत तिहारो सत्र ॥ क्राध व्याधिसों पीडित उद्ध । हमै किएँ दौबारिक रुद्ध॥ द्वारपालउबाच ॥ बन्दीकी आज्ञां अनुसार । करत कार्य हम हे मुनिबार ॥ बालक इहां न पावत जान । जात बृद्ध पण्डित मतिमान ॥ * ॥ अष्टावक्र उबाच ॥ * ॥ बुधि बृद्धनको तुम्हैं निदेश । तौ हमहूहैं योग्य प्रबेश॥ बृद्धाचरण करत हम सर्ब । पढे बेद सब शास्त्र अखर्ब ॥ सुब्रत जितेंद्री ज्ञान बिधान । हम सबमे अति निष्ठ सुजान ॥ करऊ न बाल जानि अपमान । लघु गुर पावक दहत समान ॥ ॥ * ॥ द्वारपालक उबाच ॥ * ॥ पढऊ बेदबाणी तुम तौंन । अद्वैतामृत बर्षति जौंन ॥ लखऊ आपनो बाल स्वरूप । करऊ गर्ब नहि इतिक अनूप ॥ * ॥ अष्टावक्र उबाच ॥ * ॥ काय बृद्धते नहि गुणबृद्धि । सेमर फल पाके का बृद्धि ॥ अल्पकाय फल सुरस महान । निरस कुफल गुरु तजत सुजान ॥ * ॥ द्वारपालकउबाच ॥ * ॥ बालक लहत बृद्धसों बुद्धि । बढत बयक्रम पावत शुद्धि ॥ अल्पकालमे बढत न ज्ञान । शिशुहै बोलत बृद्ध समान ॥ * ॥ अष्टावक्र उबाच ॥ * ॥ बार पके ते होत न बृद्ध । सोई बृद्ध जो ज्ञान समृद्ध ॥ बन्दीके देखनकों अत्र । हम आएहै नृपके सत्र ॥ द्वारपाल भूपतिपैं जाय । आगम मेरो देऊ जनाय ॥ तब हमकों लखिहो प्रतिहार । जब बाढैगो बाद उदार ॥ बन्दीकों हम लैहैं जीति । तब लखिहै बुध बिप्र सनीति ॥ सहित समाज लखै गो भूप । गुर लघुताको कारण रूप॥ * ॥ द्वारपालकउबाच ॥ दशबार्षिक तो तहां प्रबेश । सक्य न जहँ बुध जठर अशेश ॥ तो प्रबेशको यत्न उदार । करत जातहों तजिकै द्वार ॥ तब तुम कीजो झटित प्रबेश । जाएऊ जहँ आसीन नरेश ॥ कियो तथा तिन तहा प्रबेश । गए भूपके पास नरेश ॥ * ॥ अष्टावक्रउबाच ॥ * ॥ समुद्रान्त क्षितिके तुम भूप । बऊबिधि कारक यज्ञ अनूप॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

शङ्कर हित बन्दी बुध जौंन। जीति बादमे बिदुषन्ह तौंन ॥ तो मनुजनसों तिन्हैं गहाय। सुनो बारिमे देत बुडाय ॥ सो हम सुनि बिप्रन्हके पाश। तुम पहँ हम आए मतिराश ॥ ब्रह्माद्वैत महत मत जौंन। करै नाश ताको कहि तौंन ॥ * ॥ राजोबाच ॥ * ॥ बन्दीके जीतनको आश। करि तुम कहत जो मेरे पाश॥ तास प्रभाव न जानत बिप्र। बादि बृन्द मर्दन सो क्षिप्र ॥ बन्दिहि जीतनको करि काम। आए जौन बिदुष मतिधाम॥ व्है परास्त तिन कीन्हों गौंन। लखि रबि ज्यौ उडुगणसे तौंन॥ * ॥ अष्टाबक्रउबाच ॥ * ॥ हमसो बादी मिलो न भूप। रहो धारि सो सिंह स्वरूप ॥ मोसों मिलत होयगो तौंन। भग्न अक्षसम सकट अगौंन ॥ * ॥ राजोबाच ॥ * ॥ सावन सौर चान्द्र सम जौंन। होत भचक्र फिरत ते तौंन॥ तिनके संभवको फलमूल। जो जानै सो बिदुष अतूल ॥ * ॥ अष्टाबक्रउबाच ॥ * ॥ इनमे बिहित कहे जे कर्म। यथाकाल कीन्हेते पर्म॥ काल बिपर्जय कीन्हे भूप। फल यथोक्त नहि मिलत अनूप ॥ त्रिबिधि बर्षको संभव हेतु। है यह नियत सुनऊ नृपकेतु ॥ * ॥ राजोबाच ॥ * ॥ रथमे युक्त यथा हय जौंन। अकस्माद आवतहै तान ॥ तिनको राखि गर्भमे जौन। फिरि ताहीसों उपतत कौंन ॥ * ॥ अष्टाबक्रउबाच ॥ * ॥ देह सुरथमे तुरगँ समान। दुख सुख आगम जास अजान ॥ तिनको गर्भ धारि मन भूप। ताते होत आपु बऊ रूप ॥ * ॥ राजोबाच ॥ मूदि नैन नहि सोवत कौंन। जन्मि न जात जननि पह जौंन ॥ काके हृदै न होत सुजान। कौन बेगते बठत महान ॥ * ॥ अष्टाबक्र उबाच ॥ * ॥ सोवत मीन न मूदत नन। हृदय भूप पाथरके हैं न ॥ बठति बेगते सरिता भूप। दुऊ दिशिकेँ खनि कूल अनूप॥ * ॥ राजोबाच ॥ * ॥ तुमतौ हौ नहि मनुज सुजान। देवरूप हौ अति मतिमान ॥ नहि बालक तुम थबिर समान। तुम सो बक्ता बिदुष न आन ॥ करऊ प्रबेश द्वारमे क्षिप्र। देखऊ बह बन्दी बुध बिप्र ॥ * ॥ अष्टाबक्र उबाच ॥ * ॥ उग्रसेन सम भूप समाज। जाको सभामाह महराज ॥ जानि परत नहि बन्दी मोहि। जाको ग्रास करै हम जोहि ॥ पण्डित मानी बन्दी जौंन। मम सन्मुख का बोलै तौंन ॥ जौ प्रलयानलसोंहैं पाय। सूखि सलिल सरितनको जाय ॥ बन्दी मम सोंहे थिर रहऊ। शीघ्र पराजयको फल लहऊ ॥ सुप्त व्याघ्रकों देइ जगाइ। धरै चरण फण ऊपर जाइ ॥ ताको बचिबो दुस्तर प्रान। तथा हमारों बाद महान ॥ यथा सुरणमहं स्रेष्ठ सुरेश। तथा नृपनमह जनक नरेश ॥ बन्दिहि मम सन्मुख करि देऊ। महाराज करि कृपा सनेऊ ॥ अष्टाबक्र महा मतिऐंन। गरजि कहे जब ऐसे बैंन ॥ तब बोलो बन्दीकरि क्रोध। सकल शास्त्रको जाकोबोध मम बचनन्हको उत्तर देऊ। प्रश्न आपनेको तुम लेऊ ॥ बंद्युवाच ॥ एक अग्नि सब ठौर समान। तथा देहमे ज्ञान प्रधान ॥ बिनसे देह ज्ञानको नास। स्वर्ग नर्कके दाता तास ॥ ॥ अष्टाबक्रउबाच ॥ आत्मा जीव दोयको सङ्ग। जीवक्रम कारक बऊ रङ्ग ॥ आत्मा शाक्षी ईश्वर तौंन। देत कर्मके फलकों जौंन ॥ त्रिबिधि प्रजाको कारक कर्म। होत कर्मतें त्रिभुवन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पर्म ॥ सुख दुख लहत कर्मजुत सर्व । सुख दुखको अन्य अखर्व ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ व०प०
चारिवर्ण है आश्रम चारि । तीनि क्रमकों करत विचारि ॥ देत चतुर्थनकों फल जान । ईश्वर ब्रह्मसनातन तैंान ॥ कर्म करत सोई है कर्म । कहत अन्यथा सो मतिभर्म ॥ ऐसे करिकै बाद महान । बन्दीकों जीतो मतिमान ॥ अष्टावक्र प्रसंशित भूप । लखि बन्दी भो मौन स्वरूप ॥ तहां कोलाहल भो अति नाद । लखि परास्त बन्दी करि बाद ॥ अष्टावक्रहि पूजित भूप । कियो यथा विधिसों अनुरूप ॥ साञ्जलि आय तहा बर बिप्र । अष्टावक्रहि पूजो क्षिप्र ॥ ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ सुनो जीति एहिं बिप्र अनेक । जलमे बोरे करि अविवेक ॥ तैंान कर्मके फलको अद्य । प्राप्त होय बन्दी नृप सद्य ॥ पकरि वारिमे देऊ बुडाय । मए बिप्र ते जहँ तहँ जाय ॥ * ॥ बंधुवाच ॥ * ॥ बरुण पुत्र हम आज्ञाकार । सत्र करत है बरुण उदार ॥ द्वादशाब्द तो यज्ञ समान । पठये ते तह बिप्र सुजान ॥ ते आवतहीं देखऊ भूप । देखि बरुणको सत्र अनूप ॥ अष्टावक्र पूज्य अवदात । जास कृपातें लखिहौं तात ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ द्विजवाचा मेधातें जैान । विजित सिन्धुमे बूडे तैान ॥ बचन बुद्धि हम जीतो सर्व । जो न आदरत सुमति अखर्व ॥ सत्य बचन जे कहत अनूप । पावक दहत न ताकों भूप ॥ बाल पुत्रको कुत्सित बैंन । ग्रहण करत नहि जे मतिऐंन ॥ क्षीण दर्प तुम मत्त स्वरूप । मेरो बचन सुनत नहि भूप ॥ जनक उबाच ॥ * ॥ सुनत दिव्य तव बचन सुजान । तुम हौ देव न मनुज समान ॥ जीतो बन्दीकों चहि जैान । भयो पूर्ण तव कारज तैान ॥ वर्तमान यह बन्दी बिप्र । योग्य होय सो कीजै क्षिप्र ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ बन्दिहि जिअत न अर्थ अनूप । पिता बरुण जौं याको भूप ॥ तौ याको जलमहँ परबेश । शीघ्र करावऊ जनक नरेश ॥ * ॥ बंधुवाच ॥ * ॥ बरुण पुत्र हम भूप सुनीति । जल प्रबेशमे हमै न भीति । मुनि कहोडकों एहि क्षण क्षिप्र । अष्टावक्र लखैगो बिप्र ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ पूजित बिप्र बरुणतें सर्ब । कढे जनक ढिग आइ अखर्ब ॥ * ॥ कहोड उबाच ॥ * ॥ याते ईक्षत जन सुत पर्म । रहो अशक्य हमै जो कर्म ॥ अष्टावक्र कियो सुत तैंान । होत अबलके सुत बलभैंान ॥ व्है है पुत्र तिहारें भूप । अरिहन्ता बलवान अनूप ॥ होत सामको अद्भुत गान । पियत सोम सुर मुनि अतिमान ॥ शुचि मख भाग पाय सुर सर्ब । जनक मोदसों भरे अखर्ब ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ बन्दी नृपसों आज्ञा पाय । किय प्रबेश सागरमे जाय ॥ अष्टावक्र पूजिकै तात । पूजित आपु द्विजनसों ख्यात ॥ आए आश्रमकों भरि प्रीति । जनक यज्ञमे बन्दिहि जीति ॥ अष्टावक्र पुत्रसों बैंन । ऐसें कहो कहोड सचैंन ॥ नदीमाह एहि करऊ प्रबेश । अष्टावक्र सों कियो निदेश ॥ भए अङ्ग सम सकल सुवेश । गुरु अज्ञालहिकियो प्रबेश ॥ नदी समङ्गा तबसों ख्यात । भरीपुण्यसों अति अवदात ॥ यह किल्बिषहा सरिता पर्म । स्नान सभाट करऊ नृपधर्म । इहां एक निशि रहिकै भूप । अन्य तीर्थ चलि लखऊ अनूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि अष्टावक्रोपाख्यानवर्णनो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ ❁

॥ ❁ ॥ लोमसउवाच ॥ ❁ ॥ रोलाछन्द ॥ ❁ ॥

मधुविला एहि नदीको तबसों समङ्गा नाम। कर्दमिल यह भरतको जहँ भो भिषेक ललाम ॥ वृत्रकों हनि ब्रह्महत्या युक्त ह्वै मघवान। एहिँ समङ्गामे छुटे हैतेहि पापसों करि स्नान॥ कुक्षिमे मैं नाकके यह तीर्थ विनशन भूप। अदिति जहँ पुत्रार्थ दीन्हों अन्नपाक अनूप ॥ चढऊ एहि गिरि राजपैं नृप मानिकै सु निदेश। अयशरूपा जो अलक्ष्मी दूरि करऊ नरेश ॥ ऋषिनकों प्रिय तीर्थ कनखल लसत ए अति रूप। लखऊ यह सुरसरित गङ्गा परम पावनि भूप॥ पुरा पाई परम सिद्धि सु इहा सनतकुमार। इहां कीन्हे स्नान छूटत पापपुञ्ज अपार। परम ऋद भृगु तुंगगिरि पर भरो सलिल ललाम। स्नान तामे कीजिए है उष्णिगङ्गा नाम। रैभ्यको यह लसत आश्रम भरो पुण्य प्रकाश। भरद्वाज सु तनय जहँ जवक्रीत पायो नाश ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ भरद्वाज सु महामुनिको जवक्रित सुत जौंन। कौन बिधिसों नाश पायो महामुनि कऊ तौन ॥ लोमसउवाच ॥ भरद्वाज सु रैभ्य दोऊ सखा है मुनि भूप। बसत हे ते इहां दोऊ ह्वै अनन्तर रूप॥ रैभ्य अपने सुतनकों सह शिष्य बेदाध्ययन। हैं करावत भरद्वाज सु करत तप मतिअयन ॥ जवक्री तब पिताकों लखि असक्त तप निष्ट। रैभ्यको सत्कार देखा करत शिष्य विशिष्ट ॥ जवक्री तप करण लागो क्रोधसों भरि चेत। पढे विनु सब वेदको वर ज्ञान लहिबे हेत॥ आपु बैठो मध्यपावक वारि कै चऊँ ओर। तास तप लखि इन्द्रकों अति पात बाढो घोर॥ जवक्री सों इन्द्र तब इमि कहो आय सनेत। करत है तुम विप्रवर यह घोर तप केहि हेत ॥ जवक्रीतउवाच ॥ द्विजनकों बिन पढें आवै बेद जातें सर्व। एहि हेत है प्रारम्भ मेरो सुनहु इन्द्र अखर्ब ॥ चहत तपतें श्रुतिस्मृतिको विविधि विधिको ज्ञान। पास गुरुके जाय बीतत पढत काल महान ॥ इन्द्रउवाच ॥ नहीं है यह मार्ग द्विज तुम करत जामे जौंन। करऊ कष्ट न गुरूसों पढि लेऊ श्रुति स्मृति जौंन ॥ ❁ ॥ लोमसउवाच ॥ ❁ ॥ एहि भांति कहि जवक्रीत सो जब गए श्रीमववान। जवक्रीत फिरि बर करन लागे घोर तप अतिमान॥ पायकै सन्ताप अतिशय इन्द्र तेहाँ आय। जवक्री सो कहो वारण वचन वज्र समुझाय॥ ॥ ❁ ॥ जवक्रीउवाच ॥ ❁ ॥ कहत तुमसो करहिये नहि सुनऊ हे मघवान। घोर तप को करत है प्रारम्भ हम अतिमान॥ होम करिहै काटिकै हम अङ्ग अपने सर्व। जौं न वांच्छित करऊ गे मम देवराज अखर्ब ॥ ❁ ॥ लोमसउवाच ॥ ❁ ॥ जानि निश्चय जवक्रीको कियो इन्द्र विचार ॥ ❁ ॥ गए ताके पास धरिकै विप्र रूप उदार ॥ महा कृश अति वृद्ध रोगी वैशमे अतिमान। जाय बैठो जवक्री तिति करत जहँ सुस्नान ॥ मूठि भरि भरि डारि सिकता सुरसरीमे देत। देखाइवेकों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

यवक्रीकों चहत बांधो सेत ॥ कहो तासों यवक्री लखि करत हौ का कर्म ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * व०प०
कहो द्विज तेहिँ सेतु बाँधो चहत है हम पर्म ॥ बाँधि दीन्हें सेतुके इत सुगम पन्था होय । जात आवत पारकों दुख लहत है सब कोय ॥ * ॥ यवक्रीतउवाच ॥ * ॥ सेतुबन्धन सशक्य मे नहिँ रावरे मतिभौंन । अशक्यको तजि करऊ कारज शक्य लायक जौंन ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ वेदार्थकों तुम यथा उदित करत हौ तप विप्र । तथा कार्य्य अशक्य हमऊँ कियो चाहत क्षिप्र ॥ ॥ * ॥ यवक्रीतउवाच ॥ * ॥ यथा यह देवेश कारज रावरो है व्यर्थ । तथा जौं तप आपु मेरो मानिए बिन अर्थ ॥ कहऊ सो तुम होय मेरे शक्य लायक जौंन । दीजिए बर अन्य हमकों योग्य ह्वे जौंन ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ इन्द्र ताकों दियो बर जो चहत हो यवक्रीत । वेद भाषित होय तुमकों सहित तात पुनीत ॥ और सुरपति दियो बर जो रहो वांछित तास । कहो सो यवक्रीत अपने पिताके चलि पास ॥ * ॥ यवक्रीतउवाच ॥ * ॥ वेद भाषित होहिँ गे हम तुम्ह तात अखर्व । विदुषके जे वृन्द जगसे जीति लै हैं सर्व ॥ * ॥ भरद्वाजउवाच ॥ * ॥ दर्प तुमकों होयगो बर पाय इच्छित जौंन । दर्पपूर्ण सो निन्द्य आतुर नाश पावत तौंन ॥ पूर्व देवन्ह कहो गाथा सुनऊँ सो मतिमान । बालधी मुनि पूर्व हो सुत तपस तेजनिधान ॥ पुत्रको लहि शोक तेहिँ मुनि कियो तप सुतकाम । पुत्र मेरे होय सो नहि मरै अति अभिराम ॥ कृपा करि कै आय देवन्ह कहो तासों बन । मर्त्य लहत प्रमाण आयुष अमर कोऊ हैं न ॥ * ॥ बालध्युवाच ॥ रह जबलों अचल ए गिरि धरामाह अखर्व । पुत्र मेरो जियै तबला सुनो हे सुरसर्व ॥ * ॥ भरद्वाजउवाच ॥ * ॥ तास मेधावी भयो सुत भरो क्रोध महान । तौंन सुनि बर करण लागो मुनिनको अपमान ॥ करत अप्रिय मुनिन्हको सो फिरत चारोंओर । गयो सो धनुकाक्ष ऋषिपहँ भरो तामस घोर ॥ दियो ताकों शाप ऋषि धनुकाक्ष लहि अपकार । भक्षहो नहि भक्ष भो तब कियो सुऋषि बिचार ॥ महिष किय उतपन्न ऋषि गिरिनाश कारण पाय । मरो सो जब दियो महिषन अचल तौंन गिराय ॥ बालधी ले मृतक सुतकों लगे करण विलाप । पढो गाथा द्विजन्ह तब यह देखि तास उताप ॥ शकत कोऊ न टारि विधितें विहित कारज जौंन । दियो महिषन डारि देखो धराधर बर तौंन ॥ अबुध लहि बर दर्प बल ह्वै नाश पायो क्षिप्र । कीजियो मुनिवरणको तुम नहीँ अप्रिय बिप्र ॥ महाबीर्य्य सुरैभ्य मुनि यह पुत्र ताको जौंन । तास नहिँ अपराध कीजो सुनऊँ सुत मतिभौंन ॥ रैभ्य पीडित करणके है योग्य कीन्हें क्रोध । भूलि तासों कीजियो मति सुनऊ पुत्र विरोध ॥ * ॥ यवक्रीतउवाच ॥ * ॥ करहिँ गे हम तौंन तुम जो कहत हौ सुखदान ॥ मान्य हमकों यथा तुम हौं तथा रैभ्य सुजान ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ पितासों यहिभांति कहि कै बचन परम ललाम । मुनिनको सो लगे अप्रिय करण दुर्मतिधाम ॥ फिरत बनमें

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० यवक्री सो भरो कुमति प्रकाश । गयो आश्रम रैभ्यको हो जहाँ लहि मधुमास ॥ सुषा मुनिकी फिरत वनमे लखो अति अभिराम । कहो तासों यवक्री भजु मोहि हे वरबाम ॥ निर्लज्ज कामा शक्तकों लखि सलज सो मुनिदार। भरी जानि स्वभाव ताको शाप भीति उदार ॥ कियो तेहि स्वीकार गहि एकान्तमे ले जाय। सुरति करि कै दियो ताकों सिन्धुमाहँ गिराय ॥ बँचो बूडति निकसि कै सो गई अपने धाम । सासुसों सब कहो रोदण करत दुःखित साम ॥ पराबसुसुतकी सुमाता सुषा सहित विलाप । रैभ्यमुनि तहँ आइ देखो भरे महत उताप ॥ कहो मुनिसों सकल तेहि यवक्रीतको सब कर्म ।सुनत बाढो रैभ्यको अतिकोप दारुण धर्म ॥ जटा एक उखारि विधि वत अग्निमे किय होम । भई तासों प्रगट नारी तरुण तेजसतोम ॥ दूसरी फिरि जटाको मुनि कियो होम उखारि। भयो तासो प्रगट राक्षस शूल करमे धारि ॥ कह्यो तिन मुनि कहऊ सो हम करै कारज उह।यवक्रीत हि जाय मारऊ कहो मुनि व्है क्रुद्ध॥ हो यवक्री जहां ते तहँ गए दारुण रूप । हरि कमण्डलु लियो नारी धारि रूप अनूप ॥ शूल लै सो चलो राक्षस ताहि मारण हेत । भजो ताहि विलोकि आवत यवक्री जलहेत ॥ गयो सरवर सरिततट मुनि लखो नहि तहँ नीर । अग्निशाला पिताको तहँ गयो भजत अधीर । गयो खेदैं तहां राक्षस शूल लीन्हें घोर। अन्ध रक्षक शूद्र राखो रोकि तहं वरजोर ॥ आइ राक्षस हनो तब तेहि शूलसों अतिमान । यवक्री हत गिरो क्षितिपर छोडि दीन्हो प्राण ॥ यवक्रीकों मारि राक्षस रैभ्यके गो पास । रैभ्य आज्ञा पाइ बनमे दुऊन्ह कीन्हों बास ॥ कर्म आन्हिक नदी तट करि भरद्वाज नरेश । समिध लीन्हों कियो आश्रम माहँ आइ प्रवेश ॥ मिलत हे चलि पञ्चपावक महा मुनिको जाय । जानि कै हतपुत्र अग्नि न मिले आगे आय ॥ अग्निहोत्र विलोकि विक्रित विचारि कै तपअैन। लगे बूझन अन्ध रक्षक शूद्रसों इमि बैन॥ शूद्र दर्शन नहीं दीन्हों आजु पावक आय। तोहि लखत विवर्ण है इत कुशलको समुदाय॥ रैभ्यके तौ गयो आश्रमकों न मम सुत मन्द । बेगि कहि सो शूद्र मेरो लहत मानस दन्द ॥ शूद्र उवाच ॥ कहो सो बृत्तान्त सिगरो शूद्र मुनिके पास । घोर राक्षस कियो जैसें यवक्रीको नाश ॥ शूद्रको सुनि बचन मुनि वर भरे महत उताप । मृतपुत्रकों ले लगे नाना भाँति करण विलाप॥ ॥ * ॥ भरद्वाजउवाच ॥ * ॥ रैभ्य आश्रमकों न तुमकौं कहो हो हम जान । गए ताकों देखिबे तुम कुटिल काल समान॥बृद्ध मेरे एक पुत्र सो रहो जानत दुष्ट।कियो ऐसो कोप तापैं पापपूरण दुष्ट ॥ रैभ्य क्रत यह भयो हमकों पुत्रशोक महान । पुत्रके हम शोकसों यह यथा तजि हैं प्रान ॥ तथा हनि है रैभ्यकों सुत ज्येष्ठ ताको जैंन । भयो जाके पुत्र नहिँ जन सुखी जगमे तैंन ॥ पुत्रको लखि शोक व्याकुल सखाकों जो शाप । देत तासों अधिक जगमे कौंन पूरण पाप ॥ लोमसउवाच भरद्वाज विलाप करि यहिँभाँति सुनऊँ नरेश । गए सुत सह स्वर्गकों करि अग्निहोहिँ प्रवेश॥ बृहद्युम्न नरेश तब तेहिँ कालमे मख अत्र । करण लागो रैभ्यके सुत भयो याजक तत्र ॥ कनिष्ठ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अर्बावसु परावसु रैभ्यपुत्र सु ज्येष्ठ। वर्ण तिनको यियो भूपति यज्ञकारक श्रेष्ठ॥ रैभ्य आश्रममे रहे सह परावसुको वास। परावसु एकदोस निशिमे गयो अपने धाम॥ रैभ्य धरि मृगचर्म बनमे रहे बैठे भूप। परावसु बस साप मारो जानि हिंसकरूप॥ प्रेत कारज पिताको करि परावसु शुचि पाय। कहो मातासों सकल वृत्तान्त मखमे जाय॥नहीं अर्बावसु तिहारे शत्रुको यह कर्म। पिता हींसनको लगो है हमे महत अधर्म॥ ब्रह्म हींसन करऊ व्रत तुम तात मेरे अर्थ। सबके कर बाइबेमे जानि मोहि समर्थ॥ अर्बावसुरुवाच॥ बृहद्युम्नको यह सब पूरण करऊ तुम अनुरूप। तब अर्थ करि हैं महाव्रत हम ब्रह्महिंस अनूप॥ लोमसउवाच॥ भयो सो करि महाव्रतकों ब्रह्महत्या पार। गयो अर्बावसु तहां जहँ हैात सब उदार॥ परावसु तेहि देखि ऐसे कहो नृपसों जाय।ब्रह्महा यह यज्ञ योग्य न देऊ भूप बराय॥ लोमसउवाच॥द्वारपालनसों दियो कहि भूप यह सुनि बैन। ब्रह्महा यह करऊ बाहेर योग्य मखके है न॥द्वारपालन कियो बाहेर खेंचि मखतें ताहि। परावसु यह कियो कारज लोभ धनको चाहि॥ अर्बावसु तब गयो बनकों मौन व्है तप काम।सूर्य्यको तहँ कियो राधन धारि कै तप साम॥ मंत्र दिनमणिको जपो व्रत नियमसों सम्पन्न। मूर्त्ति धरि कै दियो दर्शन ताहि भानु प्रसन्न॥ कियो देवन्ह वरण ताको देखि तप व्रत कर्म। परावसुकों काढि मखते दियो जानि अधर्म॥ कहो अर्बावसु हि मागन परम वर अभिराम। सहित पावक देवगण सब कृपा पूरित साम॥ अर्बावसुरुवाच॥ पिता जोबै परावसुकों करै पातक त्याग। रैभ्य समुझै मरणकों नहि रहै पूरित राग॥ भरद्वाजो जियै अपने सहित पुत्र ललाम। देव दीजै कृपा करि यह सोहि वर अभिराम॥ देवतन स्वीकार करि कै दिए ए बर सबै।प्रगट ते सब भये धारे यथा रूप अखर्ब॥यवक्री इमि देवतनसों कहे बचन प्रमान।बेद हम सब पढे व्रत तप कियो विहित विधान॥ भयो कैसे रैभ्य मेरे हननमाह समर्थ। देव याको कहऊ मोसों विहित विधि जो अर्थ॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥ यवक्रीत न कियो तैसें कहत जैसे बैन। बेदगुरुसों पढो नहि तुम सहित श्रम मतिअैन॥ रैभ्य गुरुसों कष्ट करि बऊ पढो बेद सुजान। कालमे बऊ होत तातें तुम न तास समान॥ लोमसउवाच॥ भांति एहि यवक्रीतको तिन्हहिँ सब हि जिवाय। गए सुर सब स्वर्गको तब सब शान्ति कराय॥ तास आश्रम पुण्यमै यह पुष्प फल युत पर्स। नाश कीजै पापकों बसि एक निशि नृपधर्म॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि यवक्रीतोपाख्यानवर्णनोनान पञ्चविंशतितमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ लोमसउवाच॥ * ॥ दोहा॥ * ॥

जशिर बीज मैनाक गिरि श्वेत शैल अरु काल। नाघत तुम यह सप्तधा गङ्गा लखऊ विशाल॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब॰प॰ बिरजसु पुण्यस्थान यह नित्य अग्निको बास।मनुज गमनको शक्य नहि यह गिरि हे मतिरास॥
करि समाधि एकाग्र व्है लखऊ तीर्थ ए सर्ब। देखि परत ए सुरनके क्रीडाबिपिनि अखर्ब॥
श्वेत सुमन्दर अद्रिमे अब तुम करत प्रवेश। माणिभद्र यक्षेन्द्र सह धनाधीशको देश॥
सहस अठासी सङ्गमे है जाके गन्धर्ब। हैं तिनसों किम्पुरुष अरु यक्ष चतुर्गुण सर्ब॥
धरें अनेकन रूपकों धारे शस्त्र महान। माणिभद्र यक्षेन्द्रकों सेवत सकल सुजान॥
तिनकी अति सम्पति इहां इन्द्र सदृश बलवान। चहूँओर रक्षा करत जातुधान अतिमान॥
पर्बत दुर्गम ए महा करु समाधि कुरुभूप॥ सखा धनदके रहत इत उग्र सु सौम्य स्वरूप॥
तिनसो मिलिबेकों रहो बिक्रम सहित तयार। ऊचो योजन साठि है गिरि कैलाश उदार॥
आवत हैं तहँ देवता बदरीकाश्रम यत्र। किन्नर राक्षस यक्ष गण अनगण बासो तत्र॥
रहत धनदके धाम ढिग पन्नग खग गन्धर्ब। तहां जाहु गे भूप तुम करि तप योग अखर्ब॥
हमतें रक्षित भीमके बलते भूपति धर्म। कुशल करै तो वरुण यम अग्नि सरित सरपर्म॥
देव दनुज गिरि स्ववसु करैं सु तौ कल्याण। करै कृपा गङ्गा सुनत जाको शब्द महान॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥

लोमसके मुखते सुनत यह अपूर्ब भय बैन। रक्षा कृष्णाकी करऊ यत्न सहित मतिचैन॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

कहो भीमसों भूप तुम कृष्ण हि रक्षेऊ बीर। शरण तिहारी लेइ यह आएँ भीति गम्भीर॥
तब नृप माद्रीसुतनकों करि कै मूर्धा घ्रान। कहो न भय कीजो चलत ह बर बीर सुजान॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

अन्तरध्यान फिरं इहाँ भयङ्कर भूत महान। अग्नि सहित करि शौच इत चलऊ भीम बलवान॥
सुने महाऋषिके बचन चलिबेके कैलाश। कैसें कृष्णा चलेगी अतिकोमल छविराश॥
अथवा सह सहदेव मुनि धौम्य पैरजन तौन। रथ परि चारक बिप्र जे करि नमकत हैं गौन॥
सहित द्रौपदी फिरऊ तुम सुनऊ बृकोदर बीर। तीनजने हम जाहि गे मुनिव्रत धारि गँभीर।
लोमस हम अरु नकुलकों लोन्हें सङ्ग उदार। मम आगमकों देखि हौ तुम बसि गङ्गाद्वार॥

॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥

राजसुता श्रम दुःखतें आरत यद्यपि भूप। चलिति लालसासों भरी लखिवें अर्जुनरूप॥
तुमऊकों इच्छा महति चितमे बढी गभीर। लखिवेकों पारथ परम नवित्र पावक बीर॥
हम कृष्णा सहदेव सह होत निवृत्त न भूप। और द्विजन सह जाँउ सब परिचारक जे भूप॥
हम तुमकों नहि छोडि है एहि गिरि दुर्गममाहँ। जो राक्षसके वृन्दसों हैं पूरित नरनाहँ॥
यह कृष्णा पतिव्रत भरी तुम्हे बिना मरनाहँ। और ठौरके रहनको क्यों करि है उतसाहँ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तुम्ह छोडि सहदेव ए परम भक्त तो भूप। और ठौर रहिहै न हम जानत इनको रूप॥
अर्जुनके हम लखनको सबहैं इच्छामान। और ठौर रहिहै नही तुम्हैं छोडि सुखदान॥
बज्र कन्दर गिरि दुर्गमे चलि न सकत रथ जैंन। तौ हम करिहै चरणसों साथ तिहारे गैंन॥
हम कृष्णाकौं वाहिहै चलि न सकी जह भूप। दुर्गमसे माद्री तनय तिनहूकों सुखरूप॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

इन्हैं वाहिवें कहतहो तुमसों भरे गँभीर। को तुमसो या जगतमे धन्य वृकोदर वीर॥
ऐसो तुम जो कहतहो भीमसेन बर बैंन। कबहू होऊ न श्रम सहित तुम्हैं पराभव हैं न॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सुनि बोली कृष्णा बचन सस्मित मधुर अमन्द। हम चलिहै सुखसों नृपति मो प्रति करऊ न दन्द॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

गन्धमादन पै चढैं नहिं तप तेजस ते हीन। ताते धरि ब्रत नियमको करिये तपबल पीन॥
हम तुम सह माद्री तनय भीमसेन बलधाम। चढि गिरिदुर्गम पर लखै अर्जुनकों अभिराम॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भाषमान ऐसें सकल नृप सुबाऊको देश। देखो गजरथ तुरग बर सम्पति भरो नरेश॥
तहाँ किरात पुलिन्दको सङ्कुल देखो भूप। हिम गिरिके तीरे बसत अद्भुत भरो अनूप॥
सुनि सुबाऊ नृपधर्मको पूजन कीन्हों आय। अपने सीमाके निकट साञ्जलि गयो लेवाय॥
एक निशा तेंहा रहे तासों लहि सतकार। रथ परिचारक राखि तहँ भोरहिं चले उदार॥
पाण्डव कृष्णा चरण गति लोमसके सगँ भूप। चले बिलोकन जिष्णुकों पूरे प्रीति अनूप॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

भीम नकुल सहदेव सह सुनऊ द्रौपदी बैंन। पूर्वजन्म कृत कर्म फल सो न मिटत मतिऐंन॥
लखऊ बनेचर भए हम बहत एककों एक। पाय पियादे फिरत हैं सहि दुख भाँति अनेक॥
फिरत असक्य सु बिपिनिमे लखिबे अर्जुन बीर। दाहतहै अभिलाष सो हमै वृकोदर धीर॥
देखत अर्जुनकों नही यह दुख सहो न जात। तूलराशि पावक दहत तथा हमारो गात॥
कृष्णाको अपमान जो कियो सुयोधन पाप। और अदर्शन जिष्णुको हमकों करत उताप॥
तीर्थ बिपिनि गिरि सर नदी तुम्हे सहित रणधीर। फिरत भरत दुखसों लखत तहाँ न अर्जुन बीर॥
पाँचबर्ष बीते फिरत धारें धनु गाँडीव। यह दुख हमकों दहतहै लखत सो नहि बलसीव॥
सिंहगवन बलधाम जो घनश्याम अभिराम। ताहि न देखत दहतहै ताप तरुण तन साम॥
फिरत शत्रु समुदायमे काल रुद्र सम जैंन। अरिगण बनको दहन सम बीर न देखत तैंन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दुर्बलसों अपमान लहि जो कृतु होत सुजान। प्रबल कुटिलता करत जो ताकों शमन समान ॥
शत्रुऊकों आएँ शरण अभय देत जो बीर। हम सबकों आश्रय सुखद अरिमर्दन रणधीर ॥
जाके भुजबलतें लहे हम बज्र रत्न सुजान। दिव्य ख्यात तिऊ लोकमें पाई सभा महान ॥
जास बाऊबल तुल्यहै त्रिभुवनमें मघवान। जवमें वायु समान सो रणमें मृत्यु समान ॥
ताहि देखिबे चहत हम दरससों भरे अशेष। चढे गन्धमादन अचल धारे मुनिव्रतवेष ॥
पद्माकर धनपालको जह राक्षस समुदाय। चहत पयारे जान तह तपकरिकै अतिकाय ॥
ज्ञानमानके जानको जैन बृकोदर देश। लुब्ध क्रूर क्रोधी न जह जाय सकत मतिबेश ॥
तहा जान हम चहतहै द्विजबर वृन्दसमेत। जहा मक्षिका व्याघ्र अहि दुःखद दारुण चेत ॥
व्है सशौच चलिबै तहां नियताहार सुधीर। जहां गन्धमादन अचल लखिबे फाल्गुण बीर ॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

गिरि पुर कानन सरित तुम देखो चाहत सर्व। चलऊ आचमन करि सबिधि देखन तीर्थ अखर्व ॥
गिरि मन्दरको जातहै यह पन्था कुरु भूप। सावधान व्है कै चलऊ हे पाण्डव शुचि रूप ॥
यहि गिरि देव निवासहै दिव्य ऋषिनको धर्म। इहा तुम्हैं चलिबो परम सशुचि सुनऊँ नृपधर्म ॥
पुण्यमयी यह जब शिला यह सुरसरिता भूप। बदरीकाश्रम सों भई प्रगट पुण्यमय रूप ॥
जाकों सेवत देव ऋषि बालखिल्य तपधाम। जास सुरासुर करत है अर्चन अति अभिराम ॥
शमग गावत शाम जहँ पुण्यभरे सुर भूप। मरीचि पुलह भृगु अङ्गिरस आह्निक करत अनूप ॥
साध्य दश्वरबि चन्द्रमा यह नक्षत्र सुर सर्व। निशिदिनमें सुरसरि भजत पावत पुण्य अखर्व ॥
सुरसरिता शिरपै धरी वृषभध्वज नृपधर्म। जगकारण अव्यय अमित जैन चराचर पर्म ॥
तैान भगवती सुरसरितकों अभिवादन भूप। भ्रातन सह कीजै सबिधि करि आत्मा शुचिरूप ॥
धर्मनृपति सुनिकै बचन लोमसके सुखदान। गगण गामिनीको कियो पूजन सहित विधान ॥
बन्दन करि सुरसरितको ऋषिगण सह नृपधर्म। चले दूरि तें गिरि सदृश देखो पाण्डुर पर्म ॥
मुनिसों बूझनको कियो ताकों भूप बिचार। जानि हृदय नृपको लगे लोमस कहन उदार ॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

पाण्डुर यह कैलासके लखत जो शिखर समान ॥ नरक दैत्यको अस्थि है यह अतिमान सुजान ॥
विष्णु सनातन करि कृपा सुरपतिपै अवदात। पूर्व कालमें दनुको कीन्हों इहा निपात ॥
करि तप वर्ष हजार दश भरो गर्व अतिमान। लोकेंको उद्दित भयो जब सुरपति को स्थान ॥
सो तपबल ते बाऊबल माया बलते भूप। देन लगो सो सुरनकों दुःख दुसह अति रूप ॥
ताका तपबल जानि अति व्याकुल व्है मघवान। ध्यान धारिकै विष्णुकों लगे भजन सुखदान ॥
सर्वव्यापक जगतपति प्रगट भये तब आय। सुस्तव लागे करन सुर महा मोदसों छाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बरद बिष्णुको देखिकै साञ्जलि सुर मघवान। करि प्रणाम लागे कहन जो भय विहित बिधान॥ व०प०

॥ * ॥ बिष्णु रुवाच ॥ * ॥

भयो नरक तें भय तुम्है सो हम जानत शक्र। तव पद सो चाहत लियो तपबलसों अति बक्र॥
सो हम याकों देहतें भिन्न करत मघवान। समाधान करिकै रहो एक मुहूर्त सुजान॥
बिष्णु मारिकै पाणि सों हरो नरकको प्रान। गिरो भूमिमे बज्र हत यथा अद्रि अतिमान॥
तास अस्थि समुदाय यह देखत जो नृपधर्म। और कहत हम सो सुनऊ जैन बिष्णु कृत कर्म॥
भई मग्न पातालमे नष्ट होय भू भूप। बिष्णु करी उद्धार सो धरि बराहको रूप॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

यह भगवन बिस्तर सहित कहऊ कथा तुम तौन। शतयोजन पाताल तें हरि उद्धारी जौन॥
भई मग्न पातालमे भू लहि कारण कौन। यथा तत्व सुनबेचहत कहिए मुनिवर तौन॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

जो तुम सुनबें चहतहौ बूझत हमसों भूप। सो हम तुमसों कहतहैं बिस्तर सहित अनूप॥
अभयङ्कर कृत युग रहो बर्तमान जब पर्म। करत रहे यम भाव तब आदिदेव नृपधर्म॥
तब नहि कोऊ मरत हे जीव होत हे तौन। प्राणिनको सकुलभयो महाभयङ्कर तौन॥
क्षिति अति भाराक्रान्त व्है गई रसातल भूप। नारायणको शरण तब लई दीन धरि रूप॥

॥ * ॥ पृथिव्युवाच ॥ * ॥

बिष्णु तिहारी कृपाते इत चिर करिहौं बास। भई भारतें आंत अति सहि न शकति सुखरास॥
मेरे एहि बर भारके हरिबेमे तुम दूश। शरणागत मोकों चितै कृपा कर ऊ जगदीश॥
सुनि धरणीके बचन ए कृपा भरे भगवान। नैन चैनकारक कहे ऐसे सुनऊ सुजान॥

॥ * ॥ बिष्णु रुवाच ॥ * ॥

तुम्हैं न करिबे भय धरा बसुधारिणि अभिराम। जाते हलुको होऊगी तौन करत हम काम॥
बिदा भूमिकों करि धरो हरि बराहको रूप। एक दन्त पर क्षितिधरी शैलकुण्डला भूप॥
बढेधूमके तोमसे श्री सह सुनऊ सुजान। एकशृङ्ग बाराह बनि धरा धरी भगवान॥
सौयोजन ऊरध कियो धरणीको उद्धार। धरत धरा तिऊलोकमे बाढो कम्प उदार॥
हाहाकार भयो महा त्रिभुवनमे अति सोर। देव दनुज नहिँ धीर धरि रहे भरे भय घोर॥
गए देवऋषि बिधि निकट साञ्जलि बोले बैंन। भए चराचर बिकल सब लोकनमाहि अचैंन॥
शत योजन धरणी धसी सीध्रु भए चलमान। कौन पाय कारण भयो यह बिधि चरित महान॥
कहऊ पितामह सो हमै व्याकुलजानि अथर्व। ब्रह्मोवाच। असुरनसों नहिँ भीति यह तुम्हैसुनो मुनि सर्व॥
भयो क्षोभ यह हेतु जेहि कहत सुनो सुर तौन। अक्षर अव्यय सर्व मय बिष्णु कहावत जौन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ताके भयो प्रभावतें यह संक्षोभ उदार । धसी धरणि ताको कियो फिरि तेहि धरि उद्धार ॥
ताहि उठावत यह भयो कम्प जगतमे सर्ब । यह तुम जानऊ सुर सकल संशय तजऊ अखर्ब ॥

॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥

कहऊ पितामह है कहा भयो जो यह औतार । जौन देशमे है तहा देखै जाय उदार ॥

॥ * ॥ ब्रह्मोवाच ॥ * ॥

कोल रूप भगवान सो है नन्दनबन माहँ । तहा जाय दर्शन करऊ तीनिलोकके नाह ॥
देखऊ इहां सुपर्ण यह करे प्रकाश उदार । धरि बाराह स्वरूप हरि कियो धरा उद्धार ॥
कालानल सम लसतहै तीनिलोकको धाम ॥ हृदय माहँ श्रीवत्स धरि चिन्ह परम अभिराम ॥
सुरण पितामह सङ्ग लखि तौन महात्म स्वरूप । बिदा होय बिधिसों गए लोक आपने भूप ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

लोमससों यह कथा सुनि भ्रातन सह नृपधर्म । मुनि आज्ञा लहिकै चले फिरि गिरिबरकों पर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजसहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषायां महाभारत दर्पण गन्धमादनप्रवेशवर्ण
नोनाम षड्त्रिंशोध्यायः ॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तब पाण्डव धरि धनुष तुणीर । खड्ग चर्म बर बर्म गँभीर ॥ पाञ्चाली सह द्विजबर जौन ।
कियो गन्धमादनकों गौन ॥ सर सरिता गिरिबर बऊ रङ्ग । तरुबर धरें सुमन उतमङ्ग ॥ जह
तह देखत देश बिशाल । मुनिगण सेवित सुषमा जाल ॥ सावधान आत्मा करिसर्ब । असन
मूलफल करत अखर्ब ॥ उच्च नीच पथमे संचार । करत लखत मृगबृन्द उदार ॥ गए गन्ध
मादनके पाश । गिरि प्रवेश कीन्हों सतिराश ॥ करत प्रवेश प्रभंजन चण्ड । बहन लगो सह
जलद घमण्ड ॥ क्षिति अकाश दिशि बिदिशि उदार । अन्धकारसों भरो अपार ॥ उडन
रेणु लागी अति भूप । देखि आपनो परत न रूप ॥ नहि अन्योन्य सके कहि बैन । देखि न
सके खोलिकै नन ॥ सहित पषाण बात अति रूप । तिन्हैं उडावन चाहत भूप ॥ टूटिगिरत जे तरु
षऊखोर । तिनको होत शब्द अतिघोर ॥ गिरि फाटत कै गगण महान । जैसो होत शब्द
अतिमान ॥ भए बातसें मोहित सर्ब । जैसो मानत शब्द अखर्ब ॥ शिला वृक्ष हाथन्हसों टोय ।
तहां सरकि बैठत तन गोय ॥ भीमसेन लै धनुष महान । कृष्णाकों गहिकै बलवान ॥ आडम
[illegible]को गहि जाय । बैठे महा दुःखकों पाय ॥ धौम्य सहित नृपधर्म नरेश । छपे सघन बनमेंछश
[illegible] सहदेव सुजान । गिरिकन्दरमे छपे महान ॥ लोमस नकुल विप्रगण जौन ।
[illegible] तौन । मन्द भयो जब कछुक समीर ॥ तबआए घन उमडि गँभीर । बरसन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प०

लागे धारा धारि । चहूँ ओरते उमडो बारि ॥ फिरति नचति चपला चहुँ ओर । बारिधार धाइ अतिघोर ॥ उमडी नदी पर्वतासीन । कलुष सफेण भयंकर पीन ॥ मिटो बात सह बृष्टि महान । उयो दिवाकर जब सुखदान ॥ व्है एकत्र लहि कुशल अनूप। चले गन्धमादनकों भूप ॥ एकक्रोश जब गए नरेश । उच्च निच्च नाघत बहुदेश ॥ जानु पकरि कै कृष्णा भूप। बैठि गइथकि दुःखितरूप॥ सलिल बातको लहि उतपात । सुकुमारी अति कम्पित गात ॥ परी भूमिपर पाय पसारि । भरी मोहसों गतिमति हारि॥ नकुल देखि कै सहसा धाय । भरे दुःखसों पकरी आय॥ *॥ नकुल उवाच ॥ * ॥ यह पाञ्चाल राजजा भूप। गिरो भूमिपै व्यथित स्वरूप॥ भरी दुःखसों देखहु आय। आस्वासन कीजै सुखदाय ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ राजा सुनत नकुलके बैन। बगि गए तहँ भरे अचैन॥ भीमसेन सहदेव समेत । आए बेग तहाँ हतचेत ॥ लखि बिवर्ण बदना नृप ताहि। धरो अङ्कमे दुख अवगाहि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ रक्षित सदन सेज अभिराम । ताकों उचित जौंन छबिधाम ॥ दुःखित परी भूमि पर तौंन । करति कमलसे पाइन्ह गौंन ॥ ममकृत कर्म उपाधि हि पाय । अैसो दुख यह पावति होय ॥ रहा द्युत नहि हमको योग। ताको हम यह पावत भोग॥ जातैं कृष्णा सह इत आय । फिरत बिपिनिमे यह दुखपाय ॥ फिरत बिपिनिमे कृष्णा सङ्ग । जहाँ व्याघ्र मृग बृक बहुरङ्ग ॥ सुख लहि है सबभांति उदार । पाय पाण्डवनकों भर्त्तार ॥ यातें दीन्ही द्रुपद बिबाहि।यह दुख परो बिपिनिमे ताहि॥लही न सुख पथश्रमकों पाय। क्षिति पर परी मृतक सम हाय ॥ ममकृत पापकर्म फल जौंन । प्राप्त भयो एहि बनमे तौंन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ करत बिलाप देखि नृपधर्म। धौम्यादिक जे द्विजबर पर्म ॥ आए तहाँ दुखित अतिमान । आशीर्वाद कियो सुखदान॥ जप रक्षोघ्नमंत्रको कीन्ह। धौम्यादिक सब ऋषिण प्रवीन ॥ ऋषिन्ह कियो जप मंत्र सुपर्म। शीतलकर फेरो नृपधर्म ॥ कियो समीर सीचि मुख बारि। कछु चैतन्य भई सुकुमारि॥ कृष्णाजिन पर दियो सुताय। धर्मनृपति करसों गहि ल्याय॥अरुण कमलसे कोमल पाय।लक्षण भरे परम सुखदाय ॥ क्षिति परशनके योग्य न जौंन । चलत गहन गिरि भू पर तौंन ॥ इमि कहि समाधानके बैंन । आस्वासन करि कै मतिअैंन ॥ कहो भीमसों धर्मनरेश। यह बहुगिरिमै दुर्गम देश॥तामे कृष्णा भीम सुजान। कौनभांति चलि है सुखदान॥ भीमसेनउवाच॥ तुम्हैं राजपुत्रिकों भूप। सहित नकुल सहदेव अनूप ॥ हम लै चलि हैं सुनहु नरेश ।करहु बिषाद न तजहु अंदेश। बिहग घटोत्कच मोहि समान । तुम सबकों बहि है बलवान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ आज्ञा दियो सुनत नृपधर्म । स्मर्ण तास किय भीम सुपर्म ॥ करत स्मर्ण घटोत्कच बीर । तहँ आयो बल भरो गभीर ॥ जोरे अञ्जलि आगे आय । ठाढो भयो बन्दि पितुपाय ॥ बन्दि पाण्डवन द्विजन्ह उदार । आशिष सहित लहो सत्कार ॥ * ॥ घटोत्कचउवाच ॥ * ॥ स्मर्ण मात्र तो आयो बीर।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० कारण तात सो कहऊ गँभीर ॥ आज्ञा करऊ करौं सो सर्ब। पिता तिहारो काय्य अखर्ब ॥ यह
सुनि भीमसेन सुखपाय। लियो घटोत्कचको उरलाय॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सूर बली धर्मज्ञ उदार।
तुम सम औरस पुत्र कुमार॥ तो भुजबलतें जान उदार। चहैं गन्धमादनक पार॥ बैशम्पायनउवाच॥
भ्राता वचन जानि कै भीम। कहो घटोत्कचसों बलसीम॥ भीमउवाच ॥ पुत्र श्रान्त तव माता पर्म।
कामग तुम्हैं बाहिवो धर्म॥ हम सब मध्यकन्ध पर राखि। चरऊ गगणपथ मे भ्रमनापि॥ ऐसें करऊ
गमन तुम तात। होय न पीडित जों तो मात॥ घटोत्कचउवाच॥ धर्मराज कृष्णा सह धौम्य। तुम
माद्रीसुत सुन्दर शौम्य॥ हम बहबेमे सबे समर्थ। खेचर और सहाय किमर्थ॥ खेचर और जो
मेरे साथ। सकल द्विजनकों बहि हैं नाथ॥ ऐसे बोलि घटोत्कच बीर। पाण्डुसुतन्ह सह
कृष्णा धीर॥ लियो स्कन्ध पर शीघ्र चढाय। चलो गगणपथमे अतिकाय॥ सिद्ध मार्ग गहि
लोमस भूप। चले गगणमे दिनकर रूप॥ और रहे जे द्विजवर काय। तिन्हैं राक्षसन्ह लिये
उदाय॥ देखत वन उपवन रमणीय। बीशाला बदरी कमनीय॥ राक्षस तहँ ले गए उताल।
लघुपन्था सम मार्ग बिशाल॥ म्लेच्छाकीर्ण लखत बहुदेश। रत्ननके जहँ आकर बेश॥ छोटे
बडे लखत गिरि सर्ब। जहँ बिद्याधर बसत अखर्ब॥ किन्नर वानर बसत उदार॥ गन्धर्बनको जहँ
परिवार॥ नानाभाँति मृगनकी जाति। सिंह बराह गजनकी पांति॥ नानाजाति बिहंग बहु
रङ्ग। जाल नदिनको गिरि बर सङ्ग॥ उत्तरकुरु देखत बर भूप। शङ्कर गिरिको देखो रूप॥
नरनारायणको सुस्थान। बदरी निकट लखो सुखदान॥ दिव्य जहां पादप अभिराम। मानो
फल फूलनके धाम॥ तहां लखी बदरी नृपधर्म। बृत्तस्कन्ध जास अतिपर्म॥ अबिरल छाया
स्निग्ध शरीर। पत्र सचिक्कन हरित गँभीर॥ शाखा अति बिशाल बिस्तीर्ण। स्वाद भरे फलसों
[illegible]॥ महर्षि जिहिँ सेवत अभिराम। प्रमुदित पक्षिनको निजधाम॥ हैं न मक्षिका जेहां
[illegible] सहित प्रसंश॥ कोमल भूमि हरित तृण सर्ब। देवन सह सेवत गन्धर्ब॥
[illegible] अवदात। देखि भूप सह द्विजगण भ्रात॥ ऐसो लखि भूभाग अनूप। तात
[illegible] भूप॥ नर नारायण आश्रम यत्र। गए सहित द्विज भ्रातन्ह तत्र॥ तमस रहित
[illegible]। क्षुधा तृषा नहि लगति उदार॥ शीत उष्ण जहँ सदा समान। ऋषिगण सेवित
[illegible] धर्म कर्म बिरहित नर जौंन। जाय सकत नहिँ तेहाँ तौंन॥ बलि होमार्चित
[illegible] दिव्यसों रचित अखर्ब॥ यज्ञ सदन तहँ बने अनूप। श्रुवा चमस मखपात्र
[illegible] जल भरे सशर्म। बेदघोषसों नादित पर्म॥ आश्रम तौंन सेइबे योग। जौंन
[illegible] भरे ब्रह्म श्री ऋषि अभिराम। सेवत जाहि तेज तपधाम॥ फल मूलाशन
[illegible] बर बास॥ सूर्य्य अग्निसम जिनको रूप। आत्मज्ञानसों भरे
[illegible] नृप धर्म। गए शौच करि बिधिवत पर्म॥ दिव्य ज्ञानतें
[illegible] धर्मनृपति बिरधारि॥ भूप प्रसन्न महर्षि महान। धर्म नृपतिकों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लखि सुखदान॥ आशीर्वाद दियो तिन भूप। वेदपाठमे निरत अनूप॥ पावक सदृश मुनिन्ह सत्कार। धर्मनृपतिको कियो उदार॥ दियो मूल फल पुष्प सबारि। भए प्रसन्न भूप सो धारि॥ अक्ष सदन सम आश्रम तौंन। भरो सुगन्ध स्वर्ग सम जौंन॥ धर्मनृपति सह कृष्णा सातातहँ प्रवेश कीन्हों अवदात॥ साङ्ग वेदपारग बर विप्र। सहसन्ह सङ्ग लिए शुचि चित्र॥ तहां लखो नृपधर्म महांन। नर नारायणके सु स्थान॥ भागीरथी निकट अभिराम। रमे भूप देखत छविधाम॥ स्रवत मधुर मधु कल फल यत्र। बसत ब्रह्मऋषि तपमय तत्र॥ तहां जाय कौरव तपरासा विप्रन्ह सहित कियो सुख वास॥ स्वर्णशिखर गिरि लखो अनूप। जहां बिन्दुसर अनुपम रूप॥ कृष्णा सह बिहरे तहँ पर्म। पाई मनोरम बन नृपधर्म॥ तहाँ तुङ्ग तरु लहि फलभार। रहे नमित सम क्षमित उदार॥ कोकिल कूजत गुञ्जत भौंर। जिन पैं भए रहत निति चौंर॥ पद्माकर सह पद्म अनूप। अति रमणीय लखे तहँ भूप॥सौरभ भरो बहत जहँ पौंन। करत प्रसन्न प्राणवन्ह जौंन॥ सीता सुर सरिता अभिराम। तासे तीर्थ पुण्यके धाम॥ बिशाला बदरीके नृप पास। करैं देवऋषि जेहाँ बास॥ देव पित ऋषि तर्पण भूप। तहां बिहित बिधि कियो अनूप॥ बसे द्विजन सह तहँ नृपभान। कृष्णा कोडन लखत सुजान॥*॥ वैशम्पायनउवाच॥*॥ तहां बसे षटनिशा सुधीर। लखिबेंहेतु धनञ्जय बीर॥ तब ईशान दिशातैं पौंन। बिधि इच्छातें करि अतिगौंन॥ सहस पत्र पङ्कज अभिराम। तहँ ल्याय डारो छविधाम॥ ताहि लखो पांचाली भूप। दिव्य गन्धसो भरो अनूप॥ सौगन्धिक लहि सौरभ जैंन। कहे समोद भीमसो बैंन॥ भीम पद्म यह अति कमनीय। लगत मोहि अतिशय रमणीय॥ धर्मराजकों देहौं जाय। यह सुगन्ध अति सुन्दर काय॥ जौं हम तव प्रियकारनि शर्म। तौ ल्याबऊ पङ्कज यह पर्म॥ ले जै हैं कान्यकाकों तौंन। ल्याय देहुगे पङ्कज जौंन॥ भीमसेनसों कहि इमि बैंन। गई धर्मनृप पहँ छबिचैन॥ दिया भूपकों पङ्कज तौंन। कहो याहि ल्यायो द्रुत पौंन॥ जानि द्रौपदीको मनकाम। लेन चले पङ्कज बल धाम॥ रुक्मपृष्ठि धरि धधुष बिशाल। आशीविषसे बाण कराल॥ चले बायु सन्मुख बलवान। कनकल्हार हरण सुखदान॥ करत उध्व मृगपतिसो गौन। लखो बन्यजीवन बलभान॥ श्रम भय जात न जाके पास। करैं बाऊबलको बिश्वास॥चढो शैलपर आतुर बीर। देखत गिरि छवि गहण गँभीर॥ किन्नर सेबित गिरिबर तौंन। लखत तास सुषमा मतिभौंन॥ लखत धातु धारा बऊ रङ्ग। चित्र बिचित्र मृगणके सङ्ग॥ कूजत कलरव गुञ्जत भौंर। भए सुकुलि तरुणके चौंर॥ कुसुमोद्भव बर गन्ध गँभीर। घ्राण करत पांडव बरबीर॥ मारुत गन्ध भरो तहँ आय। परशत तास अङ्ग सुखदाय॥ देखि भरो श्रमसो सुत गात। करिकर परश हरत मनु बात॥ गिरि निर्झर छबि लसत उदार। मनु पहिरें मुकुतनके हार॥ नदी प्रवाह लसत छबिरास। परो कूटि [illegible] मनु बास॥ प्रिया मनोरथ करिबे काम। गिरिपर चढो जात बलधाम॥ प्रांशुकनक [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

द०५० कारण तात सो कहऊ गँभीर ॥ आज्ञा करऊ करौं सो सर्ब। पिता तिहारो काय्य अखर्ब ॥ यह सुनि भीमसेन सुखपाय। लियो घटोत्कचको उरलाय॥ युधिष्ठिरउवाच॥सूर बली धर्मज्ञ उदार। तुम मम औरस पुत्र कुमार॥तो भुजबलतें जान उदार।चहैं गन्धमादनक पार॥ वैशम्पायनउवाच॥ भ्राता बचन जानि कै भीम।कहो घटोत्कचसों बलसीम॥ भीमउवाच॥पुत्र आन्त तव माता पर्म। कामगतुम्हैं वाहिवो धर्म॥हम सब मध्यकन्ध पर राखि। चरऊ गगणपथ मे भ्रमनाखि॥ ऐसें करऊ गमन तुम तात। होय न पीडित जों तो मात॥ घटोत्कचउवाच॥ धर्मराज कृष्णा सह धौम्य। तुम माद्रीसुत सुन्दर सौम्य॥ हम बहबेमे सबे समर्थ। खेचर और सहाय किमर्थ॥ खेचर और जो मेरे साथ। सकल द्विजनकों बहि हैं नाथ॥ ऐसे बोलि घटोत्कच बीर। पाण्डुसुतन्ह सह कृष्णा धीर॥ लियो स्कन्ध पर शीघ्र चढाय। चलो गगणपथमे अतिकाय॥ सिद्ध मार्ग गहि लोमस भूप। चले गगणमे दिनकर रूप॥ और रहे जे द्विजवर काय। तिन्हैं राक्षसन्ह लिये उठाय॥ देखत वन उपवन रमणीय। बीशाला बदरी कमनीय॥ राक्षस तहँ ले गए उताल। लघुपन्था सम मार्ग बिशाल॥ म्लेच्छाकीर्ण लखत बऊदेश। रत्नन के जहँ आकर बेश॥ छोटे बडे लखत गिरि सर्ब। जहँ बिद्याधर बसत अखर्ब॥ किन्नर वानर बसत उदार॥ गन्धर्बनको जहँ परिबार॥ नानाभाँति मृगनकी जाति। सिंह बराह गजनकी पांति॥ नानाजाति बिहँग बऊ रङ्ग।जाल नदिनको गिरि बर सङ्ग॥ उत्तरकुरु देखत बर भूप। शङ्कर गिरिको देखो रूप॥ नरनारायणको सुस्थान। बदरी निकट लखो सु खदान॥ दिव्य जहां पादप अभिराम। मानो फल फूलनके धाम॥ तहां लखो बदरी नृपधर्म। वृत्तस्कन्ध जास अतिपर्म॥ अबिरल छाया स्निग्ध शरीर। पत्र सचिक्कन हरित गँभीर॥ शाखा अति बिशाल बिस्तीर्ण। स्वाद भरे फलसों आकीर्ण॥ महर्षि जिहिँ सेवत अभिराम। प्रमुदित पक्षिनको निजधाम॥ हैं न मक्षिका जेहां दंश।मूल फलोदक सहित प्रसंश॥ कोमल भूमि हरित तृण सर्ब। देवन सह सेवत गन्धर्ब॥ भूमि सचिक्कन सम अवदात। देखि भूप सह द्विजगण भ्रात॥ ऐसो लखि भूभाग अनूप। तात कन्धतें उतरे भूप॥ नर नारायण आश्रम यत्र। गए सहित द्विज भ्रातन्ह तत्र॥ तमस रहित बिन रबि सञ्चार। क्षुधा तृषा नहि लगति उदार॥ शीत उष्ण जहँ सदा समान। ऋषिगण सेवित श्रीसुखदान। धर्म कर्म बिरहित नर जौंन। जाय सकत नहिँ तेहाँ तौंन॥ बलि होमार्चित लिम्पित सर्ब। पुष्प दिव्यसों रचित अखर्ब॥ यज्ञ सदन तहँ बने अनूप। अघा चमस मखपात्र सरूप॥ धरे कलस जल भरे सधर्म। बेदघोषसों नादित पर्म॥ आश्रम तौंन सेइबे योग। जौंन हरत श्रमसञ्चित रोग॥ भरे ब्रह्म श्री ऋषि अभिराम।सेवत जाहि तेज तपधाम॥ फल मूलाशन दायारास। कृष्णाजिन धारें बर बास॥ सूर्य्य अग्निसम जिनको रूप। आत्मज्ञानसों भरे अनूप॥ ऐसे ऋषिन्ह पास नृप धर्म। गए शौच करि बिधिवत पर्म॥ दिव्य ज्ञानतें मुनिन्ह बिचारि। आए धर्मनपति निरधारि॥ भए प्रसन्न महर्षि महान। धर्म नृपतिकों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लखि सुखदान॥ आशीर्बाद दियो तिन भूप। वेदपाठमे निरत अनूप॥ पावक सदृश मुनिन्ह सत्कार। धर्मनृपतिको कियो उदार॥ दियो मूल फल पुष्प सबारि। भए प्रसन्न भूप सो धारि॥ अक्ष सदन सम आश्रम तौंन। भरो सुगन्ध स्वर्ग सम जौंन॥ धर्मनृपति सह कृष्णा जात। तहँ प्रवेश कीन्हों अवदात॥ साङ्ग वेदपारग बर विप्र। सहसन्ह सङ्ग लिए शुचि चित्र॥ तहां लखो नृपधर्म महांन। नर नारायणके सु स्थान॥ भागीरथी निकट अभिराम। रमे भूप देखत छविधाम॥ स्रवत मधुर मधु कल फल यत्र। बसत ब्रह्मऋषि तपमय तत्र॥ तहां जाय कौरव तपरासा बिप्रन्ह सहित कियो सुख बास॥ स्वर्णशिखर गिरि लखो अनूप। जहां बिन्दुसर अनुपम रूप॥ कृष्णा सह बिहरे तहँ पर्म। पाई मनोरम बन नृपधर्म॥ तहाँ तुङ्ग तरु लहि फलभार। रहे नमित सम क्षमित उदार॥ कोकिल कूजत गुञ्जत भौंर। जिन पैं भए रहत निति चौंर॥ पद्माकर सह पद्म अनूप। अति रमणीय लखे तहँ भूप॥ सौरभ भरो बऊत जहँ पौंन। करत प्रसन्न पाण्डवन्ह जौंन॥ सीता सुर सरिता अभिराम। तामे तीर्थ पुण्यके धाम॥ बिशाला बदरीके नृप पास। करैं देवऋषि जेहाँ बास॥ देव पित्र ऋषि तर्पण भूप। तहां बिहित बिधि कियो अनूप॥ बसे द्विजन सह तहँ नृपभान। कृष्णा क्रीडन लखत सुजान॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ तहां बसे षटनिशा सुधीर। लखिबेंहेतु धनञ्जय बीर॥ तब ईशान दिशातैं पौंन। बिधि इच्छातें करि अतिगौंन॥ सहस पत्र पङ्कज अभिराम। तहँ ल्याय डारो छबिधाम॥ ताहि लखो पांचाली भूप। दिव्य गन्धसा भरो अनूप॥ सौगन्धिक लहि सौरभ अैंन। कहे समोद भीमसो बैंन॥ भीम पद्म यह अति कमनीय। लगत मोहि अतिशय रमणीय॥ धर्मराजकों देहौं जाय। यह सुगन्ध अति सुन्दर काय॥ जौं हम तव प्रियकारनि शर्म। तौ ल्याबऊ पङ्कज यह पर्म॥ ले जैहैं काम्यककों तौंन। ल्याय देहुगे पङ्कज जौंन॥ भीममेनसों कहि इमि बैंन। गई धर्मनृप पहँ छबिअैंन॥ दिया भूपकों पङ्कज तौंन। कहो याहि ल्यायो इत पौंन॥ जानि द्रौपदीको मनकाम। लेन चले पङ्कज बल धाम॥ रुक्मपृष्ठि धरि धधुष बिशाल। आशीबिषसे बाण कराल॥ चले बायु सन्मुख बलवान। कनकल्हार हरण सुखदान॥ करत उध्व मृगपतिसो गौन। लखो बन्यजीवन बलभान॥ श्रम भय जात न जाके पास। करैं बाऊबलको बिश्वास॥ चढो शैलपर आतुर बीर। देखत गिरि छबि गहण गँभीर॥ किन्नर सेबित गिरिबर तौंन। लखत तास सुषमा मतिभौंन॥ लखत धातु धारा बऊ रङ्ग। चित्र बिचित्र मृगणके सङ्ग॥ कूजत कलरब गुञ्जत भौंर। भए सुफुल्लि तरुणके चौंर॥ कुसुमोद्भव बर गन्ध गँभीर। घ्राण करत पांडव बरबीर॥ मारुत गन्ध भरो तहँ आय। परशत तास अङ्ग सुखदाय॥ देखि भरो श्रमसो सुत गात। करिकर परश हरत मनु बात॥ गिरि निर्झर इमि लसत उदार। मनु पहिरें मुकुतनके हार॥ नदी प्रबाह लसत छबिरास। परो छूटि गिरिका मनु बास॥ प्रिया मनोरथ करिबें काम। गिरिपर चढो जात बलधाम॥ प्रांशु कनक सम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० सुन्दर काय । सिंह समान बनक सुखदाय ॥ प्रिया कामना करिबें काम । जात लखत गिरि गहए ललाम ॥ प्रियन्ह पास किन्नर गन्धर्ब । बैठे देखत ताहि अखर्ब ॥ समुझत क्लेश सुयोधन कृत्य । लहत न मनमे बीर निवृत्य ॥ बिपिनिवासिनी कृष्णा तास । प्रिय कारबें चाहत मनिरास ॥ बसत स्वर्गमे अर्जुन बीर । चहत आगमन ताको धीर ॥ पुष्प हेतु हम आए अत्र । करि हैं कहा युधिष्ठिर तत्र ॥ स्नेहबश नहिँ बल बिश्वास । माद्रीसुतन्ह राखि हैं पास ॥ मिलि हि कमल केहि भाँति उताल । यह चितचिन्ता धरें बिशाल ॥ गिरि कानन छबि देखत जात । करत भूमि कम्पित पदघात ॥ गजन्ह करत कम्पित बलवान । सिंह व्याघ्र मृग मर्दि महान ॥ जात गिरावत तरु बर बीर । चढो गन्धमादन पर धीर ॥ गरजो घनसम बिद्युत मान । भजे व्याघ्र तजि गुहामहान ॥ खग तरु तजि भजि चले उडाय । मृगगण बसे औरबन जाय ॥ करिनिन्ह सहित भजे गज राज । गए औरबन सहित समाज ॥ मत्त नाग करिनिन्ह सङ्ग जौन । चले भीमपहँ क्रोधित तौन ॥ सिंह व्याघ्र ते अतिबलवान । चलेभीमसों लरन अमान ॥ भीमसेन तब भुजबल धारि । गज गहि मारत गजपर डारि ॥ सिंह पकरि कै ताहि घुमाय । मारत सिंहनकों अतिकाय ॥ करतलसों क्षत्तादिक जान । महिष बराह हने सब तौन ॥ डारत मूत्र पुरीष पराय । बसे औरबनमे ते जाय ॥ गरजे भीमसेन अतिघोर । भरो दिशा बिदिशन्हमे रोर ॥ लखो गन्धमादन पर भूप । बन कदलीको भीम अनूप । तामे गए बेगसों बीर । मथन कियो बन तौन गभीर ॥ कदलीतरु गहि खेत उखारि । देत तिन्हैं क्षिति ऊपर डारि ॥ गर्जो फेरि सिंह सम बीर । पशु पक्षी सुनि भजे अधीर ॥ जलबासी पक्षी हे जौन । उडे जलाद्र पत्र सुनि तौन ॥ लखि जलचर पक्षिनकों बीर । गए तिन्हे अनुसरि सर तीर ॥ कनक कदलिनको चऊँ पास । सरके लसत बिपिन छबिरास ॥ कनक कदली कम्पित पौन । सरहि करै बीजन मनु तौन ॥ पैठे सरमे कुरुबर भीम । फुल्लित कमल भरो छबिसोम ॥ महामत्त गजसे बलधाम । क्रीडा करण लगे अभिराम ॥ क्रीडा करि सरमाह गँभीर । आयो निकसि बाहिरे बीर ॥ गिरि ऊपर करि चलन बिचार । शङ्खधमित किय भीम उदार ॥ कियो यथा बल धमित प्रकाण्ड । ध्वनिसों मनऊ फटत ब्रह्माण्ड ॥ सुनत शङ्खधुनि गुहन्ह महान । दिए निकारि सिंह बलवान ॥ सिंह कुञ्जरनन्ह कीन्हों नाद । सुनत महान शङ्खको क्राद ॥ सो सुनि नाद बीर हनुमान । भ्राता भीम जानि सुखदान ॥ मगण गमनकी रोकी राह । प्रीति भीम पर करि कपिनाह ॥ नहि एहि पथ व्है आगे जाय । धर्षन साप लहै सुखदाय ॥ जहँ सक्की रन पथ अतिमान । तहाँ जाय रोको सुखदान ॥ रक्षण तास चाहि कपिबीर । तहँ शोए धरि बिपुल शरीर ॥ इन्द्र ध्वज सम उन्नत काय । हनत पुच्छ क्षितिपर कपिराय ॥ तासो होत सु शब्द महान । इन्द्रवज्रके पात समान ॥ लांगुल शब्दतें गिरिबर भूप । लागो हलन खलन अतिरूप ॥ सुनत भीम सो शब्द गँभीर । रोमाञ्चित भो सकल शरीर ॥ लखन शब्दको जन्मस्थान । चले कदली

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बन बलवान॥ लखेा कदलीमे आसीन । हनुमत बीर शिला परवीन ॥ वली गौर विद्युत सम वर्ण
काय । बज्रपात सम शब्द सुनाय॥ पीन बाऊ शिर अधर ललाम । स्कन्ध वक्ष उन्नत कटि चाम ॥
बक्र अग्र गुरु लोम महान । लसत पुच्छ अतिध्वजा समान ॥ रक्त ओष्ट जिव्हा मुख लाल ।
चल भ्रू आसी खुले कराल ॥ उवत सुधाधरसेा मुख तास । भीमसेन देखेा छबिरास ॥ कनक
कदली बनमे सैंन । करत अनल सम तेजसअैंन ॥ मधु पिङ्गल चषसेां कपिवीर । लखेा भीमकी
ओर गभीर । कपिकेां लखेा भीम तब जाय । पथ रोके सेाअत अतिकाय ॥ निर्भय भीम जाय
कपि पास । सिंहनाद कीन्हेा बलरास ॥ सुनि बन जीव भजे भय भारि । कपि देखेा कछु नैंन
उघारि॥ सस्मित लिए अनादर बैंन। कहेा भीमसेां अतिबलअैंन ॥ * ॥ हनुमानुवाच ॥ * ॥
सरुज बृद्ध सुखसेावत मेाहि । दियेा जगाय उचित नहि तेाहि ॥ भूत दयाहै तेाहि समान । होत
मनुज बुध ज्ञान प्रधान ॥ हम नहि जानत धर्म विधान।तिर्यग् योनि ते सुनऊ सुजान ॥ काय बाक
मनतें बुध पर्म । धर्म बिघाती करत न कर्म ॥ नहि जानतहेा धर्म निधान । तुमसे ए नहि बिदुष
सुजान ॥ कहऊ कौंन तुम कारण कौंन । जातें कीन्हेा एहि बन गौंन ॥ इहा मनुज कोउ सकत
न आय । कहां गमनको तेा व्यवसाय ॥ गिरि आगें यह दुर्गम काय । खेचर बिना सकत नहि
जाय ॥ देव लोकको पथ यह रम्य । है मानुषकों सदा अगम्य ॥ बारत कृपा सहित मतिभौंन ।
है अशक्य आगेको गौंन ॥ भए कुशल सेां इहा प्रवृत्त । खाय पक्व फल होऊ निवृत्त ॥ नतरु
लहऊगे बध बलअैंन । गहऊ हमारेा हित मित बैंन ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनि
कपीन्द्रके बचन ललाम।बेाले भीमसेन बलधाम ॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ को तुम कपि तन
धरि मतिअैंन । हमसेां अैसे बूझत बैंन ॥ हम क्षत्री शशिसम्भवबंश । पाण्डव कुन्ती तनय प्रसंश॥
बायु तनय हम भीम प्रसिद्ध । सुनि कपि सस्मित बचन सुकट्ट॥हनूमान इमि बेाले बैन । हनुमानु
बाच ॥ * ॥ बानर हम पद देत तुम्हैं न ॥ साधु जाऊ कै फिरि ए बीर । इहिँ बिरेाधकेां लहऊ
गभीर ॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ हेाय बिरेाध भलेाकै मेाहि। हम कपि नहीं बूझि हैं तेाहि ॥
इततें जाऊ छेाडि पथ देऊ । नतरु कष्ट हमसेां मति लेऊ ॥ * ॥ हनुमानुबाच॥ * ॥ नहेा
सक्य उठिबेको मेाहि । व्याधिग्रस्त निजु जानैं तेाहि ॥ तेा नाघऊ मेाकेां बलभौंन । जौंन अवश्य
करिबे है गौंन ॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ निर्गुण है परमात्मा जौंन । बसत देहमे सबके तौंन ॥
तातें नहीं नाघिबेा तेाहि । बेद बिहित है सम्मत मेाहि ॥ नाघत तेा सहअबल महांन । ज्यौं
नाघेा सागर हनुमान ॥ * ॥ हनुमानउबाच ॥ * ॥ नाघेा सागर सेा हनुमान । रहेा कौंन सेा
कहऊ सुजान ॥ * ॥ भीमसेनउबाच ॥* ॥ भ्राता मम गुण मति बलवान । रामायणमे सुनियत
आन ॥ गे सीतहि खेाजन बलवान । शतयेाजन सागरकेा मान ॥ गयेा नाघि गेापद से बीर ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ए० सेा भ्राता सम कपि रणधीर ॥ हम ताके बल बीर्य समान । तेा नियह करिह बलवान ॥ उठऊ छेाडि प्रन्या यह देऊ । बल पौरुष मेरेा लखि लेऊ ॥ जेा न मानि हेा शासन मेार । तेा यमधाम लखऊगे घेार ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बल उनमत्त जानि हनुमान । बिहसि कहेा यह बचन सुजान ॥ * ॥ हनुमानुवाच ॥ * ॥ नहीं शक्ति उटबेकी मेाहि । क्षमा सहित यह करिबे तेाहि ॥ पुच्छ हमारी दीजै टारि । चले जाहु करि पथ निरधारि ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच यह हनुमतके सुनिकै बैन । शक्ति हीन गुणिकै मतिऐंन ॥ पूछि पकरिकै याहि उठाय । यम सादन कों देउँ पठाय ॥ पूछि निरादर सेां कर बांम । भीमसेन पकरेा बलधाम ॥ बल करि पूछ न शके हिलाय । दुहूँ पाणि सेा पकरेा जाय ॥ सके न पुच्छटारि बलधारि । मरे महाश्रम सेां हिय हारि ॥ बैठे तजि कपिके ढिग जाय । भरे लाजसेा कम्पित काय ॥ कहन बिनीत लगे इमि बैंन । क्षमा अपराध करहु बलऐंन ॥ हेा तुम सिद्ध देव गन्धर्ब । बूझत हैं सेा कहहु अखर्ब ॥ रहे धारि इत कपिकेा रूप । कहहु शिष्य सम जानि अनूप ॥ * ॥ हनुमानुवाच ॥ * ॥ बूझत हमै जानिबें जैंन । कहत सबिधि सुनु पाण्डव तैंन ॥ ॥ * ॥ रेालाछन्द ॥ * ॥ *

केशरीके क्षेत्रमे हम वायुते उत्पन्न । भए बानर कारणान्तर पाय गुण सम्पन्न ॥ भानु सुत सुग्रीव सुर पति पुत्र बालि अनूप । भयेा बानर युद्ध पनको बालि अति बलरूप ॥ भई हमसेां मित्रता सुग्रीवसेा सुखदाय । काढि दिय सुग्रीवको कछु बालि कारण पाय ॥ कियेा गिरि ऋष्यमूक पर सुग्रीव हम सहवास । राम नामक भये दशरथतनय जगत निवास ॥ बिष्णु मानुष रूप धरिकै कियेा भूमि बिहार । गए बन लहि तात आज्ञा बन्धुसहित सदार ॥ धरे धनुष तुणीर दंडकमे बसे बलधाम । हरी रावण राम भार्या जनकजा अभिराम ॥ धरि मरीचि बिचित्र मृगको रूप तेहा आय । कियेा वञ्चित रामकेां सिय हरी छल करि जाय ॥ राम हेरत जनकजाको सहित भ्राता वीर । मिले कपि सुग्रीवसेां ऋष्यमूक ऊपर धीर ॥ भई मैत्री राम सेां सुग्रीव सेां अभिराम । बालिकेां हरि राज्य ताकेां दियेा राम ललाम ॥ राज लहि सुग्रीव कीन्ह दिए प्लवग पठाय । ढूंढिबेकेां जनकजाकेां घेार चारेां जाय ॥ गए दक्षिण दिशाको हम सहित कपि समुदाय । लही सुधि सम्पातिसेां हम सियाकी सुखदाय ॥ रावणालय मै जनकजा हैं कहेा तेहि गिद्ध । जानि करिबे राम कारज सकल भाँति समृद्ध ॥ नाघिकै हम सिन्धु सीतहि देखि लङ्का जारि । कहेा सेा रघुबीर सेा वृत्तान्त आनद भारि ॥ बचन मेरेा सुनत श्रीरघुवंशमणि अभिराम । सेतु बाधेा सिन्धुमे सुग्रीव सह बलधाम ॥ सहित बानरवृन्द रघुवर जाय बारिधि पार । कियेा राक्षस राजको परिवारसह सँहार । राज्य लङ्काको विभीषणकेां दियेा रघुबीर ॥ विष्णु भक्ति विचारि ताकेां दयेा धर्म गँभीर । व्योमजान महानमे चढि राम राजिव नैंन । गए कोशल पुरीकेां सह जनकजा छबिऐंन ॥ भयेा श्रीरघुबीरको जब राज्यको अभिषेक । मागि राजिव नैनसेां हम लियेा यह बर एक ॥ होय जबलेां

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लोकमे यह कथातो श्रीराम। देहकों यह धरें तबलो सुनो सुखद ललाम ॥ कहो राम तथास्तु ब०प०
सीता भरी दायाधर्म। दियोबर तुम रहो जहँ तहँ मिलै भोजन पर्म॥ मिलत हमकों नित्य भोजन
स्वाद सुखद ललाम। रहि एकादश सहसबर्ष सु भूमि ऊपर राम ॥ गए कोशल पुरीकों सगँ लए
अपने धाम। बसत हम एहि बिपिनिमे यह पाइकै मनकाम ॥ रहत सह अप्सरन्ह गावत राम
गुण गन्धर्ब। इहा हम सो सुनत पावत मोद परम अखर्ब ॥ मनुजकों नहि गम्यहै पथ इहांतेँ अति
उद्ध। देव सेबित देश आगे कियो याते रुद्ध ॥ हनै गो कोउ दहै गो सुर भीम तुम्हहि बिचारि।
देवपथ इत जात नहि कोउ मनुज यह निरधारि॥ आइ यातेँ रोकि यहपथ रहे हम रणधीर।
जानि भ्राता चहत तुमकों सहित कुशल गँभीर ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ एहि भाँतिसो
हनुमानके सुनि बचन भीम सप्रीति। बैंन अैसे कहे फिरि कपिराजसों सह नीति॥ चहत हम यह
रावरेसों आपनो प्रिय जौंन। चहत देखन सिन्धुनांघत रूप धारो तौंन ॥ एहि भाँतिके सुनि
भीमके प्रियबचन हसि हनुमान। कहन लागे जानि भ्राता कृपाकरि बलवान ॥ * ॥ हनुमानु
बाच ॥ * ॥ नही तुमकों देखिबेको शक्यहै बह रूप। नहीहैं बह काल अब तब रहो जौंन अनूप॥
नही कृतयुग नही त्रेता नही द्वापर भूप। है नहीं कलिकालमे बह पूर्ब मेरो रूप॥ भूमि सरिता शैल
भूरुह सिद्ध सुर ऋषि जौंन। युगनमे सबकालके सम सुनहु बर्तत तौंन॥ बल प्रभाव शरीर युग
सम बढत घटत अनूप। निबृत्त होहु सो देखिबेमे पूर्ब मेरो रूप ॥*॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ युग
नके आचार सह धर्मार्थ काम बिचार। कहहु लाभालाभ बिधिवत जन्म अरु संहार ॥ हनुमानु
बाच ॥ * ॥ भीमसेन सु रहो कृत युगमे सनातन धर्म। सिद्ध मिलत पदार्थ सब नहि परत कीबे
कर्म॥ धर्म दूषित होतहो नहि प्रजा होत न क्षीण। देवदानो परत सम लखि धरे समता पीन॥
काल भव गुण पाय कृतयुग भयो नाम समान। नही क्रय बिक्रय रहो तब एक बेद महान॥
करत चारो बरणहे नहि मानवीकृत जौंन। मिलत है सङ्कल्पसों फल सिद्ध चाहत तौंन॥ कर्म फल
की बासना बिन धर्म करहि प्रकाश। तौन युगमे व्याधि होहि न नही इन्द्रीनाश ॥ नहि असूया
नही रोदन नही दर्पबिकार। नही बिग्रह द्वेष आलस पिसुनता सञ्चार॥ नही भय सन्ताप ईर्षा
नही मत्सरचार। ब्रह्मपर सब योगकी गति लखत मनुज उदार ॥ जगत आत्मा बिष्णुहे तब धरे
उज्जल रूप। रहो चारोबर्णको कृतकर्म लक्षण भूप ॥ रहे कृतयुगमाह अपनो बर्ण धारे धर्म।
समाश्रय आचार सम समज्ञान भारे पर्म॥ करतहे सम कर्म चारोबर्ण धर्म बिचार। ब्रह्मकोहे
भजत सब धरि प्रणव मंत्र उदार॥ एक बेद सु एक धारे धर्म आश्रम चारि। नही आशा राखि फल
की करत कर्म बिचारि ॥ आत्मज्ञान समान समको रहो नित्यस्मरण। बर्णको हो धर्म कृतयुग
माह चारो बर्ण॥ भए यज्ञ प्रबृत्त त्रेतामे फलाश्रित कर्म। रहो तब त्रय चरणसों सब बरण धारक
धर्म॥ बिष्णु धारा बर्ण अपनो अरुण सु युग समान। क्रियाधर्म प्रबृत्त नर सब धरेँ सत्य सुजान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० सङ्कल्प फलकी प्राप्तिमे करि क्रिया करत उदार। चलतहे नहि धर्मते धरि दान तपस प्रचार॥ रहे त्रेतामाह नर धर्मस्थ कारक कर्म। रहे द्वापर माहँ आधो दोय पदते धर्म ॥पीतधारो बिष्णु अपनो वर्ण सु युग समान। बेद चारो पढत कोऊ कोऊ तीनि सुजान॥ दोय कोऊ एक कोऊ पढतहे द्विज बेद। भिन्न भिन्न सुशास्त्रके मत क्रियनको बऊभेद॥भई राजस दानते सब प्रजा राजसरूप। एकबेद समस्तको नहि पढैगे सुखरूप॥ कियो चारि प्रकार यात बेदकों मुनिव्यास। सत्य द्वापर माहँ कऊ कऊ रहो द्विपद प्रकाश॥भए ह्रास स्वधर्मको भइ प्रगट नाना व्याधि। देवकृत तब प्रगट फैली बि बिधि बिधिको आधि॥आधि व्याधिनतें व्यथित नर करतहै तप जान। कामकामी स्वर्गकामी करत मख बिधि तीन। एहि भाँति द्वापरमे भईहै प्रजा सिगरी छीन। एक पदसों धर्म कलियुगमे रहै गो दीन ॥ भए तामस पायके युग बिष्णु श्याम सरूप। शान्ति व्है है धर्म यज्ञ समेत बेद अनूप॥ ईति आलस व्याधि क्रोधहि आदिदे बऊ दोष। आदि नाना भाँतिसों बऊ प्रगटिहै करि रोष॥युगनके आवर्ततें आवर्त्त लेहै धर्म। धर्मके आवर्त्ततें फिरि लोक व्हहै पर्म ॥ तीन कलियुग होत अचिर प्रवृत्त हे कुरुबीर। चिरञ्जीव समान युगके धरत भाव गभीर॥ रूप मेरो देखिबेकी तुम्हें इच्छा जान। कार्य्य मे बिन अर्थके बुध करत इच्छा कौन॥ भीम हमसों जौन पूछो कहो हम सब तौन। युगनको व्योहार सो सुनि कीजिए अब गौन॥ * ॥ भीमसेनउबाच ॥ * ॥ बिना देखें रावरो सो पूर्व रूप गँभीर। जाहिँगे नहि कृपा करिकै देऊ दर्शन बीर ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ बचन सुनिकै भीमसो मुसुकायकै हनुमान। सिन्धु लङ्घन समै को सो धरो रूप महान ॥ चाहि कै प्रिय भीमको कपि बपुष धारो साम। कनकगिरि सम गगणलों अति तेज पुञ्ज ललाम ॥ अरुण चख रद तीक्ष्ण भृकुटी वक्र आनन लाल। लाँङ्गूल ताडन शब्दसों अति भरत भुवन बिशाल॥ देखिकै हनुमानको सो महा अद्भुत रूप। भीमसेन सशङ्क मनमे भरे बिस्मय भूप ॥ चण्डकर सो चण्ड पावक सदृश तेजस नैंन। देखिकै भय भरे कम्पित भीम मूदे नैंन॥ बिहसिकै तब भीमसों हनुमान बोले बैंन। इहांलों मम रूप लखिबे शक्य तुम मतिऐंन॥ बढैं याते और आगें चहै जहँलो बीर। शत्रु लहि बलवान रणमे परे युद्ध गँभीर ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * देखि बर्द्धित महा कपिको बिंध्य गिरिसो काय। भए अतिशय भ्रान्त मानस भीम बिस्मय पाय॥ भरे अति रोमाञ्च ऐसे भीम बोले बैंन। जोरि अञ्जलि महा कपिकों जानि अति बलऐंन ॥ लखो अतुल प्रमाण यह तन रावरो अभिराम। कायको संहार कीजै कृपाकरि बलधाम ॥ शक्य हम नहि देखिबेके रावरो यह रूप। अप्रमेय अदृश्य गिरि मैनाक सदृश अनूप॥ होत बिस्मय पास जाके तुम्हें सो रणधीर। रावणहि संहारिवेकों गए कौं रघुबीर॥ रहे लङ्कानाशिबेकों एक तुम सामर्थ। कियो सह सुग्रीव रघुवर इतो परिश्रम व्यर्थ ॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥ बचन सुनिकै भीमके हनुमान अति बल ऐंन। फेरि ऐसें कहन लागे स्निग्ध सुन्दर बैंन ॥ सत्यहै जो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कहत हौ तुम बचन सो कुरुनन्द । नहि मरे तुल्य हो दशकन्ध राक्षस मन्द ॥ मारते हम रावण वध्य
हि तौ कीर्ति यह अभिराम । होति कौं रघुबीर कीर्तिञ्ज लोकमे गुणधाम ॥ रावण हिँ सह बंश
हनि कै युद्धमे रघुनन्द । भरी कीरति मोक्षदा तिञ्जलोकमाह अमन्द ॥ जाऊ तुम तहँ भ्रात
प्रिय जहँ द्रौपदी नृपधर्म । बायु रक्षण करैं गे यह तौन पन्था पर्म ॥ है जहां सौगन्धिपङ्कज तौंन पथ
यह नाम । देखि परत कुबेरके उद्यान ए अभिराम ॥ करत रक्षण जास राक्षस यक्षगण गन्धर्ब ।
नही सहसा कीजियो तहँ जाय कार्य्य अखर्ब ॥ कुसुम हरण न कीजियो तुम जाय आतुर बीर ।
देवता सबभाँति नरकों मान्य सुनु कुरुधीर ॥ होम पूजन मंत्र जप लहि नमस्कार सभाव । होत
देव प्रसन्न याते देत नाना चाब ॥ धर्म पालन कीजियो करियो न सहसा कर्म । श्रेष्ठ धर्म बिचारिवो
धमस्थ है अतिपर्म ॥ होत धर्म अधर्म सदृश अधर्म धर्म समान । याहि प्रथम बिचारि कै कृत
करत है मतिमान ॥ आचार सम्भव धर्म है श्रुति धर्ममे हैं सर्ब । बेदमे सब यज्ञ सुरगण यज्ञमांह
अखर्ब ॥ बेद बिहित सु यज्ञतें सुर तृप्ति पावत पर्म । जीव उपनस कही नीति सु धरत भूप सधर्म ॥
वणिज सेवा कृषी गो वृष अजाको प्रतिपाल । ब्राह्मणादिक वर्ण अैसैं करत बृत्ति बिशाल ॥
विप्रको है धर्म केवल आत्मज्ञान बिचार । अध्ययन दान सुयज्ञ तीनोवर्ण करत उदार ॥
देय यज्ञ कराय बेद पढाय प्रतिग्रह लेय । तीनि हैं ए धर्म द्विजके बिहितबिधि सुखदेय ॥
प्रजा पालन धर्म क्षत्रिणको कहों अभिराम । वैश्यको है धर्म धनकी करै बृद्धि ललाम ॥
शूद्र सेबन करै ब्राह्मणआदि जे त्रयवर्ण । होम व्रत नहिँ शूद्रको है नही भिक्षा कर्ण ॥ क्षात्र
धर्म सो है तिहारो सुनऊँ पाण्डुकुमार । व्है जितेन्द्री पालियेधरि शौम्य सील उदार ॥ बृद्ध पण्डित
सुमतिसों जो करत मंत्र बिचार । धराको सो करत शासन नतरु लहत बिकार ॥ करत निग्रह
अरु अनुग्रह समुझि कै जो भूप । जगतमे मर्य्याद बांधत सुनऊ तौंन अनूप ॥ देश दुर्ग अमित्र मित्र
समेत सेना जौंन । चारचखतैं बृद्धि क्षय निति लखै इनकी तौंन ॥ ग्रहण निग्रह कार्य्य साधत
बुद्धिसों अभिराम । सामादि चारि उपाय करि कै भूप जे मतिधाम ॥ करणीय कारज एकतैं कै
करे चारि उपाय । सधत जैसें तथा साधत सुमति औसर पाय ॥ मंत्रसों जेहि सिद्धि कीजै तौंन
द्विज बुध पास । मूढ बालाबाल लोभी खर्बसों न प्रकाश ॥ उनमत्त मद्दिपसों न कीजै मंत्र कबहूँ
आर्य्य । मंत्र लीजै बिदुषसों सामर्थसों सब कार्य्य ॥ धर्म कारजमे करी धर्मज्ञ पास बिचार ।
अर्थसञ्चयमाह बूझी बिदुष बृद्ध उदार ॥ क्लीव अस्त्रिन्ह पास राखी क्रूर क्रूर जे कर्म । शरण
आवे ताहि दीबो शरण नृपको धर्म ॥ करै निग्रह दुष्टको नृप धारि निर्दय रूप । ग्रहण निग्रह
जौंन जानत भली बिधिसों भूप ॥ बँधे तौ मर्य्याद सिगरे लोकमाह गभीर । उचित है यह धर्म
तुमकों सुनऊ कुरकुलबीर ॥ बिप्र पावत स्वर्गकों करि यज्ञ तप दम धर्म । दान करि आतिथ्य

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ह०प० पावत वैश्य सद्वृति पर्ज ॥ प्रजा पालन धरै क्षत्री करै निर्भय युद्ध । स्वर्ग पाव यथाविधि जो दण्ड धारै उद्ध ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ देहको संहार करि कै धरीदो जो महान। लाय लीन्हों हृदयसों गहि भीमकों हनुमान ॥ विगत श्रमसों होय जानो भीम आपु हि धन्य । महाबलको पाय जानो आपु सदृश न अन्य ॥ सुहृदतासों भरें लोचन कहो फिरि हनुमान। स्मरण मेरो भीम कीजो जाऊ अब स्वस्थान ॥ धनदपुरतें आदवेको भयो है अबकाल। देश है यह आद्र हैं गन्धर्व किन्नरबाल ॥ राम नामक बिसु जगदानन्द कारण धाम । जानकीके बदन बारिजको दिनेश ललाम ॥ राम तनके परश्को भो स्मरण मोहि गँभीर । मनुज तुमकों लाय कै हियमाहँ कुरुबर बीर ॥ भीमसेन अमोघ है यह दरश मेरो जौन । भाखवते बर माँगी लीजै तुम्हैं बांछित तौन ॥ कहऊ जौं तुम जाय हास्तिन नगरकों हम अय। दुष्टसुत धृतराष्ट्रके सब मारि आवैं सद्य ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच बचन सुनि हनुमानके इमि भीम बोले बैन । कार्य्य कृत सब भए मम तब कृपातें बलऐन ॥ भए सकल सनाथ पाण्डव नाथ तुमकों पाय । कृपातें तब मारि है हम तिन्हैं सह समुदाय ॥ भीमके सुनि बचन बोले कृपाकर हनुमान । जानि भ्राता करैंगे प्रिय रावरो सुखदान ॥ शक्तिसकुल चमूमे तुम पैठि कै बरबीर । करऊ गे जब सिंहनाद उदार अति गम्भीर ॥ नादसौं तब करहिंगे हम तौन बर्धित रोर । बिजयके बर ध्वजाऊपर बैठि कै अतिघोर ॥ अरिणको हरप्राण तब तुम हनऊ गे सुखरूप । भीमसों एहिभाति कहि हनुमान बचन अनूप ॥ दियो मार्ग बताय जेहां कमल हे कल्हार । भए अन्तरध्यान तब हीं पवनपुत्र उदार ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि गन्धमादनप्रवेशे हनुमद्भीमसेनसङ्गमवर्णनोनाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भए बीर हनुमान जब त्यों कहि अन्तरध्यान । भीमसेन पथ गहि चले तौन जानि सुखदान ॥
स्मरण करत हनुमानको सो अतिमान शरीर। धरैं चित्तमे चरित जौ सुनो कियो रघुबीर ॥
बन उपबन देखत चले नानाबिधिके बीर । खग मृग भृङ्गनसो भरे फूल फरे गम्भीर ॥
सर सरिता बऊभातिकी देखत अमल सरोज । महा बीर तेहां फिरत निर्भय धारे ओज ॥
दिवस भयो कछु नमित तब देखो भीम उदार । सरिता जामे अतिसघन कनक बनक कल्हार ॥
हंसवंश जामे बसत कारण्डव कल कोक । मालासी गिरि राजकी बिधि बिरचित छबिओक ॥
फूले फूले अति सघन सौगन्धिक सुखदान। भोर समैके मनु करें उदय अनेकनभान ॥
भीमसेन जाने तिन्हे देखि पूर्ण मनकाम । स्मरण द्रौपदीको भयो बनवासिनि छबिधाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ व०प०

गए सु पद्माकर जहां राक्षस रक्षित भूप । भीमसेन कैलाशके देखो निकट अनूप ॥
धनदसदनके निकट गिरि निर्झरतें उतपन्न । रम्यलता तरुकी चहूँ दिशि छाया सम्पन्न ॥
कनक कमल फूले सघन बने घाट अभिराम । पक्षिणको समुदाय जहँ सोहत सुरस ललाम ॥
निर्मल जल गिरि सानुपर अति अद्भुत सुखदान । तहां अमृत सम सलिलको किये वृकोदर पान ॥
सखि पुष्करणी रम्य अति भरी सुगन्ध अनूप । फूले सौगन्धिक जहां जात रूपके रूप ॥
क्रीडावन धनपालको जहां देव गन्धर्व । सहित अप्सरन्हँ रमत है आनद भरे अखर्व ॥
शासनसों धनपालके राक्षस किन्नर बीर । रक्षा जाकी करत है चारोओर गँभीर ॥
भीमसेन सो सर चितै भरे मोद अभिराम । रक्षक राक्षस धनदको तास क्रोधवश नाम ॥
नाना आयुधकों धरें पहिरि कवच गम्भीर । तिन देख्यो अजिनाम्बरी भीमसेन बरबीर ॥
रुक्माङ्गद धारें धरें शस्त्र सकल बलवान । पुष्कर लीबे चहत तिन कियो परस्पर ज्ञान ॥
भीमसेनके पास तब तिन सब कीनो गौन । आए इत बूझन लगे कौनहेतु तुम कौन ॥
धारे आयुध हौ धरे बेष मुनिनको जौन । आए हौ जेहि अर्थकों कहऊ बीर तुम तौन ॥

॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥

पाण्डव भीम कनिष्ठ हम धर्मनृपतिके भ्रात । बसत बिशाला है जहां बदरी पुण्यविख्यात ॥
पाञ्चाली देखो तहां सौगन्धिकअभिराम । बायु उडाए लेगयो तेहां एक ललाम ॥
चहति बऊत सो धर्मनृपकी महिषी कल्हार । ताको प्रिय करिबें चहत आयो लेन उदार ॥

॥ * ॥ राक्षसाऊचुः ॥ * ॥

है आक्रीड कुबेरको यह अतिप्रिय अभिराम । मनुज बिहार न करि सकै इहाँ आइ बलधाम ॥
देव यक्ष ऋषि अप्सरा इहा जे करैं बिहार । यक्षाधिपकी पाइ कै आज्ञा परशै बार ॥
निदरि धनेश्वरकों करै इहा जो अन्य बिहार । नाश हमारे हाथसों पावत तौन उदार ॥
करत निरादर धनदको हरो चहत कल्हार । भ्राता धर्मनरेशके कैसें कहत उदार ॥
यक्ष राजकी लेइ कै आज्ञा पीवऊ नीर । नातरु तुम्हे अशक्य है जाबो पुष्करतीर ॥

॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥

इहां न देखत हैं कहूँ यक्षणको नरनाह । रहत धनदके नहि हमै जाचनको उतसाह ।
राजनको है मागिबो नही सनातन धर्म । राक्षस हम न तजो चहत धर्म आपनो पर्म ॥
गिरिनिर्झरसों यह भयो सरबर सह कल्हार । यामे कछू न धनदको सबकों तुल्य उदार ॥
होतिजो ऐसे द्रव्य सोसबकोंसदासमान । बैशम्पायनउवाच । कहि ऐसें तिनसें बचनभीमसेनबलवान ॥
पैठे सरबरमाह जहँ रहे कमल कल्हार । माने नही निषेधके तिनके बचन उदार ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० तब दौरे चऊँओरते राक्षस करत पुकार। बाँधऊ मारऊ लेऊ गहि कहि सो चले उदार॥
करण लगे ते शस्त्रको नानाभाँति प्रहार। किन्नर राक्षस यक्ष सब धारे क्रोध उदार॥
वायुतनय अतिबल भरो कुन्तीसुत बरबीर। सत्य धर्ममे रत सदा धरे पराक्रम बीर॥
चरणचालको करि क्रिया तिनके शस्त्र बराय। राक्षस मारि अनेक शत सरतट दिए गिराय॥
ते लखि विद्या बाऊबल शस्त्रप्रहार अखर्ब। सहि न शके रण छोडि कै भागे राक्षस सर्ब॥
गए गगण कै लाशकों राक्षस मर्दित तौन। कमल लेनकों भीम तब किय पुष्करमे गौन॥
अमृत सदृश जलपान करि सरमे पैठि उदार। लीन्हें भीम उखारि कै यथाकाम कल्हार॥
जाय धनेश्वरके निकट राक्षस भागे सर्ब। सकल पराक्रम भीमको लागे कहन अखर्ब॥
कहे धनेश्वर विहंसि कै ऐसे तिनसो बैन। हम जानत आयो इते भीमसेन बलऐंन॥
लेनदेऊ ताकों कमल यथाकाम कल्हार। कृष्णाकों दीबे चहत सो बर बीर उदार॥
आज्ञा ते लहि धनदकी गए बृकोदर पास। देखो करत विहार तिन एकबीर बलरास॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥

भीमसेन कल्हार तब लिए बऊत बऊरूप। भरे सुगन्ध प्रकाशमय प्रफुलित दिव्य अनूप॥
भूप युधिष्ठिर हे जहां तहां चण्ड अतिबात। बहन लगो रजसों भरो सूचक रण उतपात॥
उल्कापात भयो महा अशनिपात अतिघोर। भानु भए निःप्रभ भरो अन्धकार चऊँओर॥
गरजो नभ जब होत हो भीमसेनसों युद्ध। हली भूमि चऊओरतें बरषी पांशु विरुद्ध॥
अरुण भई दिशि खग शिवा बोली बचन विरुद्ध। हाथो हाथ न लखि परत बाढो तम अतिउद्ध॥
देखि परे उतपात तब नानाभाँति कुरूप। अति अद्भुत उतपात तब देखि युधिष्ठिर भूप॥
करो चहत को युद्धको मम सन्मुख सञ्चार। रहऊ सज्ज व्है युद्धकों पाण्डव रणजेतार॥
धर्म नपति इमि कहि लगे चऊदिशि लखन सुजान। तहाँ न देखो भीमकों महाबीर बलवान॥
पूछो माद्रीसुतनसों कृष्णासों गँभीर। गए कहाँ केहि कार्य्यकों कुशल बृकोदर बीर॥
कियो कछू साहस कहा महा साहसी बीर। महा समर सूचक परत लखि उतपात गभीर॥

यह सुनि बोली द्रौपदी प्रिय प्रियकरणि अनूपा।द्रौपद्युवाचवायु ल्याय डारो इहाँ सौगन्धिक जो भूप
कहो प्रीतिसों भीमसों वह दै कमल ललाम। जैसे ल्यावऊ और वऊ ममहित हे बलधाम॥
सो मेरे प्रियकों सुनत दिशि इशानको भूप। गए लेन पङ्कज विमल सौगन्धिक शुचिरूप॥
सुनि नृप माद्रीसुतन्हसों ऐसें बोले बैन। हम सब चलिए तहाँकों जहाँ गयो बलऐंन॥
बहो तथाविधि द्विजनकों ए राक्षस बलवान। बहऊ घटोत्कच जननि तो कृष्णाकों सुखदान॥
गए बृकोदर दूरि बऊ होत मोहि अनुमान। इतनो करत विलम्ब नहिं वायुवेग बलवान॥
तबलों ल्यावैं पुत्र हम ताकों इत निरबाध। देव द्विजनको नहिं करै जबलों सो अपराध॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हैडिम्बादिक राक्षसन्ह कहि तथास्तु सुखपाय। सह द्विज भ्रातन्ह द्रौपदिहि लीन्हो कन्धचढाय ॥ ८०९
लोमस धौम्य समेत ले गए तहां बलधाम। पद्माकर धनपालको रहो जहाँ अभिराम ॥
लखो तास तट भीमको पैठो कोपित एक। देखो तहँ मारे परे राक्षस यत्त अनेक ॥
चढी भौंह लोचन फटे गदा किए गहि उद्द। प्रलय कालके समनसो लखो भीमकों क्रुद्ध ॥
उतरि धर्मनृप भीमको हिय लायो लहि चैन। कियो कहा यह यो कहे मधुर सुधासे बैन ॥
देवनको अप्रिय कियो यह साहस तुम बीर। फेरि न ऐसो कीजियो मम प्रिय चाहि गँभीर ॥
शिक्षा करिकै भीमकों लेकै ते कल्हार। द्विजन्ह सहित तहँ धर्मनृप लागे करण विहार ॥
आए बन रक्षक तहाँ धरे शस्त्र तेहि काल। धर्मनृपति देखो तिन्हैं धारे काय विशाल ॥
तिन देखो नृपधर्मकों सह लोमस तपधाम। नकुल सहित सहदेवकों द्विजबरबृन्द ललाम ॥
धर्मनृपतिकों आय तिन सविनय कियो प्रणाम। समाधान नृपधर्म तब तिनको कियो सु माम ॥
आगम तहँ नृपधर्मको सुनो सविधि धनपाल। रमत तहाँ पाण्डव प्रबल बसे नहीं बज्रकाल ॥
करत परीक्षा जिसुकी तेहि गिरि पर कुरुबीर। बसे कछुकदिन धर्मनृप भरेभिलाष गभीर ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥

तहां बास करि धर्मनृप सह भ्रातन्ह सुखरूप। एक दिवस लागे कहन ऐसे बचन अनूप ॥
देखे तीर्थ अनेक हम स्नान करे सविधान। सुने महर्षिन्हके चरित पूजे देव महान ॥
गिरि कानन निर्झर सरित सहित सिन्धु अभिराम। पुण्य क्षेत्र लोमस कहे जौंन जौंन तपधाम ॥
देव पितृ तर्पण करे कन्द मूल फल पाय। नरनारायणको लखो आश्रम अति सुखदाय ॥
आश्रम यह बैश्रवणको सेवत जाकों सिद्ध। भीम कौंनविधि जाहि कित गति नहि सूझतिरुद्ध ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

धर्मनृपति ऐसे कहत रहे भीमसों बैन। भई गगणबाणी प्रगट तबहीं आनदऐन ॥
शक्य न आगे जाइबे को पथ धर्मनरेश। धनद धामतें इहांलो है अति दुर्गम देश ॥
जेहि पथसों आए इहां जाऊ तौंन पथ भूप। नरनारायणको जहां आश्रम अनुपम रूप ॥
फेरि तहां ते जाइयो जाकों सेवत सिद्ध। विषपर्वाको है जहां आश्रम रम्य समृद्ध ॥
वृष्टिषेणको है जहां आश्रम तहाते भूप। जाय लखऊ गे धनदको उतते धाम अनूप ॥
ताहीसमैं समीर अति शीतल भरो सुवास। दिव्य पुष्प वर्षण लगे धर्मनृपतिके पास ॥
भए भूप बिस्मित परम सुनि नभगिरा अनूप। धौम्य कहो याको कछु उत्तर है नहि भूप ॥
गगण गिरा गहिकै तहां फिरि आए नृपधर्म। नरनारायणको जहां आश्रम बदरी पर्म ॥
भीमादिक भ्रातन्ह सहित कृष्णा सङ्ग ललाम। बसे तहां मुनिवृन्द सह धर्मनृपति अभिराम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि कल्हारहरणगन्धमादनप्रवेशवर्णनोनामाष्टाविंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बसत तहांकीन्हे बिश्वास। फाल्गुणके दर्शनकी आस ॥ आज्ञा धर्मनृपतिसों पाय ॥ गया घटोत्कच सह समुदाय ॥ भीमसेन मृगयाकों भूप। गए पाय तब समय अनूप॥ राक्षस एक विप्र बनि बीर। रहो सङ्ग धरि कपट गभीर ॥ तेहिँ राक्षस कृष्णा नृपधर्म हरो सहित माद्रीसुत पर्म॥ भूषण सहित शस्त्र समुदाय। हरो भीम बिनु औसर पाय ॥ नाम जटासुर ताकोभूप। रहो सङ्ग धारें द्विज रूप॥ पोषण तास करत हे धर्म। द्विजन सदृश सबभाँति सुपर्म ॥ जानो दास न पाप सु जान। मुटो भक्षसों अनल समान ॥ भीम गए मृगयाकों जाँनि। दूरि घटोत्कच गो अनुमानि ॥ लोमसादि हे द्विज बरजौन। गए स्नान करिबेकों तौन ॥ धरि अति बिस्तर भैरव रूप। शस्त्रन्ह सह कृष्णासगँ भूप ॥ नकुल सहित सहदेव किसोर। चलो बेगसों गहि बर जोर॥ करिके कछु सहदेव उपाय। खड्ग सहित कूदे बिलगाय ॥ टेरन लगो भीमकों बोर। सुनो दूरि ते बचन न धीर ॥ तासों धर्मनृपति बड्ड बैंन। कहे सुनोति धर्मके अैंन ॥ भोजन कीजै जाको अन्न ॥ रहिअै जास पास सम्पन्न ॥ तासों छल कीजै नहि दुष्ट। भोजन कियो निकट बसि पुष्ट॥ यहि बिधि बड्ड त कहो समुझाय। सुनो न तेहि ले चलो उडाय ॥ शस्त्र हमारे हमकों देऊ। जीति युद्धमे कृष्णहि लेऊ ॥ सुनो न तब तेहि बचन उदार। तब नृपधर्म धरो अति भार॥ भरो भार सों राक्षस तौन। करन लगो सब मंथर गौन ॥ कहो नकुल कृष्णासों भूप। हम राक्षस गति हरी अनूप ॥ तुम मति डरऊ धरऊ धुरधीर। आवत निकट बृकोदर बीर॥ आयो तौन मुहूरत पास॥ राक्षस जामे लही बिनास ॥ देखि मूढमति राक्षस तौन। सहदेव सो बोलो बलभौन॥ याते क्षत्रीको शत कर्म। कौन अधिकहै नृपति धर्म॥ सन्मुख रणमे छोडै प्रान। कै जीते अरिकों बलवान॥ यह हमकों कै हम ए हि अर्थ। जीतत रणमे भूपति सत्य ॥ देश काल सो पडचोआय। जों क्षत्रिन्हकों अति सुखदाय॥ हम जीतत मारत यह क्रूर। जबलौं अस्त्र होय नहि सूर॥ नातरु अपनो क्षत्री नाम। हम न कहै बे हे मतिधाम॥ तिष्ठ तिष्ठ राक्षस बलवान। हम सहदेव भरत कुल भान ॥ हमै मारि कृष्णाकों लेऊ। कै तुम प्राण आपनो देऊ ॥ बिधिबस भीमसेन बर बीर। आवत देखि परे रणधीर ॥ वृक्षपाणिमे गदा महान। जैसें बज्र सहित मघवान ॥ नकुल सहित कृष्णा नृपधर्म। देखि लहो आनद अतिमर्म ॥ रोकें तेहि सहदेव अमन्द। भारभरो राक्षस रत द्वन्द ॥ जहँ तहँ फिरत भरो श्रमभार। पाण्डवश्रेष्ठ सो रच्छ उदार ॥ सहित द्रौपदी भ्राता सर्ब। हरैं जात लखि दुष्ट अखर्ब ॥ भीम क्रोध कीन्हो अति उद्ध। राक्षससों बोले अति क्रुद्ध ॥ शस्त्र परीक्षण कियो हमार। तब हम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जानो रूप तुम्हार ॥ रूप विप्रको धरे निहारि । अप्रिय कछु नहि करत विचारि ॥ अतिथि धरें ब्राह्मणको वेष । हनो न विनापराध विशेष ॥ पको नही तो बधको काल । अब पाको लहि कर्म कराल ॥ कृष्णा हरण वढि स अतिरूप । काल रूपसों बँधो अनूप ॥ सो लीलो तुम मोन समान । कुमति सलिलमें हारक प्रान ॥ एहि विधि सुनें भीमके बैंन । राक्षस काल वश्य बलऐंन ॥ छोडि दियो तिनकों बलवान । भयो युद्धकों सज्ज अमान ॥ बोलो भीमसेनसों तौंन । कियो त्वदर्थ न आतुर गौंन ॥ हने जौंन तुम राक्षस वीर । भीमसेन करियुद्ध गभीर ॥ आजु लेउ तो रुधिर महान । तिन्हें करौंगो अञ्जलिदान ॥ भीमसेन सुनि ताके बैंन । भरे क्रोधसों अति बलऐंन ॥ बाजु ठोकिकै चले विशाल । तथा चलो राक्षस वसकाल ॥ वर्तमान ताको लखियुद्ध । माद्री तनय चले अतिक्रुद्ध ॥ भीमसेन करिवारण ताप । कहो करत हों याको नाप्र ॥ कहत सपथ करि वचन प्रमान । हनत आजु यह असुर अमान ॥ ऐसें कहि राक्षस अरु भीम । भिरे प्रचारि दोऊ बल सीम ॥ तरुवर दोऊ लेहि उखारि । दोऊ दुऊन हनैं परचारि ॥ दोरे वनसें गरजि गभीर । तोरे तरून्ह अघनसों वीर ॥ भए टूटि तरु मूझ समान । तब तिन लीन्हें महत पखान ॥ लरे शिलनसों दोऊबीर । वज्रपात सम गरजि गँभीर ॥ पकरि भुजनसों दोउबलवान । लागे खैचन द्विरद समान ॥ बज्र समान मुष्टिसों उद्ध । दोऊ लरे परसपर क्रुद्ध ॥ ग्रीवा मारि मुष्टिसों भीम । समित कियो राक्षस बलसीम ॥ समित देखि ताकों बलवांन । भीम प्रहार कियो अतिमान ॥ पकरि उठाय भूमिपर डारि । मर्दन लागे भीम पछारि ॥ ताके चूर्ण किए सब अङ्ग । भिन्न कियो शिर धरको सङ्ग ॥ मारि जटासुरकों बरबीर । गए युधिष्ठिरपै धरि धीर ॥ ❀

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि जटासुरवधो नामैकत्रिंशोध्यायः ॥ ❀

॥ ❀ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ❀ ॥ रोलाछन्द ॥ ❀ ॥

मारि राक्षस तौन जह नारायणाश्रम पर्म । जायतहँ फिरि बास कीन्हों द्विजन सह सहधर्म ॥ द्रौपदी सह भ्रातएसों धर्मनृप अभिराम । सुर्ण अर्जुनबीरको करि कहे बचन ललाम ॥ चारि बष बितीतभो बनबास करत अधर्म । लगत पञ्चम अब्द आगम जिष्णु कहिगो पर्म ॥ स्वेत पर्वत राजपैं जहँ फुल्ल बिपिनि महान । भृङ्गखग मृग जहाँ नाना भाँतिके सुखदान ॥ कमल जिनमे बिबिधि बिधिके भरे वनक ललाम । स्वच्छ सलिल समेतहैं जह सरित सर अभिराम ॥ तहाँ तुमसों आइ मिलिहैं गए हे कहि बीर । विद्यार्थ संवत पाँच बसि सुरपुरी माह गँभीर ॥ पाय अस्त्र सु आय सुरपुरतें इहा अभिराम । देखिहैं गाण्डीव धनुधर बीरकों बलधाम ॥ जिष्णु आगम हेतु कहिकै द्विजनसों नृपपर्म । उग्रतपसन्हकों प्रदक्षिण किये उठि नृपधर्म ॥ होयकै सुप्रसन्न तातें कहो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० द्विजन प्रमान। होयगो सुखअन्तमे दुखके तुम्हैहि सुजान॥ राजधर्म सु सिन्धुके लहि पारको नृप धर्म। धर्मज्ञ करिहौ यथा बिधिसौं भोग भू को पर्म॥ चले तहँते द्विजनके सुनि बचन सुखद अनूप सहित लोमस सङ्ग लीन्हे राक्षसन्हकौं भूप॥ कछू खेत उठाय राक्षस कछूँ पाइन्ह जान। तहा तहके लखत गिरिबन सहित कृष्णाभ्रात॥ चले उत्तर दिशाको बन सघन लखत अनूप। लखत गिरिसैनाककी कैलाश सुषमा भूप॥ चले गिरि हिमवान ऊपर लखत सुषमा पर्म। गए जहँ बिष पर्वको हो रम्य आश्रम धर्म॥ जाइकै राजर्षिहो बिषपर्व जह तपधाम। सहित भ्रातन कियो बिधि वत धर्मनृपति प्रणाम॥ पुत्रवत बिषपर्व तिनको दियो आशीर्बाद। होय पूजित बसे तह निशि सब बिगत बिषाद॥ बिदाव्है दिन आठये बिषपर्वसौं नृपधर्म। राखि ऋषिके पास भूषण रत्न हेजे पर्म॥ धर्मनृपको कियो शीक्षा पुत्रवत बिषपर्व। चले उत्तर दिशाकौं व्है बिदा कुरुवर सर्व॥ राज ऋषि बिषपर्व पाण्डव सङ्गमे कछु दूरि। धर्मनृपकौं सौपि बिप्रन्हकौं फिरे मुदपूरि॥ गए पंथ देखाइकै बिषपर्व जब स्वस्थान। चले भ्रातन सह पदातो धर्मनृप मतिमान॥ बसे तरुवर सघन लखि गिरिशृङ्ग ऊपर पर्म। स्वेत गिरिकौं गए चौथे योश भूपतिधर्म॥ सरद घन सङ्काश निर्झर सरित सहित अनूप। शिला जाको कनक वनक सु मणिन्हमै बज्ररूप॥ गए तह उद्देश हो जहँ लखत गिरि अभिराम। एक ऊपर एक पर्वत गुहा दुर्गम माम॥ गए दुर्गम मार्गमे सब चले ते सुखरूप। धौम्य लोमस सहित कृष्णा लए बन्धुन्ह भूप॥ लखत बनकी अमित शोभा तरुणकी अभिराम। फरे फूले भरे नवदल हरित ललित ललाम॥ लसत खग मृग बिबिधि बिधिके भरे रङ्ग अनूप। सहित पङ्कज सरित सर शुचि लखत पल्वल भूप॥ माल्यवत गिरिकों गए सह द्विजन्ह भूपति धर्म। बसत जहँ किंपुरुष सेवत सिद्ध चारण पर्म॥ गन्धमादनको लखो रोमा ञ्च पूरि ललाम। चरित बिद्याधरणको सह किन्नरो अभिराम॥ सिंह व्याघ्र बराह मृग गज गजिन सहित अनूप। गन्धमादनके बिपिनिको लखत नन्दन रूप॥ मुदित कृष्णा सहित भ्रातन द्विजन सह नृपधर्म। पुख कानन तीन माहँ प्रवेश कीन्हों पर्म॥ खगनके बज्र भाँतिके कल सुनत मञ्जुल राव। सर्वर्तु के फल पुष्प पूरे लखत तरु कर चाव॥ लखत सरवर जहाँ पङ्कज रहे बज्र विधि फूलि। हंश सह कारण्ड गण घन रहे मधुकर भूलि॥ गन्धमादन सानपै एहिं भाँति देखत भूप। नचत कुञ्जन माह मत्त मयूर नाना रूप॥ लसत तरु बज्र जातिके बज्र रङ्ग फूले फूलि। मत्त मधुकर पुञ्ज जिनपैं रहे गुञ्जत भूलि॥ मत्त कोकिल करें सुरस रसालको बज्र पान। काकली धुनि धरें चहुँदिशि करत पञ्चम गान॥ एहि भाँतिकी गिरि गहन शोभा लखत पाण्डव सर्व। महत अद्भुत मानि मनमे भरे मोद अखर्व॥ बसत मुनि गन्धर्व अप्सर सिद्ध सुर सह शर्म। सहित द्विज समुदाय सुषमा लखत भूपति धर्म॥ भरे आनंद परम पाण्डव पायकै पथ तत्र। गए आश्रम अष्टिषेण महर्षिको हो यत्र॥ रही धमनीमात्र जाके देहमे अभिराम। अष्टिषेणमहर्षिकों नृप

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लखा तेजसधाम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धर्मनृप तब गए ह्वै शुचि महाऋषिके पास। व०प
शीषसों पद बन्दि अपनो कियो नाम प्रकाश ॥ द्रौपदी फिरि भीम माद्रीतनय फिरि अभिराम।
महाऋषिके चरण बंदे धारि शीश ललाम ॥ धौम्य सह द्विजवृन्द सिगरे बंदि ऋषिके पाय। महा
ऋषिके चहुँदिशि सह भूप बैठे जाय ॥ जानि कै तपदृष्टिसों नृपधर्मको अनुरूप। कहो बैठन
महाऋषि करि कृपाकों अति भूप ॥ अर्ष्टिषेण महर्षि पूजो भूपकों सविधान। कुशल बूझो सहित
भातन्ह कृपा करि सुखदान ॥ * ॥ अर्ष्टिषेणउवाच ॥ * ॥ अनृत तौन हि कहत हौ तुम करत
नित्य सुधर्म। वृत्ति माता पिताकी सो तजत तौ न हि पर्म ॥ बृद्ध गुरुको करत सेवन धरत तौ न
बिकार। करत है उपकार ताको करत प्रत्युपकार॥ देत हौ तुम दण्ड दुष्टत करत ताकों भूप। योग्य
पूजन साधु तुमसों लहत मोद अनूप॥ करत हौ बनबासहूमे भूप सेवन धर्म। धौम्य तौ नहिँ होत
पीडीत देखि कै तो कर्म॥ दानधर्म सु शौच ऋजुता सह तितिक्षा भूप। रहत अपने वंशको तुम धरे
धर्म अनूप ॥ अर्ष्टिषेण ऋषीन्द्रके सुनि नीति गर्भित बैन। कहन लागे धर्मनृप एहिँभाँतिसों मति
ऐन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ कहे भगवन नीतिमय तुम धर्म निश्चै जौन। यथामति हम
यथाशक्ति सु करत विधिवत तौन ॥ * ॥ अर्ष्टिषेणउवाच ॥ * ॥ वायुभक्षी सलिल भक्षी गगण
चारी भूप। रहत है एहि अद्रिमे ऋषिवृन्द तेजसरूप ॥ रहत कामी सहित कान्ता भरे प्रीति
महान। परत लखि गिरिशृङ्ग पै किम्पुरुषसे सुखदान ॥ धरें पट कौशेय निर्मल भरे रूप अखर्व।
अप्सरणके गण सङ्ग गिरिपर परत लखि गन्धर्ब ॥ बृन्द विद्याधरणके धरि माल अमल अनूप।
सुपर्ण उरग अमान गिरिपर परत लखि अतिरूप ॥ पर्बमे एहि शैल ऊपर सुनऊँ भूप सुजान।
शङ्खभेरी मुरजकी सुनि परति धुनि अतिमान॥ इहां रहि कै सुनत है शुभ शब्द हे नृपधर्म। तहां
जाबेको न है कछुकार्य्य तुमकों पर्म ॥ इहांतें नहि तहां जाबे योग्य है पथ भूप। करत देव बिकार
तेहां जात मानुषरूप ॥ करत जौं चापल्यकों इत कोऊ मनुज अबुद्ध। भूत दुःखित होत तासों हनत
राक्षस क्रुद्ध ॥ नाधि कै एहि शिखरकों कैलाशको पथ पर्म। सिद्ध अरु देवर्षि पावत गगणगामी
धर्म ॥ चपलतासो मनुज जौ एहिमार्गमे चलिजाय। ताहि राक्षस हनत हैं शूलादि शस्त्र चलाय॥
पर्व सन्धिन्ह मांह लीन्हें अप्सरन्हकों साथ। देखि एहि गिरि शिखर ऊपर परत किन्नरनाथ ॥ देव
दानव सिद्ध सह धनपालको अभिराम। बनो क्रीडा विपिनि एहिगिरि शिखरपर कविधाम ॥
पर्व सन्धि सु पाय कै इत आइ किन्नरनाह। गान तुम्बुरको सुनै गिरि गन्धमादनमाह ॥ भाँतिको
एहि लखत अद्भुत भूत सब सुखदाय। धर्मनृप एहि शिखरपर निति पर्व सन्धिन्ह पाय ॥ भरे रस
अति स्वाद फल मुनि भोज्य भोजन खाय। बसऊ पाण्डव इहां जबलों मिलै अर्जुन आय॥ चपलता
नहि तुम्हे करिबे इहाँ बसि कै बीर। यथाकाम बिहार एहिबनमांह करऊँ गभीर॥ शस्त्रसों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० फिरि जीति पृथिवी पालि हौ तुम भूप ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ रहे कबलों तहां पाण्डव कहऊ मुनि अनुरूप ॥ तहां बसि कै कियो कारज कौंन भूपति धर्म । भयो तौंन धनेश सङ्गम पाण्डवनसों पर्म ॥ भीमसों फिरि लरे तौंन हिँ यक्ष जे बलवान । अष्टिषेन जो कहो सो सब कहऊ मुनि सबिधान ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कियो यह ऋषि जौंन आज्ञा कियो सो नृपधर्म । शुद्ध शरसो मारि मृगपल खाय कै फल पर्म ॥ बिबिधि बिधिके पान करि मधु तुहिन गिरिके माह । सहित भ्रातन्ह द्रौपदी द्विज बसे तहँ कुरुनाह ॥ बीति पञ्चमवर्ष जो तहँ बसत पाण्डव भूप । सुनत लोमस बदन सम्भव कथा अद्भुत अनूप ॥ गो घटोत्कच बिदा ह्वै समुदाय सहित खदेश । समुझि हौ तव आइ हौं जब परैं काम नरेश ॥ बसत आश्रममाह ऋषिके बऊत बीते मास । लखत शोभा अद्रिकी अति भरी अद्भुत रास ॥ *⬭*⬭*॥ दोहा ॥ *⬭*⬭*

आय प्रीति भरे जहां मुनिबर जहँ नृपधर्म । तिनसो नृप इतिहास बऊ कहे सुने अतिपर्म ॥
बसत तहां ह्वदमे रहो ऋद्विमन्त बरभाग । आय ताहि गहि लै गए वैनतेय बडभाग ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पत्र बऊबात लागे हलें गिरिबर सर्ब । टूटि क्षितिपर परें तरुबर रहे जौंन अखर्ब ॥ माल्य सुमन सुगन्ध गिरिके शिखरतें तहँ ल्याय । भरे नाना रङ्गसों तहँ गये बायु गिराय ॥ लखो सबहिन सहित पाण्डव सुमन अद्भुत रूप । द्रौपदी लखि भरो मनमे कामना अतिरूप ॥ भीमकों एकान्त गिरिमे मुदित बैठे पाय । भरी अति अभिलाष लागी कहन जैसैं जाय ॥ सुमन सुरङ्ग सुगन्ध गिरितें गिरे जे इत आय । सरित अश्वरथा समीप सु लखे तुम सुखदाय ॥ अनुज तव गाण्डीबधनुधर कियो खाण्डव दाह । उरग सुरगण सहित जीतो इन्द्रकों रनमाह ॥ हने मायामई राक्षस धनुष धरि ह्वै क्रुद्ध । तेज तुमहूमे महतबल बायुको अतिउद्ध ॥ बसित ह्वै तव बाऊबलतें छोडि शैल अखर्ब । चहत सोमन बऊतदिनतें जाहिँ राक्षस सर्ब । बाऊबलते होय रक्षित तो बृकोदर बीर । भरो सुषमा शैल यह हौं लखो चहति गँभीर ॥ द्रौपदीके बचन सुनि यह भरे अमरष भीम । कनक बनक बिशाल भुजबर सिंहसो बलसीम ॥ रुक्म पृष्ठसु धारि कै धनु खड्ग तूण गभीर । गदा गहि तेहि शैल पैं चढि चलो निर्भय बीर ॥ अभय उग्र मृगेन्द्रसो धनु धरैं आवत ताहि । शैलबासी चकित करि चख रहे चऊँ दिशि चाहि ॥ एक पथ गहि चढे गिरिके गए ऊपर बीर । नाग किन्नर यक्ष देखत भरे मोद गँभीर लखो तहतें भीमसेन धनेशको बरधाम । फटिक सुबरण रचित सौध सु सुधांशुसे अभिराम ॥ कनकको प्राकार जाके चहूँओर महान । खचित रत्नन्हसो बनें बन बाग जहँ सुखदान ॥ शैलसी अट्टारिका बर द्वार तोरण साम । बीजुरीं सौं अप्सरा जहँ रहैं नचत ललाम ॥ कनक ध्वजन्ह धनेशको लखि धाम मण्डित बीर । कोटी धनुको धरें शोचत विभव आत्म गभीर ॥ सुमन मण्डित विपिनतें मृदु बहो सौरभ पौंन । राक्षसाधिपको लखो मणिमयी तहँते भौंन ॥ गदा असि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

धनु धरें कीन्हे छत्य जीवित आस। अचलसे तहँ रहे ठाढे भीम अतिबलरास ॥ ध्वनित कीन्हों ८०५०
शंखको करि धनुषको टङ्कार। अचलवासी जीव सो सुनि भरे मोह उदार॥ सुनत सह रोमाञ्च
विस्मय भरे बीर अखर्ब। यक्ष राक्षस चले तहँकों सहित गण गन्धर्ब॥ शस्त्र नानाभांतिके धरि गें
बृकोदर पास। भीमसों ते युद्ध लागे करण अति बलरास॥ शस्त्र तिनके काटि डारे शरनसों
कुरुबीर। मगण क्षितितें रहे जौंन प्रहार करत गँभीर॥ भीम बेधे शरनसो सब राक्षसनके अङ्ग।
रुधिरधारा गिरण लागी अचलके उतमङ्ग॥ बाऊबलतें भीमके लगि शरनके समुदाय। लगे
कटि कटि गिरन गिरिपर राक्षसनके काय॥ भीमकों तिन चहूँदिशितें घेरि लीन्हों आय।
शरनसों हनि किए तिनके भीम खण्डितकाय॥ भए तर्जित असुर लागे करण सकरुण राव।
महाबल कुरुबीरके चित चढो चौरो चाव॥ भए मर्दित भजे ते सब यक्ष राक्षस बीर। डारि कै
सब शस्त्र भाजे त्यागि युद्ध अधीर॥ गए दक्षिणदिशाकों जहँ निऋति हो मणिमान। गदा धारे
शूलको अति काय बर बलवान॥ राक्षसाधिप सखा हो धनपालको बर बीर। भजे आवत देखि
तिनकों कहँ बचन गँभीर॥ एकमानुष भीमते तुम भजे आवत सर्ब। कहा धनपतिसों कहउगे
जाय बचन अखर्ब॥ बचन ऐसे राक्षसनसों बोलि कै मणिमान। शूल शक्ति सु गदा गहि तहँ
चलो अति बलवान॥ बेगते तिहिँ चलो आवत देखि कुरबर बीर। तीनि शर बर हने ताको पार्श्व
माह गभीर॥ क्रोध करि मणिमान महती गदाकों भुजजोर। फेकि दीन्ही भीम ऊपर मारिवेकों
घोर॥ वज्रसी सो गगणमे लखि गदाकों बलवान। भीम ताहि निवारिवेकों हने आतुर बान॥
शरणसों सो थँभी नहिँ जब गदा घोर महान। गदाविद गति भेदसों सो करी व्यर्थ सुजान॥ तेही
अन्तरमे चलाई शक्ति राक्षस बीर। भीमके सो लगी दक्षिण भुजामांह गभीर॥ शक्तिसों व्है विद्ध
पाण्डव गदा गहि बलवान। क्रोध करि कै चले आतुर हरण राक्षसप्राण॥ शूल डारो भीम
पै मणिमान व्है अतिक्रुद्ध। भीमसेन सो व्यर्थ कीन्हों गदासों हनि उद्ध॥ भीम धाय घुमाय कै
गुरुगदा घोर महान। कूदि मारो शीष पै मणिमानके बलवान॥ भीमतें हत देखि कै मणिमाण
राक्षस घोर। रहे नैऋति शेष ते सब भजे पूरबओर॥ गयो क्रन्दित राक्षसनको दिशामे भरि
भूरि। गहन गिरिके कन्दरनमे रही प्रतिधुनि पूरि॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ धर्मनृप
सह बन्धु विप्रन्ह सुनत सो धुनिघोर। भीमसेन हि लखो नहिँ तकि चकित भे चहुँओर॥ अष्टि
खेण ऋषीशकों तब सौंपि कृष्णा पर्स। सहित माद्रीसुतन्ह सायुध होय कै नृपधर्म॥ शैल ऊपर
जाय कै तकि रहे चारोंओर। भीमसेन हि लखो ठाढे मारि राक्षस घोर॥ धर्मनृप भरि प्रेम
भीम हिँ लियो हियसों लाय। तहां बैठे सहित भ्रातन्ह महा आनद पाय॥ भयो गिरिको शृङ्ग
शोभित पाय कुरुबर बीर। लोकपालनतें लसै जिमि गगणलोक गभीर॥ धनदको लखि धाम
मारे परे राक्षस जौंन। भीमसों इमि कहन लागे धर्मनृप मतिभौन॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ *॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० भीम सहसा मोह बश कै कियो जो यह कर्म। धारि मुनिको बेष इनको बध न तुमकों धर्म ॥ राजद्वेष न कीजिए तुम कियो देव बिरोध। पापकों जो करत हैं जन धर्मको करि रोध ॥ प्राप्त तिनकों होत निश्चय पापको फल तौन। चहत मम प्रिय तौ न कीजो फेरि एहिपथ गौन ॥ धर्म नृप एहिभाँति कहि कै धर्मनियमित ऐन। बिश्राम करि तहँ अर्थ चिन्तन लगे सो अतिऐन ॥ भजे जे हत शेष राक्षस गए धनपति पास। घोरक्रन्दित करण लागे व्यथित पूरित त्रास ॥ व्यथित शोणित भरे तनुक्षत बिगतआयुध हस्त। शीघखोले धनदसों इमि लगे कहन समस्त ॥ गदा परिघ त्रिशूलधारक रहे राक्षस जौन। महाबल तब पुरःसर सब भीम मारे तौन ॥ क्रोधबश गण एक मारे भीम गिरपर आय ॥ परो क्षिति पर मरो है मणिमान जो अतिकाय ॥ सखा तो मणिमान मारो शेष जे हम खर्ब। धनाधीश्वर शरण आए रावरेकी सर्ब ॥ सुनत ही करि अरुण लोचन क्रोधबश धनपाल ॥ कहो यह अपराध दूजो कियो भीम बिशाल। क्रोध करि रथ सज्ज कीबैं कहो यक्ष नरेश ॥ कियो यक्षन्ह सज्ज रथ गिरि शृङ्गसम मणिदेश ॥ बिमलाक्ष हयसों करे योजित भर जे गुणसर्ब। मणिनसों सब अङ्ग भूषित तेजपुञ्ज अखर्ब ॥ बिजयके बऊ बचन बोलत यक्ष राक्षस सङ्ग। क्रोध करि अति चले धनपति चढे रथ उतमङ्ग ॥ देवगण गन्धर्ब सुस्तव पढत सह अभिराम। चले यक्ष सहस्र सँगमे करे अक्ष लक्षाम ॥ धरे आयुध बिबिधि बिधिके गगणगामी यक्ष। सङ्ग रथपर चढे धनद सुजुक्त अश्व सपक्ष ॥ भरे पाण्डव पुलक लखि धनपालको प्रियरूप। धनद देखो पाण्डवनको धनुष धारे भूप ॥ जानि कारक देवतनके कार्यके धनपाल। भए पुलकित कृपाकों करि भरे मोद बिशाल ॥ यक्ष पक्षिन्ह सदृशते सब पाण्डवनके पास। गए जे धनपालके हे पुरःसर बल राश ॥ प्रसन्नमन लखि पाण्डवनकों यक्षसह गन्धर्ब। निर्विकार बिचार करि तहँ भए ठाढे सर्ब ॥ नकुलसह सहदेव कीन्हों धर्मनृपति प्रणाम। चित्तमे अपराध अपनो जानि कै बलधाम ॥ जोरि अञ्जलि भए ठाढे धनदके चऊ पास। चढे पुष्पक पचितै धनदेशकों मतिराश ॥ तहाँ आए यक्ष राक्षस अमित गण गन्धर्ब। अप्सरण सह धनदके चऊओर बैठे सर्ब ॥ भीमसेन सु धरें माला काञ्चनी अभिराम गदा असि धनु धरे देखत धनदकों बलधाम ॥ राक्षसनसों सो लगे बऊक्षत छुवत श्रम नहि बीर। निश्चित सर कर लए देखत धनदकों धरधीर ॥ भीमकों लखि धर्मनृपसों कहोइमि धनपाल। भूतहितरत तुम्हैं जानत सकल भूत बिशाल ॥ बसऊ निर्भय शैल पैं एहि धर्म नृपसुख रूप भीम पैं नहि क्रोध करिबो तुम्हैं कारज भूप ॥ कालहत ए प्रथम हे नृप लगो तुम्ह हि निमित्त। सुनऊ यातें तुमन ब्रीडा धरऊ अपने चित्त ॥ जौन साहस कियो इन बिधि बिहित ही बिधितौन। यक्ष राक्षस नाशको नहि कोप मम हिय भौन ॥ भीम पैं यह कहत तुमसों सुनऊ सो बर भूप। पूब कृतसों लह्यो हम सन्तोषको अतिरूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीमसों धनपाल जैसें कहे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुप्रिय बैंन । तात तुमपैं क्रोध मेरे कछू मनमे है न ॥ जौंन साहस कियो कृष्णाहेतु तुम बलराश । ब०प०
निदरि हमहि सदेवतन किय यक्षराक्षस नाश ॥ बाहुबलतें भए यातें प्रीतिसो हम युक्त । कर्मसा
तव भए हम अबशापसो अति मुक्त ॥ पूर्ब हमहि अगस्त्य दीन्हो शाप लहि अपराध । कियो तुम
यहकर्म करिकै शापको तेहि बाध ॥ रहो भावी हमै हूबें दुःख यह गम्भीर । रावरो नहिँ दोष
यामे कछूहै कुरुबीर ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दियो तुमको शाप कैसें महामुनि तपभौंन ।
धनद सो सबिधान चाहत सुनो कहिए तान ॥ महामुनिको क्रोध पावक प्रबल सो अतिमान ।
सबल तुम नहि भए तासो दग्ध कौंन बिधान ॥ * ॥ धनेश्वर उवाच ॥ * ॥ देवतनको मंत्र हो
कुशवतीमे कुरुभूप । चले हमहूँ सङ्ग सेना पद्म तीनि अनूप ॥ लखो सुमुनि अगस्त्यको पथमाह
यमुनातीर । ऊर्ध बाहु दिनेश सन्मुख करत तप गम्भीर ॥ दियो जडता दर्पतें मणिमान थूक
चलाय । भाग्यबश सो शीस ऊपर परो मुनिके जाय ॥ गगण दिशि लखि कहो मोसो महामुनि
करि कोप । प्रबल पावक पुञ्जसे जग कियो चाहत लोप ॥ धनद कीन्हो सखा तव मम महतहै
अपमान । सबल यातें मारि याको मनुज लेहै प्रान ॥ सैन्यसह एहि हते तुमहू दुःख लहिहौ
भूरि । देखिहौ तेहि मनुजको तव शाप व्हैहै दूरि ॥ सैन्यके एहि पुत्रपौत्र न्हको न लगि है शाप । धनद
रहिहै साथमे तव तौन बिगलित पाप ॥ भाँति यहि हम शाप पायो महामुनिसों भूप । भीमसेन सो
दूरि कीन्हो भए अब सुखरूप ॥ * ॥ धनद उवाच ॥ * ॥ धैर्य्य दाक्ष्य पराक्रमो अरु देश काल
बिचार । जगतमे ए कार्य साधक पाँच कहत प्रकार ॥ देश अरु कालज्ञहैं धर्मज्ञ जे धृतमान । भूमिको
ते भोग क्षत्री करत सहित बिधान ॥ करत जे एहि भाँतिसो सबकर्मको नृपधर्म । लोकमे यश लहत
ते गति अन्तमे अतिपर्म ॥ देश काल बिचारिकै कीन्हो पराक्रम भूप । इन्द्र पायो स्वर्गको सह
बसुन्ह राज्य अनूप ॥ जौन केवल कोपतें नहि करत पतन बिचार । पापको फल लहतहै ते पाप
मति अनुसार ॥ कर्मको न बिभाग जानत नही काल बिचार । प्रारम्भ तिनको सिद्ध
होत न लहैं लोक बिकार ॥ करै सहसा बचन बञ्चक दुष्ट आत्मा जौंन । आपुमे सामर्थ्य
मानै सर्ब पापी तौंन ॥ भीम निर्भय ताहि शीक्षित करहु हे नृपधर्म्म । आर्ष्टिषेण मह
र्षिके अब जाय आश्रम पर्म ॥ कृष्ण पक्ष बितीत कीजै तहां वसिकै भूप । यक्षगण गन्धर्ब रक्षा
करहिँ गे अनुरूप ॥ शैल बासी पाय शासन परम हमसों सर्ब । नित्य रक्षा करहिँ गे तव द्विजन
सहित अखर्ब ॥ प्राप्त सहसा भयो इत यह भीमसेन बिचारि । साधु बादन तुम्हैं करि भो धर्मबिद
निरधारि ॥ अंन्नपान सुस्वादु तुमको नित्य मम परिचार । धर्म नृप पथ ऊचाय देहैं भूरि भक्ष्य उदार ॥
इन्द्रकों जिमि जिष्णु जैसे बायुकों प्रिय भीम । धर्मकों तुम दस्त्रकों सुत दस्त्रके सुखसीम ॥ तथा
तुम सब रक्ष हमकों इहां हौ बर बीर । अर्थ तत्व बिधानबिद धर्मज्ञ सुमति गँभीर ॥ कुशल सों है

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० जिष्णु सुरपुरमाह गुणगण धाम।दम दान धृति बल बुद्धि जामे बसति है अभिराम॥मोहबश नहि करत फाल्गुण कछू गर्हित कर्म।नहीं मिथ्या बचन मुखते कहत धारे धर्म॥कीर्तिबर्धन जाहि मानत पितृ सुर गन्धर्ब। शक्रके सो सदनमे सब शिखत अस्त्र सुखर्ब ॥ धर्म ते बश किए नृप सब तौंन शान्तनु भूप।तौन होत प्रसन्न गुण मम देखि फाल्गुण रूप॥देव पितृ ऋषान्ह करिकै तौन पूजित भूप। सप्त कीन्हे अश्वमेध सु दान दे अनुरूप॥ भूप शान्तनु पितामह तो पिताको नृपधर्म।इन्द्र पुरमे बास करि तव कुशल बूझत पर्म॥बैशम्पायनउवाच॥एहिँ भांति सुनिकै धनदके वर बचन पाण्डव सर्ब। सहित कृष्णा द्विजन्ह पायो मोद परम अखर्ब॥गदा असि धनु छोडिकै तब भीम साञ्जलि बीर।नम स्कार धनेशकों चलि कियो प्रणत गभीर॥ भीमकों लखि शरणगत इमि कहे धनपति बैंन। मानहा भव शत्रुको भव मित्र आनद अैंन॥शीघ्र अर्जुन आइ हैं सब अस्त्र लहि बरबीर।बिदा करि हैं इन्द्र तब तुम पाइहौ रणधीर॥ एहि भाँति शीक्षित धर्मनृपकों करि धनेश्वर भूप। गए अपने स्थानकों समुदाय सहित अनूप॥ गगण पथमे भयो कलकल शब्द चलत धनेश। लखत बाजी नीकसी रथ कान्ति की नभदेश॥ बिना प्राण जे राक्षसनके परे हे तहँ काय। देय आज्ञा धनद तिनकों दिए दूरि फेकाय॥ महामुनिके शापको जब काल आयो भूप। गए मारे युद्धमे ते शाप शमन स्वरूप॥ रहे पाण्डव तहां तेहिनिशि सदनमे अभिराम।राक्षसन्ह तहँ आय पूजन कियो बिबिधि ललाम॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनबपर्बणि पाण्डवकुबेरसमागमबर्णनोनाम त्रिंशदध्यायः॥ *

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धौम्य आर्ष्टिषेण तपधाम। प्रातः संध्या करि अभिराम॥ गए पाण्डनके चलि पास। गिरि पर द्विजन्ह सहित तपरास॥ धौम्य आर्ष्टिषेणके पाय। पाण्डुसुतन्ह बंदे सुखदाय॥ सकल ब्राह्मण न्हकों सु प्रणाम। कुन्तीसुतन्ह कियो अभिराम॥ धौम्य युधिष्ठिरको गहि पानि। दक्षिण करसो अति सुखदानि॥ प्राचीदिशा देखिकै भूप। कहन लगे इमि बचन अनूप॥ यह मन्दरगिरि नृप अतिमान। सागरलों क्षिति धरे महांन॥ यह धनेश रक्षित क्षिति भूप। बसत जहां ऋषि मुनि सुखरूप॥ इहां उदयको लहत दिनेश। बन्दत जाको जगत अशेश॥ यह दक्षिणदिशि कुरु बर पर्म। जहां बसतहै राजा धर्म॥ यह अस्ताचल लसत अनूप। सिन्धुमहोदधिके ढिग भूप॥ जहां बरुणको लोक बिशाल। पश्चिम दिशाधीश दिगपाल॥उत्तर दिशा सुमेरु सुधर्म। ब्रह्म बिदनकी जंह गति पर्म॥ ब्रह्मसभा जापैं छबिभौन। रचत चराचरमय जग जौंन॥ ब्रह्मपुत्र जे मानस भूप। दक्षादिक जहँ बसत अनूप॥बशिष्टादि जे ऋषिवर सात। उदय करत तहँ निति अवदात॥ सर्ब भूतको कारण भूप। ध्रुब अनादि अव्यय सुखरूप॥ तास लसत यह अनुपम धाम। ब्रह्म

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सभा ऊपर अभिराम॥जाहि न सकत देवतो देखि। अनल अर्क शत सम अवरेखि॥तौन विष्णुको व०प०
अव्यय धाम। ज्योति मई अतिशय अभिराम॥ पूर्व तास नारायण ओक। जह भूतेश्वर बसत अतोक॥ नहि ब्रह्मर्षि शकत तहँ जाय। और जायको ऋषि गति पाय॥ तहाँ जती योगी गति लेत। भरो भक्तिसों जिनको चेत॥ अचिंत्य आत्मा तहँ भगवांन। बसत सर्वव्यापक अति मान॥ बर तप करि शुभकर्म अनेक। योगी बिगत मोह सविवेक॥ जात जे विष्णु सनातन ओक। ते फिरि नहिँ आवत एहिँलोक॥ स्वयंभु अव्यय ईश्वर जौन। यह ज्योतिर्मय ताको भौन॥नमस्कार करिए नृपधर्म। यह सुमेरुगिरि सोहत पर्म॥ सूर्य्य चन्द्रमा ग्रह सभ सर्व। जाइ प्रदक्षिण करत अखर्व॥ ज्योतिमान सब लीन्हें साथ। करत प्रदक्षिण रवि निशिनाथ॥ जात मेरुके जेहि दिशि सूर। होत दिवश तहँ आनद पूर॥देखि परत नहि जेहाँ भान। तहाँ रहति निशि नित्य सुजान॥ पर्व सन्धिको लहिकै काल। दिनमणि रचत माषको माल॥सोम नक्षत्रणको सगँ पाय। चन्द्रमास विरचत सुखदाय॥ शिशिरस्वन चाहत जब सूर। भजत दिशा दक्षिण द्युतिपूर॥ तब उतपन्न होत अति शीत। देत दीन दुर्बलकों भीत॥ उत्तर पथ गहिँ दिनमणि भूप। हरत सार सबको अनुरूप॥ तब आलश निद्रा अरु स्वेद। सार हरे ते बढत सखेद॥ नित्यक्रम यह अकथित भूप। सार सो बर्षत रवि जलरूप॥ आतप मारुत वर्षा देय। भानु जगत वर्धित करि लेय॥ काल चक्र यह ऐसे भूप। फिरत हरत निशिदिनके रूप॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥ *॥ बसत तौन नगसे अभिराम। जिष्णु मिलनको धरि मनकाम॥ तौन अद्रिकी सुषमा पर्म। देखत प्रीति भरे नृपधर्म॥ ऋषिन्ह सहित तँहँ गे गन्धर्व। लखि तिनको व्रतधर्म अखर्व॥ सगिरि औषधिन्हको सु प्रकाश। लहि न होत जहँ निशिदिन भाश॥ धनद रचित पद्माकर यत्र। क्रीडास्थान बने बहु तत्र॥ जहाँ बास करि सुमति समस्त। देखत उदय भानुको अस्त॥ सत्यव्रत अर्जुनको भूप। तहाँ लखत आगमन अनूप॥ जिष्णु समागमको अति हर्ष। होइ तुम्हे इत सह उतकर्ष॥ यह ऋषिगणको आशिष पर्म। सुनि समाधि धारो नृपधर्म॥ करत जिष्णु चिन्तन मतिमान। भयो घोश निशि बर्ष समान॥ गए धौम्यको सम्मत पाय। धारि जटा अर्जुन सुखदाय॥ भयो न हर्ष तिन्हे तब भूप। तद्गत मनकों कहँ सुखरूप॥ भ्रातन्ह सहित सकृष्णा पर्म। करत जिष्णु चिन्तन नृपधर्म॥ बसत गन्धमादनमे भूप। एकमास बीतो एहि रूप॥ पञ्चबर्ष रहि सुरपति धाम। अस्त्र दिव्य सीखे अभिराम॥ ब्रह्मा विष्णु सुरेश महेश। अग्नि बायु यम बरुण धनेश॥ नारायण त्वष्टा रवि सोम। और जहालो सुरगण तोम॥ इनके अस्त्र रहे जे पर्म। शत्रुनाश कारक कर कर्म॥ सहस्राक्षसों लहिकै तौन। अभिवादन करिकै मतिभौन॥ सुरपतिसों आज्ञाकों पाय। जिष्णु प्रदक्षिण करि सुखदाय॥चले गन्धमादनकों बीर। भरे प्रीति अति मोद गभीर॥ *॥ वैशम्पायन उवाच॥ *॥ रथ मरेन्द्रको अति अभिराम। विद्युत प्रभा बेगको धाम॥ मातलि वाहित नभमे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० देखि। उल्का सो मनमे अवरेखि॥ अर्जुनको चिन्तन करि बीर। पाण्डव मोद भरे गम्भीर॥ तापर चढो जिष्णुकों भूप। लखो धरे भूषण अति रूप॥ शक्रप्रभाव पायकै बीर। ज्वलितः श्रीसों भरो गभीर॥ गए गन्धमादनपैं तत्र। भ्रातन सहित धर्मनृप यत्र॥ रथतैं उतरि जिष्णु बलधाम। धौम्य चरण बन्दे अभिराम॥ बन्दि धर्मभूपतिके चर्ण। फेरि भीमके बारिज वर्ण॥ माद्री सुतन्ह आइ अभिराम। जिष्णु चरण बन्दे छबिधाम॥ बोलि मधुर कृष्णासों बन। शान्तिमान आनदके अैंन॥ भातृ समागमको अति मान। बढो हर्ष तहँ सिन्धुसमान॥ जिष्णु प्रसंशित ह्वै नृपधर्म। भए मोदसों पूरित पर्म॥ जेहि रथपै चढिकै सुरराय। हनो असुर सेना समुदाय॥ जाय इन्द्ररथ निकठ गभीर। कियो प्रदक्षिण कुरुकुल बीर॥ करि मातलिको बहु सत्कार। कियो धर्मनृप तुष्ट उदार॥ मातलि कियो भूपकों तुष्ट। शिक्षा बचन बोलि अति पुष्ट॥ पर्म प्रकाश मयो रथ तैंान। लै मातलि किय सुरपुर गैंान॥ गो मातलि तव सुरपुर भूप। भूषण दए जे शक्र अनूप॥ सूर्य्यसमान प्रभामे जैंान। जिष्णु दए कृष्णाकों तैंान॥ जिष्णु मध्य द्विजबर समुदाय। भ्रातन सह बैठे सुखपाय॥ कहे अस्त्र हम शिखे अखर्ब। बायु शम्भु सुरपतिसों सर्ब॥ शील शौच तप लखि मम भूप। दिए सुरन्ह सब अस्त्र अनूप॥ स्वप्न रीतिसों गगण प्रवास। कहो जिष्णु कुरुपतिके पास॥ माद्री सुतन्ह सहित सुखदान। गए जिष्णु जहँ निद्रास्थान॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि अर्जुनसमागमबर्णनोनाम एकत्रिंशोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रजनी भई व्यतीत जब प्रात सुकृत करि बीर। सह भ्रातन्ह नृपधर्मसों बोले जिष्णु गँभीर॥
एहि अन्तरमे गगणमे बाजे बजे ललाम। सुनो पाण्डवन्ह सुरनको शब्द कोलाहल माम॥
रथध्वनि घण्टाको क्वणित सुनि पाण्डव अतिरूप। लखो सहित गन्धर्बगण अप्सरबृन्द अनूप॥
सूर्य्य सदृश नभजान चढि चहूओर द्युतिमान। मध्य हरित हय सुरथपै तेज पुञ्ज मघवान॥
आए जहँ पाण्डव रहे द्विजन सहित बर बीर। सुनाशीर गिरि शिखर पर उतरे मुदित गँभीर॥
देवराजकों देखिकै धर्मनृपति सह भ्रात। गए तहां द्विजबरन्ह सह भरे मोद अवदात॥
सुरपतिकी पूजा कियो बेदबिहित नृपधर्म। नमस्कार सुरराजको कियो जिष्णु सह शर्म॥
भृत्य सदृश ठाढे भए प्रणत देवपति पास। जडित भरो शक्रास्त्रसो लखि कुरुपति मतिरास॥
भरे महत आनन्दसों जानि बन्धु सुखदान। परम प्रीति पायो नृपति करि पूजित मघवांन॥
देखि दिन मानस खरे भरे पुलक सह शर्म। देवराज नृपधर्मसों कहे बचन अति पर्म॥
सागरां बरा भूमको भोग करहु गे भूप। काम्यक बनकों जाहु फिरि सहित कुशल सुखरूप॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अस्त्र पाय हमसों सकल मम प्रिय कियो गभीर। त्रिभुवनमे नहिँ जिष्णुकों कोऊ जीतिहै बीर॥ व०प०
ऐसे कहि नृपधर्मसों शक्र कृपाके बैंन। भरे मोद सुरगण सहित गए आपने ऐंन॥
जो धनपतिके स्थानमे पाण्डव शक्र मिलाप। एकवर्ष भरि करै गो नर शुचि व्है कै जाप।
बाधा रहित सो जिऐगो शतसम्वतलौं भूप। सन्तति सम्पति सहित सो सुखसों भरो अनूप॥
स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकविश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वन पर्वणि पाण्डवशक्रसमागमवर्णनोनाम द्वात्रिंशोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥

गएँ शक्र भ्रातन सहित द्रुपदसुता सह भूप। जिष्णु कियो नृपधर्मको पूजन सविधि अनूप॥
मूर्द्धाघ्राण बिभत्सुको करि नृपधर्म सचँन। बोले ऐसें जिष्णुसों सुख भरि गद गद बैंन॥
कैसें बीतो काल यह स्वर्गमाह तव तात। कैसें पाये शक्रसों अस्त्र सकल बिख्यात॥
कियो बिहित बिधि अस्त्र तुम ग्रहण सकल कुरुबीर। इन्द्र शुक्र तुमकों दिये जे करि प्रीति गँभीर॥
शङ्कर शक्र दिये तुम्हैं जैसें अस्त्र अनूप। आराधन तिनको कियो तुम जेहिबिधि अतिरूप॥
प्रिय जो कीन्हो शक्रको तुम जेहिभाँति ललाम। जिष्णु तौंन सुनवे चहत कहहु सविस्तर आम।

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

जैसें शङ्कर सक्रको दर्शन पायो भूप। सुनहुँ तौंन हम कहत हैं बिस्तर सहित अनूप॥
बिद्या तुम हमकों दियो जो सो लै अभिराम। बिदा होय तुमसों गए हम तपकों हिमधाम॥
काम्यकतें गिरितुङ्गमे जाइ बसे हम भूप। एकनिशा हमकों मिलो तहँ बर विप्र अनूप॥
तेहि बूझो हमसों कहाँ जात कौंन तूम बीर। यथा तथ्य तासों कहो हम सुनि सुमति गँभीर॥
तव तेहि हमसों प्रीति करि कहो करहु तप जाय। तप प्रभावतें जगतपति रुद्र मिलैंगे आय॥
तप अपनो कहि कै कहो हर किरातको युद्ध। कहो सो शिव करि कै कृपा दियो पशुपति उद्ध॥
अस्त्र धनद यम बरुण जे दिये सबिधि तहँ आय। कहो फेरि सुरपुर गवन सुरपतिको रथ पाय॥
आदर करि सुरपति दिये अस्त्र सबिधि जे सर्ब। कहो तौंन फिरि आपनो अस्त्राभ्यास अखर्ब॥
कही कथा यह प्रथम ही याते कही न फेरि। जानि ग्रन्थ बाहुल्य बुध याते लीजो हेरि॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

जानि कुशल सब अस्त्रमे धरि बिश्वास अनूप। मेरो मूर्धा घ्राण करि इन्द्र कहो इमि भूप॥
तुम्है जीतिबें योग्य अब नहि रणमे सुर सर्ब। मनुज लोकमे मनुजको तुम्है जीति है खर्ब॥
अप्रमेय अप्रधृष्य तो अस्त्र युद्धमें बीर। और न तुम सम होयगो सुरपति कहो गँभीर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

द०प० ॥ सूर अस्त्रविद बीर तुम कुरुकुलके सुखदान । अस्त्र प्राप्त तुमको भए जे दशपञ्च महान ॥
और न पञ्चविधानमें तो सम धनुधर बीर । संहार प्रयोगादिक कहे जे धनुवेद गँभीर ॥
काल भयो है प्राप्त सो करिबेकों अब कर्म । कहऊ प्रतिज्ञा प्रथम तव कहैं जो कहिबे पर्म ॥
तव सुरपतिसों हम कहो ऐसे सुनि कै भूप । शक्य हमारे होय गो करि है तौन अनूप ॥
तव हँसिकै सुरपति कहो ऐसे हमसों बैन । नहि अशक्य तुमको कछु त्रिभुवनमें बलऐन ॥

॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥

निवातकवच नामक असुर शत्रु हमारे वीर । सिन्धुकुक्षिमें बसत है लहि कै दुर्ग गभीर ॥
तीनि कोटि ते है प्रबल तुल्य पराक्रम रूप । तिन्हैं मारि गुरदक्षिणा दीजै हमै अनूप ॥
मातलि सह जामें लगे है बरबरण मयूर । तौन सज्ज करि रथ दियो तेजपुञ्ज छवि पूर ॥
यह कीरटी मेरे धरो मस्तक पैं अभिराम । रूप शरीर मेरे दियो भूषण दिव्य ललाम ॥
यह अभेद्य दीन्हों कवच सुखसर्ग अतिरूप । कियो अजर गाण्डीव पै मौर्बी रोपित भूप ॥
तेहि रथ पैं हम चढि चले जेहिरथ चढि सुरराज । बलिकों जीतो समरमें दितिकुल सहित समाज ॥
देव सकल रथघोष सुनि जानि हमै मघवान । आए मेरे पास चलि भरे हर्ष अतिमान ॥
देखि हमै बूझन लगे चहत कियो कापार्थ । हम तिनसों वृतान्त कहि दीन्हों सकल यथार्थ ॥
निवातकवच जे असुर हैं तिन्हैं हनन हम जात । यह सुनि कै आशिष दियो हमै सुरन्ह अवदात ॥
नमुचि वृत्र सम्बर प्रभृति असुर महाबलवान । एहि रथपर चढि करि हने शक्र समर अतिमान ॥
देवदत्त देवन्ह दियो यह कहि शङ्ख महान । बिजयहेतु हमसो लयो सुनि सुत्तव सुखदान ॥
शङ्ख कवच बरबाणधर गहे धनुष अभिराम । चले तहां हम सिन्धुमें जहँ असुरनको धाम ॥
सुनत महर्षिणसों तहां पथमें सुत्तव भूप । देखो जाय समुद्रको अतिगम्भीर स्वरूप ॥
फेण लता लपटी उठै गिरिसे महत तरङ्ग । वेला बिलसत रत्नमै नौकागण बऊरङ्ग ॥
मत्स्य तिमिंगिल आदि बऊ गिरिसे याद महान । वायु भ्रमत जामें रहत अद्भुत रूप अमान ॥
महावेग अम्भोधि सो देखि सर्व अतिमान । लखो दनुजपुर फेरि हम दनुजन भरो महान ॥
तहँ पृथ्वीतलमें गयो मातलि लै रथ भूप । आतुर तहँ रथ हाकि गो रथबिद बीर अनूप ॥
कम्पित कीन्हों दनुजपुर रथको घोष सुनाय । घनगर्जित सम सुनत सो चौंके दनुज अघाय ॥
रथधुनिसों जानो हमै तिन मनमें मघवान । व्है विस्मित ठाढे भए गहि धनुबान महान ॥
मुसल गदा असि परशुधर चक्र त्रिशूल उदार । भरे त्रास तिन नगरके मुद्रित कीन्हें द्वार ॥
कोऊ देखि परे न तहँ रक्षण करि पुर सर्ब । लीन भए जहँ तहँ सकल पूरे त्रास अखर्ब ॥
देवदत्त तब शङ्ख ले हम करमें अतिघोर । पूरित कीन्हों दिशन्हमें उग्र भयानक रोर ॥
शब्द सो पूरो दिशन्हमें प्रतिध्वनि भई अमान । अलङ्कार करि कै सकल तब दनुजन्ह बलवान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

वर्म चर्म धरि सज्ज ह्वै लए धनुष तूणीर। गदा मुसल पट्टिश परिघ चक्र शूल वरवीर॥ द०पु०
आयुध नानाभाँतिके धरि कै निशित अखर्ब। प्रगट भए लाघत तहाँ दानव दुर्मद सर्ब॥
मातलि तुरँगन्हको समुझि बज्रविधिको सञ्चार। गयो हाँकि रथको तहां जहँ समदेश उदार॥
मातलि प्रेरित तुरग ते महा बेगमै भूप। कछु कोऊ लखि नहि परै सो रथ अद्भुत रूप॥
दनुजन तब बाजित्र बज्र बजवाए चहुँओर। भयो शोर अतिशय महा भरे बिहत स्वर घोर॥
सुनत शब्द सो सिन्धुके पर्वत ऐसे पीन। बिना जीवसे सलिल पैं उतराने बज्रमीन॥
तब दानव वर बेगसों लागे बरषण बान। दनुजनसों हमसों भयो तुमुल युद्ध अतिमान॥
देवर्षि ब्रह्मऋषि सिद्ध तँह देखन लागे आय। लगे सराहन हमै करि मधुरगिरा जय दाय॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

तब निवातकवची दनुज धरि कै शस्त्र महान। वर्षण लागे बेगसों मोपर अति बलवान॥
रथको पथ चहुँओरते घेरि महा करि शोर। मूदिँ लियो मोकों बरषि बाणवृष्टि अतिघोर॥
गदा शूल पट्टिश परिघ शक्ति मुशल अतिमान। शस्त्र निरन्तर ते लगे वर्षण दनुज महान॥
ते हमपर टेरे सकल धरे शस्त्र समुदाय। तिन्हके दश दश बाणसों हम बेधे अतिकाय॥
मेरे बाणनतें भए बिमुख दनुज ते सर्ब। मातलि हाको बेगतें रथ गतिज्ञान अखर्ब॥
नाना विधिकी गति गहैं नृत्त ते तरल तुरङ्ग। चरणघातसों मरदि तिन कियो दनुज बल भङ्ग॥
दशहजार रथमे तुरग लगे हरित बलवान। जन्ता मातलि सो महारथ रथगतिविद मतिमान॥
तिनके चरण निपातते रथध्वनिते गँभीर। निशित हमारे शरणसों मरे दनुज बज्रवीर॥
दशो दिशनतें घेरि ते बर्षे शस्त्र महान। भयो हमारो मन व्यथित देखि तिन्है बलवान॥
मातलिको तब वीर्य्य हम देखो अद्भुत रूप। बेगवान तिन हयनको गहे यथाविधि भूप॥
तब हम अति लाघव सहित अस्त्र विचित्र चलाय। असुर हने आयुध सहित शतसहस्र अतिकाय॥
युद्ध करत ऐसे हमै लखि मातलि अतिरूप। अति प्रसन्न मोपै भयो शक्रसारथी भूप॥
बध्यमान रथ हयन्हतें ते दितिसुत बलवान। मरे बज्रत रणतें चले भाजि भीति भरि प्रान॥
तब ब्रह्मास्त्र चलाय हम करि लाघव अतिरूप। चण्ड शरणसों दनुज गण हने सहस्रन्ह भूप॥
पीडित ते हमसों दनुज महाक्रोधकों धारि। आय हमै पीडित कियो शक्ति शूल शर डारि॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

निग्मतेजस अस्त्र लै हम नाम माधव चण्ड। डारि दैत्यन्हके किए सहस्र शतधा खण्ड॥
काटि तिनके शस्त्र दश दशबाण निशित अखर्ब। मारि तिनसां किए बेधित दनुज दुर्मद सर्ब॥
अमर कैसी पांति धनुतें कढत शरवर चाहि। इन्द्र सारथि देखि मातलि रहो मोहि सराहि॥
सरावली तिनकी प्रसंशित कियो मातलि भूप। शरणसों हम काटि कीन्हो तीन तिलसम रूप॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० बध्यमान निवातकवची फेरि बरषे बान । मूदि दीन्हो मोहि चारोओरते अतिमान ॥ शस्त्र घाती अस्त्रसों हम शस्त्र तिनके काटि । मारि तिनकों शरणसों फिरि दिए क्षितिपर माटि ॥ कटत तिनके कायतें बज्र बही शोणित धार । यथा बर्षत मेघ निर्झर झरत गुञ्ज पहार ॥ अस्त्र निसै बरबाण मैरे लगे व्याकुल सर्ब । भए शतधा भिन्न तिनके काय शस्त्र अखर्ब ॥ बिरचि माया शरण लागे दनुज ते अतिमान । लगे बर्षण चहूँदिशिते बिपुल वृन्द पषान ॥ बज्रसे इन्द्रास्त्र सो हम उपल कीन्हें खण्ड । उपल खण्डें प्रगट तासों भयो पावक चण्ड ॥ फेरि लागी गिरण नभतें मुसलसो जलधार । बारिधारा सहित धायो चण्डवायु उदार ॥ लगे गर्जन दनुज गो दिश बिदिशको घटिज्ञान । बारिधारा बँधी नभसों बढो तमस महान॥इन्द्रसों हम लहो हो दिव्यास्त्र पूर प्रकाश । छोडि ताकों बारि धारा कियो सह तमनाश ॥ अग्नि बायु प्रचण्डा तमै बढो माया भूप । शैल बारुण अस्त्रसों हम हरो तिनको रूप ॥ देखि मायानाश दुर्मद दनुज व्है अतिक्रुद्ध । करण नाना भाँतिकी तव लगे माया उद्ध॥ शस्त्र पावक सलिल बर्षण लगे घोर पषान ॥ बायुसों अति चण्ड कीन्हों व्यथित मोहि महान ॥ अन्धतमस महान बाढो शक्त चलि न तुरङ्ग । भए मातलि खलित गो गिरि कसो जो बज्र रङ्ग ॥ कहो हमसों सभय मातलि कहा हो वरबीर ॥ भरी मोमे भीति ताकों देखि सभव गँभरी ॥ सभय हमसों बचन अैसें कहो मातलि पार्थ । सुरा सुर संग्राम पहिले भयो हो अमृतार्थ ॥ युद्ध सम्बरसों भयो यब इन्तसों अतिमान । कियो हम सारथ्य बलिसों लरे यब मघवान ॥ किए एतने युद्धमे हम शक्र सेवन बीर । बिगत ज्ञान न भए कबहूँ भाँति एहि गम्भीर ॥ जगतको संहार बिधि का करे गो यह अच । महाघोर न युद्ध अैसो भयो हो अन्यच ॥ बचन मातलि महात्माके सुने हम यह भूप । कियो मोहित दानबनको महा माया रूप ॥ भीत मातलिसों कहो एहिभाँतिके हम बैन । लखज्ञ मेरे भुजनको बल धनुषकों मतिबैन ॥ अस्त्रमायासों जो इनकी प्रबल माया बीर । करत हैं हम शस्त्र देखज्ञ सूत धरैं धीर कियो हम तब अस्त्र मायामोहिनी अतिमान । असुरमाया आपनि लखि पीड्यमान महान ॥ फेरि माया बज्रत बिधिको करि असुरन्ह जैंन । भयो हो जो प्रकाश ताको ग्रास कीन्हों तैंन ॥ भग्न भो जलधारमे सबलोक शोक महान । सूत चारो सुरथ पाय प्रकाशको अतिमान ॥ भए व्याकुल दनुज तब हम पाय औसर भूप । पठै यमपुर दए मारि अगण्यते अतिरूप ॥ अदृश्य व्है ते लरन लागे दनुज हमसों आय । अदृश्यहन्ता अस्त्रसों हम हने तिनके काय ॥ भरे अस्त्र प्रता पसों गाण्डीव सुश्चित बान । काटि तिनके शीष दीन्हो पाटि भूमि महान ॥ बध्यमान निवात कवची दनुज जे अतिकाय । आपने पुरमाह पैठे भाजि कै तेजाय ॥ भजे दानब मिटी माया भयो शोक प्रकाश । लखे दानव परे लाखन्ह तहा पाये नाश ॥ रहो नहिँ सब संहते रथ चलनको पथ भूप । गयो तब रथ खेय मातलि गगणमाह अनूप ॥ क्रोध करि कै दनुज ते तब व्योममण्डच

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

छाय । लगे बरषन गिरिनके गण परैं कछु न लखाय ॥ गए तुरगँनके चरणसों दनुज बहु लप टाय । चक्र रथके पकरि लीन्हें दितिज जे बरकाय ॥ रोध करि गति सुरथकी बहु बरषिकै गिरि भूप । लियो हमकों मूदि चहुँदिशि गुफाको रचि रूप ॥ एहि भाँति मोकों देखि आरत कहे मातलि बैंन । भीति अर्जुन भरहु मति बज्रास्त्र तजु मतिऐंन ॥ सूतको सुनि बचन किय हम बज्र अस्त्र प्रहार । इन्द्रको प्रिय परम दारुण भीम भूरि उदार ॥ बज्रसम गाण्डीव ते शर ब्रात करि सन्धान । मारि माया तीन तिनके कवच काटि महान ॥ बज्र मंत्र सुयुक्त शरतैं बज्रसे अतिचण्ड । दनुजगणके काय गिरिसे काटि कीन्हे खण्ड ॥ असुर पकरे चक्र जे हे तुरगँ गणके पाय । मारि तिनकों डारि दीन्हें बाण ते तहँ जाय ॥ निबातकवचनके परे जहँ देह पर्वतमान । भयो गिरि गण कीर्णसों सो देश नृपति महान ॥ बिहसिकै तब कहो मातलि भूप ऐसे बैंन । बीर्य्य तुममे जौंन अर्जुन सुरनमे सो हैं न ॥ मरे असुरनकी लगी तब करण रोदन बाम । बिना पतिकी यथा कुररी करै क्रन्दित माम ॥ गए मातलि सङ्ग तब हम असुर पुरमे भूप । सुनत रथको घोष असुरी भई कम्पित रूप ॥ सहस दश हय युक्त रथकों देखिकै रबिरूप । डारि भूषण असुर बनिता भजी चहुदिशि भूप ॥ कोऊ धामन माहँ पैठी मूदि अपने द्वार । जडित मणिगण घटित कञ्चन बन जौंन उदार ॥ देखि अद्भुत नगर सो हम देवपुरतैं पर्म । लगे मातलिसों सुबूझन भाँतिसों नृप धर्म ॥ इन्द्र ऐसें नगरमे नहि कियो काहे बास । शक्रपुरते अधिकहै यह भरो रूप प्रकाश ॥ मातलिरुवाच ॥ * ॥ पूर्व यह सुरराजको हो परम पुर अभिराम । दियो काढि निबातकवचन्ह युद्ध करि बलधाम ॥ महा तप करि पितामहकों कियो दनुजन तुष्ट । दियो यह पुर बासकों बिधि कृपा करिकै पुष्ट ॥ पितामहसों कहों ऐसे बिनयसों सुरकन्त । कीजिए भगवान बरको नियम कारण अन्त ॥ * ॥ ब्रह्मोवाच ॥ * ॥ नाश इनको करहुगे देहान्यते मघवान । दियो इन के नाशको हरि अस्त्र तुमहि महान ॥ सुरणके नहिँ जीतिबेके शक्य हे ए बीर । कालको परिणाम लहि तुम हनो इनको धीर ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ नगरको करि समाधान निपाति दानव भूप । सहित मातलि चले तब सुरपुराकों सुखरूप ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनः श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि निबातकवचबधवर्णनोनाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

लखो पथमे कामचर पुर सदृश सूर प्रकाश । रत्नमय द्रुम लसै जिनपैं बिहंग सुषमा रास ॥ पौलोम दानव कालखञ्जनसों भरो अभिराम । सौध नाना भातिके पुर द्वार चारि ललाम ॥ शस्त्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० नानाभाँतिके धरि दनुज बृन्द महान। करत चारोंओर रक्षण सपुरको बलवान ॥ दैत्य पुर हम देखिकै सो महत अद्भुत रूप। कहो मातलिसों कहा यह देखि परत अनूप ॥ मातलिरुवाच कालखंजा अरु पुलोमा आसुरी हीं पर्म। दिव्य बर्ष सहस्र कीन्हों महा तप युत धर्म॥ दियो तपके अन्तमे बर पितामह अभिराम। मागि तिन बर लयो अपने सुतन्हकों सुखधाम ॥ अबध्यता सुर असुर राक्षस पन्नगनसों सर्ब। नगर मणिमय महत खेचर प्रभा पूर अखर्ब ॥ यक्ष ऋषि गन्धर्ब राक्षस सुरन सहित अजेय। शोक रहित सु काम गुणसों भरो अरुज अमेय ॥ पौलोम दानव कालखञ्ज सु बसत यामे उद्ध। हिरण्यपुर यह बिदित राखत सुरन साथ विरुद्ध ॥ सुरनसों नहिँ बद्ध ए उद्वेग रहित महान। मृत्यु इनकी मनुज सो बिधि रचित है बलवान ॥ सपुर हनि बज्रा खसों तुम करऊ इनको नास॥ *॥ अर्जुनउवाच॥ *॥ सुरासुरतें जानि तिन्हहिँ अबध्य हो मतिरास॥ कहो मातलिसों चलो तुर नगर पास अखर्ब। शक्र शत्रु बिचारि हमकों बध्यहैं ए सर्ब॥ मारि अस्त्रणसों करौंगो दनुज दुर्मति नास। सुनत मातलि बेगि रथ ले गयो तेहि पुर पास॥ देखि हमकों धारि ते बर बर्म भूषण पर्म। रथनपैं चढि कढे पुरतें दनुज ते नृपधर्म ॥ शस्त्र नानाभाँतिके धरि दनुज दारुण क्रुद्ध। घेरि चारोओरते ते करन लागे युद्ध ॥ शरनसों हम कियो बारण शस्त्र बर्षा तौंन। जौन दानव रहे बर्षत मेघसे करि गौंन ॥ फेरि छोडो अस्त्रकों हम बिबुध बिद्या रूढ। हनन लागे परसपर ते भए दानव मूढ॥ शरनसों तब शीघ्र तिनके हने हम बज्र भूप। भाजि ते पुर माहँ पैठे भए व्याकुल रूप॥ गगणकों उडि गयो फिरि सो नगर माया जोर। शरन सो हम मार्ग तिनको कियो रूधिँत घोर ॥ यथा सुख दैत्येयपुर सो धरत बश बरदान। गगणमे पाताल जलमे दिशनमे गतिमान ॥ अमरपुर सम तौन पुर अति कामचारी जौंन। दिव्यास्त्र मय शर जालसों हम कियो रुन्धित तौंन ॥ फेरि मेरे शरनसों व्है भग्न सो पुर भूप। भूमिपैं गिरिपरो सो गति रहित होय अनूप ॥ मथित मेरे शरनसों ते असुर अति बलवाँन। भ्रमरसे ते भ्रमनलागे गगणमे अति मान ॥ गयो नभते भूमिपै रथ हाकि मातलि भूप। असुर साटिहजार रथ चढि क्रोधमय अति रूप॥ युद्ध लागे करन तौंन बिचित्र हमसों आय। निशित बाणनसों लगे हम हनन तिनके काय॥ सिन्धु कैसो लहरि लागे लरन ते बलवान। यक्ष ए न मनुष्यके रणमाह करि अनुमान॥ क्रमहि ते हम दिव्य अस्त्र प्रयोग कीन्हो जौंन। अस्त्रसों तिन अस्त्र मेरे व्यर्थ कीन्हें तौंन॥ बिबिधि बिधिको रथनकी गति चालिकै ते सर्ब। देखि रणमे परेशतसह महाबीर अखर्ब ॥ धरे नाना भाँतिके मणि मुकुट भूषण भूप। भयो सुमन प्रसन्न मेरो देखि तिनको रूप ॥ अस्त्रमय शर बर्षकों हम बर्षिकै अति काम। तिन्हैं पीडि न सके किय तिन हमै पीडित माम ॥ बज्रत तौंन कृतास्त्र रणसे कुशल अति चलि भूप। व्यथित मेरे हृदयमे भय भयो व्यापक भूप ॥ देव देव महेंद्रको हम स्मरि बोलि उदार। रौद्र अस्त्र प्रयोगको तब कियो उग्र बिचार॥ तीनि शिर नव नयन खडभुज चण्ड

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सूर समान। अग्निज्वाला सदृश जाके केशवेश महान ॥ बमत अग्नि भुजङ्ग तिनको किए भूषण बास। अभीं हमसो रौद्र अस्त्र बिलोकि चण्ड प्रकास ॥ गाण्डीवसों सो युक्त करिकै बन्दि शङ्कर सर्ब। मुक्त कीन्हों असुर नाशन हेतु असुर अखर्ब॥त्यजतहा तेहि अस्त्रसों अनगणिन निकसे रूप। सिंह व्याघ्र बराह मृग गज महिष ऋक्ष अनूप॥ शरभ पन्नग उक्ष बानर बृक बिडाल बिशाल। गृद्ध गरुड पिशाच प्रेतस यक्ष रक्ष कराल ॥ देव ऋषि गन्धर्ब गुह्यक याद ऊष अति मान। अस्त्रतें ते कढे सायुध घोररूप महान ॥ और नाना रूपके जे जीवहै जगमाहँ। शस्त्र लीन्हें घोर निकसे अस्त्र ते नरनाहँ॥अस्त्रतेँ बहु रूप व्यापक भयो जगत बिशाल। चतुर्भुज चतुरास्य त्रयशिर चतुर्दन्त कराल ॥ रुधिर मांस बसास्थिसों संयुक्त भू करि सर्ब। मारिकै तिन नाश कीन्हों दनुज तौंन अखर्ब ॥ अर्क ज्वलन समान तातेँ बज्रसे कढिवान। हनेएक मुहूर्तमे सब दनुज ते बलवान॥ गाण्डीव मुक्त महास्त्रतें हत देखि दानव माम। कियो अम्बक देवकों भरि भाव भूरि प्रणाम॥ देखि मातलि मुदित अैसें कहे हमसों बैंन। कियो यह तुम कर्म सो सुर शक्य करिबे है न॥ शक्य हो न सुरेशहूके कियो यह तुम जौंन। सुर असुरसों नहिँ बध्यहों यह हनो पुर तुम तौंन॥असुर पुरके हने तिनकी बिकल रोवति बाम। हनत उर शिरके सखी ले छोडि निकसीं धाम॥ पिता पति सुत शोकसों अति भई व्याकुल सर्ब। गिरे क्षितिपर उठै फिरि गिरि परै व्यथित अखर्ब॥ भयो हतश्री नगर सो गन्धर्ब नगर समान। मोहि मातलि गयो ले सुर नगरको सुखदान॥ हिरण्य पुर हनि मारि सकल निवातकबचन भूप। गए हम सुरराजके तब पास आनद रूप॥ कर्ममेरो क्रमहिते बिस्तार करिकै सर्ब। कहो मातलि इन्द्रसों अति भरो मोद अखर्ब॥ सुनत सो सह सुरन्ह सुरपति भरे मोद महान। सहित आदर कृपाकरि मम लगे करण बखान॥ कर्म जौंन असक्यहो यह सुरणकों गम्भीर। कियो मेरे अर्थ सा तुम गुरु सुसूर्षण बीर॥ होय अैसें बिजय तुमकों युद्धमे सबठौर। अस्त्रको अभ्यास कीजो अनिस कुरुकुल मौर॥ देव दानव यक्ष राक्षस उरगगण गन्धर्ब। युद्धमे सहिसकैंगे नहि तुम्है मानव सर्ब॥ भूमि निर्जित सकल तो बर बाहुबलतें पर्म। सहित भ्रातन्ह भोग करिहै धर्मधर नृपधर्म॥ *******

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनानथकबीस्वरात्मजेन गोकुलनाथेन करिना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे बन पर्बणि हिरण्यपुरनिपातोनाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥ **********

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि मोमे बिश्वास दृढ रिपु रणजयको भूप। इन्द्र कहन मोंसों लगे अैसें बचन अनूप॥
दिव्यअस्त्र तुममे बसत फाल्गुण सबिधि गभीर। तुम्है जीतिबे योग्य नहि मनुज भूमिपर बीर॥
भीष्म द्रोण कृप कर्ण अरु शकुनि सुयोधन जौंन। षोडशांश नहि रावरे पुत्र समरमे तौंन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० यह अभेद्य दीन्हो कवच दिव्य तुष्ट मघवान। दई किरीटमय माल यह द्युतिसों भरी महान ॥
दियो महा रव शंख यह देवदत्त अभिराम। यह किरीट दीन्हों हमै तेजपुञ्ज छविधाम ॥
दिव्य अस्त्र भूषण दए ए सुरपति अतिरूप। पाँचवर्ष अैसें बसे तह पूजित हम भूप ॥
गन्धर्वनके शिशुन सगँ सुनासीरके धाम। अैसें हमसों शक्र तब कहे बचन अभिराम ॥
अर्जुन जावेको भयो समै तिहारो बीर। भ्राता तव पथ लखतहैं उत्सुक भए गभीँर ॥
पञ्चवर्ष अैसे रहे इन्द्र भवनमे भूप। स्वर्ण करत हम भूत भव भावी कलिको रूप ॥
तुम्हे लखो इत आइ अब भ्रातन्ह सह नृपधर्म। गन्ध सुगादनकी बसे लहि अधित्यका पर्म ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

लहे भाग्यवश अस्त्र ए दिव्य धनञ्जय सर्व। राधित कीन्हों इन्द्रकों तुम वश भाग्य अखर्व ॥
तुम देखो वश भाग्यसों शङ्कर गिरिजा साथ। कियो भाग्य वश युद्धमे तोषित त्रिभुवननाथ ॥
तुम दिगपालनसों मिले जिष्णु भाग्यवश बीर। बर्द्धित हम वश भाग्य व्है देखो तुमकों धीर ॥
स्ववस भूमि देवी बिजित हम मानी अब सर्व। जीतेसे धृतराष्ट्रके माने पुत्र अखर्व ॥
तौंन अस्त्र देखो चहत दिव्य सकल हम बीर। जाते तुम जीते असुर बलसो भरे गभीँर ॥

॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥

प्रातःकाल देखायहै तुम्हैं अस्त्र हम तौंन। निवातकवच दानव हने हम जिनतें बल भौंन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

अैसें कहि आगमनके धर्मनृपतिसों बैंन। जिष्णु सहित भ्रातन्ह कियो तौंन निशामे शैन ॥
भोर भयो तब नित्य करि विधिवत आन्हिक कर्म। अस्त्र देखावनकों कहो अर्जुनसों नृपधर्म ॥
देवदत्त सब अस्त्र जे वहे धनञ्जय बीर। तौंन देखावनकों भए सज्ज महारणधीर ॥
विधिवत करिकै शौच चढि गिरिवर सुरथ समान। दिव्य कवच धारे भए शोभित जिष्णु महान ॥
देवदत्तसो शङ्खधरि धनु गाण्डीव उदार। जिष्णु अनुक्रममों कियो अस्त्रप्रयोग विचार ॥
पहो देखायो अस्त्र जब दिव्य धनञ्जय बीर। धरी दाबि क्षिति चरणसों बलमय बीर गँभीर ॥
कँपन लगी क्षिति सरित सर सिन्धुन्ह सहित महान। व्है विदीर्ण गिरिवरणतें लागे गिरन पषान ॥
बहत समीरण भानुको व्है गो मन्द प्रकाश। बेद भूलिगो द्विजनकों ज्वाला रहित हुताश ॥
रहे जीव जे भूमिमे ते बाहेर कढि आय। चाहि चाहि लागे कहन साञ्जलि कम्पितकाय ॥
सुर ब्रह्मर्षि सिद्धि देवर्षी जङ्गम जीव अखर्व। गुह्यक राक्षस यक्षगण सह किन्नर गन्धर्व ॥
लोकपाल सह पितामह शङ्कर सगण सुरेश। आये तह ठाढे भए पारथ पास नरेश ॥
तब समीर बज्ररङ्गके दिव्य सुगन्ध अनूप। सुमन वृष्टि लागे करण फाल्गुण ऊपर भूप ॥
गुणगणके गावन लगे गाथा सब गन्धर्व। लगे अप्सरणके तहाँ नाचन वृन्द अखर्व ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुरन पठायो ब्रह्मऋषि नारदको तेहिकाल । कहे महामुनि जिष्णुसों जैसे बचन विशाल ॥ ६५०
अर्जुन नहि योजित करऊ दिव्य अस्त्र वरवीर। विना लक्ष्य दिव्यास्त्रको भोजन भलो न धीर॥
भए विना प्रोडित नही दिव्य अस्त्रको त्याग । करत न कोऊ करेतें लगत दोष बडभाग ॥
विना लक्ष्य दिव्यास्त्रको करं प्रयोग गम्भीर । कारण त्रिभुवननाशको होत नकरु कुरुवीर ॥
अस्त्र सकल तुम लखऊ गो युद्ध जुरें नृपधर्म । करि हैं जिष्णु प्रयोग जब अरिगणनाशकपर्म ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

अस्त्र निवारण करि गए सुरगण निज निज धाम । पाण्डव कृष्णा सहित तेहिवनमे वसे ललाम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिमानिना श्रीवन्दीजनकाशी बासिरघुनायकवीरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि अस्त्रसन्दर्शनोनाम पञ्चत्रिंशद्ध्यायः ॥ *

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

दिव्यअस्त्र लहि अर्जुन वीर । आए धर्मनृपति पहँ धीर ॥ तब का कियो पाण्डवन्ह कर्म । कहउ सविस्तर सो मुनि पर्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धनदरचित क्रीडावन धाम । तिन्हें किरीटी लखत ललाम ॥ धनद प्रसादज लहि वरभौन । भक्ष्य भोज्य उत्तम अति तौन ॥ मानुष सुख नहि ईक्षत भूप। भयो काल अति आनदरूप ॥ बीते तिन्हें चारि तहँ वर्ष । एकरात्रि सम पूरित हर्ष ॥ प्रथम गए षटवर्ष अनूप । बनमे बसत कुशलसों भूप॥तब चारो भाता मतिरास। बैठे धर्म नृपतिके पास ॥ जैसें कहन लगे ते बैन । एकान्तस्थल पाय सचैन ॥ सत्य प्रतिज्ञा तो नृप जौंन ॥ सप्रिय बहत कियो हम तौंन ॥ गृहवन छोडि चलऊ कुरुराय । हनिबे शत्रु सहित समुदाय ॥ एकादशसुवर्ष यह भूप । बसैं सुयोधन ढिग सुखरूप ॥ निकट रहे जब जाय भुलाय । तब छलि बसी दूरि कऊ जाय ॥ वर्षएक अज्ञात नरेश । बसिए तहां धारिए कछुवेश ॥ वर्षएक तहँ करि कै बास । करैं प्रगट व्है कटुको नाश॥ करि के बैर समापन भूप । करिए भूमिभोग सुखरूप ॥ स्वर्गो पम एहिँ बसि कै देश । शोकनाश नहिँ होत नरेश ॥ पुण्यमयी कीरति तब जौंन । लहि है नाश लोकमे तौंन ॥ लहि कुरुकुलको राज्य अखर्ब । करि हौ यज्ञादिक हुत सर्ब॥भोग धनदसों पावत जौंन । तुम्हें अशक्य न लहिबो तौंन ॥ बुद्धि शत्रु मारणको भूप। धारण कीजै तौंन अनूप ॥ सिद्धि तबार्थ चाहत गम्भीर । श्रीश्रीकृष्ण सात्वकी वीर ॥ तिन्हें सहित तुमको रणमाह । जीति न सकत सुनो नरनाह ॥ हम सब तथा अर्थ तो भूप । सिद्ध कियो चाहत अतिरूप ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ भ्रातन्हको मत दृढ अतिपर्म । समुझि भली विधिसों नृपधर्म ॥ धनदरचित जे हे तहँ धाम । तिन्ह प्रदक्षिण करि चभिराम ॥ घर घरिता तहँ राक्षस जौंन । तिनसों विदा भए मतिभौंन ॥ गवन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पत्यकों देखि अनूप । फेरि लखो गिरिबरको भूप ॥ जीति शत्रु करि कर्म समाप्ति । भोग राज्यको करि कै प्राप्ति ॥ ह्वै तपनिष्ठ बिलो कै तोहि । यह गिरिराज देऊ गति मोहि ॥ भ्रातन्ह सह बिप्रन्ह नृपधर्म । चले तौनपथ गहि कै पर्म ॥ भ्रातन्ह सहित बिप्र समुदाय सगण घटोत्कच तेहां आय ॥ सबकों लिये कन्ध धरि बीर । चल्लो यथा पथ गहैं गभीर ॥ करि शोचित सुत शिष्य समान । लोमस बिदा भये सुखदान ॥ आर्ष्टिषेनक मुनि शिक्षापर्म । कियो सभ्रात बिदा नृपधर्म ॥ सर सरिता गिरि गहन ललाम । देखत चले भूप अभिराम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनका श्रीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि गन्धमादनवाससमाप्तिर्नाम षट्त्रिंशदध्यायः ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द । * ॥

लखत न गोत्तमकी छवि भूप । किन्नर यक्षन सहित अनूप ॥ क्रीडत तौन परम सुखवास । महि आनद पायो मतिरास ॥ गिरि कैलाश लखत अभिराम । लहो धर्मनृप मोद ललाम ॥ गह्वर गिरि देखत अतिकाय । जहां मृगेन्द्रनके समुदाय ॥ चले लखत गिरि कानन बीर । अस्त्र शस्त्र धारें रणधीर ॥ सर सरिता गिरि गह्वर पाय । करत बास तेहां सुखदाय ॥ विषपर्वाके आश्रम पर्म । गए कछुदिनमें नृपधर्म ॥ विषपर्वाको पूजो भूप । तातें पूजित भए अनूप ॥ प्रवासकथा विस्तर सह सर्व । विषपर्वासों कहो अखर्व ॥ बसे एकनिशि तहँ नृपधर्म । विषपर्वाके आश्रम पर्म ॥ जहां विशाला बदरी भूप । गए तहां ते चलि सुखरूप ॥ नारायणको आश्रम यत्र । धनद बन जब न दखत तत्र ॥ एकमास तहँ कीन्हों बास । विप्रन्ह सहित भूप मतिरास ॥ देखत गिरिगण देश अनेक । भ्रातन्ह सह कुरुपति सविबेक ॥ जहां सुबाऊ किरताधीश । गए तासपुरढिग अवनीश ॥ आए फेरि सुनत कुरुभूप । नृप सुबाऊ भरि मोद अनूप ॥ पुत्रन्ह पौत्रन्ह लीन्हें सङ्ग । मिलो आय अति भरो उमङ्ग ॥ सङ्ग सुबाऊ भूपतिके भूप । सूत विशोकादिक सुखरूप ॥ महेन्द्रसेन परिचारक जौन । सूत सहित पुरवासी तौन ॥ गए तहां नृप जिन्हे बसाय । ते सब मिले भूपसों आय ॥ बसे एकनिशि तहँ नृपधर्म । सहित सारथिन्ह लहि रथ पर्म ॥ बिदा घटोत्कचको करि भूप । यामुनगिरिकों गए अनूप ॥ गिरि शोभा देखत सुखदाय । बसे बिशाख जूपमें जाय ॥ मृग बराह केशरि समुदाय । बसत महाबनमें अतिकाय ॥ तहां करत मृगया कुरुबीर । बसे एक सम्वत रणधीर ॥ तहँ गिरि कन्दरमांह भुजङ्ग । बिधिबश पाय भीमसों सङ्ग ॥ गयो सकल तनमें लपटाय । परवश भयो बीर बरकाय ॥ कियो हकोदरको उद्धार । तहां धर्मनृप सुमति उदार ॥ प्राप्त बारहों वर्ष उदार । भयो तिन्हें बन करत बिहार ॥ नन्दन बनसम बननें तौन । कियो मरुस्थलको तिन गौन ॥ धनुर्वेदवेत्ता ते बीर । सरस्वती सरिताके तीर ॥ बसे द्वैतबनमें अभिराम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तहां तिन्ह लखि के तपधाम ॥ आए द्विजवर कुशकर पर्म । योग समाधि धारणा धर्म ॥ नाना विधिके विटप गँभीर । सरस्वती सरिताके तीर ॥ प्रिय गन्धर्व ऋषिन्हकों तौंन । परम प्रिय देवनको भौंन ॥ सरस्वती सरिताके तीर । तहँ वसि विहरण लागे बीर ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ नागायुत बल भीम महान । भो अजगर वश किम बलवान ॥ मारि यक्ष राक्षस गन्धर्व । हरे धन देवनकमल अखर्व ॥ सो अजगरवश कैसें बीर । भयो भरो भयसों गम्भीर ॥ सुनो चहत सो कहिए तौंन । कहऊ सविस्तर मुनि मतिभौंन ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ देवोच्छातें धनुधर बीर । भीम सो वन लखि रम्य गभीर ॥ देखत हिमगिरिके शुभदेश । ऋषिगण मण्डित नाना वेश ॥ बनफल पुष्प भरो अभिराम । बन्य जीव जहँ बसत ललाम ॥ गिरि सर सरिता लखत अनूप । जिनम बसत हंस बऊरूप ॥ मृगया करत फिरत तहँ भूप । मृगण हने शर छोडि अनूप ॥ मारत सिंह व्याघ्र बऊबीर । अयुत नागबल भरो गँभीर ॥ विटप उखारत तोरत उद्द । गर्जत बनमे फिरत अरुद्द ॥ दरत चरणतें गिरिके सान । ताल फोट करत अतिमान ॥ मृग ढूँढत जहँ गहन गँभीर । गयो तहां चलि कुरुवर बीर ॥ भीमसेन देखो तहँ जाय । महा भयङ्कर अहि अतिकाय ॥ गिरि कन्दरमें गिरि सम जौंन । महा भोग अति भयको भौंन ॥ चित्र विचित्रित अङ्ग महान । लखत हरिद्रा वर्ण समान ॥ गुहाकार मुख दंष्ट्रा चारि । ताम्र अग्निसे चख भयकारि ॥ अग्निशिखासो जीभि निकाशि । चाटत बदन भूरि भय राशि ॥ कालान्तक सम जाको रूप । छोडत श्वास भयङ्कर भूप ॥ सो व्है भीमसेन पर क्रुद्ध । सहसा आइ गहो अतिउद्ध ॥ गहो अजगर याह समान भीमसेनकी भुजा महान ॥ गहत मात्र भो मोहित बीर । वर प्रताप लहि तास गभीर ॥ दश हजारगजको बल जौंन । भयो भीमको निष्फल तौंन ॥ भीमसेन हलि शकत न बीर । अयुत नाग बल भरो गँभीर ॥ छूटिबेको बऊ करत प्रकार । तासो छूटि न शकत उदार ॥ भीमसेन तेजस्वी बीर । कैसे भयो सर्पबश धीर ॥ लागे मनमे करण विचार । सर्पपराक्रम अमित उदार ॥ कहो भीम इमि अहिसों बैंन । कहऊ कौंन तुम हो बलऐंन ॥ कियो कहा चाहत गहि मोहि । बूझत सर्प महाबल तोहि ॥ भीमसेन हम पाण्डव पर्म । अवरज हम जेठे नृपधर्म ॥ नागायुत बल मोमे सार । तो बश भयो सो कहऊ प्रकार । यक्ष रक्ष किन्नर गन्धर्व । हम जीते रणमाह अखर्व ॥ के विद्या बल के बरदान । है तुमसे पन्नग अतिमान ॥ चलत न मम उद्योग सदर्प । हौं बश भयो तिहारे सर्प ॥ है असत्य नर बिक्रम सब ॥ यह मत मोमति धरति अखर्व ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीमवचन यह सुनि अतिकाय । गयो सकल तनमे लपटाय ॥ दृढ गहि जग भीमकों भूप । छोडि दियो भुजबन्ध अनूप ॥ कहन लगो तब ऐसे बैंन । भुजङ्ग भीमसों अति बलऐंन ॥ क्षुधित मोहि बश भाग्य अहार । मिले आजु तुम बीर उदार ॥ जैसे मिलो हमे यह रूप । सो तुमसों हम कहत अनूप ॥ लही अवस्था यह हम बीर । कोपित करि ऋषिबरह गँभीर ॥ आयुअन्तकी इच्छा मोहि । कहत वृकोदर सो सब तोहि ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नहुष नाम राजर्षि हम अयकेसुत शशिबंश । हमहीं तेँ तब पूब सब भए भूपअवतंश ॥
हम अगस्त्यके शापतें करि ब्राह्मण अपमान । प्राप्त भए यहि दशाकों हम बश भाग्य सुजान ॥
तुम अबध्य मम बंशभव प्रिय दर्शन बरबीर । ताको हों भक्षण करत यहबिधि रचित गभीर ॥
ग्रसित होय हमसों कोऊ छुटत न जीव अखर्ब । सिंह व्याघ्र मृग महिष गज भक्ष्य कालमे सर्ब ॥
भए न केवल सर्पसों ग्रस्त सुनहु कुरुबीह । भयो हमै बरदान जो तास प्रताप गँभीर ॥
शक्रासनसों गिरत हम कहो सुमुनिसों बैंन । शाप अन्त कीजै नियम हे मुनिबर तपचैंन ॥
तब मुनि करि मोपैं कृपा कहो गगँ कछुकाल । शाप अन्त तब होयगो हे नृप नहुष बिशाल ॥
गिरे आइ कै भूमिमे जब हम वीर नितान्त । स्मर्ण हमै सो सब रहो पूर्व भूत वृत्तान्त ॥
उत्तर जो तो प्रश्नको देहै आत्मा ज्ञान । तब नहुष भूप तब लहहु गे मोक्ष परम सुखदान ॥
तुमतें व्है है ग्रसित जो प्राणी अतिबलवान । भक्ष्य होय गो तौंन तो तजि है प्राण महान ॥
असे कहि मोसों बचन मुनि करि कृपा अनूप । भए सकल द्विजबरन सह अन्तरध्यान स्वरूप ॥
तब व्है कै हतकर्म हम परे नरकमे आय । मोक्ष काल कांक्षी रहत सर्पयोनिकों पाय ॥
भीमसेन तब यों कहो महासर्पसों बैंन । आपु हिँ निन्दत हम नहिँ तुमपर कोप करै न ॥
होनहार सुख दुःख है जासों जितिक प्रमाण । आगम व्ययमे करत हैं तहाँ नहानि सुजान ॥
पुरुषारथ करि को करै व्यर्थ दैवकृत नित्य । पुरुष पराक्रम व्यर्थ ध्रुव बिधिको रचित निमित्य ॥
शोच आपने नाशको हमकों हैं न महाँन । भ्राता बनबासीनको यथा शोच बलवान ॥
यत्न तज हि ग राज्यको ते सुनि मेरो नाश । परुष बचन हम कहत हे राज्य हेतु नृपपाश ॥
करि है दूरि विपत्यकों अथवा अर्जुन वीर । देव असुर गन्धर्बसों जो अजेय रणधीर ॥
सो जेता तिहुलोकको बेत्ता अस्त्र अखर्ब । कहा पुत्र धृतराष्ट्रके कितव अधर्मी सर्ब ॥
शोच हमै अति जननिको पुत्र बत्सला पर्म । चाहत हमै समृद्ध जो सबसों अधिक सधर्म ॥
ह्वै है सर्प अनाथ सो लहि मम नाश अनर्थ । निष्फल ताके होहि गे सकल मनोरथ व्यर्थ ॥
नकुल और सहदेव मम भुजबल रक्षित बीर । व्है हैं मेरे नाशते अहि दुखमग्न गभीर ॥
भीमसेन एहिभाँतिसों करत बिलाप अमान । बधैं सर्पको कायसों हलि न शकत बलवान ॥
चहुँदिशि लखि उतपात बहु भए व्यग्र नृपधर्म । दक्षिणदिशि रोवति शिवा भयकर शब्द अपर्म ॥
पक्ष अक्ष एक चरणको पक्षी भयकर रूप । रक्त बमत दिशि भानुकी लखो युधिष्ठिर भूप ॥
घोरबायु लागो बहन दशदिशि छार छपाय । मृग पक्षी अपसव्यदिशि बोलन लागे आय ॥
कारो काग सु आय कै पीछे भरे अचैंन । चलहु चलहु लागो कहन भरो भीतिसों बैंन ॥
स्फुरण लगी दक्षिण भुजा अक्ष बामदुख दान । शकुन शुभाशुभ लखि कियो भय आगम अनुमान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कहो द्रौपदीसों कहाँ गए भीम नृपवर्म । गए भीमको काल बहु बीति गयो नहि शर्म ॥
चले धौम्य सह भीमके ढूढनको कुरभूप । सौंपि द्रौपदि हि जिष्णुको रक्षण हेत अनूप ॥
भीमसेनके चरणके चिन्ह लखत नृपवर्म । प्राचीदिशमें जाय कै देखे गजगण पर्म ॥
भीमसेनके चिन्हतें चिन्हित बन भू सर्व । सिंह व्याघ्र वाराह मृग मारे लखे अखर्व ॥
तोरत तरुवर जघनसों गए जौंन पथ भीम । लखत चिन्ह तेहि पथ चले धर्मनृपति मतिसीम ॥
कर्कस मारुत बस सघन विटप पत्र निःशेष । ऊषर निर्जल कण्टकित दुर्गम दारुण देश ॥
तहाँ असित भुजगेंद्र घन गुहामाहँ गम्भीर । लखो जायकै धर्मनृप भीमसेन बर वीर ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सर्प ग्रसित लखि भीमकों धर्मराज मतिऐन । कहन बृकोदरसों लगे सकरुण ऐसें बन ॥
तुम कैसें आपद अमित यह पायो कौन्तेय । कौन सर्प यह गिरि सदृश धारे देह अमेय ॥
भीमसेन नृपधर्मकों लखिकै करि चित शान्त । कहो सर्पत ग्रहणको क्रमते सब वृतान्त ॥
भोजनार्थ यह सर्पहै हमै करें नृप ग्रास । नहुष नाम राजर्षि हो पूर्व महाबलरास ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

छोडि देऊ अहिराज मम भ्राता यह बलधाम । देह अन्य अहार हम क्षुधा हरण अभिराम ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

हमकों मिलो अहार यह सुखमय राजकुमार । तुमहूँ हमकों होऊगे भोर भूत आहार ॥
व्रत यह मेरो जीव जो आवत है एहि देश । भक्ष्य हमारो होत सो आए तुमऊ नरेश ॥
तव भ्राता हमकों मिलो भक्ष्य गयें बहु काल । याहि नहीं हम छोडिहैं चहत न अन्य विशाल ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

देव दनुज कै सर्प तुम सत्य कहऊ अहि रूप । बूझत है पंन्नग तुम्हें सत्य युधिष्ठिर भूप ॥
कौन हेत तुम भीमकों कियो महाअहि ग्रास । का अहार लहि छोडिहो भ्राता मम बलरास ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

नहुष नाम हम नृपति हैं पूर्व तिहारे भूप । शशितें पञ्चम ययनृपति ताके पुत्र अनूप ॥
यज्ञ तपस्या करि लहो त्रिभुवनको हम राज । बढो हमै तब मद महा कारक सर्व अकाज ॥
हम अपनी शिबिका धरी बर ब्रिप्रन्हके कन्ध । कियो निरादर द्विजनको भए दर्पबश अन्ध ॥
हमै अवस्था दियो यह मुनिबर कुम्भज भूप । अघ है सुमर्ण हमको बीतत तौन अनूप ॥
सुनि अगस्त्यकी कृपासों हमको आजु उदार । प्राप्त भयो भोजन समै यह तो अनुज अहार ॥
इन्हे छोडि नहि लेहिगे अन्य अहार अनूप । प्रश्न कहत हम कहऊगे जो तुम ताको भूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तौ हम देहैं छोडि तो भ्राता यह मतिरास ।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

कहऊ प्रश्न हम देहिगे उत्तर अहिवर तास ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

ब्राह्मण कौ है जगतमे योग्य जानिबे जौन । है पदार्थ ताको कहऊ निर्णय सह मतिभौन ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सत्य दान दाया क्षमा शील सुतप अक्रूर । ए गुण जामे बसतहै सो ब्राह्मण मतिपूर ॥

सुख दुख रहित अचिन्त है ब्रह्म जानिबे योग । जाहि पाय जन लहत नहि फेरि कर्मकृत भोग ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

चारिवर्ण है जगतमे ब्राह्मणादि बर भूप । शूद्रऊमे सत्यादि जौं ए गुण होहि अनूप ॥

तौ ताको ब्राह्मण कहा कहिये हे नृपधर्म। तुम गुणमे ब्राह्मणको स्थापन कीन्हों पर्म ॥

सुख दुख रहित जो कहत तुम वेद्य ब्रह्म नृपधर्म। सुख दुख हीन सकर्म जन को पद पावत पर्म ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

ब्राह्मणके लक्षण विहित होंहि शूद्रमे तौंना सो न शूद्रहै सर्प बर है ब्राह्मण मतिमौंन ॥

ब्राह्मणके लक्षण रहित है ब्राह्मण मतिहीन। नहि सो ब्राह्मण शूद्र सम ताहि कहत मतिपीन ॥

वेद्य पदारथको कहत तुम अभाव अहि जौंन । कर्मज सुख दुखते रहित पावतहै पद कौंन ॥

यह तुम कहो सो सत्य कछु सुख दुखते नहि हीन। नही शीतमे ज्वलता उस शीतते हीन ॥

सुख दुख कर्मज होत है सुख दुख रहित अकर्म। ज्ञान गम्य सो ब्रह्म है निर्विकार पद पर्म ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

सद्गुण जामे कहत तुम ताकों ब्राह्मण भूप। जाति होहिंगो व्यर्थ सब गुणगण बिना अनूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

जाति जो कहत मनुष्यमे महासर्प मतिमौंन । सो अनादि शङ्कर भए ताहि परीक्षत कौंन ॥

सब नारिनमे सब पुरुष करत पुत्र उतपन्न । जन्म होत मैथुन भए जन्म मरण सम्पन्न ॥

लहत वेदविधि विहित नर जबलों नहि संस्कार । शूद्र सदृश तबलों रहत है मनुबचन उदार ॥

महा सर्प हमसों कहो प्रश्न परम तुम जौंन । वेदविहित तुमकों दियो हम उत्तर अहि तौंन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

वह वस्तु बूझो जो हम सो तुम कहो अनूप । हम भक्षण कैसे करै अब तव भ्राता भूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

वद और वेदाङ्गके तुम ज्ञाता मतिधाम । कौंन कर्म करिकै लहैं जन सद्गति अभिराम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

देय पात्रकों प्रिय करै बोलै सत्य सुजान। होय अहिंसा निरत सो लहै स्वर्ग सुखदान ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

दान सत्यमे सर्प जो गुरु लघु कहिए तौंन । अहिंसा प्रियवचनमे न्यूनाधिकहै जौंन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

दान अहिंसा सत्यमे प्रियमे समय स्वरूप। बडो कार्य्य जासों कटै सोई गुरु वर भूप ॥
कहूँ दानतें सत्य वर कहूँ सत्यतें दान । ऐसे ही प्रिय बचनतें अहिंसा सु सुखमान ॥
होत अहिंसासों कऊँ है प्रियबचन उदार। जैसों कारज परैं जहँ तैसो तहां बिचार ॥
होय तुहैं बांछित नृपति कहऊ कहैं हम तौंन।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

कौंन कर्म फलसों करत जीव स्वर्गकों गौंन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

उत्तम मध्यम अधम गति कर्मजहैं अतिसीव । स्वर्ग मनुज पशुयोनिको तातें पावत जीव ॥
दानादिक व्रत कर्म करि हिंसात्याग सुजान । मनुज लोककों छोडि नर लहत स्वर्ग सुखदान ॥
उत्तम मध्यम कर्मते होत मनुज नृपधर्म। तिर्य्यगयोनिहि जात नर त्याग करै सतकर्म ॥
तिर्य्ययोनिमे गवादिक जीव अहिंसक जौंन। प्राप्त होत दैवत्वकों सुनऊ धर्मनृप तौंन ॥
जन्म लेय धरि देहकों जौंन आत्मा मुद्ध। कर्म फलार्थी करतहै भोग बिषयकों उद्ध ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

शब्द स्पर्श सु रूप रस गन्ध जो कहत सुजान। इनको को आधारहै कहिए सर्ब सुजान॥
एक सङ्ग इन बिषयको गहति न बुद्धि बिचार। याको निर्णय करि कहो एहो सर्प उदार॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

जब आत्मा एहि देहको करत आश्रय न भूप। इन्द्रिए पर आरूढह्वै करत भोग अनुरूप॥
ज्ञान बुद्धि मन भूप धरि आत्मा सङ्ग अखर्ब। होत बिषयके भोगमे करण भूत ए सर्ब ॥
आत्मा मन सह क्रमहितें बिषयन्हमे चलिजात । बिषयधाम इन्द्रीएते आत्मा कढिकै तात ॥
बिषय ग्रहणमे जीवको मन यह करत बिधान। एक सङ्ग सब बिषयको ग्रहण न करत सुजान ॥
नित्य बसतहै आतमा अू अन्तरमे भूप। नाना बिधिके बिषयको लखत बुद्धिमय रूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

बुद्धि और मनको कहऊ लक्षण सर्प सुजान । है ज्ञानिनको जानिबो यहवर कार्य्य महान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

बुद्धि आत्माके रहति सङ्ग अभेद स्वरूप। जलके हाले हिलत जौं शशि प्रतिबिम्ब अनूप ॥
बिषयेन्द्री संयोगतें बुद्धि होतिहै भूप। मूल न कारण बुद्धिके सुमन बासना रूप ॥
अन्तर यह मनु बुद्धिमे हम जानत नृपधर्म। तुमहूँ हौ मतिमान अति मानत कैसो पर्म ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तुम अैसो मतिभरे सुजान। जौन जानिबे योग्य महान ॥ सो तुम जानत सहित बिधान। हम न बूझिबे योग समान॥ तुममे हे सरबज्ञ नरेश। कियो मोह केहिभाँति प्रबेश ॥ सर्पउवाच ॥ सूर बिदुष जे सुमति समृद्धि। तिनको मोह करतिहै ऋद्धि ॥ भयो हमै सुख सकल अखर्ब। तब भरिगो अति मतिमे गर्ब ॥ गिरे स्वर्गसो तब भो चेत। सो हम तुमसो कहत सहेत ॥ कियो परम तुम मम उपकार। यह मेरो अति शापोद्धार॥ तो सम्भाषणते बर भूप। गयो नष्ट व्है ताको रूप ॥ स्वर्ग माह हम दिव्य बिमान। चढे फिरत हे अति सुखदान ॥ सुर ब्रह्मर्षि रक्ष गन्धर्ब। हमै देतहै दण्ड अखर्ब ॥ हम चख दृष्टि जाहि पर देहि। ताको तेज लखत हरि लेहि॥ ब्रह्मर्षि सहस्रन्ह शिबिका माम। मेरीबहै भूप अभिराम ॥ अनय हमारो अति दुखदाय। श्री समाजसौं दियो गिराय ॥ मुनि अगस्त्यकों हम भरि दर्प ॥ मारि चरणसों कहो सु सर्प॥ तब अगस्त्य करि बोले क्रोध। ध्वंस महा हो सर्प अबोध॥ तब शिबिकाते गिरे अनूप। करे अधोमुख पन्नग रूप॥ मागो शापअन्त मुनिपाश। सकरुण हम अतिशै धरि त्राश ॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥ मोहि प्रमादी जानि अयान। कृपाकरहु मुनि कृपानिधान ॥ तब मुनि कहो कृपाकरि पर्म। शापमोक्ष करिहै नृपधर्म॥ गर्ब पापमय घोर बिनाश। भएँ होयगो पुण्य प्रकाश॥ ताको तपबल देखि महान। भयो मोहि बिस्मै अतिमान॥ सत्य दान दम तप फलदान। साधक नहि कुलजाति सुजान॥ रहो कुशल तव भ्राता भूप। भीमसेन अतिबल अतिरूप॥ रहौ कुशल तब भूपति धर्म। जात स्वर्गकों हम फिरि पर्म॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यह कहि नहुष दिव्य धरि रूप। गए स्वर्गकों फिरि कुरुभूप ॥ धौम्य भीम सह भूपतिधर्म। आए फिरि आस्रमकों पर्म॥ सकल द्विजनसों कथा अनूप। तौंन कही क्रमसों सब भूप॥ भ्राता त्रय कृष्णा द्विजसर्ब। लज्जित भे सुनि कथा अखर्ब॥ द्विजन्ह पाण्डवन्हके हित हेत। कियो भीम भर्त्सन सहनेत॥ सह भ्रातन्ह सह द्विज गण पर्म। समुद तहां बिहरे नृपधर्म॥ * * * * * * * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि नहुष शापमोचनअजगरोपाख्यानोनाम सप्तत्रिंशोदध्यायः ॥ * * * * * * * * *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

तहाँ बसत निदाघ गो भो प्राप्त वर्षाकाल । घनेघन चहुओर गर्जन लगे अति बिशाल ॥ ग्रीष्मान्तमे विरचिताकरए धाम शतसह भूप । सूर्यमण्डल सदृश जिनमे बिमल बिद्युत रूप ॥ लगे बरषन मेघ चहुदिशि गर्जिकै नभ छाय । रटैं भेकी मोर सबदिशि रहे शोर सुनाय ॥ हरित तृणसों छपी धरणी भरी वारि महान।जानि भूसम बिषम परति न एकरूप समान॥चढी सरिता तरलतोया खसनसी सबओर । कूल कानन जाजि परत न पार बार न छोर ॥ मत्त नाना भाँति के बर बिहग बोलत राव । झमकि जुगनू रहे कूजत भरे कोकिल चाव॥ क्रौंच हंस समेत खचित भयो सरद स्वरूप । बिमल भो आकाश दरसो सुधासिन्धु अनूप ॥ कुमुद कानन भरे सरवर सुधासे अभिराम । फुल्लवारिज भए नानारङ्गके छविधाम ॥ भई रजनी सुधासी धरि सुधासिन्धु प्रकाश । सतोसुनके सिन्धुसे चहुओर फूले काश ॥ ओर दुऊ वा नीरको वनमध्य सम सीमन्त । सरस्वति सरितहि बिलोकत मुदित भो कुरुकन्त ॥ भई तिनकों राति तेहां शारदी सुखधाम । कार्तिकी अति पुण्य पूरण पूर्णिमा अभिराम ॥ किए योजित तुरग रथसों वाहवर बलवान । पाण्डवन सह बिप्रवृन्द सु तेज तपस निधान ॥ भोर होत सधौम्य श्रातन्ह द्रौपदी सुखदान । गए काम्यक बिपिनिकों नृपधर्म पर्म सुजान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ जाय काम्यक बिपिनिकों सह सङ्ग भूपति धर्म ।मुनिनसेां आतिथ्य लहि तहँ बसे पूरत शर्म ॥ तहा आए बिप्र बहु तपपुञ्ज तेजस रूप । कहन लागे धर्मनृपसों एक द्विजबर भूप ॥ जिष्णु को प्रिय सखा आवत इहा श्रीयदु बीर । काम्य बनमे बसे तुमकों जानिकै कुरुधीर ॥ इहा आवत मारकण्डे महामुनि तपधाम । कहत भो श्रीकृष्णको रथ प्रगट भो अभिराम ॥ सत्यभामा सहित जैसें सचीसह मघवान । उतरि परतें कृष्णबन्दे धर्मनृपहि सुजान ॥ भीमकों फिरि बन्दि कृष्णहि कियो शान्त सुजान । चरण माद्रीसुतन्ह बन्दे कृष्णके सुखदान ॥ पूजिकै मुनि धौम्यकों लखि जिष्णुकों सुखपाय । कृपाकर श्रीकृष्ण हियसों लियो फिरिफिरि लाय॥ सत्यभामा द्रौपदी सो भरी मोद अनूप। मिली हियसों लाय फिरिफिरि प्रेमपूरी भूप॥ सहित प्रोहित सहित श्रानन्ह धर्मनृप मतिऐंन । पूजिकै श्रीकृष्ण कौं इमि मधुर बोले बैंन॥कहो अर्जुन पूर्व सिगरो भयो जो बृतान्त। स्वर्गमे बनवासमे सब कृष्णसों अतिकान्त। कुशल बूझो फिरि सुभद्रा सहित सुत सुखरूप। कृष्ण पूजो पाण्डवनको सहित धौम्य अनूप ॥ बैठि यदुपति धर्मनृपके भरे आनद पास। लगे तिनके गुण प्रसंशन महामतिके रास ॥ राज्यके है लाभतें बर धर्म लाभ सुजान ।धर्मको तप मूल कारण सुनऊ कुरुकुल भान॥सत्य क्षमा सहित हौ तुम धर्मधारे भूप। लोक तुम सब जीति लीन्हे पुण्य पूर्ण अनूप॥ग्राम्य धर्म न रुचत तुमकों करत कछु नहि कांम । कर्म तजत न अर्थके तुम लोभतें अभिराम ॥ दान श्रद्धा सत्य

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० धृति मति क्षमा तप बर पर्म। भोग धन लहि रहत इनमे प्रीति तौ नृपधर्म॥ कुरुजांगलनके मध्य कृष्णाको करो अपमान। सहै यह अन्याय तुम बिन और को बलवान॥ प्रजाप्रिय प्रतिपालकर तुम हौ असंशय भूप। कियो हम सब चहत निग्रह तास नाशक रूप॥ धौम्य कृष्णा धर्मनृप सह बन्धु सों भगवांन। कहो आए भाग्यसों लहि जिष्णु अस्त्र महांन॥ फेरि कृष्णासों कहों श्रीकृष्ण ऐसें बैंन। भाग्य पूरण भई हौं लहि जिष्णुकों छबिऐंन॥ प्रीतिसों धनुबेद तो सुत करतहैं अभ्यास। रहत हैं शत बृत्तिमे शत बृत्तिजनगण पास॥ कहत भातामहँ सुतिनकों देन राज्य सनीति। तऊ मातुलि बंशमे ते रमत है न सप्रीति॥ गए अब ते द्वारिका धनुबेद बिधिवत चाहि। बृष्णि पुरमे रहत हैं नहि और भावत ताहि॥ यथा तुम ही तिन्है पालत सहित कुन्ती पर्म। करत पालन त्यौं सुभद्रा तिन्हैं ससुत सधर्म॥ अनिरुद्ध भांनु सुनीथकों अभिमन्यु कों अभिराम। प्रद्युम्न त्यौं तो सुत न्हकों धनुबेद बिधि अतिमान। गदा धनु अशि चर्म बिद्या देत बिबिधि बिधान॥ अस्त्र दिव्य अनेक बिधिके महा आतुर जांन। शस्त्र बिद्या देय लखि प्रद्युम्न सत्व महान। अभिमन्यु सों तब सुतन सों सुख लहत हैं अतिमान॥ कहे फिरि नृपधर्म सों श्रीकृष्ण ऐसे बैन॥ चहति शासन सैन तो यदुबंशकी बलऐन॥ रहतिहै चतुरङ्गिणी सब द्योस सज्ज महांन। दियो चहति सुयोधनै यम पुरी कों प्रस्थान॥ सभामे तुम कियो जो पण रहऊ तामे धीर। मारि अरि भट देखि हौ पुर नाग नामक बीर॥ जानि मत श्रीकृष्णको सुनि वचन अति सुखदान। कहे साञ्जलि कृष्णसों नृपधर्म बन प्रमान॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच॥ *॥ नियत गति तुम पाण्डवनकों कृष्णहौ अभिराम। शरण पाण्डव रावरेकी रहत आनदधाम॥ समय लहि करतव्य ते तुम अधिक करिहौ बीर। बर्ष द्वादश बीति गो बन बसत हमहि गभींर॥ अज्ञात बास समाप्त करि हम होहिगे प्रभु पार। बुद्धि तव यह रहो हमपै कृष्ण नित्य उदार॥ दान धर्म सदार भ्रातन्ह सहित हे यदुबीर। शरण हैं हम रावरी लहि कृपा पूर गभींर॥ बैशम्पायन उवाच॥ धर्मनृप श्रीकृष्णसों जब कहत हे इमि बैंन। मार्कण्डेयसु महामुनि लखि परे तब तपऐंन॥ अमर अमर अनन्त जाको बैश बृद्ध अमान। चले आवत भान से तप तेजपुञ्ज निधान॥ पञ्च बिंशति बर्षको लखि परत जाको रूप। बृष्णि पाण्डव द्विजन सह चलि कियो पूजन भूप॥ होय पूजित तहां बैठे महामुनि सह चैंन। पाण्डवनको पाय मत श्रीकृष्ण बोले बैंन॥ श्रीकृष्णउवाच॥ सुनो चहत सबिप्र पाण्डव द्रौपदी अभिराम। सत्यभामा सहित हम तब बचन सुमुनि ललाम॥ कथा पुण्या पूर्ब बृत्त बिधान भूषित जौंन। स्त्री पुरुष नृप ऋषिणकी मुनि महा कहिए तौंन॥ बैशम्पायन उवाच॥ तहा नारद महामुनि तेहि समै आए भूप। पाण्डवनकों देखि बे तप तेजपुञ्ज स्वरूप॥ कियो तिन पुरुषर्षभन मुनिराज पूजन पर्म। कथा सुनिबेकों निमंत्रित तिन्हहि जानि सधर्म॥ कहो नारद मार्कण्डेय सों सु सस्मित बैंन। कहऊ बांच्छित पाण्डवनको महा मुनि तपऐंन॥ मार्कण्डेय केएबचन सुनि यह कहो पाण्डव पास। चित्त देकै सुनऊ तुम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अब विपुल यह इतिहास॥सुनत यह मुनि बचन बैठि समासु चित्त स्वरूप। ह्वर सो मध्याह्नको मुनि रूप देखत भूप॥ वैशम्पायनउवाच॥कथा कहिबे चहत मुनिको देखिकै नृपधर्म।कथा कहि बे हेत ऐसे बचन बोले पर्म॥ देव दानव मनुज ऋषिगण नाग किन्नर जौन। चरित तिनको आपु जानत पुरातन तपभौन॥ उपास्य सम्मत बऊत दिनते सो हित बांच्छित जौन॥ मोहि देखन हेत आये देवकीसुत तौन॥ देखि सुखते नष्ट आपु हिँ होति यों मम बुद्धि। दुष्ट मति धृतराष्ट्र सुत की ऋद्धि लेखि अरद्धि॥ पुरुष कारक कर्मको है अशुभ कै शुभ रूप। कर्म फलकों करत है सो भोग मुनि अनुरूप॥ सुख दुःखमे कृत कर्मको फल करत प्राणी भोग। इहाकै पर देहको लहि महामुनि संयोग॥ कोडि कैयह देह देही कर्मको फल जौन। इहां कै परलोकमे फल लहत ताको तौन॥ मार्कण्डेयउवाच॥प्रश्न यह तुम कियो हमसो जौन हे नृपधर्म। जगतको स्थिति हेत जानो तौन हम अति पर्म॥ कहत हम यहि विषयमे सो सुनो चित दै भूप।जीव ज्योंदुऊ लोक मे सुख दुःख लहत अनूप॥ देह देहिन की रची अति शुद्ध निर्मल पर्म।धर्ममय जो भो प्रजापति प्रथम हे नृपधर्म॥ सत्यवादी सत्यमय सङ्कल्प सुव्रत भूप। ब्रह्मवादी प्रजा सिरी भई ब्रह्म स्वरूप।जात आवत स्वर्गको हे देवतनके साथ। सबश जिनको मरण हो अरु गमन हे कुरुनाथ॥ अभै बाधा रहित हो सिद्धार्थ जिनको सर्व। लखत हे सुर ऋषिनको जे प्रगट रूप अखर्व॥ रहित मत्सर जियत है जे बर्ष अयुतन्ह भूप। तौन बीते काल भूचर भए भानुस्वरूप॥ काममाया क्रोध बश परि जन्म जीवत सर्व। कर्म फल बश लहत है फिरि तिर्यग्योनि अखर्व॥ कर्म्म नाना भाँतिके बश जठर आवक साँइँ। पचत जन्मत मरत हैं फिरि परत है नरनांइँ॥ सङ्कल्प मिथ्या ज्ञान मिथ्या दृष्ट मिथ्या जास। परत काहूको न जोके चित्तमे विश्वास॥ अशुभ कर्मी दुष्ट कुलके दुष्ट आत्मा जौन। दुः कर्मके फल पाकते अल्पायु पावत तौन॥ सुमति दुर्मतिको रहै कहँ कोशको भाँडार। सुकृत दुःकृतको करै बसि कहां भोग उदार॥ प्रश्न यह तब धर्मनृप सुनि तास निर्णय भूप। आदि सूक्ष्म शरीर जो यहि देहमाह अनूप॥ लिङ्ग सो तन तजत यह धरि अन्य देह सुजांन। बङ्ग छायासदृश ताके जात कर्म महान॥ फलत सो सुख दुःखकौं कृत कर्मके सम भूप। शुभा शुभ फल देत अन्तक कर्मके अनुरूप॥अवश ह्वैके सहत सो सुख दुःखको सुनु तौन।कही गति यह कुमति जनकी भरी कुकरम जौन॥ज्ञानवान महान जनको सुनऊ अब गति पर्म।करत तप श्रुति पढत दृढ मति सत्य रत कृत धर्म॥शान्त दान्त शतोगुणी गुरु भक्त शील उदार। जितेन्द्री दुख भीति रहित सुयोनिमे अवतार॥ जन्म लीन्हें चहत जन्मो गर्भमे हैं जौन। ज्ञान चक्षुष आत्म और परात्म जानत तौन॥ ऋषि महात्मातिन्हें भूत भविष्यको है ज्ञान। कर्म भूलहि जात ते फिरि स्वर्ग कों सुखदान॥ इहां सुखकों लहत हैं कोऊ स्वर्गमे नहिँ जाय। स्वर्गमे सुख लहत है कोउ नहीं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० क्षिति पर आय ॥ एहि लोकमे परलोकमे सुख लहतहै कोऊ भूप। एहि लोकमे परलोकमे कोउ लहत नहिँ सुखरूप ॥ पाय अति धन देह सबल कुटुम्ब सकल सुजान । तिन्हैं सुख एहि लोक मे बिन दान धर्म महांन ॥ करत तप व्है योग युक्त सुपढत बेद सचेत।छोडि हिँसा जीति इन्द्रिन्ह स्वर्गमे सुख लेत ॥ धर्म पथमे चलत जे धन लहत सुकृत समेत । सहित दारा यज्ञ करि दुऊ लोकमे सुखलेत ॥ तप दान बिद्या रहित जे जड सुयश सन्तति हीन । रहतहैं दुऊ लोकमे ते सदा सुखसों क्षीन ॥ अति पराक्रम भरे तुमसब दिव्य ओयश धाम । देह धारें धरापै सुरकार्जकों अभिराम ॥ कर्म करिकै महा तप दम युक्त बिहरत बीर । पितृ ऋषि करि देव तर्पण किए तृप्त गभीर ॥ सुकृत बश फिरि स्वर्गकों तुम लहऊ गे सुखरूप । सुखद लखि यह दुःख अपनो तजऊ शङ्का भूप॥ बैशम्पायनउवाच॥मार्कण्डे महामुनिसों कहो फिरि नृपधर्म । चहतहों द्विजबरन्हको यश सुनो कऊ मुनि पर्म ॥ मारकण्डे महामुनि सुनि भूप बचन ललाम । कहनतब इतिहास लागे पूर्ब अति अभिराम ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ रहोहै हयबंश सम्भव भूप रूप उदार । गयो मृगया हेत बनमे तौन राजकुमार ॥ कृष्ण मृगको अजिन ओढें फिरत घनबन माह । जानिकै मृग हनो मुनिकों बाणसों नरनाह ॥ देखिकै बध बिप्रको अतिभयो दुःखित भूप । हैह याधिप पास चलि तेहि कहो कर्म कुरूप।।सुनत ते तहँ होत दुःखित लगे ढूढन आय। अरिष्टनेमि सु महामुनिको लखो आस्रम जाय ॥ करि सुबन्दन महामुनिके जाय बैठे पास । कियो चाहो महामुनि तब सबिधि पूजन तास॥ कहो तिन हम नहीं पूजन योग्यहै मुनिपर्म । भयो हमसों बिप्र हिंशन महा दुस्कर कर्म ॥ कहो तिनसों महामुनि तुम हनो कैसे बिप्र । कहांहै सो कहऊ देखऊ तपसबल मम क्षिप्र ॥ सकल कहि बृत्तान्त ते तहं गए मुनिसह भूप। लखो तह न गतासु मुनिको धरो हो जहँ रूप ॥ ढूढि तहँते भए लज्जित कपट कुञ्चित चेत।कहो तिनसों तौन मुनि तब बिहसि बचन सनेत ॥ जौंन मारो गयो तुमसों बिप्र सुनिये भूप । पुत्र मेरो तौनहै नृप तेजपुञ्ज स्वरूप ॥ देखि बिस्मित हैहयाधिप कहो मुनिसों बैन । भयो जौंन गतासु सो मुनि फेरि जीवत है न ॥ कौंन सो तप बीर्य जातें मरो जीवत बिप्र।कृपाकरिकै कहऊ सो मुनि सुनो चाहत क्षिप्र॥ मुनिरुवाच ॥ कहो मुनि तब मृत्यु हमकों जीति सकति न भूप। तौंन कारण कहतहैं हम युक्ति सहित अनूप ॥ सत्यमे रत रहतहैं जे अनृत कहत न बैंन । धर्ममे रत मनुज ताकों मृत्युको भय है न॥ करत नहि दुश्चरित देत जो अतिथिकों जल अन्न । भृत्य सेवन करत ताकों करत जो सम्पन्न ॥ शान्त दान्त सुशील करत जो पुण्यथलमे बास । सुनऊ भूप न जाति ताके मृत्यु अनमित पास ॥ लेश मात्र सु कहो तुमसों मृत्यु बारण रूप । जाऊ तुमकों बिप्रबधको पाप लगिहि न भूप ॥ भाँति सुनि एहिँ पूजि मुनिकों पाय परम निदेश । गयो सह समुदाय हैहय भूप अपने देश ॥ * मार्कण्डेयउवाच ॥ महाभाग्य सु ब्राह्मणन्हको सुनऊ फिरि यह भूप । लई दीक्षा बैण्यनृप हयमेधकी सु अनूप॥अत्रि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मुनि तहँ चलन चाहो बित्तहेतुमहान। फेरि चलिबो चहो नहि करि धर्मको अनुमान ॥ धर्म पत्नीसौं कहो सब सुतन्हसों इमि बैन। सहतहैं फल बिपिनिमे बज्र बिबिधि भाँति सचैन॥ तुमहिँ सबकौं रुचै तौ वनबास कीजै पर्म। धर्मपत्नी कहो मुनिसौं वचन मधुर सधर्म ॥ वैण्य नृपपैं जाय मागऊ बऊल धन मतिमान। देयगो राजर्षि तुमकौं महाधन यजमान ॥ लेय सो धन देय सेवक सुतन्हको करि भाग। फेरि वनमे बासको मुनि कीजिए अनुराग ॥ * ॥ अत्रिरुवाच॥ * कहो गौतम महामुनि यह वचन हमसो पर्म। अर्थ धर्म संयुक्तहै नृप वैण दायक शर्म ॥ जौंन मोसों द्वेष राखत बसत ते तह विप्र। यथा गौतम कहो सो हों सकत नहि करि छिप्र ॥ कहैगे हम तहाँ जो कल्याण कारक बैंन। ताहि कहिहैं अन्यथा ते दुष्ट दुर्मतिऐंन ॥ मानि हम तव वचन सुन्दरि जाहिगें तहँ हाल। देयगो नृपवैण्य गोगण सहित हेम विशाल ॥ अत्रिमुनि एहि भाँति कहिकै गए जहँ नृप यज्ञ। सहित आशिष भूप सुस्तव पढो तहँ सरबज्ञ ॥ ॥ ॥ अत्रिरुवाच ॥ ॥ धन्यहौ तुम ईश हौ तुम भूप प्रथम सुजान। धर्मविद् हे और जगमे कौन तुमहिँ समान॥ गोत्र गौतम एक ऋषि करि क्रोध बोलो बैंन ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ अत्रि ऐसें कहऊ मति फिरि तुम्हें प्रज्ञा है न ॥ इहां हमकौं प्रथम रक्षक प्रजापति मघवान। बचन ताके सुनत बोले अत्रि नीतिनिधान ॥ है विधाता भूप यह इत ज्यों प्रजापति शक्र। भई गौतम बुद्धि तो अति मोह मोहित वक्र ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ भयो मोह न अत्रि हमको भए तुम बश मोह। करत सुस्तव भूपको धन पाइबेको छोह॥ नहीं जानत हौ प्रयोजन धर्म को न बिचार। बाल मति अति मूढ कीन्हें व्यर्थ उज्जल बार॥ बाद लखि दुऊँ मुनिनको एहि भाँतिसों अति मान। करतहैं ए कहा बूझन लगे बिप्र सुजान ॥ बैण्यनृपकी सभामे दिय इन्हे आवन कौंन। सोर करिकै करत हैं ए कलह अनुचित भौंन ॥ तहां हो मुनि एक काश्यप धर्मविद् तप धाम। जाय बूझो दुऊन्ह मुनिसों बादकारण नाम ॥ कहन गौतम सभामे इमि लगो बचन प्रमान। सुनऊ हमसों अत्रिसों जो भयो बाद विधान ॥ बैण्यकों इन कहि विधाता दियो आशिष आय। सुनत हमकों भयो संशय बचन अनुचित काय ॥ सुनत तहँ सब गए मुनि जहँ रहे सनत कुमार। कहो तिनको कलह कारण प्रश्न जौंन उदार ॥ मुनिनको सुनि बचन बोले ब्रह्मपुत्र सुजान। बचन संशय हरण सम्मत मया तत्व प्रमान ॥ * ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ * ॥ मिलो क्षत्री बिप्रसों भो विप्र क्षत्री अङ्ग। नाम अरिको करत ज्यो बन अनल मारुतसङ्ग ॥ धर्मधुर नृप करत है जो प्रजनको प्रतिपाल। शक्र सोई शुक्र सोई बृहस्पति गुणमाल ॥ प्रजापति साम्राट तौन विराट क्षत्री भूप। एहि भाँति सुस्तुति भूपकी सो योग्य अर्चन रूप॥ सत्य धर्म प्रवृत्तिकर ऋषि पाय अवभय भूरि। दियो अपनो तपस बल सब क्षत्रगणमे पूरि ॥ देव तनमे गगण गत तम हरत जैसे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भाँन। करत अधरम नाश क्षत्री धारि धर्म बिधान ॥ शास्त्र बिधिसों है प्रधान महान क्षत्री भूप।
कहत धाता भूपको सो पक्ष सिद्ध अनूप ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ बैण्यभूपप्रसन्न भो सुनि
पक्ष अपनो सिद्ध। अत्रिऋषिसों कहै अैसें बचन मोद समृद्ध ॥ पूर्ब पालक प्रजा धाता कहो
हमकों बिप्र। देव ऋषिको भयो सम्मत तौन पक्ष सुक्षिप्र ॥ दान ताते देहिगें हम तुम्हैं बिबिधि
बिधान। बैश श्यामा सह सदाशी सुन्दरी सुखदान॥ देहिँगे दश कोटि सुबरण रुक्म भार अनेक।
महा ऋषि हम बित्त इतनो तुम्हे सहित बिबेक ॥ यथा बिधि ऋषि अत्रि इतनो लेइकै बसु दान।
गए अपने धामकों मुनि भरे मोद महांन ॥ दियो सर्ब बिभाग करिकै सुतनकों धन तौन।
करणकों तप आपु कीन्हों महा बनकों गौंन ॥ * * * * * * * * * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि
ब्राह्मणमहात्म्यबर्णनोनाम अष्टत्रिंशदध्यायः ॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कहो सरस्वति तार्क्ष्य मुनिसों बूझे हैं जे बैंन। सो हम तुमसों कहतहै सुनऊ भूप मतिअैंन ॥

॥ * ॥ तार्क्ष्य उवाच ॥ * ॥

कहा श्रेयहै पुरुषकों कौंन किएते कर्म। गिरत नही नर धर्मतें कहऊ सारदा पर्म ॥
होम करै किमि अग्निमे पूजनकों केहि काल। कौन कर्मते होतहै नष्ट न धर्म बिशाल ॥
सरस्वती यह सब कहऊँ सहित कृपा अभिराम। जाते लोकनमे फिरै लहिकै शुद्धि ललाम ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

सुनि मुनिके अैसे बचन सरस्वती सुखदान। सहित कृपा अैसे कहे बचन सुधर्म निधान ॥

॥ * ॥ सरस्वत्युवाच ॥ * ॥

जानतहै जो ब्रह्मकों पढत निरन्तर बेद। ब्रह्मलोककों जात करि देवलोकको भेद ॥
निर्मल पुष्करणी तहां सहित पद्म अभिराम। मणिन मई सोपानसों बिरचित सुषमाधाम ॥
ते बसि तिनके तीरमे पुण्य भरे जे जात। सेवैं तिनको अप्सरा जास कनकसे गात ॥
परम लोककों जात जे करत सबिधि गोदान। बृषभ दान करि कै लहै सूरलोक सुखदान ॥
बसन देत सो जातहै चन्द्रलोककों भूप। कनक देय नर लेय सो अमर स्वरूप अनूप ॥
धेनु सबत्सा देय जो सबिधि साधुता ओक। जेतिक रोमताके लहै तेतिक बर्ष सुरलोक ॥
बृषभ बली सूधो युवा हल वाहक गुणधाम। देत धेनु दश दानको लोक परम अभिराम ॥
सबिधि उपस्कर देतहै कपिला गो नर जौंन। स्वर्गलोकमे मिलतिहै कामधेनु व्है तौंन।
जितने ताके रोम फल होत तितिक गोदान। कुलके पुत्र पउत्र सह तरै सत्य सबिधान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सबिधि देत तिल धेनुकों सहित दक्षिणा जौंन । लहत वसुन्धके लोककों महा सोदमय तान ॥ ब०प०
नरकार्णवमे परत जो कुकरमको फल धारि । नौकालों गोदान फल ताकों लेत उबारि ॥
कन्या देत विधानसों देत भूमिकों जौंन । इन्द्रलोककों जातहे पाय दान फल तौंन ॥
सातवर्षलों अग्निमे निघत करै जो होम । सात पूर्व पर वंशके तारैं जनगण तोम ॥

॥ * ॥ तार्क्ष्य उवाच ॥ * ॥

कहऊ सारदा अग्निहोत्रको जो पुराण व्रत पर्म । तुमतें सुनि हम जानिहैं अग्निहोत्र व्रत धर्म ॥

॥ * ॥ सरस्त्युवाच ॥ * ॥

जे अपवित्र अबेदविद अशुध देत हवि जौंन । देव अश्रद्धावानको ग्रहण करत नहि तान ॥
अफल अशौचीकों करैं हव्यदानमे युक्त । अपूर्व अशौची विप्र नहि अग्निहोत्रमे उक्त ॥
गर्व रहित श्रद्धा सहित सत्यव्रत ऊतशेष । भोजन करि गोलोककों जात सो पुण्य विशेष ॥

॥ * ॥ तार्क्ष्य उवाच ॥ * ॥

प्रज्ञा देवी बुद्धिमे आत्मस्वरूप प्रविष्ट । बूझत तुम्हैं विचारि हो तुमको रूप बशिष्ट ॥

॥ * ॥ सरस्त्युवाच ॥ * ॥

अग्निहोत्रते आगमन भयो हमारो विप्र । संशय हरिबें द्विजनको जौंन मानसिक क्षिप्र ॥
तो सङ्गमतें यह कहो हम यथार्थ सब बैन । हम सद्भाव निवासिनी हैं जानऊ मतिअैन ॥

॥ * ॥ तार्क्ष्य उवाच ॥ * ॥

और न तुमसो है कोऊ श्री सम धारें रूप । दिव्यकान्तिमय लसतिहो देवी परम अनूप ॥
पंच द्रव्य यज्ञाङ्ग जो सो हम सब मतिधाम । तिनहीतें हम वृद्धि लहि तृप्ति होहि अभिराम ॥
आयस पार्थिव दारु भव यज्ञ द्रव्यहै जौंन । दिव्य बुद्धि धरि मानिए आत्म रूप सब तौंन ॥
ओत्तरूपजो परमहै यामे प्रविशत धीर । सो हम नहिं जानत कहऊ ताको रूप गभीर ॥
जौंन सगुणते पर परम निर्गुण व्यापक जौंन । ज्ञान गम्यहै ओत्तको भाजन जगमय तौंन ॥

स्वस्तिश्रीकाश्मीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनायकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वन पर्वणि सरस्वतीतार्क्ष्य सम्वादवर्णनोनामैकोणचत्वारिंशोध्यायः ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ मार्कण्डे मुनिसो नृपधर्म । मनु वैवस्वतको अति पर्म ॥ कहिबें चरित कहो अभिराम । कहन लगे मुनिके तपधाम ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ वैवस्वत सुत तेजसमान । वैवस्वत मनु भयो महान ॥ ओज तेज तप लक्ष्मी पायाभयो पिता सम सो सुख दाय ॥ विशाला बदरीके चलि पास । ऊर्द्ध बाऊ करिकै मतिरास ॥ एक चरण ह्वै ठाढो भूप।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० लगो करण तप उग्र स्वरूप ॥ ऊद्धचरण करिकै फिार तौंन । चख अनमिष कीन्हें मतिभौंन ॥ अयुतवर्ष तप ऐसे पर्म । मनु वैवस्वत कियो सधर्म ॥ नदी चीरिणीमे सुस्नान । वैवस्वत मनु करि सविधान ॥ नदी तीर एक आयो मच्छ । मनुसो बोलो बचन समत्स्य ॥ *॥ मत्स्यउवाच ॥ *॥ क्षुद्र मत्स्य हमहैं भगवांन । करत हमै भक्षण बलवान ॥ तिनते रक्षण करिए मोहि । कृपानिधान उचितहै तोहि ॥ हम करिहै तव प्रत्युपकार । मत्स्य बचन मनु सुनो उदार ॥ सहित क्षमा करसो गहि भूप । वैवस्वत लिय मत्स्य अनूप ॥ रत्नपात्र जल पूरण जौन । धरो मत्स्य तामे मनु तौंन ॥ तामे वढो मत्स्य सुखदान । कियो यत्न मनु पुत्र समान ॥ वढो मीन को मीन सुगात । रत्नपात्रमे नहीं समात ॥ बोलो मनुसों मत्स्य विशाल । रत्न पात्रमे रहि बज्र काल ॥ मनुसो मत्स्य कहो मतिरास । हमै न इहा बास अवकास ॥ मनु यह सुनत मत्स्यको बैन । ताहि पात्रतें लै मतिअैन ॥ छोडि दियो बापी मे जाय । अति अभीर सविस्तार पाय ॥ मत्स्य तहां रहिकै बज्रकाल । बृद्धि पाय अति भयो विशाल ॥ द्वै योजन बापी बिस्तार । चारि योजन एक उदार ॥ भयो मत्स्य तहँ दीरघ गात । नहि बापीके मध्य समात ॥ कहो मत्स्य फिरि मनुके पास । नहिं प्रभु बापीमे अवकास ॥ सिन्धु प्रिया गङ्गामे बास । अब दीजै मोको मतिरास ॥ हम अति बृद्धि लहतहैं जौंन । हे मनु तव उपकारक तौंन ॥ सुनत मीनको मनु यह बैन । लियो उठाय ताहि तपअैन ॥ दियो छोडि गङ्गामे जाय । तेजस पुञ्ज मत्स्य अतिकाय ॥ पाय बृद्धिसो भयो विशाल । सुरसरि तामे लहि कछु काल ॥ हलि चलि सकत न सुरसरि माहँ । एतिक बृद्धि सो भो नरनाह ॥ मनुसो कहो मत्स्य फिरि बैन । सिन्धुवास दीजै तपअैन ॥ गङ्गाजलते लियो उठाय । मनु तेहि दियो सिंधुमे नाय ॥ मनुकों बहत मत्स्य सो भूप । भयो सुगन्ध भरो सुख रूप ॥ सिन्धु माह जब डास्यो मत्स्य । तेहिं मनुसों यह कहो रहस्य ॥ रक्षित मोहि कियो भगवान । तुम हमकों मनु सकल विधान ॥ करिबें तुम्हे कार्य्यहै जौंन ॥ आए काल कहत हम तौंन । भूमिज सकल पदारथ जौंन ॥ अचिर प्रलयकों पावत तौंन ॥ आवतहै प्रक्षालन काल । लोकनको मनु सुनऊ विशाल ॥ देत अब हम तुमहिं जनाय । जो हितहै तुमकों सुखदाय ॥ स्थावर जङ्गम है जगजौंन । प्रलय प्राप्त ह्वेहै तौंन ॥ राखऊ तुम दृढ नाव बनाय । सहित बरत्रा दृढ सुखदाय ॥ तापै सप्तऋषिन सह पर्म । चढेऊ जाय तुम मनु बर धर्म ॥ बीजन्हको धारण करि सर्व । प्रथम नावपर चढेऊ अखर्ब ॥ नीकी भाँति गुप्त करि नाव । मम वर्ण कीजो सह भाव ॥ धारैं शृङ्ग आइहौं तब । नाव चढे मनु रहिहौ बच ॥ महा शृङ्ग शिर ऊपर जोहि । तव तुम जानि मानियो मोहि ॥ ऐसें करि मम बचन प्रमान । प्रथम कीजियो यह सुखदान ॥ महा अशक्य प्रलयको बारी । तरिबो मोहि बिना निरधारी ॥ *॥ मनुरुवाच ॥ *॥ मत्स्य बचन तुम भाषत जौंन । समय परें हम करिहैं तौंन ॥ बिदा परस्पर ह्वै ऋषि भूप । गए यथा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

इच्छा अनुरूप ॥ कहो मत्स जो प्रथम विधान। मन सब सो कीन्हो मतिमान॥ बढो प्रलय सागर ब०
जब भूप। बीज सकल ले कै अनुरूप॥ नौकापर बैठे अभिराम। चिन्तित कियो मत्स्य बलधाम ॥
स्मरण करत मनुकों निरधारि। चलो मत्स्य तहँ कृपा बिचारि ॥ शृङ्गवान आवत तहँ मीन। गिरि
सो मनु देखो अति पीन ॥ डारि शृङ्गमे गुणको पास। नौका सो बाँधो मतिराश ॥ बधो नावसों
मीन महांन। चलो सिन्धुमे लै बलवान ॥ महा लहरिवश नौका तौन। हल चल चली गहे अति
गौन॥ भूमि दिशा बिदिशा नभ सर्व। भयो सलिलसों पूर्ण अखर्ब ॥ भयो लोक सङ्कुल सब पीन।
मनु सप्तर्षि दृश्य हो मीन ॥ ऐसें बजत वर्ष सो नाव। खैचे फिरो मत्स्य सह चाव ॥ तब हिमवान
शृङ्गके पास। खैचे नाव गयो बलराश ॥ ऐसे मत्स्य कहो तब बैन। बिहसि ऋषिणसों अति मति
चैन॥ एहि हिमवान शृङ्गसो नाव। बांधि दीजिऐ मुनि सह चाव ॥ मत्स्य बचनतें नौका तौन।
बाँधि दियो ऋषि मनु तपभौन ॥ बाँधो नौका जहँ तपधाम। नौ बन्धन सो शृङ्ग ललाम ॥ ख्यात
मत्स्य फिरि मनुके पास। ऐसे बचन कहे सुखराश॥ मनु सुप्रजापति ब्रह्मा मोहि। जानऊँ
मत्स्य रूप यहि जोहि॥ तुमकों भयतें मोचन हेत। हौं आयो बनि मीन समेत॥ मनुते प्रजा सना
तन सब। देव असुर नर नाग अखर्ब ॥ हैं रचिबे सबलोक समेत। है जहँ लोक सचेत अचेत॥
करें तीव्रतप प्रतिभा तौन। ह्वहै प्राप्त जगत कर जौन॥ मम प्रसाद लहि कैं नहि मोह। करि है
प्रजारचणमे द्रोह॥ यह कहि बचन मत्स्य अतिमान। भयो सलिलमे अन्तरध्यान॥ मनु वैवस्वत
तपसागार। प्रजा रचणको कियो बिचार ॥ प्रजा रचण लागे अभिराम। तप प्रताप लहि श्रुति
तपधाम ॥ प्रजा रचणमे भयो न ज्ञान। तब तप मनु कीन्हो अतिमान ॥ मत्स्यक नामक परम
पुराण। यह इतिहास कहो सुखदान ॥ मनुइतिहास सुनो गे जौन। मुक्त पापसों ह्वहै तौन॥
सुखी होय लखि अर्थ महान। लहिहै लोक परम सुखदान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि
मत्स्यावतारोपाख्यानवर्णनोनाम चत्वारिंशदध्यायः ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

मार्कण्डे महामुनिसों धर्मनृप फिरि बैन। बिनय सह इमि लगे बूझन महामतिके ऐन॥ लखो
अन्त अनेकयुगको महामुनि तपधाम। कौन आयुषमान तुमसों और है अभिराम॥ छोडि
ब्रह्म हि और है दीर्घायु तुमसो कौंन। प्रलयमे विधि साथ तुम हीं एक हे मतिभौंन ॥ भये
प्रलय निवृत्ति निद्रा मुक्त विधिकों एक। रहे तुम हीं लखत रचना करत सृष्टि अनेक॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सिंदुर भरो भुसुण्ड एकदन्त लम्बो उदर । गिरिजातनय सुतुण्ड चरित्र कहत सहाय क भजत ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बायुमय करि दिग्गनको अप ढारि जहँ तहँ सर्व । सृष्टि करते पितामहकों भजे तुमहि अखर्ब ॥
तुम हि देखो चतुर्युगको अमित अन्त अनेक । जोति बिधिको जयो तुम करि घोरतप सबिबेक ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

खोलि कै हृदयाजको तुम कोस बारम्बार । परब्रह्म स्वरूप हरिको लखो परम उदार ॥ एहि भाँति मार्कण्डेय मुनिको करि प्रसंशन भूप । भई जैसे आदि सृष्टि सो लगे बूझन रूप ॥ अग्नि मारुत भूमि रबि शशि भये नष्ट अखर्ब। प्रलयमे चर अचर जब दिति अदिति बिनशे सर्ब॥ शेषशायी बिष्णुके तब रहे तुम ही पास । कहऊ सो बृत्तान्त सुनबेचहत हों मतिराश ॥ कियो तुम अनु भूत पूरब हेतु भूत अखर्ब। नही अबिदित सृष्टिको उतपत्य तुम ही सर्ब ॥ * ॥ मार्कण्डेयउबाच ॥ कहत तुमसो भूत तौन चरित्र परम उदार। अव्यक्त अव्यय स्वयम्भूजो कियो जगतागार॥ताहि जानत जौन ताकों शकत बेद न जानि। कियो जेहि आश्चर्य्य रूपी जगत यह सुखदानि ॥ कियो कृतयुग प्रथम बर्ष सहस्र चारि प्रमान। दिव्यवर्ष सु चारि शत को तास संध्यां ज्ञान॥ बर्ष शत है चारिको संध्यांश ताको भूप । तीणी बर्ष सहस्रको है दिव्य त्रेता रूप ॥ तीणिबर्ष सहस्रको युग कहत त्रेता तौन। तीणी तीणी सुकहत शत संध्यांश संध्या जौन॥ बर्ष दोय सहस्र द्वापरको कहे परमान। संध्याश संध्या दोय द्वैशत बर्षको सबिधान ॥ एकबर्ष सहस्र कलिको भोग जानऊ भूप। संध्यांश संध्या एकशत शतबर्षको अनुरूप॥ क्षीण कलियुग भये कृतयुग होत है सुखदान। सहस्र द्वादश बर्ष चारो युगनको परमान॥ चतुर्युग ए सहस्र आवृत जात है जब बीति। ब्रह्मदिबस प्रमाण इतनो कहत सुमति सुनीति॥ बिश्व सिगरो जात है जब ब्रह्म भवन हिं भूप। कहत लोकनको प्रलय तब बुद्धिमान अनूप ॥ चतुर्युगके अन्तमे जब रहत कलियुग शेश। अनृतवादी होत तब जन पतित बञ्चक बेश॥ यज्ञको अरु दान ब्रतको करत प्रतिनिधि सर्ब। शूद्रकर्मा होहिं गे द्विज शूद्रधनकर सर्ब॥ दण्ड अनित बिहाय ब्राह्मण क्षत्रि धरि है धर्म। सर्वभक्षी होहिँ गे द्विज धरे हिंसाकर्म ॥ अजप ब्राह्मण होहिँ गे सब शूद्र जपकर भूप। होय गे बिपरीतिते तब प्रलयपूरब रूप॥ होहि गे बड म्लेछ राजा भूमि पै चहुँ ओर । जास सासन मृषा पापी कर्मकरता घोर॥ नही करत स्वधर्म जीवन बिप्र सिगरे भूप। होहिँ गे क्षत्रादि बर्ण स्वकर्मरहित कुरूप॥ बीर्य्य बल स्वल्पायुके सब होहि गे नर सर्ब। शून्य जनपद होहिँ गे जन अनृतवादी सर्ब॥ ब्रह्मबादी धूत व्है है युगक्षय लखि भूप। शूद्र कहि है द्विजनसों सब बचन नीच स्वरूप॥ बिप्र शूद्रनसों कहे गें बिनयबारे बैन। जन्तु कहे बहुत जगमे क्रूर करण अचैन ॥ गन्धगुण नहिँ औषधिनमे अन्नस्वल्प अस्वाद। रूक्ष व्है है मनुज

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कलित शील मिथ्यावाद ॥ होहिँ गी मुखभग नारी लिङ्ग मुखमे धारि। वङ्गमाहँ प्रसिद्ध है पति ब०प
ज्ञान सकाम बिचारि॥ अन्न विक्रय करै गे जन वेदविक्रय विप्र। योनि विक्रय करै गी वज्र अधम
नारी क्षिप्र ॥ अल्पक्षीरा गौउ ह्वै है वंध्यवृक्ष महान। वज्रत वायस रहै गे तरुतुङ्ग पै दुखदान॥
युगक्षयमे होहिँ गे जन द्यूत मिथ्याधर्म। भिक्षार्थ बाधा करै गे द्विज द्विजनको हतकर्म॥ ब्रह्महिंसक
नृपनसों द्विज लेहि गे नृप दान। दण्डभयत गही भजि वसि विपिनिमे अतिमान॥ छद्म ह्वै मुनिवेष
धरि वाणिज्य करि हैं तौन। ब्रह्मचारी वेष धरि हैं अर्थलोभी जौन॥ वृथाचारी आश्रमी बनि पाप
करि है भूप। वसन भोजन देय करि है पुष्ट कपटी रूप॥ पाषण्ड युक्त बखानि हैं पर अन्नको वज्र
खाद। युगक्षयमे होहिं गे इमि आश्रमी कलबाद॥ यथाकालन वर्षिहै घन आद्र कै अभिराम। किए
ऊ वपन न जामि हैं सबबीज भूप ललाम॥ होहिं गे वज्र जीव हिंसक क्रूर कारक काम। पापको
फल होय गो अत्यन्त अर्षित आम॥ होय गो तवधर्मधारक जौन कुरुपति भूप। होय गो अल्पायु सो
सुखदाय उत्तमरूप॥ धूत ह्वै है बनिक सिगरे अनृत करि हैं भाव। अल्पायु और दरिद्र ह्वै हैं जास
धर्म स्वभाव॥ दीर्घायु और समृद्ध ह्वै है हैं अधर्मी जौन। नगर बाहेर पापको बलिकर्म करि है तौन॥
स्वल्पधनते धनिकको मद धरै गे नर खर्व। न्यास करि विश्वास धरि है हरै गो सो सर्व॥ पुरुष भक्तक
जोव बसि हैं नगरमे वज्र आघावर्ष सतऐं स्त्री धरै गी गर्भ पतिकों पाय॥ बर्ष बरहे करहि गे नर पुत्र
को उतपन्न। लहत षोडश बर्ष ह्वैह जरासों सम्पन्न॥ तीए आयुष पुरुष ह्वैहै तरुण वृद्ध समान। वृद्ध
धरि हैं तरुण कैसो शील अमित अषाण॥ छोडि पतिकों दाससो तिय भजैं गी पशुरूप। वीरपत्नी
रचहि गी सगँ जारके रति भूप॥ होयगी कलि अन्त होते अनावृष्टि महान। अल्प बल सब जीव
तजि हैं क्षुधापीडित प्रान॥ सप्तरवि करि उदै पीहैं सिन्धु सरिता तोय। तृण वृक्ष सिगरे सूखि जैहै
भस्म असे होय॥ फेरि संवर्तक अनल सह वायु दारुण रूप। प्रगट ह्वैके भस्म करि है भूमि भूतल
भूप॥ लहैं गे भय देव दानव जरत अहिगण लोक। अनल पीडित होहिँ गे दिति अदितओक सशेक॥
असिव वायु प्रचण्डके सगँ अनल कर्ता नाश। देय गो एहि भाँतिसों सब जगतको जब त्राश॥
महाघन तब सघन उमडे भरे अद्भुत रूप। कोऊ कारे कोउ पीरे अरुण उज्जलभूप॥ कोऊ पुरसे
कोऊ गजगण मकरसे अतिमान॥ धरे विद्युतमाल आये जलद जीवन दान। घार गरजत गगणसे
मठि महा धारें धार। वरषि कै सब बोरिदेहैं भूमि सहित पहार॥ पितामहको पाय सासन बढे
मेघ अखर्व। बरषि कै करि नाश देहै प्रलय पावक सर्व॥ स्वयंभव करि पानसों ए वायु तौन अखर्व।
वायुको लहि बेग जलधर नाश पायो सर्व॥ रहे बरषत वर्ष बारह पयोधर इमि भूप। दिवो जलसों
पूरि सब ब्रह्माण्डको अतिरूप॥ लही फेरि समुद्र बेला आपनी अभिराम। सहित पर्वत धरा
जलमे भई मग्न ललाम॥ देव दनुजन मनुजको कछु देखि परत स्वरूप। तेहि एकार्णवमाह हम
एक वज्रत फिरत अनूप॥ तेहि एकार्णवमाह परि हम भए व्याकुल भूप। दिशा विदिशा चराच

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रको देखि परत न रूप । गए हम तब दूरि बज्रलों बहे जलमे भूप॥शरण कोउ न मिलो हमकों भए आन्त स्वरूप ॥ लखो तब बटवृक्ष हम अतिरम्ध हेमतिमान । तास शाखा महत ऊपर तेजमय सुखदान॥पर्य्यङ्क तापैं ज्योतिमय आस्तर्ण अनुपम रूप । लखो बैठो तास पैं शिशु सूर शशिसो भूप ॥ देखि बिस्मय भयो मेरे चित्तमे अतिमान । इहाँ शोवत कौनविधि यह बालकेय महान ॥ ध्यान धरिहौं जानिबेको कियो चिन्तन तास । त्रिकालदर्शी हमै सो नहि भयो भूप प्रकाश ॥ लसत अतसी पुष्पसों श्रीवत्स बारिज नैन । पीतबसन बिशाल लोचन परम परमाअैन ॥ कहो तब तोहि बिहसि बालक बचन हमसों भूप । आन्त हमको बिदित तुम बिश्राम चहत अनूप ॥ आय मेरे उदरमे कुरु महामुनि बिश्राम । चहौ जबलों रहौ तबलों सोइसो अभिराम ॥ बचन सुनि कै तौन बालकके अनूपम रूप । भयो जीबित जन्ममें निर्बेद हमकों भूप ॥ कियो तब तेहि बिवृत्त आनन बाल सुषमा देश । अवश्य कीन्हो दैववश हम बदनमाहँ प्रबेश ॥ जाय ताके उदरमे हम सुनऊ सहसा सूप । सपुर राष्ट्र सकानना सक्षिति गिरि देखी भूप ॥ लखी हम गङ्गादि सरिता भूमि पर है जैंन । करण ताके उदरमे हम लगे चऊँदिशि गैंन ॥ लखे सकल समुद्र तेहाँ भरे याद गभीर । सूर शशि उडुगणन सह नभ लखो तहँ कुरुबीर ॥ करत देखे यज्ञ द्विज नृप प्रजा पालत सर्ब । लखे चारोबर्ण अपनो धरे धर्म अखर्ब ॥ लखो आदि सुमेर सिगरे अद्रि जे अभिराम । बन्य जीवन्ह सहित कानन फलित कुसुमित नाम ॥ और भू पर हे चराचर बस्तु जेतनी भूप । फिरत ताके उदरमे हम लखी सकल अनूप ॥ इन्द्रादि देखे देवता सब पित्र बसु गन्धर्ब । दैत्य दानब यक्ष राक्षस अप्सरागण सर्ब ॥ लखे ग्रह ऋषि नाग किन्नर लखत हे हम जैंन॥ लखत हे हम जैंन त्रिभुबनमाह देखे तैंन ॥ फिरे हम सौ बर्ष तहँ करि फलाहार अनूप ॥ नहीं ताके देहको हम अन्त पायो भूप॥नित्य धावत रहे चऊँदिशि लहो नहि बिश्राम।नहि महात्माके लहो हम देहको परिनाम ॥ गए हम तब शरण ताके जानि बरद शरण्य । काय बाचिक मानसिकसों धारि बृत्ति अनन्य ॥ बायुबश हम कढे ताके बदनते अभिराम।फेरि देखो जगत्पति तहँ चराचरको धाम ॥ तौन बटकी शाख तेहि शयन पैं सुखदान । आसीन बाल स्वरूप मानो उदय कीन्हे भँान ॥ कहो हमसों बचन तब तेही बिहसि बालस्वरूप ॥ श्रीबत्स धारें पीत पट कमलाक्ष अद्भुत भूप ॥ भए मेरे उदरमे बसि आन्त सुमुनि महँान । भई दृष्टि प्रकाश मम तब घरिकमे सुखदान ॥ लखो जातैं आपनो हम रूप भूप सचेत । चरण बारिज बरण ताके लखे जगत निकेत ॥ यत्नतें हम लाय मस्तक कियो जाय प्रणाम । बिनय सह करि यत्न देखो तौन आनदधाम ॥ नमस्कार सबिनय करि इमि कहे तासों बैंन। देव जानो चहत तुमको महत माया जैंन ॥ बदनपथ व्है देहमे तब पैठि कै भगबान । चराचरमय लखो त्रिभुबन उदरमाँह महान ॥ देव दानब मनुज किन्नर निकटत अहि गन्धर्ब । सरित गिरि सह सिन्धु देखी भूमि बिपिनि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अखर्व ॥ छपाते तव रही मेरी बनी स्तुति अभिराम । उदरमे तव फिरो देखत लोक विविधि ललाम ॥ कढे फेरि हम प्रबलइच्छा रहे हैं तव साथ । तुम्हे जानो चहतहैं हम देव त्रिभुवननाथ॥ इहाँ व्है शिशुरूप सो तव कहऊ कारण कौंन। पान करि सब जगतको सो कहऊ त्रिभुवन भौंन॥ बसत यह सब रचतहै तव उदयमे केहि अर्थ । रहऊगे एहि भाँति कबलो इहाँ कहँऊ समर्थ ॥ ब्राह्मणेच्छासों चहत यह सुनो तुमसों सर्व । कमललोचन कहऊ विस्तर सहित तौंन अखर्व ॥ सुनत हमसो देवदेव प्रकाशमय अभिराम । शान्त्य करिकै हमै बोले बैन आनदधाम ॥ * ॥ देवदेवउबाच ॥ * ॥ यथातत्व सुरासुरो मम नही जानत रूप । प्रीतिसों तव कहत जग यह यथा सृजत अनूप॥ पितृ भक्त सु भये मेरे शरण तपसागर । कहत यह बृन्तात तो लखि ब्रह्मचर्य्य उदार ॥ नार कहियत आपकों मम अधन नियमित तौंन । कहत नारायण हमै एहितें सुवेत्ता जौंन ॥ रचत हमही भूत सिगरे करत तिनको नाश । विष्णु ब्रह्मा रुद्रहैं हम भक्त सुरगण पास ॥ वरुण यम हम सोम कश्यप प्रजापति तपधाम । हैं विधाता हमै धाता यज्ञहैं अभिराम ॥ अग्नि मुख मम चरण प्रिथिवी सूर शशिहे नैन । गगण मूर्धा दिशा स्रुतिहै खेद सलिल सदैन ॥ दिशन सह नभ काय मेरो वायु मन अभिराम।किए क्रतु हम सकल सहसन्ह दक्षिणा सह नाम॥यजत मोकों बेदविद मख पुरुष मोहि विचारि।स्वर्गकांक्षी भूप मममख करतहै निरधारि॥जपत हमको बैश्य विधिवत स्वर्ग कांक्षी तौंन । सिन्धुलो सब मही धारे मेरु मन्दर जौंन ॥ शेष व्है हम तौंन धरणी कियो धारण सर्व । धरो हों जो पूर्व धारि बराह रूप अखर्व ॥ अग्नि बडवा बदन व्है हम नित्य जलको पान।करतहै फिरि सृजत ताको प्रलयसे अति मान॥भए मुखतें विषम क्षत्री बाऊते विप्र जौंन । उरूते ते भए पदतें शूद्र कहियत तौंन॥ भए सोतें बेद सब फिरि बसत सोमे आय। काम कलमष मोह मत्सर बिगत जिनको काय॥ यती शान्त मुमुक्षु आत्मक ज्ञानको धरि शुद्ध। क्रोध ममता हीन जे शुभमार्गगामी उद्ध ॥ करत मेरो रूप चिन्तन विप्र उत्तम तौंन । ज्योति अनिल सभानु पावक प्रलय कारक जौंन ॥ मारकण्डे जानियो सब तौंन मेरो रूप । लखत तारा जौंन ए मम रोम कूप अनूप ॥ दिशा और समुद्र सब मम बसन शयन सुजान । काम क्रोध सहर्ष भय अरु मोह रोम न आन॥सत्य दान सु तप अहींसा सुगति दायक जौंन। बिहित हमसों बसत मेरी देहमे सब तौंन॥दुष्कृत कृत अरु मूढ लोभी पाप पुञ्ज अयान।महा फलसो हमै ते नहिं लहतहै सुखदान ॥ होत जब जब धर्मको क्षय सुनऊँ तब तब विप्र। देह उत्तम पुरुषके गहमाह धारत विप्र ॥ धारि मानुष देह पापिनको करत तब नाश । देव दानव मनुज राक्षस रचित करि मतिराश ॥ फेरि अपनी करत मायामाहँ लीन अखर्व । काल लहि नर देह धरि मर्य्याद बांधत सर्व ॥ खेत कृतयुगमे रहे हम पीत त्रेता गाय । रक्त द्वापरमे रहैं धरि कृष्ण कलिमे काय॥ कालक लहि अन्तको हम होय दारुण काल । करत अपने माहि लयको सकल जनके जाल॥ चराचर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सह करतहै हम वास नित्त सुदृत्य।भूतको उतपत्यके हम नाशकारक नित्य॥भूतमे एहि भाँति मरी बसत आत्मा विप्र। जीवमति ते हमै कोउ नहीं जानत क्षिप्र॥जौन कछु तुम क्लेश पायो लहत हम कों तौन।श्रेयकर सो होयगो द्विज तुम्है आनदभौन॥ चराचर सब लोकमे तुम विप्र देखो जौन। सदा मेरी आतमासो रचितहै सब तौन॥ पिता मह मम देहको है अर्धभाग अनूप। हो नारायण शङ्ख चक्र सु गदा धारक रूप॥ युगनकी आवृत्ति जौलों होयगी सु हचार। सोयहै तबलों सुविज्ञ स्वरूप जगदाधार॥इहां हम सब काल तबलों बसैंगे तपधाम। अशिशु शिशु व्है परम जबलों पिता मह अभिराम॥ ब्रह्म रूपी देतहै हम तुम्है वर वरदान। ब्रह्मर्षि गणमे होऊगे तुम पूज्य परम सु जान॥ देखि एकार्णव भए तुम विकल जानो विप्र। दियो जगत देखाय तुमको देहमे हम क्षिप्र॥ भरे विस्मय देखि सम्भ्रम जगत जनगण जौन।तुम्है मुखतें काढिबेको भयो कारण तौन॥कहो अपने रूपको हम चरित तुमसों सर्व।जगैं जबलों पितामह तपतेजपुञ्ज अखर्व॥ बसों तबलों इहां तुम जब जगैगो भगवान। एक व्है हम रचहिँगे तब सृष्टि सहित विधान॥ पञ्च तत्व सचराचर सब देव दनुज अखर्व। करहिगे सब लोकमांह अशेष रचना सर्व॥ मार्कण्डेयउवाच॥ बचन ए कहि भयो अन्तर्ध्यान सो प्रभु भूप। देखि हमकों परी सिगरी प्रजा सृष्टि अनूप॥ एहि भाँतिकों हम चरित अद्भुत लखो है नृपधर्म। पूर्व देखो देव जो वह पद्मलोचन पर्म॥ तौन सम्बन्धी तिहारो कृष्ण यह अभिराम। रहो स्मृति यह हमै इनकी कृपातें सुखधाम॥ भए हम दीर्घायु जाकी कृपातें कुरु भूप। वार्ष्णेय भूषण तौन है यह कृष्ण उत्तम रूप॥ एई धाता हैं विधाता जगतके अभिराम। आदि अन्त अचिन्त अव्यय अजर करुणाधाम॥भई इनकों देखि कै स्मृति तौन हमकों भूप। विष्णु हैं ए आदिदेव अचिंत्य अव्यय रूप॥ शरण इनकी लेऊ जानि शरण्य करुणाधाम। वैशम्पायन उवाच॥ सुनत पाण्डव मुनिके बचन ए अभिराम॥चरण बन्दे द्रौपदी सह कृष्णके कुरुभूप॥ शांत्यमय कहि बचन माधव मधुर मञ्जुल रूप॥ शान्त तिनकों कियो करुणासिन्धु करि सनमान। जानि आदर योग्य पाण्डव भक्तप्रिय सुखदान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि युगान्तेएकार्णववर्णनोनामैकचत्वारिंशदध्यायः॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ जयकरीछन्द॥ * ॥

फिरि मुनिसों पूछो नृपधर्म। जो भविष्य कलियुगमे कर्म॥ युधिष्ठिरउवाच॥ आश्चर्य्य भूत हम सब वृत्तान्त। तुमसों मुनिवर सुनो नितान्त॥ कलि चरित्र सुनिबेकों सर्व। मम मन इच्छा करत अखर्व॥ सब विस्तर कहिए मुनिराज। चहत सुनो हम सहित समाज॥ मार्कण्डेयउवाच॥ सुनऊ भूप हम देखो जौन। किय अनुभूत कहत सब तौन॥ चतुष्पाद कृतयुगमे धर्म। हो वृष रूप

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प्रजनमे पां ॥ त्रिपद धर्म त्रेतामे भूप। एक अंश भो अधरम रूप॥ भो द्वापरमे धर्म द्विपाद। आधो अधरम तत मर्य्याद॥ तीनि अंश भो अधरम जौंन। भो प्रवृत्ति कलियुगमे तौन॥ चौंथो अंश रहो जब धर्म। करण प्रजा तब लगी कुकर्म॥ आयु बुद्धि बल तेजस जौन। भयो क्षीण मानुषकों तौंन॥ चारिउर्न्ण सुनऊ कुरुभूप। करिहै धर्मकर्म छल रूप॥ धर्महानि तें आयुष छीन। व्हैकैं मनुज ज्ञान ते हीन॥ लोभी क्रोधी कामी खर्ब। बैर परस्पर करिहै सर्ब॥ बर्ण होंहिगे शङ्कर सर्ब। करिकै शूद्र सदृश कृत खर्ब॥ बिप्र होहिँगे शूद्र समान। द्विजको धरिहै शूद्र बिधान॥ अैसो व्हैहै युगक्षय माहँ। शण पटकों धरिहैं नरनाह॥ परुष बोलि हैं भार्य्या मित्र। अन्योन्य करैगें चोर चरित्र॥ अजा मस्त्यके पलको खाय। मनुज मानि है अति सुखदाय॥ खोदि कुदारिन सरिता तीर। खेत करैगें नर सुनु वीर॥ अल्प बीज तेहूहै सर्ब। तातें जीवन करिहैं खर्ब॥ श्राद्ध देव पूजन है जौन। करिहैं लोभग्रस्त अति तौन॥ न्योति परस्पर नियमित भूप। भोजन करिहैं रिणस्वरूप। पिता पुत्रके भोजन जाय। करिहै पुत्र पिताके आय॥ नीम्न देशमे करिहैं खेत। गाय जोतिहै अधरम चेत॥ एक बर्षको बछवा जौंन। हलमे अधम जोतिहैं तौंन॥ पुत्र पिता बध करिहै भूप। पिता पुत्रब धकर्म कुरूप॥ करिहैं खेद न करिकै पाप। सहन शील निन्दाको दाप॥ बर्ण होहिँगे म्लेच्छ समान। नष्ट होहिँगे यज्ञबिधान॥ निरानन्द व्हैहै जन सर्ब। बिधवनको धन हरिहै खर्ब॥ सब सबको बध करं बिचार। व्हैहै मनुज कण्ट काङ्कार॥ साधुनकी दारा धन जौंन। बर बसभूप भोगिहै तौंन॥ पर कन्या कीन्हे बिनुदान। सरबस लेहै नृप बलवान॥ चोरी करिहै हाथोहाथ। पाय युगक्षयको कुरुनाथ॥ भीरु सूरको धरिहै मानि। सूर हनैगे कादर जानि॥ छोडि धर्मपत्नी सुखरास। बसिहैं बार बधूके पास॥ तिनकी पत्नी कामाशक्त। अन्य पुरुषसों व्हैहै रक्त॥ कोऊ न काहूको बिश्वास। करिहै भए धर्मको नाश॥ बर्ण होहिँगे एकाकार। सुत पितु तजिहै क्षमा बिचार॥ तजि पति सेवन बनिता जौन। करिहै अन्य पुरुषसों गौन॥ जब गोधूम होयगो यत्र। प्रजा जाय बसिहैं सब तत्र॥ स्वेच्छाचार पुरुष अरु बाम। करिहै भए युगक्षय माम॥ व्हैहै म्लेच्छमई जग सर्ब। भय युगक्षय भूप अखर्ब॥ बेद कर्म सब व्हैहै नाश। महा पाप तम करी प्रकाश॥ सोरह बर्ष आयु परमान। बर्ष सत्रहे तजिहै प्रान॥ षट पञ्चम लहि बार्षिक रूप। कन्या गर्भ धरैगी भूप॥ सप्तम अष्टम बर्षासन्न। पुरुष प्रजा करिहै उतपन्न॥ दम्पति नही परस्पर तोष। लहिहै नहीँ भरे मतिरोष॥ कोऊ न काहू देहै दान। म्लेच्छाचार बढे अतिमान॥ लै कलियुगको पश्चिम काल। अैसो बढिहै पाप बिशाल॥ करिहै बृक्ष बागको नाश। जीव धरैंगे जीबित त्रास॥ ब्राह्मण जौंन मारिहैं क्षिप्र। भोजन तिनके करिहैं बिप्र॥ शूद्रनसों भय पाय उदार। द्विज भजिहैं करि हाहाकार॥ नहिँ त्राता कोउ रहिहैं सूर। प्रबल होहिँगे हिंसक क्रूर॥ नदी पर्बताश्रय लहि बिप्र। लहि भय भाजि बसैगें क्षिप्र॥ भरे चौरभय काक समान।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पीडित होय बिप्र अतिमान ॥ व्है है द्विज तजि धैर्य्य अनूप । शूद्रनके परिचारक भूप ॥ धरिहै बिप्र शूद्रको धर्म । तास भृत्य ह्वै ताको कर्म ॥ दिन दिन यह बढिहै बिपरीति । बढें पापके पाप अनीति ॥ कबुर पूजिहै करि बिश्वास । जैहै जन न देवालय पास ॥ जहां महर्षिनको सुस्थान । जहां बसत द्विज बर्ष महान ॥ यहां देव आलय अति रूप । तहां कबुर करिहै जन भूप ॥ पांसाद सुरापान जब सर्व । जब ह्वैहैं कर पाप अखर्ब ॥ पुष्प पुष्पमे फल फल माहँ । जब व्हैहैं सुनिए नरनाहँ ॥ तब युगत्रयको अन्त अनूप । देखि परैगी सुनिऐ भूप ॥ घन बिनु काल बरषिहै पाथ । बैर शूद्र करिहै द्विज साथ ॥ म्लेच्छाक्रान्त भए संसार । बिप्र भाजिहै लहि कर भार ॥ ऐसे नष्ट भए मर्य्याद । शिष्य गुरूसों करिहैं बाद ॥ उग्र बहैगो बायु कठोर । उल्कापात होहिंगे घोर । सात सूर्य्य करिकै परकाश । तिनतें सृष्टि लहैगो नाश ॥ बिना पर्ब व्हैहै उपराग । लगिहै अग्नि बज्रत हत जाग ॥ पत्तन नगर होंहिगे यत्र । प्रजा भाजिकै बसिहै तत्र ॥ हा सुत हा माता हा तात । यह धुनि चहुँ दिशि भरी अघात ॥ भये युगत्रय घोर महान । कृपा करहिंगे तब भगवान ॥ लोक द्विजादिक बर्ण अनूप । तब क्रमसों बढिहैं कुरुभूप ॥ लोक बृद्धिको कारण मूल । म्लेच्छासों ह्वैहै अनकूल ॥ रबि गुरु चन्द्र पुष्यमे आय । एक सङ्ग बसिहैं सुखदाय ॥ तब कृतयुग व्है है सुखधाम । यह नक्षत्र धन सह अभिराम ॥ व्हैहै क्षेम सुभिक्ष उदार । यश नाम कल्की औतार । बुद्धि पराक्रम बलको धाम ॥ बिष्णु रूपसों अति अभिराम ॥ सम्भल ग्राम बिप्रके भौन । व्हैहैं कृपासिन्धु तब तौन ॥ बाहन शस्त्र सैन सह बर्म । इच्छासो ताकी अति पर्म ॥ ह्वैहै बिजय नामसो भूप । फिरिहै सब जगजैत अनूप ॥ सहित बिप्रगण दुर्जन जौन । तिनको नाश करैगो तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि कलिचरित्र कल्कीअवतारबर्णनोनाम द्विचत्वारिंशदध्यायः ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउबाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चौरनको क्षय करि कियो बिप्रगण सह अभिराम । अश्वमेध मखदानदे करी भूमि धनधाम ॥
जगत सुखद मर्य्यादको स्थापन कीन्हो भूप । भरी प्रजा आनन्दसों बर्द्धित भई अनूप ॥
बिष्णु कृपा लहिकै प्रजा भई धर्मरत सर्ब । कल्की मारें भूमिपें रहे जे दुष्ट अखर्ब ॥
धर्म कर्म मख दान धन बल पौरुष सुख ज्ञान । बिष्णुकृपातें प्रगट ए युग सम भए सुजान ॥
तजत न कोउ मर्य्यादकों अपने बर्ण समान । धर्मशील भूपति भए भू युत शस्य महान ॥
सत्य त्रेता द्वापर कलि कथा प्रथम कही हम भूप । जन्म कर्म आयुष सकल धर्म समान अनूप ॥
कही व्यवस्था युगनकी लखी जो करि अनुभूत । कहत सहित अच्युत सुनऊ धर्म मोक्षपथ रूप ॥
धरऊ आत्मा धर्ममे धारि नियम नृपशर्म । धर्म शील भूपति लहे आनद अवनी पर्म ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

परम शुभद बाणी कहत और सुनऊ सुखरूप । विप्रनिरादर कीजियो कबहू भूलि न भूप ॥
कोप करेतें विप्रके पावत लोक बिनाश । ब्राह्मणको अपमान नहिँ करत जो सुमति निवास ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

सुनि मार्कण्डेके वचन धर्मनृपति मतिऐन । लागे बूझन धर्मपथ पालत प्रजा सचैन ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

दयावान सब जीवमे सत्यबाक मृदु जौन । गिरत धर्मते नहि प्रजापालक भूपति तौन ॥
देव पितृ पूजन करऊ देय दान अभिराम । जोति भूमिकों बश करऊ धारे मोद ललाम ॥
छपे नहीं तुमसों कछू भूत भविष्य विधान । तातें यह बनवासको क्लेश न धरऊ सुजान ॥
मोह सुरनहूको करत भूप काल बलवान । बचन कहे हम कीजियो तामे नियत प्रमान ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

जौन कहे मुनि तुम बचन श्रुतिसुख करि अभिराम । तौन करहिँगे यत्नसों शासन तव तपधाम ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सहित बिप्र बर कृष्ण सह पाण्डव सुनि मुनिबैन । भए सविस्मय कथा सकल अद्भुत दायक चैन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि मार्कण्डे कथित भविष्य वर्णनोनाम त्रयचत्वारिंशदध्यायः ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फिरि कहिबे मुनिसो कहो बिप्र महात्म्य सु भूप । सुनि मुनि भूपतिसों कहो सुनु द्विजचरित अनूप ॥
भयो भूप इक्ष्वाकुबंशमे पूर्व परिक्षित भूप । मृगयामे एकाकी खेदो मृगको एक अनूप ॥
गयो दूरि देखो तहां गहन तडाग अनूप । तृषित तुरग सह पान करि जल तहँ बैठो भूप ॥
तहां एक गावत लखी कन्या तोरत फूल । बूझो नृप तुम कौन हो कबिसों भरी अतूल ॥
हम तुमको चाहत बरो सुनि सो बोली बैन । बचन एक दीजै हमै तब बरिऐ कबिऐन ॥
जबलों नहिँ जल देखि हो तबलों रहि हो भूप । कहि तथास्तु भूपति बरो आनद भरो अनूप ॥
आए सैन चढाय तेहि सिबिका पर अभिराम । राखि प्राण समान करि भूपहि अपने धाम ॥
राजकाज भूलो नृपति तब लखि चतुर प्रधान । भेद लेय सबसखिनसो बिरचो बाग महान ॥
परम रम्य बिरची तहां बापी अति सुखदाय । तहँ बिहारहित नृपतिकों गो सह प्रिया लेवाय ॥
करत बिहार गए तहां जहँ बापी अभिराम । भूलि भूप पैठो तहां सहित प्रिया कबिधाम ॥
प्रिया तौन तेहि सलिलमे भई मग्न लखि भूप । शोधनार्थ सूखी करी बापी तौन अनूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लखो तहां मंडूक एक बैठो भूप महांन । जानो एहि खाई प्रिया करि ताकों बिनुप्रान ॥
मंडुक हनि मेरे निकट आवै गो जन जौन । सकल मनोरथ करौंगो ताको मम प्रिय तौत ॥
हनन लागे मंडूक बहु जनपदके जन सर्व । भरे भीति मंडुक चितै आयो मरण अखर्व ॥
गए भाजि मंडूक सब जहँ मण्डूक जनेश । कहो सकल बृत्तान्त जो भूपति करत अशेश ॥
सुनि आयो मंडूकपति जहां परीक्षित भूप । समुझायो बहु बिप्र बनि कहि कहि नीति अनूप ॥
नहिँ निबृत्त भूपति भयो मंडुकबधतें जानि । तब मंडुकपति भूपसों कहो सत्य सनमानि ॥

॥ * ॥ मंडूकपतिरुवाच ॥ * ॥

हों मंडूकपति सो सुता मेरी है छबिधाम । तुमसे तेहि बहुनृप छले छली क्षुद्र है बाम ॥
करि आबाहन तास तेहिँ दियो भूपके हाथ । सेबा करिवेकी करी आज्ञा मंडुकनाथ ॥
मंडुकबधतें सुताकों दिये मंडुकपति शाप । ब्रह्मभक्ति हत होय गे अरे सुत युतपाप ॥
गो मंडुकपति बिदा व्है जेहां राजसमाज । मंडुककी पायो नृपति जैसे त्रिभुवनराज ॥
दोय पुत्र तामे भयो ताके छल दल नाम । राज ताहि दै भूप गो सहित प्रिया यमधाम ॥
मृगयाको छल भूप गो देखि महामृग रूप । दौरायो रथ हननको ताकों आतुर भूप ॥
सूत कहो मुनि बामदेवके है द्वै दिव्य तुरङ्ग । जौं रथमे ते जोरिऐ तौ नृप साध्य कुरङ्ग ॥
यह सुनि नृप मुनि पै गयो मागें तुरगति नीति । कहि मृग हनि हम देहिं गे तुरग पठै करि प्रीति ॥
सो सुनि कै मुनि नृपतिकों दीन्हे तरल तुरङ्ग । ते रथमे नृप जोति कै मारो जाय कुरङ्ग ॥
तुरग लए छलनृप गयो घरकों छल निरधारि । राखे भीतर भवनके अदेय है ए बिचारि ॥
अश्वनको आगमन लखत मुनि हिँ गयो एकमास । आत्रेय शिष्यकों भूपके तब पठयो मुनिपास ॥
आत्रेय कहो छलनृपतिसों बहुतभाँतिके बैन । भूप कहो ए मुनिनके योग्य तुरङ्गम है न ॥
आत्रेय जाय मुनिसों कहो दे हैं अश्व न भूप । बामदेव सुनि क्रोध करि गए कृशान स्वरूप ॥
बहुत कहो मुनि भूप नहि दीन्हे तुरग महांन । मुनि बोले यमपाशते बद्ध देहु मति प्रान ॥
बामदेवसों नृप कहे हेलाबचन कठोर । सुनि मुनिके मनमे बढो कोपानल अतिघोर ॥

॥ * ॥ मुनिरुवाच ॥ * ॥

बेगि भूप दीजै तुरग नतरु चारि बलबान । राक्षस आवत शूलधर हरण तिहारो प्रान ॥
भूप कहो तुमकों चही गर्दभको रथ बिप्र । तुम्है योग्य ए तुरग नहिँ नृपबाहन अतिक्षिप्र ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

तब हीं आए कालसे राक्षस घोर महान । नृपति परिक्षितको लियो शूलनसों हनि प्रान ॥
मरे परीक्षित भूप हे जे इक्ष्वाकु अनेक । लघुभ्राता ताको रहो दलकों कियो भिषेक ॥
बाम देव फिरिकै गए दल भूपतिके पास । कहो तुरग दीजै नृपति जानि धर्म मतिराश ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दल सुनि धनुष मगाय शर किय मुनि पै सन्धान। मुनि बोले यह शर हनै तब सुतको नृप प्रान॥
दश वार्षिक नृपसुत रहो नाम शेनजित जौन। अन्तः पुरमे जाय शर ताकों लागो तौन॥

॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥

और बाण लै दल कहो लखऊ स्वजनगण सर्व। हरत प्राण या विप्रको शरसों मारि अखर्व॥

॥ * ॥ वामदेवउवाच ॥ * ॥

जौं तुम शरवर्षा कियो मोपैं चाहत भूप। तौ तुम जडके हो रहौ निश्चल थूल स्वरूप॥
एहि शरसों महिषी हनौ अपनी हे दलभूप। तब तुम्हरो मिढि है सुनो सिगरो एन सरूप॥
कियो तथा शर छोडि दल मुनिके बचन प्रमाण। मुनिसों राणी कहन इमि लागी बेधित बाण॥

॥ * ॥ महिष्युवाच ॥ * ॥

वामदेव द्विजभक्ति निति इनसों हम उपदेश। कियो होय तौ दीजियै हमकों पुण्य निवेश॥

॥ * ॥ वामदेवउवाच ॥ * ॥

सुन्दरि तुम रक्षण कियो राज्य बंश यह सर्व। देत तुम्हे बर राज्यको पालन करऊ अखर्व॥

॥ * ॥ राजपत्न्युवाच ॥ * ॥

करत कृपा मुनि तौ करऊ भूप पापसों मुक्त। सहित पुत्र पति राज्यको शासन करिवो युक्त॥

॥ * मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

मुनि तथास्तु बोले सुनत शुभ महिषीको बैन। व्है प्रसन्न भूपति दये तुरग बिनीत सचैन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि मण्डुकोपाखानवर्णनोनाम चतुश्चत्वारिंशदध्यायः॥ *❦*******❦******❦***

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

फेरि मार्कण्डेयसों इमि कहो भूपतिधर्म। सुनत बकदालभ्य मुनि चिरञ्जीव अतिपर्म॥
सखा हैं सुरराजके केहिभांति कहिए तौंन। जगतको सुख दुःख पावत कहऊ सिगरे रौंन॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ शक्र सुनि कै प्रजा जनपद भरों आंनद तास। गजो पैं चढि सो गए वकराजर्षि आश्रम पास॥ भरो आनद देखि जनपद सरित सर अभिराम। लखे ब्राह्मण बृन्द प्रमुदित तेज तपके धाम॥ इन्द्र आश्रम देखि ऋषिकों सिन्धुतढलों पर्म। उतरि गजसों गए तेहां लहो लखि बक शर्म॥ भए प्रमुदित परस्पर हरि सबिधि पूजन पाय। प्रष्ण कीन्हो इन्द्र मुनिसो बैठि तहँ सुखदाय॥ कहऊ मुनि जे बऊत जीवत लहत ते दुख तौंन। बकउवाच॥ सत बियोग संयोग अस तनसों सु दुखको भौन॥ पुत्र दारा मित्रको दीर्घायु देखत नाश। लखत परकी नाश यातें दुःखको मतिराश॥ लहत अबिभव परनते धनहीन व्है कै जौंन। संयोग और बियोग देखत बऊत जीवत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तौन॥सृष्टिकी उतपत्य छय चिरजीव लखत महान। कोन याते अधिक दुख है सुनऊ ह मघवान॥ करत क्लेश कुलीन हतकुल रहत सुखसो जौन। आढ्य देत दरिद्रकों दुख महादुख है तौन॥ इन्द्रउवाच॥ *॥ कौन सुख चिरजीव देखत कहऊ सो तपधाम॥ *॥ बकउवाच॥ *॥ स्ववश सायं स्वगृहमे सुख शाक सक्ष्य ललाम॥ देय अतिथिनकों करावत अन्न भोजन जौंन। कवल प्रति गोदान शतको लहत है फल तौंन॥ ⁂ ॥ दोहा॥ *॥ *⁂⁂⁂⁂⁂

करत युवामे पाप जो ताको करत बिनाश। भोजन देत जो बिप्रको सहित मान मतिराश॥
भाजन करि कै द्वार पैं जाके आचवत बिप्र॥ ताके प्रक्षालन करत सकल पापकों क्षिप्र॥
ऐसी सुनि बकसों कथा बऊबिधिकी त्रिदिबेश। बिदा होय बकसों गए सानँद अपने देश॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनानथकबीस्वरात्मजेन गोकुलनाथेन करिनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि बकइन्द्रसंवादवर्णनोनाम पञ्चचत्वारिंशदध्यायः॥ *⁂⁂⁂⁂⁂⁂⁂⁂⁂

॥ *॥ बैशम्पायनउवाच॥ रोलाछब्द॥ *॥

धर्मनृप फिरि महामुनिसों कहे ऐसे बैंन। भऐ नृप बरभाज तिनको कहऊ पूरित बैंन॥ सत्य ऋषिको पूजि राज उसीनर हे जात। चले शिबिनृप करण पूजन ऋषिन्हको अबदात॥ मिले पथमे करि परस्पर दोऊ शिष्टाचार। तजत पथ न समान तासो दोऊ दुऊन उदार॥ तहां नारद देखि आए कहे ऐसै बैन। खडे का तुम दोऊ कोऊ तजत काऊ न ऐन॥ भूपउवाच॥ धर्म बेत्त न कहो ऐसे पूर्ब सम्मत बाग। श्रेष्ट वृद्ध समर्थ नारीको करी पथत्याग॥ नारदउवाच॥ देत है पथ साधुजन हि देत क्रूर न भूप।समुझि कीजै साधु हौ तुम दोउ ज्ञान स्वरूप॥रहे चुप व्है महामुनि यह बचन कहि अभिराम। गए शिबिकों करि प्रदक्षिण सुनि उसीनर धाम॥ मार्कण्डेयउवाच॥नऊष पुत्र ययातिको अब चरित सुनिए भूप। दान मागन एक आयो बिप्र तापसरूप॥ सहित बत्सन्ह दई नृपति ययाति कोटिन्ह गाय। गयो होय प्रसन्न ब्राह्मण दक्षिणा बऊ पाय॥ भूप भर तादिकन्हको बऊ पुण्य पूर चरित्र। महामुनि नृपधर्मसों सब कहे करब पबित्र॥ धर्मधुर जे भऐ भूपति पूर्ब सुत बृतान्त। कहे तिनके चरित हम नृप पुण्यपूर नितान्त॥ *॥ बैशम्पायन उवाच॥ *॥धर्मनृप फिरि प्रश्न कीन्हो मार्कण्डेपाश। धर्ममय इतिहास सुनिवे चहत अति मति राश॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच॥ *॥ सुनो चाहत पतिब्रतरत जौन स्त्रीको धर्म। कहऊ हमसों महामुनि सो सहित बिस्तर पर्म॥ प्रत्यक्ष देखे परत है ए देवता अतिऊर्य्य। बायु भू आकाश पावक सलिल शशि अरु सूर्य्य॥ बिदित तुमकों महामुनि ए सप्त दैवत पर्म। मान्य ऐ प्रतिपाल सुस्त्री एक पतिब्रत धर्म॥पतिशुश्रूर्षण पतीब्रतन्हको महादुष्कर कर्म। महात्म्य सो पति ब्रतन्हको कहिऐ महामुनि पर्म॥रोकि इन्द्रीग्रामकों करिरुद्धमन बलवान।करै चिन्तन स्वपतिको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हियमांह देव समान ॥ पितामाताकी शुश्रूषा महत सुतको धर्म । पतिव्रतहै धर्म नारिनको महा अतिपर्म ॥ कुक्षिमे दशमास नारी गर्भकों धरि धीर । कालपाएँ प्रसवकों करि व्यथा सहहिँ गम्भीर ॥ पितामाताकों शुश्रूषण पतिव्रत फल जौन । महामुनि भृगुवंश भूषण कहऊ हमसों तान ॥ ॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ कहतहैं हम सुनऊ भूपति प्रश्नकीन्हो जौन । प्रजाबध न करै नारी कर्म दुष्कर तौन ॥ यंत्र मंत्र सु देवबन्दन करि तितिक्षा कर्म । करत मातापिता रक्षण पुत्रको अतिपर्म ॥ कष्टसहि बऊ भाँति पालत पुत्र जननी तात । भाग्य चिन्तन करत ताको भरत पोषण गात ॥ करत माता पितहि तोषित धर्मधुर सुत जौन । लेत सो दुऊलोकमे सुख सुयश अविचल तौन ॥ पित्र पोषण पुत्रको तियको पतिव्रत धर्म । यज्ञ दानादिक न इनके सदृश कोऊ कर्म ॥ तौन तुमसों कहतहै हम सुनऊ सहित विधान । पतिव्रत अरु पित्रपोषन जन्य फल सुखदान ॥ नाम कौशिक विप्र बनमे करत वेदाध्ययन । बैठकै तरुमूलके ढिग धारि ध्यान सचैन ॥ वृक्ष ऊपर रहि बलाका रूपी पत्र मझारि । दियो कौशिक शीशपर तेहि बीट अपनो डारि ॥ विप्र कौशिक लखो ताकों क्रोधसों चखछाय । भस्मह्वैकै सो बलाका गिरी क्षितिपर आय ॥ देखि ताकों शोच करि मुनि रहे दोष बिचारि । जानि तपबल आपनो ककु गर्व मनमे धारि ॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ गए भिक्षा हेतु कौशिक ग्रामको चलि भूप । लगे भिक्षालेन घर घर जानिकै शुचि रूप ॥ लेत भिक्षा गए चलि जहँ रहों पतिव्रत बाम । देहि भिक्षा बोलि ठाढे भए बाहेर धाम ॥ गेहिनी तेहि कहो तबलो रहौ ठाढे विप्र । धोय भाजन देतिहै हम तुम्हे भिक्षा क्षिप्र ॥ एहि बीच आयो क्षुधा पीडित तास पति अतिमान । देखि पतिहि क्षुधार्त भूलि सो गई भिक्षा दान ॥ धोइ पद आचमन पतिको दियो आसन पर्म । दियो भोजन मधुर व्यञ्जन रचित दायक शर्म ॥ कियो पति उच्छिष्ट भोजन आपु अति सुखदान । बित्त वृत्यनु सरति पतिकों जानि देव समान ॥ कर्म मनसा बचनतैं पतिमाह सो अनुरक्त । पति शुश्रूषण करति सो सबभावसों अतिभक्त ॥ देवतातिथि सासु ससुरहि करति तोषित तौन । किए नियमित रहति इन्द्रिनकों महामतिभौन ॥ सकल बिधि करि स्वपति सेवन स्मरण कीन्हो बिप्र । रहो द्विजबर तहाँ आई लए भिक्षा क्षिप्र ॥ ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ मोहि ठाढे होऊ कहि तुमकियो बिलम्ब महान । किया अति अपराध आई देनकों अब दान ॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ क्रोधसों सन्तप्त ब्राह्मण भयो अग्नि समान । देखिकै तेहि शान्ति पूरित कहे बचन प्रमान ॥ * ॥ स्त्र्युवाच ॥ * ॥ क्षान्ति कीजै बिप्र आयो क्षुधित मम भर्त्तार । देन भोजन लगी दैवत स्वपति मोहि उदार ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ द्विज न गुरु पति आपनो तुम कियो महत महान । करतहीं गृहकर्म करिकै बिप्रको अपमान ॥ डरत ब्राह्मणकों सुराधिप कहा मानव मर्म । सुनो बृद्धनसों न कीन्हो गर्वते यह कर्म ॥ करै पृथिवी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भस्म ब्राह्मण लहि अमान विरोध ॥ स्त्र्युवाच ॥ नहि बलाका बिप्रहैं हम क्षमा कीजै क्रोध ॥ क्रोधकी यह दृष्टि तव मम करैगो न बिरोध। बिप्र दैव समान मेरे नियतहै यह बोध ॥ क्षमा कीजै क्रोध मोपै करहु नहि तपधाम। बिप्रको हम क्रोध जानति भाग्य अति अभिराम ॥ कियो सिन्धु अपेय जल करिकै महामुनि क्रोध। बातापि असुर पचाय दीन्हो उदरमे करि रोध ॥ सुनो बहुत प्रभाव हम द्विजबरणको अतिराम। क्रोध बिप्रन्हको क्षणिक द्विज होत करुणाधाम ॥ पति शुशूर्षण धर्म मोको रुचत बिप्र उदार। देवतनतैं अधिक दैवत गननिहों भर्त्तार ॥ पति सुशुर्षाको लखहु फल प्रगट मोमे जौन। दही बनमे तुम बलाका बिदित हमकौं तौंन ॥ मनुज कैहै देह बासी क्रोध शत्रु महान। क्रोध मोह बिहीन ब्राह्मण होत देव समान ॥ सत्य बोलत गुरुन्ह तोषत हनत नहि सो ताहि। शुचि जितेंन्द्री धर्म पर निति पढत श्रुति अवगाहि ॥ लोक जानै सदृश आत्मा काम क्रोधहि जीति। करै यज्ञ कराय जानैं देय दान सप्रीति ॥ पढै आपु पढाय जानै बेद बिद्या पर्म। लहत ब्राह्मण ताहि बिबुध बिचारि नियमित धर्म ॥ *◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥

बोले सत्य असत्य नहि दम आर्य्यव गुण युक्त। स्वाध्यायी द्विजबरणको बेद बिहित गुण उक्त ॥
धर्म देखि बहु बिधि परत कहत धर्मबिद जौंन। बसत नियमित सत्यमे है धर्म कहियत तौंन ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

धर्म माह प्रमाण है श्रुति कहत बृद्ध सुजान। सूक्ष्म बहुधा परत है लखि धर्म हे भगवान ॥ धर्मकों तत्वार्थ तुमकों बिदित हीं सब बिप्र। धर्म व्याधहि बूझि ए करि गमन मिथिला क्षिप्र ॥ पिता माता भक्त सो है व्याध सुमति महांन। करै गो उपदेश तुमकों तौन तत्वज्ञान ॥ यथा इच्छा जाहु तापै भद्र लहि हौ क्षिप्र। कहो हम कछु जौन तुमकों क्षमा कीजे बिप्र ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ भए बहुत प्रसन्न हम गतक्रोध तव कल्यान। लहो हम तव बचन ते शुभ मोक्ष करता ज्ञान ॥ होय तव कल्यान मैथिल नगरको हम जात। बसत है जहँ धर्म नामक व्याध गुण अवदात ॥ होय कौशिक बिदा तासों गए अपने धाम। करत निन्दा आपनी मन किए बिस्मित माम ॥ ◆◆

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणिपतिव्रतोपाख्यानवर्णनोनाम षष्ठचत्वारिंशदध्यायः ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कौशिक श्रद्धावान ह्वै धर्म प्राप्तिको भूप। चले सुमैथिल नगरकों जनपद लखत अनूप ॥
मैथिल पुर कौशिक गऐ जनक सुरक्षित तौन। चारो बर्ण स्वधर्म रत अपनो अपनो जौन ॥
राजभौंन सम भौन सब यथा रचित अति रूप। गो पुर सौध प्रकार बर बीथी परम अनूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

चतुरङ्गिणि सेना सहित यज्ञोत्सव सह धाम। कौशिक देखो नगर जन भरो मोद अभिराम॥
कौशिक बूझो द्विजनसों धर्म व्याध को स्थान। तिन बताय दीन्हे लखो जाय व्याध मतिमान॥
व्याध करत पशु बध जहां तहँ लखि कौशिक ताहि। खडे भए एकान्तमे बिप्र घृणा अवगाहि॥
जानि व्याध सहसा उठो आयो कौशिक बिप्र। रहे खडे एकान्तमे गयो तहा चलि बिप्र॥

॥ * ॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

बिप्र तुम्हे बन्दन करत भो आगम तव पर्म। तब किंकर हम व्याध सो कहऊ करै सो कम॥
पतिब्रतै तुमसों कहँा जावे मिथिलां जौन। आए तुम जेहि हेतु इत हम जानत है तौन॥
व्याध बचन सुनतै भए कौशिक बिस्मयमान। पतिब्रता सम व्याधको जानि त्रिकालज्ञान॥
ठाढेहूवे योग्य नहिँ तुम्हे ठौर यह बिप्र। ताते मेरे धामकों रुचै तौ चलिये क्षिप्र॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

कहि तथास्तु आगें भए चले व्याधके धाम। कौशिक लखि बिस्मय भरे तास ज्ञान अभिराम॥
व्याध गयो ले बिप्रको धाम आपने पर्म। पाद्यासन आचमन तहँ सबिधि दियो सहशर्म॥
पूजित व्है सुखसों तहाँ बैठि बिप्र मतिधाम। कहो व्याधसों कर्म यह नहि तो सम अभिराम॥
खेद होत मनमे महा लखि तव कर्म अपर्म। व्याधउवाच बिप्र कुलोचित पर्म यह पारंपरिक स्वधर्म॥
बिहित बिधाता कर्म जो सो पालत मतिमान। सेवन माता पिताको करत सजन सबिधान॥
सत्य कहत अनसूयव्है देत स्वशक्ति प्रमान। देवातिथि अवशिष्ट सो भोजन करत सुजान॥
हम न करत कछु कर्म नहि बिन्दत जो बलवान। कर्महि लागत पूर्व कृत कर्म सुखद दुखदान॥
करत स्ववर्ण समान जन कर्म जीविका हेत। यथायोग्य पालन करत तिनको भूप सनेत॥
योजित करत स्वकर्म मे तजै जो अपनो धर्म। प्रजा डरैं नृपकों सदा नीति निपुण जे पर्म॥
देत दण्ड नृपजनक जौं सुत दुर्बृत्त लखाय। धर्मशील सुख लहैं जौ अधरमशील डराय॥
चारचक्षु सब धर्म रत प्रजा बिलोकत भूप। राज्य दण्ड स्त्री लखत हैं स्वचिन्हको अनुरूप॥
चाहत जनक स्वधर्मतें बर्धित श्री अतिमान। त्राता चारो वर्णको है भूपति सुखदान॥
परतें हनित बराह मृग महिष मांस क्रय कर्त। बँचि ताहि अपनो कुटुम्ब स्वधरम सो सब भर्त॥
मांस न भक्षण करतहैं ऋतुगामी तियपास। सदा नक्त भोजन करत दिनभरि धरे उपास॥
नृपकों होत अधर्म रत होत प्रजासब क्षीन। कुब्ज अन्ध पंगुल बधिर जन्मत षट अरि पीन॥
जनक नृपति यातें लखत सिगरी प्रजा सधर्म। धरे अनुग्रह प्रजन्ह पर करत धर्मरत कर्म॥
करत प्रसंशत हमै जन निन्दत हमको जौन। करत साधु ताते तिन्है हम तोषित मतिभौन॥
जे जन रहत स्वधर्मते पालत तिनकों भूप। सन्तत बितरत अंश सब धर्म तितीक्षा रूप॥
यथा योग्य पूजन करत भूत याचकों सर्ब। नहीं त्यागतें अन्यगुण जनगणमाहँ अगर्ब॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प०

करत अयाचित परम प्रिय कहत न मिथ्या बैन । काम क्रोध बश द्वेषते धर्म त्यागकर है न॥
प्रियतैं करत न हर्ष अति अप्रियतें न उताप। कष्टभरे नहि धर्मको कोऊ करत अथाप ॥
पापी प्रति जो पापव्है सेा नहि पाप सुजान । नास्तिधर्म कहि साधुकों हँसत जो भरो अयान ॥
नास्तिक पावत नाशकों जोहै दूषक धर्म । साधु भूलि पातक करत नष्ट होत सो कर्म ॥
पापी पुष्ट असारहै चर्मपात्र सम तौंन। आत्म प्रसंशनसों सुनऊ सेा तहँ मूर्ख न जौंन ॥
धन बिन शेाभित होतहै शील सहित गुणवान । यथा बाल शशिको करत वन्दन साधु सुजान ॥
औरनको निन्दाकरै कछू एक गुण पाय । किंशुक सुमन सुकाश मम जाय प्रकाश नशाय ॥
शेाचै भ्रमबश पापकरि फिरि न करौं यहकर्म । जाय छूटि सेा पापतैं करै शेाचसेा शर्म ॥
जप तप तीरथ गमनते होय पापसेा नष्ट। पाप नाशकर कहतिहैं यह स्मृति अथबिस्पष्ट ॥
करै पाप अज्ञानबश नरबध धार्मिक जौंन । धर्म कर्मतें लहतहै नाश कलुष कृत तौंन ॥
पाप करै करिकै न हम कियेा जेा मानत मूढ । हनत ताहिं ते देवता रहत जे अन्तर गूढ ॥
प्रथम पाप करि फिरि चहै करिबे मेाक्ष उपाय । छुटै पापते भानु ज्येा घन घनते कढिजाय ॥
लेाभ पापको मूल नर होत लेाभबश जौंन । पाप अनेकनभाँतिके करत बिप्र सुनु तौंन ॥
धर्म समान अधर्म तृण जौंन दम्भकों रूप । दम्भी मूढ रहतहैं पापकर्मको कूप ॥
दम्भिनते अरु साधुते जानि न परत विशेष । शिष्टाचार बिहीनते धरें कपटको बेष ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

धर्मव्याधसेां फिरि कियेा कौशिक प्रश्न उदार । कहऊ हमै जानेा परै जैसे शिष्टाचार ॥
यज्ञ दान तप बेदको जेा अध्ययन उदार। एहै पाँच प्रकारके नियमित शिष्टा चार ॥
काम क्रोध अरु दम्भको जीतै लेाभ महान । नित्य धर्म ऋजुता सहित शिष्टाचार सुजान ॥
गुरु सुश्रूषणको करै कहै सत्य तजि क्रोध । है यह शिष्टाचारको लक्षण रहित बिरोध ॥
सत्य बेदको सारहै सत्य सार दम जौंन। त्याग सार दमको कहत शिष्टाचार सु तौंन ॥
करत असूया धर्मको भरे मेाह मति जौंन । चलत कुपथमे होतहैं पीडित हे द्विज तौंन ॥
शिष्ट निरत श्रुति त्यागमे सत्य धर्म रत जौंन। एहि सह शिष्टाचार जन लहत परमहै तौंन ॥
नास्ति कहत मर्याद जे क्रूर पाप मतिमन्द । तिन्है त्याग जे करतहै पाय ज्ञान सम चन्द ॥
काम लेाभ मद ग्राह मय पञ्चेंद्री जल पूर । जन्म नदी तरि जात ते करि धृति नौका सूर ॥
कर्म नाश है ज्ञानको धर्म बुद्धि सम राग । शिष्टाचारी साधु पट शुक्ल सदृश बड भाग ॥
सत्य अहिंसा जगतमे सर्व भूत हित तान । परम अहिंसा धर्मको सदां सत्यमे भौंन ॥
सत्य माहँ धरि बृत्तिकों करै प्रवृति जेा शांन्त । गुरु है शिष्टाचारमे हे द्विज सत्य नितान्त ॥
लक्षण है द्विज साधुको प्रथम धर्म आचार । यथा प्रकृति जेा जन्तु है तास प्रकृति सेा सार ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

काम क्रोध माहादि बहु पावत दोष अपान। न्याययुक्त है कर्म जो सो सत धर्ममहान॥
क्रोध असूया दम्भ मद मत्सर रहित सुजान। ऋजु समदर्शी लहत हैं शिष्टाचार महान॥
बेदविहित शुचि शुद्धमति गुरु शुश्रूषण जौन। वृद्ध दान्तसो लहत हैं शिष्टाचार सु तौंन॥
शिष्टाचारी महत ते लहत स्वर्गको बास। सज्जत ते नर धर्मधुर करत पापको नाश॥
बेदधर्म शास्त्रोक्त जो परमधर्म है तौन। शिष्टाचार सु शिष्टको त्रिविधि धर्म मतिभौंन॥
क्षमा सत्य ऋजुता दया सताचार युत जौंन। दयावान सब भूतमे अहिंसक मतिभौंन॥
परुष बचन बोलत नहीं सन्तत द्विज प्रिय इष्ट। पाक शुभा शुभ कर्मको जे जानत हैं शिष्ट॥
न्याययुक्त गुणयुक्त है सर्वभूत हित जौंन। सन्त स्वर्ग जीतत चलै सदा सु सत्पथ तौंन॥
दाननिष्ट सुख लोककों प्राप्त होत है विप्र। यथाशक्ति बसु देत हैं सन्त अतिथिको क्षिप्र॥
तीनि कहत सत परमपद बिनो क्रोधको दान। सबपर दया करत निति कहत सत्य सुखदान॥
सेवत शिष्टाचारको जौन विहितपथ उक्त। लहत सन्तज परमपद महामोदसों युक्त॥

॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥

धर्मव्याध फिरि बिप्रसों ऐसे बोलो बैन। सदा करत हम कर्मसों घोर रूपको ऐंन॥
पूर्वकर्म दुस्तर महा बिधि कर्त्ता बलवान। कर्म पुराकृत पापको दोष न मिटत महांन॥
बिप्र पुरातन कर्मको दोष न शकत नशाय। बिधि हत हम यातें भए घातक घोर प्रभाय॥
निमित्त भूत हम बिप्र यह याते करि ए कर्म। या वशबिक्रय मांसको करत सनातन धर्म॥
होत बिप्र यह मांसके भक्षणमे मति धर्म। देवातिथि अरु पितृको करिबो पूजन पर्म॥
पशु पक्षी मृग औषधी अन्नादिक अरु ऐन। भूत लोकमे सकल रस नियमित श्रुतिके बैंन॥
आत्ममांसके दानतें शिबी उशीनर भूप। क्षमावान दुर्गम लहो स्वर्ग बास सुखरूप॥
रन्तिदेव भूपालको होय जहां जेवनार। दै हजार पशुको तहाँ नित बध होय उदार॥
अहंन्यहनि द्वैसहस्र गो बध करि सो भूपाल। अन्न सहित द्विजबरनको भोजन दियो बिशाल॥
कीरति ताको जगतमे अतुल भइ सब लोम। रन्तिदेव बिधिवत हनत रहो जो गो पशु तोम॥
कहत मांसप्रिय अग्निको बेदविहित बिधि पर्म। याते ब्राह्मण यज्ञभे पशुबध करत सधर्म॥
देव पितरको देय के सदा मांस जे खात। मांसाशनके दोषको सो बिधि करत निपात॥
सत्य ज्ञानके मार्गको करि बिचार अनुरूप। मनुज मांस भक्षण कियो नृप सौदास अनूप॥
बिप्र साथ भयते करत हम यह स्वधरम कर्म। जानि पुरातन आपनी जाति बंशको धर्म॥
करै कर्म केहिभांति शुभकर्म हरै यह जौन। घोर कर्मको बरजत बिधि है निर्णय मतिभौन॥
सत्य दान गुरु भक्तिमे द्विज पूजनमे नित्य। तजि अतिवाद अभिमान मम बसत धर्मसे चित्य॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

साधु कृषी करिबो कहत ताको सुनऊ बिधान। हल बाहत भूमिस्थ बऊ मरत जीव मतिमान ॥
धान्य बृहीमे बीज जो जीव जानिये तौंन । होत तुम्है भाषित कहऊ बिप्र मतिके भौंन ॥
मारि खात जो पशून्हकों सो सब जीव समान । वृक्ष औषधी फलन्हमे बसत जीव बऊमान ॥
करिवो जौन स्वकर्मको तौन नियत है धर्म। देहीकों नहिँ तजत है पूर्व कियो जो कर्म ॥
बसत उदकमे जीव बऊ सुनऊ बिप्र मतिभौंन। जगत व्याप्त सबजीवसों प्राणी जीवन तौंन ॥
मत्स्य मत्स्यकों खात त्यों जीव जीवकों सर्ब । भक्षत प्राणी जीवकों खर्ब हि सदा अखर्ब ॥
जीव जीवसों जियत है करि भक्षण बऊरूप। सूक्ष्मरूप जे धरापर बासी जीव अनूप ॥
मनुज तिन्हैं चलि चरणसों नित्य हनत बऊमान। सूते बैठे जीवकों ज्ञानी जन अज्ञान ॥
जीवनसों व्यापक लहौ पृथ्वी अरु आकाश। तिन्है हनत बऊ भांतिसों पाए बिना प्रकाश ॥
करत न हिंसा हम कहत भूल भरे नर तौंन । जीवन मारत जगतमे बऊबिधिके नर कौन ॥
धर्माधर्म बिचार बऊ को कहि पावै पार । जोरत रहत स्वधर्ममे ताको सुयश उदार ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयबाच ॥ * ॥

धर्माधर्म विचारबिद धर्मव्याधसो भूप। फेरि लगे अैसें कहन नियत धर्मको रूप ॥

॥ * ॥ धर्मव्याधउबाच ॥ * ॥

प्राणाघात अरु व्याहमे मिथ्या कहत सुजान। सो मिथ्या सम सत्यके सो न अनृत समान ॥
जीवन्हको अत्यन्त हित सो है निश्चय धर्म। प्राप्त पुरुषकों होत जो करत सुभाशुभ कर्म ॥
करत दैवनिन्दा मनुज पाए दुःख महान। दोष न अपने कर्मको जानत सो अज्ञान ॥
नीतिमानको होत है पौरुष व्यर्थ न बिप्र। जौंन कामना करत तेहि प्राप्त होत सो क्षिप्र ॥
पराधीन नहिं होत जो पौरुषको फल तौंन। दक्ष जितेन्द्री जगतमे बुद्धिमान नर जौंन ॥
सर्ब कर्मते हीन हैं निष्फल मानुष जौंन। पूर्बजन्ममे जीवके हिंसाकारक तौंन ॥
पूर्बजन्म कृत कर्म फल आधि व्याधिको रूप। धरि कै बाधा करत है नानाभांति अनूप ॥
औषधी दै तिनको करत बारण बैद्य सुजान। या बिधि नानाभांतिके औषध रोग महान ॥
पूर्बजन्मके कर्म सम जीव लहत कृत सिद्धि। जीव सनातन नित्य है बेद बचन यह बृद्धि ॥
सबकी देह अनित्य है जीवमात्रकी जौंन। देहान्तरको लेत है जीव देह तजि तौंन ॥

॥ * ॥ ब्राह्मणउबाच ॥ * ॥

कर्मबिदनको होत क्यों जीव श्रेष्ठ मतिमान। सो हम सुनिवे चहत है तुमसों सुनऊ सुजान ॥

॥ * ॥ व्याधउबाच ॥ * ॥

जीवनाशको लहत नहिं भए देहको नाश। देहान्तरकों लेत है जीव सुनऊ मतिराश ॥
जीव लहत कृतकर्मको करि देहान्तर बास। भोग करत कृतकर्म सो नहीं कर्मको नाश ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पुण्यशील ते होत है पुण्यशील नर जौंन। पापशील ते होत हैं जीव पापरत जौंन ॥

॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥

पाप पुण्यमय योनिमे लेत जन्म केहि भाँति । जाय लहत केहिभांतिसों पाप पुण्यकी जाति ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

लहत पुण्यकृत पुण्यमय देवयोनि अभिराम । पाप पुण्य मिश्रित लहत मानुषयोनि सकाम ॥
लहत तामसी योनिकों तिर्य्यक तामसि जौंन । फेरि कर्मको करत हैं नूतन बज्रबिधि तौंन ॥
तिनतें फिरि सो पचत ज्यौं रोगी सेय कुपथ्य । नित्य लहत सो दुःखकों सुखसो चहत अतथ्य ॥
व्है निवृत्त सो कर्मते जीव शुद्धता पाय । योग तपस्या करत लहि ज्ञानमार्ग सुखदाय ॥
बज्रत कर्म करि जीव सो बज्रलोकनको जात । बन्धन मुक्त न होत हैं तहँते लहत प्रपात ॥
छुटें बासना बन्धतें होय शुद्ध अवदात । लहत लोक सुकृती परम जहाँ न शोच प्रयात ॥
प्राय करत ते पापको पापी लहत न अन्त । पुण्यवन्त तातें करहिँ पापकर्म तजि सन्त ॥
कृतज्ञ असूया छोडि जे सेवत पथ कल्यान। धर्म अर्थ अरु स्वर्ग सुख पावत तौंन सुजान ॥
प्रभुता पावत मनुज है बिप्र धर्मफल तौंन । लहत तहो सन्तोषको पाय धर्मफल जौंन ॥
होत धर्मफल बय्य नहि ताको होत बिराग । दोषबद्ध नहिँ होत सो लहत मोक्ष बडभाग ॥
सर्वकामकों लहत सो चहत जौंन सुखदान। इन्द्रिनको अवरोध करि समदमसों मतिमान ॥
ब्राह्मणपदकों होत है प्राप्त तौंन मतिधीर । इन्द्रीनको जो करत है निग्रह बुद्धिगभीर ॥

॥ * ॥ कौशिकउवाच ॥ * ॥

इन्द्री जिनको कहत है तिनको निग्रह जौंन । कौंन भाँतिसों होतहै कहऊ व्याध मतिभौन ॥
कैसे ताको लहत फल इन्द्रीनिग्रहजन्य । तुमसे सुनबे चहत हम कहऊ तौंन मतिधन्य ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

कौशिकके सुनि कै बचन धर्मव्याध नृपधर्म । यथा कहो तेहिबिप्रसों बचन सुनऊ अतिपर्म ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

अन्धकारबासी जो मन रूप ज्ञानके अर्थ ।इन्द्रिएके सो छिद्रतें निकशत सुनऊ समर्थ ॥
रूप ज्ञान लहि कै लहत काम क्रोध मद मोह । करत दम्भ धरि धर्म करि लोभादिकतें छोह ॥
लोभादिक बश करत है सो सब दाम्भिक कर्म । ताके फलकों लहत नहिँ श्रोत्ता मानत पर्म ॥
इनदोषनके त्यागकों करत जो पूर्ब सुजान । सुख दुखमे सो भजत है साधुसङ्ग मतिमान ॥
साधुसङ्गतें धर्ममे फैलति ताकी बुद्धि । कौशिकउवाच । धर्मतत्व कऊव्याध जौ करै सुमतिकों शुद्धि ॥
तुमसों वक्ता धर्मको है न जगतमे आन । दिव्य प्रभावसो व्याध हौ तुम ऋषिराज समान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

महाभाग ब्राह्मण सदा पितर अग्रभुज पर्म । करै सर्वथा तासप्रिय जो जगमाँह सुधर्म ॥
तुम्है जैंन प्रिय बिप्र है कहत तौन हम सबै। ब्राह्मीबिद्या जैंन है भाषत सुमति अखर्ब॥
है अलभ्य यह कर्मतें बिश्व कहत बुध जैंन । महद्भूतात्मक ब्रम्ह है तातें परतर कौन ॥
गगण बायु अप अग्नि भू महातत्व जग मूल । शब्द परस्पर रूप है गुण गन्धादिक तूल ॥
षष्टम इनसों कहत है मन चैतन्य स्वरूप। बुद्धि सप्तमी अहङ्कार है अष्टम सुनऊ अनूप॥
पञ्चन्द्री अरु आत्मा गुण सत्व रज तम जैंन। व्यक्त कहू अव्यक्त है यह सबहि मतिभैंन॥
इन्द्रियार्थ ए सर्ब हैं व्यक्ता व्यक्त स्वरूप । चौबिश व्यक्ताव्यक्त ए गुण मै कहौ अनूप ॥
तुम बूझो हम कहो सो कौशिक मुनि मतिमान। अब आगे सुनिवे चहत जो सो कहऊ सुजान॥

॥ * ॥ मार्कण्डेय उबाच ॥ * ॥

धर्मव्याधके सुनि बचन ऐसे सुमुनि अनूप। फेरि व्याधसों प्रीति करि कियो प्रश्न सुनु भूप ॥

॥ * ॥ ब्राह्मणउबाच ॥ * ॥

महाभूत तुम पञ्च जे कहे सुनऊ बिदधर्म। एक एकके गुण कहऊ भिन्न भिन्न करि पर्म॥

॥ * ॥ व्याधउबाच ॥ * ॥

भूमि आप पावक अनल पञ्चम जो आकाश। सकल गुणी इनके कहत गुण सुनिये मतिराश॥
बसत भूमिमे पांच गुण उदकमांह गुण चारि । तीनि तेजमे बायु नभमे गुण तीनि बिचारि॥
रूप शब्द रस गन्ध है स्पर्श भूमिगुण पांच। गन्ध बिना गुण सलिलमे बसत चारि ए सांच ॥
स्पर्श शब्द अरु रूप है पावकमे गुण तीनि। स्पर्श शब्द गुण बायुमे शब्द गगणमे पीनि।
ऐसे ए गुण भूतके बसत देहमे सङ्ग। इन्है तजत है जीव तब होत देहको भङ्ग ॥
देहान्तरको लेत है तब देही लहि काल। एहि अनुक्रमसों लहत असु जीवन मरण बिशाल ॥
तहां तहां रेतादि रस भौतिक धातू सभूह। देखि परत सबभूत ए गुणिगण कीन्हे ऊह॥
इन्द्रिनसों जो करत है कर्म व्यक्त है तौन। लिङ्ग कहत अव्यक्तको बिषय प्रकाशक जैंन ॥
आत्मा जानै लोकमय आत्मामे सब लोक । अन्य भावते रहित व्है भूत लखै मति ओक ॥
लखत ब्रह्मभव भूतको सदा ब्रह्ममे जैंन। पाप पुण्यके कर्मसों खिन्न होत नहि तौन ॥
होति अबिद्या क्लेशको मूल कहत मतिभैंन। यातें बिद्या बश्य करि ज्ञानपन्थमे मौन॥
अनादि निधन अव्यय अमित आत्मयोनि भगवान अनुपम जीव अमूर्तिसों कहतसकल मतिमान॥
तप मूलक यह सर्ब है द्विज पूछत तुम जैंन। इन्द्रिनके जीतें बिना व्यर्थ होत तप तौन ॥
स्वर्ग नर्कके गमनको कारण इन्द्री सर्ब। इन्द्रिनको जय योगको है बिधि बिहित अखर्ब॥
षटइन्द्रिन्हको जीति के करै जो योग समर्थ युक्त होत ताकों नहीं जो कृत पाप अनर्थ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रथ सरीर इन्द्री तुरग बुद्धि सूत धृतिमान। सावधान व्है सुपथमे चलै सुरीछित जान॥
इन्द्रिन्हके आधीन मन जास होय युतभाव। तास बुद्धि हरि लेय जौ सिन्धुलहरि परि नाव॥
इन्द्रिनके बस करत है कर्म शुभाशुभ जौंन। लिङ्ग देह ताको ग्रहण करत सो अव्यय तौंन॥
अब्दादिक इन्द्रीनको जीव तपत ज्यौं धारि। लोकमयी आत्मामय त्यौं लोकही निरधारि॥
रहित परापर ज्ञान सब देखै भूत स्वरूप। ब्रह्म भूत संयोगसो आनद सुखद अनूप॥
जौंन परापर ज्ञान है क्लेश मूल है तौन। लहत परापर ज्ञान नहिँ भूत ज्ञानरत जौंन॥
ज्ञानमार्ग चलि परमपद को योगी चलि जात। अनादिनिधन जो जीव सो अव्यय अतनु सुख्यात॥
तपो मूल यह सर्व है मुनि तुम बूझो जौन। इन्द्री निग्रहतें न तप व्यर्थ होत है तौंन॥
इन्द्रिनहींसो होत है स्वर्ग नर्कको बास। सवश अवश इन्द्री करै पुण्य सुपाप प्रकाश॥
इन्द्रिनके बस किए बिन बाढत दोष अखर्ब। इन्द्रिनको बस किएते सिद्धि लहत जन सर्ब॥

॥*॥ मार्कण्डेयउवाच॥*॥

कौशिक सुनि कै व्याधसों ऐसे धर्म विचार। धर्मव्याधसों प्रश्न फिरि कीन्हो सुमति उदार॥

॥*॥ ब्राह्मणउवाच॥*॥ जचकरीछन्द॥*॥

सत रज तमगुणको गुण जौंन। कहऊ व्याध हमसों सब तौंन॥ व्याधउवाच॥ कियो प्रश्न जो विप्र सुजान। कहत तौंन हम सुनऊँ प्रमान॥ मोहात्मक है तमगुण जौंन। तास प्रवर्तक रज मतिभौंम॥ सतगुण महताकाश स्वरूप। क्रोध रहित मतिमान अनूप॥ दान्त धीर धुर शान्त उदार। रुचत न रज तमकों व्यवहार॥ तमगुणव्याप्त पुरुष है जौंन। निद्राशील अचेतन तौन॥ दुष्टेंद्री आलसमय तब्ध। भरो क्रोध कृतकुत्सित लब्ध॥ कहै प्रवृत्तवाक्य सह गर्व। मानी मत्सर मन्द अखर्ब॥ राजस भरे पुरुष है जौंन। है पद दूषण दर्शी तौंन॥ कहे त्रिगुणके गुण गणरूप। कहा सुनो अब चहत अनूप॥*॥ ब्राह्मणउवाच॥*॥ पार्थिवधातु पाय गम्भीर। भयो अग्नि केहिभाँति शरीर॥ तामे अनिल पाय अवकाश। कौनभाँति प्रसरत मतिराश॥ मार्कण्डेयउवाच॥ ऐसे प्रश्न कियो द्विज पर्म्म। फेरि व्याधसों सुनु नृपधर्म॥ सुनि कै व्याध विप्रके बैन। ऐसो कहन लगो मतिऐन॥ व्याधउवाच॥ मूर्धामे करि पावक बास। पालै देह सुनो मतिराश॥ प्राणहि मूर्द्धा अग्नि मझार। बसि कै चेष्टा करै उदार॥ भूत भविष्य सहित वर्तमान। बसत प्राणमे सुनऊ सुजान॥ ब्राह्मणयोनि सो रूप बिराढ। श्रेष्ठ प्राण भूतात्म निराढ॥ सोइ अहङ्कार अरु बुद्धि। विषय सोई भूतात्मा शुद्धि॥ भीतर बाहेर पालत प्रान। देहेन्द्रिनको दीप समान॥ बसि नाभि गुदमे पवमान। बसत समान अपान सुजान॥ बसत कण्ठमे वायु उदान। गमनागमन करत सुखदान॥ फिरत अस्थिसन्धिनमे जौंन। व्यान वायु बुध भाषत तौन॥ अग्नि धातुगत जौंन समीर। सो समान

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भाषत मतिधीर ॥ षटबायुन्हको मेलन जौंन । तातैं उष्मा उपजति तौंन ॥ सो जठराग्नि होय सम्पन्न। जो पाचन करत है अन्न ॥ समान बायुके मधि आय । प्राण अपान बसत जब जाय ॥ सत्य धातु लै देहाधार । बाल्य जरालों करै उदार ॥ बातज पावक अन्न पचाय । मिलि अपानसों देय गिराय ॥ अग्नि बेगवह बायु जो प्राण । गुदप्रबेश करि ताड़ि अपान॥ कंदुकलों फिरि उछरत तौन । पुनः करत पावककौं गौन ॥ पक्वास नाभी अध जौंन । ऊरध रहत आमासय तौन ॥ नाभिमध्य प्राणादिक पौन। पांचौ किएँ रहत हैं भौन॥ नाडी तिर्य्यक उर्ध अध जौन। ह्रदै प्रवृत्ति किये दश तौन ॥ पोषे तनमे प्रेरित प्राण। लेय अन्नको रस सुखदान ॥ है योगिन्हको मारग तौंन।एहि पंथ करै अनिस जे गौन॥ आत्मा मूर्द्धामांह गभीर। राखत हैं जो तेज सुधीर॥स्थूलदेह इन्द्रिनको भौन। तामे प्राण अग्नि है जौन ॥ नित्य आत्मा जानहु आहि। योगी जीति करत बश ताहि ॥ स्थूल प्रकाशक पावक तौंन । ता पावकमे कीन्हे भौंन ॥ रहत देव क्षेत्रज्ञ सुजान । सोइ प्रकाशक ज्योति समान ॥ है परमात्मा जीव सुजान । गुणी जीव निर्गुण है जौन ॥ सो परमात्मा आंनदभौन । बिम्ब भिन्न प्रतिबिम्ब समान ॥है परमात्माजीव समान। जीव सचेतन गुणमय जौंन॥ लरै सचेष्टित सबको तौंन।ताते पर क्षेत्रज्ञ सुजान॥सात भुवन जो रचो महांन।भूतात्मा सबभूतन्ह माहँ ॥ किए प्रकाश यथा निशिनाह ॥ सूक्ष्मबुद्धि ते देखत तौन। ध्यान ज्ञानरत हैं जन जौंन॥ शुद्ध चित्त लहि कलुष बिहाय। आत्मामे स्थिति सुखमय पाय ॥ तजि सारूप्य चित्तकी तौंन। सुखमय मोक्ष लहत जन तौंन ॥ चित्त प्रसन्नको लखन अनूप । यथा तृप्त सों बत सुखरूप ॥ जौ निर्वात दीप लहि भौन।करत प्रकाश यथा स्थिति भौन॥शुद्ध चित्त करि पुरुष अनूप। लखै आपुमे आत्मारूप ॥ चित्त होय जब आत्मा लीन । आत्मा दर्शन लहै प्रवीन ॥ लोभ क्रोधको करिवो नाश।सो तप मूल सुनो मतिराश॥तप रक्षण करिए हनि क्रोध। धर्म करिहिँ मत्सरकों रोध॥बिद्या रक्षण करै सुजान । मानामान हिँ मानि समान ॥ तपके पार पाइवे हेतु । ज्ञान बिहित यह निर्भयसेतु॥ है अनृशंस्य होयवो धर्म । क्षमा परम बल जनकों पर्म ॥ आत्मज्ञान सो निश्चय ज्ञान। सत्य परमव्रत सुनहु सुजान॥ सत्य श्रेयको निर्भय धाम। सत्य भूत हित है अभिराम ॥ फल करि त्याग करै हुतदान। सोई त्यागी कहत सुजान॥ भूतमात्रकी हिंसा हीन। चलै मैत्रसो मार्ग प्रबीन ॥ नहि दरिद्र कीन्हे सन्तोष । आशा तजैं चपल तामोष॥ ज्ञान अपन यह जानहु पर्म। हे कौशिकमुनि सुनहु सधर्म॥ सङ्ग छोडि कै यतव्रत होय। अचल लहै सुरपुरको सोय॥ यथा बेद बिधि बिहित बिधान। बिप्र कहो हम सो सब ज्ञान॥ अब हमसों का बूझत बिप्र। हम तुमसों सो कहि है क्षिप्र॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ धर्मव्याधसों यों सुनि धर्म। बोलो बिप्र प्रीति लहि पर्म॥ कहे न्याययुत तुम सब बैन। अबिदित व्याध तुम्है कछु है न॥ * ॥ व्याधउवाच॥ * ॥ धर्म प्रगट है मेरो जौन। सो तुम लखत बिप्र मतिभौंन॥ जातें सिद्धि लहो हम बिप्र। लखहु चलहु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मम गृहमें छिप्र ॥ माता पिता हमारे जौन । तिनको लखऊ विप्र मतिभौंन ॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ यह सुनि विप्र गए ता धाम । देवालय सम लखो ललाम ॥ शयनासन सब्यन्न अनूप । परम विचित्र सुगन्ध स्वरूप ॥ जननी जनक धरैं शुचिवास । दिव्यासन बैठे सुखरास ॥ धर्म व्याधसों पूजित तौंन । दिव्याहार तुष्ट सुखभौंन ॥ धर्मव्याध तिनकौं लखि जाय । प्रणित शीससों परशे पाय ॥ उठु सुपुत्र ते बोले पर्म । रक्षण करौ तुम्हे निति धर्म ॥ होऊ शतायु पुत्र ते शर्म । मिलै ज्ञान गति सुमति सधर्म ॥ यावदग्नि तुम पुत्र समान । पितृभक्त अनुपम सुखदान ॥ व्याध पितासो औंसर पाय । मुनिको आगम दियो सुनाय ॥ कुशल विप्रसों बूझि सुजान । पूजन कियो वृद्ध सुखदान ॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ पूजन कियो विप्र स्वीकार । तब लखि बोलो व्याध उदार ॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥ माता पिता सुदैव समान । मोकों सुनऊ विप्र भगवान ॥ माता पिता कहै जो बैन । सो करतव्य हमै मतिऐन ॥ इन्द्र सहित सब सुरन्ह समान । माता पिता हमै भगवान ॥ परब्रह्म सम माता तात । हम पूजत सब बिधि अवदात ॥ माता पिता अग्नि गुरु जौन । ए सबको गुरु हैं सुखभौन ॥ इनको पूजन करिवो पर्म । है गृहस्थको नियमित धर्म ॥ दिव्य दृष्टिसों देखो तौन । कहो पतिव्रते तुमसों जौन ॥ ज्ञानलाभ हित मोपै विप्र । तेहि पठयो मिथिलाको छिप्र ॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ मोकों ज्ञानदृष्टिसों जोहि । तब तेहि पठयो मोपहँ तोहि ॥ सुनऊ विप्र यह मोसो बैन । तुमको जौन कहत हित ऐन ॥ माता पित हि छोडि तुम जान । वेदपढन आए मतिभौन ॥ यह तुम कीन्हो अनुचित धन्ध । भए शोकतें तबतें अन्ध ॥ तिन्हे प्रसन्न करऊ तुम जाय । है यह धर्म तुम्हे सुखदाय ॥ रुचत हमै यह सुनिए विप्र । तौन जाय यह करिए छिप्र ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ सत्य सधर्म कहत तुम जौन । सुमति व्याध हम करि है तौन ॥ माता पिता पास तुम जाय । सेवा करऊ धर्म समुदाय ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ धर्मव्याध हम तुमपहँ आय । पायो ज्ञान धर्म समुदाय ॥ हम तुमसों अति भए प्रसंन्न । रहो भद्र तुमको सब्यन्न ॥ शूद्रयोनिमे ऐसो ज्ञान । होत नहीं सो कहऊ सुजान ॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥ रहे पूर्व हम ब्राह्मण पर्म । सांगवेद सब पढे सधर्म ॥ धनुर्वेद पारायण भूप । रहो हमारो सखा अनूप ॥ भए धनुर्द्धर हम ता पास । मृगयाको नृप गो बलरास ॥ हम ह्वै गए भूपके सङ्ग । हने तहाँ मृगगण बऊरङ्ग ॥ ऋषि आश्रम ठिग करि सन्धान । छोडो एक घोर हम बान ॥ ऋषिको लगो बाण चलि तौन । हाहा करि बोलो तपभौंन ॥ हम मृग जानि गए तहँ छिप्र । लखो भूमिगत घायल विप्र ॥ भए दुखित अति जानि अकार्य्य । भरे भीति हम बोले आर्य्य ॥ हमसों यह अपराध अजान । भयो क्षमा कीजै भगवान ॥ तब करि क्रोध दियो ऋषि शाप । व्याधयोनि लहि हौ कृतपाप ॥ तब हम चाहि चाहि ऋषि पास । कहि प्रसंन्न कीन्हो तपराश ॥ * ॥ ऋषिरुवाच ॥ * ॥ मिथ्या होत न शाप हमार । सुनऊ कहत हम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

शापोद्धार ॥ शूद्रयोनि लहि हौ वश कर्म । व्याध होय हौ ज्ञाता धर्म ॥ माता पिता सुशूषा जान । तुम सब भांति करऊ गे तौंन ॥ पितृभक्तितें सहित समृद्धि । तुमकों प्राप्त होय गो सिद्धि ॥ जाति स्मर्ण होऊ गे पर्म । फेरि स्वर्ग लहि हौ सह धर्म ॥ विप्रज्योति लहिहौ अति पर्म । पाय शापको अन्त सशर्म ॥ हम ऋषितनतें काढो बान । जियो सो ऋषि नहि छोडो प्रान ॥ मुनि हमसों तुम पूछौ जौन । स्ववृतान्त कहो हम तौन ॥ है सन्तोष मोदको मूल । असन्तोषमे दुःख अमूल ॥ ❋◉❋

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥

पितृसुशूषा करणकौं कौशिक करि-स्वीकार । भरे मोद लहि ज्ञान धन चलिवे कहो उदार ॥
व्याध प्रदक्षिण विप्रकों करि सह विनय ललाम । भरो मोद कीन्हो बिदा गे कौशिक निजधाम ॥

॥ ❋ ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ ❋ ॥ सोरठा ॥ ❋ ॥

जाय अपने धाम कौशिक मुनि आनद भरे । पितृभक्ति अभिराम यथा न्याय लागे करण ॥
हमसों तुम नृप धर्म जो बूझो हम सो कहो । धर्मकथा अति पर्म शर्मद पुण्य पियूषमय ॥
कौशिक मुनिसों जौन पतिव्रता सम्वाद सह । धर्मव्याध मतिभौन पितृसुशूर्षण जो कहो ॥

॥ ❋ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ❋ ॥

सो सब सहित विधान हम सुनि कै मुनि आपुसों । पायो मोद महान पर्म धर्ममय कथा यह ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि पतिव्रतोपाख्यान कौशिकधर्मव्याधसंवादवर्णनोनाम सप्तचत्वारिंशदध्यायः ॥ ◉❋◉❋◉❋❋

॥ ❋ ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥

कार्त्तिकेयको जन्म अब तौन सुनऊ नृपधर्म । अग्निपुत्र अद्भुत भयो यथा तेजमय पर्म ॥
भार्य्यनते ब्रह्मर्षिकी भो ब्रह्मण्य सुजान । देव असुर दोउ परस्पर लरे महाबलवान ॥
देवन्हकों जीतत असुर सदा युद्धमे भूप । वध्यमान लखि सबल भे इन्द्र सचिंत्य स्वरूप ॥
सेनापतिके अर्थ कै तब चिन्तित मघवान । मानष गिरिपैं जाय सो चिन्तो अर्थ महान ॥
स्त्रीको आरत शब्द तहँ सुनो उच्च मघवान । बीर पुरुष कोउ आय कै करै हमारो त्रान ॥
मोहि देय पति होय कै आपुहिँ मो भर्त्तार । आय सुनत यह शक्र तेहि करसो गहि उदार ॥
कहो शक्र अब डरो मति भीरु तोहि भय है न । केशी नामक दनुज तहँ इन्द्र लखो बलऐन ॥

॥ ❋ ॥ केशीउवाच ॥ ❋ ॥

तजऊ इन्द्र ताकों चहत बरिबें हम बलवान । जाऊ अपने धामकों राखि आपनो प्रान ॥
कहि यह केशी शक्रपर घालो गदा प्रचण्ड । इन्द्र वज्रसो मारि सों काटि करो द्वै खण्ड ॥
शैलशृङ्ग गिरि इन्द्र पै केशी दीन्हो डारि । तापै दीन्हो डारि सो शक्र वज्रसो मारि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तजि कन्या सो भै भयो केशी भजो अचैन । ता कन्यासों इन्द्र तब बूझन लागे बैन ॥
कहो कौनकी कौन तुम कहाकरति इत काम।कन्ये।वाच।सुता प्रजापतिकी सुनअ देवसेना नाम॥
केशी भगिनी हरी मम दनुसेना ही जान । पितु नियोगतें हम दोऊ इत बिहरै करि गान ॥
नित्य हरण चाहै हमै केशी दुष्ट अमान।दनुज दैत्यसेनहि बरी इच्छासों मघवान ॥
मोहि बचाइ शत्रु तुम करिकै युद्ध उदार । शक्रदत्त तुमतें चहति हौं दुर्जय भर्त्तार ॥

॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥

विमाचि खसा दाक्षायणी मम तनया तुम तास । ताते तुम अपनो कहो बल जेतनो तव पास ॥

॥ * ॥ कन्योवाच ॥ * ॥

हौं अबला हौं अमरपति पति मेरो बलवान । सुर बन्दित भो बिष्णुकूँ पितादत्त बरदान ॥

॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥

मघपतिको बल होयगो कैसो कहऊ उदार।कन्योवाच। सहित सुरासुर नाग नर त्रिभुवनके जेतार ॥
तुम्हे सहित सब भूतपैं चलिहै जास निदेश । यह ताके सुनिकै बचन दुःखित भए सुरेश॥
या देवीके पति नहीं यथा चहति बलवान । उदित भानुमे मिलो शशि तब देखो मघवान ॥
आमा प्रवृत भई लखो रुद्र मूहूरत माम । होत उदै गिरिपै लखो देवासुर संग्राम ॥
हव्य सु भृगु अङ्गिरऊ लहि बेद बिहित लहि बेश । देखो सुरपति भानुमे पावक करत प्रवेश ॥
पर्व चतुर्दशति तदा रविमे कियो प्रवेश । सूर्य्य चन्द्र परवेश लखि भो चिन्तित अमरेश ॥
और लखे वज्रभांतिके जहलो हैं उतपात । जानो आजु निशीथमे व्हैहै रण अतिघात ॥
सोम सूर्य्य अरु अग्निको सङ्गम भयो अनूप । होय सोमसुत होय सो याको पति अनुरूप ॥
अग्निपुत्र जो होय तौ याको पति बलरास । सहित देवसेना गये यह बिचार बिधिपास॥
शक्र पितामहसों कहे अैसे बचन ललाम । याहि देऊ पति कृपाकरि सूर साधु बलधाम॥

॥ * ॥ ब्रह्मोवाच ॥ * ॥

तुम चिन्तित जैसो कियो कारज हे मघवान । गर्भ होयगो तैसोई बिक्रममय बलवान ॥
सा सेनानी होयगो सुरसेनाको बीर । या देवीको होयगो सो पति अति रणधीर ॥
यह सुनिकै कन्या सहित बिधिको शक्र प्रणाम । करि आए जहं सप्त ऋषि रहे तेज तपधाम ॥
यज्ञ भाग लीबे चहत कियो सोमको पान । गए देवगण ऋषिनके आश्रम सह मघवान ॥
कियो यज्ञ तिन यथाविधि करि ऋतभुकहि समृद्धादियो हव्य सब सुरनको बेद बिहितअतिशुद्ध ॥
यज्ञ पूर्ण करि चले जब पावक अपने लोक । ऋषि पत्निन्ह देखी तहां सुषमा कैसी ओक ॥
कामाशक्त भए लखत पावक तिनको भूप । फेरि बिचारो क्षोभ यह नहीं हमै अनुरूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

साध्वी ऋषिपत्नीनको करिबो स्पर्श न नीति। होमगृहमे बास करि निति लखिए करि प्रीति ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

ज्वालनसो परसत गए तिन्हैं होमके धाम। तहां बास करिकै लखत नित्य भरे मनकाम ॥
कामतप्त तन त्यजनकों लखिँ अक्षाभ ऋषि बाम। अग्नि गए बनको चले छोडि होमको धाम ॥
स्वाहा दक्षसुता रही भरी मनोरथ मान। बरो अग्निको चहति हो देखत समय ललाम ॥
काम तत्व लखि अग्निको एकाकी बनमाह। स्वाहा तब यह हृदयमे मत धारो नरनाह ॥
ऋषिपत्निनको रूप धरि पावकको बश काम। सिद्धि मनोरथ आपनो हो करि लेऊ ललाम ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

शिवा नाम अङ्गिरसकी भार्याको धरि रूप। जाय अग्नि ढिग कहन इमि लागी बचन अनूप ॥
अग्नि काम सन्तप्त मोहि बरिबो समुचित तोहि। नतरु मदनशरसों व्यथित मरी देखिहो मोहि ॥
हों भार्या अङ्गिरसकी शिवानाम सुखदाय। औरन्ह करि मत प्रथम ही दीन्हों मोहि पठाय ॥

॥ * ॥ अग्निरुवाच ॥ * ॥

जानो किमि कामार्त मोहि सप्तऋषिन्हको वाम। जैंन कहति तुम हम सकल भजिहै तुन्हे सकाम ॥

॥ * ॥ शिवोवाच ॥ * ॥

तुम हमको प्रिय नित्यहें करत रही हम त्रास। सबहिन तव इङ्गित चितै मोहि पठई तुव पास ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

मैथुनार्थ आई इहां क्षिप्र सो करि प्रिय प्राना ज्ञाति परित्या करैबे बीते काल महान ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

अग्नि शिवाको रति कियो भरे मदनमद चेत। प्रीति भरी तेहिँ पाणिमे लियो अग्निको रेत ॥
चिन्तन करि मोहि देखिकै सो करिहै परिहास। धरि पक्षीको रूपसों गई सेतगिरि पास ॥
सरलमम सङ्कुल सघन अहिविष भरे अखर्ब। भूत प्रेत राक्षस जहाँ बस्य जीवगण सर्ब ॥
श्वेत पृष्ठपर जाय तहँ कनककुण्डमे रेत। धरि द्रुत आई अग्नि पहँ सो मदनाकुल चेत ॥
सप्तऋषिनको भारयाको धरिहैं स्वाहा रूप। मिली अग्निसो रेत ले राखो तहाँ अनूप ॥
सकी न धारि अरुन्धती को स्वाहा सुनि रूप। ताके सुतप प्रभावतें पति अनुरूप सु भूप ॥
रेतस ऊतभुकको धरे लै स्वाहा बढ बार। प्रतिपदको ताते भयो तेजस भरो कुमार ॥
षट शिर द्वादश कर्ण चख द्वादश भुज अभिराम। और काय सब यथास्थिति मोते सबको भान ॥
प्रतिपदते अरु चौथिलो भे सब अङ्ग महान। लोहिताधमे भोरको उदित भयो जनु भान ॥
भयो जगत रोमाञ्च लखि धरो धनुष तेहि तौन। मारि त्रिपुरकों प्रथमहीं धरो रहो हर जैंन ॥
घन समान गरजो मधुर धारि शब्द सुकुमार। चितै परावत नाग तहँ सुनि धुनि गए उदार ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तिन्हे गहो दै हाथ सौं शक्ति एकसों भूप । ताम्रचूड एक हाथसों कुर्कुट पर्वत रूप ॥
दोय पाणिसों शङ्ख गहि धमिति कियो अतिमान । दोय भुजनसों गगणको मन्थन कियो महान ॥
फिरि पर्वत पर बैठिके कियो नाद अतिघोर । सुनत नाद जे शरणको गए भरे भै रोर ॥
शरण गए जे वर्ण सब भए पारषद तौन । शान्त मान तिनको कियो बोलि बचन सुखभौन ॥
शर तजि भेदो क्रौञ्चगिरि तानि शरासन चण्ड । सो सुत गिरि हिमवानको होय गयो बऊ खण्ड ॥
फिरि भेदो गिरि सेतको मारि शक्तिसो सान । छोडि भूमि सह गिरिन्ह गो नभको खेत महान ॥
व्यथित भूमि सब व्है गई भई बिदिशि अखर्ब । लहि कुमार की शरण फिरि भई यथास्थिति सर्ब ॥
नमस्कार करि स्कन्दको गिरि भो भूम्यासन्न । शुक्ल पञ्चमीको भजो स्कन्दहि जगत प्रसन्न ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि कुमारोत्पत्ति वर्णनोनाम अष्टचत्वारिंशदध्यायः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ जयकरीछन्द ॥ ❋ ॥

होत महा सेनहि उतपन्न । भे उतपात महा सम्पन्न ॥ महा ऋषिन्ह तब शान्त उदार । कियो चाहि जगती उपकार ॥ कहैं अमर बनबासो जौन । अग्नि कियो यह अनरथ भौन ॥ षठ महर्षि भार्य्यनमे गौन । करि उतपन्न कियो भय भौन ॥ कोऊ कहै गरुडी भव भूप । जिन देखो तव तैसो रूप ॥ कियो जौन खाहा यह कर्म । सो न कोऊ जानत नृपधर्म ॥ ऋषिन्ह कियो मुनि पत्निन्ह त्याग । एक बशिष्ठ बिना बडभाग ॥ सप्त ऋषिन्हसो खाहा जाय । कहो पुत्र यह मम सुखदाय ॥ बिस्वामित्र यज्ञमे तान । लखो सकाम अग्नि हिय भौन ॥ पीछे लागि अग्निके भूप । देखो खाहा कर्म अनूप ॥ कौशिक प्रथम गए गृह पास । सुस्तव प्रथम कियो मतिरास ॥ मङ्गल सह जे जातक कर्म । कौशिक गृहके किय नृपधर्म ॥ कौशिकको प्रिय कियो कुमार । सुनि खाहाको कर्म उदार ॥ फिरि कुमारसों आज्ञा पाय । कौशिक कहो ऋषिनसों जाय ॥ पत्नी त्याग न करऊ पबिच । यह खाहाको सकल चरित्र ॥ लोक अपबाद बिचारि महान । ऋषिन्ह तजी पत्नी सुखदान ॥ ❋ ॥ मार्कंडेयउवाच ॥ ❋ ॥ देवन्ह कहो इन्द्रसो बैन । हनऊ भयो यह शिशु बल अैन ॥ नतरु होय गो यह देवेश । जीति लेयगो त्रिभुवन देश ॥ ❋ ॥ इन्द्रउवाच ॥ ❋ ॥ त्रिभुवनको कर्त्ता है जौन । ताकों जीति सके नहि तौन ॥ देवाऊचुः ॥ शक्र बीर्य्य तुममे कछु है न । जो अैसो तुम भाषत बैन ॥ मातर सत्य कामबल जौन । पठवऊ ताहि मारिहै तौन ॥ मातर तेहि लखि अति बलवान । जाय बचन बोली सुखदान ॥ तुम छोऊ मेरे बरबीर । उरसिज बहन लगे तब चीर ॥ सुस्तन पान पिपासा धारि । गृह पूजो नव जननि बिचारि ॥ आवत देखि अग्नि अभिराम । मातन सह बूझो बलधाम ॥ महा सेनको घेरे सर्ब । ते रक्षणको करत अखर्ब ॥ मात क्रोधते व्है सम्पन्न । भई एक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पुत्री उतपन्न ॥ शूल हस्त सो पुत्र समान । लागी रक्तण करण महान ॥ लोहिताख्यि कन्या अति क्रूरि । रक्तति गुहको सो मुद पूरि ॥ छाग वक्त्रहै अग्नि सुजान । रक्त गुहकों पुत्र समान ॥ विजय विकल्प धरे मघवान । सुरसेना सह दिग्गज जान ॥ नाना शस्त्र धरे सुरसर्व । चले लरण गुहसों गहि गर्व ॥ कियो देवगण उन्नत नाद । जानो आवत भरे प्रमाद ॥ चले कुमार तहां बलवान । गर्जें प्रलय पयोद समान ॥ चले क्षिप्र सुरगण सह शक्र । गर्जत भरे क्रोधसों वक्र ॥ सुनि सुरगण को नाद कुमार । गर्जे सिन्धु समान उदार ॥ सुरसेनासां सुनिकै नाद । भई चेतहत भरी विषाद ॥ हनन हेतु आवत सुरजाल । लखि गुह मुखते क्रोडी ज्वाल ॥ तासों जरन लगी सुरसैन । सह आयुध वाहन बलअन ॥ गिरत गगणते अैसो भात । होत सघन मनु उल्कापात ॥ गहो देवतन शरण कुमार । शान्ति भई तब अग्नि उदार ॥ दक्ष पार्श्वमे अशनि महान । गुहके हनो कुद्ध मघवान ॥ कढो वज्रक्षततें नर भूप । धरे शक्ति पावकसम रूप ॥ नाम बिशाख देखि तेहि शक्र । काल कराल सदृश अति वक्र ॥ भय भरि इन्द्र जोरि कैं पानि । गे गुहशरण अभय अनुमानि ॥ दियो इन्द्रको अभय कुमार । सहित अयन करि कृपा उदार ॥ कढे वज्र क्षत ते गण भूप । महा प्रलय धरि नाना रूप ॥ जात गर्भमे पशु शिशु जैन । तिनके प्राण हरतहै तैन ॥ लहिकै वज्र प्रहार उदार । उपजी कन्या बज्रत कूमार ॥ *ते बिशाखको पिता समान । मानत भई सुनो सुखदान ॥ स्वाहा रुद्र अग्नि सुखदान ॥ ते कुमार ते पितर सुजान ॥ पुत्रकाम अरु पुत्री जैन । ताकों यजन करत है तैन ॥ काकी हलि मा मालिनि नाम । और वृंहिता आर्या आम ॥ निचा और पलाला जैन । कही सप्त मातर ए तैन ॥ तिनके भयो वीर्य्य सम्पन्न । लोहिताक्ष एक सुत उतपन्न ॥ स्कन्द सुमातृ गणोद्भव आम । यह वीराष्टक कहै ललाम ॥ मध्यम जो कुमारको शीश । नाम वक्र समहै अवनीश ॥ भो यह विविधाकार समाज । शुक्ल पक्षमीलो कुरुराज ॥ भो षष्टीकों युद्ध प्रदत्त । देवराज सो हे कुरुमित्त ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ स्कन्द हिरण्य कवच अभिराम । हिरण्य मुकुट चख पद्म ललाम ॥ धारे लोहित अम्बर सर्ब । त्रिभुवन सुखकर लक्षण सर्ब ॥ बरद युवा सार्व क्षत सूर । भजसि जाहि श्रीसुषमा पूर ॥ देखि विप्रवर जे तपधाम । पूजन करि इमि कहो ललाम ॥ * ॥ ऋषयऊचुः ॥ * ॥ होऊ कुमार कृपाकर शर्म । वश त्रैलोक्य भयो तव पर्म ॥ इन्द्र होऊ तातें सु स्कन्द । जगतीके अभयङ्कर कन्द ॥ * ॥ स्कन्द उवाच ॥ * ॥ करत सुरेश कौन सो कर्म । कैसे पालत सुरन्ह सधर्म ॥ * ॥ ऋषयऊचुः ॥ * ॥ इन्द्र देत बल तेज सधर्म । तुष्ट कामना वितरत पर्म ॥ सुष्ट प्रजा पालत मघवान । दुष्टन्हको नाशक बलवान ॥ भऐं सूर्य्य अग्नि अनल अभाव । सानिल होत आयु युत चाव ॥ इतने करत इन्द्रवर कर्म । तुम वरवीर बली युत धर्म ॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ होऊ इन्द्र वर वीर कुमार । तुम हम सबके मोदाधार ॥ लेऊ इन्द्र पदको अभिषेक । स्कन्द उवाच ॥ पालन करि त्रिभुवन सविवेक ॥ हम इन्द्रत्व न चहत सुरेश ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

करि है तब आज्ञा निःसेष ॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ तुमने बल अद्भुत वर वीर । हनऊ सुरारि सकल रणधीर ॥ हीन हमै एहि पदमे जानि । तुमसों भेद परस्पर मानि ॥ मत भेद व्है है तब बीर । बढि है तब बियह गँभीर ॥ जीतऊ गे तब रणमे मोहि । इन्द्रत्व देत यातें हम तोहि ॥ स्कन्दउवाच ॥ * ॥ तुम मम राजा त्रिभुवनसाथ । कहऊ करै सो हम सुरनाथ ॥ इन्द्रउवाच ॥ तब हम इन्द्र होहिँ बरबीर । दीजै जौ यह बचन गभीर ॥ कियो चहत मम शासन एक । सेनानी ऊजैं सबिबेक ॥ * ॥ स्कन्दउवाच ॥ * ॥ दानव नाश सुरनकी बृद्धि । गो ब्राह्मणकी चाहि समृद्धि ॥ सुरसेनानीको अभिषेक । करु मोपहँ सुपरति सबिबेक ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ अभिषेक इन्द्रसों पाय कुमार । ऋषि पूजित अति लसो उदार ॥ काञ्चन कवच धरे अतिमान । ज्यौं पावक मण्डलमे भान ॥ सहित उमा शङ्कर तहं आय । कनकमाल दीन्हो पहिराय ॥ अग्निहि रुद्र कहत युतिरूप । स्कन्द रुद्रसुत याते भूप ॥ शिवसो पूजित देखि कुमार । सुपति देवतन्ह कहो उदार ॥ इन्द्र देवतनको ऋण । कियो पूर्व जेहि दीन्हो सर्ण ॥ आई तौन सहित लङ्कार । इन्द्र गए लै जहां कुमार ॥ बिधि तुमको यह कन्या पर्म । दीन्ही याहि बरऊ सह धर्म ॥ देखि रूप तप भरी कुमार । बरा ताहि धरि मोद उदार ॥ जहलों रहों ब्याहको कर्म । सो सुरगुरु सब कीन्हो पर्म ॥ सो षष्ठी तिथि परम पुनीति । जास करत व्रत जन गृहप्रीति ॥ लहो देव सेनै गुहनाथ । तब श्री वसो आय तेहि साथ ॥ भए पञ्चमीको श्रीयुक्त । स्कन्दपञ्चमी श्रीसो उक्त ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि श्रीसहित कुमारको सप्त ऋषिन्हकी बाम । षठदेवी गृह पै गइ भई दुःखसो साम ॥
बिनापराध तजी पतिन्ह सत्यधर्मकी ऐन । लागी कहन कुमारसों ऐसे सकरुण बैन ॥
पुत्र हमै छोडी पतिन्ह कारण बिनापराध । पुत्र हमारो कहत कोउ तुमकों सुमति अगाध ॥
स्वर्गबास अक्षय हमै पुत्र कृपा करि देऊ । हम तुमसों पुत्रत्वको परम फल यह पाऊ ॥

॥ * ॥ * ॥ स्कन्दउवाच ॥ * ॥ * ॥

जौ तुम जननी सर्व मो हो तब पुत्र सधर्म । जो तुम बांछति होय गो तौन तुम्हे पद पर्म ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

स्कन्द कहो तब इन्द्रसों बांछित कऊ मतिऐन । स्कन्द वच सुनि कै कहन बासव लागे बैन ॥
कनिष्ठ रोहिणी सों नखत अभिजित सर्ज्ञा धारि । लहिबेकों जेष्टत्व तप करिबे भई बिचारि ॥
गणनामे नक्षत्रकी मूढ भए हम बीर । ब्रह्मासों चिन्तन करऊ तुम कालक्रम धीर ॥
गई कृत्तिका स्वर्गकों यह सुनि सुरपति बैन । अग्नि देवता सप्तशिर भई कृत्त मतिऐन ॥
बिनते आय कुमारसों कहे बचन अभिराम । पिण्डद मेरे होऊ सुत दे सह बास सलाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ स्कन्द उवाच ॥ * ॥

दबो तुमजो कहति हौ तथा होय गो धर्म । पूज्य मात व्है सुषासों इहाँ बसऊ सह शर्म ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

लागी कहण कुमारसों तब सब मातर आय । सर्वलोक माता कहैं हमकों कवि सुखदाय ॥
ता माता चाहति भई हँम सब सुनऊँ कुमार। स्कन्द उवाच। हम सुत हैगे राबरे तुम ममजात उदार॥
कहऊ कार्य्य सो करहिँहम अब तुमकों सुखदान। मातर ऊचुः। रही जो मातर पूर्व हम तिनकेपा बैस्थान॥
लोकपूज्य हम होहि सब जाहि न पूजि तौंन । लहैं प्रजा हम आपने प्रथम हरी तिन जौंन ॥

॥ * ॥ स्कन्द उवाच ॥ * ॥

हतन प्रजा फिरि लहऊ गी और चहऊ तुम जौंन। और करहऊ सब देहिँ गे हे मातर हम तौंन॥

॥ * ॥ मातर ऊचुः ॥ * ॥

तिनकी हम चाहति प्रजा भक्षण कियो कुमार ।

॥ * ॥ स्कन्द उवाच ॥ * ॥

रक्षण करिबो योग्य तव भक्षण कष्ट उदार ॥
जबलो षोडश वर्षको होय न मनुजकुमार । तबलों तुम बाधा करऊ धरिकै रूप उदार ॥
रौद्र तेज हम देत है तुमको भरो प्रकास । तेहि सह तुम पूजित करऊ समुद जगतमे बास ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥

कढो स्कन्दकी देहतें तब एक पुरुष सधाम । मनुजप्रजा भक्षण करण हेत किए मनकाम ॥
गिरो क्षुधार्दित भूमि पैं निकसत मूर्छित भूप । स्कन्दाज्ञातें ग्रह भयो सो अति रौद्र स्वरूप ॥
शकुनि ग्रह बिनिता भई धारो उग्र सभाव । भई राक्षसी पूतना बालक बाधक चाव ॥
कुमार कुमारी जे भई स्कन्द देहतें भूप । ते सब मानुषगर्भभुक अनरथ कारक रूप ॥
सरमा देवी श्वानकी जननी कहिए जौंन । सदा मानुषी गर्भको भक्षणकारक तौंन ॥
जो करन्तनिलया कहैं तरु माता शुभ रूप । बरदा ताको पूजिए करऊ बृक्षमे भूप ॥
ए अष्टादश ग्रह कहे मांस मद्यप्रिय जौंन । बसत सूतिकाभौनमे दश निशीथिनी तौंन ॥
कद्रुगर्भ प्रवेशकों करति सूक्ष्म धरि रूप । गर्भ खाति ताके प्रसव होत सर्प सुनु भूप ॥
गन्धर्वणकी जननि जो तौंन गर्भ ले जाति । शून्य गर्भ सो मानुषी धारि गर्भव्है जानि ॥
निरशन कीजो जननिसो सोषति गर्भ सुजान । नष्ट गर्भ तब कहत है देखि सकल मतिमान ॥
लोहिताक्षिकी कन्यका गुहकी धात्री जौंन । लोहितायनी पुज्य सो तरु कदम्बमे तौंन ॥
पुरुषनमे हैं रुद्रत्यों आर्य्या नारि न माहँ । आर्य्या जननि कुमारकी जगत पूज्य नरनाहँ ॥
कहे जे एतने महाग्रह षोडशाब्दलौं भूप । शिशुकों बाधा करत हैं पूजनतें सुखरूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कहे जैान हम मातृगण कहे पुषग्रह जान। स्कन्द ग्रह नामक सकल भूतप जानो तैांन ॥
बिबिधि भाँति पूजन करें सुस्तव सहित कुमार। होत सकल आनन्दके करता सकल उदार ॥
षोडश अरध करत है जिनको ग्रह उनमाद। तैान दैवग्रह यानिए सुनऊ भूप निरवाद ॥
सूतत जागत लखत है जो पित्रन्हको रूप। कारक सो उनमादको क्षिप्र सुनऊँ कुरुभूप ॥
सिद्धनको अपमान जे करत देत जे शाप। सिद्ध ग्रह उनमादकों करत सो क्षिप्र अमाप ॥
अकस्माद आवत जिन्हे नानाभाँति सुगन्ध। सो राक्षस ग्रह जानियो कर उनमादक धन्ध ॥
जहि नरमांह प्रवेश करि वसत आइ गन्धर्ब। गन्धर्वग्रह भूप सो कर उनमाद अखर्ब ॥
चढि पिशाच उनमाद जेहि करत सो ग्रह पैशाँच। करत अन्तमे यक्षजो सो उनमाद अलांच ॥
बात पित्त कफ दोषतैं चित्त भयो भ्रम जास। कीजै शास्त्र प्रमाणतैं भूपति भेषज तास ॥
भयतें घोर स्वरूप लखि होति बिकलता जैान। शान्ति किएतें होति है दूरि सुनो नृप तैांन ॥
कोऊ भोजनकाम कोउ इच्छिणकाम सनार। कोऊ सङ्ग तजै न यह कहे त्रिविध उनमाद ॥
ए ग्रह सतरि वर्षलों ग्रसत मनुजको आय। आगे ग्रहगण सदृश ज्वर जरा ग्रसति है आय ॥
इन्द्रि नियह दान्त शुचि आस्तिक अद्धावान। देवभक्तके निकट ग्रह नाही जात सुजान ॥
यह हम यह उद्देश विधि कहो मनुजकों भूप। शङ्कर सेवन करत जो सो नलखत ग्रह रूप ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

प्रीति हमसों कीजिए सुत करत औरस जैान ॥ स्कन्दउवाच ॥ प्रीति हमसों चहति अम्बा कहऊ शर्मद तैांन ॥ स्कन्दसों एहि भाँति स्वाहा आय बोली बैन ॥ पुत्र औरस हौ हमारे चहति तुमसो बैन ॥ स्वाहोवाच ॥ दक्षकी हम परम कन्या नाम स्वाहा तात। रही मेरी कामना निति अग्नि पैं अवदात ॥ नही जानत कामिनी मोहि भलीभाँति ऊतास। करो चाहति हों निरन्त बास ताके पास ॥ हव्य कव्य सुहोम करि है मंत्र पढि द्विज जैान। नही स्वाहा बिना बोलं अग्नि लहैं तौं तैान ॥ अग्नि बसि है आपुतें इमि जननि तुम्हरे पास। जननि पूजन कियो कहि एहि भाँति गुह मतिराश ॥ लहो स्वाहा बचन यह सुनि अग्नि सङ्ग ललाम। पितामह तब कहो ऐसे स्कन्दसों अभिराम ॥ उमा शिवपहं चलऊ गुह यह मानि मन सुनिदेश। अग्नि स्वाहामाहँ जिन करि उमा सहित प्रवेश ॥ जगतहितके अर्थ तुमसों कियो सुत उतपन्न। उमाको धरि योनिमे वर रेतपत आसन्न ॥ शेष रेतस गिरो लोहित उदकमे अतिमान। इंमिका तहँ भई सिद्धिक तास पति बलवान ॥ भूमि गिरिप मानुकरपर तरुन्ह पैं कछु भूप। गिरों जहँ जहँ रैत तहँ तहँ भए गए अतिरूप ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एवमस्तु कहि कै गऐ शङ्कर पास कुमार। पूजन माताको बिधिवत कियो उदार ॥
अर्कपुष्पसों पद्मगण पूजत जे धनकाम। व्याधि हरणक अर्थहूँ पूजन करी ललाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० ऐरावतके जे रहे घण्टा द्वै अति रूप॥ शक्र एक गुहको दयो एक विशाखकों भूप॥
सह पिशाच गण देवगण काञ्चन गिरिपर पर्म। शोभित भए कुमार लहि सह गिरि सुषमासर्म॥
फल पुष्पित घन तरुन सह पशु पक्षी बज्ररङ्ग। लहि शोभित भो खेतगिरि सुषमा भरो उमङ्ग॥
तहां देवगण अप्सररा किन्नर गण गन्धर्व। तूर्य्यघोष घन सदृश करि नाचत गावत सर्ब॥

॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥

सेनापतिको जब लहो शुभ अभिषेक कुमार। गए भद्र बटकों शिवा सह हर वरद उदार॥
चढे खेतरथ पै लगे जामे सिंह हजार। काल सारथी गणकों लै रथ गयो उदार॥
आगे पुष्पक पै चढे जात धनद अभिराम। किन्नर गुह्यक यक्षगण लीन्हे सङ्ग ललाम॥
ऐरावत पर इन्द्र चढि सुरन्ह सङ्ग अबदात। सांब सदाशिवके लखे सानद पीछें जात॥
हरके दक्षिण ग्रहन सह जात यक्ष बलधाम। ताके दक्षिण देवगण रणकोविद अभिराम।
मृत्यु व्याधिगण सहित यम जात घोर धरि रूप। यमके पीछे त्रिशिख सित शम्भु शूल सँग भूप॥
त्रिजय शूल रक्षित किये बरुण उग्र धरि पास। घोर यादगणको महा सेना शोहति जास॥
गदा मुसल पट्टिस परिघ चले शूल सँग सर्ब। चलो कमण्डलु छत्र शित पट्टिस सङ्ग अखर्ब॥
चले अङ्गिरस भृगु सहित बेद सङ्ग श्री भूय। रुद्र चले इन अनु महास्यन्दन चढे अनूप॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ऋषि सुरसह गन्धर्ब भुजग नदी ह्रद समुद सर। यह नक्षत्र अखर्ब अप्सर सुरसुत शिशु सकल॥
धारें विविधाकार चली रुद्र पीछे सकल। बरषत फल उदार सुरबनिता आनन्द भरी॥
अनुगमने परयन्य धरे सुधा धर छत्रको। अनिल अनल अति धन्य चमर सांब शिवकों करत॥
सह सुर सैन अखर्ब चले शक्र शीसों भरे। चले राजऋषि सर्ब सुस्तुति करत महेशको॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गौरी गन्धारी चली कौशिनी ऋविधाम। सह सावित्री पार्बतीके अनु ऐ अभिराम॥
राक्षस ग्रह आगें चले धरे पताका सर्ब। बासो जौन मसानको पिङ्गल यक्ष अखर्ब॥
त्रिभुवन जाको जपत है शङ्कर सर्ब उदार। आवृत करि सुरसैनसों ताको चले कुमार॥
सेनानीसों शम्भु तब ऐसो बोलै बैन। सप्तम सुर समुदायकों रक्षण करु बलऐन॥

॥ * ॥ स्कन्द उवाच ॥ * ॥

सप्तम सुर समुदाय हम रक्षण करि हैं सर्ब। और कार्य्य जो होय सो मोसो कहऊ अखर्ब॥

॥ * ॥ रुद्र उवाच ॥ * ॥

कार्य्य परे तम देखिये मोकों सुत सुखदान। मम दर्शनसों लहऊ गे श्रेय समृद्धि महान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

यह कहि कै शङ्कर कियो गुहको सुर्धाधान । बिदा कियो तब दिशनसे भे उत्पात महान ॥
नभ नखतन्ह सह ज्वलित भो भुवन भरो भय भूरि।शङ्कित हलन लगी धरा जगत गयो तम पूरि॥
तब देखी आई चमू सघनघटासी भूप । उमा सह शिव सुरन्ह सब भए विस्मय रूप ॥
नानाविधिके अस्त्रकों दनुज धरें अतिघोर । गर्जत बिबिधि प्रकारसों आइ मिले बरजोर ॥
शस्त्र अनेक प्रकारके वर्षे दनुज महान । दोयघरी लरि देवगण बिमुख भए बलवान ॥
दनुजशस्त्रखण्डित गिरी सुरसेना कुरुवीर । चण्डअग्नि लागे सघन ज्यौं वन जरत गभीर ॥
भगी चमू लखि सुरणको सुरपति बोले बैन । आश्वासन करि कै कहो तिन्हे शक्र बलऐन ॥
आश्रय लहि कै शक्रको सुरसब फिरे प्राचारि । असुरनसों लागे लरण शस्त्र संहसों मारि ॥
क्रुद्धसुरनके शर निसित पैठि असुरतनमाह । रुधिरपान लागे करण सर्प सदृश नरनाह ॥
सुरशस्त्रन्हसों कटि गिरन लागे असुरशरीर । प्रबल बायु जागें यथा घनकी घटा गँभीर ॥
भजी असुरसेना सकल सुरशरमर्दित भूप । सुरन्ह कियो हर्षित तुमुल तूर्य्य बाद्य अतिरूप ॥
युद्ध भयो अन्योन्य अति सुरासुरन्हसो सर्ब । मांस रुधिर कर्दममयी भू भई भूप अखर्ब ॥
सुरन्ह मारि असुरन्ह कियो महाभयानक रोर । असुर सैनसो तब कढो महिषासुर अतिघोर ॥
देखि महिषकों महागिरि लीन्हे आवत भूप । सुरसेना भाजी भरी भयसों विवरण रूप ॥
महिष दौरि सुरसैन पैं डारो अद्रि महान । तेहि गिरितें दश सहस सुरन्है गए चूर्ण समान ॥
सुरन्ह भजाय गयो महिष क्रुद्ध रुद्ररथ पास । लियो रुद्ररथ कोप करि कूबर पञ्चो नाश ॥
गयो भुवन भरि नाद सो ऋषिन्ह लहो तब क्षोभ । गर्जन लागो दनुजदल तब सुविजयके लोभ ॥
महिषहननको रुद्र तब कीन्हो स्कर्ण कुमार । निर्मित हन्ता जानि कै ताको प्रबल उदार ॥
महिष देखि रथ रुद्रको गर्जो अतिबलवान । त्रासित करि कै सुरनकों असुरन्हको सुखदान ॥
सुनत शब्द अतिघोर सों अमर भरे भय सर्ब । आए तहाँ कुमार तब पूरित क्रोध अखर्ब ॥
लोहितादि लोहित धरे शूल बिसाल गभीर। तास कवच लखि हिरन्मय भजे असुर रणधीर ॥
शक्ति महिष नाशक तजो करि कै क्रौध कुमार । महिषशीस कटि शक्तितें क्षितिपर गिरो उदार ॥
शेष रहे जे दैत्यगण स्कन्दपार्षदन जाय । मारि बिभुक्षितसे तिन्है लियो पकरि कै काय ॥
तिन्है मारि करि रुद्रको लिये पारिषद सर्ब । कियो लोक बिन दैत्यको ज्यौं तम सूर्य्य अखर्ब ॥
पूज्यमान भे सुरनसों शत्रु संघारि कुमार। महादेवसों इमि कहो महिष लाय उदार ॥
ब्रह्मदत्त बर महिषकों स्कन्द इनो तुमबीर । तृणसमान जो सुरनकों गणत रहो रणधीर ॥
तीनि लोकमें कीर्ति तब अक्षय ह्वैहै बीर । वशग होहिंगे महीभुज आगे तब रणधीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कहि एहिभाँति कुमारसों अबंक त्रिभुवन नाथ।कियो निवृत्त सुरेशकों कहि इमि सुरगणसाथ॥
सुरपमि सम सम जानियो मनमे नियत कुमार। एकादिवसमे स्कन्द सब जीते असुर उदार॥
इद्र गए बटभद्रकों करि निवृत्त सुर सर्व। पढि हैं जैन कुमारको जन्म चरित्र अखर्व॥
इहां लहैं गो सर्व सुख दहनिधनको पाय।बास करैगो अमर सम स्कन्दलोकमे जाय॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

चहत गुहको नाम तुमसो सुनो हम हेत प्रधान। ख्यात त्रिभुवनमाह जे है पुण्य पावन धाम॥
॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ आग्नेय गुह सुकुमार कहि एहि महिषमर्दन भूप। सत्यवाग सूर केतु सु कामजित शिशु रूप॥ भुवन ईश्वर मातृवत्सल स्कन्द कामद कान्त। दीप्तशक्ति प्रशान्त आत्मा चण्डरूप नितान्त॥ बऊतरूप बिशाखके सब कहै कहलों भूप। यथा मेरे शक्ति है हम कहत सुनऊ अनूप॥ कौशिकप्रिय शरोद्भव सुसेनप्रिय अभिराम। षान्मातुर रुद्रसुत स्वाहेय गुह बल्लधाम॥ जगतपालक जगतमय ब्रह्मण्य बिश्वसरूप। स्कन्दको जो नाम जपि है जन्म चरित अनूप॥ सुनैगो जो सहित श्रद्धा चित्त दे अभिराम। लहै गो दीर्घायु सो धन पुत्र यश जप मामा॥ तुष्टि पुष्टि सु पाय कै करि भोग मोद अतोक।लहै गो देहान्तमे सो स्कन्दको वर लोक॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि स्कन्दजन्ममहिषासुरबधबर्णनोनामैकोणपञ्चाशदध्यायः॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रहे बैठे सहित बिप्रन्ह जहां भूपतिधर्म। तहांतें उठि गई सकृष्णा सत्यभामा पर्म॥ दुऊब अपने बंशको बृत्तान्त जैन अनूप। कहन लागी परस्पर भरि मोद प्रीति सुभूप॥ दिव्य आसनमाहँ बैठो रहसमे अभिराम। सत्यभामै द्रौपदीसों बिहँसि बचन ललाम॥ कहे कैसें रहति हौ तुम पाण्डव नके पास।लोकपाल समान हैं ए महाबलके रास।।रहत है तब बश्यमे ते करत क्रोध न खर्ब।लखत रहत चको।रसे तो बदन शशिसों सर्ब॥ स्नान ब्रत मंत्रौषधी तुम करति साधन कौंन। पाय जास प्रभाव बश सब रहत ते बलभौंन।भाग्यशाली देऊ कृष्णा तौन मोहि अबश्य। जैन साधेव्हैंहैं नियमित कृष्ण मेरे बश्य।।कहे जैसें द्रौपदी सुनि सत्यभामा बैन। बचन असतिन योग्य तुमको उचित कहिबे है न॥ शकजितकी सुता महिषी कृष्णकी मतिधाम।जैन हमसों कहति तुम सो सुनऊ तौन लखाम॥ मंत्र कारिणि जानि कै पति होत तियपर रुष्ट। औषधीसो करति पतिकों दोष भामिनि पुष्ट॥ पाण्डवनमे करति जो हम बृत्ति सो सुनु तौन। सत्यभामा सत्य सो हम कहति है छबिभौन॥ अहङ्कार सकाम क्रोध बिहाय कै हम सर्ब। पाण्डवनको भजति है सहदार नित्य अखर्ब॥ सख्य मन करि चित्तचारिणि करि सुशूषा जैन। दुर्बादसों डरि दुष्टजनके बचन सुनति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

न तौन ॥ त्यागि दुष्ट कटाक्ष इङ्गित बचन बोलि प्रमान। पाण्डवनको भजति हैं हम सूर्य्य अग्नि ब
समान ॥ देव गण गन्धर्व मानुष युवा सुन्दर जौन। और पुरुष न हमै सम्मत धनी भूपति तौन ॥
स्नान भोजन शयन निद्रा प्रथा तिनहिँ कराय। भृत्यजनको भरण करि अनुसरति औसर
पाय ॥ जाय आवत कहूँतें भर्तार अपने धाम। जाय आगे ल्याय धोवति चरण चापि ललाम॥
उदक आसन देय भोजन देति मधुर अनूप। बोलि कै मृदु बचन सज्या देति रचि अनुरूप ॥
कहति बचन विनीत मृदु निति रहति हौ अनकूलाविना हास न हसति ब्रीडा युवतिको सुखमूल॥
नियत पतिके सदा सेवनमे रहति सुखदान। बिना पति कछु सर्वथा नहिँ हमै इष्ट सुजान ॥ करत
काहू कार्य्यको भर्तार कबहूँ प्रवास। अङ्गराग विहाय तब हम धरै व्रत मतिरास ॥ पियत जो
नहि खात भर्त्ता करत भोजन जौन। हमहूँ भोज्य पदार्थ सिगरे पियति स्वामि न तौन ॥ पाय
आज्ञा व्है अलङ्कृत जाति पतिके पास। पूर्व स्वश्रू कहे वनिताधर्म जे सुखरास ॥ उचित सिगरे
कार्य्य ते हम करति नीति विधान। सत्यशील समान पावक भजति पति सुखदान ॥ कुलस्त्रिनको
धर्म आश्रय स्वपतिको अभिराम। भजति हम सो वामकों गति एक स्वपति ललाम ॥ करति अति
क्रम नहीं पतिको श्वासुसों नहिँ वाद। करति हैं हम कार्य्य जितने भई विगत प्रमाद ॥ रहत हैं
भर्तार मेरे सहित कुन्ती वश्य। हो सुभूषनकी करति सो वृत्ति चरित यशस्य ॥ विप्र आठ सहस्र
भोजन करत हैं सह शर्म। धर्मनृप सह विविधि विधिके रस व्यञ्जन पर्म ॥ द्विज अठासी सहस
स्नातक धर्मनृपके धाम। कनकपात्रन्हमाहँ भोजन करत हे अभिराम ॥ एक एक हि भज हिँ
दासी तीस तीस सुजान। ऊर्धरेतस सहस जे हैं यती हे तप मान ॥ कनक पात्रन्हमांह
तिनकों रहो भोजन देत। बसत भोजन मात्यसो हम तिन्है पूजि सनेत ॥ लक्ष दासी बसन
बेसनि जडित भूषण सर्ब। धरें नृत्य सु गानमे अति चतुर चारु अखर्ब ॥ नाम भोजन
बसन तिनके कृताकृत जे कर्म। रही जानत विविधि बिधि हम नीति सो अनुपर्म ॥ लक्षदासी
धर्मनृपकी सुन्दरी शुचि नेत। कनक भाजन लए भोजन रही अतिथिन देत ॥ अयुत नाग
सुलक्ष बाजी धर्मनृपके सङ्ग। चलत हे लखि तिन्है हमको बढत मोद उमङ्ग ॥ भार सकल कुटु
म्बको धरि दयो सोपै भूप। छोडि कै सुख सर्व ताको वहत हो अनुरूप ॥ अगाधमय है धर्मनृपको
सिन्धुसो भाण्डार। एक जानत रही हम हौँ विविधिभाँति उदार॥ रात्रि दिन हम पाण्डवनको
क्षुत् पिपासा मान। भरण पोषण करत हौँ सबभाँतिसों सुखदान ॥ भोर जागैं प्रथम पतिसों करै
पीछे सैन। वशीकरण सु और औते हमै आवत है न ॥ असत बनितनको न हमको कम
आवत एक। सत्यभामा कहो तुमसों तौन सहित बिबेक ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तौन
सुनि कै धर्म पूरित द्रौपदीके बैन। कहन लागी सत्यभामा पाय कै अतिचैन ॥ क्षमा कीजै हमै
कृष्णा प्रणित प्रीति विचारी। काम कारिणि सखी भाषित हाससो निरधारि ॥ द्रौपद्युवाच ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब॰प॰ कहो हम पति चित्तहारक परम पंथा जौंन। करहीं गी तौ अनिश बसि है कृष्ण तुम्हरे भान ॥ नहीं पतिसों और दैवत लोकमे अभिराम। भए तौन प्रसन्न पूरण करत सब मनकाम॥ स्वर्गपावति पतिव्रत धरि पति हि सेवति जौंन। नही सुखते मिलत सुखव्रत दुःख सुखको भौंन॥ कृष्ण राधन करऊ भामा सुहृदता धरि प्रेम। बसै गे तव पास सुन्दर श्याम नियमित नेम ॥ गन्ध आसन माल्य भोजन देय कै अभिराम। परम प्रीतिजनायकी जो स्वबशमे घनश्याम॥ पतिव्रतमय प्रीतिभूषित पतिसुशूर्षण जौंन। सत्यभामा और यातें बशीकर बिधि कौंन ॥ हैं कुलीना रहित पातक सखीको जो ताहि। त्याग कीजो चण्ड दुष्ट स्वभाव चञ्चल चाहि ॥ पति सुशूर्षण सकल बिधिसों भाग्य दैवत तौंन। सत्य भामा और तुमसी भाग्य भाजन कौंन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ मार्कण्डेयादि बिप्रन्ह पाण्डबनके पास। बिदा व्है हरि चढन रथपर चले जब सुखरास ॥ सत्यभामाकों बोलायो कृष्ण आनद अैंन॥ द्रौपदीको अङ्कमे भरि चली कहि इमि बैन ॥ नहीं कृष्णा करऊ चिन्ता दुःख लहि मतिधाम। पतिनसों यह बिजित भू तुम लहौ गी अभिराम ॥ शीलसों सम्पन्न तुमसी भरी लक्षण वाम। रहति नहिं चिरकाललों एहि भाँति दुःखित माम। पतिनसह भोग करिहौ भूमि तुम सुखदान। होय के निर्द्वन्द्व कृष्णा कहति बचन प्रमान ॥ धार्तराष्ट्रन्ह मारि कै करि बैर शान्ति गभीर। भूमिको तुम भोग करि हौ सहित पति वर बीर ॥ तुम्है बनकों चलत कीन्हो हास्य बनितन जौंन। देखि हौ बैधव्य भूषित रूप तिनको तौंन ॥ पुत्र तव प्रतिबिंध्य अरु सुतसोम भीमज बीर। श्रुतकर्म अर्जुन तनय नकुलज शतानीक सुधीर॥ श्रुतसेन सह सहदेवसुत सब कुशलहै तव नन्द। अखबिद सब भए सह अभिमन्यु कुरुकुलचन्द्र ॥ करति भद्रा प्रीति सम अभिमन्यु के सुखदान। प्रद्युम्न माता करति तिन पैं प्रीतिको अतिमान ॥ कृष्णसुतन समान तिनसों करत है अतिप्रेम। भरण पोषण करत है बसुदेव धारे नेम ॥ राम आदिक बृष्णि अन्धक प्रीति करि सुखदान। अनिश तिनकों भजत हैं प्रद्युम्न सदृश महान ॥ सत्यभामा द्रौपदीसों बोलि अैसे बैन। करि प्रदक्षिण गई रथपर जहाँ आनदअैन ॥ समाधान सु द्रौपदीको कृष्ण करि सुखदान। गए द्वारावतीकों रथ हाँकि पैन समान ॥

खस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेबनपर्वणि द्रौपदीसत्यभामासंवादवर्णनोनाम पञ्चाशदध्यायः ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बसे तौन बनमे अभिराम। कियो कहा सो कऊ तपधाम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदा महामुनिको करि भूप। सरतट बसे धारि ऋषि रूप ॥ देखत गिरि बन सुषमा जौंन। रहे बिहार करत बलभौन ॥ आए तहाँ बेदबिद बिप्र। पूजन तास कियो नृप छिप्र ॥ कथा कुशल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तिनमे एक बिप्र । गयो कौरवनके ढिग क्षिप्र ॥ गो धृतराष्ट्र निकट द्विज तौंन । पूजि ताहि बूझो मतिभौंन ॥ कहते आवत सुनिकै बिप्र । कहो धर्मनृप ढिग ते क्षिप्र ॥ बातातप ते कर्शित गात । जानि धर्मनृपकों सह भ्रात ॥ परे उग्र दुखके मुख माह । जानि द्रौपदी सह नर नाह ॥ तिनकी कथा सुनत कुरुराज । तप्त भए लहि कृपा समाज ॥ बनमे बसत पाण्डुसुत सर्व । दुःख सिन्धुमे बहत अखर्ब ॥ तप्त दुःखसों बोले बैंन । ऊरध श्वास लेइ इत चैंन ॥ चित्त स्वस्थ करिकै ककु भूप । जानि आत्म कृत कर्म कुरूप ॥ सत्य सुवृत्त जेष्ट नृपधर्म । योग्य से जे सुखमय अति पर्म ॥ सो सोवत पृथिवी पर बीर । अजिन दर्भ पर धारे धीर ॥ बब्दी मागध सूत सुजान । जाहि जगावत हे मतिमान ॥ सो निशान्तमे जागत बीर । पक्षिनको सुनि सोर गँभीर ॥ भरो बृकोदर कोप महान । क्षितिपर सोवत कृश बलवान ॥ योग्य परम शय्याके जौंन । क्षितिपर सोवत कृष्णा तौंन ॥ धर्मनृपति बश जिष्णु कुमार । क्षितिपर सोवत बीत उदार ॥ धर्मनृपति सह कृष्णा भ्रात । सोवत क्षितिपर लखि कृश गात ॥ श्वास सर्प समले बलभौंन । निद्रा पार्थ न लहि है तौंन ॥ भीमसेन अतिबलको धाम । धाये ससा बधो सुलताम ॥ मम पुत्रन्हकों कदन बिचारि । क्षितिपर सोवत अमरष धारि ॥ सत्य धर्मते बारित जौंन । काल प्रतीक्षण नियमित जौंन ॥ धर्म नृपति कह कुल करि जीति । कह दुःशासन बचन अतीति ॥ पैठि बृकोदरके तन तौंन । दहत दवानल सम बलभौंन ॥ स्मर्ण करत अपराध न धर्म । याते धरत जिष्णु अति कर्म ॥ अर्जुन भीम काल से जौंन । बर्षत बाण अशनि सम तौंन ॥ शकुनि दुःशासन सूत कुमार । पुत्र सुयोधन कुमति उदार ॥ चाहत लाभ न देखत घात । मधु लखि मधुहा ज्यौंन प्रपात ॥ करत शुभा शुभ जो नर कर्म । लहत तास फल परम अपर्म ॥ बोवत बीज खेत नर जोति । बृष्टि यथा ऋतु पाए होति ॥ स्वल्प ता ब फल होइ कि पौन । है प्रसिद्धि यह दैवाधीन ॥ द्यूत खेलिबेको स्वीकार । धर्महि करिबो होन उदार ॥ हो सुत बस दिये रोकि न द्यूत । भो कुरुकुल अन्तक सो भूत ॥ होनहार है सो ध्रुव होत । ज्यौंघन बरिसै सरिता सोत ॥ हमै योग्य यह हो नहि कर्म । बित्त अर्थ जन करत अधर्म ॥ बिना बित्त कृत बित्तज जौंन । नष्ट होत भाषत मतिभौंन ॥ बित्त न चहत कियो कोउ क्षीन । दैवाधीन सो बिनसत पीन ॥ जिष्णु जाय बनते सुर लोक । लै आयो सब अस्त्र अतोक ॥ देखि स्वर्गमे कुरुकुल सर्ब । आयो भए काल बस खर्ब ॥ दिव्यास्त्र जिषु गाण्डीव सुचाय । इनको कौन सहैगो दाय ॥ ए प्रलापके सुनि नृप बैंन । कहो कर्णसो शकुनि सचैंन ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ कर्ण शकुनि औसरको पाय ॥ कहो सुयोधन सों इमि जाय ॥ करऊ भोग भूषण तुम भूप । सिन्धु मे खला चढ़ि अनूप ॥ करद करे तुम भूपति सर्ब । धर्मनृपतिकी श्री जो अखर्ब ॥ भ्रात न सहित लही तुम तौंन । इन्द्र प्रस्थसे देखी जौंन ॥ लई बुद्धि बलतें तुम भूप । श्री पांडवकी तौंन अनूप ॥ तो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बश कहत भूपवर जौंन।कहऊ करैं हम कारज तौंन॥ तौ बश भू यह भई अखर्ब। बन्दत तुम्हैं भूप द्विज सर्ब॥ लसत सुरण सह ज्यो मघवान। त्यो तुम कुरुकुल भूषण भाँन॥ मानत तो शासन नहि जौंन। है पाण्डव सम ओहत तौंन॥ सुनत द्वैतवनमे सर नाथ। बसत तहाँ द्विज भिक्षुक साथ॥ तहाँ चलऊ श्री सहित महान। पांडुन्ह तप करऊ सम भाँन॥ सङ्ग लए भट भूपति भीर। चलऊ द्वैतव नकों कुरुबीर॥ पांडव तुम्हैं ययाति समान। देखि दहैं ज्यों कै रव भाँन॥ धन सुत लाभ जन्य सुख जान। लखे पांडवनके अब तौंन॥ धरे जिषु बल्कल तन ज्ञान। तुम देखे सह ऋद्धि लसान॥ याते मूख मोदता और। सुनऊ सुयोधन क्षितिपति भौंर॥ तो भार्या सह भूषण बास॥ सचो समान महा छबिरास॥ धरे अजिन बल्कल हत रूप। कृष्णा तिन्हैं देखिकै भूप॥ जीवितते लहिहै निर्वेद। पाय द्यूतते अघको खेद॥ कर्ण शकुनि कहि अैसे बैंन। चुपव्है रहे पापकेअैन॥ ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच॥ * ॥ बैन सूतसुतके सुनि भूप। हर्षितव्है फिरि दीन स्वरूप॥ कहो कर्ण तुम भाषत जौंन। मनमे बसति हमारे तौंन॥ जहां बसत पाण्डव कृश रूप। तहां गमनकी आज्ञा भूप॥ हमै न देहैं तिनके हेत। रोवत रहत भरे दुख चेत॥ हमतें अधिक तिन्हैं अनु मानि। नृप धृतराष्ट्र तपोबल जानि॥ द्वैत बिपिनमे और न कार्य्य। जेहि मिसितें तहँ चलिए आर्य्य॥ द्यूत समयमे कह्यौ जौंन। कह्यौ बचन तुम जानत तौंन॥ तातें व्है न सकत निरधार। नही गमन अरु गमन बिचार॥ भीम फाल्गुण कृष्णा सङ्ग। धरे अजिन बल्कल कृश अङ्ग॥ तिन्हैं देखिकै आनद आन। हमकों जानि न परत सुजान॥ मम श्री पाण्डव देखैं साम। तब मेरो जीवि त अभिराम॥ तहां चलनको जौंन उपाय। तुम अरु शकुनि बिचारऊ जाय॥ जो सुनिकै नृप गमन निदेशु। हमकों देय न करै अन्देशु॥ हमहूँ गमन अगमन बिचार। करि जैहैं नृप पास सबार॥ हमै भीष्म सह नेहां पाय। सह सौबल सो कहेऊ उपाय॥ भीष्म भूपको गमन निदेश। लहि चलिबेको करै उदेश॥ कहि तथास्तु ते घरकों जाय। कहो कर्ण उठि भोरहि आय॥ यह उपाय हम कियो बिचार। तौंन सुयोधन सुनऊ उदार॥ गोधन सकल द्वैतबन माह। तिन्हैं देखिबेको नरनाह॥ यह मिसि कहि भूपतिके पास। चलऊ पाय आज्ञा मतिरास॥ जात घोष यात्राकों भूप। नृप शासन देहै सुखरूप॥ कहत कर्ण हे जब यह बैन। आए शकुनि तहा मतिअैन॥ ठहरायो हम यहै उपाय। कहो सुयोधनसो सुखदाय॥ सुनि यह दुष्ट चतु ष्टय सर्ब। कर पर कर धरि हसे अखर्ब॥ यह मत निश्चय मानि अनूप। गए सकल जहँ हे कुरु भूप। बूझो तिन नृपसों आनंद। तिनसो सुख बूझो कुरुचन्द॥ समय पाय ले गए बनाय। तेहि नृपतिसों भाषो जाय॥ गोधन आयो निकट नरेश। ताहि लखनको करऊ निदेश॥ कर्ण शकुनि तब बोले बैंन। नाथ बिकट गोधन सह चैंन॥ आयो तिन्है बिलोकन हेत। चहत सुयोधन गयो समेत॥ संख्या करन लेखन जौंन। चाहत दियो सबिधि सो तौंन॥ तह रमणीय देशमे भूप।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मृगया चाहत कियो अनूप ॥ आज्ञा देऊ भूप अभिराम । यह दुर्योधनको मन काम ॥ * ॥ धृत राष्ट्रउवाच ॥ * ॥ मृगया गो खेलन सुखरास । हित न गोपगणको विस्वास ॥ ह नरव्याघ्र पांडु सुत जौंन । सुनो समीप बसत तहँ तौंन ॥ देत न आज्ञा हम एहि हेत । सुनऊँ कर्णसो बचन सनेत ॥ छलते निर्जित दुःखित सर्व । अतिरथ निति तप करत अखर्व ॥ धर्म्म अक्रोध अमर्षी भीम । अग्नि सदृश कृष्णा कवि सीम ॥ दर्प मोह बश हौ तुम सर्व । करिहौ तहँ अपराध अखर्व ॥ भस्म करैंगे तपतें तौंन । न तरु शस्त्रतें अतिबलभौंन ॥ बसो धनञ्जय सुरपुर जाय । सब दिव्यास्त्र इन्द्रसों पाय ॥ फिरि बनको आयो सो बीर । जेहि जिति भूपन्ह प्रथम गभीर ॥ सह दिव्यास्त्र वीर है तौंन । सुरपतिसुतसो लरिहै कौंन ॥ सावधान रहियो तहँ जाय । नतरु लहऊ गे दुख समुदाय ॥ धर्मराजको कोउ अपकार । सैनिक करिहै जाय उदार ॥ तासे पठवऊ मानुष आन । नही सुयोधन गमन विधान ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ भूप युधिष्ठिर पन करि जौंन । धर्म धीर करिहै सब तौंन ॥ भ्राता तास तास बश सर्व । भूपति करिहै कोप न खर्व ॥ मृगया इच्छा अति सब रूप । जैहैं तहां न जहँ ते भूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ ऐसे सुनि सौबलके बैन । दियो भूप आज्ञा विनु चैन ॥ आज्ञा पाय सुयोधन भूप । चले सैन सब साजि अनूप ॥ सह भ्रातन्ह सौबल राधेय । बनितन सह भरि मोद अमेय ॥ चले पौरजन बालक बृद्ध । सहस अठारह पारथ कृद्ध ॥ तीनि अयुत गज अचल समान । पति असंख्य सङ्कट बऊ मान ॥ नव हजार बाजी असवार । बऊ मृगया कर मनुज उदार ॥ भई पटह धुनि सघन महांन । दोय कोश चलि बसे सुजान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनायकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बन पर्वणि घोषयात्रायां दुर्योधनगमनोनामैकपञ्चाशदध्यायः ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दुर्योधन जहँ तहँ बसत गए घोष जेहि बैर । बसे सजल सम देशमे सहित सैन नृपसैर ॥
शकुनि कर्ण भ्राता सकल बसे नृपतिके पास । गोधन लखो असंख्य तहँ सह बत्सन मतिरास ॥
अङ्क चिन्ह संख्या सहित गोधन लखो ललाम । बत्सन्हकों अङ्कित कियो रहे जे नूतन साम ॥
गोपन सहित बिहार तहँ करन लगे कुरुबीर । सह सैनिक अरु पौर जन आनद भरे गभीर ॥
गायक नृत्तक गोपगण तहँ आए सह बाम । व्है प्रसन्न भूपति दए तिनको धन अभिराम ॥
व्याघ्र महिष मृग वृक्ष गण सोरे सहित बराह । लिए सङ्ग यो पाल गण भूपति भरि उतसाह ॥
शरसों भेदे वन्य गज पकरे बऊ मृग भूप । गोरसको भोजन कियो सह सैनिक सुख रूप ॥
देखत थल रमणीय बन कुसुमित फलित ललाम । गए द्वैतवनमे जहां रहो सो शर अभिराम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

दैवेच्छासों तहँ गए रहे जँहां नृपधर्म । एकान्हिक मख करत हे बण्य हव्यसों पर्म॥
रचि आश्रम सरके जहां चारो दिशि अभिराम । बसत धर्मनृप द्रौपदी भ्रातन्ह सहित ललाम ॥
दुर्योधन पठए तहां भृत्य चरनकों वास । चले दूतबनमे सकल ते सब सरके पास ॥
गन्धर्वन बारित कियो बनमे करत प्रवेश । गन्धर्वराज क्रीडार्थ तह कीन्हे रहो निवेश ॥
सहित अप्सरन्ह सुर सुतन्ह सरके चारो ओर । भृत्य भूपके फिरि गऐ करि न सके कछु जोर ॥
कहो सुयोधनसों बचन गन्धर्वनको जौन । नृप सैनिक पठए तिन्हे काढनको बल तौन ॥
तिन गन्धर्वनसों कहे भटन्ह जाय ते बैन । तिन गन्धर्वनसों कहो इत कुरु नृप बलऐन ॥
जाऊ इहांते चहत सो कीन्हो इतै बिहार । तब गन्धर्वन कहे इमि हसिकै बचन उदार ॥
भूप सुयोधन मन्दमति जनक समान लखै न । एसव हमको लखत नहि जौन कहत हे बैन ॥
तुमहूँ जड हमसों कहत शासन ऐसों तास । जाऊ सुयोधन पै त्वरित नातरु लहिहो नास ॥

यह सुनिकै सैनिक गऐ जहँा सुयोधन भूप ।

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

गन्धर्वनके बचन सब कहे तथा अनुरूप ॥
सुनत सुयोधन भटनसों ऐसे कहो रिसाय । गन्धर्वनको बिपिनि ते मारि निकारऊ जाय ॥
सुनत सुयोधनके बचन सज्य होय भट बीर । मथि गन्धर्वनको कियो बिपिनि प्रबेश गभीर ॥
गन्धर्वन बारित कियो सज्य होय भट बीर । मथि गन्धर्वनकों कियो बिपिनि प्रबेश गभीर ॥
गन्धर्वन बारित कियो कहि सु सामके बैन । तिन्हे निदरि बनमे चले कुरु भट अति बलऐन ॥
चित्रसेन गन्धर्वपति पै गन्धर्वन जाय । कहो भिरे गहि शस्त्र लहि प्रभु शासन फिरि आय ॥
तिन्हे देखिकै भट भजे दुर्योधनके सर्ब । तिन्हे भजत लखि सूतसुत करिकै क्रोध अखर्ब ॥
बाण वृष्टि करिकै महत गन्धर्वनके अङ्ग । काटि गिराऐ भूमिपै सह कुण्ड सउमङ्ग ॥
चित्रसेनके लखित भे बध्यमान गन्धर्ब । फेरि लरे गन्धर्ब ते कोटिन आय अखर्ब ॥
गन्धर्वनतें पूर्ण भू क्षणमे भई अमान । शकुनि दुशासनभूप सङ्ग बैठि बन्धु बलवान ॥
लरण लगे करि कर्णकों आगे रथ चढि उद्ध । गंधर्वा लागे करण घेरि कर्णकों युद्ध ॥
भयो तुमुल रणरङ्ग तब वर्षत शस्त्र अखर्ब । शर सो पीडित व्है भए शिथिल रूप गन्धर्ब ॥
कियो उच्चस्वर सब्द तब कुरु सैनिक बरबीर । चित्रसेन लखिकै चलो पूरित क्रोध गभीर ॥
मारै अस्त्रनसों लगे लरन बीर बलवान। कौरव बीर भए सकल मोहित ते अति मान ॥
एक एक कौरव सुभटको दश दश गन्धर्ब । घेरि लयो चऊओर ते लागे लरन अखर्ब ॥
भजी कौरवी सैन सब व्है पीडित अति मान । एक रहो ठाढो तहां कर्ण बीर बलवान ॥
कर्ण सुयोधन शकुनि सह करन लगे तब युद्ध । शक्ति शूल पट्टिश कुलिश लगे चलावन उद्ध ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कोटिन्ह ते गन्धर्व तब घिरे कर्णसों घेरि । मारण लागे कर्णको चहूँ दिशनिसों ढेरि ॥
मारि सूत हय अङ्ग सब रथके लये उखारि । तिल समान करि तोरि कै क्षितिपर दीन्हे डारि ॥
खड्ग चर्म धरि रथते कूदि सूतसुत बीर । रथरप बैठि विकर्णके रथतें भज्यो अधीर ॥
भजत कर्णके चमू सब देखत भाजी भूप । भयो सुयोधन युद्धतें नहीं पराजित रूप ॥
गन्धर्वणको चमू लखि आवत प्रबल महान । दुर्योधन धरि धनुषको लागो वर्षण बान ॥
गन्धर्बन शरवृष्टि लखि रथसों लपटे जाय । मारि सुयोधनको दियो खण्डित रथते गिराय ॥
देखि सुयोधनको गिरो रथते अति सुकुमार । चित्रसेन गहि लेचलो जीवित बीर उदार ॥
सहित दुशासन अरु बीविंशति चित्रसेन रणधीर । बिन्द और अविंद सह पहिले चलो अधीर ॥
भूपग्रहण भ्रातन सहित रानिन्ह लखि भय पाय । सेना भजि नृप धर्मकी लई शरण सुखदाय ॥
सैनिकाऊचुः॥ रानिन सहित सुयोधनहिँ गहि गन्धर्व गभीर। लेयँजात हैं समरतें धावऊ पारथबीर॥
भूपसुयोधनके सकल बृद्ध अमात्य सुजान । आर्त पुकारत तहँ गये जहँ पाण्डव बलवान ॥
दीन बृद्ध मागत शरण अैसे करत पुकार । धर्मनृपतिसों सुनत सो बोले भीम उदार ॥
सहतयत्न करि सङ्ग लैं सेना साजि अखर्ब । करिबैं जो हमकों रहो सो कीन्हो गन्धर्ब ॥
दुष्ट मंत्रकरि करनको कार्य्य अन्यथा जौंन । कितव कियो हौ औरविधि भयो कार्य्य सो तौंन ॥
ताको हन्ता और है अरि अशक्तको जौन । गन्धर्बन सो प्रगट करि चरित देखायो तौंन॥
प्रियकरता मम पुरुष कोउ हैगो अगम उदार । यत्न बिना हीं जेहि हरो हमरे शिरको भार ॥
शीतातप सहि भए हम बनमे बसि क्षणरूप । ताहि देखायो चहत शठ अपनो बिभव अनूप ॥
सुने युधिष्ठिर भीमके एहिविधिके बऊ बैन । परुषबचनको कहनको बोले औसर है न ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उबाच ॥ * ॥

प्राप्त हमारी शरणमे कौरव आरतरूप । अैसे कहिबे बचन हैं भीम न तुम्हे अनूप ॥
कलहै बैर कुलमे भए कछू करणकों पाय । कुलधर्षण परते नहीं सहै सन्त समुदाय ॥
जानत इत हमकों रहत बऊदिनते गन्धर्ब । हमै निदरि कै यह कियो अप्रिय कर्म अखर्ब ॥
दुर्योधनके ग्रहणते सह इस्तिन मतिराश । कुरुकुलको जो धर्म सो भयो सर्बथा नाश ॥
शरण पात्रके नाशकों रक्षणकों कुलधर्म । उठऊ बीर तुम सज्ज व्है अस्त्र शस्त्र धरि पर्म ॥
जिष्णु नकुल सहदेव सह भीम महाबल धीर । इस्तिनसहित सुयोधनहि मोचि लेऊ बरबीर ॥
ए रथ कञ्चन घटित है सायुध बलमय अर्ब । बायुबेग सूतन सहित ध्वजको धरे अखर्ब ॥
सूत इन्द्रसेनादि सह रणकोबिद मतिउद्ध । तिन पै चढि गन्धर्वगनसों करि कै अतियुद्ध ॥
मोचन करऊ सुयोधन हि प्रथम साम कहि बैन। मृदु कर्कस फिरि युद्ध करि तिन्हे जीति बलअैन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रक्षणार्थ धावन कहे साँजलि रणहीं आय। अरिको मोचन पुत्रके जन्मऊते सुखदाय॥
लहै सुयोधन शत्रुसों तो भुजबलसों त्रान। सुनऊ बृकोदर जगतमे याको कहा समान॥
मख कीन्हे प्रारंभ मख भङ्ग होयगो तौन। नतरु कुटावन शत्रुकों हमरू करते गौन॥
धर्मराजके बचन सुनि उठि फाल्गुण रणधीर। हेतु सुयोधन मोक्षके करी प्रतीज्ञा बीर॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

सुतन जौन धृतराष्ट्रके ते तजिहै सुनि साम। गन्धर्व राजको रक्त तौ भू पोहै अभिराम॥
सत्य प्रतिज्ञा जिष्णु की करु सैनिक सुनि सर्व। भए सचेत बिचारि कै आनद भरे अखर्व॥
बचन युधिष्ठिरके सुनत भीमादिक बरबीर। व्है प्रसन्न ठाटे भए आनद भरे गभीर॥
अभेद्य कवचन पहिरे सकल दिव्य अस्त्र धनुधारि। पवनबेग रथपै चढे अरिजय युद्ध बिचारि॥
नरव्याघ्र आतुर चले तिन्है देखि गन्धर्व। जय बांछित रणको फिरे ते धरि शस्त्र अखर्व॥
पैठे फिरि गन्धर्व सब चमुमे आय गँभीर। चारिचढे रथपैं चितैं पाण्डुतनय रणधीर॥
बाँधे व्यूह बिलोकि कै गन्धर्वनकों उद्द। धर्मराजके बचनतें करण लगे मृदु युद्ध॥
नहीं शक्य मृदुयुद्धतें तिनकों बिजे बिचारि। जिस्नु कहे तिनसों बचन सहित साम निरधारि॥
तजऊ सुयोधन बन्धु मम भ्रातन्ह सबबलअैन। गन्धर्वन सुनि जिष्णु के साम सहित ए बैन॥
गन्धर्वन हसि कै कहो सुनि फाल्गुणको बैन। साशन मान्य सुरेशको हमै औरको है न॥
गन्धर्वनके सुनि बचन जैसे जिस्नु अमान। फिरि गन्धर्वनसों कहे बचन जिस्नु बलवान॥
योग्यन गन्धर्वेशके करिबो निन्दित काम। करिकै सङ्गम मनुजसों हरि लीबो परबाम॥
तजऊ पुत्र धृतष्ट्रके दारुण सह सुनि साम। नतरु जीति कै तुम्है हम लेहैं बन्धु सबाम॥
यह कहि कै तीक्ष्ण शरन्ह बर्षे फाल्गुणबीर। गन्धर्वा लागे लरन छोडन शस्त्र गभीर॥
लरे तुमुल करि युद्ध अति दुऊँदिशि बीर रिसाय। गन्धर्वन शरबृष्टि करि चऊँ दिशि लीन्हो छाय॥
चारि बीर पाण्डव तहाँ हे गन्धर्व अनेक। ते दौरे चऊँओरतें करि रथ भग्न बिबेक॥
कर्ण सुयोधनको कियो जेहिबिधिसों रथभग्न। तथा पाण्डवन पै चले खेचर रणमदमग्न॥
मारि पाण्डवन्ह शरणसों ते गन्धर्व अमान। मारिभूमियर डारि दिय सघन बरषि कै बान॥
शरपण्डित गन्धर्व ते भए महा अतिकाय। पाण्डव बीरन्हके निकट नहीं शके ते जाय॥
गन्धर्वनपर क्रोध करि जिष्णु बीर बलवान। दिव्यास्त्रन छोडन लगे करि प्रयोग अभिमान॥
कोटिन्ह हनि गन्धर्व ते यमपुर दए पठाय। महाबीर अर्जुन प्रबल आग्नेयास्त्र चलाय॥
महा धनुष धरि भीम तब बिशिख बज्रसे डारि। महिमण्डित कीन्ही तहाँ गन्धर्वनकों मारि॥
नकुलसहदेव माद्रीतनय करि लाघव तजि बान। हने अमित गन्धर्वगण चण्ड समर सनमान॥
पीडित व्है दिव्यास्त्रसों ते गन्धर्व सुजान। गान्धारीके सुतन्ह लै नभकों कियो पयान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लए जात नभको चिते कौरवको कुरुबीर । पचासे रोके सकल करि शरपञ्जर धीर ॥
रुद्र होय ते क्रोध करि बर्षे शस्त्र अनन्त । खड खंड अर्जुन करे शस्त्र तौन धृतिमन्त ॥
भल्लनसों भेदित करे गन्धर्वनके गात । गिरन लगे ते गगणतें जैसे उपल प्रपात ॥
अस्त्रनसों शरवृष्टिसों काटि धनञ्जय सर्व । स्थूणकरण अरु ऐन्द्र तब डारो अस्त्र अखर्व ।
बध्यमान गन्धर्व ते क्षिति नभतें धरि बीर । शरवर्षा लागे करण करि के क्रोध गँभीर ॥
आग्नेय और सोम्यास्त्रकों कुन्तीसुत बर बीर । दह्यमान गन्धर्व व्हैं तिनते भए अधीर ॥
गन्धर्वनकों व्यथित लखि चित्रसेन बलवान । चल्यो क्रोध करि जिष्णुपर लेकै गदा अमान ॥
गदा आयसी तास हनि बाणनसों कुरुबीर । सात खण्ड करि भूमि पैं दीन्हो डार गँभीर ॥
सप्त खण्ड लखि गदाके चित्रसेन बलवान । अर्जुनसों लागो लरण व्हैकै अन्तरध्यान ॥
अस्त्र जौन गन्धर्वपति दिव्य तेज अतिमान । दिव्यास्त्रन्हसों व्यर्थ ते किए अर्जुन बलवान ॥
चित्रसेनकों जानि कै अर्जुन अन्तर्ध्यान दिव्यास्त्रन्हसों हनन तब ताहि लगे बलवान ॥
चित्रसेनको धनुष धुनि सुनि अर्जुन गम्भीर । अस्त्र शब्दबेधीनसों मारण लागो बीर ॥
तिन शस्त्रन्हसों बिद्ध व्है चित्रसेन गन्धर्व । रूप देखायो आपनो कहि प्रियसखा अखर्व ॥
सखा निरखि कै चित्रसेनको प्रिय अर्जुन बीर । कियो अस्त्र संहार तब धनुर्वेदविद बीर ॥
करत अस्त्र संहार लखि अर्जुनको कुरु सर्व धनुकर्षनकों छोडि कै रथगति कीन्ही खर्व ॥
भीमसेन अर्जुन नकुल सह सहदेव सुजान । चित्रसेन सब कुशलको कियो प्रश्न सुखदान ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

चित्रसेनसों जिष्णु इमि कहे बचन मुसकाय । कियो कौरवनके ग्रहणमें यह का बेवसाय ॥
कहो सदारसुयोधनहिकौनहेतुतुमधीर । चित्रसेनउवाच । अभिप्राय ताकौबिदित हमैभयोयहबीर ॥
कर्ण सुयोधन पापमय दुष्टात्मा दुखदान । क्षीण जानि बनस्थ ते तुम्हैं अनाथ समान ॥
बिभव देखावन आपनो इत आए अतिमान हँसिवेकों सह द्रौपदी तुम्हैं दुष्ट बलवान ॥
वाञ्छित तिनको जानि कै हमसों कहो सुरेश । सहित अमात्य सुयोधन हिँ गहिवेको सुनिदेश ॥
शिष्य सखा प्रिय पांडुसुत तब अर्जुन बर बीर । आए इतै सुरेशकी आज्ञा पाय गभीर ॥
। एहि दुरात्म हि पकरि हम लै जै है सुरधाम ।

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

। भ्राता मम यातें तजऊँ चित्रसेन अभिराम ।
। शासनतें नृप धर्मके यह मम प्रिय कुरुवीर ।

॥ * ॥ चित्रसेनउवाच ॥ * ॥

। नहीं बिमोक्षण योग्य यह पापीगर्व गभीर ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आयो यह करि कै कपट बांछित करिबे जान। धर्मराज तुम द्रौपदी जानत हौ नहि तौन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

चित्रसेन सह पार्थ सब गए जहाँ नृपधर्म । चित्रसेन सिगरो कहो ताकों बाँछित मर्म ॥
धर्मराज गन्धर्वपतिके सुनी सिगरे बैन। मोचण कहो सुयोधन हिं भ्रातन सहित सचैन॥
आए मेरे भाग्यतैं चित्रसेन सह सैन। नियह कीन्हो दुष्टको सह अमात्य मदचैन ॥
कियो महा उपकार मम गन्धर्वन सह बीर । याके मोचनते रहो मम कुल सुयश गभीर ॥
धर्मनृपति सो बिदा ह्वै चित्रसेन गन्धर्ब । गयो आपने लोककों सहित अप्सरन्ह सर्ब ॥
शक्र अमृतकी वृष्टि करि ज्याए सब गन्धर्ब। जिन्हे पांडवन्ह समरमे मारे शरन्ह अखर्ब ॥
दियो सुयोधनभूपकों दारण सहित कुटाय। कियो पांडवन्ह कर्म यह दुष्कर अति बलकाय ॥
कुरुकुलते पूजित लसे पांडवन्ह सर्ब । यथा यज्ञके धाममे पावक पाचँ सपर्ब ॥
मुक्त सुयोधनसों कहो धर्मराज इमि बैन। ऐसो साहस फेरि है करिबो योग्य तुम्हे न ॥
साहस करता नहि लहत सुखकों भासत बेद । कुशल जाऊ भ्रातन सहित कीजो कछू न खेद ।

॥ * ॥ वेशम्पायनउवाच ॥ * ॥

बन्दि धर्मनृपको चले दुर्योधन सह भ्रात । मरण समैमे पुरुष ज्यौं हतइन्द्री ह्वैं जात ॥
गएँ सुयोधनके सकल बिप्र आय तपधाम। पूजि प्रशंसित धर्मनृपको कीन्हो अभिराम॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेनकविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणिघोषयात्रा वर्णनोनाम द्विपञ्चाशदध्यायः ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀***

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बध्य जीतो शत्रुतैं मदमान अमरपधाम । बाऊबलतें कियो मोचित पांडवन सह वाम ॥ गर्ब गिरिसो सो सुयोधन धरे लज्जित बेश । कियो हास्तिननगरमे तिन कौनभाँति प्रवेश॥ कहऊ सह विचार हमसों कथा तौन ललाम । चहत हम सब सुनो तुमसों कथा मतिकेधाम ॥ ❀❀❀

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मराज कीन्हो बिदा दुर्योधनकों भूप । चले अधोमुख दुःखसो पूरित लज्जित रूप ॥
चले सैन सह खपुरकों भरे शोक अतिमान । बसे सजलथल लखि गऐ कछू दूरि तजि जान ॥
बैठे जँहँ पर्य्यङ्कपर रहे सुयोधन भूप । राऊग्रसित शशि भोरको जैसे म्लान स्वरूप ॥
कर्ण तहां आयो भजो रहो जो तजि रणरङ्ग । कुशल तुम्हारो भाग्य बश फेरि लहो हम सँग ॥
गन्धर्वनको तुम कियो विजय भाग्य बश भूप । लखत भाग्यते बन्धु तव रणजेतार अनूप ॥
लखत तिहारे हम भजे गन्धर्वनते बीर। भजी सैनको फेरि हम सके धरायन धीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

शरक्षतते हम व्यथित ह्वै रण तजि भागे भूप । अक्षत तुम्हे भ्रातन सहित देखत अद्भुत रूप ॥
मुक्त भये देखत तुम्हे एहि रणतें अतिमान । गन्धर्वनकों युद्धमे जीतै कौन पुमान ॥
भ्रातन सह यह कर्म तुम कीन्हो अद्भुत बीर । गन्धर्वनकों समरमे और न जेता धीर ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सुनत सूतसुतके बचन दुर्योधन बिलखाय । कहन लगे गद गद गरें दृगजलसों उमगाय ॥

॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बिना जाने कहत हो तुम सूत सुत ए बैंन। नहीं यातें करत निन्दित तुम्हे हे बलऐंन ॥ जानि हम गन्धर्ब जीतो युद्धमे बलवाँन । कहत ऐसे बैन तुम सुतसूतके मतिमान ॥ युद्धमेरे कियो भ्रातन हम हि सह चिरकाल । हने चारोओरतें तिन डारि शस्त्र बिशाल ॥ नहि हँम सम खेचरणके याते करि जब युद्ध । सह पराजय समरमे हम लहो बन्धन उद्ध ॥ सहित भ्रातृ अमात्य पुत्र सदार हमकों तौंन। पकरि कै गन्धर्ब बिहसत कियो नभपथ गान ॥ गऐ भाजि अमात्य सैनिक पांडवनके पास । जानि शरणद तिन्हे मागो शरण पूरित त्रास ॥ जात हे गन्धर्व लीन्हे पकरि कै बलधाम । करह मोक्षण बीर भूप सुयोधनहिँ सह बाम ॥ होय गो कुरुबधुनसों पर पुरुष परश सुजान। पांडुके सुत ज्येष्ठ यह सुनि बचन धरिकै मान ॥ कहे अनुजनसों हमारे मोचिबे कै बैंन । सज्ज ह्वै चढि रथन पैंते गए तहँ बलऐंन ॥ लामके कहि बचन तिनसो प्रथम अर्जुन बीर । नहीं छोडो हमे सुनि सो क्रोध करि रणधीर ॥ भीमादि पांडव लगे बर्षण खेचरण पर बान । छोडि रण गन्धर्ब भाजे गगणकों बलवान ॥ हमे खैचत दीनसें सब मुदितमन गन्धर्ब । तहाँ शरपञ्जर बिलोको जिष्णु रचित अखर्ब ॥ तजत अर्जुन दिव्य अस्त्रनकों बिलोकि महाँन । सखा कहि तब प्रगट भो गन्धर्वपति बलवाँन ॥ चित्रसेनसो पांडवनसो मिलो बूझत चैंन । परस्पर मिलि तजो तिन सन्नाह बलके ऐंन ॥ एक ह्वै गन्धर्ब पांडव महत आनद पाय । जिष्णुकों अरु चित्रसेनहिँ सबिधि पूजे आय ॥ मिलत अर्जुन चित्रसेन हि कहो ऐसो बैंन । मोचिवेको कौरवनके योग्य तुम बल ऐंन ॥ नहीं धर्षण जियत पांडव कुरुनको है आम । सुनत अर्जुनके बचन ए चित्रसेन ललाम ॥ कहो सो गन्धर्ब करि हम मंत्र आए जौंन । लखो हम ए तुम्हे जात देखाइबे श्री तौंन ॥ बचन सुनि हम कर्ण तिनकों कहे जो गंधर्व । चहो पैठो भूबिबरमे भरे लाज अखर्ब ॥ धर्मनृप पहँ जाय सह गन्धर्ब पांडव बीर । कियो हम दुर्मंत्र जो सो कहो सर्ब गँभीर ॥ स्त्रियन सह हम बहु पर बश भऐ हे सुतसूत । जो युधिष्ठिर कियो मोचित दुःख तौंन अकूत ॥ जे निकासे गऐ हमसों सदा हम रिपु तास । दुर्बुद्धि मोचित कियो तिन मम बारि जोते नास ॥ मरण होतो प्राप्त हमकों युद्धमे अभिराम । श्रेय होतो सुयश हमको सूरलोक ललाम ॥ करतव्य हमकों जौन है अब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुनऊ तौन गँभीर। करि निराशन मरैं गे हम जाऊ तुम घर बीर॥ जाऊ हांसिन नगरको सम सकल भ्राता कर्ण।तुमहिँ आदिक करत रहि हौ नित्य मेरो स्मर्ण॥जाऊ सहित दुशासनहि तुम स्वपुरकों निरधारि। नहीं पुर हम देखि हैं रणमाँह अरिसों हारि॥शत्रुके हम मानहर व्है मित्रके क्षतमान।मित्रसों कर भयो क्षत यह शत्रुको सुखदान॥बारणाव्हय नगरमे का कहैं गे प्रति भूप। विदुर भीषम द्रौण कृप जहँ सोमदत्त अनूप॥ और जे बाह्लीक सञ्जय बृद्ध सम्मत जौन। कहा हमसों कहै गे हम कहै गे क्षत कौन॥ कटुनके उरशीश पैं हम चढे बिक्रम ऐन। भ्रष्ट होय स्वकर्मतें तहँ कहैं गे का बैन॥ दुर्विनीत हि पाई कै श्री रहति नहिँ चिरकाल। तजत है ऐश्वर्य्य विद्या यथा हमकों हाल॥नहीं यह दुश्चरित हमकों रहो करिबो कर्म्म। आपनी दुर्बुद्धिते यह लहो हम दुःशर्म॥नही जीवन योग्य याते हमै हे सुनु कर्ण। शत्रु उद्धत कष्टते को लहत है नहि मर्ण॥ शत्रुभये ते हसित हम मान पौरुष हीन। भरे बिक्रम मान देखत पाण्डवनको पीन॥वैशम्पायनउवाच॥ कहो चिन्तित व्है सुयोधन यों सुदुशासन पास।करत हम अभिषेक भूपति होऊ तुम मतिरास।करऊ शासित कर्ण शैबल भूमिपालित जौन।सहित भ्रातन्ह इन्द्र ज्यों सह सुरन्ह त्रिभुवनभौन॥ब्राह्मणन्हमे बृत्ति कीजो नहीं सहित प्रमाद।सुहृद गुरगण पौरजन पुर पालियो निर्वाद॥कण्ठसों लपटाय कै फिरि जाऊ बोलो भूपासुनि दुशासन बैन नृपके कहो सकरुण रूप॥ गरो गद गद जोरि अञ्जलि भूपके परि पाय। साश्रु बोलि प्रसीद क्षितिपर गिरो कम्पित काय॥ नेत्रजलसों धोय नृपपद कहो ऐसे बैन। नही हमसों होय गो यह सुनऊ हे मतिऐन॥ भूमि नभ फटिजाय छोडै प्रभाके शशि भान। वायु निश्चल होय शीतल अग्नि चल हिमवान॥ नहीँ शासन करिहि गे हम तुम्है बिनु भू भूप। कहो फिरि फिरि यों दुशासन धरें सकरुण रूप॥ भूप तुम एहि वंशके हौ कहत सत्य बिचारि। पाय पै परि लगे रोवन उच्चस्वरकों धारि॥ लखि सुयोधन सह दुशासनको सुदुःखित रूप। भरो दुखसो कर्ण बोलो करऊ खेद न भूप॥कहा रोदन करत बालक सदृश कौरव बीर। शोक ते जौं जाय दुख तौ करऊ भूप गभीर॥ नहीँ तातें शोक करिए धीर्य्य स्वधरम धारि। शत्रुहर्षित होंहो गे सह शोक तुम्हहि निहारि॥पाण्डवन यह कियो तुमप्रति जौन मोचन कर्म। देशमे निज बसत नृप प्रिय करण ताको धर्म॥ पाल्यमान स्वदेशमे तब बसत पाण्डव सर्ब। नहीँ तुमकों योग्य एहिबिधि भएँ शोच अखर्ब॥ दुखित है तब भ्रात तो व्रत देखि अनशन भूप। चलऊ उठि कै करऊ भ्रातन्हकों समोद अनूप॥ प्राप्त नहि लघु सत्व ताको भए हौ इत धीर। पाण्डवन जो कियो मोचन कहा अद्भुत बीर॥ देशबासी आपने निज सुभट सैनिक जौन। ज्ञातहू अज्ञातहू नृपको करै प्रिय तौन॥ न्यायतें एहि कियो मोचण पाण्डवन तब भूप। दैव इच्छातें छुटे अब कहा रुदन अनूप॥ उठऊ भूपति स्वस्ति तव अब करऊ नहि चिरकाल। करऊ गे मम बचनको नृप नही जौं प्रतिपाल॥ औसि तजि ह प्राण हम तव

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

चरण ढिग मतिरास। करत अनशन ब्रती नृप को भूप भूसुर हास ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ द०प
सुनि सुयोधन कर्णके एहि भांतिके वर बैन। उठे नहि करि नियत जावें स्वर्गकों मतिअैन॥
धरे अनशन मरणको व्रत नृप सुयोधन धीर। शकुनि बोले नीतिके तब बचन बुद्धि गभीर ॥ * ॥
शकुनिरुवाच ॥ * ॥ कर्णके तुम सुने वचन सुनीति नियमित गाथ। हरी हम जो परम श्री सो तजें
का नृपनाथ ॥ योग्य हो न अबुद्धिते तुम भूप तजिबे प्राण। बृद्ध सेवन कियो तुम नहि जैान हैं मति
मान॥ हर्ष नाशक दैन्य आए करत जोन बिचार। नष्ट ताको होति श्री जिमि आमपात्र सवार।
क्लीव कादर दीर्घसूत्री जो प्रमादी भूप। व्यसन विषयाक्रान्तको नहि प्रजा भजति अनूप॥ कृपा
करऊ न तजऊ आपु हि सुकृत समुऊऊ बीर। राज्यकों चलि नृपन्हकों यश धर्म लेऊ भगीर॥
किया यह तुम जानिके सुकृतज्ञऊजे भूप। सौभ्रात्र करि कै पाण्डवनको देऊ राज्य अनूप॥
होऊ गे सब भांतिसो तब सुखी तुम कुरुवीर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ शकुनिके एहि
भांतिके सुनि सकल बचन गँभीर॥ चरण पतित दुशासन हि गहि लाय उरसों भूप। बचन
अैसे कहे गहि निर्बेद ताको रूप॥ हमै काम न भोगसों तन तजैंगेब अनित्य। जाऊ तुम सब
नगरकों गुरुन्ह पूजेऊ नित्य॥ भूपके तिन बचन सुनि कैं कहे अैसे बैंन। जैान गति है रावरी सों
हमै है मतिअैन॥ तुम्हैं बिन हम जाहिं कैसें नगरमे सुनु भूप। सुहृद भ्रानन सहित हम सबकों न
धारे रूप॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बऊत बिधिसों सुहृद भ्राता हारि गे समुझाय।
मरणनिश्चयसों नहीं मन हरत भो कूरुनाय॥ कूर बिछाय सुभूमि पर शुचि जाय बैठो भूप। चीरा
म्बरी करि भस्म धारण मरणको सब रूप॥ दाहार्थ बस्तु मगाय राखी मौन व्रतको धारि। पाताल
बासी दैत्यपति मत भूपको निर धारि॥ मरणते कुरु भूपके निज जानि हानि स्वपक्ष। करी तिन
उतपन्न कृत्या मंत्र जपि कै दक्ष॥ कहो कृत्यज करैं का हम कहो तब दनुजेश। नृप सुयोधन ताहि
ल्यावऊ जायके एहिदेश ॥ सुनत जाय सुयोधन हिं तुर तहां ल्याई तैंान। नृपसुयोधन पास
दनूजन्ह कियो निग्रिमे गान॥ दनूज होय प्रसन्न अैसे कहे नृपसों बैंन॥ * ॥ दानवाःऊचुः॥ * ॥
धीर बीर समर्थ तुमकों योग्य अनशन हैं न॥ आत्मत्यागी अधोगतीकों जात है सुनु भूप। पाप कर्म न
करत तुमसे बीर सुमति अनूप॥ धर्मार्थ सुयश बिनाशिनी सुख शत्रु वर्धनि जैान। बीर्य्य प्राण प्रताप
हारिणि धरऊ मनहीं तैंान॥ कहत तुमसों दिव्य करि हम सत्य भूपति बैन। सुनऊँ तुम निर्मान
अपनी देहको मतिअैन॥ पुरा हम सह करि तपस्या लहे वर हर पास। उई तन तो भयो निर्मित
बज्रमय बलरास॥ अस्त्रसों सु अभेद्य सो है ऊई तन तव भूप। अधो तन तव कियो देवा पुष्पमय
अतिरूप॥ कियो इश्वर सहित देवो देह तो बलभैान। देव हो तुम भूप तुमकों कहत मानुष
कौन॥ दिव्यास्त्रबिद भगदत्त आदिक भूपक्षत्री जैान। कियो चाहत रिपुनको तव नाश रणमे तैंान॥
करऊ तुम न बिषाद तुमकों है नहो भय भूप। भए सह तो बीर दानव धारि क्षत्री रूप॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० द्रोण कृप हि समेत हमी और जे बलवान । कृपा तजि ते लरैंगें तव रिपुनसेां अतिनाम ॥ पुत्र भ्राता शिष्य बालक वृद्ध जे जन ज्ञात । तिन्हे रणमे मारिहैं नहि छांडि है सुनु तात ॥ निस्नेह है ए दनुज भूपस्वरूपते करि क्रोध । अरिनको संहार करि ह धरऊ कुरुपति बोध ॥ जिषु सम्भव बसति है भय जौन तुम मे बीर। तौन ताके नाशकी बिधि बिहित सुनऊ गभीर ॥ असुर नरक जो गयो मारो तास आत्मा आय । कर्णकी सो मूर्त्तिमे बसि धरे अति बल काय ॥ समुझि कै सेां बैर लहि है केशवार्जुन साथ। तिन्हे रणमे जीति है सेां महा बल कुरुनाथ॥महारथ अरिदमन कर्णहिँ जानि कै सुर भूप। तास छल करि कवच कुण्डल लयो मांगि अनूप ॥ दैत्य राक्षस पटै यातें दए हम बऊमान । तौन संशप्तक भए हैं महारथ बलवान॥हनैगे ते जिष्णुको करि युद्ध अति रणधीर। भूमिको तुम भोग करि हो एक कुरुपति बीर॥नष्ट तुमकों भए बिनशत दनुज पक्ष अनूप। अन्यथा नहिँ करऊ मति तुम दनुजकों गति भूप॥ सुरनकों गति सदा पाण्डव भूप हैं सुखदाय॥ वैशम्पाय नउवाच ॥ * ॥ एहि भांति दनुजन्ह नृपसुयोधनसेां सु कहि समुझाय ॥ बिदा कीन्हो पुत्र सम हिय लाइ करि सनमान । यथा स्थिति करि बुद्धि नृपकी दनुज बिबिधि बिधान॥ कहो कृत्या गइ तहँ लै सो सुयोधन भूप । रहे अनशन धरे व्रत जहँ भरैं खेद कुरूप ॥ पूजि कृत्यहि बिदा करि यह चरित मोर बिचारि। जीति हैं हम पाण्डवनको कियो दृढ निरधारि ॥ कर्णकों संशप्तगणकों युद्ध जेता मानि ।धरो धीरज विष्णु के बधयोग्य नृप अनुमानि॥ बसति आत्मा नरककी सो करणके तन धीर। जनम जानि सुदैत्यगणको तासरूप गँभीर ॥ भीष्म कृप अरु द्रोणको है चेत दनुजा क्रान्त ।लरैं मे ए युद्धमे निस्नेह होय नितान्त॥दनुजको सम्बाद कहत न मौन धारें भूप। कर्ण बूझो जाय भोरहि दीन धारे रूप॥ मृतन जीतन शत्रु देखत जियत भद्र अनूप । मरण भीति बिषादको यह है न और न भूप॥अङ्कमे गहि भूपको कहि कर्ण ऐसे बैन। उठऊ शोचत कहा औसर सोचिबे को है न॥तापकरता अरिनको सोसहत मृत्युनबीर।लखि पराक्रम करऊभय का जिषु को गँभीर॥ सत्य तुमसेां करत हैं हम यह प्रतिज्ञा उद्ध । गएँ तेरह बर्ष हमसेां होय गे जब युद्ध॥पाण्डवनको जीति तब बश करै गे हम भूप । समुझि असुरन्हके बचन सुनि कर्णके अनुरूप। दई आज्ञा सैन सज्जित करनको गम्भीर । चली सो चतुरङ्गिनी सजि सहित हर्षित बीर ॥ सुनत आशीर्बादके द्विजबरनसेां बर बैन। चले नृप धृतराष्ट्र आगे सुनतहीं सह सैन ॥ कर्ण शकुनि सभ्रात आवत नृप सुयोधन बीर । बाल्हीक भूरिश्रवा भूपति सोमदत्त गभीर ॥ गए नृप धृतराष्ट्रके सँग भरे आनद बेग। क्षिप्र जाय लेबाय आए कियो नगर प्रवेश ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथ कबीस्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वनि दुर्योधस्य प्रायोपवेशनवर्णनोनाम त्रिपञ्चाशदध्यायः ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

बन बसत श्रीनृपधर्म । तेहि द्वैतबनमे पर्म ॥ धृतराष्ट्रसुत सह कर्ण । अरु शकुनि दुर्मति भर्ण ॥
भीष्म कृप सह द्रोण । कियो का मतिभौंन ॥ कहऊ सञ्जय तौंन । करि हस्तिनापुर गौन ॥ * *

॥ * ॥ सञ्जयउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह भीषम सुनिकै वृत्तान्त । कहो सुयोधनसोंमतिकान्त ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ कहो वचन
जो तुमसों तात । भूप सुयोधन बनकों जात ॥ गवन तुम्हारो रुचो न तौंन । तुम तह जाय कियो
छत जौंन ॥ ग्रहण तिहारो भो तहँ बीर । शत्रुणसों रण हारि अधीर ॥ तुम्है पाण्डवन्ह मोचो बीर ।
कर्ण लखत तव भजो अधीर ॥ कर्ण पराक्रम देखो जौंन । तूर्यांस नहीं पाण्डवके तौंन ॥ सौर्य धर्म
विधिवत धनुबेद । कर्ण न जानत इनको भेद ॥ तातें क्षमा करह कुरुभूप । सन्धि पाण्डवनसों सुख
रूप ॥ सुनत भीष्मके हित मित बैन । चले सुयोधन गहि गृह अैन ॥ शकुनि कर्ण दुःशासन साथ ।
तेऊ गऐ जहां कुरुनाथ ॥ तिन्है जात व्है लज्जा मान । भीषम गयो अपने धाम ॥ गऐ भीष्मके फिरि
तह आय । मंत्रकरण लागे कुरुराय ॥ कौन कार्य करि लहिऐ श्रेय । कहऊ मंत्र सो हित सुख
देय ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ सुनऊ कहत हम सो कुरुभूप । भीष्म हमै निन्दत अति रूप ॥
प्रसंशित करत पाण्डवन्ह जौंन । राखि द्वेष तुमसों हियभौंन ॥ प्रभु तव निंदा तुम्है
समत्त । कहो पाण्डवनको यश सत्त ॥ आज्ञा मोहि देउ सह सैन । जीतौं भूमि सकल
बलअैन ॥ चारि पाण्डवन्ह जीती जौंन । लेहै जीति एक हम तौंन ॥ देखै भीष्म कुला
धम तौंन । हमै तुम्है निन्दकहै जौंन ॥ यह सुनि बचन कर्णके भूप । बैन कर्ण सो कहे अनूप ॥
लहिकै तुम्है भए हम धन्य । तुमसो प्रबल न ममहित अन्य ॥ कियो चहत दिगबिजय सुधीर ।
तौ तुम जाऊ सबल बरबीर ॥ कर्ण सुयोधनके सुनि बैन । सेना सज्ज कियो बलअैन ॥ पाय मूल्ह
रत शुभ सुखदान । चलो सबिधि करि मङ्गल स्नान ॥ * ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ कर्ण महाबल
सहित सहाय । रुन्धित कियां द्रुपदपुर जाय ॥ द्रुपद नृपतिसों करि अति युद्ध । बश करिकै कर
लियो समृद्ध ॥ तिनके निकट रहे जे भूप । तिन्है जीति कर लियो अनूप ॥ तहँते उत्तर दिशिको
जाय । भूपन्ह जीति कटद्ध कर पाय ॥ भगदत्तहि जीति लियो कर बीर । हिमगिरिपै चढि गयो
गभीर ॥ जीति तहाँके भूपति सर्ब । बशकरिके कर लियो अखर्ब ॥ गिरितें उतरि पूर्वदिशि जाय ।
जीते भूप महाबल काय ॥ अङ्ग कलिङ्ग बङ्ग मिथिलेश । कर्कखंड सह मगध नरेश ॥ आबसीर
सह कोशल भूप । तिन्है जीति कर लियो अनूप ॥ पूरुव दिशा जीतिकै सर्ब । बल भूमिकों गयो
अखर्ब ॥ मृतिकावती कौशली पुरी । मोहन पत्तन त्रिपुरी रुरी ॥ इन्है जीति कर लेय महाँन ।
फिरि दक्षिण दिशि गो बलवान ॥ रुक्मिण नृपसों करि अति युद्ध । कियो प्रसन्न कर्ण बल उद्ध ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भो प्रसन्न तव रणतें बीर। कहि रुक्मिन बसु दयो गँभीर ॥ वेणुदारि आदिक नृप जौंन। दक्षिण दिशिके जीते तौंन ॥ फिरि शिशुपाल पुत्रकों जीति। तास निकटके नृपन्ह सनीति ॥ जीति अवंती पुरी महान। पश्चिम दिशिकों कियो पयान ॥ बर्बर यवन भूप जे बीर। तिन्है जीति कर लियो गँभीर ॥ जीति दिशा बिदिशाके भूप। कर्ण लये कर रत्न अनूप ॥ गयो सु हास्तिनपुरको बीर। जीति दिशन्ह कर लए गँभीर ॥ भूप सुयोधन आगे आय। भ्रातृ पितृ सह गए लेबाय ॥ पूजि कर्णकों बोले बैन। तो कृतकर्म सुनो बलऐन ॥ भीष्म द्रोण कृपसों नहि जौन। भयो कर्म तुम कीन्हो तौन ॥ और कहा कहिए बलगाथ। तुम्है पाय हम भए सनाथ ॥ पाण्डव तव न सोरहे अंश। और पुरुषको बीर प्रसंश ॥ गान्धारी धृतराष्ट्र सधर्म। दशन तास करऊ चलि पर्म ॥ एतने माहँ हल हला शोर। भयो नगरमे अतिशय घोर ॥ हाहाकार करत जन सर्व। निन्दत सुजन प्रसंशत खर्व ॥ कर्ण जीति सब धरणी भूप। सागराम्बरा सगिरि अनूप ॥ अल्पकालमे अतिबल वान। कनक रत्न मणि हेम महान ॥ गान्धारी नृपके ढिग जाय। बन्दे चरण पुत्रके भाय ॥ नृप धृतराष्ट्र हृदैसों लाय। कर्णहि बिदा कियो सुखपाय ॥ कर्णहिँ शकुनि दुशासन भूप। पाण्डव निर्जित मानि अनूप ॥ निर्भय रहत कुमतिके ऐन। यथा शशा मूदे तेन नैन ॥ ****

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि कर्णदिग्विजयबर्णनोनाम चतुःपञ्चाशदध्यायः ॥ **********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जीति भूमि सब कर्ण इमि कहो सुयोधन पास। कहत जो हम तुमसो नृपति करऊ तौन मतिरास ॥

॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥

हैपृथबीसबरावरीपालऊशक्रसमान। बैंशम्पायनउवाच। भूपकहोदुर्लभकहाजासह तुमबलवान ॥ अभिप्राय मम सुनऊ सो कहियत सो हमबीर। राजसूय जो पाण्डवन कियो सो लखो गँभीर ॥ हम चाहतहैं कियो सो राजसूय बरयज्ञ। ताको तुम साधन करो सकल भाँति सो तज्ञ ॥

॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥

भूमि भूमिपति रावरे सकल वश्य क्षितिपाल। द्विजन्ह बोलावऊ बेदबिद करि सँभार बिशाल ॥ यथा बेदबिधि कीजिए सहित ऋत्विजन्ह तज्ञ। करिबेको तुम योग्यहौं राजसूय बर यज्ञ ॥ बचन कर्णके भूप सुनि पुरोहित हि बोलाय। राजसूय करिबे कहो आदर सह सुखदाय ॥ सुनत सुयोधनके बचन कहो पुरोहित तज्ञ। होत न जियत युधिष्ठिरहि राजसूय नृप यज्ञ ॥ [illegible] यह भूप हम कहत सुनऊ सो बैंन। राजसूय सम कीजिए औंर यज्ञ मतिऐंन ॥ करद भूपजे रावरे ते कर देहि ललाम। तासों तुम सह दक्षिणा करऊ यज्ञ अभिराम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हलसों बाहज भूमिहैं यज्ञ सदनको जैन । विष्णु यज्ञ तह कीजिए वेदविहित मतिअन ॥
कियो न काहू यज्ञ यह विष्णु यज्ञभगवान । राजसूयके सदृशहैं यह क्रतु वर सुखदान ॥
श्रेय तिहारो चहतहैं हम सबविधिसों भूप । भए समाप्ति अविघ्न मख तो वांछित सुखरूप ॥
ब्राह्मणके सुनिकैं बचन भूप महामतिअैन । अनुज कर्ण अरु शकुनि सो अैसे बोले बैन ॥
हमैं रुचत तुमकों रुचैं जो विप्रन्हके बैन । सबहिन कहो तथास्तु तव भूप पायकैं चैन ॥
कारोबारिनसों कहो जहाँ यज्ञ भू पर्म । हल प्रवाह करि यज्ञकी शाला रचि सह शर्म ॥
यथा भूप आज्ञा कियो सबहिन कीन्हो तैंन । आमात्य श्रेष्ठ अरु शिल्पके रचना कारक जैंन ॥
विदुर आय नृपसों कहो अैसे बचन विशाल। सज्ज यज्ञ सब विधि भयो प्राप्त मकूरत काल ॥
लाङ्गल करिकै कनकके किय भूको संस्कार । सुनि नृप यज्ञारम्भको शासन दयो उदार ॥
कियो यज्ञ प्रारम्भ तब सविधि द्विजबरन्ह आय । भये सुयोधन भूप तहँ दीक्षित आनद पाय ॥
धृतराष्ट्र विदुर भीषम करण कृप सह द्रोण विशाल। निमंत्रणार्थ क्षितिपतिनके पठये दूत उताल॥
दूत दुशासन द्वैतबन पढयो इमि कहि बैन । जाऊ जहा पांडव बसत महा पापके अैन ॥
तिन्हे निमंत्रण दीजियो बसत तहां जे विप्र । गयो दूत पांडव जहां दियो निमंत्रण क्षिप्र ॥
अर्जित करि धन बीर्यते करत यज्ञ कुरुराज । तुम्हे निमंत्रित कियो चलि देखऊ भूप समाज ॥
। बजत सुयोधन भाग्य बश मख यज्ञ करण विशाल ।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

। बीति गऐ हम आइहैं त्रयोदशाब्दिक काल ।

॥ * ॥ भीषमउवाच ॥ * ॥

कहो दूतसों भीम तब भरे क्रोध अति रूप । शस्त्र अनलमे हव्य करि ऊनै आइहै भूप ॥
बर्ष त्रयोदश बीतिहै कियो जो भूपति नेम । तब हम तुमकों देखिहै रण भू पर सह क्षेम ॥
धृतराष्ट्र सुतन सो जायकै कहियो यह मति अैन । और पांडवन्ह दूत सो कहोन अप्रिय बैन ॥
बचन पाँडवनके कहे दूत सुयोधन पास । आए चऊशिदिके नृपति तह ब्राह्मण मतिरास ॥
तिन्हे यथा बिधि यथा क्रम पूजन करिकै भूप । बैठि सभामे बिदुर सों बोले बचन अनूप ॥
सुखी यथा सब आँतिसो होय स्वजन समुदाय । यज्ञ सदनमे तथा बिधि बेगि विरचिए जाय ॥
सब वर्णनकों विदुर तब आज्ञा देकै भूप । पूजन सबहीको कियो यथा योग्य अनुरूप ॥
यथा योग्य जनको दयो भक्ष भोज्य अरु पान । माला बसन सुगन्ध तें कियो प्रसन्न सुजान ॥
पूर्ण यज्ञ करि नृप दयो गोधन सुवरण दान। यथा योग्य द्विजबरनको भूपन्हको अतिमान ॥
द्विज भूपनको बिदा करि सह भ्रातन्ह कुरु भूप । गए शकुनि सह कर्ण तब हास्तिन नगर अनूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॰प॰ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि दुर्योधनकृतयज्ञवर्णनोनाम पञ्चपञ्चाशदध्यायः ॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

नगर माह प्रवेश करत सु हृत बन्दी आय। भूप सुस्तुति पढन लागे महत आनद पाय॥
श्रीखण्डलिप्त बिछाय लाजा ओर पथमे पर्म। लगे कहन सुभयो नृपति अबिघ्न तोमख कर्म॥
सुनत नाना भांतिके पुर जनन्हके स्तुति बैन। जाय बंदे चरण माताके महामति ऐन॥ भीष्म द्रोण कृपादि बिदुर शल्य बंदेभूप। आपु बन्दित भऐ अनुजनसों भरे सुख रूप॥ जाय बैठे सभामे तब सुत सकल उठि आय। जीति पार्थन राज सूय सु करऊ गे कुरुराय॥ कहत हो तुत सत्य बोले सुनि सुयोंधन भूप। मारि करिहै पांडवनको राजसूय अनूप॥ फेरि बर्धित करऊ गे तुम महा मख तवतान॥ कहो ऐसे लाय हियसों कर्णकों बलभैान॥ खाँउ गो नहिँ माँस तवलों असुर ब्रतको धारि॥ जिष्णुकों जब लोंन रणमे मारि दे हो डारि। सुनि प्रतिज्ञा कर्णकी धृतराष्ट्र सुत अतिमान॥ कियो निश्चय जिष्णुको यह हनैगो बलवान॥ बिदा करिकै सभासदन्ह सु आपु कुरु कुलभूप। गए अपने सदनमे तौ रहत हे सुखरूप॥ कर्णकी सुनिकै प्रतिज्ञा दूतसो नृपधर्म। कर्ण चिन्तन लगे चितमै तौंन दुस्तर कर्म॥ जानि कवच अभेद्य कर्णहिँ महा धनुधर बीर। भए व्याकुल धर्म नृप नहि धरत मनमै धीर॥ द्वैतवनके छोडवेको कियो भूप बिचार। भूमिपालत नृप सुयोधन लए सुभट उदार॥ * ॥ जनमेजयउवाच॥ * ॥ सोचिकैं धृतराष्ट्रसुतको महा पांडव बीर। कियो कारज कौंन बसि तेहि बिपिनि माह गभीर॥ बैशम्पायनउवाच॥ रहे सोवत निशामे जहँ धर्म धुर नृपधर्म। स्वप्नमे तहँ मृगा आऐ रूप धारे पर्म॥ भूप लागे तिन्हैं बूझन देखि तेहि अखर्ब। कौंनहो तुम कहाँ आए कहत हो का सर्ब॥ द्वैतबनके मृगाहैं हम बहु शेष नरेश। प्राण भयसों बसा चाहत नहीं हम एहि देश॥ सूर धनुधर बन्धु तव मम कियो कुलको छीन। बीजसे हम रहे चढि हैं तो कृपाते पीन॥ देखि करुणाभैान भूपति मृगनको दुख भूरि। कहऊ सो हम करैं बोले बचन दाया पूरि॥ जागिकैं नृप भोर ऐसैं कहो भ्रातन्ह पास। स्वप्न धारे मृगन पर अति दया आनद रास॥ मृगन पर तुम करऊ दाया हनऊँ नहिँ बरबीर। चलऊ काम्यक बिपिनिको मृग गणन्हसह गभीर॥ तृणबिंदु शर तहँ बासको जै भूमि बन अभिरा। गए भ्रातन्ह सहित नृप तहँ द्विजन सह तपधाम॥ इन्द्रसेनहिँ आदि शिगरे भृत्यके गण साथ। बसे काम्यक बिपि निमे चलि द्विजन सह कुरुनाथ॥ बसत बनने पांडवनको गो एकादशबर्ष। मूल फल दल खात मनमे भरे क्रोध अमर्ष। सर्णनियमितकालको करि सहत दुःख महान॥ क्लेश भ्रातन्ह को लखत धुव योग्य ते बलवान। शल्य विदु समान समुझत द्यूतको अपमान॥ नही सोंबतलेतश्वास

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भरे कोप अज्ञान ॥ तहां आए व्यास योगी महातपकेधाम । जाय आगें धर्मनृप पद वन्दिकैं अभिराम ॥ ल्याय आसन परम पैं बैठाय पूजे भूप । व्यास सकरुण भए पौंचन्ह देखिकैं अज्ञरूप ॥ भरे गद गद गरें अैसें कहन लागें व्यास । तप्त होत न दुःखते जन लोकमे मतिरास ॥ ज्ञान दृगतें लखत जे सुख दुःखकों सम रूप । उतपत्य स्थिति अरु प्रलयकों तें नही शोचत भूप ॥ सुख दुःख प्राप्त जो होत ताको भजतहै सम भाव । अधिक बोवत लवत जैसे ऋषीकों सम चाव ॥ नही तपतें अधिक कछु तपते अवाधि न भूप । सत्य सम दम शौच नियम अहिंस आनद रूप ॥ तीर्यक योनि सो लहतहै नर पाप कारक जौंन । इहाँको कृत कर्म लहत परत्रमे जन तौंन ॥ करज्ञ तपते युक्त तातें देहकों कुरुभूप । सत्यबादी अरु बिमत्सर रहतहैं सुखरूप ॥ दाँत लहत न क्लेशकों अति भोग सुखकों पाय । रहित हिंसा लहत आनद सुकुलमे धरि काय ॥ लहत दुःख संयोग कौ नहि है जितेन्द्री जौंन । काल साधक सुमति शुभ कल्याए पावत तौंन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दान धर्म अरु तप व्रत इनमे अधिक प्रभु कौंन ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * । दानतें नहिँ कछूदुर भूमि पै मतिभौंन ॥ अर्थमे जनकी सुष्कतृष्ना रहतिहै अतिमान।मनुज धनको लोभ सों तजि देत अपनो प्रान ॥ करतहै जन जगतमे धनहेतु नाना कर्म । दुःख अर्जित वित्तको है त्याग दुष्कर मर्म ॥ न्यायते करिकै उपार्जित वित्त जोरै जौंन । पात्रकों सो देय प्राप्त सुकालमे मतिभौंन ॥ अन्यायते जो बित्त जोरत तास कीन्हे दान । नही रक्षत तौंन आए विपति दुःख महाँन ॥ दान देत सुपात्रमे जन बित्तमाफिक जौंन ॥ शुद्ध मनसों स्वल्पसो फल करत अगिनत तौंन ॥ कहतहै इतिहास ताको सुनज्ञ भूप सुजान । द्रोण एक सु अन्नको कियो बिप्र मुद्गल दान ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ ब्रिही द्रोण प्रमाणकै सें कियो मुद्गल दान । कौन बिधिसो दियो काकों कहज्ञ सो भगवान ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ रहो वृत्ति शिलोंछ धारे बिप्र मुद्गल भूप । वसतहो नृप देश पाय सु कुरुक्षेत्र अनूप ॥ करि कपोतो वृत्ति धारैं अतिथि व्रत अभिराम । करत इष्टो कृत सुनामक सबको तपधाम ॥ करि कपोती वृत्ति जोरत ब्रिही द्रोण प्रमान । करत पक्षाहार सक्षो पुत्र सह शुचि दान ॥ अमा पूनो सबिधि करिकै देवतातिथि शेख । करत सहित कुटुम्ब भोजन धर्मकी धरि रेख ॥ तास दक्ष सुभाग सुरपति पर्व पर्वन्ह माहँ । सुरण सहित सो लेत है तहँ आयकै नरनाहँ ॥ अतिथि बिप्रन्ह देत बाकी रहत हो जो अन्न । त्यागको फल पाय बर्धित होत हो सम्पन्न ॥ गए दुर्बासा तहां जँह रहे मुद्गल भूप । नगन बसन बिहीन धरि उनमत्तकैसो रूप ॥ हसत नाना भांतिके बज्ञ परुष बोलत बैंन । कहो हमकों देज्ञ भोजन क्षिप्र है तपऐंन ॥ बोलि स्वागत महा मुनिसों उठो मुद्गल बिप्र । अर्घ पाद्य क्षमो आसन दयो भोजन क्षिप्र ॥ जानिकै उनमत्त अद्धा भरो बिप्र अखर्ब । दयो मुद्गल महा मुनि सो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

खाय लीन्हो सर्व ॥ रहो जो उच्छिष्ट सो सब देहमे लपटाय। गए तह आए जहात महा मुनि सुखपाय॥ एहि भांति दुसरे पक्षमे आवेय मुनि तहँ आय।दयो मुद्गल अन्न सो मुनि लयो सिगरो खाय॥ भांति एहि पक्षान्तमे षटवार मुद्गल पास । अन्न सिगरे करै भक्षण महा ऋषि दुर्वास॥ क्रोध सह मात्सर्ज मुद्गलको क्षुधा नहि क्लेश। दयो पुत्र सदार मुनिबर भरो मोद नरेश ॥ कियो मुनि दुर्वास निश्चय तास मन व्यापार। धरो नेक बिकारको नहिँ रहो शुद्ध उदार॥ कहो ऋषि दुर्वास मुद्गल सों सप्रीति सुजान। रहित मत्सर नही दाता और तोहि समान॥ कष्टसों करिकै उपार्जित वित्त सिगरो जौंन। दियो हमको ह्वै बिमत्सर साधुतासों तौंन॥ कर्मतें तुम जीति लीन्हे लोक सिगरे क्षिप्र । जाऊगे तुम स्वर्गको सह बिप्रदारा बिप्र ॥ कहो ऐसी भांतिसों जब हाम मुनि दुर्वास। देवदूत विमान लीन्हे गए मुद्गल पास ॥ * ॥ देवदूतउवाच ॥ * ॥ बिप्र अपने कर्मतें तुम लही दिव्य बिमान। चढऊ यापैं सिद्धिकों तुम भए प्राप्त महान ॥ दिव्य दूत नसों कहों तब मुमुनि मुद्गल बैंन।स्वर्गमे सुखदुःखहै सो कहऊ हे मतिऐन॥ बिप्र सबसुख स्वर्गमेहै दिव्य कहियत जौंन। लोभ मद मात्सर्य्य त्यागी लोक पावत तौंन॥ लसत तैंतिस सहस योजन कनकमय गिरिराज । नन्दनादिक देववन तहँ बसत सुकृत समाज ॥ क्षुधा व्यास न करति बाधा शीत ऊष्ण समान। भीति रोग न शोक को है स्वर्गमे मतिमान॥ कर्मके फल सदृश तेहां करतहै नर बास॥ चुकत फल जब कर्मको तब सुनऊ हे मतिरास ॥ ध्वंशताको होतहै तब स्वर्ग तें दुखदान। दोष एतनो स्वर्गमे है सुनऊँ मुनि मतिमान ॥ तहां कर्म न करत भोगत पूर्व कृत फल जौंन। स्वर्गमे यह दोषहै सुनि महा मुनि मतिभौंन ॥ पतन जो दुख व्याप्त मनकों करत ताप महांन। असन्तोष बिलोकि औबर होत दुखद सुजान॥ दोष सुकृती जननकों है स्वर्गमे यह एक। नाक बासी जननकों है सुगुण सुखद अनेक ॥ और है गुण एक सो मुनि कहतहैं अभिराम। जहां पावत जन्मकों तहँ भरो भाग ललाम॥ नही बूझत जाय तेहां करत अधरम कर्म। तौंन भोगत करत जो इत कर्म पर्म अपर्म ॥ भूमिहै यह कर्म फलकी मृत्युलोक महांन । जौंन बूझो कहो तुमसों तौंन हम सविधान ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ तौंन मुद्गल वचन सुनि सुरदूतके सविधान। चित्तमाह बिचारि तासों कहो वचन प्रमान ॥ देवदूत प्रणाम तुमको यथा सुख तुम जाह। महत दोष सस्वर्ग प्रति हम करत नहि उतसाह ॥ स्वर्गमेहै पतनको अति दुःख दारुण रूप। स्वर्गमे बसि आय फिरि इत धरत रूप अनूप ॥ नही चिन्ता व्यथा पावत अचलता जहँ आय। तौंन हम सुस्थान ढूढत मोद मङ्गल दाय ॥ * ॥ मुद्गलउवाच ॥ * ॥ कहो तुम यह स्वर्गमे है दोष दूत महान। लोक जो निर्दोष होय सो कहऊ नित्य सुजान ॥ * ॥ देवदूतउ वाच ॥ * ॥ उपरि ब्रह्म सुलोकके है बिष्णु लोक अनन्त । ज्योति रूप अचिन्त्य अव्यय बेद बक्ता भन्त ॥ जातहै नाह पुरुष तेहां बिप्र बिषई तौंन। लोभ क्रोध समोह द्रोही दुष्ट दारुण

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जैन॥ मोह मद मात्सर्य ममता द्रोह रहित विकार। ध्यान योग सु शुद्धता वश तहां जात उदार। एहि भांति कहि द्विज देवदूतहि विदा करि सविमान। करण फेरि शिलोंच्छ वृत्तिहि लगो विप्र सुजान॥ निर्वाण लक्षण शास्त्रती तेहि लही सिद्धि अनूप। योग्य तुमकों शोक करिवो नहीं तातें भूप॥ राज्यते तुम भ्रष्टहो तपते लहऊगे तैंन। सुख अन्त दुख दुख अन्तमे सुख करत क्रमतें गैन॥ बर्षबीतें तेरहों तुम लहऊ गे सुखरास॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ एहिभांति कहि स्वस्थानकों तब गए मुनिवर व्यास॥ * * * * * * * * * * * * * * * * स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि द्रौपदीद्रोणोपाख्यानवर्णनोनाम षट्पञ्चाशदध्यायः॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

जनमेजयउवाच॥ * ॥ एहि भांति बनमे बसत पाण्डव विप्रबृन्द समेत। सूर्य्यदत्तसु अन्न कृष्णा भोजनावधि देत॥ दुर्योधनादिक सर्व जे धृतराष्ट्र सम्भव दुष्ट। कियो का तिन कार्य्य तिन सोंपाय सो परिपुष्ट॥ कहऊ सो तुम महामुनि बृत्तान्त सह विस्तार॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ सुनि सुयोधन पाण्डवनको सकल धर्माचार॥ दुष्ट मंत्रिण सहित लखत उपाय दुष्ट अनेक। गए दुर्बासा महामुनि तहा सहित बिबेक॥ अयुत शिष्य समेत आगे नृप सुयोधन आय। सहित भ्रातन्ह प्रणत पूजे बिबिधि बिधि मुनि पाय॥ बऊत दिनलों राखि मुनिकों बिबिधि भोजनदेया कियो बऊत प्रसन्न मुनिको भांति नानासेय॥ * ॥ दुर्बासोबाच॥ * ॥ देत हम बर नृप सुयोधन कछै मागऊ तैंन। भएँ मोहि प्रसन्नहै न अलभ्य कछु मतिमैंन॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ सुनत मुनिके बचन अतिशय भरे आनद भूप। भए मानत फेरि अपनो भयो जन्म अनूप॥ कर्ण दुःशासन सुयोधन मंत्र कीन्हो जैंन। पूर्व जाको समय पायो यथा बांछित तैंन॥ भूप मागो महामुनिसों तैंन पर सह काम। सहित शिष्यन अतिथि मेरे भए ज्यो तपधाम॥ अतिथि तैसे धर्मनृपके होऊ शिष्यन्ह साथ। बसत बनमे धर्मशील सु ज्येष्ठ कुरुकुल नाथ॥ द्रौपदी दे चूकै भोजन पतिनकों सह विप्र। आपु भोजन करै तब मुनि जाऊ तेहां क्षिप्र॥ अतिथि हूजै तास मोपै कृपा जो तपधाम॥ दुर्बासोबाच॥ करैगे हम तथा भूपति यथा तो मन काम॥ गए ताहीसमै मुनि तहँ कहो हो जो भूप। अन्नमागे जाय धारें क्षुधा पीडित रूप॥ दुर्योधनादिक दुष्ट चारो भए पूरण काम। हसन लागे सकल गहि कर करनसों अभिराम॥ कहन लागे कर्ण ऐसे हंसत हर्षित रूप। भाग्यसों भो काम बर्धित भए तुम कुरुभूप॥ भाग्य तें तब पांडुके सुत सुनऊ कौरव नाह। जरैगे दुर्बास मुनिके क्रोध पावक मांह॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच कपटमति एहि भांहि हसि दुर्योधनादिक सर्ब। गए अपने सदनको अति भरे मोद अखर्ब॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जानि कृष्णा सहित पांडव किएँ भोजन बीर । रहे बैठे गए तहँ मुनि लीएं शिष्य गँभीर ॥ देखि आवत अतिथि तिनको जानिकै नृपधर्म । गए आगे सहित भ्रातन्ह भरे आनद पर्म॥ल्याय मुनिको दयो शासन यथा योग्य अनूप । आतिथ्यकों कीन्हो निमंत्रित पूजि विधिवत भूप॥ कहो आज्ञिक शीघ्र करिकै आइए मुनिराज । स्नानकों मुनि गए कीन्हो अयुत शिष्य समाज ॥ देऊ शिष्यन्ह सहित भोजन हमै भूपति धर्म । गए कहिकै स्नानकों औ सकल आह्निक कर्म ॥ एहीं अन्तर माहं कृष्णा भई चिन्तित भूरि। अन्न दीबे को न बाकी रहो हेतु बिसूरि॥ लगी चिन्तन करन मनमे कृष्ण कृष्ण पुकारि । महाभुज जगदीश अव्यय जगन्मय कंसारि ॥ देवकीसुत बासुदेव सु प्रणत पालन हार । प्रणतार्त्ति नाशन जगत जनके सुख स्वरूप उदार ॥ विश्वआत्मा विश्वहरण प्रपञ्च पालक ईश । प्रजापाल गोपाल गुणमय गरुडध्वज जगदीश॥ अगतिके गति नाथ पुरुषपुराण पावन कर्ण। हे अगोचर बरद गोचर होत करतहिँ स्मर्ण ॥ पद्म लोचन पीतपट सम स्याम घन तन वर्ण। इन्दु आनन मुकुट धर कलकलित कुण्डल कर्ण॥ आदि अन्त सु परापर तुम भूतके हौ धर्म। ज्योति रूप सु सर्व तेा मुख सर्वव्यापक धर्म ॥ बीजहौ तुम जगतके हौ सर्व सम्पति धाम॥ बिपति भय नहिँ लहत जाके नाथ तुम अभिराम ॥दुष्टसों ज्यो द्यूतमे तुम कियो हो उद्धार। तथा एहि दुखसिन्धुसों अब कृष्ण कीजय पार॥*॥बैशम्पायनउवाच॥ * ॥ एहि भांति संस्तुत द्रौपदी सेा कृष्ण करुणाधाम । जानि सङ्कट रुक्मिणीको सेज तजि अभिराम ॥ जहा पांडव रहे आए तहां करुणा काम । प्रेम पूरितदेखि कलहि बिकलताकेधाम ॥ देखि कृष्णा कृष्णको भरि बारि सेाचित नैन । कहो मुनिके आगमनको कष्ट गद गद बैन ॥देखि कृष्णाकों प्रणत इमि कहो हरि हर भीति । देऊ भोजन क्षुधितहै हम द्रौपदी करि प्रीति ॥ कृष्णके सुनि बचन कृष्णै कहो खज्जा सन्न । भानुदत्त सुपात्रसे मम भोजनावधि अन्न ॥ करो है हम देव भोजन अन्न तामे है न । ॥ * ॥ कृष्णउवाच ॥ * ॥ क्षुधितहैं हम द्रौपदी यह हास औसर है न । शीघ्र कृष्णा पात्र सेा वह ल्याउ मेरे पास ॥ आनि दीन्हे पात्र तौन सु द्रौपदी हबिरास । पात्रके लखि कण्ठ लग्न सअन्न शाक सु तोक ॥ कृष्ण भोजन कियो अैसे बोलि त्रिभुवन ओक। विश्व आत्मा यज्ञ भुक् प्रभु होऊ अति सन्तुष्ट । भोजनार्थ बोलाइबेकों कहो करुणा पुष्ट ॥ गए तब सहदेव मुनिहि बोलाइबे सह बृन्द। स्नान करि तिन चहो संध्या करन सुनऊँ नरिन्द ॥ अन्नके रस सहित तिनको लगी चलन डकार। परसपर ते लखन लागे भो तृषा अधिकार॥कहन लागे शिष्य मुनि दुर्वाससों इमि बैन। नृपति भोजनकों बोलाएँ सुनऊ मुनि तपअैन ॥ कण्ठलो है तृप्ति हमको खायगो को अन्न। अर्थ पाक कराय आए भूपसो सम्पन्न ॥ * ॥ दुर्वासोवाच ॥ * ॥ बृथा करि अपराध पाक कराय आए बिप्र। दहै नहिं चख कोधसों अब हमै पांडव क्षिप्र ॥ अम्बरीष सु राज ऋषि को स्मरण करि परभाव। डरत हैं हरिचरणसेवी जनन सेा हत चाव ॥ सूर सुव्रती धर्मरतहै कृष्ण भक्त

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

उदार। पाण्डुनन्दन है महात्मा धरे नित्याचार ॥ दहैं गे क्रोधाग्निसे ए पाण्डुपुत्र सधर्म। सुनऊ तुम सब शिष्य हमकों भागिवो अतिपर्म ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ पांडवनकी भीतिसों सह शिष्य मुनि सब चोर। छोडि साहस भजे तहँते गए चारोंओर ॥ ढूंढि कै सहदेव शिष्यन्ह सहित मुनिको तब। तहँ बांसी द्विजनसो सुनि गए भूपति यत्र ॥ कहो सो वृत्तान्त सह सहदेव नृप पहँ जाय। चहत ल्यायो मूनिहि भूपति ककुक आगे जाय ॥ आय कै सु निशीथमे मुनि हमै छलि है तौन। धर्मनृप एहि भांति शोचत रहे अति मतिभौन ॥ प्रत्यक्ष ह्वै श्रीकृष्ण तब इमि कहे नृपसों बैन ॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ जाति आपद रावरी अतिक्रोधको मुनिवैन ॥ द्रौपदीतें भयो चिन्तित वेगि आयो भूप। तुम्है भय वहि करै गो दुर्वासते मुनिरूप ॥ भजो तुमरे तेजतें तजि कै सतेज महान। दुखित होत न धर्मनिष्ठ मनुष्य जो मतिमान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ बचन सुनि कै कृष्णके भए विगतज्वर नृपधर्म। द्रौपदी सह कृष्णसो इमि बचन बोले पर्म ॥ नाथ तुम हमकों कियो एहि विपति दुस्तर पार। नाव बूडत सिन्धुमे जिमि कर्णधार उदार ॥ विदा ह्वैके पाण्डवनको द्रौपदीसो भूप। द्वारिकाको गए श्रीयदुवीर आनदरूप ॥ काम्य वनमे बसे पाण्डव द्रौपदी अभिराम। विप्रगण घन सहित विहरत विपिनिमे अभिराम ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगमिना श्रीवन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेवनपर्वणि दुर्वासोपाख्यानवर्णनोनामसप्तपञ्चाशदध्यायः ॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

ब्रजमृग तेहि वनमाह गभीर। विहरत सातन सह बरबीर ॥ प्रफुल्लित फलित विपिनि छवि जौन। देखत फिरत मोद भरि तौन ॥ कछुकाल बसि कै वनमाहँ। मृगया हेत गए नरनाहँ ॥ तृणविन्दु मुमुनिको आज्ञा पाय। राखि द्रौपदी हि तहँ सुखदाय ॥ धौम्य महामुनिकों तपधाम। सौंपि द्रौपदीको अभिराम ॥ जयद्रथ सिंधुदेशको भूप। शाल्वदेशकों चलो अनूप ॥ व्याह हेत आयो तहँ तौन। कृष्णा जहाँ रही छविभौन ॥ काम्यकवनमे भूपनन सङ्ग। गयो मार्गवश भयो उमङ्ग ॥ तहँ पाण्डवनकी बरबाम। लखो द्रौपदीकों छविधाम ॥ ठाढी सो आश्रमके द्वार। भरी ज्योतिमय रूप उदार ॥ देवसुताकी देवी पर्म। ते साझलिमे अविदित मर्म ॥ देखि जय द्रथ हर्षित होय। पठयो दूत चतुरमति जोय ॥ बूझऊ जाय कौन यह बाम। होय मानुषी जौं अभिराम ॥ तौ हम याहि लेइ अतिरूप। जाहि सपुर करि कर्म अनूप ॥ जानऊ जाय सुमति सह नेत। है को इह इत रूपनिकेत ॥ जौ यह हमै बरै छविधाम। तौ मम सफल होय मनकाम ॥ रथते उतरि दूत वह तौन। कियो द्रौपदीके ढिग गौन ॥ व्याघ्रबधू ढिग जैसे स्यार। जाय कुमति सो भरो उदार ॥ * ॥ दूतउवाच ॥ * ॥ * ॥ को तुम गहे कदमकी डारि। यहि आश्रममे एक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

उदारि॥ अग्नि शिखाके दिपति समान। भरी परम छविसों सुखदान॥ देवी कै यज्ञी अभिराम। कै अप्सराकी दनुजा बाम॥ वरुण सोम पत्नी कै पर्म। कै धनेशबनिता सह धर्म॥ कै तुम सची भरी अति रूप। एहिबन बसति न डरति अनूप॥ हम बर्जित करि कै तबमान। बूझत प्रभु तव जनक सुजान॥ कहऊ आपनो कुल अरु तात। इहाँ कार्य्य कृत का अबदात॥ सुरथ भूप सुतके सह दूत। यह रथपर सम अग्नि प्रभूत॥ त्रिगर्तराज कमलायत नैन। सूर बीर सुन्दर सम मैन॥ पुष्करणी तट स्याम स्वरूप। अरिवन दहन सुबलसुत भूप॥ द्वादश सौबीरक नृपनन्द। करत जास अनुगमन अमन्द॥ षट सहस्र सँगरथी सबीर। गज हय पदग बृन्द गभीर॥ सौवीराधिप अतिबल भूपनाम जयद्रथ जास अनूप॥सुनो होय गो सुन्दरि जौन॥यह अरिमर्दन भूपति तौन॥ सौबीर बीर जे युवा नरेश। ते सब अनुग जास सहदेश॥ हम अजान बूझत हैं बाम। जनक कौन तौं पति अभिराम॥ बैशम्पायन उबाच॥ कहौं द्रौपदी तासो बैन। खाश छोडि मधुर छबिऐन॥ कौशिक उत्तरीय सम धारि। हम जानो नृपपुत्र बिचारि॥हमैं न तुमसो बचन सुजान। कहिबेंकों बिधि बिहित प्रमान॥ बक्ता और न इत नर नारि। करैं जो तुमसो बचन बिचारि॥ इहा एक हम याते बैंन। तुम जो कहत दूत सब चैन॥ तुमसों सुरथपुत्र सो सर्ब। लपनो कहति कुटुम्ब अखर्ब॥ हम हैं द्रुपदसुता अभिराम। कृष्णा कहत हमारो नाम॥ बरी पञ्च हम पुरुष गँभीर। धर्मराज आदिक बरबीर॥ हमैं राखि कैं ते एहि ठौंर। मृगया हेत गए चँऊऔंर॥ पूरब राजा दक्षिण भीम। अर्जुन पश्चिम दिशि बलसीम॥ उत्तर माद्री तनय बिशाल। निकट तास आगमको काल॥तिनसो लहि सनमान अखर्ब। जाएऊ टिकऊ जान तजि सर्ब॥अतिथि प्रिय हैं भूपति धर्म। तुम्हे देखि लहि है अति शर्म॥ अैसे दूत पास कहि बैन। किय प्रबेश आश्रमके अैन॥ तिन्हे अतिथि आतिथ्य विचारि। आश्रम धर्म नित्य निरधारि॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच॥दोहा॥ * ॥

कृष्णाके सुनि कै बचन दूत जयद्रथ पास। सकल सैनके सामुहे कीन्हो जाय प्रकाश॥
कहत बचन जब रही तब तामे मो मन जाय। बसो कौन बिधिसों कढै सुखनिवासको पाय॥

॥ * ॥ दूतउबाच॥ * ॥

राजसुता यह द्रौपदी है यशस्विनी भूप। महिषी पाण्डव पञ्चको प्रिया सती अतिरूप॥
ताहि सङ्ग लेकै चलो देश आपने भूप॥बैशम्पायनउबाच॥कहो जयद्रथ दूतके सुनि कै बचनअनूप॥
देखत है हम जाय कै कृष्णाकों अभिराम॥यह कहि आश्रमसे गयो ज्यौं बृक केहरिधाम॥
कहो जयद्रथ जाय कै कृष्णा सों पुनि सैन। हौ तुम भर्त्तन सह कुशल हे सुन्दरि छबिऐन॥

॥ * ॥ द्रौपद्युवाच॥ * ॥

राज्य राष्ट्र बलमे कुशल है तो राजकुमार। पालत हौ तुम धर्मसों जनपद प्रजा उदार॥
कुशल युधिष्ठिर भूप हैं सह भ्रातन बर बीर। आसन लैं यह बैठिऐ हे नृपसुत धरि धीर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पञ्चाशत मृग देहि गे तुमको भोजन हेत । उत्तम नाना जातिके महिष बराह समत ॥
आवत मृगयाते चले कछु क्षणमे नृपधर्म। करि ह सो आतिथ्य तब सह भ्रातन्ह अतिपर्म॥

॥ * ॥ जयद्रथउवाच ॥ * ॥

भोजन सों हम तृप्त हैं दियो चहति तुम जौन । मेरे रथपर चढि चलऊ सुख भोगऊ क्षविभान ।
हतश्री हैं क्षतराज्य सब पाण्डव विपिनि निबास । नहीं तिनके पास रहिवें योग्य तुम क्षबिरास ॥
पाण्डवनकी भक्तितें नहिँ सहऊ क्लेश सुजान । होऊ मेरी भारया सुख भोग करऊ महांन ॥

॥ * ॥ बैंशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सुनत कृष्णा जयद्रथके हृदय कम्पन बैंन । छोड़ि आसन चली भृकुटी करे भङ्ग अचैंन॥
निदरि ताके बचन कृष्णा कहे अैसे बोल । कऊ न अैसे बचन सैंधव निलज दुर्मति लोल ॥
अरुणरोषते नैंन करि भृकुटी भङ्ग कराल । कृष्णा सैंधवसों कहे बचन सक्रोध बिशाल ॥
तीक्ष्ण शस्त्रधर जैयजसो अतिरथ जे बर बीर।तिन्हैं निदरि बोलत बचन अैंसे मूढ गभीर ॥
शक्र सदृश शुभकर्मरत दनुज निकृत जेतार। तिन्हे योग्य बोलत नही भरिमति पाप बिकार ॥
सप्तसिंहकी बाल्पतें खैंचऊ मुख न भूप। भाजि जात गे भीमको क्रोधदेखि कैं रूप।
गिरि सम्भव हरिकुञ्ज सो अर्जुन अरिहा बीर। तासो लरिबेको करैं साहस कौंन गभीर॥
भीमार्जुन अहिबिष भरे कुबन चरण सो मूढ। माद्रीसुत हरिसानुहे हो न ससा समरूढ ॥
स्खलित बिषुसो आपुकों करु न मूढमति अर्भ। तिनमे रक्षित मोहि चहत यथा कर्कटी गर्भ ॥

॥ * ॥ जयद्रथउवाच ॥ * ॥

जानत हम कृष्णा यथा हैं पाण्डव बलअैंन।नही डरत हम रावरे सुनि भयकारक बैंन॥
पाण्डवगुण सब रहित हैं हम न धरो गुण पीन। तिनको हम कछु डरत नहि जे दुर्बल बलहीन ॥
नाते गज रथ पैं चढऊ क्षिप्र न करऊ बिलम्ब। भोग राज्य सुखको करैं लहि मेरो अबलम्ब ॥
नही बारण शक्य तुम बचन बोलि कैं मोहि।जीति पांडवन्ह होउ गे सदा स्ववश कर तोहि॥

॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥

अतिबल पति मम कहैं क्यों हम दुर्बल सम बैंन।काल वश्य जयद्रथ बचन कहत कुमतिके अैंन॥
कृष्णार्जुन चढि एकरथपर ढूढैं गे जाहि । मनुजकहा इंद्रो नही हरण योग्य हैं ताहि ॥
रथवरचढि अर्जुन प्रबल हरत सो अरि गणमान । सोमदर्थ तो सैंनको कूहैं अबल कृशान॥
अन्धक वृष्णि समेत हार केकय भूपति जौन। राजपुत्र सह सैन सब हमै ढूढिहै तौंन ॥
सुनिध्वनि धनु गांडीवको अति घन गरज समान। महा कोप करि अनल सम जिष्णू बर्षिहै बान॥
तब तुम अपनी बुद्धिकों निन्दित करि है दुष्ट। अर्जुनशर तब हृदयमे जब पैठे गे पुष्ट ॥
भीमसेन अति क्रोध करि धरें गदा गुरु घोर।भाजि जाऊ गे कौनदिशि जब चलि है तो ओर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सिंह सदृश माद्रीतनय भरे क्रोध अति पुष्ट । भिरि हैं तोसों आय तब कैसे बँचिहै दुष्ट ॥
सत्य पतीव्रत होय गो जौ मम व्रत शुचिरूप । वश करि पाण्डव खैचि हैं तब तो लखि हौं रूप ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सैंधव खैचत चहत लखि भरी क्रोध अतिघोर । भर्त्सन करि टेरण लगी धौम्य धौम्य करि सोर ॥
सैंधव कृष्णाको गहो उत्तरीय पट जाय । पाञ्चाली झटको गिरो सो उर धार कार पाय ॥
फिरि सैंधव उठि कै गहो करि कृष्णे अनुमान । रथपर बैठी धौम्यके बन्हि चरण सुखदान ॥

॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥

कृष्णा हरिबे शक्य नहिं बिन जीतें कुरुबीर । सैंधव क्षत्रिनको धरम समुझ जान गँभीर ॥
मिले पाण्डवन्ह पाइ है तुइ पाय फल जैन । कियो पदातिग नाह कहि धौम्य महामुनि गैन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

करि मृगया चऊँदिशि मिले पाण्डुतनय सब आय । कहन लगे नृपधर्म तब सकुन भयानक पाय ॥
कहत सकुन आयास अति शत्रु जन्य बरबीर । तातें होऊ निवर्त्त अब तजि यह बिपिनि गँभीर ॥
छाय बुद्धिको क्रोध बढि दुखित करत है प्रान । काम्यक लागत राज्य ज्यौं बिना भूप बलवान ॥
वायुवेग करि तुरग सब हाँकि सुरथ बरबीर । सनमुख आश्रमके चले पाण्डव तुर रणधीर ॥
घोर सोर गोमायु करि बाम दिशामे आय । बोलन लागे धर्मनृप सो सुनि कै भयदाय ॥
जानि परति एहि सकुनिते सुनऊँ भीम बरबीर । कुरुन्ह आय कीन्हो कछू बलात्कार गँभीर ॥
रोवत भार्य्या दासकी आश्रम बनके पास । देखि उतरि रथते गयो इन्द्रसेन ता पास ॥
भूप ओरसों जाय कै बूझो तासों बैन । रोवति का आरत बदनु सूखो बरषत नन ॥
कियो तौन पापी कुरुन्ह द्रुपद सुता ढिग जाय । बलात्कारको कर्म कछु आश्रम सूनो पाय ॥
जाय स्वर्ग पाताल ज्यौं कृष्णा सिन्धु समाय । जाहि तहां पाण्डव प्रबल नृप हित हेतु सुभाय ॥

॥ * ॥ दास्युवाच ॥ * ॥

भूप जयद्रथ सिन्धुपति बलात्कार सों आय । महा रतसी लै गयो कृष्णाकों हरि हाय ॥

॥ * ॥ इन्द्रसेनउवाच ॥ * ॥

नाथवती जानो नहीं पाण्डव हृदय समान । हृदै बेधि अब कौनको धरां पैठि हैं बान ॥
कृष्णाप्रति नहि शोच कर अरिहा पाण्डव बीर । मारि अरिन्ह फिरि ल्याइ हैं आश्रमसाह गभीर ॥

॥ * ॥ दासुवाच ॥ * ॥

फिरि धाची लागी कहण पोछि इगणके बारि । निदरि कै लैगो जयद्रथ पाण्डवनकी नारि ॥
एहि कूजन पथ व्है गयो जह तरु भग्न लखात । फेरि द्रौपदि हि ल्याइए करि अरिवृन्द निपात ॥
दूरि गयो नहि निकट व्है बीतो बऊतन काल । भए सज्ज पाण्डव प्रबल सुनि करि क्रोध बिशाल ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

धात्री आश्रमकों फिरऊ कहऊ परुष मति बैंन।

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

यह कहि पाण्डव हांकि रथ चले तौंन गहि अैंन ॥

श्वास लेत अहि उद्ध सम महा क्रोधसों पूरि । कछुक दूरि चलिकैं लखी तास सैनकी धूरि ॥

जात पदाती बृन्दमे देखि धौम्यकों भीम । आश्वासन कीन्हो निकट जोरि पाणि बलसीम ॥

सेनामे सन्मुख चले भरे क्रोध गम्भीर । रथपर बैठे द्रौपदी जयद्रथके बलबीर ॥

हांक जयद्रथकों दयो करि अति क्रोध कठोर। पाण्डव पञ्च महेन्द्रसे भरो भुवनमे रोर ॥

देखि पाण्डवन्हकी ध्वजा जयद्रथ अैसें बैन। कहन द्रौपदीसों लगो लहि रथस्थ छबिअैन ॥

आए पाण्डव पञ्च ए कृष्णा तो भर्त्तार। जानत हम नहिँ तुम कहौको लघु कौन उदार॥

॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥

कहा जानिकै करऊगे मरण करम करि भूप । मेरे पति ए करैंगे तुम्है अशेष स्वरूप ॥

बूझेते तो कहतिहौ नहि मम तो भय बाध । भ्रातन सह नृपधर्मको देखत सुबल अगाध ॥

कनक बरण जाकी बडी नासा नेत्र बिशाल । महाबीर दाया सदन तौन धर्म क्षितिपाल ॥

देत शरण ए शत्रुको शरण गहत जे आय । मूढ जोरि अञ्जलि गहऊ ताके शरणद पाय ॥

शाल बृक्ष सम महा भुज रथपर चढो जो धीर। दसत ओष्ठ भृकुटी चढी तौन बृकोदर बीर ॥

बँचत न इनसों बैर करि बिसरत ए नहि बैर । बैर शान्ति करिकै त्यजत महा क्रोधको मैर ॥

धीरधाम अति धनुर्द्धर यशी जितेंद्री बीर। शिष्य बन्धु नृपधर्मके ए अर्जुन रणधीर ॥

काम लोभ भयते नही तजत धर्म नहि क्रूर । मम पति कुन्तीसुत अनल सम तेजसको पूर ॥

जानत सब धर्मार्थको भय हर्ता मतिमान। नकुल खड्गजोधी सु ए मम पति रूप निधान ॥

सूर कृतास्त्र सु नृपति प्रिय मनस्वीसु मतिमान। चन्द्र अर्क सम सुमति मम ए सहदेव सुजान ॥

कहे पांडुके पुत्र ए जे मेरे पति बीर । लरि उनसों तन त्यागिहौ जयद्रथ पाप गभीर ॥

दीन पदातिन्ह छोडिकै पाण्डव शक्र समान। अन्धकार चऊदिशि कियो निशित बरसिकै बान ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

रहऊ न भाजऊ लरऊ धरि क्षात्रधर्म अनूरूप। भूप भटन सो कहन इमि लगो जयद्रथ भूप ॥

घोर शब्द रणमे भयो लखि पाण्डव बरबीर। शिबि सैंधवसो बीर नृप भरे बिषाद गभीर ॥

घरि जयद्रथको लयो कोटि काश्य तब आय । बारण कीन्हो भीमको रथ समूहसों जाय ॥

बरषे शस्त्र अनक बिधि बीर बाऊ सहसैन। नेक भए कम्पित नही भीमसेन बलअैन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

हने चतुर्दश गदासों गजस्थ सहित असवार । भीमसेन अति क्रोध करि सैंधव सेना द्वार ॥
हर महारथ पाँचशत पर्वत वासी वीर । हने सैंनके द्वारपर अर्जुन अति रणधीर ॥
हने धर्मनृप एकशत करता युद्ध उदार । सुभट सु सैंधव भूपके रहे जे सेना द्वार ॥
नकुल कूदि रथते परे खड्गचर्म धरि वीर। मारि पदातिनके करे शिरते रहित शरीर ॥
यो सहदेव हने सघन जन्तुनको बलपूर । यथा तुङ्ग तरुते परत क्षितिपर उतरि मयूर ॥
त्रिगर्तराज रथते उतरि घोर गदाकों धारि । धर्मराजके चारि हय रथके डारे मारि ॥
धर्मराज तेहि निकट लहि महा क्रोध करि घोर । बेधो निशित नराचसों ताको हृदय कठोर ॥
छिन्नमूल तरुसो गिरो वमत सो रुधिर अशेश । चढे जाय सहदेवके रथपर धर्मनरेश ॥
क्षेमङ्कर नृप महासुख दुरुन घेरि दुरु ओर । बरषन लागे नकुल पर निशित बाण अतिघोर ॥
एक एक शरसों हने तिन्हैं नकुल मतिमान । रथ तोरवायो नकुलको तेहि गजते अतिमान ॥
सुरथ त्रिगर्ताधिप नृपनि रथ तजिकै बलवान । चढो जाय गजमत्तपैं बिदगज जान विधान ॥
खड्गचर्म धरिकै नकुल करि गति भ्रमण सुजान। तासों निर्भय ह्वै रहो गिरि समान बलवान ॥
सुरथ भूप प्रेरित द्विरद दौरो सुण्ड उठाय । नकुल खड्गसो काटि कर क्षितिपर दियो गिराय ॥
मुख भर सो गिरि परो गज सुरथ नृपतिको शीश । भिन्न कियो धरते नकुल मरो सुरथ अवनीश ॥
अति अद्भुत करि कर्म यह खड्गचर्मधर धीर । भीमसेनके सुरथपर चढो जाय बरबीर ॥
कोटि काश्यके सूतको क्षुर शायकसों भीम । काटो शीश कशीश करि महावीर बलसीम ॥
कटो सूत शिर तेहि नही जानो भाजे अर्ब। तास शीश रथ हांकिकै काटो भीम अखर्ब ॥
द्वादश नृप सौबीरके धनुष शीश अतिमान । काटि भूमि पाटी समर अर्जुन अति बलवान ॥
जे शिविनृप कुरु मुख्य जे सिन्धु त्रिगर्त नरेश । तिन्हे मारि अर्जुन कियो सह वाहनन निशेश ॥
गजरथ सादी पतगँ ध्वज बर्म चर्म धनु खण्ड । काटि पाटि दीन्ही धरणि अर्जुन बीर प्रचण्ड ॥
धर बिन शिर शिर रहित धर देखि परे चहुओर । भए छत्र पल रुधिरसों वायश जम्बुक घोर ॥
हते बीर सिगरे चिते भजो जयद्रथ भूप । तजि कृष्णाकों स्वरथतें भयसों भयो कुरूप ॥
आगे लखि मुनि धौम्यके कृष्णाको नृपधर्म । रथपर दियो चढाय तब माद्रीसुत अतिपर्म ॥
भजे जयद्रथके भजी सैन शेष बल धाम । तिन्हे भीम मारण लगे टेरि टेरिकै नाम ॥
भजो जयद्रथकों चिते अर्जुन अति बलधाम । वारण कीन्हो भीमको भजे न हनियत धाम ॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

हम जाके दुःकर्मतें लहो क्लेश अतिमान। ताहि न देखत समरमे गयो कहां सहजान ॥
तेहि दूढन कीन्हे कहां बिना लाभको कर्म । दीन भजेन्हको मारिबो नहि क्षत्रिन्हको धर्म ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भीम निवर्त भए सुनत ए अर्जुनके बैन । देखि धर्मनृपसों बचन कहन लगे मतिअैन ॥
बीरहने सबसैनके भजो जयद्रथ भूप । हूजै आप निवृत्त अब कृष्णा सहित अनूप ॥
सहित नकुल सहदेवलै धौम्य महा मुनि साथ । शान्त द्रौपदीकों करौ चलि आश्रममे नाथ ॥
जियत न हमसों बचैगो सैन्धव मूढ महान । जाय रसातलमे जऊ जौ रक्षहि मघवान ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सैंधव दुष्ट न योग्यहै हनिबेके रणधीर । दुःशला गान्धारजा को करि स्मरण गभीर ॥
जामाता धृतराष्ट्रको दुःशला पति तौंन । गान्धारी दुख लहैगी महत पतिव्रत भौंन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

कृष्णा सुनि नृपके बचन क्रोधाकुल हत बैन । भीमार्जुनसों नीतिमय अैसैं बोली बैंन ॥
जौ मेरो करतव्यप्रिय बध्य जयद्रथदुष्ट । राजखीहरको हनत शरण गहे हँति पुष्ट ॥
यह सुनि भीमार्जुन चले जहाँ जयद्रथ भूप । आश्रमकों कुरुपति फिरे कृष्णा सहित अनूप ॥
सहित धौम्य नृपधर्म चलि आश्रम देखो जाय । मार्कण्डे यादिक व्यथित बिप्रनको समुदाय ।
सह माद्रीसुत द्रौपदी लखि बिप्रन्ह नृपधर्म । बिजय सहित आए बज्जरि भरे मोदसों पर्म ॥
गयो जयद्रथको सभरि सुनि भीमार्जुन बीर । हाकि बेगसों रथ चलो भरे क्रोध गम्भीर ॥
यह कीन्हो अद्भुत महा कर्म जिष्णु बलभौन । हने जयद्रथके तुरग गए क्रोश भरि जौंन ॥
भीमार्जुन आतुर चले भरे क्रोध अतिमान । एक भरो भय जयद्रथ व्याकुल भयो महान ॥
देखि जयद्रथ मरे हय अर्जुनको अति कर्म । भजो छोडि रथ बिपिनिकों भरो भूरि भय भर्म ॥
भाजत सैन्धवकों चितै अर्जुन बोले बैन । एहि बलतें पर तिय हरण चाहो दुर्मतिअैन ॥
राजपुत्र भाजऊ नही तजि अनुचर गण सर्व । भजत सो ठाढो होत नहि लखि रिपु प्रबल अखर्व ॥
तिष्ठ तिष्ठ कहिकै चले भीम क्रोध अति धारि । याको बध मति कीजियो अर्जुन कहो पुकारि ॥
भजो जयद्रथ बेगसो चलो बिपिनिकी ओर । रथ तजि दौरे भीम तब भरे क्रोधसों घोर ॥
पीछेतें पकरो शिखा तास वृकोदर जाय । मरदन लागे पायसो ताहि भूमिपर नाथ ॥
शीश जयद्रथको पकरि भीमसेन बलवान । तल प्रहार लागे करण गिरिपर अशनि समान ॥
लागो करण बिलाप सो करि तब मुष्टि प्रहार । डारि भीम क्षितिपर दयो ताको जानि सुमार ॥
तब अर्जुन वारण कियो जानि भीम अति क्रुद्ध । दुःशला हित कहो नृप तौंन बचन कहि उद्ध ॥

॥ * ॥ भीमसेन उवाच ॥ * ॥

जीवित योग्य न पाप यह दुराचार कर नष्ट । कष्ट योग्य कृशानहीं ताकों दीनी कष्ट ॥
फेरि जयद्रथसों कहो भीमसेन बलवान । भए दास हम रावरे कछ जौं चाहत प्राण ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कृष्यमाण सधव कहो भयो दाश तव बीर । साधु सभाके मध्य यह कहिहै सत्य गभीर ॥
भीम जयद्रथकों लयो बांधि स्वरथ पर डारि । धूरि भरो नृपधर्मके चलि ढिग दियो उतारि ॥
देखि जयद्रथकी दशा करुणाकर नृपधर्म । बन्धन मुक्त करो कहो भीमसेमसों पर्म ॥
भीम धर्मनृपसों कहो यह जौं कृष्णापास । कहै पाण्डवनके भए हारि युद्धमे दास ॥
कहो भीमसों द्रौंपदी चितै धर्मनृप वोर । भयो पञ्चशिष दाश पदकों पहुंचो यह चोर ॥
बन्धन मोचन कीजिए सैन्धवको रणधीर । छाडि जयद्रथकों दयो बिहँसि बृकोदर बीर ॥
सैंधव बन्धन मुक्तव्है बन्दि युधिष्ठिर पाय । फिरि धौम्यमुनिके चरण बन्दे बिव्हल काय ॥
फेरि जयद्रथसों कहों धर्मनृपति अति आर्य । जाऊ अदोश भए न फिरि ऐसो कीजो कार्य ॥
स्त्री कामुकहै तोहि धिग क्षुद्र बुद्धि मतिभौंन । तो बिन ऐसे कर्मकों करै अधम नर कौंन ॥
देखि दीन करिकै कृपा फेरि कहो नृपधर्म । होय धर्म मति बृद्धि तब मन न धरै अघकर्म ॥
रथ पदाति सहँ जाऊ तुम अपने देश अनूप । यह सुनिकै जयद्रथ चलो मौन अधोमुख भूप ॥
गयो सो गङ्गाद्वारकों दुखसों भरो अचैन । पूजि प्रसन्न करे सबिधि शङ्कर शम्भु त्रिनैन ॥
मागो बरद महेशसों यह बर तेहि गम्भीर । जीतैं पाण्डव पञ्च हम रणमे धारैं धीर ॥
पाण्डव सकल अवध्यहैं हैं अजेय बर बीर । एक द्योस तुम रोंकिहौ हर बर दयो गँभीर ॥
महा उग्र जेहि तप करो बदरीके ढिग जिष्णु । को ताको जेतारहै जास सहायक बिष्णु ॥
दियो पाशुपत अस्त्र हम इन्द्र बज्र दिगपाल । अपनो अपनो अस्त्र तिन दीन्हे सबिधि बिशाल ॥
देव देव अनन्त आत्मा पुरुष अव्यय जौन । प्रलय करि जेंहि फेरि कीन्ही सृष्टि त्रिभुवन भौन ॥
कोलहोय नृसिंह बपुधरि भयो बावन रूप । इन्द्रकों फिरि दियो त्रिभुवन जीतिकै बलिभूप ॥
आदि अन्त अनादि गोचर है अगोचर जौन । ब्रह्म नारायण स्वरूपी कृष्ण यदुपति तौन ॥
अस्त्र बिदमे स्रेष्ट अर्जुन कृष्ण रक्षक जाश । रहत जाको सारथीव्है महा आनदराश ॥
नहीं जीतिबे सक्य सो सुरा सुरनसों भूप । जिष्णु धनुर्द्धर बीरबर कहा मनुज तनुरूप ॥
एकबीर अर्जुन बिना चारि पण्डुसुत जौंन । तिन्है युद्धमे रोकिहौ एक दिवश बलभौन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

सैंवधसों एहि भाँति कहि अंबक हर भगवान । उमा पार्षदन सहित सब व्है गए अन्तरध्यान ॥
फेरि जयद्रथ मन्दमति गयो आपने धाम । पाण्डव काम्यक बनसे कृष्णा सहित ललाम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि द्रौपदी हरणे अष्टपञ्चाशदध्यायः ॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

द्रौपदीके हरणते लहि क्लेश यो नृपधर्म । तहां बसि कै पांडवन फिरि कौन कीन्हो कर्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तहां बसि द्विज गणनमे नृपधर्म चिन्तित चैन । मार्कण्डे महामुनिसों कहे जैसे बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ भूत भावी महा मुनि है विदित तुमको सर्व । हृदयस्थ संशय कहत तुमसों करऊ दूरि अखर्व ॥ द्रौपदी यह धर्मचारिणि है अयोनिज जौंन । पाप कर्म न करति द्विजगण चरण सेवति तौन ॥ हरण ताको कियो सैंधव दुष्ट दुर्मति राश । लखो सो तुम लहो हमसों जौंन तेहि हम त्रास ॥ करत मृगया जीवनार्थक दुःख यह बनबास । अल्प भाग्य न और हमसो होय गो तपराश ॥ सुनो देखो होय हमसों अल्पभागी जौंन । कहऊ हमसों सहित विस्तर महामुनि तपभौंन ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ रामको दुख दयो रावण निकृति बनमे घोर । प्रिया तिनकी जनकजा हरि लै गयो जिमि चोर ॥ मारि गृद्ध जटायुकों लै गयो लङ्कामांह । सुग्रीवको बल लै लइ फिरि राम श्रीनरनाह ॥ बाँधि सेतु समुद्रमे करि भस्म लङ्का सर्व । मारि रावण दनुज पतिकों सबल बन्धु अखर्व ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ भरे बलतें भए कैसे कौन कुलमे राम । कौंन कुलते भयो रावण बैर भो किमि नाम ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ इक्ष्वाकु कुलमे भए अजनृप पुत्र दशरथ ताश । चारि ताके भये सुत रामादि अतिबलराश ॥ राम माता कौशल्या भे कैकेयी सुत भर्त । भे सुमित्रा पुत्र लक्ष्मण शत्रुघन गुणधर्त ॥ जनक भूप बिदेहकी ही सुता सीता पर्न । रामकी सो भई महिषी भरी शील सुधर्म ॥ राम सीताकों कहो यह जन्म हम अभिराम । कहत जैसे भयो रावण महाबलको धाम ॥ ब्रह्म सुत हे मानषिक पुलस्त्य तेजस्वरूप । बिश्रव ताके भए सुत गवि भारद्वाजे भूप ॥ पिताको तजि पितामहकों लगे भजन धनेश । बिश्रव तेहि क्रोधते सुत कियो अति बल बेश ॥ धनदके प्रतिकार करिबे हेत सुनऊ नरेश । पितामह सु कुबेरकों किय अमर दिगप धनेश ॥ पुत्र नलकूबर दियो ईशानको करि मित्र । दई लङ्का पुरी राक्षसवृन्द सहित बिचित्र ॥ तातको सह क्रोध जानि कुबेर गैब प्रवीन । दइ हेतु प्रसन्न कन्या राक्षसनकी तीन ॥ पुष्पोत्कढा अरु मालनी अरु नाम राका जास । पुष्पोत्कढा सुत भए रावण कुम्भश्रुति बलरास ॥ मालिनीके भे बिभीषण रही राका जौंन । भई सूर्पनखा सुता खरपुत्र अति बलभौंन ॥ भो बीभीषण धर्मचारी बली अति अभिराम । बिष्णु आराधन करे निति बिष्णुभक्त ललाम ॥ ज्येष्ठ रावण कुम्भकर्ण सो महाबल अतिकाय । बिप्र देवी भयो खर मनुजाद अति बल पाय ॥ भई सुर्पनखातिक्रोधी हरणि तप नरनाहँ । पिताके सँग बसत सिगरे गन्धमादनमाहँ ॥ चढ़ि लखि वैश्रवणकी ते रावणादिक सर्व । नियम धरि तप करण लागे करि अमर्ष अखर्व ॥ कियो बिधिको तृप्त रावण सहसवर्ष प्रमाण । एक पदसों खडो ह्वै पञ्चाग्नि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

माहँ महांन॥ बायु भक्षण करत बीतें बर्ष दशशत तोम।दशबार यों सो एक मस्तक अग्निमे किय होम ॥ कुम्भकर्ण सु कियो तप क्षितिशयन रहित अहार । त्यो बिभीषण खाय सूखो पत्र एक उदार॥ कियो खर सह भगिनि तिनको सबिधि सेबन पुष्ट। जाय बिधि तिनकों निबारण कियो तपसों तुष्ट॥लोभ दे बरदानको एक एक तिनहिँ समान॥ *॥ ब्रह्मोबाच ॥ * ॥पुत्र बर मांगऊ स्ववांछित हम प्रसन्न महान॥ छोडि कै अमरत्वकों बर चहऊ मागऊ तौंन । होहिँ गे तब यथा इच्छा शीश होमे जौंन॥बिकृत रूप न होऊगे तुम कामरूप उदार। युद्धमे तुम होऊ गे अरि बृन्दके जेतार ॥ *॥ रावणउबान ॥ *॥ सुर असुर राक्षस नाग किन्नर यक्ष अरु गन्धर्ब। नहिँ पराजय लहौं इनसों जीति रणमे सर्ब ॥ *॥ ब्रह्मोबाच ॥ *॥ बिना मानुष जीति हौं तुम सर्ब इनकों बीर। *॥ मार्कण्डेयउबाच॥ *॥ सुनत बिधिके बचन रावण लहो मोद गभीर ॥ कुम्भकर्ण हि कहो तैसे जाय कै बिधि बैन । महातमसों ग्रस्त निद्रा कहो दुर्मति अैंन ॥ कहि तथास्तु सु गए ब्रह्मा जहँ बिभीषण भूप । पूत्र मागऊ चहऊ सो बर हों प्रसन्न अनूप॥ *॥ बिभीषणउबाच॥ परेहूँ न बिपत्य मेरी बुद्धि छोडै धर्म । ब्रंह्मास्त्र मोको बिना शिक्षा होय भासित पर्म॥ब्रह्मोबाच॥ धर्मकां नहि तजत हौ तुम योनिराक्षस पाय । देत है अमरत्व याते तुम्है अति सुखदाय ॥ ॥ *॥ मार्कण्डेयउबाच ॥ *॥ जीति लङ्का लई बर लहि धनदसो करि युद्ध । सहित भ्रातन बसों तेहां जाय रावण उद्ध ॥ गन्धमादन पै कियो चलि धनद अपनो भौंन । ब्रंह्मदत्त बिमान पुष्पक लियो रावण तौन॥ वैश्रवण दीन्हो शाप तेरो होय गो न बिमान। जौन तोकों हनैगो सो लेय गो सुरजान॥धर्मपथ गहि कै बिभीषण लही श्री सुअशेष। यक्ष राक्षसको कियो सैनेश ताहि धनेश ॥ मनुजाद राक्षस अरु पिशाचन धारि बुद्धि बिबेक । कियो लङ्कामाह रावण राज्यको अभिषेक॥दशग्रीव लिय सुरगणकों जीति रत्न अनूप।देवर्षि अरु ब्रंह्मर्षि सिगरे देवगण सह रूप॥ गए पावक सहित विधिकी शरण जानि समृद्ध॥ *॥ अग्निरुबाच ॥ *॥ भयो सुति बिश्रवसको दशकन्ध दुर्मति वृद्ध॥ कियो ताहि अबध्य पहिलें देय बर भगवाँन।प्रजनकों सो करत बाधा देय दुःख महान॥ करऊ रक्षण तुम्है बिन है हमै रक्षक कौंन ॥ *॥ ब्रह्मोबाच॥ *॥ जीतिवेके शक्य है सुर असुरके नहिँ तौंन॥ तास बधके हेतु कारण कियो है हम जौंन ॥ मनुजको ताते धरे गो जन्म त्रिभुवनभौंन ॥ *॥ मार्कण्डेयउबाच ॥ *॥ पितामह तब शक्रसों एहिभाँति बोले बैंन । धरा पर चलि जन्म लीजै सुरन सह बलअैन ॥ बिष्णुकी सु सहाय हेतुक ऋक्षि वानरि मांह । वीरसुत उतपन्न कीजे सुरन सह सुरनाहँ॥ भाग अपनेसों करै उतपन्न सुत बरबीर। जाय आपुसमे कियो यह मंत्र सुरन्ह गभीर ॥ सुरन्ह देखत दुंदुभी गन्धबिनी ही जौंन। कहौ बिधि व्है मंन्थरा तुम जाऊ दशरथभौंन॥दुंदुभी तब मंन्थरा बनि बसी दशरथ धाम।ऋक्षि वानरि मिलि यो सुर शक्र जन्म ललाम ॥ अंश माफिक सुबल सबको बज्रसार शरीर । काम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रूपी युद्धबेत्ता महा बलबर बीर॥ एहिभाँति सों सब बिरचि ब्रह्मा मन्थरा सों तौंन। दियो कहि करतव्य कारज रहो आगेँ जौंन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रामादिको तुम जन्म बिधिवत कहो मुनि तपधाम। कहहु अब प्रस्थानकारण सुनो चहत ललाम ॥ जौंन बिधि बन गए लक्ष्मण सहित सीता राम ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ प्रीति मानस भए दशरथ सुतन सङ्ग ललाम ॥ क्रियारति सतसङ्ग रति धरि धर्मरति बर भूप। क्रमहिँतें सुत सर्ब ताके भे कुमार स्वरूप॥ वेदबिद सरहस्य भे धनुबेदबेत्ता सर्ब। भए धरि उपनीत ते सह दार बन्धु अखर्ब॥ राम सब गुण भरे रञ्जन प्रजन्हके अभिराम। मनोहरपितु हृदय नन्दन भए आनद धाम॥ जानि अपनी बैस बीती बहुत दशरथ भूप। रामके अभिषेकको तब कियो मंत्र अनूप ॥ लोहिताक्ष सु महा भुजमदमत्त गजगति बीर। महोरस्क सु नील कुञ्चित केश पास गँभीर ॥ भरे श्रीसो दिपत शक्र समान गुणगणग्राम। बृहस्पतिसे सु मति सागर धर्मधुर धृतिधाम॥ सर्ब वशकर प्रकृति बिद्या सर्बके आधार। जितेन्द्री खलनिग्रही शतपाल प्रकृति उदार ॥ अजित जेता अरिनके अपराजितात्मा रूप। हृदयनन्द जननिके लखि राम दशरथ भूप ॥ प्रीति भरि गुण रामके लखि नृप पुरोहित पास। कहौ आजु सुद्योस मुनि बर पुण्य योग्य प्रकास॥ सरंजाम समृद्ध कीजै जो अभिषेक समान। जाय कै करिए निमंत्रित रामकों सुखदान ॥ भूपको यह बचन सुनिकै मन्थरा तहँ जाय। कहो अैसे कैकईसों बचन औवर पाय ॥ दुर्भाग्य तुम्हरो कियो सञ्चित कपट धरि क्षितिपाल। दशौ तुमकों सर्प अति बिष ग्रसौ कोपित काल ॥ भाग्य कौशल्या भरी है पुत्र जाके राम। होत है अभिषेक जाकों राज्यकों सुखधाम ॥ पुत्र राज्य न लहत तब हत भाग्य तूं गत मान। कैकई भरि कपट मनसे भरी रूप महाँन ॥ रहससे पति पास अैसें बिहसि बोली बैन। प्रणय सहित मनोहरण अति माधुरीके अैन ॥ भूप सत्य प्रतिज्ञ मोको दीजिऐ बरदान। मोहिमोचन कीजिए सङ्कष्टसो अतिमान ॥ राजोवाच ॥ देत हम बरदान तुमकों चहति जो अभिराम। जौंन दुष्कर कहहु गी सों करै गी छबिधाम॥ जौंन बाँछित होय तुमकों तौंन मागहु क्षिप्र। एक तजि जो दियो हम कहि स्वस्ति लीन्हो बिप्र ॥ जानि अपने बस्य सुनि कै भूपके बर बैंन। कहो कीजै भरतकों अभिषेक नृप मतिअैंन॥ राज्य दीजै भरतकों नृप जाहिँ बनकों राम। भूप सुनि कैं बचन सों अति घोर दुखको धाम। कछुक बोले नही भूपति रहे जड व्है मौंन। पिताको पण पालि बनकों राम कीन्हो गौंन॥ धरे धनुष तुणीर गमने सङ्ग लङ्गन बीर। वली सीता संग धारं पातिब्रत्य गँभीर ॥ गए बनको राम जब तब सुनत दशरथ भूप। गए सुरपुर देहको करि त्याग धर्म स्वरूप ॥ राम बनको गए दशरथ मरे सुधरम अैन। भरतको बोलवाय बोली कैकयी इमि बैंन ॥ गए दश रथ स्वर्गकों बन बसे लक्ष्मण राम। निहत कण्टक राज्यको तुम करहु भोग ललाम ॥ भरत जननीसों कहो तुम क्रूर कीन्हो कर्म। हतो पति धनलोभतें कुलनष्ट कीन्हो पर्म ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अयश मेरे शशपर तुम धरो जननि महांन। लगे रोदन करण ऐसें बोलि भरत सुजान ॥ आत्म
कृत यह कर्म नहि यह करि प्रसिद्ध चरित्र। कहे राम हि फेरिबेकों बचन भरत पवित्र ॥ शत्रुघ्नके
सँग जननि सिगरी बिदा करि कै भूप। वामदेव वशिष्ठ आदिक बिप्रगण तपरूप ॥ जानपद पुर
जननके सँग चलत प्यादें भर्त। जाय देखो चित्रकूट सुराम गुणगण स्मर्त ॥ धनुष धारे रामको
तह लखो तापसरूप। कहे सविनय बचन नानाभाँतिके बऊ भूप ॥ बिदा कीन्हो भरतको
प्रतिपालि पितुपण राम। पादुका ले रामकी गे भरत नन्दीग्राम ॥ करत पूजन पादुकाको
राज्यकृत मुनि रूप। प्रजागम लखि राम छोडो चित्रकूट अनूप ॥ महाबनमे गए जहँ सरभङ्ग
आश्रम पर्म। गऐ दण्डक बिपिनिकों सरभङ्गको दे शर्म ॥ जाय कै गोदाबरीतट बसे रघुबर धीर॥
सुपनखाको दोष लहि खर सबल मारो बीर ॥ रक्षणार्थक तापसनके धर्मधुर रघुनाथ। चतुर्दश
बरबीर राक्षस हने दूषण साथ ॥ रम्य दण्डकबिपिनिकों फिरि कियो श्रीरघुबीर ॥ गई रावण
पैं सुपनखा कटी नाक अधीर ॥ गिरी ताके चरणपैं मुख सुख्क शोणित रुद्ध। रूप ताको बिकृत
लखि अतिभयो रावण क्रुद्ध ॥ दशनसों दँसि ओठ मंत्रिन्ह टारि करि एकान्त। लगो बूझन
भगिनिसों सब बिपिनिको वृत्तान्त ॥ कियो कौने कर्म यह कऊ भगिनि मोहि बिसारि। गहो
यमपुर जाइबेकों मार्ग केहिँ निरधारि ॥ कढी रोमरंध्रतें तब तास क्रोध ज्वाल ॥ कहो सब
सुपनखैं बिक्रम रामको सु बिशाल ॥ अतःपर करतव्य तौन विचारि रावण भूप। गयो पास
मरीचके पुर रक्षिकै अनुरूप ॥ राम भयते जायकै मारीच मुनिगण पास। बसत हो गोकर्ण शिव
ढिग जानि अभय निवास ॥ भरो संभ्रम देखि रावण आगमन मारीच। फूल फलसों कियो पूजन
जानि मित्र निभीच ॥ स्वस्थ व्हैकै लगो बूझन निशातिपतिसों तौन। व्यग्रसे इत आगमन किय
कहऊ कारण कौंन ॥ कहो रावण रामको कृतकर्म सहित बिधांन। कहो हो करतव्य जो कृत
भरो क्रोध महांन ॥ कहो इमि मारीच रावण बचन सुनत अखर्ब। राम निकट न जाऊ जानत
तास बल हम सर्ब ॥ रामशरको बेगको सहि शकै गो बलबांन। हेतु मेरे सुतप को है तौन
बीर महांन ॥ कियो केहि उपदेश तुमको मंत्र यह कृत नास। क्रोध करिकै कियो रावण सहत
भर्सन तास ॥ नियत है तो मरण जौनहि मानि हो सम बैंन। राम करतें मरण मङ्गल अधमतें
एहि हैंन ॥ प्राप्त मरण अवश्य यातें करैं याकों कार्य्य। चिन्ति रावणसों कहो सु मारीच अति
मति आर्य्य ॥ हमै कारज कौन करिबे कहऊ रावण तौंन। * ॥ रावणउवाच ॥ * ॥ करऊ
लोभित जनकजाको बिपिनिमे करि गौंन ॥ रत्नमै मृग बनऊ सीता दृष्टि गोचर जाय। सहठ
गहिवें तुम्हे देहै रामकों सो पठाय ॥ राम बिन हम हरैगे तब सियाको अभिराम। बिरह बस त
ब नष्ट व्है हैं बिपिनिबासी राम ॥ वचनसुनिकिय और्धदेहिक आपनो शुभकर्म। चल्यो रावणके सो
पीछे मरण माने पर्म ॥ गयो मृग बनि तथाबिधिसों रामआश्रम पास। भिक्षुको धरि रूप

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

रावण दण्ड गैरिक बास ॥ देखि सीता बनो मृगको रूप अद्भुतअन । देऊ मृग एह रामसों तब सहठ बोली बैन ॥ करणकों प्रिय जानकीको राम धनु धरि धीर । रक्षणारथ लखनको तहां राखि गमने बीर ॥ धरेधनुतूनीर दौरे राम मृग परभात । यथा मृग नक्षत्र पीछें प्रजापति तुरजात ॥ प्रगट कबहु अप्रगट व्है लेगयो रामहिँ दूरि । निशाचर तेहि भए जानत राम बरबल पूरि ॥ बाण लेय अमोघ मारो निशाचर मृगरूप । बाणबिद्ध सो कहेसि ऐसैं रामस्वर सम भूप ॥ हाय सीता हाय लक्षण रुदित आर्त उदार । सुनो बचन सो जानकी अति उच्च करुनागार ॥ भयो जहँ यह शब्द लक्षण जाऊ तहँ रणधीर । जनकजा को करै पीडित रामको बरबीर ॥ लक्षनके सुनि बचन लागीं करण रोदन भूप । जनकजा कहि बचन मुखते महत अनुचितरूप ॥ सुनत अनुचित बचन सकरुण लखन मूदे कान । गए हे जह राम धारें धनुष तून महान ॥ रामको पद परशि लक्षण चले पीछे धीर । सियाढिग तब गयो रावण भरो कपट गभीर ॥ बेश धारें यतीको लखि जनकजा धृतधर्म । अतिथि ताको जानि चाहो देन फल मूल पर्म ॥ धारि अपनो रूप ए बन जनकजासों बैन । कहो ऐसैं राक्षसाधिप जानु मोहि छबिऐन ॥ नाम रावण पुरी लङ्का महोदधिके पार । होऊ सुन्दरि भारया मम भजऊ ऋद्धि उदार ॥ राम तापसकों तजऊ लखि करऊ मोद बिलास । कर्ण मूदे जानकी ए बचन सुनि कै तास ॥ बचन ऐसे कहसि मति जौ गिरैं रबि शशि मन्द । धरानभ फटि जाय तबऊ न तजौं रघुबर चन्द ॥ मत्त गजकों छोडि करिणी चहै शूकर कौंन । एहिभांति कहि कै बचन सीता गई आश्रमभौंन ॥ अधर कांपत क्रोधते करसों निबारति ताहिँ । गहो रावण दौरि आश्रममाहँ पैठति चाहिँ ॥ करत भर्त्सन केश गहिँ कै लियो रथपर डारि ॥ गगणपथ व्है चलो रावण बेग आतुर धारि ॥ लखो गृद्ध जटायु सीतहि लए रावण जात । राम राम पुकारि रोवती बिकल बीव्हल गात ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि सीताहरणवर्णनोनाम एकोणषष्ठितमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

अरुणपुत्र जटायु देख्यो रावणा दै हांक । निदरि मोहि हरि जनकजहि कहँ जात दुष्ट निसांक ॥ जियत मोसों जात नहिँ जौ न तजत सीत हि दुष्ट । बोलि ऐसे नखनसो चलि कियो घाएल रुष्ट ॥ पक्षतुण्ड प्रहारतें क्षत किए अमित उदार । व्यकल रावण देहतें बहु बही शोणित धार ॥ गृद्धसों हतमान रावण रामप्रिय निरधारि । खड्गसो भुज काटि गृद्धहि दियो क्षितिपर डारि ॥ गृद्ध राज हि मारि रावण अभ्रशिखर समान । लऐं सीता गगणपथ गो करे आतुरजान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जहँ जहँ प्रीते लखे आश्रम सरित सर अभिराम। डारि भूषण दए तहँ तहँ मणिनमय छवि धाम ॥ लखे वानर पक्ष बैठे शिखर पर अतिकाय। उत्तरीय समान बिहित दियो तत्र गिराय ॥ वायुबशसों गिरो तिनके मध्य जाय अनूप। अचिर सीत हि लए लङ्का गो निशाचरभूप ॥ सहित सीतापुरी मांह प्रवेश कीन्हों दुष्ट। फिरे रघुवर मारि राक्षस महा मायापुष्ट ॥ देखि लक्षणसों कहो तुम कोडि सीत हि एक। रहा आए विपिनिमे यह कियो अति अविवेक ॥ दूरि लै मृग रूप राक्षस गयो मायाभौंन। लखनको आगमन कारण चले चिन्तत तौन ॥ करत निन्दित लखनको तब चले आतुर राम। कहे लक्षण सियाके जे बचन अनुचितधाम ॥ महा दुखसों भरे आश्रमको गए श्रीराम। लखो मारो मृग तेहां परो गिरिसम भाम ॥ जानि राक्षस तानि कै धनु चले श्रीरघु वीर। देखि लक्षण रामको इमि मृग बचन गभीर ॥ कहे दशरथके सखा हम अरुणके सुत मृग। बचन ताके सुनत नीरे गए धनु करि रुद्ध ॥ सखा जानो जनकको सुनि बचन तास लक्षाम। छिन्नपक्ष जटायुकों तहा लखो करुणाधाम ॥ बूझिकै सीतार्थ जानो मृगवध रघुबीर। गयो रावण कौनदिशि इमि ताहि बूझो धीर ॥ मरो मृग बताय दक्षिणदिशा शीस हलाय। मोक्ष ताकों दिये देखो राम आश्रम आय ॥ भ्रष्ट आसन हत कमण्डलु भरी जम्बुक भीर। भरे दुख हतश्री चले दिशि याम्यकों रघुवीर ॥ भजे आवत देखि मृगगण विपिनिमे अतिघोर। दावा मिके सम करत नाना जीव आरत सोर ॥ लखो नाम कबन्धराक्षस कछू आगे जाय। हृदयमे मुख महाभुज सम अचल उन्नत काय ॥ लखनकों तेहि महाभुजसों गहो दैवाधीन। यक्षित ताकों भए लक्षण विषाद पूरित पीन ॥ दनुज खैचो बदनकों दिशि राम्को तब हेरि। लखऊ मेरी दशाको प्रभु कहन लागे टेरी। हरण सीताको भयो हम भये एहिविधि राम। राज्यते तुम भ्रष्ट दशरथ गए अन्तकधाम ॥ हम न तुमकों जनकजा सह कोशलामे राम। देखि है अभिषेक सिद्धित राज्यके सुखधाम ॥ एहिभांति सो कहि लगे लक्षण करण बहुत विलाप। कहो तब रघुनाथ निश्रम भरे भूरि प्रताप ॥ मोहि आहत नरव्याघ्र न करऊ खेद गँभीर। बामभुज हम करत खण्डन दक्ष तुम रणधीर ॥ राम लक्षण बाम दक्षिण काटि कै भुज तास। मारि लक्षण खड्गसो प्रभु कियो ताको नाश ॥ पुरुष ताके देहतें कढि गगणस्थित वरि रूप। देखि पूछो रामकों तुम कहऊ तौन अनूप ॥ कहो ब्राह्मण शापते हम नीचयोनि अखर्व। नाम विश्वाजसु हमारो राम हम गन्धर्व ॥ हरो रावण जनकजाको करत लङ्काबास। जाऊ राम सहाय करि है वानरेश्वर पास ॥ हंस कारण्डवन्ह शोभित सर सुपम्पा नाम। ऋष्यमूक समीप है सुग्रीव जहँ बलधाम ॥ करि मंत्रिण सहित भ्राता बालिको भय पाय। बसत है ऋष्यमूक पै सुग्रीव अतिबलकाय ॥ करै सो सो सहाय तव सम शील है बलवान। रावणालय तौन जानत कहत हम सु प्रमान ॥ बचन यह गन्धर्व कहि कै भयो अन्तरध्यान। राम लक्षण गए जेहां रहो सर सुखदान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि रामोपाख्यानेजटायुकबन्धवधवर्णनोनाम षष्ठितमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

राम लक्षण देखि पम्पा परम सरबर भूप। करण राम बिलाप लागे समुझि सीतारूप ॥ कहन लक्षण लगे तुमकों योग्य नहि यह राम। आत्म रूपनिधान हौ तुम महाबलके धाम ॥ सोध लीजे जनकजाको जहाँ राणव तौंन। बसत जहँ सुग्रीव गिरिपर तहाँ करिए गौंन ॥ एहिभांतिके कहि वचन लक्षण रामकों समुझाय। चले पम्पा छोडि जहँ सुग्रीव कपिबर पाय ॥ जाय कै ऋषि मूक ढिग कपि पञ्च देखो तौंन। देखि कै सुग्रीव पठयो शचिब कपि मतिभौंन ॥ हनूमान समान गिरिबर राम नीरे जाय। यथाविधि कहि बचन गो सुग्रीव पास लेवाय ॥ सख्य तब सुग्रीवके सँग कियो लक्षण राम। रामको पट जानकीकों दियो कपि अभिराम ॥ फेरि सीत हि ल्याय बेकी शपथ करि सुग्रीव। राम ताको बानराधिप कियो अति बलसीव ॥ कियो बालि हि मारि बेकी युद्धमें पण राम। कियो पण सुग्रीव सीत हि ल्यायबेको माम ॥ एहिभांति करि बिश्वास वर्धित परसपर गम्भीर। गए किष्किन्धा निकट सुग्रीव सह रघुबीर ॥ युद्धार्थ किष्किन्धा निकट सुग्रीव गर्जे जाय। सहो सुनत न बालि अतिबल उठो बीर रिशाय ॥ * ॥ तारोवाच ॥ * ॥ स्वबलतें सुग्रीव गर्जे है न यह गम्भीर। तास कोउ भो सहायक आयकै बलबीर ॥ नही तातें जाइए पति मानि मेरो बैंन ॥ * ॥ बालिरुवाच ॥ * ॥ कौन आश्रम तास है सुग्रीव दुर्मतिऐन ॥ कहन तारा बालिसों तब लगी सहित बिधान। दारहृत तहँ राम आए अनुज सह बलवान ॥ सुग्रीव तिनसों करी मैत्री ते धनुर्द्धर बीर। अनुज ताको जौंन लक्षण तौन अति रणधीर ॥ द्विबिद और मयन्द मंत्री ऋक्षपति हनुमान। सर्ब है एँ महा आत्मा सुमति अति बलवान ॥ रामको बल पाय चाहत कियो तुमको नाश। बालि बचन न तास मानो बँधो अन्तकपास ॥ बोलि तासो परुष निकसों गुहासों बलऐन। महाबल सुग्रीवसों इमि बलकि बोलो बैन ॥ तोहि कैयोबार जीतो निलज तौन बिसारि। छोडि दीन्हो जियत यातें तोहि बन्धु बिचारि ॥ बालिसो सुग्रीव बोलो गरजि पाय सहाय। प्राप्त औसर रामकों पण दियो सो समुझाय ॥ हरी दारा राज्य तू मम कहा जीवन मांहँ। बीर दोउ भिरे ऐसे बोलि कै नरनाह ॥ शिला तरुसों लरत दोउ गिरत पाय प्रहारा दन्त नख क्षत करत मुष्टिक मारि मारि उदार ॥ फुल्लकिंशुकसे लसे दोउ भरे शोणित धीर। भिन्न रूप न जात जाने देखि कै रघुबीर ॥ लता बाँधी जाय तब हनुमान सुमन ललाम। चीन्हि कै सुग्रीवकों तब धनुष लीन्हो राम ॥ बालिको करि लक्ष खैचो सशर धनु बलवान। बालि कम्पित भयो उरमें लगत रघुबर बान ॥ बालि शोणित बमन लागो बदनसों अतिमान। देखि ढाढे राम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लक्षण धरे धनुष महान ॥ काकुस्थको करि के सो निन्दित गिरो क्षितिपर भूप। लखो तारैं परो क्षितिपर बालिको मृतरूप ॥ कियो किष्किन्धाधिपति सुग्रीवको तब राम । सुग्रीव तारा सहित सानद बसे अपने धाम ॥ माल्यवत गिरि पै बसे चलि सहित लक्षण राम । योग्य चातुरमासके रचि दयो कपिपति धाम ॥ जाय लङ्कापुरीमे सह सिया रावण भूप। जाय राखो सियाको जहँ सदन अद्भुत रूप॥ असोकबनिका निकट तपस्याश्रम समान अनूप।करति राम स्मरण धारो तप स्विनीको रूप ॥ धरे तप व्रत करै सीता मूल फल आहार । करै रक्षण राक्षसी गण लएँ शस्त्र उदार ॥ हक्कि अक्किं ललाटाक्षिणि कोउ द्विजिव्हा तीन । त्रिस्तनी एकपाद त्रिजटा एकनैना पीन॥राक्षसी अति बिकट ऐसी करै रक्षण जैंन।राति दिन नहिँ लेति निद्रा रहै घेरे तैंन॥ राक्षसी ते करै तर्जन वचन बोलहि घोर। खाऊ मारऊ काटि डारऊ याहि गहि बरजोर॥ एहि भांति भर्त्सन करै निसुदिन जनकजाको भूप । राम बिरहाकुलित सीता कहै बचन अनूप॥ बेगि मोको खाऊ तुम नहि जीबि ताशा पीन । बिना रघुबर कमललोचन भई दुर्बल दीन॥ करति सोषण देहको व्रत धरें निरशन जैंन। राम बिन एहिजगतमे है पुरुष मेरो कौंन ॥ सुनत सब निशिचरी कहिबे गई रावण पास । कहन तब त्रिजटा लगी प्रिय बैन सुमति निवास ॥ कहति तो प्रिय सुनऊ सीता छोडि भय धरि चैन। अबिन्ध्य नामक वृद्धराक्षस नाम प्रिय मतिऐन ॥ कहति मोसों कहो तुमसों कहनकों प्रिय जैंन । रामपति तब कुशलसो है अनुज सह बलभैंन ॥ शक्र सदृश कपीशसों करि सख्य लक्षण राम । करत सैन त्वदर्थ उद्यत रहत है बलधाम ॥ धनदसुतके शापते तूम रहति रक्षित पर्म । लहो एहिँ जब भजो रम्भाबधूको तजि धर्म॥ भजि न बरवश शकै नारीकों दशानन दुष्ट । क्षिप्र लक्षण राम आवत सहित कपिपति पूष्ट ॥ तूम्हे मोचन करै मे नहि निशाचर गण सर्ब । लखे रावण नाशके हम लिङ्ग महत अखर्ब ॥ तैल लाएँ बिकच बूडित पङ्कमे दशशीश । चढो खरजुत जान ऊपर नचत सो भुज बीश ॥ कुम्भ कर्ण हिँ आदि राक्षस नग्न दक्षिण ओर । जात लाएँ रक्तलेपन माल पहिरे घोर ॥ स्वेत धारे छत्र मणिमय मुकुट उज्वल माल । स्वेतगिरि पर यों बिभीषण चढो मुदित बिशाल ॥ सचिव ताके चारि तैसैं चढे गिरिपर पर्म । हमै सबकों करत मोचन भीतिसो धरि धर्म ॥ रामास्त्रसों भू भई व्यापित सहित सिन्धु उदार। सुयशसों क्षिति भरत देखो सिया तो भर्तार॥ अस्थि चयपर चढो मधु परमान्नखात अखर्ब। लखो लक्षण चहत कीन्हो भस्म दिग्विदश सर्ब॥ करति रोदन रुधिर सिञ्चित व्याघ्र रक्षित पर्म।तुम्हे देखो जात उत्तरदिशाकों धरि शर्म॥क्षिप्र मिलिहो रामको तुम सहित भ्राता बीर। सुनत त्रिजटाके बचन सिय भरी मोद गभीर॥ नहीं जबलो राक्षसी ते तहाँ आई भूप। लखो त्रिजटे जनकजाको तौन पूरुव रूप॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वा० सिरघुनाथ कवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि रामोपाख्यानेत्रिजटासंवाद वर्णनोनाम एकषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ❀ ॥ रोलाछन्द ॥ ❀ ॥

शोकसों भर्तारके छद्मरूप भूषण हीन। मलिन बसना राक्षसीगण ग्रसित दुःखित दीन ॥ शिला ऊपर जहा बैठी जनकजा दुखधाम। तहा आयो अधम रावण लोकजित बश काम ॥ दिव्य अम्बर धारि मणिमय मुकुट भूषण सर्ब। मूर्तिमान बसन्तसों धरि कुसुममाल अखर्ब ॥ बनो सुरतरु सदृश तबहूँ अधम भयकर रूप। जाय सीता निकट ऐसे कहन लागो भूप ॥ बरज सुन्दरि मोहि पूरण करज पति अनुराग। बसन भूषण कहिसों बरि मोहि भूषज भाग ॥ सिरो भूषण होऊ मेरो प्रियाहै जे ताग्र। देवदनु गन्धर्वकन्या राक्षसों कबिराग्र ॥ कोटि चौदह भजै मोकों तुम्है भजिहै तौन। द्विगुण राक्षस त्रिगुण तिनतें यक्ष किन्नर जौन ॥ जीति धनदहि लियो पुष्पक लहऊगी सो जान। ब्रह्मर्षि विस्रवासुत हम लोकपाल समान ॥ सची सम तुम होऊ मेरी होय भार्या पर्म। दुःख तजि वनबासको तुम लहऊगी अति शर्म ॥ जनकजा एहि भाँतिके दश कन्धके सुनि बैन। देयकै तृणमध्य बोली भरें जलसों नैन ॥ जाऊ होय निवृत्त मोसों लहऊ भद्र उदार। लभ्य तोहि न पतिव्रत व्रत धरे हो परदार ॥ नही हमतुम योग्य भार्या मानुषी छद्म रूप। बिबस करिकै मोहि धर्षित चहत प्रीति अनूप ॥ प्रजापति सम पिता तेरो ब्रह्मयोनि महान। सो न पालत धर्मकैसें लोकपाल समान ॥ बोलिकै एहि भाँति सीता लगी रोवन भूप। भूमि देखति अधोमुखहै कँपति व्याली रूप ॥ सियाकें ए बचन सुनिकै निलज बोलो बैन। सुनऊ सीता कामनोकों देतहै नहिँ चैन। कहा मोहि अशक्य करिबो तोहिछत अनुरूप ॥ राम मानुष भक्ष्य मेरेहों दशानन भूप ॥ जनकजासों बोलि ऐसे निलज अधम अयान। गयो अभिमत भरो ह्वै दशकन्ध अन्तरध्यान ॥ राक्षसिनके मध्य सीता रही क्षपित स्वरूप। रही सेवत एक त्रिजटा सुमति ताकों भूप ॥ ❀ ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ ❀ ॥ सुग्रीव सेवित रामलक्ष्मण माल्यवत पर बास। करत हे सो बिमल अम्बर गयो चातुर्मास ॥ बिमल शशि नक्षत्र ग्रहगण भए शोधन घोर। कञ्ज कैरव काश फूले लसत चारों ओर ॥ जनकजा के बिरह व्याकुल भोर उठि रघुबीर। लगे लक्ष्मणसों कहन एहि भाँति बचन गभीर ॥ जाऊ जानो मत्तभो कपिराज ह्वै बश काम। क्षतघ्न निपुण स्वकार्यजे लहि कुमति राज्य ललाम ॥ बानराधिप कियो मारो बालिको जेहि अर्थ। तौन भूलो अधम कृत मम कियो चाहत व्यर्थ ॥ होय नहि उद्योगसे सो मदन मत्त गभीर। बालि पथमे प्राप्त करिबे योग्य तौ कपिबीर ॥ होय जौ उद्योगसे मम अर्थ कपिबर तौन। ताहि सादर इहाँ स्थापऊ क्षिप्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

कीजै गौन॥ महागुरु श्रीरामके सुनि बचन लक्ष्मणबीर । चले धनुधरि महा निष्ठुर तूण बाँधि गभीर ॥ गए किष्किन्धा पुरीमे बिना बारित भूप । मिलो आगे आय कपिपति सहित दार अनूप॥ क्रोध पूरित जानि पूजो कीशपति सबिनीत। कहे रघुबर बचन लक्ष्मण महाबीर अभीत॥ सुनो कपिपति राम उक्त अशेष सिगरे बैन।कहन तब कपिराज लागे लक्षनसो मिति अैन ॥ नही मेरे दुष्टमेधा हौं कृतघ्नबीर।कियोन्वषणहेतु कोन्हो यत्नसों सुनुधीर॥ओर आठौ पठैदीन्हे कीश अतिबलभौंन। एक बीते मास अैहैं ढूढिकै सब तौंन॥ अष्ट पुर बन ग्राम सागर तीरलो भू सब। आइहै फिरिढूढि पैतिस दिवसमध्य अखर्ब॥सुनत दारा सचिव सह इमि कीशपतिके बैन। कियो पूजित बानरन्हिँ लक्षन पूरित चैंन॥गए सह सुग्रीव लक्ष्मण मुदित रघुबर पास।कहो सिगरोकार्य को जो यत्न किय मतिरास। तेहि समै आए तहाँ बानर ढूढिकैं दिशितोनि। गऐ दक्षिण दिशाकों ते नहीं आये पीन॥कहो तिन बन नगर परगिरि फिरे शोधत सर्ब।नही देखो जनकजा कों भूमि रावण खर्ब॥गए दक्षिण दिशाकों अवकरततिनको आस।महा बलते नहीं आए दोय बितेमास॥ तेहि समै बांनर आइ बोले कीशपतिसों बैन। हनुमान अक्षर कियो मधुबन ध्वंस हे बलअैंन॥ आय दक्षिण दिशातें सगँ लये बाँनर बीर। बालि तुमते रहो पाले जौन बन गम्भीर ॥ भए सुनि कृत कृत्य कपिपति बाँनरनके बैंन। *बिना कारजके किये हम भृत्यको कृत हैं न* ॥ जायकै सुग्रीव सो सब कहो रघुबर पास । राम जाना देखि आए सियाकों बलरास ॥ तहां करि बिश्राम कछु ते हनुमतादिक बीर । गए कपिपति पास हैं जहँ राम सन्निधि धीर ॥ देखि गति मुख बर्ण श्रीहनुमान की रघुबीर । लही निश्चै देखि आयो सियाको रणधीर ॥ रामकों करि दण्डवत ते हनुमतादिक जाय । सुग्रीव लक्ष्मणकों कियो फिरि दण्डवत सुखदाय ॥ राम हनुमतसों कहो इमि जानिकै सत मृत्य । कियो जीवन सहित हमकों भए तुम कृत कृत्य ॥ सहित सीता राज्य करिहैं मारि अरिगण सर्ब । दार कृत व्है होत हमकों बीर जीवन खर्ब ॥ कहन सुनि हनुमान लागे राम बचन महान । लखी दक्षिण दिशा ढूढत गुहा एक महान ॥ अमित क्षुधित सतृषा पैठे जाय तामे बीर। बऊत योजन गए पूरित अन्धकार गभीर॥ जहां जाय प्रकाश पायो लखी तहँ तपधाम। प्रभावति हो नाम ताको तेजपुञ्ज ललाम ॥ दत्त तासों पाय भोजन मधुर करि जलपान। बद्ध बलव्है तृप्त निकसे तास आज्ञा मान॥ देखि ददुर सह्यगिरि चढि मलय पैं अतिमान।तहातें लवणोदधि देखो भरो जाद महान॥देखिकै योशत सुयोजन सिन्धुकों बिस्तार। जीवितासा छोडिकै अति भए व्यथित उदार॥ तहां अनशन धारिकै व्रत रहे सागर तीर। तहां चरित जटायुको सब लगे कहन गभीर॥तहां आयो गृद्ध पर्बत सदृश घोर सहान। चाहि हमकों खादनेको पक्षिराज समान ॥ कहत नाम जटायुको तुम कौनहौ बलअैंन। कहो हम सम्पाति तासों ज्येष्ठ सकरुण बैंन ॥ भरे बल मद दर्पसो हम गए रबि रथ पास । जरे मेरे पक्ष उबरो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अनुज सो बलरास ॥ बहुत दिनसो नहीं देखो अनुजसों बरबीर । रहे हम बिन पक्ष अबलों गुहामाह गभीर ॥ मरण सबिधि जटायुको हम कहो तासां राम । जानकीके हरणको दुख आपुको अति माम ॥ सुनत सो सम्पाति मूर्च्छित होय बोलो बैंन । मरण ताको सिया हरण सो सविधि कहु बलअैंन ॥ कथा हम सबरावरे की दई ताहि सुनाय । कहो कारण आपने व्रतको सो ताहि बुझाय ॥ मरण व्रतसों तेहि उठायो हमै कहि यह बैंन । बसत लङ्कापुरी मे दशकन्ध दुर्मतिअैंन ॥ लखतहैं हम पुरी लङ्का बसति सागर पार । मैथिली तहँ होयगी सब सुनहु प्लवग उदार ॥ उठे हम सब तुरित ताको सुनत बचन ललाम । मंत्र लागे करण सागर नाघिबेको राम ॥ सिन्धु लंघनको न काहू कियो जब व्यवसाय । स्मरण करि तब रावरेको चरण हम सुख दाय ॥ सिन्धु नाघो मारि छाया ग्राहनीकों भूप । जनकजा हम लखी लङ्कापुरीमे कृशरूप ॥ एक बेणी मलिन बसना धरे व्रत निरहार । मलिनाङ्ग बैठी भूमिपै तव नाम जपति उदार ॥ चिन्ह दे तब सियाके हम भए सन्मुख जाय । रामके हम दूत कहिकै एक ताकों पाय ॥ पवन सुत कपि इहां आए गगण पथ तव पास । कुशल सो है राम लक्ष्मण राजसुत बलरास ॥ करत रक्षण कीशपति सुग्रीव अति बल जौंन । कुशल तुमकों कहो लक्ष्मण राम बिक्रमभौंन ॥ कुशल बूझो कीशपति प्रिय रामको सु अखर्ब । बेगि आवत राम लक्ष्मण सहित कपि दल सर्ब ॥ नियत बानर मोहि जानहुँ नहीं राक्षस रूप । मौन रहि धरि ध्यान मोसो कहे बचन अनूप ॥ तुम्है जानो हनूमत हम साधु सुत तव बैंन । भरे राक्षस कपट बोलत क्रूर दुर्मतिअैंन ॥ सचिव तुम से जास कपिपति राम आज्ञा पाल । बिश्वासकों मणि देयकै यह कहे बचन बिशाल ॥ चित्र गिरिपै काकको तुम दण्ड दीन्हो जौंन । कही सब बिश्वास कारण कथा हमसों तौंन ॥ ग्रहण आत्म करायकै हम पुरी बारी सर्ब । राम पूजा हनूमतको सुनत बचन अखर्ब ॥ ***

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि रामोपाख्यानेसेतुबन्धनसमुद्रतरणबर्णनोनामद्विषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ******

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रहे बैठे राम जहँ तँह प्लवग जूथप बीर । पाय आज्ञा कीशपति को लगे आवन धीर ॥ बालि को हो स्वसुर नाम सुषेन जूथप जौंन । कोटि शत सँग लएँ बाँनर महाबलके भौंन ॥ गवय गज अति प्रबल लीन्हे साटि कोटि प्लवङ्ग । कीश कोटिसहस्र लीन्हे गो प्रहर्षण सङ्ग ॥ गवाक्ष बासी गन्धमादन गन्धमादन जौंन । शत सहस्र सु कोटि बानर सङ्ग आये तौंन ॥ पनस नामक जौन जूथप भरो सुमति उमङ्ग । कोटि दश द्वादश सु त्रिंशत लए बांनर सङ्ग ॥ बृद्ध दधिमुख महाबल सगँ लए सैन महान । जाम्ब बानर सहस कोटि सऋक्ष अति बलवान ॥ एतीक और जे जूथ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जूथप कहे कहँलो भूप । सिंधुसे गर्जे भयानक शैल शृङ्ग सरूप ॥ द्रुवग नाना वरणके अति काय बलमय घोर । सैन उमडी बानरी सग सिन्धु चारो ओर ॥ पायके शुभ दोस कपि पति सहित श्रीरघुवीर । चले लङ्का वोर लीन्हे सुभढ सैन गभीर ॥ चले आगे सैन रक्षक वायुसुत बलधाम । पृष्ठ पालक लखन रक्षक मध्यमे श्रीराम ॥ सहित कपिपति लसत रवि शशि यथा ग्रहगण माहँ। नील अङ्गद द्विविद पालत सैन सो कुशनाह ॥ राम कारय सिद्धिको सो सैन सिन्धु समान। बसो जाय समुद्रके तट विपिनि माहँ महान ॥ कहो तब कपिराजसों श्रीराम ऐसे बैन । सहित बानर मुख्य गणमे सबै लहि मतिचैन ॥ कहऊ कौन उपाय सागर तरणसे मतिधीर। सहत सेना सहत सागर भरो बारि गँभीर ॥ कोऊ नावन कहै कोऊ नाव प्लव सों बैन। शान्त करि कै तिन्हे बोले राम राजिव नैन॥ सिन्धु लंघन जोग्य है नहि सकल बानर बीर। यादगण सों भरो योजन एक शत गभीर ॥ नावप्लव सों महा सेना होय शक्ति न पार। और विधि लहि भेद सेना हनी प्रभु उदार॥करै राधन प्रथम देहै सिन्धु पथ अभिराम। किये राधन प्रगट हमसों मिलैगो जलधाम॥ नतरु हम अग्न्यास्त्रसों सो भस्म करिहै सर्व। स्नान करि सह लखन रघुवर डारि आसन दर्व॥ खग्रमे तब आइ सागर कहो रघुवर पाय।कहो का हम करै कारज राखरे बल रास ॥ देऊ मेरी सैनकों पथ कहो तब रघुवीर। जाय जेहि पथ हनो रावण कुमति कूप गभीर॥ जौ न मागे देऊगे तुम हमे पथ अभिराम। दिव्यास्त्र सो हम तुम्हे करि है भस्म तौ जलधाम ॥ जलधि सुनि श्रीरामको एहि भाँतिके वर बैन। व्यथित व्है इमि कहो अंजलि जोरिकै जलऐन ॥ नही चाहत विघ्न तव हम सुनऊ हे रघुवीर। कार्य कारण वचन तुम सो कहत सुमति गभीर ॥ देहि पथ जौं तुम्हे हम तौ धनुर्द्धर कोऊ और। फेरि हमसों आय मागे सुनऊ रघुवर मौर ॥ नाम नल है विश्वकर्मापुत्र बानर जौन। काष्ठ तृण पाषाण देहै डारि जलमे तौन॥ तौन धारण करैंगे हम रचैगो सो सेतु। भयो अन्तरध्यान सागर सेतुको कहि हेतु ॥ कहो नलसों सेतु बन्धन बचन राम गभीर।सेतु बाँधो नल दियो गिरि वानरन्ह बर बीर ॥ बिस्तार दशयोजन सुयोजन एक शत आयाम। आयो विभीषण तहां ताकों शरण दीन्हे राम ॥ चारि मंत्रिन सहित लखि करि कृपा श्रीअवधेश।कहो करि अभिषेक ताको दे अभैं लङ्केश॥ कियो लक्ष्मण सदृश ताको बन्धु अवरज राम । गए सागर पार तासों मंत्र करि बलधाम ॥ टिके राम सुबेल पर लङ्केश कपिपति सङ्ग। कपिन्ह लङ्काके करे सब जाय उपवन भङ्ग ॥ तहां रावण पठै मंत्री दये चार बनाय। नाम शुकसारण विभीषण गहे तिनको आय ॥ राक्षसी तनु धरो जब तिन तिन्हें सैन देखाय । कृपा सागर राम तिनको दयो बेगि छुटाय ॥ बुद्धि बलको धाम अङ्गद आनि सुत धरि धीर । राम रावण पास पठयो दूततांको बीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वा
सिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि
रामोपाख्याने सेतुबन्धनसमुद्रतरणवर्णनोनाम त्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ *~*~*~*~*~*

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

बजत जल फल मूल बलने राम रक्षित सैंन। बसी पास सुबेलके चऊँओर अति बल ऐंन॥ करी रावण दुर्ग रचना उद्ध युद्ध समान। राखिकैं चऊधा शतघ्नी यत्र अति गुरुमान॥ करे सुदृढ कपाट परिखा करी अति गम्भीर। धरे नानाशस्त्र चऊँदिशि घोररात्तस बीर॥ अश्व रथ अनगणित गज मदमत्त गिरि सम घोर। करे ढाढे चढे रात्तस महाबल चऊँओर॥ गयो अङ्गदबीर लङ्का पुरीकों जहँ द्वार। बिदित करि दशकन्धकों किय पुरप्रवेश उदार॥ लसो रात्तस बृन्दमे एहिँ भाँति अङ्गद बीर। भोरकैंसों भानु ज्यौं घनघटामाहँ गँभीर॥ गए रावण पास ताके सहित मंत्रिन्ह बीर। बूझि लागे कहन तासों कहो जो रघुबीर॥ अङ्गदउवाच॥ कहो तुमसों कहनकों वह कोशलापति चन्द्र। समय आयो करऊ सो तुम धीय धारि असन्द्र॥ नृपतिके अन्यायसो पुर नगर पावत नाश। कियो तुम अपराध मेरो दारहरण प्रकाश॥ कियो नहि अपराध तिनको कियो बध तुम जौंन। *सुरनको अपमान करि ऋषि हने जे तपभौंन॥ हने जे राजर्षि तिनको करहिँ* रोदन बाम। लहत हौं तेहिकर्मको फल अचिर भाखो राम॥ हनैं गे हम तोहि ससुत सबन्धु सह परिबार। मनुज हम मम धनुषको लघु वीर्य्य निरुत उदार॥ तजेऊँ सीताके न तुमको कोडि हैं अघओक। कियो चाहत शरणसो हनि बिना रात्तसलोक॥ सुनत अङ्गदके वचन अति भयो रावण क्रुद्ध। देखि अङ्गदसों भिरे उठि चारि रात्तस उद्ध॥ लगे अङ्गद अङ्गसों तेहि निशाचर बलबांन। कूदि बाहेर आइ पटके तिन्हैं कपिकुलभाँन॥ नाघि लङ्कापुरी अङ्गद गए जहँ रघु बीर। रामसों बृतान्त सिगरो कहो तौंन गभीर॥ कियो कछु बिश्राम कपिकों किया प्रसंशित राम। कियो पैंठि प्रकार मंथन बानरन्ह बलधाम॥ सङ्ग लक्ष्मनके बिभीषण ऋक्षपति बरबीर। जाय दक्षिणद्वार घेरो पुरीको गम्भीर॥ घोरदन्त कराल आनन कोटि शत कपिबीर। चढे लङ्कापुरी पर लरि भजी निशिचर भीर॥ दन्त नख अतिघोर जिनके ऋक्ष अतिबलवान। चढे लङ्कापुरी छपर तीनिकोटि अमान॥ मूदिँ रजसों गयो रबि नहि देखि परत प्रकाश। चलत नानारङ्गके कपि ऋक्ष अति बलराश॥ प्राकारलङ्काको भयो सब कपिल बानर रूप। भऐ बिस्मित सकल रात्तस देखि अद्भुत भूप॥ कपिन्ह खम्भा कनकके अट्टारिका दिय डारि। कियो मथित प्रकार सिगरे यंत्र दीन्हे टारि॥ बानरन्ह फेकीं शतघ्नी सो परी लङ्कामांह। रहे जौन प्रकार रक्षक भजे ते नरनाहँ॥ चले रात्तस कामरूपी रावणाज्ञा पाय। लग बर्षण शस्त्र नानाभांतिके अतिकाय॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

व०प० काटि कोटिन्ह विकट राक्षस बानरन बिचलाय। लियो फेरि प्रकार अपने स्ववश कीन्हो आय बहुत शस्त्रनसों गिरे ते भगीं बानर बीर। शिला स्तम्भ सुनखनसों भई मथित राक्षस भीर ॥ पर स्पर गहि केश बानर निशाचर बलवान। दशन मुष्टिकघातसों रण भयो प्रबल महान॥ गरजि गरजि लरे अतिबल कीस राक्षस बीर। मरत मारत तजत तबहु न भरे क्रोध गभीर॥ बरषि शर बर राम मारे दनुज अमित महान। किये लक्षण शरणसों हनि निरितगण गतप्राण। फिरे बानर युद्धसों लहि राम आज्ञा भूप। गए पास सुबेलके घन निपिनिमाह अनूप ॥ *** ॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनायकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि रामोपाख्याने लङ्कायां प्रथमयुद्धवर्णनोनाम चतुषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ******

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

निवेसमान बिलोकी सेना निशामे बलवान। चले रावण अनुग राक्षस क्षुद्रगण अतिमान॥ पतन पर्वण जम्भ खरगण प्ररुज अरुज अखर्व। होय अन्तर्ध्यान बर्षे आयु धर्षण सर्व॥ परी देखि न कपिनकों सो निऋत सैन गभीर। मारि तिन्ह हिँ गिराय क्षितिपर दियो बिभीषण बीर॥ क्रोध करि कै चलो रावण सज्ज ह्वै अतिमान। सङ्ग सैन पिशाच राक्षसकी महाबलवान ॥ युद्धशास्त्र बिधान बेत्ता शुक्रसों मतिमान। बिरचि उशनसव्यूह रावण लगो बर्षण बान ॥ देखिव्यूहारूढ रावण स्वबलकों करि उह। रामसेना सहित बिरचो बृहस्पतिकृत व्यूह॥ लरण लागो रामसो तब सबल रावण बीर। आय लक्षणसों लरो तब इन्द्रजित रणधीर ॥ बिरुपाक्ष कपीशकों संग तारस्वर्वट जान। तुण्डनलसों लरो दुःसह पनससों बलभौंन ॥ लरे बानर राक्षसनसों पाय समबल बीर। तुमुल बाढो युद्ध वर्षे शस्त्र उपल गभीर ॥ लरो हर्षनसो सलोमस निशाचर बलवान। राम पैं दशकन्ध बर्षे शक्ति शूल महान॥ राम रावण शीष ऊपर निसित बर्षे बान। लरे लक्षण इन्द्रजित दोउ बीर प्रबल महान॥ त्यो बिभीषणसों प्रहस्त सो लरो अति कै क्रुद्ध। दुहुन कीन्हो दुहुन पै अतिबाण बर्षा उद्ध॥ तब बिभीषणको गदासो हनो दौरि प्रहस्त। रहो ठाढो बीरबरसों भयो नेक न अस्त॥ तब बिभीषण शक्ति लीन्ही ज्वलित अग्नि समान। हरो शीष प्रहस्तको तेहि शक्तिसो बलवान ॥ हतो देखि प्रहस्तकों धूम्राक्ष राक्षस बीर। घनो पम सगँ लऐं सेना भिरो आय गभीर॥ देखि ताकी प्रबल सेना भजी बानर सैन। बानरनको भजत लखि हनुमान बल अतिऐन॥ देखि कै हनुमानकों तहँ भरो क्रोध अखर्ब। प्रबल पाय सहाय रणको फिरे बानर सर्ब॥ राम रावण सैनमे तब भयो शब्द महान। धूर्माक्ष कीन्हो व्यथित कपि दल बरषि कै बहुबान॥ धुम्राक्ष अरु हनुमान लागे लरण अतिबल बीर। गदा पट्टिस परिघसों तरु शिलासों गम्भीर॥धुम्राक्षकों करि क्रोध मारे महाबल हनुमान।बानरन हनिकै सैन सिगरी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

किये विरहित प्राण ॥ बानरनसों है बध्य भाजी राक्षसनकी भीर। गई लङ्कामाह छोडे युद्ध व०
आश गभीर ॥ शेष राक्षस गए भाजी लङ्कपतिके पास। युद्धको वृत्तान्त लागे कहन पूरित त्रास ॥
प्रहस्त अरु धूम्राक्षको बध सबल सुनि दशशीस। दीर्घ श्वासा लई चितिपर पटकि कै भुज बीश॥
युद्धको अब काल आयो कुम्भकर्ण समान। देऊ ताहि जगाय कार कै यत्न अति बलवान ॥ उग्र
नाद बजाय नानाभांतिके चऊँओर। कुम्भकर्ण हिँ कियो निद्रारहित करि अतिशोर ॥ कुम्भ
कर्ण हि करि विनिद्रित सभै रावण बैन। कहो तुमको धन्य जो एहिभांति निद्राऐन ॥ नहीं
जानत रहे हम यह महाभय बलधाम। सेतु बांधि समुद्रमे तरि सहित कपिदल राम ॥ निदरि
लोको हती राक्षस चमू जो बलभैान। रामको हम हरी भार्य्या नाम सीता तौन ॥ ताहिलीवें
काज आयो इहां सो रघुबीर। हने मेरे प्रहस्तादिक सुभट जे बरवीर ॥ तुम्हे विनु एहि जगतमें
नहि तास हन्ता आन। सज्ज व्है तुम ताहि मारो जाय कै बलवान ॥ अनुज दूषणको
प्रमाथी वज्र वेग सु जौन। तिन्हे सँग ले हनऊ सानुज राम कपिदल तौंन ॥ दूषणानुज महा
बल दशकन्ध साशन पाय। कुम्भकर्ण हि पुरःसर करि चले ते अतिकाय ॥ कुम्भकर्ण
ससैन पुरतें निकशि बाहेर जाय। लखी सेना बानरनकी खडी सन्मुख आय ॥ रामदर्शन
लालसा करि लखत चारोओर। तहाँ देखो खरे लक्ष्मण धणुष धारे घोर ॥ लगे मारण डारि
गिरितरु ताहि कपिवर बीर। बानरनते ताडमान सो लगे भक्षण धीर ॥ भरे भय तव भजे
बानर करत आरत सोर। देखि कुम्भश्रवनको अति कर्म दारुण घोर ॥ दौरि कै सुग्रीव कुम्भ
श्रवनके ढिग जाय। साल तरुसो हनो ताको शीष पै अतिकाय ॥ जगो सो तरु घाततें तव गरजि
कै अतिघोर। भुजनसों कपिराजको तेहिं लियो गहि बरजोर ॥ देखि राक्षस गहे है कपिराजको
रणधीर। निसित शरसों हनो ताको हृदय लक्ष्मण बीर॥ वर्म सह हिय भेदि कै शर कियो क्षितिमें
गौन। छोडि कै कपिराजको हियभेद राक्षस तौन ॥ शिला गहि कै चलो लक्ष्मण पैं निशाचर
धीर। क्षुरप्रशरसों तास काटी भुजा लक्ष्मण बीर ॥ चतुर्भुज फिरि भयो सो धरि शिला राक्षस
तौन। तौन काटी शरन्हसो सौमित्रि अतिबलभौन ॥ भयो सो वज्रपाटशिर भुज निकृति अति
बलवान। ब्रह्मास्त्रसों ते काटि डारे लखन लखत महान ॥ वज्र मारो शिखरसो क्षिति परो कुम्भ
श्रौन। भजे राक्षस देखि ताकों गयो अन्तकभौन ॥ कुम्भकर्ण हिँ मरो लखि कै दूषणानुज बीर।
वज्रवेग सु सह प्रमाथी चले क्रुद्ध गभीर॥ हनो तिनकों शरणसों सौमित्र व्है अतिक्रुद्ध। लरे राक्षस
तौन तिनसों भयो सङ्कुल युद्ध ॥ महत वर्षा शरणकी तिन करी दुऊन समान। बीर लक्ष्मण राक्ष
सन पर अमित वर्षे बान ॥ लिए तब गिरिशृङ्ग आए वेगसों हनुमान। वज्रवेग निशाचर हि हनि
कियो विरहित प्रान ॥ नील मारो शिलासों राक्षस प्रमाथी जौन। दुहूदलसों होन लागो युद्ध

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० फिरि भयभौन ॥ बज्रत मारे गए राक्षस मरो कपिदल तोक । भरो हाहाकार अति सब राक्षस न्हके ओक ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशिराजमहाराजाधिरारश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासी रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि रामोपाख्याने कुम्भकर्णबध बर्णनोनाम पञ्चषष्ठितमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ मार्कण्डेयउबाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुनो रावण हनो लक्ष्मण कुम्भकर्ण ससैन । करत रोदन इन्द्रजितसों कहन लागो बैन ॥ हनऊ सह सुग्रीव लक्ष्मण रामको बरबीर। जोति लीन्हो इन्द्रको तुम सुरन्ह सह रणधीर॥प्रगट अन्तरध्यान व्है दिव्यास्त्रसों अतिमान । हनऊ मेरे शत्रुकों सुत कौन तुम हि समान॥राम लक्ष्मण सहि न शकि है पुच तो शरपात । कहा बांनर बापुरे जे सहै शस्त्राघात॥ कुम्भकर्णादिक हने तिन जौन राक्षस बीर । बैर तिनको लेऊ तुम अब जाय कै रणधीर॥शरन्हसों हनि शत्रुकों करु मोहि नन्दित नन्द।इन्द्रजित दशकन्धके सुनि बचन पूरक दन्द।इन्द्रजित व्है सज्ज रथ चढि चलो रणकों बीर। आज्ञान लक्ष्मणको कियो तेहि बोलि कै गम्भीर॥सशर धनु धरि चले लक्ष्मण सुनत अपनो नाम । लरे लक्ष्मण इन्द्रजित जय चाहि अति बलधाम॥ दिव्यास्त्रबेत्ता दोऊ स्पर्द्धा भरे बल अति मान । बाण बर्षा इन्द्रजितको दरी लक्षन सुजान ॥ महत तरुसों हनो अङ्गद तास उत्तम काय । भ्रान्त व्है थेां इन्द्रजित तब लियो परशु उठाय॥हनो चाहत बालिसुतकों देखि लक्ष्मण बीर।खण्ड कीन्हो परशु ताके पानिमे रणधीर॥गदासों तेहिं हनो ताको बाम पार्श्व महान । हनो अङ्गद क्रोध करि तब सालतरु अतिमान ॥ इन्द्रजितको हनो ताको सूत रथसह अर्ब । भयो अन्तरध्यान रथ तजि इन्द्रजीत अखर्ब ॥ जानि अन्तरध्यान राक्षस महामायाभौन । राम रक्षित करी सेना तहाँ करिकै गौंन॥होय अन्तरध्यान बर्षो बरद तीक्षण बान। करे लक्ष्मण रामके सब बिद्ध अङ्ग महान। अदृश्य शरसों लरे तासों राम लक्ष्मण बीर॥ फेरि लागे करण राक्षस बाण दृष्टि गभीर ॥ गगण गत बज्र भए बानर शिला आयुध धारि । इन्द्रजित हनि शरणसों दिय तिन्है क्षितिपर डारि ॥ सर्बाङ्ग बेधित शरणसों व्है व्यथित लक्ष्मण राम।गिरे क्षितिपर मनऊ रबि शशिभूमि पै कबिधाम॥ देखि क्षितिपर परे लक्ष्मण रामको बलवान । रचोशरपञ्जर चहूँधा बर्षि कै बरबान ॥ बाण बद्ध सु भए शोभित रामलक्षण बीर।परे पञ्जरमांह मानऊ लसत सुन्दर कोर ॥ एहिभाँति लक्ष्मण रामको सुग्रीव लखि तहँ आय । भए चारोओर ठाढे कपिन सह अतिकाय ॥ नील अगद हनू मान सुषेन द्विबिद मयन्द । याम्बुबानहि आदि जूथप भरे देखत दन्द ॥ तहँ बिभीषण आय प्रज्ञा चक्षसों अभिराम । कियो बेधित मोह तजि तब उठे लक्ष्मण राम ॥ देखि बिज्वर रामसों बोले बिभीषण बैन । धनद पठयो लेऊ सो यह अम्भ राजिव नैन ॥ खेत गुह्यक तौन ल्यायो तुम्हे अति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सुखदान। चखन्हमे सो लाइ देखहु निऋति अन्तरध्यान ॥ मंत्र संस्कृत तौंन लीन्हो बारि अतिगुण धाम। राम लक्ष्मण सहित कपिवर धोय चख अभिराम॥भयो दिव्य बिलोल लोचन परम सुखद महान॥लगे देखन चराचर सम प्रगट अन्तरध्यान॥ इन्द्रजित कृत कर्म अपनो पितासों कहि सर्ब। फेरि आयो बेगि सो रण भूमिमाह अखर्ब॥इन्द्रजितको देखि आवत भरे क्रोध गभीर। ले बिभीषण को सुमत तब चले लक्ष्मण वीर ॥ करे आन्हिक नही जबलो अधम राक्षस तौन। महाशरसों हनत तबलों याहि हे बलभौन ॥ होन लागो युद्ध लक्ष्मण इन्द्रजितसो घोर। दुहुन दोऊ हनन लागे शरणसों बर जोर ॥ मर्मबेधी शरणसों हनि लखनको घननाद । अङ्ग बेधित किए सिगरे भयो चित्त अबाद ॥ अग्निसे सौमित्रके शर लगत राक्षस बीर।आठ छोडे सर्पसे बिष भरे बाण गभीर ॥ तजे लक्ष्मण तीनि शर तब क्रोध करि अतिमान। एकतें शिर दोयतें भुज दोऊ सह धनु बान॥ इन्द्रजितके काटि डारे भूमि पैं बर वीर। चलत तास कबन्ध काटो सूत सह रणधीर ॥ गए लङ्कामाह सह रथ तास ले मजि अर्ब । पुत्रको बध जानि रावण भरो शोक अखर्ब॥ चलो सीतहि मारिबेको खड्ग लीन्हे दुष्ट।कियो ताहि अबिन्ध बारण बचन कहि मति पुष्ट॥वाम बधके योग्य तुम नहिँ बीर बिदित उदार। मरैगी यह बिना मारे हनेतें भर्तार ॥ इन्द्रके जेतार व्है तुम मारि कै कृश बाम । अयश यह तुम लेहु मति दशकन्ध अतिबलधाम ॥ फिरत सुनत अबिन्धके एहि भाँतिके बर बैन । सज्ज करिवें कहो स्यन्दन सहित राक्षस सैन॥ *****

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि रामोपाख्याने इन्द्रजितबध बर्णनोनाम षष्ठषष्ठितमोऽध्यायः॥ ********

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * । रोलाछन्द ॥ * ॥

भएँ बध प्रिय पुत्रके अति होय रावण क्रुद्ध।चलो रथ चढि सज्ज व्है सगँ लए सेना उद्ध॥चलो लरिबे रामसों सगँ सुभट ले रणधीर।देखि अङ्गद नील अरु हनुमान अति बलबीर॥सहित ऋक्षण ऋक्षपति सह कीश यूथप जौन। आय रावणकी चमू तिन करी बानर तौंन॥ मारि तिन गिरि तरुनसो किय ध्वंश रावण सैन। देखि सैनाध्वंश रावण क्रोध करि बलऐन॥ धारि माया दनुज काढे देहँते अतिमान। शस्त्रधर ते राम मारे डारि अस्त्र महान॥ धारि लक्ष्मण रामको अनगनित रावण रूप। चले धनु धरि बिरचि माया राम सन्मुख भूप ॥ देखि लक्ष्मणसों कहो एहि भाँति सो रघुबीर। धरे मम तव रूप राक्षस हनहु ते रणधीर॥ हनी रावणकी सो माया एक क्षणम राम। लए मातलि हरित हय युत सुरथ तेजसधाम॥ जाय रणमे रामके ढिग कहे ऐसे बैन। मातलिरुवाच॥ शक्रको यह सुरथ यापै इन्द्र चढि बलऐन॥ हने शतसह दनुज सेना सहित

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

अति बलवांन। सज्ज मोते चढऊ यापै हनऊ निरित महांन ॥ सुनत मातलि बचन रघुवर रह ककुक बिचारि। तब बीभीषण कहो राक्षसको न रथ निरधारि ॥ जायकै तब चढे रथपर हर्षसो रघुबीर। चले रथचढि राम रावण रहो जह रणधीर ॥ चले रघुबर क्रोध करि जब निकटति पतिको ओर। भयो हाहा कार चऊदिशि भुवनमे अति घोर॥सिंह नाद सु बजी दुंदुभि गगणमे अभिराम। रामसों दशकन्धसो भो युद्ध दारुण साम ॥ राम ऊपर तजो रावण शूल दारुण चण्ड। राम सो सितशरणसों हनि कियो शतसह खण्ड ॥ देखि दुष्कर कर्म रावण भरो भीति महांन। राम ऊपर लगो वर्षण निसित बऊबिध बान ॥ शस्त्र नानाभाँतिके अति निशित घोर अखर्ब। भरो भयसों भजी सेना बानरनकी सर्ब ॥ स्वर्ण पुंख सु निसित लीन्हो राम करमे बान। कियो योजित मंत्रसों ब्रह्मास्त्र पढि सन्धान ॥ देव हर्षित भए सुरपति सहित सो शर देखि। महा राक्षसराजको अल्पायु निश्चय लेखि ॥ क्रोध करि दशकन्ध पर ब्रह्मास्त्र नाना भाँति। महा ज्वाला जाल मण्डित प्रलय पावक काँति ॥ राम करते छुटत सो शर ब्रह्मदण्ड समान। सूत रथ सह भस्म कीन्हो दनुज पतिहि महांन ॥ सैंद्र सुर गन्धर्ब किन्नर भरे आनद सर्ब। राक्षसेश्वरको मरण लखिराम कर्म अखर्ब ॥ ब्रह्मास्त्र सों सो भयो अैसें भस्म रावण भूपरहो शेष न निकटति पतिकी भस्मछको रूप॥ ***\

असुवृत्तके तुम जनकजा सुनु बैन । नहो हमकों भोग इच्छा सङ्ग तो छविऐन ॥ रामके ए बप्प
सुनत सीता महादारुण बैन । कनक केदली कटीसी क्षिति पे गिरी हत चैन ॥ मोदमै कछु
रङ्ग मुखपै चढोहो अभिराम । रामको सुनि बचन गो उडि धूम कैसो धाम ॥ रामके सुनि
बचन लक्ष्मण सहित कपिबरबीर । भए सदृश गतासु चेष्टा रहित महत अधीर ॥ तहां आए
पितामह तब चढे बिमल बिमान । इन्द्र पावक बायु यम सह बरुण धनद सुजान ॥ अमरगण
गन्धर्ब किन्नर यक्ष गुह्यक आम । दिव्य रूप सुभूप दशरथ सप्तऋषि तपधाम ॥ चढे बिमल
बिमानपै सब निकट नभसे आय । प्रत्यक्ष व्है कै भऐ ठाढे बिमल बेष बनाय ॥ पितामह
सँग देखि दशरथ भूपको सुखदान । रामसों उठि करन लागो सिया बचन प्रमान ॥ राजपुत्र
न दोष यह तुव कहतहौ तुम जौन । कहति प्रमदा पुरुषकों गति बिहित बिधिकी तौन ॥
मातरिस्वा भूत तनमे सदा गतिहै जौन । पाप हम जो कियो होय तौ तजो हमको तौन ॥
जो कियो हम पाप कृत तौ सुनऊ राम सुजान । तजो मेरे प्राणकों तौ पञ्च तत्व महान । जौन
चिन्त्यो स्वप्नहूँमे तुम्हे तजि प्रिय अन्य । देवआज्ञा पाय तौ मम होऊगे पति धन्य ॥ भई तब
*आकाश बाणी सुनी सबहिन तौन। सुनत सिगरो कपिनको दल भयो आनद भौन ॥ * ॥ बायुव*
बाच ॥ * ॥ सदा गति हम बायु जानऊँ कहत सत्य गँभीर । मैथिली नीष्पाप की जै ग्रहण
श्रीरघुबीर ॥ * ॥ अग्निरुबाच ॥ * ॥ बसतहैं हम जगत जनके हृदयमे सुखदान । मैथिली नहि
कियो कछु अपराध राम सुजान ॥ * बरुणउबाच ॥ * बसतहै हम जगत जनके देहमे रसरूप ।
मैथिली नीःष्यापको करु ग्रहण रघुबर भूप ॥ पुत्र नहि आश्चर्य्य तुमसे धर्मधुरकों बीर । सुरा
सुरको महा बैरी हनो जो तुम बीर ॥ सर्व भूतनसों अबध्य जो निशाचर बलवान । भयो पाप
असाद मेरो सुनऊ तौन सुजान ॥ कारणान्तर सो रहो अबलो बचो खर तौन ॥ आत्मबधको
हरी सीता महापतिव्रत भौन ॥ नल सु कूबर शापसों ही सिया रक्षत राम । बलात्कार
जो करै रावण बाम सँग बश काम ॥ शीश शतधा जाहि ताके फूटि व्है बश शाप । नहीं सीता
महा कीबो योग्य शङ्का थाप ॥ कियो तुम यह महत कारज देवतन्हको राम । * ॥ दशरथ
उबाच ॥ * । होयतो कल्याण हम तव पिता दशरथ नाम ॥ राज्यकों तुम जाऊ पालऊ प्रजाजन
अनुरूप ॥ रामउबाच ॥ करत बंदन जौ पिता मम आपु दशरथ भूप ॥ जाहिगे हम तात
कोशल पुरीको अभिराम ॥ मार्कण्डेयउबाच ॥ फेरि दशरथ रामसों यह कहो बचन ललाम ॥
जाऊ कोशलपुरीको भए पूर्ण चौदह बर्ष । कियो बन्दन देवतनको राम तब भरि हर्ष ॥ सचो
इन्द्र समान सीता ग्रहण कीन्हो राम । अबिन्ध त्रिजटाकों दयो बर फेरि करुणाधाम ॥ रामको
वर दयो ब्रह्मा भरे मोद अखर्ब । धर्ममे मति रहौ तव ध्रुव शत्रु जीतऊ सर्ब ॥ राक्षसनसों निहत
बानर लहो ते सब प्राण बिधि बचनते ते उठे बानर भरे मोद महान ॥ दियो बर हनुमानको यह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जनकजा अभिराम । राम कीर्त्ति समान जीवज लहज्ज भव्य ललाम॥ लखत सबके देवता गण भए अन्तरध्यान । जानकी सह रामसों तब कहो यों मघवान ॥ देव नर गन्धर्वगणको हरो तुम दुख राम । धरा जबलो रहैगी तब कीर्त्ति करुणाधाम ॥ सबिधि रामहिँ पूजिकै एहि भाँति कहि मघवान । तौन रथ चढि सहित मातलि कियो गगण पयान॥ दई लङ्कापुरी तौन बिभीषण हि अभिराम । सहित कपिपति राम सीता लखन दयाधाम ॥ चढ लक्ष्मण सहित पुष्पक पै सु सीता राम । सहित कपिपति मुख्य बानर ऋक्षपति बलधाम ॥ सेतु पथतें सिन्धु नाघो बानर न्ह बलअयेन । पार आए सिन्धुके जहँ राम कीन्हो सैन ॥ तहां पार समुद्रके करि बास राजिव नैन । रत्न भूषण देय कीन्ही बिदा बानर सैन ॥ गए बानर ऋक्ष जब तब सहित कपिपति राम । गए किष्किन्धा पुरीकों फेरि आनदधाम ॥ सह विभीषण चढे पुष्पक जानपै रघुबीर । जनक जाकों ते देखावत बिपिनि अति गँभीर ॥ जाय किष्किन्धापुरीमे राम सहित बिबेक । कृत कर्म अङ्गदको कियो युवराजकों अभिषेक ॥ तिन्हे सह सौमित्रि पुष्पक पै चढे श्रीराम । गगण पथसो चलि अयोध्या पुरीकों सुखधाम॥जायके तह भरतपै हनुमानकों पठवाय।तास इङ्गित जानिबेको कुशल प्रश्न सहाय ॥ फेरि आए हनूमत तब गए नन्दि ग्राम । चीरावलीं तह लखो भरतहि धरमकैसो धाम ॥ करत पूजन पादुकाको भस्म भूषित अङ्ग । जटाधर शत्रुघ्न सह बिद बेद बिप्रन्ह सङ्ग ॥ राम लक्ष्मणसों मिले चलि भरत सानुज पाय । गुरु बशिष्ट समेत आनद भरेदृग उमगाय ॥ राम सीता सहित लक्ष्मणको चितै कृत कार्य्य । न्याससो सो राज्यसों ल्यो भरतहै अति आर्य्य॥ अवण लहि नक्षत्र उत्तम योग तिथि शुभ बार । रामको अभिषेक कीन्हो मुनि बशिष्ट उदार ॥ राम लहि अभिषेक कपिपति पास बोले बैन । जाऊ अपने राज्यकों सह लङ्क पति बलअयेन ॥ तिन्हे बिधिवत पूजिकै मणि बसनसो श्रीराम । बिदा कीन्हो भरे लोचन गए ते निजधाम । धनेशकों सो बिमान दीन्हो महत पुष्पक नाम । अश्वमेध सु किए दश तब गोमती तट राम ॥ ***\

सो किम शोच करै गँभीर ॥ एहि सहायसों सुर संग्राम । जीति सकत हौं नृप बलधाम ॥ एहि सहायसों तुम नृपधर्म । शत्रु जीतिऊ करऊ न भर्म ॥ सैंधव भूप मत्तबल जौन । तब भ्रातन्ह कीन्हो बस तौन ॥ फेरि द्रौपदी हि ल्याये भूप । सो देखो तुम कर्म अनूप ॥ लहि सहाय कपि दल श्रीराम । जीतो दशग्रीव बलधाम ॥ ताते यह बिचारि नृपधर्म । तुम्हैं शोच कीबो नहिँ पर्म ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ मार्कण्डेयके सुनि बैन । समाधान लहि नृप मतिऐन ॥ लगे कहन मार्कण्डे पास । ऐसे वचन भूप मतिराश ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ शोच आपनो नहि सह भ्रात । राज्य हरणको शोच न तात ॥ धूर्तन्ह दयो कष्ट जो मोहि । कृष्णै तारो तातें जोहि ॥ पतिव्रता कोउ ऐसी और । देखी सुनी सो कऊ मुनिभोर ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ सुनऊ कुलस्त्रिनको सुप्रभाव । तुमसो कहत भूप युत चाव ॥ सावित्री हुत पायो जौन । धर्म पतिव्रत बरणत तौन ॥ मद्रदेशपति भूप सधर्म । पालक प्रजा सत्यव्रत पर्म ॥ नाम अश्वपति ताकों भूप ॥ बीति गएँ तारुण्य अनूप ॥ प्रजाहेतु करि भूप बिचार । धरो नेम व्रत उग्र उदार ॥ सावित्रीको राधन भूप । लगो यथाबिधि करण अनूप ॥ अष्टादश बीते जब वर्ष । सावित्री भइ प्रगट सहर्ष ॥ अग्निहोत्रतें प्रगटी भूप । सावित्री धरि उत्तमरूप ॥ कहे भूपसों ऐसे बैन । सावित्री अति आनद ऐन ॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥ ब्रह्मचर्य्य दम नियम तुम्हार । भक्ति देखि निष्कपट उदार ॥ हम प्रसन्न बर माँगऊ तौन । भूप तुम्हैं है वांछित जौन ॥ * ॥ अश्वपतिरुवाच ॥ * ॥ प्रजाहेतु मम यह व्रत सत्य । देऊ बंशकर बऊल अपत्य ॥ है सन्तान धर्मको ऐन । द्विजन्ह कहो हमसों यह बैन ॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥ पुत्रार्थ जानि तव मानसकर्म । हम बिधिसो बूझो हो मर्म ॥ कन्या भरी तेज अतिरूप । क्षिप्र होय गी तुमको भूप ॥ आगे कहऊ कछू मति मोहि । बिधि बिरचित हम दीन्हो तोहि ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ बचन कहो सावित्री जौन । अङ्गीकार कियो नृप तौन ॥ भए प्रसन्न अश्वपति भूप । जानि सुकन्या प्राप्ति अनूप ॥ सावित्रि हि लखि अन्तरध्यान । भूप स्वपुरको कियो पयान ॥ ज्येष्ठा पत्नी नृपको जौन । भई सगर्भा महिषी तौन ॥ शुक्लपक्षके इन्दु समान । बढो गर्भसों अति सुखदान ॥ प्राप्त काल जब भयो सुपर्म । भई कन्यका दायक शर्म ॥ जातकर्म सब कियो अनूप । करि सावित्री पूजन भूप ॥ बिप्रन्ह सहित भूप अभिराम । तास कियो सावित्री नाम ॥ श्रीसम धरी बाढी सो रूप । यौवन प्राप्त भई सो भूप ॥ तास देखि कै रूप अखर्व । सुरकन्या सम भाषत सर्व ॥ ताहि देखि कै तेजसधाम । काहू बरी न भूप ललाम ॥ तेहि करि बिधिवत स्नान सुधर्म । देव द्विजन्हकों पूजो पर्म ॥ देवदत्त लहि कै सो माल । पितुपद वन्दे जाय बिशाल ॥ सुरप्रसादसों माल अनूप । बिदित पितासों कीन्हों भूप ॥ साञ्जलि जाय पिताके पास । बैठी सावित्री छबिराश ॥ यौवनस्थ ताकों लखि भूप । सुता देवकन्या सम रूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बर कोऊ नहिं मागत याहि। दुखित भयो नृप मति अवगाहि ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ दान काल तब सुता अनूप। मोसों कोउ न मागत भूप ॥ ढूँढऊ बर तुम महिप समान। गुणगण भरो स्वरूप महान ॥ तोको हम गुणपूरण जोहि। विधिवत करै प्रदान सु तोहि ॥ कहत वेदविद् विधि बर जौंन। हे पुत्री हम भाषत तौंन ॥ पिता अदाता वाच्य प्रमान। मिलै न बर जब सुता समान ॥ यह सुनि कै मम बचन बिचारि। तुम पति ढूढऊ सम निरधारि ॥ पितावचन सावित्री मानि। चली हेमरथ चढि सुखदानि ॥ राजऋषिन्हके तपबन जौंन। तहां कियो सावित्री गान ॥ राजर्षि मान्य जे बृद्ध महांन। तिनके बन्दि चरण महान ॥ क्रमतें लखो तीर्थ बन भूप। पुर पट्टन सब लखे अनूप ॥ तहाँ आइ सावीत्री पर्म। बृद्ध सचिव सँग लिये सुधर्म ॥ तहँ तहँ दिए द्विजनको दान। लहि मनमे बर आपु समान ॥ भूप मद्रपति नारद सङ्ग। पाय कहत कछु कथा प्रसङ्ग ॥ बैठे सभामाँह यह भूप। फिरि बन तीरथ सकल अनूप ॥ देखि पिताकों नारद साथ। धरे दुऊनके पद पर माथ ॥ तहँ आई सावित्रि हि देखि। मुनि नृपसों किय प्रश्न विशेखि ॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ सुता गई ही कहँ तब भूप। आइ कहाते यह अति रूप ॥ कोनहेत यह युवती बाम। पतिकों देत नहीं अभिराम ॥ * ॥ अश्वपतिरुवाच ॥ * ॥ जेहि कारजकों याकों नाथ। हम पठई ही मंत्रिन्ह साथ ॥ तौन कहत सुनिए तपधाम। इच्छित बर यह बरै ललाम ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ पिता कहो मुनि बूझत जौंन। सह बिस्तर कछु दुहिता तौन ॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥ साल्वबंशमे क्षत्री भूप। द्युमत्सेन भो ख्यात अनूप ॥ कछुवय गए अन्ध भो तौंन। बालक रहो पुत्रबल भौन ॥ रहे निकट जे बैरी भूप। हरो राज्य तिन तास अनूप ॥ नृप सबाल सुत बनिता साथ। बनमे बसे जाय मुनिनाथ ॥ महा रण्यमे सुतप महांन। करण लगे सो भूप सुजान ॥ बर्धित भयो भूपसुत तौंन। सत्यबान मम सम छबि भौंन ॥ ताहि मानसिक हम भर्त्तार। कियो जानि गुण भरो उदार ॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ सहत कियो सावित्री कर्म। बरो भूपसुत गुणमय पर्म ॥ माता पिता जास मतिऐन। कबहु कहत न मिथ्या बैन ॥ सत्यवाक ताको सब नाम। कहत बिप्र जे मतिके धाम ॥ पुत्र अश्वप्रिय नृपको जौंन। मृन्मय अर्चि बनावै तौंन ॥ कहैं अश्वप्रिय ताको नाम। सुमति देखि कृत तास ललाम ॥ ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ सत्यबान तेजस्वी सूर। पितृभक्त मतिमय बलपूर ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ तौन बृहस्पतिसो मतिमान। तेजस्वी सम सूर महान ॥ इन्द्र समान महाबलभौन। क्षमी भूमि सम नृपसुत तौन ॥ * ॥ अश्वपतिरुवाच ॥ * ॥ भरो सर्वगुण सो सुत भूप। सत्यादिक जे कहे अनूप ॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ सांकृत रन्तिदेव सम तौंन। दाता सत्यबाक मतिभौन ॥ औशीनर शिबि यथा ययाति। तथा उदार सोम सम काँति ॥ आश्विनेय सम रूप उदार। द्युमत्सेन नृपको सुकुमार ॥ * ॥ अश्वपतिरुवाच ॥ * ॥ कहे सर्वगुण तामे अतिमान। सो नाशक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

गुण सर्व महान ॥ कोऊ ताहि न शकत मिटाय। सो हम तुमको देत बताय ॥ एकबर्षमें मरि है तौन। औरसि आइ कै यमके भौंन ॥*॥ राजोवाच॥*॥ हे सावित्री सुनु मम बैन। और वरऊ बर आयुषऐन॥ एकबर्षमें यमपुर गौंन। करि है सो नृपसुत गुणभौंन ॥ *॥ सावित्युवाच ॥* एकवार तरु गिरत पहार। कन्यादान एकही बार ॥ एकहिँ वार वसुको दान। कहत सकल विदनीति विधान॥ दीर्घायु कै अल्पायुष तौंन। कै निर्गुण कै गुणगणभौंन ॥ एकवार हम जेहि भर्तार। वरो मानसिक जानि उदार॥ फेरि कहो हम तुमसों जौंन। ताहि तजै कैसें मतिभौंन॥ ॥ *॥ नारदउवाच॥ *॥ भूपसुता तव ध्रुव मतिमान। यह न धर्मपथ तजी महांन॥ औरन यह पति बरि है भूप। देऊ ताहि यह सुता अनूप॥ मानि बचन तव अविचल पर्म। सोई करि है मुनि सह धर्म॥ *॥ नारदउवाच॥*॥ अविघ्न होय तव सुता प्रदान। सावित्री पावै कल्याण॥ हम तव भद्र साधि है भूप। कन्यादान करऊ अनुरूप॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच॥ *॥ यह कहि कै नारद तपभौंन। उठि कै कियो गगणकों गौंन॥ राजा कन्यादान विचार। करि कीन्हो सब साज उदार॥ सङ्ग पुरोहित द्विजवर बृद्ध। ले भूपति शुभ सुदिन समृद्ध॥ गये सङ्ग ले सुता अनूप। द्युमत्सेनके आश्रम भूप॥ प्यादे पाय द्विजनको साथ। गए अश्वपति नृप कुरुनाथ॥ देखो द्युमत्सेनको भूप। वृक्षाश्रित तप पुञ्ज स्वरूप॥ कुशासनाश्रित लोचन हीन। पूजन कियो तास विधि पीन॥ द्युमत्सेनकों पूजि ललाम। कहो अश्वपति अपनो नाम॥ अर्घ्यपाद्य दै आसन पर्म। द्युमत्सेन बोले सह शर्म॥ कहऊ आगमन कारण जौंन। भूप अश्वपति सतमति भौंन ॥ सत्यवन्त जानो नृप तौंन। कहो अश्वपति कारण जौन॥ *॥ अश्वपतिरुवाच॥ *॥ मम कन्या सावित्रीनाम। द्युमत्सेन सबगुणको धाम॥ सो स्वधर्म सह हे धर्मज्ञ। *॥ द्युमत्सेन उवाच॥*॥ हम च्युतराज्य वसत बन भूप। करत तपस्या धरि मुनिरूप॥ सुता न तो बनबास समान। सहि है नहि बनक्लेश महान॥ ॥ अश्वपतिरुवाच॥उतपत्ति विनाशक है सुख जौंन। हम सह सुता जानि पथ तौंन॥ हमसों यह कहिए नहि भूप। हम आए धरि निश्चय रूप॥ प्रणत हमारि न आशाभङ्ग। कीजै आपु सुहृदता सङ्ग॥ हमको तुम तुमको हम योग्य। मम दुहिता करु स्नुषा मनोज्ञ॥ द्युमत्सेनउवाच॥ हम तुमसो चाहो सम्बन्ध। हम तव भए राज्यहत अन्ध॥ अभिप्राय मम बांछित जौंन। पूरण कियो आय तुम तौंन॥ आश्रमवासी द्विजन बोलाय। दइ व्याहि कन्या सुखदाय॥ भूप अश्वपति कन्यादान। करि दै दायज यथा विधान॥ गये भूप निजभौंन सधर्म। सत्यवान सहि भार्य्या पर्म॥ सावित्री भद्र प्रमुदित भूप। मनबांछित पति पाय अनूप॥ गए अश्वपति जब निज धाम। तजि तब भूषण बसन ललाम॥ सावित्री तब पहिरे चीर। पटक खाय रँगसों गभीर॥ सुश्रूषण करि यथा बिधान। काम कलाते अति सुखदान॥सासु ससुरको पतिकों पर्म। तेहि प्रसन्न कीन्हो सह धर्म॥ कहि कै बचन परमप्रिय पर्म। किय सावित्री पतिहि सशर्म॥ ऐसे आश्रममाह बिशाल।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

बास करत कछु बीते काल ॥ रहत सावित्री दुःखित पूरि । नारदको सो बचन बिसूरि ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ बऊत काल बीतो जब भूप । आयो सो वहकाल कुरूप ॥ सत्यवानको जामे मर्ण । सावित्री करि मनमे स्मर्ण ॥ बाकी चारि रहो दिन जानि । सावित्री मनमे अनुमानि ॥ धरो त्रिरात्र महाव्रत जौंन । द्युमत्सेन सुनि अतिव्रत तौंन ॥ * ॥ द्युमत्सेनउवाच ॥ * ॥ कहो जाय सावित्री पास । धरो तीव्रव्रत तुम मतिराश ॥ तीनिदिवस तुम बिना अहार । किम रहि है तन अतिसुकुमार ॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥ चिन्ता करऊ न तात उदार । हम सुखसों करि है व्रतपार ॥ * ॥ द्युमत्सेनउवाच ॥ * ॥ कहि न शकत हम व्रतको त्याग । पार होय व्रत तब बडभाग ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ द्युमत्सेन इमि कहि गे भूप । सावित्री भई जड स्वरूप ॥ भोर मरैगो पति यह जानि । मद्रा भई सो निशि दखदानि ॥ गई निशा सो प्रगटो भोर । पति नाशक दिन जानो घोर ॥ पूर्वाह्निक करि कीन्हो होम । उदै होत रवि तेजस तोम ॥ ससुर सासुजे द्विज तपवृद्ध । जाय प्रणाम तिन्है करि शुद्ध ॥ साञ्जलि तिन लखि कै अभिराम । सौभाग्या शिष दियो ललाम ॥ अवैधव्य सु आशिष पाय । सावित्री भई मुदित सुभाय ॥ एवमस्तु सावित्री बैन । कहो सुनिन सोहे लहि चैन ॥ लखति काल सावित्री तौंन ॥ पतिनाशक आवै गो जौंन ॥ सावित्रीसो बोले बैन । ताके सासु ससुर भरिचैन ॥ बऊ करऊ पारण व्रतअन्त । भरे कृपासों पाय एकान्त ॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥ संध्या समै पाय कै अल्प । मम पारणको है सङ्कल्प ॥ ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ तब हीं धरि कै कन्ध कुठार । सत्यवान बन चले उदार ॥ तब सावित्री बोली बैन । हमहू सङ्ग चलि है छबिऐन ॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥ कबहूँ तुम बनचली न बाल । बनपन्था है कठिन बिशाल ॥ करि उपवास भई तुम श्याम । पदते चरि न शकौगी बाम ॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥ नहिँ उपासते हम बलहीन । बारण करऊ नहीं छबिपीन ॥ ॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥ चलिबो तुम्है नियत छबिऐन । लैऊ तातआज्ञाको बैन ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ वन्दि ससुरको सासु हि जाय । सावित्री बोली सुखदाय ॥ फलाहार आननके हेत । पुत्र राबरो रूप निकेत ॥ बनको जात कहऊ तुम नाथ । हमहूँ गयो चहति तेहि साथ ॥ असह बिरह है ताको भूप । बारि शकति नहिँ ताहि अनूप ॥ जात सो अग्निहोत्रके अर्थ । तास निवारण है न समर्थ ॥ कछू ऊन गो सञ्चत एक । आश्रम बाहेर भई न नेक ॥ फुल्ल बिपिनि देखनकी चाह । मोहि देऊ आज्ञा नरनाह ॥ * ॥ द्युमत्सेनउवाच ॥ * ॥ पितादक्ष तुम बधू अनूप । जबसो मोहि मिली शुभरूप ॥ कछु न कहो अभिलाषित मोहि । देत सु आज्ञा तातैं तोहि ॥ जाऊ सुपति सँग बनकों पर्म । कुसुमित बन देखऊ सह धर्म ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ सासु ससुरसो आज्ञा पाय । चली स्वपति सँग सो सुखदाय ॥ कुसुमित बिपिनि लखत रमणीय । मृग बिहङ्ग सबलित कमनीय ॥ नदी सुनग लखि कै अभिराम । लखऊ कहो नृपसुत छबिधाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

भक्षाकों सावित्री देखि । मृतक समान चित्रसे लेखि ॥ सत्यवानके पीछें जाति । चिन्ता प्रबल न हिए समाति ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥*॥ सत्यवान सावित्री साथ । लेय यथेच्छित फल कुल नाथ ॥ सत्यवान एक काठ कठोर । तोरण लगे भयो श्रम घोर ॥ खेद बढो शिरशूल महांन । बिकल गए जहँ प्रिया सुजान॥सावित्रीसो ऐसे बैन । सत्यवान बोले हतचैन ॥ सत्यबानउवाच॥ भा शिर शूल महत श्रम पाय । भयो बेदना पूरित काय ॥ बिकल हृदय धरि सकत न धीर । शीश मथत सो शूल गभीर ॥ कियो चहत हम क्षितिपर सैन । शक्ति खडे रहिबेकी है न ॥ यह सुनिकै सावीत्री धाय । सत्यवानकों पकरो जाय ॥ अङ्कमाहँ पति मस्तक धारि । व्यथित भई सुनि बचन बिचारि॥क्षितिपर बैठी व्है दुखभौंन । लखति काल पति नाशक जौंन ॥ कछु क्षणमें एक पुरुष महांन । रक्त बसन सम तेजसमान ॥ बाधें चिकुर अरुण अति अक्ष । श्यामअङ्ग सो भयो प्रतक्ष ॥ लए पाश अति कारक त्रास । सत्यवानके ठाढो पास ॥ देखत सत्यवानकी ओर । कीन्हे कुटिलनयन अतिघोर ॥ सावित्री लखिकै करुनाहँ । उठी राखि पति शिर क्षितिमाहँ ॥ कम्पित कहन लगी इमि बैन । देखि ताहि अति भरी अचैन ॥ * ॥ सावित्र्युवाच॥ * ॥ जानि परत तुम दैवत मोहि । अद्भुत रूप आपुको जोहि । को तुम करिबें कारज कौंन । कहिए सत्यबचन प्रभु तौंन ॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥ तुम सावीत्री पतिव्रतधाम । तप तेजससों भरी ललाम ॥ याते तुमसों कहियत बैन । हमकों यम जानऊ मतिअैन ॥ सत्यवान यह तेा भर्तार । क्षीणायुष भो राजकुमार ॥ बाँधि पाससों याकों आर्य्य । लेजै है यह करिबें कार्य्य ॥ सुनत रहे तब दूत महांन । मनुज पाप हारक भगवांन ॥ तुमही आपु कियो इत गौन । धर्मराज सो कारण कौन ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ **********

सावित्रीके सुनि बचन धर्मराज मतिमान । अपने आगमको लगे कारण कहन महान ॥
सत्यवान यह धर्मयुत रूपवान गुणमाँन । मम दूतनतें लेनकों जानो यह न समान ॥
सत्यवानके देहतें पास बद्ध नररूप । काटि अँगुष्ट प्रमाण तब लीन्हो अन्तक भूप ॥
आशा रहित निश्वास तब भयो भयानक तौन।ताहि बांधि ले यम कियें दक्षिणदिशिको गौन॥
सावित्री यमके चली अनु दुख पूरित माम । भरी तपस्या सिद्धि सो महा पतिव्रतधाम ॥

॥ * यमउवाच ॥ * ॥

सावित्री फिरिजाऊ तुम अनृण कियो पति धर्म । प्रेतकर्म पतिकों करऊ यथा बिधान सधर्म॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

जहँ भर्त्ता मम जायगो मोहि गमन तहँ धर्म । धर्मराज पतिव्रतनकों यहै सनातन धर्म ॥
तप व्रततें गुरुभक्तिते पतिव्रततें धर्म । पतिहत गति मम होति नहिँ तवँ प्रसादते धर्म ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

मैत्री नियमित सप्त पद कहत सकल मतिमान। आगे करि सो मित्रता कहति सो सुनऊ सुजान॥
आत्मज्ञानी धर्म रत बुध बनवासी जैंन। भाषत धर्म प्रधान करि साधु सनातन तैंन॥
सत मत एक सुधर्म ते शत पथ मिलत सुपर्म। करत न वाँछित और पथ साधु छोडिकै धर्म॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

तुष्ट भए सुनि तव गिरा सावित्री अभिराम। पति जीवन बिन और वर मागु यथा मनकाम॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

अन्ध ससुर बन बसत मम भ्रष्ट ओजते जैंन। चक्षु सहित बलवान व्है लहै राज्यकों तैंन॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

दियो तुम्हे हम तैान बर जो तुम मागेा मोहि। पथश्रम लहिहऊँ जाऊ फिरि कहत तुमहिँ छम जोहि॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

पति समीप नहिँ होत श्रम गति मम जहँ भर्त्तार। जहँ ममपतिको राखिहेा तहँ मम सुगति अबार॥
सतसङ्गति एक बार लहि पावत मैत्री पर्म। अफल होत सतसङ्ग नहि सुनियत राजाधर्म॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

मन भावन बुध जनप्रिय कहे जो तुम प्रिय बैन। सत्यवान जीवन बिना मागऊ वर शतअैन॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

तुम निग्रह करिकै सृजत देखि यथा कृत कर्म। कर्म करत निःकाम जे ते तव बसत सुधर्म॥
भक्ति हीन मनुजन्ह भरो है एहि बिधिको लोक। करत अभिचऊ पैं दया शत शरणागत तोक॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

यथा पिपासितकों शलिल तथा कहे तुम बैन। सत्यवान जीवित बिना वर मागऊ शतअैन॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

प्रजा रहित मेरो पिता शत सुत लहे सधर्म। हेा प्रसन्न तेा देऊ बर यह मोको अति पर्म॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

पुत्र एकशतबंशकर बल तेजसके धाम। औरस जनक सु तव लहै सावित्री अभिराम॥
यह वर लै फिरि जाऊ तुम है पन्था अति भूरि।

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

पति ढिग पथ सब निकट मम मनधावत अति दूरि॥
जगदात्मा रबिके तनय भरें प्रताप महान। तव सधर्म शासन लहे बिचरत प्रजा समान॥
फल अलभ्य प्राणी लहत सत सङ्गम सेां सर्ब। यातें सतसंगति करत जनपद लाभ अखर्ब॥
सेा हरतें सब भूतकों होत महत बिश्वाश। याते करत बिश्वाश बस ते जनम मतिराश॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

नादृश सुने न और सो कहे बचन तुम जौन । पति जीवित विनु मागु वर सावित्री मतिभौन ॥

॥ * ॥ सावित्युवाच ॥ * ॥

मोमे औरस सत्यवानतें पुत्र एकशत पर्म । होंहि महाबल तेजमय देऊ सो वर वर धर्म ॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

पुत्र होहिंगे एकशत भरे महाबल वीर । सावित्री औरस तुम्हे व्हैहै अम न गभीर ॥
सन्त होत सतवृति सब कहत करत सो सिद्ध । होत अफल सतसङ्ग नहिं भयहर मोदद चद्ध ॥
सन्त सत्य ते रवि लहत धरत धराकों धीर । जगजन करता सन्तहै भयहर सत गँभीर ॥
आर्य्य युक्त एहि कार्यकों जानि निरन्तर पर्म। प्रत्युपकार न चाहिकै सन्त परार्थ सधर्म ॥
सत प्रसाद नहिं मोघ हैं सहित अर्थ सनमान । याते सज्जन होतहै त्राता सुनऊ सुजान ॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

ज्यों ज्यों भाषति बचनतुम सहितधर्म सुख मूल । त्यों त्यों बाढति भक्ति मम मागऊ बर अनुकूल ॥

॥ * ॥ सावित्युवाच ॥ * ॥

तुमतें चाहति पुत्र नहिं चेत्रज लहि पति अन्य । जीवितको व्यवसाय नहि मोहि विन भर्ताधन्य॥
दियो मोहि शत पुत्रको बर हरि भर्त्ता पर्म । सत्यवान जीवै सो बर दीजैं सत्य सधर्म ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

सत्यवानको पास ते मोचन करि लहि चैन । धर्मराज तब यो कहो सावित्री सों बैन ॥
यह भामिनि भर्तार तो मोते मुक्त ललाम । वर्ष चारिशत जिऐगो तो सगँ लहि मनकाम ॥
व्है अरोग करि यज्ञ बऊ व्है है जगत प्रसिद्ध । जनमावै गो पुत्रशत तोमे सुमति समृद्ध ॥
ते सब राजा होहिगे बंशकार अवदात । बंश तिहारे नाम सह भू पर व्है है ख्यात ॥
जननीमे तव जनक तो शत सुत लही प्रशंस । मालवमे मालव्यते व्है है करता बंस ॥
भ्राताते तव होंहिगे राजा त्रिदश समान । सावित्रीकों करि बिदा ए बर दे सुखदान ॥
सावित्री पति प्राण सह गई तहा फिरि भूप । बैठो क्षितिपर अङ्कमे धरि पति शिर शव रूप ॥
सत्यवान सह प्राणव्है सावित्री सो बैन । खोलि पलक लागे कहन भरे प्रेम सह चैन ॥

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

मोहि जगायो क्यों नहीं सोयो सो बऊकाल। श्याम पुरुष सो कह गयो जेहिं मोहि गहो कराल॥
चिर सोए मम अङ्कमे तुम अम पाय महांन । गयो सो अपने लोकको पुरुष शमन भगवान ॥
निद्रा अमसों रहित जो भए होऊ अभिराम । उठऊ शक्ति जो होयतो भई निशा तमधाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

सत्यवान सुख सुप्त सम लहि संज्ञा उठि भूप । दिशा बिपिनि लखिकै निशा बोले बचन अनूप ॥
तुम सगँ हम फल मूल लै चले स्वआश्रम ओर । तोरत काष्ठ बढी व्यथा मस्तकमे अति घोर ॥
बिकल होय तव अङ्कमे हम सोंए हत भ्रम । तब बाढो गत मन भयो रहो व्यथित अति मर्म ॥
तव देखो हम पुरुष सो महा घोर अति श्याम । तुम जानति जौं ताहि तौ कञ्ज प्यारी छबिधाम ॥
ताहि लखो हम स्वप्नमे कैसो सत्य महान । सावित्री तुम कहञ्ज सो बीतति रजनि सुजान ॥
भोर कहैगी चरित सब उठञ्ज शीघ्र छबिधाम । काढत रजनीं पिता पद चलि देखञ्ज अभिराम ॥
लगे निशाचर फिरन ते करत क्रूर रव घोर । शिवा सब्दको करतिहै दक्षिण पश्चिम वोर ॥
इहा रहत अब कँपतहै मेरो मन सुखदान ।

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

घन बनमे पथ मिली नहिँ बाढो तिमिर महान ॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

दग्ध बिपिनिमे ज्वलित यह देखि परतहै दारु । ल्याय ताहि इत अग्निको सञ्चय कीजै चारु ॥
चलि न सकत तुम जौं नहो देखि परै पथ पम । तौ बसिअै इत भोर चलि लखिहैं पिता सधर्म ॥

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

मस्तक पीडा मिटि गई स्वस्थ भऐ सब गात । देखो चाहत जननि सह धर्मधुरन्धर तात ॥
पूर्व नही कबहू भयो श्रम हमको सु सुजान । दुख लहिहै जननी जनक बिनु मोहि गऐ महान ॥
दिनहूमे मोहि गए कञ्ज दुखित होतहै तात । निशिमे हम तुमको इहा रहे महत उतपात ॥
कौन भाँतिते होहिगे दुखसो भरे महान । बिना मोहि देखे बढै चिन्ता महति अमान ॥
पूर्व कहो हमसो पिता तुम जीवन आधार । बिना तुम्है देखे नही जीवन मोहिँ उदार ॥
वृद्ध पिता माता तिन्हैं हमही यष्टि समान । निशिमे बिनु देखें हमै व्है हैं बिकल महान ॥
हमै प्राण संशय भयो परी बिपति हम मर्म । बिना पिता मातहि लखे जीवित हमै न पर्म ॥
अन्ध पिता बिन लखें मो महत बिकलता पाय । बूझत व्है है द्विजनसो आश्रम आश्रम जाय ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

ऐसे बहुत बिलाप करि सत्यवान सतिमान । समुझि पिता मातहि लगो रोदन करन सुजान ॥
सावित्री यहि भांति सों पतिको देखि सधर्म । लगो कहन एहि भांति सों बचन सुनीति सुधर्म ॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

सत्य पतिव्रत जौं न मम सत्य होय सुखदान । स्वसुर सासु मम तौ नहीं तजै निशामे प्राण ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

देखो चाहत जनकको सहित जननि अभिराम।मिलिहै मेरे भाग्य वश धर्मके तीन धाम॥
चहत जिवायो मोहि जौ धरि मति धीरज धर्म । सावित्री तौ मोहि सह चलु आश्रमका पर्म ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

सावित्री दृढ बांधिकै केश पास अतिकाय । सत्यवानकों पकरिकै ठाढो कियो उठाय ॥
सत्यवान उठि पाणिसों पोछि अङ्ग अभिराम । चऊदिशि लखि फलसों भरो देखो पात्र ललाम ॥
भोर जायगो पात्र फल सावित्री यो भाखि । परशु लियो फल पात्रसो दियो बिटप पर राखि॥
बामकन्ध पर पति भुजा दक्ष बाऊ सो नाह । गहें चली गजगामिनी आश्रमको जिमि छांह ॥

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

नित्य जननते बिदितहै हमको पन्था बाम । वृक्षान्तरमे परतिहै लखि ज्योत्स्ना अभिराम ॥
आए सुन्दरि भोर हम फल लीबे जेहिँ अैंन । सावधान ताहीं चलौ पथ्वै दायक चैंन ॥
बन पलासकें दोय पथ तजि दक्षिण पथ जौंन । उत्तर पथ गहि चलऊ हम भए सबल छबिभौंन॥
माता पितहि बिलोकिबेको अति इच्छावान । आश्रमको आतुर चले जायापति मतिमान ॥
एहि अन्तरमे दृष्टि लहि द्युमत्सेन वर भूप । व्है प्रसन्न देखन लगे यथा चराचर रूप ॥
सैव्या भार्य्या सह गए आश्रम वासिन्ह पास । पुत्रहेतु बिलपन लगे भरे महा दुख त्रास ॥
आश्रम सर सरिता बिपिनि सह भार्य्या नृप तौंन। निशिमे ढूढत चक्षुहिशि भए बिकल करि गौन॥
बन जीवनको चरण धुनि सुनिकै करि अनुमान । पुत्रबधू आए कहत सैव्यासो सुखदान ॥
कुश कण्टकसों बिद्ध लखि नृपको बिकल सभार्य्य। आश्रमकों गहि ले गऐ बिप्र सकरुणा आर्य्य॥
भार्य्या सह नृपको कियो आश्वासन अभिराम । पूर्व वृत्त कहिकै तहां रहे जे मुनि तपधाम ॥
बाल चरित कहि पुत्रको दुखसों भरे अमाप । द्युमत्सेन भार्य्यां सहित लागे करण बिलाप ॥
भरद्वाज गौतम सुमुनि धौम्य सहित गालभ्य । आपस्तम्बादिक रहे तहां जे मुनि द्विज सभ्य ॥
द्युमनत्सेनसो तिन कहो जैसे बचन प्रमान । सावित्री लक्षण भरी प्रद सौभाग्य महांन ॥
शोच करऊ मति पुत्र तव सह भार्य्या अभिराम । भरो मोद कछु कालमै आवत अपने धाम ॥
जैसे मुनि सब मुनिनके बचन सुमानि प्रमान । स्वस्थ भऐ सह भारया द्युमत्सेन मतिमान ॥
इतनेमे आए तहा सह सावित्री पर्म । बन्दे जननी जनक पद सत्यवान सह धर्म ॥

॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥

पुत्र सहित हम लखि तुम्हे देत सु आशिरबाद। पुत्र बधू तव सृष्टिके व्है है बुद्धि अबाद॥
अग्नि बार बैठे तहा पुत्र बधू सह भूप। एक ओर मुनिगण सकल आनद भरे अनूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

सत्यवानसों मुनिन तब बूझो बन बृत्तान्त। कारण कहो बिलम्बको हे नृप सुत अतिकान्त॥
दुखित किया माता पितहि रात्रि बिताय महान। कहऊ तौन बृत्तान्त सब सत्यवान मतिमान॥

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

दारु हरत बेदन बढ़ी मम शिरमे अतिमान। मूर्छित व्है सोए तहां हम बऊकाल सुजान॥

॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥

द्युमत्सेनकों प्राप्त चख अकस्माद भे जान। सावित्री ताको कहऊ तुम सब कारण तौन॥

॥ मार्कण्डेयउवाच ॥

सावित्री मुनिसों कहो पूर्व सकल बृत्तान्त। नारद बचन प्रमाण दे यम सम्बाद नितान्त॥
कियो प्रसंशित ऋषिन्ह सुनि सावित्रीके बैन। दीन्हो कुल उद्धार तुम कियो महा मतिअैन॥
निशागएँ करिकै मुनिन्ह पूर्वाह्निक कृत सर्ब। सावित्री कृत नृपतिसों फिरि फिरि कहो अखर्ब॥
एतनेमे आऐ तहा द्युमत्सेन नृप पास। साल्वदेशते प्रजा बऊ भरे मोद मतिरास॥
देखि सचख नृपको भरे ते अद्भुत अतिमान। द्युमत्सेनके बन्दि पद आनद भरे महान॥
कहन लगे चलिकै करो भूप आपनो राज। हने अमात्यन्ह रावरे बैरिन्हकों ससमाज॥
चतुरङ्गिनि आई लखो सेना प्रबल अनूप। सचख अचख राजा सो मम ते एक मत सब भूप॥
यह मत करि पठयो हमै सब सचिवन्ह अभिरामा चढऊ यथोचित जान पर चलऊ आपनेधाम॥
बन्दि चरण मुनिबरन्हके पुत्रबधू सह भूप। लहि आशिष प्रमुदित चले चढि वर जान अनूप॥
गए आपने नगरकों पौरोहित तह आय। कियोभिषेक स्वराजको सह अमात्य सुखदाय॥
पौरोहित युवराजको सबिधि कियो अभिषेक। सत्यवान गुणधामपे मंत्रिन्ह सह सबिबेक॥
बऊतकाल बीते भऐ पुत्र परम अभिराम। सावित्रीके एकशत सर्ब गुणन्हके धाम॥
कछू दौसमे अश्वपति के शतपुत्र उदार। भरे परम गुणसों भए सकल बंश कर्त्तार॥
जैसे माता पिताको सासु खसुरको बंश। सावित्री उद्धार करि जगसे भई प्रसंश॥
सावित्री सम द्रौपदी भरी शील गुणधाम। तुम्है सकल तारो चहति तैसे अति अभिराम॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

जैसे सुनि मुनिके बचन खेदत्याग नृपधर्म। बास कियो भ्रातन्ह सहित काम्यक बनमे पर्म॥
सावित्रीको सुनै गो उपाख्यान यहजौन। आनद अर्थ सो लहैगो दुख न देखिहै तौन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बन पर्वणि सावित्रीउपाख्यानबर्णनोनाम एकोणसप्ततितमोऽध्यायः॥ *

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कहो सोमस धर्मनृपसों इन्द्रको जो बैन । तुम्है जो भय मानसिक हम हरैंगे मतिअैन ॥ धरे कुण्डल कवच जानत कर्णको बलभौन । धर्मनृप नहि कहत काहू पास संशय तौंन ॥ कहऊ मुनि केहि भाँति भयसों हरण किय मघवान । * । वैशम्पायनउवाच । * । सुनऊ मनदै कहतहैं हम तौन रुहित बिधान ॥ भो चयोदशवर्ष नीरे बसत बन नृपधर्म । पाण्डवन्ह हित कर्ण सो तब चहो मागन मर्म ॥ इन्द्रको मत जानि कै रवि स्वप्नमे बनि विप्र । कवच कुण्डल दान वारणकों गए चलि क्षिप्र ॥ कर्णसों बऊभाँतिसों रवि कहो सहित विधान । नहीं मानो कर्ण चाहत सुयश दीन्हेऊ प्रान ॥ रविउवाच ॥ श्रेयसों हत होऊगे अरु मरण व्है है क्षिप्र । इन्द्र आवत कवच कुण्डल मागिबे बनि बिप्र ॥ कर्णउवाच ॥ मागिहै सुरनाथ मोसों कवच कुण्डल खर्व । बिना दीन्हे सुयश मेरो नष्टव्हैहै सर्व ॥ दान व्रतकों त्याग करिबो कहऊ मोहि न भांन । दानसों हम बिमुखव्हैहैं नहीं जबलों प्रान ॥ सुयश बिनसे रहैं का कछु योस देह अनित्य । सुयशतनते जगतमे मर लहत अविचल थित्य ॥ बिमुख जासो होत भिक्षुक बिना पाए दान । मृतक सम ते होत अयशी बिना बिनसे प्रान ॥ शक्र मागे दान मोसों जानि मोहि बदान्य । दान पात्र न और जैसो हमै मिलिहै मान्य ॥ पाण्ड बनको करैं हित ले शक्र कुण्डल वर्म । भानुमान न छोडिहैं हम दानको व्रत पर्म ॥ दान कारण कीर्त्ति को है कीर्त्ति स्वर्ग्द धर्म । दान व्रतको त्याग भानु न योग्य मेरे कर्म । कीर्त्ति ज्यावति पुरुषकों जगमाह जननि समान । करि अकीरति देति जनकों मृतक सम सह प्रान ॥ द्विजनकों दे दान विधि व्रत समरमे तनत्याग । करि लहैंगे स्वर्गकों हम जीति अरि बडभाग ॥ शक्रकों दे दान बाँछित धरें ब्राह्मण रूप । स्वर्गलोक सो लहैंगे बिधि बिहित जौन अनूप ॥ * ॥ सूर्यउवाच ॥ * ॥ करत कर्ण न आपनो हित सहित कुलको जौन । देहको अविरोध कारण चहत जन यश तौन ॥ प्राणको सुविरोध करि जो चहत कीरति बीर । जायगी सो सङ्ग तुम्हरे प्राणके रणधीर ॥ जानिकै हम भक्त तुमकों कहत यो समुझाय । करत रक्षा भक्तकी हम जानि शुचि सुखदाय ॥ देव गुह्य न कहत तुमसों जानिबें नहि शक्र । समय आए जानिहौ तुम हौं हमारे भक्त ॥ द्वेष राखत जिष्णु सो तुम तुम्है तौन समान । सहित कुण्डल तुम्है जीति न सकत सो बलवान ॥ नहीं कुण्डल कवच तातें दीजियो बरबीर । फेरि दीजो इन्द्रको हित पार्थके गम्भीर ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ मोहि जानत भक्त तुम मम इष्टहौ भगवान । कहत मोसों परम हित करि कृपाको अतिमान ॥ कृपा करिकै सुनऊ प्रभु यह प्रणत मेरो बैन । अनृतको भय मोहि दारुण प्राणको भय है न ॥ जीतिहै हम जिष्णुको रणमाह तेजस गौंन । राम हमकों दियो अस्त्र सो बिदित तुमकों तौंन ॥ आपु जानत नाथ व्रत मम सत्य सहित बिधान । इन्द्र भिक्षुक होय मागें देवे मोको प्रान ॥ सूर्यउवाच ॥ देऊ कुण्डल इन्द्रकों तौ सुनऊ कर्ण सुजान । शक्ति मागेऊ शक्र सो अरि दमन जो बलवान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

जिष्णु मागो इन्द्रसों वर तुम्हे वधकर जौन। हरो कुण्डल चहत मनमे राखिकै मत तौन ॥ शक्ति सेकै दीजियो तुम वर्म कुण्डल बीर। शक्र शक्ति अमोघ अरिगण गहन दहन गभीर ॥ * ॥ वैश म्पायन उवाच ॥ * ॥ कर्णसों एहि भाँति रवि कहि भए अन्तरध्यान । ध्याय रविकों कर्ण सम सो कहो भोर सुजान ॥ विहँसि कै रवि कहो तासों तथा सम स्वरूप । कर्ण तवसों शक्ति लीजे यहो मनसे भूप ॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ कहा गुह्य न कहो दिनमणि कर्णसों सविधान। कवच कुण्डल कौन बिधिके लहो कहँ बलवान ॥ कहऊ बिस्तर सहित मुनि हम सुनो चाहत तौन। * । वैशम्पायनउवाच । * । कहतहैं हम तौन तुमसो गुह्य रवि किय जौन ॥ कुन्तिभोज महीपपैं मुनि गए तेजसरूप। कहो मत्सर रहित भोजन देऊ हमकों भूप ॥ कहऊ मन न विकार तुमसह अनुगमे मतिमाम। तौ कछूदिन करैं भोजन बसै तुम्हरे धाम ॥ यथा आए तथा करिहैं भूप खेच्छा गौन। करैं सज्या शयनमे कऊ कछू व्यतिक्रम जौन ॥ कुन्तिभोज सप्रीति मुनिसों कह अैसे वैन। करो सेवा रावरी मम कन्यका मतिअैन ॥ एहि भाँति कहिकै कियो पूजन सुमुनिको तब भूप। प्रथासों कहि दियो सेवन करण तास अनूप ॥ सुताहे ए बिप्र मुनिवर माह तेजसधाम। बिप्र बाँछित देत सेवन करेते अभिराम ॥ नन्दिनी हम सुमति जानत बाल्यपनतें तोहि। भार हम यह धरो तुमपै योग्य सबबिधि जोहि ॥ वृष्णि कुलमे भई तुम शुभलक्षणा अभिराम। पिता तव मोहि दई तुम वसुदेव भगिनी आम ॥ और मेरे प्रजा नहि तुम सुता भूषण बंश। करऊ तातें बिप्र सेवन धर्म धारि प्रसंश ॥ छोडि मत्सरदम्भ मुनिको करऊ सेवन पर्म। बिप्र सेवनसों सुता तुम लहऊगी सब शर्म ॥ कोप कीन्हे ते करैगो बिप्र कुलको नाश । सावधान समेति याते सेइयो मतिराश ॥ ॥ कुन्त्युवाच ॥ नियम सो हम करैंगी निति विप्र सेवन तात। कबऊ कहिहै नही मुनिवर पास मिथ्यावात ॥ विप्रसेवनको हमारो पिता नित्य स्वभाव। अनिश सेवन करैगी तव वचनतें युतचाव ॥ नेहमे तव बसत मुनिको तात अप्रिय जौन। करऊ तुम बिश्वास हमसों होय गो नहि तौन ॥ हित तुम्हारो बिप्रको प्रिय करैंगो हम भूप । छोडि चिन्ता हरऊ मनसे धरे आनद रूप ॥ पूजि है हम द्विजनको पृप कुन्तिभोज उदार। बृद्धि कारण बिप्रकोपें नाशके कर्तार ॥ ब्राम्हणन्ह प्रति कहो सवन तात जैसो पर्म। करैंगी हम तथा मनते दूरि कीजै भर्म ॥ प्रथाके सुनि चवन भूपति लयो हिय सो लाय। कहो तुम सब करऊगी मम बचन सम सुखदाय ॥ बचन सुनिकै प्रथाके नृप भरे आनद चेत। कहो मुनिसों बचन अैसे सौंपि सेवन हेत ॥ राजोबाच ॥ बिप्र मेरी सुता बर्द्धित भई यह सुख साथ करे जौं अपराधकछु तौ क्षमाकीजो नाथ ॥ यथोत्साहस यथा शक्ति सुकरै पूजाजौन। कृपा करि सो ग्रहण कीजो नाथ करुणा भौन ॥ कहो सुमुनि तथास्तु सुनि नृप भरे मोद महांन। गए मुनिको राखि महमे चन्द्रकान्ति समान ॥ अग्नि सन्निधि महा मुनिको दियो आसन पर्म। तौं भोजन वस्तु गिरी प्रथहि सौंपि सधर्म ॥ गए भूपति धामकों तब प्रथा अति मतिमान। छोडि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

आलस कियो सेवन बिप्रको सुखदान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कियो कुन्तीं शुद्ध मनसों विप्रसेवन धर्म। बूझि सायं प्रात कुन्ती पितासां मतिमान। भोजनासन पान दै किय मुनि हिँ तृप्त महान ॥ एकसम्वत बीति गो एहिभाँति सेवत ताहि । कहो अैसें बैन मुनि निष्कपट कुन्तीहि चाहि ॥ मागु कल्याणि सो बर है तुम्हे वांछित जौन । सीमन्तिनी कहे लहऊ जातें सुयश हे छबिभौन ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ कियो सेवन बिप्र हम तब जानि कै तुम तौन। बात सहित प्रसन्न तुम यह परम बर तपभौन ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ जौन हमसों चहति तुम बर सुनऊँ तौ यह बैन। सुरनके आव्हानको यह लेऊ मंत्र सचैन ॥ जेहि देवताको मंत्रतें एहि करौ गी आव्हान। एहि मंत्रतें बश होहि गे तब देव भृत्यसमान ॥ अकाम कै सह काम जाको करऊ गी आव्हान । वैशम्पायनउवाच ॥ टारि कुन्ती शकी नहिँ मुनि बचनकों अतिमान। देय कुन्तीकों महामुनि मंत्रको सो याम। कुन्तिभोज महीपसों एहिभाँति कहि तपधाम ॥ भूप तोषित कियो हमकों सुता तब मनिअैन। भए मुनि दुर्वासा अन्तरध्यान कहि इमि बैन ॥ होय विस्मित कियो पूजन प्रथाको तब भूप । कछुयोस बीतें चहो कुन्तीः लखो मंत्रस्वरूप ॥ भयो रज बिनु काल ताको करत चिन्तन भूप। दैव इच्छाते भई लखि प्रथा लज्जित रूप ॥ स्नान करि सोहर्म्य ऊपर परम शय्यामाहँ। रही बैठी प्रथैं देखो उदित रवि नरनाहँ ॥ लगी देखन भानुकों दे दृष्टि मन अभिराम। आचमन करि बारिसों शुचि होय कै छबिधाम ॥ दिव्यदृष्टि सु भई कुन्ती लखो रविको रूप। कवच कुण्डल धरें अद्भुत दिव्यदर्शन भूप ॥ मानि कौतुक मंत्र पढि किय भानुको आव्हान। सोम्य धरि रवि रूप आए प्रथाढिग सुखदान ॥ मुकुट कुण्डल दिव्य भूषण धरे रवि छबिअैन। कहन कुन्तीसों लगे इमि मधुर मंजुल बैन॥ मंत्रबल वश इहां आए पास तब छबि धाम। कहऊसों हम करैगे तब मान बाञ्छित काम॥ कुन्त्युवाच ॥ जाऊ आए जहांतें तुम तहांकों भगवान । हम कुतूहलतें कियो आव्हान तुमकों भान॥ सूर्य्यउवाच॥ तथा सुन्दरि जाहिँ गे तुम यथा बोलति बैन। देवको आव्हान करि फिरि बिदा योग्य सु है न ॥ सूर्य्य सङ्गमहसु तुमकों पुत्र ह्वै है बीर ॥ धरें कुण्डल कवच अतिबल समर सुयशी धीर॥ करऊ आत्म प्रदान हमकों सुनऊ सुन्दरि बैन। पुत्र मम शङ्कल्प सम तुम लहऊ गी सहचैन ॥ जौ न मेरो कहौ करिहो सुनऊ सुन्दरि क्षिप्र। भस्म करि है शापतें सह तात तुम हिँ सविप्र ॥ तुम्हे शील समान देहै दण्ड सुनऊ अखर्ब। तुम सङ्ग हमको लखत सस्मित शक्र सह सुर सर्ब ॥ पूर्व दीन्ही दृष्टि तुमको दिव्य हम सुख दान। लखत हमकों देवगण जे तिनहि लखऊ सुजान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुरनकों गगणस्थ कुन्ती देखि भानु प्रभाव। कहन रविसों लगी कुन्ती बैन लज्जित राव ॥ जाऊ रवि नहि कन्यकामे योग्य यह अपचार। पिता माता चहत मेरो कियो दान उदार ॥ धर्मलोप न कियो चाहति तौन हम व्रत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

पर्म । मंत्र बलके जानिवेकों कियो हम यह कर्म ॥ बाल्यभाव बिचारि कीजे क्षमा हे भग
वान । सूर्य्यउवाच ॥ जानि बाला करत यातें क्षमा हम सुखदान । रहो तव कन्यत्व अपनो
करऊ हमकों दान ॥ कीर्तिमान सु होहिंगी लहि पुत्र मोहिं समान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
भई सो न समर्थ भानहिं बारिवेको भूप । शापकोभय मानि मनमे पिता सह अतिरूप ॥ भई
लज्जा बिकल कुन्ती कहो रबिके पास ॥ कुंत्यु बाच ॥ * ॥ पिता माता जियत मेरे बन्धुगण मति
राश ॥ तिन्हे जीवत होत है यह बेदबिधिको लोप । सङ्ग तुमसो होय गो सो अबिधिको आरोप ॥
पितादत्त बिना करैं हम तुम्हे अपनो दान । कीर्ति मेरे बंशकी मिटि जाय गो भगवान ॥
देऊ यातें कीर्त्ति आयुष सुयश रबि सह धर्म । * ॥ सूर्य्यउवाच ॥ * । जायगो कन्यत्व नहिं तव
सुयशकी रति पर्म ॥ सङ्ग हमसों करि लहौं गो तथा कन्या भाव । होय गो बरबीर सुत तुम
रहो गी युत चाव ॥ * ॥ कुंत्यु उबाच ॥ * ॥ होय गो जो पुत्र मेरे कबच कुण्डलबान । महा
बल बरबीर ताको कहऊ नाथ निधान ॥ * ॥ सूर्य्यउवाच ॥ * ॥ कवच कुण्डल सहित लेहै जन्मसों
बलवान । * ॥ कुंत्यु बाच ॥ * ॥ होय अैसो पुत्र तो कुरु सङ्ग हमसों भान ॥ * ॥ सूर्य्यउ
बाच ॥ * ॥ अदिति हमको कवच कुण्डल दयो जो अभिराम । देहि गे तब पुत्रकों हम तौल
हे छबिधाम ॥ * ॥ कुंत्यु उबाच ॥ * ॥ होय अैसो पुत्र हमसों रमऊ तो भगवान । * ॥ वैश
म्पायन उबाच ॥ * ॥ प्रथा सँग रबि रमे दे तब पुत्रको बरदान ॥ भई बिव्हल प्रथा रबिके तेजसो
सुकुमारि । मूढसी व्है रही सङ्गम प्रथमको श्रम धारि ॥ * ॥ सूर्य्यउबाच ॥ * ॥ होय गो तव
पुत्र कुन्ती भरो सुबल अनूप । रहऊ गो तुम कन्यकाको धरे सुन्दरि रूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउबाच
होय लज्जित कहो कुन्ती कहत हौ प्रभु जौंन । होय सत्य सो बचन तव तिग्मांशु करुणाभौंन ॥
प्रथै करि रबि गए मोहित देय कन्यारूप । जागि कुन्ती लखो अपनो तथा रूप अनूप ॥ * ॥ वैश
म्पायनउबाच ॥ * ॥ धरो कुन्ती गर्भ रबिसों परम सङ्गम पाय । नहीं जानो गर्भ काहूँ एकधाय
बिहाय ॥ भयो प्रसब सुकाल पाए देवदर्शन रूप । व्याघ्राक्ष बृषभस्कन्ध धारे कवच कुण्डल
भूप ॥ धायसो करि मंत्र धरि सन्दूकमे सुत तौंन । मामसो मढि जाय डारो सरितमे करि गौंन ॥
स्नेहसों तब लगी कुन्ती करण रोदन भूप । आत्मसम्भव पुत्र सरितामाहँ तजत अनूप ॥ अस्म
सरिता माहँ त्यजत सन्दूक कुन्ती बैंन । कहे सो हम कहत सुनिए भूप अति मतिअैन ॥ दिशा
विदिशा भूत दिव्य सु गगण चारी जौंन । करहि पथमे बिघ्न ही तव बिघ्न करता तौंन ॥ पवन पासी
पिता तव जेहिं तोहि दीन्हो मोहि । साध्य बसु आदित्य सुर सब करौं रक्षित तोहि ॥ चौकिहैं
जहँ देखि हैं तोहि कवच कुण्डल मान्य । धन्य जाको करऊगे तुम पुत्र सुस्तन पान ॥ पुत्र तेरो देखि
है जो बालभाव स्वरूप । यौवनस्थ जो तुम्हे लखि है सिंह सदृश अनूप ॥ भाग्य ताको सफल ह्वै है

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

धन्य ताके नैंन। एहिभाँति बरुत विलापके कहि प्रथा दुःखित बैंन ॥ छोडि मञ्जूषा नदीमे सङ्ग धात्री एक। गई जानि निशीथ घरकों भरो लाज विवेक ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि कुन्तीसूर्य्यसङ्गमकर्णोत्पत्तिवर्णनोनाम सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀

॥ ❀ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ ❀ ॥

तेहि नदीतें संदूक सो चर्मण्वतीमे आय । जाय यमुनामे गयो सुर सरितमे सुखदाय ॥ बारि बेग तरङ्ग बश हो सूतपुर जहँ भूप । सूत है अति महाबल रथकार दूर्जय रूप ॥ दैव बश सो शत भार्या सहित सुरसरि तीर । स्नान करिबेको गयो अति भरो भाग्य गँभीर ॥ लहरि लुण्ठित देखिकै संदक अति अभिराम । बारिमेतें काढि देखो खोलि शिशु छबिधाम ॥ रही बाम अपुत्र ताकी नाम राधा जास । गोदमे ले दियो ताको भरो आनदरास ॥ दैव दीन्हो पुत्र हमको दिव्य अद्भुतरूप। कवच कुण्डल धरे भानु समान तेज अनूप ॥ पुत्र विधिसो लेय राधे कियो पोषण तास । नाम धरि वसुषेण सुतको भरो आनदरास ॥ सूत हो धृतराष्ट्रको सो सखा रथ कार कर्म। भयो वर्धित कर्णताके धाममे सहशर्म ॥ बारणावत पुरीको गो कर्णको ले सूत। भो सुयोधन सखा कर्ण सो द्रोण शिष्य अकूत ॥ द्रोण कृप अरु रामते लहि धनुर्विद्या सर्व। सो धनुद्धर कर्ण जगमे भयो ख्यात अखर्व ॥ सङ्गकरि धृतराष्ट्र सुतको पाण्डवन सो बैंन। करण लागो जिष्णुसों संग्रामको धरि मैर ॥ कर्णसों यह गुह्य कीन्हो भानु सब वृतान्त । देखि कुण्डल कवच ताको जानि अजित नितान्त ॥ रहे मनमे भरे चिन्ता धर्मराज नरेश। जलस्थित मध्यान्हलों जब भजत कर्ण दिनेश ॥ तहां तव जो बिप्र मागत देत ताको तौंन। जानि यह तहँ शक्र कीन्हो बिप्र बनि कै गौंन ॥ देऊ भिक्षा कर्ण सो यह शक्र बोले बैंन। देहि सो तुम कहा मागत कहो कर्ण सचैन ॥ ❀ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ ❀ ॥ और कछु हम लेत नहिँ गो कनक ग्राम महांन । कवच कुण्डल आपनो यह हमै दीजै दान ॥ सत्यव्रत तुम होऊ तौ यह क्षिप्र हमकों देऊ। और कछु हम चहत नहि दे सूतसुत यश लेऊ ॥ ❀ ॥ कर्णउवाच ॥ ❀ ॥ ग्राम धाम सु भूमि बनिता चहऊ माँगऊ तौंन। देय मोहि न कवच कुंडल सुनऊ द्विज मतिभौंन ॥ ❀ ॥ वैशम्पायनउवाच कर्ण ऐसे बचन तासों कहे सुमति समान। सुनऊँ भूप न और कछु तेहि बिप्र मागो दान ॥ बिहसि कै तब बिप्र सों इभि कर्ण बोले बैंन । अजेय जासो हम सो कुण्डल देय तुमकों हैं न ॥ और माँगऊ जौन बांछित होय तुमकों क्षिप्र । कवच कुंडल बिना हम अरि बध्य व्है हैं बिप्र ॥ ❀ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ❀ ॥ और बर जब नही मागे पाकशासन भूप । कर्ण बोलो जानि कै सुरराज हर्षित रूप ॥ पूर्व हमकों विदित हौ तुम सम प्रभू लोकेश । तुम्है

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

प० हम वरदे हिँ सो यह न्याय है न सुरेश॥भूत छत देवेश तुमको चहत हम वरदान । दए कुण्डल कवच हनि है हमै अरि बलवान ॥ देऊ मांगे तौंन तब तुम लेऊ कुण्डल वर्म ॥ शक्रउवाच॥*॥ विदित हमकों गए कहि जो भानु तुमसों मर्म ॥ कर्ण मागऊ वस्तु वांछित होय तुमकों जौंन। एकवज्र विहाय कै हम तुम्है देहै तौंन ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ कर्ण सुनि यह वचन मनमे भरे हर्ष अशेष । जाय मागो शक्ति मोहि अमोघ देऊ सुरेश ॥ *॥ कर्णउवाच ॥ *॥ देऊ कुण्डल वर्म बदले शक्ति मोकों तौंन। युद्धमे अरि गहनकों सम दहन जारै जौंन ॥ चिन्ति मनमे कहो सुरपति कर्णसो इमिबैन। लेऊ शक्ति अमोघ कुण्डल वर्म दै बलऐन ॥ एक अरिपर छोडि हौ तुम तास करि संहार। फेरि तुम यह आई है नहि शक्ति तौन उदार ॥ कर्णउवाच ॥ एक अरि हम हनो चाहत युद्धम अमरेश। *। इन्द्रउवाच। *। जाहि चाहत हनो रक्षत कृष्ण तेहि जगतेश ॥ देऊ शक्ति जो प्रबल मारै एक अरि मम हांथ। कवच कुण्डल काटि तनतें लेऊ तुम सुरनाथ॥नहीं देह बिभत्स मेर रहो पकरिए तौंन ।*। इन्द्रउवाच। *। कनक सो तन रहैं गो तब बिनाक्षत बलभौंन ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ शक्ति दै इन्द्र काढो कवच कुण्डलपर्म। काटि कै सितशस्त्रसो नहिँ भयो पीडित पर्म ॥ देव दानव मनुज लखि इमि कवच कुण्डल हर्ण। उच्च कीन्हो नाद लखि थिर कर्णको सुख वर्ण॥ देव दुन्दुभि भई बर्षे सुमन सुर गन्धर्व । कवच कुण्डल हरण देखत कर्ण कर्म अखर्व ॥ कवच कुण्डल रुधिर पूरित कियो हरिकों दान । इन्द्र वरसों भयो फिरि तन तास कनक समान ॥ एहि भांति बचन कर्णसों करि लेय कुण्डल वर्म । पाण्डवनको कार्य्य करि कै गए इन्द्र सशर्म॥ सुनि सुयोधन सूत सुतको कवच कुण्डल हर्ण । दीन मानस दर्प करि कै भए विवरन वर्ण॥भए हर्षित पांडुसुत सुनि कर्णको वृत्तान्त । कर्ण तबते नाम ताको भयो ख्यात नितान्त ॥ *॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ रहे पांडव कहा जब यह सुनो प्रिय अभिराम। कियो बीते वर्षद्वादश कहा कऊ मतिधाम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ जीति सैंवध लियो कृष्णहिं मार्कण्डेयपास । सुनो वृत्त पुराण सब करि काम्यबनमे बास ॥ गए सरथ सविप्रगण फिरि द्वैतबनकों भूप। तहां बसि बनबास पूरण कियो धर्म स्वरूप॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि कुण्डलहरणवर्णनोनाम एकसप्ततितमोऽध्यायः॥ *

॥ *॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ *॥ मधुभारछन्द ॥ *॥

एहिँ भांतिकों लहि क्लेश। बनमाह धर्मनरेश॥ कियो का कऊ तौंन। हे महामुनि भौन ॥ ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥*॥ हरि कृष्ण हि पाय। तजि काम्यबन सुखदाय॥ फिरि द्वैतबनकों भूप। गे जानि रम्य अनूप॥ जहँ स्वादु फल मृग वृन्द। तँह गए धर्म नरेन्द॥ तहँ कन्द फल दल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

खाय। सह द्विजन बन्धु सहाय॥ तब बसे तहँ नृपधर्म। सह द्रौपदी अतिपर्म॥ तह सहित अरणी व०प०
दण्ड। धरि मृगरूपे मृग चण्ड॥ गो बिपिनिकों कुरुराज। भो अग्निहोत्र अकाज॥ एहिभाँति
बिप्रन्ह आय। दियो धर्मनृपहि सुनाय॥ नृप द्विजन्हके सुनि बैन। धरि धनुष अति बलऐन॥
अति कोप करि कुरुनाथ। उठि चले भ्रातन्ह साथ॥ अति वेगसों बर बीर। गे बिपिनिमाह गँभीर॥
तब देखिकै मृग तौन। धरि धनुष अति बलभौन॥ बज भाँतिके बरबान। तब तजे करि सन्धान॥
नहि ताहि लागो एक। तब कियो यत्न बिवेक॥ तब भयो अन्तरध्यान। सो महामृग बलवान॥
जब पाण्डवन्ह मृग तौन। नहि लखो अति जव भौन॥ व्है कै पिपासा क्रान्त। बट देखि सघन
नितान्त॥ तहँ जाय बैठे भूप। सह बन्धु चिन्तित रूप॥ तब नकुल बोले बैन। एहि बंशमे नहि चैन॥
एहि बंशके अनुरूप। भो धर्म लोपन भूप॥ आलस्यतें नहि अर्थ। भो कबहूँ लोप समर्थ॥ *॥
युधिष्ठिरउबाच॥ *॥ मर्य्यादतें न बिपत्ति। को कछू कारण अस्ति॥ धर्म द्विबिध लखाय। सुनि
पुण्य पापहि प्राय॥ *॥ भीमउबाच॥ *॥ अति कहो तीक्ष्ण बैन। सुत सुतके हत चैन॥
सो सहो हम अति रूप। तेहि दियो संशय भूप॥ *॥ सहदेवउबाच॥ *॥ जब शकुनि तुमसों
यूत। नृप चहो जीति न धूत॥ हम हनो ताहि न जौन। यह देत संशय तौन॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ दोहा॥ * ॥

कहो धर्मनृप नकुलसो तरुपर चढहु उदार। लखहु चहूदिशि दृष्टि दे कह जलको आधार॥
नकुल वृक्षपर चटि चितै दिशि चारो बन सर्ब। कहो इतै घन सलिल तरु सारस शब्द अखर्ब॥
कहो इतै जलहै नियत जानि परत नृपधर्म।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

जाहु नकुल भरि तूणमे सलिल लेआवहु पर्म॥
नकुल सुनत उठिकै चले गए बेगसों तत्र। रहो सरोवर बिमल जल बारिज भूषित यत्र॥
पियन चहो जल तब सुनो बचन गगण तब भूप।

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

पियहु सलिल मम प्रश्नकों दे उत्तर अनुरूप॥
मानो बचन न नकुल सो पियो तृषा बश नीर। पियत सलिल मूर्छित गिरे सर तट घोर अधीर॥
बिलम्ब लगे सहदेवसों कहो धर्मनृप बैन। जाय लेआवहु नकुलकों करि जलपान सचैन॥
तहा जाय सहदेव सुनि यक्ष बचन जलपान। करि मूर्छित सरतट गिरे व्है कै मृतक समान॥
जैसेहीं अर्जुन गए भीमसेन बरबीर। शोच भरे भ्रातन्ह चितै धनुधरि जिसुगभीर॥
गिरे तहा आए नहीं जानि बिलम्ब अतिमान। धर्मराज तहकों गए पूरित शोच महान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

लखो चहूदिशि नहि लखो कहूँ भूत बलवान। महा तृषारत ह्वै चले तब करिबो अबपान॥
सुनो यक्षको बचन श्रुत तास जानि बरबीर। शब्द बेधकारी लगे बर्षन बाण गंभीर॥
लगो न सर तब यक्ष फिरि कहो प्रश्नके बैन। मानो जिष्णु न भीम जल पियत गिरे बलऐन॥
निर्जन बन अति सघनमे कीन्हो जाय प्रबेश। सिंह व्याघ्र मृग महिष जहँ करत बिहार बिशेष॥
जाय लखो सरबर तहां कनक रचित अभिराम। जलखग नाना भांतिके कमल अमल छबिधाम॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सब सम भ्रातन्हको चिते लोकपाल समबीर। भरे शोक निश्वास नृप लागे लेन गभीर॥
करि बिलाप लागे कहन भूपति ऐसे बैन। करी प्रतिज्ञा व्यर्थ तुम भीमसेन बलऐन॥
जघन सुयोधनको हनन करिकै गदा प्रहार। व्यर्थ भयो सो लखत हम सब सम तुम्हे उदार॥
दिव्य बचन तब धनञ्जय मिथ्या होति न बोर। हनन प्रतिज्ञा कर्ण प्रति मिथ्या होति सो धीर॥
नहि जाको जेतार कोउ अरिबल जेता जौन। मम आशाको नष्ट करि सब सम सोवत तौन॥
सदा शत्रु जेतारके कुन्तीसुत बलरास। भीमार्जुन सब अस्त्रबिद वज्रसार तन जास॥
माद्रीसुत क्षितिपर परे सब समान बलभौन। देखि न फाटत मम हृदै है पषाण सम तौन॥
ऐसे बहुत बिलाप करि धर्मराज मतिमान। लगे बिचारण केहिँ हतो महाबीर बलवान॥
शस्त्रघाव देखत नहीं नहि बिमर्द अतिमान। महत भूत कोउ है इहां यह श्रुत जास महान॥
जल करि पान एकाग्र ह्वै कीजै चिन्तन तौन। कियो सुयोधन तौनही यह श्रुत श्रुत मति भौन॥
यह श्रुत बुद्धी शकुनि श्रुत है तौ कछु न बिकार। गूढ पुरुष काहू न तौ जल बिष भरो उदार॥
मम भ्रातनकी बदन छबि बिहत न भई गंभीर। सुखसो सोवत है मनो निद्राबस बरबीर॥
यह बिचारि जल पानकों चले तृषित नृपधर्म। अन्तरहत बाणी सुनी तब कुरुकुल श्रुत कर्म॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

हम बध कीन्हो प्रेत बस तव भ्रातन्हकों भूप। पूर्ण प्रश्न मम किए बिनु तुम लहिहो सोइ रूप॥
प्रश्नोत्तरदैकै करो तुम भूपति पै पान। युधिष्ठिरउवाच। रुद्र मरुत बसु कौन तुम होअति पुरुषप्रधान॥
पर्वतसे तेजस भरे मम भ्राता बलभौन। पातित तुम तिनकों कियो कहऊ सत्य तुम कौन॥
नहीं तुम्हारो कार्य श्रुत बांछित जानो जात। जौन करें मम दुःखको नष्ट होय उतपात॥

॥ * ॥ यक्षउबाच ॥ * ॥

धर्मनृपति हम यक्ष है जल चर पक्षी है न। हते तिहारे बन्धु हम महा बीर बलऐन॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

फिरिकै ठाढे भऐ तब यक्ष बचन सुनि भूप। वृक्षाश्रित गिरि सम लखो ज्वलित यक्षको रूप॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

हम बोरण बज्र विधि किये तव आतन्हको भूप। बलसों चाहो पियन जल तब पायो यह रूप॥
ज्ञेय नहीं यह सलिल है राखो चहे जो प्रान। करऊ न साहस भूप तुम मम निबन्ध बलवान॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

कहऊ यक्ष तुम प्रश्न सो तुम्हे पूछिबे जौन। यथा बुद्धि हम करहिंगे समाधान तब तौन॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

आदित्य उदयकों को करत सह चर ताके कौन। अस्त करत को भानुको रहत कहा मतिभौन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

ब्रह्म उदै रविको करत सह चर देव सुजान। धर्म अस्तको सहत हैं सत्य कहत मतिमान॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

श्रोत्री का सो होतहै होत सहत विधि कौन। जनको कौन द्वितीय है होत सुखी मतिभौन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

श्रुति सो श्रोत्री होत है तपसों होत महान। जनको धैर्य द्वितीय है वृद्ध भजे मतिमान॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

क्षत्रीको दैवत कहा कौन सनातन धर्म। कहा भाव है मनुजको समता है का पम॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

क्षत्री दैवत शस्त्र है मनुज भाव मय दक्ष। समता कहियत त्यागकों जौन करतहैं यक्ष॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

देहवानको श्रेष्ठका श्रेष्ठ वचनमे कौन। श्रेष्ठ प्रतिष्ठा मानमे प्रसव श्रेष्ठ कऊ तौन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

वर्ष श्रेष्ठ तनकों कहै बीज वचनमे पर्म। गऊ प्रतिष्ठा मानमे पुत्र प्रसवमे शर्म॥ यक्षउवाच॥

भूमिऊतें गुरु कौन है उच्च गगण ते कौन। कौन शीघ्र तर वायु तें तृण तें बऊ कऊ तौन॥

युधिष्ठिरउवाच॥ भू तें गुरुतर जननिहै उच्चगगणते तात। तृणतें चिंता बऊतरी मन जीततगतिबात॥

यक्षउवाच॥ मित्र प्रवासीको सु को को गेही को मित्र। आतुरको को मित्रको मरतें मित्र पवित्र।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

आर्य प्रवासी मित्रहै गृहमे मित्र सु बाम। आतुर मित्र सु औषधी मरत दान हित साम॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

कौन अकेलो फिरतहै फिरि फिरि जनमत कौन। हिमको औषध कौनकों वचनश्रेष्ठ मतिभौन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सूर्य्य अकेलो फिरत शशि फिरि फिरि करत प्रकाश। हिमको औषध अग्नि भू वचन श्रेष्ठ मतिरास॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

को आत्माहै मनुजको सखा दैव कृत कौंन। कौंन जीव का करत को अन्त सुखद मतिभौंन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

पुत्र आतमा दैव कृत भार्या सखा सुजान। देत जीवको मेघ सुख दे जलदान महान॥ यक्षउवाच॥

कहा तजे हित होत जन शोचत तजे न काहि। अर्थ धनी काको तजें सुखी होत तजि जाहि॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

मानत जौं प्रिय होत जन शोच न छोडें क्रोध। काम तजे ते अर्थ वान है लोभ तजे सुखबोध॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

मृतक होत कैसें पुरुष देश मृतक किमि भूप। श्राद्ध मृतक किमि होत हैं यज्ञ मृतक किमि रूप॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

मृतक दरिद्री पुरुषहैं देशबिना नृप तज्ञ। श्राद्ध मृतक श्रोत्री बिना बिना दक्षिणा यज्ञ॥ यक्षउवाच॥

तपको लक्षण है कहा दम कहियतहै काहि। परा क्षमा कासों कहत लज्जा कासें चाहि॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

तप स्वधर्म रति मनद मन दम कहियत हैं तौंन। क्षमा सहन परवादही त्याग अकार्य जौंन॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

ज्ञान कहत कासों कहत समता कासों भूप। दया कहत कासो परा आर्यवको का रूप॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

तत्व बोध सो ज्ञानहै समता चित्ता सोध। सबको सुख चहिबो दया आर्यव समता बोध॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

दुर्जय अरि को पुरुष को व्याधि अनन्त सो कौंन। साधु असाधुनको कहो लक्षण भूपति जान॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

अरु सुदुर्जय क्रोधहै लोभ सो व्याधि अनन्त। सबके हित ते साधुहै अहित असाधुहि भन्त॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

मोह कहा है जगतमे कासों कहियत मान। आलस कासों कहत हैं कहा शोक दुखदान॥

॥ युधिष्ठिरउवाच ॥

धर्म भूलिबो मोहहै मान आत्म अभिमान। आलस तजिबो धर्म पथ कहत शोक अज्ञान॥

यक्षउवाच॥ थिरताको अरु धैर्यको कहिये रूप अनूप। परमस्नान कहा कहा महतदान है भूप॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

स्थिरता धर्मस्थिति कहैं धीरज इन्द्री रोध । शुचि मन करिबो स्नान दान अशु रक्षण करि बोध ॥
यक्षउवाच ॥ को पण्डित को मूर्ख हैं कहिए भूपति तौन। काम कहा मत्सर कहा है जगमे मतिभौंन

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

पण्डित ज्ञाता धर्मको मूर्ख जो नास्तिक पाय।जगतहेतु सो काम है मत्सर जौंन उताय। यक्षउवाच।
पावतनर्कअवश्यकोंकहऊमनुजकेहिहेत। युधिष्ठिरउवाच।आयोब्राह्मणक्षुधितकोंमांगे अन्न न देत॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

देव पितर अरु धर्म शास्त्रमे बेद बिप्रमे जौंन।मिथ्याबादी लहत है नर्क अवश्य हि तौंन ॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

कुल स्वाध्याय सुवृत्तते बेदपढेतें कौंन । प्राप्त होत ब्राह्मण्यको कहऊ भूप तुम तौंन ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सुनते नहिँ ब्राह्मण्यको यक्ष लहत को रूप। कारण है ब्राह्मण्यको एक सुवृत्त अनूप ॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

को मोदत आश्चर्य्य का पन्था वार्ता कौंन। कहऊ प्रश्न भूपति जिये तव भ्राता बलभौंन ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

पचँए कटए दिवस लहि साक खात नर जौंन। अऋणी अपने धाम बसि जलचर मोदत तौंन ॥
भूत जात दिनदिन चले निर्मित यमके भौंन। अचल बिचारत आपुको शेष रहत हैं जौंन ॥
तर्क स्मृति श्रुति धर्मशास्त्रको भिन्न भिन्न मत मर्म । गए महाजन जौंन पथ है सोई पथ पर्म॥
जगकटाहमे मोह रबि अग्नि समिध दिन रैन । भूतन पचवत काल यह बात और कछु हैं न ॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

बूझो हम जो प्रश्न तुम कहों यथारथ भूप। कहऊ पुरुष कासों कहत सर्व धनी नररूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

गगण भूमिमे पुण्यको जास शब्द बिख्यात। रहत रहत तवलों पुरुष यश शरीर अवदात ॥
भृत्य प्रिया प्रियमे रहत सुख दुख माहँ समान। सुसम गता मतमे सदा धनी सर्व सुखदान ॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

सर्व धनीनरको कहो तुम लक्षण अनुरूप । तातें कहऊ सो एक तव भ्राता जीवै भूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

श्याम अरुणचख सालवृक्षसों महाबाऊ बरवक्ष। भ्राता जीवै नकुल मम आये प्रथम जो यक्ष ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

भीम तवप्रिय महाबल अर्जुन धनुधर बीर । तिन्ह कोडि जतावत नकुल कऊ सो हे मतिधीर ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

धर्म हनत हतकों करत रक्षित रक्षण धर्म । यक्षन तजि है धर्म हम जिअै नकुल अतिपर्म ॥
कुन्ती माद्री मम पिताके व्हैहै आर्य्या पर्म । दोऊ रहै सपुत्र यह मममति यक्ष सधर्म ॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

सार्थकाम अनृसंस तुम धर्म बुद्धि गम्भीर । ताते भ्राता जियौ तव भरे महाबल बीर ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

उठे यक्षके बचनते ते पाण्डव बरबीर । क्षुधा पिपासाते रहित आनद भर शरीर ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

अपराजित व्है कै रहत तुम एहि सरबरमाहँ । नही यक्ष सुरबर कोऊ कै बसु कै सुरनाह ॥
ए ममभ्राता महारथ तिन्है कियो सब रूप । फेरि कृपाते तब उठे आनद भरे अनूप ॥
कै तुम मेरे सुहृद कै पिता धर्म सुखरूप ।

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

सुमृदु पराक्रम पिता हम धर्मराज तव भूप ॥
देखन अए हम तुम्है जानि सत्यको धाम । सत्य शौच तप दान है मम शरीर अभिराम ॥
हौ तुम मेरे पुत्र प्रिय बर मांगऊ सुखदान

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

अरणी दीजै मृग हरण कियो प्रथम भगवान ॥
जातें होय न अग्निको लोप प्रथम बरदान ॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

मृग व्है हम अरणीहरी तुम्है जानिबेहैंतु । वैशम्पायनउवाच । सोहमतुमकोंदेहिगेहेकुरुकुलकेकेतु ॥
बरमागऊतुमऔरजोहोयतुम्हे सुखदाय । युधिष्ठिरउवाच । द्वादशबीतोवर्षभोनिकटचयोदशआय ॥
तामे हमै न मनुजकोउ चीन्हैहेभगवान । वैशम्पायनउवाच धर्मराजकरिकैंकृपादीन्होसोबरदान ॥
आश्वासन करिकैं कहो धरे आपनो रूप । तुम फिरि हौ क्षितिपर तऊ कोउ न चीन्हिहैं भूप ॥
बर्ष तेरहो जैंन यह तुम बिराटपुर माह । जाय बितावत गुप्त व्है सह भ्रातन्ह नरनाह ॥
तुम मानस सङ्कल्प करि देहौ जैंन स्वरूप । तौन तौन ए बन्धु तव धारण करि है भूप ॥
अरणि यह द्विजअग्निहित लेऊ पुत्र नृपधर्म । अरणीते हम और बर तुम्है देहिगे पर्भ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

तुम मेरे औरस तनय अंशज बिदुर सुजान।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

तुम्हैं लखो साक्षात हम देव देव भगवान॥
जो दहऊ प्रभु करि कृपा ले है हम बर तात। लोभ मोह अरु काम नहि मोहि करै उतपात॥
। सत्य तपस्या दानमे मम मति रहै सुशर्म।

॥ * ॥ धर्मउवाच ॥ * ॥

। इनगुणतं सम्पन्न तब है स्वभाव अतिपर्म।
यथा कहत तुम रहै गो तब मति तथा ललाम।

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

धर्मराज कहि कै गए अैसै अपने धाम॥
गतश्रम व्है पाण्डव गए आश्रमको अभिराम। अरणी टेकै द्विजनके बंन्दे चरण ललाम॥
पिता पुत्र सम्बाद यह पाठ करै गौ जौंन। जीहै पुत्र पौत्र सह शतसम्बतलों तौन॥
नही धर्मके मार्गमे सो चलि है सब धर्म। ऋद्धि सिद्धि मति वृद्धिकों तौन लहै गो पर्म॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे बनपर्वणि अरणिहरणेपाख्यानबर्णनोनाम द्विसप्ततितमोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बसत हैं बनबासमे सँग बिप्र जे तपधाम। कहन तिनसों लगे अैसें धर्मनृप अभिराम॥ बष द्वादश बास बनमे कियो हम तुम साथ। गुप्त रहिवे तेरहों सो बर्ष आयो नाथ॥ कियो छल धृतराष्ट्रके सुत राजकारण जौंन। बिदित तुमकों सकल है सो जगत जानत तौंन॥सह सुयोधन कर्ण सौंबल दुष्ट ए अतिमान। जानि हैं तौ बिषम करि हैं बैर कर्म महांन॥ बैशम्पायनउवाच॥ बिदा मागो द्विजनसों इमि बोलि कै जब पर्म। सहित भ्रातन्ह चलत मूर्छित व्है गिरे नृपधर्म॥ लगे आश्वासन करण सब बिप्र अति मतिअैन। धौम्य तब इमि कहन लागे अर्थ गर्भित बैंन॥ सत्य सन्ध वदान्य बिद्यामान तुम नृपधर्म। मोहकों नहिँ लहत तुमसे पुरुष है जे पर्म॥ देवत तनकों परी है जब घोर आपद आय। शत्रुको तब हनो है तिन नियत रूप छपाय॥ नृसिंह बामन राम आदिक बिष्णु धरि बहु रूप।दुष्ट निग्रह कियो तैसें करहु तुमहूँ भूप॥ एहि भाँतिकें सुनि ध्योम्यके सह नीतिके बर बैंन। नहीं छलसों शत्रुको बध बहो नृप मति अैंन॥ भीम बोले बैन नृपको करत हर्षित रूप।कियो साहस जिष्णु न हिँ तब बिना शासन भूप॥ करत माद्रीसुतन कों हम रहे बाँनर बीर।शत्रुके बिध्वस करिवे योग्य ए गम्भीर॥ हम न तानों छोडि है तुम हनन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

ब०प० चहि हौ जाहि। क्षिप्र हनि हैं युद्धमे नृप शत्रु है तब ताहि ॥ देय आशिष द्विजन्ह सुनि ऐ भीमके वर बन। विदा व्हैकै पाण्डवनसो गए अपने अैन ॥ सहित कृष्णा धौम्य पाण्डव कोश भरि क्षिति जाय। कियो बनमे बास लहि निशि शकुन अति सुखदाय ॥ भोर उठि कै पाण्डवन्ह चहि गुप्त करिबे बास। मंत्र शास्त्र सु बेदबेत्ता धनुर्धर मतिराश ॥ काल बिग्रह सन्धिको सबिधान जानत तंत्र। धर्मनृप तहँ सहित भ्रातन्ह करण लागे मंत्र ॥ द्वैसे उनसत्तरि बिहित करी व्यास अध्याय। चौषठिनौशत एकदश पद्य मरम सुखदाय ॥ सुयश सुमन मयपुण्य फल पूरित यह बन पर्व। तास अर्थ दर्पण करो हम सहकथा अखर्ब ॥ ❀❀❀

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

H 24.6
-G 46 M
Tol. [illegible]

ण्ड

तट

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Foundation